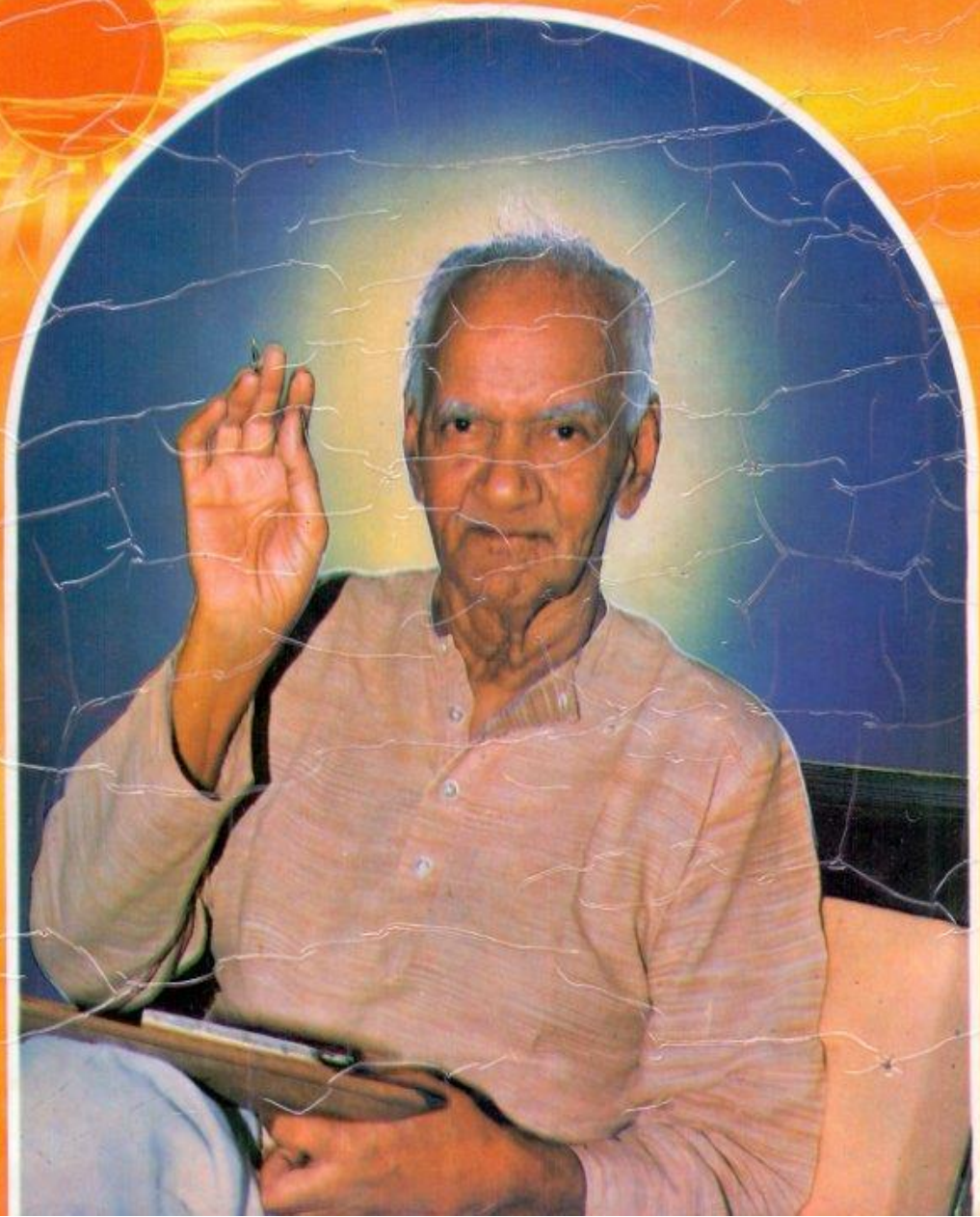
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

पूज्यवर की अमृतवाणी

(भाग एक)



www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूज्यवर की अमृतवाणी

(भाग एक)



प्रकाशक :

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा-२८१ ००३

© सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



मूल्य १२५)

मुद्रक
जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ वन्दे भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ।।

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ।।

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ।।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ।।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है। परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है। परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी माँ शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही हैं। उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया। आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं हैं किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानीगणों के वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देखा सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये। इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबोकर लिखा गया हो। हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता, मन को व विचारों को बदलता चला जाता है। लाखों-करोड़ों के मनों के अंत:स्थल को छूकर उसने उनका कायाकल्प कर दिया। रूसो के प्रजातंत्र की, कार्लमार्क्स के साम्यवाद की क्रान्ति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है। उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्बोधन से एक विराट् गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े करते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाये, कैसे छन्दबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर, १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पन्द्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता। वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आस-पास के, दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंत:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था। साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा। जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे, छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे। किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुत: अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी। जाति-पाँति का कोई भेद नहीं। जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला

की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवा कर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा। उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किंतु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभासम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजास्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में सम्पन्न क्रिया-कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषिसत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष्य के चौबीस महापुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रान्ति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक-दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था, जिसमें भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि- ''प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरुसत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गईं- संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।''

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने ताड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख-सुनकर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद

पैदल लम्बा रास्ता पार कर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल भी गये। छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई। जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अँग्रेजी सीखकर लौटे। आसनसोल जेल में वे श्री जवाहरलाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मदनमोहन मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से, मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना। यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान, बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जनआक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रान्तिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था। नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं। बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये। जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्यचकित रह गये। उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्तजी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्यमंत्री श्रीगोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधीजी के समक्ष पेश किये गये। बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए। कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुंज में सम्मानित किया। उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधानमंत्री राहत फण्ड के नाम समर्पित कर दीं। वैरागी जीवन का सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरू हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये। सांस्कृतिक, आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया, जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्रीकृष्णदत्तपालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रहकर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया। प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अतः पुनः सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमशः उनके अध्यवसाय घर- घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदयस्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ। स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे। पुस्तकों

का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंतःस्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही। साथ देने आ गयीं परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी। उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुःखी था- पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं। यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रान्ति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि-विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ। गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परमवंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी। धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है। १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है। १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५७ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया। कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देशभर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं। संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था। तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं। हिमालय से लौटते ही उनने महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूलथाती को पुनर्जीवन दिया। परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञानसम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ। तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तप-पूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था। तपोभूमिं में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों के द्वारा विचार क्रान्ति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए। स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों को विशेष कार्य-भार सौंप परमवंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़कर स्वयं हिमालय चले गये। एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया-पद्धति बतायी। ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्तन, संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे। इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक, साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य, प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक। इसके लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी-बूटी, यज्ञ विज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना, मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञानसम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का, एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युगशिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता व आस्तिकता संवर्धन एवं जन-जाग्रति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञासंस्थान, शक्तिपीठ, प्रज्ञामण्डल, स्वाध्याय-मण्डल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया-कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तपसाधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया-कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून, १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी के दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट-आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नवनिर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरुसत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युग संधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेध महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नवनिर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रान्ति ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर, १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद, दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु सम्पन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी गई। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो एक सौ आठ खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हुआ। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जाएँगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़-चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है। ❑❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

क्या कोई चिन्तक-विचारक लेखनी व वाणी दोनों का ही समान रूप से धनी हो सकता है, यह बात जन-सामान्य पर आरोपित की जाती है, तो उत्तर नकारात्मक ही मिलता है । अधिकांश अच्छी कोटि के वक्ता जब कलम चलाते हैं तो लड़खड़ा जाते हैं एवं अच्छे श्रेष्ठ लेखक जब बोलते हैं तो उनका संस्कृतनिष्ठ अथवा ज्ञानजनित चिन्तन हावी होकर उनकी वाणी को उतना प्रभावशाली प्रमाणित नहीं कर पाता, किन्तु परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एक ऐसे अपवाद हैं जिनका दोनों पर समान अधिकार व दोनों ही माध्यमों से जनमानस पर सम्मोहनकारी प्रभाव देखा जा सकता है । यह सामर्थ्य विरलों में ही होती है । परमपूज्य गुरुदेव की मुखर वाणी, जिसने करोड़ों व्यक्तियों को गायत्री महासत्ता से जोड़कर युगपरिवर्तन का सरंजाम कर दिखाया । वाङ्मय के इस खण्ड में प्रस्तुत है-लिपिबद्ध रूप में । पूर्व में उनकी अमृतवाणी जब उनके महाप्रयाण के बाद अखण्ड-ज्योति पत्रिका में प्रकाशित की गयी, तो सभी का यह प्रिय स्तम्भ बना । बाद में उन्हें संकलित-सम्पादित कर 'गुरुवर की धरोहर' नाम से दो भागों में पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित कर दिया गया । बहुत कुछ उस युगद्रष्टा ने कहा है-स्थान-स्थान पर; वह इतना कहा है कि इस अमृतवाणी रूपी वाङ्मय के एक खण्ड में भी बाँध पाने में हम अपने को असमर्थ पा रहे हैं । चारों ओर से उनके कैसेट्स (आडियो-वीडियो) का संकलन जारी है । सम्भव है अमृतवाणी के हम तीन या चार खण्ड प्रकाशित कर सकें । वर्तमान में तो प्रस्तुत है परिजनों के समक्ष वाङ्मय की प्रथम किश्त ७० खण्डों में अमृतवाणी का पहला खण्ड ।

इस खण्ड में दी जा रही अमृतवाणी के प्रमुख विषय हैं-मानव में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण, देव-संस्कृति के दो आधार- गायत्री और यज्ञ, आध्यात्मिक काया-कल्प के सूत्र और सिद्धान्त, साधना से सिद्धि तथा महाकाल की प्रज्ञा-परिजनों से अपेक्षाएँ व उनका नवसृजन हेतु आह्वान । मनुष्य देवता कैसे बन सकता है, इसके लिए उसे अपनी तैयारी कैसे करनी होगी, संधिकाल में सभी को किस प्रकार अपनी मनोभूमि बनानी होगी? यह सारा पक्ष पूज्यवर की वाणी से सुस्पष्ट उदाहरणों के माध्यम से इसमें आया है । जीवन जीने की कला के रूप में अध्यात्म को परिभाषित करने वाले पूज्य गुरुदेव संजीवनी विद्या को बड़ा स्पष्ट समझाते हैं । अपने ब्राह्मणत्व को स्वयं पूज्य गुरुदेव ने किस प्रकार जिन्दा रखा, ब्राह्मणत्व ही वस्तुतः देवत्व का जागरण है, यह समग्र विवेचन इसमें समझा जा सकता है, यह उनकी वाणी का चमत्कार है कि जन-जन के बीच आसानी से समझ में आने वाले उदाहरणों के द्वारा उनकी वक्तृता इतनी रोचक बन गयी है कि पढ़ने वाले को कथा का आनन्द आने लगता है व बात सीधे हृदय तक पहुँच जाती है ।

अगले प्रकरण में गुरुसत्ता ने गायत्री मंत्र को समग्र धर्मशास्त्र के रूप, में देव-संस्कृति के बीज मंत्र के रूप में समझाया है । उनकी ओजस्वी वाणी में प्राणों का त्राण करने वाली गायत्री की स्पष्ट व्याख्या ऐसी हृदयंगम होती चली गयी है कि पाठक के मन के सारे असमंजस निकल जाते हैं । त्रिपदा गायत्री के श्रद्धा-प्रज्ञा-निष्ठा, आस्तिकता, धार्मिकता एवं कर्त्तव्यपरायणता रूपी तीन चरणों की स्पष्ट व्याख्या इन प्रवचनों में पाठकगण पढ़ व समझ सकते हैं । गायत्री व यज्ञ को पूज्यवर ने मिशन के आधारभूत स्तम्भों के रूप में पुनः प्रतिष्ठित कर एक परिष्कृत धर्मतंत्र के माध्यम से विराट गायत्री परिवार की स्थापना कैसे कर ली, इसे भली-भाँति इन प्रसंगों में समझा जा सकता है । उपासना कैसे करें, क्यों करें, किन भावों के साथ करें के अलावा उपासना किसी की सफल क्यों नहीं हो पाती, यह समग्र विवेचन इस खण्ड में आया है । उनके अपने जीवन में गायत्री उपासना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कैसे फलीभूत हुई, यह पढ़ने के बाद किसी को भी इस कामधेनु के पयपान में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए । गायत्री के साथ यज्ञ का अविच्छिन्न सम्बन्ध है । गायत्री यदि सद्ज्ञान है तो यज्ञ सत्कर्म । कैसे जीवन को यज्ञमय बनाया जाए, साधना को सफल बनाने हेतु इन दोनों अवलम्बनों को जीवन में कैसे उतारा जाए, यह सारा ऊहापोह इस खण्ड में पढ़ा जा सकता है ।

इसी क्रम में आगे पूज्यवर की अमृतवाणी से परिजन आध्यात्मिक काया-कल्प 'काक होहि पिक बकऊँ मराला' की प्रक्रिया को समझ सकते हैं । दैवी अनुदान बरसते ही उसी पर हैं जो काया-कल्प हेतु अपनी पात्रता विकसित करने के लिए तैयार हो । इसके लिए प्रायश्चित्त विधान, तीर्थसेवन, अंतराल को विकसित करने की विधा का बाकायदा प्रशिक्षण इसमें पाया जा सकता है। साधना की सफलता में श्रद्धा तथा वातावरण दोनों की ही महत्ता-उपयोगिता है एवं कैसे गुरु-कृपा से यह सब सुयोग मिलकर असम्भव को भी सम्भव दिखाते हैं, यह समझने के लिए परिजन इस खण्ड को पढ़ें । शक्तिपात, कुण्डलिनी जागरण, तपस्वी जीवन के मूलभूत सिद्धान्त, दृष्टिकोण परिवर्तन से मानसिक परिष्कार, इन सभी गूढ़ विषयों पर बड़े मर्मस्पर्शी उद्बोधन भावसंवेदना मिश्रित वाणी के रूप में लिपिबद्ध यहाँ देखे जा सकते हैं ।

'साधना से सिद्धि' विषय पूज्यवर का बड़ा प्रिय विषय रहा है । प्रज्ञायोग की साधना एवं सिद्धान्तों के प्रति श्रद्धा कैसे बढ़े-चढ़े रूप में सम्पन्न हो, यह समझना हो तो परिजन इस खण्ड को पढ़ें, भगवान सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय हैं एवं उसके साथ भागीदारी-साझेदारी घाटे का सौदा नहीं है, यह समझ में आ जाए तो जीवन की चाल ही बदल जाती है, लोग विधि-विधानों में, कर्मकाण्डों में उलझ जाते हैं, विधा को समझने का प्रयास नहीं करते । अपनी भावभरी श्रद्धा कर्मकाण्डों में आरोपित नहीं करते, इसी कारण ऐसी दुर्गति उनकी देखी जाती है । सही मायने में आस्तिक व्यक्ति कैसे बनें-अनुदान किन शर्तों पर प्राप्त करें, यह पूज्यवर के अमृतवचनों से समझने में कोई कठिनाई नहीं होती ।

इस खण्ड के अन्तिम भाग में महाकाल की पुकार, विषम परिस्थितियों में नवयुग की तैयारी, आपातकालीन धर्म एवं सामान्य-असामान्य मनुष्यों के दायित्वों को समझाया गया है । महाकाल अर्थात् काल की चाल को बदलने में सक्षम सत्ता । ऐसी सत्ता से जो जुड़ गया, वह इस समय-विशेष में अपना जीवन निहाल कर लेगा, यह एक सुनिश्चित आश्वासन गुरुसत्ता का है । क्रान्ति कैसे होती है, कैसे एक चिनगारी दावानल बनती चली जाती है । अवतार किसे कहते हैं, यह जानना हो तो इस खण्ड को पढ़ें ।

वस्तुतः पूज्यवर ने जो पुरुषार्थ लेखनी से किया है, उससे कहीं कम नहीं, लगभग बराबर का ही उनकी अमृतवाणी के माध्यम से हुआ है । जिसने लाखों-करोड़ों के मर्मस्थल को बदलकर उनके जीवन में आमूल-चूल बदलाव ला दिया है । इसकी धार अन्दर से बहने लगे, ऐसी कथा भरी वाणी जो गुरुसत्ता से सीधा साक्षात्कार कराती है, इस खण्ड की धुरी है ।

-ब्रह्मवर्चस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

१. मनुष्य में देवत्व का उदय व धरती पर स्वर्ग का अवतरण **१.१**

मनुज देवता बने, बने यह धरती स्वर्ग समान १.१
देवत्व विकसित करें, कालनेमि न बनें १.४
अपने ब्राह्मण एवं सन्त को जिन्दा कीजिए १.८
भाव-संवेदना का विकास करना ही साधुता है १.१३
आत्मोन्नति के चार आधार १.१५
सूक्ष्मीकरण के बाद का ऐतिहासिक वसन्त १.१६
युगनिर्माण योजना और उसके भावी कार्यक्रम १.२३
युग-मनीषा जागे, तो क्रान्ति हो १.२५
युगशोधन हेतु मनीषा को आमंत्रण १.२६
गुरुतत्त्व की गरिमा और महिमा १.३२
सुसंस्कारी बनाए, कैसी हो वह शिक्षा ? १.३५
संजीवनी विद्या बनाम जीवन जीने की कला १.३८
देवात्मा हिमालय एवं ऋषि-परम्परा १.४१
हिमालय का अज्ञातवास एवं हमारी तपश्चर्या १.४६
नया इनसान बनायेंगे, नया जमाना लायेंगे १.५३
वासन्ती हूक, उमंग और उल्लास यदि आ जाए जीवन में १.५६

२. देव-संस्कृति के दो आधार— गायत्री और यज्ञ **२.१**

भारतीय संस्कृति का मूल— गायत्री महामंत्र २.१
गायत्री महामंत्र की सामर्थ्य २.५
गायत्री महामंत्र की महत्ता २.२३
गायत्री महाशक्ति की महान फलश्रुतियाँ २.२६
त्रिपदा गायत्री के तीन चरण २.३०
देव-संस्कृति का बीज मंत्र— गायत्री महामंत्र २.३४
गायत्री उपासना का स्वरूप २.४६
गायत्री उपासना की सफलता के आधारभूत तथ्य २.५८
ब्रह्मवर्चस कैसे जगाती है गायत्री ? २.६१
ब्रह्मतेजस के अभिवर्द्धन हेतु गायत्री उपासना २.६६
ऋतम्भरा-प्रज्ञा का अवतरण २.६६
गायत्री की युगान्तरीय चेतना २.७३
युग शक्ति का अवतरण २.७८
गायत्री उपासना सफल एवं सार्थक कैसे बने ? २.८१
हमारी स्वयं की गायत्री उपासना कैसे फली ? २.६६
हमारी यज्ञीय परम्परा २.१००
यज्ञों से सूक्ष्म वातावरण का संशोधन एवं जनमानस का परिष्कार २.१०३
महायज्ञों का स्वरूप व उद्देश्य २.१०६
भारतीय संस्कृति के प्रतीक— शिखा और सूत्र २.११०
नवरात्रि साधना का तत्त्वदर्शन २.१२४
हेमाद्रि संकल्प और उससे जुड़े अनुशासन २.१२७
आत्मबल सम्पादन ही सर्वोपरि लक्ष्य हो २.१३३
ओजस्वी, तेजस्वी एवं मनस्वी व्यक्तित्वों का निर्माण २.१३८

३. आध्यात्मिक कायाकल्प के सूत्र और सिद्धान्त **३.१**

आध्यात्मिक कायाकल्प के मूलभूत सिद्धान्त ३.१
कैसे हो आध्यात्मिक कायाकल्प ? ३.५
अनुग्रह के लिए अन्तराल का सुविकसित होना आवश्यक ३.८
कायाकल्प का मर्म और दर्शन ३.१२
कल्प साधना और उसकी तात्विक विवेचना ३.१६
प्रायश्चित क्यों ? कैसे ? ३.२०
तीर्थयात्रा बनाम प्रायश्चित प्रक्रिया ३.२४
तीर्थसेवन का महत्त्व और प्रयोजन ३.२८
साधना में श्रद्धा की महत्ता और वातावरण की उपयोगिता ३.३१
पारस को छूकर सोना बनने का तरीका ३.३५
जीवन-साधना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी ३.३६
शक्तिपात एवं कुण्डलिनी जागरण का तत्त्वदर्शन ३.४३
आत्मावलोकन का सरल उपाय— एकान्तवास ३.४८
तपस्वी जीवन और उसके मूलभूत सिद्धान्त ३.५२
तपकर कुंदन बनने की प्रक्रिया ३.५६
दृष्टिकोण-परिवर्तन ही वास्तविक कायाकल्प ३.६०
आध्यात्मिक सिद्धान्तों का आत्मसात करना ही जीवन का लक्ष्य हो ३.६४
आन्तरिक अमीरी ही वास्तविक सम्पन्नता है ३.७५

४. साधना से सिद्धि **४.१**

उपासना, साधना, आराधना का त्रिवेणी संगम ४.१
उपासना फलदायी कैसे बने ? ४.५
उपासना की सफलता साधना पर निर्भर ४.८
विधा को समझें, विधि में न उलझें ४.१४
जप का ज्ञान और विज्ञान ४.२६
साधना से सिद्धि ४.४४
अनुदान की तीन शर्तें—तीन कसौटियाँ ४.४७
आध्यात्मिक जीवन में पात्रता की अनिवार्यता ४.५०
जाग्रत आत्माओं को हमारे अजस्र अनुदान ४.६१
शक्ति-भण्डार के साथ जुड़ें ४.६८
भगवान के साथ साझेदारी घाटे का सौदा नहीं ४.७२
श्रद्धा, सिद्धान्तों के प्रति हो ४.७५
प्रज्ञायोग की साधना ४.७६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पंचकोशों का अनावरण ४.८३
ध्यानयोग का व्यावहारिक क्रिया पक्ष ४.८८
भगवान शिव और उनका तत्त्वदर्शन ४.९२
बहुदेववाद को समझें, भ्रम-जंजाल में न उलझें ४.९६
आपत्तिकाल में मोहग्रस्त बने न रहें ४.१०८

५. महाकाल की पुकार अनसुनी न करें ५.१

युग-परिवर्तन की पूर्व वेला एवं सन्धिकाल ५.१
विषम परिस्थिति में नवयुग की तैयारी ५.६
आपत्तिकाल का अध्यात्म ५.११
अन्तर की हूक को ही अवतार कहते हैं ५.१६
आज के प्रज्ञावतार की, युग-देवता की अपील ५.१९
युगसन्धि की वेला व हमारे दायित्व ५.२५
युग-परिवर्तनकारी महाक्रान्ति में सहभागी बनें ५.२९
महाकाल की पुकार सुनें और जीवन धन्य बनाएँ ५.३२
कैसे होगा समन्वय, विज्ञान और अध्यात्म का ? ५.३६
यह चिनगारी—दावानल बनेगी ५.४३
धर्मतंत्र की गरिमा एवं महत्ता ५.५१
परमार्थपरायण बनें—दैवी अनुग्रह पाएँ ५.५७
वातावरण परिशोधन हेतु युगशिल्पियों का दायित्व ५.६३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य में देवत्व का उदय व धरती पर स्वर्ग का अवतरण

मनुज देवता बने, बने यह धरती स्वर्ग समान

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

देवताओं के अनुग्रह की बात आप सबने सुनी होगी। देवता नाम ही इसलिए रखा गया है कि, वे दिया करते हैं। प्राप्त करने की इच्छा से कितने ही लोग उनकी पूजा करते हैं, उपासना करते हैं, भजन करते हैं, आइए—इस पर विचार करें।

देवता देते तो हैं, इसमें कोई शक नहीं है। अगर वे देते न होते तो उनका नाम देवता न रखा गया होता। देवता का अर्थ ही होता है—देने वाला। देने वाले से अगर माँगने वाला कुछ माँगता है तो कोई बेजा बात नहीं है। पर विचार करना पड़ेगा कि, आखिर देवता देते क्या चीज हैं ? देवता वही चीज देते हैं जो उनके पास है। जिसके पास जो चीज होगी, वही तो दे पाएगा। देवता के पास सिर्फ एक चीज है और उसका नाम है—देवत्व। देवत्व कहते हैं—गुण, कर्म और स्वभाव—तीनों की अच्छाई को, श्रेष्ठता को। इतना देने के बाद में देवता निश्चिन्त हो जाते हैं, निवृत्त हो जाते हैं और कहते हैं कि, जो हम आपको दे सकते थे हमने वह दे दिया। अब आपका काम है कि, जो चीज हमने दी है, उसको जहाँ भी आप मुनासिब समझें, वहाँ इस्तेमाल करें और उसी किस्म की सफलता पाएँ।

दुनिया में सफलता एक चीज के बदले में मिलती है और वह है—आदमी का उत्कृष्ट व्यक्तित्व। इससे कम में कोई चीज नहीं मिल सकती। अगर कहीं से किसी ने घटिया व्यक्तित्व की कीमत पर किसी तरीके से अपने सिक्के को भुनाए बिना, अपनी योग्यता का सबूत दिए बिना, परिश्रम के बिना, गुणों के अभाव में, कोई चीज प्राप्त कर ली है तो वह उसके पास ठहरेगी नहीं। शरीर में हजम करने की ताकत न हो तो जो खुराक आपने खाई है; वह आपको हैरान करेगी, परेशान करेगी। इसी तरह सम्पत्तियों को, सुविधाओं को हजम करने के लिए गुणों का माद्दा नहीं होगा तो वे आपको तंग करेंगी, परेशान करेंगी। अगर गुण नहीं है तो जैसे-जैसे दौलत बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे आपके अन्दर दोष-दुर्गुण बढ़ते जाएँगे, व्यसन बढ़ते जाएँगे, अहंकार बढ़ता जाएगा और आपकी जिन्दगी को तबाह कर देगा।

देवता क्या देते हैं ? देवता हजम करने की ताकत देते हैं। जो दुनियाबी दौलत या जिन चीजों को आप माँगते हैं जो आपको खुशी का बायस मालूम पड़ती हैं, उन सारी चीजों को हजम करने के लिए विशेषता होनी चाहिए। इसी का नाम है—देवत्व। देवत्व अगर प्राप्त हो जाता है तो फिर आप दुनिया की हर चीज से, थोड़ी-से थोड़ी चीजों से लेकर फायदा उठा सकते हैं। अगर वे न भी हों तो भी काम चल सकता है। ज्यादा चीजें हो जाएँ तो भी अच्छा है, यदि न हो जाएँ तो भी कोई हर्ज नहीं है। लेकिन अगर आप इस बात के लिए उतावले हैं कि जैसे भी हम पिछड़े हैं वैसे ही बने रहें, तो फिर कुछ कहना सम्भव नहीं है। मनुष्य के शरीर में ताकत होनी चाहिए लेकिन समझदारी का नियन्त्रण न होने से आग में घी डालने, ईंधन डालने के तरीके से वह सिर्फ दुनिया में मुसीबतें पैदा करेगी। देवता किसी को दौलत देने की गलती नहीं कर सकते। अगर देते हैं तो इसका मतलब है कि तबाही कर रहे हैं। इनसानियत उस चीज का नाम है; जिसमें आदमी का चिन्तन, दृष्टिकोण, महत्त्वाकांक्षाएँ और गतिविधियाँ ऊँचे स्तर की हो जाती हैं। इनसानियत एक बड़ी चीज है।

मनोकामनाएँ पूरी करना खराब बात नहीं है, पर शर्त एक ही है कि यह किस काम के लिए, किस चीज के लिए माँगी गई हैं ? अगर सांसारिकता के लिए माँगी गई हैं तो उससे पहले यह जानना जरूरी है कि उस दौलत को हजम कैसे कर सकते हैं ? उसे खर्च कैसे कर सकते हैं ? मनुष्य भूल कर सकता है, पर देवता भूल नहीं कर सकते। देवता आपको चीजें नहीं दे सकते जैसा कि मेरा अपना ख्याल है। देवताओं के सम्पर्क में आने वाले को भौतिक वस्तुएँ नहीं मिलीं। क्या मिला है ? आदमी को गुण मिले हैं, देवत्व मिला है। सद्गुणों के आधार पर आदमी को विकास करने का मौका मिला है। गुणों के विकसित होने के पश्चात् उन्होंने वह काम किए हैं, जिन्हें सामान्य मनुष्य सामान्य बुद्धि से काम करते हुए नहीं कर सकता। देवत्व के विकसित होने पर कोई भी उन्नति के शिखर पर जा पहुँच सकता है, चाहे वह सांसारिक हो अथवा आध्यात्मिक। संसार और अध्यात्म में कोई फर्क नहीं पड़ता। गुणों के इस्तेमाल करने का तरीका भर है। गुण अपने आप में शक्ति के पुंज हैं, कर्म अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आप में शक्ति के पुंज हैं और स्वभाव अपने आप में शक्ति के पुंज हैं। इन्हें कहाँ इस्तेमाल करना चाहते हैं, यह आपकी इच्छा की बात है।

सफलता साहसिकता के आधार पर मिलती है। यह एक आध्यात्मिक गुण है। इसी आधार पर योगी को भी सफलता मिलती है, तांत्रिक को भी और महापुरुष को भी। हर एक को इसी साहसिकता के आधार पर सफलता मिलती है। वह डाकू क्यों न हो। आप योगी हैं तो अपनी हिम्मत के सहारे फायदा उठायेंगे। नेता हैं, महापुरुष हैं तो भी इसी आधार पर सफलता पायेंगे। यह एक दैवी गुण है। इसे आप अपनी इच्छा के अनुसार इस्तेमाल कर सकते हैं, यह आप पर निर्भर है। इनसान के भीतर जो विशेषता है, वह गुणों की विशेषता है। देवता अगर किसी आदमी को देंगे तो गुणों की विशेषता देंगे, गुणों की सम्पदा देंगे। गायत्री माता, जिसकी आप उपासना करते हैं, अनुष्ठान करते हैं, अगर कभी कुछ देंगी तो गुणों की विशेषता देंगी। गुणों से क्या हो जाएगा ? गुणों से ही होता है सब कुछ। भौतिक अथवा आध्यात्मिक जहाँ कहीं भी आदमी को उन्नति मिली है, केवल गुणों के आधार पर मिली है। श्रेष्ठ गुण न हों तो न भौतिक उन्नति मिलने वाली है, न आध्यात्मिक उन्नति मिलने वाली है।

आदमी जितना समझदार है, नासमझ उससे भी ज्यादा है। यह भ्रान्ति न जाने क्यों आध्यात्मिक क्षेत्र में घुस पड़ी है कि देवता मनोकामना पूरी करते हैं, पैसा देते हैं, दौलत देते हैं, बेटा देते हैं, नौकरी देते हैं। इस एक भ्रान्ति ने इतना ज्यादा व्यापक नुकसान पहुँचाया है कि आध्यात्मिकता का जितना बड़ा लाभ, जितना बड़ा उपयोग था, सम्भावनाएँ थीं, उससे जो सुख होना सम्भव था, उस सारी की सारी सम्भावना को इसने तबाह कर दिया। देवता आदमी को एक ही चीज देंगे और उनने एक ही चीज दी है; प्राचीनकाल के इतिहास में और भविष्य में भी। देवता अगर जिन्दा रहेंगे, भक्ति अगर जिन्दा रहेगी, उपासना-क्रम यदि जिन्दा रहेगा, तो एक ही चीज मिलेगी और वह है देवत्व के गुण। देवत्व के गुण अगर आएँ तब आप जितनी सफलताएँ चाहते हैं, उससे हजारों-लाखों गुनी सफलताएँ आपके पास आ जाएँगी।

क्या आप चाहते हैं ? आपको देवत्व के स्थान पर तीन चार सौ रुपये की नौकरी दिलवा दें। कोई देवता, सन्त या आशीर्वाद या कोई मन्त्र तो वह नाचीज हो सकती है। लेकिन अगर देवता देवत्व प्रदान करते हैं, तो वह नौकरी आपके लिए इतनी कीमत की करवा देंगे कि आप निहाल हो जाएँगे। विवेकानन्द रामकृष्ण परमहंस के पास नौकरी माँगने गए थे, पर मिला क्या देवत्व, भक्ति, शक्ति और शान्ति। यह क्या चीज थे—गुण। मनुष्य के ऊपर कभी सन्त कृपा करते हैं। सन्तों ने कभी किसी को दिया है तो उन्होंने एक ही चीज दी है अन्तरंग में उमंग। एक ऐसी उमंग, जो आदमी को घसीटकर सिद्धान्तों की ओर ले जाती है। जब आदमी के ऊपर सिद्धान्तों का नशा चढ़ता है, तब उसका मैग्नेट, उसका आकर्षण, उसकी वाणी, उसकी प्रामाणिकता इस कदर सही हो जाती है कि हर आदमी खिंचता हुआ चला आता है और हर कोई सहयोग करता है। विवेकानन्द को सम्मान और सहयोग दोनों मिला। यह किसने दी थी—काली ने। काली अगर किसी को कुछ देगी तो यही चीज देगी। अगर दुनिया में दुबारा कोई रामकृष्ण जिन्दा होंगे या पैदा होंगे, तो इसी प्रकार का आशीर्वाद देंगे, जिससे आदमी के व्यक्तित्व विकसित होते चले जाएँ। व्यक्तित्व अगर विकसित होगा तो जिसको आप चाहते हैं वह सहयोग बरसेगा। सहयोग माँगा नहीं जाता, बरसता है। आदमी फेंकता जाता है और सहयोग बरसता जाता है। देवत्व जब आता है तब सहयोग बरसता है। बाबा साहब आम्टे का उदाहरण आपके सामने है; जिन्होंने कुष्ठ रोगियों के लिए, अपंगों के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया। यह क्या है ? सिद्धान्त है, आदर्श है और वरदान है। इससे कम में न किसी को वरदान मिला है और न इससे ज्यादा में किसी को मिलेगा। भीख माँगने से न किसी को मिला है और न भविष्य में मिलेगा।

देवता एक काम करते रहते हैं। क्या करते हैं ? फूल बरसाते हैं। रामायण में कोई पचास जगह किस्से आते हैं, जब देवताओं ने फूल बरसाए। फूल क्या बरसाते हैं सहयोग बरसाते हैं। फूल किसे कहते हैं ? सहयोग को कहते हैं। कौन बरसता है ? देवत्व जो इस दुनिया में अभी जिन्दा है। देवत्व ही दुनिया में जिन्दा था और जिन्दा ही रहने वाला है। देवत्व मरेगा नहीं। यदि हैवान या शैतान नहीं मर सका तो भगवान् क्यों मरेगा ? इनसान, इनसान को देखकर आकर्षित होता है और भगवान, भगवान को देखकर आकर्षित होता है। देवता, देवता को देखकर आकर्षित होता है और श्रेष्ठता को देखकर सहयोग आकर्षित करता है। पहले भी यही होता रहा था, अभी भी होता है और आगे भी होता रहेगा।

यहाँ देवता की प्रशंसा कर रहा हूँ। देवता कैसे होते हैं ? देवता ऐसे होते हैं जो आदमी के ईमान में घुसे रहते हैं और उसके भीतर से एक ऐसी हूक, एक ऐसी उमंग और एक ऐसी तड़पन पैदा करते हैं जो सारे के सारे जाल-जंजालों को मकड़ी के जाले की तरीके से तोड़ती हुई सिद्धान्तों की ओर, आदर्शों की ओर बढ़ने के लिए आदमी को मजबूर कर देती है। इसे कहते हैं देवता का वरदान। इससे कम में देवता का वरदान नहीं हो सकता। आदमी के भीतर जब गुणों की, कर्मों की, स्वभाव की विशेषताएँ पैदा हो जाती हैं तो विश्वास रखिए तब उसकी उन्नति के दरवाजे खुल जाते हैं। गुणों के हिसाब से दुनिया के इतिहास में जितने भी आदमी आज तक विकसित हुए हैं, किसी भी क्षेत्र में सफल हुए हैं और जिनके सम्मान हुए हैं, वे प्रत्येक व्यक्ति गुणों के आधार पर बढ़े हैं। देवता का वरदान गुण और चिन्तन की उत्कृष्टता है। संसार के महापुरुषों में से हर एक सफल व्यक्ति का इतिहास यही रहा है। सभी-सभी छोटे-छोटे खानदानों में पैदा हुए थे। छोटे-छोटे घरों में, परिस्थितियों में पैदा हुए थे, लेकिन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन्नति के ऊँचे शिखर पर, ऊँचे से ऊँचे स्थान पर जरूर पहुँचते चले गए। कौन जा पहुँचे ? लालबहादुर शास्त्री को लीजिए, जिनके ऊपर देवता का अनुग्रह था। एक ही अनुग्रह की पहचान है—जिम्मेदारी और समझदारी का होना। भक्त और भगवान के बीच में यही सिलसिला चला है। इनसान के यहाँ और भगवान के यहाँ एक ही तरीका है।

पूजा क्यों करते हैं ? पूजा का मतलब एक ही है—इनसानी गुणों का विकास, इनसानी कर्म का विकास, इनसानी स्वभाव का विकास। आपने जो समझ रखा है कि पूजा के आधार पर यह मिलेगा, वह मिलेगा, यह सारी गलतफहमी इसलिए हुई है। पूजा के आधार पर वस्तुतः दयानतदारी मिलती है, शराफत मिलती है, ईमानदारी मिलती है। आदमी को ऊँचा दृष्टिकोण मिलता है। अगर आपने गलत पूजा की होगी, तब आप भटक रहे होंगे। पूजा आपको इस एक ही तरीके से करनी चाहिए कि जो पूजा के लाभ आज तक इतिहास में मनुष्यों को मिले हैं, हमको भी मिलने चाहिए। हमारे गुणों का विकास, कर्म का विकास, चरित्र का विकास और भावनाओं का विकास होना चाहिए। देवत्व इसी का नाम है। देवत्व अगर आपके पास आएगा तो आपके पास सफलताएँ आवेंगी। हिन्दुस्तान के इतिहास पर दृष्टि डालिए, उसके पन्ने पर जो बेहतरीन आदमी दिखाई पड़ते हैं, वे अपनी योग्यता के आधार पर नहीं, अपनी विशेषता के आधार पर महान् बने हैं। महामना मालवीय जी का उदाहरण सुना है आपने, कैसे शानदार व्यक्ति थे वे। उन पर देवताओं का अनुग्रह बरसा था और छोटे आदमी से वे महान हो गए।

मित्रो ! भगवान जब प्रसन्न होते हैं तो वह चीज नहीं देते जो आप माँगते हैं। फिर क्या चीज देते हैं ? वह चीज देते हैं, जिससे आदमी अपने बलबूते पर खड़ा हो जाता है और चारों ओर से उसको सफलताएँ मिलती हुई चली जाती हैं। सारे के सारे महापुरुषों को आप देखते चले जाइए, कोई भी आदमी दुनिया के पर्दे पर आज तक ऐसा नहीं हुआ है, जिसको दैवी-सहयोग न मिला हो, जिसको जनता का सहयोग न मिला हो, जिसको भगवान् का सहयोग न मिला हो। ऐसे एक भी आदमी का नाम आप बतलाइए जिसके अन्दर से विशेषताएँ पैदा न हुई हों जिनसे आप दूर रहना चाहते हैं, जिनसे आप बचना चाहते हैं। जिनके प्रति आपका कोई लगाव नहीं है। वे चीजें जिनको हम आदर्शवाद कहते हैं, सिद्धान्तवाद कहते हैं, दुनिया के हिस्से का हर आदमी जिसको श्रेय भी मिला हो, धन भी मिला हो। जहाँ आदमी को श्रेय मिलेगा वहीं उसे वैभव भी मिले बिना रहेगा नहीं। सन्त गरीब नहीं होते। वे उदार होते हैं और जो पाते हैं—खाते नहीं, दूसरों को खिला देते हैं। देवत्व इसी को कहते हैं।

आदमी के भीतर का माद्दा जब विकसित होता है तो बाहरी दौलत उसके नजदीक बढ़ती चली जाती है। उदाहरण क्या बताऊँ—प्रत्येक सिद्धान्तवादी का यही उदाहरण है। उन्हीं को मैं देवभक्त कहता हूँ। देवोपासक उन्हीं को मैं कहता हूँ। उन्हीं की देवभक्ति को मैं सार्थक मानता हूँ जो अपने गुणों के आकर्षण के आधार पर देवता को अपने आकर्षण में खींच सकने में समर्थ हुए। आपकी भाषा में कहूँ तो देवता जब प्रसन्न होते हैं तो आदमी को देवत्व के गुण देते हैं, देवत्व के कर्म देते हैं, देवत्व का चिन्तन देते हैं और देवत्व का स्वभाव देते हैं। यह मैंने आपकी भाषा में कहा है। हमारी परिभाषा इससे अलग है। मैं यह कह सकता हूँ कि आदमी अपने देवत्व के गुणों के आधार पर देवता को मजबूर करता है, देवता पर दबाव डालता है उसे विवश करता है और यह कहता है कि आपको हमारी सहायता करनी चाहिए और सहायता करनी पड़ेगी। भक्त इतना मजबूत होता है जो भगवान के ऊपर दबाव डालता है और कहता है कि हमारा ड्यू है। आप हमारी सहायता क्यों नहीं करते ? वह भगवान से लड़ने को आमादा हो जाता है कि आपको हमारी सहायता करनी चाहिए।

कामना करने वाले भक्त नहीं हो सकते। भक्त शब्द के साथ में भगवान की इच्छाएँ पूरी करने की बात जुड़ी रहती है। कामनापूर्ति आपकी नहीं भगवान की। भक्त की रक्षा करने का भगवान व्रत लिए हैं—**'योगक्षेमं वहाम्यहम्'**। यह सही है कि भगवान ने योग क्षेम को पूरा करने का व्रत लिया हुआ है, पर हविस पूरी करने का जिम्मा नहीं लिया। आपका योग और क्षेम अर्थात् आपकी शारीरिक आवश्यकताएँ और मानसिक आवश्यकताएँ पूरी करना उनकी जिम्मेदारी है। आपकी बौद्धिक, मानसिक आवश्यकताएँ पूरी करना भगवान् की जिम्मेदारी है, पर आपकी हविस पूरी नहीं हो सकती। हविसों के लिए, तृष्णाओं के लिए भागिए मत। यह भगवान् की शान में, भक्त की शान में, भजन की शान में गुस्ताखी है, सबकी शान में गुस्ताखी है। भक्त और भगवान का सिलसिला इसी तरह से चलता रहा है और इसी तरीके से चलता रहेगा। भक्त माँगते नहीं दिया करते हैं। भगवान कोई इनसान नहीं हैं, उसे तो हमने बना लिया है। भगवान वास्तव में सिद्धान्तों का समुच्चय है, आदर्शों का नाम है, श्रेष्ठताओं के समुच्चय का नाम है। सिद्धान्तों के प्रति, आदर्शों के प्रति आदमी के जो त्याग और बलिदान हैं, वस्तुतः यही भगवान् की भक्ति है। देवत्व इसी का नाम है।

प्रामाणिकता आदमी की इतनी बड़ी दौलत है कि जनता का उस पर सहयोग बरसता है, स्नेह बरसता है, समर्थन बरसता है। जहाँ स्नेह, समर्थन और सहयोग बरसता है, वहाँ आदमी के पास किसी चीज की कमी नहीं रह सकती। बुद्ध की प्रामाणिकता के लिए, सद्भावना के लिए, उदारता के लिए लोगों ने उनके ऊपर पैसे बिखेर दिए। गाँधीजी की प्रामाणिकता और सद्भावना, श्रेष्ठ कामों के लिए उनकी लगन, उदारता लोकहित के लिए थी। व्यक्तिगत जीवन में श्रेष्ठता और प्रामाणिकता को लेकर चलने के बाद में वे भक्तों की श्रेणी में सम्मिलित होते चले गये। सारे समाज ने उनको सहयोग दिया, दान दिया और उनकी आज्ञा का पालन किया। लाखों लोग उनके कहने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर जेल चले गए, लाखों लोगों ने अपने सीने पर गोलियाँ खाईं। क्या यह हो सकता है ? हाँ ! शर्त एक ही है कि आप प्रकाश की ओर चलें, छाया आपके पीछे-पीछे चलेगी। आप तो छाया के पीछे-पीछे भागते हैं, छाया ही आप पर हावी हो गई है। छाया का अर्थ है माया। आप प्रकाश की ओर चलिए, भगवान् की ओर चलिए, सिद्धान्तों की ओर चलिए। आदर्श और सिद्धान्त इन्हीं का नाम हनुमान है, इन्हीं का नाम भगवान है।

मित्रो ! जो हविस आपके ऊपर हावी हो गई है उससे पीछे हटिए, तृष्णाओं से पीछे हटिए और उपासना के उस स्तर पर पहुँचने की कोशिश कीजिए जहाँ कि आपके भीतर से, व्यक्तित्व में से श्रेष्ठता का विकास होता है। भक्ति यही है। अगर आपके भीतर से श्रेष्ठता का विकास हुआ हो, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको जनता का वरदान मिलेगा। चारों ओर से इतने वरदान मिलेंगे कि जिसको पा करके आप निहाल हो जाएँगे। भक्ति का यही इतिहास है, भक्त का यही इतिहास है। भगवान के अनुग्रह का, गायत्री माता के अनुग्रह का यही इतिहास है, यही इतिहास था और यही इतिहास रहेगा। अगर इस रहस्य को, सार को समझ लें, तो आपका यहाँ आना सार्थक हो जाए। आपका गायत्री अनुष्ठान सार्थक हो जाए, अगर आप इस सिद्धान्त को समझकर जाएँ कि हमको सद्गुणों का विकास करने के लिए तपश्चर्या कराई जा रही है और अगर हमारी यह तपश्चर्या सही साबित हुई तो भगवान हमको यहाँ से विदा करते समय गुण, कर्म और स्वभाव की विशेषता देंगे और हमको चरित्रवान व्यक्ति के तरीके से विकसित करेंगे। चरित्रवान व्यक्ति जब विकसित होता है, तब उदार हो जाता है, परमार्थ-परायण हो जाता है, लोकसेवी हो जाता है, जनहितकारी हो जाता है और अपने क्षुद्र स्वार्थ को देखना शुरू कर देता है। आपकी अगर ऐसी मनःस्थिति हो जाए तो मैं कहूँगा कि आपने सच्ची उपासना की और भगवान् का वरदान पाया।

आप सच्चा वरदान पा करके निहाल हो सकते हैं, जिससे कि आज तक के सारे के सारे भक्त निहाल होते रहे हैं। मैंने इसी रास्ते पर चलने की कोशिश की और अपने जीवन में प्रत्यक्ष रूप से भगवान के वरदानों को देखा और पाया। मैं चाहता था कि आप लोग जो इस शिविर में आए हैं, जो वसन्त के निकट जा पहुँचा है, यह प्रेरणा लेकर जाएँ कि हम पर भगवान कृपा करें कि हमको श्रेष्ठता के लिए, आदर्शों के लिए कुछ त्याग और बलिदान करने की, चरित्र को श्रेष्ठ और उज्ज्वल बनाने के लिए प्रेरणा भीतर से मिले और बाहर से मिले। अगर ऐसी कुछ प्रेरणा आपको मिले तो उसके फलस्वरूप आप जो कुछ भी प्राप्त करेंगे, वह इतना शानदार होगा कि जिससे आप निहाल हो जाएँ, आपका देश निहाल हो जाए, गायत्री माता निहाल हो जाएँ, हम निहाल हो जाएँ और यह शिविर निहाल हो जाए अगर आप इस तरह की कुछ प्राप्ति और उपलब्धि कर सकें। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

देवत्व विकसित करें, कालनेमि न बनें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

अखण्डमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

देवियो ! भाइयो !!

बहुत पुराने समय की बात है, जब रावण सीताजी को चुराकर ले गया था और सबके सामने यह समस्या थी कि मुकाबला कैसे किया जाए ? रावण से युद्ध कैसे किया जाए ? बहुत सारे लोग थे, राजा-महाराजा भी थे, पर किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि रावण से लड़ने के लिए जाए, कौन अपनी जान गँवाए, कौन मुसीबत में फँसे ? इसलिए कोई भी तैयार नहीं हुआ। रामचन्द्रजी कहने लगे कि क्या कोई भी लड़ने हमारे साथ नहीं जाएगा ? तो फिर क्या हुआ ? देवताओं ने विचार किया और कहा कि भगवान के काम में हमको सहायता करनी चाहिए और सुग्रीव की सेना में, हनुमान की सेना में सम्मिलित होकर रावण से लड़ने के लिए चलना चाहिए। देवताओं ने बन्दर रूप बनाया, रीछ का रूप बनाया। कहाँ रावण और कहाँ बेचारे बन्दर, दोनों का कोई मुकाबला नहीं था, फिर भी वे लड़ने के लिए चल पड़े, क्यों ? क्योंकि वे देवता थे। देवता न होते, अगर रीछ-बन्दर रहे होते तो पेड़ों पर कुदक रहे होते, फिर वे सीताजी को छुड़ाने के लिए रामराज्य की स्थापना के लिए, लंका को तहस-नहस करने के लिए भला इस तरह के कार्य कैसे कर सकते थे ? लेकिन उन्होंने किया। आप लोगों को मैं रीछ और बन्दर के रूप में देवता मानता हूँ। आज फिर उसी ऐतिहासिक घटना की पुनरावृत्ति होने जा रही है। आप लोग पहले जन्म में देवता हैं। अकेले में जब कभी आपको शान्ति का समय मिले, एकान्त का समय मिले, तब आप अपने अन्दर झाँककर देखना कि आप रीछ-बन्दर हैं या देवता हैं। वास्तव में आप देवता हैं। देवताओं के सिवाय आड़े वक्त में कोई और काम नहीं आ सकता, देवता ही काम आते हैं। आप लोगों में से हर एक को मुझे यही कहना है कि आपको जब कभी अपने आप में मौका मिले तो कहना कि गुरुपूर्णिमा के दिन गुरुजी ने कहा था कि हमारे भीतर देवता बैठा हुआ है, देवता विराजमान है। देवता जो काम किया करते हैं, वे जिस काम के लिए अपना जीवन लगाया करते हैं, जिसके लिए पुरुषार्थ किया करते हैं, वही पुरुषार्थ हमारे सुपुर्द किया गया है।

एक बात तो मुझे आपसे यही कहनी थी। दूसरी बात यह कहनी थी कि जब महाभारत हुआ था, तब अर्जुन यह कह रहा था कि हम तो पाँच पाण्डव हैं और कौरव सौ हैं और उनके पास विशाल सेना भी है, जबकि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हमारे पास सेना भी नहीं है, थोड़े-से पाँच-पचास आदमी हैं। ऐसे में भला युद्ध कैसे हो सकता है ? हम मारे जाएँगे। इसलिए वह बार-बार मना कर रहा था और कह रहा था कि महाराज हमें लड़ाइए मत, इसमें हमको सफलता नहीं मिल सकती। आप हिसाब लगाइए कि इनसे लड़कर हम फतह कैसे पा सकेंगे ? जीत कैसे सकेंगे ? तब भगवान ने उससे कहा था कि देखो अर्जुन, इन सबको तो मैंने पहले से ही मारकर रखा है और तुम्हारे लिए सिंहासन सजाकर रखा है। तुम पाँचों को सिंहासन पर बैठना पड़ेगा, राज्य करना पड़ेगा, ये तो सब मरे-मराए रखे हैं, तुम तो खाली तीर-कमान चलाओगे। इसी तरह जो काम मेरा था सो मैंने करके रखा है। इस युग को बदलने के सम्बन्ध में जो महत्त्वपूर्ण कार्य करने हैं, उनके सम्बन्ध में आपको श्रेय तो भर लेना है। जीतना किससे है और हारना किससे है ? न किसी से हारना है, न किसी से जीतना है। न किसी को मारना है और न कोई पुरुषार्थ करना है। आपको तो जो विजयी होने का श्रेय मिलना चाहिए और वही श्रेय आपको प्राप्त करना है। अर्जुन ने भी प्राप्त किया था । इससे पहले जब वह ज्यादा बहस करने लगा था कि मेरे बाल-बच्चे हैं, मेरा काम हर्ज हो जाएगा, फलाना हो जाएगा, मुझे टाइम नहीं है, तब कृष्ण भगवान झल्ला पड़े थे और उन्होंने एक हुक्म दिया—**'तस्मात् युद्धाय युजस्व'** लड़, दुनिया भर के बहाने मत बना, लड़ाई कर। भगवान् हमारा क्या होगा ? यह पूछने पर श्रीकृष्ण ने कहा था कि तेरी जिम्मेदारी हम उठाते हैं, तू युद्ध कर।

साथियो ! आज गुरुपूर्णिमा का दिन है, आप में से हर एक आदमी की, देवता की जिम्मेदारी हम उठाते हैं। देवता जब रीछ-वन्दर बनकर चले आए थे तो पीछे उनके घर बीवी-बच्चे रह गए थे, कुटुम्ब रह गया था, उन सबको भगवान ने सँभाला था। आपके घर को सँभालने की, व्यापार को सँभालने की, खेती-बाड़ी को सँभालने की, हारी-बीमारी को सँभालने की जिम्मेदारी हमारी है और यह सब जिम्मेदारियाँ हम उठाते हैं। आप हमारा काम कीजिए हम आपका काम करेंगे। हम आपको यकीन दिलाते हैं, आप हमारा विश्वास कीजिए हम आपका काम जरूर करेंगे। पिता ने बच्चे का हर काम किया है। पिता से बच्चे ने जब जो माँगा है, दिया है। जब टॉफी माँगी है तो टॉफी दी है, झुनझुना माँगा तो झुनझुना दिया है। तुम तो छोटे बच्चे हो, इसलिए यही माँगते रहते हो। अब आगे से जो भी कहना हो बेटे लिखकर दे जाना। लिखना और कहना बराबर है और फिर हमारा जवाब सुनते जाना और नोट करके ले जाना कि गुरुजी ने यह वायदा किया है कि चौबीस पुरश्चरणों का जो पुण्य पहले कमाया था उसका और अब हमको तीन साल हो गए हैं, एकान्त मौन रहकर साधना की है, उसकी पुण्य-सम्पदा जो हमारे पास जमा है, उसमें आपका हिस्सा बराबर है। माँ के पेट में जब बच्चा आता है, तब कानूनन उसका हक बाप की जायदाद पर हो जाता है। इसी तरह हमारी कमाई पर आपका हक है। प्रार्थना मत कीजिए, निवेदन मत कीजिए, मनुहार मत कीजिए, वरदान मत माँगिए। आप अपना हक माँगिए, हम आपका काम करते हैं और आपको हक चुकाना पड़ेगा। आप बीमार रहते हैं तो हम आपकी बीमारी को अच्छा करेंगे। आप पैसे की तंगी में आ गए हैं तो हम उस तंगी को भी दूर करेंगे। आप लड़ाई-झगड़े में फँस गए हैं तो हम उसमें भी आपकी मदद करेंगे। आप पर मुसीबत आ गई है तो आपकी ढाल बनकर उस मुसीबत को रोकेंगे।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन का रथ चलाया था, आपका रथ हम चलाएँगे। काहे का रथ ? आपके कारोबार का रथ, आपके व्यापार का रथ ? आपके धन्धे का रथ, आपके शरीर का रथ, आपकी गृहस्थी का रथ—यह सब हम चलायेंगे, इसका हम वायदा करते हैं, लेकिन साथ-साथ आपसे यह निवेदन भी करते हैं कि आप हमारे रास्ते पर आइए, साथ-साथ चलिए। हमारे कन्धे से कन्धा मिलाइए। इसमें आपको कोई नुकसान नहीं होगा। आप यह यकीन रखिए हमने उन विरोधियों को मारकर रखा है और विजय की माला आपके लिए गूँथकर रखी है। पाँचों पाण्डवों के लिए विजय की मालाएँ बनी हुई रखी थीं। आपको पहनना है, आपको श्रेय भर लेना है। यह जो नवयुग का क्रम चल रहा है, उसमें जब आप भागीदार होंगे तो श्रेय आपको ही मिलेगा। आप पूछें—गुरुजी हमारे बीबी-बच्चों का क्या होगा ? बेटे, उनकी जिम्मेदारी हमारी है। यदि वे बीमार रहते हैं तो हम उनकी बीमारियाँ दूर कर देंगे। व्यापार में नुकसान होता है तो तेरे उस नुकसान को पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है। तेरे व्यापार में जो घाटा पड़ जाए तो तू हमसे वसूल ले जाना। लेकिन जब बच्चा बड़ा हो जाता है, तब कुछ बड़ी चीज दी जाती है जो छोटे बच्चे को नहीं दी जा सकती। अब आप जवान हो गए हैं। अब कोई बच्चा नहीं दिखाई पड़ता, आप सब जवान हो गए हैं। अब हम सबको काम-धन्धे से लगाएँगे और जो हमारे पास बाकी बचा है वह भी आप सबको बाँट देंगे। नहीं गुरुजी, जब आप जाएँगे तब अपनी कमाई भी अपने संग ले जाएँगे ? बेटे, हम ऐसा नहीं करेंगे। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हमारी जो भी कमाई है, वह सब आपको देकर जाएँगे। चाहे वह पुण्य की कमाई हो, चाहे वह सांसारिक कमाई हो, चाहे आध्यात्मिक कमाई हो। उस कमाई में तुम्हारा हिस्सा है।

साथियो ! हमने जीवन भर दिया है। बाप-दादों की दो हजार बीघे ज़मीन थी, वह हम दे आए और स्त्री के पास जेवर था, वह भी हम दान में दे आए। बच्चों की गुल्लक में पैसे थे वह भी हम दे आए। अब आपके पास कुछ और धन है ? नहीं बेटे, धन के नाम पर एक कानी कौड़ी का लाखवाँ हिस्सा भी हमारे पास नहीं है। आपको तलाशी लेना हो या मरने के बाद पता लगाना हो कि गुरुजी के पास क्या मिला, तो मालूम पड़ेगा कि शान्तिकुंज में एक ऋषि रहा करता था और यहाँ की रोटी खाया करता था। बेटे, धन के नाम पर हमारे पास कुछ भी नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, लेकिन हाँ एक पूँजी है हमारे पास, यदि वह न होती तो हम इतनी बड़ी बात क्यों कहते ? हमारे पास वह पूँजी है तप की, जिसको हम सामान्य क्लास का कहते हैं। जिससे हम आपकी मुसीबतों में, कठिनाइयों में सहायता कर सकते हैं। दूसरा वह जिसमें हम आपको संसार का नेता बनाना चाहते हैं। हमको भगवान ने नेता बनाकर भेजा है। चाणक्य को नेता बनाकर भेजा था। वह नालन्दा विश्वविद्यालय के डीन थे। अब्राहम लिंकन को, जार्ज वाशिंगटन को, गारफील्ड को नेता बनाकर भेजा था। विनोबा को नेता बनाकर भेजा था। हम भी आपमें से हर एक आदमी को नेता बनाना चाहते हैं, नेता बनाने की हमारी इच्छा है। आपकी इच्छाएँ क्या हैं, यह हमको मालूम हो या न हो तो आप लिखकर दे जाना। हमारा एक क्रम है। जब हम बैठते हैं तब देख लेते हैं। रात में हमारा क्रम पूजा-उपासना का रहता है। सबेरे से लेकर दोपहर तक हम अपना लेख लिखते हैं ताकि अखण्ड ज्योति बीस साल तक बराबर निकलती रहे। बीस साल के लिए लेख और जो पुस्तकें लिखनी हैं, वह हम सब लिखकर रख जाएँगे। जब यह युगसन्धि समाप्त होगी और सन् २००० आएगा, उस वक्त तक आप यह अनुभव करेंगे कि गुरुजी जो लिखकर रख गए थे, उनकी लेखनी में कोई फर्क नहीं आया, उनके अक्षरों में कोई फर्क नहीं आया। उनकी पुस्तकों में, पत्रिकाओं में कोई फर्क नहीं आया। मिशन में कोई फर्क नहीं आया है और न ही आएगा। दोपहर बाद तो अब हमने मिलना भी शुरू कर दिया है। पाँच-पच्चीस आदमी को ऊपर बुला भी लेते हैं। यह हमारा दोपहर से शाम तक का क्रम है। इस तरीके से कभी आएँगे तो जब किसी को बहुत जरूरी काम हो तो मिल लेना। सांसारिक कठिनाइयाँ हों तो माताजी से कह देना। यह महकमा मैंने माताजी के जिम्मे कर दिया है। संसार की आपको जितनी कठिनाइयाँ हों, सब माताजी से कहिएगा। कोई आध्यात्मिक बात हो या कुछ ऊँचा उठना हो तो हमारे पास आवें। हम आपके बड़े कदम उठाने में मदद करेंगे। हमने इस दुनिया में बड़े कदम उठाए हैं और बड़े कदम उठाने के लिए आपसे भी कहते हैं। दो बातें हो गई हैं आप ध्यान रखना।

एक और बात मैं अपने सबूत में आपको बताता हूँ जो विश्व के एक बहुत बड़े भविष्यवक्ता ने सैकड़ों वर्ष पूर्व कही थीं। संसार में ऐसे भविष्यवक्ता तो बहुत-से हैं जो हाथ देखकर यह बताते हैं कि तेरा विवाह कब हो जाएगा, पैसा कब आएगा, कब क्या हो जाएगा ? इसी तरह जन्मपत्री बनाने वाले बहुत-से लोग हैं, किन्तु दुनिया में एक ऐसा व्यक्ति भी हुआ है, जिसने सारे संसार की राजनीति के बारे में लिखा है। जिसमें से आठ सौ भविष्यवाणियाँ सही हो चुकी हैं। एक हजार वर्ष पहले हुआ था, वह था—नोस्ट्राडेमस। उसने ऐसी भविष्यवाणियाँ की थीं, जो एकोएक सौ फीसदी सही हो जाती थीं। ब्रिटेन का तब नामोनिशान नहीं था, जब नोस्ट्राडेमस पैदा हुआ था। स्काटलैण्ड था, आयरलैण्ड था, इंग्लैण्ड था, पर ब्रिटेन नहीं था, लेकिन उसमें लिखा था कि ब्रिटेन बनेगा, इतने दिनों तक राज्य करेगा और सन् १९४२ में इसका सिराजा बिखर जाएगा और अब जितना भी उसका राज्यमण्डल है सब खत्म हो जाएगा। वह सब एक-एक अक्षर सही हुआ। यह तो नमूने के लिए बता रहा हूँ। उसकी ऐसी भविष्यवाणियाँ कवितामय पुस्तक में लिपिबद्ध हैं, जिसे फ्रान्स के राष्ट्रपति मितराँ सिरहाने रखकर सोया करते हैं। उस कवितामय पुस्तक पर हजारों आदमियों ने टिप्पणियाँ की हैं। उसी में से एक आप अखण्ड-ज्योति के अगले अंक में पढ़ेंगे, जो उसने हिन्दुस्तान के बारे में की है। उसकी भविष्यवाणी है कि हिन्दुस्तान का अध्यात्म और पाश्चात्य का तत्व-विज्ञान यह दोनों आपस में मिल जाएँगे, पाश्चात्य भौतिक विज्ञान और अध्यात्म मिल जाएँगे, रूस और हिन्दुस्तान मिल जाएँगे, चीन से अमेरिका की लड़ाई हो जाएगी, आदि-आदि बहुत-सी भविष्यवाणियाँ हैं। उन बहुत-सी भविष्यवाणियों में से आपके काम की एक ही है कि हिन्दुस्तान सारी दुनिया का नेतृत्व करेगा, जैसा कि आजकल अमेरिका कर रहा है। चाहे वह बम बनाए, चैलेंजर बनाए, स्टारवार की योजना बनाए, किन्तु बाद का नेतृत्व भारत करेगा। हिन्दुस्तान को सारी दुनिया का नेतृत्व करने के लिए बड़े कर्मठ व्यक्ति चाहिए, बड़े शक्तिशाली और क्षमतासम्पन्न व्यक्ति चाहिए, बड़े लड़ाकू योद्धा चाहिए, बड़े इंजीनियर चाहिए, बड़े-बड़े समर्थ आदमी चाहिए और वही मैं तलाश कर रहा हूँ। बेटे, तुममें योग्यता नहीं है तो तुम्हें योग्यता हम देंगे। तुम्हारी खेती-बाड़ी को ही नहीं सँभालूँगा, वरन् योग्यता भी दूँगा, ताकि तुम संसार का नेतृत्व कर सको।

नालन्दा विश्वविद्यालय के तरीके से हमने यहाँ नेता बनाने का एक विद्यालय बनाया है। नालन्दा विश्वविद्यालय में चाणक्य जहाँ पढ़ाता था, उसमें दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे एक साथ। हमारी भी इच्छा है कि हम दस हजार विद्यार्थी एक साथ पढ़ाएँ, पर यहाँ इतने विद्यार्थियों के लिए जगह नहीं है। अभी यहाँ कल तक साढ़े अट्ठाइस सौ आदमी थे, आज चार हजार हो गये हैं। ठूँस-ठूँसकर भी रखना चाहें तो चार हजार से अधिक व्यक्ति नहीं आ सकते, जबकि हमारा मन है कि जिस तरीके से चाणक्य दस हजार आदमियों को पढ़ाता था और पढ़ाकर के हिन्दुस्तान से लेकर सारे विश्व में अपने आदमी भेजता था। चन्द्रगुप्त को उसने चक्रवर्ती राजा बनाया था। हमारी भी इच्छा है कि ऐसे-ऐसे नेता बनाएँ, पर बना नहीं सकते, क्योंकि जगह हमारे पास कम है। ऐसे में पढ़ा नहीं सकते तो फिर क्या योजना है ? कुछ नई स्कीम है, जो आज गुरुपूर्णिमा के दिन कहना है और वह यह है कि प्रज्ञा विद्यालय तो चलेगा यहीं, क्योंकि केन्द्र तो यही है, शक्ति का उद्भव यहीं होगा। जनरेटर तो यहीं लगेगा, लेकिन जगह-जगह प्रज्ञा पाठशालाओं की स्थापना हमें करनी है। इसके लिए आप सब जितने भी आदमी हैं, उनको एक काम सौंपते हैं। एक महीने की प्रज्ञा पाठशालाएँ तो यहीं होंगी, पर पन्द्रह दिन की पाठशाला क्षेत्रों में शक्तिपीठों पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

चलेंगी। यहाँ बड़े साइज का प्रमाण-पत्र उत्तीर्ण होने पर दिया जाता है, पर वहाँ छोटे साइज का दिया जाएगा। परीक्षा ली जाएगी और वहाँ भी हम नेता बनाएँगे। आपको हम हिन्दुस्तान का ही नहीं, सारे विश्व का नेता बनाने वाले हैं। हिन्दुस्तान में हमने दस-दस गाँवों के खण्ड काटे हैं और उन्हें एक-एक व्यक्ति के सुपुर्द किया है और कहा कि आप अपने यहाँ प्रज्ञा पाठशालाएँ चलाएँ। पिछले साल आप लोगों ने हमारे कहने पर किसी ने यज्ञ किए, किसी ने शक्तिपीठ बनाए, किसी ने क्या किया, हजारों काम बताए और लोगों ने किए हैं। इस वर्ष अब आप सब लोग यह विचार लेकर जाएँ कि या तो हम प्रज्ञा पाठशाला चलवाएँगे। इस कार्य में कोई रुकावट नहीं आवेगी।

आज गुरुपूर्णिमा के दिन से आप लोग एक काम यह करना कि हमेशा यह अनुभव करना कि आप देवता हैं। रीछ-वन्दर का लिवास पहने बैठे हैं। कोई कुर्ता पहने बैठा है, कोई धोती पहने बैठा है, कोई चश्मा लगाए बैठा है, तो कोई कुछ किए बैठा है, पर आप हैं वास्तव में देवता, जो किसी खास काम के लिए, खास उद्देश्य के लिए, किसी खास निमन्त्रण पर आप काम करने के लिए आए हैं। यह हुई बात नम्बर एक। दो, जो आपको मुश्किल जान पड़ती है कि संसार में से बुराइयाँ कैसे दूर होंगी और अच्छाइयों की वृद्धि कैसे होगी ? इस सम्बन्ध में नोस्ट्राडेमस की राजनीतिक भविष्यवाणी तो हमने बता दी है और अब अपनी स्वयं की भविष्यवाणी बताते हैं कि हमने आपके वैरियों को, दुश्मनों को मार दिया है। वे मरे हुए रखे हैं और आपके लिए श्रेय जीवित है, सौभाग्य जीवित है। आपके लिए मुकुट जीवित है, बड़प्पन जीवित है, आप उस बड़प्पन को उठा लेना। आज आपसे तीसरी बात यह कहनी थी कि नालन्दा विश्वविद्यालय बनाने का हमने संकल्प लिया था कि एक लाख कार्यकर्त्ता हम देश को, समाज को, विश्व को देंगे। इस काम में आप लोग हमारी मदद कीजिए और पन्द्रह-पन्द्रह दिन के लिए अपने यहाँ प्रज्ञा पाठशाला चलाने के लिए कोशिश कीजिए। हम वहाँ पढ़ाने के लिए तो नहीं आएँगे, पर अपनी शक्ति देंगे, अपनी बुद्धि देंगे, अपनी भावना देंगे, अपना प्राण देंगे, अपना जीवट देंगे—सब चीज देंगे, इसलिए जब आदमी जाएगा तो कुछ का कुछ होकर जाएगा।

कितने काम हो गए, तीन—एक और काम कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनना। हमने जो लड़ाई छेड़ी है वह दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध छेड़ी है और सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन की छेड़ी है। रामराज्य की स्थापना की छेड़ी है और लंका-दमन की छेड़ी है। यह काम बहुत बड़ा है और इसमें कुछ मुसीबतें भी आएँगी, पर उन मुसीबतों को आप तक नहीं पहुँचने देंगे। उन मुसीबतों को अपने ऊपर लेते रहेंगे। राणा सांगा जो था, उसे जहाँ कहीं भी दीखता कि उसके साथियों पर गाज गिरी, उनके ऊपर की तलवार अपने शरीर पर झेल जाता था। उसने ढेरों आदमी इस तरह बचा दिए थे। जब उसके शरीर पर अस्सी घाव हो गए तब वह बेहोश हो गया और अपना काम बन्द कर दिया। अस्सी घाव खाने तक तो कोई मुसीबत आपके ऊपर नहीं आवेगी। मुसीबत आएगी तो हमारे ऊपर आएगी। पहले भी आई थी। श्रीकृष्ण भगवान् के पास आई थी। रामचन्द्र जी पर भी मुसीबत आई थी। सीताहरण हो गया था। किसी का क्या हो गया ? लेकिन हमारे ऊपर एक और तरह की मुसीबत आएगी, जिसकी जानकारी आपको देना चाहता हूँ। वह मुसीबत इस तरह की है, जैसे कि कालनेमि ने पैदा की थी। कालनेमि रावण का कुटुम्बी था। स्कन्द पुराण में कथा आती है कि वह सबकी बुद्धि बिगाड़ देता था। छोटा भाई कुम्भकरण था। उसने योगाभ्यास किया, तप किया। वह चाहता था कि ६ महीने जगा करूँ और एक दिन सोया करूँ, लेकिन कालनेमि ने उसकी ऐसी बुद्धि बिगाड़ दी, भ्रष्ट कर दी कि कुम्भकरण यह माँगने लगा कि ६ महीने सोया करूँ और एक दिन जगा करूँ। अगर वह ६ महीने जगा होता तो रावण का ढेर हो गया होता। इसी तरह मारीचि ने भी तप किया था। वह स्वर्ग चाहता था, पर कालनेमि ने उसकी ऐसी बुद्धि भ्रष्ट की और कहा कि तू यह मत माँग कि मैं स्वर्ग जाऊँ, वरन् यह माँग कि सोने का हिरण बन जाऊँ। कारण, चमड़े वाले को तो मारता है एक आदमी, पर सोने वाले को मारेंगे सौ आदमी। बेचारा छिपा-छिपा बैठा रहता था अपने वेष को बनाए। एक बार सोने का वेष बनाया, सो सीता जी के कहने पर रामचन्द्र जी ने उसे मार डाला।

कालनेमि की कथा सुना रहा हूँ—स्कन्द पुराण की आपको। पूतना के कोई बाल-बच्चे नहीं थे। कालनेमि ने उससे कहा कि तेरे बच्चा नहीं होता है तो तू जादू का मंत्र लेकर जा और श्रीकृष्ण को दूध पिला दे। तेरा दूध पिएगा तो अपनी माता को भूल जाएगा और तेरे पास रहने लगेगा। कालनेमि के बहकावे में आकर पूतना बेचारी गई कि मेरे बेटा नहीं होता तो बेटा ले जाऊँ और बेटा तो मिला नहीं, उल्टे थुक्केफजीहत और हुई। सूर्पनखा से कालनेमि ने कहा—तू ब्याह करेगी ? उसने कहा—हाँ। वह बोला—राक्षस तो काले-कलूटे होते हैं, माँस खाते हैं, शराब पीते हैं और गाली देंगे और मारेंगे भी। हम तुझे ऐसा दूल्हा बताते हैं कि उससे खूबसूरत तुझे दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा। बस तेरे जाने भर की देर है, तू गई और ब्याह हुआ। दूल्हे का नाम राम है। उसके पिता के तीन ब्याह हुए थे राम के दो ब्याह करा देंगे। सीताजी भी बनी रहेंगी और तू भी बनी रहेगी और राजगद्दी पर बैठेगी। तू गोरी होगी और तेरे बच्चे भी गोरे होंगे। सूर्पनखा कालनेमि के बहकाने पर रामचन्द्र जी के पास गई और अपनी फजीहत कराकर लौटी। उसकी बुद्धि जो बिगाड़ दी थी कालनेमि ने। मन्थरा की भी बुद्धि बिगाड़ दी थी उसने। उससे कहा कि भरत के साथ तेरा ब्याह करा देंगे। ये जो कैकेयी है वह जाएगी मर और तू रानी बनेगी, राज्य करेगी। उसको समझा करके भरत के लिए राज्य माँग ले। मन्थरा ने कैकेयी को पट्टी पढ़ाकर अपना काम बनाना चाहा। इस तरह दुनिया भर की अंडम-बंडम करके उसने मंथरा की भी मिट्टी पलीद की।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कालनेमि की जो यह घटना है वह हमारे ऊपर भी लागू होती है। हमारे प्राणों से प्यारे बच्चे, हमारे हृदय के टुकड़ों को अलग करके, बहका करके इनको हमसे दूर करने की कोई कालनेमि कोशिश कर रहा है। तो गुरुजी आपका नुकसान हो जाएगा ? नहीं, बेटा, हमारा क्या नुकसान हो जाएगा ? अभी ये लड़के गा रहे थे—'कोई साथ न दे तो अकेला चल।' अकेले चल देंगे हम। अकेले वामन ने सारी जमीन नापी थी। अकेले परशुराम ने सारी पृथ्वी पर से इक्कीस बार भार उतारा था और अकेले हम भी कम नहीं हैं, लेकिन हमको अपने बच्चे प्यारे लगते हैं। बच्चों को कोई छीन न ले जाए, चुरा न ले जाए, अगर कोई घर में से बच्चों को उठा ले जाए तो माँ-बाप को दुःख होता है। हमें भी दुःख होता है जब कोई कालनेमि हमारे बच्चों को हमसे दूर कर देता है, बागी कर देता है। अपने ये जो बच्चे हैं, उनकी हमें फिकर है कि कोई कालनेमि उनकी बुद्धि को भ्रष्ट न कर दे। कालनेमि से हमारा नुकसान है। उसकी हमें फिकर रहती है और कोई फिकर नहीं। न मिशन की फिकर रहती है और न मरने की, न काम की। मिशन बढ़ रहा है और वह बढ़ेगा ही। काम भी हो रहा है। उसकी फिकर थोड़े ही है। काम तो बढ़ ही रहा है। गंगा में बाढ़ तो आएगी, रुकेगी नहीं। उसे कोई रोकने वाला नहीं है। मिशन के लिए हम नहीं कहते कि आप कोई सहायता कीजिए। कहते हैं तो इसलिए कि नफा होगा आपको। आप नेता हो जाएँगे। सरदार पटेल, नेहरू, जार्ज वाशिंगटन, अब्राहम लिंकन बन जाएँगे। नेता बनना जिनको पसन्द होवे आगे आएँ, कदम से कदम और कन्धे से कन्धा मिलाकर चलें। साथ नहीं चलेंगे तो योग्य आदमी कैसे बनेंगे ?

आज और कुछ नहीं कहना है, केवल इतना ही कहना है कि जो हमारे बच्चे हैं, जिनको हमने पैदा किया है, पाला है, वे हमारी छाती से अलग न होने पावें। आप हमारी छाती से अलग हो जाएँगे तो हमें बहुत दुःख होगा, कष्ट होगा। किसी और बात से हमें दुःख नहीं होगा, पर जब ये छोटे-छोटे बच्चे जिनसे हमने बड़ी उम्मीदें लगाकर रखी हैं, वे अगर बागी होते दीखेंगे, विरोधी होते दीखेंगे तो हमें बेहद कष्ट होगा। कालनेमि से तो कहना ही क्या है वह तो भगवान ने ही बनाया है। अगर वह न होता तो लंका का सत्यानाश न होता। रावण सीताजी को नहीं चुराता, यह कालनेमि की माया ही थी अन्यथा किसकी हिम्मत थी जो रावण सहित लंका का सफाया करता। जहाँ कहीं भी कालनेमि गया वहीं हाहाकार पैदा किया। बस चौथी बात यही कहनी है कि हमारा कोई भी बच्चा हमारी छाती से अलग न होने पाए। कोई चोर, कोई बाबाजी इन्हें अपनी झोली में डालकर ले जाएगा तो हमको दुःख होगा कि हमारा प्यारा बच्चा हमसे दूर हो गया। कितना कष्ट होगा आप नहीं समझते ? आपने तो नेतागीरी देखी। पार्टियों की फजीहत देखी है कि किस तरीके से फूट डाली जाती है और कैसे अलग किया जाता है ? आपने तो यही किस्से देखे हैं, वे किस्से नहीं देखे हैं कि मिल-जुलकर कैसे रहते हैं ? एक होकर कैसे रहते हैं ?

चार बातें हो गईं बेटा, अच्छा ध्यान रखना। हमने एक बात तो यह कही है कि आप रीछ-वानर के रूप में देवता हैं। दूसरी यह कि तुम्हें श्रेय देने के लिए दुश्मनों को मारकर रख दिया है और तुम्हारे लिए राजसिंहासन बनाकर रख दिया है। तुम उसको ग्रहण करना। तीसरी बात यह कि तुम अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों के बारे में परेशान मत होना। तुम्हारी व्यक्तिगत कठिनाइयाँ कौन हल करेगा ? हमारा पुण्य, हमारा तप करेगा। हमारा पुण्य जो पिछले समय से आया है, वह हर एक के काम आयेगा और किसी के काम नहीं आयेगा। हमारा काम रुकने वाला नहीं है, वह बढ़ता ही जाएगा। बस आप तो अपने आपको कालनेमि से बचाए रखना। बहक जाएँगे तो हमें दुःख होगा कि हमारा कैसा प्यारा बच्चा था ? कितने प्यार और मोहब्बत से इसको हमने पाला था और देखो आज यह कहाँ फिर रहा है ? चोरों के यहाँ फिर रहा है, भिखारियों के यहाँ फिर रहा है। कहाँ-कहाँ धक्के खा रहा है। ऐसा आप लोग मत करना। यह चार बातें कहनी थीं आपसे। बसन्त पंचमी के बाद अब व्याख्यान दिया है। आज इतना ही बहुत है। इन्हीं बातों पर बार-बार विचार करना। आपके काम की देखभाल हम करेंगे। आप देवता है, ध्यान रखना। आपको श्रेय लेना है, सिंहासन लेना है। आपको नेता बनना है और किसी झोली वाले बाबाजी से होशियार रहना है कि वह झोली में डालकर भाग खड़ा नहीं हो। बस आपसे विदा लेते हैं।

ॐ शान्ति।

अपने ब्राह्मण एवं सन्त को जिन्दा कीजिए

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आप में से अधिकांश व्यक्ति सोच रहे होंगे कि मैं यहाँ था, परन्तु व्याख्यान क्यों नहीं दिया ? विशेष कारणवश व्याख्यान न दे सका। बेटे ! मैं अपने जीवनभर प्रयोग करता रहा हूँ। कौन-कौन से प्रयोग किये हैं ?

पहले ब्राह्मण बनने का प्रयोग किया कि ब्राह्मणत्व के क्या-क्या चमत्कार हो सकते हैं ? मैंने उसे अपने जीवन में धारण करके देखा है और पाया है कि इसमें सफलताएँ भी हैं तथा चमत्कार भी हैं। ब्राह्मण जीवन किसे कहते हैं ? किफायतसारी जीवन को कहते हैं। ब्राह्मण उसे कहते हैं जो अपना खर्च कम से कम में चला सकता हो तथा अधिक से अधिक अपना धन, अक्ल, मेहनत, समाज में लगा सकता है, जिससे उसके जीवन का लक्ष्य, समाज का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लक्ष्य पूरा होता हो। जिस आदमी के पास कुछ बचता ही नहीं है, वह समाज को क्या देगा ?

हमें यह कहना होगा कि अध्यात्मवादी बनने के लिए किफायतसारी बनना होगा, ब्राह्मण बनना होगा। हमने इसका प्रयोग किया है तथा लाभ पाया है। हमने अपना खाने-पीने तथा रहने का ढंग ब्राह्मण का रखा है। अपने जमीन के बाबत जो कुछ हमें मिला था, उसे गायत्री तपोभूमि के लिए दान कर दिया। मैंने अपनी पत्नी से पेशवा ब्राह्मणों की उपमा देते हुए कहा कि आपको भी यह जीवन जीना चाहिए। पेशवा के राम टांक ने अपने गुरु की पत्नी के आदेश पर सब कुछ दे दिया था। इन्होंने भी अपने सारे गहने गायत्री तपोभूमि के लिए लगा दिये। पैसों की दृष्टि से हम खाली हाथ हो गये, परन्तु शक्ति बहुत मिल गई।

मित्रो ! धन की और बल की शक्ति नहीं होती है। वह ब्राह्मणत्व की शक्ति होती है। यह मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ। मैं ब्राह्मण था और अब भी ब्राह्मण हूँ। जो कुछ भी आप देख रहे हैं यह ब्राह्मणत्व का चमत्कार है। इस दुनिया में मित्रो, एक ही बिरादरी रह गई है जिसका नाम बनिया है। बाकी सारी बिरादरी मर गई हैं—एक ही जिन्दा है वह है बनिया। सारे के सारे क्षेत्र में बनिया ही वनिया छाया है। ब्राह्मण कहीं नहीं। परन्तु हम ब्राह्मण हैं, इस पर हमें गर्व है तथा सन्तोष है। अगर कोई अपने को ब्राह्मण बना सकता हो, अपने खर्च और लागत को कम कर सकता हो तथा नीयत में ब्राह्मणत्व है तो हमें प्रसन्नता होगी, परन्तु आपके नीयत में तो चाण्डाल वसा हुआ है। आदमी को गरीब भी होना पड़ेगा, यह हमने ब्राह्मण का प्रयोग करके देखा है।

दूसरा वाला प्रयोग हमने किया—साधु का। जिसका नाम तपस्वी है। हमने अपने सारे छिद्रों को बन्द कर दिया। यह दूसरा कदम है। काँटे पर चलने वाले का नाम तपस्वी नहीं है। ठण्डे पानी से नहाने वाले का नाम तपस्वी नहीं है। उस आदमी का नाम साधु और तपस्वी है, जिसने अपने आप को तपाया, उसका नाम तपस्वी है, उसका नाम साधु है। हमने अपने आप को तपाया है। अक्ल की दृष्टि से आदमी से ज्यादा बेईमान, बहुरूपिया कोई नहीं है। हमने अपनी अक्ल को ठीक कर लिया है। आप भी मारे डण्डों से अपनी अक्ल को ठीक करें। हमने अपनी हर चीज को तपाया, भीतर वाले हिस्से को भी तपाया। हमने अपने मन को, बुद्धि को तपाया है, पर आपकी बुद्धि तो ऐसी चाण्डाल है, ऐसी पिशाचिनी है कि क्या कहें ? किसी के जिन्दगी की समस्या को हल करने का सवाल था तो आपकी अक्ल, आपकी बुद्धि ने ऐसी मक्कारी की कि क्या कहना ? पैसे से लेकर समय तक हमने केवल समाज के लिए खर्च किया। यह कसा हुआ जीवन हमारा तपस्वी का जीवन है। मन्त्रों में शक्ति है, गलत बात नहीं है। देवताओं में शक्ति है, यह भी गलत नहीं है, किन्तु, अगर कोई आदमी तपस्वी है तो वह हर काम को कर सकता है। अपने अनुष्ठान काल में हमने किसी से बात नहीं की, कोई भी अन्य चीज नहीं खायी। जौ की रोटी एवं छाछ, बस यही दो चीजें हम खाते रहे।

जैसे हमने अनुष्ठान खत्म किया कि एक व्यक्ति आये जो नकली रेशम बनाते थे, उन्होंने कहा कि हम आपको गुरु बनायेंगे। उन्होंने सवा रुपया हमारे हाथ पर रखा। इस पर हमने सोचा कि तब तो हम ब्राह्मण नहीं हो सकते हैं, हम मजदूर हैं। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण को तो लेना चाहिए। यह आज से लगभग ३५-४० साल पहले सन् १९४५-४६ की बात है, उस सज्जन को लेकर हम बाजार गये। उस जमाने में ठण्डी में बिछाने के लिए पुराने कपड़ों के तथा रूई की हाथ से बनी दरियाँ दो रुपये में मिलती थीं। उससे वही चीजें खरीदकर जरूरतमन्दों में बाँट दी, पर अपने लिए हमने उसे स्वीकार नहीं किया। हमारी अक्ल एवं जो भी चीज हमारे पास थी, उसे हम हमेशा बाँटते चले गये। उस आदमी ने कुछ दिनों के बाद हमारे पास दो सौ रुपये भेजे। हमने उसे गायत्री तपोभूमि के मन्दिर बनाने में लगा दिया। यह वह पहला आदमी था जिसने हमें पैसा भेजा था। यह घटनाएँ सुना रहा हूँ मैं आपको अपने तपस्वी जीवन की। इसी तरह हमारे सारे कार्य होते चले गये। कोई काम हमारा रुका नहीं।

एक प्रयोग वाणी के संयम का हम सुनाते हैं आपको। हम चाहते थे कि हम मौन धारण कर लें तथा वैखरी वाणी का प्रयोग कम करें। हमने जितना व्याख्यान दिया है, दुनिया में शायद ही किसी व्यक्ति ने व्याख्यान दिये होंगे। हमारे व्याख्यानों से लोगों के कायाकल्प हो गये जैसे रामकृष्ण परमहंस के व्याख्यान से हुआ था लेकिन जो लोग रीछ का तमाशा, रीछ का व्याख्यान सुनने आये, उनको कोई फायदा नहीं हुआ। जिन लोगों को हम व्याख्यान देते हैं, उसे सूँघकर जब देखते हैं, चखकर के देखते हैं कि आदमी कैसा है ? घटिया है या वजनदार ? तो वें हमें छोटे-छोटे आदमी घटिया आदमी दिखाई पड़ते हैं। हमें वजनदार आदमी दिखाई नहीं पड़ते हैं। वजनदार आदमी माने 'सिद्धान्तों के आदमी'। सिद्धान्तों को सुनने वाले, मानने वाले, उस पर चलने वाले, सिद्धान्तों को जीवन में उतारने वाले कोई नहीं दिखाई पड़ते हैं। लोगों पर गुस्सा न करके अपने पर गुस्सा न करूँ तो क्या करूँ ? आपको मालूम है, जब आदमी मरने को होता है तो बहुत-से आदमी मिलने आते हैं। बहुत-सी शक्ति खर्च होती है। कोई कहता है ताऊ जी अच्छे हैं, कोई कहता है कि हमें आशीर्वाद दे दीजिये। इससे बातें करने में बहुत शक्ति खर्च होती है। इसमें भीतरी शक्ति बेहद खर्च होती है इसलिए हमने विचार किया है हम मिलना बन्द कर देंगे। हम अपनी वैखरी वाणी को दूसरे काम में खर्च करेंगे। वैखरी वाणी कम हो जाएगी, तब पश्यन्ती वाणी, मध्यमा वाणी का उपयोग करेंगे ताकि हम ज्यादा काम कर सकें ? बिना बातचीत किये ही ज्यादा काम कर सकते हैं तथा वातावरण को गर्म कर सकते हैं। बेटे ! अरविन्द घोष ने, महर्षि रमण ने इस प्रकार का प्रयोग किया था और सारा हिन्दुस्तान गर्म हो गया था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैखरी वाणी के माध्यम से अनावश्यक शक्तियाँ खर्च होती चली जाती हैं। इसलिए मैंने विचार किया कि अब इसका खर्च कम करेंगे। भगवान की शक्ति बहुत है, अबकी बार मैंने प्रयोग किया। अब बोलने की बात कम करता जाऊँगा। इस काम में समय को कम खर्च करता जाऊँगा और लोगों से बातें कम करता जाऊँगा, कारण अधिकांश लोग अपनी राम कहानी लेकर आते हैं। अनावश्यक भीड़ आ जाती है और कहती है कि हमारा मन नहीं लगता, ध्यान नहीं लगता। बेकार की बातें लोग करते हैं, यह नहीं कि मतलब की बातें करें। बेकार की बातें करने में अब हम समय खर्च नहीं करेंगे। वाणी से बात नहीं होगी तो क्या आप निष्ठुर हो जाएँगे। नहीं बेटे हमने ब्राह्मण के बाद सन्त के रूप में कदम बढ़ाया है। सन्त उसे कहते हैं, जिसका मन करुणा से लबालब भरा हुआ होता है। जो दाड़ी बढ़ा लेता है, रँगा हुआ कपड़ा पहन लेता है, ध्यान कर लेता है, उसे सन्त नहीं कहते हैं। करुणा से भरा हुआ व्यक्ति ही सन्त कहलाता है। जब तक हम हैं तब तक हम समाज के लिए काम करते रहेंगे।

एक हमारा प्याऊ जो कभी सूखेगा नहीं। जो पसीने से लथपथ हो गये हैं, थक गये हैं, हमारे प्याऊ पानी, हमारी तपस्या में से उनको देते रहेंगे, उन्हें हरा-भरा बनाये रखेंगे। आप, सब लोग हमारे प्याऊ से पानी पी सकते हैं। ब्राह्मण, सन्त का जीवन चलता रहेगा। हम प्याऊ बन्द नहीं कर सकते हैं। हमने एक चिकित्सालय—डिस्पेन्सरी खोला है। जो भी दुःखी हमारे पास आये, हमने उसे छाती से लगाया। उसकी बीमारी का, दुःख का बराबर ख्याल रखा। सन्त का काम भाव-संवेदना का है। हमें अपने बच्चे को खिलाना है, बच्चों की देखभाल करनी है, बच्चों को गुब्बारा बाँटना है, बच्चों के चेहरे पर मुसकराहट देखनी है। ये चीज़ें देखकर हमको खुशी होती है। हम बच्चों के स्कूल चलाते हैं। इसका मतलब क्या है ? हमारा अस्पताल चलता है, डिस्पेन्सरी चलती है। प्याऊ चलाने से क्या मतलब है ? यह आध्यात्मिक बात है। यह सन्त की बातें हैं। तो क्या आप सन्त की दुकान बन्द कर देंगे ? नहीं, बन्द नहीं करेंगे, जब तक हम जिन्दा हैं। आगे भी चलता रहेगा।

आप लोगों को हमने कई बार कहा है, हजार बार कहा है कि आपकी जो समस्याएँ हैं, उसे आप लिखकर देवें। आप आधा घण्टे भी भगवान का नाम नहीं ले सकते हैं। आप कहते हैं कि हम आपके रास्ते पर चल सकते हैं। बेकार की बातें मत कीजिये। तराजू हमारे पास है। हम जानते हैं, हमारा भगवान जानता है कि आप क्या हैं ? इसलिए हमने इस बार यह कहना शुरू कर दिया है कि आप हमारा समय नष्ट करने के बजाय लिखकर दे जाइये। आप यहाँ न ध्यान करने आते हैं, न पूजा करने आते हैं, न मतलब की बात करने आते हैं, केवल घूमने आते हैं, किराया खर्च करते हैं। आप हमें बेअकल समझते हैं। हम आपकी नस-नस जानते हैं। इसलिए हमने वैखरी वाणी से बोलना बन्द कर दिया है। हमारे गुरु हम से वैखरी वाणी से नहीं बोलते, पश्यन्ती वाणी से बोलते हैं, परावाणी से बोलते हैं। आपकी बातों को हमने सुन लिया है और कहा है कि बेकार की रामकहानी कहकर हमारा समय क्यों खराब करते हैं ? हमे रामकहानी से क्या मतलब है, आप मतलब की बात कहिये।

साथियो ! हमारे मौन धारण करने का एक और कारण है। आप यह मत सोचिये कि मैं अपना प्याऊ बन्द करने जा रहा हूँ। हमें बच्चों को खिलाने का शौक है। हमें बच्चों को प्यार करना, उन्हें गुब्बारा देना बहुत प्यारा लगता है। स्वयं घोड़ा बन जाना तथा बच्चों को पीठ पर बैठा लेना तथा घुमाना बहुत प्यारा लगता है।

हम जो भी सहायता आपकी कर सकते हैं, वह अवश्य करेंगे, परन्तु आपको भी स्वयं में संवेदना पैदा करनी होगी। हमने लोगों से वायदे कर रखे हैं, खासकर बिहार और राजस्थान वालों से, जहाँ हमारा जाना हुआ नहीं। गायत्री तपोभूमि से आने के बाद हम कहीं नहीं गये। गुजरात में दो बार चक्कर लगाये, मध्यप्रदेश में दो चक्कर लगाकर आये हैं। यू. पी. में भी एक चक्कर लगाकर आये हैं, बिहार एकदम खाली पड़ा है और हम राजस्थान में भी कहीं नहीं गये हैं। अब इन प्रान्तों में जाना ही होगा। दो महीने हम जाएँगे ही, जाना ही होगा। हम जब यहाँ रहेंगे नहीं तो आपसे बातें कैसे करेंगे ? इसलिए हमने कहा है कि आप उपासना करिये, जप करिये ताकि आपको उस समय परा एवं पश्यन्ती वाणी से दिशा दे सकूँ, अन्यथा मैं अपने मौन की शक्ति प्रेषित करूँगा और आपको नुकसान होगा।

मेरे गुरु के व्याख्यान देने का कार्य बन्द हो गया तो क्या उनकी शक्ति कम हो गई ? हम नहीं बोल रहे हैं, हमारा गुरु बोल रहा है। आप भी उनकी शक्ति से बोलेंगे। प्रज्ञापुराण जब आप पढ़ेंगे और लोगों को सुनाएँगे तब वह आपकी वाणी में नहीं, बल्कि मेरे गुरु की वाणी में होगा, जिसमें अधिक ताकत होगी। आपकी वाणी में कोई ताकत नहीं होगी, आप ऐसे ही बकवास करते रहेंगे। हम मौन हो जाएँगे तो हमारी शक्ति बढ़ जाएगी। हमारी परा एवं पश्यन्ती वाणी की ताकत बढ़ जाएगी। आप मेरी उस वाणी को सुनेंगे तो आपके आँखों में पानी आएगा, भाव-संवेदना जगेगी। इससे हम आपकी सहायता ज्यादा कर सकेंगे।

आप क्या सोचते हैं कि आप लोगों के ऊपर हमारा कोई असर नहीं पड़ता है। यह हमारा मौन ब्राह्मणत्व है। यह तपस्वी की वाणी है। हमने सेवा करने में सन्त की प्रवृत्ति को जिन्दा रखा है, कि हम समाज की सेवा करेंगे। आज व्यक्ति की सेवा ज्यादा है, समाज की सेवा गौण हो गयी है।

हमारे मरने के बाद आप देखेंगे कि गुरुजी के मरने के बाद उनका समय, धन, श्रम किस काम में खर्च हुआ है। हमारी शक्ति एवं सामर्थ्य बच्चों को खिलाने में, अस्पताल खोलकर मरीजों की सेवा में खर्च हुई है। हमने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अभी तक समाज को चालीस प्रतिशत दिया है और लोगों को, दुखीयारे को पाँच प्रतिशत दिया है। अब हमारा मन है कि इसका हिस्सा बढ़ाया जा सके। जब हम मौन धारण कर लेंगे तो हमारा ब्राह्मण और जाग जाएगा, उस समय हम व्यक्तियों की भी ज्यादा सेवा कर सकेंगे। ठोस सेवा कर सकेंगे। अभी तक हमारी सहानुभूति का अंश ज्यादा रहा है, सेवा का हिस्सा कम रहा है। हमने सहानुभूति दी है तथा पायी है। अगर हमने किसी की एक किलोग्राम सेवा की है तो उसमें पाँच सौ ग्राम सहानुभूति भी है। उस समय हम साधन सम्पन्न एवं समर्थ थे। पर अगले दिनों जब जीवात्मा को हम और ऊपर उठा लेंगे तब हम अधिक सेवा कर सकेंगे। आपके लिए हमने कुछ किया है या नहीं ? इसका सबूत देखना हो तो दृष्टि पसारकर देखिये कि कुछ हुआ है, तो आप पायेंगे कि इसी कारण से यह पचास लाख आदमी हमसे जुड़े हैं, अन्यथा इतने आदमी कहाँ से आते ? यह हम कहाँ कहते हैं कि कुछ नहीं हुआ। ५० लाख आदमी हमारे एक इशारे पर खड़े हो सकते हैं। इतने शक्तिपीठ कहाँ से बन गये ? ५० लाख मुट्ठियाँ ५० लाख लोगों का एक घण्टे का समयदान कुछ मायने रखता है।

हम अपने ब्राह्मण को फिर जिन्दा करेंगे। सन्त दानी होता है। आदमी को दानी बनने के लिए सन्त बनना होगा। हम ब्राह्मण और सन्त को पुनः जिन्दा करेंगे। ब्राह्मण जमा करता है, सन्त उसे खर्च कर देता है। हमने निश्चय किया है, विचार किया है कि जिन्दगी के इन आखिरी क्षणों में अपने ब्राह्मण एवं सन्त को साधकर सबके लिए एक मिसाल स्थापित कर दूँ।

क्या हम जिन्दगी भर, अपने बीबी-बच्चों को ही खिलाते रहेंगे ? जिस पर मनुष्य का भविष्य टिका है, क्या उसके लिए कुछ नहीं कर सकेंगे ? अपने लिये अधिक, समाज के लिए इतना कम। यह कैसे होगा ? मेरे गुरु ने दुखियारों की सेवा, समाज की सेवा कम की है, परन्तु उसने सारे विश्व को हिला दिया है। दूसरों के दुःखों को देखकर यह सोचते हैं कि इसके लिए हम क्या करें ? उस समय मैं रो पड़ता हूँ तथा उसे सहायता किये बिना मेरा मन नहीं मानता है। यह क्रम चलेगा ही। परन्तु एक काम और है, इनसान को ऊँचा उठाने का। हम सोचते हैं कि और यदि यह काम भी किया होता तो मजा आ जाता। आप जितने लोग बैठे हैं, अगर आपको हम फुटबॉल की तरह ऊँचे उछाल दिये होते तो मजा आ जाता। आप लोगों को उछाल दें तो आप में से हर एक आदमी हनुमान, ऋषि विवेकानन्द दिखाई पड़ेगा। आप लोगों में से एक भी आदमी ऐसा नहीं जो विवेकानन्द न हो। आप में से एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जो रैदास की तुलना में गरीब हो। परन्तु आप इतने भारी हैं कि आपके सेल्स काम नहीं कर रहे हैं, आपके हाथ उठ नहीं पा रहे हैं। मानसिक दृष्टि से एक-एक बेड़ियाँ इतनी भारी हैं जैसे हजार मन की हों। ऐसे में आपको कैसे उठाऊँ ? आपकी बेड़ियों को मैं काटूँगा क्योंकि हमारे बाद इन बच्चों को खिलाने वाला, नर्सिंगहोम चलाने वाला कहाँ से लायेंगे ? यह अस्पताल बन्द हो जाने पर आपके अनुभव के बिना इनका ऑपरेशन कौन करेगा ? इनसान को उठाया नहीं जा सका तो बात कैसे बनेगी ?

इसी काम के लिए हम समय लगाना चाहते हैं। सवाल हमारे समय का है, आप तो केवल पूजा के पीछे पड़े हैं। देवी-देवता के पीछे लगे हैं कि मनोकामना पूरी हो जाए। किसी दिन मेरे दिमाग में गुस्सा आ गया तो पूजा को ही बन्द कर दूँगा और कहूँगा कि इसी के पीछे पड़ा है। पूजा के चक्कर में पड़ा है। पूजा से आज्ञाचक्र जगेगा। सुन लेना एक दिन मैं पूजा को गालियाँ दूँगा, यदि यही रटता रहा कि सब कुछ पूजा से मिल जाएगा और यही समझता रहा कि माला घुमाने को पूजा कहते हैं। देवी-देवता को पकड़ने का नाम पूजा है। अज्ञानी लोग, भ्रमित लोग मनुष्य को दबाने तथा चक्कर में डालने के नाम को पूजा कहते हैं। देवी-देवताओं को पकड़ने के लिए, मनोकामना पूर्ण करने के लिए जो आपने पूजा का स्वरूप बना रखा है, वह बहुत ही घटिया रूप है। पूजा ऐसी नहीं हो सकती, देवता ऐसे नहीं हो सकते, अध्यात्म ऐसा नहीं हो सकता, ध्यान ऐसा नहीं हो सकता, जैसा कि आप लोगों ने समझ रखा है कि अगरबत्तियाँ चढ़ाएँगे, चावल चढ़ाएँगे, शक्कर की गोली चढ़ाएँगे और मनोकामना पूर्ण हो जाएगी। इतना घटिया अध्यात्म नहीं हो सकता है जैसा कि आप लोगों ने सोच रखा है। आपकी पूजा घटिया, आपके देवता घटिया सब घटिया हैं। इसको समझना चाहिए।

हर रोज चिट्ठियाँ आती हैं, हर शाखाओं में मारकाट-मारकाट। मुझे मैनेजर बनाइये, इस मैनेजर को निकालिये। हमने शाखा तथा शक्तिपीठें इसलिए नहीं बनाई थीं, देवता को इसलिए नहीं बैठाया था कि लोगों का अहंकार बढ़े। हमने ट्रस्टी इसलिए नहीं बनाया था कि इसे बरबाद करो। हमने स्वयं गलती की इन लोगों को मालिक, ट्रस्टी बनाकर, इनके अहंकार एवं स्वार्थपरता को आगे बढ़ाकर। अब पंचायत समितियों में जिस प्रकार झगड़ा होते हैं, हमारे शक्तिपीठों में भी हर जगह चाण्डालपन है, हमें क्या दिखता नहीं ? क्या हमने शक्तिपीठें इसीलिए बनाई थीं, पूजा इसीलिए प्रारम्भ की थी, इसलिए संगठन बनाया था कि आप लोग अहंकारी बन जाइये और आपस में ही एक-दूसरे की टाँग-खिंचाई कीजिये। आप ऐसी पूजा को बन्द कीजिये। पूजा मत कीजिये, पर यह घटियापन बन्द कीजिये। आप नास्तिक हो जाइये, भले ही, पर आप इसी तरह के संगठन बनाना बन्द कर दीजिये। आप शक्तिपीठों को बनाना बन्द कर दीजिये।

यहाँ हम एक बात अवश्य कहेंगे कि आप आध्यात्मिकता के मौलिक सिद्धान्तों को समझिये। पूजा को पीछे हटाइये, आध्यात्मिकता के मौलिक सिद्धान्तों को समझिये। आप यह मत सोचिये कि गुरुजी ने चौबीस-चौबीस लाख का जप किया था। नहीं, हम और चौबीस लाख के जप करने वालों का नाम बता सकते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो आज बिल्कुल खाली एवं छूछ हैं। जप करने वाले कुछ नहीं कर सकते हैं, हम ब्राह्मण की शक्ति, सन्त की शक्ति जगाना चाहते हैं। आप राम का नाम लें या न लें। अब तो मैं यहाँ तक कहता हूँ कि अब माला जप करें या न करें, एक माला जप करें या १९ माला जप करें, परन्तु मुख्य बात यह है कि आप अपने ब्राह्मणत्व को जगाइये। प्याऊ को कौन चलायेगा। हनुमान चालीसा पाठ करने वालों ने कितनों का भला किया है ? ब्राह्मणों ने भला किया है, सन्तों ने भला किया है। ब्राह्मण की वाणी में, सन्तों की तपस्या में बल होता है। आपको इसी प्रकार कोई मिल जाएगा तो आप नास्तिक हो जाएँगे। आप पूजा का महत्त्व बढ़ाते हैं। खबरदार ब्राह्मणत्व का महत्त्व बढ़ाइये, सन्तों का महत्त्व बढ़ाइये। अध्यात्म इन लोगों के द्वारा ही टिका हुआ है।

आपके पास बैंक में धन जमा नहीं है, तो चैक कैसे काट सकते हैं। आपकी बैंक में पूँजी होनी चाहिए। पहले जमा तो कीजिये कुछ। केवल पूजा से ही काम चलने वाला नहीं है। हमारी सबसे बड़ी पूजा समाज की सेवा है। हमने लाखों आदमियों की ही नहीं, वरन् सारे विश्व की सेवा की है। हमने अपनी अक्ल, धन, अनुष्ठान, वर्चस् सभी इसी में लगाया है। हमने खेती करने वालों, मकान बनाने वालों को देखा है कि सेवा के नाम पर नगण्य हैं।

आप अकेले चलें। हमारे गुरु अकेले चले हैं। हम अकेले चले हैं। आप भी अकेले चलिये। संगठन के फेर में मत पड़िये। आपको बोलना नहीं आता है। आप कहते हैं कि व्याख्यान सिखा दीजिये। आप हैं कौन ? हमें बतलाइये। भाषण से क्या होगा ? आप हमारी बात मानिये। आपको बोलना नहीं आता है तो हम क्या करें ? आप पोस्टमैन का काम करिये। हम बोलना सिखा देंगे। लड़कियों को सिखा दिया था। महाराज जी हमें भी बोलना सिखा दीजिये। आप त्याग करके तो हमें बतलाइये। जवाहरलाल नेहरू एवं शास्त्री जी को गाँधी जी ने खादी बेचने को कहा था। वे घर-घर जाकर खादी बेचते थे। घर-घर धकेल गाड़ी लेकर जाते थे तथा लोगों से कहते थे कि आप खादी पहनिये तो क्या वे खादी बेचते थे ? हाँ बेटे खादी बेचते थे।

आप अपने आप को निचोड़िये। ये हमारा बेटा, यह हमारी पत्नी। देखना यही तुझे ऐसा मारेंगे कि तुझे याद रहेगा। हमारा बेटा, हमारी पत्नी—यही रटता रहेगा कि कुछ समाज के लिए, भगवान् के लिए भी करेगा। नहीं गुरुजी हम तो हनुमान चालीसा पढ़ते हैं, गायत्री चालीसा पढ़ते हैं। अरे स्वार्थी कहीं का, तेरी तो अक्ल खराब हो गयी है। अहंकार बढ़ गया है। हमने आप में से हर किसी को कहा है कि आप ब्राह्मण बनिये। नहीं गुरुजी, हमने तो चन्दा इकट्ठा कर लिया, तो हम क्या करेंगे इसका ? आप आदमी तो बनें पहले आप आदमी बनना सीखें। आप घटियापन छोड़िये, सुबह से शाम तक काम कीजिये। पात्रता बढ़ाइये।

ऋषियों ने अपने रक्त को एक घड़े में भरा था, जिससे सीताजी उत्पन्न हुई थीं। आपको भी संस्कृति की सीता की खोज करनी है। समाज के लिए, संस्कृति के लिए आप भी अपना समय, अपना पैसा निकालिये, अपना रक्त निकालिये। आप अपने आप को निचोड़िये तो सही। निचोड़ने के नाम पर अँगूठा दिखाते हैं, त्याग के नाम पर जीभ निकालते हैं। बकवास के नाम पर, घूमने के नाम पर बिना मतलब के आडम्बर बना रखे हैं। अपने आपको निचोड़िये। आप अपने को यदि निचोड़ेंगे तो फिर देख लेना आप क्या बन जाते हैं ? हमने अपने आपको निचोड़ा तो देखिये क्या बन गये ?

अगर आपने अपने आपको निचोड़ दिया तो हमारा एक काम जरूर करना और वह यह, कि हमारे विचार—हमारी आग को लोगों तक पहुँचाना। हम लेखक नहीं हैं। हमारे लिखे शब्दों में से आग निकलती है। विचारों की आग, भावनाओं की क्रान्ति की आग निकलती है। आज जनता भी प्यासी, हम भी प्यासे हैं हमारी विचारधारा ही आग है। हम आग उगलते हैं। हम लेखक नहीं हैं। हमारे लेखनी में से निकलती है आग, मस्तिष्क में से निकलती है आग, हमारी आँखों में से निकलती है आग। हमारे विचारणा की आग, भावनाओं की आग, संवेदनाओं की आग को आप घर-घर पहुँचाइये। आप में से हर आदमी को लालबहादुर शास्त्री, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल होना चाहिए। गाँधी जी के आदेश पर वे खादी धकेल पर रखकर बेचने गये थे।

ईसाई मिशन की महिलाएँ भी घर-घर जाती हैं और यह कहती हैं कि हमारी एक पैसा की किताब जरूर खरीदिये। अगर अच्छी न लगे तो कल मैं वापस ले लूँगी। अरे यह किताब बेचना नहीं है बाबा, मेरे विचार को घर-घर पहुँचाना है। आप लोगों के जिम्मे हमारा एक सूत्रीय कार्यक्रम है। आप जाइये अपने को निचोड़िये। आपका घर का खर्च यदि १००० रुपये है तो निचोड़िये इसको और उसमें से बचत को ज्ञानयज्ञ के लिए खर्च कीजिये। हमारी आग को बिखेर दीजिये, वातावरण को गरम कर दीजिये, उससे अज्ञानता को जला दीजिये। आप लोग जाइये और अपने आपको निचोड़िये। ज्ञानघट का पैसा खर्च कीजिये तो क्या हम अपनी बीबी को बेच दें ? बच्चे को बेच दें ? चुप कंजूस कहीं के ऊपर से कहते हैं हम गरीब हैं। आप गरीब नहीं कंजूस हैं।

हर आदमी के ऊपर हमारा आक्रोश है। हमें आग लग रही है और आप निचोड़ते नहीं हैं। इनसान का ईमान, व्यक्तित्व समाप्त हो रहा है। आज शक्तिपीठें, प्रज्ञापीठें जितनी बढ़ती जा रही हैं, उतना ही आदमी का अहंकार बढ़ता जा रहा है। आपस में लड़ाई-झगड़े बढ़ते जा रहे हैं। सब हविश के मालिक बनते जा रहे हैं। हम चाहते हैं कि अब पन्द्रह-बीस हजार में फूस के शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ बन जाते तो कम से कम लोगों का राग-द्वेष, अहंकार तो नहीं बढ़ता। आज आप लोगों से एक ही निवेदन है कि आप हमारी आग स्वयं बिखेरिये, नौकरी से नहीं, सेवा से।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आप जाइये एवं हमारा साहित्य पढ़िये तथा लोगों को पढ़ाइये और हम क्या कहना चाहते थे। हम दो ही बात आपसे कहना चाहते हैं—पहली हमारी आग को घर-घर पहुँचाइये दूसरी ब्राह्मण एवं सन्त को जिन्दा कीजिये ताकि हमारा प्याऊ एवं अस्पताल चल सके, ताकि लोगों को, अपने बच्चों को खिला सकें तथा उन्हें जिन्दा रख सकें तथा मरी हुई संस्कृति को जिन्दा कर सकें। आप ११ माला जप करते हैं—आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। यह जादूगरी नहीं है। किसी माला में कोई जादू नहीं है। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि मनोकामना की मालाएँ, जादूगरी की माला में आग लगा दीजिये, आप मनोकामना की माला, जादूगरी की माला, आज्ञाचक्र जाग्रत करने की माला को पानी में बहा दीजिये।

तो क्या करें महाराज जी ? आप अपने ब्राह्मणत्व को जगा दीजिये, साधु को जगा दीजिये ताकि आप अपनी नाव स्वयं पार कर सकें, अन्यथा हम यही कहेंगे कि शायद हमारा तप कम है नहीं तो कहीं न कहीं हमें ब्राह्मण, साधु मिल ही जाते। आपके पास धन नहीं तो अपनी भावना, विचार, श्रद्धा तो समाज में बिखेर ही सकते हैं। वही बिखेरिये, सन्त बनकर अपना परिचय दीजिये। सन्त दानी होता है, सन्त उदार होता है।

हमारा मन था कि अपने बचे हुए शेष दिनों में ब्राह्मण तथा सन्त का काम अधिक से अधिक कर सकूँ। लोगों की मध्यमा वाणी से, परावाणी से अधिक से अधिक सेवा कर सकूँ। यह हमारा मन है, मैं आप को एक ही बात कह सकता हूँ कि आप अपने को निचोड़िये-निचोड़िये, बचत कीजिये—आपके श्रम, समय, धन और विचारणा-भावना की समाज को जरूरत है, संस्कृति को जरूरत है। इसे विलासिता में खर्च मत कीजिये। अगर किसी में ब्राह्मणत्व एवं सन्त जिन्दा है तो उसे निचोड़िये। उसे आप बिखेर दीजिये। हमने प्रार्थना की है कि यदि आप लोगों में कहीं भी किसी भी कोने में यदि ब्राह्मणत्व या सन्त जिन्दा हो तो वह जग जाये। उपासना-साधना के नाम पर आप जादूगरी बन्द कीजिये। देवता को गुमराह करने वाली, मनोकामना सिद्ध करने वाली पूजा बन्द कीजिये।

साधना किसे कहते हैं आपको मालूम नहीं ? आप हनुमान जी की पूजा करते हैं, सन्तोषी माता की पूजा करते हैं। यह मन्त्र है, न यन्त्र है, न पूजा है। आप हनुमान जी या सन्तोषी माता को साधते हैं। अरे पहले अपने आपको तो साधिये न, पर यह जो जादूगरी आप करते हैं, वह बदमाशी के सिवा कुछ नहीं है। अगर आप पूजा-उपासना करते हैं तो ठीक, यह आपकी मर्जी है, पर यह न तो कोई मन्त्र जप है, न भजन है, यह मात्र धूर्तगीरी है। पूजा के नाम पर यदि आप ऐसी बदमाशी करते हैं तो आपकी मर्जी, पर इससे कुछ होने वाला नहीं है। पहले आप समर्पण करना सीखिये, यह मोटी-मोटी बातें थीं, जो हमने किसी तरह से आपसे कह दीं।

हमारे गुरुजी की यही मर्जी है कि हम आप में से हर आदमी में से ब्राह्मण तथा सन्त को जिन्दा करें और हम यही चाहते हैं कि अगर हमारे अन्दर बल हो तथा आपके अन्दर ब्राह्मणत्व तथा साधु हो तो वह जिन्दा हो जाए। इस विदाई के अवसर पर यही कहकर हम आप लोगों को विदा कर रहे हैं। मित्रो, गुरुजी ने हमेशा दिया है, आगे भी देते रहेंगे, शर्त एक ही है कि आप अपनी ब्राह्मण तथा सन्त की प्रवृत्ति जिन्दा करें। आप जाइये एवं अपने-अपने कामों में जुट जाइये।

ॐ शान्ति।

भाव-संवेदना का विकास करना ही साधुता है

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मेरे प्यारे बच्चो !

हमारे तुम सबके बीच आने का एक ही उद्देश्य है कि हम समाज को सही व्यक्ति देकर जाएँ। व्यक्ति होते तो यह सारा समाज नया हो जाता। सारे समाज का कायाकल्प हो जाता। पचास आदमी गाँधी के, बुद्ध के साथ थे। वे युग-परिवर्तन कर सके, क्योंकि उनके पास काम के इनसान थे। विवेकानन्द के पास निवेदिता व कुछ काम के व्यक्ति थे। आज जहाँ देखो, वहीं जानवर नजर आते हैं। यदि काम के इनसान होते तो जमीन पलट दी गई होती। तुम सब यहाँ आए हो तो काम के आदमी बन जाओ। हमने जीवन भर व्यक्ति के मर्म को छुआ है व अपना ब्राह्मण स्वरूप खोलकर रख दिया है। नतीजा यह कि हमारे साथ अनगिनत आदमी जुड़े। तुम यदि सही अर्थों में जुड़े हो तो अपना भीतर वाला हिस्सा भी लोकसेवी का बना लो व समाज के लिए कुछ कर डालने का संकल्प ले डालो।

यहाँ शान्तिकुंज में न्यूनतम पाँच सौ कार्यकर्त्ताओं की, आदमियों की सही मायने में जरूरत है। आदमियों के लिए जमीन प्यासी है व आकाश प्यासा है। यदि पूर्ति हो जाए तो सारा सपना हमारा पूरा हो जाए। हमने ठहरने, खाने-पीने की सारी व्यवस्था कर दी है। यहाँ आने वाला हर व्यक्ति अध्यात्म के, समाज-सेवा के रंग में रँग कर जाए, यही हमारा उद्देश्य है। यह काम अकेले सम्भव नहीं है। तुम्हारा सहयोग इसके लिए हमें चाहिए। इसके लिए हमें तुमसे और कुछ भी नहीं केवल व्यक्तित्व की साधना व तुम्हारा निष्काम समर्पण चाहिए।

गाँधी जी ने अपने साथ में रहने वाले सभी व्यक्तियों का व्यक्तित्व बना दिया था। वे, जो पूरी तरह जुड़े, धन्य हो गए। श्रेय-सौभाग्य के अधिकारी बने। तुम भी सही अर्थों में जुड़ जाओ तो तुम सबका व्यक्तित्व बने, सभी सँवर जाएँ। आज से ६३ वर्ष पूर्व हमने वसन्त पर्व पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने भगवान से दीक्षा ली थी। यह कहा था कि अब 'मैं' समाप्त होता हूँ व 'आप' जीवित होते हैं। आपकी इच्छा प्रमुख, मेरी इच्छा गौण। समर्पण किया था हमने। अनगिनत उसकी उपलब्धियाँ हैं। हमारा व्यक्तित्व हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने शानदार बना दिया। तुम सबका भी ऐसा ही बन जाए, यदि तुम मन व आत्मा से समर्पण कर दो। यह हम कह इसलिए रहे हैं कि कहीं भावावेश में घर छोड़कर आए हो व मन में तुम्हारे दुःख-क्लेश बना रहे, इसके स्थान पर एक ही बार में सारी स्थिति स्पष्ट हो जाए। कहीं के तो बन सको तुम।

हमने जो समर्पण किया, उसके बदले में हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने हमें स्वयं सौंप दिया। हमारे अन्दर प्रभावोत्पादकता भर दी। वाणी में, लेखनी में, व्यक्तित्व में, दैनन्दिन आचरण में। यही तुम्हारे अन्दर भी आ जाएगी। भगवान् के हम कोई सम्बन्धी थोड़े ही हैं, जो उनने हमारे साथ कोई विशेष पक्षपात किया हो। तब तुम्हें भी क्यों नहीं वही सब मिल सकता है जो हमें मिला। बस कसौटी एक ही 'अहं' को गलाना, विसर्जन, समर्पण। जब तक अहंकार जिन्दा है, आदमी दो कौड़ी का है। जिस दिन यह मिट जाएगा आदमी बेशकीमती हो जाएगा। 'अहं' ही है, जिसके कारण न सिद्धान्त, न सेवा, न आदर्श आ पाते हैं। व्यक्ति लोकसेवा के क्षेत्र में प्रवेश करके भी उच्छृंखल स्तर का अनगढ़ बना रहता है। तुम्हें ईसामसीह की बात सुनाता हूँ। उनके शिष्य ने उनसे कहा कि हम भी आपके समान महान और बड़ा बनना चाहते हैं। हम क्या करें ? तो उन्होंने एक ही जवाब दिया—बच्चो, जीवन भर मैं तिनका बना, विनम्र बना, गला तथा इसलिए इतने बड़े वृक्ष के रूप में विकसित हो सका। अपनी इच्छा समाप्त कर दी तो सही अर्थों में बड़े बन गए। पहले तुम सब भी तिनके के समान छोटे बनो। तुम वैसा बन गए तो पेड़ बन सकोगे, इसमें कोई सन्देह नहीं है। वास्तव में सेण्टपाल भी इसी प्रकार सच्चे ईसाई थे। वे ईसा के बाद विकसित हुए। उनकी पीढ़ी के दूसरे महापुरुष भी विनम्रता-सेवा भावना, निरहंकारिता के कारण ही बने।

व्यक्ति को पहचानने की एक ही कसौटी है कि उसकी वाणी घटिया है या बढ़िया। व्याख्यान कला अलग है। मंच पर तो सभी शानदार मालूम पड़ते हैं। प्रत्यक्ष सम्पर्क में आते ही व्यक्ति नंगा हो जाता है। जो प्राण वाणी में है, वही परस्पर चर्चा-व्यवहार में परिलक्षित होता है। वाणी ही व्यक्ति का स्तर बताती है। व्यक्तित्व बनाने के लिए वाणी की विनम्रता जरूरी है। प्याज खाने वाले के मुँह से, शराब पीने वाले के मुँह से जिस प्रकार गन्ध आती है, पायरिया वाले मसूड़े के मुँह से जो बदबू आती है, वाणी की कठोरता ठीक इसी प्रकार मुँह से निकलती है। अशिष्टता छिप नहीं सकती। यह वाणी से पता चल ही जाती है। अनगढ़ता मिटाओ, दूसरों का सम्मान करना सीखो। तुम्हें प्रशंसा करना आता ही नहीं मात्र निन्दा करना आता है। व्यक्ति के अच्छे गुण देखो, उनका सम्मान करना सीखो। तुरन्त तुम्हें परिणाम मिलना चालू हो जाएँगे। वाणी की विनम्रता का अर्थ चाटुकारिता नहीं है। फिर समझो इस बात को। कतई मतलब नहीं है चापलूसी—वाणी की मिठास से। दोनों नितान्त भिन्न चीजें हैं। दूसरों की अच्छाइयों की तारीफ करना, मीठी वाणी बोलना एक ऐसा सद्गुण है, जो व्यक्ति को चुम्बक की तरह खींचता व अपना बनाता है। दूसरे सभी तुम्हारे अपने बन जाएँगे, यदि तुम यह गुण अपने अन्दर पैदा कर लो। इसके लिए अन्तः के अहंकार को गलाओ। अपनी इच्छा, बड़प्पन, कामना, स्वाभिमान को गलाने का नाम समर्पण है, जिसे तुमसे करने को मैंने कहा है व इसकी अनन्त फलश्रुतियाँ सुनाई हैं। अपनी इमेज विनम्र से विनम्र बनाओ। मैनेजर की, इंचार्ज की, बॉस की नहीं, बल्कि स्वयंसेवक की। जो स्वयंसेवक जितना बड़ा है, वह उतना ही विनम्र है, उतना ही महान बनने के बीजांकुर उसमें हैं। तुम सबमें वे मौजूद हैं। अहं की टकराहट बन्द होते ही उन्हें अन्दर टटोलो कि तुमने समर्पण किया है कि नहीं। यही पर्यवेक्षण इस श्रावणी पर्व पर अपने अन्तरंग का करो।

हमारी एक ही महत्त्वाकांक्षा है कि हम सहस्रभुजा वाले सहस्रशीर्षा पुरुष बनना चाहते हैं। तुम सब हमारी भुजा बन जाओ, हमारे अंग बन जाओ, यह हमारी मन की बात है। गुरु-शिष्य एक-दूसरे से अपने मन की बात कहकर हल्के हो जाते हैं। हमने अपने मन की बात तुमसे कह दी। अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना हमारे बनते हो ? पति-पत्नी की तरह, गुरु व शिष्य की आत्मा में भी परस्पर व्याह होता है, दोनों एक-दूसरे से घुल-मिलकर एक हो जाते हैं। समर्पण का अर्थ है—दो का अस्तित्व मिटाकर एक हो जाना। तुम भी अपना अस्तित्व मिटाकर हमारे साथ मिला दो व अपनी क्षुद्र महत्त्वाकांक्षाओं को हमारी अनन्त आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाओं में विलीन कर दो। जिसका अहं जिन्दा है, वह वेश्या है। जिसका अहं मिट गया, वह पवित्रता है। देखना है कि हमारी भुजा, आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो ? इसके लिए निरहंकारी बनो। स्वाभिमानी तो होना चाहिए, पर निरहंकारी बनकर। निरहंकारी का प्रथम चिह्न है वाणी की मिठास।

वाणी व्यक्तित्व का हथियार है। सामने वाले पर वार करना हो तो तलवार नहीं, कलाई नहीं, हिम्मत की पूछ होती है। हिम्मत न हो तो हाथ में तलवार भी हो तो बेकार है। यदि वाणी सही है तो तुम्हारा व्यक्तित्व जीवन्त हो जाएगा, बोलने लगेगा व सामने वाले को अपना बना लेगा। अपनी विनम्रता, दूसरों का सम्मान व बोलने में मिठास, यही व्यक्तित्व के प्रमुख हथियार हैं। इनका सही उपयोग करोगे तो व्यक्तित्व वजनदार बनेगा।

तुम्हीं को कुम्हार व तुम्हीं को चाक बनना है। हमने तो अनगढ़ सोना, चाँदी ढेरों लाकर रख दिया है, तुम्हीं को साँचा बनाकर सही सिक्के ढालना है। साँचा सही होगा तो सिक्के भी ठीक आकार के बनेंगे। आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं, पर किसी के पास कार्यकर्त्ता नहीं हैं। 'लेबर' सबके पास है, पर समर्पित कार्यकर्त्ता जो साँचा बनता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

व कई को बना देता है अपने जैसा, कहीं भी नहीं है। हमारी यह दिली ख्वाहिश है कि हम अपने पीछे छोड़कर जाएँ। इन सभी को सही अर्थों में 'डाई' एक साँचा बनना पड़ेगा तथा वही सबसे मुश्किल काम है। रॉ मेटेरियल तो ढेरों कहीं भी मिल सकता है पर 'डाई' कहीं-कहीं मिल पाती है। श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता श्रेष्ठतम 'डाई' बनता है। तुम सबसे अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे।

तुमसे दो और अपेक्षाएँ हैं—एक श्रम का सम्मान। यह भौतिक जगत का देवता है। मोती-हीरे श्रम से ही निकलते हैं। दूसरी अपेक्षा यह कि सेवा-बुद्धि के विकास के लिए सहकारिता का अभ्यास। संगठन शक्ति सहकारिता से ही पहले भी बढ़ी है, आगे भी इसी से बढ़ेगी।

हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य यह है कि श्रम की महत्ता हमने समझी नहीं। श्रम का माद्दा इस सबमें असीम है। हमने कभी उसका मूल्यांकन किया ही नहीं। हमारा जीवन निरन्तर श्रम का ही परिणाम है। बीस-बीस घण्टे तन्मयतापूर्वक श्रम हमने किया है। तुम भी कभी श्रम की उपेक्षा मत करना। मालिक बारह घण्टे काम करता है, नौकर आठ घण्टे तथा चोर चार घण्टे काम करता है। तुम सब अपने आपसे पूछो कि हम तीनों में से क्या हैं ? जीभ चलाने के साथ कठोर परिश्रम करो, अपनी योग्यताएँ बढ़ाओ व निरन्तर प्रगति पथ पर बढ़ते जाओ।

दूसरी बात सहकारिता की है। इसी को पुण्य परमार्थ, सेवा, उदारता कहते हैं। अपना मन सभी से मिलाओ। मिल-जुलकर रहना, अपना सुख बाँटना, दुःख बँटाना सीखो। यही सही अर्थों में ब्राह्मणत्व की साधना है। साधु तुम अभी बने नहीं हो। मन से ब्राह्मणत्व की साधना करोगे तो पहले ब्राह्मण बनो। साधु अपने आप बन जाओगे। पीले कपड़े पहनते हो कि नहीं, पर मन को पीला कर लो। सेवाबुद्धि का दूसरों के प्रति पीड़ा का, भाव-सम्वेदना का विकास करना ही साधुता को जगाना है। आज इस वर्ष श्रावणी पर्व पर तुमसे कुछ अपेक्षाएँ हैं। आशा है तुम इन्हें अवश्य पूरा करोगे व हेमाद्रि संकल्प लोगे। यही आत्मा की हमारी वाणी है, जो तुमसे कुछ कराना चाहती है, इतिहास में तुम्हें अमर देखना चाहती है। देखना है कितना तुम हमारी बात को जीवन में उतार पाते हो। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

आत्मोन्नति के चार आधार

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

साथियो !

युग-निर्माण परिवार का गठन एक प्रयोगशाला के रूप में हुआ है। प्रयोगशाला में रासायनिक पदार्थ तैयार किए जाते हैं और उसके परिणामों को सर्वसाधारण के सामने उपस्थित किया जाता है। युग-निर्माण परिवार का गठन एक पाठशाला के तरीके से हुआ है, जहाँ विद्यार्थी पढ़ाए जाते हैं और पढ़-लिखकर के वे समाज के महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्वों को सँभालते हैं। गायत्री परिवार का गठन एक व्यायामशाला के तरीके से किया गया है; जिसमें लोग व्यायाम करते हैं और पहलवान बनकर के दंगल में कुश्तियाँ पछाड़ते हैं। युग-निर्माण परिवार का गठन नर्सरी के तरीके से किया गया है, जिसमें छोटे-छोटे फलदार पौधे तैयार किये जाते हैं और यहाँ पैदा होने के बाद दूसरे बगीचों में भेज दिए जाते हैं, जहाँ बड़े-बड़े उद्यान-बगीचे बनकर तैयार होते हैं। युग-निर्माण परिवार का गठन एक कृषि फार्म के तरीके से हुआ है। कृषि फार्म में छोटे-छोटे प्रयोग गन्ने के, सोयाबीन के, अमुक के, तमुक के किए जाते हैं और उसके जो निष्कर्ष निकलते हैं, वह सब लोगों को मालूम पड़ते हैं और उसी आधार पर वे अपने-अपने कृषि कार्य को आरम्भ करते हैं। व्यक्तित्वों के निर्माण की एक प्रयोगशाला के रूप में, पाठशाला के रूप में, व्यायामशाला के रूप में, नर्सरी के रूप में और कृषि फार्म के रूप में युग-निर्माण परिवार का गठन किया गया है। हम चाहते हैं कि व्यक्ति बदल जाएँ और ऊँचे उठें, क्योंकि हम समाज को ऊँचा उठाना चाहते हैं, समुन्नत बनाना चाहते हैं।

आखिर समाज है क्या ? समाज व्यक्तियों का समूह मात्र है। व्यक्ति जैसे होंगे वैसा ही तो समाज बनेगा। समाज कोई अलग चीज नहीं है, वरन् व्यक्तियों के समूह का नाम है। इसलिए व्यक्तियों को श्रेष्ठ बनाने का मतलब है—समय को अच्छा बनाना और समय को अच्छा बनाने का मतलब है—युग के प्रवाह को बदल देना। युग का प्रवाह बदल देना अर्थात् समाज को बदल देना। समाज को बदल लेना अर्थात् व्यक्तियों को बदल देना—यही हमारा उद्देश्य है। इसी क्रियाकलाप के लिए और इसी परिवर्तन के लिए हम लगे हुए हैं और युग-परिवर्तन का जो नारा लगाते हैं, उसका मतलब ही यह है कि हम युग बदलेंगे, समाज बदलेंगे और व्यक्ति बदलेंगे। बदलने के लिए हम व्यापक क्षेत्र में प्रयोग नहीं कर सकते। अतः छोटे क्षेत्र में हम प्रयोग करते हैं, ताकि इसकी देखा-देखी इसका अनुकरण करते हुए अन्यत्र भी यही परम्पराएँ चलें, अन्यत्र भी इसी तरीके के क्रियाकलाप चालू किए जा सकें। बाहर की परिस्थितियाँ मन की स्थिति के ऊपर निर्भर हैं। मन जैसा भी हमारा होता है, परिस्थितियाँ अनुरूप बननी शुरू हो जाती हैं। हम इच्छाएँ करते हैं, इच्छाओं से हमारा मस्तिष्क काम करता है। मस्तिष्क की गणनाओं से शरीर काम करता है। शरीर और मस्तिष्क दोनों ही हमारी अन्तरात्मा की, अन्तःकरण की प्रेरणा से काम करते हैं। इसलिए जरूरत इस बात की पड़ी कि हमारी आन्तरिक आस्थाओं को, आन्तरिक मान्यताओं को, निष्ठाओं को परिवर्तित कर दिया जाए तो जीवन का सारा का सारा ढाँचा ही बदल जाएगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य के सामने असंख्य समस्याएँ हैं और उन असंख्य समस्याओं का समाधान केवल इस बात पर टिका हुआ है कि हमारी आन्तरिक स्थिति सही बना दी जाए। दृष्टिकोण हमारा गलत होता है, जो हमारे क्रियाकलाप गलत होते हैं और गलत क्रियाकलापों के परिणामस्वरूप जो प्रतिक्रियाएँ होती हैं, जो परिणाम सामने आते हैं, वे भयंकर दुःखदाई होते हैं, कष्टकारक होते हैं। कष्टकारक परिस्थितियों के निवारण करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य का चिन्तन और शिक्षण बदल दिया जाए, परिष्कृत कर दिया जाए। यही हैं हमारे प्रयास, जिसके लिए हम अपनी समस्त शक्ति के साथ लगे हुए हैं।

मनुष्य के आन्तरिक उत्थान, आन्तरिक उत्कर्ष, आत्मिक विकास के लिए क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए ? इसका समाधान करने के लिए हमको चार बातें तलाश करनी पड़ती हैं। इन्हीं चार चीजों के आधार पर हमारी आत्मिक उन्नति टिकी हुई है और वे चार आधार हैं—साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा। ये चारों ऐसे हैं जिनमें से एक को भी आत्मोत्कर्ष के लिए छोड़ा नहीं जा सकता। इनमें सें एक भी ऐसा नहीं है, जिसके बिना हमारे जीवन का उत्थान हो सके। चारों आपस में अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं, जिस तरीके से कई तरह की चौकड़ियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं। मसलन बीज—एक, जमीन—दो, खाद—तीन, पानी—चार। चारों जब तक नहीं मिलेंगे, कृषि नहीं हो सकती। उसका बढ़ना सम्भव नहीं है। व्यापार के लिए अकेली पूँजी से काम नहीं चल सकता। इसके लिए पूँजी—एक, अनुभव—दो, वस्तुओं की माँग—तीन, ग्राहक—चार। इन चारों को आप ढूँढ़ लेंगे तो व्यापार चलेगा और उसमें सफलता मिलेगी। मकान बनाना हो तो उसके लिए ईंट, चूना, लोहा, लकड़ी इन चारों चीजों की जरूरत है। चारों में से एक भी चीज अगर कम पड़ेगी तो हमारी इमारत नहीं बन सकती। सफलता प्राप्त करने के लिए मनुष्य का कौशल आवश्यक है, साधन आवश्यक है, सहयोग आवश्यक है और अवसर आवश्यक है। इन चारों चीजों में से एक भी कम पड़ेगी तो समझदार आदमी भी सफलता नहीं प्राप्त कर सकेगा, सफलता रुकी रह जाएगी। जीवन-निर्वाह के लिए भोजन, विश्राम, मल-विसर्जन और श्रम-उपार्जन, चारों की आवश्यकता होती है। ये चारों क्रियाएँ होंगी तभी हम जिन्दा रहेंगे। यदि इनमें से एक भी चीज कम पड़ जाएगी तो आदमी का जीवित रहना मुश्किल पड़ जाएगा। ठीक इसी प्रकार से आत्मिक जीवन का विकास करने के लिए, आत्मोत्कर्ष के लिए चारों का होना आवश्यक है, अन्यथा व्यक्ति-निर्माण का उद्देश्य पूरा न हो सकेगा।

अब हम चारों चीजों के ऊपर प्रकाश डालते हैं। पहली है—उपासना प्लस साधना। उपासना और साधना—इन दोनों को मिलाकर पूरी चीज बनती है। उपासना का अर्थ है भगवान् पर विश्वास, भगवान् की समीपता। उपासना माने भगवान् के पास बैठना, नजदीक बैठना। इसका मतलब यह हुआ कि उसकी विशेषताएँ हम अपने जीवन में धारण करें। जैसे आग के पास हम बैठते हैं, तो आग की गर्मी से हमारे कपड़े गरम हो जाते हैं, हाथ गरम हो जाते हैं, शरीर गरम हो जाता है। पास बैठने का यही लाभ होना चाहिए। बर्फ के पास बैठते हैं, ठण्डक में बैठते हैं तो हमारे हाथ ठण्डे हो जाते हैं, कपड़े ठण्डे हो जाते हैं। पानी में बर्फ डालते हैं तो पानी ठण्डा हो जाता है। ठण्डक के नजदीक जाने से हमें ठण्डक मिलनी चाहिए। गर्मी की समीपता से गर्मी मिलनी चाहिए। सुगन्धित चीजों से सुगन्ध मिलनी चाहिए। चन्दन के समीप उगने वाले पौधे सुगन्धित हो जाते हैं, उसकी समीपता की बजह से। यही समीपता वास्तविक है। उपासना का अर्थ यह है कि भगवान का भजन करें, नाम लें, जप करें, ध्यान करें, पर साथ-साथ हम इस बात के लिए भी कोशिश करें कि हम भगवान के नजदीक आते जाएँ। भगवान हमारे में समाविष्ट होता जाए और हम भगवान में समाविष्ट होते जाएँ अर्थात् दोनों एक हो जाएँ। एक होने से मतलब यह है कि हम दोनों की इच्छाएँ, दोनों की गतिविधियाँ, दोनों की क्रिया-पद्धति, दोनों के दृष्टिकोण एक जैसे रहें। हमको ईश्वर जैसा बनने का प्रयत्न करना चाहिए। ईश्वर जैसे बनें, न कि ईश्वर पर हुक्म चलाएँ और उनको आदेश दें कि आपको ऐसा करना चाहिए, आपको किसी भी हालत में हमारी माँगें पूरी करनी चाहिए। उपासना का तात्पर्य अपनी मनोभूमि को इस लायक बनाना कि हम भगवान् के आज्ञानुवर्ती बन सकें। उनके संकेतों के इशारे पर अपनी विचारणा और क्रिया-पद्धति को ढाल सकें। उपासना-भजन इसीलिए किया जाता है।

साधना—साधना का अर्थ है कि अपने गुण, कर्म, स्वभाव को साध लेना। वस्तुतः मनुष्य चौरासी लाख योनियों को घूमते-घूमते उन सारे के सारे प्राणियों के कुसंस्कार अपने भीतर जमा करके ले आया है, जो मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक नहीं हैं, बल्कि हानिकारक हैं। तो भी वे स्वभाव के अंग बन गए हैं और हम मनुष्य होते हुए भी पशु-संस्कारों से प्रेरित रहते हैं और पशु-प्रवृत्तियों को बहुधा अपने जीवन में कार्यान्वित करते रहते हैं। इस अनगढ़पन को ठीक कर लेना, सुगढ़पन का अपने भीतर से विकास कर लेना, कुसंस्कारों को जो पिछली योनियों के कारण हमारे भीतर जमे हुए हैं, उनको निरस्त कर देना और अपना स्वभाव इस तरह का बना लेना जिसको हम मानवोचित कह सकें—साधना है। साधना के लिए हमको वही क्रियाकलाप अपनाने पड़ते हैं, जो कि कुसंस्कारी घोड़े व बैल को सुधारने के लिए उसके मालिकों को करने पड़ते हैं—हल में चलने के लिए और गाड़ी में चलने के लिए। कुसंस्कारों को दूर करने के लिए हमको लगभग उसी तरह के प्रयत्न करने पड़ते हैं जैसे कि सरकस के पशुओं को पालते हुए उन्हें इस लायक बनाते हैं कि वे सरकस में तमाशा दिखा सकें। इसी तरह के प्रयत्न हमको अपने गुण, कर्म, स्वभाव के विकास के, परिष्कार के लिए करने पड़ते हैं। कच्ची धातुओं को जिस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तरीके से आग में तपा करके उनको शुद्ध-परिष्कृत बनाया जाता है, जेवर-आभूषण बनाए जाते हैं, उसी तरीके से हमारा कच्चा जीवन, कुसंस्कारी जीवन को ढाल करके ऐसा सभ्य और ऐसा सुसंस्कृत बनाया जाए कि हम ढली हुई धातु के आभूषण के तरीके से, औजार-हथियार के तरीके से दिखाई पड़ें। जंगली झाड़ियों को काटकर के माली लोग अच्छे-अच्छे झाड़ और खूबसूरत पार्क बना देते हैं। हमको भी अपने झाड़-झंखाड़ जैसे जीवन को परिष्कृत करके, काट-छाँट करके, समुन्नत करके इस लायक बनाना चाहिए कि जिसको कहा जा सके कि वह सभ्य और सुसंस्कृत जीवन है।

इसके लिए हमको नित्य ही आत्म-निरीक्षण करना चाहिए। अपनी गलतियों पर गौर करना चाहिए। उनको सुधारने के लिए कमर कसनी चाहिए और अपने आपका निर्माण करने के लिए आगे बढ़ना और जो कमियाँ हमारे स्वभाव के अन्दर हैं, उन्हें दूर करने के लिए जुटे रहना चाहिए। आत्म-विकास इसका एक हिस्सा है। हमको अपनी संकीर्णता में सीमित नहीं रहना चाहिए। अपने अहं को और अपनी स्वार्थपरता को, अपने हितों को व्यापक दृष्टि से बाँट देना चाहिए। दूसरों के दुःख हमारे दुःख हों, दूसरों के सुखों में हम सुखी रहें, इस तरह की वृत्तियों का हम विकास कर सकें तो कहा जाएगा कि हमने जीवन-साधना करने के लिए जितना प्रयास किया, उतनी सफलता पाई। साधना से सिद्धि की बात प्रख्यात है। जीवन की साधना की सिद्धि में भी किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश नहीं है। अन्य किसी बात में सन्देह की गुंजाइश भी है, देवी-देवताओं की उपासना करने पर हमको फल मिले न मिले, कह नहीं सकते, लेकिन जीवन की साधना करने का परिणाम निश्चिन्त रूप से भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही जीवनों में लाभ के रूप में देखा जा सकता है। यह साधना के बारे में निवेदन किया गया।

दूसरा है—स्वाध्याय। मन की मलीनता को धोने के लिए स्वाध्याय अति आवश्यक है। दृष्टिकोण और विचार प्रायः वही जमे रहते हैं हमारे मस्तिष्क में, जो कि बहुत दिनों से पारिवारिक और अपने मित्रों के सान्निध्य में हमने सीखे और जाने। अब हमको श्रेष्ठ विचार अपने भीतर धारण करने के लिए श्रेष्ठ पुरुषों का सत्संग करना चाहिए। चारों ओर हम जिस वातावरण से घिरे हुए हैं, वह हमको नीचे की ओर गिराता है। पानी का स्वभाव नीचे गिरने की तरफ होता है। हमारा स्वाभाविक स्वभाव ही ऐसा होता है, जो नीचे स्तर के कामों की तरफ, निकृष्ट उद्देश्यों के लिए आसानी से लुढ़क जाता है। चारों तरफ का वातावरण जिसमें हमारे कुटुम्बी भी शामिल हैं, मित्र भी शामिल हैं, घरवाले भी शामिल हैं, हमेशा इस बात के लिए दबाव डालते हैं कि हमको किसी भी प्रकार से किसी भी कीमत पर भौतिक सफलताएँ पा लेनी चाहिए। चाहे उसके लिए नीति बरतनी पड़े अथवा अनीति का आश्रय लेना पड़े। हर जगह से यही शिक्षण हमको मिलता है। सारे वातावरण में इसी तरह की हवा फैली हुई है और यही गन्दगी हमें प्रभावित करती है। हमारी गिरावट के लिए काफी वातावरण विद्यमान है।

इनका मुकाबला करने के लिए क्या करना चाहिए ? श्रेष्ठता के मार्ग पर अगर हमको चलना है, आत्मोत्कर्ष करना है, तो हमारे पास ऐसी शक्ति भी होनी चाहिए जो पतन की ओर घसीट ले जाने वाली इन सत्ताओं का मुकाबला कर सके। इसके लिए एक तरीका है कि हम श्रेष्ठ मनुष्यों के साथ में सम्पर्क और सान्निध्य बनाए रखें, उनके सत्संग को कायम रखें। यह सत्संग कैसे हो सकता है ? यह सत्संग केवल पुस्तकों के माध्यम से सम्भव है, क्योंकि विचारशील व्यक्ति हर समय बातचीत करने के लिए मिल नहीं सकते। इनमें से बहुत तो ऐसे होते हैं, जो स्वर्गवासी हो चुके हैं और जो जीवित हैं, वे हमसे इतनी दूर रहते हैं कि उनके पास जाकर के हम उनसे बातचीत करना चाहें तो वह भी कठिन है। हम जा नहीं सकते और उनके पास जाएँ भी तो क्या उनके लिए भी कठिन है, क्योंकि प्रत्येक महापुरुष समय की कीमत को समझता और व्यस्त रहता है। ऐसी हालत में हम लगातार सत्संग कैसे कर पाएँगे ? कभी साल-दो साल में एक-आध घण्टे का सत्संग कर लिया तो क्या उससे हमारा उद्देश्य पूरा हो जाएगा ? इसलिए अच्छा तरीका यही है कि हम अपने जीवन में नियमित रूप से जैसे अपने कुटुम्बी और मित्रों से बात करते हैं, श्रेष्ठ महामानवों से, युग के मनीषियों से बातचीत करने के लिए समय निकालें। समय निकालने की इस प्रक्रिया का नाम है—स्वाध्याय।

स्वाध्याय को आध्यात्मिक विकास के लिए अत्यधिक आवश्यक माना गया है। स्वाध्याय के बारे में ब्राह्मण-ग्रन्थों में कहा गया है—जिस दिन विचारशील आदमी स्वाध्याय नहीं करता उस दिन उसकी संज्ञा चाण्डाल जैसी हो जाती है। स्वाध्याय का महत्त्व भजन से किसी भी प्रकार से कम नहीं है। भजन का उद्देश्य भी यही है कि हमारे विचारों का परिष्कार हो और हम श्रेष्ठ व्यक्तित्व की ओर आगे बढ़ें। स्वाध्याय हमारे लिए आवश्यक है। स्वाध्याय से हम महापुरुषों को अपना मित्र बना सकते हैं और जब भी जरूरत पड़ती है, तब उनसे खुले मन से, खुले दिल से बातचीत कर सकते हैं। जिस तरीके से शरीर को स्वच्छ रखने के लिए स्नान करना आवश्यक है, कपड़े धोना आवश्यक है, उसी प्रकार से स्वाध्याय के द्वारा, श्रेष्ठ विचारों के द्वारा अपने मन के ऊपर जमने वाले कषाय-कल्मषों को, मलीनता को धोना आवश्यक है। स्वाध्याय से हमको प्रेरणा मिलती है; दिशाएँ मिलती हैं, मार्गदर्शन मिलता है, श्रेष्ठ पुरुष हमारे सान्निध्य में आते हैं और हमको अपने मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करते हैं, मार्गदर्शन करते हैं। ये सारी की सारी आवश्यकताएँ स्वाध्याय से पूरी होती हैं। इसलिए स्वाध्याय का साधना और भजन के बराबर ही मूल्य और महत्त्व समझा जाना चाहिए।

तीसरी बात जो आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है, उसका नाम है संयम। संयम का अर्थ है—रोकथाम।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अगर हम रोकथाम करें तो जो हमारी शक्तियों का घोर अपव्यय होता रहता है, उसको बचा सकते हैं। हम अपनी अधिकांश शारीरिक और मानसिक शक्तियों को अपव्यय में नष्ट कर देते हैं, कुमार्ग पर नष्ट कर देते हैं। यदि उनको रोका जा सका होता और उपयोगी मार्ग पर लगाया गया होता तो निश्चित रूप से उन शक्तियों के चमत्कार हमको देखने को मिल सकते थे, जो हमारे पास थीं। पर हम बर्बादी से कुछ बचा नहीं सके। चार तरह के संयम-निग्रह रूप में बताये गये हैं—इन्द्रिय-निग्रह, मनोनिग्रह, समय-निग्रह, अर्थ-निग्रह। इन्द्रिय-निग्रह में जिह्वा और कामेन्द्रिय का संयम प्रमुख है। ये इन्द्रियाँ हमारी कितनी सारी शक्तियों को नष्ट करती हैं और स्वास्थ्य को किस बुरी तरीके से खोखला करती हैं, यह सभी जानते हैं। इन्द्रिय-निग्रह का महत्त्व बताने की जरूरत नहीं है। शारीरिक दृष्टि से जिनको समर्थ बनना हो, नीरोग और दीर्घजीवी बनना हो, उनको इन्द्रिय-निग्रह का महत्त्व समझना और अपने आपको संयम का अभ्यासी बनाना चाहिए। दूसरा संयम मनोनिग्रह है। मन में कितने सारे विचार उठते हैं, लेकिन वे असंगत, असंयमित, बुराइयों एवं मनोविकारों से भरे होते हैं। इनसे हमारा मस्तिष्क विकृत होता है और बुरी तरह की आदतें पड़ती हैं। मनःशक्तियाँ निग्रहीत करके किसी कार्य में लगाई गई होतीं तो हम वैज्ञानिक बन गए होते, साहित्यकार बन गए होते। जिस भी कार्य में हमने मन लगाया होता, सफलता की उच्च श्रेणी तक जा पहुँचे होते, पर अस्त-व्यस्त मन होने के कारण से कोई सफलता सम्भव न हो सकी। मनोनिग्रह करके एकाग्रता की शक्ति और एक दिशा में चलने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकें, तो उससे हमारी सफलताओं का द्वार खुल सकता है।

तीसरा है—समय का निग्रह। हम समय को आलस्य और प्रमाद में पड़े-पड़े बर्बाद करते रहते हैं। कोई योजनाबद्ध कार्य नहीं करते, जब जो आया मनमर्जी से काम कर लिया, मन नहीं हुआ तो नहीं किया। इस तरीके से अस्त-व्यस्तता में हमारा जीवन नष्ट हो जाता है, जबकि समय का थोड़ा-थोड़ा-सा भी उपयोग करते तो न जाने कितना लाभ उठा सकते थे। चौथा निग्रह—अर्थ-निग्रह भी ऐसा ही महत्त्वपूर्ण है। पैसे को विलासिता से लेकर न जाने किस-किस काम में, व्यसनों में, अनाचारों में हम खर्च करते हैं। अगर उसको फिजूलखर्ची से हम बचा सके होते और उस धन को हमने किसी उपयोगी काम में लगाया होता तो भौतिक और आत्मिक उन्नति की दिशा में हम कहीं आगे बढ़ गए होते। अर्थ-निग्रह, इन्द्रिय-निग्रह, मनोनिग्रह, समय-निग्रह—इन चारों निग्रहों को हम करें तो संयमशील हो सकते हैं। हमको संयम बरतना चाहिए, अस्वाद व्रत का, ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना चाहिए। मौन का अभ्यास करना चाहिए। ऐसे-ऐसे असंख्य संयम हैं, जिनको अपनाने से हम तपस्वी बनते हैं और अपनी शक्ति का बहुत बड़ा भाग बचा करके अच्छे काम में लगाते हैं।

चौथा कार्य सेवा का है। मनुष्य समाज का ऋणी है, क्योंकि वह सामाजिक प्राणी है। भगवान् ने उसको इसीलिए जन्म दिया है कि वह उसके इस विश्वउद्यान की सेवा करे। उसकी जीवात्मा का विकास और जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सेवा से बड़ा तप और सेवा से बड़ा पुण्य कुछ भी नहीं हो सकता। हमको सेवा करने के लिए समय निकालते रहना चाहिए। सारे का सारा समय अपने लिए ही न खर्च कर दें, वरन् देश, धर्म, समाज और संस्कृति की सेवा करने के लिए भी कुछ लगाएँ। हमारा धर्म होना चाहिए कि हम अपनी शक्तियों का एक अंश दुखियारों के लिए और पीड़ितों के लिए, पतितों के लिए लगाएँ। हमारे लिए सबसे बड़ी सेवा का कार्य क्या हो सकता है ? ज्ञानयज्ञ से बड़ा कोई और दूसरा पुण्य नहीं हो सकता। इसको ब्रह्मदान भी कहा गया है। यह सर्वोत्तम धर्म है, क्योंकि ज्ञानयज्ञ से हम मनुष्यों को दिशा दे सकते हैं; जिससे वे बुराइयों से बच सकें और उन्नति के मार्ग पर ऊँचे उठ सकें। ज्ञान, विचारणा, भावना—यही तो है शक्ति का अंश। इसलिए ब्राह्मण और साधु हमेशा से ज्ञानयज्ञ को ही सर्वोत्तम सेवा मान करके उसमें संलग्न रहे हैं और यह प्रयत्न करते रहे हैं कि हम स्वयं अच्छे बनें और अपनी अच्छाई दूसरों पर बिखेरें। इसके लिए हमको अंशदान करना चाहिए। सेवा के लिए हमको एक घण्टा समय और दस पैसे नित्य का जो न्यूनतम कार्यक्रम दिया गया था ज्ञानयज्ञ-विचारक्रान्ति के लिए, उस पर हमको मुस्तैदी से अमल करना चाहिए। कोई भी आदमी हममें से ऐसा न हो जो कि सेवा के लिए एक घण्टा समय और दस पैसे जैसी न्यूनतम शर्त को पूरा न करता हो। इससे ज्यादा ही हम करें, ज्यादा ही उत्साह दिखाएँ।

हम केवल भौतिक जीवन ही न जिएँ। आध्यात्मिक जीवन भी जिएँ। हमारी क्षमताओं का उपयोग, हमारे समय का उपयोग पेट पालने तक ही सीमित न रहे, बल्कि लोकमंगल और लोकहित के लिए भी खर्च हो। इस तरीके से हम चार आधार जीवन में अपनाए रहकर के आत्मिक उन्नति के मार्ग पर चल सकते हैं। अपना परिष्कार और परिवर्तन कर सकते हैं। यदि हमने अपना परिष्कार और परिवर्तन किया तो समाज का परिवर्तन और समाज का परिष्कार स्वाभाविक और सरल हो जायेगा। युग का परिवर्तन व्यक्ति परिवर्तन और समाज के परिवर्तन के साथ जुड़ा हुआ है। अपनी छोटी-सी प्रयोगशाला में हम इसी का प्रयोग करते हैं और अपनी प्रयोगशाला में सम्मिलित रहने वाले, अपने परिवार में शामिल रहने वाले हर व्यक्ति से प्रार्थना करते हैं कि आपको आत्मिक उन्नति के लिए अभी बताए गए इन चार आधारों को मजबूती के साथ ग्रहण करना चाहिए और अपने दैनिक जीवन में समन्वित रखना चाहिए। साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा दैनिक जीवन में न्यूनतम मात्रा में भले ही हों, पर सम्मिलित अवश्य और अनिवार्य रूप से रहने चाहिए। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्मीकरण के बाद का ऐतिहासिक वसन्त

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

वसन्त पर्व पर हमें हमेशा नए सन्देश मिलते रहे हैं। जिस सत्ता के साथ हमारा बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है और जिसकी आज्ञा से हमारा सारा जीवन व्यतीत हुआ है, जिसको हमने अपने आप का समर्पण किया है, उस समर्पण वाली शक्ति ने हमसे यह वायदा किया था कि वसन्त पंचमी के समय पर हर साल का एक कार्यक्रम बनाकर भेजा करेंगे। वह सुबह हमको मिल गया है। आपमें से कई आदमी वसन्त पंचमी पर यहाँ आए होंगे, पर भावावेश का समय था। दो वर्ष बाद हम आपको मिले हैं तो भावावेश की ही बातें हमने कहीं और आपको क्या करना है और हमें क्या करना है, इसके सम्बन्ध में एक छपा हुआ इश्तहार बाँट दिया। मालूम नहीं आपने ध्यान दिया अथवा नहीं। गुरुजी के साक्षात्कार हो गए, दर्शन कर लिए बहुत हो गया।

पिछले दिनों किसी ने यह अफवाह फैला दी कि गुरुजी बीमार पड़े हैं, उन लोगों को यह बताने के लिए कि हमारे शरीर में कोई खराबी नहीं है और न कभी कोई खराबी होगी हमारे शरीर में। अगर कभी हमारी मृत्यु हुई तो आप यह समझना कि गुरुजी का ट्रान्सफर हुआ है। किसी महत्त्वपूर्ण काम के लिए उनको भेज दिया गया है और जो काम अभी हम स्थूल शरीर से करते हैं, उसकी अपेक्षा सौ गुना अधिक काम कर रहे होंगे, क्योंकि शरीर का बन्धन ही ऐसा है कि हमको बहुत दूर तक नहीं चलने देता। इसलिए जो काम अभी हम इस शरीर से नहीं कर सकते, उसकी अगर आवश्यकता पड़ी, गुरुदेव को आवश्यकता पड़ी तो स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर में बदल जाने के लिए भले हम कुछ समय बाद ऐसा करें, लेकिन फिलहाल अभी कुछ ऐसी योजना नहीं है। न हम बीमार हैं और न हमें कोई कष्ट है और न कोई बात है। हम ठीक तरीके से अपनी यह साधना-उपासना कर रहे हैं। हमें सूक्ष्मीकरण के लिए कहा गया था, उसी साधना में हम मुस्तैदी से लगे हुए हैं। इस बारे में इतना ही कहना काफी है कि हमारे बारे में आपको कोई चिन्ता करने की बात नहीं है। चिन्ता तो आपकी हमको करनी है। आप क्यों करेंगे ? बच्चे माँ-बाप की चिन्ता क्यों करेंगे कि पिताजी का यह काम कैसे होगा ? वह काम कैसे होगा ? पिताजी का कर्ज कैसे चुकेगा ? बच्चों को क्या पता ? पिता को ही यह ध्यान रखना पड़ता है कि अगर हम नहीं रहे या आगे चलकर बच्चे बड़े होंगे तो उनको खिलाने-पिलाने का क्या इन्तजाम करना पड़ेगा ? इनके रहने के लिए मकान का, इनके व्याह-शादी का क्या इन्तजाम करना पड़ेगा ? इनके काम-धन्धे का क्या इन्तजाम करना पड़ेगा ? यह चिन्ता करना बड़ों का काम है। हम बड़े हैं। आपसे उम्र में भी बड़े हैं, विद्या में भी बड़े हैं, ज्ञान में भी बड़े हैं, तप में भी बड़े हैं, भावनाओं में भी बड़े हैं। हम बड़े हैं तो यह हमारा काम है कि आप सब लोगों का ध्यान रखें।

विगत वर्ष जब वसन्त पंचमी का उत्सव हुआ था, तब हमने बहुत-सी बातें कही थीं, पर उनमें से विशेष रूप से ध्यान देने लायक दो बातें खास थीं। एक बात यह है कि यह युगसन्धि का समय है, जिसमें अभी पन्द्रह वर्ष बाकी हैं सन् २००० आने में। यह खराब समय अभी खत्म नहीं हुआ है। पहले सभी समझते थे कि यह खत्म हो गया है, पर अभी न तो प्रकृति-प्रकोप खत्म हुए हैं न हारी-बीमारी। हारी-बीमारी के ऐसे-ऐसे चक्कर हैं कि एक दिन में एक-एक गाँव में २२-२३ बच्चों की मृत्यु हो जाती है। कभी-कभी चौपायों में ऐसी बीमारी फैलती है कि वे सारे के सारे ढेर हो जाते हैं। कभी-कभी भूकम्प आ जाते हैं। अभी-अभी हिन्दुस्तान में इस तरीके से तूफान आए कि लाखों आदमियों को तबाह करके रख दिया। इस तरीके से चीजें पैदा हो जाती हैं। नेचर-प्रकृति हमसे नाराज हो गई है। इनसानों का चाल-चलन देखकर प्रकृति ने नाराजगी से अपना बदला चुकाने का निश्चय किया है और वह बराबर बदला चुका रही है और हैरानी पैदा कर रही है।

एक बात हमने यह कही और आप सबको सावधान किया था कि आप लोग सावधान रहना। तो क्यों साहब ! हमारे सावधान रहने से क्या हो जाएगा ? मान लीजिए कोई ऐसी बीमारी आ जाए, मुसीबत आ जाए या बाढ़ आ जाए या कोई ऐसा उपद्रव खड़ा हो जाए तो हम क्या करेंगे ? इसीलिए हमने कहा था कि अभी हम आपसे अलग नहीं हुए हैं। अभी हम आपसे ज्यों के त्यों जुड़े हुए हैं। हमारी शक्ति के दो हिस्से हुए हैं। अभी तक जो शक्ति सीमित थी और गायत्री परिवार की शाखाओं में ही भरती जाती थी, संगठन करने या आयोजन करने या सम्मेलन बुलाने में, शिविर लगाने में खर्च हो जाती थी, अब दो साल की सूक्ष्मीकृत साधना में अपनी शक्ति को इस हिसाब से विकसित किया है कि पचास परसेंट शक्ति से हमारे पास जो अभी थोड़े-से २४ लाख व्यक्ति हैं, उनकी हम सुरक्षा कर लेंगे। पचास फीसदी शक्ति हम सुरक्षा में लगाएँगे। आपकी हारी-बीमारी में, घाटे में, दुःख में, मुसीबत में, हैरानी में हमारी आधी शक्ति बराबर काम करती रहेगी। इसमें भी आप कमी नहीं पाएँगे, चाहे आप कैसी भी मुसीबत में क्यों न फँसे हों, और लोगों से आप हर हालत में नफे में रहेंगे—यह हमारा वायदा है और यह हमारा आपसे कहना है। एक और बात हमने यह कही थी कि अब आपको बार-बार हरिद्वार आने और बार-बार हमसे मिलने की आवश्यकता नहीं है। इसका बहुत सीधा-सरल रास्ता हमने निकाल लिया है। वह यह है कि यदि हमसे मिलने की आवश्यकता हो तो आप दस बार लम्बे-लम्बे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राणायाम करना और प्राणायाम करने के बाद में सिर के ऊपर दाहिना हाथ फिराना। हाथ फिराने के बाद में देखना कि जो कुछ भी आपके मन में विचार थे, वह सबके सब बाहर निकल गए और हमारे विचारों का भीतर आना शुरू हो गया। उस वक्त जो विचार उठें उसको मान लेना कि यह गुरुजी की बात है, विचार है। यह रविवार के दिन करना चाहिए। हो सके तो नित्य करना चाहिए।

एक बात हमने यह कही थी कि आपके देखभाल की, आपकी सुख-शान्ति की, आपको आगे बढ़ाने की, ऊँचा उठाने की, आपके दुःख-दर्दों को कम करने की जिम्मेदारी हमारी है। आपको कोई मुसीबत हो, हैरानी की बात हो तो माताजी से कह देना अथवा जो कोई भी हों यहाँ हमने सात सदस्यों की एक कमेटी बनाई, ट्रस्ट बनाए हैं। ये ऐसे हैं जो अपने घर से ही अपना खर्च चलाते हैं, ऊँची योग्यता के हैं। यहाँ के कामों को बड़ी ईमानदारी और जिम्मेदारी से सँभालते हैं और हमको यकीन हो गया है कि ये आदमी हमेशा अपनी जिम्मेदारियों को सँभालते रहेंगे। उनके सुपुर्द हमने यह कर दिया है कि जो कोई भी यहाँ आया करें, इनके हाथों लिखकर दे दिया करें वह हम तक पहुँच जाएगा और हम आपका काम कर देंगे। यह हम आपसे वायदा करते हैं और आपको वचन देते हैं। हमने आपके लिए अपने व्यक्ति, अपने नुमाइन्दे नियुक्त किये हैं, जो आपसे सम्बन्धित बातों को ठीक से समझा सकें। जो बातें आपसे, आपके बाल-बच्चों से सम्बन्धित हैं, आपके पैसे से सम्बन्धित हैं, आपके शरीर से, आपके सुख और दुःख से सम्बन्धित हैं, उसके बारे में हमारा जो वायदा है, जो दायित्व है, उसके बारे में ये आदमी आपको ठीक से समझा देंगे। अपने इन नुमाइन्दों को हम आपकी सेवा में भेज रहे हैं।

एक बहुत बड़ा काम हमने किया है—यज्ञीय परम्परा का पुनर्जीवन। वैसे तो सारी जिन्दगी भर हमने बड़े काम किए हैं। हमारा जीवन बड़ा है। हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ डाली गई हैं। दिमाग तो हमारा बड़ा है ही, पर हमारा कलेजा बहुत बड़ा है। इतना कलेजा है कि हाथी का या तो होगा या ह्वेल का। उससे कम भारी कलेजा हमारा नहीं है। हमें वजनदार काम सौंपे गए हैं। हाथी के ऊपर जब वजन रखा जाता है, तब भारी वजन रखा है। शेर को छलाँग मारनी पड़ती है तो बड़ी छलाँग मारता है। इसीलिए हमारे कन्धों पर बड़े काम डाले गए हैं। यह जो युगसन्धि के दिन हैं, इसमें अनेक काम पूरे करने के लिए हमें सौंपे गये हैं और उन सौंपे गए कामों को क्या हम अकेले पूरा कर लेंगे ? यह कहना जरा मुश्किल है क्योंकि रामचन्द्र जी ने रावण को मारा था, तब अकेले उन्होंने मारा हो सो बात कहाँ थी ? उनके साथ में नल-नील थे, जामवन्त थे, हनुमान थे, अंगद थे और कितने ही रीछ-वानर थे। सबने मिलकर मारा था। इसी तरीके से सबको मिलाकर हमको एक ऐसा अनुष्ठान करना है जैसा कि पहले दिन से ब्रह्माजी ने जब धरती बनाई थी, उस वक्त से लेकर न कभी हुआ था और न कभी होगा।

एक संकल्प हमारा यह है कि एक लाख यज्ञ करें। एक लाख गायत्री यज्ञ कहाँ होंगे ? हमारी इच्छा है कि एक लाख अलग-अलग स्थानों पर करें ताकि हर गाँव का वातावरण, हर गाँव की सुरक्षा, हर गाँव में हमारा और हमारे गुरुदेव का प्राण इस यज्ञ के माध्यम से जा पहुँचे। यज्ञ एक माध्यम है। जिस तरीके से लाउडस्पीकर हमारी आवाज को पकड़कर उसे बाहर फैलाने का एक माध्यम है, इसी तरीके से यज्ञ एक माध्यम है, जो हमारी आवाज को पकड़ रहा है, हमारे गुरुदेव की आवाज को पकड़ रहा है, गायत्री माता की आवाज को पकड़ रहा है तो गुरुजी आजकल तो पैसे की तंगी है, सूखा पड़ गया है, अकाल पड़ गया है, तूफान आ गया है, कैसे होगा यज्ञ ? बेटे, हमने उस हिसाब से इन यज्ञों को रखा ही नहीं है। जो यज्ञ रखे हैं वे ऐसे हैं कि ज्यादा से ज्यादा स्थानों में हों और उनमें गरीब से गरीब लोग भी भाग लें। यह यज्ञ भलों में भी हों, अछूतों में भी हों—सब जगह हो जाएँ। इस यज्ञ में यह बात रखी है कि गुड़, जो सब घरों में होता है, उस गुड़ में जरा-सा घी मिला दीजिए और उनकी बेर जैसी छोटी-छोटी गोलियाँ बना लीजिए। यहाँ से हम अभिमन्त्रित की हुई जो हवन सामग्री भेजेंगे, उसे उन सबके ऊपर जितनी भी गुड़ की गोलियाँ बनी हुई हैं, उनके ऊपर रख दीजिए और उनसे हवन कर लीजिए। गुरुजी ! वेदियाँ कौन बनाएगा ? हमको तो बनाना नहीं आता। जमीन पर चौरस वेदियाँ बनेंगी और उन्हीं पर हवन होगा। यज्ञशाला का सारा सामान हम अपनी जीप गाड़ियों में रखकर भेजेंगे, आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। गुड़ और घी मिलाकर के मुश्किल से एक रुपये लागत आएगी और उसी से यज्ञ पूरा हो जाएगा। इसमें गरीब आदमी भी एक रुपया खर्च कर सकता है। इसके लिए आप यह भी कर सकते हैं कि पाँच कुण्डीय, नौ कुण्डीय, ५१ कुण्डीय यज्ञ के स्थान पर एक कुण्डीय यज्ञ से काम चला सकते हैं। इसमें यह भी हो सकता है कि आप पाँच कन्याओं को पीले कपड़े पहनाकर भेज दीजिए। वे पाँच कन्याएँ आपके नुमाइन्दे के रूप में, पाँच देवियों के रूप में, गायत्री के पाँच मुख के रूप में बैठ जाएँगी और वही हवन कर लेंगी। यह छोटा-सा हवन है। इसमें आपको कोई सामान इकट्ठा नहीं करना है, केवल गुड़ की एक डेली और थोड़ा-सा घी लाएँ जिससे बेर के बराबर गोलियाँ बन जाएँगी और उसी से हवन हो जाएगा। इसमें एक रुपए की लागत आएगी। इस तरीके से हम एक लाख स्थानों पर यज्ञ करेंगे और यह यज्ञ आपको कराने हैं।

इसके लिए आपको पाँच नई जगह बनानी हैं। आपको हम पाँच-पाँच गाँवों का सरपंच बना रहे हैं, पाँच-पाँच गाँव सुपुर्द कर रहे हैं। आप एक ही जगह नहीं रहेंगे, वरन् पाँच जगहों पर काम करेंगे। इस मिशन को पाँच स्थान पर पाँच जगहों पर फैलाने की कोशिश करेंगे। आपके समीपवर्ती जो गाँव हैं, नगर हैं, उनमें एक-एक मिशन की शाखा स्थापित कीजिए। शाखा स्थापित करने में हमारे दो काम तो पहले से ही चल रहे थे—एक यह कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक माला गायत्री का जप सबको करना चाहिए। गायत्री चालीसा पाठ और एक माला का गायत्री जप—यह दोनों काम तो पहले से ही हमने आपके सुपुर्द कर दिए थे। अब इस नए वसन्त पंचमी से दो काम और सुपुर्द करते हैं। पहला यह कि आपको नए स्थानों पर पाँच यज्ञ करने हैं। हमको नए स्थानों की जरूरत है। इस बार हमने ५१ कुण्डीय या सौ कुण्डीय यज्ञों को कराने की स्पष्ट मनाही कर दी है और कहा है कि अभी मात्र एक कुण्ड का यज्ञ होगा। उसी से हमारा सन्तोष होगा, सौ कुण्डीय यज्ञों से नहीं। बड़े यज्ञों की आवश्यकता अभी नहीं, बाद में होगी। तब हम बता देंगे। इससे न उद्देश्य की पूर्ति होगी, न लक्ष्य पूरा होगा और न एक लाख की संख्या पूरी होगी। इसलिए जो भी आप लोग हमारी आवाज सुन रहे हैं, उन सबका काम व उद्देश्य है कि वे सभी अपने-अपने समीपवर्ती गाँवों में जाकर के यह देखें कि एक-एक कुण्ड का हवन कहाँ-कहाँ होना सम्भव है ? यह बात नम्बर एक हो गई।

बात नम्बर दो यह है कि आपके पास एक प्रचार मण्डली होनी चाहिए। प्रचार मण्डली का अर्थ यह है कि अब हमने इसके लिए संगीत को माध्यम बनाया है। नारद जी के पास भी संगीत था, शंकर जी के पास भी संगीत था। सरस्वती जी के पास संगीत था, विष्णुजी के पास संगीत था। सबने संगीत के माध्यम से प्रचार किया था। हमको अब जो भी व्याख्यान करना है, संगीत के माध्यम से करेंगे, व्याख्यानों से नहीं। व्याख्यानों से वक्ता का प्राण काम नहीं करता, लेकिन जो संगीत हमारे बनाए हुए हैं, हमारे मिशन के बनाए हुए हैं और देव-कन्याओं ने गाए हैं, उन्हीं संगीतों से यह प्रभाव होगा कि लोगों को हिला करके रख देंगे और उनके हृदय के भीतरी हिस्सों को छुएँगे। यह संगीत यहीं से जाएगा और व्याख्यान भी हमारा यहीं से जाएगा। एक-एक यज्ञ में हम अपना वीडियो बनाकर भेजेंगे। वीडियो उसे कहते हैं जो आदमी की तरह आवाज भी सुनाता है और शक्ल भी दिखाता है। वह हमारी और माताजी की शक्ल भी दिखाएगा और आवाज भी सुनाएगा और देव-कन्याओं का गीत भी सुनाएगा। कुँवारी कन्याओं की वाणी में ओजस्विता भी ज्यादा होती है और उसमें प्रभाव भी अच्छा होता है। उनका भी टेप भेजेंगे और अपना तथा माताजी का भी टेप भेजेंगे—जहाँ कहीं भी आप एक कुण्ड का हवन करेंगे। सामान्यतया हमने यह आशा की है कि आप पाँच कुण्ड का हवन करेंगे। पाँच नए स्थानों पर। हर एक जिम्मेदार आदमी को जिसको हमने शक्तिपीठें कहा है, समर्थ शाखा कहा है, उपशाखा और स्वाध्याय मण्डल कहा है, उनमें से हर एक आदमी जो हमारा प्रज्ञापुत्र है, जो हमसे घनिष्ट है, हम चाहते हैं कि वह सौ नए गाँवों में हमको बिठा दे। हजारों गाँव ऐसे हैं जो हमने देखे नहीं। सात लाख गाँव हैं हिन्दुस्तान के जो अभी हमने देखे नहीं। शहरों में हम गए हैं, बड़े कस्बों में गए हैं, गाँवों में तो गए ही नहीं। इस बार गाँवों में जाने का हमारा मन है। यह प्रबन्ध आप कीजिए। अभी हम जो अपने आदमी आपके पास भेज रहे हैं, सिर्फ इस काम के लिए कि आप सब मिलकर के इस तरह संकल्प लें और सब मिल-जुलकर काम करें। एक लाख कुण्ड का, एक लाख वेदियों का हवन हमें करना है, जिसमें हमारा भी व्याख्यान होगा, माताजी का भी व्याख्यान होगा और हमारे गुरु का संरक्षण भी होगा और लागत क्या है—एक रुपया। इस तरह का व्यापक स्तर पर आयोजन करने का हमारा मन है। इसके लिए आप जी-जान से कोशिश करें।

यह वर्ष समयदान का वर्ष है। हमने आप लोगों से समयदान माँगा है। लोगों ने कहा था कि हम गुरुजी की हीरक जयन्ती मनाएँगे तो आप क्या करेंगे हीरक जयन्ती में ? हवन करेंगे, जुलूस निकालेंगे ? नहीं जो हम कहें सो कीजिए और हमारा कहना यह है कि एक गाँव पीछे एक यज्ञ हो एक कुण्ड का या पाँच कुण्ड का हो और उसमें पाँच कन्याएँ बैठें और उसी में हमारा वीडियो दिखाया जाए। इस तरह एक काम तो हमारा यही है—एक लाख यज्ञों को पूरा करना। हमारा यह संकल्प अधूरा नहीं रह जाए। बाकी संकल्प तो हमारे अधूरे रहे नहीं हैं। चारों वेदों के भाष्य का संकल्प अधूरा नहीं रहा, हजार कुण्डीय यज्ञ का अधूरा नहीं रहा—तब नहीं रहा जब हम वहाँ थे, पर इस समय हम नहीं हैं। इस समय हमारी जगह पर हैं आप, तब पाँचों यज्ञों की जिम्मेदारी भी आप सँभालिए और उन यज्ञों को अपने समीपवर्ती गाँवों में कीजिए। वहाँ शाखा स्थापित कीजिए ताकि हमारी शाखाएँ जितनी भी हों—पाँच गुनी अधिक बढ़ जाएँ। अभी २४०० शाखाएँ हैं। उसमें पाँच का गुणा कर दीजिए तो एक लाख से अधिक हो जाएँगी। कम से कम एक लाख स्थानों पर इस तरह गायत्री परिवार का प्रचार करने के लिए शाखाएँ स्थापित करने की हमारी इच्छा है और इसलिए आप हमारे काम में मदद कीजिए।

नम्बर दो—इसके लिए प्रचारक मण्डलियों की आवश्यकता पड़ेगी, ताकि आप प्रत्येक घर में जा करके हमारा सन्देश सुना सकें। इसके लिए आपको अपना तथा प्रत्येक प्रज्ञापुत्र का, परिवार के हर सदस्य का जन्मदिन मनाना पड़ेगा। जन्मदिन मनाने के केवल एक कुण्डीय हवन कर लेने भर से काम नहीं चलेगा, वरन् कुछ धूम-धड़ाका भी होना चाहिए। इसके लिए संगीत प्रचारकों की जरूरत पड़ेगी। संगीत प्रचारकों के लिए आपको यह करना है कि यहाँ शान्तिकुंज में जो युगशिल्पी सत्र चलते हैं, उनमें एक आदमी आप भेज दीजिए, जो यहाँ से प्रशिक्षण लेकर जाने के बाद में वहाँ के लोगों को प्रवचन करना, हवन करना सिखा देगा, संगीत सिखा देगा। पहले भी युगशिल्पी सत्र में आ चुके हैं लोग, पर तब संगीत पर इतना जोर नहीं दिया गया था। अब नए शिक्षण में हमारा ध्यान संगीत पर है। मध्यकालीन जितने भी सन्त हुए हैं, उन्होंने संगीत के माध्यम से अपना प्रचार किया है। कबीर ने अपना प्रचार संगीत के माध्यम से किया था। मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु आदि ने संगीत के प्रचार से अपना काम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया था। मध्यकालीन सभी सन्तों ने वाणी के व्याख्यान द्वारा नहीं, बल्कि संगीत के द्वारा प्रचार किया था तो आपके यहाँ से भी एक मण्डली ऐसी होनी चाहिए जो यहाँ से संगीत सीखकर के जाए। इसका नाम हमने वक्ता विश्वविद्यालय रखा है। संगीत और यज्ञ कराना हम सिखा देंगे। इसके लिए आप लोग अपने-अपने यहाँ से एक-एक आदमी ऐसा भेजिए जो जीवन्त हो, जिसमें जान हो, जिसको हम आपके क्षेत्र का अध्यापक बनाकर भेज सकें। मण्डली आपको तैयार करनी है, प्रचार आपको करना है, मिशन के विचार आपको फैलाने हैं। इसके लिए गाँव में जन्मदिन के समय तथा त्योहारों के अवसर पर मीटिंग बुला लीजिए, काम के लोगों को बुला लीजिए। अबकी बार जो भी यज्ञ होंगे, उसमें हमने यह इन्तजाम किया है कि ढाई सौ से ज्यादा आदमी न आएँ, क्योंकि हम जो वीडियो भेजेंगे उसमें दो सौ-ढाई सौ आदमी ही आ सकेंगे।

एक बात और जो करनी है, वह यह है कि अब हमारा विश्वविद्यालय चलने वाला है। इसमें हम एक लाख व्यक्तियों को पढ़ाने वाले हैं। लेकिन हमारे इस मिशन के लिए हर एक आदमी को शान्तिकुंज आना तो मुश्किल है। अतः वह एक नया प्रशिक्षित अध्यापक जो यहाँ से जाएगा वही अपने स्थानीय लोगों को बुलाकर के वहीं शिक्षण देगा जो हम यहाँ युगशिल्पी सत्र में बुलाकर देते हैं। इस तरीके से देश भर में जितनी शाखाएँ हैं यदि उनमें से दस-दस आदमी भी आ जाएँ तो एक लाख आदमी हो जाते हैं। इस तरह के अब तक जितने भी विश्वविद्यालय चले हैं, उनमें से किसी में भी एक लाख विद्यार्थी नहीं थे। न किसी आन्दोलन में एक लाख व्यक्ति शामिल थे। घुमा-फिरा कर वही चले जाते थे, इसलिए उनके नाम और संख्याएँ बढ़ जाती थीं, लेकिन लाख व्यक्ति कभी नहीं रहे। हमारा विचार है कि एक लाख व्यक्तियों को हम पढ़ाकर जाएँ जिससे वे यों कहें कि गुरुजी ने हमको पढ़ाया था। गुरुजी के हाथ का सर्टिफिकेट हमारे पास है। जो भी आदमी यहाँ युगशिल्पी सत्र में आएँगे, हम सर्टिफिकेट देंगे कि तुमको अध्यापक नियुक्त किया है। इस तरह से एक लाख अध्यापक नियुक्त करने का हमारा संकल्प है। आप लोग इन दो कामों में हमारी मदद करेंगे। अब शान्तिकुंज से हम अपने आदमी इसलिए भेज रहे हैं कि जो भी जीवन्त आदमी हैं, प्राणवान आदमी हैं, वे इस बात का संकल्प लें कि हीरक जयन्ती वर्ष में इस कार्य को हम करेंगे ही। जो भी काम आप करें, उसका पानी लेकर संकल्प दीजिए, वह संकल्प हमारे पास आ जाएगा और तब समाधान होगा।

दो-तीन काम और हैं जो आपको करने हैं। हरीतिमा संवर्द्धन के लिए जो आपको करने हैं। हरीतिमा संवर्द्धन के लिए कुछ पेड़ भी लगाए जाने चाहिए। जड़ी-बूटी औषधालय हमारे यहाँ है, हम चाहते हैं कि वह भी आपके यहाँ हो जाए। अभी जो हवन-सामग्री बाहर से मँगाते हैं, उसके पेड़-पौधे आप अपने खेतों में खुद पैदा कर लें और उसी को कूट-पीसकर प्रयुक्त कर लिया करें। इस तरह के कई काम हैं, जो आप कर सकते हैं। आपके पास कमरे हों तो छोटे बच्चों के स्कूल चला सकते हैं। जगह न हो तो आप किराए पर ले लीजिए। किसी से एक कमरा माँग लीजिए और कह दीजिए कि जितने समय तक हमारे काम आएंगा, उतने समय तक मिशन का है, शेष सारे समय आपका, चाहे जैसा उपयोग कीजिए या फिर कोई धर्मशाला में एक कमरा ले लीजिए। कोई मन्दिर टूटा-फूटा हो उसकी मरम्मत करा लीजिए, तो उसका जीर्णोद्धार भी हो जाएगा। अब तक २४०० शक्तिपीठें बनाई हैं, जिनमें से किसी-किसी में लाखों रुपए लगे हैं। वे हैं तो सही, पर उन्हें अपने स्थान पर रहने दीजिए। अब कुछ ऐसी नयी शक्तिपीठें भी हो सकती हैं, जो छप्पर की छाई हुई हों, जिन्हें हर साल नए सिरे से बदल दिया जाए। कुछ ऐसी भी शक्तिपीठें हो सकती हैं, जो खपरैल से छाई गई हों जिन्हें बरसात में ठीक कर लें और उसी से काम चला लिया करें। जब जरूरत हो तो उसी में बच्चों के संस्कार कर लें, जन्म-दिन मना लें, उसी में अपनी पाठशाला चला लें या कहीं किसी का एक कमरा माँग लें, इसके लिए हम आपको यकीन दिलाते हैं कि अच्छे उद्देश्यों के लिए वह आपको मिल जाएगा।

इन सब कार्यों के लिए हम अपने कार्यकर्त्ता भेज रहे हैं कि आप सब वहाँ इकट्ठा होकर यह विचार करें कि गुरुजी ने नए वर्ष के लिए संकल्प लिए हैं, उस संकल्प के कई उद्देश्य हैं। उसमें से एक तो यह है कि इन दिनों का जो वातावरण है, उसमें प्रलय होने जैसी दुर्घटनाएँ होना सम्भव है। दूसरा यह है कि इन बीस सालों में आप लोग किसी मुसीबत में फँस सकते हैं। आपको तो दिखाई नहीं पड़ता, परन्तु मुझे दिखाई पड़ता है कि आप किसी मुकदमे में पड़ सकते हैं या कोई और बात हो सकती है। कोई अकाल की चपेट में आ सकते हैं या कोई कठिनाई उठा सकते हैं, जिन्हें देखना हमारा काम है और इसीलिए हम यह आयोजन कर रहे हैं। यह आयोजन हम इसलिए भी कर रहे हैं कि सारे संसार में जो दुर्घटनाएँ घट रही हैं—चाहे वह ईरान-ईराक का युद्ध हो, फिलिस्तीन और इस्रायल का युद्ध हो या अमेरिका की नक्षत्र युद्ध-योजना हो या परमाणु युद्ध विभीषिका। हमने पचास फीसदी अपनी शक्ति ऐसे कामों के लिए सुरक्षित रखी है कि जिससे इस वातावरण को शुद्ध करने में और जो आदमी इस तरह की बातें करने के लिए तुले हुए बैठे हैं, आमादा बैठे हैं और जिन्होंने अरबों-खरबों डालर खर्च करके वह साधन बनाए हैं, उनकी भी हम रोकथाम करेंगे। अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए, संसार में शान्ति स्थापित करने के लिए और आप लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं के लिए इन तीनों उद्देश्यों के लिए यह कार्यक्रम हमने बनाए हैं। हम आशा करते हैं कि आप सब मिलकर संकल्प लेंगे कि यह काम गुरुजी का तो हम कर ही डालेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मित्रो ! हम चाहते हैं कि जो वजनदार काम हमारे गुरुजी ने हमारे जिम्मे सौंपा है, उस वजनदार काम को पूरा करने में हम समर्थ हो सकें। समर्थ बनने के लिए 'बैकिंग शक्ति' भी होनी चाहिए और वह बैकिंग शक्ति' आप होंगे। हमारी पीठ पीछे वाली शक्ति आप होंगे। इसलिए इस वर्ष के सौंपे हुए जो काम हैं, उनको आप किस सीमा तक पूरा कर सकेंगे और किस सीमा तक पूरा नहीं कर सकेंगे; यह ध्यान रखना है। हमने हर वर्ष वसन्त पंचमी पर संकल्प लिए हैं। अबकी बार यह आपसे संकल्प करने के लिए कहते हैं कि आप क्या करेंगे ? अब जो यज्ञ होंगे, उनमें आप लोगों को एकत्रित होकर के सामूहिक रूप से संकल्प लेने की उम्मीद और अपेक्षा कर रहे हैं। बस, यही कहना था आप लोगों से। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

युगनिर्माण योजना और उसके भावी कार्यक्रम

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

युगनिर्माण योजना का प्रारम्भ इस उद्देश्य से हुआ कि मनुष्य की भावनात्मक स्थिति में परिवर्तन किया जाए और उसे ऊँचा उठाया जाए। संसार में जितनी भी समस्याएँ हैं, उन सारी समस्याओं का एकमात्र उपाय यह है कि मनुष्यों का भावनात्मक स्तर गिरता हुआ चला गया। यदि मनुष्यों का भावनात्मक स्तर ऊँचा हो तो जो समस्याएँ आज हमको दिखाई पड़ती हैं, उनमें से एक का भी अस्तित्व न रहे। जितनी भी कठिनाइयाँ मनुष्य के सामने हैं, वे उसकी स्वयं की पैदा की हुई हैं, वास्तविक नहीं। सृष्टि में जितने भी जीव रहते हैं, सारे के सारे अपने जीवन की सुविधाओं को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। कीड़े-मकोड़ों से लेकर जलचर, नभचर और थलचर तक के सामने कोई ऐसी समस्या नहीं है, जिसके कारण से वह दुःखी रहते हों। मनुष्यों के सम्पर्क में जो आ गये हैं, उन प्राणियों के दुःखी होने के कारण हैं। उनको मनुष्यों ने पाल रखा है, वे दुःखी भी हो सकते हैं, काटे भी जा सकते हैं, घायल भी हो सकते हैं, लेकिन जो प्रकृति की गोद में रहते हैं, उनके सामने कोई समस्या नहीं है, जीवनयापन करने के सम्बन्ध में फिर मनुष्य के सामने इतनी समस्याएँ क्यों ? मनुष्य तो बुद्धिमान प्राणी है, प्रगतिशील प्राणी है, उन्नत प्राणी है, उसके सामने तो सुख-सुविधाओं के अम्बार होने चाहिए।

लेकिन हम देखते हैं कि दूसरे प्राणियों की तुलना में मनुष्य बहुत दुःखी है। उसका एकमात्र कारण यह है कि उसकी विचारणाएँ, उसकी भावनाएँ, उसके दृष्टिकोण निम्न स्तर के होते चले गये। अगर यह स्तर उनका ऊँचा उठा रहा होता तो अभावग्रस्त स्थितियों में भी मनुष्य ने शान्ति का जीवन जिया होता। कहा जाता है कि सम्पदाएँ मनुष्य के पास होंगी, सुख-सुविधाएँ मनुष्य के पास होंगी तो वह समुन्नत होगा, सुखी रहेगा और आनन्द से रहेगा, लेकिन बात सही नहीं है। गरीब लोगों के पास जिनके पास साधन और सामान नहीं होते, सम्पत्ति नहीं होती, वह भी बड़ी सुख और सुविधा का जीवन जीते हैं और उनकी वृद्धि का कोई मार्ग रुका नहीं रहता। ऋषियों का जीवन इसी प्रकार का था। उनके सामने ज्यादा अभावी दुनिया में कोई भी नहीं है। पहनने के नाम पर एक लँगोटी, इस्तेमाल करने के नाम पर एक कमण्डलु, फूस की झोंपड़ी, जमीन पर सोना, फूस की बिछावन, घास-पात और कन्द-मूल खा करके गुजारा कर लेना। इतना सब होते हुए भी ऋषियों ने बताया कि अभावग्रस्तता में भी सुखी जीवन बन सकता है, सुख और शान्ति का स्रोत बन सकता है। इन परिस्थितियों में भी विद्या अध्ययन में कोई रुकावट पैदा नहीं हुई। मगर सही बात यह है कि जिन-जिन लोगों के पास विशेष सुविधाएँ थीं, उन लोगों की अपेक्षा उन लोगों ने ज्यादा सुखी और समुन्नत जीवन जिया। ये बात उन्होंने साबित करने के लिए की थी कि वक्त-बेवक्त सुविधाएँ न हों, साधन मनुष्य के पास न हों तो भी वह आदमी सुखी जीवन जी सकता है, समुन्नत जीवन जी सकता है और दूसरों के लिए बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता है। फर्क केवल एक ही है कि भावनात्मक स्तर ऊँचा उठा हुआ हो।

इसकी तुलना में दूसरी बात है जिनके पास अपार सम्पदाएँ थीं और रावण जैसों के पास सम्पदाओं की क्या कमी थी, उसकी सोने की लंका बनी हुई थी, लेकिन वह स्वयं भी दुःख में रहा, स्वयं भी क्लेश-चक्र में पड़ा रहा, उसके सम्पर्क में जो लोग आये, जहाँ कहीं भी वह गया, वहाँ उसने दुःख फैलाया है और संकट फैलाया। सम्पत्ति से क्या लाभ रहा ? विद्या से मैं चैन से रहा हूँ, लेकिन उसके पास विद्या होने से भी क्या लाभ हुआ ? उसके पास धन था, विद्या थी, बल था, सब कुछ तो था, लेकिन एक ही बात की कमी थी भावनात्मक स्तर का न होना। बस, एक ही समस्या का आधार है, जिसे यों हम समझ लें तो फिर हम उपाय भी खोज लेंगे और विजय भी मिलेगी। उपाय हम अनेक ढूँढ़ते रहते हैं, पर मैं समझता हूँ कि इतने पर भी समाधान नहीं हो पाते। खून अगर खराब हो तो खराब खून के रहते हुए फिर कोई दवा-दारू कुछ काम नहीं करेगी। फुन्सियाँ निकलती रहती हैं। एक फुन्सी पर पट्टी बाँधी, दूसरी फुन्सी फिर निकल पड़ेगी। एक घाव अच्छा हुआ, दूसरा घाव फिर पैदा हो जाएगा। बराबर कोई न कोई शिकायत पैदा होती रहेगी। खून खराब हो तब खून साफ हो जाए तब, न कोई फुन्सी उठने वाली न कोई चीज उठने वाली है। ठीक इसी प्रकार से अगर हमारा भावनात्मक स्तर ऊँचा हो तो न कोई समस्या पैदा होने वाली है और न कोई गुत्थी पड़ने वाली है। इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विपरीत हमारी मनःस्थिति और हमारा दृष्टिकोण गिरा हुआ हो तो हम जहाँ कहीं भी रहेंगे अपने लिए समस्या पैदा करेंगे और दूसरों के लिए भी समस्या पैदा करेंगे। यही वस्तुस्थिति है और यही इसका आज की परिस्थितियों का दिग्दर्शन है।

भूतकाल में भारतवर्ष का इतिहास उच्चकोटि का रहा है, समुन्नत रहा, सुखी रहा है। इस पृथ्वी पर देवता निवास करते थे, स्वर्ग की परिस्थितियाँ थीं, इसका और कोई कारण नहीं था, न आज के जैसे साधन उस जमाने में थे। आज जितनी नहरें हैं उतनी उस जमाने में थीं कहाँ ? आज बिजली का जितना साधन-शक्ति प्राप्त है, उस जमाने में कहाँ थी ? आज जितने अच्छे पक्के मकान और दूसरे यातायात के साधन हैं, उस जमाने में कहाँ थे ? लेकिन इस पर भी यह देश सम्पदा का स्वामी था। इस देश के नागरिक देवताओं के शिविर में चले जाते थे। यह भूमि तब **'स्वर्गादपि गरीयसी'** मानी जाती थी। यद्यपि आज की तुलना में अभावग्रस्त थी, उस जमाने में इसका क्या कारण था ? इसका कारण एक ही था कि उस जमाने के लोग उच्चकोटि का दृष्टिकोण अपनाये हुए थे। उनकी भावनाएँ उच्चस्तर की थीं। उसका परिणाम यह था कि लोग परस्पर स्नेहपूर्वक रहते थे, सहयोगपूर्वक रहते थे, परस्पर विश्वास करते थे, एक-दूसरे के प्रति वफादार होते थे, संयमी होते थे, सदाचारी होते थे, मिल-जुलकर रहना जानते थे। एक-दूसरे का सहयोग करने की वृत्तियाँ हर एक के मन में बसी हुई थीं। अपने आप स्वयं कष्ट उठा लेना और दूसरे की सेवा करना हर आदमी के सामने लक्ष्य था। यही कारण था कि आदमी थोड़ी-सी वस्तुओं में, साधारण वस्तुओं में भी सुखी रहते थे और दुनिया में जगद्गुरु कहलाते थे, चक्रवर्ती शासन व्यवस्था को सँभालते थे। यहाँ सुख-सम्पदाओं के थोड़े-से किफायतसारी मितव्ययता के आधार जो कुछ भी सम्पदा थी, उसी के इस्तेमाल करने और कुछ बचत करने का था। यहाँ हर घर में सोना-चाँदी था, हर घर में लक्ष्मी का निवास था, क्योंकि आदमियों ने मितव्ययता से उपयोग किया हुआ था। अपव्ययता का दौर जो आजकल चारों ओर फैला हुआ है, उस जमाने में नहीं था। उस जमाने की परिस्थितियाँ और आज की परिस्थितियों में हम जब तुलनात्मक दृष्टियों से देखते हैं तो पाते हैं कि जो सम्पन्नता आज हमारे पास ज्यादा है, शिक्षा हमारे पास ज्यादा है, विज्ञान के साधन हमारे पास ज्यादा हैं, चिकित्सा के माध्यम हमारे पास ज्यादा है, असंख्य माध्यम और साधन ज्यादा हैं, फिर भी हम असन्तुष्ट होकर कहीं अधिक दुःखी, कहीं अधिक दीन, कहीं अधिक उलझे हुए, कहीं अधिक व्याधियों से त्रस्त हैं। इसका कारण भावनात्मक स्तर का निकृष्ट हो जाना ही है।

युगनिर्माण योजना का आविर्भाव केवल इसी समस्या का समाधान करने के लिए हुआ था। दूसरे शब्दों में इसको हम यों कह सकते हैं कि विश्व की जितनी भी समस्याएँ, कठिनाइयाँ और गुत्थियाँ हैं, उन सबका समाधान एक ही उपाय से करने के लिए जो हल ढूँढ़ा गया था, वह नवनिर्माण आन्दोलन का अर्थ भावनात्मक नवनिर्माण है। मनुष्य की विचारणाएँ, भावनाएँ और दृष्टिकोण को बदल देना यही हमारा उद्देश्य है, उसके बदल देने के पश्चात् सारी परिस्थितियाँ स्वयं ही बदल जाती हैं। एक-एक चीज को हम बदलना चाहें तो बहुत मुश्किल है। हजारों समस्याएँ सामने हैं, उनको अलग-अलग तरीके से हल करना असम्भव है क्योंकि जैसे-जैसे मनुष्यों की आमदनी बढ़ती चली जाएगी, उसमें हर आदमी का खर्च बढ़ता चला जाएगा। आमदनी की अपेक्षा खर्च ज्यादा किया तो दर्द कैसे दूर हो जाएगा ? अपव्यय अगर मनुष्य के काबू से बाहर है तो चाहे कितनी ही आमदनी क्यों न बढ़े, हमेशा कर्जदारी की समस्या बनी रहेगी। इसी प्रकार से अगर कोई आदमी क्रोधी है, कोई आदमी स्वार्थी है, कोई आदमी दुष्ट प्रकृति का है तो वह भी अपने समीपवर्ती लोगों के साथ जो व्यवहार करेगा, उसकी प्रतिक्रिया होगी ही और दूसरे लोग भी उसके प्रति डाह रखेंगे, ईर्ष्या रखेंगे, दुर्व्यवहार रखेंगे, कुढ़ेंगे, जलन पैदा करेंगे, लड़ाई-झगड़े होंगे और सब समस्याएँ उत्पन्न हो जाएँगी। गुस्सा वही है, गुस्सों का केन्द्र एक ही है, इसलिए उसको हल करने के लिए भावनात्मक निर्माण करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। चाहे वह उपाय आज इस्तेमाल किया जाय या एक हजार वर्ष बाद। स्वस्थ स्थिति तब हो सकती है, जब सबका ध्यान उस ओर जाएगा कि जहाँ गुत्थियों का केन्द्र है, उस केन्द्र को सुधारने और सँभालने के लिए कदम उठाये जाएँ। युगनिर्माण योजना ने यह कदम उठाया और उसकी ओर पाँव बढ़ाया। इसलिए हमारा प्रयास भावनात्मक निर्माण है। इसी का दूसरा नाम ज्ञानयज्ञ है। ज्ञानयज्ञ का विचारक्रान्ति के नाम पर युगनिर्माण योजना ने बहुत दिन पूर्व कुछ क्रियाकलापों के लिए एक मंच, एक साधन, एक माध्यम बनाया था और उसको धर्ममंच माध्यम बोला गया था, क्योंकि भारतवर्ष की प्रतिक्रिया विशेष रूप से इसी लायक थी। भारतवर्ष में अस्सी फीसदी लोग बिना पढ़े-लिखे रहते हैं और ये अस्सी फीसदी लोग देहातों में रहते हैं। इनके मानसिक स्तर ऐसे हैं, जिसमें कोई चीज समझी या समझायी जा सकती है, वह धार्मिक क्षेत्र ही है। यहाँ लोग रामायण की बात, कहानी को, सामाजिक कथा को जानते हैं। श्रीकृष्ण भगवान् की कथा को जानते हैं, मोरध्वज की कथा को जानते हैं, लेकिन उनसे राजनीति या दूसरी समस्याओं के बारे में पूछा जाए तो शायद ही वह कुछ बात बता पायेंगे। यहाँ का देहाती व्यक्ति भी लोक-परलोक की बात, भगवान् की बात, आत्मा की बात, तीर्थयात्रा, पुण्य-परमार्थ की बात, परलोक की बात किसी हद तक बता सकता है और दूसरी बातों को नहीं। इसीलिए यह तय किया गया कि लोगों का मन बदला जाए, लोगों की दिशा जिधर है व लोगों का ध्यान जिधर है, लोगों की जानकारियाँ जिस क्षेत्र में हैं उसको हाथ में लेकर भावनात्मक नवनिर्माण का प्रयास प्रारम्भ किया जाए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

धर्मसत्ता और राजसत्ता दोनों समान्तर हैं। अगर यह राजसत्ता चाहे तो लोगों के मानसिक स्तर को ऊँचा उठा सकती है और लोगों को दिशाएँ दे सकती है, लोगों को क्रोध से रोक सकती है और लोगों को शुद्ध और सदाचारी बना सकती है। इसी प्रकार से धर्मसत्ता में भी वह सामर्थ्य है कि वह लोगों की भावनाओं को पढ़ सकती है और लोगों को अच्छे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा दे सकती है। अतः प्रयास यही किया गया कि हम धर्मतन्त्र को सँभालें और उसकी शक्ति का उपयोग करें और लोगों की भावनाओं को ऊँचा उठाने के लिए प्रयास करें। धर्मतन्त्र अपने आप में बड़ा सामर्थ्यवान है। धर्मतन्त्र में ५६ लाख व्यक्ति सन्त और महात्मा, बाबा और ब्राह्मण, महात्मा के रूप में भारतवर्ष के ७ लाख गाँवों में रहते हैं। भारतवर्ष में ७ लाख गाँव हैं और ५६ लाख सन्त-महात्मा है। हर गाँव के पीछे ८ आदमी आते हैं। अगर ये ८ आदमी चाहें कि हर गाँव को अपना कार्यक्षेत्र और सेवा-क्षेत्र बना लें तो हर गाँव में से शिक्षा की समस्या को हल किया जा सकता है। सामाजिक गुत्थियों की समस्याओं को दूर किया जा सकता है। विषमताएँ और दूसरी बुराइयाँ जो हमारे देहातों में व अन्य जगहों में फैली हुई हैं, उनको मिटाया जा सकता है। यह काम कोई कठिन नहीं है। सफाई की समस्या को सहज ही हल किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सन्त-महात्मा घर-घर भक्ति के नाम पर सहयोग की भावना पैदा करें, कल्याण की भावना पैदा करें, मिल-जुलकर काम करने की भावना पैदा करें। सरकार का यह व्यक्तिगत उत्तरदायित्व हो तो हमारा विश्वास बन जाता है और हमारा इतिहास अन्य किसी देश की तुलना में आगे बढ़ सकता है, पीछे रहने की कोई जरूरत नहीं हो सकती। लेकिन ये धर्मतन्त्र ठीक तरीके से काम नहीं कर सका। प्रयास युगनिर्माण योजना का यही था कि धर्मतन्त्र में जितने भी व्यक्ति काम करते हैं, उन सबको वह प्रेरणा दी जाए, वह शिक्षा दी जाए कि वह भगवान् का सूक्ष्म स्वरूप समझें, भगवान् का सन्देश समझें और भगवान् की सेवा-पूजा का उद्देश्य समझें।

पिछले दिनों से ही आप लोगों को समझाया जाता रहा है कि भगवान् पूजा-पाठ का भूखा है। उसकी थोड़ी-सी प्रार्थना कर दी जाए, स्तुति कर दी जाए या भोग-प्रसाद जैसी छोटी-छोटी रिश्वतें खिला दी जाएँ तो हमारी मनोकामना पूर्ण करने के लिए वह तैयार रहता है। ये कितनी गन्दी और घृणित भावना थी ? युगनिर्माण योजना ने यह प्रयास किया कि हर व्यक्ति को यह बताया जाय कि भगवान् कोई व्यक्ति नहीं है, बल्कि एक समग्र ब्रह्माण्ड ही भगवान् हैं और इस विश्व-ब्रह्माण्ड की पूजा करना और सेवा करना यही भगवान् की वास्तविक सेवा और पूजा है। इसका प्रभाव-परिणाम यह हुआ कि असंख्य व्यक्ति जो पूजा-भजन में ही सारा समय खर्च कर देने के लिए तैयार थे, उन्होंने सेवा को अपना धर्म मानना स्वीकार किया और पूजा-भजन एक सीमित मात्रा में सेवा कार्यों को अपने हाथ में ले लिया। धर्ममंच को सेवा-शिक्षा में मोड़ने का यह प्रयास एक बहुत अच्छा और बड़ा उपयोगी प्रयास था। उसने इस देश के नागरिकों में भावनात्मक नवनिर्माण करने की दिशा में बहुत सफलता पायी। धर्म-क्षेत्र में जो सम्पत्ति लगी हुई है, जो पूँजी लगी हुई है, युगनिर्माण योजना का यह प्रयास है कि इस पूँजी को केवल पंच-पुजारियों के कार्यों में खर्च न होने दिया जाए, बल्कि ऐसे उपयोगी कार्यों में लगाया जाए, जिससे कि उसे जन कल्याण के प्रयोजनों में प्रयोग किया जा सके। अकेले मथुरा-वृन्दावन में ही कई मन्दिर ऐसे हैं, जिनमें कि एक-एक लाख रुपया मासिक भोग-प्रसाद में खर्च कर दिया जाता है। वैसे मथुरा-वृन्दावन में ५००० मन्दिर हैं। ५००० मन्दिरों की आमदनी और खर्चे का क्या ब्यौरा दिया जाय ? दो मन्दिर एक से ही हैं मथुरा का द्वारकाधीश मन्दिर और वृन्दावन का रंगजी का मन्दिर। दोनों मन्दिर ऐसे हैं जिसमें कि भगवान् के भोग और प्रसाद पर एक-एक लाख रुपया खर्च होता है। एक लाख रुपये के हिसाब से सालभर का खर्च हुआ बारह-बारह लाख रुपया। बारह लाख रुपये में साल में एक बढ़िया विश्वविद्यालय चलाया जा सकता है और उस विश्वविद्यालय के द्वारा ऐसे प्रशिक्षित व्यक्ति तैयार किये जा सकते हैं, स्नातक बनाये जा सकते हैं; जो विश्व की शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करने के बाद सारे विश्व में भारत माता का सन्देश और भारतीय संस्कृति का सन्देश पहुँचाने में समर्थ हों। ऐसे कार्यकर्त्ताओं को तैयार करना इस विश्वविद्यालय के लिए क्या कठिन होगा ?

इन्जीनियर बनाने वाले विश्वविद्यालय अपना काम करते हैं, चिकित्सक डॉक्टर बनाने वाले विश्वविद्यालय अपना काम करते हैं। धर्मप्रचारक और लोकसेवी पैदा करने वाले विश्वविद्यालय कहीं भी नहीं हैं। अगर एक मन्दिर चाहे तो अपनी आमदनी का बारह लाख रुपया साल भर में खर्च कर सकता है और जाने क्या समाज की सेवा कर सकता है ? गायत्री तपोभूमि का मासिक व्यय दो हजार रुपया मासिक है। इसका अर्थ हुआ चौबीस हजार रुपया साल। कहाँ बारह लाख रुपया सालभर का खर्च एक मन्दिर का, कहाँ चौबीस हजार रुपया ? ऐसे एक मन्दिर की आमदनी से गायत्री तपोभूमि जैसी संस्थाएँ ४८ बनाई जा सकती हैं। यही वह आधार है जो नव निर्माण का, युगनिर्माण का संकल्प पूरा कर सकेंगे। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

युग-मनीषा जागे, तो क्रान्ति हो

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

अब्राहम लिंकन ने पार्लियामेंट की मेज पर एक बौनी-सी महिला को खड़ा कर परिचय देते हुआ कहा—"यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महिला वह है, जिसने मेरे संकल्प को पूरा करके दिखा दिया।" अब्राहम लिंकन ने अपनी आत्मा व अपने भगवान् के सामने कसम खाई थी कि हम अमेरिका पर से एक कलंक हटाकर रहेंगे। कौन-सा कलंक ? कलंक यह कि अमेरिका के दक्षिणी भाग में नीग्रो-लोगों को गुलाम बनाकर उनसे जानवर के तरीके से काम लिया जाता था। कानून मात्र गोरों की हिमायत करता था। ऐसी स्थिति में एक महिला लिंकन की कसम को पूरा करने उठ खड़ी हुई। उसका नाम था हैरियट स्टो। लिंकन ने पार्लियामेंट के मेम्बरों से कहा—"यही वह महिला है जिसकी लिखी किताब ने अमेरिका में तहलका मचा दिया। लाखों आदमी फूट-फूट कर रोए हैं। लोगों ने कह दिया जो लोग ऐसे कानून को चलाते हैं, इस तरह जुल्म करते हैं, हम उनसे लड़ेंगे।"

आप क्या समझते हैं नीग्रो व नीग्रो की लड़ाई की बात लिंकन कह रहे थे ? नहीं। नीग्रोज के पास न हथियार थे, न ताकत। उनके पास तो आँसू ही आँसू थे। वे तो रो भर सकते थे। लड़ाई गोरों व गोरों में हुई। उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका में गृहयुद्ध हो गया। इतना खौफनाक युद्ध हुआ कि व्यापक संहार हुआ पर इसका परिणाम यह हुआ कि कालों को उनके अधिकार मिल गए। इतना बड़ा काम, इतना बड़ा विस्फोट करा देने वाली महिला थी—हैरियट स्टो जिसने किताब लिखी थी—'अंकल टाम्स कैबिन' 'टाम काका की कुटिया'।

एक छोटी-सी महिला के अन्तःकरण की पुकार से लिखी गई इस किताब ने जन-जन के मर्म को, अन्तःकरण को छुआ और अमेरिका ही नहीं, सारे विश्व में तहलका मचा दिया। हर आदमी ने इसे पढ़ा और कहा कि जहाँ ऐसे जुल्म होते हैं, इनसान, इनसान पर अत्याचार करता है, हम उसे बर्दाश्त नहीं करेंगे और उसे उखाड़ फेंकेंगे। लिंकन ने कसम तो खाई थी पर वे अकेले कुछ कर नहीं सकते थे, क्योंकि उनके पास गोरों का शासन तन्त्र था। कालों का कोई हिमायती नहीं था। उनका हुकुम किस पर चलता ? पर उस महिला की लिखी उस किताब ने हर नागरिक के दिल में ऐसी आग पैदा कर दी, ऐसी टीस पैदा कर दी कि आदमी कानून को अपने हाथ में लेकर दूसरे आदमियों को ठीक करने पर आमादा हो गया। गृहयुद्ध तब समाप्त हुआ, जब वह कानून खत्म हो गया और सबको समान अधिकार दिला दिए गए।

क्या किताब ने यह क्रान्ति की ? अरे किताब नहीं, दर्शन। किताब की बात नहीं कहता मैं आपसे। मैं कहता हूँ दर्शन। दर्शन अलग चीज है। विचार वेहूदगी का नाम है जो अखबारों में, नॉवेलों में, किताबों में छपता रहता है। विचार हमेशा आदमी के दिमाग पर छाया रहता है। कभी खाने-कमाने का, कभी खेती-बाड़ी का, कभी बदला लेने का यही विचार मन पर छाया रहता है और दर्शन, वह आदमी के अन्तरंग से ताल्लुक रखता है। जो सारे समाज को एक दिशा में कहीं घसीट ले जाने का काम करता है, उसको दर्शन कहते हैं। आदमी की जिन्दगी में, उसकी संस्कृति में सबसे मूल्यवान चीज का नाम है—दर्शन। हिन्दुस्तान की तवारीख में जो विशेषता है आदमी के भीतर का भगवान् क्या जिन्दा है, यह किसने पैदा किया ? दर्शन ने। इतने ऋषि, इतने महामानव, इतने अवतार किसने पैदा कर दिए ? यह है दर्शन जो आदमी को हिला देता है, ढाल देता है, गला देता है, बदल देता है। हमारी दौलत नहीं, दर्शन शानदार रहा है। हमारी आबो-हवा नहीं, शिक्षा नहीं, दर्शन बड़ा शानदार रहा है। इसी ने आदमियों को ऐसा शानदार बना दिया कि यह मुल्क देवताओं का देश कहलाया जाने लगा। दूसरी उपमा स्वर्ग से दी जाने लगी। स्वर्ग कहाँ रहेगा ? जहाँ देवता रहेंगे। देवता ही स्वर्ग पैदा करते हैं। इमर्सन ने बहुत सारी किताबें लिखी हैं और प्रत्येक किताब के पहले पन्ने पर लिखा है "मुझे नरक में भेज दो मैं वहीं स्वर्ग बनाकर दिखा दूँगा।" यह है दर्शन। आज की स्थिति हम क्या कहें मित्रो ! हम सबके दिमाग पर एक घिनौना तरीका, छोटा वाला तरीका, नामाकूल तरीका हावी हो गया है। हमारे सोचने का तरीका इतना वाहियात कि सारी जिन्दगी को हमने, हीरे-मोती जैसी जिन्दगी को हमने खत्म कर डाला। आदमी की ताकत, विचारों की ताकत को हमने तहस-नहस कर दिया। हमें कोढ़ी बना दिया। कसूर किसका है ? सिर्फ एक ही कमी है, वह है आदमी का दर्शन। वह कमजोर हो गया है।

आज आदमी की सभ्यता सिर्फ एक है। उसका नाम है दर्शन की भ्रष्टता। उसके पास चीजों की कमी नहीं है। आदमी के पास जरूरत से ज्यादा चीजें हैं, पर मुझे ये लगता है कि आदमी इनको खा भी सकेगा कि नहीं, हजम भी कर सकेगा कि नहीं। आदमी का दर्शन घिनौना हो जाने की वजह से इतनी ज्यादा चीजें होते हुए भी मालूम पड़ता है कि बहुत कम हैं। गरीबी उसके ऊपर हावी हो गई है। परिस्थितियाँ, दरिद्रता, मुसीबतें उसके दर्शन के कारण उस पर हावी हो गई हैं। दर्शन सारे व्यक्तियों का, सारे समाज का, सारे विश्व का भ्रष्ट होता चला गया है और आदमी दुष्ट होता चला गया है। दुष्टों को पकड़ना, रोकना व मारकर ठीक करना चाहिए। मच्छरों को मारना चाहिए पर एक-एक मच्छर को मारने के पहले उस गन्दगी से निपटना चाहिए जो मच्छर पैदा करती है। हम मच्छर-मक्खी मार नहीं सकते। हम समस्याओं को कैसे मार पाएँगे ? समस्याएँ आदमी के सड़े हुए दिमाग में से पैदा होती हैं, सड़े हुए दिल से पैदा होती हैं। पैसे वाले बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं कि हम गृह-उद्योग बढ़ाएँगे, नहरें खोदेंगे, बाँध बनाएँगे, ये सब ठीक है। आदमी को साक्षर बनाएँगे, हर आदमी को मालदार बनाएँगे। कोई कहता है कि आदमी को पहलवान बनाएँगे, पर इतना सब करने के बाद फिर होगा क्या ? जरा विश्लेषण, पोस्टमार्टम करके देखिए कि इस सबके बावजूद विचारों की, दर्शन की भ्रष्टता यदि बनी रही तो वह करता क्या है ? वह खुद जलता है, दूसरों को जलाता है। दियासलाई अपने आपको जला के खत्म कर देती है, दूसरों को जला देती है। आज हमारी आपकी जिन्दगियाँ दियासलाइयों के तरीके से जल रही हैं और अनेक को जला रही हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आपने ब्याह कर लिया। बीबी आ गई। हाँ तो ठीक है, अब आप क्या करेंगे उसको जला दीजिए। नहीं साहब बीबी तो बहुत अच्छी मालूम पड़ती है। इसीलिए तो कहते हैं कि फुलझड़ी बहुत अच्छी मालूम पड़ती तो आप दियासलाई लेकर के खत्म क्यों नहीं करते ? हर चीज को आदमी आज जला रहा है। जिन्दगी को जला रहा है, समाज को जला रहा है। देश को जला रहा है, बच्चों को जला रहा है। भाइयो ! आज सारा समाज जिस तरीके से भ्रष्ट-चिन्तन व दुष्ट आचरण करता चला जा रहा है इस सबका मूल कहीं खोजना हो तो एक ही जगह है, वह है आदमी के सोचने व ऊँचा उठाने वाली शैली, तरीका, विद्या जिसे 'दर्शन' कहते हैं। सुकरात ने अपने समय में अपने समाज को एक ही दिशा देना शुरू किया; जिसका नाम था 'दर्शन'। विचार नहीं। विचार तो अखबारों में, गन्दी किताबों में रोज छपते रहते हैं। कितना भ्रामक अज्ञान फैलाने वाले अखबार रोज निकलते रहते हैं। इनकी बाबत मैं आपसे नहीं कहता। मैं आपसे कहता हूँ—'दर्शन' की बाबत। सुकरात का दर्शन जिन दिनों पैदा होने लगा और विद्यार्थियों को पढ़ाया जाने लगा तो हुकूमत काँप उठी। हुकुम दिया गया कि यह आदमी बागी है। इस आदमी को जहर पिला देना चाहिए। डाकू-चोर एक या दो पूरे समाज को हिलाकर रख देता है। दार्शनिक दुनिया को उलट-पलट देता है। ईसा सन्त थे, नहीं दार्शनिक थे। सन्त तो समाज में ढेर सारे हैं, जो एक पाँव पर खड़े रहते हैं, पानी नहीं पीते, दूध नहीं पीते। बाबाजी की बात नहीं कह रहा मैं। ईसा कौन थे ? दार्शनिक थे। उन्होंने अपने समय को बदलने वाला दर्शन दिया था। दर्शन वह, जो आदमी के अन्तरंग को छुए, आत्मा को छुए, हृदय को छुए। अन्तरंग को छूने वाला दर्शन जब कभी आता है तो गजब करके रख देता है। लेखक भी, कवि भी ढेर सारे हैं, मालदार आदमी बहुत हुए हैं परन्तु दार्शनिक जब भी कभी हुए हैं तो मजा आ गया है। गजब हो गया है, समाज को हिला दिया गया है।

कुछ हवाले दूँ आपको। रूसो नाम का एक दार्शनिक हुआ है, जिसने सबसे पहले एक विचार दिया, अन्तरंग को छूने वाला, आदमी के मस्तिष्क को छूने वाला, समाज की व्यवस्था पर असर डालने वाला। दर्शन दिया रूसो ने जिसे डेमोक्रेसी नाम दिया गया। डेमोक्रेसी के बारे में मजाक उड़ाया गया था। जिन दिनों यह दर्शन प्रस्तुत किया गया, कहा गया कि यह पागलों की बातें हैं। हुकूमत तो राजा की होती है रिआया के ऊपर। रिआया, रिआया के ऊपर हुकूमत करेगी, यह तो पागलों की बातें हैं। लेकिन पागलों की बात आप देखते हैं ? सारी दुनिया में घुमा-फिरा के डेमोक्रेसी आ गई है। यह विचार एक दार्शनिक ने दिया था और उसने सारी दुनिया को हिलाकर रख दिया और हवाले दूँ आपको। एक नाम है नीत्से। उसका वह हिस्सा तो नहीं बताऊँगा जिसमें उसने यह कहा था कि खुदा खत्म हो गया, खुदा को हमने जमीन में गाड़ दिया पर यह वह आदमी था जिसने कहा था कि आदमी को सुपरमैन बनना चाहिए। आदमी को गई-गुजरी स्थिति में नहीं रहना चाहिए। अपने आपको विकसित करना चाहिए और दूसरों को ऊँचा उठाने की अपनी सामर्थ्य एकत्रित करनी चाहिए। यह किसकी फिलॉसफी है ? नीत्से की। आपको मैं इतिहास इसीलिए बता रहा हूँ कि आप समझें कि दर्शन कितनी जबर्दस्त चीज है ? दर्शन उस चीज का नाम है जो कौमों को बदलकर रख देता है, बिरादरियों को, मुल्कों को, परिस्थितियों को बदल देता है। दर्शन बड़े शानदार होते हैं। वे भले हों अथवा बुरे हों, कितनी ताकत होती है उनमें, यह आपको जानना चाहिए। मैं आपको अपने जीवन की एक घटना सुना दूँ दर्शन की बाबत।

जब मैं शिलांग, डिब्रूगढ़ की तरफ अपने मिशन के लिए दौरा कर रहा था तो मेरी इच्छा हुई कि नागालैण्ड जाऊँ। नागा कैसे होते हैं ? जरा देखकर आऊँ। हमारे कार्यकर्त्ता साथ चले, बोले हम दुभाषिए का काम करेंगे। उनकी जीप में बैठकर मैं नागालैण्ड चला गया। उन लोगों के बीच जो रेलगाड़ी पलट देते थे, तीर-कमानों से जिन्होंने सेना की नाक में दम कर रखा था। नागाओं के एक गाँव में जाकर एक चबूतरे पर मेरे मित्रों ने बिठा दिया व नागाओं से उनकी भाषा में कहा, ये हमारे गुरुजी हैं, महात्मा हैं, आशीर्वाद देते हैं। किसी का कोई दुःख हो तो इनसे कह लीजिए। ये नहीं कहा कि ये विद्वान हैं, कोई मिशन चलाते हैं। बस यही कहा कि कोई मनोकामना हो तो इनसे कहिए। कोई पचास-सौ नागा वहाँ बैठे थे। एक ने दूसरे से कहा, दूसरे ने तीसरे से कहा। सब ने आपस में पूछताछ कर ली व कहा कि हमारा तो कोई दुःख नहीं है, रोटी मिल जाती है। सोने के लिए फूस के मकान हैं, पहनने को लोमड़ी की खाल है, मौज करते हैं। हमें दुःख काहे का। एक-दूसरे की ओर देखा तो बुड्ढा नागा उठा व दुभाषिए से बोला कि इन स्वामी जी से पूछिए कि इनको कोई दुःख तो नहीं है। हमसे बोले, "हमें तो कोई परेशानी नहीं किन्तु आप भूखे हों तो हमारे यहाँ चावल हैं, भूखे नहीं जाएँ हमारे दरवाजे से। पहनने के कपड़े न हों तो खालें ले जाएँ। हमारा अपना कोई कष्ट नहीं। हम तो प्रसन्न हैं। स्वामीजी को कोई दुःख हो तो हम दूर कर दें।" मैं समझ गया। आदमी का दर्शन यह है। नागाओं ने नागालैण्ड बना लिया। क्या वजह हो सकती है ? यह उस बिरादरी का दर्शन है। जो कुछ हमारे पास है, उससे खुशी की जिन्दगी जिएँगे। उसे देखकर के खाएँगे। मस्ती का जीवन जिएँगे। यह दर्शन है। कौमें, बिरादरियाँ, समय और जातियाँ हमेशा दर्शन के आधार पर उठी हैं। यह दर्शन पैदा करना मनीषा का काम है। दर्शन को बनाने वाली माँ का नाम है 'मनीषा'। मनीषा कैसी होती है ? मनीषा ऐसी होती है जैसी कि बुद्ध के भीतर से पैदा हुई थी।

बुद्ध ने जमाने को देखा था। बड़ा वाहियात जमाना, बड़ा फूहड़ जमाना। माँस, मदिरा, मद्य, मुद्रा, मैथुन—ये पाँच चीजें ही उस समय जीवन का आधार बनी हुई थीं। यही उस समय का धर्म था। जो आज के समय का वाममार्ग है; वही उस समय का दर्शन था। ऐसी परिस्थितियों में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक बुद्ध नाम का आदमी उठ खड़ा हुआ। बुद्ध किसे कहते हैं ? बुद्ध विचारशीलता का, भावनाशीलता का प्रतीक है। लोगों को दिशा देने वाले को बुद्ध कहते हैं। कथावाचक, धर्मोपदेशक उस जमाने में भी थे लेकिन मनीषी के रूप में अकेले बुद्ध सामने आए। उन्होंने लोगों से कहा, **"बुद्धं शरणं गच्छामि"**—बुद्धि की, विवेक की, समझदारी की पकड़ में आ जाओ। क्यों और कैसे के सवाल पूछो। उन्होंने लोगों के समक्ष कसौटी रखी कि यदि आज के विचार, रीति-रिवाज, क्रिया-कलाप, गतिविधियाँ सही साबित हों तो स्वीकार कीजिए, नहीं तो मना कीजिए। लोगों ने इनकार करना शुरू कर दिया—यह नहीं हो सकता। हमारे बाप-दादा किया करते थे तो हम क्या करें ? इनकारी का नशा इस कदर चढ़ता चला गया कि सारी बातें वाहियात ठहराई जाने लगीं। यज्ञों के नाम पर जानवर काटे जाते थे, अश्वमेध के नाम पर घोड़े को मारकर हवन होता था। जो भी अनर्थ होता था वह इनकार किया जाने लगा। बुद्ध ने कहा कि यदि भगवान् कहते हैं कि ऐसा गलत काम करना चाहिए तो ऐसे भगवान् को भी नहीं मानना चाहिए। उन्होंने वेदों को मानने से इनकार कर दिया, जिनका अनर्थ निकाला जाने लगा था और कहा—**बुद्धं शरणं गच्छामि।** बुद्ध को क्या कहेंगे ? दार्शनिक-मनीषी। बाबाजी नहीं, मनीषी।

मनीषी इनसान की समस्याओं का समाधान देते हैं, व्यक्ति तैयार करते हैं, समाज बनाते हैं। सुकरात को तैयार करने वाले का नाम अरस्तू है और शिवाजी को तैयार करने वाले का नाम समर्थ गुरु रामदास है। चन्द्रगुप्त को तैयार करने वाले का नाम चाणक्य है और विवेकानन्द को तैयार करने वाले हैं रामकृष्ण परमहंस। ये कौन हैं ? अरे भाई, ये मनीषी हैं। मनीषी विचार नहीं, दर्शन देते हैं, दर्शन जीकर दिखाते हैं और अनेक का जीवन बना देते हैं। आप कहेंगे दर्शन तो बद्रीनाथ का, जगन्नाथ का, सोमनाथ का किया जाता है। किराया खर्च करके जो दर्शन आप करते हैं, वह दर्शन नहीं है। दर्शन वह है, जो ज़मीला ने किया। जमीला ने सारी जिन्दगी भर पैसे जमा किए थे और कहती थी मैं काबा जाऊँगी और दर्शन करूँगी। जाने के वक्त पड़ गया अकाल। पानी न पड़ने से, अनाज न होने से लोग भूखों मरने लगे। जमीला ने कहा, मैं काबा हज करने जाने वाली थी। अब हज नहीं जाऊँगी। बच्चे भूखे मर रहे हैं। इनके खाने का, दूध का, पानी का इन्तजाम किया जाए ताकि वे जिन्दा रखे जा सकें और उसने काबा जाने से इनकार कर दिया। मेरे पास कुछ है ही नहीं मैं कैसे जाऊँगी ? इसे कहते हैं दर्शन, फिलॉसफी। देखने के अर्थ में नहीं फिलॉसफी के अर्थ में। बाद में खुदाबन्द करीम के यहाँ मीटिंग हुई तो यह तय किया गया कि हज किसका कबूल किया जाए। सारे फरिश्तों की मीटिंग में तय हुआ कि सिर्फ एक आदमी ने इस साल हज खुलकर किया। खुदाबन्द ने उसका नाम बताया—जमीला। फरिश्तों ने अपने रजिस्टर दिखाए व कहा कि वह तो गई ही नहीं। खुदाबन्द ने समझाया—देखने के लिए न गई तो न सही, लेकिन उसने काबा के ईमान को, प्रेरणा को समझा और हज करके जो अन्तरंग में बिठाया जाना चाहिए था, वह यहीं बैठकर लिया। शेष सब झक मारते रहे। इसलिए सबका नामंजूर। जमीला का कबूल।

मित्रो ! मैं कह रहा था दर्शन की बात। दर्शन जिसको जन्म देती है, वह है—मनीषा। मनीषा को हम ऋतम्भरा—प्रज्ञा कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में हम इसे गायत्री कह सकते हैं। श्रेष्ठ चिन्तन करने वालों के समूह का नाम है मनीषा। इस मनीषा का हम आव्हान करते हैं, उसकी पूजा करते हैं। मनीषा माँ है। माँ क्या करती है ? माँ बच्चे के लिए समय-समय पर जरूरत की चीजें बनाकर खिलाती है, उसे छाती का दूध पिलाती है ? हजम कर सके, ऐसी खुराक बनाकर देती है माँ। मनीषा वह है जो युग की आवश्यकताओं, समय की आवश्यकताओं, इनसान की आवश्यकताओं की तलाशती रहती है, समझती है व वैसी ही खुराक दर्शन की देती है, जिसकी जरूरत है। युग की मनीषा ध्यान रखती है कि आज के समय की जरूरत क्या है ? पुराने समय का वह ढोल नहीं बजाती। वह युग को समझती है, देश को समझती है और परिस्थितियों के अनुरूप युग को ढालने की कोशिश करती है, आस्थाओं से रहित हैवानी के गुलाम इनसान को आदमी बनाती है, उसे ऊँचा उठना सिखाती है व उसके घरों में स्वर्गीय परिस्थितियाँ पैदा करती है। ऐसी ही मनीषा का मैं आहवान करता हूँ व कहता हूँ कि आप में से जो भी यह सेवा कर सकें, वह स्वयं को धन्य बना लेगा, अपना जीवन सार्थक कर लेगा। आज बुद्धिवाद ही चारों ओर छाया है। 'नो गॉड, नो सोल' की बात कहता जमाना दीखता है। ये किसकी बात है ? नास्तिकों की, वैज्ञानिकों की, बुद्धिवादों की। इन्होंने फिजाँ बिगाड़ी है ? नहीं इनसे ज्यादा उन धार्मिकों ने, पण्डितों ने, बाबाजियों ने बिगाड़ी है जो उपदेश तो धर्म का देते हैं पर जीवनक्रम में उनके कहीं धर्म का राई-रत्ती भी नहीं है। पुजारी की खुराफात देवी को सुना दें तो देवी शर्मिन्दा हो जाए। धर्म को व विज्ञान को सबको ठीक करना होगा मित्रो ! और वह काम करेगी मनीषा। कुम्भ नहाइए वैकुण्ठ को जाइए, यह कौन-सा धर्म है ? ऐसे धर्म को बदलना होगा व विज्ञान द्वारा दिग्भ्रान्त की जा रही पीढ़ी को भी मनीषा को ही मार्गदर्शन देना होगा। आपको युग की जरूरतें पूरी करनी चाहिए। आदमी के भीतर की आस्थाएँ कमजोर हो गई हैं, उन्हें ठीक करना चाहिए। आज की भाषा में बात कीजिए व लोगों का समाधान कीजिए। विज्ञान की भाषा में, नीति की, धर्म की, सदाचार की, आस्था की बात कीजिए व सबका मार्गदर्शन करिए। बताइए सबको कि आदर्शों ने सदैव जीवन में उतारने के बाद फायदा ही पहुँचाया है, नुकसान किसी का नहीं किया।

अब्राहम लिंकन ने बीच मेज पर खड़ा करके कहा था यह स्टो है। इसने अमेरिका के माथे पर लगा कलंक हटा दिया। आप क्या करना चाहते हैं ? हम भारतीय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संस्कृति को मेज पर खड़ा करके यह कहना चाहते हैं कि यह वह संस्कृति है जिसने दुनिया का कायाकल्प कर दिया। आज भी यह पूरी तरह से मार्गदर्शन देने में सक्षम है। मनीषी इसने ही पैदा किए। यदि मनीषी जाग जाएँ तो देश, समाज, संस्कृति सारे विश्व का कल्याण होगा। भगवान् करे, मनीषा जगे, जागे, जगाए व जमाना बदले। हमारा यह संकल्प है वह हम इसे करेंगे। आपको जुड़ने के लिए आमन्त्रित करते हैं। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

युगशोधन हेतु मनीषा को आमंत्रण

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य, धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

मनुष्य को भगवान् के अनुदान अन्यान्य प्राणियों से भिन्न मिले हैं। सामान्य प्राणी दो काम कर पाते हैं। एक ओर तो अपना पेट भर पाते हैं, दूसरा सन्तान पैदा कर पाते हैं। दो के अलावा और कोई पुरुषार्थ अन्य प्राणियों के जिम्मे नहीं है किन्तु, दूसरी ओर मनुष्यों के जिम्मे कैसे-कैसे शानदार अनुदान मिले हैं ? अन्य प्राणी तो एक छोटी-सी कल्पना रखते हैं, जो ख्वाब के रूप में दिमाग में केवल एक सीमा तक ही काम आती है, जो शरीर की जरूरतों को पूरा करती है। उससे आगे उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती। चिन्तन की परिधि इन प्राणियों में उतनी ही है जिससे कि शरीर की जरूरतें पूरी कर सकें, चारा इकट्ठा कर सकें, घास खा सकें, दौड़ सकें, बच्चे पैदा कर सकें। बस इससे ज्यादा चेतना नहीं है।

आदमी को अन्य प्राणियों की तुलना में क्या-क्या मिला ? शरीर ऐसा शानदार मिला कि कलाकार ने अपनी सारी की सारी कला एक ही केन्द्र पर खत्म कर दी, ऐसा मालूम पड़ता है। हाथ हमारा इतना शानदार है कि मालूम पड़ता है कि प्रकृति ने इसे बहुत सोच-समझकर मन लगाकर बनाया है। इतनी जगह ले मुड़ने वाला, इतनी जगह से घूमने वाला, इतने तरह के काम करने वाला हाथ किसी अन्य प्राणी के हिस्से में नहीं आया। दिमाग के बारे में हम क्या कहें ? आँखों के लिए क्या कहें ? हर इन्द्रिय के लिए क्या कहें ? अनोखा प्राणी है मनुष्य। भगवान् ने इस हाड़-मांस के जखीरे में एक ऐसी चेतना भर दी है जो अनोखी मालूम पड़ती है ? बड़े सौभाग्यशाली हैं हम व आप, जो ऐसा शरीर धारण करने में समर्थ हो सके, सौभाग्यशाली सिद्ध हो सके। भगवान् का अनुग्रह हम सब पर कि हम मनुष्य शरीर प्राप्त कर सकें।

अगली वाली बात और थोड़ी सुरक्षित रखी है, जिसे पात्रता के अनुरूप भगवान् दिया करते हैं। सब प्राणियों को नहीं किसी-किसी को देते हैं, जिसे सुपात्र पाते हैं। पात्रता आपकी बढ़ेगी तो भगवान् की चार नियामतें, चार विभूतियाँ आपको मिलती चली जाएँगी। एक विभूति का नाम ऋत है। ऋत क्या है ? ऋत उसे कहते हैं, जिसमें कीमती चीजें जुड़ी हुई हैं, साजो—सुरक्षा-शालीनता-अन्तःप्रेरणा। ऋत जिस किसी के हिस्से में आता है, वह अपना कल्याण करता है और अपना कल्याण करके वह सीमित नहीं रह जाता, समाज का उत्तरदायित्व सँभालता है, सारी मनुष्य जाति का मार्गदर्शन करता है और इस पृथ्वी पर खुशहाली लाता है। ऋत उस वर्ग के हिस्से में आता है, जिसको हम सभी ब्राह्मण कहते हैं। ऋत उसे कहते हैं, जिसमें आदमी का चिन्तन और जीवन देवोपम बन जाता है। वह अपने लिए कर्त्तव्यों का निर्धारण करता है। क्या निर्धारण करता है ? **"वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।"** हम पुरोहित अर्थात् हम ब्राह्मण, हम सन्त, हम ऋषि यह उत्तरदायित्व ग्रहण करते हैं और यह घोषणा करते हैं कि 'वयं' अर्थात् हम सब, 'राष्ट्रे' सारे राष्ट्र को, नागरिकों को, विश्व मानवता को 'जागृयाम्' जीवन्त और जाग्रत रखे रहेंगे। जीवन्त और जाग्रत रखने की जिम्मेदारी केवल एक ही वर्ग के लोगों की है, जिनका नाम है—ब्राह्मण। देवता और ब्राह्मण एक ही बात है। देवता आसमान में रहते हैं। देवता वे भी हैं, जिनके दिमाग आसमान में हैं। बाकी लोगों के दिमाग जमीन पर गड्ढे में, खड्डे-खंदक में रहते हैं। ब्राह्मण का दिमाग आसमान में रहता है। वह ऊँचा सोचता और ऊँचा ही चिन्तन करता है, ऊँचा ही उसका लक्ष्य होता है। ऊँची ही उसकी विचारणा होती है। वैसे ही देव होते हैं। देव ऋत को पा करके, भगवान् का अनुग्रह पा करके अपना कल्याण करते हैं और समाज का हित भी साधते हैं।

'ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत' ऋत से सत्य की, सत्य से तप की उत्पत्ति होती है और तप से गर्मी की उत्पत्ति होती है, जिससे दिन और रात पैदा होते हैं, जिससे संसार की व्यवस्था पैदा होती है। यह भगवान् का अनुग्रह आपमें से किन-किन के हिस्से में आया, पता नहीं। पर यह जिस किसी के हिस्से में आया होगा, उसे ही बुद्धिजीवी कहेंगे। जो भी सुरक्षित हैं, बुद्धिजीवी हैं, उनको अगर भगवान् का प्यार मिल जाता है तो पहले मिलता है ऋत। ऋत से वे पहले अपना उद्धार करते हैं और फिर सारे विश्व का उद्धार करते हैं।

दूसरा वाला अनुदान दूसरी श्रेणी के लोगों को मिलता है। उसका नाम है—शौर्य और साहस। तीसरा अनुदान है—साधन और चौथे का नाम है—श्रम। वर्णाश्रम व्यवस्था के हिसाब से यही चार प्रकार के वर्गीकरण हैं। भगवान् के अनुदान एक के बाद एक मिलते हैं, जिनके हिस्से में पराक्रम है, शौर्य है, साहस है, हिम्मत है, वे दुनिया में अपने तरीके से काम करते हैं। कोलम्बस के तरीके से, नैपोलियन के तरीके से भौतिक दुनिया में बहुत काम कर जाते हैं और आध्यात्मिक जगत में फरहाद से लेकर मीरा तक व विवेकानन्द से लेकर दयानन्द तक जाने क्या से क्या कर डालते हैं। ये गजब कर देने वाले प्राणी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साहसी कहलाते हैं। साहसी को क्षत्रिय कहते हैं। तीसरे वर्ग के पास सम्पदाएँ रहती हैं और चौथा वर्ग श्रमिक जो अपने पसीने से, अपनी मेहनत-मशक्कत से दुनिया को खुशहाल बना देते हैं।

आदिकाल में दुनिया कैसी रही होगी ? आरम्भ में शायद वह ऊबड़-खाबड़ रही होगी, जैसी कि चन्द्रमा की खबर लेकर वैज्ञानिक आए हैं। एक इनसान ही रहा होगा, जिसने अपनी मशक्कत से, अपनी मेहनत से इस जमीन को समतल किया होगा। इसी तरह से जानवरों को जो उच्छृंखलों के तरीके से, अस्त-व्यस्तों के तरीकों से हानि पहुँचाते हैं—प्यार से, सहकारिता से डरा-धमका करके मनुष्य का सहयोगी बनाया होगा। उसकी मशक्कत ने ही दुनिया में तरह-तरह की नई चीजें लगाकर खड़ी कर दीं। इमारतें बनाने से लेकर घर, कपड़ा बनाने से लेकर अन्न उपजाने तक यह आदमी का श्रम है। श्रम का अनुदान मिलने से आदमी निहाल हो गया।

ताकत दूसरे प्राणियों में भी है, पर वे श्रम नहीं कर सकते। नियोजित श्रम उनके पास नहीं है। हाथी के पास, घोड़े के पास ताकत है, पर वह उस ताकत का उपयोग नहीं कर पाता। पर इनसान अपनी ताकत का जानकार है, उसका उपयोग कर सकता है और यह भगवान् का अनुदान है और इसी से यह साधन पाता है।

आदमी की बुद्धि का श्रेष्ठतम भाग है ऋत। यह ऋत यदि आदमी को मिल जाए तो बुद्धि सार्थक हो जाती है, विद्या सार्थक हो जाती है, प्रज्ञा सार्थक हो जाती है और मनुष्य की जिन्दगी सार्थक हो जाती है। जिसमें से कुछ को भगवान् ने शिक्षा दी है, वे आप मेरे समक्ष बैठे हैं। अब कमी एक ही रह जाती है कि इस सीप में कहीं से स्वाति की बूँदें टपक जाएँ, जिनके पास दिमाग है, शिक्षा है, उनके अन्दर श्रद्धा की, स्वाति की बूँदें गिर जाएँ तो आप ऋषि हो सकते हैं, महामानव हो सकते हैं। यह अक्ल का दुर्भाग्य है कि वह पेट भरने के काम आज आती है। उससे भी अधिक दुर्भाग्य आदमी का यह है कि अक्ल जाल बुनने के काम आती है, वाक्पटुता के काम आती है व दूसरों को धोखा देने का कुचक्र रचने के काम आती है। अक्ल से जो हम कमाते हैं तो क्या बताएँ आपको कि हम उसे कहाँ खर्च करते हैं ? अक्ल की कीमत बाजार में ज्यादा मिलनी चाहिए। मिलती भी है। लेकिन उस मिलने के बाद हम करते क्या हैं ? न जाने कहाँ उसे खर्च कर देते हैं। ऐसे में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हमारे सामने आकर खड़े हो जाते हैं और बताते हैं कि अक्ल की कमाई कहाँ खर्च होनी चाहिए।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर को उन दिनों जो वेतन मिलता था, उन्होंने कहा उसमें से हमें औसत नागरिक के गुजारे की हैसियत से पचास रुपये से अधिक नहीं चाहिए। उन्होंने अपने खानदान वालों को बुलाया और यह कहा कि हिन्दुस्तान में जिस मुल्क में हम पैदा हुए हैं उस स्तर के मुताबिक हमें अपने पर व कुटुम्ब पर इससे अधिक खर्च नहीं करना चाहिए। बाकी जो वेतन बचेगा उसे हम अन्य कामों में खर्च करेंगे जैसा कि भावनाशीलों-विचारशीलों को करना चाहिए। आपकी अक्ल भी उसी तरह खर्च होनी चाहिए जिस तरह से ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की हुई। उनके दिल में दर्द था। उनके भीतर था ऋत। ऋत उसे कहते हैं जिसमें शिक्षा की सार्थकता छिपी होती है। आप कौन हैं ? आप वकील हैं तो अच्छा, करते क्या हैं ? सबेरे से शाम तक झूठ बोलते हैं व बुलवाते हैं। फरेब करते हैं व करवाते हैं। इसी अक्ल से पेट भरते हैं। ऐसे पेट के ऊपर लानत है। ऐसे पेट को फट जाना चाहिए। जो पेट आदमी की अक्ल की कमाई से देश के लिए, धर्म के लिए, इनसानियत के लिए, भगवान् के लिए गुनाह करता हो ऐसे पेट को आग लग जानी चाहिए।

मित्रो ! यह ब्राह्मण के लिए लानत की बात है, शर्म की बात है। भगवान् के दिए अनुदानों का सबको इस्तेमाल करना चाहिए। दूसरे लोग यदि अपनी अक्ल का इस्तेमाल न कर सकें तो कम से कम ब्राह्मण को तो करना ही चाहिए। दिमाग अगर खराब हो जाएगा, अक्ल अगर खराब हो जाएगी तो शरीर का क्या होगा ? जिस समाज में, जिस देश में, जिस युग में, दिमाग-ब्राह्मण अस्त-व्यस्त हो जाता है, तब उस देश की मुसीबत आती है। दूसरे लोग जब गड़बड़ा जाते हैं तो डाकू या उठाईगीर बन जाते हैं और क्या करेंगे ? गुण्डे की सामर्थ्य बस सामान उठाने, मारपीट करने, हत्या करने तक की है किन्तु जब ब्राह्मण बागी हो जाता है तो वह ब्रह्मराक्षस बन जाता है। अतः ब्रह्मराक्षस होने की लानत अपने सिर पर ओढ़ने से हमें इनकार करना आना चाहिए और समय रहते चेत जाना चाहिए।

युग की पुकार है कि ब्राह्मण जागे। आप कौन हैं ? हम तो कायस्थ हैं। भई यहाँ वंश परम्परा का जिक्र नहीं हो रहा, विचार परम्परा की दृष्टि से आप जहाँ बुद्धिजीवी हैं, वहाँ आप एक ऐसी परम्परा के अनुयायी भी हैं, जो आदमी को उसके कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्वों की जानकारी कराती है। यदि ऐसा न होता तो आप हमसे क्यों जुड़ते ? मैं सोचता हूँ कि आपके भीतर कहीं न कहीं ऋत है। ऋत जो भगवान् का सबसे बड़ा अनुदान है। हमारे व आपके लिए एक बहुत बड़ा काम करने को पड़ा है। काम यह है कि जो कुछ भी विचार का क्षेत्र हमारे सामने फैला पड़ा है, इसके भीतर से इसके अध्यात्म को हम निचोड़ें। हमको साइंस की साइंस ढूँढ़नी है। वह मूल ढूँढ़ना है, जिन सिद्धान्तों को लेकर के आदमी ने साइंस बनाने व बढ़ाने के लिए कदम बढ़ाया। यह दोनों काम किए बिना इतने बड़े बुद्धि के जंजाल को काट सकना हमारे लिए सम्भव न हो सकेगा। बुद्धि का जंजाल, बुद्धि का भ्रम इतना बढ़ गया है कि क्या कहूँ मैं आपसे। बुद्धि के ऊपर से पड़े आवरण इतने ज्यादा कँटीले, इतने ज्यादा गहरे, इतने ज्यादा विषैले हैं कि इनकी काट-छाँट करने के लिए हमको बड़े ऑपरेशन की जरूरत पड़ेगी। कैंसर का ऑपरेशन करने के लिए मामूली चाकू काम नहीं आते। अन्दर लेसर किरणों से लेकर रेडियो आयसोटोप तक का इस्तेमाल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करना पड़ता है और फूँक-फूँककर कदम रखना होता है। फिलॉसफी, नीतिशास्त्र का नीतिशास्त्र, मनोविज्ञान का विज्ञान हम गढ़ना चाहते हैं, पर यह कठिन काम है, ऑपरेशन जितना कठिन।

अगला हमारा काम है धर्मों का धर्म ढूँढ़ना। वह जो चार सौ करोड़ मनुष्यों में से अधिकांश के सिर पर हावी है। मैं सोचता हूँ कि तीन सौ करोड़ के ऊपर धर्म है। सौ करोड़ मनुष्य ऐसे हो सकते हैं, जो धर्म की लापरवाही करते हैं और बाद में परवाह नहीं करते। जो धर्म से नाखुशी जाहिर नहीं करते उनको मैं मानता हूँ कि उन्हें धर्म की अहमियत समझ में आ गई है। वे धर्म को समझते हैं। धर्म हेतु, विश्व धर्म की व्याख्या हेतु हमें आस्तिकता का, ईमान का प्रतिपादन करना होगा। धार्मिकता का, धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य-परायणता का प्रतिपादन करना होगा। इसके लिए बुद्धिवाद का सहारा लेना होगा। तर्क और दलीलों को हम रोक नहीं सकते। बुद्धिवाद को हम सीमित नहीं कर सकते। आदमी के भीतर से जब तर्क का माद्दा उत्पन्न होता है तो अंकुश लगाना कठिन हो जाता है।

तर्क-दलील आज के जमाने की सबसे अच्छी व सबसे वाहियात चीज है। अच्छी क्यों ? क्योंकि उसमें सत्य को ढूँढ़ निकालने की सामर्थ्य है, सम्भावना है। वाहियात क्यों ? क्योंकि दलील के पीछे अगर अंकुश न हो, नियन्त्रण न हो तो यह सब कुछ कर सकती है। दलील आप किसी भी पक्ष में दे सकते हैं। संस्कृत की एक पुस्तक है जो एम. ए. में पढ़ाई जाती है 'न्यायकुसुमांजलि'। उसमें यह बताया गया है कि दलील कैसे दी जाती है, बहस कैसे की जाती है ? बहस में यह भी किया जा सकता है और यह भी। उन्होंने दो टॉपिक लिए हैं—एक ईश्वर है, दूसरा ईश्वर नहीं है। दोनों पक्षों में जोरदार बहस होती है। अन्त में दलील देने के बाद यह लिखा है कि हमने तो बहस करने का तरीका सिखाया है। आप यह विचार मत करना कि पुस्तक का लेखक नास्तिक है या आस्तिक।

दलील कुछ भी दी जा सकती है। उल्टी भी हो सकती है, सीधी भी हो सकती है, निकम्मी से निकम्मी, बेहूदी से बेहूदी, पाजी से पाजी बातों के पक्ष में दलील पेश की जा सकती है। दलील ने ही स्वच्छन्द यौनाचार का पक्ष लिया है। दलील इतनी स्वेच्छाचारी है कि वह कभी फ्रायड का समर्थन करती है, तो कभी अस्तित्ववाद के लिए कामूँ का और नीत्से के तरीके से नास्तिकवाद का। यह अक्ल, यह दलील निरंकुश होने पर न जाने क्या कर सकती है ? मित्रो ! हमें यदि चार सौ करोड़ व्यक्तियों का भाग्य बनाना है, नया युग गढ़ना है तो हमें दलील की माँ को पकड़ना होगा। अकेले दलील से काम नहीं चलेगा। चोर की मौसी को गिरफ्तार करना होगा। अक्ल का, दिमाग का बहुरूपिया न जाने कैसे-कैसे वेश बदलकर हमें परेशान कर रहा है। हमें इस बहुरूपिये की जन्मदात्री को पकड़ना होगा। तभी यह ठीक हो सकती है।

शोध प्रसंग में दो बातों के बारे में हमें गम्भीर होना पड़ेगा। आए दिन हमें जहाँ कहीं बोर्ड दिखाई देते हैं। एक बोर्ड है 'योगा' एवं दूसरा है—'शोध-रिसर्च'। 'योगा' सबसे बेहूदा मखौल है अध्यात्म का। गली-गली में योगा के नाम पर आश्रम खुले हुए हैं। इनसे पूछो कि योग का क्या मतलब है तो दाँत निकाल देंगे। क्या योग मात्र सर्वांगासन होता है, डीप ब्रीदिंग होता है, हाथ-पैर चला लेना होता है, मेडीटेशन होता है ? बन्दूक चलाने वाले, मेस्मेरिज्म करने वाले, चिड़िया मारने वालों में, सबमें मेडीटेशन होता है। मेडीटेशन अक्ल इकट्ठी करने का नाम है। खबरदार ! योगा अलग है और मेडीटेशन अलग है। योगा-योगा जहाँ देखो मखौल के लिए इन्हें और चीज नहीं मिली जो योग को बना दिया। दूसरे हर किसी को रिसर्च करते देख सकते हैं, शोध करते देख सकते हैं आप। गली-गली में रिसर्च करने वाले, गली-गली में शोध-संस्थान। शोध से कम में कोई बात ही नहीं करना चाहता। भाईसाहब, हमारे दिमाग में बड़ी चीजें हैं। हम शोध का मजाक नहीं बनाना चाहते। बड़ी चीज के लिए बड़ा सामान इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे हैं।

फिलहाल आपको एक छोटा-सा काम सुपुर्द करते हैं। इन्टेलिजेंशिया जिस काम के लिए अभी बदनाम हैं, आप उस बदनामी को मिटाएँ। हर व्यक्ति जो इंटेलिजेंशिया से जुड़ा है, कहता है हम तो व्यस्त हैं। कुल दो घण्टे स्कूल या कॉलेज में पढ़ाकर आते हैं व कहते हैं कि हम बिजी हैं ? गप्पें हाँकते रहते हैं, वह कहते हैं कि हम व्यस्त हैं। यह झूठी बहानेवाजी की बातें हैं।

आप यह देखें कि ऋत के धारणकर्त्ता होने के नाते प्रज्ञा के विस्तार की आप पर जो जिम्मेदारी है, उसको निभाकर ही आप समाज के आप पर चढ़े ऋण को उतार सकते हैं। भगवान् का, विश्व मानव का आप पर ऋण है। इसके लिए पहली बात समय से चलती है। समय के साथ काम में तन्मय होने की कला। व्यस्तता इसे कहते हैं कि आदमी इस कदर लक्ष्य में तन्मय हो जाता है कि उसे समय का कोई ख्याल नहीं रहता। आप युगअनुसन्धान, मानव धर्म की खोज, विज्ञान-अध्यात्म की शोध के विषय में गम्भीर हैं तो आप बात वहाँ से शुरू कीजिए जहाँ से आपको टाइम देना पड़ेगा। यदि दे सकें तो समुद्र-मंथन कीजिए। कभी देवता व असुरों ने मंथन किया था। देवता कौन ? विचारणा, श्रद्धा, सद्भावना, आदर्श तथा दैत्य कौन ? दैत्य कहते हैं 'जाइंट' को, शक्तियों को। दोनों ने परस्पर लड़ाई-झगड़ा करने की अपेक्षा समुद्र मथना आरम्भ किया। भगवान् मदद के लिए आ गए व कच्छपावतार के रूप में मंदराचल के नीचे उन्होंने स्वयं को लगा दिया। मथने के लिए शेषनाग आ गए व फिर विष निकला, जिसे नीलकण्ठ प्रलयंकर महादेव ने धारण किया। तत्पश्चात् चौदह रत्न निकलते चले गए, जिसमें लक्ष्मी व अमृत भी थे। जो काम हम और आप करने चले हैं, उसकी उपमा समुद्र मंथन से दें तो कोई गजब की बात नहीं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समुद्र बहुत विशाल है। हमारा विचार-परिकर बहुत विस्तृत है, समुद्र के तरीके से। यदि हम इसमें गोते लगा सकें तो बहुमूल्य मणि-माणिक्य इसमें से निकल सकेंगे। आप अपनी बुद्धि का सही उपयोग करके, समय देकर अपने सही अर्थों में बुद्धिजीवी होने का प्रमाण दीजिए। आप पर सारे समाज का, युग का एक ऋण चढ़ा है, महती दायित्व है। उसे निभाइए। बताइए विज्ञान का विज्ञान, अध्यात्म का अध्यात्म। तभी तो दोनों मिल सकेंगे। अगली पीढ़ी को महामानव बनाने के लिए इससे कम स्तर के पुरुषार्थ से काम नहीं चलने वाला। हम बड़ा काम ही सोचते हैं व करते हैं। क्या करना है हमें ? हमें सूरज को, चन्द्रमा को धरती पर लाना है, जिससे इनसान निहाल हो जाए। आपने वैभव-विलास की जेल में बहुत जीवन बिता लिया। आप समय दीजिए व अपनी अक्लमन्दी का सही प्रमाण देकर युगशोधन में खपिए, अपने को पूरी तरह लगा दीजिए। ज्ञान की जो धारा है, उसे अपने साथ ले जाइए व पूरे समाज में प्रवाहित कीजिए। बस यही करना है आप सबको। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

गुरुतत्त्व की गरिमा और महिमा

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! सज्जनो !!

इस संसार में कुल मिलाकर तीन शक्तियाँ हैं, तीन सिद्धियाँ हैं। इन्हीं पर हमारा सारा जीवन-व्यापार चल रहा है। लाभ सुख जो भी प्राप्त करते हैं, इन्हीं तीन शक्तियों के आधार पर हमें मिलते हैं। पहली शक्ति है श्रम की शक्ति, शरीर के भीतर की शक्ति भगवान् की दी हुई शक्ति। इससे हमें धन व यश मिलता है। जमीन पहले भी थी, अभी भी है। यह मनुष्य का श्रम है। जब वह लगा तो सोना, धातुएँ, अनाज उगलने लगी। जितना भी सफलताओं का इतिहास है, वह आदमी के श्रम की उपलब्धियों का इतिहास है। यही सांसारिक उन्नति का इतिहास है।

जमीन कभी ब्रह्माजी ने बनाई होगी तो ऐसी ही बनाई होगी जैसा कि चन्द्रमा है। यहाँ गड्ढा, वहाँ खड्डा, सब ओर यही। श्रम ने धरती को समतल बना दिया। नदियाँ चारों ओर उत्पात मचा देती थीं। जलप्लावन से प्रलय-सी आ जाती थी। रास्ते बन्द हो जाते थे। व्याह-शादियाँ भी बन्द हो जाती थीं, उन चार महीनों में जिन्हें चातुर्मास कहा जाता है सुना होगा आपने नाम। आदमी जहाँ थे, वहीं कैद हो जाते थे। यह आदमी का श्रम है, आदमी की मशक्कत है कि आदमी ने पुल बनाए, नाव बनाई, बाँध बनाये। अब वह बन्धन नहीं रहा। सारी मानव जाति श्रम पर टिकी है। आदमी का श्रम, जिसकी हम अवज्ञा करते हैं। दौलत हमेशा आदमी के पसीने से निकली है। आपको सम्पदा के लिए कहीं गिड़गिड़ाने, नाक रगड़ने की जरूरत नहीं है। एक ही देवता है—श्रम का देवता। वही देवता आपको दौलत दिला सकता है। उसी की आपको आराधना-उपासना करनी चाहिए।

माना कि आपके बाप ने कमाकर रख दिया है, पर बिना श्रम के उसकी रखवाली नहीं हो सकती। श्रम कमाता भी है, दौलत की रखवाली भी कर सकता है। हम श्रम का महत्त्व समझ सकें, उसे नियोजित कर सकें तो हम निहाल हो सकते हैं। मात्र सम्पत्तिवान-समृद्ध ही नहीं, हम अन्यान्य दौलत के भी अधिकारी हो सकते हैं। सेहत, मजबूती श्रम से ही आती है। शिक्षा, कला-कौशल, शालीनता, लोक-व्यवहार में पारंगतता श्रम से ही प्राप्त होती है। बेईमानी से, चालाकी से आदमी दौलत की छीन-झपट मात्र कर सकता है, पर उसे कमा नहीं सकता। आप यदि फसल बोना चाह रहे हैं तो बीज बोइए। यदि चालाकी करें, बीज खा जाएँ तो कुछ नहीं होने वाला। हर आदमी को ईमानदारी से श्रम किए जाने की, मशक्कत की कीमत समझाइए। सम्पदा अभीष्ट हो, विनिमय करना चाहते हो तो कहिए श्रमरूपी पूँजी अपने पास रखें। उसका सही नियोजन करिए। यह है दौलत नम्बर एक।

दूसरे नम्बर की दौलत है हमारी ज्ञान की, विचार करने की शक्ति। हमें जो प्रसन्नता मिलती है इसी ज्ञान की शक्ति से मिलती है। खुशी दिमागी वैलेंस से प्राप्त होती है। यह बाहर से नहीं आती, भीतर से प्राप्त होती है। जब हमारा मस्तिष्क सन्तुलित होता है तो हर परिस्थिति में हमें चारों ओर प्रसन्नता ही प्रसन्नता दिखाई देती है। घने बादल दिखाई देते हैं तो एक सोच सकता है कि कैसे काले मेघ आ रहे हैं। अब बरसेंगे। दूसरा सोचने वाला कह सकता है कि कितनी सुन्दर मेघमालाएँ चली आ रही हैं। यह है प्रकृति का सौन्दर्य।

हम गंगोत्री जा रहे थे। चारों ओर सुनसान, डरावना जंगल था। जरा-सी पत्तों की सरसराहट हो तो लगे कि साँप है। हवा चले, वृक्षों के बीच सीटी-सी बजे तो लगे कि भूत है। अच्छे-खासे मजबूत आदमी के नीरव-एकाकी वियावान में होश उड़ जाएँ, पर हमने उस सुनसान में भी प्रसन्नता का स्रोत ढूँढ़ लिया। 'सुनसान के सहचर' हमारी लिखी किताब आपने पढ़ी हो तो आपको पता लगेगा कि हर लम्हे को जिया जा सकता है, प्रकृति के साथ एकात्मता रखी जा सकती है। अब हम बार-बार याद करते हैं उस स्थान की जहाँ हमारे गुरु ने हमें पहले बुलाया था। अब तो हम कहीं जा भी नहीं पाते, पर प्रकृति के सान्निध्य में अवश्य रहते हैं। हमारे कमरे में आप चले जाइए। आपको सारी नेचर की, प्रकृति के भिन्न-भिन्न रूपों की तस्वीरें वहाँ मिलेंगी, बादलों में, झील में, वृक्षों के झुरमुटों में, झरनों में से खुशी छलकती दिखाई देती है। वहाँ कोई देवी-देवता नहीं है, मात्र प्रकृति के भिन्न-भिन्न रूपों की तस्वीरें हैं। हमें उन्हीं को देखकर अन्दर से बेइन्तिहा खुशी मिलती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन का आनन्द सदैव भीतर से आता है। यदि हमारे सोचने का तरीका सही हो तो बाहर जो भी क्रिया-कलाप चल रहे हों, उन सभी में हमको खुशी ही खुशी बिखरी दिखाई पड़ेगी। बच्चे को देखकर, धर्मपत्नी को देखकर अन्दर से आनन्द आता है। सड़क पर चल रहे क्रिया-कलापों को देखकर आप आनन्द लेना सीख लें। यदि आपको सही विचारणा की शक्ति मिल जाए तो जो स्वर्ग आप चाहते हैं उस स्वर्ग के लिए मरने की जरूरत नहीं है, मैं आपको दिला सकता हूँ। स्वर्ग दृष्टिकोण में निहित है। इन आँखों से देखा जाता है। देखने को 'दर्शन' कहते हैं। दर्शन अर्थात् दृष्टि। दर्शन अर्थात् फिलॉसफी। जब हम किसी बात की गहराई में प्रवेश करते हैं, बारीकी मालूम करने का प्रयास करते हैं, तब इसे दृष्टि कहते हैं। यही दर्शन है। किसी बात को गहराई से समझने का माद्दा आ गया अर्थात् दर्शन वाली दृष्टि विकसित हो गई। आपने किताब देखी, पढ़ी पर उसमें क्या देखा ? उसका दर्शन आपकी समझ में आया या नहीं। सही अर्थों में तभी आपने दृष्टि डाली, यह माना जाएगा।

दृष्टिकोण विकसित होते ही ऐसा आनन्द, ऐसी मस्ती आती है कि देखते ही बनता है। दारशिकोह मस्ती में डूबते चले गए। जेबुन्निसा ने पूछा—"अब्बाजान ! आपको क्या हुआ है आज ? आप तो पहले कभी शराब नहीं पीते थे। फिर यह मस्ती कैसी ?" बोले—"बेटी ! आज मैं हिन्दुओं के उपनिषद् पढ़कर आया हूँ। जमीन पर पैर नहीं पड़ रहे हैं। जीवन का असली आनन्द उसमें भरा पड़ा है। बस यह मस्ती उसी की है।"

यह है असली आनन्द। मस्ती, खुशी, स्वर्ग हमारे भीतर से आते हैं। स्वर्ग सोचने का एक तरीका है। किताब में क्या है ? वह तो काला अक्षर भर है। हर चीज की गहराई में प्रवेश कर जो आनन्द खुशी मिलती है, वह सोचने के तरीके पर निर्भर है। इसी तरह बन्धन-मुक्ति भी हमारे चिन्तन में निहित है। हमें हमारे चिन्तन ने बाँधकर रखा है। हम भगवान् के बेटे हैं। हमारे संस्कार हमें कैसे बाँध सकते हैं ? सारा शिकंजा चिन्तन का है। इससे मुक्ति मिलते ही सही अर्थों में आदमी बन्धनमुक्त हो जाता है। हमारी नाभि में खुशी रूपी कस्तूरी छिपी पड़ी है। ढूँढ़ते हम चारों ओर हैं। हर दिशा से वह आती लगती है, पर होती अन्दर है।

यदि आपको सुख-शान्ति, मुसकराहट चाहिए तो दृष्टिकोण बदलिए। खुशी सब ओर बाँट दीजिए। माँ को दीजिए, पत्नी को दीजिए, मित्रों को दीजिए। राजा कर्ण प्रतिदिन सवा मन सोना दान करता था। आपकी परिस्थितियाँ नहीं हैं देने की, किन्तु आप सोने से भी कीमती आदमी की खुशी बाँट सकते हैं। आप जानते नहीं हैं, आज आदमी खुशी के लिए तरस रहा है। जिन्दगी की लाश इतनी भारी हो गई है कि वजन ढोते-ढोते आदमी की कमर टूट गई है। वह खुशी ढूँढ़ने के लिए सिनेमा, क्लब, रेस्टोरेण्ट, कैबरे डान्स सब जगह जाता है, पर वह कहीं मिलती नहीं। खुशी दृष्टिकोण है, जिसे मैं ज्ञान की सम्पदा कहता हूँ। जीवन की समस्याओं को समझाकर अन्यान्य लोगों से जो डीलिंग की जाती है वह ज्ञान की देन है। वही व्यक्ति ज्ञानवान होता है, जिसे खुशी तलाशना व बाँटना आता है। ज्ञान पढ़ने-लिखने को नहीं कहते। वह तो कौशल है। ज्ञान अर्थात् नजरिया, दृष्टिकोण, व्यावहारिक बुद्धि।

मैंने आपको दो शक्तियों के बारे में बताया। पहली श्रम की शक्ति, जो आपको दौलत, कीर्ति, यश देती है। दूसरी विचारणा की शक्ति, जो आपको प्रसन्नता व सही दृष्टिकोण देती है। तीसरी शक्ति रूहानी है। वह है आदमी का व्यक्तित्व। व्यक्ति का वजन। कुछ आदमी रुई के होते हैं व कुछ भारी। जिनकी हैसियत वजनदार व्यक्तित्व की होती है, वे जमाने को हिलाकर रख देते हैं। कीमत इनकी करोड़ों की होती है। वजनदार आदमी यदि हिन्दुस्तान की तवारीख से काट दें तो इसका बेड़ा गर्क हो जाए, जिसके लिए हम फूले फिरते हैं, वह वजनदार आदमियों का इतिहास है। वजनदारों में बुद्ध को शामिल कीजिए। वे पढ़े-लिखे थे कि नहीं, किन्तु वजनदार थे। हजारों सम्राटों ने, दौलतमन्दों ने थैलियाँ खाली कर दीं। बुद्ध ने जो माँगा वह उन्होंने दिया। हरिश्चन्द्र, सप्तर्षि, व्यास, दधीचि, शंकराचार्य, गाँधी, विवेकानन्द के नाम हमारी कौम के वजनदारों में शामिल कीजिए। इन्हीं पर हिन्दुस्तान की हिस्ट्री टिकी हुई है। यदि इन्हें खरीदा जा सका होता तो बेशुमार पैसा मिला होता।

आदमी की कीमत है उसका व्यक्तित्व। ऐसे व्यक्ति दुनिया की फिजाँ को बदलते हैं, देवताओं को अनुदान बरसाने के लिए मजबूर करते हैं। पेड़ अपनी आकर्षण शक्ति से बादलों को खींचते व बरसने के लिए मजबूर करते हैं। वजनदार आदमी अपने व्यक्तित्व की, मैग्नेट की शक्ति से देवशक्तियों को खींचते हैं। यदि आप भी दैवी अनुदान चाहते हों तो अपने व्यक्तित्व को वजनदार बनाना होगा। दैवी शक्तियाँ सारे ब्रह्माण्ड में छिपी पड़ी हैं। सिद्धियाँ जो आदमी को देवता, महामानव, ऋषि बनाती हैं, सब यहीं हमारे आसपास हैं। कभी इस धरती पर तैंतीस कोटि देवता बसते थे। सभी व्यक्तित्ववान थे। व्यक्तित्व एक बेशकीमती दौलत है, यह तथ्य आप समझिए। व्यक्तित्व सम्मान दिलाता है, सहयोग प्राप्त कराता है। गाँधी को मिला, क्योंकि उनके पास वजनदार व्यक्तित्व था।

व्यक्तित्व श्रद्धा से बनता है। श्रद्धा अर्थात् सिद्धान्तों व आदर्शों के प्रति अटूट व अगाध विश्वास। आदमी आदर्शों के लिए मजबूत हो जाता है तो व्यक्तित्व ऐसा वजनदार बन जाता है कि देवता तक नियन्त्रण में आ जाते हैं। विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस की शक्ति पाई, क्योंकि स्वयं को वजनदार वे बना सके। भिखारी को दस पैसे मिलते हैं। कीमत चुकाने वाले को, वजनदार व्यक्तित्व वाले को सिद्ध पुरुष का आशीर्वाद मिलता है।

यदि आप किसी आशीर्वाद की कामना से, देवी-देवता की सिद्धि की कामना से आए हैं तो मैं आपसे कहता हूँ कि आप अपने व्यक्तित्व को विकसित कीजिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ताकि आप निहाल हो सकें। दैवी कृपा मात्र इसी आधार पर मिल सकती है और इसके लिए माध्यम है श्रद्धा। श्रद्धा मिट्टी से गुरु बना लेती है। पत्थर से देवता बना देती है। एकलव्य के द्रोणाचार्य मिट्टी की मूर्ति के रूप में उसे तीरन्दाजी सिखाते थे। रामकृष्ण की काली भक्त के हाथों भोजन करती थी। उसी काली के समक्ष जाते ही विवेकानन्द नौकरी, पैसा भूलकर शक्ति, भक्ति माँगने लगे थे। आप चाहे मूर्ति किसे से भी खरीद लें। मूर्ति बनाने वाला खुद अभी तक गरीब है, पर मूर्ति में प्राण श्रद्धा से आते हैं। हम देवता का अपमान नहीं कर रहे। हमने खुद पाँच गायत्री माताओं की मूर्ति स्थापित की हैं, पर पत्थर में से हमने भगवान् पैदा किया है श्रद्धा से। मीरा का गिरधर गोपाल चमत्कारी था। विषधर सर्पों की माला, जहर का प्याला उसी ने पी लिया व भक्त को बचा लिया। मूर्ति में चमत्कार आदमी की श्रद्धा से आता है। श्रद्धा ही आदमी के अन्दर से भगवान् पैदा करती है।

श्रद्धा का आरोपण करने के लिए ही यह गुरुपूर्णिमा का त्योहार है। श्रद्धा से हमारे व्यक्तित्व का सही मायने में उदय होता है। मैं अन्धश्रद्धा की बात नहीं करता। उसने तो देश को नष्ट कर दिया। श्रद्धा अर्थात् आदर्शों के प्रति निष्ठा। जितने भी ऋषि, सन्त हुए हैं, उनमें श्रेष्ठता के प्रति अटूट निष्ठा देखी जा सकती है। जो कुछ भी आप हमारे अन्दर देखते हैं, श्रद्धा का ही चमत्कार है। आज से ५५ वर्ष पूर्व हमारे गुरु की सत्ता हमारे पूजाकक्ष में आई। हमने सिर झुकाया व कहा कि आप हुक्म दीजिए, हम पालन करेंगे। अनुशासन व श्रद्धा-गुरुपूर्णिमा इन दोनों का त्योहार है। अनुशासन आदर्शों के प्रति। यह कहना कि जो आप कहेंगे वही करेंगे। श्रद्धा अर्थात् प्रत्यक्ष नुकसान दीखते हुए भी आस्था, विश्वास, आदर्शों को न खोना। श्रद्धा से ही सिद्धि आती है। हमें अपने आप पर घमण्ड नहीं है, पर विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि वह देवशक्तियों के प्रति हमारी गहन श्रद्धा का ही चमत्कार है, जिसके बलबूते हमने किसी को खाली हाथ नहीं जाने दिया। गायत्री माता श्रद्धा में से निकलीं। श्रद्धा में मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं व सिद्धान्तों का संरक्षण करना पड़ता है। हमारे गुरु ने कहा संयम करो, कई दिक्कतें आएँगी पर उनका सामना करो। हमने चौबीस वर्ष तक तप किया। जायके को मारा। हम जौ की रोटी खाते। हमारी माँ बड़ी दुःखी होतीं। हमारी तपस्या की अवधि में उन्होंने भी हमारी वजह से कभी मिठाई का टुकड़ा तक न चखा। हमारे गायत्री मन्त्र में चमत्कार इसी तप से आया।

आप चाहते हैं कि आपको कुछ मिले तो वजन उठाइए। हम आपको मुफ्त देना नहीं चाहते, क्योंकि इससे आपका अहित होगा। वह हम चाहते नहीं। आप हमारा कहना मानें तो हम देने को तैयार हैं। गुरु-शिष्य की परीक्षा एक ही है कि अनुशासन मानते हैं हम आपके शिष्य, ऐसा कहें व मानें। समर्थ ने अपने शिष्य की परीक्षा ली थी व सिंहनी का दूध लाने को कहा था, अपनी आँख की तकलीफ का बहाना करके। सिंहनी कहाँ थी ? वह तो हिप्नोटिज्म से एक सिंहनी खड़ी कर दी थी। शिवाजी का संकल्प दृढ़ था। वे ले आए सिंहनी का दूध व अक्षय तलवार का उपहार गुरु से पा सके। राजा दिलीप की गाय को जब मायावी सिंह ने पकड़ लिया तो उन्होंने स्वयं को सौंप दिया। इस स्तर का समर्पण हो तो ही गुरु की शक्ति-दैवी अनुदान मिलते हैं। यह आस्थाओं का इम्तिहान है, जो हर गुरु ने अपने शिष्य का लिया है।

श्रद्धा अर्थात् सिद्धान्तों का, भावनाओं का आरोपण। कहा गया है—**'भावो हि विद्यते देवा तस्मात् भावो हि कारणम्'** भावना का आरोपण करते ही भगवान् प्रकट हो जाते हैं। भगवान् अर्थात् सिद्धि हर आशीर्वाद, सिद्धि, का आधार, फीस एक ही है—श्रद्धा। उसे विकसित करने के लिए अभ्यास हेतु गुरुपूर्णिमा पर्व। गुरुतत्त्व के प्रति श्रद्धा का अभ्यास आज के दिन किया जाता है। गुरु अन्तरात्मा की उस आवाज का नाम है; जो भगवान् की गवर्नर है, हमारी सत्ता उसी को समर्पित है। वही हमारी सद्गुरु है। गुरु को ब्रह्मा कहा गया है अर्थात् हमारा सुपर कांशसनेस हमारा अतिमानस ही हमारा गुरु है। अच्छा काम करते ही यह हमें शाबासी देता है। गलत काम करते ही धिक्कारता है। गुरु ही ब्रह्मा है, विष्णु है, महेश है। गुरु अर्थात् भगवान् का प्रतिनिधि। गुरु को जाग्रत-जीवन्त करने के लिए एक खिलौना बनाकर श्रद्धा का आरोपण हम जिस पर भी करते हैं, वही गुरु बन जाता है। इसमें दोनों बातें हैं। मानवी कमजोरियाँ भी हो सकती हैं। उनको न देखकर हम अच्छाइयों के प्रति श्रद्धा विकसित करें। आप हमें मानते हैं तो हमारा चित्र देखते ही श्रेष्ठतम पर विश्वास करने का अभ्यास करें। यह एक व्यायाम है, रिहर्सल है। इसी आधार पर हम अपने अन्दर का सुपरचेतन लगाते हैं। प्रतीक की आवश्यकता इसी कारण पड़ती है।

हमारी अटूट निष्ठा-श्रद्धा की प्रतिक्रिया लौटकर हमारे पास ही आ जाती है। एक शिष्य गुरु के चरणों की धोवन को श्रद्धापूर्वक दुःखी, कष्ट-पीड़ितों को देता था। सब ठीक हो जाते थे। पर जब गुरु ने उसी धोवन का चमत्कार जानकर अपने पैरों को जल से धोकर वह जल औरों को दिया तो कुछ भी न हुआ। दोनों जल एक ही हैं, पर एक में श्रद्धा का चमत्कार है। उसी कारण वह अमृत बन गया, जबकि दूसरा मात्र धोवन का जल रह गया है। श्रद्धा आध्यात्मिक जीवन का प्राण है, रीढ़ है। देवपूजन आपको सफलता की कामना से करना हो तो श्रद्धा विकसित करके कीजिए। साधनाएँ मात्र क्रिया हैं यदि उनमें श्रद्धा का समन्वय नहीं है। आदमी की जो भी कुछ आध्यात्मिक उपलब्धियाँ हैं, वे श्रद्धा पर टिकी हैं। आपकी अपने प्रति यदि श्रेष्ठ मान्यता है, आपकी श्रद्धा वैसी है तो असल में वही हैं आप। यदि इससे उल्टा है तो वैसे ही बन जाएँगे आप। गुरुपूर्णिमा श्रद्धा के विकास का त्योहार है। हमारे गुरु ने अनुशासन की कसौटी पर कसकर हमें परखा है तब दिया है। हमारे जीवन की हर उपलब्धि उसी अनुशासन की देन है। वेदों के अनुवाद से लेकर ब्रह्मवर्चस् के निर्माण तथा चार हजार शक्तिपीठों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खड़ा करने का काम एक ही बलबूते हुआ। गुरु ने कहा—कर। हमने कहा—**"करिष्ये वचनं तव"**। गुरु श्रीकृष्ण के द्वारा गीता सुनाए जाने पर शिष्य अर्जुन ने यही कहा कि सारी गीता सुन ली। अब जो आप कहेंगे, वही करूँगा।

आज गुरुपूर्णिमा का त्योहार है। हम आपको बता रहे हैं कि भगवान् का नया अवतार होने जा रहा है। आज की परिस्थितियों के अनुरूप यह अवतार है। जब-जब दुष्टता बढ़ती है, तब-तब देशकाल की परिस्थितियों के अनुरूप भगवान् अवतार के रूप में जन्म लेते हैं। आज आस्थाओं में, जन-जन के मन-मन में असुर घुस गया है। इसे विचारों की विकृति कह सकते हैं। एक किश्त आज के अवतार की आज से २५०० वर्ष पूर्व बुद्ध के रूप में, विचारशीलता के रूप में आई थी। वही प्रज्ञा की, विवेक की, विचारों की अब पुनः आई है। वह है गायत्री मन्त्र ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप में। यह अवतार जो आ रहा है विचारों के संशोधन के रूप में दिमागों में ही नहीं, आस्थाओं में भी हलचलें पैदा करेगा। विचार-क्रान्ति के रूप में जो आ रही है वह युगशक्ति गायत्री है। यह गायत्री हिन्दुस्तान मात्र की नहीं, सारे विश्व की है। नये विश्व की माइक्रोफिल्म इसमें छिपी पड़ी है। गायत्री मन्त्र विश्व मन्त्र है। व्यक्ति का अन्तस व बहिरंग बदलने वाले बीज इस मन्त्र के अन्दर छिपे पड़े हैं। यदि आपको यह बात समझ में आ गई तो आप हमारे साथ नवयुग का स्वागत करने में जुट जाएँगे। हम अपने लिए एक ही नाम बताते हैं मुर्गा। मुर्गा वह जो प्रभात के आगमन का उद्घोष करता है। गायत्री ने हमें फिर मुर्गा बना दिया है। आइए जोर से उद्घोष करें कि नवप्रभात आ रहा है, नयायुग आ रहा है, युगशक्ति का अवतरण हो रहा है, कुकुडूकूँ। यह तो मुर्गा करता है। हम नए युग की अगवानी करें।

हम गायत्री की फिलॉसफी व युग के देवता विज्ञान की बात आपको बताते आए हैं। यह ब्रह्मविद्या घर-घर पहुँचे, इसमें आप सबका सहयोग चाहते हैं। जैसे सेतुबन्ध के लिए, गोवर्धन के लिए, अवतारों को सहयोग मिला, हम भी चाहते हैं कि आप भी इस प्रवाह में सम्मिलित हो जाएँ। आपको भी बाद में लगेगा कि हम भी समय पर जुड़ गए होते तो अच्छा रहता। युगशक्ति का उदय एवं अवतरण हो रहा है। आप इस अवतरण में एक हाथ भर लगा दें। आपकी भी गणना युगान्तकारी पुरुषों में होने लगेगी। आप समय दीजिए, पैसा दीजिए। यह सोचकर नहीं कि हमारा काम रुकेगा। आप अपनी श्रद्धा को परिपक्व करने के लिए जो भी कर सकें वह कीजिए। हमें देने से, हमें गुरुदीक्षा से मतलब है। घर-घर, जन-जन तक गायत्री का सद्ज्ञान पहुँचाने का काम करना। दवा तो हमारे पास है आस्थाओं में छाई विषाक्तता की। आप मात्र सुई बन जाइए। आज की गुरुपूर्णिमा के दिन सम्पूर्ण समर्पण की, युगदेवता के काम के लिए खपने की मैं आपसे अपेक्षा रखता हूँ। आशा है आप मेरी इच्छा पूरी करेंगे।

अन्त में यह कामना करते हैं कि जिस श्रद्धा ने हमारा कल्याण किया, वह आपका भी कल्याण करे, ताकि आप महान् बनने के अधिकारी हो सकें। आप सबका कल्याण हो, सब स्वस्थ हों, सबका समर्पण भाव बढ़ा रहे।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्।।'

आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

सुसंस्कारी बनाए, कैसी हो वह शिक्षा ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो एवं भाइयो !

आज हम एक बहुत छोटी-सी शुरुआत कर रहे हैं, जो बाहर से देखने में कोई खास महत्त्व की मालूम नहीं होती। सरकारी स्कूल खुलते हैं, बहुत-से कालेज खुलते हैं और शिक्षा के लिए जगह-जगह सरकारी, गैर-सरकारी प्रयत्न चलते रहते हैं। ऐसी दशा में हम जिस कार्य का उद्घाटन कर रहे हैं, उसका यों प्रत्यक्ष कोई महत्त्व मालूम नहीं पड़ता। लगभग ३५ से ४० बच्चों तथा २० से ३० लड़कियों, महिलाओं की शिक्षा से हम यह एक छोटी-सी शुरुआत कर रहे हैं। नन्हा-सा आरम्भ है लेकिन आप सब जरा बारीकी से देखें तो यह मालूम पड़ेगा कि यह कोई बड़ा काम किया जा रहा है।

बीज बोते समय आपने देखा होगा कि नन्हा-सा बीज खेत में डाल देते हैं, जरा-सी पौध लगा देते हैं तो प्रारम्भ लगता तो छोटा-सा ही है किन्तु जब हरी-भरी फसल खड़ी होती है तो ढेरों अनाज पैदा होता दिखाई देता है। आपने मक्के का, धान का, गन्ने का पौधा लगते देखा है। काम जरा-सा होता है किन्तु परिणति बड़ी। बगीचा लगाते समय गुल्लियाँ बोई जाती हैं, लेकिन जब हरा-भरा बगीचा उगकर सामने आता है तो छोटा-सा काम जो किसी दिन प्रारम्भ किया गया था, बड़ा परिणाम लेकर आता दिखाई देता है। हमने अपनी जिन्दगी में हमेशा ऐसे ही काम किए हैं। ऊँचे लक्ष्यों के लिए, ऊँचे उद्देश्यों के लिए छोटी शुरुआत की है व परिणाम विराट परिमाण में सामने आया है। यहाँ जो शुभारम्भ कर रहे हैं, वह बाहर के स्कूलों की तुलना में कोई खास महत्त्व का नहीं लगता किन्तु वास्तव में महत्त्व रखता है, यह मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूँ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वामी श्रद्धानन्द के मन में एक बात आई कि छोटी उमर के बच्चे ही वह आधार हैं, जिन पर संस्कारों का आरोपण किया जा सकता है। कच्ची लकड़ी को मोड़ा जा सकता है। पक्की लकड़ी को मोड़ना मुश्किल है, तोड़ना आसान है। छोटी उमर में यदि ध्यान दिया जाए तो बच्चों को महापुरुष बनाया जा सकता है। रामचन्द्रजी और लक्ष्मण जी को विश्वामित्र जी छोटी उमर में ले गए थे और उनको बला-अतिबला विद्या सिखाकर महामानव बना दिया था। ऋषि सांदीपनि के आश्रम में श्रीकृष्ण भी छोटी उमर में ही गए थे व महामानव बनकर आए थे। लव एवं कुश का शिक्षण बाल्मीकि के आश्रम में तब हुआ था जब वे बालक थे। छोटी उमर का बड़ा महत्त्व है। बड़ी उम्र होने पर आते तो शायद इतना बड़ा परिणाम न निकलता। जितना ज्यादा ऊँचे स्तर का शिक्षण छोटी उम्र में सिखाया जा सकता है, बड़े होने पर उतना सम्भव नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द ने यही प्रयास किया। एक छोटा-सा स्वयं का मकान था, उसे बेच दिया। मकान की कीमत मिली—पाँच हजार रुपया। आज से लगभग अस्सी वर्ष पुरानी बात मैं कह रहा हूँ। घर बेचने के बाद हरिद्वार में गंगा के पार कांगड़ी गाँव में गुरुकुल के नाम पर छोटे-छोटे झोंपड़े बनाए और दस विद्यार्थियों से अपनी संस्था की शुरुआत की। जिन्होंने भी देखा, सबने मखौल उड़ाया। दस बच्चों का भी कोई स्कूल होता है। स्कूलों की तो बड़ी शानदार इमारतें होती हैं। देहरादून, मंसूरी में पब्लिक स्कूलों का ठाट-बाट तो देखिए। उसके मुकाबले फूस की झोंपड़ियों का भला क्या मूल्य ? किन्तु सिद्धान्तों के प्रति अडिग श्रद्धानन्द ऊँचे लक्ष्य को लेकर काम करते गए। गंगा में आई बाढ़ भी उनके उद्देश्य को डिगा नहीं सकी। एक शानदार संस्था के रूप में गुरुकुल कांगड़ी उभरकर आई। उसमें से बड़े शानदार आदमी निकले। इन्द्रसेन विद्यावाचस्पति, सत्यदेव विद्यालंकार, रामगोपाल विद्यार्थी ऐसे कुछ गिने-चुने किन्तु तपे हुए आदमी जो उन दिनों इस गुरुकुल ने निकाले, किसी दूसरे स्कूल से नहीं निकले।

हमारे प्रत्येक काम को आप देखें तो आपको लगेगा कि वह प्रारम्भ में भले ही छोटा हो किन्तु ऊँचे उद्देश्यों को लेकर आरम्भ हुआ व बड़े परिणाम तक पहुँचा। एक छोटा-सा छापाखाना खोला था हमने, आज से चालीस-बयालीस साल पहले। जिसने देखा, हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया। साढ़े तीन सौ रुपये की हाथ से चलने वाली मशीन से कोई जमाने को बदलने वाली पत्रिका भी छप सकती है क्या ? सबने कहा क्यों पैसा नष्ट करते हो ? कुल एक हजार का छापाखाना। काम करने वाले तीन आदमी। हाथ से बना कागज। दीखने में छोटा-सा छापाखाना पर हमारा मकसद बड़ा था, उद्देश्य बड़ा था तो परिणाम जो निकलकर सामने आए वे कैसे शानदार थे ? छोटी मशीन में दुनिया को हिला देने वाला, ऊँचे मकसद व उद्देश्यों वाला साहित्य छपता था, जबकि बड़ी-बड़ी मशीनों में आपको क्या-क्या बताएँ, ऐसे गन्दे उपन्यास व गन्दी किताबें छपती हैं। किन्तु हमारे छोटे-से प्रेस ने दुनिया को झकझोर दिया। जिसके पीछे मकसद काम करते हैं, उद्देश्य काम करते हैं तो क्रिया-कलाप छोटे हों या बड़े फलते व फूलते हैं।

एक और उदाहरण आपको दूँ। राजस्थान की वनस्थली नाम की एक जगह पर एक अध्यापक ने छोटा-सा बालिका विद्यालय खोला। हीरालाल शास्त्री नाम के गाँव के उस छोटे-से अध्यापक ने अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया तो वहाँ अब क्या है ? करोड़ों रुपये की इमारत बनी है। लड़कियाँ हवाई जहाज चलाना सीखती हैं, सही अर्थों में आत्मनिर्भर बन नारी को जगाने की विधा में निष्णात् होती हैं। न जाने क्या-क्या वहाँ पढ़ती हैं। यह सब इसलिए हुआ कि इस सबके पीछे ऊँचा उद्देश्य था। हमारा भी आज गुरुकुल आरम्भ करने के पीछे ऐसा ही उद्देश्य है। जब यह साथ होता है तो जनता, इनसान व भगवान् सब सहायता करने आ जाते हैं। और उदाहरण सुनेंगे आप ?

इटावा जिले का एक अँग्रेज इंस्पेक्टर जिसका नाम था ह्यूम। उसने गाँव-गाँव जाकर आदमी एकत्र किए। हिन्दुस्तान में युवाओं की, जनता की एक समिति होनी चाहिए। उद्देश्य था पीछे तो पचास-साठ आदमी इकट्ठे हुए और काँग्रेस का जन्म हो गया। तिलक, नेहरू, शास्त्री, सुभाषचन्द्र बोस सब उसी की देन हैं। छोटे संगठन के पीछे ऊँचे उद्देश्य हों, ऊँचा मकसद हो तो वे दुनिया में सफल होते हैं। जिनके मकसद घटिया होते हैं तो वे बड़े काम करने वाले भी निन्दा के पात्र बनते हैं व उन पर लानत बरसती है।

हम एक छोटी-सी पाठशाला शुरू करके एक शानदार शुरुआत करते हैं आज कि हम शिक्षा के साथ-साथ संस्कृति विद्या भी पढ़ाना चाहते हैं। हजारों रुपये एक बच्चे के ऊपर प्रतिदिन खर्च हों, ऐसे विद्यालय आज भी देहरादून, मंसूरी में हैं। आप जाइए देख आइए पर यह भी देखिए कि वहाँ संस्कृति है क्या ? संस्कृति किसे कहते हैं ? संस्कृति वह जिसे ग्रहण करने के बाद आदमी इनसान बन जाता है। इनसान के बाद महामानव फिर भगवान् बन जाता है किन्तु आज की शिक्षा, वह तो संस्कृतिविहीन है। आज के अनपढ़ आदमी की तुलना में पढ़े-लिखे को देखकर मुझे डर लगता है। एक विना पढ़े-लिखे से निश्चिन्तता रहती है कि इसमें बदमाशी या चालाकी नहीं हो सकती। होगी तो एक सीमा के अन्दर ही। अन्दर भलमनसाहत है अभी। यदि इसे थोड़ा पढ़ा-लिखा कर जीवन जीना सिखा दिया जाए तो आदमी बन सकता है। किन्तु पढ़ा-लिखा ? वह तो दिमाग की खिड़की बन्द किए बैठा है, हद दर्जे का बदमाश है व अहंकारी है। संस्कृति यही करती है कि आदमी को सही ढंग से आदमी बनकर जीना सिखाती है। कौन सिखाए संस्कृति को ? सरकार कर सकती है ? नहीं, सरकार का संस्कृति से, विद्या से कोई ताल्लुक नहीं। सरकार का सभ्यता से, एटीकेट से, लिबास-पोशाक से तो ताल्लुक हो सकता है पर संस्कृति से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

नहीं। संस्कृति का मन्त्रालय या विद्यालय, विश्वविद्यालय सरकार के पास हो सकता है पर उसमें संस्कृति व विद्या नाम की कोई चीज नहीं है, मात्र नाम ही नाम है।

संस्कृति का शिक्षा में समावेश हर कोई नहीं कर सकता। केवल ऋषि ही कर सकते हैं। प्राचीनकाल में शिक्षा के क्षेत्र में हर कोई हाथ नहीं डालता था। आप मकान बनाइए, उद्योग खड़ा कीजिए, खेती-बाड़ी कीजिए, राज कीजिए पर एक काम मत करिए। वह है शिक्षा से जुड़ी संस्कृति का शिक्षण, जिसे मिला-जुलाकर 'विद्या' कहते हैं। हर कोई विद्या नहीं दे सकता। आज तो हर कोई विद्यालय खोले बैठा है, उसका मालिक बना हुआ है पर प्राचीनकाल में यह कार्य विशुद्धतः ऋषियों के जिम्मे था व वे इसे बखूबी निभाते थे। संस्कृति तो वही सिखा पाएगा, जिसके पास हो संस्कृति। मास्टरों के पास कहाँ है संस्कृति ? मास्टरों व मजदूरों में आज कोई अन्तर है ? मास्टर कहते हैं गुरु को और गुरु वे होते हैं जो शिष्य को अनगढ़ता के अँधेरे से निकालकर सुगढ़ता का प्रकाश भरा रास्ता दिखाते हैं। मात्र जानकारी नहीं देते। वे आत्मीयता का पोषण देते हैं, संवेदना देते हैं। इसी को संस्कृति या विद्या कहते हैं।

हम गाँव के प्रायमरी स्कूल में पढ़े थे। उस जमाने में, आज से साठ साल पहले दो रुपये की छात्रवृत्ति हर प्रतिभावान बच्चे को मिलती थी। हमारे गाँव आँवलखेड़ा के स्कूल में एक तिहाई विद्यार्थी सारे आगरा जिले के बजीफे हड़प ले जाते थे। किस कारण ? क्योंकि वहाँ गुरुजी थे, मास्टर साहब नहीं। हमारे गुरुजी ने स्कूल को गुरुकुल बना दिया था। बच्चे स्कूल में ही सोते थे। सबेरे उठाकर वे माँ की तरह कुल्ला कराते, नहलाते व फिर पढ़ाते। नींद आती तो धमकाते नहीं थे। कहते अच्छा सो जा, पर जल्दी उठ जाना, देर तक मत सोना। न केवल हम बल्कि जितने विद्यार्थी उस स्कूल में उस जमाने में पढ़े तीन साल तक बराबर सारे जिले की छात्रवृत्तियाँ लेकर आए। हर वर्ष तीस-तीस बच्चे छात्रवृत्ति लेकर आते रहे क्योंकि वह नौकरी के लिए नहीं, संस्कृति के लिए शिक्षण देते थे। हर माँ-बाप को प्रसन्नता थी कि मास्टर साहब के पास बच्चा जितना ज्यादा रह जाएगा, उतना ही अच्छा है। सबेरे जल्दी उठेगा, नहाएगा, साफ रहेगा, आदमी बनेगा। पढ़ा-लिखा बने चाहे नहीं, पर विनम्र बनेगा।

ऐसी गुरुकुल पद्धति मित्रो समाप्त हो गई। हमें अब क्वालिटी के सहयोगी मिले हैं तो हम इसे आरम्भ करते हैं। सारे गायत्री परिवार के चौबीस लाख परिवारों के बच्चों को पढ़ाने की हैसियत तो हमारी नहीं है, पर हम एक 'मॉडल' खड़ा करना चाहते हैं कि बच्चों का शिक्षण कैसे होना चाहिए ? राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र माँगकर लाए थे। हम भी गायत्री परिवार के विशाल परिवार के सदस्यों से उनके बच्चों को माँगेंगे कि हम इन्हें नवयुग के लिए तैयार करना चाहते हैं। आप हमें दीजिए। हम दो सौ बच्चों को अगले वर्ष से किंडरगार्टन से लेकर दसवीं कक्षा तक की शिक्षा देने का कार्य करेंगे, पर इसकी विशेषता इसका सरकारी पाठ्यक्रम नहीं वरन् वह होगी जो प्राचीनकाल के गुरुकुलों में थी—संस्कृति, शिष्टाचार, जीवन जीने की कला, आत्मावलम्बन, स्वावलम्बन। यह एक बीजारोपण मात्र है, पर इसकी परिणति आप आने वाले बीस-तीस वर्षों में देखेंगे, जब यह विश्वविद्यालय का रूप ले लेगा।

हम यहाँ चौबीस घण्टे का शिक्षण देंगे। जिसमें खेलना-कूदना भी शामिल है, व्यायाम करना भी, हँसी-मजाक भी तथा भयमुक्त होकर जीना भी और क्या करेंगे आप इस विद्यालय में ? हम यहाँ परिवार-निर्माण की शिक्षा आरम्भ करने वाले हैं ताकि कुटुम्ब व्यवस्था ठीक हो सके। व्यक्ति को अच्छा बनाने के लिए कुटुम्ब को अच्छा बनाना होगा। आज के परिवार यह काम नहीं कर सकते। वे रात को खाना खाते हैं, रेडियो सुनते हैं, टीवी देखते हैं व सो जाते हैं। सुबह तब उठते हैं, जब बच्चे स्कूल चले जाते हैं। परिवारों को बनाने के लिए हमें नारियों को शिक्षण देना होगा। वे ही बच्चों में संस्कारों का आरोपण कर पाएँगी। नारियों के शिक्षण के बिना गुरुकुल में बच्चों का शिक्षण अधूरा है। मात्र बच्चों का गुरुकुल एक भवन तक सीमित नहीं, यह समग्र परिवार शिक्षण का आरण्यक गायत्रीतीर्थ के रूप में हमने इसीलिए बनाया है।

आज नारी जाति व उनके कारण परिवारों की जो दुर्गति है, उसे देखकर हमें दुःख होता है। बच्चियाँ पढ़ती हैं, बी. ए. करती हैं, एम. ए. करती हैं। यह पढ़ाई किस काम आती है ? नौकरियाँ कहाँ रखी हैं ? सबसे बड़ी बात है कुटुम्ब की संस्था का संचालन। कुटुम्ब एक समाज है, राज्य है, एक दुनिया है, जिसमें से महापुरुष निकाले जा सकते हैं। व्यक्ति को क्या से क्या बनाया जा सकता है ? शादी और परिवार का कोई ताल्लुक नहीं है। पेट से बच्चा पैदा होता है, वही परिवार कहलाता है, यह सही नहीं है। शादी करने से ही परिवार बनता है, यह जरूरी नहीं है। परिवार है सहयोग-सहकार का नाम। हिल-मिल कर रहने की भावना का नाम गायत्री परिवार है, युग-निर्माण परिवार है। परिवार की भावना यदि बन सके तो समाज बन सकता है। समाज की ढलाई का कारखाना है परिवार। इसमें ढलता है सुसंस्कारी व्यक्ति, जो उसकी इकाई है। सुख और शान्ति की दृष्टि से परिवार की महत्ता है, जिसके संचालन के लिए महिलाओं की जरूरत है। महिलाओं का, नारी जाति का शिक्षण आवश्यक है। परिवार-निर्माण के लिए ऐसा कहीं कोई स्कूल नहीं है। वह हमने यहाँ गुरुकुल के रूप में बनाया है।

बच्चों की समस्याएँ समझकर उनका समाधान करने, उन्हें ही नहीं परिवार के हर सदस्य को ढाल देने की कला भगवान् ने जितनी नारी को दी है, उतनी और किसी को नहीं। पुरुषों के हाथों में धमकाने की कला दी है व नारी को जो कला दी है, उसे मोहब्बत कहते हैं, संवेदना कहते हैं, करुणा कहते हैं। मर्दों के पास ताकत तो है, समर्थता तो है पर मोहब्बत नहीं है। उन्हें बनाने-बढ़ाने के लिए, ढालने के लिए नारी को ही आगे बढ़ाना होगा। हम आप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से, कार्यकर्त्ताओं की बेटियों से, धर्मपत्नियों से, देवकन्याओं से, जो यहाँ माताजी की गोदी में रहकर पलीं, उन सबसे इस स्कूल की, परिवार-निर्माण की प्रयोगशाला की शुरूआत करते हैं। गायत्री परिवार के लोगों से कहते हैं कि अपनी पलियाँ हमें सौंपिए। हम उन्हें संस्कारवान् बनाएँगे। संस्कार किसी के पास नहीं हैं। सास के पास हैं ? सास तो उससे भी ज्यादा फूहड़ है। अपनी बेटी बहू को कहाँ से देगी वह संस्कार ? इसीलिए समय की आवश्यकता को देखते हुए हम संस्कारों के शिक्षण के द्वारा एक गुरुकुल आरम्भ करते हैं—विद्या, संस्कृति व ज्ञान द्वारा नयी पीढ़ी को बनाने के लिए।

हमारी तो इच्छा थी कि स्कूली पाठ्यक्रम भी इस शिक्षा से निकाल देते पर क्या करें ? मजबूरी है। बच्चे, उनके अभिभावक कहेंगे कि हमें नौकरी के लायक भी नहीं बनने दिया। हम तो उन्हें जीवन जीने की कला, बड़ा आदमी, महामानव बनने की विधा सिखाना चाहते हैं पर समय को देखते हुए विद्यालयीन सरकारी पाठ्यक्रम भी साथ जोड़ दिया है। मैट्रिक तक तो सरकारी शिक्षण पद्धति से पढ़ाएँगे, पर साथ में जीवन की दिशा का निर्धारण करना, अपना भविष्य स्वयं कैसे बनाया जाए, इस विधा का शिक्षण करेंगे। संस्कारवान बनाएँगे। सामान्य जानकारी मिले, वहाँ तक तो हम बर्दाश्त करते हैं पर कालेजों की पढ़ाई का जब प्रश्न आएगा तब हम अपना बनाएँगे। भारतीय संस्कृति का शिक्षण करने वाला एक विश्वविद्यालय स्तर का तन्त्र हम खड़ा करेंगे। कब करेंगे ? आप देखिएगा। हम हों न हों पर बीज बो रहे हैं। हमारे उत्तराधिकारी आने वाले दस-पन्द्रह वर्षों में यह समग्र तन्त्र तैयार कर देंगे। आपको इस सम्बन्ध में आशावादी होना चाहिए।

आज हमें आई. ए. एस. की नहीं समाज को सुधारने वाले लोकसेवियों की जरूरत है। समाज को शानदार मनुष्यों की जरूरत है। स्वस्थ चिन्तन करने वाले युवा रक्त की जरूरत है। इसीलिए स्कूलों की, कालेजों की शिक्षण-पद्धति में व्यापक क्रान्ति पैदा करने के लिए यहीं से वातावरण बनाते हैं। न जाने इनमें से कौन गाँधी है, नेहरू है, सुभाष बोस है, खुदीराम है ? प्रत्येक के अन्दर की मौलिक क्षमता को निखारने का प्रयास करेंगे। चार घण्टों की सरकारी पढ़ाई व बीस घण्टों की हमारी संस्कारों वाली पढ़ाई।

उज्ज्वल भविष्य के लिए जरूरी हैं—संस्कारवान बच्चे और सुसंस्कारी, संवेदनशील, स्वावलम्बी, शिक्षित नारी-शक्ति। इन्हीं दो को बढ़ाएँगे हम। इस दिशा में हमारे कदम छोटे भले ही हों, लेकिन परिणाम शानदार होंगे। आप देखना अगले दिनों सारी शक्तिपीठों में यही शिक्षण वृहत् रूप में चलने लगेगा व देखते-देखते विद्या-विस्तार की क्रान्ति होती चली जाएगी। अब अन्त में एक अनुरोध उनसे जो इस काम के लिए समय देंगे। उन बुड्ढों को जिन्होंने घर वालों की नाक में दम कर रखा है, रिटायर हो चुके हैं, ढेर सारा समय है पर समाज के नाम पर समय माँगते हैं तो ठेंगा दिखाते हैं। हम यहाँ बुलाते हैं ताकि उनका लोक-परलोक दोनों सुधार सकें। उन्हें हमें पहले पढ़ाना पड़ेगा, ताकि वे शिक्षक बन सकें। वानप्रस्थ स्तर के रिटायर्ड सेवाभावी व्यक्ति चाहिए हमें। यदि ऐसे व्यक्ति युवा वर्ग में से मिल सकें तो फिर बात ही क्या है ? घर में एक ही कमाने वाला है, उसे अभी हम नहीं बुलाते, पर यह जरूर कहते हैं कि साल में वह एक बार नौ दिन का अनुष्ठान यहाँ आकर करे। अपने घर की महिलाओं व बच्चों का शिक्षण यहाँ देव-परिवार में आकर करवाएँ। यह गुरुकुल एक समग्र, सर्वांगपूर्ण प्रयोगशाला है, जिसमें हम नर-रत्नों को ढालेंगे, जिनसे व्यक्ति, परिवार व समाज बनेगा। हमें मौका दीजिए ताकि हम नया समाज बना सकें, नया जमाना ला सकें। इन बच्चों व महिलाओं का अब विद्यारम्भ संस्कार होगा। हम अपनी बात समाप्त करते हैं।

ॐ शान्ति।

संजीवनी विद्या बनाम जीवन जीने की कला

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो !

जानवर की एक विशेषता यह होती है कि उसे अपने पेट की हमेशा फिक्र बनी रहती है। जब वह जवान होता है तो उसे सन्तान पैदा करने का ख्याल आता है। दो के अलावा वह और कोई काम कर नहीं पाता और इनसान ? इनसान देखने में तो जानवरों जैसा ही मालूम होता है, किन्तु उसमें भावनाएँ पाई जाती हैं। वनमानुष, बन्दर, लंगूर शायद आपने देखे हों, इनसे मिलती-जुलती है आदमी की देह। लेकिन उसकी विशेषता खासतौर से यह है कि उसमें भावनाएँ होती हैं। कहीं अकाल पड़ता है तो आदमी अपने अनाज के कोठों को खाली कर देता है। कहता है हम अकेले जीकर के क्या करेंगे ? बाकी लोग भी खाएँ तो क्या हर्ज है ? यदि किसी के छप्पर में, मुहल्ले में आग लगे तो वह सबसे पहले दौड़ता है आग बुझाने के लिए। यह क्या है ? यह हैं आदमी की भावनाएँ। दूसरों की सेवा के लिए दौड़ पड़ना, यह इनसानियत की एक ही परीक्षा है। अगर इस परीक्षा में फेल हो जाएँ तो जानना चाहिए कि शक्ल इनसान जैसी भले हो, पर है तो वास्तव में जानवर।

इस समय जिसमें आप हमारी बात सुन रहे हैं, ऐसा समय है, जिसको सामान्य नहीं कह सकते। इसे असामान्य ही कहा जाएगा। वैसे आपका सूरज सबेरे निकलता है, शाम को अस्त हो जाता है। कुएँ से पानी निकालते हैं, चक्की से आटा पीसते हैं, चौके से खाना खा लेते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

समय मामूली-सा मालूम पड़ता है, लेकिन हम और आप विचारपूर्वक अगर इसका अन्दाज लगाना चाहें तो मालूम पड़ेगा कि यह बहुत भयंकर समय है। इस भयंकर समय में तूफान भले ही न आते हों, आपके ऊपर घनघोर वारिश भले ही न होती हो, लेकिन संसार की निगाह से और जरा लम्बी दृष्टि फेंककर देखेंगे तो आपको यह मालूम पड़ेगा कि यह बहुत ही असाधारण समय है। इस समय में हवा में जहर ही जहर घुला हुआ है। जो साँस आप लेते हैं उससे आपके भीतर जहर चला जा रहा है और आपकी जिन्दगी को रोज कम कर रहा है।

इस भयंकर समय में प्रत्येक आदमी के ऊपर मुसीवत छाई हुई है। थोड़े आदमियों के ऊपर नहीं, बहुत आदमियों के ऊपर, सारे संसार के ऊपर। पानी गन्दा हुआ जा रहा है। विकिरण बढ़ता जा रहा है। इससे बच्चे अपाहिज, लँगड़े-लूले पैदा हो रहे हैं। जनसंख्या की दृष्टि से आदमी किस कदर वढ़ता हुआ चला जा रहा है और खाने के लिए सामान कम पड़ता चला जा रहा है। आपने देखा, सुना ? आपकी इतनी उमर हो गई ? जिस भाव से आपको आज गेहूँ मिलता है, चावल, घी मिलता है, क्या आपने इससे पहले कभी सुना था ? नहीं, कभी नहीं सुना था। यह महँगाई वढ़ रही है। अभी और बढ़ेगी। मुझे घटने की कोई सूरत नजर नहीं आती। वस्तुतः यह मुसीवत का समय है और आदमी पर मुसीबतें बढ़ती ही चली जा रही हैं और बढ़ेंगी अभी।

यह ऐसा समय है जिसमें किसी को किसी पर विश्वास नहीं रह गया है। आतंक और आशंकाओं से वातावरण चारों ओर घिरा हुआ है। सड़क पर जब आप निकलते हैं तो मालूम नहीं कि आपके साथ पड़ोस में चलने वाला आपके चाकू भोंककर कब आपकी सम्पत्ति छीन लेगा, इसका क्या विश्वास है ? इनसान का चाल-चलन, इनसान का विचार इतना गन्दा-घटिया हो गया है कि यह स्थिति अगर वनी रही तो कोई किसी पर विश्वास नहीं करेगा, न भाई-भाई पर विश्वास करेगा, न स्त्री पुरुष पर विश्वास करेगी, न पुरुष स्त्री पर विश्वास करेगा, ऐसा गन्दा, ऐसा वाहियात समय है यह। यह समय इसलिए भी घटिया और वाहियात है कि नेचर हमसे आप सवसे नाराज हो गई है। जब उसकी मौज आती है तो अन्धाधुन्ध पानी वरसा देती है और जब मूड आता है तो सूखा नजर आता है। कहीं मौसम का ठिकाना नहीं कि मौसम पर पानी वरसेगा कि नहीं, ठण्ड के समय ठण्ड ही पड़ेगी कि गर्मी पड़ेगी, कोई नहीं कह सकता। भूकम्प कब आ जाए, कोई नहीं कह सकता ? बाढ़ कब आ जाए, कोई ठिकाना नहीं ? प्रकृति हम सबसे बिल्कुल नाराज हो गई है, इसलिए उसने काम करना बन्द कर दिया है। यह ऐसा भयंकर समय है।

ऐसे भयंकर समय में आपके ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं है ? क्या आपके कोई कर्त्तव्य नहीं हैं ? क्या आपके अन्दर भावनाएँ नहीं हैं ? क्या आपका हृदय पत्थर और लोहे का हो गया है ? नहीं, मेरा ख्याल है कि सब आदमियों का ऐसा नहीं हुआ होगा। ज्यादातर लोगों का तो ऐसा ही हुआ है कि वे घटते-घटते जानवर की तरीके से बनते चल जा रहे हैं। जवान आदमी जब ज्यादा बुड्ढा हो जाता है तो कमर झुकने लगती है, आँखें नीची हो जाती हैं, लाठी टेककर चलता है। इनसान की जवानी चली जाती है तो वह बौना हो जाता है, घटिया हो जाता है, कमर झुक जाती है, उसका आसमान की ओर देखने का न मन होता है, न उसकी बनावट ही ऐसी रह जाती है कि वह ऊपर देखे। अधिकांश आदमी आज ऐसे हो गए हैं।

लेकिन आप ऊपर की ओर सिर उठाकर देखेंगे, हमें आपसे यह उम्मीद है। यह उम्मीद है कि ऐसे भयंकर समय में अपना सारा वक्त केवल पेट पालने के लिए और सन्तान पैदा करने के लिए जाया नहीं करेंगे। अगर आप चाहें तो ढेरों समय बचा सकते हैं, बीस घण्टे में अपना, अपने शरीर व कुटुम्ब का आराम से आप गुजारा कर सकते हैं। आठ घण्टा काम करने के लिए, सात घण्टा विश्राम के लिए और पाँच घण्टा घरेलू काम के लिए। फिर भी चार घण्टा आप समाज के लिए आई हुई परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए, समय को ऊँचा उठाने के लिए इनसान का भाग्य और भविष्य शानदार बनाने के लिए आप लगा सकते हैं। करना ही पड़ेगा यह आपको। इसमें तो नुकसान पड़ेगा ? नहीं, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि नुकसान नहीं पड़ेगा। जिन्होंने भी अपने समय को लोकसेवा में लगाया है, वे चाहे गाँधी रहे हों या नेहरू, विनोबा रहे हों या विवेकानन्द किसी भी तरह वे नुकसान में नहीं रहे हैं। वे ऊँचा उठे हैं, आगे बढ़े हैं और उन्होंने हजारों आदमियों को ऊँचा उठाया व आगे बढ़ाया है। स्वयं भी नफे में रहे हैं। वे नुकसान में रहे ? क्या नुकसान में रहे आप बताइए ? किसी एक का नाम तो बताइए।

गाँधीजी ने वकालत की होती तो वकालत में कितना कमा लेते ? लेकिन जब उन्होंने अपना समय सेवा में लगा दिया तो आप बताइए, क्या कमी रह गई उनके पास। उन्होंने इस्तेमाल नहीं किया। यह उनकी इच्छा पर है। ब्राह्मण अपने लिए कभी इस्तेमाल नहीं करते। गाँधी ब्राह्मण थे, बड़े शानदार आदमी थे और शानदार सिर्फ इसलिए कि उन्होंने अपने समय को पेट-पालन और जानवर के तरीके से औलाद पैदा करने में नहीं, बल्कि इनसान के तरीके से खर्च किया।

यह समय ठीक ऐसा ही है। इस विषम समय में मेरी आप लोगों से, प्रत्येक से यही प्रार्थना है कि आप अपने समय का थोड़ा अंश निकालें। हमने कितनी बार कहा व छापा है कि आप समयदान कीजिए। चन्द्रमा पर ग्रहण जब पड़ता है तब कितने ही लोग आते हैं व पुकार करते हैं कि चन्द्रमा पर ग्रहण पड़ा है, पुण्य कमाना हो तो दान करो। इस खराब समय में हमारी भी एक रट है—महाकाल की भी एक ही पुकार है— आप समय दीजिए, समय खर्च कीजिए। किस काम के लिए ? आप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस काम के लिए समय लगाइए जिससे आप लोगों के दिमागों और विचारों को ठीक कर सकें। इनसान के अन्दर क्या है ? वस्तुतः न हाड़ है, न माँस है, न मिट्टी, न पखाना, जो भी कुछ काम की चीज है, वह है विचार।

विचारों से ही अब्राहम लिंकन जैसे, जार्ज वाशिंगटन जैसे, गारफील्ड जैसे छोटे-छोटे इनसान कितने महान् बन जाते हैं। विचार अगर मनुष्य के पास हों तो, आज अगर विचारशीलता और दूरदर्शी विवेकशीलता लोगों के अन्दर आ गई होती तो दुनिया खुशहाल होती। इनसान, इनसान न रहकर देवता हो गया होता और जमीन का वातावरण स्वर्ग जैसा होता। पर विचारशीलता है कहाँ ? समझदारी है कहाँ ? अगर समझदारी बढ़ेगी तो आदमी के अन्दर ईमानदारी बढ़ेगी, ईमानदारी बढ़ेगी तो आदमी में जिम्मेदारी आयेगी और जिम्मेदारी आयेगी तो बहादुरी आयेगी। चारों चीजें एक साथ जुड़ी हुई हैं। समझदारी इसका मूल है। हमको लोगों की समझदारी बढ़ाने के लिए जी-जान से कोशिश करनी चाहिए। प्राचीनकाल के ब्राह्मण और सन्त यही काम करते थे। वे अपना गुजारा कम में करते थे व जीवन का उद्देश्य यही रहता था कि लोगों की समझदारी बढ़ाएँ। आप लोगों से भी मेरी यही प्रार्थना है कि लोगों की समझदारी बढ़ाने के लिए अपने समय का जितना अंश आप लगा सकते हों, लगाएँ। दिमाग में से आप यह ख्याल निकाल पाए तो बड़ा अच्छा हो कि बहुत-सा पैसा इकट्ठा होना चाहिए। पैसा रहेगा नहीं। मैं एक बात आपको बताए देता हूँ। अगले दिनों समाज की ऐसी व्यवस्था बनने वाली है, जिससे कि धन व्यक्तिगत नहीं रह जाएगा। सच्चा अध्यात्मवाद आपको मालदार नहीं बनने देगा। चौबीसों घण्टे आपका दिमाग व शक्तियाँ मालदार बनने की ख्वाहिश में लगते हैं तो आप गलती पर हैं, आप ठीक कीजिए अपने आपको।

अपना गुजारा सामान्य मनुष्य जिस तरीके से करते हैं, आप भी उसी तरीके से गुजारा करना सीखिए। फिर आप देखेंगे कि आपके पास समय, श्रम, बुद्धि, क्षमताएँ कितनी ही चीजें बच जाती हैं, जो समाज के काम में लगाई जा सकती हैं। जरूरी नहीं कि आप अपना मकान छोड़कर बाहर चले जाएँ। आप अपने घर रहकर भी बहुत काम कर सकते हैं, जिससे आपका क्षेत्र, आपका गाँव, आपके समीपवर्ती वातावरण में जाने कैसी हवा पैदा हो सकती है। कमाल हो सकता है तो इसके लिए क्या करना पड़ेगा ? इसके लिए मेरे ख्याल से आपको एक ट्रेनिंग लेनी चाहिए, छोटी से छोटी चीजों के लिए ट्रेनिंग की जरूरत पड़ती है। लुहार, संगीतज्ञ, रेलगाड़ी चलाने वाले, मोटर चलाने वाले, अध्यापक, चिकित्सक सभी को ट्रेनिंग लेनी पड़ती है।

ट्रेनिंग बड़ी आवश्यक है। विश्वामित्र राम व लक्ष्मण को उनके पिता से माँगकर ले गए थे और उनको ट्रेनिंग दी थी। काहे की ट्रेनिंग दी थी। बड़ी महत्त्वपूर्ण ट्रेनिंग थी। शिवजी का इतना भारी धनुष तोड़ा जाए ? लंका में जो राक्षस रहते हैं, उनको किस तरीके से समाप्त किया जाए ? रामराज्य की स्थापना कैसे की जाए ? ये सारी बातें विश्वामित्र के आश्रम में जाकर सीखी थीं। ऐसी ही एक ट्रेनिंग की व्यवस्था हमने अपने शान्तिकुंज में की है, ताकि आप समाज में छाई असुरता से लड़ सकें। शान्तिकुंज को पहले से भी हमारा तीस गुना करने का मन था, किन्तु अब बहुत दिनों से नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालय, यही हमारे दिमाग में घूमते रहते हैं। हमें यही सपना आता रहता है कि नालन्दा, जिसमें हजारों धर्म-प्रचारक तैयार किए गए थे एवं तक्षशिला जिसमें हजारों सस्कृति प्रचारक तैयार किये गये थे, यहाँ पर बने। धर्म का नाम तो मैं अब नहीं लूँगा। यह नाम बहुत बदनाम हो गया है। मैं समाज-सेवा की बात आपसे कहूँगा। यह कहूँगा कि आपकी महानता की वृद्धि के लिए सेवा बेहद आवश्यक है और जब तक आप समाज की सेवा नहीं करेंगे, तब तक आप उन्नतिशील नहीं बनेंगे ? आपकी आत्मा में सन्तोष और शान्ति का निवास नहीं होगा।

आत्मसन्तोष के अलावा समाज का सहयोग व भगवान् का अनुग्रह कैसे मिल सकता है, शानदार जिन्दगी कैसे जीनी चाहिए ? इसके लिए हमारे यहाँ ट्रेनिंग चलती है। ट्रेनिंग तो पहले भी चलती थी। नौ दिन की, पाँच दिन व एक माह की, पर अब हमने सारे के सारे शान्तिकुंज को विश्वविद्यालय के रूप में परिणत कर दिया है। कानूनन तो यह विश्वविद्यालय नहीं है, क्योंकि विश्वविद्यालय के लिए जो खानापूर्ति की जाती है, वह बहुत बड़ी है लेकिन पुराने समय में नालन्दा में कोई खानापूरी नहीं हुई थी और न तक्षशिला में कोई खानापूरी हुई थी। ये गवर्नमेण्ट से कोई सम्बन्धित नहीं हुए थे। हमारा यह विश्वविद्यालय इसी प्रकार का है।

आज मनुष्य को जीना कहाँ आता है ? जीना भी एक कला है। सब आदमी खाते हैं, पीते हैं, सोते हैं और मौत के मुँह में चले जाते हैं, किन्तु जीना नहीं जानते। जीना बड़ी शानदार चीज है। इसको संजीवनी विद्या कहते हैं—जीवन जीने की कला। यहाँ हम अपने विश्वविद्यालय में, शान्तिकुंज में जीवन जीने की कला सिखाते हैं और यह सिखाते हैं कि आज के गए-बीते जमाने में आप अपनी नाव पार करने के साथ-साथ सैकड़ों आदमियों को बिठाकर पार किस तरह से लगा पाते हैं ? नाव चलाना भी एक कला है। हम आपको नाव दे दें व आपको नदी के किनारे छोड़ दें, कहें कि आप जाइए तो इतने मात्र से आप नाव नहीं चला सकेंगे। कहीं लहरों के चक्कर में पड़ेंगे और बहते हुए चले जाएँगे। नाव को डुबो देंगे और आप भी डूब जाएँगे। लेकिन अगर आपको ट्रेनिंग मिली हो तो आप सकुशल पार हो जाएँगे। हमने अपने जीवन के इस अन्तिम समय में सारी हिम्मत और शक्ति इस बात में लगा दी है कि शान्तिकुंज को हम एक विश्वविद्यालय बना देंगे। पाँच सौ व्यक्तियों के लिए हमने एक माह में शिक्षण देने की व्यवस्था की है। इतना बड़ा काम व मात्र एक महीना ? हमने इसलिए बड़ा नहीं रखा, क्योंकि हमको कम समय में एक लाख से अधिक सही जीवन जीने वाले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदमी तैयार करने हैं। हमने पाँच सौ आदमियों को प्रत्येक माह ट्रेण्ड करके स्वयं का महान् और शानदार जीवन जीने के लिए शिक्षण देने का प्रबन्ध किया है। न केवल स्वयं का जीवन बल्कि समाज की सेवा का शिक्षण। न केवल समाज की सेवा बल्कि यह भी कि आज की समस्याएँ क्या हैं ? गुत्थियों का हल और समाधान निकालने के लिए क्या कदम बढ़ाए जाने चाहिए और किस तरीके से काम करना चाहिए ? यह सिखाने का प्रबन्ध किया है।

एक और आपको अचम्भा होगा। यहाँ बहुत दिनों से जब से यह आश्रम बना है, यहाँ के निवास के लिए, बिजली तो जलती है, कुएँ से पानी जो लेते हैं, उसके लिए किसी से कुछ भी नहीं लिया गया है। अब एक और हिम्मत बढ़ाई है। वह यह कि अब खाने की जिम्मेदारी भी हम अपने कन्धों पर उठाएँगे, गरीब और अमीर दोनों के लिए कोई खर्च वसूला नहीं जाएगा। यदि कोई कहे कि हमने आपका खाया है, दान का पैसा है, ब्राह्मण का, साधु का पैसा है, हम खाना नहीं चाहते तो हम कहेंगे कि मुट्ठी बन्द करके दे जाइए, हम रसीद काट देंगे आपकी। तो इस शिक्षण में यह नवीन विशेषता है कि अधिक से अधिक आदमी लाभान्वित हो सकें।

सरकारी स्कूलों-कॉलेजों में आपने देखा होगा कि वहाँ बोर्डिंग फीस अलग देनी पड़ती है। पढ़ाई की फीस अलग देनी पड़ती है, लाइब्रेरी फीस अलग व ट्यूशन फीस अलग। लेकिन हमने यह हिम्मत की है कि कानी कौड़ी की भी फीस किसी के ऊपर लागू नहीं की जाएगी। यही विशेषता नालन्दा-तक्षशिला विश्वविद्यालय में भी थी। वही हमने भी की है, लेकिन बुलाया केवल उन्हीं को है, जो समर्थ हों, शरीर या मन से बूढ़े न हो गए हों, जिनमें क्षमता हो, जो पढ़े-लिखे हों। इस तरह के लोग आयेंगे तो ठीक है, नहीं तो अपनी नानी को, दादी को, मौसी को, पड़ोसन को लेकर के यहाँ कबाड़खाना इकट्ठा कर देंगे तो यह विश्वविद्यालय नहीं रहेगा ? फिर तो यह धर्मशाला हो जाएगी। साक्षात् नरक हो जाएगा। इसे नरक मत बनाइए आप। जो लायक हों वे यहाँ की ट्रेनिंग प्राप्त करने आएँ और हमारे प्राण, हमारे जीवट से लाभ उठाना चाहें, चाहे हम रहें या न रहें, वे लोग आएँ। प्रतिभावानों के लिए निमन्त्रण है, बुड्ढों, अशिक्षितों, उजड्डों के लिए निमन्त्रण नहीं है। आप कबाड़खाने को लेकर आएँगे तो हम आपको दूसरे तरीके से रखेंगे, दूसरे दिन विदा कर देंगे। आप हमारी व्यवस्था बिगाड़ेंगे ? हमने न जाने क्या-क्या विचार किया है और आप अपनी सुविधा के लिए धर्मशाला का लाभ उठाना चाहते हैं ? नहीं, यह धर्मशाला नहीं है। यह कॉलेज है, विश्वविद्यालय है। कायाकल्प के लिए बनी एक अकादमी है। हमारे सतयुगी सपनों का महल है। आपमें से जिन्हें आदमी बनना हो, बनाना हो, इस विद्यालय की संजीवनी विद्या सीखने के लिए आमन्त्रण है। कैसे जीवन को ऊँचा उठाया जाता है, समाज की समस्याओं को कैसे हल किया जाता है ? यह आप लोगों को सिखाया जाएगा। दावत है आप सबको। आप सबमें जो विचारशील हों, भावनाशील हों, हमारे इस कार्यक्रम का लाभ उठाएँ। अपने को धन्य बनाएँ और हमको भी। हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

देवात्मा हिमालय एवं ऋषि-परम्परा

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

मुनासिब जगह पर मुनासिब चीज पैदा होती है। नागपुर के सन्तरे अगर आप अपने यहाँ बोना चाहें तो मीठे नहीं होंगे। बम्बई वाला केला जो कि वहाँ की जमीन में पैदा होता है, दूसरी जगह नहीं हो सकता। लखनऊ का आम सारी दुनिया में मशहूर है। अगर वही आम आप अपने गाँव में बोएँ तो उतना मीठा नहीं होगा जैसा कि वहाँ का होता है। नीलगिरि का चन्दन कितना खुशबूदार होता है ? यदि उसी चन्दन का पेड़ आप ले आवें और अपने गाँव के बगीचे में लगा दें, तो इतना खुशबूदार नहीं होगा। देवगण जहाँ हिमालय पर रहते हैं, वहाँ एक लम्बा वाला शकरकन्द जैसा कन्द पैदा होता है और वह कई दिन तक खाने के काम आ जाता है। उसी शकरकन्द का बीज आपको दे दें तो आप बो लेंगे ? नहीं। पैदा नहीं होगा। ब्रह्मकमल, जिसके लिए द्रोपदी ने भीम से आग्रह किया था कि 'तुम ब्रह्मकमल ला करके दो।' यह कहाँ पैदा होता है ? यह उत्तराखण्ड में जहाँ गोमुख है, उसके आगे तपोवन के नजदीक पैदा होता है। यह ब्रह्मकमल का फूल जमीन पर खिलता है, पानी में नहीं। यह अपनी जगह पर होता है। आप कहीं से बीज ले आयें ब्रह्मकमल के, अपने घर में बोना चाहें तो हो सकता है ? ना, वहाँ नहीं हो सकता। जगह की अपनी महत्ता होती है।

हिमालय की अपनी महत्ता है। सारे ऋषियों ने वहीं निवास किया था। स्वर्ग भी पहले वहीं था। ऋषियों की भूमि भी वही है। बड़ी सामर्थ्यवान, बड़ी संस्कारवान भूमि है। हमको भी तप करने के लिए वहाँ भेज दिया गया था और अब हम यहाँ सप्तऋषियों की भूमि शान्तिकुंज में हैं। देवात्मा हिमालय का अपना महत्त्व है। गंगा का अपना महत्त्व है। गंगा अपने में आध्यात्मिक शक्तियों को समेटे हुए हैं। यह न केवल उसके पीने के पानी में है, बल्कि वह जहाँ होकर बहती है, वहाँ का वातावरण भी कुछ विशेष होता है। सप्तऋषियों की भूमि, जहाँ सातों ऋषियों ने तपश्चर्या की थी और जो अभी भी ऊपर आसमान में दिखाई पड़ते हैं। उनकी जो भूमि है– सप्तऋषि भूमि, वह भी यहीं हैं, जहाँ आपका शान्तिकुंज बना हुआ है और भी गंगा के किनारे बहुत-से ऐसे स्थान हैं, जहाँ सिंह और गाय कभी एक घाट पर पानी पीने लगते थे। ऐसे प्राणवान स्थान भी होते हैं और सिद्धपुरुष भी होते हैं। हम यहाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ऐसे स्थान पर ही आये हैं। यहाँ आकर हमने आपकी भावनाओं को दिव्यता का स्मरण कराने के लिए देवात्मा हिमालय का एक मन्दिर बना लिया है। हिमालय का मन्दिर और कहीं नहीं मिलेगा आपको। लोगों ने देवताओं के मन्दिर बनाए हैं, अमुक के मन्दिर बनाये हैं, तमुक के मन्दिर बनाये हैं, पर हिमालय का मन्दिर सिर्फ आपको यहीं देखने को मिलेगा। हमने यह भी बनाया है। यह सप्तऋषि की भूमि है। सप्तऋषियों की भूमि और कहाँ है, बताइये आप ? कहीं नहीं है, मात्र यहीं पर है, जहाँ आज शान्तिकुंज बना हुआ है। गंगा पहले यहीं पर बहती थी। यहाँ की थोड़ी-सी जमीन भर गई है, इसलिए शान्तिकुंज वाली जमीन में जो पानी हजारों वर्षों से बहता था वह बन्द नहीं हुआ है। वह धारा अभी भी बह रही है, उसके लिए सामने रास्ते बना दिये गये हैं।

हिमालय-मन्दिर क्या है ? ये प्रतीक क्यों बना दिये हैं ? प्रतीकों का अपना-अपना महत्त्व है। एकलव्य ने द्रोणाचार्य का प्रतीक बना लिया था। रामचन्द्र जी ने शंकर जी का प्रतीक बनाया था। जब वे वनवास गये थे और सीताहरण के कारण दुःखी मन से वन-वन भटक रहे थे, उस समय उन्हें जब प्रतीक की आवश्यकता हुई तो उन्होंने शंकर जी के मन्दिर की स्थापना की थी, रामेश्वर में। ये सब प्रतीक हैं, जैसे तिरंगा झण्डा अपना राष्ट्रीय प्रतीक है। कम्यूनिस्टों का भी झण्डा होता है। लोग कहते हैं कि वे प्रतीकों को नहीं मानते। कैसे नहीं मानते ? लाओ हम उनके झण्डे को उखाड़ फेंकें, फिर देखो क्या होगा ? मुसलमान भी प्रतीकों को नहीं मानते हैं क्या ? मक्का-मदीना में प्रतीक ही तो रखा हुआ है जिसका वे चुम्बन लेते हैं। समस्त देवात्मा हिमालय का मन्दिर कहीं था नहीं। भारतवर्ष का यह एक बड़ा अभाव था। वह हमने दूर किया है, ताकि साधना की दृष्टि से कोई आदमी आना चाहे तो इस स्थान पर आकर वह महत्त्वपूर्ण लाभ उठा सके। इसलिए यह बनाया गया है। मुनासिब जगह पर मुनासिब काम होते हैं। हिमालय में बहुत सारे ऋषि रहते हैं और जो भी ऋषि आये हैं, वे सब हिमालय से आये हैं। उन्हीं ऋषियों का स्मरण दिलाने के लिए हमने यह कोशिश की है कि जो उन्होंने काम किये थे, उनको समेट करके पूरा न सही, थोड़ा-थोड़ा काम करें तो अच्छा होगा। हमने वही किया है।

व्यासजी ने अठारह पुराण लिखे थे। दर्शन भी लिखे थे। पुराणों और दर्शनों को हम लिख तो नहीं सके, पर हमने उनका अनुवाद किया है। वेदों का अनुवाद किया है। व्यासजी ने जो काम किये थे, उस रास्ते पर हम भी चले हैं और यहाँ जब शान्तिकुंज में आयेंगे तो देखेंगे कि उसकी निशानी यहाँ भी विद्यमान है। महर्षि पतंजलि ने गुप्तकाशी में रहकर योगाभ्यास किया था। आप जब आएँगे तो देखेंगे कि यहाँ जो कल्प-साधना शिविर कराये जाते हैं, अन्य दूसरे शिविर कराये जाते हैं और यहाँ योगाभ्यासों का, प्राणायामों का विधि-विधान सिखाया जाता है, वह हमने भी किया है और आपको भी सिखाते हैं। पुराने-जमाने के ऋषियों में याज्ञवल्क्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने यज्ञ के सम्बन्ध में शोध की थी। यज्ञ से किस तरीके से मनुष्य के शारीरिक और मानसिक रोगों का निराकरण होना सम्भव है ? ऐसी बहुत-सी बातों की महत्ता थी तब, लेकिन लोग उस महत्त्वपूर्ण यज्ञ को भूल-भाल गये थे। ऐसे ही हवन कर लेते थे सुगन्ध फैलाने के लिए। हमने उसको फिर से जीवित किया है। शोध करके जैसे कि याज्ञवल्क्य ऋषि ने किया था। लगभग उसी तरीके से यहाँ शान्तिकुंज में भी हमने कोशिश की है कि वह परम्परा चलती रहे।

विश्वामित्र ऋषि थे। वे गायत्री के मन्त्रद्रष्टा हैं। गायत्री मन्त्र जो हम बोलते हैं, उसका विनियोग है, सविता देवता है और विश्वामित्र ऋषि। गायत्री छन्द विनियोग है। विश्वामित्र उसके पारंगत थे। विश्वामित्र का भी यहाँ स्थान बना हुआ है। गायत्री का मन्दिर भी बना हुआ है शान्तिकुंज में। हमने भी गायत्री के पुरश्चरण किये हैं। विश्वामित्र को भी हम गुरु मानते हैं, जो हमारे हिमालय वाले गुरु हैं, वे अगर विश्वामित्र हों तो आप अचम्भा मत मानना। भगीरथ भी नाम आपने सुना होगा। उन्होंने हिमालय पर तप किया था और तप करके ज्ञानगंगा को लाये थे। गंगा जब धरती पर आने लगीं तो उनके प्रचण्ड वेग को देखकर भगीरथ ने सोचा कि यह तो हमारे बूते का नहीं है। गंगा जी ने भी कहा कि जब मैं नीचे जमीन पर गिरूँगी तो सूराख हो जाएगा। सो तुम मुझे स्वर्ग से बुलाकर कैसे धारण करोगे ? तब भगीरथ ने शंकर जी से मदद माँगी। शंकर जी ने अपनी जटाएँ फैला दीं। इस तरह स्वर्ग से जब गंगा आयी थीं तो पहले शंकर जी की जटाओं में आयीं, पीछे जमीन पर गिरीं। भगीरथ आगे-आगे चले, इसलिए गंगा भागीरथी कहलायीं, यह आपको मालूम है न ? भगीरथ तो अब नहीं हैं, मगर उनके तप का स्थान अभी भी है। गंगोत्री के पास गौरीकुण्ड है, उसके पास एक शिला है, जिसका नाम भगीरथ शिला है, जहाँ भगीरथ ने बैठकर तप किया था। उस स्थान पर बैठकर हमने भी ठीक उसी तरीके से एक साल का अनुष्ठान किया था। हम भी ज्ञान-गंगा को लाये हैं। यह ऋषियों की परम्परा है। हमने कोशिश की है कि ऋषिगण जिस रास्ते पर चले हैं, हम भी उस रास्ते पर चलें। ऋषियों की वजह से हिमालय धन्य हुआ, नहीं तो हिमालय में क्या बात है ? इससे ऊँचे-ऊँचे और भी पहाड़ हैं। सारी दुनिया में पहाड़ों की कोई कमी है क्या ? उत्तराखण्ड इसी वजह से प्रख्यात हुआ है कि इसमें चारों धाम भी बने हैं। पाँच प्रयाग भी इसमें हैं। पाँच गुप्त काशियाँ भी हैं। पाँच सरोवर भी हैं। समूचे भारतवर्ष के जो कुछ भी महत्त्वपूर्ण स्थान हैं, जो कुछ भी तीर्थ हैं, सब इकट्ठे होकर इसी जगह पर एकत्रित हो गये हैं। हमारा भी प्रयत्न इसी तरीके से रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परशुराम जी का नाम आपने सुना होगा। उन्हें शंकर भगवान् ने एक कुल्हाड़ा दिया था। उस कुल्हाड़े से उन्होंने लोगों के सिर काट डाले थे। जो खराब दिमाग वाले थे, बददिमाग वाले थे, उन बददिमाग वालों के सिर काटकर परशुराम जी ने फेंक दिये थे और वह भी इक्कीस बार। सिर काटने से मतलब ? सिर काटना तो मेरे ख्याल से ऋषि के लिए क्या सम्भव रहा होगा ? यह कथन तो अलंकारिक मालूम पड़ता है। दिमाग बदलने के लिए विचार-क्रान्ति की दृष्टि से हम लगभग वही काम कर रहे हैं, जो कि परशुराम जी ने फरसा लेकर किया था। फरसा तो हमारे हाथ में नहीं है, मगर कलम जिन्दा है। दोनों चीजें हमारे हाथ में हैं और उन्हीं के सहारे हम लोगों के दिमागों को बदलने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। परशुराम जी यमुना जी को लाये थे और फरसा भी लाये थे। परशुराम जैसा लगभग वही काम हमने किया है।

प्रायः सभी ऋषि उत्तराखण्ड में ही हुए हैं। ऋषियों ने इसी पुनीत भूमि में रहकर तपस्या की, ताकि अध्यात्म शक्तियों को ठीक ढंग से सँभाल सकें। इसलिए उन्होंने इसी स्थान को चुना था। हमने भी इसे ही चुना है। हमारा और आपका मिलन हो सके, इसलिए हिमालय की यहाँ से शुरुआत होती है—हरिद्वार से, उस स्थान पर हम बैठे हैं ताकि आपके लिए भी यहाँ आने में मुश्किल न हो। ऊँची जगह पर चढ़ना मुश्किल है। जहाँ बर्फ पड़ती है और अत्यधिक ठण्डक रहती है, जहाँ खाने-पीने का कोई सामान नहीं है, यदि वहाँ आप जाएँगे तो आपके लिए मुश्किल पड़ेगी। इसीलिए हमने हरिद्वार में रहना मुनासिब समझा। यहीं से हिमालय शुरू होता है। गंगा में यहाँ से पंहले कोई गन्दी चीज नहीं डाली जाती और न कोई नाले पड़ते हैं वाद में पड़ते हैं। इसलिए हरिद्वार को हमने मुनासिब समझा।

चरक ऋषि को आप जानते हैं क्या ? चरक ऋषि प्राचीनकाल में हुए हैं। उन्होंने दवाओं, प्राकृतिक औषधियों के सम्बन्ध में शोधें की थीं, खोजें की थीं। उनका स्थान केदारनाथ के पास था, जहाँ सिक्खों का गुरुद्वारा है। केदारनाथ के पास फूलों की घाटी है, जो उन्हें बहुत प्रिय थी। अब तो वहाँ तोड़-फोड़ के कारण सब जड़ी-बूटियाँ नष्ट हो गयी हैं। वहाँ तो अब फूलों की घाटी भी नहीं है, लेकिन अगर कभी आपको फूलों की घाटी देखने का मन हो तो आप गोमुख से आगे ऊपर तपोवन जाना-नन्दनवन जाना। तपोवन और नन्दनवन ऐसे स्थान हैं जहाँ विचित्र दुर्लभ फूलों की छटा देखते ही बनती है। इनमें ब्रह्मकमल भी शामिल है। वह आपको वहीं मिलेगा। चरक के रास्ते पर हम भी चले हैं। वनौषधियों के प्राचीन श्लोकों को ठीक तरीके से खोजबीन करने के लिए और उनके सही और गलत होने की बावत जानकारी प्राप्त करने के लिए यहाँ ब्रह्मवर्चस् शोध-संस्थान की स्थापना की है। जो कुछ भी सम्भव है पुराना और नया अर्थात् पुराने ढंग से कैसे शोध की जाती थी और नये ढंग से कैसे की जाती हैं ? यह हमने यहाँ बनाने की कोशिश की है।

उत्तरकाशी में आरण्यक हैं। आरण्यक किसे कहते हैं ? आरण्यक उसे कहते हैं जहाँ लोग वानप्रस्थ लेकर समाज-सेवा के लिए समर्पित हो जाते हैं, उनके निवास स्थान को आरण्यक कहते हैं, गुरुकुल छोटे बच्चों का होता है। विद्यार्थियों का होता है। वहाँ तो आरण्यक ही था, पर यहाँ पर हमने गुरुकुल और आरण्यक दोनों चलाने की कोशिश की है। बच्चों का भी यहाँ विद्यालय है, खास विद्यालय जिसके बारे में कहना चाहिए कि हिन्दुस्तान भर में शायद ही कहीं ऐसा विद्यालय आपको देखने को मिले। प्रचारक और लोकसेवी तैयार करने के लिए हमने यहाँ आरण्यक बनाया है। भगवान् बुद्ध ने भी बनाये थे नालन्दा और तक्षशिला में। उनमें प्रचारक और कार्यकर्त्ता तैयार किये जाते थे। हमारे यहाँ भी कार्यकर्त्ताओं को संगीत की शिक्षा, व्याख्यानों की शिक्षा, समाजसेवा की शिक्षा, चिकित्सा की शिक्षा आदि सारी शिक्षाएँ यहाँ दी जाती हैं। यहीं जमदग्नि का आश्रम है। नारद जी का नाम तो सुना है न आपने ? वे संगीत के द्वारा ही सारी की सारी भक्ति का प्रचार करते थे और हिन्दुस्तान से ले कर सारे विश्वभर में घूमते थे। चाहे जब भगवान के पास जा पहुँचते थे। उनका स्थान कहाँ था ? विष्णु प्रयाग में उन्होंने तप किया था। वहाँ तो हम आपको नहीं ले जा सकते, लेकिन यहाँ पर नारद जी का जो काम था संगीत शिक्षा का, वह हमने किया है क्योंकि इस जमाने में लोकशिक्षा के लिए संगीत बेहद आवश्यक है। संगीत के बिना देहाती मुल्कों में जहाँ बिना पढ़े-लिखे लोग अधिक रहते हैं, उनको प्रशिक्षित करना बड़ा मुश्किल है। हमने उसकी भी यहाँ व्यवस्था बना ली है।

वशिष्ठ जी का तो नाम आपने सुना है। उन्होंने राजनीति और धर्म–दोनों को मिलाया था। राजा दशरथ के यहाँ भी रहते थे। धर्म का भी काम करते थे और राजनीति की भी देखभाल करते थे। हमारी भी जिन्दगी कुछ इसी तरह की ह्वे गयी है। पौने चार वर्ष तो जेलखाने में रहना पड़ा। सन् १९२० से लेकर १९४२ तक बाइस साल तक हम दिन-रात राजनीति में लगे रहे। समाज को ऊँचा उठाने के लिए और अँग्रेजों को भगाने के लिए, देश की आजादी के लिए हमने जो काम किया है, वशिष्ठ भगवान् भी यही काम करते थे। पीछे वे राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को अपने पास ले गये थे। हम भी आपको लेकर आये हैं। हमारे बच्चे तो क्या आयेंगे, पर आप आ सकते हैं। आप भी हमारे बच्चे हैं। शंकराचार्य के बच्चे थोड़े ही थे। रामचन्द्र जी के पिता का नाम वशिष्ठ थोड़े ही था ? दशरथ जी था। आप भी तो हमारे बालक हैं ? जिस तरीके से राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भाइयों को लेकर वशिष्ठ जी आ गये थे, और उनको यह बतलाया था कि धर्म और राजनीति दोनों का समन्वय कैसे हो सकता है, हम भी आपको यही सिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि धर्म और राजनीति का, विज्ञान और अध्यात्म का सम्मिश्रण-समन्वय कैसे हो सकता है ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आद्यशंकराचार्य का नाम सुना है न आपने। जिन्होंने चारों धाम बनाये थे। चारों धाम कौन-कौन से हैं ? रामेश्वर, द्वारिका, बद्रीनाथ और जगन्नाथपुरी। चारों धामों में चार मठ उन्होंने स्थापित किये थे। उनका अपना निवास स्थान था ज्योतिर्मठ। ज्योतिर्मठ के पास शहतूत का एक पेड़ था। उसी के नीचे उनकी गुफा थी। वे वहीं रहते थे। वहीं उन्होंने अपने ग्रन्थ लिखे थे और वहीं तप किया था और वहीं जो कुछ भी काम कर सकते थे, चारों धाम बनाने का, वे भी योजनाएँ उन्होंने वहीं बनायी थीं। मान्धाता को कहकर वह काम उन्होंने वहीं से कराया था। हमने भी यहीं से बैठकर गायत्री के चौबीस सौ धाम बनाये हैं। इसके अलावा भी चौबीस सौ और छोटे-छोटे धाम हैं। शंकर जी का एक ही धाम है—रामेश्वरम में और बद्रीनाथ का एक ही धाम है, लेकिन गायत्री के हमने चौबीस सौ धाम बनाये हैं। आपने पिप्पलाद ऋषि का नाम सुना है। वह भी यहीं रहते थे हिमालय पर, लक्ष्मण झूला के पास। पीपल के फल खाकर के ही उन्होंने जिन्दगी काट दी थी, क्योंकि वे जानते थे—'जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन'—यदि हम अपने मन को अच्छा बनाने की फिकर में हैं तो सबसे पहले शुरुआत अच्छे खाने से करनी चाहिए। अच्छे अन्न से करनी चाहिए। अच्छे अन्न का मतलब होता है कि बेईमानी से कमाया हुआ अन्न न हो। बिना हराम का जो अपने खून-पसीने से कमाया हो, उसी को खा करके रहना चाहिए। पीपल के पेड़ उन दिनों ज्यादा थे। उनके फल भी ज्यादा होते होंगे। तोड़-ताड़ कर उन्हें साल भर के लिए रख लेते रहे होंगे और उसे ही खाते रहे होंगे। हमारा भी आहार ऐसा ही रहा है। आपको मालूम है न, जौ के ऊपर हम कितने दिन तक रहे हैं। अभी भी ठीक तरह से अन्न नहीं खाते हैं।

सूत और शौनक ऋषि की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। वे कहाँ रहते थे ? हिमालय पर। कौन-सी जगह ? ऋषिकेश में। ऋषिकेश में वह पुराणों की कथाएँ कहते थे। शौनक जी पूछते थे और सूत जी कहते थे। दोनों ही कथाएँ कहते थे। पुराने-जमाने के तो अठारह पुराण अठारह समय पर लिखे गये थे। हमने नया प्रज्ञापुराण ही बना दिया है। एक खण्ड तो अभी छप गया है, जो तीन खण्ड और अभी तैयार हो गये हैं, वे भी इसी वर्ष छपकर तैयार हो जाएँगे। आपको अठारह पुराणों के स्थान पर, शायद यह अठारह खण्डों के प्रकाशन के रूप में मिलेगा। ये सब ऋषियों के काम हैं। एक-एक ऋषि ने एक-एक काम किया था, लेकिन हमने सारे ऋषियों के कामों का समन्वय किया है। ऋषियों के तरीके से यह सब बनाने की कोशिश की है। राजा हर्षवर्धन थे जिन्होंने हर की पौड़ी पर बैठकर अपना सर्वस्व दान किया था तो उसी से तक्षशिला का विश्वविद्यालय बनाया गया था। हम हर्षवर्धन तो नहीं हैं पर, जो कुछ भी हमारे पास था, वह सब का सब हमने दिया है। हर्षवर्धन की जो परम्परा सर्वमेध की थी हर की पौड़ी के नजदीक थी, वह हमने शान्तिकुंज में ही लाकर के स्थापित कर दी। कणाद ऋषि विज्ञान और अध्यात्म को मिलाने के लिए प्रयत्नशील रहा करते थे। उन्होंने 'एटम' के सम्बन्ध में अणु के सम्बन्ध में, बहुत सारी खोजें की हैं। अपना ब्रह्मवर्चस भी विज्ञान और अध्यात्म को मिलाने की कोशिश कर रहा है। आप यहाँ जो कुछ भी देख रहे हैं वह ऋषि-परम्परा है, जिसे हमने जिन्दा रखा है।

बुद्ध का नाम सुना है न आपने ? धर्म-चक्र-प्रवर्तन के लिए उनके कितने शिष्य थे, जो आकर समय-समय पर साधनाएँ किया करते थे और उपासनाएँ करते थे। वे कहाँ रहते थे ? बुद्ध के पास ? नहीं, बुद्ध के पास नहीं रहते थे। नालन्दा में रहते थे। तक्षशिला में रहते थे और कुछ हिमालय में रहते थे। कुछ कहीं तो कुछ कहीं। बुद्ध की परम्परा को भी हमने कायम रखा है। यहाँ शान्तिकुंज में पहले दो विश्वविद्यालय थे, पर अब एक ही है अपनी तरह का निराला। धर्म-चक्र-प्रवर्तन के लिए प्रज्ञाचक्र को घुमाने के लिए बुद्ध जैसा क्रिया-कलाप आप शान्तिकुंज में पायेंगे। हिमालय की गतिविधियों का एक केन्द्र यह भी है। आर्यभट्ट ने भी इसी हिमालय में तप किया था। उन्होंने ज्योतिर्विज्ञान, ग्रह-नक्षत्रों के विज्ञान की खोज की थी कि किस तरीके से ग्रह-नक्षत्र घूमते हैं तो पृथ्वी पर क्या असर पड़ता है ? पृथ्वी के निवासियों पर क्या-क्या असर पड़ता है ? ये सारी की सारी खोजें आर्यभट्ट ने अपने जमाने में इसी हिमालय में की थीं। आप कभी शान्तिकुंज आएँ तो देख लीजिए कि उनके जो सारे क्रियाकलाप थे, जहाँ तक हमसे मुमकिन हुआ है, वह बनाने की कोशिश की है। पंचांग भी यहाँ से प्रकाशित होता है। इसमें नौ ग्रह पुराने और तीन जो अभी-अभी नये खोजे गये हैं, उन बारह ग्रहों का पंचांग भी केवल यहाँ से ही प्रकाशित होता है और कहीं से नहीं होता। नागार्जुन रसायनशास्त्री थे। उन्होंने रसायनों की खोज की थी। हमारे यहाँ भी देवताओं का और दूसरे अन्य रसायनों की खोज का क्रम है। हम जड़ी-बूटी से कायाकल्प का नूतन अनुसन्धान कर रहे हैं।

शृंगी ऋषि मन्त्र विद्या में पारंगत थे। वे लोमष ऋषि के बेटे थे, उन्होंने परीक्षित को शाप दिया था कि तुझे सातवें दिन साँप काट खायेगा, तो सातवें दिन साँप ने उन्हें काट खाया था। उन्होंने ही राजा दशरथ के यहाँ यज्ञ कराया था। राजा दशरथ के बच्चे नहीं होते थे तो पुत्रेष्टि यज्ञ कराने के लिए शृंगी ऋषि को उपयुक्त समझा गया। वे ब्रह्मचारी थे और मन्त्र विद्या में पारंगत भी। उन्हीं की मन्त्र विद्या की वजह से राजा दशरथ के चार बच्चे पैदा हुए थे। यह सब शृंगी ऋषि की मन्त्र-विद्या थी। वह भी हिमालय में रहते थे। मन्त्र-विद्या के बारे में गायत्री के बारे में हम कोशिश करते हैं। दोनों नवरात्रियों में अनुष्ठान कराते हैं। जो भी आदमी इस महत्त्वपूर्ण समय पर आते हैं वे सब गायत्री का अनुष्ठान करते हैं। कैलाश पर्वत कहाँ है ? यहीं हिमालय पर है। यह स्वर्ग है। हिमालय केवल ऋषियों की ही भूमि नहीं है—देवताओं की भी भूमि है। इसको स्वर्ग भी कहा गया है। सबसे पहले सृष्टि का उद्भव यहीं हुआ। मनुष्य यहीं जन्मे इतिहास के हिसाब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से। हमने भी कहा है कि स्वर्ग कहीं आसमान पर न होकर अगर जमीन पर रहा होगा तो वह देवात्मा हिमालय वाले हिस्से में रहा होगा कैलाश पर्वत पर। नन्दनवन जो स्वर्ग में था, वह यहीं है। तपोवन भी, मानसरोवर भी यहीं है। गोमुख से जरा आगे चलेंगे जहाँ हमारे गुरुदेव का थोड़ी दूर पर निवास है, वह कैलाश में ही है। वह कैलाश तो अलग था जो तिब्बत में है। अब वह चीन के हाथों में चला गया। उसको तो हम कैसे कहें कि शंकरजी को चीन छीन ले गया। लेकिन यह कैलाश पर्वत उसी पर है। इसीलिए यह स्वर्ग भी है। हिमालय क्या है ? स्वर्ग है। स्वर्गारोहण के लिए जब पाण्डव गये थे तो यहीं गये थे। स्वर्गारोहण-बद्रीनाथ से आगे वसोधारा है और वसोधारा से आगे एक पहाड़ है, वही स्वर्गारोहण है। सुमेरुपर्वत भी यहीं है सारे देवता उसी पर रहते-थे। यह सोने का पहाड़ था। हमारे पास उसका फोटोग्राफ भी है। जब हम वहाँ गये थे तो उसका फोटोग्राफ भी साथ में लाये थे। वहाँ प्रातःकाल एवं सायंकाल के समय सुनहरी छाया रहती है। ध्रुव ने यहीं तप किया था। श्रीकृष्ण भगवान् तप करने के लिए बद्रीनाथ गये थे। रुक्मिणी और कृष्ण दोनों ने वहीं तप किया था। तप करने के बाद में उनके प्रद्युम्न जैसी सन्तान पैदा हुई।

वाल्मीकि की और सीताजी की घटना तो आपने सुनी है। रामचन्द्रजी ने जब सीताजी को वनवास दिया था तो वे वाल्मीकि के आश्रम में रही थीं और वहाँ लव-कुश नाम के दो ऐसे बालक पैदा हुए थे, जो रामचन्द्र जी से, लक्ष्मण जी से और हनुमान जी से लोहा लेने के लिए तैयार हो गये थे। शकुन्तला का नाम सुना है आपने ? और चक्रवर्ती भरत ! जिसके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। शकुन्तला कौन थी ? वह कण्व ऋषि की बेटी थी, हाँ बेटी ही कहिए और उसके बच्चे भरत का जन्म, लालन-पालन जो हुआ था यहाँ कोटद्वार नाम की एक जगह है हिमालय में वहीं हुआ था। हिमालय की इन सारी की सारी विशेषताओं को सिकोड़ करके हमने उनका विशाल मन्दिर बना दिया है। ये सारी चीजें कहाँ हैं ? अगर आप देखना चाहें तो यहाँ आकर देख भी सकते हैं। हमने एक छोटी-सी रंगीन पुस्तक भी छापी है। जिसमें उन सब स्थानों का, हिमालय के स्थानों को बताने की कोशिश की है कि ये कहाँ हैं ? हिमालय में पाँच प्रयाग हैं, पाँच काशियाँ हैं, पाँच सरोवर हैं। हिमालय में चार धाम हैं। चार धाम कौन-कौन से हैं ? बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री। चार धाम ये ही कहलाते हैं। ये सारे के सारे पवित्रतम स्थान इसमें बने हुए हैं। उसका हमने मन्दिर भी बनवाया है। जो उससे आपको सम्बन्ध जोड़ने की बीच की कड़ी है। सीढ़ी पर पहला पाँव जहाँ पर रखा जाता है, ऊपर चढ़ने के लिए तो पहले पाँव को हम मुख्य मानते हैं। उसको देहरी कहते हैं। इसीलिए हरिद्वार इसका नाम रखा गया है। यहाँ पहाड़ों पर जाने के लिए रास्ता है। पार्वती जी ने तप यहीं किया था। यहाँ एक विल्वकेश्वर मन्दिर है। वहाँ पार्वती जी ने तप किया था और वहीं नजदीक में ही उनका विवाह हुआ था। यहीं पार्वती जी अपने पूर्व जन्म में जिनका नाम सती था जन्मी थीं और सती हुई थीं, वह दक्ष प्रजापति नामक स्थान है। दक्ष एक वैज्ञानिक थे, उनका सिर काटा गया था और महादेव जी उनसे नाराज हो गये थे, वह स्थान भी यहीं है। यह देवात्मा हिमालय है बड़ा शानदार। इसको क्या कहें ?

आपसे क्या अनुरोध है ? यह कि हम तो सारी जिन्दगी के लिए चले आये। मरेंगे तो भी हम इधर ही कहीं मरेंगे, लेकिन आपसे हमारी प्रार्थना है कि ऐसे पुनीत स्थान से आपको जीवन में कहीं न कहीं जुड़ा रहना चाहिए। हमको जिन्दगी भर में तीन बार हमारे गुरु ने एक-एक वर्ष के लिए हिमालय बुलाया, बैटरी चार्ज करने के लिए। गाड़ियों की बैटरी जब धीमी हो जाती है तो उसको फिर दोबारा चार्ज कर देते हैं। फिर वह बैटरी काम करने लगती है। इसलिए जब हमारी बैटरी धीमी पड़ी तब हमको हमारे गुरु ने बुलाया और अब हम यहाँ हैं। आपको हम निमन्त्रण भेजते हैं इस व्याख्यान के द्वारा। आपको तीर्थयात्रा का जब कभी भी मौका मिले, आप यहाँ शान्तिकुंज में आने की कोशिश कीजिए, जहाँ सारे ऋषियों की परम्परा है। जहाँ हिमालय की सारी विशेषताओं को हमने एकत्रित करके रखा है। जब आपका जन्म-दिन हो, विवाह-दिन हो तो यहाँ आने की कोशिश कीजिए और बच्चों के संस्कार कराने के लिए, सोलह संस्कार कराने हों तो आप यहाँ आने की कोशिश कीजिए। बच्चों के संस्कार कराने के लिए पुनीत स्थान की लोग तलाश करते हैं। किसी देवी के यहाँ, किसी मन्दिर में लोग संस्कार कराते हैं। आप भी यहाँ आ सकते हैं। श्राद्ध और तर्पण कराने के लिए भी ऐसा नियम है कि यहाँ बद्रीनाथ के पास में ब्रह्मकपाल नाम का स्थान है, वहाँ लोग तर्पण कराते हैं। यहाँ भी तर्पण कराते हैं। श्राद्ध कराते हैं। आप चाहें तो हरिद्वार में भी करा सकते हैं, लेकिन वह स्थान कहाँ है ? कैसे है ? इसके बारे में हमें कुछ कहना नहीं। लेकिन हमारा जो स्थान है वह बहुत सुन्दर स्थान है। यहाँ जो भी आते हैं, नवरात्रि के दिनों में यहाँ अनुष्ठान कराते हैं। यह अनुष्ठान की भूमि है। शिक्षण की भी सारी व्यवस्था यहाँ है। शिक्षण के लिए आपका कभी मन हो, गुरुजी ने जो सीखा था, उसको आगे चलकर हम भी सीखें, तो यहाँ दस दिन के शिविर भी होते हैं। एक महीने के शिविर भी होते हैं। यहाँ पर एक छोटा स्थान आप ऐसे मान लीजिए जैसे गणेश जी ने राम नाम लिख करके, उसकी परिक्रमा लगा ली थी और परिक्रमा लगाने के बाद में उनको वह सारा का सारा पुण्य मिल गया था, जो कि विश्व की परिक्रमा से मिलना चाहिए। गणेश जी को पहला नम्बर मिला। उनका चूहे की सवारी पर बैठकर सारे विश्व भर में घूमना तो सम्भव नहीं था अतः उन्होंने विवेक से काम लिया और रामनाम की परिक्रमा लगा ली। यह छोटा-सा गायत्री-तीर्थ है। छोटा-सा शान्तिकुंज उन सारी विशेषताओं से भरा पड़ा है। हम तो अब ज्यादा समय तक रहेंगे नहीं, अभी सन् दो हजार तक तो रहने वाले हैं नहीं, किन्तु इस शरीर से नहीं तो सूक्ष्म शरीर से रहेंगे। यहाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारी प्रेरणा बराबर रहेगी और आपको बराबर वह लाभ मिलता रहेगा जो कि मिलना चाहिए। बहुत शानदार जगह है शान्तिकुंज। इन सारे ऋषियों का, यहाँ के चौबीस गायत्री के चौबीस ऋषि हैं और उन चौबीस ऋषियों का सार यहाँ है; वे ऋषि जो करते थे, उनकी परम्परा का सार देखना हो तो यहाँ है। यह तीर्थों में ऐसा तीर्थ है कि यहाँ आ करके आप कभी उपासना करें तो जिस तरीके से नागपुर के सन्तरे, बम्बई के केले फलदायक होते हैं, ठीक उसी तरीके से फलदायक आप अपने को पायेंगे। यह शान्तिकुंज तीर्थ हमने बनाया है तो समझना चाहिए यह आपके लिए बनाया है। हिमालय बना होगा तो हमारे गुरु ने हमें खींच करके हिमालय पर बुलाया और हमको वहाँ पर रखा। हम आपको खींच करके यहाँ बुलायेंगे कि आप यहाँ शान्तिकुंज में आया करें। साल में एक बार किसी प्रकार आने की कोशिश किया करें। यहाँ के आने-जाने में जो पैसा लगा है, समय लगा है, जो कुछ भी चीजें लगी हैं वे सब सार्थक सिद्ध होंगी। निरर्थक सिद्ध नहीं होंगी। आप शान्तिकुंज आ करके यह ख्याल नहीं करेंगे कि हम निरर्थक आये और हमने बेकार में समय और पैसा गँवाया। बस और तो कुछ कहना नहीं। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

हिमालय का अज्ञातवास एवं हमारी तपश्चर्या

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

कई व्यक्ति हमारे बारे में पूछते हैं कि हिमालय में अज्ञातवास के समय की आपकी कार्यक्रम-व्यवस्था क्या थी ? भावी कार्यक्रम का जानना भी उनकी उत्सुकता का विषय रहता है और यह स्वाभाविक भी है कि जिनके प्रति अपनी आत्मीयता होती है, उनके कुशल समाचार जानने के लिए, उनकी गतिविधियाँ जानने के लिए हर आदमी की इच्छा बनी रहती है। अपने ही परिवार के लोगों को ऐसा कुछ जानने की इच्छा हो रही हो तो कोई अचम्भे की बात नहीं। भूतकाल के सम्बन्ध में भी लोगों की थोड़ी ही जानकारी है और उसके साथ में भविष्य का सम्बन्ध किस तरह मिला हुआ है, इसके बारे में पूरी जानकारी न होने से कई व्यक्ति, कई तरह के अनुमान लगा लेते हैं और कई तरह के सवाल पूछते रहते हैं। उनके समाधान किये जाएँ, यह ज्यादा मुनासिब समझा गया। हम में से प्रत्येक व्यक्ति को जो मुझमें दिलचस्पी रखता हो, उसको यह जानना चाहिए कि अपने जीवन का क्रम १५ वर्ष की उम्र से लेकर आज तक एक अज्ञात शक्ति के इशारे पर चलता हुआ चला आया है। १५ वर्ष की उम्र से पूर्व इस संसार में खाया हो, खेला हो, हँसा हो, सोचा हो, किया हो, बात अलग, लेकिन जब मैं १५ वर्ष का हो गया, उस समय से लेकर आज तक की जितनी भी गतिविधियाँ हैं, उनका संचालन और उसकी धारणा अपने मन से नहीं की गयी, बल्कि ऐसी शक्ति के इशारे पर की गयी, जो अत्यधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं।

जब मैं १५ वर्ष की उम्र में पूजा की कोठरी में बैठा हुआ था तब एक दिव्य प्रकाश सामने आया और वह दिव्य प्रकाश एक दिव्यात्मा का था। वह प्रकट हुए, उन्होंने मेरे को दिव्यलोक के सारे इतिहास और सारे संकेत दिखाए, बताए और सुनाए। इनको जानने के बाद में, मैं समझ गया मैं कौन हूँ और मुझे क्या करना चाहिए ? यह है आत्मबोध, जो मुझे हुआ, वह हम में से हर व्यक्ति को मिल सकता है। हम में से हर एक आदमी को यह प्रयास करना चाहिए कि हम ये कहें कि हम भूतकाल में क्या थे ? हम भूतकाल में भगवान् के अंश थे। हमको भगवान् ने विशेष कार्मों से भेजा है। जिन लोगों में मेरे ही तरीके से आकांक्षाएँ उत्पन्न हों, उन्हें यह जानना भी चाहिए कि उनके पूर्व जन्म में कोई न कोई दिव्य काम हुए हैं अन्यथा ये आकांक्षाएँ जो भगवान् की इच्छानुरूप हैं, उनके मन में पैदा न होतीं। ये आकांक्षाएँ हजारों तरीके से फैली हुई हैं और अनेक मनुष्य अनेक तरीके से उनमें दिलचस्पी लेते हैं। लेकिन बात मानने ही लायक है। इस समय भगवान् का जो प्रवाह अन्तरिक्षलोकों में चल रहा है वह यह है कि मनुष्य का भावनात्मक नव-निर्माण किया जाए। इसका आन्दोलन जो युग-निर्माण योजना के नाम से विख्यात है, यह भगवान् का ही आन्दोलन है और उन्हीं का क्रियाकलाप है और उन्हीं की इच्छा का संकेत है। १५ वर्ष की उम्र में मुझे इसी संकेत की ओर प्रेरित किया गया और अग्रसर किया गया। उसी सत्ता ने, जिसका कि मैं इशारा कर चुका हूँ और जिसको मैं गुरुदेव कहता हूँ और अपने आपकी संचालक सत्ता मानता हूँ, उन्होंने मुझे यह आदेश किया कि मुझे २४ वर्ष तक सब साधना करनी चाहिए। सब साधना का अर्थ आत्म-संशोधन की प्रक्रिया। आत्म संशोधन की प्रक्रिया मैंने २४ वर्ष तक की। जौ की रोटी खायी। जबान पर संयम रखा, कर्मेन्द्रियों पर संयम रखा और बराबर यह प्रयास किया कि प्रत्येक नारी को माँ, बहिन और बेटी के तरीके से मानूँ। ये दो चीजें ऐसी हैं जो मनुष्य के भीतर अनायास ही शक्ति का ह्रास करती हैं। आदमी अपनी जीभ के ऊपर काबू कर ले और अपनी कर्मेन्द्रियों पर काबू प्राप्त कर ले तो उसको सिद्ध पुरुष बनने में कोई कठिनाई नहीं आती। आत्मबल सहज ही विकसित होता चला जाता है। इसी के लिए उन्होंने मुझे तप, अनुष्ठान करने के लिए कहा। गायत्री मन्त्र का जप करने के लिए कहा, क्योंकि मेरे सामने एक लक्ष्य निर्धारित किया गया था और उस लक्ष्य को मुझे बार-बार समझना था और विचार करना था 'वह था गायत्री मन्त्र।' गायत्री मन्त्र लक्ष्य भी है, पूजा का विधान भी, कर्मकाण्ड भी है। लक्ष्य क्या है ? यह है कि हम अपनी स्वयं की विचारणा को, बुद्धि को और विचारशीलता को ऐसा विकसित करें कि वह जीवन के लक्ष्य की ओर, भगवान्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

की ओर, लोकमंगल की ओर निरन्तर बनी रहे। यही तो गायत्री मन्त्र की शिक्षा है—**"धियो यो नः प्रचोदयात्"** बार-बार समझूँ, सोचूँ और हृदयंगम करूँ कि रोम-रोम में इस सन्देश को और संकेत को बसा लूँ। मेरी बुद्धि का उपयोग, मेरी विवेकशीलता का उपयोग, मेरी जीवात्मा का उपयोग केवल उन कामों के लिए हो, जिनका योग भगवान् का संकेत है। यही शिक्षण गायत्री मन्त्र का था।

गायत्री का मैंने जप तो किया, लेकिन जप के साथ-साथ में यह भी ध्यान रखा कि वह विचारणाएँ, शिक्षाएँ और प्रेरणाएँ मेरे अन्दर हृदयंगम होती रहें। प्रत्येक जप के साथ, प्रत्येक माला के साथ, प्रत्यैक उपकरण के साथ जप कर लिया करूँ। कर्मकाण्ड मुझे बताया गया उसमें दीपक के रूप में मैंने एक अखण्ड दीपक की स्थापना की। अखण्ड दीपक जलाया बेशक, लेकिन साथ-साथ में भावनाओं को भी तद्नुरूप बनाया। जिस तरीके से अखण्ड दीपक अखण्ड जलता रहता है, बुझता नहीं, उसी तरीके से हमारा जीवन-प्रवाह ज्ञानमय हो, बुझने न पाये, टूटने न पाये, शृंखला बिगड़ने न पाये। बीच-बीच में हमको अधःपतन की ओर गिरने का मौका न आये, ठोकरें नहीं लगें, चोट नहीं लगे और इस प्रकार निर्धारित नियत और सुनिश्चित निशान की ओर हम बढ़ते हुए चले जाएँ और दीपक की तरीके से प्रकाशवान होकर प्रकाश पैदा करें, अपने भीतर प्रकाश पैदा करें और अपने बाहर भी। स्नेह से भरे हुए रहें, सद्भावनाओं से भरे हुए रहें, यही तो सब दीपक के सन्देश थे। अखण्ड दीपक जलाया गया और वह इम्तहान का दीपक मेरे भीतर और बाहर भी जलता रहा। हर जगह उसकी प्रेरणाएँ आगे विकसित होती हुई चली गयीं। २४ वर्ष इसी प्रकार से निकल गये। इसके पश्चात् फिर वही मार्गदर्शक, वही मेरे गुरुदेव सामने आये। उन्होंने कहा, तुम्हारे अनुष्ठान पूरे हुए हैं ? मैंने कहा—इस मायने में पूरे हुए कि मैंने जो नियम लिया था, जो व्रत लिया था, उनको बगैर डगमगाये, बिना इधर-उधर पैर हटाये, बिना अवरोध लगाये, बिना दौड़-भाग के शान्त चित्त से एक ही स्वर से करता रहा। अपनी निष्ठा में रत्ती भर भी कभी भी कमी नहीं आने दी। परिस्थितियाँ खराब आयीं तो क्या, अच्छी आयीं तो क्या मुसीबतें आयीं तो भी कभी मैंने यह ख्याल नहीं किया कि मेरे अनुष्ठान के कारण से ही यह होता है, भगवान् मेरी इतनी भी सहायता नहीं करते, फिर मैं क्यों अनुष्ठान करूँ ? कभी भी संकट में भी श्रद्धा में कमी नहीं आयी, इस मायने में सफल हो गया। सुख आये, सुविधाएँ आयीं, लेकिन कभी उत्साह नहीं आया। दुःख और कठिनाई आयीं तो भी मैं निराश नहीं हुआ, न मैंने भगवान् को दोष दिया, न मैंने भगवान् से कुछ इच्छा की। ये बातें अगर अनुष्ठान की सफलता के लिए काफी हों, तो सफल हो गया। इस मायने में अगर अनुष्ठान की सफलता साबित की जाय उससे कोई लाभ मिला कि नहीं, कोई चमत्कार दिखायी पड़ा, कोई रोशनी मिली, कोई चमत्कार, कोई लाभ, कोई महात्मा, कोई सिद्धि ऐसा कुछ मिला तो कहूँगा कि मेरा अनुष्ठान सफल नहीं हुआ। ऐसी कोई अनुभूति नहीं हुई इस तरह कि जैसा आम लोगों का ख्याल है कि जप कर लेने के बाद, अनुष्ठान कर लेने के बाद, हवन कर लेने के बाद ऐसा दिखायी पड़ता है, ये बात आती हैं, ऐसा मुझे कुछ नहीं हुआ। इस मायने में मैं असफल रहा।

गुरुदेव मुझे मिले थे २४ वर्ष बाद प्रकाश के रूप में, मेरे घर और उन्होंने यह कहा—ठीक है, तुम्हारा अनुष्ठान सही है। किसी भी तपस्वी का योगाभ्यास असफल नहीं होना चाहिए, मैं यही परखने के लिए आया था। बस, मुझे यह मालूम हुआ कि वास्तव में अब तुम्हारा काम पूरा हुआ। अब तुमको यह देखना चाहिए कि यह जो तप पूरा हुआ है, इससे क्या कोई प्रभाव उत्पन्न होता है ? इसका शायद विश्वास तुम्हें भी न हो, इसलिए इसमें विश्वास कर लेना चाहिए। इसके लिए पुनरावृत्ति के रूप में सहस्रकुण्डीय यज्ञ का आयोजन करना चाहिए। मैंने कहा मुझे तो विश्वास है अपने आपके ऊपर, मेरी सत्ता के ऊपर जो लक्ष्य मेरे सामने रखा गया उसके ऊपर। मुझे अविश्वास की जरूरत क्या है ? उन्होंने कहा, नहीं, ऐसा है, यह जो शक्ति है, आत्मशक्ति, क्या भौतिक जगत में भी कुछ काम कर सकती है ? क्या इसके द्वारा संसार में भी कुछ प्रभाव डाला जा सकता है ? यह शायद तुम्हें यकीन न हो, इसके लिए हम एक प्रयोग कराते हैं और यह प्रयोग तुम्हारे लिए विशेष उपयोगी होगा, समाज के लिए भी। क्या प्रयोग ? सहस्रकुण्डीय यज्ञ। सहस्रकुण्डीय यज्ञ वास्तव में एक अचम्भे की चीज है। मैंने स्वयं इस बात को महसूस किया है और लोगों ने भी इसको देखा है। वास्तव में अनोखी चीज ही कहना चाहिए इसको। कहते थे लोग ५००० वर्षों में पाण्डवों का वह यज्ञ जो कि राजसूय के नाम से विख्यात था और जिसे कृष्ण भगवान् ने चलाया था, उसके बाद में दूसरा ही नम्बर इसको कहा जा सकता है। कई विशेषताएँ थीं उसकी। आयोजन तो आये दिन होते रहते हैं। मेरे आयोजन और भी बड़े होते हैं। कुम्भ का मेला और भी बड़ा होता है, लेकिन उसकी विशेषताएँ और ही थीं। एक व्यक्ति द्वारा इतने व्यक्तियों को आमन्त्रित किया जाना, उसके बुलाने पर इतने व्यक्तियों का इकट्ठा हो जाना, उनके खाने-पीने का बिना मूल्य लिये हुए प्रबन्ध करना, उसकी व्यवस्था के लिए कोई पहले से घी या कोई गेहूँ इकट्ठा न किया जाना, धनराशि न लिया जाना, इतने बड़े आयोजन में कोई घटना का न होना, कोई चोरी इत्यादि का न होना, इतने आदमियों को इस तरीके से प्रभावित होते जाना, अनुशासित होते जाना, ऐसी असंख्य व्यवस्थाएँ हैं, जो आज तक किसी आयोजन में नहीं हुईं। उन्होंने—गुरुदेव ने मुझसे कहा कि आयोजन की सफलता और विशेषताएँ तुम्हें इस रूप में लेनी चाहिए कि ये सब तुम्हारे तप और पुण्य का परिणाम है। तप और पुण्य चाहे तुम्हारे पास हो, चाहे किसी के पास भी हों, यह परिणाम निकलते हैं कि इस बात के जिसे तुम विश्वासपूर्वक कह सकते हो स्वयं से भी और लोगों से भी। इसीलिए इस आयोजन का विशेष रूप से उल्लेख किया गया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसा ही हुआ, बहुत सफल आयोजन हुआ। खुद बैठा रहा, कहीं गया भी नहीं, केवल घर बैठे निमन्त्रण भेजे। जिनको जानता-पहचानता नहीं था, लाखों आदमी इकट्ठे हो गये, ऐसे व्यक्ति जो अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कहे जा सकते हैं। सामान्य भीड़-भाड़ जो मेरी सभाओं में आती है उस स्तर के नहीं, बल्कि गणमान्य व्यक्ति उत्सुकता में आये और यज्ञ सम्पन्न हुआ सहस्रों लोगों ने उसको देखा, कितना पैसा खर्च हुआ, कितनी व्यवस्था बनी, लोग हैरत में रह गये कि आखिर कैसे हो गया ? किसी ने जादू समझा, किसी ने तमाशा समझा, किसी ने राजा-महाराजा का आयोजन समझा, किसी ने चन्दा समझा, किसी ने क्या समझा, किसी ने क्या नहीं ? कह नहीं सकता, लेकिन वास्तविकता यह थी कि वह मेरे गुरुदेव का चमत्कार कहिये अथवा उनकी प्रसन्नता कहिये, बस, वही हुआ और वह अपने समय पर बड़ा सफल हो गया और मेरे विश्वास की वृद्धि हुई। मुझे यकीन हो गया कि संसार में भी इस तत्व शक्ति के द्वारा भुगतान किया जा सकता है, इसे गायत्री की शक्ति भी कह सकते हैं ? उपासना की शक्ति भी कह सकते हैं, साधना की शक्ति भी कह सकते हैं, बस वहाँ से इशारा चला मेरा, उसी क्रम से मेरे लिये वह भी उतना ही महत्त्वपूर्ण था कार्य, कौन-सा, जो कि २४ वर्षों की उपासना प्रारम्भ की थी, मेरे लिए वह श्रद्धा का विषय था। वह श्रद्धा ज्यों की त्यों बनी रही, बल्कि ज्यादा ही बढ़ी। बस सहस्रकुण्डीय यज्ञ हो गया।

सहस्रकुण्डीय यज्ञ से लेकर के मेरे गुरुदेव ने मुझे फिर २० साल के लिए कुछ काम करने के लिए कहा। दस साल का उन्होंने एक खण्ड बताया। १० साल में उन्होंने मुझे संगठन और प्रचार का कार्य सौंपा। गायत्री मन्त्र और यज्ञ ये भारतीय संस्कृति के मूल हैं और इसी संस्कृति के मूल को देश और देशान्तरों में स्वीकृत करने के लिए मुझे बताया गया। वही किया गया। गायत्री परिवार बनाया गया। उसके लाखों की संख्या में सदस्य बने। हजारों की संख्या में शाखाएँ स्थापित हुईं। जगह-जगह हजारों यज्ञ हुए। ये सारे का सारा प्रचार जो फैलाया गया है, गायत्री का साहित्य लिखा गया है, गायत्री मन्त्र और यज्ञ को लेकर १० साल मैंने लगाये जो कि २४ वर्ष के बाद आरम्भ हुए थे और इसमें यदि १५ वर्ष पहले के भी जोड़ लिये जाएँ तो ५० वर्ष पूरे हो जाते हैं। इस तरीके से मैं क्रियाकलाप में लगा रहा। क्रियाकलाप के बाद में उन्होंने एक वर्ष के लिए मुझे अपने पास बुलाया हिमालय। एक वर्ष के लिए मैं हिमालय चला गया। कहाँ रहा, इसका थोड़ा-सा विवरण 'सुनसान के सहचर' नाम से आंशिक रूप में अखण्ड-ज्योति में प्रकाशित हुआ था। वह बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना है। लोग कहते हैं जहाँ आप गये थे, कहाँ गये थे ? क्या करते रहे थे ? हिमालय पर तो बहुत-से लोग रहते हैं। हरिद्वार से हिमालय शुरू हो जाता है, कैलाश तक चला जाता है और कहाँ तक चला जाता है। पाकिस्तान में फैला हुआ है और बर्मा तक चला गया है। हिमालय में न जाने कितने हजार आदमी रहते हैं ? हिमालय में कोई अच्छी भी जगह है और बेकार भी जगह है। हिमालय में जो जन रहते हैं वहाँ झाड़ियाँ हैं, वहाँ बन्दर रहते हैं और बेकार आदमी भी रहते हैं, चोर-डाकू भी रहते हैं, सिद्ध पुरुष भी रहते हैं। हिमालय अपने आप में बुरा है न भला है, लेकिन मुझे जहाँ जिस स्थान पर रहने के लिए भेजा गया था, वह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। उसको हिमालय का हृदय या आध्यात्मिक ध्रुव कह सकते हैं। उस स्थान पर आज से १०-११ वर्ष पूर्व मैं एक साल के लिए रहा। मैं गंगोत्री भी रहा, उत्तरकाशी भी रहा। इन दोनों स्थानों पर रहा, लेकिन मूल क्या है, जो शक्ति का स्रोत था, मुझे वहाँ मिला जहाँ मेरे गुरुदेव रहते हैं। उसको हिमालय का तीर्थ कहा जा सकता है। गायत्री तप का ध्रुव कहा जा सकता है।

पृथ्वी के उत्तरी-ध्रुव व दक्षिणी-ध्रुव प्रख्यात हैं। वहाँ की परिस्थितियाँ बड़े अचम्भे की हैं। लोगों ने पुस्तकें भी पढ़ी हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि किसी जादू की बात कही जा रही है। उत्तरी-ध्रुव और दक्षिणी-ध्रुव के बारे में। ये ध्रुव ऐसे हैं कि चारों ओर पृथ्वी पर जो कवच चढ़ा हुआ है, उस कवच में से ब्रह्माण्ड की अनेक शक्तियाँ घुसने नहीं पातीं। उत्तरी ध्रुव में से ही होकर आती हैं और सारी पृथ्वी पर फैल जाती हैं। यह शक्तियाँ आवश्यकतानुसार पृथ्वी पर रह जाती हैं और बाकी दक्षिण ध्रुव से होकर के फिर ब्रह्माण्ड में फैल जाती हैं। ऐसा कवच पृथ्वी पर न होता तो जो ग्रहों से और नक्षत्रों से किरणें आती हैं सारे जगत् को जला डालतीं और हमारी धरती भी उसी तरीके से वीरान हो जाती जिस तरह से बृहस्पति, मंगल, बुध इत्यादि दूसरे ग्रह सुनसान और वीरान पड़े हुए हैं। यह भी हो सकता है कि इसके ऊपर एक कवच चढ़ा हुआ है और उसके भीतर से शक्ति के सूक्ष्म मात्रा में ही आदान-प्रदान होते हैं। हिमालय का जो केन्द्र ध्रुव है, जहाँ मेरे गुरुदेव रहते हैं, यहाँ का फैलाव बद्रीनाथ से हिमालय के दूसरी छोर तक है। इसके बीच का जो भाग है, वही हिमालय का केन्द्र है और इसकी लम्बाई-चौड़ाई, मैं समझता हूँ तीन-चार सौ मील चौड़ी और सौ-पचास मील लम्बी होनी चाहिए। यही शंख के नाम से पहले प्रख्यात था। यही पुराणों में भी मिलता है कि यहाँ शिवलिंग पर गंगा का अवतरण हुआ था। शिवलिंग पर्वत वहीं है, सुमेरु पर्वत वहीं है। सुमेरु यज्ञ पाण्डवों ने वहीं किया था, सुमेरु लिंगम् वहीं है, स्वर्ग गंगा वहीं है। कैलाश के बारे में, मान-सरोवर के बारे में भी मैंने यही प्रतिपादन किया था कि इसके समीप में एक छोटी-सी झील है, जिसका नाम मानसरोवर होना चाहिए, क्योंकि मानसरोवर और कैलाश के बारे में जो पौराणिक वर्णन मिलता है वह उस तिब्बत वाले कैलाश से जरा भी सम्मति नहीं खाता। तिब्बत वाला कैलाश और मानसरोवर किस कारण से मान लिया गया, मैं कह नहीं सकता, लेकिन अगर सही रूप में ढूँढ़ा जाए तो ऐसे असंख्य प्रमाण मैंने अखण्ड-ज्योति में छापे हैं, जिनसे यह सिद्ध किया जा सकता है कि असली कैलाश और मानसरोवर वही हैं, जहाँ मेरे गुरुदेव निवास करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मैं उस स्थान पर रहा, वहाँ की कितनी विशेषताओं को मैंने देखा, उसका वर्णन करना सम्भव नहीं है। वहाँ कितने सिद्धपुरुष रहते हैं और वहाँ के वातावरण में कितनी विशेषता और महत्ता है, उसके वर्णन पर सम्भव है लोग यकीन न करें। जब तक देखा नहीं जाता, तब तक गप्प भी माना जा सकता है, इसलिए उस पर विचार करना मेरे लिए मुनासिब नहीं है। उन स्थानों पर चार दिन मैं अपने गुरुदेव के पास रहा। उनको जो कुछ भी मुझसे कहना था उन्होंने कहा, जो कुछ संकेत करने थे, जो भावी कार्यक्रम के रूप में हिदायत करनी थी, वह की और जो मुझे शक्ति का एक अंश देना था वह चार दिनों में उन्होंने दिया। चार दिन की शक्ति को लेकर मैं चला आया। साल भर तक मैंने उसको पकाया, हजम किया। खाना खाने में तो थोड़ी ही देर लगती है, भोजन तो आदमी आधा घण्टे में ही कर लेता है, बीस मिनट में भी कर लेता है, लेकिन हजम करने में बारह घण्टे लग जाते हैं। गुरुदेव ने जो शक्ति मुझे चार दिन में दी थी, उसको हजम करने में, पचाने में और जुगाली करने में साल भर लग गया। इस तरीके से मैं एक साल गंगोत्री और हिमालय तथा उत्तरकाशी में रहा। वहाँ जो उन्होंने तप और अनुष्ठान बताये थे, वह मैं करता रहा। जहाँ-जहाँ रहा, वह ऐसे स्थान थे जिनको दिव्य कह सकते हैं। भगीरथ ने जिस शिला पर बैठकर तप किया था, वहाँ मुझे भी तप और अनुष्ठान करने का मौका मिल गया। जहाँ भगवान् परशुराम जी ने तप करके कुल्हाड़ा शंकर जी से प्राप्त किया था, उसी स्थान पर उत्तरकाशी में रहने का मुझे भी मौका मिला। इस तरीके से एक साल व्यतीत करने के बाद मैं फिर आ गया और दस साल के कार्यक्रम जो मुझे सौंपे गये थे, वह मैंने सँभाल लिये।

दस साल में युग-निर्माण का दूसरा अध्याय सौंपा गया। युग-निर्माण योजना का कार्यालय तथा गायत्री तपोभूमि का निर्माण मिलाकर जो किया वह मेरे पहले दस साल के पूर्व की कमाई थी। मेरा दूसरा कदम-दूसरा काम था युग-निर्माण योजना नाम से एक केन्द्र की स्थापना, जहाँ से फिर सारी गतिविधियाँ चालित की गयीं। बौद्धिक क्रान्ति, नैतिक क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति को क्रियान्वित करने का प्रबन्ध किया गया। विचारात्मक, रचनात्मक और संगठनात्मक कार्यक्रमों का ढाँचा खड़ा किया गया। व्यक्ति-निर्माण, परिवार-निर्माण और समाज-निर्माण का नारा लगाया गया। स्वच्छ मन, स्वस्थ शरीर और सभ्य समाज का निर्माण करने की रूपरेखा बनायी गयी। इन सारे के सारे क्रियाकलापों का दस वर्षों में विस्तार हुआ। मैं समझता हूँ कि इन दोनों कार्यक्रमों के बारे में कितना विस्तार हुआ है ? इसका वर्णन करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है। वह लोगों को दूसरी जगह से पढ़ना चाहिए और दूसरे तरीकों से मालूम करना चाहिए। इसको संक्षेप में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि वह कार्य हुआ व असाधारण हुआ। साहित्य लिखा गया वैज्ञानिक व आध्यात्मिक। समन्वय की रूपरेखा ठीक समय पर रखी गयी और उसका पत्रिकाओं के माध्यम से विस्तार हुआ। अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ और उसका प्रकाशन हुआ, यह कार्य दस वर्षों के भीतर सम्भव हुआ। एक लाख व्यक्तियों की सृजन सेना बनकर खड़ी हो गयी और वह अपने-अपने क्रियाकलाप में लग गयी। सक्रिय कार्यकर्त्ता, कर्मठ कार्यकर्त्ता और पुरवासी मानकर अपने-अपने क्षेत्रों में अपने दिल से कमर कसकर खड़े हो गये और वह कार्य जो असम्भव दिखाई पड़ता था सम्भव दिखायी पड़ने लगा।

'मनुष्य में देवत्व का उदय और पृथ्वी पर स्वर्ग का अवतरण' किसी जमाने में ख्वाब समझा जाता था और यह माना जाता था कि ऐसे क्रियाकलाप मनुष्यों के द्वारा सम्भव नहीं हैं। कभी भगवान् चाहेगा तभी ऐसी बड़ी सफलता मिल सकेगी। यह भला कैसे मिल सकती है ? किसमें मिल सकती है, क्यों मिलेगी ? लेकिन ऐसा मालूम होता है कि वह सारी कल्पनाएँ जो तिलस्मी थीं अब साकार होने जा रही हैं और साथ ही बहुत कुछ सम्भावना है, क्योंकि सामने ही आ रही है। लोग यकीन कर रहे हैं कि हाँ ऐसा होना भी सम्भव है। पर यह आन्दोलन किसी जमाने में छोटे-से आन्दोलन के रूप में था और यह विश्व-व्यापी बन सकता है। इस तरीके से १० वर्ष मुझे वहाँ रहना पड़ा।

जब बैटरी की शक्ति खत्म हो जाती है तो उसे चार्ज करने के लिए भेजा जाता है और उसको डायनेमो से लगा देते हैं, फिर उसका दूसरी बैटरी से सम्बन्ध कर देते हैं। जब चार्ज हो जाती है तो फिर वह काम करती है, फिर मुझे एक साल के लिए स्वयं बुलाया गया था। मैं गुरुदेव के पास गया, चार दिन उनके पास रहा, जैसे दस साल पहले रहा था। चार दिन उनके पास रहने के बाद में फिर मुझे कहीं दूसरी जगह भेज दिया गया और फिर मैं वहीं रहा और तप करता रहा। मैं कहाँ रहा ? क्या करता रहा ? यह बताने का विषय नहीं है। पहले बताने की बात थी सो मैंने लोगों को बता दिया था कि मैं गंगोत्री रहा था और उत्तरकाशी रहा था। अब मेरे मुँह पर पर्दा डाल दिया गया है कि मैं वह न बताऊँ कि मैं कहाँ रहा और मैंने क्या किया, इतनी बात संक्षेप में है कि मैं हिमालय के ही गर्भ में रहा और वहाँ जा करके मैंने अपनी आत्मसाधना की क्रिया-पद्धति को ही काम में लाया। इस तरीके से फिर मुझे जाना पड़ा, फिर माताजी के बीमार होने पर पन्द्रह दिन के लिए मैं उनके पास आया। फिर तीन दिन के लिए चला गया। इस तरीके से एक वर्ष पूरा करने के बाद फिर मुझे लोक-शिक्षण का कार्य सौंप दिया गया, जबकि एक साल पहले तप करने का मुझे मौका दिया गया था। इसके पश्चात् फिर मुझे पाँच वर्षीय कार्यक्रम में लगा दिया गया है। अबकी मेरी यह कार्य-अवधि केवल पाँच वर्ष की है। पहली दस साल की रही, इससे पहले दस साल की थी, इस तरीके से चौबीस साल की थी। इस तरीके से ४४ साल की जो योजना थी, बढ़ गयी। ये पाँच वर्ष की है। भगवान् जाने उसका क्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काम है ? अबकी बार दस वर्ष का कार्यक्रम मुझे दिया गया है। कह नहीं सकता जीवन का समय कितना रह गया हो ? कह नहीं सकता कोई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम और हो। यह नहीं पूछा कि मुझे आगे क्या करना पड़ेगा ? मैं मानता हूँ कि जो काम सौंप दिया गया है वह भी क्या कम है। उसमें क्या कमी हो सकती है ? उसमें क्या करने के लिए क्या कम गुंजाइश नहीं है जो कि मैं आगे की बात सोचूँ। आगे वाली बात सोचना उनका काम है जिनको मैंने अपने आपको सौंपा हुआ है, जिनको अपने आप बेचा हुआ है। आगे मुझे क्या करना चाहिए, कैसे करना चाहिए, यह मस्तिष्क का भार मैंने अपने मस्तिष्क पर नहीं रखा हुआ है उन्हीं के ऊपर डाल दिया है। अब मुझे पाँच वर्ष का काम है। इन पाँच वर्षों में मुझे क्या करना होगा, यह कार्य मेरे लिये निर्धारित हो गया है और यह भी निर्धारित हो गया है कि थोड़े समय में मुझे बार-बार हिमालय जाना पड़ेगा। जिस तरीके से आदमी रात में सो जाते हैं और जगने पर फ्रेश हो जाते हैं, पहले जैसे हो जाते हैं, थकान दूर हो जाती है, इसी तरीके से मैं आध्यात्मिक भोजन करने के लिए और कुछ शक्ति लेने के लिए और अपनी थकान मिटाने के लिए वहाँ चला जाया करूँगा और इस बीच में हर साल कुछ शक्ति लेकर आया करूँगा। जो कि पाँच साल के लिए निर्धारित कार्यक्रम के लिए मुझे सौंपी गयी है। इस तरीके से यह क्रम बराबर जारी रहेगा।

साँप से नेवले की लड़ाई होती है। नेवला बार-बार जाता है और कुछ जड़ी-बूटी खा करके आता है, फिर साँप से लड़ाई लड़ता है, फिर साँप काट देता है और जहर उसके शरीर पर चढ़ जाता है। उस जहर को दूर करने के लिए फिर वह कहीं जाता है और जड़ी-बूटी खा के आता है, फिर साँप से लड़ाई लड़ता है। साँप और नेवले की लड़ाई जिन लोगों ने देखी है, उन्होंने यह घटना भी देखी होगी कि नेवला भाग करके जाता है और कुछ जड़ी-बूटी खाकर के आता है और साँप से टक्कर खाता है। जड़ी-बूटी खाने वाले नेवले के तरीके से मुझे भी बार-बार हिमालय जाना पड़ेगा और बार-बार वहाँ की शक्ति लेकर के आना पड़ेगा, क्योंकि अबकी बार जो साँप है बहुत बड़ा साँप है। पहली बार तो सीधे-सादे काम थे। संगठन करना सीधा-सादा काम था, किसी से लड़ाई लड़नी नहीं थी मुझे; संगठन करने से लेकर साहित्य लिखने व अन्य कार्यों तक ये सभी सुगम काम थे। कोई ऐसे मुश्किल काम नहीं थे, जिसमें आदमी को कोई जोखिम हो, लेकिन अब की बार तो कार्य बहुत व्यवस्थित, महत्त्वपूर्ण और अत्यन्त भयंकर और बहुत अधिक शक्ति खर्च करने वाले हैं।

इस तरह जिस तरीके से मैं वहाँ से शक्ति लेकर आया था, ठीक उसी तरीके से मैं भी एक लाख मनुष्यों को इस बीच शक्ति का सौवाँ अंश देने वाला हूँ। मैंने २४ वर्ष में जो तपश्चर्या की थी और मुझे जो अंश मिला वह बहुत बड़ा मिला, कारण मैंने अपने को पाक-साफ रखा जिन्होंने अपना निखार नहीं किया है, अपना परिष्कार नहीं किया है, उनको इतनी आशा नहीं करनी चाहिए कि उसका अंश मुझको मिल जाएगा, क्योंकि जिसके पास पात्र जितना होगा उतना ही तो उसे मिलेगा, चाहे बक्सा कितना ही जबरदस्त क्यों न हो बादल की घटाएँ कितनी ही बड़ी क्यों न हों, पर पात्र से अधिक कैसे मिलेगा ? इसलिए मैंने जिन लोगों को बुलाया है और जिन्होंने पात्रता का जितना विकास कर लिया है, उतना उनको जरूर मिल जाएगा। लेकिन जिनकी पात्रता नहीं होगी उनको यह आशा नहीं करनी चाहिए। यद्यपि बुलाया है तो कुछ न कुछ लेकर के ही जाएँगे। लेने के लिए जरूरी है कि शक्ति धारण करने के लिए गुंजाइश हो, धारण करने के लिए गुंजाइश न हो तब कैसे हो सकता है ? प्राण-प्रत्यावर्तन शिविरों में सबको तो बुलाया नहीं जाएगा। लेकिन जिन लोगों को बुलाया गया है, उनको उनकी पात्रता के अनुरूप शक्ति का एक अंश जरूर मिलेगा और यहाँ से जाने के पश्चात् वह ऐसा कार्य कर सकेंगे, जिससे उनको देखकर मुझे भी सन्तोष हो सके और समाज को भी सन्तोष हो सके, कि जिनको प्रत्यावर्तन के रूप में कुछ अनुदान दिया गया था उन्होंने लोकमंगल के लिए और भगवान् की इच्छा पूरी करने के लिए जो प्रवाह चल रहा है, उसके लिए कुछ महत्त्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न कर सकें। इस तरीके से प्रत्येक प्रत्यावर्तन शिविर में एक बार में लगभग २० व्यक्ति बुलाये जाएँगे। कारण यह है कि जितनी शक्ति संग्रह होगी, उससे अधिक लोगों को बुला लेने पर उनको कुछ दिया नहीं जा सकेगा। छोटा-सा मीटर लगा हुआ हो और बत्तियाँ बहुत जला दी जाएँगी तो मीटर खराब हो जाएगा और फ्यूज चला जाएगा। इस तरीके से सीमित व्यक्ति ही बुलाये जाएँगे। लोगों को ज्यादा अपवाद नहीं करना चाहिए। सबको एक साथ बुला सकूँ इच्छा तो है, लेकिन सम्भव नहीं है, व्यावहारिक भी नहीं है। इसलिए इन्तजार तो करना ही पड़ेगा प्रत्यावर्तन के लिए।

एक काम मुझे यह सौंपा गया है कि लोगों को शक्ति का एक अंश दूँ और उनको आगे बढ़ाऊँ, ऊँचा उठाऊँ। केवल विज्ञान की शिक्षा से जो बात पूरी नहीं हो सकती, उपनिषद् संग्रह से जो बात पूरी नहीं हो सकती, वह शक्ति का अंशदान देने से पूरी की जा सकती है। यही प्रत्यावर्तन है जो मुझे अगले पाँच साल तक थोड़े-थोड़े समय तक यहीं शान्तिकुंज में रहकर के पूरे करने पड़ेंगे। एक कार्य मैंने आपको निवेदन किया। दूसरा कार्यक्रम मेरा यह है कि मुझे हिमालय जाते रहना पड़ेगा अन्यथा इस बार जो शक्ति खर्च होने वाली है, उसकी पूर्ति अपने आप नहीं हो पायेगी, बार-बार उसको लेने ही जाना पड़ेगा मुझे। इसलिए मेरा हिमालय जाना-आना लगा ही रहेगा। तीसरा एक और कार्य यह है कि अब मुझे अपना कार्यक्षेत्र बढ़ा देना पड़ेगा। अब तक केवल हिन्दू समाज अपना मुख्य कार्यक्रम रहा। भारतवर्ष तक की गतिविधियाँ रही हैं। अब तक मैं केवल भारतवर्ष में रहा हूँ। हिन्दू समाज की सभाओं और गोष्ठियों को ही सम्बोधित किया है। दूसरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ओर के लोगों में मैं कहाँ गया ? दूसरे विश्व में कहाँ गया ? लेकिन यह वर्ग जो मुझे सौंपा गया था, जो क्षेत्र मुझे सौंपा गया था वे सीमित क्षेत्र हैं, क्योंकि शक्ति मेरी सीमित थी, इसलिए कार्यक्षेत्र भी सीमित ही सौंपा गया था। अब तो शक्ति को भी बढ़ा दिया गया है अतः कार्यक्षेत्र भी बढ़ गया है। अब मेरा कार्यक्षेत्र भारतवर्ष तक सीमित न रहकर समस्त संसार है। अब हिन्दू समाज तक सीमित न रहकर समस्त संसार के विभिन्न धर्म और विभिन्न सम्प्रदाय तक कार्यक्षेत्र बढ़ा दिया गया है। अब धर्ममंच के माध्यम से आगे बढ़ करके अन्यान्य क्षेत्रों में भी वहँ कार्य करूँगा, जिससे कि युग-निर्माण करने की पृष्ठभूमि तैयार की जा सके। साहित्य के कितने लोग हैं ? संसार में साहित्यकार की बड़ी शक्ति होती है। प्रेस भी उसमें शामिल है, पुस्तक लेखक भी शामिल है, दार्शनिक भी उसमें शामिल हैं, कवि भी उसमें शामिल हैं। इस तरीके से जिनके हाथ में जनमानस को प्रभावित करने की प्रचण्ड शक्ति है, मुझे उनके पास भी जाना पड़ेगा और जाकर के केवल परामर्श ही नहीं देना पड़ेगा, बल्कि उनको मजबूर भी करना पड़ेगा।

अंगद लंका गया था और उसने रावण की सभा में पाँव जमाया था और यह प्रमाणित किया था कि मैं सरल स्वभाव का तो हूँ, लेकिन सामान्य शक्ति का नहीं हूँ, असामान्य शक्ति का हूँ और यह बात हर एक राक्षस को माननी पड़ी थी कि जिससे उन्हें लड़ाई लड़नी पड़ेगी, वह कोई मामूली आदमी नहीं है, कोई बड़ा आदमी है। मैं भी अपने गुरुदेव का अंगद और सन्देशवाहक के रूप में सारे विश्व में जाऊँगा और यह कहूँगा कि भगवान् की प्रेरणा और इच्छा यह है कि आप लोगों को अपनी गतिविधियाँ बदल देनी चाहिए। पिछले दिनों जो भी रही हों, सम्पत्ति कमाने की रही हों, अपने स्वार्थ और विशेष लाभ के लिए रही हों। पहले जो भी रही हों, वह रही हों, लेकिन आगे जाकर के उन गतिविधियों में फर्क करना ही चाहिए और अपना मुँह उस ओर मोड़ना ही चाहिए जो कि युग-निर्माण के लिए भगवान् की इच्छा के अनुरूप हों। साहित्यकारों की बात मैंने कही, कलाकारों की बात मैं कहना चाहता हूँ। आगे मैं कलाकारों के पास जाऊँगा, क्योंकि कला मनुष्य के हृदय को प्रभावित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती रही है और अभी भी कर रही है। सिनेमा कितना काम कर रहा है ? सिनेमा संसार के चौथाई जनता को प्रभावित कर रहा है। एक चौथाई जनता को इच्छानुसार ढाल रहा है बुरा या भला। अगर ये बुरी इच्छा में ढालने वाली रीति बदल दी जाय और अच्छी दिशा में ढालने वाला प्रयास किया जाय तो आप समझ सकते हैं, जनता के मस्तिष्क को बदलने में, ढालने में कितना बड़ा काम हो सकता है ? गायन को बदल दिया जाए, संगीत को बदल दिया जाए, नारी के चित्र को बदल दिया जाए, मूर्ति को बदल दिया जाए, कला केन्द्रों में जो कुछ भी चीजें आती हैं अगर कलाकार और कला के संचालक उसको बदल दें तो युग-निर्माण का वह कार्य पूरा हो सकता है, जिसको हमने पिछलों दिनों धर्ममंच के माध्यम से भारतवर्ष में सम्पन्न किया है। कार्य वह लोग भी कर सकते हैं, साहित्यकार भी कर सकते हैं, कलाकार भी कर सकते हैं।

एक और बात रह जाती है धर्म-गुरुओं के सम्बन्ध में। धर्म-गुरुओं की शक्ति कम है क्या ? धर्म-गुरुओं की शक्ति बड़ी है। अभी भी आपने देखा न, थोड़े दिन पहले सर आगा खाँ को तोला गया था। कितने करोड़ रुपये का सोना था। अभी भी हो रहा है, कल-परसों ही दिल्ली का समाचार है कि एक स्वामी जी को छः लाख रुपये के नोटों से तोला गया है। उसके पहले किसी को सोने से तोला गया, किसी को चाँदी से तोला गया। तोलने की प्रथा सन्त-महात्माओं में भी चली है। नेताओं का तो कहना ही क्या ? किसी समय केवल उनकी सम्पत्ति देखी जाए कि उनका प्रभाव कितना है तो प्रत्येक सन्त-महात्मा का, शंकराचार्य का, इसका-उसका प्रभाव भी हजारों-लाखों श्रोताओं तक है, प्रत्येक सन्त-महात्मा के हजार-दो हजार अनुयायी तो होते ही हैं। कोई-कोई ऐसे भी धर्मगुरु हैं जिनके लाखों-करोड़ों अनुयायी हैं। ईसाइयों के पोप बिशप हैं, जिनके करोड़ों अनुयायी होते हैं। इसी तरीके से भिन्न विषयों के धर्मगुरुओं का बड़ा विस्तार है। धर्म-गुरुओं से मुझे मिलने जाना ही चाहिए और जाऊँगा ही और कहूँगा कि आपको अपनी गतिविधियाँ बदल देनी चाहिए। केवल भगवान् के नाम लेने वाली बात सिखाने तक से या पूजा के मन्त्र सिखाने तक से अपने कर्त्तव्य का अन्त नहीं कर लेना चाहिए, बल्कि जिन लोगों पर आपका प्रभाव है उन लोगों को, उनका बौद्धिक निर्माण करने के लिए और समाज के प्रति अपना योगदान देने की बात भी कहनी चाहिए। अध्यात्म का यही तो वास्तविक उद्देश्य है। धर्माचार्यों का यही तो वास्तविक कर्त्तव्य है। ऐसा कर्त्तव्य का उद्‌बोधन करने के लिए मुझे उन धर्माचार्यों के पास भी जाना पड़ेगा जो न केवल हिन्दुस्तान में हैं, बल्कि हिन्दुस्तान के बाहर भी हैं। वे प्रभावित होंगे कि नहीं, ये कौन कहता है, लेकिन मैं जानता हूँ, प्रभावित उनको होना ही चाहिए। नारदजी गये थे और थोड़े ही समय तक वाल्मीकि के पास रहे और बाल्मीकि को प्रभावित होना पड़ा। थोड़ी देर तक नारदजी ध्रुव के पास रहे, उनको शिक्षा दी और ध्रुव को प्रभावित होना ही पड़ा। प्रह्लाद के बारे में भी यही है कि नारद की प्रेरणा से उन्होंने अपनी गतिविधियाँ बदल दीं और कितने ही लोग हैं ? भगवान् बुद्ध के बारे में भी यही बात आती है कि आम्रपाली से उन्होंने कहा कि तुम अपना जीवन बदल दो, बदल दिया, उन्होंने। अंगुलिमाल था, उससे कहा गया बदल दो तो उसने बदल ही दिया। मैं समझता हूँ मैं स्वयं तो इस लायक नहीं, लेकिन जिस सत्ता का सन्देशवाहक हूँ उस सत्ता का फोर्स मेरे अन्दर इतना जबरदस्त है और वह ऐसा है कि मैं उनका सन्देश ले करके जाऊँ तो उससे बहुत लोगों में परिवर्तन लाया जा सकता है और सारी दुनिया के लोगों का निर्माण किया जा सकता है। एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छोटा-सा प्रयास हमने हिन्दुस्तान में, हिन्दू समाज में धर्ममंच के माध्यम से किया था। उसका हजारों गुना विस्तार बन सकता है और वह नये युग-निर्माण करने का दिन समीप से समीपतम भी आ सकता है।

अभी मैंने तीन जनों का जिक्र किया—धर्माचार्यों की बात कही, साहित्यकारों की बात कही और कलाकारों की बात कही। तीन वर्ग अभी और भी रह जाते हैं, जो बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। एक वर्ग उनका है जिनको हम विज्ञान कहते हैं। विज्ञान ने इन सौ-दो सौ वर्ष में सब परिवर्तन करके रख दिया, जिसे देख करके हमको हैरत होती है। कोई मरा हुआ पाँच सौ वर्ष पुराना व्यक्ति कहीं हो और वह यहाँ अगर आये और उस जमाने को देखे तो वह जादू का युग कहेगा। ये घड़ियाँ आज से पाँच सौ पहले कहाँ थीं ? रेडियो पाँच सौ वर्ष पहले कहाँ था ? बिजली पाँच सौ वर्ष पहले कहाँ थी ? हवाई जहाज और पानी के जहाज कहाँ थे ? टेलीफोन और टेलीग्राम कहाँ थे पाँच सौ वर्ष पूर्व। आजकल जितनी मशीन दिखाई पड़ती हैं, पाँच सौ वर्ष पूर्व नामोनिशान भी नहीं था उनका। विज्ञान ने आदमी के जीवन को कितना परिवर्तन और सुविधाओं से युक्त, कितना सम्पन्न बना दिया है ? यह विज्ञान आदमी का बहुत कुछ कर सकता है, विनाश भी कर सकता है। यह क्या नहीं कर सकता ? अखण्ड-ज्योति में कोई चार लेख ऐसे छपे हैं कि यह भी प्रयास किये जा रहे हैं कि मनुष्यों के मस्तिष्क को मनचाही दिशा में ढाल दिया जाए। अगर मनुष्यों के मस्तिष्कों को कहीं ऐसे निकम्मे रूप में ढाल दिया गया तो आदमी जानवर से भी गया। बीता हो जाएगा। इसीलिए इस भयंकर समय में स्मरण-शक्ति वस्तुतः राजसत्ताओं के हाथ में नहीं वैज्ञानिकों के हाथ में है। उस समय में जब हिटलर अपने चरम उत्कर्ष पर था, जापान एशिया में हुंकार रहा था, इटली और दूसरे देशों में यह। तब विज्ञान का एक छोटा-सा कण जिसको हम एटम बम कह सकते हैं, जापान के नागासाकी और हिरोशिमा पर गिरा और उस बम ने सारी दुनिया का नक्शा बदल दिया। जो समर्थ थे, उनको कमजोर बना दिया। सारी की सारी बाजी इधर से उधर हो गयी। ये विज्ञान का था चमत्कार। विज्ञान का चमत्कार आगे भी हो सकता है। विज्ञान को अध्यात्म का अनुयायी होना चाहिए विनाशकारी नहीं, विकासशील होना चाहिए, विध्वंसकारी नहीं।

इसके लिए उनको क्या करना होगा और क्या करना चाहिए ? इसके लिए मुझे वैज्ञानिकों से मिलना होगा और इस यात्रा के लिए जो कार्यक्रम बना है, उसमें वैज्ञानिकों से मिलना भी शामिल है, उनको प्रभावित करना भी शामिल है, उनको रास्ता बताना भी शामिल है। उनको किस तरीके से अध्यात्म का अनुयायी हो करके वह शोध करनी चाहिए जिससे कि विज्ञान और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी न होकर के पूरक हो जाएँ। ऐसे अनेक कार्यक्रम हैं, जिनमें मुझे सम्मिलित होना होगा, भाग लेना होगा, उनसे विचार-विमर्श करना होगा, राजनीतिज्ञों से भी मिलना होगा। उनसे कहना होगा कि राजनीति के वर्तमान स्वरूप को बदला जाना चाहिए। इसमें हर वर्ग और देश का स्वार्थ मुख्य है। हर देश अपने देश के नागरिकों की बात सोचता है। यह प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए और यह पद्धति बदल देनी चाहिए। प्रत्येक राजनीतिज्ञ को इस मायने में विचार करना चाहिए कि अगले दिनों एक विश्व बनने वाला है, एक राष्ट्र बनने वाला है, एक धर्म बनने वाला है, एक संस्कृति बनने वाली है, एक विशाल परिवार बनने वाला है। ऐसी दिशा में यही मुनासिब होगा कि उनका जो विचार और दृष्टिकोण हो सार्वभौम हो, केवल देश विशेष के स्वार्थों के लिए नहीं। अगर ये राजनीतिज्ञ इस तरीके से थोड़े-से भी बदल जाते हैं तो हमारे लिए विश्व के नव-निर्माण के लिए बहुत सारा रास्ता साफ हो जाता है।

इसी प्रकार से सम्पत्ति वालों से मुझे कहना ही चाहिए, कहना ही पड़ेगा कि अब सम्पत्ति के मरने के दिन आ गये। अब विपुल सम्पत्ति का युग चला गया, कोई आदमी विस्तृत रूप से बहुत धनी रह नहीं सकेगा। समय की हवा बहती चली आ रही है कि समान वितरण होना ही है। लोगों को समान धन का हिस्सा मिलना ही है। सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण होने वाला है। हर आदमी को श्रम ही करना पड़ेगा। पूँजी व्यक्ति के पास अब नहीं रहेगी। व्यक्ति के पास जहाँ पूँजी है, उससे मुझे कहना ही पड़ेगा। जिस तरह मरने के वक्त आदमी संन्यास ले लेता है, दान-पुण्य कर लेता है, गोदान करता है और कहता है कि सारी जिन्दगी के पापों का प्रायश्चित कर लूँ। अब पापों के प्रायश्चित का समय है। जिन लोगों के पास धन संग्रहीत है, वह उसको प्रायश्चित में खर्च कर डालें तो यह बहुत बड़ी बुद्धिमानी होगी। आज पैसे की जरूरत है इसलिए कि मनुष्यों का मस्तिष्क ढाला जाए, मनुष्यों के विचार बदले जाएँ, उनको शिक्षा दी जाए। उसके लिए बहुत बड़े कलेवर खड़े करने पड़ेंगे। विनाश के लिए कितने बड़े कलेवर खड़े किये गये हैं, उनके माध्यम से विकास के लिए भी वही कलेवर खड़े करने चाहिए। सारी दुनिया में साहित्य ही एक ऐसा माध्यम है कि जिसने मनुष्य का विकास किया है। विज्ञान के वह पहलू भी है जिन्होंने दुनिया का सबसे अधिक विनाश किया है। उसमें अरबों और खरबों रुपयों की पूँजी लगी हुई है। विनाश में जब इतनी पूँजी लगी हुई है तो विकास तो बड़ा ही होता है। विनाश में कम में काम चल जाता है। एक आदमी को मारने में एक रुपये का छुरा काफी होता है लेकिन एक मनुष्य को बनाने, पढ़ाने, लिखाने और बड़ा करने में कितने पैसे और समय की जरूरत पड़ती है। हमको नया बनाना है, नया मनुष्य बनाना है, नया विश्व बनाना है तो उसके लिए कितनी बड़ी पूँजी की जरूरत पड़ेगी, जबकि विनाश के लिए इतनी बड़ी पूँजी लगी है। अनुमान इसी से लगाया जा सकता है। हमें पूँजी वालों से कहना ही पड़ेगा कि आपके पास जो है, उसे व्यक्तिगत सुधार के लिए मत खर्च कीजिए। उसको लोकमंगल के लिए निकालिए। अगर वह नहीं मानते हैं तो उसके मुकाबले की वह चीज खड़ी करनी पड़ेगी जिससे कि नई पूँजी उदय हो सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोगों के पास पैसे हैं—किसी के पास जेवर के रूप में हैं, किसी के पास किसी रूप में, जायदाद के रूप में हैं। खाने भर के लिए वह रखें, अनावश्यक पूँजी को इकट्ठी न करें और एक सामाजिक स्तर पर पूँजी खड़ी करें। लिमिटेड कम्पनी या सरकारी समिति के रूप में खड़ी करें। उससे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करें जिससे कि नया निर्माण करने के लिए नई विचारधाराओं के निर्माण करने के लिए जा सकें, भले ही वह सहायता के आधार पर ही क्यों न हों ? मुझे इस पूँजी को आमन्त्रित करना पड़ेगा। इसके लिए भी सारी दुनिया को मुझे जगाना है और जगाना ही चाहिए।

यह पाँच क्रियाकलाप मैंने आप लोगों के सामने बताये। अगले दिनों में मुझे इनकी व्यवस्था करनी पड़ेगी और भारतवर्ष के लोगों को अपने पास बुलाना पड़ेगा। भारत में दौरा करने और जाने-आने का मेरा मन नहीं है और शौक भी नहीं है, अवकाश भी नहीं है। भारतवर्ष के लोग तो आसानी से मेरे पास भी आ सकते हैं और उन्हें वहीं आना चाहिए, शान्तिकुंज में जब मैं होऊँ तब मुझसे मिलने के लिए। अगर मैं हिन्दुस्तान में भी घूमता फिरूँ तो मेरे अन्य सारे काम कैसे होंगे ? वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का प्रतिपादन और भी प्रखर बनाने के लिए पाँच साल में मुझे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कार्य करना है और बुद्धिजीवी वर्ग को प्रेरणा देने वाले आधारभूत सिद्धान्त ढूँढ़ निकालने हैं, जिससे कि वे इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर सके। ये पाँच वर्ष के कार्यक्रम हैं मेरे। इन पाँच वर्षीय कार्यक्रमों को मैं यहाँ शान्तिकुंज में रहकर संचालित करता रहूँगा। इसकी गतिविधियों का केन्द्र रहेगा यह। यहाँ से समाज के और मेरे बीच का जो सम्पर्क है, वह इसी केन्द्र के द्वारा होता रहेगा। केन्द्र इस तरीके से कह सकते हैं कि जिस तरीके से टेलीफोन केन्द्र से होकर यहाँ से वहाँ जाकर मिल जाता है, उसको वहाँ मिला देते हैं, उसको वहाँ छोड़ देते हैं। यह सुविधा का प्रश्न है, मेरे और तुम्हारे बीच का। इसी रूप में इसको बनाया था और इसे आन्दोलन के रूप में खड़ा किया गया था। अभी भी खड़ा है। पाँच वर्ष के बाद में इसको महिला क्रान्ति को सौंप दिया जाएगा, महिला जागरण के लिए और यह महिला जागरण केन्द्र शान्तिकुंज के नाम से विख्यात होगा। यहाँ से वह कार्य होगा कि ये महिलाएँ सारे विश्व भर में नारी जागरण का काम कर सकेंगी और एक नये युग को लाने के लिए एकजुट होकर कार्य कर सकेंगी, यह करना ही पड़ेगा। नारी के जिम्मे वह नेतृत्व आएगा, जिसके द्वारा भावनात्मक विकास के अगले कदम उठाये जा सकें। यह अगले कार्यक्रम होंगे। यह मेरी अब तक की गतिविधियाँ हैं। पाँच वर्ष बाद क्या होगा, मैं कुछ नहीं कह सकता। समय-समय पर जब मुझे गुरुजी से संकेत मिलते रहते हैं, उसी अनुसार मैं काम करता रहता हूँ। अब मेरी समस्या, व्यवस्था, प्रतिज्ञा मुझे कुछ नहीं मालूम, जब जो कार्य समय-समय पर मेरे सामने आये, आते रहेंगे मैं करता हूँ और उसी तरीके से करता रहूँगा। यही कार्यक्रम है और यही है मेरी गतिविधियों का संक्षेप और सारांश, जिसके आधार पर मैं चलता रहा और चलता रहूँगा। अच्छा ! आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

नया इनसान बनायेंगे, नया जमाना लायेंगे

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

नया समय, नया काम, नई जिम्मेदारियाँ और नया कदम क्या है ? इस सम्बन्ध में आज आपको हम बताना चाहते हैं। पहली बात यह कि नया समय क्या है ? यह १२ वर्ष का है और बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। तो क्या इसका मतलब यह है कि जमीन आसमान पर चली जाएगी तथा आसमान जमीन पर आ जाएगा ? नहीं, ऐसा नहीं होगा, परन्तु आज जो परिस्थितियाँ हैं, जिसमें आप और हम रह रहे हैं, वैसी नहीं रहने वाली हैं। नया काम क्या होना है ? दो काम होने हैं—(१) विनाश की लीला होगी, उस समय बहुत मुसीबतें आयेंगी। उन मुसीबतों से आप भी बच नहीं पायेंगे। बेशक आपके मकान हैं, खेत हैं, सम्पत्ति हैं, परन्तु आप भी बच नहीं पायेंगे। चारों दिशाओं में जब आँधी आती है, पानी आता है, बाढ़ आती है तो कोई नहीं बच पाता है। यह सारा विनाश एवं सृजन की लीला आप भी देखेंगे तथा हम भी देखेंगे। हो सकता है कि हम स्थूल शरीर से न रहें, परन्तु सूक्ष्म में रहेंगे तथा देखेंगे तथा आपके साथ-साथ रहेंगे। इसमें कोई भी आदमी सुरक्षित नहीं रह सकता है। आप भी बच नहीं सकते हैं।

मित्रो ! प्रकृति नाराज हो गई है। इसका मतलब है कि इस समय ऐसी बाढ़ें, तूफान और भूकम्प आयेंगे जो आज तक इस पृथ्वी पर कभी नहीं आये। आज गर्मी के दिनों में ठण्डक तथा ठण्डक के दिनों में गर्मी न जाने कैसा वातावरण हो गया है ? बीमारियाँ ऐसी पैदा हो गई हैं कि अच्छे से अच्छे डॉक्टर भी परेशान हैं। वे कहते हैं कि अभी तक हमने ऐसा देखा भी नहीं, पढ़ा भी नहीं तो हम आपको क्या दवा दें ? कभी बाढ़ आ जाती है तो कभी सूखा पड़ता है। इसके अलावा आप देख रहे हैं कि सामूहिक बलात्कार, मारकाट, चोरी, उठाईगिरी जैसे अपराध कितने बढ़ गये हैं ? बहुओं को जलाया जा रहा है। इस प्रकार के काण्ड आप लोग रोज देखते तथा पढ़ते रहते हैं ऐसा वातावरण आपने पहले कभी नहीं देखा था। ऐसा समय कभी नहीं आया।

आपको सामान्य बातें बतला रहा हूँ। भोपाल गैस काण्ड आपने सुना ही है। इसके अलावा पर्यावरण की बातें, वातावरण की बातें भी हैं। हवा में जहर घुलता जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहा है। यह साँस के साथ आँखों में, गर्दन में, गले में, छाती में चला जाता है और आप बीमार हो जाते हैं। पानी में जहर मिल गया है। पहले हम गंगा का पानी ले जाते थे और उसका उपयोग करते थे, परन्तु आज यह प्रचार किया जा रहा है कि गंगा का पानी कोई मत पीजिये। इसमें जहर है। समूचे देश के बड़े-बड़े शहरों के गन्दे नाले उसमें मिलाकर उसके पानी को जहरीला बना दिया है। कारखानों का पानी भी उसमें मिलता रहता है। नदी में से कुएँ में भी आता है। आज जो ऑटोमेटिक हथियार बन रहे हैं, उससे जो गैस निकलती है, वह जहरीली है। उससे अगली पीढ़ी जो पैदा होगी। वे लँगड़े, लूले, अन्धे पैदा होंगे। प्राकृतिक सम्पदा जैसे—खनिज तेल, धातुएँ, कोयला आदि जो जमीन में थी, उसे हमने खाली करना शुरू कर दिया है। मिट्टी का तेल, डीजल हम निकाल रहे हैं। लोहा, ताँबा, कोयला हम निकाल रहे हैं। पृथ्वी खोखली बनती जा रही है। भीतर से गर्मी हो जाएगी तो पैदावार कम हो जाएगी। भूकम्प आवेंगे। अतः लोगों को समझना होगा कि अन्न कम होगा, जलावन कम मिलेगा, बीमारियाँ बढ़ेंगी तो आदमी परेशान होता चला जाएगा।

एक और डरावनी बात बतलाना चाहता हूँ। लड़ाइयाँ होंगी, उसमें चाहे बन्दूक चले या बम चले पर आदमी समाप्त होते चले जाएँगे। राग-द्वेष बढ़ता चला जाएगा। इसके बाद-बाद इतनी बीमारियाँ फैलेंगी, जो न जाने समाज के कितने लोगों को समाप्त कर देंगी। पहले जो युद्ध हुआ था। उसमें भी युद्ध से ज्यादा आदमी बीमारियों से मरे थे। केवल विधवाएँ बच गयी थीं। लोगों को खाने के लाले पड़ गये थे। बच्चे मरते जा रहे थे। यह सेकेण्ड वर्ल्ड वार—द्वितीय विश्वयुद्ध की घटना है।

आप घर में रहकर भी बच नहीं सकते हैं। हर चीज की कमी हो जाएगी। महँगाई बढ़ती जाएगी। आज क्या भाव शक्कर मिलती है, क्या भाव कपड़ा मिलता है ? इन सारी की सारी चीजों का अभाव हो जाएगा। आदमी भोजन के अभाव में मरते-खपते चले जाएँगे। दुनिया में बहुत तबाही आने वाली है। अब अगर युद्ध हुआ, जैसा कि लोगों ने अरबों-खरबों रुपया लगाकर तैयारी कर ली है, अगर वह हुआ तो दुनिया में इतनी तबाही आयेगी कि उसको रोकना मनुष्य के लिए असम्भव होगा। यह अस्त्र-शस्त्र, एटम हथियार ऐसे ही बच्चों को खिलौना थोड़े ही रखे हैं। युद्ध-उन्मादी ये पागल लोग इस जखीरे का प्रयोग अवश्य करेंगे। इसके बाद मनुष्यों के बीच तो तबाही आयेगी ही, परन्तु इसके साथ जमीन की उर्वरक शक्ति भी समाप्त हो जाएगी। इस धरती पर रहने वाले लोग दुहरी मार को सहन नहीं कर पायेंगे। अगर परमाणु युद्ध होगा तो जमीन नहीं बचेगी। कहीं पानी भी नहीं मिल सकता है। इस सन्दर्भ में बहुत-से भविष्यवक्ताओं ने बहुत-सी बातें लिखी हैं ?

मुसलमानों के धर्मग्रन्थ में लिखा है कि १४वीं सदी आयेगी तो इस दुनिया में बहुत तबाही आयेगी। इनसान की संख्या बहुत कम हो जायेगी। इस तरह ईसाई धर्म-ग्रन्थ—बाइबिल में लिखा है कि 'सेवन टाइम' आयेगा और दुनिया तहस-नहस हो जाएगी। हिन्दुओं के भविष्य पुराण में लिखा है—भविष्य में जो समय आने वाला है—वह खतरनाक है। दुनिया तहस-नहस हो जायेगी।

मित्रो ! इन तीनों के अनुसार यह कौन-सा समय है ? यह वही समय है जिसका हम आपसे जिक्र कर रहे हैं। इस समय के लिये हमें सुरक्षा के लिए व्यवस्था बनानी होगी। आप कहेंगे कि महाराज जी तो क्या हम डण्डे लेकर खड़े हो जाएँ ? मित्रो ! इससे कुछ नहीं होगा। दूसरे और तरीके हैं। आपने भगीरथ का नाम सुना होगा। एक बार इस धरती पर से पानी खत्म हो गया था। खेतों में पानी नहीं था, पीने के लिए पानी नहीं था। उस समय उन्होंने तप किया और गंगा प्रसन्न हो गईं और धरती पर आईं। धरती ने पानी पी लिया तथा कुएँ में भी पानी आ गया। जो लोग पानी के अभाव में मर रहे थे वे भी जीवित हो गये। पानी के लिए उन्होंने यह कष्ट उठाया था।

एक और वृत्रासुर नामक राक्षस हुआ था, वह किसी के काबू (कन्ट्रोल) में नहीं आ रहा था। सब लोग त्राहि-त्राहि कर रहे थे। आज भी इस तरह के वृत्रासुर दिखाई पड़ रहे हैं, जो मिसाइलें, बम, अस्त्र-शस्त्र बना रहे हैं। उनका नाम तो वृत्रासुर नहीं है, परन्तु हैं ये वृत्रासुर ही, जो इस प्रकार के क्रिया-कलाप कर रहे हैं। वृत्रासुर को समाप्त करने के लिए महर्षि दधीचि ने तप किया था और अपने अस्थि-पंजर को देवताओं को दान कर दिया था। उससे धनुष बनाया गया। उसके बाद वृत्रासुर को समाप्त किया जा सका। आज हम लोग कई तरह के वृत्रासुरों से घिरे हैं। हम तोप, अस्त्र-शस्त्र, एटम बम एवं महँगाई से घिरे हुए हैं। लोग विभिन्न प्रकार के इन खतरनाक खिलौने से डर रहे हैं। आज किराये के हत्यारे बहुत हो गये हैं। आप पाँच सौ या एक हजार रुपये निकालिये तो, जिसको कहेंगे उसी की हत्या हो जाएगी। आज ऐसा ही खराब वक्त आ गया है। इस समय हमें अपने बच्चों, जिनकी संख्या आज २४ लाख हो गई है, उनकी बहुत चिन्ता है। इनको हम तथा हमारी पत्नी एक रूप में ही देखते हैं। हमें अपने बच्चों से बहुत आशाएँ हैं, परन्तु आप तो अभी नाबालिग हैं। आपको केवल अपना पेट, परिवार दिखाई पड़ता है। आपको अपने देश-संस्कृति से कोई मतलब नहीं है तो हम बच्चा ही आपको कहेंगे। आपके पास मानवीय गरिमा नहीं है तो आप बच्चे नहीं तो कौन हैं ? हमें बाहर का भी ख्याल है तथा अपने बच्चों को भी हमें ख्याल है।

मित्रो—इसी कारण हमने अपनी शक्ति को दो हिस्सों में बाँट दिया है। हमने एक तो दुनिया के लोगों के लिए तथा दूसरी—अपने लाखों बच्चों के लिए सुरक्षित रखी है। मान लिया जाय कि हम सौ रुपये कमाते हैं तो पचास रुपये दुनिया के लिए, हारी-बीमारी के लिए तथा पचास रुपये अपने बच्चों के लिए हमने रखे हैं। हमने अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीर को स्थूल शरीर तथा सूक्ष्म शरीर दो भागों में बाँट दिया है। हमारे बच्चे जो हैं, उनकी रखवाली भी करनी है तथा सलाह भी देनी है। सलाह के बिना काम नहीं चलेगा। केवल सलाह ही नहीं देना है, वरन् ऊँचा भी उठाना है, सहयोगी बनाना है। जो महात्मा गाँधी के सहयोगी बने थे, उनके आन्दोलनों में भाग लिया था, उन्हें आज पेंशन मिल रही है, फोटो छप रहे हैं, मिनिस्टर बन रहे हैं। पर अब कोई कहे कि हमें भी स्वतन्त्रता सेनानी बना दीजिये, हम भी चले जाते हैं जेल, तो अब जेल जाने से कोई फायदा नहीं है। ठीक इसी तरह का यह समय है, जिसके बारे में हम आपको बतला रहे हैं। इसमें हमको भी बड़ा काम करना है तथा आपको भी काम करना है। इसके अलावा सारी दुनिया में लोगों को भी हमारा काम करना है। **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** की स्थिति लानी है। इनकी भी समस्या का हमें हल करना है। ये समस्याएँ हैं—गरीबी, बेकारी, बीमारी, युद्ध और अपराध बढ़ रहे हैं, मनुष्य भेड़िया बन रहा है। हमको इन्हें भी रोकना है। सारे संसार के लिए कुछ करना है।

क्यों साहब ! आप कितने वर्ष तक जिन्दा रहेंगे ? यह तो केवल १५ वर्षों का चक्कर है। सन् २००० से नया उछाल आना शुरू हो जाएगा, मुसीबतें घटने लगेंगी। गायत्री तपोभूमि एवं शान्तिकुंज से पौध लगाने का काम हमें इसी वक्त करना है। हमें लड़ना भी इसी वक्त है। हमें किससे लड़ना है ? सारी कुरीतियों एवं अपराधी वृत्तियों से लड़ना है। हमारे पास बहुत बड़ा हथियार है जैसा कि महर्षि दधीचि तथा भगीरथ के पास था। इससे हम लड़ने में भी समर्थ हैं तथा लोगों को राहत देने तथा परिस्थितियों को ठीक करने में भी समर्थ हैं। रखवाली करने में भी समर्थ हैं। हम बीमारी, उठाईगीरी से आपकी केवल रखवाली ही नहीं करेंगे, बल्कि आपको भी लोमस ऋषि के पुत्र श्रृंगी ऋषि की तरह होना होगा, जो कि अपने पिता के गले में मरा हुआ साँप जो राजा परीक्षित ने डाल रखा था, उसे देखकर क्रोधित हो गये थे और उस साँप को उतारकर उसे जिन्दा कर दिया था। उसे कहा था—तू जा और सात दिन के अन्दर राजा परीक्षित को काटकर समाप्त कर दे। वैसा ही हुआ। श्रृंगी ऋषि ने राजा दशरथ की रानियों के बच्चा होने का आशीर्वाद दिया था। वे तपस्वी थे। तपस्वी विद्वान् से भी ऊपर होते हैं। हम भी तपस्वी हैं। हम तुम्हारी रक्षा भी करेंगे तथा जिस प्रकार श्रृंगी ऋषि के द्वारा भेजे गये साँप से तबाही हो गई थी, हम उससे भी रक्षा करेंगे। तपस्वी को पण्डित कहते हैं। मन्त्र बोलने वाले को हम पण्डित नहीं कह सकते हैं। आपकी गोद में हमें राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न को बैठाना है। हमें आप जैसे छोटे-छोटे आदमियों को समर्थ बनाना है।

मित्रो, अभी आपका गुजारा नहीं होता है। हम चाहते हैं कि आपका गुजारा होना चाहिए। हम समर्थ गुरु रामदास के शिष्य छत्रपति शिवाजी की तरह आपको बनाना चाहते हैं, जो एक राजा भी था, गुरुभक्त भी था, सेवक भी था। हमारा ख्वाब कभी भी अधूरा नहीं रहा। हमारा ख्वाब है कि हमारे २४ लाख बच्चे पूर्ण सुरक्षित रहें और ऊपर कोई मुसीबतें न आवें। दूसरा हमारा ख्वाब है कि हमारे किसी शिष्य की मिट्टी पलीद न हो। कोई भी समाज के लोग उस पर बुरी नजर न डालें। कोई यह न कहे कि गुरुजी का शिष्य है, मर रहा है खाने, कपड़े के लिए। हमारे पास जो भी आया है वह समुन्नत हो गया है। हमने राजा से भी बड़े महाराजा बनाये। आपको ऐसे जैसे कि सुदामा, जिनका चरण धोकर श्रीकृष्ण भगवान ने पिया था, रानियों ने उनका कितना बड़ा स्वागत किया था। मित्रो ! हम आपको उस स्तर से कम का नहीं बनाना चाहते हैं। हम आपको विश्वामित्र बनाएँगे, शिवाजी बनाएँगे। ऐसा बनाएँगे कि समाज यह न कहे कि इस व्यक्ति ने केवल खाया, पिया तथा बच्चा पैदा किया है, वरन् समाज की सेवा की है। जिन्हें लोग सैकड़ों वर्ष, हजारों वर्ष तक याद करते रहें, ऐसा हम बनाना चाहते हैं। हम तुम्हें ऐसा नहीं बनाना चाहते हैं कि पुलिस तुम्हारे पास आवे और, तुम्हारा सोना, पैसा ले जावे। छापा डाल दे। नहीं बेटे ऐसा हम तुम्हें कदापि नहीं बनाएँगे। भूखे, नंगे, गरीब यानी खाने, कपड़े और मकान की किसी प्रकार की कमी तुम्हें नहीं होने देंगे। हम तुम्हारे लिए किले, कोठी तो नहीं बनाएँगे, पर हम तुम्हें इस तरह का अवश्य बनाएँगे कि तुम्हारा नाम इतिहास में अमर हो जाए। हम अपने बच्चों को, शिष्यों को बहुत अच्छा बनाएँगे।

आज जो दुनिया तहस-नहस करने में लगी है, उसे हम एक धुरी पर इकट्ठी करेंगे। सारे पृथ्वी पर एक राज्य होगा। हम एक चक्रवर्ती राजा बनाएँगे। एक धर्म होगा, एक कानून होगा, सारी दुनिया की एक व्यवस्था होगी। कोई बड़ा छोटा नहीं होगा, यानी कि समानता का अधिकार सबको मिलेगा। विषमता लोगों के बीच नहीं रहेगी। लोगों में एकता होगी। सब आपस में मिल-जुलकर रहेंगे, कुटुम्बी, परिजन बनकर रहेंगे। आपस में मिलकर काम करेंगे। आगे हम सारे विश्व को एक बनाने जा रहे हैं। यह हमारा एक बहुत बड़ा काम है। आप उसमें अवश्य शामिल रहना। आप हमारे परिश्रम में साथ रहेंगे तो आप फायदे में होंगे। जो हमारी इस कम्पनी का शेयर खरीदेगा उसे काफी मुनाफा मिलेगा। तुम हमारी कम्पनी में शेयरहोल्डर बनकर रहना। हम कभी भी नहीं मरेंगे। हम सन् २००० तक बिल्कुल मोर्चे पर खड़े रहेंगे।

हम स्थूल में न सही, परन्तु सूक्ष्म शरीर में रहेंगे तथा एक मिनट में २० हजार मील चल सकेंगे, ऐसा हमारा विचार है। सूक्ष्म शरीर हमारा असीम है। यह मिट्टी वाला स्थूल शरीर जितना काम कर सकता है, उससे कहीं ज्यादा काम हमारा सूक्ष्म शरीर करता रहेगा। अरे तू चिन्ता मत कर कि गुरुदेव मर गये और अब हमें कौन देखेगा ? बेटा तू चिन्ता मत कर हम तेरे पास स्वयं पहुँच जाएँगे, तेरी निगरानी करेंगे, रक्षा करेंगे, स्वस्थ रखेंगे तथा तेरे को प्रगति के रास्ते पर बढ़ाते रहेंगे। इस विषम परिस्थिति में हम तुम्हारे छाता बनकर रहेंगे। न केवल छाता बनकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहेंगे, वरन् तुम्हारे भविष्य को उज्ज्वल बनाने का भी कार्य करेंगे। तुम्हारे खानदान को भी ऊँचा तथा उनका भविष्य उज्ज्वल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। मित्रो ! यह हमारी ५० प्रतिशत शक्ति का उपयोग होगा। अन्य ५० प्रतिशत शक्ति से हम दुनिया को शानदार बनायेंगे। हम नींव खोद रहे हैं, उसके बाद एक सुन्दर महल बनायेंगे। जो जिस भाषा में समझेंगे, उसे हमें उसी भाषा में समझाना होगा। अँग्रेजी, मराठी में जो समझेंगे, उसे उसी भाषा में समझायेंगे। अगर कोई ऐसे नहीं समझेगा तो हम उसे शक्ति से समझायेंगे, ताकत से समझायेंगे। जो भलमनसाहत से समझेगा, उन्हें उसी तरह समझायेंगे। सारी दुनिया को हमें एक करना है, सारी जमीन को एक करना है। जो जमीन दबाकर रखे हैं, उनके सारे एकाधिकार समाप्त करेंगे। सब मिलजुल कर खायेंगे, काम करेंगे, आगे बढ़ेंगे। एक समानता का मौका होगा। सभी मालिक होंगे। एक बच्चे का भी समान अधिकार होगा। एक शानदार दुनिया का ख्वाब हमारे अन्दर है। आज जहाँ-तहाँ अनीति, अत्याचार, अन्याय, कुरीतियाँ, अपराधी वृत्तियाँ आदि हमें दिख रही हैं। इनसे लड़ने के लिए हमारे भीतर एक शूरमा जाग्रत हो रहा है।

आइंस्टीन जब मरे तो लोगों ने उनके दिमाग को खोलकर देखा था कि इनके दिमाग में क्या विलक्षणता थी। अगर हम मरें तो तुम हमारे कलेजे को देखना, तो यह पाओगे कि उसमें लड़ने के लिए बहुत बड़ा साहस है, सामर्थ्य है, जो हनुमान के अन्दर था। हमें बनाना भी है तथा तोड़ना भी है। हमें दोनों में शक्ति लगानी है। यह बातें संसार के बारे में हम कह रहे हैं। पर आपके बारे में यह कहना है कि हम आपकी रखवाली भी करेंगे तथा आपको ऊँचा भी उठायेंगे। हम कन्धे पर भी आपको बिठायेंगे। कोई पिता यह नहीं चाहता है कि हमारा बच्चा हमसे कमजोर रह जाए। आपको हम दुःखी रहने नहीं देंगे आपको कठिनाई में हम रहने नहीं देंगे, आपको हम ऊँचा उठायेंगे। सभी दृष्टि से ऊँचा उठायेंगे। पैसे की दृष्टि से कोई अमीर नहीं बन सकेगा। अभी भी लोग छापा मार रहे हैं, अगले दिनों भी पैसा अधिक नहीं रहने वाला है। हम मालदार नहीं बनायेंगे। आपको हम श्रद्धावान, भावनाशील, विचारशील बनायेंगे। आपको हम महामानव, ऋषि, देवमानव बनायेंगे। हमारे यह विचार केवल आपके लिए ही नहीं वरन् सारे संसार के लिए हैं। हम सारे संसार को भी ऊँचा उठायेंगे और बहुत शानदार बनायेंगे, सुखी बनायेंगे। इस प्रकार का बनायेंगे जिससे यह अनुभूति होने लगे कि मानो धरती पर स्वर्ग का अवतरण हो गया है। इनसान को इस प्रकार का बनायेंगे कि जैसे देवता होते हैं। यही हमारी योजना है जो हमने आपको आज बतलायी है। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

वासन्ती हूक, उमंग और उल्लास यदि आ जाए जीवन में

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो !

वसन्त पंचमी उमंगों का दिन है, प्रेरणा का दिन है, प्रकाश का दिन है। वसन्त के दिनों में उमंग आती है, उछाल आता है। समर्थ गुरु रामदास के जीवन में इन्हीं दिनों एक उछाल आया—क्या हम अपनी जिन्दगी का बेहतरीन इस्तेमाल नहीं कर सकते ? क्या हमारी जिन्दगी अच्छी तरह से खर्च नहीं हो सकती ? एक तरफ उनके विवाह की तैयारियाँ चल रही थीं। समर्थ गुरु रामदास को शक्ल दिखाई पड़ी, औरत, औरत के बच्चे, बच्चे के बच्चे, शादियाँ, ब्याह आदि की बड़ी लम्बी शृंखला दिखाई पड़ी। दूसरी तरफ आत्मा ने संकेत दिया, परमात्मा ने संकेत दिया और कहा—अगर आपको जिन्दगी इतनी कम कीमत की नहीं जान पड़ती है, अगर आपको महँगी मालूम पड़ती है तो आइए दूसरा वाला रास्ता आपके लिए खुला पड़ा है। महानता का रास्ता खुला हुआ पड़ा है। समर्थ गुरु ने विचार किया। उछाल आया, उमंग आई और ऐसी उमंग आई कि रोकने वालों से रुकी नहीं। वह उछलते ही चले गए। मुकुट को फेंका अलग और कंगन को तोड़ा अलग। ये गया, वो गया, लड़का भाग गया। दूल्हा कौन हो गया ? समर्थ गुरु रामदास हो गया। कौन ? मामूली-सा आदमी छोटा-सा लड़का छलाँग मारता चला गया और समर्थ गुरु रामदास होता चला गया।

यहाँ मैं उमंग की बात कह रहा था। उमंग जब भीतर से आती है तो रुकती नहीं है। उमंग आती है वसन्त के दिनों में। इन्हीं दिनों का किस्सा है बुद्ध भगवान का। उनका ऐसा ही किस्सा हुआ था। एक तरफ औरत सो रही थी और एक तरफ बच्चा सो रहा था। सारे संसार में फैले हुए हाहाकार ने पुकारा और कहा कि आप समझदार आदमी हैं। आप विचारशील आदमी हैं और आप जबरदस्त आदमी हैं। क्या आप दो लोगों के लिए जियेंगे ? औरत और बच्चे के लिए जियेंगे ? यह काम तो कोई भी कर सकता है। बुद्ध भगवान के भीतर किसी ने पुकारा और वे छलाँग मारते हुए, उछलते हुए कहीं के मारे कहीं चले गए। बुद्ध भगवान हो गये।

शंकराचार्य की उमंग भी इन्हीं दिनों की है। शंकराचार्य की मम्मी कहती थीं कि मेरा बेटा बड़ा होगा, पढ़-लिखकर गजेटेड ऑफिसर बनेगा। बेटे की बहू आएगी, गोद में बच्चा खिलाऊँगी। मम्मी बार-बार यही कहतीं कि मेरा कहना नहीं मानेगा तो नरक में जाएगा। शंकर कहता—अच्छा मम्मी कहना नहीं मानूँगा तो नरक जाऊँगा। हमको जाना है तो अवश्य जाएँगे महानरक में अच्छे काम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिए। मेरे संकल्प में रुकावट लगाती हो तो आत्मा और परमात्मा का कहना न मानकर तुम कहाँ जाओगी ? विचार करता रहा, कौन ? शंकराचार्य।

शंकराचार्य ने फैसला कर लिया कि मम्मी का कहना नहीं मानना है। एक दिन वह पानी में घुस गया और चिल्लाने लगा—मम्मी क्या करूँ, अब मेरे मरने का समय आ गया। मुझे शंकर भगवान दिखाई पड़ते हैं और कहते हैं कि अगर इस बच्चे को मेरे सुपुर्द कर दोगी तो हम मगर से इसे बचा सकते हैं। मम्मी चिल्लाई—अच्छा बेटे जिन्दा तो रहेगा, मुझे मंजूर है और मैंने तुझे भगवान को दे दिया। बस शंकराचार्य ने उछाल मारी और किनारे आ गए। वे बोले देखो मगर ने छोड़ दिया, अब मैं शंकर भगवान् का हूँ।

बहुत-सी शृंखला मैंने देखी हैं। उसी शृंखला में एक और कड़ी शामिल हो जाती है वसन्त पंचमी की। यही दिन थे, पचपन वर्ष पहले एक आया ? कौन आया ? मेरा सौभाग्य आया। वसन्त पंचमी के दिन हर एक का सौभाग्य आता है, एक उमंग आती है, एक तरंग आती है। मेरे ऊपर भी एक तरंग आई सौभाग्य के दिन मेरे गुरु के रूप में, मास्टर के रूप में। मेरा गुरु प्रकाश के रूप में आया। जब कोई महापुरुष आता है तो कुछ लेकर के आता है। कोई महाशक्ति आती है तो कुछ लेकर के आती है, बिना लिए नहीं आती। मेरा भी गुरु, मेरा भी बॉस, मेरा भी मास्टर और मेरा भी सौभाग्य इसी वसन्त पंचमी के दिन आया था, जिसमें कि हम और आप मिल रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि जो सौभाग्य की धारा और लहर मेरे पास आई थी, काश ! आपके पास भी आ जाती तो आप धन्य हो जाते।

जब आती है हूक, जब आती है उमंग तो फिर क्या हो जाता है ? रोकना मुश्किल हो जाता है और जो आग उठती है, ऐसी तेजी से उठती है कि इन्तजार नहीं करना पड़ता। जब वक्त आता है तो आँधी-तूफान के तरीके से आता है। मेरी जिन्दगी में भी आँधी-तूफान के तरीके से वक्त आया। मेरे गुरु आए और आकर के उन्होंने आत्म-साक्षात्कार कराया, पूर्वजन्मों का हाल दिखाया और जाते वक्त कहा कि हम दो चीजें देकर जाते हैं। दोनों चीजें जिनको हम शक्तिपात और कुण्डलिनी जागरण कहते हैं, दोनों की दोनों सैकिण्डों में पूरी हो गईं और मैं कुछ से कुछ हो गया। मेरी आँखों में कुछ और चीज दिखाई पड़ने लगी। नशा पीकर आदमी को कुछ का कुछ दिखाई पड़ता है। ऐसे ही मुझे दुनिया किसी और तरीके से दिखाई पड़ने लगी।

शक्तिपात कैसे कर दिया ? शक्तिपात क्या होता है ? शक्तिपात को मामूली तौर पर समझते हैं कि गुरु की आँखों में से, शरीर में से बिजली का करेन्ट आता है और चेले में बिजली छू जाती है और चेला काँप जाता है। वस्तुतः यह कोई शक्तिपात नहीं है और शारीरिक शक्तिपात से कोई बनता भी नहीं। शक्तिपात कहते हैं चेतना का शक्तिपात, चेतना में शक्ति उत्पन्न करने वाला। चेतना की शक्ति भावनाओं के रूप में, संवेदनाओं के रूप में दिखाई पड़ती है, शरीर में झटके नहीं मारती। इसका सम्बन्ध चेतना से है, हिम्मत से है। चेतना की उस शक्ति का ही नाम हिम्मत है, जो सिद्धान्तों को, आदर्शों को पकड़ने के लिए जीवन में काम आती है। इसके लिए ऐसी ताकत चाहिए जैसी कि मछली में होती है। मछली पानी की धारा को चीरती हुई, लहरों को फाड़ती हुई उलटी दिशा में छलछलाती हुई बढ़ती जाती है। यही चेतना की शक्ति है, यही ताकत है। आदर्शों को जीवन में उतारने में इतनी कमजोरियाँ आड़े आती हैं, जिन्हें गिनाया नहीं जा सकता। लोभ की कमजोरी, मोह की कमजोरी, वातावरण की कमजोरी, पड़ोसी की कमजोरी, मित्रों की कमजोरी—इतनी लाखों कमजोरियों को मछली के तरीके से चीरता हुआ जो आदमी आगे बढ़ सकता है, उसे मैं अध्यात्म दृष्टि से शक्तिवान कह सकता हूँ। मेरे गुरु ने मुझे इसी तरीके से शक्तिवान बनाया। बीस वर्ष की उम्र में तमाम प्रतिबन्धों के बावजूद मैं घर से निकल गया और काँग्रेस में भर्ती हो गया। थोड़े दिनों तक उसी का काम करता रहा फिर जेल चला गया। इसे कहते हैं हिम्मत और जुर्रत, जो सिद्धान्तों के लिए, आदर्शों के लिए आदमी के अन्दर एक जुनून पैदा करती है, सामर्थ्य पैदा करती है कि हम आदर्शवादी होकर जियेंगे। इसी का नाम शक्तिपात है।

शक्तिपात कैसे होता है, इसका एक उदाहरण मीरा का है। वह घर में बैठी रोती रहती थी। घर वाले कहा करते थे कि तुम्हें हमारे खानदान की बात माननी पड़ेगी और तुम घर से बाहर नहीं जा सकतीं। मीरा ने गोस्वामी तुलसीदास को एक चिट्ठी लिखी कि इन परिस्थितियों में हम क्या कर सकते हैं ? गोस्वामी जी ने कहा—परिस्थितियाँ तो ऐसी ही रहती हैं। दुनिया में परिस्थितियाँ किसी की नहीं बदलतीं। आदमी की मनःस्थिति बदल दें तो परिस्थितियाँ बदल जाएँगी। चिट्ठी तो क्या उन्होंने एक कविता लिखी मीरा को—

'जाके प्रिय न राम बैदेही।
तजिए ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही।।'

यह कविता नहीं शक्तिपात था। शक्तिपात के सिद्धान्तों को पक्का करने के लिए यह मुझे बहुत पसन्द आती है और जब तब मेरा मन होता है, उसे याद करता रहता हूँ और हिम्मत से, ताकत से भर जाता हूँ। मुझमें असीम शक्ति भरी हुई है। सिद्धान्तों को पालने के लिए, हमने सामने वाले विरोधियों, शंकराचार्यों, महामण्डलेश्वरों और अपने नजदीक वाले मित्रों—सभी का मुकाबला किया है। सोने की जंजीरों से टक्कर मारी है। जीवनपर्यन्त अपने लिए, आपके लिए, समाज के लिए, सारे विश्व के लिए, महिलाओं के लिए, अधिकारों के लिए मैं अकेला ही टक्कर मारता चला गया। अनीति से संघर्ष करने के लिए युग-निर्माण का, विचार-क्रान्ति का सूत्रपात किया। इस मामले में हम राजपूत हैं। हमारे भीतर परशुराम के तरीके से रोम-रोम में शौर्य और साहस भर दिया गया है। हम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महामानव हैं। कौन-कौन हैं ? बता नहीं सकते हम कौन हैं ? ये सारी की सारी चीजें वहाँ से हुईं, जो मुझे गुरु ने शक्तिपात के रूप में दीं, हिम्मत के रूप में दीं।

कुण्डलिनी क्या होती है ? कुण्डलिनी हम करुणा को कहते हैं, विवेकशीलता को कहते हैं। करुणा उसे कहते हैं जिसमें दूसरों के दुःख-दर्द को देखकर के आदमी रो पड़ता है। विवेक यह कहता है कि फैसला करने के लिए हमको ऊँचा आदमी होना चाहिए जैसे कि जापान का गाँधी कागाबा हुआ। उसने अपना सम्पूर्ण जीवन बीमार लोगों, पिछड़े लोगों, दरिद्रों और कोढ़ियों की सेवा में लगा दिया। चौबीसों घण्टे उन्हीं लोगों के बीच वह काम में रहता। कौन कराता था उससे यह सब ? करुणा कराती थी। इसी को हम कुण्डलिनी कहते हैं, जो आदमी के भीतर हलचल पैदा कर देती है, रोमांच पैदा कर देती है, एक दर्द पैदा कर देती है। भगवान जब किसी इनसान के भीतर आता है तो एक दर्द के रूप में आता है, करुणा के रूप में आता है। भगवान मिट्टी का बना हुआ जड़ नहीं है, वह चेतन है और चेतना का कोई रूप नहीं हो सकता, कोई शक्ल नहीं हो सकती। ब्रह्म चेतन है और चेतन केवल संवेदना हो सकती है और संवेदना कैसी होती है ? विवेकशीलता के रूप में और करुणा के रूप में। आदर्श हमारे पास हों और वास्तविक हों तो उनके अन्दर एक ऐसा मैग्नेट है जो इनसान की सहानुभूति, जनता का समर्थन और भगवान की सहायता तीनों चीजें खींचकर लाता हुआ चला जाता है। कागाबा के साथ यही हुआ। जब उसने दुखियारों की सेवा करनी शुरू कर दी तो उसको यह तीनों चीजें मिलती चली गईं। आदमी के भीतर जब करुणा जाग्रत होती है तो सन्त बन जाता है, ऋषि बन जाता है। हिन्दुस्तान के ऋषियों का इतिहास ठीक ऐसा ही रहा है।

जिस किसी का कुण्डलिनी जागरण जब होता है तो ऋद्धियाँ आती हैं, सिद्धियाँ आती हैं, चमत्कार आते हैं। उससे यह अपना भला करता है और दूसरों का भला करता है। मेरा गुरु आया मेरी कुण्डलिनी जाग्रत करता चला गया। हम जो भी प्राप्त करते हैं, अपनी करुणा को पूरा करने के लिए, विवेकशीलता को पूरा करने के लिए खर्च कर देते हैं और उसके बदले मिलता है असीम सन्तोष, शान्ति और प्रसन्नता। दुःखी और पीड़ित आदमी जब यहाँ आँखों में आँसू भरकर आते हैं तो सांसारिक दृष्टि से उनकी सहायता कर देने पर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। शारीरिक से लेकर मानसिक बीमारों तक, दुखियारों एवं मानसिक दृष्टि से कमजोरों से लेकर गिरे हुए आदमी तक, जो पहले कैसा घिनौना जीवन जीते थे, उनके जीवन में जो हेर-फेर हुए हैं, उनको देखकर बेहद खुशी होती है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह कुण्डलिनी का चमत्कार है।

आज के दिन मेरे मन में एक ही विचार आता है कि यहाँ जो भी लोग आते हैं, उनको मेरे कीमती सौभाग्य का एक हिस्सा मिल जाता तो उनका नाम, यश अजर-अमर हो जाता। इतिहास के पन्नों पर उनका नाम रहता। अभी आपको जैसा घिनौना, मुसीबतों से भरा, समस्याओं से भरा जीवन जीना पड़ता है, तब जीना न पड़े। आप अपनी समस्याओं का समाधान करने के साथ-साथ हजारों की समस्याओं का समाधान करने में समर्थ बनें। फिर आपको न कहना पड़े कि गुरुजी हमारी मुसीबत दूर कर दीजिए। फिर क्या करना पड़े ? गुरुजी को ही आपके पास आना पड़े और कहना पड़े कि हमारी मुसीबत दूर कर सकते हो तो कर दीजिए। विवेकानन्द के पास रामकृष्ण परमहंस जाते थे और कहते थे कि हमारी मुसीबत दूर कर दीजिए और हमारे पास भी हमारा गुरु आया था यह कहने कि हमारी मुसीबत दूर कर दीजिए। उन्होंने कहा—हम चाहते हैं कि दुनिया का रूप बदल जाए, नक्शा बदल जाए, दुनिया का कायाकल्प हो जाए। तो आप खुद नहीं कर सकते नहीं, खुद नहीं कर सकते। जीभ माइक का काम नहीं कर सकती और माइक जीभ का काम नहीं कर सकता। जीभ और माइक दोनों के सम्पर्क से कितनी दूर तक आवाज फैलती है ? हमारा गुरु जीभ है और हम माइक हैं, उनके विचारों को फैलाते हैं। हम चाहते हैं कि आप भी 'लायक' हो जाइए। अगर आपके भीतर 'लायकी' पैदा हो जाए तो मजा आ जाए। तब दोनों चीजें शक्तिपात और कुण्डलिनी जो भगवान के दोनों हाथों में रखी हुई हैं, आपको मिल जाएगी। शर्त केवल एक ही है कि अपने आपको 'लायक' बना लें, पात्र बना लें। यदि लायक नहीं बने तो मुश्किल पड़ जाएगी। कुण्डलिनी जागरण के लिए पात्रता और श्रद्धा का होना पहली शर्त है।

आज का दिन ऊँचे उद्देश्यों से भरा पड़ा है। हमारे जीवन का इतिहास पढ़ते हुए चले जाइए, हर कदम वसन्त पंचमी के दिन ही उठे हैं। हर वसन्त पंचमी पर हमारे भीतर एक हूक उठती है, एक उमंग उठती है। उस उमंग ने कुछ ऐसा काम नहीं कराया, जिससे हमारा व्यक्तिगत फायदा होता हो। समाज के लिए, लोकमंगल के लिए, धर्म और संस्कृति की सेवा के लिए ही हमने प्रत्येक वसन्त पंचमी पर कदम उठाए हैं। आज फिर इसी पर्व पर तीन कदम उठाते हैं। पहला कदम सारे विश्व में आस्तिकता का वातावरण बनाने का है। आस्तिकता के वातावरण का अर्थ है—नैतिकता, धार्मिकता, कर्त्तव्यपरायणता के वातावरण का विस्तार। ईश्वर की मान्यता के साथ बहुत सारी समस्याएँ जुड़ी हुई हैं। ईश्वर एक अंकुश है। उस अंकुश को हम स्वीकार करें, कर्मफल के सिद्धान्त को स्वीकार करें और अनुभव करें कि एक ऐसी सत्ता दुनिया में काम कर रही है जो सुपीरियर है, अच्छी है, नेक है, पवित्र है। उसी का अंकुश है और उसी के साथ चलने में भलाई है। यह आस्तिकता का सिद्धान्त है। इसी को अग्रगामी बनाने के लिए हमने गायत्री माता के मन्दिर बनाए हैं। गायत्री माता का अर्थ है—विवेकशीलता, करुणा, पवित्रता, श्रद्धा। इन्हीं सब चीजों का विस्तार करने के लिए आपसे भी कहा गया है कि आप अपने घरों में, पड़ोस के घरों में गायत्री माता का एक चित्र अवश्य रखें। घर-परिवार में आस्तिकता का वातावरण बनाएँ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ और गायत्री की परम्परा को हम जिन्दा रखना चाहते हैं। इसके विस्तार के लिए चल पुस्तकालय चलाने से लेकर ढकेल गाड़ी—ज्ञानरथ चलाने के लिए दो घण्टे का समय प्रत्येक परिजन को निकालना चाहिए। यही दो घण्टे भगवान का भजन है। भगवान के भजन का अर्थ है—भगवान की विचारणा को व्यापक रूप में फैलाना। हमने यही सीखा है और चाहते हैं कि आपका भी कुछ समय गायत्री माता की पूजा में लगे। जैसे हमारे गुरुजी ने हमसे समय माँगा था और हमें निहाल किया था, वही बात आज आपसे भी कही जा रही है कि अपने समय का कुछ अंश आप हमें भी दीजिए आस्तिकता को फैलाने के लिए। पाने के लिए कुछ न कुछ तो देना ही पड़ता है। पाने की उम्मीद करते हैं तो त्याग करना भी सीखना होगा।

आज के दिन हमने अपने ब्रह्मवर्चस का उद्घाटन कराया था। ब्रह्मवर्चस एक सिद्धान्त है कि मनुष्य के भीतर अनन्त शक्तियों का जखीरा सोया हुआ है जिसे जगाना है। जगाने के लिए तप करना पड़ता है। तप करके हम अपने भीतर सोए हुए स्रोतों को जगा सकते हैं, उभार सकते हैं। तप करने का सिद्धान्त यह है, जिससे खाने-पीने से लेकर ब्रह्मवर्चस के नियम पालने तक के बहिरंग तप आते हैं और भीतर वाले तप में हम अपनी अन्तरात्मा और चेतना को तपा डालते हैं। तप करने से शक्तियाँ आती हैं, मनुष्य में देवत्व का उदय होता है। मनुष्य में देवत्व का उदय करने के लिए सामान्य जीवन में आस्तिकता अपनानी और बहिरंग जीवन में तपश्चर्या करनी पड़ती है। आस्तिकता का अर्थ नेक जीवन और तपश्चर्या का अर्थ लोकहित के लिए, सिद्धान्तों के लिए मुसीबतें सहने से है। तप करने की शिक्षा ब्रह्मवर्चस द्वारा सिखाते हैं। यह एक प्रतीक है, सिम्बल है, एक स्थान है। मनुष्य के भीतर देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण—यही हमारे दो सपने हैं। हमारी कुण्डलिनी और शक्तिपात इन्हीं दो प्रयोजनों में काम आती हैं, तीसरे किसी प्रयोजन में नहीं। तपपरायण और लोकोपयोगी जीवन यही मनुष्य में देवत्व का उदय है।

धरती पर स्वर्ग के वातावरण का क्या मतलब है ? अच्छे वातावरण को स्वर्ग कहते हैं। स्वर्ग बैकुण्ठ में ही नहीं होता, वरन् जमीन पर भी हो सकता है। जहाँ अच्छे आदमी, शरीफ आदमी, अच्छी नीयत के आदमी ठीक परम्परा को अपनाकर भले आदमियों के तरीके से रहते हैं वहीं स्वर्ग पैदा हो जाता है। हम चाहते थे कि धरती पर स्वर्ग बनाने के लिए कोई एक ऐसा मोहल्ला बना दें, एक ऐसा ग्राम बसा दें, जिसमें त्याग करने वाले, सेवा करने वाले लोग आएँ और वहाँ पर सिद्धान्तों के आधार पर जिएँ, हल्की-फुल्की, हँसती-हँसाती शान्ति की जिन्दगी जिएँ, मोहब्बत की जिन्दगी जिएँ और यह दिखा सकें कि लोकोपयोगी जिन्दगी भी जी जा सकती है क्या ? धरती पर इसका एक नमूना बनाने के लिए हमने गायत्री नगर बसाया है और आपको दावत देते हैं कि आप अपने बच्चे को संस्कारवान नहीं बना सकते तो उसको हमारे सुपुर्द कर दीजिए। आप कौन हैं ? हम बाल्मीकि ऋषि हैं और बाल्मीकि ऋषि के तरीके से आपके बच्चों को लव-कुश बना सकते हैं। आपकी औरत को तपस्विनी सीता बना सकते हैं। दोनों संस्थाओं की वसन्त पंचमी के दिन इसीलिए स्थापना की गई है। आस्तिकता के लिए, ज्ञानयज्ञ के लिए, विचार-क्रान्ति के लिए यह एक नमूना है।

तपश्चर्या के सिद्धान्तों को प्राणवान बनाने के लिए, ज्ञान-विज्ञान के लिए, ब्रह्मवर्चस और आस्तिकता को जीवित करने के लिए, धरती पर स्वर्ग पैदा करने के लिए, हिल-मिलकर रहने और त्याग, बलिदान, सेवा की जिन्दगी जीने के लिए गायत्री नगर बसाया गया है। लोग यहाँ हमारा प्यार पाने के लिए, संस्कार पाने के लिए, आदर्श पाने के लिए, प्रेरणा पाने के लिए, प्रकाश पाने के लिए आते हैं। नैमिषारण्य क्षेत्र में शौनक और सूत का संवाद होता था। सारे ब्राह्मण बैठते थे, ज्ञान-ध्यान की बातें करते थे और लोकोपयोगी जीवन जीते थे। मेरा भी मन था कि **'एकदा नैमिषारण्ये'** के तरीके से स्नेहवश लोग यहाँ आएँ और हिल-मिलकर काम करें, प्यार की बातें करें, समाज सेवा की बातें करें, दूसरों को उठाने की बातें करें। हम एक ऐसी दुनिया बसाना चाहते हैं, ऐसा नगर बसाना चाहते हैं, जिससे दुनिया को दिखा सकें कि भावी जीवन, भावी संसार अगर होगा तो स्वर्ग जैसा कैसे बनाया जा सकेगा ? स्वर्ग में शान्ति का, परमार्थ का जीवन जीने के लिए क्या-क्या तकलीफें आ सकती हैं ? ऐसा हम गायत्री नगर का उद्घाटन करते हैं। चूँकि हमारे गुरु ने यही दिया और उसके लिए वायदा किया कि तेरा ऊँचा उद्देश्य है, तो तेरे लिए कमी नहीं पड़ेगी। मैं भी आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अगर आपके जीवन में उद्देश्य ऊँचे हों तो आपको कमी नहीं रहेगी, कोई अभाव नहीं रहेगा।

मेरी एक ही इच्छा और एक ही कामना रही है कि वसन्त पर्व के दिन आपको बुलाऊँ और अपने भीतर जो पक्ष है, उस पिटारी को खोलकर दिखाऊँ कि मेरे अन्दर कितना दर्द है ? कितनी करुणा है ? जीवन को पवित्र बनाने की कितनी संवेदना है ? कितना देवत्व है ? यही खोलकर आपको दिखाना चाहता था। अगर आपको ये चीजें पसन्द हों तो मैं चाहता हूँ कि आप इन चीजों को देखें, इनको परखें, छुएँ और अगर हिम्मत हो तो इनको खरीद ही ले जाएँ। अपने गुरु का अनुग्रह खरीदकर ले जाएँ, शान्ति खरीदकर ले जाएँ, महानता खरीदकर ले जाएँ और जो कुछ भी दुनिया में श्रेष्ठ है, वह सब खरीदकर ले जाएँ तो आप धन्य हो जाएँ। खरीदने के लिए कहाँ जाएँ ? हम देंगे आपको, जैसे हमारे गुरु ने दिया शक्तिपात के रूप में और कुण्डलिनी के रूप में। यही है आकांक्षा और अभिलाषा। हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देव-संस्कृति के दो आधार—गायत्री और यज्ञ

भारतीय संस्कृति का मूल—गायत्री महामंत्र

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

आपसे मैं यह निवेदन कर रहा था कि इस दुनिया में जो सबसे बड़ा देवता दिखाई पड़ता है, उसका नाम माता है। **"मातृदेवोभव, पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव"**—माता की बराबरी किसी से भी नहीं की जा सकती है। वह नौ महीने बच्चे को अपने पेट में रखती है, अपने रक्त से हमारा पालन-पोषण अपने पेट में करती है। जन्म लेने के बाद अपने लाल खून को सफेद दूध में परिवर्तित करके हमें पिला देती है और हमारे शरीर का पोषण करके हमें बड़ा बना देती है। माता का प्यार, दुलार, दूध तथा पोषण जिनको नहीं मिलता है, वह अपूर्ण होता है।

एक और माँ है, जिसके बारे में हम नहीं जानते हैं। जो शरीर का नहीं, बल्कि आत्मा का पोषण करती है। उसका नाम कामधेनु है। यह स्वर्ग में रहती है, जिसका दूध पीकर देवता दिव्य बन जाते हैं, सुन्दर बन जाते हैं, अजर-अमर बन जाते हैं, दूसरों की सेवा करने में समर्थ होते हैं। स्वयं तृप्त रहते हैं। सुना है कि कामधेनु स्वर्ग में रहती है। स्वर्ग में मैं गया भी नहीं हूँ, उसके बावत में कैसे कह सकता हूँ, परन्तु एक कामधेनु की बावत हम बतलाना चाहते हैं कि जो स्वर्ग में लोगों को फायदा पहुँचा सकती है, वह धरती के लोगों को भी फायदा पहुँचा सकती है। उसका नाम गायत्री है। उसी का नाम ऋतम्भरा प्रज्ञा है, दूरदर्शिता, विवेकशीलता, विचारशीलता भी है, जिसको हम भारतीय संस्कृति की आत्मा कह सकते हैं।

बीज छोटा-सा होता है, परन्तु फलों का, फूलों का, सभी का गुण उस छोटे-से बीज में सन्निहित होता है। छोटे-से शुक्राणु में बाप, दादा का पीढ़ियों का गुण समाया रहता है। इसी तरह जो भी इस संसार का दिव्य ज्ञान-विज्ञान है, वह इस छोटे-से गायत्री मंत्र के अन्दर समाविष्ट है। २४ अक्षरों वाले बीज में विद्यमान है। ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि के निर्माण की योजना बनायी तो उन्होंने सोचा कि ज्ञान एवं विज्ञान के बिना इस सृष्टि का निर्माण कैसे हो सकता है ? उन दोनों को प्राप्त करने के लिये कमल के फूल पर बैठकर बतलाते हैं कि उन्होंने हजार वर्ष तक तप किया। वह कौन-सी साधना थी ? वह गायत्री मंत्र की उपासना एवं साधना थी। जो सफलता एवं सामर्थ्य उन्हें प्राप्त हुई वह कौन-सी थी ? वह मित्रो ! गायत्री मंत्र की थी जो उन्होंने प्राप्त किया था। ब्रह्माजी ने उस गायत्री मंत्र को चार टुकड़ों में बाँटकर चार वेदों का निर्माण कर दिया।

'ॐ भूर्भुवः स्वः' से ऋग्वेद बनाया गया।

'तत्सवितुर्वरेण्यं' से यजुर्वेद बनाया गया।

'भर्गो देवस्य धीमहि' से सामवेद बनाया गया।

'धियो यो नः प्रचोदयात्' से अथर्ववेद बनाया गया।

वे वेद जो हमारे सारे के सारे धर्म एवं संस्कृति के बीज हैं। इन चारों के चारों वेदों में वेदमाता गायत्री का ही वर्णन है। वेद उनसे ही पनपे हैं, उसी गायत्री मंत्र का जिसका हम प्रचार करते हैं। जिसके लिये हमने अपना जीवन समर्पित कर दिया। वह शानदार बीज मंत्र है। ब्रह्मा जी ने तप करके इसके द्वारा सृष्टि को बनाया। इसका तत्त्वदर्शन एवं व्याख्यान सर्वसाधारण की समझ में नहीं आयेगा, यह समझकर ऋषियों ने गायत्री मंत्र के २४ अक्षरों से भगवान् के अवतारों की तुलना की। एक-एक अवतार-गायत्री मंत्र के एक-एक अक्षर की व्याख्या है। गायत्री मंत्र का स्वरूप-सामर्थ्य क्या है ? उसका जीवन में उपयोग किस परिस्थिति में हम किस तरह करें ? यह जानकारी देने के लिये ऋषियों ने २४ अवतारों की रचना की तथा २४ पुराणों का निर्माण किया। भगवान् दत्तात्रेय के २४ गुरु थे। यह गायत्री मंत्र के २४ अक्षरों से ही उनको ज्ञान मिला था। महर्षि बाल्मीकि की बाल्मीकि रामायण में २४००० श्लोक हैं, उसमें उन्होंने गायत्री मंत्र के एक-एक अक्षर का सम्पुट लगाकर व्याख्या की है। श्रीमद्भागवत् में भी इसी गायत्री मंत्र के सम्पुट लगा करके श्लोक बनाये गये। 'परम धीमहि' 'यानी कि इसमें 'धीमहि' की ही व्याख्या है। देवी भागवत् पूर्ण रूप से गायत्री मंत्र की ही व्याख्या है। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत आपको जो भी दिखाई पड़ता है, वह वास्तव में विशुद्ध रूप से गायत्री मंत्र का ही वर्णन है। यह बहुत शानदार है। ऋषियों ने इसकी महत्ता-उपयोगिता समझी तथा उन्होंने सभी लोगों से कहा कि आप सब कुछ भूल जाना, परन्तु इस माता को मत भूलना। माँ को हम किसी तरह न भूलें।

इनसान का एक और शरीर है—'विचारणा'–विचार की भूमिका के रूप में, मस्तिष्क के ऊपर शिखा के रूप में, अंकुश के रूप में गायत्री मंत्र विद्यमान है। हर इनसान जब अपने सिर पर हाथ फेरता है तो उसे माँ की याद आ जाती है। यह चिद्रूपिणी है, महामाया है। एक अंकुश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हाथी के ऊपर होता है, मनुष्य के मन पर, विचारणा के ऊपर भी अंकुश होना चाहिए। यह गायत्री माता अंकुश के रूप में सिर के ऊपर विद्यमान है। मनुष्य के ऊपर ऋषियों ने गायत्री के रूप में शिखा की स्थापना करके यह बतलाया कि आप हमेशा विचार करते समय, बोलते समय, यह ख्याल रखना कि हमारे ऊपर अंकुश लगा हुआ है। हमें मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

यज्ञोपवीत हिन्दू धर्म का मुख्य संस्कार है। शिखा मस्तिष्क पर तथा कन्धे पर जनेऊ, ये दोनों ही गायत्री के प्रतीक हैं। गायत्री की तीन व्याहृतियाँ-जनेऊ की तीन लड़ें हैं। ९ धागे गायत्री मंत्र के ९ शब्द हैं। इसका मतलब है—सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए तथा मर्यादा में रहना चाहिए। हर हिन्दू के लिये ये दो चीजें अनिवार्य मानी गयी हैं। यह क्या है ? यह है गायत्री मंत्र। हमें दो बार संध्या करनी चाहिए। मुसलमान पाँच बार नमाज पढ़ते हैं। आप मनमर्जी नहीं कर सकते। आपको इस मंत्र का दो बार अवश्य जप करना चाहिए, इसे गुरुमंत्र कहा गया है। गुरुमंत्र कैसा ? प्रारम्भ में जब गुरु किसी बच्चे को शिक्षण करता था तो वह उसकी सादी स्लेट में इसी मंत्र को लिखकर उसके ऊपर बच्चों को हाथ फेरने के लिये कहते थे, साथ ही साथ उसका उच्चारण भी कराया जाता था। इसीलिये इसे गुरुमंत्र कहा गया।

हिन्दुओं का गुरुमंत्र एक है। मुसलमानों का गुरुमंत्र एक है, जिसे हम कलमा कहते हैं। ईसाई का गुरुमंत्र एक है, जिसे बपतिस्मा कहते हैं।

उस अन्धकार युग को क्या कहें, जिसमें हमने आर्थिक क्षेत्र, राजनैतिक आजादी, कला, वैभव सब कुछ खो दिया। इतना ही नहीं हमने अपने माता की पहचान खो दी। माता की पहचान जिन बच्चों को नहीं होती है तो उन बच्चों की मिट्टी पलीद हो जाती है। कैसे मिट्टी पलीद हो गई ? हमारी बहुत मिट्टी पलीद हो गई। हमें जिससे आत्मा का परिपोषण, प्यार मिलता था, उस माँ को हम भूल गये। उसे ग्रहण करके हम देवमानव कहलाते थे। हम समर्थ, प्रतिभाशाली थे तथा विश्व के सिरमौर थे। हम सुसंस्कृत कहलाते थे और उसे हम सारे विश्व में बाँटते रहते थे। अमेरिका से लेकर पेरू तक न जाने कहाँ-कहाँ सारे विश्व में बाँटते रहते थे। अमेरिका कोलम्बस का, निग्रोज का, आदिवासियों, रेडइण्डियन का बसाया हुआ नहीं है, बल्कि यह भारतियों का बसाया हुआ था। वहाँ सूर्य मंदिर पाया गया है, जिसका अर्थ यह है कि वे गायत्री उपासक थे। वहाँ भारतीय कलेण्डर इतना सुन्दर पाया गया है, जितना सुन्दर कलेण्डर भारत में भी पाया नहीं जा सकता। यह क्या है ? भारतीय सभ्यता थी। ऐसी संस्कृति थी भारत की, जिसका मूल था गायत्री मंत्र, गायत्री माता जिसे हम भूल गये। अन्धकार के समय क्या होता है ? चोर, उचक्के, उल्लू, साँप, बिच्छू, चमगादड़ चलते हैं। सब कुछ रात के समय होता है। झाड़ियाँ रात में डरावनी बन जाती हैं। रात के समय हम रास्ते पर चलते हैं तो हमें ठोकरें लग जाती हैं। हम दो हजार वर्ष तक अन्धकार में भटकते रहे तथा हमने माँ को भी त्याग दिया। किसकी बतलाएँ कि किसने कहा—इस माँ को त्यागने के लिये ? गायत्री मंत्र जो सूर्य की तरह, धरती और हवा की तरह है, जो सबका है। पहाड़ सबका है, लेकिन हमें लोगों ने बतलाया कि मनुष्यों के चार वर्ण होते हैं। उसमें से एक वर्ण को ही इसका अधिकार है अर्थात् तीन-चौथाई इससे वंचित रह गये। इसके अतिरिक्त यह भी कहा गया कि इसके लिये महिलाओं का अधिकार नहीं है अर्थात् ७/८ भाग का ही गायत्री मंत्र है। इसके बाद एक और स्वामी जी आये। उन्होंने कहा गायत्री मंत्र पर ब्रह्माजी का शाप लगा है, इसे कलियुग में नहीं जपा जा सकता है। एक और पंडित जी आये और उन्होंने कहा कि विश्वामित्र और वशिष्ठ ने शाप दे दिया है और गायत्री मंत्र को कीलित कर दिया है। हमने पूछा कि ब्रह्माजी जिन्होंने एक हजार वर्ष तक तप किया, वे कैसे शाप दे सकते हैं ? हमने पूछा कि विश्वामित्र वे ऋषि हैं, जिन्होंने गायत्री के ऊपर पी-एच. डी. की, उसे वह कैसे शाप दे सकते हैं ? एक आदमी हमारे ऊपर भी पी-एच. डी. कर रहा है, इस समय विदेश गया हुआ है, वह जबलपुर यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर है। एक पंडित जी हमारे पास आये, उन्होंने कहा कि यह गायत्री मंत्र कान में कहने का मंत्र है। हमने कहा कि अच्छी बातें तो खुलेआम बतलायी जाती हैं। अगर चोरी, बेईमानी, लंपटगीरी की बात हो तो कान में कही जाती है। इस तरह अन्धकार के युग में न जाने क्या-क्या होता रहा ? चालाक बाबाजी अपने-अपने नाम के मजहब, पंथ बनाते चले गये। इस प्रकार लोग भ्रमित होते चले गये और इस प्रकार भारतीय संस्कृति का मूल नष्ट हो गया, छिन्न-भिन्न हो गया। हर जगह अलगाव की स्थिति, विपन्नता की स्थिति बन गई।

आज ईसाइयों में, मुसलमानों में, सिक्खों में एकरूपता अभी भी है, परन्तु टुकड़ों में कर दिया लोगों ने हिन्दू समाज को, इतना ही नहीं तहस-नहस कर दी भारतीय परम्परा को। इस समय सब बिखर गया है। परन्तु अब अन्धकार समाप्त होने जा रहा है। सूर्य उदय होने जा रहा है। सूर्य निकलने के समय चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं। मोर नाचते हैं। कमल का फूल खिलने लगता है, फूलों में खुशी मालूम पड़ती है। हवा ठंडी चलने लगती है। हर आदमी में एक जोश मालूम पड़ता है। रात की नींद खत्म हो जाती है। चोर, बिच्छू, साँप, चमगादड़ भाग जाते हैं। हमें विश्वास है कि अब हमारे मुल्क का, भाग्य का, संस्कृति का पुनः सूर्य उदय होने वाला है। गायत्री मंत्र को पुनः घर-घर पहुँचाना सम्भव हो सकेगा। वह जो हमारी रीढ़ की हड्डी थी, उसे पुनः जोड़ देने का काम होने वाला है।

दिल्ली में एक बार महात्मा गाँधी ने जामियामिलियाँ यूनिवर्सिटी में आधा घंटे का भाषण दिया। उसमें उन्होंने केवल गायत्री मंत्र पर ही व्याख्यान दिये। उसके समापन पर सारे मुसलमान गाँधी जी पर नाराज हो गये तथा यह कहा कि यह तो हिन्दुओं का मंत्र है। यहाँ पर तो आपको

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और बातें करनी थी। गाँधी जी ने कहा कि यह हिन्दुओं का नहीं, बल्कि विश्वमानव का मंत्र है। यह पादरी का मंत्र नहीं है। यह ऋतंभरा प्रज्ञा, दूरदर्शिता, विवेकशीलता का मंत्र है। यह भीतर के सोई हुई मानवता को जगाने का मंत्र है। हम भी ऐसा ही मानते हैं। हमें ऐसा मालूम पड़ता है कि हमने खोयी हुई संस्कृति को पुनः पा लिया है। ऐसा लगता है कि साँप की मणि जो खो गयी थी, उसे पा लिया है। हमने सुना है कि किसी हाथी के सिर पर गजमुक्ता रहता है। जब तक वह हाथी के ऊपर रहता है तो वह मस्त रहता हैं, परन्तु जैसे ही वह खो जाता है या चला जाता है तो हाथी पागलों की तरह हो जाता है। हाथी की बात, साँप की बात तो मैं नहीं कह सकता हूँ, परन्तु मनुष्य की, भारतीय संस्कृति की बात कह सकता हूँ, जिसके भीतर कामधेनु जैसी शक्ति थी। उसे भुला दिया गया तथा आज साँप तथा हाथी की तरह से हम मणिहीन व कमजोर हो गये तथा दीन-हीन हो गये। हम फिर से उस प्रातःकालीन सूर्य को नमस्कार करते हैं, जो हमारी चीजों को दिखाता है। हमने अपने संस्कृति के स्वरूप को फिर से समझने की कोशिश की है।

गायत्री मंत्र एक फिलॉसफी है। इसे हम जीवन जीने की कला कह सकते हैं। यह सोचने का एक तरीका है, जीवन-यापन करने की एक पद्धति है, समाज के गठन का तरीका है, विश्व की शांति का एक मूल मंत्र है। अगर हम इसे अपनाकर चलेंगे तो हम अच्छी दुनिया की कल्पना कर सकते हैं। अच्छी दुनिया हमें फिर देखने को मिल सकती है, जैसा कि प्राचीनकाल में देखने को मिलता था। गायत्री एक दिव्य ज्ञान है। इसे देवमाता कहते हैं। इसकी उपासना से मनुष्य देवता बन जाता है। इसको विश्वमाता भी कहते हैं। मित्रो ! यह हम गायत्री के फिलॉसफी की व्याख्या कर रहे हैं, जिसे आपको जानना चाहिए। अगर इसे हम समझ गये तथा उस रास्ते पर हम चलने का प्रयास कर सके तो हमारा जीवन धन्य हो सकता है।

मित्रो ! एक और चीज हम आपको बतलाना चाहते हैं, जो गायत्री की फिलॉसफी नहीं है, वह गायत्री का साइन्स है। हमारे भीतर ऐसी-ऐसी शक्तियाँ भरी पड़ी हैं, अगर उसे हम जगा सकें तो सारी महत्त्वपूर्ण चीजों को हम प्राप्त कर सकते हैं। अगर एक को भी जगाया जा सके तो साधारण इनसान भी देवता बन सकते हैं। इनसान ही देवता, भगवान होते रहते हैं। श्रीकृष्ण, भगवान रामचन्द्र जी इनसान के रूप में पैदा हुए एवं भगवान बन गये। इनसान उसे कहते हैं जो जन्म लेता है तथा मरता है। श्रीरामचन्द्र जी रामनवमी को जन्म लिये थे तथा मारे गये। श्रीकृष्ण भगवान् जन्माष्टमी को जन्म लिये फिर मारे भी गये। ये इनसान से देवता और भगवान बने। आप भी बन सकते हैं अगर अपनी सोई हुई शक्ति को आप जगा लें।

इनसान के भीतर ऐसी-ऐसी शक्ति भरी पड़ी है, अगर आप उसे जगा सकते हैं तो आप ऋषि हो सकते हैं, महामानव हो सकते हैं। जार्ज वाशिंगटन हो सकते हैं, गाँधी हो सकते हैं, नैपोलियन, विवेकानन्द हो सकते हैं। गायत्री मंत्र की इसी महानता के कारण हमने गायत्री उपासना के द्वारा गायत्री की फिलॉसफी को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। यह गायत्री की साइन्स है। हमने अपने जीवन में गायत्री की फिलॉसफी तथा गायत्री का साइन्स दोनों को समझाने का प्रयास किया है और प्रयास में सफलता प्राप्त की है। उसके बाद आप लोगों के सामने हाजिर हुआ हूँ, ताकि आप लोगों को भी उसकी फिलॉसफी तथा साइन्स को बतलावें। अगर इस रास्ते पर आप चलेंगे तो आप अपना भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों के दोनों जीवन बड़े शानदार बना सकते हैं। दोनों ही जीवन हमारे लिये आवश्यक हैं। आध्यात्मिक जीवन हमारा प्राण है तथा भौतिक जीवन हमारा शरीर है। इन दोनों का महत्त्व है। अगर दोनों अलग हो जाएँगे तो हम मृत बन जाएँगे। अतः हमें दोनों को मिलाकर चलना होगा। गायत्री मंत्र वह महामंत्र है, जो मनुष्य की दोनों तरह की उन्नति करने में समर्थ है। मैं चाहता था कि आप लोगों को भौतिक, आध्यात्मिक उन्नति करने का मौका मिल जाए।

साथियो ! गायत्री मंत्र के बारे में हमने सब कुछ बतला दिया है। गायत्री मंत्र की उपासना, अनुष्ठान सब बातें बतला दी हैं। इस प्रकार हमने सब बतला दिया है, लेकिन जो वजनदार चीजें अभी तक आपको नहीं बतला पाया हूँ, वह है गायत्री माता की विशेषता। वह क्या विशेषता है ? बच्चे को कीमती चीजें माँ नहीं देना चाहती है, क्योंकि उसकी पात्रता नहीं है। बच्चे को वह छोटी चीजें ही देती है। उनको छोटी चीजें दी जाती हैं। बच्चा कहता है कि पिताजी हमें बहू मँगा दीजिये। पाँच साल के गणेश को उसके पिता खिलौना वाली बहू लाकर दे देते हैं। बहू कब आती है, जब गणेश २५ साल का हो जाता है। उसी योग्यता-क्षमता जब हो जाती है। वह जब वयस्क हो जाता है, अपनी पत्नी का भार उठा सकता है, उसे खाना खिला सकता है तो विवाह होता है। जिम्मेदारी का भार उठाने लायक हो जाता है, तो उसकी शादी हो जाती है। रमेश अपने पापा से आलमारी की चाबी माँगता है तो उसके पापा कहते हैं कि क्या करेगा चाबी का ? तो वह कहता है कि टॉफी लाऊँगा तथा सभी को बाँटने का प्रयास करूँगा। अच्छा तू टॉफी लायेगा। रमेश की माँ जरा चाबी को सँभालकर रख, नहीं तो यह पैसे का कबाड़ा कर देगा। रमेश को बहुत प्यार करते थे उसके माँ-बाप, परन्तु वह तब तक जिम्मेदार नहीं बना था, इस कारण से उसे लोग चाबी नहीं दे रहे थे। मैं चाहता हूँ कि आप लोग भी जिम्मेदार-मैच्योर हो जाएँ। जब हमने इस स्थिति को प्राप्त कर लिया तो हमारे गुरु ने सब चीजें दे दीं। आप जरा मैच्योर हो जाएँ। देवता उसे ही देते हैं, जो मैच्योर हो जाते हैं। आपकी पात्रता, योग्यता पर विचार करते हैं। एक दिन रमेश ने अपनी पिताजी से कहा कि जो पिस्तौल रखे हैं, वह आप मुझे दे दें। पिताजी ने पूछा कि तू क्या करेगा, तो उसने कहा कि हम स्कूल ले जाएँगे तथा जो हमें चिढ़ायेगा उसे बारी-बारी से पिस्तौल से निशाना बना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

देंगे। अच्छा तू सब बच्चों को मार देगा। रमेश की माँ जरा इसे ठीक से रख। अरे यह रमेश की बात नहीं है, आपके बावत कह रहा हूँ। अगर यह चीज आपको मिल जाएगी तो उसे आप करेंगे क्या ? इसका जवाब हमें दीजिए। देवताओं का वरदान ऐयाशी के लिए, मजा उड़ाने के लिए नहीं है। शराबखोरी के लिए नहीं है। यह किसी खास काम के लिए मिलता है। अगर आपको देवताओं से वरदान प्राप्त करना है तो आप उनकी बिरादरी का बनें। अध्यात्म के रास्ते पर चलना चाहते हैं, देवताओं से कुछ प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको मैच्योर होना पड़ेगा उसके बिना काम नहीं बनेगा।

मैच्योर किसे कहते हैं ? जो अपनी जिम्मेदारी को समझता है। पहले रमेश नंगा हो जाता था। अब वह बड़ा हो गया है। २५ साल का हो गया है। धोती के अन्दर अण्डरवीयर पहनता है। आप अपनी जिम्मेदारी समझते हैं या नहीं ? आप इनसान की जिम्मेदारी समझते हैं या नहीं ? आप अगर जिम्मेदारी समझते हैं तो आपको चरित्रवान् होना चाहिए, अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। चिन्तनशील होना चाहिए तब आप मैच्योर कहे जाएँगे। पहले रमेश को आठ आने पैसे मिलते थे। वह बाजार में जाकर रबड़ी चाटकर फेंक देता था। अब रमेश को ६००/- रुपए पेमेन्ट मिलता है। उसकी शादी हो गई है, वह पैसे फेंकना नहीं चाहता है। वह यह सोचता है कि हम अपनी औरत की साड़ी कैसे ला सकते हैं ? घर की व्यवस्था कैसे ठीक कर सकते हैं ? कहने का मतलब यह कि अब वह मैच्योर हो गया है। पहले वह आठ आने की रबड़ी खाता था। अब वह एक चम्मच केवल चाय में दूध डालकर संतोष कर लेता है। उसे मालूम है कि हमारे बच्चे हो गए हैं। वह अगर अपने बच्चे को पीने को मिल जाए तो बच्चों का स्वास्थ्य ठीक हो सकता है, क्योंकि हमारे बच्चे अगर आज कमजोर हो गये तो आगे काम नहीं कर पायेंगे। इसलिए इन्हें दूध आवश्यक है।

मित्रो ! रमेश मैच्योर हो चुका है, उसे अपनी जिम्मेदारी महसूस होने लगी है। माँ-बाप-पत्नी, बच्चे, बहिन, भाई सबकी वह व्यवस्था बनाता है। रमेश बहुत किफायत से रहता है। धोबी के पैसा बचाता है। उसने फिजूलखर्ची बन्द कर दिया है। यानी वह मैच्योर हो गया है। आप भी जिस दिन मैच्योर हो जाएँगे अपनी जिम्मेदारी समझने लगेंगे अर्थात् यह मानवीय जिम्मेदारी होगी। आपके साथ इनसानियत के फर्ज जुड़े हुए हैं। अतः आपको एक अच्छा नागरिक होना चाहिए। आपको चिन्तनशील होना चाहिए। आपको अपने फर्ज एवं कर्त्तव्यों से जुड़ा हुआ होना चाहिए। आप जब सज्जन, शरीफ होंगे तभी ही आप अध्यात्मवादी बन सकते हैं। नाबालिग वे हैं, जो सिनेमा देखते हैं, शराब पीते हैं तथा अनाप-सनाप पैसे इधर-उधर लगाते रहते हैं। मैच्योर वे हैं जो अपनी जिम्मेदारी समझते हैं तथा फिजूलखर्ची नहीं करते हैं।

आध्यात्मिकता जीवन जीने की शैली का नाम है। जादूगरी का नाम नहीं है जैसा कि आप समझते हैं। अगर जादूगरी सही होती तो इसे दिखाने वाले रास्ते पर भीख नहीं माँगते, वह तो करोड़पति हो जाते। अध्यात्मवादी वह है जो यह समझता है कि हमें प्राप्त चीजों को कहाँ खर्च करना है, किस प्रकार खर्च करना है ? यह गायत्री मंत्र की विशेषता है, जिसके आधार पर हमारे मंत्र सफल होते चले गये तथा हम भी प्रगति की ओर बढ़ते चले गये। हमने गायत्री मंत्र की उपासना पूरी श्रद्धा-निष्ठा के साथ २४ साल केवल जौ की रोटी एवं छाछ खाकर की है। हमने इन दिनों में यह नहीं जाना कि गेहूँ किसे कहते हैं, नमक एवं शक्कर किसे कहते हैं ? हमने गायत्री मंत्र की उपासना अवश्य की है, परन्तु हमारे बॉस तथा हमारे बीच एक एग्रीमेण्ट है। क्या एग्रीमेण्ट है ? पहला यह कि आप नेक इनसान की तरह जीवन जीने का प्रयास करेंगे। हमने नेकी तथा शराफत के आधार पर जीवन जीने का प्रयास किया है। हमने ब्राह्मण तथा संत की तरह जीवन जीने का प्रयास किया है। ब्राह्मण किसे कहते हैं ? जो किफायतसारी जीवन जीता है। संत किसे कहते हैं ? जो दयालु होता है। जिसके हृदय में करुणा एवं दया होती है। जो दूसरे के दुःखों को समझते हैं। दूसरों के दुःखों को मिटाने के लिये जिसके मन में से उमंगें उठती हैं। उसे संत कहते हैं।

ब्राह्मण एवं संत भगवान से बड़े होते हैं। नारद भगवान से बड़े थे। उनको बहुत अधिकार प्राप्त थे। महर्षि शृंगी ने पुत्रेष्ठि यज्ञ कराया था। उसके कारण चार भगवान् राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न पैदा हुए थे। संत, ब्राह्मण की शक्ति बहुत महान् होती है। वह भगवान् से बड़े होते हैं। राजा परीक्षित को एक ब्राह्मण ने शाप दिया था कि यही साँप आज से सातवें दिन आपको काट खायेगा। मित्रो ! आप समझते नहीं हैं कि मैच्योर होना किसे कहते हैं ? इसे ब्राह्मण जीवन एवं संत जीवन कहते हैं अर्थात् चरित्रवान् जीवन एवं उदार जीवन। आप ब्राह्मण हैं कि नहीं, यह मैं नहीं जानता हूँ। बहुत-से जाति के ब्राह्मण हैं, परन्तु वे जूते का व्यापार करते हैं। हम किसी को जाति से ब्राह्मण नहीं मानते हैं। आपका कर्म, रहन-सहन ब्राह्मण का है या नहीं, यह मैं जानना चाहता हूँ। व्यक्ति वंश, वेश से ब्राह्मण एवं संत नहीं हो जाता है। अगर आपका जीवन उदार है, दूसरों के दुःखों को देखकर आपका मन द्रवित होता है तो आप ब्राह्मण एवं संत हैं।

गायत्री मंत्र की उपासना बीज लगाने के बराबर है। परन्तु बीज लगाने के बाद उसमें पानी डालना पड़ता है। बिना इसके वह फलेगा-फूलेगा नहीं। आप किसान हैं तो बीज लगाइये, खाद डालिये एवं पानी लगाइये। आप मनुष्य हैं तो आपको भोजन के साथ पानी एवं हवा भी चाहिए, इसके बिना आप जिन्दा नहीं रह सकते हैं। भजन आप करते हैं तो इसके साथ दो चीजें जुड़ी हैं—(१) चरित्रवान् जीवन-ब्राह्मण, (२) संत जीवन-जो खाता नहीं खिला देता है। झरना पानी देता रहता है और ऊपर से उसे पहाड़ों से पानी मिलता रहता है। बादल बरसते रहते हैं, पुनः धरती से उड़कर बादल बनते रहते हैं। नदियाँ अपना पानी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समुद्र को देती हैं, उससे बादल बनते हैं और वह धरती को देता है। धरती नदी को, नदी समुद्र को देती है। यह क्रम चलता रहता है, इसे कोई तोड़ नहीं सकता है।

गायत्री उपासना के तीन चरण होते हैं यानी कि तीन फायदे हैं। हमने तीनों फायदे उठाये हैं। (१) आत्म-संतोष—आत्मा हमारी बहुत प्रशंसा करती रहती है। दुनिया आपकी प्रशंसा करे तो आपको क्या फायदा है ? जीवात्मा अगर प्रशंसा करे तो आपको फायदा होगा। इसी का नाम आत्मसंतोष है। आत्मा अगर यह कहती है कि आप बहुत सुन्दर हैं, सुन्दर काम कर रहे हैं तो यह प्रसन्नता की बात होगी। हमारे से ज्यादा खुश इस दुनिया में शायद ही कोई मिलेगा। हमारे देवता हमारे चेहरे पर छाये रहते हैं। मनहूस वह आदमी है, जो जलते रहते हैं तथा जलाते रहते हैं। भूत वह होते हैं जो जलती हुई जिन्दगी, जलाती हुई जिन्दगी जीते हैं। उल्टे काम करती हुई जिन्दगी, हैरान होती जिन्दगी जो जीते हैं, वह बेकार के आदमी होते हैं। आपको खुशी की जिन्दगी, मस्ती की जिन्दगी जीना चाहिए। हम चाहते हैं कि आप वेदमाता का दूध पिएँ तथा हँसती-हँसाती हुई जिन्दगी, मस्ती की जिन्दगी, प्रकाशवान जिन्दगी जीएँ। आपका रास्ता खुला है। एक रास्ता सिद्धि का है एवं सम्मान का है। अगर आपने सेवा करते हुए सम्मान पाया है तो आपको सहयोग भी मिलेगा। हम हर जगह जाते हैं तो हर जगह सहयोग भी पाते हैं तथा सम्मान भी पाते हैं। आप भी पा सकते हैं। गाँधी जी ने सहयोग भी पाया था, सम्मान भी पाया था। विनोबा ने भी दोनों चीजें पायीं। जनता जिनको सम्मान देती है, उनको सहयोग भी देती है। आपको अपनी बीबी ने, बच्चों ने भी सहयोग नहीं दिया है। हमें तो उन लोगों ने सहयोग दिये हैं जो न हमारे मित्र हैं, न बेटे हैं, न रिश्तेदार हैं। क्यों बरसता है यह सब ? क्योंकि हमने अध्यात्म को अपने जीवन में अपनाया है। हम एकनिष्ठ हैं। हमने एक इष्ट बनाकर रखा है, पर आपने तो शंकर जी, गणेश जी न जाने कितनों को इकट्ठा कर लिया, पर अपना इष्ट एक भी न बना सके।

हमारा सहयोग जनता ने दिया, हमारा सहयोग जीवात्मा ने दिया जो अन्दर बैठा है। हमको संतोष मिला। देवताओं ने हमें अनुग्रह दिया है। हमने एक किलो कमाया है तो वह देवताओं का अनुग्रह है। हमारे बॉस, हमारे गुरु, हमारे भगवान ने दिया है। हमने कितने लोगों की आँखों के आँसुओं को पोंछा है। मालूम है उसमें कितना तप खर्च होता है ? यह हमें हमारे बॉस भगवान से, बैंक से मिलता है एवं हम खर्च करते रहते हैं। हमारा भगवान हमारे साथ पायलट की तरह से चलता है, हमारा भगवान हमारे साथ बॉडीगार्ड की तरह से चलता है। हमारा भगवान हमारा रथ चलाता है। हमारा भगवान बहुत अनुग्रह करता है, कृपा देता रहता है। हमारा भगवान हमारे हाथ-पैर के रूप में चलता है। हम बहुत हिम्मत एवं साहस के साथ चलते हैं। मस्ती के साथ चलते हैं। आप भी चल सकते हैं। गायत्री माता आपको भी रास्ता दिखाती रहेगी। हम जिस रास्ते पर चले हैं, वह बहुत शानदार एवं सुन्दर है। भगवान करें आप भी उस रास्ते पर चलें। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत एक ही उपासना है और वह है गायत्री मंत्र की। जिसकी उपासना हमारे पूर्वजों ने, ऋषियों ने की थी उसे हमने फिर से प्रारंभ किया है। हमने जगह-जगह शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों के माध्यम से इसी मंत्र को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। उसका उद्घाटन करने हम जा रहे हैं। हमें २-४ वर्ष और जीना है, इस बीच हम जन-जन तक इस मंत्र को पहुँचा देना चाहते हैं। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

गायत्री महामंत्र की सामर्थ्य

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

नन्हा-सा बीज विकसित होने के बाद बन जाता है विशाल वृक्ष। बरगद का जरा-सा बीज होता है छोटा-सा, लेकिन आपने देखा होगा जब वह विकसित होता है फैलता-फूलता है; तब यह कितना बड़ा विशाल वृक्ष बन जाता है। छोटी चीजें विकसित होती चली जाती हैं। माइक्रोफिल्म एक छोटी-सी डिब्बी में होती है और कितनी बड़ी-बड़ी पुस्तकों-ग्रन्थों का सारे का सारा हवाला एक छोटी-सी फिल्म में भरा होता है। आदमी का सारा का सारा जिस्म एक छोटे-से शुक्राणु के भीतर जमा हुआ रहता है। हमारी ये वंश परम्पराओं के इतिहास एक छोटे-से जीन्स के भीतर बैठे रहते हैं; जो हमको दिखाई भी नहीं पड़ते। इतने छोटे जीन्स होते हैं, इनके अन्दर न जाने कितनी पीढ़ियाँ भरी पड़ी होती हैं। एटम छोटा-सा होता है और एटम के भीतर भी बहुत सारे हिस्से होते हैं। उसके भीतर सारे के सारे सौरमण्डल का नक्शा छिपा हुआ पड़ा रहता है। सौरमण्डल नहीं, पूरा ब्रह्माण्ड किस ढंग से बनाया हुआ है ? किस स्टाइल से चल रहा है। सौर-मण्डल में ग्रह-नक्षत्रों के बीच में आपस के तालमेल कैसे हैं, यह छोटे-से छोटे हिस्से में आपको देखने का मन हो तो आप एक छोटे से एटम को देख सकते हैं और एटम के वर्गों का विश्लेषण करके जान सकते हैं कि ब्रह्माण्ड कैसा होना चाहिए।

भारतीय धर्म और संस्कृति को आपको देव-संस्कृति और देवधर्म कहना चाहिए। इसका अगर वास्तविक स्वरूप आपको छोटे रूप में देखना हो, विशाल रूप में देखने का हो तब तो मैं नहीं कह सकता, पर **"अणोरणीयान् महतो महीयान्"** वृहत् रूप में देखने का हो तो बात अलग है, तब तो आपको विस्तार में ही जाना पड़ेगा और ज्यादा जानकारी प्राप्त करनी होगी। लेकिन अगर आपका मन ऐसा हो कि संक्षेप में ही हमको बता दीजिए, थोड़े में ही बता दीजिये तो सूत्र रूप में ही भारतीय धर्म और संस्कृति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

को आपको समझाया जा सकता है। उसका रहस्य और सामर्थ्य जहाँ छुपी पड़ी है, उसकी जानकारी कराई जा सकती है। पाणिनि का व्याकरण बड़ा विशाल है। संस्कृत का यह ग्रामर दुनिया में सबसे ज्यादा बड़ा और विस्तृत है, लेकिन ये छोटा-सा है। कितना बड़ा है ? इस व्याकरण के आठवें अध्याय के प्रारंभिक सूत्र में यह बताया गया है कि शंकर भगवान् ने डमरू बजाया और डमरू बजाने के बाद चौदह सूत्र निकले, चौदह आवाजें निकलीं। बस इन्हीं चौदह आवाजों की व्याख्या करते हुए ऋषियों ने, पाणिनि ने और दूसरे शास्त्रकारों ने यह व्याकरण शास्त्र, भाषा शास्त्र, संस्कृत शास्त्र, निरुक्त और दूसरी चीजों को बना कर रख दिया है। चौदह सूत्र थे जब डमरू बजाया था तब उसमें से आवाजें निकली थीं। छोटी-सी चीज थी वह, और उसका बहुत बड़ा विस्तार हो गया।

मैं यह कह रहा था कि भारतीय संस्कृति वह संस्कृति है, जिसे देव-संस्कृति कहना चाहिए, जिसको ऋषि-संस्कृति कहना चाहिए। जिसने केवल हिन्दू समाज को नहीं, केवल हिन्दू धर्म को नहीं, इस भारत भूमि के छोटे-से जमीन के हिस्से को ही नहीं, सारे संसार को ज्ञान दिया। सारे संसार को विज्ञान दिया। सारे संसार को जानवर से भगवान बनाने तक के सारे रास्ते खोल करके साफ किए। इतनी बड़ी यह संस्कृति आखिर कहाँ से आती है ? यह आती है—गायत्री महामंत्र से। गायत्री मंत्र छोटा-सा बीज मंत्र है। छोटा-सा, नन्हा-सा बीज मंत्र है, इसी में से सारा का सारा विस्तार होता हुआ चला गया है। अगर आप बीज को समझ पाये तो अपने विस्तार को समझने में कोई कठिनाई आपको नहीं होनी चाहिए। गंगोत्री से गंगा जरा-सी निकलती है, गंगोत्री से नहीं गोमुख से। आप लोगों में से जो कोई भी गोमुख गए होंगे, मैं गोमुख गया हूँ और वहाँ देखा है, जहाँ से पानी का बहाव निकलता है। फायर ब्रिगेड की धार की तरह से कैसे छह फुट लम्बा और पाँच-छह फुट चौड़ा इतना बड़ा सुराख है ग्लेशियर में, वहीं से पानी की धार निकलती है। छोटी-सी धार गोमुख से निकलती है और फैलते-फैलते गंगासागर में पहुँचते-पहुँचते सहस्र धाराएँ बन जाती हैं। गाँव-गाँव में आप गंगा को देख सकते हैं। सब जगह देख सकते हैं। पटना में अगर आप जाएँ तो लम्बा वाला गंगा का चौड़ा वाला विस्तार देख सकते हैं। यहाँ से बिहार में सोनपुर आप जाएँ तो गंगा का विस्तार आप देख सकते हैं। शुरुआत जहाँ से हुई थी—छोटी-सी हुई थी, लेकिन धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते न जाने कहाँ जा पहुँची ? और गायत्री मंत्र से निकलने वाली भारतीय संस्कृति न जाने फैलते-फैलते कहाँ जा पहुँची है ? इतना ज्यादा विस्तार हो गया है। धर्म-ग्रन्थों के रूप में, उपासनाओं के रूप में, ज्ञान और विज्ञान के रूप में।

ज्ञान का पक्ष गायत्री का कौन-सा है ? यह भारत के सारे के सारे फिलासफी और तत्त्वज्ञान और ब्रह्म-विज्ञान से जुड़ा हुआ है। यह उसका ज्ञानपक्ष है। ज्ञानपक्ष में क्या आता है ? ज्ञानपक्ष में वेद आते हैं। वेद कैसे ? आपको पुराणों की कथा शायद मालूम नहीं है। पुराणों की कथा है कि ब्रह्मा जी विष्णु की नाभि से निकले कमल के फूल से पैदा हुए। ब्रह्मा जी बैठे हुए थे, विचार कर रहे थे कि अब हमें क्या करना चाहिए और हमने किसलिए जन्म लिया है ? आकाश से आकाशवाणी होती है, आकाशवाणी से गायत्री मंत्र दिया जाता है, आकाशवाणी से संदेश आता है कि इस मंत्र की आपको उपासना करनी चाहिए। इससे आपको ज्ञान मिलेगा और विज्ञान मिलेगा। इसके आधार पर आपके जिम्मे जो दो काम सौंपे गए हैं, उन दोनों कामों को आप पूरा करने में समर्थ हो सकेंगे। विज्ञान वाला भाग वह है, जिसके आधार पर ब्रह्माजी ने सारी सृष्टि को बनाया। मैं यह पुराण की कथा कह रहा हूँ। सारी सृष्टि को बनाया, पदार्थ को बनाया, पंचतत्त्वों को बनाया, सत्, रज, तम को बनाया। जाने क्या से क्या बनाया ? ये सृष्टि जो कुछ भी दिखाई पड़ती है, जिन वस्तुओं से बनी हुई है, विज्ञान वाला भाग है। गायत्री मंत्र की उपासना से विज्ञान पैदा हुआ। विज्ञान को बना देने के बाद में ज्ञान-विज्ञान का क्या उपयोग होना चाहिए ? अगर गलत उपयोग होने लगा, तब ? गलत उपयोग होने लगा तो मुसीबत आ जाएगी। आग का गलत उपयोग होने लगे तब ? तब तो मुसीबत आ जाएगी। बिजली का गलत उपयोग होने लगे तब ? तब तो बेटे मुसीबत आ जाएगी। अगर कहीं से कोई एक तार लीक करने लगे तो सारे के सारे टिन शेड में करेण्ट फैल जाएगा और जहाँ हम और आप बैठे हुए हैं, एक-दूसरे से चिपक करके सारे आदमी एक सेकेण्ड के भीतर खत्म हो सकते हैं। बिजली का पंखा चला लीजिये, माइक लगा लीजिये एक सेकेण्ड के अन्दर आपका सफाया कर सकती है।

विज्ञान को बना दिया, लेकिन विज्ञान की सामर्थ्य इतनी भयानक थी कि अगर उसका ठीक उपयोग न किया जा सका तो क्या से क्या हो सकता था ? इसीलिए ब्रह्माजी को दूसरे चरण के रूप में आकाशवाणी फिर हुई और फिर कहा गायत्री का तप करना चाहिए। गायत्री का तप ब्रह्माजी ने किया और दूसरे पक्ष में ज्ञान बनाया। ज्ञान क्या बनाया ? ज्ञान का सारे संसार में सबसे पहले विस्तार कहाँ से हुआ ? उसका नाम है वेद। वेद क्या हैं ? वेदों के बारे में पुराणों के जो उपाख्यान हैं—उनमें से बताया गया है कि ब्रह्माजी ने सबसे पहले गायत्री के चार चरणों का व्याख्यान अपने चार मुखों से चार वेदों के रूप में किया है। चार वेद क्या हैं ? गायत्री के चार चरणों की व्याख्या। गायत्री के चार चरण कौन-से हैं ? तीन चरण वे हैं, जो आठ-आठ अक्षरों के तीन टुकड़ों में बँटे हुए हैं और एक हिस्सा वह है, जिसको हम कहते हैं शीर्ष। शीर्ष क्या है ? मोरध्वज-वह इसका शीर्ष है और तीन इसके चरण हैं। चारों को मिला करके गायत्री को चार पाद वाली भी कहा है। तीन पाद वाली भी कहा है। चार वेद क्या ? चार वेद गायत्री के व्याख्यान। ये चारों गायत्री के व्याख्यान के रूप में हैं जिस गायत्री मंत्र को हम आप ले करके चले हैं। गायत्री मंत्र के आधार पर हम प्राचीन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खोई हुई संस्कृति को पुनर्जीवित करना चाहते हैं। गायत्री मंत्र वह जो कि नये युग का संदेश ले करके आया है। गायत्री मंत्र वह जो हमारी प्राचीनकाल की सारी की सारी गरिमा को अपने गर्भ में छिपाये बैठा है। वह गायत्री मंत्र जिसकी हम और आप उपासना करते हैं और जिससे सारे विश्व को उपासना करने के लिए प्रभावित करना चाहते हैं, वह है गायत्री मंत्र।

इस गायत्री मंत्र में दोनों ज्ञान और विज्ञान का सब कुछ बीज रूप में भरा हुआ—पड़ा है। ज्ञान, ज्ञान को हम क्या कह सकते हैं ? ज्ञान तो इसमें इतना भरा हुआ पड़ा है कि आदमी को, नर को नारायण तक पहुँचाने वाला रास्ता खोलने वाला सूत्र है यह और विज्ञान, विज्ञान भी बहुत कुछ है। वेदों में विज्ञान है, आप वेदों को पढ़िये सारा का सारा विज्ञान पक्ष है इसमें, पूरी की पूरी साइन्स है इसमें। पूरा अथर्ववेद केवल विज्ञान का पक्ष है। जर्मन वालों को जब मालूम पड़ा कि हम हैं आर्य। आर्यों का मूल ग्रन्थ कौन-सा हो सकता है वेद ? जर्मन वालों ने मैक्समूलर को हिन्दुस्तान में भेजा और वह ५७ साल तक वेदों का पता लगाते रहे, वेदों की खोज करते रहे। उन्होंने ऋग्वेद का भाष्य जर्मन भाषा में सबसे पहली बार किया। १५-१६ वर्ष हिन्दुस्तान में रहने के पश्चात् वे ऋग्वेद ले गये थे। लोग कहते हैं कि विज्ञान की बहुत-सी जानकारियाँ उन्होंने वेदों से प्राप्त की थीं। मैं कह नहीं सकता कि जो वर्तमान विज्ञान है, वह भी वेदों से निकला कि नहीं निकला। लेकिन प्राचीनकाल में वेद अपने आप में विज्ञान था, उसका अपने आप में शोध था। आज से तालमेल खाता हुआ यह जरूरी नहीं है कि आज का जो विज्ञान है और जिस पहलू से मनुष्य अपनी व्याख्या करता है और अपने प्रतिपादन करता है, प्राचीनकाल में उसी तरह का विज्ञान रहा हो विज्ञान की दूसरी धाराएँ भी हैं, दूसरे तरीके भी हैं, दूसरे ढंग भी हैं। जो आज हमारे हाथ में आ गया वही एक 'मेथड' नहीं है विज्ञान का और भी 'मेथड' हैं, जिसके आधार पर किसी पदार्थ के किसी हिस्से की जाँच के द्वारा न जाने कितनी शक्तियों का प्रतिपादन कर सकते हैं, कितने उभार पैदा कर सकते हैं ? यह साइंस का एक पक्ष है, जो आज हमारे हाथ में है। साइंस का यह एक छोटा पक्ष है।

साइंस के क्या और पक्ष हैं ? हाँ, और पक्ष हैं और वे पक्ष खोजे जाने बाकी हैं। अभी आपको 'एंटीमैटर' और 'एण्टीयूनिवर्स' के बारे में मालूम ही नहीं है। 'एण्टीमैटर' और 'एण्टीयूनिवर्स' की जानकारियाँ लोगों को जब मालूम पड़ेंगी तो लोगों को पता चलेगा कि आज का जो विज्ञान है, यह एक मजाक है, एक दिल्लगीबाजी है, एक छोटा-सा बच्चों के हाथ का खिलौना जैसा है। अभी तो बहुत सारी साइंस छिपी पड़ी है। वेदों में ज्ञान वाले पक्ष, विज्ञान वाले पक्ष-दोनों पक्ष हैं। वेदों की व्याख्या कर रहे हैं आप। नहीं बेटे, वेदों की व्याख्या नहीं कर रहा। वेद गायत्री माता के चार बालक हैं, क्योंकि उनको वेद माता कहते हैं। बच्चे कैसे मजबूत हैं ? बच्चे कैसे अच्छे हैं ? बच्चों के हिसाब से उनकी पालनकर्त्री माता का हवाला दे रहा हूँ। ये कह रहा हूँ कि सीता के दो बच्चे थे—लव-कुश, जिनकी बड़ी प्रशंसा की गयी है, लेकिन आपको उनकी माँ की प्रशंसा भी मालूम होनी चाहिए। भरत की प्रशंसा ? भरत अपने आप में बड़े शानदार आदमी थे, लेकिन आपको भरत की प्रशंसा मालूम होने से पहले उनकी माँ शकुन्तला की गरिमा की भी जानकारी होनी चाहिए। विनोबा, बालकोबा, विठोबा तीनों बहुत शानदार थे। ठीक है, आपको ये जानना चाहिए, पर साथ ही यह भी जानना चाहिए कि इनको बनाने वाली क्षमता कौन थी ? वह थी इनकी माँ। जिन्होंने तीनों बच्चों को बाल-ब्रह्मचारी बना दिया, ऋषि और तपस्वी बना दिया। चारों वेदों को बनाने वाली माँ, जिसका नाम है गायत्री मंत्र। गायत्री मंत्र बहुत शानदार मंत्र है। हम क्या कर सकते थे ? हम भूल गए थे। पिछले दिनों से—अधंकार के युग से हमने बहुत सारी चीजें गँवा दी थीं, उसमें से एक चीज यह भी गँवा दी थी, जो हमारी मूल संस्कृति थी। अंधकार युग में मत-मतान्तर पैदा होते चले गए, सम्प्रदाय पैदा होते चले गए। अनेक तरह के विचार आते चले गए। कितना-कितना बिखराव पैदा होता चला गया ? बिखराव पैदा होते हुए भी मूल सत्ता जहाँ की तहाँ है, मूल बात जहाँ की तहाँ है। अगर हिन्दू धर्म अर्थात् विश्व धर्म, भारतीय संस्कृति अर्थात् मान्व संस्कृति के मूल का अध्ययन करना हो तो आपको वेदों के अन्दर जाना होगा, वेदों की गहराई में उतर करके आपको गायत्री मंत्र में प्रवेश करना होगा।

गायत्री मंत्र हमारी बहुत शानदार सम्पत्ति है। साँप के माथे पर मणि की बात कही जाती है। हाथी के माथे पर मणि की बात कही जाती है। मालूम नहीं हाथी और साँप के माथे पर मणि होती है कि नहीं, पर मैं जानता हूँ कि मानवीय गरिमा की एक मणि है, जब तक वह मणि हमारे पास रही हमारा भविष्य बहुत शानदार बना रहा और हमारा ध्येय बहुत शानदार बना रहा, परन्तु जब से ये मणि हमारे हाथ से चली गई, ढीली हो गई, उपेक्षा की जाने लगी तब से हम सब कुछ गँवा बैठे। मध्यकाल में ऐसा हुआ—सम्प्रदायवाद ऐसा तेजी से पनपा कि जो भी आदमी आया, जो भी बाबाजी जरा होशियार-सा हुआ वह अपने नाम का मजहब चलाता चला गया। बिखराव होते चले गए और मूल सत्ता से ध्यान हटाने और बँटाने के लिए उन्होंने ऐसे-ऐसे इलजाम लगाए गायत्री मंत्र के ऊपर जिससे इसकी उपेक्षा होने लगी, जबकि वह हमारा मेरुदण्ड था। उपेक्षा होने के साथ-साथ यह भी कहा जाने लगा कि गायत्री मंत्र को श्राप लग गया है। अच्छा ! गायत्री मंत्र ब्राह्मणों का है—अच्छा ! गायत्री मंत्र को स्त्रियाँ नहीं जप सकतीं—अच्छा ! गायत्री मंत्र को कान में ही कहा जा सकता है—अच्छा ! न जाने क्या से क्या, बताते चले गये ताकि इस ओर से आदमी का ध्यान बँटे। सम्प्रदायवादियों द्वारा अपनी-अपनी ओर से बनाई गई पुस्तकें, मंत्र, ग्रन्थ, देवता उनकी ओर ध्यान खींचते चले गए। ये मध्यकाल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

का जमाना था, लेकिन अब फिर से नवयुग आ गया है, फिर प्रातःकाल हो रहा है। फिर नवयुग का सूर्य उदय होकर सामने आया और वे चमगादड़, वे उल्लू और वे निशाचर जो रातभर घूमते रहते थे, उन्होंने अपने आपको मोड़ लिया है। प्रातःकाल का दृश्य सामने है, हम फिर से पुरानी संस्कृति की ओर लौट कर आ रहे हैं। अब फिर हमें नया संदेश, वही जो ऋषियों ने ब्रह्माजी से लेकर देवताओं को दिया था, उसको स्वीकार करने के लिए व स्वीकार करवाने के लिए कदम बढ़ रहे हैं। हमारा आपका प्रयास यही है।

मित्रो, गायत्री मंत्र क्या है ? इसके महान पक्ष को जरा आप देख पाएँ तो अच्छा है। मैंने अभी निवेदन किया था कि गायत्री मंत्र के चार चरणों को अच्छी तरीके से समझना हो तो चार वेदों को आपको पढ़ना पड़ेगा ताकि चार टुकड़ों में से हर टुकड़े का पूरी तरह से व्याख्यान किया जा सके। वेदों को और समझाइए ? नहीं वेदों को हम पूरी तरह से नहीं समझा सकते। इसको कहानियों के माध्यम से—कथाओं के माध्यम से, पुराणों, दृष्टान्तों के माध्यम से समझाना पड़ेगा। इसके लिए ब्राह्मण, आरण्यक और आर्षग्रन्थ पढ़ने चाहिए। आरण्यक और ब्राह्मण ग्रन्थों की तो भाषा बड़ी दुरूह है। उसमें सांकेतिक भाषा है। अच्छा तो आपको उपनिषद् पढ़नी चाहिए। उपनिषद में क्या है ? अरे, वेदों का व्याख्यान है और क्या है ? उपनिषदों में वेदों का सार है। इसके प्रत्येक मंत्र वेदों में समाये हुए हैं। आर्य समाज ने तो संहिता भाग को ही वेद माना है, लेकिन धर्म की व्याख्या के हिसाब से ब्राह्मण भी वेद होता है और उपनिषद् भी वेदवाणी मानी गई है। वेदों में बेटे, इसका विस्तार है और कुछ भी नहीं। बाप का बेटा होता है, बेटे का नाती होता है, नाती का पोता होता है। ये जो कुछ भी हैं, केवल गायत्री मंत्र का व्याख्यान है। गुरुजी और बताइए ! और बेटे अठारह पुराण जो हैं। अठारह पुराण भी यही हैं। क्या हैं ? गायत्री मंत्र का व्याख्यान है और भगवान के अवतार ? भगवान के अवतार भी यही हैं। भगवान के अवतार क्या हैं ? भगवान के अवतार-हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार चौबीस अवतार हैं। चौवीस अवतार क्या हैं—गायत्री के २४ अक्षर। चौबीस अक्षर में एक-एक अवतार का व्याख्यान भरा पड़ा है। एक अवतार के एक अक्षर में क्या शिक्षा है ? क्या प्रेरणा है ? क्या दिशा-धाराएँ हैं ? क्या मनुष्य जाति के लिए आदर्श उपस्थित करते हैं ये ? एक अक्षर को आपको समझना हो तो एक अवतार के कथानक के माध्यम से गायत्री का एक अक्षर समझ लेना चाहिए। सारी की सारी कथाएँ-सब जितनी भी कथाएँ हैं, आपको गायत्री मंत्र के एक-एक अक्षर को बता सकती हैं।

हिन्दू धर्म में दो अवतार मुख्य माने गए हैं। अवतार तो २४ हैं, पर २४ अवतारों में दो अवतार मुख्य माने गए हैं—राम और कृष्ण। राम और कृष्ण के जीवन के दृष्टान्त सुनाने वाले दो ग्रन्थ हैं—एक का नाम है—'बाल्मीकि रामायण' जिसमें रामचरित्र दिया हुआ है। दूसरी पुस्तकें उसके अनुवाद के रूप में अन्यान्य भाषाओं में बनाई गई हैं। रामायणों की बहुत-सी तादाद है। अरे पचास रामायण तो मेरे देखने में आई हैं। लेकिन इनका मूल बाल्मीकि रामायण ही है। दूसरा ग्रन्थ है—भागवत् कथा—जिसमें श्रीकृष्ण चरित्र दिया हुआ है। ये क्या हैं ? ये दोनों ग्रन्थ गायत्री मंत्र के व्याख्यान हैं। **"सत्यम् परम् धीमहि"** श्रीमद्भागवत् में चौबीस हजार श्लोक हैं। चौबीस हजार श्लोकों में से एक-एक हजार श्लोकों के बाद एक-एक अक्षर गायत्री का संपुट के रूप में लगाया गया है। जैसे सम्पुट गायत्री का हम लगवाते हैं आपसे हीं, श्रीं, क्लीं बगैरह का, उसी तरह से जैसे अखण्ड कीर्तन होता है। रामायण पाठ होते हैं। उसमें सम्पुट लगाते चलते हैं। इसी तरह से एक अक्षर का सम्पुट एक हजार श्लोकों में बाँटा हुआ है। बाल्मीकि रामायण में भी यही है। उसमें भी चौबीस हजार श्लोक हैं और एक हजार श्लोकों से पहले गायत्री मंत्र का एक सम्पुट लगा हुआ है। आप गायत्री माहात्म्य पढ़ लीजिए उसमें सारे के सारे कथानक दिए हुए हैं। कौन-से अक्षर के बाद में कौन-से श्लोक आते हैं, पूरा का पूरा व्याख्यान दिया हुआ है। आपको रामचरित पढ़ना हो, कृष्णचरित्र पढ़ना हो तो गायत्री मंत्र की शिक्षाएँ कथानक के माध्यम से समझ लीजिए। ये सारे का सारा गायत्री मंत्र है, जो कुछ भी आपको दिखाई पड़ता है।

यह ज्ञान-पक्ष हुआ। विज्ञान-पक्ष। विज्ञान-पक्ष भी है। विज्ञान-पक्ष क्या है ? हमारे पास एक ऐसी मशीन है और एक ऐसी लेबोरेट्री है, एक ऐसी प्रयोगशाला है और एक ऐसा कम्प्यूटर है, जिसके आधार पर हम आवश्यक चीजों की पैदावार कर सकते हैं। ये कौन-सी प्रयोगशाला है ? इसका नाम है हमारा शरीर। इसके तीन हिस्से हैं। त्रिपदा गायत्री, तीन चरणों वाली गायत्री का मतलब यह है कि हमारे पास तीन शरीर हैं और तीन फैक्ट्रियाँ हैं। जिस तरह एक के बाद एक लॉकर होता है। बाहर एक कमरा होता है, कमरे में तिजोरी होती है, तिजोरी में लॉकर होता है। इस तरह से तीन हमारे शरीर हैं। एक तो स्थूल शरीर, एक सूक्ष्म शरीर और एक कारण शरीर। इन तीनों शरीरों की अगर उपासना की जा सके, इसके भीतर रहस्यमय दुनिया भरी पड़ी है, उसें जाग्रत किया जा सके तो जाग्रत अतीन्द्रिय क्षमताएँ सामान्य को असामान्य बना देती हैं। ये मनुष्य को तपस्वी बना देती हैं, सामर्थ्यवान बना देती हैं, शक्तिवान बना देती हैं। जिस तरीके से भौतिक शक्तियों का प्रयोग हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं, उसी तरीके से आध्यात्मिक शक्तियाँ भी हैं, जो हमारे लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारा शारीरिक-बल मशीन का बल नहीं है, हमारे शरीर का बल है और हमारा साहस मशीन का बल नहीं है, तलवार का बल नहीं है। तलवार अपने आप में काम की हो सकती है, पर हिम्मत हमारी अपनी ताकत है। मशीनों को चलाना, मेहनत को कम करना और दूसरे काम कर लेना मशीनों के द्वारा हो सकता है। आटोमैटिक मशीनें हम चला सकते हैं, लेकिन जो हमारे दिमाग की ताकत है, उसकी कोई आटोमैटिक मशीन बराबरी नहीं कर सकती। कम्प्यूटर में अपनी ताकत है और अपनी क्षमता है, लेकिन हमारे दिमाग की जो पहुँच और परख है, वह किसी कम्प्यूटर की नहीं हो सकती। कम्प्यूटर हमारा गुलाम है। वैज्ञानिकों ने इस तरह की मशीनें बना दी हैं और मनुष्य को इस तरह से सोचने पर मजबूर कर दिया है कि जब इस काम को मशीन कर लेती है तो वह उसे क्यों करे ? लेकिन वह भूल जाता है कि अनेक तरह की परिस्थितियों के हिसाब के साथ अनेक तरह की नई धाराओं पर मशीन या कम्प्यूटर नहीं विचार कर सकता। ये हमारी अपनी विशेषता है। मनुष्य के अन्दर कितनी सामर्थ्य है, आप तो समझते भी नहीं हैं। इतनी सामर्थ्य है आदमी के भीतर जो बीज के रूप में है और सोई पड़ी हुई है। उसको जगाने के लिए जो तपस्याएँ की जाती हैं, साधनाएँ की जाती हैं, योगाभ्यास किए जाते हैं, वे कहाँ से आते हैं ? वे सारे के सारे गायत्री मंत्र में सन्निहित हैं। चौबीस अक्षर के भीतर चौबीस योग हैं और प्रत्येक आठ-आठ अक्षर गायत्री मंत्र में इस प्रकार से हैं, जो तीनों शरीरों की साधना के लिए अष्टांगयोग हैं। राजयोग किसका है ? ये मानसिक हैं। शरीर के लिए हठयोग है और भी बहुत सारे योग हैं, जिसकी व्याख्या में मैं आपको नहीं ले जाना चाहता। मैं तो केवल आपको इतना बताना चाहता हूँ कि हमारा ज्ञान पक्ष और विज्ञान पक्ष दोनों ही पक्ष उससे जुड़े हुए हैं, जिसे हम गायत्री मंत्र कहते हैं। गायत्री मंत्र जिसकी उपासना, जिसकी विधि, जिसका प्रयोग और जिसका तत्त्वज्ञान ये सारी चीजें सिखाने के लिए मिशन का जिसके आप सदस्य हैं, जिसका निर्माण हुआ है और जिसमें कि हमको और आपको एक धागे में बाँध दिया है। हमारा आपसे स्नेह इसी एक धागे से बँधा हुआ है। हम बँधे हुए हैं। ये क्या चीज हैं ? ये भारतीय संस्कृति का मूल हैं। कैसे ? बताइए जरा।

अच्छा हम और बताते हैं कि किस तरीके से यह मूल है ? शिखा और सूत्र ये हिन्दू धर्म की दो निशानियाँ हैं। शिखा क्या है ? बेटे गायत्री मंत्र है। हमारे किले के ऊपर झण्डा फहरा रहा है। लाल किले के ऊपर झण्डा फहराता है। काँग्रेस का झण्डा फहराता है, राष्ट्रीय ध्वज फहराता है। इसी तरह से हमारे मस्तिष्क के ऊपर ज्ञान की देवी ऋतम्भरा-प्रज्ञा का झण्डा फहराता है। शास्त्रों में बताया गया है कि इस झण्डे को फहराते रहना चाहिए। हमारे इस किले के ऊपर ऋतम्भरा-प्रज्ञा अर्थात् गायत्री की ज्ञान शक्ति का, प्रज्ञा की शक्ति का इसके ऊपर बोलबाला है और ये मालकिन है इसकी। इसलिए हम शिखा रखाते हैं। शिखा क्या है ? गायत्री का रूप। गायत्री का रूप। गायत्री का रूप कैसे ? मूर्तियाँ तरह-तरह से बनाई जाती हैं। कुछ संगमरमर की बनाई जाती हैं, कुछ अष्टधातु से बनाई जाती हैं, कुछ किसी की बनाई जाती हैं, लेकिन ये गायत्री की मूर्ति बालों की बना दी गई हैं, अन्यथा तरह-तरह की मूर्तियाँ इसमें कैसे टिकाई जाएँगी, कैसे रखी जाएँगी ? ये गिर पड़ेंगी और उखड़ जाएँगी। इसलिए ऋषियों ने जहाँ जो चीज पैदा होती थी, उसी को बनाकर वहाँ उसकी स्थापना कर दी। पहाड़ों पर शंकर जी पैदा होते थे। पहाड़ों के पत्थर से शंकर जी गोल-मटोल वहीं बना दिए हैं और बालों से ! सिर पर बाल पैदा होते हैं, अतः बालों से ही सिर पर गायत्री माता की मूर्ति बनाकर शिखा के रूप में स्थापित कर दी गई। ये झण्डा है, गायत्री मंत्र का झण्डा है।

"ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।"

यह गायत्री मंत्र की व्याख्या है—शिखा के रूप में।

सूत्र क्या है ?—यज्ञोपवीत। यज्ञोपवीत क्या है ? गायत्री मंत्र है। गायत्री मंत्र को शरीर रूपी देवालय में स्थापित करते हैं। शरीर के प्रत्येक अंग-अवयव को देवालय माने तो इसमें गायत्री की मूर्ति स्थापित करते हैं। सूत्र की स्थापना क्यों करते हैं ? सूत्र की स्थापना हम इसलिए करते हैं कि जो किसी अन्य चीज की बनाई गई होती तो उसका ठहरना मुश्किल होता। अगर ये मूर्ति लोहे की बना देते और जब हम रात को सोते तो मुश्किल पड़ जाती। पत्थर की बनाते तो चौबीस घण्टे कहाँ लिए फिरते ? सूत की इसलिए बना दी गई है कि चौबीस घण्टे इसे शरीर के साथ में लपेटा जा सके। गायत्री मंत्र आपका स्वरूप है। इसमें नौ शब्द हैं। गायत्री मंत्र में नौ शब्द हैं और जनेऊ में नौ धागे हैं। गायत्री मंत्र में तीन व्याहृतियाँ हैं और जनेऊ में तीन गाँठें लगी हुई हैं। गायत्री में एक ओ३म् है और यज्ञोपवीत में एक बड़ी गाँठ ब्रह्मगाँठ लगी हुई है। इस गायत्री मंत्र को कहाँ रखना चाहिए ? सारे के सारे महत्त्वपूर्ण अंश, अंग जो हमारे पास हैं, उन सबको गायत्री मंत्र में लपेट दिया है। कंधों पर लपेट दिया है। कंधा हमारे जिम्मेदारी की निशानी है। यह वजन हमारे कंधे पर रखा हुआ है। हमको जिम्मेदारी का निर्वाह करना है। गायत्री मंत्र में जो ज्ञान और विज्ञान है, उसको हम जीवन में धारण करेंगे, उसका हम प्रयोग करेंगे। उसके लिए इसकी जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व कंधे पर निबाहते हैं। कंधे पर निभाने के बाद में कहाँ ले जाते हैं—हृदय पर ले जाते हैं। क्यों ? इसलिए कि ये बात हमारे हृदय पर बसी हुई है अर्थात् हमारी भावनाओं में और हमारी आस्थाओं में और हमारी अन्तर्आत्मा में आ गई है। ये चीजें हृदय से ताल्लुक रखती हैं। जनेऊ कंधे पर से निकलने के बाद में कलेजे पर आता है। कलेजे के बारे में भी यह कहा जाता है। कलेजा हिम्मत, अपनत्व पैदा करने की एक थैली है। जहाँ तक साथी का सवाल है, कहते हैं—आइए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आपको कलेजे से लगा लें। ये हमारे कलेजे का टुकड़ा है। यहाँ पित्त की थैली का सवाल नहीं है यह साहित्यिक भाषा है। इसमें ये कह देते हैं कि मनुष्य के भीतर वाले हिस्से को गायत्री मंत्र के साथ में चिपका देते हैं। ये कलेजा कहलाता है। हमारी पीठ पर वजन रखा हुआ है और हम इस वजन को लेकर चलेंगे। हमारी पीठ भारी है इत्यादि ये साहित्यिक शब्द है और यह प्रतीक के रूप में हैं।

इस तरह जनेऊ को पीठ पर रखा जाता है। कंधे पर रखा जाता है, हृदय पर रखा जाता है और कलेजे पर रखा जाता है। इसका अर्थ यह है कि गायत्री मंत्र के भीतर जो सिद्धान्त और जो शिक्षण और जो आदर्श दिए गए हैं, वे हमको इतने प्यारे होने चाहिए, जिससे हर क्षण हम यह समझते रहें कि मनुष्य जीवन के साथ में ये जिम्मेदारियाँ भी हमारे कलेजे पर हैं। हमारे हृदय में स्थान इनको भी प्राप्त होना चाहिए। इनको भी हृदय में ग्रहण करना चाहिए और अपनी पीठ के ऊपर इस वजन को लेकर चलना चाहिए। जीवन का इतना भार जब हम लेकर चलते हैं तो इन सिद्धान्तों का और इन आदर्शों का, जो भगवान ने मनुष्य के जीवन के साथ-साथ हमारे सुपुर्द किए हैं, उनको भी लेकर चलते हैं। यही बात है कि सारी की सारी शिक्षाएँ गायत्री मंत्र के साथ जुड़ी हुई हैं अर्थात् जनेऊ के साथ जुड़ी हुई हैं। शिखा और सूत्र प्रतीक हैं। शिखा सूत्र क्या हैं ? अरे, कुछ भी नहीं हैं—गायत्री मंत्र हैं। एक को हमने शरीर के ऊपर अर्थात् दिमाग के ऊपर अर्थात् चेतना के ऊपर स्थापित किया हुआ है ज्ञान के रूप में और दूसरा हमारा शरीर है। शरीर अर्थात् कृत्य या कर्म। शरीर अर्थात् पदार्थ, भौतिक जीवन। भौतिक जीवन के ऊपर भी हमने यज्ञोपवीत स्थापित किया हुआ है अर्थात् गायत्री की सत्ता हमने स्थापित की हुई है। विचारणा, चेतना जीवन इसके ऊपर भी हमने इसे स्थापित की हुई है। दोनों अंशों के ऊपर गायत्री मंत्र की स्थापना करने का भारतीय समाज में नियम है।

संध्या-वंदन हमारा नित्य कर्म है। संध्या-वंदन माने—प्रातःकाल भगवान का भजन करना चाहिए, सायंकाल को भजन करना चाहिए। दोनों समय भगवान की उपासना को संध्या-वंदन के नाम से पुकारा गया है। संधि-संध्या को कहते हैं। दिन और रात जब मिलते हैं तो संधि कहलाती है। प्रातः और सायंकाल जो गायत्री उपासना की जाती है वो संध्या है। संध्या क्या है ? संध्या कुछ भी नहीं है, गायत्री मंत्र है और क्या है ? आप गहराई से देखें तो आदमी क्या है, यह पता लग जाएगा। आदमी एक साँप है। साँप कैसा है ? यह मस्तिष्क से चलता है और रीढ़ की हड्डी में आ करके नीचे खत्म हो जाता है। बाकी क्या है ? इसके पंख हैं, ये हाथ-पाँव क्या हैं ? ये तो पंख हैं तो फिर असली आदमी कहाँ है ? असली आदमी की शक्ति कहाँ है ? ये बेटे, मेरुदण्ड में रीढ़ की हड्डी में है। रीढ़ की हड्डी में आदमी के विचार से ले करके सारे शरीर में जो बल पैदा होता है, शक्ति पैदा होती है, इलेक्ट्रीसिटी पैदा होती है, जो कुछ भी हमारे भीतर काम हो रहा है, असल में सारे का सारा जो इसका ढाँचा है रीढ़ की हड्डी में है। बाकी जितने भी कल-पुर्जे हैं, जितनी भी अन्य सब चीजें हैं, ये इसके बाहर के हिस्से हैं, मूल चीज नहीं है। इसकी रीढ़ हमारे प्राण हैं। इसी तरह से गायत्री महामंत्र मानव जीवन का प्राण है, भारतीय संस्कृति का प्राण है, मानवीय गरिमा का प्राण है और मानवीय आदर्श और मानवीय उत्कर्ष का सारे का सारा आधार है। यह गायत्री मंत्र है। इसकी महिमा-गरिमा आपको समझनी चाहिए।

यह दुर्भाग्य ही है कि लोगों ने गायत्री मंत्र का इतना छोटा स्वरूप बना लिया है। हम क्या कह सकते हैं ? भूत भगाने के लिए जैसे सयाने-दिवाने झाड़-फूँक करते रहते हैं। पानी लिया, छिड़क दिया, ये कर दिया, वो बाँध दिया। ये मंत्र बिच्छू का मंत्र है, ये साँप का मंत्र है, ये भूत का मंत्र है, ये अमुक का मंत्र है। इस तरह से अनेकों छोटे-छोटे मंत्र-तंत्र पाए जाते हैं। लोगों ने गायत्री मंत्र को भी इसी में शुमार कर लिया और ये मालूम कर लिया कि बुखार आता हो तो गायत्री का प्रयोग कर देंगे। कोई मुकदमा चल रहा होगा तो गायत्री का प्रयोग कर देंगे। गायत्री का यह छोटा-सा स्वरूप है। हो तो यह भी सकता है, यह तो मैं नहीं कहता कि इसका स्वरूप नहीं है, लेकिन ये बहुत छोटा स्वरूप है, समग्र स्वरूप नहीं है। जैसे आप यह विचार करें कि आचार्य जी का कान, बेटे, कान भी हमारे शरीर के हिस्से का ही है, शरीर के बाहर तो नहीं है। यह तो हम नहीं कहते कि बाहर का है। इसी तरह भूत भगाना गायत्री में नहीं है, यह तो मैं नहीं कहता कि गायत्री में नहीं है, पर आप गायत्री मंत्र को इतना सीमित कर देंगे, इतना छोटा कर देंगे, तो इसकी तौहीन होगी। यह इसकी तौहीन है। आप यह मानकर चलें कि अमुक-अमुक कामना के लिए, बाल-बच्चे पैदा करने के लिए, अमुक लाभ उठाने के लिए, मुकदमे में जीत जाने के लिए, इम्तिहान में पास हो जाने के लिए अगर इतनी सीमा में गायत्री को रखेंगे तो मैं यह समझूँगा कि आप गायत्री का बहुत छोटा स्वरूप समझते हैं। उसकी पूँछ के बाल के बराबर समझते हैं, असली गायत्री को आप समझते भी नहीं हैं। असली गायत्री वह है, जो मानवीय गरिमा को बढ़ाती है। जो सारे संसार में सुव्यवस्था बनाए रखती है। जो मानवीय भविष्य को उज्ज्वल व शानदार बनाती है। इसका इतिहास हम प्राचीन काल के पन्ने पलटकर देख सकते हैं।

प्राचीनकाल का हमारा अतीत और इतिहास इतना शानदार था जिसको हम देव-इतिहास कह सकते हैं। भारत भूमि का ही नाम स्वर्ग भूमि था। स्वर्ग और भी कोई रहा होगा क्या ? रहा होगा यह बहस तो आपसे मैं नहीं कर सकता कि स्वर्ग था या नहीं था, पर मैं यह कहता हूँ कि स्वर्ग की जो व्याख्या की गई है, सारी की सारी स्वर्ग की व्याख्याएँ ऋषियों ने जो की हैं, वह इसी भारत भूमि के लिए की हैं। यहाँ बार-बार आता रहा है स्वर्ग। यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारत-भूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ थी किसी जमाने में। किसी ज़माने में यहाँ के नागरिकों को देवमानव बताया गया है। यहाँ के नागरिक देवमानव थे, यहाँ स्वर्ग लोक में देवता रहते थे, तैंतीस करोड़ देवता रहते थे। बेटे यही तैंतीस करोड़ देवता किसी जमाने में इस देश के नागरिक थे। यही सारे संसार भर में फैले हुए थे बादलों की तरीके से। दुनिया को ऊँचा उठाने और समुन्नत बनाने में इनकी शानदार परम्परा थी। देवता थे देवता। वे दिया करते थे। यहाँ के निवासियों को दिया, सारे संसार को दिया।

भारतवासियों के अनुदान की कथा आप सुनिए जरा। भारतवासियों ने संसार को क्या अनुदान दिया है ? हमारी एक पुस्तक है, आप लोगों में से किसी ने पढ़ी होगी, उसका नाम है 'समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान'। सारे विश्व को जब से यह जमीन बनी है, तब से लेकर के भारतवासी लोगों को क्या-क्या सिखाते रहे हैं, क्या-क्या देते रहे हैं ? हिन्दुस्तान की पौराणिक पुस्तकों से ही नहीं वरन् सारे संसार के शिलालेखों से लेकर अन्यान्य पुस्तकों से जिसमें दो हजार के करीब जानकारियों के रिफरेन्स दिए हुए हैं। हमारी उस पुस्तक में सारा विवरण मौजूद हैं। सारे के सारे विश्व को वे देते रहे हैं। क्या-क्या दिया विश्व को भारतवासियों ने ? शिक्षा दी, संस्कृति दी, स्वास्थ्य दिया, चिकित्सा दी, समाज विज्ञान दिया, कृषि दी, पशुपालन दिया। जो कुछ भी भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान हो सकता था, मानवीय परम्पराएँ हो सकती थीं, वे सारी की सारी चीजें न केवल हिन्दुस्तान ने हिन्दुस्तानियों को दीं, बल्कि सारे विश्व को दीं। इसलिए ये देवता कहलाते थे। जगद्गुरु कहलाते थे, चक्रवर्ती शासक कहलाते थे और न जाने क्या-क्या कहलाते थे ? ये सारी की सारी विशेषताएँ जो भारतीय गरिमा के साथ जुड़ी हुई हैं, असल में अगर हम इनका प्राण ढूँढ़ना चाहें—आधार ढूँढ़ना चाहें तो बात घूम-फिर करके भारतीय संस्कृति पर आ जाएगी। और एक शब्द में अगर आप यह जानना चाहें कि भारतीय संस्कृति क्या हो सकती है तो मैं गायत्री मंत्र का नाम लूँगा। आप गायत्री को समझ लीजिए तो फिर आप भारतीय संस्कृति के सारे के सारे आधार समझ जाएँगे। ज्ञान को भी समझ जाएँगे और विज्ञान को भी समझ जाएँगे। ऐसी है गायत्री, जिसको कि हम और आप अपने जीवन में धारण करने की कोशिश करते हैं। जिसकी हम उपासना करते हैं, जिसका हम ब्रह्मविद्या के रूप में तत्त्वज्ञान जानने की कोशिश करते हैं।

गायत्री के दो अर्थ हैं, आप तो एक ही अर्थ समझ पाते हैं तो क्या समझ पाते हैं ? आपको तो मात्र प्रयोग मालूम है। गायत्री की प्रैक्टिस ही मालूम है। गायत्री का जप कैसे किया जाता है, यह क्या है ? यह प्रैक्टिस है। ध्यान कैसे किया जा सकता है, यह प्रैक्टिस है। बेटे, प्रैक्टिस अपने आप में पूर्ण नहीं है। यह उत्तरार्द्ध है। तो पूर्वार्द्ध क्या है ? पूर्वार्द्ध है फिलासफी-तत्त्वज्ञान। पहला अंश-तत्त्वज्ञान। गायत्री एक फिलासफी है। फिलासफी से क्या मतलब ? ऋतम्भरा-प्रज्ञा। ऋतम्भरा से क्या मतलब ? ब्रह्मविद्या। ब्रह्मविद्या से क्या मतलब ? ब्रह्मविद्या से यह मतलब है कि जो कुछ भी मानव-जीवन की श्रेष्ठता और गरिमा से सम्बन्धित है, वह सारे के सारे भारतीय तत्त्वज्ञान में आ जाता है। गायत्री का पहला वाला अंश वह है, जिसको आप समझने की कोशिश भी नहीं करते केवल प्रैक्टिस करना जानना चाहते हैं। थ्योरी जानना चाहते हैं, जप करना जानना चाहते हैं। होड़ करना जानना चाहते हैं। ध्यान करना जानना चाहते हैं। यह भी ठीक है, मैं मना नहीं करता, पर थ्योरी और प्रैक्टिस दोनों जुड़ी हुई हैं। नहीं, हम तो प्रैक्टिस करेंगे, थ्योरी से क्या फायदा ? ऑपरेशन करेंगे हम तो। उसकी एनोटॉमी, फिजिओलॉजी सीखने से क्या फायदा ? भाईसाहब, पहले उसकी एनोटॉमी, फिजिओलॉजी सीखिए। नहीं साहब, ये तो बेकार का टाइम हम नहीं गवाँएगे। आप तो ऑपरेशन करना सिखा दीजिए। बेटे, आपको शरीर की संरचना मालूम नहीं है। टिशूज कैसे होते हैं ? सैल कैसे होते हैं ? अमुक चीज कैसी होती है ? बिना इस जानकारी के आप ऐसे ही करेंगे आपरेशन, पेट को चीर डालेंगे, सुई-धागे से सीं डालेंगे तो आप भी मरेंगे और वह भी मर जाएगा, जिसकी आप चीर-फाड़ करेंगे। पहले आप एनोटॉमी, फिजिओलॉजी बगैरह सीखिए।

इसी तरह गायत्री का तत्त्वज्ञान भी उतना ही ज्यादा महत्त्वपूर्ण है जितना कि उसका प्रयोग। जितना कि उसका व्यवहार। लोगों ने व्यवहार करना सीखा है। चौबीस हजार का जप करना चाहिए। ध्यान ऐसे, जप ऐसे करना चाहिए। बेटे, यह प्रयोग वाला हिस्सा है, फिलॉसफी वाला पक्ष और भी शानदार है। जो कुछ भी ज्ञान और विज्ञान की धाराएँ हैं, ये दोनों की दोनों धाराएँ गंगा-जमुना की तरीके से मिलती हैं। इसलिए गायत्री के दो नाम दिए गए हैं। एक का नाम गायत्री और एक का नाम सावित्री। सावित्री किस हिस्से को कहते हैं ? सावित्री उसे कहते हैं जो विज्ञान वाला भाग है। वैज्ञानिक प्रयोग के लिए सावित्री का महत्त्व है। जब भी आपको जप करना पड़ेगा, ध्यान करना पड़ेगा, उपासना करनी पड़ेगी, अनुष्ठान करना पड़ेगा तो आप मनुस्मृति में पढ़ डालिए इसके प्रयोग के पक्ष में, जहाँ कहीं भी गायत्री के प्रयोग हुए हैं, उस सारे के सारे प्रयोग को सावित्री के नाम से पुकारा गया है। मनुस्मृति में हर जगह जहाँ कहीं भी सावित्री का जिक्र आया है। गायत्री का जिक्र नहीं है। प्रयोग में केवल सावित्री काम आती है और गायत्री ? गायत्री किस काम आती है ? गायत्री ब्रह्मविद्या है। चिंतन जिसको कहते हैं, फिलॉसफी जिसको कहते हैं, विचारणा जिसको हम कहते हैं। ये सारे का सारा पक्ष गायत्री का है। इसके ज्ञान और विज्ञान पक्ष दोनों हैं, जिनको हम समझ पाएँ तो गंगा और जमुना दोनों की धारा की तरीके से मजा आ जाए। इनके मिलने से जिस तरह से त्रिवेणी बन जाती हैं, उसी तरीके से दोनों के मिलने से त्रिवेणी बन जाती है। दो चीजों के मिलाने से तीसरा रंग बन जाता है। दोनों चीजों, दोनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तारों को जब हम मिला देते हैं तो एक नई चीज, एक नई धारा पैदा हो जाती है। बिजली के दोनों तार अलग-अलग हैं। एक का नाम निगेटिव है और एक का पौजिटिव है। दोनों अलग-अलग हैं, पर दोनों को जब मिला देते हैं, तब एक तीसरी चीज बन जाती है, उसका नाम है करेण्ट और वह बराबर दौड़ने लगती है। तत्त्वज्ञान दौड़ता नहीं है। तत्त्वज्ञान और उसका प्रयोग दोनों का उपयोग अगर हम करेंगे तो गायत्री की जो महत्ता और गरिमा है उसका हम लाभ उठा पाएँगे। तत्त्वज्ञान को नहीं समझेंगे, केवल प्रयोग करते रहेंगे, तो परिणाम यह रहेगा कि जो लाभ होना चाहिए वह काफी नहीं होगा। इसकी फिलॉसफी को समझते रहेंगे, आप विचारणा करते रहेंगे, आप इन चीजों को समझते रहेंगे लेकिन उसको जीवन में प्रयोग न कर सकेंगे तो भी थोड़ा ही मुनाफा मिल पाएगा।

मित्रो, थ्योरी भी अधूरी है और प्रैक्टिस भी अधूरी है। इसको जब हम मिला देते हैं—दोनों को, तो बात पूरी हो जाती है। दवा भी अधूरी है और उसका परहेज भी अधूरा है। परहेज हम करेंगे नहीं, नहाएँगे नहीं, कुल्ला नहीं करेंगे। हकीम जी ने दवा बतायी है, पर दवा नहीं खाएँगे, तो भी गलत और दवा खाएँगे, लेकिन परहेज नहीं करेंगे तो भी गलत है। दोनों चीजों का समन्वय हो जाने से बीमारी से उद्धार मिलता है। गायत्री मंत्र की जो सामर्थ्य और शक्ति ऋषियों और शास्त्रकारों ने बताई है, वह इस बात पर टिकी हुई है कि आप उसकी फिलॉसफी को भी समझें और प्रैक्टिस को भी समझें। दोनों को मिला देने से गायत्री मंत्र समर्थ हो सकता है और उसके बारे में जो महिमा और गरिमा बताई गई हैं, उनका साक्षात्कार करने में हम और आप समर्थ हो सकते हैं। ये दोनों काम नहीं करेंगे तो आपको शिकायत हो सकती है कि हमको लाभ नहीं मिला। लाभ नहीं मिलने की शिकायत बराबर बनी रहेगी। दोनों तारों को आप मिलाएँगे नहीं, तो आपको शिकायत रहेगी। साहब बेकार है, आपकी बिजली से कोई काम नहीं होता, बिजली हमारा पंखा भी नहीं हिलाती और हमारी बत्ती भी नहीं जलाती। ठीक है, आपने दोनों तारों को क्यों नहीं मिला दिया ? आप उसकी फिलॉसफी को भी समझिए, उसकी शिक्षा और प्रेरणा को भी समझिए। जीवन में हमारे किस तरह से उसके आदर्श और सिद्धान्तों का समन्वय होना चाहिए ? यह भी आप समझिए। नहीं ये तो बेकार है, इसे समझने से कोई लाभ नहीं है। हम तो चौबीस हजार जप करेंगे और सबेरे ११ माला जप करेंगे। बेटे ये तो प्रयोग हैं। प्रयोग को और तत्त्वज्ञान को मिला देने से ही पूरा लाभ मिलता है।

गायत्री मंत्र की महिमा के बारे में कि इस मंत्र से क्या लाभ हो सकता है ? इसके बारे में अथर्ववेद की एक बहुत अच्छी साक्षी आती है। अथर्ववेद के गवाह से अच्छा कोई और गवाह चाहिए क्या ? नहीं, बेटे इससे अच्छा गवाह नहीं मिलता। दूसरे गवाह गलत भी हो सकते हैं, झूठे भी हो सकते हैं, ऐसे गवाह भी हो सकते हैं, जो अपनी प्रसन्नता के लिए कुछ कहते हों या अपनी बात का महत्त्व बढ़ाने के लिए कहते हों, नमक-मिर्च मिलाते हों, लेकिन वेदों के बारे में मैं इस तरह की कल्पना भी नहीं कर सकता कि वे हमको गलत बात बताएँगे, झूठ-मूठ की बात बताकर बहका देंगे। गायत्री मंत्र जिसकी कि हम आपको उपासना सिखाते हैं, गायत्री मंत्र जिसको कि हम सारे विश्व में फैलाना चाहते हैं, गायत्री मंत्र जिसके आधार पर हम न्याय कराना चाहते हैं। गायत्री मंत्र जिसके आधार पर हमारी तमन्ना और हमारी उम्मीद यह है कि मनुष्य के भीतर देवत्व पैदा होना चाहिए और जिसके बारे में हमारी तमन्ना यह है कि सारे सामाजिक वातावरण में श्रेष्ठ परम्पराओं की स्थापना होनी चाहिए। इसके लिए क्या करना होगा ? इसके बारे में गायत्री मंत्र की गरिमा को, स्वरूप को और उसकी महत्ता को, महिमा को समझना पड़ेगा कि गायत्री मंत्र से क्या हो सकता है ? ठीक तरह से इसका उपयोग किया जा सके, फिर मैं आपसे कहता हूँ कि यदि ठीक तरह से उपयोग न किया जा सका तो बेटे, निरर्थक भी जा सकता है और हानिकारक भी हो सकता है। तलवार आपके हाथ में है, चाकू आपके हाथ में है यदि ठीक तरह से उसका इस्तेमाल करेंगे तो आप फायदा भी उठा सकते हैं। गलत इस्तेमाल करेंगे तो आप अपना पाँव काट सकते हैं। निरर्थक यों ही डाल दें तो, फिर आपका चाकू भी चला जाएगा, खो भी जाएगा। निरर्थक भी जा सकता है। गायत्री मंत्र के बारे में भी यही बात है। सांगोपांग न करने से कोई विशेष लाभ नहीं उठाया जा सकता है।

अभी व्याख्यानों में आपके सामने हम यही पेश करने वाले हैं, आज, कल और परसों गायत्री मंत्र को पढ़ाने वाले हैं। आज तो केवल यही कहना है कि गायत्री मंत्र का स्वरूप समझने और समझाने के लिए अथर्ववेद की साक्षी आपके ध्यान में रहनी चाहिए। इसमें यह बताया गया है कि सात लाभ जो इसके भीतर हैं, इन सात लाभों में से पाँच पंच भौतिक हैं और दो आध्यात्मिक। सात लाभ हैं गायत्री मंत्र के। गायत्री के सात विद्यार्थी हैं। सात विद्यार्थियों को सात ऋषि भी कहा गया है। लाभों में, पाँच सांसारिक हैं और दो आध्यात्मिक हैं। दोनों को मिला देने से सात लाभ मिल जाते हैं और मनुष्य के जीवन की प्रगति की समस्त आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं। कौन-कौन सी हैं ? आप में से अधिकांश लोगों को वह मंत्र शायद याद होगा। यदि नहीं याद हो तो आप फिर समझ सकते हैं और इसे याद कर सकते हैं। यह मंत्र है—

"सुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां, पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यम् दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ये सात चीजें इसमें बताई गई हैं और ये अथर्ववेद ने कही हैं अर्थात् भगवान ने कही है। अगर आप वेद को मानते हों तो इसे भगवान की वाणी कह सकते हैं और अगर आप पौरुषेय वेद मानते हों तो ऋषि कह सकते हैं। बहरहाल, यह ऋषि हों अथवा भगवान। दोनों में से जो भी हो, आपको सात चीजें मिलने का वायदा करता है, वचन देता है और कसम खाता है कि आप इन चीजों को निश्चित रूप से पा सकते हैं। पाँच भौतिक पंच भूत हैं ये और पाँच ही लाभ हैं इसके। पंच देवता भी कहलाते हैं ये। पाँच प्राण हैं हमारे। पाँच चीजों से चेतन और अचेतन दोनों को मिलाकर पाँच प्राण और पाँच तत्त्व इनको मिलाकर बनाया गया है और पाँच ही लाभ ऐसे हैं, जो गायत्री मंत्र के पाँच मुखों से निस्सृत हैं।

गायत्री मंत्र को भी पाँच मुखी बताया गया है। आपने ऐसे फोटो भी देखे होंगे। हमारे यहाँ से ही छपते हैं, जिसमें एक ही मुख होता है गायत्री का। इसे हम बताएँगे पीछे आपको, लेकिन ऐसे भी फोटो आपको बाजार में मिलते हैं, जिसमें गायत्री के पाँच मुख बताए गए हैं। पाँच भौतिक लाभ हैं ? क्या-क्या हैं, भौतिक लाभ ? भौतिक लाभों में बताया गया है आयुः- आदमी का दीर्घजीवन। आदमी गायत्री उपासना से दीर्घजीवी बन सकते हैं तो क्या साहब यह ठीक है ? क्या यह कोई दवा है ? क्या ये कोई कायाकल्प हैं ? क्या ये कोई ऐसी चीज है जैसी कि अमेरिका में मरा हुआ आदमी किसी नीचे तहखाने में रखा हुआ है, ठण्डक में रखा हुआ है और यह उम्मीदें की गई हैं कि इतना समय विश्राम कर लेने के बाद में उसके शरीर को रिलीफ मिल जाएगा, सहायता मिल जाएगी। हम जब उठाएँगे तो मरा हुआ आदमी जिन्दा हो जाएगा तो साहब, क्या यह इसी तरह का प्रयोग है लम्बी जिन्दगी का या कोई और इसमें जादू है या कोई दवा है। बेटे, कोई जादू नहीं है इसमें, दीर्घजीवन के लिए। दीर्घजीवन के लिए और बीमारी से बचाव करने के लिए किसी जादू की जरूरत नहीं है। केवल एक ही जादू की जरूरत है और जिसके शिक्षण का नाम है संयम। अगर आपके जीवन में संयम आ जाए तब, निश्चित रूप से आप नीरोग भी रह सकते हैं और दीर्घजीवी भी हो सकते हैं। दीर्घजीवन तो हमने बिगाड़ा है। अल्प आयु और बीमारियाँ तो हमने खरीदी हैं। ये खरीदी नहीं बुलाई गई हैं। जल्दी मौत हमने बुलाई है और बीमारी को भी हमने बुलाया है सृष्टि के किसी जानवर के पास बीमारियाँ नहीं आतीं। सब आदमी, सब जानवर पैदा तो होते हैं, जवान भी होते हैं, बुड्ढे भी होते हैं और समय आता है तो मौत के मुँह में भी चले जाते हैं। पर बीमारियों का जैसा हमला मनुष्य पर होता है, वैसा किसी प्राणी के ऊपर नहीं होता। क्या बजह है बता दीजिए। भाईसाहब, कोई बजह नहीं है केवल एक वजह है कि दूसरे प्राणी प्रकृति की प्रेरणा से संयमशील जीवन जीते हैं, मर्यादाओं में रहते हैं, कायदा-कानून मानते हैं, प्रकृति की आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं करते और आदमी पग-पग पर उल्लंघन करता रहता है और असंयम बरतता रहता है। असंयम न बरते तो प्रकृति की प्रेरणाओं के आधार पर चलने के लिए अपने आपको रजामंद कर लें तो आप विश्वास रखिए, न आपको बीमार होने की जरूरत पड़ेगी और न आपको जल्दी मरने की उतावली होगी। जल्दी मरने की उतावली करने की जरूरत नहीं है। हकीम लुकमान ये कहते थे कि आदमी अपने मरने के लिए कब्र खोदता रहता है जबान की नोक से। जबान की नोक से हम कब्र खोदते हैं अपने मरने के लिए और अपने को गाड़ने के लिए। लुकमान के मुताबिक हम कैसे रहते हैं ? जीभ की ओर इशारा उनका असंयम से था, जो हमारे प्रत्येक हिस्से में समाया रहता है। केवल जीभ से ही इसका ताल्लुक नहीं है, दूसरी इन्द्रियों से भी ताल्लुक है। दूसरी इन्द्रियों से ही ताल्लुक नहीं है, हमारे रहन-सहन से ले करके उठने-बैठने, चलने-फिरने, विचार करने तक समस्त जीवन से ताल्लुक है।

गायत्री मंत्र की प्रेरणा, गायत्री मंत्र का लाभ हमको यह बताता है कि हम दीर्घजीवी हो सकते हैं और नीरोग रह सकते हैं। शर्त यही है कि गायत्री मंत्र किस तरीके से हमारे शरीर में 'एप्लाइड' होना चाहिए, किस तरह से प्रयुक्त होना चाहिए, यह भी जानना चाहिए। गायत्री मंत्र के साथ-साथ में कुछ सिद्धान्त जुड़े हुए हैं। सिद्धान्तों के कुछ परिणाम जुड़े हुए हैं, पहले आप समझिए उन्हें। प्रत्येक आध्यात्मिकता का वर्ग और पक्ष आदमी को कुछ सिद्धान्त समझाता है। सिद्धान्तों को प्रयोग करने के बाद में लाभ होते हैं। कोई चीज हम खाते हैं, खाने के बाद में खून बनता है, खून बनने के बाद ताकत आती है। नहीं, साहब—खाना खाने के बाद ही ताकत आती है। बेटे, ऐसे नहीं हो सकता। खाने का खून बनता है, खून के बाद में ताकत आती है। उसी तरह जो हम मंत्र जपते हैं या उपासना करते हैं, उससे हमारे जीवन में कुछ सिद्धान्तों का समावेश होता है, कुछ आदर्श हमारे जीवन में प्रवेश करते हैं और आदर्श-सिद्धान्त जीवन में प्रवेश कर जाते हैं तो उनके फलस्वरूप सुख मिलते हैं, सुविधा मिलती है। मशक्कत करते हैं तो मशक्कत करने के बदले में पैसा मिलता है। पैसे के बदले में हम सामान खरीद लाते हैं, पैसे के बदले में हम मिठाई खरीद लेते हैं, पैसे के बदले में हम खिलौना खरीद लेते हैं। नहीं साहब, मशक्कत के बिना खिलौना मिलता है, मशक्कत के बिना बेटे, खिलौना मिलना बड़ा मुश्किल है। मशक्कत के बदले में अनाज किसान तो दे भी सकता है, पर जिसके यहाँ कपड़े की दुकान है वह आपको कहाँ से दे देगा ? वह पैसा दे देगा। पैसा देने के बाद में आप चीज खरीद सकते हैं। आध्यात्मिकता का लाभ आपको सीधे नहीं मिल सकता। गायत्री मंत्र का जप किया और चीजें सीधे आपको मिलीं, ऐसे नहीं हो सकता। विद्या पढ़ी और नौकरी मिल गई। नहीं बेटे, स्कूल गए और नौकरी मिल गई। स्कूल जाने के बाद में विद्या पढ़नी पड़ती है। बिद्या पढ़कर आप जानकार हो जाते हैं, होशियार हो जाते हैं और परीक्षा पास कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लेते हैं तब नौकरी मिलती है। नहीं साहब, स्कूल में घुसते ही नौकरी मिल जाती है। नहीं बेटे, स्कूल में घुसते ही नौकरी नहीं मिल जाती, स्कूल में घुसना पड़ता है, स्कूल में घुसने के बाद में हमको उसका अध्ययन करना पड़ता है। फिर अध्ययन करने के बाद में नौकरी मिलती है। नहीं साहब, स्कूल में घुसते ही नौकरी मिल जाती है, नहीं ऐसे नहीं मिलती है बेटे, मानता क्यों नहीं है ? गायत्री मंत्र का जप करने का उद्देश्य है आदमी के विचारों में और आदमी के चिंतन में हेर-फेर होना चाहिए। आदमी का व्यक्तित्व और आदमी का चिन्तन परिष्कृत होना चाहिए। अगर ऐसा हो गया है तब आपको लाभ मिल जाएगा। चाहे सांसारिक हो, चाहे आध्यात्मिक हो। अगर आपके जीवन में हेर-फेर नहीं हुआ तो कुछ लाभ नहीं मिलेगा।

अगर आपके जीवन में गायत्री उपासना ने कोई हेर-फेर उत्पन्न नहीं किया है, अगर आपको कोई प्रकाश नहीं दिया है तो आपका जीवन जैसा सामान्य मनुष्यों का घिनौना और पिछड़ा हुआ होता है, उसी स्तर का घिनौना और पिछड़ा जीवन होगा तो मैं आपसे कहता हूँ कोई भी मंत्र जिसमें गायत्री भी शामिल है, जिसमें रामायण भी शामिल है, जिसमें गीता भी शामिल है, आपके लिए कोई खास फायदा पैदा नहीं कर सकते। गायत्री मंत्र जब शरीर में प्रवेश करता है तो किस रूप में आता है ? वह संयम के रूप में आता है। आदमी संयमी होता है। जब संयमी होता है तो संयमी होने के पश्चात् में दीर्घजीवी हो जाता है। बहुत दिन जिन्दा रहता है नीरोग रहता है। कैसे जिन्दा रहता है ? वैसे वेटे ढेरों आदमी हुए हैं प्राचीनकाल में जिन्होंने लम्बी जिन्दगी पाई और मौत के मुँह में से छुटकारा पाया। प्राचीनकाल में क्या-क्या नाम थे उनके बताइए ? चलिए आपको नाम बता देता हूँ—आपने सत्यवान का नाम सुना होगा। मौत उसके नजदीक आ गई थी और कह रही थी कि भाईसाहब एक साल से ज्यादा आप जिन्दा नहीं रह सकते। लेकिन उसने सावित्री का वरण किया। सावित्री का वरण करने के बाद में वे लम्बी उम्र तक जिए और मौत उनसे भाग गई। क्यों साहब ! यह हो सकता है ? हाँ, बेटे यह हो सकता है। प्राचीनकाल में होता था और अभी भी हो सकता है। चंदगी राम पहलवान का नाम आपने सुना होगा। वे टी. बी. के मरीज थे और डॉक्टरों ने कह रखा था कि आप एक साल से ज्यादा दिन तक जिन्दा नहीं रह सकते, क्योंकि आपके फेफड़ों में कैविटी बहुत गहरी हो गई है और आपके कफ में बराबर खून आता है और दूसरी चीजें आती हैं। आप ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रह सकते। लेकिन उन्होंने किसी के कहने के मुताबिक संयमशील जिन्दगी जीना शुरू की, आहार-विहार पर नियंत्रण करना शुरू कर दिया और आजकल आप देखते हैं कि वे हिन्द केसरी के नाम से विख्यात हैं और फिल्मों में काम करते हैं। क्यों, साहब ये तो पुराने जमाने की बात है। अरे बेटा, पुराने जमाने, नए जमाने की बात क्या चलती है ? पुराने जमाने में भी वही बात थी और आज के जमाने में भी वही बात है। सूरज पुराने जमाने में भी वही था और आज के जमाने में भी वही सूरज है। पहले सूरज पूरब से निकलता था अब भी वहीं से निकलता है। रात में अंधेरा पहले भी होता था, रात में अंधेरा अभी भी होता है। प्राचीनकाल से क्या मतलब और नए जमाने से क्या मतलब ? जमाने से कोई फर्क नहीं पड़ता। प्रकृति के सिद्धान्तों में, भगवान के सिद्धान्तों में समय बदल जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता। प्राचीनकाल की जो बात है सो अभी की बात है। सत्यवान भी सावित्री की वजह से मौत के मुँह से निकल आया था, तो वह भी ठीक है। इस जमाने में भी निकल सकते हैं।

हम एक कहानी और बता रहे हैं आपको। सैण्डो के बारे में ऐसी ही बात कही जा रही है। सैण्डो भी ऐसे ही मरीज थे। जिनके बारे में कहा जाता था कि जुकाम की वजह से वे ज्यादा दिन जिन्दा रहने वाले नहीं थे, पर सैण्डो संसार के प्रख्यात वीर हुए। नहीं साहब, लम्बी जिन्दगी तो नहीं मिली ? हाँ लम्बी जिन्दगी भी मिलती है। गुरु वशिष्ठ के बारे में आपने सुना है। उनकी लम्बी जिन्दगी थी। कितनी लम्बी जिन्दगी थी ? आप पुराणों को पढ़कर देख लीजिए। सारे के सारे रघुवंशियों के गुरु वशिष्ठ थे। कौन-कौन के गुरु थे ? रामचन्द्र जी के थे और उनके बाप के गुरु थे—दशरथ के और उनके बाप के गुरु थे—रघु के। उसके बाद उनके बाप के गुरु थे—अज के। उसके बाद उसके भी बाप के गुरु थे—दिलीप के और किसके रहे ? बेटे, राजा दिलीप के। दिलीप के कोई संतान नहीं थी। वे अपने गुरु के पास गये तो उन्होंने कहा—नन्दनी गौ चराइए। नन्दनी किसे कहते हैं ? नन्दनी बेटे गायत्री मंत्र को कहते हैं। हमारी नन्दनी गौ को चराइए। रानी ने और उन्होंने दोनों ने तप किया था और उनके संतान हो गई थी। किनके हो गई थी ? दिलीप के और फिर ? फिर पाँच-सात पीढ़ी के बाद वही झगड़ा खड़ा हो गया था। फिर क्या हो गया ? फिर राजा दशरथ ने कहा—महाराज जी हमारे भी संतान नहीं होती। धत् तेरे की ! तेरे परबाबा के सड़बाबा के भी नहीं हुई थी और तेरे भी नहीं होती। हमारे भी नहीं होती महाराज, हमारे भी बच्चा पैदा करिए। उनको भी उपाय बता दिया और उनके भी बच्चे हो गए तो गुरु वशिष्ठ कितनी उम्र के थे ? बेटे हम क्या बता सकते हैं, आप खुद अंदाजा लगा लीजिए। दिलीप से ले करके और दशरथ तक के बीच में कितनी पीढ़ियाँ चली गईं। कई पीढ़ियाँ चली गईं। सात-आठ पीढ़ियाँ चली गईं मेरे ख्याल से। ठीक से मुझे याद नहीं है, पर कई पीढ़ियाँ चली गईं। उन सबके गुरु वशिष्ठ जी थे। तो कितनी उम्र थी उनकी ? बहुत लम्बी उम्र थी।

क्यों साहब, लम्बी उम्र हो सकती है ? हाँ लम्बी उम्र हो सकती है। कौन-कौन की हो सकती है ? बहुतों की हो सकती है। क्यों साहब आपने भी देखी है। बेटे हमने भी देखी है। किसकी देखी है आपने ? लम्बी उम्र का एक आदमी हमने देखा है। रशिया के उजबेकिस्तान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के बारे में छपता रहता है। वहाँ सौ से ज्यादा उम्र के आदमी होते हैं। लेकिन मैंने एक आदमी हिन्दुस्तान में देखा है जिसकी उम्र दो सौ वर्ष के लगभग थी, जिसे सबने देखा था। उन लोगों की बात आप जाने दीजिए। हमारे गुरु हैं, वे आपने भी देखे नहीं हैं, उनके बारे में सबूत भी हम पेश नहीं कर सकते। लेकिन जो सबूत पेश कर सकते हैं, वे एक ऐसे आदमी थे जिन्हें हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा जानता है कि वे दो सौ वर्ष तक जिए थे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के समय पर मालवीय जी जिन महात्मा को ले करके गए थे उनका नाम स्वामी कृष्णानंद था। स्वामी कृष्णानंद के बारे में यह अफवाह थी कि वह जब बरफ पिघलती है तो वे उठ करके खड़े हो जाते हैं और जब बरफ जमने लगती है तो उसी में जम जाते हैं। ये किंवदन्ती है उनके बारे में। जब मालवीय जी उनको ले गये थे तो रातोंरात अँधेरे में ले गए थे, क्योंकि वह नंगे रहते थे और मौन भी रहते थे। वे बरफ में रहते थे। उनसे उन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना कराई थी। इसका वर्णन उसकी तारीख भी है कि उन्होंने उसकी स्थापना की थी। मालवीय जी ने रात को उनकी अगवानी की थी फिर रात को ही उनको विदा कर दिया था। ये स्वामी कृष्णानंद जी गंगोत्री के पास रहते थे, जब मैं गया था। कितने वर्ष हो गए जब मैं वहाँ गया था। पहले वहीं था हिमालय। हिन्दू विश्वविद्यालय को बने हुए लगभग अस्सी वर्ष हो जाते हैं। उस समय भी कितनी उम्र थी उनकी मेरी समझ से अस्सी से भी ज्यादा उम्र थी। जिन लोगों ने पहाड़ी लोगों ने उनको देखा था, मालवीय जी ने जिनसे पता लगाया था, उनसे मालूम पड़ा था कि उन्होंने भी बाप-दादाओं से ये सुना था कि ये और भी ज्यादा उम्र के हैं। अभी जब उनकी मृत्यु हुई थी तब उनके बाल सारे के सारे सफेद नहीं हो पाए थे। दाँत, जब मैं वहाँ था, आश्रम में रहता था तो उनके दाँत बत्तीसों के बत्तीसों थे। एक भी दाँत कमजोर नहीं हुआ था। अस्सी वर्ष के तो आप मानेंगे ही। अस्सी वर्ष तो हिन्दू विश्वविद्यालय को बने हो गए थे। तो वे बच्चे थे क्या तब छह महीने के ? नहीं बेटे, तब भी बूढ़े थे। बुड्ढा आदमी तो गुरुजी पचास, साठ-सत्तर वर्ष का तो होता ही होगा। हाँ बेटे, इससे कम का क्या हो सकता है। हिमालय में वे जहाँ रहते थे और जाड़े के दिनों में जब कड़ाके की ठण्ड पड़ती थी, तब वे बिल्कुल नंगे रहा करते थे। बीमार थे ? नहीं, बीमार नहीं थे, बिल्कुल हट्टे-कट्टे थे और ऐसे मजबूत थे कि उनकी कलाइयों और हाथ-पाँव में कोई फर्क नहीं मालूम पड़ता था।

यह कैसे हो सकता है ? कैसे हो सकता है ? चलिए मैं बताता हूँ। अगर आदमी गायत्री मंत्र के आधार पर वास्तव में ध्यान करे तो क्या-क्या नहीं हो सकता है। गायत्री मंत्र का केवल जप ही न करे, बल्कि जप के साथ-साथ में जो प्रेरणा है, संयम की प्रेरणा उसको भी ग्रहण करे। शरीर के बारे में गायत्री मंत्र की एक ही प्रेरणा है। उसका नाम है संयम। व्यक्ति संयम बर्तता रहेगा, चाहे 'अ' हो चाहे 'ब' हो, चाहे संत हो, चाहे संत न हो वह लम्बी जिन्दगी पा लेगा। अथर्ववेद की साक्षी या गवाही सौ फीसदी सही है। हाँ गायत्री का दूसरा सबसे बड़ा जो गुण है, जिसके ऊपर गायत्री शब्द ही रखा गया है—'गय'। गायत्री किसे कहते हैं ? 'गय' कहते हैं प्राण को—संस्कृत में। प्राण को मजबूत बनाने वाली, प्राण को ताकत देने वाली, प्राण का त्राण करने वाले को गायत्री मंत्र कहते हैं। शब्दार्थ ये होता है गायत्री का। प्राण किसे कहते हैं ? प्राण कहते हैं बेटे हिम्मत को, प्राण कहते हैं जीवट को और प्राण कहते हैं साहस को। दुनिया में जितने भी उन्नतिशील लोग हुए हैं, सब आदमियों के पास और कोई गुण रहा हो चाहे नहीं रहा हो, विद्या रही हो चाहे नहीं रही हो, शारीरिक बल रहा हो चाहे नहीं रहा हो, पर एक चीज जरूर रही है अच्छे कामों के लिए साहस। बुरे कामों के लिए नहीं, बुरे कामों के लिए तो डाकुओं के पास भी होता है। चोरों के पास भी होता है। उचक्के और बेईमान और बदमाशों के पास भी होता है। उस साहस का हवाला नहीं दे रहा मैं। प्राण उसकी नीयत से नहीं आता, प्राण सिर्फ अच्छे कामों के लिए आता है। अच्छे कामों के लिए हिम्मत की जरूरत होती है और आदमी उसी हिम्मत के आधार पर बढ़ते हुए चले जाते हैं। सफलता के द्वार हर एक के लिए खुले हुए हैं। लेकिन उसमें प्रवेश करना केवल उन लोगों का काम है—जो बहादुर हैं, जो हिम्मत वाले हैं, लड़ाकू हैं, जिनके अंदर जीवट है, जिनके अंदर साहस है।

जीवट, साहस, हिम्मत ये सब हमारे मनःक्षेत्र की क्षमताएँ हैं। गायत्री मंत्र का प्रवेश जब भी हमारे भीतर होगा तो ये परिणाम सामने आयेंगे ही, तो हम कैसे जाने गायत्री मंत्र आपके पास आया कि नहीं ? हम कैसे जानें कि गायत्री की फिलासफी का आपने अध्ययन किया कि नहीं किया ? हम कैसे मानें कि आपका अनुष्ठान सही हुआ है कि नहीं हुआ है, ? हमको इन्हीं दो बातों से मानना पड़ेगा। आपको बुखार है कि नहीं हम कैसे जानें ? बुखार जानने का एक ही तरीका है कि आपका शरीर गर्म होना चाहिए, तो हम मान लेंगे कि आपको बुखार है और आपके भीतर वाले हिस्से में जलन होनी चाहिए। गले को सूखना चाहिए। आपकी आँखों में जलन होनी चाहिए। बार-बार प्यास लगनी चाहिए। भीतर भड़कन होनी चाहिए। भीतर की जलन और बाहर की गर्मी, इन दो चीजों को देखकर हम बता सकते हैं कि आपको बुखार है। अगर ये न हों तो आपको बुखार नहीं है। गायत्री मंत्र की उपासना वास्तव में आपने की है कि नहीं, इसकी परख करनी हो तो आपके मनःक्षेत्र में हमको एक ही जानकारी प्राप्त करनी पड़ेगी कि आपके भीतर जीवट और हिम्मत है कि नहीं। हिम्मत के अभाव में, शरीर की ताकत के अभाव में आदमी को चलना-फिरना तक मुश्किल पड़ जाता है, खड़ा होना मुश्किल पड़ जाता है और भीतर वाले हिस्से को—हिम्मत को जिसको हम प्राण कहते हैं, उस प्राण के अभाव में आदमी छोटे-छोटे संकल्पों तक को पूरा नहीं कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाता है। गायत्री मंत्र का जप करेंगे, अमुक काम करेंगे, बीड़ी पीना बंद करेंगे, जल्दी उठा करेंगे, अरे साहब दो चार दिन तो हुआ फिर न हो सका। क्यों साहब, क्यों नहीं हो सका ? अरे साहब ताकत नहीं है ? उठे तो सही, पर ताकत नहीं है, गिर पड़े भट से जमीन पर। बच्चा उठता है फिर गिर पड़ता है, ताकत नहीं है। इसको अंदर की जीवट कहते हैं, इसको संकल्प-शक्ति कहते हैं इसको इच्छाशक्ति कहते हैं, 'विल पावर' कहते हैं और बहुत से नाम हो सकते हैं, जिसे हम जीवट कहते हैं, वह हमारे मनःक्षेत्र में प्रवेश करती है। गायत्री जीवट के रूप में आती है और जीवट के रूप में आ जाए तो छोटे-छोटे बिना ताकत के आदमी न जाने दुनिया में क्या से क्या कर सकते हैं ?

जीवट आदमी के पास हो तो वह क्या नहीं कर सकता ? पुराना इतिहास पढ़ लीजिए, चाहे नया इतिहास पढ़ लीजिए, जीवट वाले आदमियों ने ही संसार में कुछ करके दिखाया है। कोलम्बस को लीजिए। कोलम्बस एक मामूली नाविक था। चलते-चलते इतने लम्बे सफर को पार करता हुआ आगे निकल गया। मल्लाहों ने धमकी दी थी कि हम तुम्हें मार डालेंगे, नहीं तो वापस लौट चलो। उसने कहा—नहीं, हमको जाना ही है और इण्डिया का पता लगाना ही है और वह अमरीका जा पहुँचा। आप इतिहास के पन्ने पलट डालिए सारे के सारे हिम्मत वाले आदमी ही सफल नजर आयेंगे। भौतिक जीवन में हिम्मत वाले आदमी ही सफल होते हैं। अब्राहम लिंकन ने चुनाव लड़े और तेरह बार चुनावों में हारते चले गए, लेकिन उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि हमारे तो भाग्य ही फूट गए, हमारे कर्म में ही नहीं लिखा है। हाथ में हमारे लकीरें होतीं चुनाव में जीतने की तो हम जीत जाते। उन्होंने कहा नहीं इसका कोई मतलब नहीं है, जब तक हम जिएँगे हम प्रयत्न करते चले जाएँगे और तेरहवीं बार अब्राहम लिंकन को सफलता मिली चुनाव में और वे बढ़ते चले गए। कौन बढ़ता चला गया ? उनका चरित्र—बेशक, उनका ज्ञान-बेशक, उनकी विशेषताएँ-बेशक। लेकिन इन सारी की सारी विशेषताओं में एक चीज आपको याद रखनी चाहिए और उसका नाम है—हिम्मत। हिम्मत के बिना बाकी चीजें काम की नहीं हो सकतीं। राकेटों पर रख करके, मिसाइलों पर रख करके एटम वम दूर-दूर तक फेंके जा सकते हैं। मिसाइल न हो तब, तब एटम बम रख दीजिए और फेंक दीजिए ऐसे ही। बंदूक की नली में रख करके गोली दूर तक फेंकी जा सकती है। इसी तरह हिम्मत के सहारे, सिद्धान्त और आदर्शों की, आदमी के उत्थान की बातें की जा सकती हैं। जिस आदमी में हिम्मत नहीं है तो वह मरेगा। सिद्धान्तवादी तो है पर हिम्मत इसमें है कि नहीं ? हिम्मत तो नहीं है। हिम्मत नहीं है तो बेकार है इसका सिद्धान्तवाद और बेकार है मतवाद। ये तो मरा हुआ आदमी है, ये मुर्दा आदमी है। हिम्मत के बिना भी कोई आदमी होते हैं। रीढ़ की हड्डी जिस आदमी के न हो तो वह आदमी क्या ? इसी तरह से हिम्मत जिस आदमी के भीतर न हो वह भी क्या आदमी ?

गायत्री मंत्र आदमी को हिम्मत देता है। हिम्मत देने से छोटे-छोटे आदमी भी, साधनविहीन आदमी भी क्या से क्या कर गये हैं ? आप चाहे पुराणों को पढ़ लीजिए, इतिहास को पढ़ लीजिए या अखबारों को पढ़ लीजिए। इन तीनों में से जो भी आपकी मर्जी हो पढ़ सकते हैं। हिम्मत वाले आदमी दुनिया में क्या कर सकते हैं ? दुनिया में हिम्मत वालों के नाम बताइए ? बेटा एक का नाम था नल और एक का नाम था-नील। नल-नील क्या होते हैं ? नल-नील रीछ थे। रीछ क्या कर सकते थे ? नल-नील ने समुद्र का पुल बना दिया था। इन्होंने ये पढ़ा कहाँ से ? इंजीनियरिंग कैसे सीख ली ? भीतर की कशिश और भीतर की लगन, आदमी की योग्यता बढ़ाने में इतने ज्यादा सहायक होते हैं, जितने हजार अध्यापक और हजार वर्षों तक साहित्य नहीं हो सकता। नल-नील इंजीनियर थे। पर साहब वे तो रीछ थे, इंजीनियर कैसे हो गए होंगे ? बेटे, मैं ज्यादा बहस तो नहीं करना चाहता, पर पुराने जमाने पर शक हो तो मैं अभी भी सैकड़ों के नाम बता सकता हूँ। मि. विश्वेसरैया से लेकर के ढेरों नाम पेश कर सकता हूँ जो बड़े मुसीबत में, गरीबी में और बड़ी कंगाली की हैसियत में और बड़े-छोटे घरों में पैदा हुए थे और अपनी कोशिशों की बजह से कहाँ से कहाँ बढ़ते चले गए ? नल-नील के अतिरिक्त अच्छा और बताइए ? और बेटे हिम्मत के आधार पर हनुमान को ले लीजिए। हनुमान कौन थे—बंदर। अरे तो आप बंदरों की बात कहते हैं, मनुष्यों की बात कहिए। पहले आप बंदरों की बात सुन लीजिए। मनुष्यों की पीछे कहूँगा। रीछ और बंदर। बंदर क्या कर सकते हैं ? बंदर, बेटे समुद्र लाँघ सकते हैं, पहाड़ को उखाड़ सकते हैं। अच्छा इतना बड़ा काम कर सकते हैं ? हाँ, ऐसे ढेरों आदमी हैं। आपने शीरीं-फरहाद का नाम सुना है। फरहाद ने कितने लम्बे पहाड़ को काटकर कितनी लम्बी नहर ला दी थी ? फरहाद का नाम इतिहास का उदाहरण हुआ और हनुमान पुराणों के हुए। आल्पस पहाड़ को किसने उठा लिया था ? नेपोलियन ने। उसने कहा था—भाईसाहब, रास्ता दीजिए हमको निकलने के लिए। अगर आप रास्ता नहीं देंगे तो हम पैरों के तले से कूट डालेंगे। किसने कहा था—आल्पस पहाड़ से और आल्पस पहाड़ ने क्या जवाब दिया था ? आल्पस पहाड़ ने जो दुनिया के लिए चुनौती माना जाता था, सबसे ऊँचा पहाड़ था, जिसके बारे में यह कहा जाता था कि दुनिया के इतिहास में कोई भी आदमी इसे पार न कर सका। इतने शानदार पहाड़ ने सिर झुका दिया और कहा—अगर आपकी यही हिम्मत, यही जुर्रत है तो हम आपको रास्ता देंगे और खुशी से आप चले जाइए। नेपोलियन चला गया था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बेटे, रास्ते कितने लोगों ने दिए हैं। समुद्र की बात कह रहा था। समुद्र को चैलेंज करने वाले और भी होते रहे हैं। अगस्त्य ऋषि ने सारे समुद्र का पानी चुल्लू भर में पी लिया था और लक्ष्मण जी ने तीर लेकर समुद्र से कहा था कि हम तुम्हें सुखा देंगे। अरे साहब, ये तो गप है, पुराणों की कहानी है। अरे बाबा गप है तो इतिहास सुन ले। इतिहास नहीं सुनता है तो अखबार अभी भी पढ़ ले। आप घटना की साक्षी लीजिए। हिम्मत वाले आदमी, जुर्रत वाले आदमी जमाने को बदल देते हैं, समय को बदल देते हैं, अपने आपको बदल देते हैं, वातावरण को बदल देते हैं। शर्त ये है कि आदमी में हिम्मत और जुर्रत होनी चाहिए, जीवट होनी चाहिए। गायत्री मंत्र यदि हमारे प्राण क्षेत्र में, प्राणमय कोष में अर्थात् मानसिक क्षेत्र में प्रवेश करेगा तो क्या चीज देगा, आप ये अंदाज लगाते रहिए। गायत्री की कृपा हुई कि नहीं हुई, इसकी पहचान यह नहीं है कि गायत्री किसी को बेटा-बेटी देती है। गायत्री माता किसी को बेटा-बेटी नहीं देती है। क्या देती है ? आदमी को संयम देती है, एक। संयम से क्या फायदा होता है ? संयम से आदमी का भौतिक जीवन और शारीरिक जीवन बलवान हो जाता है और मानसिक क्षेत्रों में गायत्री क्या देती है ? गायत्री देती है—जीवट, हिम्मत अच्छे कामों के लिए, श्रेष्ठ कामों के लिए जो हमारे आपके भीतर खत्म हो गई है। हिम्मत है तो सही, आपके अंदर भी है और हमारे अंदर भी है। पर वह हिम्मत काम आती है तो सिर्फ चालाकी के काम आती है, बदमाशी के काम आती है, संग्रह के काम आती है, लोभ के काम आती है, लालच के काम आती है। जो हिम्मत श्रेष्ठ कामों के काम आती है, ऐसी हिम्मत को न हमारे पास किसी ने सीखी, न किसी ने सिखाई। जो श्रेष्ठ सिद्धान्तों और आदर्शों पर चलने के लिए और कहने लायक कुछ करने के लिए समर्थ हो सके। ये प्राण और जीवट अगर आदमी के भीतर आ जाए तो क्या हो सकता है ? बेटे मैं नाम गिनता हुआ चला जा रहा हूँ आपको कि हिम्मत वाला आदमी कितना जबरदस्त हो सकता है। साधनहीन आदमी हो करके भी कैसे बड़े से बड़े आदमी के साथ में लोहा ले सकता है। गिद्ध और गिलहरी के वैसे किस्से आते हैं। जटायु ने रावण को चैलेंज किया था। आप ऐसे नहीं कर सकते, आप दूसरे की स्त्री को नहीं भगा सकते। अगर ऐसा करेंगे तो हम आपका मुकाबला करेंगे। तो क्या साहब गिद्ध में इतनी ताकत थी। गिद्ध के बेटे शरीर में नहीं थी, उसके भीतर में थी। जिसको जीवट कहते हैं। हमको नहीं मालूम है कि बूढ़े शरीर में ताकत थी कि नहीं, लेकिन उसके भीतर वह जीवट था, जिससे वह काल से लड़ने के लिए, मौत से लड़ने के लिए भी आमादा हो गया।

बेटे, ये गायत्री मंत्र का वह असली स्वरूप है जिसको कि हम फैलाना चाहते हैं। नकली गायत्री का नहीं। नकली गायत्री वह होती है जो बाजीगरों के काम आती है। बाजीगरों के काम आने वाली नकली गायत्री है। बाजीगरों के काम क्या आती है ? देखिए साहब, हम मंत्र बुदबुदाते हैं और मिट्टी ले लेते हैं और फूँक मार देते हैं। तो क्या बन गया ? ये बन गया गोल। अच्छा और निकालिए। देखिए अभी और निकालते हैं-फूं-ये बन गया रुपया। फूं-ये बन गया कबूतर। ये क्या चीज है ? ये है-बाजीगरी। अध्यात्म बाजीगरी नहीं है। ग्यारह माला जप कीजिए और ये सिद्ध हो गया। बेटा, गायत्री बाजीगरी नहीं हैं, जो क्रिया करते ही परिणाम दे देती है। इसे तो हथेली पर सरसों जमाना कहते हैं। ये बाजीगरों का धन्धा है, ये पेशा बाजीगरों का है। ये साइंटिस्टों का धन्धा नहीं है। जमीन में से, मिट्टी में से पैसा कमाया तो जा सकता है, लेकिन कमाने का दूसरा तरीका है। जमीन के साथ में मशक्कत की जाती है, जमीन में बोया जाता है, जमीन को गोड़ा जाता है, जमीन में से फसल पैदा होती है और तब जमीन में से रुपया कमाया जाता है। नहीं, साहब ये तो बड़ा झगड़ा है। तो क्या चाहते हैं आप ? बिना झगड़े के काम बताइए। बिना झगड़े के काम वही हैं, जो मैं बता रहा था। बाजीगर का धन्धा कीजिए—मुठ्ठी में बालू रखिए, तीन बार डण्डी फिराइए और फूँक दीजिए, रुपया आ जाएगा। मैं क्या कह रहा हूँ ? मैं तो वही बात कह रहा हूँ जो आपने समझ रखी है। आपने गायत्री मंत्र को बाजीगरी समझ रखा है, आपने गायत्री मंत्र को जादूगरी समझ रखा है। ग्यारह माला जप दी और ये मिल गया और वो मिल गया। ग्यारह माला जपने से नहीं मिलता। किससे मिलता है ? बेटे, इससे मिलता है जीवट और साहस। गायत्री मंत्र की उपासना को, गायत्री मंत्र के तत्त्वज्ञान और फिलासफी को जीवन में हृदयंगम करने के पश्चात् यह हमारे भीतर जीवट और साहस उत्पन्न करती है, यह उसका परिणाम है। तब हम छोटे व्यक्ति होते हुए भी बड़ी सफलताएँ प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं, हम प्राणवान बन सकते हैं।

"आयुः, प्राणं, प्रजामू" गायत्री उपासना के प्रतिफल हैं। प्रजाम्-संतान है। बेटा, इस जमाने में जहाँ कहीं भी संतान की बात सुनते हैं, तो हर आदमी हमको मायूसी देता है। डॉक्टर से कहते हैं, दीवार पर पढ़ते हैं। दीवार वाले कहते हैं—डॉक्टर का कहना मानिए। किसी का न मानें तो डॉक्टर का तो कहना मानें। क्या मानें ? पहला अभी नहीं, दो के बाद कभी नहीं। पहला बच्चा अभी नहीं तो कब ? आज नगद कल उधार। अभी नहीं फिर कब ? अब ? नहीं, अभी नहीं। अब दो वर्ष बाद। नहीं, अभी नहीं। तो साहब छह वर्ष बाद, नहीं साहब अभी नहीं। ये सब दीवारें चिल्लाती रहती हैं। सब फैमली प्लानिंग के नारे लगाते रहते हैं। आप क्या कहते हैं कि हमारे बच्चे हो जाएँ ये तो महाराज जी आप देशद्रोह की बात कहते हैं, समाजद्रोह की बात कहते हैं। बाप के ऊपर मुसीबत ढाने की बात कहते हैं। माँ की तंदुरुस्ती खराब करने की बात कहते हैं। ये तो बच्चों का भविष्य खराब करने की बात कहते हैं और समाज में परेशानी बढ़ाने की बात कहते हैं। संतान नहीं पैदा करने की बात कहते हैं। हाँ बेटे, अगर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैं इसी रूप से कहूँगा तो आपको यही समझना चाहिए कि आपसे भगवान जब प्रसन्न होते हैं तो बच्चे नहीं देते। दूसरे शब्दों में ये कहता हूँ कि भगवान जिससे नाराज होते हैं, उसे बच्चे देते हैं। जिससे भगवान बहुत नाराज होते हैं उसे बहुत बच्चे देते हैं। भगवान का जिस पर कोप है, समझना चाहिए कि उस पर जितने ज्यादा बच्चे हैं भगवान उतना ही ज्यादा नाराज है आज के जमाने में। तो आप क्या कह रहे थे कि आप गायत्री मंत्र का जप करेंगे तो आपके बच्चे पैदा हो जाएँगे। नहीं बेटे, आपके बच्चे तो पैदा नहीं हो जाएँगे लेकिन आपको "प्रजां" शब्द जो आया है उसे समझना चाहिए। यह केवल बच्चे के अर्थ में नहीं आया है। प्रजा कहते हैं—पीछे चलने वालों को और सहायता करने वालों को। पीछे चलने वालों का स्तर, साथियों का स्तर, ये प्रजा कहलाती है। गाँधीजी की प्रजा का नाम बताइए ? गाँधीजी की प्रजा का नाम—गाँधीजी के बेटों का नाम—जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, राजेन्द्र बाबू, सुभाषचन्द्र बोस, पट्टाभिसीतारमैया। अभी और बताइए ? अभी और बताता हूँ। अभी याद कर लेने दीजिए—डॉ. राधाकृष्णन, जाकिर हुसैन। अभी और बताइए अभी और बताएँगे। ये कौन हैं ? ये उनकी संतान हैं। संतान क्या होती हैं ? संतान औरत के पेट से पैदा होने वाले बच्चे को नहीं कहते हैं। संतानें उन्हें कहते हैं जो पीछे चला करते हैं। गोत्र जो चले हैं दो आधार पर चले हैं—एक तो वंश-परम्परा से गोत्र चला है और एक शिष्य परम्परा से गोत्र चला है। कश्यप-कायस्थों में ज्यादा होते हैं और ब्राह्मणों में भी कश्यप पाए जाते हैं। भारद्वाज ब्राह्मणों में भी होते हैं और भारद्वाज दूसरे वर्णों में भी पाए जाते हैं तो ये क्या हुआ, वंश परम्परा नहीं, गोत्र परम्परा कहिए, गुरु परम्परा भी, अनुयायी परम्परा भी। अनुयायियों की परम्परा भी एक होती है।

अपनी संतान हो, चाहे परायी हो। ये मैं तो नहीं कहता पर स्तर और क्वालिटी, संख्या नहीं, क्वांटिटी नहीं क्वालिटी की बात कहता हूँ। संख्या की दृष्टि से तो कुत्ते, बिल्ली ज्यादा संतान पैदा करते हैं। यदि संख्या को भगवान की कृपा माना जाता तो मैं कहता हूँ कि भगवान सुअरों के ऊपर सबसे ज्यादा प्रसन्न होता है। एक-एक बार में सुअरिया बारह-बारह बच्चे देती है और साल भर में २४ बच्चे दे देती है। सारी जिन्दगी में मान लो दस साल सुअरिया जिन्दा रही, तो ढाई सौ बच्चे दे दिए। सबसे ज्यादा कृपा है। ये संतान नहीं है। क्वालिटी की बात मैं कह रहा हूँ। क्वालिटी की बात कैसे हो सकती है ? क्वालिटी की बात वहाँ हो सकती है जहाँ कि माता और पिता अपने जीवन को और चरित्र को इस ढंग से बनाते हैं, जहाँ ठप्पा और साँचा ढलता हुआ चला जाता है। साँचे और ठप्पे में जैसे मिट्टी लगाते हैं वैसे ही बनते हुए चले जाते हैं। विनोबा की बात का जिक्र मैं अभी कर चुका हूँ आपको, मदालसा की बात कह चुका हूँ, शकुन्तला की बात कह चुका हूँ, गंगा की बात मैं कह चुका हूँ, सीता की बात मैं कह चुका हूँ। शृंगी ऋषि की बात मैं कह चुका हूँ। अभिभावक अगर अपने स्तर को और क्वालिटी को बना सकने में समर्थ हो तो उनकी संतानें, प्रजा भी इस तरीके की बन सकती हैं।

गायत्री मंत्र के बारे में कहा गया है कि ये प्रजा दिया करती है और चौथी क्या चीज देती है ? चौथी चीज देती है आदमी को कीर्ति। कीर्ति और ख्याति में फर्क है—आप ध्यान रखना। ख्याति क्या होती है ? ख्याति वो होती है, जो पैसा देकर खरीदी जा सके। ख्याति पैसा देकर खरीदी जा सकती है, पर कीर्ति पैसा देकर खरीदी नहीं जा सकती है। कीर्ति शब्द आया है ख्याति शब्द नहीं आया है इसमें। जिस गायत्री मंत्र की आप उपासना करते हैं, यह बीज मंत्र हमारी संस्कृति का मूल है। अगर आपने उपासना की है तो आपको जानना चाहिए कि आपने उपासना की है कि नहीं की है। आपकी कीर्ति होती है कि नहीं। कीर्ति किसे कहते हैं ? कीर्ति बेटे, इसे कहते हैं कि जो आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रामाणिक होता है उस प्रामाणिक आदमी को दूसरे लोग भी विश्वास करते हैं और जिस आदमी का विश्वास किया जाता है, उस आदमी का करते हैं सहयोग और सहयोग जिस आदमी का किया जाता है, वह आदमी होता है सम्पन्न। चार सीढ़ियाँ हैं सम्पन्न बनने की। आप जहाँ कहीं भी चले जाइए दुनिया में बढ़िया से बढ़िया प्रामाणिक व्यक्ति हर क्षेत्र में हुए हैं। चाहें तो सामाजिक क्षेत्र में नेता हुआ हो या कोई आदमी महापुरुष हुआ हो अथवा व्यापारिक क्षेत्र में कोई आदमी सम्पन्न आदमी हुआ हो। बहरहाल टिकाऊ उन्नति केवल उसी के हिस्से में आई है, जिसने अपने आपको प्रामाणिक सिद्ध कर दिया। हम सही हैं और ईमानदार हैं। जो वायदा करते हैं उसको पूरा करते हैं और जो हमारा वचन है वह गलत नहीं हो सकता, जिसने अपने आपको इस तरह से प्रामाणिक साबित कर दिया उस प्रामाणिक आदमी के बारे में लोगों ने विश्वास किया, भरोसा किया। हाँ साहब, यह बहुत भरोसे का आदमी है, इसके यहाँ से जो सामान आता है भरोसे का सामान आता है। यह जाली चीजें नहीं बेचता, नकली चीजें नहीं बेचता। यह खरी चीजें बेचता है, विश्वास की चीजें बेचता है। उसका परिणाम क्या होगा ? आपका विश्वास हो जाएगा और विश्वास होने के बाद में आपको सहयोग मिलेगा। बाटा का कभी एक दिन मैं किस्सा सुना चुका हूँ। बाटा एक छोटा-सा चमार का लड़का था। उसने जूते इस ढंग से बनाने शुरू किए कि हर आदमी ने विश्वास कर लिया कि बड़ा ईमानदार और बड़ा खरा लड़का है। वह अपने काम को मुस्तैदी से पूरा करता है और किसी के साथ में जालसाजी नहीं करता है। विश्वास कर लिया, विश्वास करने के बाद में लोगों ने पैसे दिए, उसके द्वारा नए जूते बनवाए। लोगों में उसकी ख्याति फैली कि बहुत अच्छा आदमी है और बढ़ते-बढ़ते बाटा की दुकानें न जाने कहाँ से कहाँ चली गईं। बाटा का व्यापार बढ़ता ही गया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह एक नहीं बेटा, सारी दुनिया का किस्सा है। यह न केवल व्यापार का किस्सा है, बल्कि सामाजिक क्षेत्र का भी कहता हूँ, नैतिक क्षेत्र का भी कहता हूँ। हर क्षेत्र का कहता हूँ कि प्रामाणिक आदमी तीन सीढ़ियाँ पार करने के बाद में जनता का सहयोग और समर्थन पाकर विकसित और सफल होता हुआ चला जाता है। गायत्री मंत्र कीर्ति कैसे प्रदान करती है ? कीर्ति उसे कहते हैं, जिससे आदमी को गर्व हो सकता है। जिससे आदमी की आत्मा को संतोष हो सकता है। हमने जिन्दगी इस तरह से बिताई कि जिससे हमको गर्व और संतोष है। दुनिया ने जिस आदमी की प्रशंसा की उस आदमी को भी संतोष हो सकता है। प्रशंसा के लिए कितना प्यासा है आदमी, कहाँ से कहाँ मारा-मारा डोलता है ? प्रशंसा के लिए जाने क्या-क्या करता है ? कोई कपड़े पहनता है, कोई फैशन बनाता है, कोई मकान बनाता है, कोई ब्याह-शादियों में धूम-धड़ाका मचाता है, कोई विज्ञापन करता है, कोई अपने नाम के पत्थर लगवाता है। जाने कितने खेल-खिलौने करता है आदमी। लेकिन इस ख्याति के लिए आपको सारे के सारे चमत्कार और खेल-खिलौने करने की जरूरत नहीं है। गायत्री मंत्र अगर हमारे भीतर आएगा तो हमारे भीतर वह प्रामाणिकता पैदा होगी जो निश्चित रूप से हमको कीर्ति देने में समर्थ होगी और अगर आप कीर्तिवान हैं तो आप सफल और सम्पन्न भी होकर रहेंगे।

मित्रो, **"आयुः, प्राणं, प्रजामु, पशुं कीर्तिम्"** के बाद 'द्रविणं' अर्थात् धन के बारे में भी मैं आपसे कह चुका हूँ कि धन की मात्रा कोई एक वस्तु नहीं है। आपका यह ख्याल हो कि धन की मात्रा का बड़ा होना ही कोई बड़ा सौभाग्य है तो मात्रा का बड़ा होना ही सौभाग्य नहीं है। धन का उपयोग करना चाहिए। धन का उपभोग नहीं, उपयोग। थोड़े-से पैसे जिन लोगों के पास हैं, उन लोगों ने दुनिया में इस बढ़िया तरीके से धन का उपयोग कर दिखाया कि लखपति, करोड़पति, अरबपति और खरबपति भी वह लाभ नहीं उठा सकते जो उन लोगों ने थोड़े-से पैसे का सही इस्तेमाल करके उपयोग कर लिया है। धन की समस्या—आर्थिक समस्या तीन बातों पर टिकी हुई है। एक आदमी मशक्कत करता हो, मेहनती हो। जो आदमी मेहनती नहीं है, वह सारी जिन्दगी भर दरिद्र रहेगा। दरिद्रता क्या है ? दरिद्रता का मूल है—आलस। आलस की मूल है—दरिद्रता। दरिद्रता और आलस दोनों आपस में जुड़े हुए हैं। आदमी अगर मशक्कत नहीं करेगा तो गरीब रहेगा और आदमी के अंदर अगर ये महत्त्वाकांक्षा नहीं होगी कि हम अपनी योग्यताओं को बढ़ाएँ तो वह जहाँ जमकर बैठ गया है वहीं बैठा रहेगा। वह यही रोना रोता रहेगा कि हमारे माँ-बाप ने पाँचवाँ दर्जा पास करा दिया था साहब, हमारे कर्म में इससे ज्यादा विद्या नहीं लिखी है। पाँचवें दर्जे तक पढ़ाकर बाप मर गया और फिर हमने स्कूल छोड़ दिया। फिर क्यों नहीं पढ़ा ? फिर क्या पढ़ते, जब हमारा बाप मर गया। आदमी को हर दिन जिस तरह से रोटी कमाते हैं, उसी तरह से अपनी ज्ञान, योग्यता और क्षमता का संवर्द्धन करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। विदेशों में आप जाकर देखिए, वहाँ नाइट स्कूल चलते हैं। आदमी नौकरी भी करते हैं और रात में अपनी योग्यता भी बढ़ाते हैं। शनिवार-इतवार के दो दिन के स्कूल सारी दुनिया में चलते हैं। अमेरिका में जितने विद्यार्थी सबेरे की स्कूल में पढ़ते हैं, उससे दूने विद्यार्थी शनिवार-इतवार के स्कूल में पढ़ते हैं। काम करते जाते हैं और बराबर पढ़ते जाते हैं चाहे वे बुढ्ढे हों, चाहे जवान हों, बराबर पढ़ने जाते हैं, योग्यता बढ़ाते जाते हैं और सम्पन्नता कमाते हैं। योग्यता बढ़ाते नहीं और कहते हैं कि पैसा दे दें। कहाँ से पैसा दे दें। योग्यता लिए बैठा है बाबा आदम के जमाने की और बार-बार कहता है कि हमारी नौकरी बढ़ा दीजिए और तरक्की करा दीजिए। किस बात की तरक्की करा दें ? पहले योग्यता बढ़ा। नहीं साहब, योग्यता तो हम नहीं बढ़ायेंगे, हमको ऐसे ही आशीर्वाद दे दीजिए। हमारा जुआ जिता और लाटरी खुलवा दीजिए। बेटा ऐसा नहीं हो सकता। पहले अपनी योग्यता बढ़ाओ, फिर देखो तुम्हारी आर्थिक उन्नति होती है कि नहीं होती।

तो मित्रो ! परिश्रमशीलता और निरन्तर योग्यता की वृद्धि यह दो उन्नति के मार्ग हैं और तीसरा उपाय है—किफायतसारी। ज्यादा खर्चे जो हमने बढ़ा रखे हैं वे नहीं बढ़ाने चाहिए। खर्चे हम बढ़ाते हैं। ढाई सौ रुपये मिलते हैं और खर्चे बढ़ा रखे हैं—साढ़े चार सौ रुपये वाले। इसलिए बेईमानी करनी पड़ती है, चोरी करनी पड़ती है, कर्ज लेना पड़ता है। किसने कहा था ? खर्च बढ़ाओ। खर्च में कोई कमी क्यों नहीं कर सकता ? नहीं साहब, खर्च तो हमारा बहुत बढ़ा हुआ है तो आमदनी बढ़ाओ। और अगर आमदनी नहीं बढ़ाता तो खर्चा घटाओ। खर्च घटाता नहीं है, आमदनी बढ़ाता नहीं है फिर हाथ तंगी नहीं होगी तो फिर क्या होगी ? मित्रो, यह आध्यात्मिकता के सिद्धान्त हैं। गायत्री मंत्र का यदि वास्तव में आपने जप किया होगा तो आर्थिक संतुलन के बारे में आपको बराबर ध्यान रखना होगा। हम कमाते तो हैं, पर साथ ही साथ योग्यता भी बढ़ाएँ, मेहनत करें ताकि ज्यादा आमदनी हो सके। किफायतशारी पर ध्यान रखें और उतना खर्च करें जो हमारी हैसियत और हमारी कमाई के भीतर हो। पाँव हम उतना ही पसारें जितनी कि पसारना चाहिए। यह गायत्री का व्यावहारिक पक्ष है। अध्यात्म हवाई नहीं है। अध्यात्म काल्पनिक नहीं होता, अध्यात्म में छप्पर फाड़कर दौलत नहीं बरसती। अध्यात्म उस चीज का नाम है जो आदमी के भीतर गुणों के रूप में, कर्म के रूप में, स्वभाव के रूप में प्रवेश करने के बाद में आदमी का व्यक्तित्व विकसित होता हुआ चला जाता है, आदमी समर्थ और सम्पन्न होता हुआ चला जाता है।

मित्रो ! जो बात **"प्राणं, प्रजां, पशुं, कीर्तिं"** के बारे में लागू होती है वही 'द्रविणम्'—धन के बारे में भी लागू होती है। तादाद ज्यादा हो या कम हो, तादाद की बात नहीं है। बहुत-से आदमी थोड़े पैसे वाले होते हैं, पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतना लाभ उठा लेते हैं कि जिसके क्या कहने ? एक दिन मैंने आपको ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की बात कही थी। वे अपनी नौकरी का बहुत थोड़ा हिस्सा अपने लिए रखते थे और बाकी का हिस्सा विद्यार्थियों के लिए खर्च कर देते थे। वही थोड़ा-सा पैसा उनके लिए अमीरों से—करोड़पतियों से भी अधिक लाभदायक हो गया। उनका नाम बढ़ाने में, यश बढ़ाने में, उनको इतिहास में अजर-अमर कराने में उनका थोड़ा पैसा भी काम का हो गया। कितनों के पास ढेरों के ढेरों पैसे होते हैं और वे छोड़कर मर जाते हैं और उसके लिए बेटो में-पोतों में फौजदारियाँ होती हैं लड़ाइयाँ होती रहती हैं। दौलत का सवाल नहीं है, तादाद का सवाल नहीं है। दौलत का इस्तेमाल करने, दौलत का उपयोग करने का सवाल है। यह मुख्य सवाल है। दौलत कैसे कमाई गई और कैसे खर्च की गई, यह विवेकशीलता पर आधारित है। जिसको ऋतम्भरा-प्रज्ञा कहते हैं। गायत्री मंत्र का जप करने वालों में यह समझदारी भी आएगी कि पैसा अगर आया है तो उसे खर्च कैसे करें ? पैसा कमाएँ कैसे ? गलत तरीके से अगर आपने पैसा कमा लिया है तो गलत तरीके से ही जाएगा। जो पैसा आदमी को रुला करके आया है वह पैसा आपको रुला करके ही जाएगा। जो आपने रुला करके वसूल किया है, वह रुला करके जाएगा, ध्यान रखिए। इसलिए मित्रो, पैसे की तादाद की बात नहीं है। पैसे की क्वालिटी की बात है, पैसे के स्तर की बात है कि पैसा किस तरह का होना चाहिए ? 'द्रविणं' इसी को कह सकते हैं।

इस तरह 'द्रविणं' सहित सांसारिक पाँच फायदे हो गए और दो फायदे आध्यात्मिक हैं। एक तो है 'ब्रह्मवर्चस्' और एक है—**"पावमानी द्विजानामू"** जो मनुष्य के जीवन की दुबारा से जन्म देती है। हर आदमी माँ के पेट में से अनगढ़ जानवर पैदा होता है। जानवरों की दो ही इच्छाएँ रहती हैं—एक पेट भरने की और दूसरी औलाद पैदा करने की इच्छा। इसलिए हर आदमी जानवर पैदा होता है—**"जन्मना जायते शूद्रः"** अर्थात् जन्म से हर आदमी शूद्र पैदा होता है, लेकिन अगर भगवान् के सम्पर्क में आता है तो जैसे लोहा पारस के सम्पर्क में आता है तो सोना हो जाता है, इसी तरीके से यदि व्यक्ति अध्यात्म के सम्पर्क में आता है, गायत्री माता के सम्पर्क में आता है तो सोना हो जाता है, अर्थात् उसका स्वरूप बदल जाता है, फिर वह जानवर नहीं रहता, इनसान हो जाता है। इनसान को कहते हैं—द्विज। इनसान किसे कहते हैं ? इनसान उसे कहते हैं जिसके सामने पेट मुख्य नहीं है, औलाद मुख्य नहीं है, उसके सामने सिद्धान्त मुख्य हैं, जिसके लिए जिन्दगी मिली है। जिसके सामने सिद्धान्त मुख्य है वह इनसान है और जिसके सामने मुख्य नहीं है, पशु-प्रवृत्तियाँ जिसके सामने मुख्य हैं वह शरीर की दृष्टि से आदमी होते हुए भी हैवान कहा जाएगा। एक शब्द नर-पशु आता है। नर-पशु किसे कहते हैं ? नर-पशु बेटे उसे कहते हैं, जिसकी शक्ल तो इनसान-सी होती है, लेकिन ईमान जिसका जानवर जैसा होता है। ईमान जिसका जानवर जैसा है और शक्ल इनसान जैसी, उसका नाम है नर-पशु। नर-पशुओं के रूप में हम और आप सब विद्यमान हैं। लेकिन नर-नारायण के रूप में, नर-देवता के रूप में, पुरुष से पुरुषोत्तम के रूप में जो जिन्दा है उनको ही मनुष्य कह सकते हैं।

मनुष्य को द्विज कहना दुबारा जन्म की निशानी है। इसलिए उसे 'द्विज' कहा गया है कि उसका दुबारा जन्म हो जाता है। गायत्री माता के पेट से जो बच्चा पैदा होता है उसी का नाम है 'द्विज' अर्थात् सिद्धांतवादी अर्थात् आदर्शवादी। जो वास्तव में मनुष्य होता है उसी का नाम है—द्विज। जो द्विज होता है वह पावमानी अर्थात् पवित्र होता है। आदमी अपवित्र होता है-खून का बना हुआ, माँस का बना हुआ, टट्टी-पेशाब का घड़ा अपवित्र है और पवित्र कैसे होता है ? पवित्र ज्ञान से होता है। पवित्र सत्कर्म से हो जाता है। पवित्र सद्भाव से हो जाता है। गायत्री मंत्र आध्यात्मिक जीवन में जब प्रवेश करता है तो **"पावमानी द्विजानामू"** दुबारा जन्म देता है और आदमी को भीतर से, बाहर से, हर जगह से पवित्र बना देता है। स्वच्छ, पवित्र, इसकी वाणी पवित्र, इसका शरीर पवित्र, इसके कपड़े पवित्र, इसका व्यवहार पवित्र, इसका वचन पवित्र, इसका दृष्टिकोण पवित्र हर चीज में जहाँ पवित्रता का समावेश है ऐसा द्विज बनाती है गायत्री। ये है आध्यात्मिकता का एक चरण—**"पावमानी द्विजानामू"**—आध्यात्मिक सम्पदा।

आध्यात्मिक सम्पदा का दूसरा वाला चरण है—"ब्रह्मवर्चसम्"। ब्रह्मवर्चस् किसे कहते हैं ? ब्रह्मवर्चस् भी एक ताकत है। दुनिया में बहुत सारी ताकतें हैं। एक ताकत वह है, जो शरीर की ताकत कहलाती है। एक ताकत वह है जो पैसे की ताकत कहलाती है। एक ताकत वह है, जो अक्ल की ताकत कहलाती है। एक ताकत वह है जो होशियारी की ताकत कहलाती है। एक ताकत वह है जो मनुष्य की संघबद्धता की, मनुष्यों के समूह की और समुदाय की ताकत कहलाती है। पाँच ताकतें दुनिया की हैं, लेकिन सबसे बड़ी ताकत जो आदमी की है वह है—रूहानी ताकत, ब्रह्मवर्चस् की ताकत। ब्रह्मवर्चस् की कैसे होती है ? ब्रह्मवर्चस् की ताकत के बारे में पुराने ऋषियों की बात बताऊँ आपको। पुराने ऋषियों की बात जाने दीजिए, कल-परसों की बात मैं बता सकता हूँ। एक दुबला-पतला छियानवें पौण्ड का आदमी, कमजोर जैसा आदमी एक हंटर और एक चाबुक लेकर खड़ा हो गया। जिस तरीके से सर्कस का रिंग मास्टर चाबुक लेकर खड़ा हो जाता है और शेर को कहता है कि तमाशा दिखाइए, दो पैर से खड़े हो जाइए। उसने ब्रिटेन के शेर को कहा—'क्वीट इण्डिया' हिन्दुस्तान छोड़िए। हिन्दुस्तान के सर्कस के रिंग मास्टर का हण्टर देखकर अँग्रेज काँप गए और अपना बोरिया—बिस्तर बाँध करके हिन्दुस्तान के बाहर चले गये। ये कौन-सी ताकत थी ? ये रूहानी ताकत थी। ये आध्यात्मिक ताकतें थीं। आध्यात्मिक ताकतें कैसी होती हैं ? इसे आप इतिहास में देखिए। महापुरुषों की ताकतें,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महामानवों की ताकतें, ज्ञानियों की ताकतें, ऋषियों की ताकतें शारीरिक नहीं थी, मानसिक भी नहीं थी, बौद्धिक भी नहीं थी, दौलत के हिसाब से वह कोई बलवान् नहीं थे और पैसे वाले नहीं थे, लेकिन उनके पास असली ताकत जो थी वह रूहानी ताकत थी, जिसको हम आत्मबल कहते हैं। गायत्री मंत्र जब किसी के पास आता है, तब क्या करता है—उसको आत्मबल प्रदान करता है जिसको हम योगाभ्यास से तपश्चर्या के नाम से कभी बतायेंगे।

आत्मबल कैसे पैदा होता है ? आत्मबल के लिए दो ही तरीके हैं। एक का नाम योग है और एक का नाम तप है। अध्ययनशीलता, विचारों का परिष्कार, इसका नाम योग है और तप का अर्थ है—व्यवहार में सिद्धान्तों को इस तरह से समावेश करना, भले ही हमको कठिनाइयाँ बर्दाश्त करनी पड़ें, लेकिन कठिनाइयों को बर्दाश्त करते हुए भी हम शालीनता के रास्ते पर चलते चले जाएँ। यह तप का सिद्धान्त है। योग का सिद्धान्त है अपने आपको, अपने चिन्तन को भगवान् के चिन्तन के साथ मिला देना। अपने आदर्शों को भगवान् के आदर्शों के साथ मिला देना। अपने दृष्टिकोण को भगवान् के दृष्टिकोण के साथ में मिला देना—यह योग है। योग और तप दोनों को मिला देने से, गायत्री और सावित्री को मिला देने से, गायत्री का तत्त्वज्ञान और गायत्री का उपयोग, गायत्री की फिलॉसफी गायत्री की प्रक्रिया और गायत्री की उपासना दोनों को मिला देने से जो चीज पैदा होती है, उसका नाम है—'ब्रह्मवर्चस्'। क्यों साहब ये बातें हमारी कुछ समझ में आई तो सही, जो कुछ आपने कहा व्याख्यान में, पर कुछ बात जमती नहीं है कि ये कैसे ठीक हो सकती है, कैसे नहीं हो सकती है। मित्रो, ज्यादा तो मैं क्या कह सकता हूँ पर अभी ऋषियों की बातें मैंने आपको बताईं। प्राणवानों की बातें बतायीं, अभ्यास की बातें बताईं। लेकिन अगर आपको इसमें भी शक हो तो मैं बड़ी नम्रतापूर्वक एक और गवाही आपके सामने पेश कर सकता हूँ, जिसको झुठलाने का हममें से कोई भी आदमी हिम्मत नहीं कर सकेगा। अच्छा बताइए एक और गवाही। एक गवाही के रूप में हमको इसीलिए आना पड़ा आपके सामने। हम दूसरे कामों में लगे हुए थे, पर भगवान् ने गायत्री मंत्र का प्रचार करने के लिए भेज दिया और साथ में उन सारी विशेषताओं को साथ लेकर के भेजा कि लोग ये पूछताछ करेंगे कि क्यों साहब, आप गायत्री मंत्र की जो विशेषता भौतिक और आध्यात्मिक लाभ के रूप में बताते हैं, वे कहाँ तक सही हो सकती है। आप साबित कीजिए। तो बेटे हम कैसे साबित करेंगे, हम कहाँ-कहाँ से सबूत लाते फिरेंगे, कहाँ-कहाँ से गवाही इकट्ठी करते फिरेंगे ? इन गवाहियों और सबूतों के सामने हम अपने आपको पेश करते हैं आपके सामने। ये जो पाँचों, सातों बातें हैं यही ठीक ढंग से, सही ढंग से गायत्री की उपासना की जाए तो सहज ही उपलब्ध हो जाती हैं।

सही ढंग से गायत्री उपासना क्या होती है ? आगे चलकर हम आपको बता देंगे, जो हमने की है। जिस ढंग से हमने गायत्री उपासना की है। हमारे ज्ञान और हमारे कर्म दोनों में ही गायत्री का समावेश हुआ है। परिणाम क्या हुआ ? जो लाभ हम बता चुके हैं, अभी और उसे पूरा करते हैं कैसे ? लम्बी जिन्दगी, हमारी कितनी जिन्दगी है, बहुत लम्बी जिन्दगी है। कितनी लम्बी जिन्दगी है ? उम्र के हिसाब से, जन्मपत्री के हिसाब से, डेट ऑफ बर्थ के हिसाब से हमारी सत्तर वर्ष उम्र होती है और वैसे कितनी होती है ? वैसे जो अभी बता रहा था कि पाँच लाभ गायत्री के होते हैं। गायत्री के पाँच मुख और पंचकोष हैं—इस हिसाब से हमारी साढ़े तीन सौ वर्ष उम्र हो जाती है। जो हमने काम किए हैं जिन्दगी में, आप पता लगा सकते हैं और तलाश कर सकते हैं कि इतने काम कोई आदमी साढ़े तीन सौ वर्ष से कम में कर सकता है क्या ? हमने जितना साहित्य लिखा है ये सत्तर वर्ष से कम में नहीं लिखा जा सकता है। हमने जो संगठन किया है—इतना बड़ा संगठन करने के लिए कम से कम इतनी उम्र चाहिए जो कि ऊपर बताई है। दस लाख आदमी हमारे पास हैं, वे हमारे संघ में इस कदर जुड़े हुए हैं जैसे आप देखते हैं। अगले वर्ष हमारा निश्चय है कि हमारे साथ में चौबीस लाख के करीब आदमी जुड़े हुए होंगे। इतना बड़ा संगठन है। अरे बेटे, हिन्दुस्तान के सब संगठनों से बड़ा संगठन है। हिन्दुस्तान में दस-ग्यारह लाख राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पास आदमी हैं और कम्युनिस्ट पार्टी के पास पाँच-छः लाख आदमी हैं और दूसरी पार्टी जैसे जनता पार्टी के पास कह नहीं सकते हैं कि कितने हैं ? काँग्रेस के पास पहले चार-पाँच लाख आदमियों का संगठन था। सबको मिलाकर बीस-इक्कीस लाख के करीब हो जाते हैं और हम अगले वर्ष के संगठन की दृष्टि से चौबीस लाख होंगे। सारे संगठनों को अगर मिला देते हैं—राजनीतिक संगठनों को, धार्मिक संगठनों को, सामाजिक संगठनों को तो भी सबसे ज्यादा हमारी तादाद जा पहुँचती है। हिन्दुस्तान से लेकर के सारे विश्व भर में इसकी शाखाएँ फैली हुई हैं। ये क्या बात है ? कितना काम कर लिया ? बेटे, हमने अपनी उपासना भी कर ली, चौबीस लक्ष पुरश्चरण भी कर लिए, साहित्य का निर्माण भी कर लिया और ये संगठन भी कर लिया। लाखों आदमी अपनी मुसीबतों को लेकर के आते हैं, उनकी सहायता करने के लिए भी हमको कुछ करना पड़ता है। देना पड़ता है कुछ। आशीर्वाद जबान से भी दिए जाते हैं, उसमें अपने तप का एक हिस्सा भी देना पड़ता है। उसमें भी हमको काम करना पड़ता है। पाँच हिस्सों में हम अपना काम करते हैं। एक समय में पाँच कल-पुर्जे और पाँच मशीनें हमारी काम करती रहती हैं। एक मशीन हमारी लेखन का काम करती है, एक मशीन हमारी संगठन का काम करती है, एक मशीन हमारी तपस्वी का काम करती है, ताकि दूसरों को वरदान देने के काम आ सके। एक मशीन हमारे गुर्दे के पास रहती है और अपना जो मूल लक्ष्य है, जीवन का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसको पूरा करने के लिए हम तालमेल बिठाते रहते हैं। इस तरह हम पाँच हिस्सों में एक साथ काम करते हैं।

आपकी उम्र कितनी है ? उम्र को तो बेटे, काम से देखा जाता है। शंकराचार्य सोलह वर्ष की उम्र में पैदा हुए थे, बत्तीस वर्ष की उम्र में मर गए। सोलह वर्ष जिए। सोलह वर्ष नहीं जिए एक सौ साठ वर्ष जिए। समय को देखते हुए यह नहीं देखते हैं कि काम क्या किया है और कितना किया है ? हम तो अस्सी वर्ष के हैं। अस्सी वर्ष के हैं तो काम क्या किया है बताइए ? आप पच्चीस वर्ष जिए तो भी अच्छा है, यदि कुछ किया है तब। भगतसिंह के तरीके से तो पच्चीस साल भी आपके लिए काफी हैं। इसलिए काम क्या किया यह बताइए ? ज्यादा लम्बी जिन्दगी से क्या मतलब है आपका ? ज्यादा जिन्दगी तो साँप की होती है, कछुए की होती है। क्या आप इसी को ज्यादा जिन्दगी कहते हैं। मित्रो ! आयु की दृष्टि से अभी हम सौभाग्यवान हैं। अभी आपकी कितनी आयु हो सकती है ? बेटे, हमको मालूम नहीं है, कहीं ट्रांसफर हो गया तो अलग बात है। बेटे शरीर का जहाँ तक ताल्लुक है, हमारे शरीर में अभी कहीं बुढ़ापा नहीं आया है। अभी कहीं भी ऐसी चीज नहीं आई है, जिसे देखकर हमें यह कहना पड़े कि जवानी में कमी आ गई। सत्तर साल के हैं हम। इस सत्तर साल में भी हम बिल्कुल जवान हैं। कितने जवान हैं ? सत्तर और एक—अब इकहत्तरवाँ वर्ष शुरू होता है तो कितना हो सकता है ? एक को इधर रख लीजिए और सात को इधर रख दीजिए, तो हो जाते हैं—सैवण्टीन—सत्रह। सत्रह अरे ये अक्षरों का है बेटे, बोलने में गड़बड़ पड़ जाती है और प्रोनाउन्सियेशन का फर्क है अन्यथा सैवण्टीन या सेवण्टी—सत्रह और सत्तर में तो बोलने का फर्क है बात एक ही है। सत्रह और सत्तर में क्या फर्क होता है ? बेटे कोई फर्क नहीं होता। फर्क होता है तो हमें देख लें। मित्रो ! इतना लम्बा आयुष्य कैसे हो सकता है ? गायत्री मंत्र की उपासना, जिसका हम आपको शिक्षण करते हैं, जिसको हम आपके द्वारा सारे विश्व में फैलाना चाहते हैं। इसके द्वारा हम आयु के बारे में अपनी गवाही देते हैं। हम आपको 'प्राण' की साक्षी देते हैं। हम प्राणवान भी हैं। सारा समाज एक ओर और हम अकेले। सारे समाज को, युग को बदल देने के लिए, जमाने को बदल देने के लिए, फिजां को बदल देने के लिए हम हिम्मत रखते हैं। सारे पानी की धारा एक ओर और अकेली मछली एक ओर। जिस तरह पानी की धारा को उल्टी दिशा में चीरती हुई, छरछराती हुई निकल जाती है उसी तरह हिम्मत न हारने की हमारी हिम्मत है। हम सिद्धान्तों के लिए, आदर्शों के लिए संघर्ष करते हैं। जब हर आदमी घबराता हो तो समाज में अच्छे काम के लिए कौन मदद करेगा ? बुराइयों को आप दूर कैसे कर पायेंगे ? हम बुराइयों को दूर करने के लिए और अच्छाइयों का संवर्द्धन करने के लिए एकाकी काम करते हैं। "एकला चलो रे", "एकला चलो रे" रवीन्द्र नाथ टैगोर की इस कविता को गाते हुए और गुनगुनाते हुए हम चलते हैं। कौन-कौन चलता है ? एक हम चलते हैं और एक हमारा प्राण चलता है, एक हमारा जीवट चलता है और एक हमारी हिम्मत चलती है और कोई चलता है ? और कोई नहीं चलता। एक हम और एक हमारी हिम्मत और कोई ! और कोई नहीं है, एक हमारा भगवान और एक हमारा ईमान और कोई ? और कोई नहीं है हमारे साथ। दो ही हैं एक हमारी आत्मा और एक हमारी जुर्रत और एक हमारी हिम्मत। इनको लेकर के हम बढ़ते चले जाते हैं।

हमारी तरह से आप भी प्राणवान हो सकते हैं, शर्त केवल यही है कि गायत्री उपासना के सही रूप को और सही सिद्धान्त को आप समझ पाएँ और सही रूप में जीवन में प्रवेश करने के लिए हिम्मत इकट्ठी कर पाएँ। कीर्ति भी मिल सकती है क्या ? कीर्ति के लिए बेटे, हम क्या कह सकते, हैं आपको। 'प्रजाम्' प्रजा के लिए क्या कहेंगे ? अभी तो आपसे कह चुके हैं। कितनी प्रजा है हमारी ? अभी हमारी बेटे दस लाख प्रजा है और इस रजत जयन्ती वर्ष पर हमने कसम खाई है कि अपनी प्रजा में से प्रत्येक के एक बच्चा पैदा करेंगे। दस लाख बच्चों में से प्रत्येक के एक पोता पैदा करेंगे। इसी तरह का हम सबको आशीर्वाद देंगे कि एक पोता हर एक के होना चाहिए। क्यों साहब, हमारी उम्र तो बहुत हो गई, हम तो साठ साल के हैं, हमारे भी होगा क्या ? बेटे, आपके भी होगा। कहाँ से होगा ? आपकी दाढ़ी में से होगा, आपके पेट में से होगा। हमारी औरत तो है भी नहीं। तो क्या हुआ औरत से क्या मतलब है ? औरत से बच्चे होते हैं कोई। ऋषियों के औरतें नहीं थीं फिर भी उनकी अनेकों संतानें थीं। औरतें होना अलग बात है और बच्चे होना अलग बात है। आपमें से दस लाख आदमियों में से एक-एक पोता हमारे होगा तो अगले एक साल के भीतर हम दो गुना हो जाएँगे। नौ महीने के भीतर बच्चे हो जाते हैं। ब्याह हो जाते हैं लड़कियों के और साल भर बाद वे गोदी में बच्चा ले आती हैं। एक साल में हम चौबीस लाख के करीब होंगे। ये हमारी प्रजा है। यह ऐसी प्रजा है जिस पर हमको फक्र है, गर्व है। आपको अपने बच्चों पर गर्व नहीं है, आप तो अपने बच्चों की शिकायतें लेकर आते हैं। हमारा बच्चा बड़ा नालायक है। हमारा बच्चा कहना नहीं मानता। हमारा बच्चा ऐसा है। हमें किसी बच्चे से शिकायत नहीं है। हमारे पास ऐसे-ऐसे बच्चे निकलकर आते हैं कि क्या कहने, जब हम हुक्म देते हैं तो वे चले आते हैं।

मित्रो ! 'प्रजाम्' के अतिरिक्त कीर्ति भी है हमारी। हिन्दुस्तान से लेकर संसार के कोने-कोने तक इस नाम को आप जानना चाहें जो हिन्दू-संस्कृति का आरंभ से अंत तक व्याख्यान करने वाला है। हिन्दू संस्कृति को आरम्भ से अंत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तक समझाने वाला एक भी आदमी ढूँढ़कर लाइए तो आपको दूसरा आदमी नहीं मिल सकता। जिसने भारतीय संस्कृति को गायत्री मंत्र से लेकर के अठारह पुराणों तक का सारा का सारा सांगोपांग ढाँचा खड़ा कर दिया हो। साइन्स के आधार पर विज्ञान और अध्यात्म का प्रतिपादन करना एक नयी शैली है। साइन्स अलग मानी जाती थी और अध्यात्म अलग माना जाता था। दोनों में कोई तालमेल नहीं खाता था। दोनों में आपस में लड़ाई थी। आप कहेंगे कि जहाँ साइन्स खत्म होती है, वहाँ से अध्यात्म शुरू होता है। नहीं बेटे, दोनों को हम मिलाकर चलते हैं। हमारा शरीर और हमारी आत्मा दोनों मिलकर चलते हैं। शरीर खत्म हो जाता है तो आत्मा शुरू होती है। नहीं, ऐसा नहीं है। शरीर-आत्मा मिलकर चलते हैं। विज्ञान और अध्यात्म मिलकर चलता है। यह नयी बात है। रूसो ने कहा था—आप जनता पर राज कर सकते हैं। लोगों ने कहा—गलत है। जनता पर राज तो राजा करता है, प्रजा राज नहीं कर सकती है। प्रजा राज कर सकती है, रूसो ने कहा था। कार्ल मार्क्स ने कहा था—धन का वितरण होना चाहिए, धन पर सबका समान अधिकार होना चाहिए और हमने कहा है कि भौतिक-विज्ञान और अध्यात्म दोनों ही जो तत्त्व हैं, ये आपस में मिलकर चलने चाहिए, आपस में दोनों को समन्वित होना चाहिए और वे समन्वित हैं भी। यह प्रतिपादन अब तक हम करते रहे हैं अखण्ड-ज्योति के द्वारा आपने पढ़ा भी है। अब हम और भी बड़े कदम उठाते हैं। आप देखेंगे कि थोड़े दिनों के बाद, हमारे मरने के बाद या हमारी जिन्दगी में लोग ये कहेंगे कि ऐसी शुरुआत एक आदमी ने की विज्ञान के आधार पर, जिसको कि आध्यात्मिकता के प्रतिपादन के लिए आवश्यक नहीं माना जाता था। इसको फिलॉसफी कहते हैं। लॉजिक भी कह सकते हैं। यह भी विज्ञान का एक अंश है। इसके आधार पर अध्यात्म का प्रतिपादन करने के लिए कीर्ति के हिसाब से शायद दुनिया हमारा ख्याल करती रहे। पैसे के हिसाब से भी आपको मालूम ही है। आप देखते ही हैं। आप लोग चौके में भोजन करने जाते हैं—पाँच सौ आदमी नित्य भोजन करते हैं। फिर दूसरा दिन आता है। जब आप लोग चाय पीते हैं। पाँच सौ आदमी दोनों टाइम भोजन करते हैं। ये कहाँ से आ जाता है, बेटे हम नहीं जानते। नहीं, आपको तो कोई पैसा देता है ? कोई सेठ-साहूकार देते हैं ? जरा बताना आप लोगों में से कौन सेठ-साहूकार हैं ? एकाध तो बताओ हम सेठ-साहूकार हैं, हम आपको दे जाते हैं। खाने के पैसे भी तीन-चौथाई मुश्किल से आ पाते हैं। कहाँ से आ जाता है ? हम नहीं जानते, कहाँ से गायत्री तपोभूमि बनाई, इसमें दस लाख रुपया लग गया। शान्तिकुंज बनाया इसमें दस लाख रुपया लग गया। ब्रह्मवर्चस बनाया, दस लाख रुपया लग गया। गायत्री भवन बनाने वाले हैं। कितना रुपया लगेगा मालूम नहीं, बेटे कितना रुपया लगेगा। हिसाब मत फैलाइए। कहाँ से आता है—'द्रविणम्'। 'द्रविणम्' भी आता है। गाँधी जी के पास भी करोड़ों रुपये आते थे। हमारे पास भी आएगा। कहाँ से आएगा हम नहीं जानते। कहीं से आएगा पर आएगा जरूर। आपका कमाया हुआ नहीं है। नहीं हमारा कमाया हुआ नहीं है। लोगों का दिया हुआ है। लोगों का दिया भी हो सकता है। फिर कहाँ से आता है ? हम नहीं जानते बेटे, कहाँ से आता है। इसी को तो मैं आपसे कहता हूँ—'द्रविणम्'। अर्थात् भगवान् का दिया हुआ धन।

'ब्रह्मवर्चसम्' ब्रह्मवर्चस कैसे होता है ? वैसे ही जैसे इमारत आपने देखी है, जब आप जाते हैं टहलने। यही ब्रह्मवर्चस है। नहीं, बेटे यह ब्रह्मवर्चस तो इमारत है। ब्रह्मवर्चस और होता है। कैसा होता है ?, हमारी मुँह से सुनने की अपेक्षा आप अंदाज लगाइए कि ब्रह्मवर्चस कैसा हो सकता है ? ब्रह्मतेज कैसा हो सकता है ? ब्राह्मण कैसा हो सकता है ? ब्राह्मण की वाणी कैसी हो सकती है ? ब्राह्मण का चेहरा कैसा हो सकता है ? ब्राह्मण का वचन कैसा हो सकता है ? ब्राह्मण का व्यक्तित्व कैसा हो सकता है ? ये आप अंदाजा लगाइए। हम इस अंदाज को खत्म करते हैं और यह कहते हैं कि आप हमें देख लें। गायत्री मंत्र जिसका हम आपको शिक्षण करते हैं। गायत्री मंत्र जिसकी हमने जीवन भर उपासना की है। गायत्री मंत्र जिसका विस्तार हम सारे संसार में करना चाहते हैं। यह उन सारे के सारे सामर्थ्यों से भरा हुआ है, जो व्यक्ति की भौतिक और आत्मिक दोनों सफलताओं के द्वार को खोलने में समर्थ है। यह है गायत्री मंत्र की सामर्थ्य। आज इतना ही। बाकी कल।

ॐ शान्ति।

गायत्री महामंत्र की महत्ता

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

यहाँ गायत्री तपोभूमि में गायत्री माता का मंदिर है। यहाँ गायत्री मंत्र की साधना होती है। मंत्र बड़े सार्थक एवं सामर्थ्यवान होते हैं। इसके द्वारा बड़े-बड़े काम हो सकते हैं। साधारण-सा मंत्र जो सपेरा जानता है, वह साँपों के जहर को मंत्र पढ़कर उतार देता है। भौतिक जगत में यंत्रों का भी बहुत महत्त्व है। आज यंत्रों के द्वारा भारत वर्ष के अन्तर्गत बड़े-बड़े कल-कारखाने चलते हैं। यंत्रों का भी एक इतिहास है। मंत्र का भी एक इतिहास है। इसकी शक्ति भी पैटन टैंक की तरह होती है। हमारे पूर्वज इस महत्त्व को जानते थे। इस कारण से उन्होंने मंत्रों का उपयोग किया तथा उसकी जानकारी लोगों को दी। मंत्रों का भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों तरह का महत्त्व है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस सम्बन्ध में राक्षसों एवं देवताओं दोनों में विवाद था। राक्षस यंत्र को बड़ा बतलाते थे, अर्थात् उनकी दृष्टि में भौतिकता का महत्त्व ज्यादा था। देवता कहते थे कि मंत्र बड़ा है अर्थात् अध्यात्म बड़ा है। मंत्र मनुष्य को विचार देता है। मंत्र विद्या का वैज्ञानिक महत्त्व है। जीभ से जो शब्द निकलते हैं, उनका उच्चारण कंठ, तालु, ओंठ, दाँतों यानी कि मुख के विभिन्न अंगों द्वारा होता है। इस उच्चारणकाल में मुख के जिन भागों से ध्वनि निकलती है, उन अंगों से नाड़ी-तन्तु शरीर के विभिन्न भागों तक फैलते हैं। वास्तव में मंत्र की दो दिशाएँ हैं—(१) यंत्र और (२) मंत्र। इस दुनिया में जो चीजें वस्तु के द्वारा बनी हैं, वह नाशवान हैं। हम लोग सभी यंत्र हैं। हमारे खानपान का ढंग एक यंत्र की प्रक्रिया है। वास्तव में हलचल पर दुनिया टिकी है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि हलचल से दुनिया बनी है।

इस धरती की हर चीज प्रायः नाशवान है। हम बच्चे के रूप में धरती पर आते हैं। वह बच्चा १५-१८ साल तक नवयुवक की स्थिति में होता है, तो अच्छा लगता है। पर वही बच्चा जब ५५वें-६०वें वर्ष में पहुँच जाता है तो वह सुन्दर नहीं लगता है। वास्तव में यह चीजें टिकाऊ नहीं हैं। जब तक आपका शरीर है, तब तक आपकी पत्नी देवी, अप्सरा मालूम पड़ती है, परन्तु जब आप मर जाते हैं तो वही पत्नी एक नौकरानी मात्र शेष रह जाती है।

मनुष्य सोचता है कि हमारे पास पैसा होगा तो हमें सुख-शान्ति मिलेगी, परन्तु ऐसा नहीं होता है। उसके पास जब पैसा आ जाता है तो चोर, डाकुओं का डर बना रहता है। मनुष्य जब बी. ए., एम. ए. पास कर लेता है तो उसे बड़ी-बड़ी नौकरियों का ख्वाब होता है। हमारा सुख केवल कल्पना के सागर में डूबा रहता है, जो शेख-चिल्ली की तरह कभी भी पूरा नहीं होता है। अगर हम देखें तो यह पायेंगे कि मनुष्य समस्या लेकर आता है और उसी समस्या में जिन्दगी भर लगा रहता है तथा अंत में समस्याओं को लिये ही दुनिया से चला जाता है। मनुष्य कल्पनाओं के सागर में डूबा रहता है। यह यंत्र—जो मनुष्य शरीर है, उसको थोड़ी देर शांति मिलती है, परन्तु अन्ततोगत्वा उसे शांति नहीं मिलती है। अगर मनुष्य को शांति मिलेगी तो मंत्र से मिलेगी अर्थात् अध्यात्म की ओर मुड़ने से मिलेगी।

मंत्र जप करने की प्रवृत्ति को नहीं कहते हैं, वरन् वह विचार करने की प्रवृत्ति है। मनुष्य इन मंत्रों को अपनाकर अपने दुःखों को सुखों में बदल सकता है। मनुष्य अपनी दिशाधारा को बदल सकता है। अधिकांश दुःख मनुष्यों को मंत्रों की कमजोरी के कारण होता है और उसका जीवन कष्टों से घिर जाता है। मंत्र उसे कहते हैं, जो दुःखों को दूर करता है। इससे भौतिक आवश्यकता भी पूरी होती है। एक व्यक्ति को साँप काटता है और एक तांत्रिक सपेरा आता है। वह कुछ मंत्र पढ़ता है। साँप आकर विष वापस ले लेता है और वह आदमी स्वस्थ-सानन्द हो जाता है। यह मंत्र का भौतिक प्रयोग कहा जा सकता है।

मंत्रों का सागर इससे कहीं अधिक अध्यात्म के लाभों के बारे में हमें इंगित करता है। अध्यात्म क्षेत्र बड़ा विशाल है। इस क्षेत्र के अंतर्गत गायत्री मंत्र की महत्ता सर्वोपरि है, जो मनुष्य के बुद्धि के स्रोत को खोल देता है और २० वर्ष के बाद भी प्रारम्भ करने के बाद मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करते हुए उसे देवता बना देता है। गायत्री मंत्र के एक-एक अक्षर में अनेक प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का तत्त्व भरा पड़ा है। इसमें रहस्यमय तत्व छिपे पड़े हैं। इसका ही वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृतियों, रामायण आदि ग्रंथों में विवेचन है।

गायत्री को वेदमाता कहा गया है। चारों वेद गायत्री के पुत्र हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि ब्रह्माजी ने अपने एक-एक मुख से गायत्री के एक-एक चरणों की व्याख्याएँ की हैं। इस प्रकार चार मुखों से चार वेदों का वर्णन किया गया है।

ॐ भूर्भुवः स्वः	—	**ऋग्वेद**
तत्सवितुर्वरेण्यं	—	**यजुर्वेद**
भर्गो देवस्य धीमहि	—	**सामवेद**
धियो यो नः प्रचोदयात्	—	**अथर्ववेद**

बाद में इन वेदों के द्वारा दर्शन, आरण्यक, उपनिषद, पुराण, स्मृति आदि का निर्माण हुआ। जिस प्रकार मनुष्य के एक बूँद भ्रूण कलल में मनुष्य का पूरा-पूरा स्वरूप होता है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों में समस्त संसार का ज्ञान-विज्ञान भरा पड़ा है। इसमें सोना बनाने का भी विधान भरा पड़ा है।

गायत्री मंत्र की उपासना सर्वश्रेष्ठ है। इसमें बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करने के लिए प्रार्थना हैं। मनुष्य को सद्बुद्धि आ जाए तो उसे भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों लाभ प्राप्त होते हैं। उपासना का अर्थ होता है—पास बैठना यानी कि भगवान के पास बैठना। अगर बछड़ा गाय के पास न बैठे तो उसें दूध कहाँ से मिलेगा ? माँ की छाती से बच्चा नहीं लिपटे तो माँ का दूध उसे कहाँ से मिलेगा ? पारस के छुए बिना सोना लोहा कैसे बनेगा ? उसी प्रकार ईश्वर के समीप गये बिना आत्मा की भूख कैसे मिटेगी ? यह उपासना की पद्धति है जो मनुष्य को तृप्त करती है। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में प्राण का महत्त्व है, उसी प्रकार आत्मा में ईश्वर का है। परमात्मा से रहित आत्मा शरीर का आवरण ओढ़े पशु के समान है।

परमात्मा के नजदीक जब साधक पहुँच जाता है तो वह अपनी वेदनाओं को भक्ति-भाव से उनके सामने रखता है। उस समय भगवान् भक्त की जो आवश्यक मनोकामनाएँ हैं, उसे पूरा कर देता है। उसकी तृष्णा, वासना, अहंता को समाप्त कर देता है। साधक को भौतिक लाभों के अन्तर्गत चिरस्थायी संतोष, मनोविकारों का शमन, संकटों का निवारण, सुखी गृहस्थ जीवन, हँसता-हँसाता जीवन, लोक-सम्मान जैसे लाभ प्राप्त होते हैं। इसके साथ ही साथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनका परिष्कृत स्वभाव, दैवी अनुग्रह, सेवा की भावना जैसे आध्यात्मिक लाभ साधक को मिलने लगता है, जिससे वह नर से नारायण बन जाता है।

हमारे पास तपोभूमि में नित्य एक न एक व्यक्ति आते रहते हैं, जिनकी समस्याएँ होती हैं। हमने गायत्री उपासना के माध्यम से उन्हें राहत पहुँचाने का काम किया है। एक म. प्र. की प्रधानाध्यापिका आती थीं। उसे नींद नहीं आती थी तथा हमेशा रोती रहती थीं। हमने उसे ठीक किया। अब उसको नींद आ जाती है। एक बार हमारे पास एक सेठ जी आये। उनका इनकम टैक्स का घोटाला था। वे परेशान थे। उनके पास कुल पूँजी ३२ लाख रुपये थी। इनकम टैक्स का १० लाख रुपये देना था। वे परेशान थे। हमारे कहने पर उन्हें शान्ति मिली। हमने कहा कि आपके १० लाख चले जाएँगे तो भी आपके पास २२ लाख बचेंगे। आप परेशान क्यों हैं ? फिलहाल तो जाएगा नहीं, अगर चला भी जाएगा तो भी तेरी कमी पूरी हो जाएगी। हमने उसे गायत्री मंत्र के जप के लिये कहा और उनकी बुद्धि में बदलाव आ गया।

बेटे, इस मंत्र की शक्ति महान है। पहले जमाने के संत-महात्माओं के पास गायत्री मंत्र का बल होता था, इसके कारण वे हर जगह विजयी होते थे। एक बार सिकन्दर हिमालय की ओर गया और एक महात्मा से कुछ माँगने को कहा। उसने कहा—आप शक्तिशाली हो तो धूप निकाल दो। सिकन्दर चुप खड़ा हो गया। अच्छा तो तेरे में इतनी शक्ति नहीं तो हट पूरब दिशा से हमें धूप लेने दे। बेटे, यह साहस एवं आत्मबल गायत्री मंत्र का था जिसके बल पर उस महात्मा ने विश्वविजयी सिकन्दर को परास्त कर दिया था।

गायत्री महामंत्र एक महान् एवं महत्त्वपूर्ण मंत्र है। जब वह किसी के हृदय में प्रवेश कर जाता है तो अन्तः कपाट को खोल देता है और उसका कायाकल्प हो जाता है। आम्रपाली के अन्दर प्रवेश किया तो वह बुद्ध की महान् शिष्या बन गयी। उसने अपना तन, मन, धन सब कुछ उनके चरणों में समर्पित कर दिया। एक बार वह बुद्ध के चरणों में गई, उसने कहा कि प्रभु हम अशुद्ध हैं, आपकी शरण में आये हैं। क्या आप हमारा उद्धार कर सकेंगे ? भगवान बुद्ध ने उसे कुछ मंत्र बतलाया और कहा कि आप इसका जप करें एवं अपने जीवन में उसे धारण करें। वह महिला जो अपने शरीर का व्यापार करती थी, उस दिन से अपने जीवन को बदलने का संकल्प लिया। वह महान बन गई। बुद्ध की महान शिष्या बन गयी और **'बुद्धं शरणं गच्छामि' 'संघं शरणं गच्छामि' 'धम्मं शरणं गच्छामि'** का नारा लगाते हुए करोड़ों लोगों तक बुद्ध का संदेश पहुँचा दिया। बेटे, यह है गायत्री मंत्र की शक्ति, जिसके द्वारा विचारों में बदलाव आता है और उसे संतोष मिलता है।

वास्तव में गायत्री मंत्र भगवान की एक श्रेष्ठ प्रार्थना है जिसके अन्तर्गत हम प्रार्थना करते हैं—

"हे तेजस्वी परमात्मा ! हम आपके श्रेष्ठ प्रकाश को अपने में धारण करते हैं। आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें।"

ब्रह्माजी द्वारा दिये गये इस गायत्री महामंत्र को जिस दिन से इस धरती पर विद्यमान लोगों ने अपने जीवन में अपनाया, उसे चैन, सन्तोष, प्रेम, नैतिकता एवं सहयोग मिलने लगा। आज भी इस मंत्र को ग्रहण करके कमजोर वर्ग के लोग भी महानता की ओर बढ़ रहे हैं। यह ठीक है कि इसके लाभ मिलने में कुछ समय लगता है। इस मंत्र के द्वारा हथेली पर पौधे नहीं उगाये जा सकते हैं। मनुष्य के कषाय-कल्मष जब घुल जाते हैं तथा उसकी पात्रता का विकास हो जाता है तो उसे लाभ मिलता है। ऐसी अनेक कथाएँ आती हैं।

वृन्दावन में एक माधवाचार्य नामक संत थे। उन्होंने २४ साल तक गायत्री उपासना की, परन्तु जब लाभ नहीं मिला तो वे बहुत दुःखी हो गये और एक तांत्रिक के कहने पर गायत्री मंत्र की साधना छोड़कर भैरव की साधना करने लगे।

थोड़े दिन में उनके पास भैरव जी आये और पीठ के पीछे खड़े हो गये और कहा कि आप आशीर्वाद माँगें। उन्होंने कहा कि आप भैरव जी हैं तो आगे आवें। भैरव जी ने कहा कि हम आगे नहीं आ सकते हैं। आगे आने पर हम जल जाएँगे क्योंकि आपने गायत्री उपासना की है। माधवाचार्य ने पूछा तो हमें लाभ क्यों नहीं मिला ? उन्होंने कहा कि आपके कषाय-कल्मष थे। वे अब धुल गए हैं, अब आपको लाभ मिलेगा। माधवाचार्य जी ने भैरव की उपासना छोड़कर पुनः गायत्री मंत्र की उपासना की तथा लाभ मिला। इस प्रकार २४ साल के बाद गायत्री साधना का लाभ मिला।

गायत्री की साधना का चमत्कार अवर्णनीय है। एक समय अकबर के महामंत्री मानसिंह को अकबर ने बुलाया एवं कहा कि हमारा प्रयाग का किला अठारह बार ढह गया उसका कोई उपाय करो ताकि वह सुरक्षित रह सके। अकबर के आदेश को पाकर मानसिंह निकले और गंगा तट पर भ्रमण करने लगे। उन्होंने देखा कि इस वीरान स्थान पर एक महात्मा तप कर रहे हैं। वे उनके पास पहुँचे। उस समय वे ध्यानावस्था में थे। उन्होंने देखा कि एक अजगर उधर से आया और उन्हें निगलने का प्रयास करने लगा, परन्तु वह तपस्वी को निगल न सका। थोड़ी देर में उस तपस्वी का ध्यान टूटा और उन्होंने अपने तपबल से उस अजगर से अपने को मुक्त कर लिया। यह सब तमाशा देखने के बाद मानसिंह वहाँ पहुँचे। थोड़ी देर बैठने के बाद महात्माजी, जिनका नाम देवमुरारी बाबा था, ने उनका कुशल समाचार पूछा। उन्होंने कहा कि मैं अकबर का महामंत्री मानसिंह हूँ और एक विकट समस्या के हल हेतु आपके पास आया हूँ। उस महात्मा ने पूछा कि आप निःसंकोच अपनी समस्या को बतलावें। हम उसके समाधान हेतु प्रयास करेंगे। मानसिंह ने बतलाया कि महात्मन ! प्रयाग के किले का निर्माण महाराज ने १८ बार कराया, परन्तु पता नहीं किस कारण से या कोई देवी के अभिशाप के कारण वह बन नहीं पा रहा है तथा बार-बार वह ढह जाता है। महात्माजी थोड़ी देर मौन रहे और अपनी ध्यान अवस्था में चले गये। उसके बाद मानसिंह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के हाथ पर कुछ रख दिया। उन्होंने कहा कि इसे आप नींव में डाल देंगे और उसके बाद निर्माण करेंगे तो किले का कुछ नहीं होगा। उन्होंने वैसा ही किया और किला तैयार हो गया। वह वस्तु जो मानसिंह की हथेली पर महात्माजी ने रखी थी, वह उन्होंने तुलसी की मंजरी दी थी। देवमुरारी बाबा गायत्री के बहुत बड़े उपासक उस जमाने में रहे हैं तथा उनका चमत्कार सर्वविदित था। सभी लोग उनके पास आते और वे सिद्ध की हुई मंजरी सबको दे देते थे।

मंत्रों का सूक्ष्म प्रभाव बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उसमें भी गायत्री महामंत्र की महत्ता तो विलक्षण है। इसके जप से उत्पन्न होने वाली शक्ति सारे वातावरण को कँपा देने में समर्थ है। इसी महाशक्ति का लाभ जिन्होंने प्राप्त कर लिया–है वे धन्य हो गये हैं। इस महान मंत्र में सद्बुद्धि ही वह तत्त्व है, जिसके आधार पर मनुष्य का व्यक्तित्व निखरता है तथा उभरता है। इस साधना के द्वारा लोग ऋषि, तपस्वी बन जाते हैं, उनके जीवन का कायाकल्प हो जाता है। इस कारण से ही हम आप लोगों को बुलाते हैं, यहाँ गायत्री अनुष्ठान कराते हैं, ताकि आपके पूर्व जन्म के संस्कार कम हों तथा इस जन्म में आप महानता की ओर बढ़ सकें। आपके अंदर पूर्व जन्मों का काफी कषाय-कल्मष जमा है, जिसे हमें साफ करना है, ताकि नये संस्कार उसमें भरे जा सकें। हम यहाँ पर बुलाकर आपको यज्ञोपवीत भी धारण कराते हैं। यह गायत्री की मूर्तिमान प्रतिमा है। इसके नौ धागे गायत्री मंत्र के नौ शब्दों के प्रतीक हैं। यज्ञोपवीत गायत्री की प्रतिमा है। इसे ऋषियों ने रिसर्च करके बनाया है। अगर यह लोहे, पत्थर का होता तो हम धारण नहीं कर पाते। इस धागे का वैज्ञानिक महत्त्व है। यह धागा हमारी आध्यात्मिक माँ के रूप में हमेशा छाती से लिपटा रहता है। यह हमारा मार्गदर्शन करता है।

आपको भी हमेशा गायत्री मंत्र का जप करना है तथा अपने इलाके, मुहल्ले, शहर के लोगों को प्रेरणा देकर, उसके महत्त्व को समझाकर इस मंत्र को जपने की प्रेरणा देनी चाहिए। यह वह मंत्र है जिससे हमारी भौतिक तथा आध्यात्मिक समस्याओं का हल होता है तथा बड़ी-बड़ी समस्याओं का भी हल होता है। पुराणों में अनेक कथाएँ हमारे ऋषियों ने इस मंत्र के लाभ के बारे में लिखी हैं।

एक समय की बात है कि इस पृथ्वी पर अनावृष्टि के कारण बहुत बड़ा अकाल पड़ा। सारे सरोवर सूख गये, पशु-पक्षी मरने लगे। लोग दाने-दाने के लिये मोहताज हो गये। अनेक लोग भूखों मरने लगे। उस स्थिति में लोग त्राहि-त्राहि करने लगे तथा वे गौतम ऋषि के पास समाधान को पहुँचे। उस समय गौतम ऋषि बहुत पहुँचे हुए गायत्री साधक थे। लोग उनके आश्रम में पहुँचे तथा चरणों में प्रणाम करते हुए अपनी समस्याओं को सुनाया। गौतम ऋषि ने उन्हें एक अक्षय-पात्र दिया, जो उन्हें गायत्री माता से प्राप्त हुआ था। उन्होंने कहा—आप इसे ले जाएँ, आपका समाधान हो जाएगा।

लेकिन आप यह न समझें कि आचार्य जी के पास रहकर हमने अनुष्ठान, जप, तप, हवन कर लिया और हमारी गायत्री सिद्ध हो गई। हम जो चाहेंगे वह हमें प्राप्त हो जाएगा। आपका यह सोचना व्यर्थ है। इसके लिए हमें अपनी पात्रता का विकास करना परम आवश्यक है। इसके बिना आध्यात्मिक जगत में हमारा विकास नहीं हो सकता है। जितने भी प्राचीन ऋषि हुए हैं, उन्होंने गायत्री साधना के द्वारा आत्म-शोधन, आत्म-परिमार्जन किया है। योग, तप के माध्यम से अपने को गलाया है। बीज जब गलता है तभी पेड़ का रूप लेता है। अगर बीज को खाद, पानी न मिले तो बीज कभी भी पेड़ का रूप नहीं ले सकता है। हम यह कहना चाहते हैं कि आपके अंदर कितनी कमियाँ हैं ? इसे निकाले बिना आपको हम कुछ नहीं दे सकते। इसी परिमार्जन एवं आत्मशोधन के लिये हम आपको समय-समय पर बुलाते रहते हैं।

आप जानते हैं कि ऊसर भूमि में कोई उपज नहीं होती है। उसी प्रकार भावनारहित उपासना करना निरर्थक है—बेकार है। इससे कोई भी फायदा नहीं हो सकता है। मनुष्य के अन्दर राग-द्वेष, अहंकार, कटुता भरा हुआ है। इसके रहते गायत्री मंत्र का लाभ नहीं मिल सकता है। यह निकालने का कार्य गुरु करता है। गुरु यानी प्रकाश अर्थात् प्रकाश की स्थापना होने पर अन्धकार स्वयं भाग जाता है। आप जानते हैं कि विरजानंद ने दयानंद का, रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद का, समर्थ गुरु रामदास ने छत्रपति शिवाजी का, हमारे गुरु ने हमारा अन्धकार दूर किया और आज गायत्री मंत्र का लाभ हमें कितना मिला, यह आपके सामने है।

हम भी समर्थ हैं। हम भी आपका अन्धकार समाप्त कर देना चाहते हैं, प्रकाश भरना चाहते हैं। आप अपने को खाली करें। यहाँ आये हैं तो आप यहाँ से कुछ लेकर जाएँगे। आज आपको हम कुछ देकर विदा कर रहे हैं। आप जाएँ और थोड़ा भगवान के लिये भी जीना सीखें। अपने पेट के लिये ही न जीएँ, थोड़ा इस सामान्य जीवन से ऊपर उठकर कार्य करें। हमें इस कार्य से प्रसन्नता होगी। भगवान को भी प्रसन्नता होगी। आप विश्वास रखें कि आपने जो अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में हमें बतलाया था, उसका हमें पूरा-पूरा ध्यान है। हम उसे दूर करते रहेंगे। आप निश्चिन्त होकर जाएँ। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

गायत्री महाशक्ति की महान फलश्रुतियाँ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

मेरे पिताजी गायत्री मंत्र की दीक्षा दिलाने के लिए मुझे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में महामना मालवीय जी के पास ले गए। महामना मालवीय जी और हमारे पिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सहपाठी थे। उनका विचार था कि लड़के का यज्ञोपवीत संस्कार और गायत्री मंत्र की दीक्षा महामना मालवीय जी से कराई जाए। पिताजी मुझे वहीं ले गए, तब मैं दस-ग्यारह वर्ष का रहा होऊँगा। मालवीय जी के मुँह से जो वाणी सुनी, वह अभी तक मेरे कानों में गूँजती है। हृदय के पटल और मस्तिष्क पर वह जैसे लोहे के अक्षरों से लिख दी गई, जो कभी मिट नहीं सकेगी। उनके शब्द मुझे ज्यों के त्यों याद हैं, जिसमें उन्होंने कहा था—"भारतीय संस्कृति की जननी गायत्री है। यज्ञ भारतीय धर्म का पिता है। इन माता-पिता की हम सभी को श्रवण कुमार की तरह कंधे पर रखकर सेवा करनी चाहिए।"

गायत्री मंत्र बीज है और इसी से वृक्ष के रूप में सारा का सारा भारतीय धर्म विकसित हुआ है। बीज छोटा-सा होता है बरगद का और उसके ऊपर वृक्ष इतना बड़ा विशाल होता हुआ चला जाता है। गायत्री मंत्र से चारों वेद बने। वेदों के व्याख्यान स्वरूप ब्रह्माजी ने, ऋषियों ने और ग्रंथ बनाए, उपनिषद् बनाए, स्मृतियाँ बनाईं, ब्राह्मण, आरण्यक बनाए। इस तरह हिन्दू धर्म का विशालकाय वाङ्मय बनता चला गया। हिन्दू धर्म की जो कुछ भी विशेषता दिखाई पड़ती हैं—साधनापरक, ज्ञानपरक अथवा विज्ञानपरक, वह सब गायत्री के बीज से ही विकसित हुई हैं। सारे का सारा विस्तार गायत्री बीज से ही हुआ है। बीज वही है, टहनियाँ बहुत सारी हैं। हिन्दू धर्म में चौबीस अवतार हैं। ये चौबीस अवतार क्या हैं ? एक-एक अक्षर गायत्री का एक-एक अवतार के रूप में, उनके जीवन की विशेषताओं के रूप में, उनकी शिक्षाओं के रूप में है। हर अवतार एक अक्षर है गायत्री का, जिसमें क्रियाएँ और लीलाएँ करके दिखाई गई हैं। उनके जीवन का जो सार है वही एक-एक अक्षर गायत्री का है।

हिन्दू धर्म के दो अवतार मुख्य हैं—एक का नाम राम और दूसरे का नाम कृष्ण है। राम चरित का वर्णन करने के लिए बाल्मीकि रामायण लिखी गई, जिसमें २४००० श्लोक हैं और प्रति १००० श्लोक के पीछे सम्पुट लगा हुआ है गायत्री मंत्र के एक अक्षर का। श्रीकृष्ण चरित भागवत् में लिखा है। श्रीमद्भागवत् में भी चौबीस हजार श्लोक हैं और एक हजार श्लोक के पीछे गायत्री मंत्र के एक अक्षर का सम्पुट लगा हुआ है अर्थात् गायत्री मंत्र के एक अक्षर की व्याख्या एक हजार श्लोकों में। रामचरित हो अथवा कृष्णचरित—दोनों का गायत्री का वर्णन इस रूप में मालवीय जी ने किया कि मेरे मन में बैठ गया कि यदि ऐसी विशाल गायत्री है, तो मैं खोज करूँगा। उसका और अनुसंधान करके लोगों को यह बताकर रहूँगा कि ऋषियों की बातें, शास्त्रों की बातें सही हैं क्या ? **स्तुता मया वरदा** ..... कामधेनु, पारस, कल्पवृक्ष आदि जो लाभ गायत्री उपासना के बताए गए हैं, उसके लिए मुझे जिंदगी का जुआ खेलना ही पड़ेगा और खेलना ही चाहिए। मित्रो ! चार-पाँच वर्ष में ही मेरी इच्छा भगवान ने पूरी कर दी। मेरे गुरु मेरे पास आए और उन्होंने जो बातें बताईं उससे जिंदगी का मूल्य मेरी समझ में आ गया। जिंदगी का मूल्य और महत्त्व समझकर मैं चौंक पड़ा कि चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद मिलने वाली यह जिंदगी मखौल है क्या ? इसके पीछे महान् उद्देश्य छिपे हुए हैं। भगवान् ने यह मौका दिया है। एक, इनसानी जिंदगी हमारे हाथ में देकर के। पर क्या हम और आप इसका इस्तेमाल कर पाते हैं ?

मालवीय जी ने मुझे सबसे कीमती एक ही बात बताई थी कि गायत्री मंत्र का संबल आप पकड़ लें तो पार हो सकते हैं। वे मेरे दीक्षा गुरु हैं और आध्यात्मिक गुरु वे हैं, जो हिमालय पर रहते हैं। उन्होंने बताया कि जिंदगी की कीमत समझ, जिंदगी का ठीक इस्तेमाल करना सीख। जिंदगी की कीमत मैंने पूरी तरीके से वसूल कर ली है। एक-एक साँस को इस तरीक़े से खर्च किया है कि कोई यह इल्जाम मुझ पर नहीं लगा सकता कि आपने जिंदगी के साथ मखौल किया है, दिल्लगीबाजी की है। जीवन-देवता पारस है, अमृत है और कल्पवृक्ष है। इसका ठीक से इस्तेमाल करता हुआ मैं चला गया और वहाँ से चलते-चलते अभी पचपन साल की मंजिल पूरी करने में समर्थ हो गया। क्या-क्या किया ? कैसे पाया ? मैं चाहता हूँ कि चलते-चलाते आपको अपने भेद और रहस्य बताता जाऊँ कि गायत्री मंत्र कितना सामर्थ्यवान है ? यह इतना कीमती है कि मात्र माला घुमाने की कीमत पर इसके लाभ नहीं प्राप्त किए जा सकते। इसके लिए कुछ ज्यादा ही कीमत चुकानी पड़ेगी।

ऋषि, गायत्री मंत्र के बारे में क्या कहते हैं ? शास्त्रकारों ने क्या कहा है ? यह जानने के लिए मित्रो, मैंने पढ़ना शुरू किया और पढ़ते-पढ़ते सारी उम्र निकाल दी। पढ़ने में क्या-क्या पढ़ा ? भारतीय धर्म और संस्कृति में जो कुछ भी है वह सब पढ़ा। वेद पढ़े, आरण्यक पढ़ीं, उपनिषदें पढ़ीं, दर्शन पढ़े और दूसरे ग्रंथ पढ़ डाले-देखूँ तो सही गायत्री के बारे में ग्रंथ क्या कहते हैं। खोजते-खोजते सारे ग्रंथों में जो पाया, उसे नोट करता चला गया। पीछे मन में यह आया कि जैसे मैंने फायदा उठाया है, दूसरे भी फायदा उठाएँ। असल में मैंने ग्रंथों को, ऋषियों की मान्यताओं को जानने के लिए पढ़ा और पढ़ने के साथ-साथ मैंने यह प्रयत्न भी किया कि जो कोई गायत्री के जानकार हैं, उनसे जानूँ कि गायत्री क्या है ? और प्रयत्न करूँ कि जिस तरीके से खोज और शोध उन्होंने की थी, उसी तरीके से मैं भी खोज और शोध करने का प्रयत्न करूँ।

मैंने पढ़ा है कि एक आदमी बहुत पहले हुआ था जिसने गायत्री में पी-एच. डी. और डी. लिट् किया था ? कौन था ? उसका नाम था—विश्वामित्र। विश्वामित्र उस व्यक्ति का नाम है, जिसको जब हम संकल्प बोलते हैं तो हाथ में जल लेकर गायत्री मंत्र से पहले विनियोग बोलना पड़ता है। आपको तो हमने नहीं बताया। जब आप आगे-आगे चलेंगे, ब्रह्मवर्चस की उपासना में चलेंगे, तब हम गायत्री के रहस्यों को भी बताएँगे। अभी तो आपको सामान्य बालबोध नियम भर बताए हैं। जो गायत्री महाविज्ञान में छपे हैं। बालबोध नियम जो सर्वसाधारण के

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लिए हैं, उतना ही छापा है, लेकिन जो जप हम करते हैं, उसमें एक संकल्प भी बोलते हैं, जिसका नाम है 'विनियोग।' प्रत्येक बीज मंत्र के पूर्व एक विनियोग लगा रहता है। विनियोग में हम तीन बातें बोलते हैं—**'गायत्री छंदः सविता देवता विश्वामित्र ऋषिः गायत्री जपे विनियोगः।'** संकल्प जल छोड़ करके तब हम जप करते हैं। यह क्या हो गया ? इसमें यह बात बताई गई है कि गायत्री का पारंगत कौन आदमी था ? गायत्रा का अध्ययन किसने किया था, गायत्री की जानकारियाँ किसने प्राप्त कीं, गायत्री की उपासना किसने की ? वह आदमी जो कि प्रामाणिक है गायत्री के सम्बन्ध में उसका नाम विश्वामित्र है। मेरे मन में आया कि क्या मेरे लिए ऐसा संभव नहीं कि विश्वामित्र के तरीके से प्रयास करूँ। मित्रो ! मैं उसी काम में लग गया। पंद्रह वर्ष की उम्र से उन्तालीस तक चौबीस वर्ष बराबर एक ही काम में लगा रहा, लोग पूछते रहे कि यह आप क्या किया करते हैं हमें भी कुछ बताइए। हमने कहा—प्रयोग कर रहे हैं, रिसर्च कर रहे हैं और रिसर्च करने के बाद में कोई चीज काम की होगी तो लोगों को बताएँगे कि आप भी गायत्री की उपासना कीजिए, नहीं होगी तो मना कर देंगे।

मित्रो ! २४ साल की उपासना के पश्चात् संशोधन के पश्चात् तीस साल और हो गए जब से गायत्री के प्रचार का कार्य हमने लिया और जब हमको हमारी जीवात्मा ने यह आज्ञा दी कि यह काम की चीज है, उपयोगी चीज है, लाभदायक चीज है। इसको लोगों को बताया जाना चाहिए और समझाया जाना चाहिए। जो जितना अधिकारी हो उसे उतनी ही खुराक दी जानी चाहिए। हम उपासना सिखाते रहे हैं, छोटी खुराक वालों को छोटी मात्रा देते रहे हैं, बड़ों को बड़ी मात्रा। हमने छोटे बच्चों को दूध में पानी मिले हुए से लेकर बड़ों को घी और शक्कर मिली हुई खुराक तक विभिन्न लोगों को दी है तीस सालों में। इन तीस सालों में हमारा विश्वास अटूट होता चला गया है, श्रद्धा मजबूत होती चली गई है। यह वह संबल है, वह आधार है कि अगर ठीक तरीके से कोई पकड़ सकने में समर्थ हो सकता हो तो उसके लिए नफा ही नफा है, लाभ ही लाभ है।

गायत्री के जो सात लाभ बताए गए हैं—**"स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्तां आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् . . . . . ।"** इन्हें हमने सौ फीसदी पाया कि ये सातों के सातों लाभ एक-एक अक्षर करके इसमें सही हैं। यह हमने अपने जीवन की प्रयोगशाला में साबित किया है, अपनी जिंदगी में परीक्षण किया है कि सातों लाभ जो गायत्री के बताए गए हैं, सही हैं। इससे मनुष्य की आयु बहुत बड़ी हो जाती है। कितनी बड़ी हो जाती है ? बेटे हम कुछ कह नहीं सकते, पर हमारे गुरु के बारे में अपना विश्वास है कि उनकी आयु ६०० वर्ष से कम नहीं हो सकती। गायत्री मंत्र का जप करने वाले की आयु बहुत बड़ी हो सकती है। यह तो आप अपने गुरु की बता रहे हैं तो फिर आपकी उम्र कहाँ रही ? बेटे, हमारी उम्र बहुत बड़ी है।

७० वर्ष उम्र होने को आई, पर सही बात यह है कि ७० साल हमारी उम्र नहीं है। हम ३५० वर्ष के हैं। ७० × ५ = ३५०। आप ३५० वर्ष के कैसे हो सकते हैं ? हम इसलिए हुए कि पाँच आदमी मिलकर के जितना काम करते हैं, उतना काम हमने अपनी जिंदगी में अकेले किया। ग्रंथ हमने जितने लिखे हैं, अगर एक आदमी जिंदगी में लिखने के अलावा दूसरा कोई काम नहीं करे तो भी नहीं कर सकता और हमने क्या किया ? सारी जिंदगी भर एक आदमी तप करता रहा है। जिंदगी के अधिकांश समय में हमारा ६ घंटे रोज दैनिक उपासना में चला गया। इस तरह एक आदमी ने पूरा का पूरा श्रम गायत्री उपासना में किया।

एक आदमी ने संगठन किया है। हमने देश भर का संगठन किया है। हिन्दुस्तान में और सारे संसार में जो लोग हमको गुरुजी कहते हैं और जिन्होंने हमें देखा है, जो हमारी बात को सुनते हैं, मानते हैं, जिन्होंने दीक्षा ली है, वे करोड़ों की तादाद में हो सकते हैं। एक आदमी ने इतना बड़ा संगठन ३० साल में खड़ा किया हो, मैं समझता हूँ हिस्ट्री में ऐसा उदाहरण कभी नहीं मिला होगा। मरने के बाद तो लोगों ने किए हैं। ईसा के मरने के बाद सेंटपाल ने ईसाई धर्म का विस्तार किया था तब फैला था वह धर्म। बुद्ध भगवान् का मिशन उनकी जिंदगी में नहीं फैल सका, बहुत थोड़ा-सा था। सम्राट अशोक ने अपना सारा राज्य बुद्ध मिशन के लिए लगाया, तब कहीं उसका विस्तार हुआ। ३० साल हमने विस्तार की व्यवस्था बनाई है और कोई एक आदमी रह गया है, जो हमेशा कहीं और दुनिया में रहता है। संतों के पास रहता है, ज्ञानियों के पास रहता है, तपस्वियों के पास रहता है। उनसे हम गर्मी प्राप्त करते रहते हैं, शक्ति प्राप्त करते रहते हैं, पूछताछ करते रहते हैं। एक आदमी और हमारा है जो जगह-जगह जाता रहता है। अक्सर लोग कहते हैं कि क्यों साहब हमने सुना है कि आप वहाँ के यज्ञ में गए थे और लोगों ने देखा था। यह भी हो सकता है। स्थूल ही नहीं, शरीर सूक्ष्म भी होते हैं। सूक्ष्म शरीर से हमको जगह-जगह जाना पड़ता है। जगह-जगह काम करने पड़ते हैं। पाँच व्यक्तियों की हमने बराबर जिंदगी जी और ३५० वर्ष की उम्र हो गई। यह है हमारी आयु।

प्राण। प्राण माने साहस-हिम्मत। हममें बहुत हिम्मत है। कितनी हिम्मत है ? सारे के सारे पंडित और पुरातनवादी लोग यह कहते थे कि महिलाओं को गायत्री का जप नहीं करना चाहिए और ब्राह्मण के अलावा किसी को नहीं करना चाहिए। हम अकेले ने कहा कि हर बिरादरी के लोग कर सकते हैं और महिलाएँ भी कर सकती हैं। पंडितों, शंकराचार्यों सभी से हमने लोहा लिया। सारी दुनिया में उल्टी हवाएँ बह रही हैं, प्रवाह बह रहे हैं उनको मोड़ देने के लिए हममें बहुत ताकत है। इतनी ताकत है हममें कि जिस तरीके से मछली बहती हुई धारा को छल-छलाती हुई चीरती हुई चली जाती है, उसी तरीके से हम अकेले निकल जाते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहाँ से आता है प्राण ? गायत्री में से आता है। गायत्री ने और क्या-क्या दिया ? हमको दीर्घजीवन दिया, लम्बी आयु दी, प्राण दिया, हिम्मत दे दी, बहादुरी और साहस दे दिया, शक्ति दे दी। प्राणं, प्रजां और संतानें दे दीं। कितनी संतानें दीं, हम कह नहीं सकते ? हमारी संतानें जहाँ पैदा होती हैं तो मूछों समेत पैदा होती हैं और लड़कियाँ पैदा होती हैं तो मैट्रिक पास करके पैदा होती हैं। कीर्ति-यश के बारे में हमारे मुँह से शोभा नहीं देता। पर हम एक ही बात कहते हैं कि संसार के पढ़े-लिखे लोगों में से कभी किसी से यह पूछें कि आचार्य जी नाम के कोई व्यक्ति थे, तो वह छूटते ही कहेगा हम जानते हैं उन्हें। हिन्दुस्तान ही नहीं, संसार की प्रत्येक लायब्रेरी में जाइए और जाकर पूछिए कि चारों वेदों के भाष्य आपके यहाँ हैं क्या ? उत्तर हाँ में मिलेगा। नास्तिक देशों की बात मैं कहता हूँ। आप पूछिए क्यों साहब इस नाम के व्यक्ति को आप जानते हैं ? हमारा यश किसी सीमा में बँधा नहीं है, संप्रदाय में नहीं है, केवल हिन्दू धर्म में नहीं है, वरन् सारे विश्व में है। यह यश कहाँ से आ गया ? यह बेटे गायत्री माता का दिया हुआ है।

कीर्तिम् द्रविणं । धन—यह मत पूछिए कि हमारे पास कितना है ? अभी पीछे वाली जमीन खरीदी है और जब अगली बार वसंत पंचमी पर आप आवेंगे तो यहाँ नगर बसा हुआ मिलेगा, महल दिखाई पड़ेगा। महाराज जी कहाँ से लाएँगे ? आप हमसे माँगेंगे। नहीं बेटे, मैं तेरे सामने हाथ नहीं फैलाऊँगा। मैंने इनसान के सामने हाथ नहीं पसारा तो तुझसे क्या मागूँगा ? कहाँ से आयेगा ? बेटे कहीं से आएगा, जमीन फटेगी, आसमान से आएगा। कौन देगा ? वही देगा जिसके बारे में अथर्ववेद ने साक्षी देते हुए कहा है कि—कीर्तिम्—द्रविणं—धन देने वाली और आखिर में क्या देती है सातवाँ फल—ब्रह्मवर्चस्। ब्रह्मवर्चस् कौन सा है ? ब्रह्मवर्चस् कहते हैं तेज को। ब्रह्मतेज कैसा होता है ? ब्रह्मतेज उसे कहते हैं—जब विश्वामित्र और वशिष्ठ में संघर्ष हुआ तब विश्वामित्र हार गए और अपना राज्य छोड़कर यह कहने लगे कि वशिष्ठ जितने शक्तिशाली हैं उतना ही शक्तिशाली बनकर मैं भी दिखाऊँगा। उन्होंने एक श्लोक कहा—**"धिक् बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलं बलम्।"** अर्थात् ब्रह्मतेज ही बल है। ब्रह्मवर्चस् माने ब्रह्मतेज। इसे ब्राह्मणत्व का तेज कहते हैं, आध्यात्मिक तेज कहते हैं, आत्मा की शक्ति का तेज कहते हैं। गायत्री का आखिरी फल-सातवाँ फल ब्रह्मवर्चस् होता है।

गायत्री मंत्र के बारे में हम सारे जीवन भर प्रयत्न करते रहे और सफलता पा ली। आज मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि ऋषियों ने जो कुछ बताया था कि गायत्री भारतीय संस्कृति का बीज है, जो वह सही है। जो शास्त्रकारों ने लिखा है, अन्यान्य उपासकों ने लिखा है, हम आज यह कहने की स्थिति में हैं कि वह सही है। आप कहते हैं या कोई गवाही भी है ? हाँ बेटे, हमारी जिंदगी गवाही है और प्रारंभिक पंद्रह वर्ष के बाद के ५५ साल के ५५ पन्ने गवाही हैं। हमारी जिंदगी के प्रत्येक पन्ने को खोलते चले जाइए वह एक गवाह के रूप में अपना बयान देगा और अपनी हिस्ट्री बताएगा। वह यह बताएगा कि गायत्री की उपासना करते हुए ५५ साल में हमने यह पाया और यह किया। तो महाराज हमें भी मिल सकती है ? इसलिए तो तुम्हें बुलाया है। जो हमारे लिए सम्भव है, वह आपके लिए भी है। गायत्री आपके ऊपर भी कृपा कर सकती है। सूरज के हम रिश्तेदार नहीं हैं और आपसे कोई बैर नहीं है। आप धूप में खड़े हो जाइए सूरज की रोशनी आप को भी मिल सकती है और हमको भी। चन्द्रमा की छाया में आप भी बैठ सकते हैं और हम भी।

तो आपने कौन-सी विधि से जप किया ? कौन-सी विधि से उपासना की ? बेटे ! हम यही बताने के लिए आज आपके सामने बैठे हैं कि किस विधि से किया ? विधि नहीं एक और बात पूछी जाए। क्या ? विधि तो उसे कहते हैं, जो शरीर से और वस्तुओं की सहायता से, हेरा-फेरी से की जाती है। विधि में हाथ यों जोड़िए, चावल ऐसा नहीं यों रखिए। माला लकड़ी की हो या रुद्राक्ष की। दीपक कैसे रखें ? यह सब क्या है ? विधि है। कलेवर का नाम विधि है। जिस विधि को आप पूजते हैं वह आवरण है। आवरण की भी जरूरत पड़ती है, उसके बिना काम नहीं चलता। अगर हमारे पास कलम न हो तो हम चिट्ठी लिख नहीं सकेंगे। बंदूक और तलवार हाथ में हो, पर चलाने की विधि न आती हो तो लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। अतः विधि की भी जरूरत है। लेकिन मैं यह कहता हूँ कि विधि तक सीमित रहिए मत। विधि आपको मकसद तक नहीं पहुँचा सकेगी। विधि के सहारे आप जीवन-लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकेंगे। विधि आपको भगवान् तक नहीं पहुँचा सकेगी। विधि के सहारे आप भगवान् की कृपा के अधिकारी नहीं बन सकते। तब क्या करना पड़ेगा ? विधि के साथ विधा को जानना होगा। विधा अर्थात् रीति, कायदा-कानून, नियम और मर्यादा। इसके बिना सफलता नहीं मिल सकती।

ऋषियों ने गायत्री को त्रिपदा कहा है। इसके तीन आधार हैं श्रद्धा, चरित्रनिष्ठा और उदारता जिसे संकीर्णता या कृपणता का त्याग भी कहते हैं। यह तीन आधार आप पकड़ लें तो मैं यकीन दिलाता हूँ कि मेरे तरीके से आपको भी सफलता मिल सकती है। आप भी गायत्री के वैसे ही सिद्धपुरुष बन सकते हैं जैसे कि महर्षि विश्वामित्र थे और जैसा बनने के लिए मैंने छोटे बच्चे की तरह खुद को समर्पित किया। आपके लिए भी द्वार खुला है, मगर त्रिपदा की तीन शर्तें पूरी कर लें तब। इन तीनों आधारों पर हमारी जिंदगी टिकी हुई है अगर आप गायत्री मंत्र का वह चमत्कार, जो कि ऋषियों को मिला था, उपासकों, ब्राह्मणों और हमको मिला है तो इसके लिए आप अपनी श्रद्धा को विकसित कीजिए। चरित्र के बारे में ध्यान रखिए। दोष-दुर्गुणों का त्याग कीजिए और सेवावृत्ति के लिए उदारता से तैयार हो जाइए और यह देखिए कि जनमानस के परिष्कार के लिए आप क्या कर सकते हैं ? समय का, श्रम का, धन का, अपनी बुद्धि का कोई हिस्सा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लगाने के लिए आप तैयार हैं क्या ? कोशिश कीजिए, हिम्मत कीजिए। बीज के तरीके से गलिए और वृक्ष के तरीके से फलिए।

हमने तीन शर्तों पर अपने गुरु से सारी की सारी दौलत, सारा का सारा धन पाया है—श्रद्धा की कीमत पर। पी. एम. टी. की मेडिकल परीक्षा की तरह यह तीन पर्चे हैं कि उदारता की दृष्टि से कितने पैने साबित होते हैं आप। चरित्र की दृष्टि से कितने पवित्र साबित होते हैं। जितने आप नम्बर लाते जाएँगे उतने परीक्षा में पास होते जाएँगे। उसी हिसाब से, उसी अनुपात से, उसी मात्रा में आपके लिए सफलताएँ, सिद्धियाँ, चमत्कार, अनुदान-वरदान सुरक्षित रखे हुए हैं। टिकट लीजिए, गिव एंड टेक' दीजिए और लीजिए। मेरे जीवन के सारे के सारे निष्कर्ष और निचोड़ यही हैं। मैं चाहता हूँ इनसे आप भी लाभ उठाएँ और गायत्री मंत्र की महिमा को बढ़ाएँ। उपासना के बारे में ऋषियों ने, शास्त्रों ने जो कुछ कहा है, वह साबित करके दिखाएँ। हमने यही साबित करके दिखाने की कोशिश की और आपसे भी यही अपेक्षा करेंगे कि आप जब यहाँ से विदा हों तो वैसा ही साहस, हिम्मत और दृष्टिकोण लेकर जाएँ जिससे वे तीनों आधार जो गायत्री मंत्र को, त्रिपदा को सफल और सार्थक बनाने में समर्थ रहे हैं, वही आपके जीवन में भी आएँ और आप वे लाभ उठाएँ जो प्राचीनकाल के उपासकों ने उठाया था और हमने भी। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति।

त्रिपदा गायत्री के तीन चरण

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो ! हमारा सत्तर वर्ष का सम्पूर्ण जीवन सिर्फ एक काम में लगा है और वह है—भारतीय धर्म और संस्कृति की आत्मा की शोध। भारतीय धर्म और संस्कृति का बीज है—गायत्री मंत्र। इस छोटे-से चौबीस अक्षरों के मंत्र में वह ज्ञान और विज्ञान भरा हुआ पड़ा है, जिसके विस्तार में भारतीय तत्त्वज्ञान और भारतीय नेतृत्व विज्ञान दोनों को खड़ा किया गया है। ब्रह्माजी ने चार मुखों से चार चरण गायत्री का व्याख्यान चार वेदों के रूप में किया। वेदों से अन्यान्य धर्मग्रंथ बने। जो कुछ भी हमारे पास हैं, इस सबकी मूल जड़ हम चाहें तो गायत्री मंत्र के रूप में देख सकते हैं। इसीलिए इसका नाम गुरुमंत्र रखा गया है, बीजमंत्र रखा गया है। बीजमंत्र के नाम से, गायत्री मंत्र के नाम से इसी एक मंत्र को जाना जा सकता है और गुरुमंत्र इसे कहा जा सकता है। हमने प्रयत्न किया कि सारे भारतीय धर्म और विज्ञान को समझने की अपेक्षा यह अच्छा है कि इसके बीज को समझ लिया जाए, जैसे कि विश्वामित्र ने तप करके इसके रहस्य और बीज को जानने का प्रयत्न किया। हमारा पूरा जीवन इसी एक क्रियाकलाप में लग गया। जो बचे हुए जीवन के दिन हैं, उसका भी हमारा प्रयत्न यही रहेगा कि हम इसी की शोध और इसी के अन्वेषण और परीक्षण में अपनी बची हुई जिंदगी को लगा दें।

बहुत सारा समय व्यतीत हो गया। अब लोग जानना चाहते हैं कि आपने इस विषय में जो शोध की, जो जाना, उसका सार-निष्कर्ष हमें भी बता दिया जाए। बात ठीक है, अब हमारे महाप्रयाण का समय नजदीक चला आ रहा है तो लोगों का यह पूछताछ करना सही है कि हर आदमी इतनी शोध नहीं कर सकता। हर आदमी के लिए इतनी जानकारी प्राप्त करना तो संभव भी नहीं है। हमारा सार और निष्कर्ष हर आदमी चाहता है कि बताया जाए। क्या करें ? क्या समझा आपने ? क्या जाना ? अब हम आपको बताना चाहेंगे कि गायत्री मंत्र के ज्ञान और विज्ञान में, जिसकी कि व्याख्या स्वरूप ऋषियों ने सारे का सारा तत्त्वज्ञान खड़ा किया है, क्या है ?

गायत्री को त्रिपदा कहते हैं। त्रिपदा का अर्थ है—तीन चरण वाली, तीन टाँग वाली। तीन टुकड़े इसके हैं जिनको समझ करके हम गायत्री के ज्ञान और विज्ञान की आधारशिला को ठीक तरीके से जान सकते हैं। इसका एक भाग है विज्ञान वाला पहलू। विज्ञान वाले पहलू में आते हैं तत्त्वदर्शन, तप, साधना, योगाभ्यास, अनुष्ठान, जप, ध्यान आदि। यह विज्ञान वाला पक्ष है। इससे शक्ति पैदा होती है। गायत्री मंत्र का जप करने से उपासना और ध्यान करने से उसके जो माहात्म्य बताए गए हैं कि इससे यह लाभ होता है, अमुक लाभ होते हैं, अमुक कामनाएँ पूरी होती हैं। अब यह देखा जाए कि यह कैसे पूरी होती हैं और कैसे पूरी नहीं होतीं ? कब यह सफलता मिलती है और कब नहीं मिलती ? किसी भी बीज को पैदा करने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है। भूमि उसके पास होनी चाहिए। भूमि के अलावा खाद और पानी का इंतजाम होना चाहिए। अगर यह तीनों चीजें उसके पास न होंगी, तब फिर मुश्किल है। तब फिर वह बीज पल्लवित होगा कि नहीं, कहा नहीं जा सकता। गायत्री मंत्र के बारे में भी यही तीन बातें हैं कि यदि गायत्री मंत्र के साथ तीन चीजें मिला दी जाएँ या किसी भी आध्यात्मिक उपासना के साथ मिला दी जाएँ तो उसके ठीक परिणाम होने सम्भव हैं। अगर यह तीन चीजें नहीं मिलाई जाएँगी तब फिर यही कहना पड़ेगा कि इसमें सफलता की आशा कम है।

गायत्री उपासना के सम्बन्ध में हमारा लम्बे समय का जो अनुभव है वह यह है कि जप करने की विधियाँ और कर्मकांड तो वही हैं, जो सामान्य पुस्तकों में लिखे हुए हैं या बड़े से लेकर छोटे लोगों ने किए हैं। किसी को फलित होने और किसी को न फलित होने का मूल कारण यह है कि उन तीन तत्त्वों का समावेश करना लोग भूल जाते हैं, जो किसी भी उपासना का प्राण है। उपासना के साथ एक तथ्य यह जुड़ा हुआ है कि अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। श्रद्धा की एक अपने आप में शक्ति है। बहुत सारी शक्तियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हैं जैसे बिजली की शक्ति है, भाप की शक्ति है, आग की शक्ति है, उसी तरीके से श्रद्धा की भी एक शक्ति है। पत्थर में से देवता पैदा हो जाते हैं, झाड़ी में से भूत पैदा हो जाता है, रस्सी में से साँप हो जाता है और न जाने क्या-क्या हो जाता है श्रद्धा के आधार पर। अगर हमारा और आपका किसी मंत्र के ऊपर, जप, उपासना के ऊपर अटूट विश्वास है, प्रगाढ़ निष्ठा और श्रद्धा है तो मेरा अब तक का अनुभव यह है कि उसको चमत्कार मिलना चाहिए और उसके लाभ सामने आने चाहिए। जिन लोगों ने श्रद्धा से विहीन उपासनाएँ की हैं, श्रद्धा से रहित केवल मात्र कर्मकांड सम्पन्न किए हैं, केवल जीभ की नोक से जप किए हैं और अँगुलियों की सहायता से मालाएँ घुमाई हैं, लेकिन मन में वह श्रद्धा उत्पन्न न कर सके, विश्वास उत्पन्न न कर सके, ऐसे लोग खाली रहेंगे। बहुत सारा जप करते हुए अगर अटूट श्रद्धा और विश्वास के साथ उपासनाएँ की जाएँ तो यह एक ही पहलू ऐसा है, जिसके आधार पर हम यह आशा कर सकते हैं कि हमारे अच्छे परिणाम निकलने चाहिए और उपासना को पूरा-पूरा लाभ देना चाहिए। यह एक पक्ष हुआ।

दूसरा—उपासना को सफल बनाने के लिए परिष्कृत व्यक्तित्व का होना नितांत आवश्यक है। परिष्कृत व्यक्तित्व का मतलब यह है कि आदमी चरित्रवान हो, लोकसेवी हो, सदाचारी हो, संग्रमी हो, अपने व्यक्तिगत जीवन को श्रेष्ठ और समुन्नत बनाने वाला हो। अब तक ऐसे ही लोगों को सफलताएँ मिली हैं। अध्यात्म का लाभ स्वयं पाने और दूसरों को दे सकने में केवल वही साधक सफल हुए हैं जिन्होंने कि जप, उपासना के कर्मकांडों के सिवाय अपने व्यक्तिगत जीवन को शालीन, समुन्नत, श्रेष्ठ और परिष्कृत बनाने का प्रयत्न किया है। संयमी व्यक्ति, सदाचारी व्यक्ति जो भी जप करते हैं, उपासना करते हैं, उनकी प्रत्येक उपासना सफल हो जाती है। दुराचारी आदमी, दुष्ट आदमी, नीच, पापी और पतित आदमी भगवान का नाम लेकर यदि चाहें तो पार नहीं हो सकते। भगवान का नाम लेने का परिणाम यह होना चाहिए कि आदमी का व्यक्तित्व सही हो और वह शुद्ध बने। अगर व्यक्ति को शुद्ध और समुन्नत बनाने में राम नाम सफल नहीं हुआ तो जानना चाहिए कि उपासना की विधि में बहुत भारी भूल रह गई और नाम के साथ में काम करने वाली बात को भुला दिया गया। परिष्कृत व्यक्तित्व उपासना का दूसरा वाला पहलू है—गायत्री उपासना के सम्बन्ध में अथवा अन्यान्य उपासनाओं के सम्बन्ध में।

तीसरा—हमारा अब तक का अनुभव यह है कि उच्चस्तरीय जप और उपासनाएँ तब सफल होती हैं जबकि आदमी का दृष्टिकोण और महत्वाकांक्षाएँ भी ऊँची हों। घटिया उद्देश्य लेकर के, निकृष्ट कामनाएँ और वासनाएँ लेकर के अगर भगवान की उपासना की जाए और देवताओं का द्वार खटखटाया जाए तो देवता सबसे पहले कर्मकांडों की विधि और विधानों को देखने की अपेक्षा यह मालूम करने की कोशिश करते हैं कि इसकी उपासना का उद्देश्य क्या है ? किस काम के लिए करना चाहता है ? अगर उन्हीं कामों के लिए जिसमें कि आदमी को अपनी मेहनत और परिश्रम के द्वारा कमाई करनी चाहिए, उसको सरल और सस्ते तरीके से पूरा कराने के लिए देवताओं का पल्ला खटखटाता है तो वे उसके व्यक्तित्व के बारे में समझ जाते हैं कि यह कोई घटिया आदमी है और घटिया काम के लिए हमारी सहायता चाहता है। देवता भी बहुत व्यस्त हैं। देवता सहायता तो करना चाहते हैं, लेकिन सहायता करने से पहले यह तलाश करना चाहते हैं कि हमारा उपयोग कहाँ किया जाएगा ? किस काम के लिए किया जाएगा ? यदि घटिया काम के लिए उनका उपयोग किया जाने वाला है, तो वे कदाचित ही कभी किसी के साथ सहायता करने को तैयार होते हैं। ऊँचे उद्देश्यों के लिए देवताओं ने हमेशा सहायता की है।

मंत्रशक्ति और भगवान की शक्ति केवल उन्हीं लोगों के लिए सुरक्षित रही है, जिनका दृष्टिकोण ऊँचा रहा है। जिन्होंने किसी अच्छे काम के लिए, ऊँचे काम के लिए भगवान की सेवा और सहायता चाही है, उनको बराबर सेवा और सहायता मिली है। इन तीनों बातों को हमने प्राणपण से प्रयत्न किया और हमारी गायत्री उपासना में प्राण-संचार होता चला गया। प्राण-संचार अगर होगा तो हर चीज प्राणवान और चमत्कारी होती चली जाती है और सफल होती जाती है। हमने अपने व्यक्तिगत जीवन में चौबीस लाख के चौबीस साल में चौबीस महापुरश्चरण किए। जप और अनुष्ठानों की विधियों को संपन्न किया। सभी के साथ जो नियमोपनियम थे, उनका पालन किया, यह भी सही है, लेकिन हर एक को यह ध्यान रहना चाहिए कि हमारी उपासना में कर्मकांडों का, विधि-विधानों का जितना ज्यादा स्थान है, उससे कहीं ज्यादा स्थान इस बात के ऊपर है कि हमने उन तीन बातों को जो आध्यात्मिकता की प्राण समझी जाती हैं, उन्हें पूरा करने की कोशिश की है। अटूट श्रद्धा और अडिग विश्वास गायत्री माता के प्रति रख करके और उसकी उपासना के सम्बन्ध में अपनी मान्यता और भावना रख करके प्रयत्न किया है और उसका परिणाम पाया है। व्यक्तित्व को भी जहाँ तक संभव हुआ है परिष्कृत करने के लिए पूरी कोशिश की है। एक ब्राह्मण को और एक भगवान् के भक्त को जैसा जीवन जीना चाहिए हमने भरसक प्रयत्न किया है कि उसमें किसी तरह से कमी न आने पावे। उसमें पूरी-पूरी सावधानी हम बरतते रहे हैं। अपने आपको धोबी के तरीके से धोने में और धुनिए के तरीके से धुनने में हमने आगा-पीछा नहीं किया है। यह हमारी उपासना को फलित और चमत्कृत बनाने का एक बहुत बड़ा कारण रहा है। उद्देश्य हमेशा से ऊँचा रहे। उपासना हम किस काम के लिए करते हैं, हमेशा यह ध्यान बना रहा। पीड़ित मानवता को ऊँचा उठाने के लिए, देश-धर्म, समाज और संस्कृति को समुन्नत बनाने के लिए हम उपासना करते हैं, अनुष्ठान करते हैं। भगवान की प्रार्थना करते हैं। भगवान ने देखा कि किस नीयत से यह आदमी कर रहा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भगीरथ की नीयत को देखकर के गंगाजी स्वर्ग से पृथ्वी पर आनें के लिए तैयार हो गई थीं और शंकर भगवान् उनकी सहायता करने के लिए तैयार हो गए थे। हमारे सम्बन्ध में भी वैसा ही हुआ। ऊँचे उद्देश्यों को सामने रख करके चले तो दैवी-शक्तियों की भरपूर सहायता मिली। हमारा अनुरोध यह है कि जो कोई भी आदमी यह चाहते हों कि हमको अपनी उपासना को सार्थक बनाना है, तो उन्हें इन तीनों बातों को बराबर ध्यान में रखना चाहिए।

हम देखते हैं कि अकेला बीज बोना सार्थक नहीं हो सकता। उससे फसल नहीं आ सकती। फसल कमाने के लिए बीज एक, भूमि दो और खाद-पानी इन तीन चीजों की जरूरत है। निशाना लगाने के लिए बंदूक एक, कारतूस दो और निशाना लगाने वाले का अभ्यास तीन—यह तीनों होंगी तब बात बनेगी। मूर्ति बनाने के लिए पत्थर एक, छेनी-हथौड़ा दो और मूर्ति बनाने की कलाकारिता तीन। लेखन-कार्य के लिए कागज, स्याही और शिक्षा तीनों चीजों की जरूरत है। मोटर चलाने के लिए मोटर की मशीन, तेल और ड्राइवर तीनों चीजों की जरूरत होती है। इसी तरीके से उपासना के चमत्कार अगर किन्हीं को देखने हों, उपासना की सार्थकता की परख करनी हो तो इन तीनों बातों को ध्यान में रखना पड़ेगा, जो हमने अभी निवेदन किया—उच्चस्तरीय दृष्टिकोण, परिष्कृत व्यक्तित्व और अटूट श्रद्धा-विश्वास। इन तीनों को मिलाकर के जो कोई भी आदमी उपासना करेगा, निश्चयपूर्वक और विश्वासपूर्वक हम कह सकते हैं कि आध्यात्मिकता के तत्त्वज्ञान का जो कुछ भी माहात्म्य बताया गया है कि आदमी स्वयं लाभान्वित होता है, समर्थ बनता है, शक्तिशाली बनता है, शांति पाता है, स्वर्ग-मुक्ति जैसा लाभ प्राप्त करता है और दूसरों की सेवा-सहायता करने में समर्थ होता है, सही है।

गायत्री मंत्र के सम्बन्ध में हम यही प्रयोग और परीक्षण आजीवन करते रहे और पाया कि गायत्री मंत्र सही है, शक्तिमान है। सब कुछ उसके भीतर है, लेकिन है तभी जब गायत्री मंत्र के बीज को तीनों चीजों से समन्वित किया जाए। उच्चस्तरीय दृष्टिकोण, अटूट श्रद्धा-विश्वास और परिष्कृत व्यक्तित्व यह जो करेगा पूरी सफलता पाएगा। हमारे अब तक के गायत्री उपासना सम्बन्धी अनुभव यही हैं कि गायत्री मंत्र के बारे में जो तीनों बातें कही जाती हैं, पूर्णतः सही हैं। गायत्री को कामधेनु कहा जाता है, यह सही है। गायत्री को कल्पवृक्ष कहा जाता है, यह सही है। गायत्री को पारस कहा जाता है, इसको छूकर के लोहा सोना बन जाता है, यह सही है। गायत्री को अमृत कहा जाता है, जिसको पीकर के अजर और अमर हो जाते हैं, यह भी सही है। यह सब कुछ सही उसी हालत में हैं जबकि गायत्री रूपी कामधेनु को चारा भी खिलाया जाए, पानी पिलाया जाए, उसकी रखवाली भी की जाए। गाय को चारा आप खिलाएँ नहीं और दूध पीना चाहें तो यह कैसे सम्भव होगा ? पानी पिलाएँ नहीं ठंड से उसका बचाव करें नहीं, तो कैसे सम्भव होगा ? गाय दूध देती है, यह सही है, लेकिन साथ-साथ में यह भी सही है कि इसको परिपुष्ट करने के लिए, दूध पाने के लिए उन तीनों चीजों की जरूरत है जो कि मैंने अभी आपसे निवेदन किया।

यह विज्ञान-पक्ष की बात हुई। अब ज्ञान-पक्ष की बात आती है। यह मेरा ७० वर्ष का अनुभव है कि गायत्री के तीन पाद-तीन चरण में तीन शिक्षाएँ भरी हैं और ये तीनों शिक्षाएँ ऐसी हैं कि अगर उन्हें मनुष्य अपने व्यक्तिगत जीवन में समाविष्ट कर सके तो धर्म और अध्यात्म का सारे का सारा रहस्य और तत्त्वज्ञान का उसके जीवन में समाविष्ट होना सम्भव है। तीन पक्ष त्रिपदा गायत्री हैं—(१) आस्तिकता, (२) आध्यात्मिकता, (३) धार्मिकता। इन तीनों को मिला करके त्रिवेणी संगम बन जाता है। ये क्या हैं तीनों ?

पहला है—आस्तिकता। आस्तिकता का अर्थ है ईश्वर का विश्वास। भजन-पूजन तो कई आदमी कर लेते हैं, पर ईश्वर-विश्वास का अर्थ यह है कि सर्वत्र जो भगवान समाया हुआ है, उसके सम्बन्ध में यह दृष्टि रखें कि उसका न्याय का पक्ष, कर्म फल देने वाला पक्ष इतना समर्थ है कि उसका कोई बीच-बचाव नहीं हो सकता। भगवान सर्वव्यापी है, सर्वत्र है, सबको देखता है, अगर यह विश्वास हमारे भीतर हो तो हमारे लिए पाप कर्म करना सम्भव नहीं होगा। हम हर जगह भगवान को देखेंगे और समझेंगे कि उसकी न्याय, निष्पक्षता हमेशा अक्षुण्ण रही है। उससे हम अपने आपका बचाव नहीं कर सकते। इसलिए आस्तिक का, ईश्वर-विश्वासी का पहला क्रियाकलाप यह होना चाहिए कि हमको कर्मफल मिलेगा, इसलिए हम भगवान से डरें। जो भगवान से डरता है, उसको संसार में और किसी से डरने की जरूरत नहीं होती। आस्तिकता-चरित्रनिष्ठा और समाजनिष्ठा का मूल है। आदमी इतना धूर्त है कि वह सरकार को झुठला सकता है, कानूनों को झुठला सकता है, लेकिन अगर ईश्वर का विश्वास करके अंतःकरण में जमा हुआ है तो वह बराबर ध्यान रखेगा। हाथी के ऊपर अंकुश जैसे लगा रहता है, आस्तिकता का अंकुश हर आदमी को ईमानदार बनने के लिए, अच्छा बनने के लिए प्रेरणा करता है, प्रकाश देता है।

ईश्वर की उपासना का अर्थ है—जैसा ईश्वर महान है वैसे ही महान बनने के लिए हम कोशिश करें। हम अपने आपको भगवान में मिलाएँ। यह विराट् विश्व भगवान का रूप है और हम इसकी सेवा करें, सहायता करें और इस विश्व-उद्यान को समुन्नत बनाने की कोशिश करें, क्योंकि हर जगह भगवान समाया हुआ है। सर्वत्र भगवान विद्यमान है, यह भावना रखने से **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की भावना मन में पैदा होती है। गंगा जिस तरीके से अपना समर्पण करने के लिए समुद्र की ओर चल पड़ती है, आस्तिक व्यक्ति, ईश्वर का विश्वासी व्यक्ति भी अपने आपको भगवान में समर्पित करने के लिए चल पड़ता है। इसका अर्थ यह हुआ कि भगवान की इच्छाएँ मुख्य हो जाती हैं। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ, व्यक्तिगत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कामनाएँ भगवान की भक्ति समाप्त कराती हैं और यह सिखाती हैं कि ईश्वर के संदेश, ईश्वर की आज्ञाएँ ही हमारे लिए सब कुछ होनी चाहिए। हमें अपनी इच्छा भगवान पर थोपने की अपेक्षा, भगवान की इच्छा को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। आस्तिकता के ये बीज हमारे अन्दर जमे हुए हों तो जिस तरीके से वृक्ष से लिपटकर बेल उतनी ही ऊँची हो जाती है जितना कि ऊँचा वृक्ष है। उसी प्रकार से हम भगवान की ऊँचाई के बराबर ऊँचे चढ़ सकते हैं। जिस तरीके से पतंग अपनी डोरी बच्चे के हाथ में थमाकर आसमान में ऊँचे उड़ती चली जाती है। जिस तरीके से कठपुतली के धागे बाजीगर के हाथ में बँधे रहने से कठपुतली अच्छे से अच्छा नाच-तमाशा दिखाती है। उसी तरीके से ईश्वर का विश्वास, ईश्वर की आस्था अगर हम स्वीकार करें, हृदयंगम करें और अपने जीवन की दिशा-धाराएँ भगवान के हाथ में सौंप दें अर्थात् भगवान के निर्देशों को ही अपनी आकांक्षाएँ मान लें तो हमारा उच्चस्तरीय जीवन बन सकता है और हम इस लोक में शांति और परलोक में सद्गति प्राप्त करने के अधिकारी बन सकते हैं।

आस्तिकता गायत्री मंत्र की शिक्षा का पहला वाला चरण है। इसका दूसरा वाला चरण है—आध्यात्मिकता। आध्यात्मिकता का अर्थ होता है—आत्मावलंबन, अपने आपको जानना, आत्मबोध। **'आत्माऽवारे ज्ञातव्य'** अपने आपको जानना। अपने आपको न जानने से हम बाहर-बाहर भटकते रहते हैं। कई अच्छी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए, अपने दुःखों का कारण बाहर तलाश करते-फिरते रहते हैं। जानते नहीं कि हमारी मनःस्थिति के कारण ही हमारी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। अगर हम यह जान पाएँ, तब फिर हम अपने आपको सुधारने के लिए कोशिश करें। स्वर्ग और नर्क हमारे ही भीतर हैं। हम अपने ही भीतर स्वर्ग दबाए हुए हैं, अपने ही भीतर नर्क दबाए हुए हैं। हमारी मनःस्थिति के आधार पर ही परिस्थितियाँ बनती हैं। कस्तूरी का हिरण चारों तरफ खुशबू की तलाश करता-फिरता था, लेकिन जब उसको पता चला कि वह तो नाभि में ही है, तब उसने इधर-उधर भटकना त्याग दिया और अपने भीतर ही ढूँढ़ने लगा।

फूल जब खिलता है तब भौंरे आते ही हैं, तितलियाँ भी आती हैं। बादल बरसते तो हैं लेकिन जिसके आँगन में जितना पात्र होता है, उतना ही पानी देकर के जाते हैं। चट्टानों के ऊपर बादल बरसते रहते हैं, लेकिन घास का एक तिनका भी पैदा नहीं होता। छात्रवृत्ति उन्हीं को मिलती है जो अच्छे नंबर से पास होते हैं। संसार में सौंदर्य तो बहुत हैं, पर हमारी आँख न हो तो उसका क्या मतलब ? संसार में संगीत-गायन तो बहुत हैं, पर हमारी आँख न हो तो उसका क्या मतलब ? संसार में संगीत गायन तो बहुत हैं, शब्द बहुत हैं, पर हमारे कान न हों तो उन शब्दों का क्या मतलब। संसार में ज्ञान-विज्ञान तो बहुत है, पर हमारा मस्तिष्क न हो तो उसका क्या मतलब ? ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं। इसलिए आध्यात्मिकता का संदेश यह है कि हर आदमी को अपने आपको देखना, समझना, सुधारने के लिए भरपूर प्रयत्न करना चाहिए। अपने आपको हम जितना सुधार लेते हैं, उतनी ही परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल बनती चली जाती हैं। यह सिद्धांत गायत्री मंत्र का दूसरा वाला चरण है।

तीसरा वाला चरण गायत्री मंत्र का है—धार्मिकता। धार्मिकता का अर्थ होता है—कर्तव्यपरायणता, कर्तव्यों का पालन। कर्तृत्व, कर्म और धर्म लगभग एक ही चीज है। मनुष्य में और पशु में सिर्फ इतना ही अन्तर है कि पशु किसी मर्यादा से बँधा हुआ नहीं है। मनुष्य के ऊपर हजारों मर्यादाएँ और नैतिक नियम बाँधे गए हैं और जिम्मेदारियाँ लादी गईं हैं। जिम्मेदारियों को और कर्तव्यों को पूरा करना मनुष्य का कर्तव्य है। शरीर के प्रति हमारा कर्तव्य है कि इसको हम नीरोग रखें। मस्तिष्क के प्रति हमारा कर्तव्य है कि इसमें अवांछनीय विचारों को न आने दें। परिवार के प्रति हमारा कर्तव्य है कि उनको सद्गुणी बनाएँ। देश, धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति हमारा कर्तव्य है कि उन्हें भी समुन्नत बनाने के लिए भरपूर ध्यान रखें। लोभ और मोह के पाश से अपने आपको छुड़ा करके अपनी जीवात्मा का उद्धार करना—यह भी हमारा कर्तव्य है और भगवान ने जिस काम के लिए हमको इस संसार में भेजा है, जिस काम के लिए मनुष्य योनि में जन्म दिया है, उस काम को पूरा करना भी हमारा कर्तव्य है। इन सारे के सारे कर्तव्यों को अगर हम ठीक तरीके से पूरा न कर सके तो हम धार्मिक कैसे कहला सकेंगे ?

धार्मिकता का अर्थ होता है—कर्तव्यों को पालना। हमने सारे जीवन में गायत्री मंत्र के बारे में जितना भी विचार किया, शास्त्रों को पढ़ा, सत्संग किया, चिंतन-मनन किया, उसका सारांश यह निकला कि बहुत सारा विस्तार ज्ञान का है, बहुत सारा विस्तार धर्म और अध्यात्म का है, लेकिन इसके सार में तीन चीजें समाई हुई हैं—(१) आस्तिकता अर्थात् ईश्वर का विश्वास, (२) आध्यात्मिकता अर्थात् स्वावलम्बन, आत्मबोध और अपने आपको परिष्कृत करना, अपनी जिम्मेदारियों को स्वीकार करना और (३) धार्मिकता अर्थात् कर्तव्यपरायणता। कर्तव्य परायण, स्वावलम्बी और ईश्वरपरायण कोई भी व्यक्ति गायत्री मंत्र का उपासक कहा जा सकता है और गायत्री मंत्र के ज्ञान-पक्ष के द्वारा जो शान्ति और सद्गति मिलनी चाहिए उसका अधिकारी बन सकता है। हमारे जीवन के यही निष्कर्ष हैं। विज्ञान-पक्ष में तीन धाराएँ और ज्ञान-पक्ष में तीन धाराएँ—इनको जो कोई प्राप्त कर सकता हो—गायत्री मंत्र की कृपा से निहाल बन सकता है और ऊँची से ऊँची स्थिति प्राप्त करके इसी लोक में स्वर्ग और मुक्ति का अधिकारी बन सकता है। ऐसा हमारा अनुभव, ऐसा हमारा विचार और ऐसा हमारा विश्वास है।

ॐ शांति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देव-संस्कृति का बीज मंत्र—गायत्री महामंत्र

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

प्रातःकाल जब हम बोलते हैं तो गायत्री का सर्वप्रथम विनियोग बोलते हैं, तत्पश्चात् गायत्री मंत्र का जप करते हैं। प्रत्येक वेद मंत्र का एक विनियोग होता है। विनियोग किसे कहते हैं ? विनियोग संकल्प को कहते हैं। संकल्प में क्या होता है ? उसका ब्यौरा होता है। गायत्री मंत्र के बारे में जल लेकर के कहते हैं, **"गायत्री छंदः सविता देवता विश्वामित्र ऋषिः जपे विनियोगः।"** गायत्री का जो ऋषि है विश्वामित्र है। गायत्री का पारंगत, निष्णात् जिसने पी-एच. डी. किया, जिसने थीसिस लिखी, जिसने सब खोज की, उस अनुसंधान करने वाले का नाम विश्वामित्र है, जिसको हम याद करते हैं। गायत्री मंत्र को भी याद करते हैं, उसके खोजकर्ता की भी याद है। विश्वामित्र ने गायत्री की खोज में पूरी जिन्दगी लगा दी। एक और खोज करने वाले व्यक्ति का नाम मेरे दिमाग में आ रहा है। कौन था खोज करने वाला ? उस खोज करने वाले का जो अभी-अभी हमारे ध्यान में आया है, नाम था— हिलेरी। हिलेरी कौन था ? हिलेरी वो था जिसके मन में आया कि भारत की सबसे बड़ी और ऊँची पर्वत की चोटी, जिसके बारे में लोग कहते तो हैं, पर है क्या ? देखना चाहिए वह शेरपा तेनसिंग नोरके को लेकर देखना चाहिए। एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ गया था और वहाँ पर झंडा गाड़ दिया। सारी दुनिया ने जबकि जिस चोटी पर कोई नहीं जा सका, उसके ऊपर हिलेरी जा पहुँचा। बेटे उसके दिमाग में एक और खुराफात आयी कि सब पानी की दिशा की ओर चलते हैं, पर हम पानी को चीरकर उल्टी दिशा में नाव ले चलेंगे। लोगों ने कहा—उल्टी दिशा में गंगा का बहाव तो बहुत तेज है और वह बहुत दबाव डालता है। उसने कहा—नहीं, हम तो इस नाव में बैठकर उल्टी दिशा में ही चलेंगे। गंगा सागर—कलकत्ता से वह अपनी नाव लेकर चला। उसका इरादा नाव द्वारा उल्टी दिशा में चलते हुए गंगोत्री तक जाने का था पर गंगोत्री गोमुख तक तो वह नहीं जा सका, थोड़ी दूर पहले रह गया। नाव खराब हो गई तो उसने यह इरादा छोड़ दिया और कहा—दुबारा फिर सफर करेंगे और जहाँ से छोड़ा है वहीं से फिर शुरूआत करेंगे। उसके पास ऐसी नाव थी जिसमें बहुत तेज ताकत की मोटर लगी थी। ऐसी नाव को लेकर हिलेरी चला था। उसने यह पता लगाया कि गंगा की धारा में उल्टी दिशा में चलने में क्या मजा आता है ? मैंने भी ऐसे ही अपनी सारी जिन्दगी उल्टी दिशा में चलने में लगा दी। विश्वामित्र की तरीके से गायत्री की सामर्थ्य का पता लगाने और हिलेरी की तरीके से अनुसन्धान करने में लगा दी।

मित्रो, अनुसंधान करने का अर्थ है—प्रयोग और परीक्षण, जो शक्ति के द्वारा, प्रयोग के द्वारा, शरीर के द्वारा किये जाते हैं। यह विज्ञान का भाग है और ज्ञान भाग ? ज्ञान भाग वह है जो विश्वामित्र ने किया था। अनुसंधान और अनुदान—दोनों को करते हुये मैंने अपनी सत्तर साल की जिन्दगी पूरी की। इसके जो सार हैं, निष्कर्ष हैं, मैं चाहता हूँ कि आपको बताकर के चला जाऊँ। क्यों ? इसलिये चला जाऊँ कि आपमें से किसी को गायत्री मंत्र का वास्तव में कुछ अनुसंधान करना पड़े, वास्तव में किसी को उसमें चमत्कार देखने की इच्छा हो जाय तो कम से कम कुछ मालूम तो पड़े कि गुरुजी ने क्या किया था और क्या नहीं किया था। अनुसन्धान जो बेटे, मैंने किये हैं, इन अनुसन्धानों के लिये मैंने भारतीय ऋषियों की श्रेणियाँ लीं। ऋषियों की गवाहियाँ लीं और मैंने उनसे यह पूछा कि ऋषियो ! आप लोगों ने तप किये थे तो बताइये आपने क्या अनुभव पाये ?" मैंने शास्त्रों से पूछा—"बताइये भाईसाहब, आपको ऋषियों ने लिखा था, गायत्री मंत्र के बारे में क्या कहा अगर आप गायत्री मंत्र के व्याख्यान हैं ? मैंने चारों वेदों से पूछा—"आप बताइये भाईसाहब, गायत्री मंत्र के आप बेटे हैं तो आपको सारी असलियत अच्छी तरीके से मालूम होगी। आप बताइये कि गायत्री मंत्र के बारे में जो महत्ता और जो व्याख्यान बताया जाता है, ये कहाँ तक सही है ?" हमने वेदों के जो व्याख्यान किये हैं, पुराणों की मैंने जो पुस्तकें छापी हैं, असल में गायत्री मंत्र के ही वे व्याख्यान हैं। गायत्री को जानने के लिये जितना कुछ पढ़ा वह इकट्ठे होते-होते, अनुसन्धान करते-करते इतना हो गया कि उसको लिख सकना कठिन है। वेदों को पढ़ते-पढ़ते गायत्री मंत्र के बारे में जाना कि वेद उसके चार बेटे हैं। गायत्री को वेद माता कहते हैं। वेद माता के ये चार बेटे हैं। वे गायत्री के मंत्र के बारे में क्या कहते हैं यह जानने के लिए मैंने वेदों को ध्यान से पढ़ा। वेदों के लिये नहीं—गायत्री मंत्र के लिये उन्हें पढ़ा। जो कुछ भी उसमें से मुझे मिला, वह मैं हिन्दी में ट्रान्सलेट करता चला गया। फिर जब सारे के सारे अनुवाद इकट्ठे हो गये तो मुझमें लोभ आ गया इसलिये छपा दिया। पुराणों को मैंने सिर्फ इसलिये पढ़ा जिससे पता चले कि गायत्री मंत्र के बारे में क्या लिखा है ? उद्देश्य यही रहा कि गायत्री मंत्र के बारे में जो लिखा है उसका मैं पता लगाऊँ। पता लगाते-लगाते मैं अनुवाद भी करने लगा और जब अनुवाद तैयार हो गये तो मैंने कहा—इसे प्रकाशित भी करना चाहिये, जिससे दूसरे लोग भी फायदा उठा सकें। मैंने जो कुछ भी अध्ययन किया है उसके लिए ऋषियों के पास गया हूँ, जानकारों के पास गया हूँ, इस विद्या के जो पारंगत हैं, सिद्ध हैं, उनसे मिला हूँ, पुस्तकों को भी पढ़ा है। ये मेरी खोज है। इस खोज का सार मेरे पास बहुत महत्त्वपूर्ण है। और अनुसंधान ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बेटे, मैंने अपने शरीर को एक लैबोरेटरी की तरीके से बनाकर सारे जिन्दगी भर उसमें परीक्षण करता रहा हूँ। मैंने अपने शरीर की प्रयोगशाला में इसलिए किया कि देखें इसकी क्या प्रतिक्रिया होती है। दवाइयों के प्रयोग जब प्रथम बार क्रिये जाते हैं तो मेढ़कों पर किये जाते हैं, खरगोश पर किये जाते हैं, परन्तु मैं किससे कहता कि आपके शरीर पर मैं प्रयोग करना चाहता हूँ। कौन तैयार होता ? कौन मुसीबतें उठाता ? कोई तैयार नहीं होता। सो मैंने अपने ही शरीर को रजामंद कर लिया और अपने मन को रजामंद कर लिया कि भाईसाहब, आप दोनों हमारी मदद कीजिये हम आपके ऊपर प्रयोग करेंगे। गायत्री मंत्र के बारे में जो कुछ बताया गया है, आखिर इसका प्रयोग करके तो देखा जाए कि परिणाम निकलता है कि नहीं। कुछ प्रतिफल निकलता है कि नहीं। मेरा मन रजामंद हो गया, शरीर रजामंद हो गया। मैंने अपनी इन्हीं दो चीजों के ऊपर इन्हीं दो खरगोशों के ऊपर तरह-तरह की दवाओं का प्रयोग किया और यह देखा कि इनका परिणाम क्या हो सकता है ? इसमें से क्या हमें चाहिए और उनका क्या परिणाम निकलता है। यही है मेरी संक्षिप्त कहानी। लोग मुझसे यह पूछते रहे कि बताइये आप क्या करते हैं ? मैंने पन्द्रह वर्ष की उम्र से नियमित उपासना प्रारम्भ की और चालीस वर्ष तक वह चली। चौबीस साल तक मैंने कठोर उपासना की। छह घंटे रोज के हिसाब से पालथी मारकर बैठा रहा। छह घंटे उपासना के अलावा जौ की रोटी और छाछ लेता रहा। बेटे, मैंने चौबीस साल तक नमक नहीं खाया, शक्कर मैंने खाई नहीं, दाल मैंने छुई नहीं, कोई और चीज मैंने छुई नहीं। बस दो ही चीजें थीं—रोटी और छाछ। चौबीस साल तक मैं प्रयोग करता रहा। लोगों ने मुझसे पूछा—बताइये आप क्या करते रहते हैं ? मैंने कहा—मैं जुआ खेलता रहता हूँ। किसका जुआ खेलते हैं ? हमको बता दीजिये ! नहीं, आपको नहीं बता सकता। अगर ये सब बातें बेकार सिद्ध हुईं—तो इसका दण्ड मुझे मिलना चाहिए और मेरी जिन्दगी बेकार जानी चाहिए। अगर ये फायदेमंद होंगी, तब बताऊँगा आपको। मैं आपके साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। मंत्रों की शक्ति और उपासना की शक्ति जो बताई गयी है वह सही भी हो सकती है और गलत भी। अगर मान लीजिये कि सही न हुईं गलत हुईं तब ? तब मेरी तो जिन्दगी बेकार गई। इसलिए आपका मैं नुकसान नहीं उठा सकता। जब तक मैं पता न लगा लूँ कि यह उपयोगी चीज है, तब तक आपको नहीं बताऊँगा। क्यों आपका नुकसान करूँगा ? क्या मुझे कोई महान बनना है ? मुझे कोई कमीशन लेना है ? कोई मैं एजेण्ट बनूँगा जो मैं उसकी खुशामद करूँगा ? मैं उसे देख लूँगा तब पता बताऊँगा और जब तक देख नहीं लूँगा तब तक कुछ नहीं बताऊँगा।

इस तरीके से मित्रो ! जब चालीस साल का हो गया और जब मेरे चौबीस परीक्षण पूरे हो गये, तब मैंने जबान खोलना, लोगों को बताना और समझाना शुरू किया कि क्या करना चाहिए ? कैसे हो सकता है ? बस यही है मेरे अनुसंधान का सार-निष्कर्ष। यह वहाँ से प्रारम्भ हुआ जब एक बार गायत्री मंत्र का प्रारम्भ हुआ। किसने कराया ? मालवीय जी ने, जैसा कि मैंने आपको निवेदन किया था। उन्होंने क्या बताया ? उन्होंने बेटे, मुझे कर्मकाण्ड बताये। कर्मकाण्ड के बाद एक और दीक्षा मेरी हुई। पन्द्रह वर्ष की उम्र का जब मैं हो गया, तब मेरे पास दूसरे वाले गुरु हिमालयवासी आये। उन्होंने मुझे गायत्री मंत्र के रहस्य समझाये और रहस्य समझाकर कुछ और बातें बतायीं। वे क्या बातें थीं ? वे उनसे भिन्न बातें थीं, जो मालवीय जी ने बताई थीं। भिन्न थीं ? हाँ, बेटे भिन्न थीं। उन्होंने अलग बातें बतायी थीं। मालवीय जी ने मुझे कलेवर बताया था और मेरे दूसरे गुरु ने मुझे उसका प्राण बताया। एक ने कलेवर और एक ने प्राण। साहब, यह कलेवर और प्राण का क्या चक्कर है ? कलेवर और प्राण का बेटे चक्कर है। कैसे चक्कर है ? कलेवर का चक्कर यह है कि माँ के पेट में जब बच्चा आता है तो पहले एक कलेवर आता है, चुपचाप बैठा रहता है, कुछ हरकत नहीं होती। लेकिन जब उसके भीतर प्राण पैदा होता है, तब वह अपनी करामात दिखाता है, हाथ चलाता है, पैर चलाता है, सिर चलाता है, करवट बदलता है, तब मालूम पड़ता है कि पेट में कोई है, कोई गड़बड़ है। यह क्यों होता है ? इसलिए कि जब प्राण आता है तब गड़बड़ और हलचल पैदा होती है। मुर्गी के अंडे के अंदर जब कलेवर आता है, चुपचाप बैठा रहता है कुछ हरकत नहीं होती, लेकिन जब प्राण आता है तो हलचल शुरू करता है। आप देखिये मुर्गी के अंडे या किसी के भी अंडे, जब पकने को होंगे तब उसके अन्दर कम्पन पैदा हो जाएगा। काँपते हैं अंडे। काँपने के बाद क्या होता है ? काँपने के बाद बेटे, एक दिन ऐसा आता है कि उसका टैम्परेचर बढ़ जाता है। अंडे का टैम्परेचर आप ले लीजिये, ताप ले लीजिये, आप देखेंगे कि एक दिन उसका तापमान बढ़ जाएगा। बढ़ने के बाद, फिर क्या होगा ? बढ़ने के बाद एक दिन ऐसा आयेगा कि उसके अंदर एक काले रंग की लकीर पड़ेगी अपने आप। लकीर पड़ने के बाद में उसमें दरार पड़नी चालू हो जाएगी और वह फटती चली जाएँगी और भीतर से बच्चा बाहर निकल आयेगा। यह क्या चक्कर है ? बेटे जब प्राण भीतर चला जाता है तब वह ये कहता है कि हमको अच्छी परिस्थिति चाहिए, बेहतर परिस्थिति चाहिए। बेहतरीन परिस्थिति के बहाने से बच्चा भीतर से फाड़कर बाहर निकल पड़ता है। पेट में बैठा हुआ बच्चा कहता है मम्मी अब हमको यह जगह कम पड़ती है, हमको अब ज्यादा जगह चाहिए। जिस जगह पर हम नौ महीने से गुजारा कर रहे थे, अब हम यहाँ गुजारा नहीं कर सकते, हमको अब बेहतरीन जगह चाहिए। मम्मी कहती हैं, 'नहीं बेटे, अभी इसी में रहना चाहिए बाहर जगह नहीं है निकलने को नहीं, हम रास्ता बनायेंगे और आपको जगह देनी पड़ेगी। धक्का मारकर बच्चा बाहर आ जाता है और मुर्गी का अंडा कवच को तोड़कर बाहर आ जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

यह क्या है ? यह बेटे प्राण हैं। गायत्री मंत्र का पहला हिस्सा है—कलेवर, जिसको हम लिफाफा कहते हैं। लिफाफे की पहले जरूरत पड़ती है ? हाँ बेटे ! लिफाफे की पहले जरूरत पड़ती है। पट्टी की, किताब की पहले जरूरत पड़ती है। नहीं साहब, पहले तो फिलॉसफी की जरूरत पड़ेगी, फिजिक्स की जरूरत पड़ेगी ? नहीं बेटे, न फिजिक्स की जरूरत पड़ेगी, न फिलॉसफी की। किसकी जरूरत पड़ेगी ? पट्टी की। पट्टी क्या होती है ? लकड़ी की तख्ती होती है बड़ी वाली। कलम लेते हैं और खड़िया का घोल बुदक्का में बनाते हैं और उसमें से लिखते हैं। नहीं साहब पहले फिलॉसफी पढ़ाइये। नहीं, हम नहीं पढ़ायेंगे फिलॉसफी। पहले हम आपको पट्टी के ऊपर अक्षर ज्ञान पढ़ायेंगे, गिनती पढ़ायेंगे। नहीं आप गणित पढ़ाइये, बीजगणित पढ़ाइये, नहीं तो हम नहीं पढ़ेंगे। पहले आप पट्टी लीजिये, गिनती पढ़िये, अक्षर ज्ञान पढ़िये। जब इन्हें कर लेंगे तब आगे की बात बतायेंगे। पहले कलेवर बताया जाता है हमेशा। बच्चा पैदा होने से पहले उसकी मम्मी सारा इंतजाम करती है। ये क्या बना लिया ? ये बना लिया बच्चे के लिये। बच्चा कहाँ है ? अरे ! होगा थोड़े दिन बाद होगा। चड्ढी बना लेती है, सुलाने के लिये चारपाई बना लेती है और उस पर बिछाने के लिये कपड़े बना लेती है। सब पहले से तैयारी कर लेती है। यह कलेवर है बेटे। दूल्हा-दुल्हन जब आते हैं तो पहले कलेवर बना देते हैं कि दूल्हा यहाँ बैठेगा चौकी पर, यहाँ बैठेगा पट्टे पर, यहाँ बैठेगा—वहाँ बैठेगा। हाथ यहाँ जोड़ेगा, प्रणाम यहाँ करेगा, सब तैयारी कर लेते हैं, दूल्हा पीछे आता है। पीछे आता है प्राण गायत्री का, पहले कलेवर बनता है। आप लोगों को अभी हमने कलेवर बताया है, आप ध्यान रखें।

कलेवर किसे कहते हैं ? कलेवर कहते हैं—बेटे कर्मकाण्ड को। कर्मकाण्ड क्या होते हैं ? कर्मकाण्ड कहते हैं—माला जपने को। कर्मकाण्ड कहते हैं—प्राणायाम् को। कर्मकाण्ड कहते हैं—मंत्र के उच्चारण को। कर्मकाण्ड कहते हैं—माला घुमाने को। कर्मकाण्ड कहते हैं—यह जो शरीर से क्रिया की जाती है। ये सब कर्मकाण्ड हैं। इसमें शरीर से होने वाली क्रियाएँ—जिसमें जबान की नोंक से उच्चारण किये हुए शब्द भी शामिल हैं। हाथ से माला घुमाया जाना भी शामिल है। इसमें वस्तुओं की हेरा-फेरी भी शामिल है। वस्तुओं की हेरा-फेरी से क्या मतलब ? चावल छिड़क देना, रोली लगा देना, गायत्री माता की मूर्ति रख देना, कलश स्थापित कर देना, फूल चढ़ा देना, अक्षत चढ़ा देना, ये बेटे, सब कर्मकाण्ड हैं। वास्तव में कर्मकाण्ड के पीछे कुछ और बातें छिपी रहती हैं। क्या छिपी रहती हैं कर्मकाण्ड के पीछे ? असलियत छिपी रहती है। क्रियाओं के पीछे बेटे, भावना छिपी रहती है। क्रिया के साथ-साथ में भावना का समन्वय है—तो चमत्कार है। कैसे ? क्रिया बेटे हमारा शरीर है। यह शरीर जो है, कलेवर है, इसके भीतर एक बैठा हुआ है प्राण। प्राण कैसे बैठा हुआ है ? प्राण बेटे ऐसा है, जैसे हवा होती है, जैसे रोशनी होती है, चमक होती है, इसके भीतर प्राण भी उसी तरह बैठा है। प्राण और कलेवर दोनों को मिला देते हैं, तब हम जिन्दा मनुष्य हैं। हम इसलिए जिन्दा हैं क्योंकि इसके अन्दर प्राण भी काम करता है और शरीर भी काम करता है, दोनों को मिला देने से काम चलता है। कर्मकाण्डों की जरूरत है ? बेशक, लेकिन केवल कर्मकाण्ड लेकर के आप चल रहे होंगे तो आपको निराशा होगी। केवल कर्मकाण्डों पर आपको विश्वास होगा कि हम इन कर्मकाण्डों से लम्बे-चौड़े फायदे उठा सकेंगे तो यह बिल्कुल नामुमकिन है। शरीर हमारा बड़ा अच्छा और बड़ा उपयोगी है। बोलता हमारा शरीर है। कौन बोलता है ? बेटे, हमारी जीभ और हमारे दाँत मिलकर आपसी बात कर रहे हैं और बोलता कौन है ? लेख कौन लिखता है ? कलेवर लिखता है। अँगुलियों से जब हम कलम को पकड़ लेते हैं और हम बैठते हैं तो लेख लिखते चले जाते हैं। तभी यह हमारी कलम काम करती है। सारी की सारी क्रियाएँ हमारी सही काम करती हैं, लेकिन अगर आप यह भुला दें और शरीर का ही महत्त्व मान लें और यह भुला दें कि गुरुजी का प्राण भी कोई काम करता है तो आप गलती कर रहे हैं। प्राण की जरूरत है। प्राण जब तक हैं तब तक हमारा शरीर काम करेगा। प्राण अगर निकल जाएँ तब तो फिर बेटे यह लाश है।

कर्मकाण्ड क्या है ? कर्मकाण्ड लाश है। कर्मकाण्डों की आप निन्दा करते हैं ? बेटे हम बहुत निन्दा करते हैं कर्मकाण्डों की और हम तो मजाक उड़ाते हैं और ना जाने क्या-क्या कहते हैं ? कर्मकाण्डों की आप क्यों मजाक उड़ाते हैं ? इसलिये कि जब लोग केवल कर्मकाण्ड को ही सब कुछ समझ लेते हैं, तब मुझे मजाक उड़ानी पड़ती है। अगर लोग इस बात की आवश्यकता समझ लें कि कर्मकाण्डों के साथ विचारणाओं के सम्मिश्रण की जरूरत है, तब मैं इसको प्यार करूँगा। तब मैं इसका महत्त्व बताऊँगा, तब मैं इसके प्रति अपनी श्रद्धा अर्पण करूँगा जैसा कि मैं करता हूँ। उपासना के साथ-साथ श्रद्धा का समन्वय होना, विचारों का समन्वय होना, मान्यताओं का समन्वय होना, भावनाओं का समन्वय होना आवश्यक है। केवल कर्मकाण्ड आवश्यक नहीं है, केवल कर्मकाण्ड काफी नहीं है, केवल कर्मकाण्ड से कोई चमत्कार नहीं होने वाला है। केवल चौबीस हजार जप से कोई चमत्कार नहीं होने वाला है। केवल सवा लाख जप के कोई चमत्कार नहीं है। बेटे, अगर कोई चमत्कार है, तब मैं उपासना का प्रशंसक हूँ। उस उपासना का प्रशंसक हूँ, जिसको मेरे गुरु ने दुबारा बताया। पन्द्रह वर्ष की उम्र में जब मेरा दूसरा गुरु आया तब, जो कृत्य मुझे मालवीय जी ने बताये थे, उसने उसके भीतर प्राण डाल दिये। प्राण उन्होंने भरे थे। प्राण भर जाने की बजह से प्राण चलने लगा। शरीर के भीतर जब प्राण भर जाता है, तब वह चलने लगता है। प्राण अगर निकाल दें तब, बड़ी मुश्किल पड़ेगी। प्राण भी हमारा बेकार हो जाएगा और शरीर भी बेकार हो जाएगा, दोनों बेकार हो जाएँगे। कर्मकाण्ड तो बेकार हो ही जाएगा जो उसका प्राण है, वह भी बेकार हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाएगा। क्रिया-कृत्य के बिना आप अपने शरीर से कोई काम नहीं ले सकते। प्राण के बिना भी वह मात्र लाश है। उसे जलायेंगे या तो गाढ़ दीजिये या बहा दीजिये या कुत्तों को डाल दीजिये, जानवरों को खिला दीजिये, नहीं तो वह पड़ा हुआ सड़ेगा, क्योंकि इसमें प्राण नहीं हैं। वे कर्मकाण्ड भी, जिनमें प्राण नहीं है, सड़ेंगे, आदमी में भ्रान्तियाँ पैदा करेंगे, अज्ञान पैदा करेंगे, अंधविश्वास पैदा करेंगे ये सड़े हुए कर्मकाण्ड। कर्मकाण्ड को अनावश्यक मानना शुरू कर दिया और अगर यह कहना शुरू कर दिया कि कर्मकाण्डों की कोई भी जरूरत नहीं है और हमको अनुष्ठान ही काफी हैं, आस्थाएँ ही काफी हैं, मान्यताएँ ही काफी हैं तब भी बेटे मुश्किल पड़ जाएगी।

साधना-उपासना में इन दोनों की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के लिये मैं समझाता हूँ। अगर हम बन जाएँ भूत, तो हम बेकार हैं। अगर हमारा शरीर गायब हो जाये तो हम क्या करेंगे बताइए ? फिर हम बेटे भूत हो जाएँगे। फिर गुरुजी क्या करेंगे ? फिर बेटे यहीं बैठ जाएँगे कहीं पेड़ पर। गुरुजी व्याख्यान कीजिये। बेटे हम व्याख्यान नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे जीभ नहीं है। आपका ज्ञान तो ज्यों का त्यों है। फिर आप व्याख्यान क्यों नहीं देते ? बेटे हम दे ही नहीं सकते, क्योंकि जीभ ही नहीं है हमारी। तो आप एक लेख ही लिख दीजिये। बेटे हम लेख भी नहीं लिख सकते, क्योंकि हमारे हाथ नहीं हैं। ज्ञान है ? ज्ञान तो है हमारे पास, पर हम लिख नहीं सकते, क्योंकि हमारे पास हाथ नहीं हैं। अतः भूत बेकार है, क्योंकि उसके पास शरीर नहीं है और शरीर भी बेकार है, क्योंकि उसके पास प्राण नहीं हैं। कर्मकाण्ड भी बेकार है, जिनके पीछे भावनाओं का समन्वय नहीं है और भावनाएँ भी बेकार हैं, जिनको चरितार्थ होने के लिये कर्मकाण्डों का होना जरूरी था। कर्मकाण्डों का व भावनाओं का समन्वय जरूरी होता है जैसे कि हमारी उपासना दो भाग में सम्पन्न हुई। एक भाग में हमारे गुरु ने, मालवीय जी ने हमें कर्मकाण्ड बताये, जिसे हमने आपको बताया। बच्चे के लिए यही काफी हैं। बच्चे के लिये और कोई चीज नहीं बता सकते, केवल वर्णमाला बताते हैं—क, ख, ग, घ, ङ, A, B, C, D, E, F, G, H, I। बताइये साहब, इसकी स्पैलिंग बताइये, मीनिंग बताइये इसका प्रोनाउन्सियेशन बताइये। चुप रहो ! नहीं, बताइये ये जो है S और U मिलाकर के सुपरिटेंडैण्ट होता है। अरे, चुप रह ! पहले याद कर छब्बीस अक्षर, उन्हें छब्बीस दफे फेर लिया कर। नहीं, साहब, इसका प्रयोग बताइये कैसे होता है ? उसका ग्रामर क्या होता है ? और बताइये इसका प्रोनाउन्सिएशन क्या होता है ? अरे ! चुप रह ! सिर मत खा ! छब्बीस अक्षर याद कर। नहीं कुछ और बताइये आगे की बात ! हाँ, बता देंगे, पहले इन्हें याद कर गिनती ? गिनती—एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, पहाड़े—पाँच एक पाँच, पाँच दो दस, पाँच तीन पन्द्रह। ये क्या कराते हैं साहब हमें तो वो करा दीजिये। क्या पढ़ा दीजिये ? अंकगणित पढ़ा दीजिये, बीजगणित पढ़ा दीजिये, रेखागणित पढ़ा दीजिये चुप रह ! चुपचाप बैठ जाकर इंतजार कर, पहाड़े याद कर ! नहीं हमको तो पहले बीजगणित पढ़ाइये। नहीं हम नहीं पढ़ा सकते। पहले हम तुम्हें गिनती सिखायेंगे, इसी तरह पहले हम कर्मकाण्ड सिखायेंगे आपको। हमारे पहले वाले गुरु ने हमको कर्मकाण्ड सिखाये थे, जो हमने आपको सिखा दिये। अब हम आपको उसका प्राण सिखायेंगे। कौन-सा वाला ? जो हमारे दूसरे वाले गुरु ने बताया था।

दूसरे वाले गुरु ने हमको ये बताया कि त्रिपदा—तीन टाँग वाली गायत्री के तीन माहात्म्य और तीन महत्त्व क्या हैं ? बेटे, इसके अन्दर तीन भावनाएँ काम करती हैं, तीन प्रेरणाएँ काम करती हैं और तीन विचारणाएँ काम करती हैं, इसलिये इसका नाम है—'त्रिपदा'। त्रिपदा के तीन चरण हम आपको बता चुके हैं—जप, ध्यान और तप। यह तीन कृत्य आपको मालूम हैं। जप करने की विधि क्या होती है ? स्थापना करने की विधि क्या होती है ? वस्त्रों का उपयोग कैसे होता है ? जीभ का उपयोग, मन का उपयोग, वस्त्रों का उपयोग ये सब कर्मकाण्ड में आते हैं। ये बहुत साधारण हैं, बिल्कुल मामूली बात है। बच्चा भी उन्हें सीख सकता है। लेकिन आपको जानना चाहिए कि इसके भीतर अगर वे चीजें न हुईं तो हमारे कर्मकाण्ड फिर भी अधूरे रह जाएँगे। जैसे मैं आपको एक पत्थर लाकर दूँ, एक आपको छैनी, हथौड़ा लाकर दूँ और यह कहूँ कि आप इसकी मूर्ति बना दीजिये तो क्या आप मूर्तियाँ बना देंगे ? मूर्ति बनाने के लिये मैं मानता हूँ कि छैनी की जरूरत है, पत्थर की जरूरत है, हथौड़े की जरूरत है। जितने भी मूर्तिकार हैं, इन तीन से ही बनाते हैं, लेकिन एक और भी चीज चाहिए और वह है, मूर्तिकारिता की कला। अगर यह कला आपको नहीं आती है, तो छैनी, हथौड़ा चलायेंगे, पर हाथ-पाँव में मार लेंगे और सिर फोड़ डालेंगे। कला भी आपको आनी चाहिए। फाउण्टेन पैन मैं आपको दूँ और आपको स्याही, कागज भी लाकर दे दूँ और कहूँ कि लेख लिखिये। लेख लिखने के लिये कागज, स्याही और कलम तीनों की जरूरत पड़ती है। जितने भी लोग लिखते हैं—इसके बिना नहीं लिख सकते, लेकिन एक और बात भी होनी चाहिए कि आपको ज्ञान और अध्ययन होना चाहिए। ज्ञान, अध्ययन न हुआ तो बेटे, आपकी कागज, स्याही पड़ी रहेगी, टेढ़े-मेढ़े अक्षर बनाते रहेंगे, लेकिन कुछ लिख नहीं सकेंगे, क्योंकि आप पढ़े नहीं हैं। तलवार आपको लाकर दे दूँ और यह कहूँ कि जाइये और लड़ाई के मैदान में लड़िये। आप लड़ सकते हैं ? नहीं, लड़ नहीं सकते। तलवार भी वही है, बेशक, ढाल भी वही है, योद्धा तो इसी से लड़ते थे। मानता हूँ बेटे, मैं आपकी बात की तारीफ करता हूँ कि जितने भी योद्धा लड़ने के लिये गये थे ढाल-तलवार लेकर गये थे, परन्तु आप नहीं लड़ सकते। क्यों ? क्योंकि आपको तलवार चलाना नहीं आता। आप तलवार चलायेंगे तो ऐसे चलायेंगे कि बजाय उसको तिरछी मारने के सीधी मारेंगे और अपने ही घाव कर लेंगे, सिर में घाव कर लेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमने सुना है कि तलवार से सिर कटता है। तलवार से सिर नहीं कटता। बेटे, हाथ की ताकत से सिर कटता है। हाथ की ताकत से भी सिर नहीं कटते, दिल की हिम्मत से सिर कटते हैं हिम्मत आदमी की कमजोर हो तो तलवार नहीं चल सकती, हाथ अगर कमजोर हो तो तलवार नहीं चल सकती। नहीं साहब तलवार से सिर कटता है। हाँ बेटे मानता तो हूँ तेरी बात, मैं कब मना करता हूँ कि तलवार से सिर नहीं कटता है। तलवार से सिर काटने के लिए हाथ की ताकत और कलेजे की हिम्मत दोनों की जरूरत है। नहीं साहब ! तलवार से काम चल जाएगा। तलवार से सिर कटते हुए हमने देखा है। आपकी बात हम मानते हैं तलवार से ही सिर कटा था; लेकिन आपको हिम्मत नहीं दिखाई पड़ी ? नहीं, साहब हिम्मत तो नहीं दिखाई पड़ी तो हम बताते हैं आपको, बेटे तलवार चलाने वाले के भीतर हिम्मत भी होती है और उसकी कलाइयों में ताकत भी होती है। दोनों चीजें न होंगी तो तलवार का कोई फायदा न हो सकेगा। आप क्या कह रहे हैं ? बेटे मैं ये कह रहा हूँ कि कर्मकाण्ड जो हैं जो हमने आपको सिखा दिये थे, जिनको आप पहाड़ के बराबर मानते हैं, आसमान के बराबर मानते हैं और न जाने क्या मानते हैं ? मैं चाहता हूँ कि आपकी मान्यता का बुखार कम हो जाए और आप यह मानें कि कर्मकाण्डों की शक्ति सीमित है, कर्मकाण्डों का लाभ सीमित है और कर्मकाण्डों का लाभ अधूरा है। कब तक ? जब तक इसके पीछे विचार न आयें, भाव न आये अर्थात् उसका प्राण समन्वित न हो।

प्राण क्या हो सकता है ? यही मैं बताने वाला था कि गायत्री का प्राण क्या हो सकता है ? गायत्री के प्राण के बारे में हम आपको सबेरे प्रातःकाल ध्यान कराते हैं कि गायत्री की अनुकम्पा की वर्षा आप पर हो रही है। अनुकम्पा में तीन चीज बताते हैं—यही है त्रिपदा'। इसमें एक चीज का नाम है—श्रद्धा, एक का नाम है—निष्ठा, एक का नाम है—प्रज्ञा। ये गायत्री के तीन प्राण हैं। जिस तरीके से त्रिवेणी की तीन धाराएँ होती हैं और तीनों धाराओं के मिलने से संगम बन जाता है—प्रयागराज बन जाता है। जिसके बारे में हम यह कहते हैं—**"काक होहिं पिक बकहुं मराला।"** अर्थात् बगुला जो होते हैं हंस बन जाते हैं और कौए जो हैं कोयल हो जाते हैं। हो जाते हैं ? हाँ, बेटे हो जाते हैं। कैसे ? संसार में तो नहीं हो सकते। कौआ तो कौआ ही रहेगा, कोयल-कोयल ही रहेगी, बगुला बगुला ही रहेगा, हंस हंस ही रहेगा, लेकिन चेतना के रूप में काया-कल्प हो जाता है, जब तीन धाराओं का सम्मिश्रण हो जाता है तब। प्रज्ञा, निष्ठा और श्रद्धा—ये गायत्री मंत्र की तीन धाराएँ हैं। तीन धाराओं में से जिस किसी का आपके अन्तरंग में प्रवेश होता चला जाएगा, आप उसी अनुपात से लाभ उठाते हुए चले जाएँगे। बेटे, संसार में हमारे तीन शरीर हैं—एक स्थूल, एक सूक्ष्म और एक कारण। स्थूल शरीर में श्रद्धा, सूक्ष्म शरीर में निष्ठा और कारण शरीर में प्रज्ञा और निष्ठा। इन तीनों का समन्वय जैसे हो जाएगा आपकी गायत्री माता चमत्कार दिखायेगी। बीज अकेला काफी नहीं है। बीज के लिये जमीन-एक, खाद-पानी-दो। खाद-पानी अगर नहीं होगा, जमीन अगर नहीं होगी तो अकेला बीज काफी नहीं है। गायत्री मंत्र बीज है, उसके लिये भी उन्हीं चीजों की, जरूरत है जैसे बीज के लिए खाद-पानी और जमीन की ठीक इसी तरीके से श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा—इन तीनों की भावनात्मक चीजें अगर मिल जाएँगी तो बात बनेगी।

अध्यात्म जो कुछ भी है, आदमी की चेतना से सम्बन्धित है। पदार्थ के साइंस का नाम है, फिजिक्स। पदार्थों का भी लाभ है। हमारा वह शरीर पदार्थ है मैटर है। मैटर के प्रयास के बदले में जो चीजें मिल सकती हैं, मैटीरियल ही होंगी। हम परिश्रम करते हैं और परिश्रम के बदले में पैसा लेकर आते हैं। हम व्यायाम करते है तो व्यायाम के बदले में हमारे 'मसल्स' मजबूत हो जाते हैं। फिजिक्स हमको फिजिकल बातें सिखाती हैं। मैटर मैटीरियल लाभ देखता है। आध्यात्मिकता का लाभ उठाने के लिये हमारे प्रयोग आध्यात्मिक होने चाहिए। चिन्तन को परिष्कृत करने के लिये हमको उपासना विधा काम में लेनी चाहिए। जो हमारी चेतना को प्रभावित करती है, जो हमारी भावनाओं को प्रभावित करती है, जो हमारी मान्यताओं को प्रभावित करती है, जो हमारी आस्था को प्रभावित करती है। आस्था को प्रभावित करने वाला कोई मसाला आपके पास न हो तो आपकी गाड़ी धकापेल चलती जाएगी। धकापेल गायत्री मंत्र जपते चले जाएँगे और उसी को यह मान लेंगे कि इसी से सिद्धियाँ मिल जाएँगी। सिद्धियाँ आत्मा में से आती हैं, सिद्धियाँ शरीर में से नहीं आतीं। इसलिये आत्मा को प्रभावित करने वाले—चेतना को प्रभावित करने वाले, हमारी भावनाओं को प्रभावित करने वाली उपासना को अगर आदमी अपने जीवन में मिलाकर रखें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ जीवन में चमत्कार आयेंगे, सिद्धियाँ आयेंगी। मेरी सारी की सारी उपासना इसी के आधार पर चली है और इसी आधार पर वह सफल होती चली गई। अब मैं आपको एक सिद्धान्त बताता हूँ कि कर्मकाण्डों के साथ-साथ में भावनात्मक पक्ष का जुड़ा होना भी आवश्यक है। भावनात्मक पक्ष के बारे में अगर आपने यह ख्याल बना कर रखा है कि इसकी कोई जरूरत नहीं है, हम तो यों ही पूजा-पत्री कर लेंगे। ये कर लेंगे, वो कर लेंगे, तो आपको मायूस ही होना पड़ेगा। वस्तुएँ आपके उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकती हैं। बीसा यंत्र आपके कुछ भी काम नहीं आ सकता। बीसा यंत्र भी चमत्कारी होता है ? हाँ, बेटे बड़ा चमत्कारी होता है। उसको ऐसे ताँबे के पत्र पर बना लीजिये, चढ़ा दीजिये, लोग पैसा दे जाएँगे। गलत बात है, बेटे, कोई कुछ नहीं देगा। कैसे ? मुझे मालूम है इस बारे में। एक बार एक आदमी मुझे दक्षिणावर्ती एक शंख दे गया था। वह मेरी पूजा की चौकी पर रखा रहता था। अलवर स्टेट के एक ठिकानेदार अक्सर मेरे यहाँ आते थे। यह कहते थे कि गुरुजी ! आपके पास

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दक्षिणावर्ती शंख है ? हाँ, यह रखा तो है। हमने सुना है कि लक्ष्मी जी आती हैं तो दक्षिणावर्ती के शंख में से आती हैं। आती होगी बेटा, हमें तो यह भी नहीं मालूम है। आपके यहाँ गायत्री तपोभूमि बन गई और आप इतना बड़ा काम कर लेते हैं तो जरूर लक्ष्मीजी इसी में से आती होंगी। शायद इसी में से आती हैं, मालूम नहीं कहाँ से आती हैं, आती हुई मैंने देखी नहीं हैं, पर शायद इसी में से आती हों। गुरुजी आपसे एक प्रार्थना है कि हमारे लिये भी एक असली दक्षिणावर्ती शंख मँगा दीजिये। मँगा देंगे। हमने तो किसी से छीना नहीं है, कोई हमें दे गया था। तभी से यह रखा हुआ है। वे जब भी आते यही कहते कि हमारे लिये दक्षिणावर्ती शंख मँगा दीजिये। अच्छा मँगा देंगे बेटे। फिर आये और बोले—गुरुजी ! दक्षिणावर्ती शंख आपने नहीं मँगाया ! बेटे, तू इसी को ले जा। इसमें तो लक्ष्मी रहती है। लक्ष्मी रहती है वो तेरे घर में और भी अच्छी तरीके से रहेगी। मेरा तो किराये का मकान है, पन्द्रह रुपये महीने का, उसी में गुजारा करता हूँ। लक्ष्मी जी को रहने के लिये जगह इसमें नहीं है। फ्लैश का पाखाना इसमें नहीं है, लक्ष्मी जी के लिये सोने के लिये कमरे इसमें नहीं हैं। लक्ष्मी तेरे घर रहेंगी तो आराम से रहेंगी। लक्ष्मी आयेंगी, जब भी तेरे घर रहा करेंगी, फिर वहाँ से जरूरत पड़ेगी तो मैं बुला लिया करूँगा। तू इसे ही अपने घर ले जा। नहीं महाराज जी ..... । मैंने कहा—न तू ले जा। नहीं, मेरा यह मतलब थोड़े था कि आप इसे ही दे दें। ना ! मैं तेरा मतलब समझता हूँ। मैं दे रहा हूँ तो तू ले जा। दे दिया। वह उस शंख को ले गया। उसके ऊपर दो लाख रुपये का कर्जा था। वह उस शंख को लिये फिरे और कहे कि मेरे पास दो लाख रुपये का कर्ज है, यह चुका देगा। साल भर पीछे फिर आया। मैंने पूछा—क्यों भाई, क्या मामला है ? लक्ष्मी ने अब तक तो तेरा कर्ज चुका दिया होगा ? दक्षिणावर्ती शंख ले लो महाराज जी। जरा भी नहीं चुका, वह वैसा का वैसा ही है वरन् और ज्यादा हो गया है। तब मैंने कहा—शंख ने कोई फायदा नहीं दिया ? नहीं, कोई फायदा नहीं दिया।

मित्रो ! आप समझते हैं कि वस्तुओं के माध्यम से सारे काम सध जाते हैं। आप आसान माध्यम ढूँढ़ते हैं और आसान काम करना चाहते हैं। यह सबसे बड़ी मूर्खता है। इसी प्रकार से मेरे पास एक असली रुद्राक्ष की माला थी, जिसे कोई दे गया था। वह भी मैंने खरीदी नहीं थी। एक सज्जन आये और बोले—महाराज जी ! हमने सुना है कि इन्दिरा गाँधी को किसी ने नेपाल में एक रुद्राक्ष दे दिया है, उसी के पहनने से वे प्रधानमंत्री हो गई हैं। हो गई होंगी बेटे ! मैं यह भी नहीं कह सकता। नहीं महाराज जी, असली रुद्राक्ष से चमत्कार होता है। होता होगा बेटे, मैं यह कैसे कहूँ कि चमत्कार नहीं होता होगा। गुरुजी अगर असली रुद्राक्ष कहीं से मिल जाये तो क्या सारे के सारे देवता पकड़ में आ जाएँगे ? असली रुद्राक्ष की माला से जो जप करेगा, वही मालामाल हो जाएगा ? क्या आपके पास भी असली रुद्राक्ष की माला है। बेटे, लोग तो यही कहते हैं कि असली रुद्राक्ष की माला है। मुझे परख तो नहीं आती, पर शायद यह असली रुद्राक्ष की माला है जो मेरे काम आती है तो क्या आपको सिद्धियाँ इसीलिए आ जाती हैं। शायद, इसीलिये आ जाती होंगी। महाराज जी एक प्रार्थना हमारी भी है कि एक रुद्राक्ष की माला आप हमारे लिए भी कहीं से मँगा दीजिये। मँगा देंगे बेटा, कहीं से मिल जाएगी। मालूम तो नहीं हमको दुकान कहाँ है ? हमने हरिद्वार में देखा है कि उसी रुद्राक्ष के ग्यारह रुपये वसूल कर लेते हैं और उसी के तीन सौ रुपये भी वसूल कर लेते हैं। कोई काठ का उल्लू आ जाता है उससे तीन सौ रुपये ले लेते हैं और जब कोई सीधा-सादा आ जाता है तो ग्यारह रुपये ले लेते हैं। अश्लीलता का दौर चल रहा है, भाईसाहब कपड़े देख लीजिए। अच्छा माल है तो ले जाइये। इसी तरह अच्छी माला लगी है, तो ले जाइये। ग्यारह रुपये की है—लाइये दे दीजिये। अच्छा भाईसाहब असली रुद्राक्ष है। कह रहा हूँ ? बेटे मैं यह कह रहा हूँ कि वस्तुओं के माध्यम से—कर्मकाण्डों के माध्यम से आपने जो लम्बे-चौड़े सपने देखे हैं तो मैं चाहता हूँ कि आज आप जगें। अगर आपने लम्बे-चौड़े सपने इस ख्याल से देखे हों कि कर्मकाण्डों के माध्यम से, क्रियाओं के माध्यम से, वस्तुओं के माध्यम से और वस्तुओं की हेरा-फेरी के माध्यम से, चन्दन की माला के माध्यम से, रुद्राक्ष की माला से आपकी मनोकामनाएँ पूरी हो जाएँगी तो मेरी प्रार्थना है कि आप यह मान्यता खत्म करें। मेरे जीवन के लम्बे समय का साठ साल का अनुभव यह है कि जिन्होंने कर्मकाण्ड को ही सब कुछ समझा वह आदमी झक मार रहा है, कुछ नहीं है उसके पास। जो कर्मकाण्डों का महत्त्व बताते हैं और कर्मकाण्ड सिखाते हैं और कर्मकाण्डों से लक्ष्मी मिलने की बात कहते हैं, बेटे वे सब खाली हाथ हैं। यह सब इनका फ्रॉड है, इनमें से एक भी आदमी सही नहीं है। ये जो इस तरह कहते हैं कि इतना जप कर लीजिये, अमुक कर्मकाण्ड कर लीजिये और ये फायदा उठा लीजिये, बेटे इनमें से एक ने भी फायदा नहीं उठाया। मैं आपको कसम खाकर कह सकता हूँ कि यह सिर्फ जालसाजी है। वस्तुओं के माध्यम से—अक्षरों के उच्चारण करने के माध्यम से, क्रियाओं के माध्यम से आप फायदा नहीं उठा सकते, इसके साथ-साथ प्राण का, भावना का, होना आवश्यक है, मेरे लम्बे जीवन का यही अनुभव है—सार है।

साथियो, प्राण या भावना कैसी होनी चाहिए ? यह किस रूप में होनी चाहिए ? प्राण की एक धारा है—त्रिपदा की एक धारा है—'श्रद्धा' ! श्रद्धा किसे कहते हैं ? श्रद्धा कहते हैं—श्रेष्ठता से 'असीम प्यार' को ? श्रद्धा का एक और अर्थ मैं आपको बताना चाहता हूँ। श्रद्धा का अर्थ व्यक्ति विशेष की श्रद्धा से नहीं है। गुरु नाम के व्यक्ति कितने जालसाज और चालाक मालूम पड़ते हैं। हर कोई कहता है कि हमको गुरु बना लीजिये, श्रद्धा हमारी कीजिये, कहना हमारा मानिये। अच्छा तो हम देवी-देवता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

से श्रद्धा करेंगे। हाँ, देवी-देवता से श्रद्धा करें, लेकिन एक बात बताता हूँ। देवी-देवता के बारे में श्रद्धा करने से पहले यह बात मालूम रहनी चाहिए कि कोई भी देवता अथवा भगवान व्यक्ति नहीं है, शक्ति है ध्यान रखें ! मैं क्या कह रहा हूँ वह जानता है। वह व्यक्ति नहीं है, शक्ति है। व्यक्ति से क्या मतलब ? देवी-देवता को हमने व्यक्ति बनाकर रखा है और व्यक्ति बनाकर श्रद्धा भी हम करते हैं। व्यक्तियों के साथ में जो व्यवहार करते हैं वैसी ही श्रद्धा उनसे करते हैं। मसलन—हनुमान जी को हमने अपने घर में रखा है। हनुमान जी—एक व्यक्ति हो गये। अब श्रद्धा कैसे करेंगे ? मिठाई खिलायेंगे ? कपड़ा पहनायेंगे ? ये करेंगे ? वो करेंगे ? व्यक्ति के साथ में जो सुलूक किया जाता है, लोग भगवान को भी वैसा ही मानते हैं। भगवान को व्यक्ति मानते हैं। भगवान कोई व्यक्ति नहीं है, ध्यान रखें। भगवान एक शक्ति है। व्यक्ति ने भगवान् बना दिया है अपनी पूजा-उपासना के लिए, ध्यान करने के लिये, क्योंकि हमारा मन ऐसा है कि जब तक व्यक्ति की शक्ल न देखें तब तक ध्यान नहीं लगता। तो यह ध्यान लगने वाला भगवान क्या है ? बेटे, दुनिया में दो भगवान हैं। एक वह है जिसने मनुष्यों को बनाया और दूसरा भगवान वह है जिसको मनुष्यों ने बनाया है। मनुष्यों ने भगवान बनाया ? हाँ मनुष्यों ने भगवान को बनाया। इस तरह एक भगवान ऐसा है, जो इनसानों का बनाया हुआ है, इनसानों का गढ़ा हुआ है। इनसान का बेटा है भगवान, कौन-सा वाला ? जिसकी शक्ल है। शक्ल वाले भगवान सब मनुष्यों के बनाये हुए हैं। भगवान की कोई शक्ल नहीं हो सकती, हवा की कोई शक्ल नहीं हो सकती, बिजली की कोई शक्ल नहीं हो सकती, प्रेम की कोई शक्ल नहीं हो सकती, क्रोध की कोई शक्ल नहीं हो सकती, जीवात्मा की कोई शक्ल नहीं हो सकती। जितनी भी चीजें व्यापक हैं उनकी कोई शक्ल नहीं हो सकती। बिजली चमकती तो है, पर बिजली की कोई शक्ल नहीं है। बिजली नहीं चमकती उसका फिलामेंट चमकता है। बिजली—एक गर्मी का नाम है, उस ऊर्जा का नाम है जो सब जगह फैली हुई है। भगवान एक ऐसी शक्ति का नाम है जो सब जगह फैली हुई है।

फिर ये शक्लें ? शक्लें तो बेटे हमने ध्यान के लिये बनाई हैं। हमने अपने ध्यान को एकाग्र करने के लिये तरह-तरह की शक्लें गढ़ी हैं। ऐसा कोई महादेव नहीं है जो बैल के ऊपर सवारी करके घूमता रहता हो। नहीं हैं तो ये कहाँ से आ गया ? हजारों तरह के भगवान दुनिया में हैं और हजारों तरह की जो कल्पनाएँ की गई हैं, मूर्तियाँ बनायी गई हैं ये आदमियों की बनाई हुई हैं। भगवान की मूर्ति नहीं बन सकती। जयपुर में हम जाते हैं, तरह-तरह के भगवान बनते दिखाई पड़ते हैं। ये क्या बना दिया ? अरे रज्जन मियाँ क्या बना रहे हो ? अरे साहब, इस महीने में तो हनुमानजी बना रहे हैं। कैसे हनुमान बनाये ? अरे साहब, हनुमान जी तो काबू में ही नहीं आते। कभी मुँह बड़ी हो जाती है तो कभी पूँछ बड़ी हो जाती है तो फिर क्या करते हैं उनका ? अक्ल ठिकाने लगाता हूँ। अगर हनुमान की नाक बड़ी हो जाती है तो उसकी ऐसी घिसाई करता हूँ कि वह सीधी हो जाती है। घिसाई करता है, नाक नहीं काटता ? नहीं, काटता नहीं हूँ, थोड़ी-सी ठीक कर देता हूँ। हनुमान जी की नाक घिसता है ? हाँ हनुमान जी की नाक को घिसकर ठीक करता हूँ। ये बेटे मनुष्यों के बनाये हुए भगवान हैं। मनुष्यों के बनाये भगवानों का केवल उपयोग इतना ही है कि हमारा ध्यान जो अस्त-व्यस्त हो जाता है वह अस्त-व्यस्त न हो। इतने तरह के भगवान् नहीं हो सकते। पूरी दुनिया में एक ही भगवान् हो सकता है। सूरज की दुनिया में एक ही शक्ल है दुनिया भर में कहीं भी चले जाइये। एक ही सूरज मिलेगा और भगवान ? जो असली भगवान है अगर उसकी शक्ल होगी तो दुनिया में एक शक्ल होगी। तरह-तरह की शक्लें नहीं हो सकतीं। आपका भगवान लम्बी नाक वाला है और मेरा भगवान लम्बी पूँछ वाला। आपके भगवान के चार हाथ हैं और मेरे भगवान के छह हाथ। आपका भगवान मुसलमान के करीम जैसे दाढ़ी लगाये हुए हैं और हमारा हनुमान जैसा ..... क्या यह हो सकता है ? बेटे, ऐसा नहीं हो सकता, तो ये देवी-देवता क्या हैं ? ध्यान लगाने के लिए खिलौने हैं। देवी-देवता में भगवान् नहीं होता। देवी-देवता चमत्कार दिखाते हैं ? नहीं, कुछ चमत्कार नहीं दिखाते। फिर कौन दिखाता है ? वह दिखाता है जिसको हम असली भगवान कहते हैं। असली भगवान क्या है ? असली भगवान एक चेतना है, जो सारे विश्व-ब्रह्माण्ड में संव्याप्त है। उसकी ही एक छोटी वाली चिंगारी आपके और हमारे भीतर बैठी हुई है, जिसको हम जीव कहते हैं और जो सारे विश्व में संयाप्त है उसको हम कहते हैं ब्रह्म। ब्रह्म-विराट् और जीव-लघु, इन दोनों का जब आपस में मिलन होता है, तब कैसा मालूम पड़ता है ? तब बेटे, ... मैं तुझे उदाहरण देकर समझाता हूँ—बिजली के दो तार जब आपस में मिलते हैं तो क्या बात होती है ? बताइये ? उसमें से स्पार्किंग होती है और करैंट निकलता है। जीव और भगवान जब मिलते हैं तब क्या होता है ? एक स्पार्क निकलता है और करैंट निकलता है। क्या निकलते हैं ? 'आदर्श' और सिद्धान्त निकलते हैं। जब भी भगवान मिलेगा मनुष्य के भीतर ही मिलेगा। उसके भीतर ऐसा कम्पन्न, ऐसी हूक, ऐसी उमंग उठेगी जिसका नाम है—आदर्श। आदमी के भीतर से आदर्श उमगें तो जानना चाहिए भगवान आ गया।

भगवान के रूप को तीन तरीके से बताया गया है। भगवान के बारे में जब लोग मुझसे पूछते हैं कि वह कैसा होता है ? तो मैं कभी-कभी बुखार का नाम लेता हूँ। बुखार कैसा होता है ? उससे पूरे शरीर में गर्मी आ जाती है। बहुत जोर से गर्मी लग जाती है, पसीने आ रहे हैं और व्यक्ति कँप रहा है। इसी तरह भगवान जब आते हैं, तब आदमी सामान्य नहीं रहता, असामान्य हो जाता है। सामान्य मनुष्य मोह के गुलाम, लोभ के गुलाम, सारी जिन्दगी इनकी दो काम में खप जाती है, पैसे का लोभ और व्यक्ति का मोह।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिकतर व्यक्ति लोभ और मोह के लिये कीड़े-मकोड़े, मक्खी-मच्छर जैसे गये-गुजरे जीवन जीते हैं और जिन्दा रहते हैं, परन्तु जब जीवन में भगवान आता है, तब आपको आता है बुखार। बुखार जब आता है तो कुछ और ही चीजें दिखाई पड़ती हैं। दिमाग में कुछ और ही दिखाई पड़ता है। मन कुछ और ही तरीके से अजीब तरीके से मचलता है। भगवान के बारे में लोग पूछते हैं कि कैसे मालूम पड़ता है आपको ? भगवान जब मेरे पास आता है तो मुझे ऐसा मालूम पड़ता है जैसे कोई नशा छा गया हो। नशा कैसा होता है ? नशा बेटे शराब जैसा होता है। शराब पी जाने के बाद में कुछ दिमाग भी अलग-सा हो जाता है। क्या बात है गुरुजी ? बात तो कुछ नहीं है बेटे, भगवान में एक मस्ती है, भगवान में एक नशा है। सड़क के किनारे एक शराबी पड़ा हुआ था। हाथी पर सवार होकर राजा साहब जा रहे थे। एक शराबी चिल्ला रहा था—"ऐ पड्डा वाले पड्डा बेचता है।" पड्डा जानते हैं ? भैंस के बच्चे को एम. पी. एवं यू. पी. में पड्डा बोलते हैं। कोई शराबी कह रहा था उस राजा से जो हाथी पर सवार था कि ऐ पड्डे वाले, तू बेचता है तो हमको दे जा। राजा ने सुना तो सोचा कि क्या बात है। यह कोई ऋषि मालूम पड़ता है। पता नहीं क्या बात है। सिपाहियों ने पकड़ लिया और उसे कैदखाने में डाल दिया। तब तक उसका नशा दूर हो गया था। दूसरे दिन राजा साहब के सामने पेश हुआ। राजा ने पूछा—भाई ! क्या मामला है ? पड्डे की क्या बात कह रहे थे ? सिपाहियों से पूछा—क्या कह रहा था ये। हुजूर ! आपके हाथी को ये पड्डा बता रहा था—पड्डा माने भैंस का बच्चा और ये कह रहा था—आप पड्डे को बेचते हैं क्या ? ये खरीदना चाहता था कल। क्यों भाई, तुम हाथी खरीदना चाहते थे ? खरीद लो, हमारा क्या है, हमारे पास तो यह पुराना हाथी है, हम इसे बेच देंगे और नये खरीद लेंगे। आप ही ले लो हुजूर, बड़े जोर से चिल्लाया—जो कल नशे की हालत में सौदागर बना हाथी खरीद रहा था वह तो चला गया। बेटे, भगवान उस नशे का नाम है जो आदमी के भीतर आता है और जब वह आता है तब आदमी के चिन्तन, चरित्र, आदमी की हूकें, आदमी की इच्छाएँ, आदमी की उमंगें, आदतें सभी कुछ बदल जाती हैं। वैसी रहती नहीं हैं, जैसी कुछ अभी अजीब किस्म की हैं, घिनौने आदमी की। भगवान अगर आपके भीतर कभी भी आया होता तो आपका घिनौनापन सबसे पहले खत्म होता। आपके लोभ के ऊपर कैंची चलायी होती, आपके मोह के ऊपर क्या किया होता ? आपकी छुद्रता को छीन लेता और आपके भीतर महानता के अंकुर प्रवेश होते। जब कभी भी किसी के भीतर भगवान आता है तो ऐसे ही आता है।

भगवान सबसे पहले किससे आता है ? श्रद्धा से। श्रद्धा से भगवान आता है। श्रद्धा जब आती है तो क्या होता है गुरुजी ? श्रद्धा जब आती है तो बेटे आदर्शों के प्रति असीम प्यार हो जाता है व्यक्ति को। श्रद्धा का अर्थ है—"श्रेष्ठता से असीम प्यार"। श्रेष्ठता माने 'आदर्श'। आदर्शों के प्रति असीम प्यार। उसकी बराबरी और किसी से क्या करना ? बेटे मैं तुमसे गुरु गोविन्द सिंह की तरीके से कहता हूँ कि सिद्धान्त जिन्दा रहने चाहिए, आप लोग नुकसान उठाएँ तो उठायें। इब्राहिम की तरीके से हमें नुकसान उठाना पड़ता हो तो उठाना पड़े, लेकिन हम सिद्धान्तों पर जिन्दा रहेंगे। विनोबा भावे की माँ के तरीके से—तीनों बेटे संन्यासी बनते हों तुम्हारे तो बने, वंश डूबता हो तो डूबे, हमें क्या करना है ? लेकिन उसका मन प्रसन्न होता है। आदमी के अन्दर जो श्रेष्ठता है, श्रद्धा उसी का नाम है। श्रद्धा उस चीज का नाम नहीं है जिसको अक्ल से ये गुरु लोग जिन्दा रखते हैं। श्रद्धा उस चीज का नाम नहीं है, जिसको खाकर के देवी-देवता जिन्दा हैं। श्रद्धा उस चीज का नाम नहीं है जिसको अन्धश्रद्धा कहते हैं। आपका बाप हमारे बाप का गुरु था, आप हमारे गुरु बन जाइये। क्या गुरु बन जाएँ ! चरस तो नहीं खा ली ? नहीं, साहब, वंश परम्परा से हमारे वे ही गुरु हैं। ये बेटे, अन्धश्रद्धा है। अन्धश्रद्धा के पीछे विवेक नहीं होता। विचार नहीं होता, मात्र रूढ़ियाँ होती हैं, परम्पराएँ होती हैं। यह श्रद्धा नहीं है—अन्धश्रद्धा है। अन्धश्रद्धा हमको नहीं चाहिए। अन्न बड़ा उपयोगी है, लेकिन अन्न जब सड़ता है तो बड़ा हानिकारक हो जाता है। सड़े हुए अन्न का नाम है पाखाना। पखाना क्या है ? छह घंटे पहले का अन्न है। छह घंटे पहले थाली में जो रखा हुआ था, बड़ा सुन्दर भोजन था, बड़ा अच्छा था, लेकिन पेट में पहुँचने के बाद में वह सड़ गया और सड़ने के बाद में इसी का नाम है—पाखाना। श्रद्धा माने श्रेष्ठतम्, भगवान को पकड़ने के लिये असीम शक्ति और अन्धश्रद्धा माने पाखाना, सड़न, बदबू। अन्ध श्रद्धा ही आज सब जगह फैली हुई है। अन्धश्रद्धा का लोग दोहन कर रहे हैं, शोषण कर रहे हैं, बेचारे भोले-भाले आदमियों की हजामत बना रहे हैं। अन्धश्रद्धा आज केवल जालसाजी और भोले-भाले आदमियों को शिकार बनाने के काम आती है। श्रद्धा अलग है। श्रद्धा अगर आपके पास है तो मैं कहता हूँ कि भगवान आपके पास आयेगा।

श्रद्धा किसे कहते हैं ? आदर्शों से असीम प्यार को। दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं एक ही आधार पर महापुरुष हुए हैं कि उनके भीतर से श्रद्धा का समावेश हुआ। जो भी आप इतिहास में पढ़ते हैं महापुरुषों के बारे में, उसमें एक बात का उल्लेख मिलता है कि उन्होंने सिद्धान्तों को प्यार किया, आदर्शों को प्यार किया, मुसीबतें उठाईं, घर वालों का कहना नहीं माना, अपनी कमजोरियों का मुकाबला किया और श्रेष्ठ मार्ग पर बढ़ते-बढ़ते वहाँ तक चले गये जैसे पर्वतारोही एवरेस्ट के शिखर पर चढ़ते-चढ़ते जा पहुँचते हैं। श्रद्धा व्यक्ति को ऊँचा उठाती है। सिद्धान्तों के प्रति निष्ठावान बनाती है। क्या करना चाहिए—इसके बारे में सैकिण्डों में फैसला कर देती है, असमंजस रहता ही नहीं है। यह करें कि न करें—यह सवाल ही पैदा नहीं होता। श्रद्धा अगर आपके पास है तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आपकी अन्तर्आत्मा यह कहेगी कि हमको श्रेष्ठ काम करने चाहिए और आदर्श काम करने चाहिए। दुनिया क्या कहती है ? अरे, ये तो पागलों की दुनिया है, जाहिलों की दुनिया है। हमारा पड़ोसी मना करता है। पड़ोसी तो महाजाहिल है तेरा। हमारे घरवाले कहते हैं, घरवालों को जहन्नुम में डाल दो। श्रद्धा अलग चीज है। श्रद्धा माने श्रेष्ठता के प्रति असीम प्यार। दुनिया के इतिहास में आज तक जो कोई महापुरुष हुआ है, भगवान का भक्त हुआ, वह एक ही आधार को लेकर चला है जिसका नाम है श्रद्धा। श्रद्धा की शक्ति आप उन सब व्यक्तियों में देखते हैं, जो शरीर की दृष्टि से कमजोर, मानसिक दृष्टि से कमजोर, विद्या की दृष्टि से कमजोर, हर दृष्टि से कमजोर रहे हैं, लेकिन श्रद्धा के आधार पर ऊँचे से ऊँचे स्थान पर जा पहुँचे हैं। कबीरदास जी उन्हीं में से थे, जो साधनों की दृष्टि से कमजोर, विद्या की दृष्टि से कमजोर, वंश की दृष्टि से कमजोर, आजीविका की दृष्टि से कमजोर—हर दृष्टि से कमजोर थे, लेकिन श्रद्धा की दृष्टि से ऊँचे थे। श्रद्धा के लिए—आदर्शों के लिए उनमें असीम प्यार था।

श्रद्धा केवल मान्यता के क्षेत्र में सीमित नहीं रह सकती, वह क्रिया-रूप में परिणत होती है। मनुष्य केवल विचारता ही नहीं रहता कि कैसा करेंगे, बुड्ढे हो जाएँगे तब ऐसा करेंगे, अगले जन्म में ऐसा करेंगे, वरन् करता भी है। श्रद्धा कुछ श्रेष्ठ काम करने के लिए आदमी को बेचैन करती है, बेबस करती है। श्रद्धा एक शक्ति है। श्रद्धा कल्पना नहीं है, श्रद्धा एक हूक है, श्रद्धा एक जीवात्मा की आवश्यकता है और जब उदय होती है तो आदमी से कुछ कराकर रहती है, बिना कराये छोड़ नहीं सकती। श्रद्धा अगर आपके भीतर हो तो क्या होगा ? बेटे, जब समर्थ गुरु रामदास की श्रद्धा जगी तो ब्याह-शादी करने की अपेक्षा वे वहाँ चले गये, जहाँ उन्हें महानता वरण करने के लिए तैयार थी। शंकराचार्य की श्रद्धा जगी तो वे महान कार्य करते चले गये। भगवान बुद्ध की श्रद्धा जगी तो उन्होंने अपने लिये रास्ता तय कर लिया कि क्या करना चाहिए ? श्रद्धा की बड़ी शक्ति है। महापुरुषों से लेकर ऋषियों तक और जहाँ तक भगवान के भक्त हुए हैं, वहाँ हर एक के भीतर हम पाते हैं कि अगर वे सफल हुए तो, अगर सफल नहीं हुए तो एक ही वजह से हुए हैं कि उनके अन्दर श्रद्धा का अंश कितना रहा ? कर्मकाण्ड रहे हैं, पूजा रही है, उपासना रही है, भजन करने वाले रहे हैं, जप करने वाले रहे हैं, पर श्रद्धा के अभाव की वजह से जीवन में श्रेष्ठता का समावेश न कर सके और गयी-गुजरी अवस्था में पड़े रहे। भक्ति होती रही, भजन होते रहे पर नीचता और निकम्मापन जहाँ का तहाँ बना रहा, दोनों अपनी-अपनी जगह-जगह पर बने रहे। निकृष्टता ने पैर नहीं हटाये और भक्ति ने चमत्कार नहीं दिखाये। भक्ति आयेगी तो हमारा निकम्मापन चला जाएगा। निकम्मापन रहेगा तो भक्ति नहीं आयेगी। एक साथ एक म्यान में दो तलवारों की तरीके से नहीं रह सकतीं।

श्रद्धा का अर्थ है—श्रेष्ठता से असीम प्यार। मैंने श्रद्धा की भगवान के प्रति, जैसा कि मेरे गुरु ने बताया था। श्रद्धा मुझे सिखाई गई थी। पहले श्रद्धा को मैंने अपने गुरु के द्वारा विकसित किया था—स्लैब ढाला था। स्लैब कब ढालते हैं ? हमारी बिल्डिंगें बनती हैं तो पहले लकड़ी का बना देते हैं ढाँचा, फिर ढाँचे के ऊपर स्लैब ढालते हैं। पहले भगवान हमने देखा नहीं था अतः सोचा कैसे करें ? क्या करें ? भगवान को कहाँ से लाये ? भगवान को कहाँ पायें ? इसीलिये, जिसके प्रति, जिसको हम मान लेते हैं कि हमारे जीवन में यह श्रेष्ठ व्यक्ति है, जिसके बारे में हमारे संदेह दूर हो गये, जिसके बारे में हमने छान-बीन कर ली उसके प्रति हमारी श्रद्धा जम गयी है। हमने अपनी श्रद्धा अपने गुरु के ऊपर दिखाई और फिर वह श्रद्धा विकसित होते-होते भगवान तक चली गई। भगवान तक श्रद्धा विकसित होने का अर्थ होता है—आदर्शों के प्रति असीम प्यार। आदर्श हमारी नस-नस में हैं, आदर्श हमारे मन में है, आदर्श हमारे चिन्तन में है, आदर्श हमारी कल्पना में है, आदर्श के प्रति हमारी इतनी गहरी निष्ठा है कि कोई अँगुलियों को काट-काट करके भी बखेरता हो तो भी हमको स्वीकार है, लेकिन श्रेष्ठता से विचलित हम नहीं हो सकते। यही है वह श्रद्धा जिसने हमको चमत्कार दिखाये। इससे कम में किसी ने कोई चमत्कार नहीं पाये और न कोई आगे भविष्य में पायेगा।

बेटे, श्रद्धा के चमत्कारों के मैं कई रूप बता सकता हूँ। बुरे चमत्कार-श्रद्धा के भूत के रूप में। भूत क्या होता है ? कुछ भी नहीं है। भूत के भय से आदमी बीमार पड़ जाते हैं। भूत के भय से आदमी क्यों जान दे देता है ? यह बेटे, आदमी की धारणा है। झाड़ी में भूत रहता है, मरघट में भूत रहता है, डर के मारे बुखार आ गया। रात में सपना दिखा था—भूत आया था तो उस के डर से तू बीमार पड़ेगा और बीमार ही नहीं पड़ेगा बल्कि भूत तेरी जान भी ले बैठेगा। हजारों आदमी भूत की बीमारी से मरते हैं, हम जानते हैं। क्या महाराज जी भूत भी मर सकते हैं ? हाँ मर सकते हैं। भूत कैसा होता है ? भूत के लिये तू सारे संसार में चला जा और इन्क्वायरी करके ला कि क्यों साहब, कैसा होता है भूत ? जर्मनी में जा और पता कर कि क्यों भाईसाहब ! आपके यहाँ भूत आता है कि नहीं और आता है तो भूत कैसा होता है ? बुखार को कहते हैं क्या ? नहीं भूत ऐसा नहीं होता ? भूत अलग होता है। कैसा होता है ? मरा हुआ प्राणी आता है और ऐसे-ऐसे करता रहता है। भाईसाहब हमारी जर्मनी में तो आज तक कोई नहीं आया, जापान में चले जाइये पर पूछिये कि क्यों साहब आपने भूत देखा है कभी ? वह भी कहेगा—हमारे यहाँ तो कभी नहीं आया। आप अमेरिका चले जाइये और पता कीजिये कि क्या आपने भूत देखा है ? हमने भी नहीं देखा वे भी यही कहेंगे तो कहाँ से आ गया हिन्दुस्तान में ? जाने कहाँ से आता है, गुरुजी कहाँ से नहीं आता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूत सारी दुनिया में नहीं मिलता। बुखार सारी दुनिया में होता है, खाँसी सारी दुनिया में होती है, उल्टी सारी दुनिया में होती है, तो भूत केवल हिन्दुस्तान में ही क्यों रहता है ? हिन्दुस्तान में पढ़े-लिखे लोगों में यह नहीं रहता, पिछड़े लोगों में रहता है। बहके लोगों में रहता है। चाहे वे पढ़े-लिखे हों या बिना पढ़े-लिखे हों, पढ़े-लिखे भी बहके होते हैं। बिना पढ़ों से और भी ज्यादा जाहिल होते हैं। नहीं साहब पढ़े-लिखे हैं, उन्हें भूत का भय क्यों सतायेगा ? पढ़-लिख लेना अलग बात है और ये अलग बात है। बिना पढ़े जाहिल और पढ़े-लिखे जाहिलों में कोई फर्क नहीं रहता, दोनों जाहिल एक से होंगे। भूत कहाँ से आता है ? बेटे, भूत हमारे दिमाग में से निकलता है—**"शंका डायन मनसा भूत"**। मनसा भूत मन में से निकलते हैं और डायन शंका की देन है। शंकालु लोग कहते हैं कि इसने हमारे बच्चे को नजर लगा दी है। छीन लो इसकी जिंदगी। नुमाइशों में बच्चे जाते हैं, तौले जाते हैं वजन लिये जाते हैं, ये किये जाते हैं वो किये जाते हैं, इनाम मिलते हैं फोटो अखबारों में छपते हैं पर उनको तो कोई नजर नहीं लगाता है और तेरे कुँवर को ही नजर लगा दी है। बैल-सा तो लिये बैठा है, सारे दिन नाक पोंछता रहता है और कहता है कि अमुक ने नजर लगा दी है, जाहिल कहीं का, नजर लगा दी है इसके बच्चे को।

मित्रो ! मनुष्य का अज्ञान इतना ज्यादा बढ़ा हुआ है कि आदमी के लिये बहुत हानिकारक हो सकता है। अभी थोड़े दिन पहले फ्रांस में एक आदमी को फाँसी की सजा दी गई। वैज्ञानिकों ने सरकार से उस फाँसी वाले आदमी को माँगा कि आप हमको दीजिये ताकि हम अपने ढंग से उसे फाँसी लगा सकें। अच्छा, ले जाइये। वैज्ञानिकों ने उस व्यक्ति से कहा—भाईसाहब आपको कोई कष्ट नहीं होगा। फाँसी में तो बिजली की कुर्सी पर आपको बिठाया जाता तब आपको जलाया जाएगा। तब आप जिन्दा जलेंगे तो बहुत कष्ट होगा तो क्या आप हमको ऐसी मौत दे देंगे जिसमें कोई कष्ट न हो। बताइये कैसे देंगे ? आपके हाथ की एक नस हम काट देंगे और काटते समय भी कोई पता नहीं चलने देंगे कि आपकी नस कटी है कि नहीं कटी है। बस आपके हाथ में जरा-सा नस्तर लगा देंगे जिससे आपका खून निकलता रहेगा और दो घंटे के भीतर धीरे-धीरे जैसे आप गोलियाँ खा लेते हैं, नशा आता जाएगा और आप खत्म हो जाएँगे, कुछ पता नहीं चलेगा। लगा दीजिये साहब ऐसी फाँसी तो और भी अच्छा है। तख्त पर सुला दिया गया, उसकी आँखें बंद कर दीं गयीं। डाक्टरों का गिरोह जमा हो गया। हाथ के पास झूठ-मूठ की खरोंच लगा दी गयी ताकि उसको मालूम पड़े कि देखिये हमने आपका हाथ सुन्न कर दिया है, तो इससे आपको मालूम नहीं पड़ेगा कि हमने आपकी नस काट दी। जरा-सी खरौंच की गयी थी। उसके बाद ऊपर से पानी की बहुत बारीक नली वहाँ लगा दी जिसके पास से पानी बहता चला जाए और वहाँ से घूमता हुआ नीचे टप-टप गिरे। देखिये, अब आपकी नस हमने काट दी, अच्छा। खून आपका निकलता जा रहा है, अच्छा। खून बह रहा है आपका, अच्छा। देखिये कितना खून आ गया—ढाई छटांक निकल गया। अब कितना निकल गया ? साढ़े पाँच छटांक से ज्यादा निकल गया। हार्ट की स्पीड क्या है ? कम हो गयी। नाड़ी की गति धीमी पड़ गयी, ब्लडप्रैशर कम पड़ गया। डाक्टरों का गिरोह झूठ-मूठ कहता चला गया और वह मरीज विश्वास करता चला गया कि मेरा इतना खून निकल गया मेरा इतना टैम्परेचर कम हो गया, मेरी हार्ट की चाल इतनी कम हो गयी और एक क्षण ऐसा आया कि उसी की बजह से वह आदमी मर गया। आदमी का विश्वास आदमी को मार सकता है। आदमी का विश्वास आदमी की हृदय की गति को कम कर सकता है। समाधि में योगीजन बहुत दिनों तक पड़े रहते हैं, हृदय की धड़कनें बंद कर लेते हैं। संकल्प की शक्ति से ये क्या चीज नहीं हो सकती है ? यही है श्रद्धा की शक्ति, जो आदमी के भीतर अंतराल में निवास करती है। संकल्प शक्ति का विकास भी इसी से होता है। श्रद्धा से आदमी अपने आपको मार सकता है, श्रद्धा से आदमी अपनी शक्ति को बढ़ा सकता है, श्रद्धा बड़ी चमत्कारी है।

अध्यात्म में जितनी भी सफलता है, इसके मूल में उसका सिद्धान्त काम करता है, श्रद्धा का सिद्धान्त काम करता है। कैसे ? श्रद्धा का सिद्धान्त बेटे ऐसे है जैसे एक थे पंडित जी। पंडित जी गंगाजी जाया करते थे। पंडित जी के पास गंगा किनारे और लोग आ जाते और पूछते थे कि हमें गंगा जी के उस पार जाना है, परन्तु गंगा के पानी में बहुत तेज धार चल रही है। हमको पार जाना जरूरी है, पर कोई भी नाव नहीं है। पंडित जी बोले—हमारे पास एक ऐसा मंत्र है जिसका जप करते हुए आप पार चले जाइये। आप पार हो जाएँगे। अगर डूब गये तो ? तो लोगों से कह जाओ कि जब तक हम पार नहीं चले जाएँ तब तक आप टिके रहिये और हमारे हाथ-पाँव बाँध दीजिये और यदि वे डूब जाए तो हमको भी डुबो देना हमारा मंत्र बड़ा करामाती है। कान में कहा—किसी से कहना मत, बस यह मंत्र जपता चला जा और पार निकल जा। मंत्र क्या था ? राम नाम की मंत्र था, जिसे जपता हुआ वह पार निकल गया। एक मौलवी साहब कहीं रहते थे। मौलवी साहब से उनके मुसलमानों ने कहा देखिये हिन्दुओं के पास ऐसे करामाती मंत्र हैं कि वे उस जपते हुए नदी में से पार निकल सकते हैं। आप तो मुसलमान हैं और हमारे पास कोई मंत्र नहीं है। वाह ! हमारे पास हिन्दुओं से और भी बड़ा मंत्र है। आप और हम उसका जप करके पार निकल सकते हैं और हम डूब गये तो ? तो आप हमको डुबो देना। अच्छा ! ऐसा भी मंत्र है ? हाँ, उसका नाम है—खुदा और वह खुदा, खुदा करता हुआ नदी पार निकल गया। लेकिन एक और आदमी था जैसे आप हैं, उसने कहा राम + खुदा दोनों को मिला दो। दोनों को घोलकर के मिक्सचर बना दिया। मिक्सचर बना लेने से क्या हो जाएगा ? आधा घंटे में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

खुदा का नाम लेने से नदी पार होते हैं और आधा घंटे राम का नाम जपकर पार होते हैं। यदि दोनों को मिला देंगे तो पन्द्रह मिनट में पार हो जाएँगे। इसलिये उसने यह जप करना शुरू किया—राम-खुदा, राम-खुदा, राम-खुदा और बीच मझधार में डूब गया।

गोस्वामी तुलसीदास जी जब वृन्दावन गये तो उन्होंने हाथ जोड़कर भगवान् कृष्ण से कहा—यह तो मैं नहीं कहता कि आप भगवान नहीं हैं, भगवान के रूप हैं, पर मेरी श्रद्धा राम के रूप में है। आप अगर राम के रूप में अपनी शक्ल बना लें तो कैसा अच्छा हो ? **"तुलसी मस्तक तब झुके जब धनुष-बाण लो हाथ।।"** धनुष-बाण अगर आपके हाथ में हो तो हमारा मस्तक अपने आप ही झुक जाएगा। अभी तो हमको झुकाना पड़ रहा है, पर तब अपने-आप ही झुक जाएगा। मथुरा में कभी आप जाएँ तो वहाँ तीन सौ वर्ष पुराना एक मंदिर है जिस पर 'राम मंदिर' लिखा हुआ है। वास्तव में वह कृष्ण मंदिर है, जहाँ के मंदिर में कृष्ण की मूर्ति परिवर्तित होकर राम के रूप में परिवर्तित हो गयी थी और गोस्वामी जी ने मस्तक झुका लिया था। श्रद्धा का भाव लेकर चलें, तो हमारे लिये कितना लाभदायक हो सकता है। इस सम्बन्ध में एक घटना है। किनकी घटना है ? एक कोई था चेला जिसको एक दवा कहीं से मिल गयी। वह सबसे कहता-फिरता कि सब बीमारी को ठीक कर देती है यह दवा। लोग आते और वह कहता कि आपकी बीमारी को हम अच्छा कर देंगे। आप एक कटोरा पानी लाइये, एक बूँद हम डाल देंगे, पीजिये अभी अच्छे होते हैं आप लोग। एक कटोरा पानी ले आते और वह कटोरे में एक बूँद दवा डाल देता, लोग पीते और अच्छे हो जाते। हजारों आदमी अच्छे हो गये। यश फैल गया। कीर्ति फैल गयी। हर जगह से हजारों आदमी आते दवाई पीने के लिये—अच्छा होने के लिये। एक दिन उनके जो गुरु थे, उन्होंने सुना कि हमारे चेले को ऐसी कोई करामाती दवा मिल गयी है, जिससे हजारों लोग अच्छे हो जाते हैं। गुरुजी को भी बीमारी थी, कभी बवासीर की शिकायत तो कभी गठिया की शिकायत। कभी जुकाम की शिकायत बनी रहती थी। वे भी चेले के पास पहुँचे और बोले—बेटा, तेरे पास बहुत शक्ति मालूम पड़ती है। जी गुरुजी, हमारे पास एक ऐसी दवा है, जिससे हजारों मरीजों को फायदा हो जाता है। हमारा भी इलाज कर दो। हाँ महाराज जी, आपका भी जरूर फायदा करूँगा। पानी लाया गया। एक बूँद दवा डाली, गुरुजी ने पी और बवासीर बन्द, गठिया बन्द, सब बीमारियाँ दूर हो गयीं। बेटे तेरी दवा में क्या करामात है ? महाराज जी। आपके चरणों की दया है। ऐसी करामाती दवा मेरे हाथ लगी है कि मैं सबको अच्छा कर सकता हूँ, अच्छे होकर चले तो गये, पर उनके मन में यह विचार आया कि कुछ ऐसा हो जाए कि यह दवा हमारे हाथ लग जाए तो हम भी लोगों को अच्छा किया करेंगे और हमारा भी नाम बड़ा हो जाएगा। हमें भी दान-दक्षिणा मिलने लगेगी। हमारा भी यश हो जाएगा। चेला तो हमारा ही है, हम जाकर पूछेंगे तो अवश्य बता देगा। वह चेले के पास गये। चेला बोला—महाराज जी कोई कष्ट आपको रह गया क्या ? ना बेटे, कष्ट तो अच्छा हो गया था तभी, पर एक इच्छा है तू पूरी कर दे तो ? महाराज जी। बताइये क्या मैं इस लायक हूँ कि आपकी इच्छा पूरी कर सकूँगा ? हाँ, बेटे, यह जो दवाई तू बाँटता है, यह क्या चीज है ? बस इतना हमको बता दे या तो इसका नुस्खा लिखा दे या अपने पास से दे दे। इस दवाई को हम भी दिया करेंगे तो हमारा भी नाम हो जाएगा और यश हो जाएगा, हमारी भी आमदनी बढ़ जाएगी। महाराज जी मैं आपको अवश्य बता दूँगा आपको मैं क्यों नहीं बताऊँगा ? बता क्या है इसमें ? महाराज जी इसमें ? इसमें आपके चरणों का जल है, मैं जब कभी जाता हूँ एक साल भर में आपके पास तो आपके चरणों का जल धोकर के ले आता हूँ। बस उसी को शीशी में बंद कर देता हूँ और उसी की एक-एक बूँद, एक-एक बूँद डालता रहता हूँ। उसी से सब अच्छे हो जाते हैं। सही कहता है या झूठ ? सच कहता हूँ, भगवान को साक्षी मानकर, इसमें आपके चरणों के जल के अलावा कोई चीज नहीं है। अच्छा ! गुरुजी चले गये।

अपने आश्रम में जाकर सब मोहल्ले वालों को उन्होंने बुलाया, दूर-दूर से लोगों को बुलाया—आओ भई, हमको भी ऐसी करामाती दवा मिल गयी है। जो कोई भी बीमार होगा हम उसे अच्छा कर देंगे। बहुत आदमी आ गये। अपने चरणों को उन्होंने बाहर निकाला और उसे अच्छी तरीके से धोया और उन्होंने एक-एक बूँद डाल दिया कटोरे में। एक बूँद से क्या फायदा ? एक कटोरी भरकर लीजिये चरणों के जल को। एक कटोरी आप लीजिये, एक कटोरी आप लीजिये, एक आप लीजिये—पूरे का पूरा चरणों का धोवन पिलाया पर कोई भी अच्छा नहीं हुआ। अच्छा—कल फिर आना, फिर कल आप अच्छे हो जाएँगे। फिर एक कटोरी पिलाया। लीजिये, पीजिये और पीजिये। पर इतने पर भी एक भी व्यक्ति अच्छा नहीं हुआ। वे फिर चेले के पास गये और बोले हमारी दवा से तो एक भी अच्छा नहीं हुआ, तेरे से तो सब अच्छे हो जाते हैं। महाराज जी ! आप की दवा में और मेरी दवा में फर्क है। आपकी दवा में श्रद्धा का अभाव है और मेरी दवा में श्रद्धा घुली हुई है। गंगाजल में जब हम श्रद्धा जोड़ देते हैं तो वह गंगाजल हो जाता है। श्रद्धा का प्रभाव निकाल देते हैं तो यह नल का पानी हो जाता है। नल का पानी है, यह गंगाजल। क्या है गंगाजल ? पानी है ! नहीं महाराज जी ! यह तो गंगाजल है। नहीं, पानी है, इसको मरे हुए व्यक्ति पर डाल देना, इसका उद्धार हो जाएगा गंगाजल है। किससे उद्धार हो जाएगा ? बेटे, श्रद्धा से। श्रद्धा शक्ति है श्रद्धा, आध्यात्मिक जीवन में सबसे बड़ी शक्ति है। श्रद्धा का अभाव अगर आपके भीतर है, तो कर्मकाण्डों से आपको लाभ नहीं होगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सन् १६६० की एक घटना है। अमेरिका में एक पादरी रहता था टॉमस। टॉमस पादरी सबसे कहता था कि भगवान का नाम लिया करो। श्रद्धा से भगवान का नाम लोगे तो तुम्हारा कल्याण हो जाएगा। किसी ने उसकी कोई बात नहीं सुनी। नमाज तो सब अदा कर लेते थे, प्रेयर भी कर लेते थे, पर श्रद्धा किसी में नहीं थी। पादरी ने दूर-दूर के आदमियों को बुलाया। उन्होंने कहा—तुम श्रद्धा की शक्ति को नहीं मानते ? हमें तो मालूम नहीं कि श्रद्धा क्या होती है ? उसने कहा—अच्छा, देखो श्रद्धा की शक्ति का चमत्कार दिखाते हैं। एक रस्सा उसने नियागरा फॉल (अमेरिका में नियागरा फॉल सबसे बड़ा फॉल है।) ऊपर से बड़ी भयंकर आवाज से झरना गिरता है। बहुत आवाज निकलती है। उसकी गहराई भी बहुत है। बहुत भयंकर झरना है। दुनिया में इतना बड़ा झरना कहीं पर भी नहीं है, जितना नियागरा फॉल है उसके एक किनारे पर पेड़ थे, उस पर रस्सा बाँधा और नाव में बैठकर दूसरी पार चला गया। उस रस्से को उसने दूसरे पेड़ से बाँध दिया। झरना के बीचों-बीच में दोनों ओर पेड़ों से रस्से बाँध दिये और लोगों से कहा—देखिये, मैं बाजीगर तो नहीं हूँ ? नहीं, आप बाजीगर नहीं हैं। हम सर्कस में तो काम नहीं करते ? नहीं, सर्कस में आप काम नहीं करते। हम कोई नट तो नहीं हैं ? नहीं, आप नट भी नहीं हैं। आप तो पादरी हैं। हमने जब से जन्म लिया है आपको इसी जगह में काम करते हुए देखते आये हैं। अच्छा देखो अब मैं श्रद्धा का चमत्कार दिखाता हूँ। श्रद्धा के सहारे पादरी टॉमस रस्से पर चढ़ गया और उस पर एक पाँव रखता हुआ चार फर्लांग चौड़ाई पूरी करके पार चला गया। लोगों से कहा—श्रद्धा का चमत्कार देख लिया ? हाँ, साहब श्रद्धा में बड़ी शक्ति होती है, श्रद्धा का बड़ा महत्त्व है। ये बातें सुनकर टॉमस ने कुछ लोगों से कहा—आप लोग श्रद्धा की शक्ति को यदि मानते हैं, तो मैं जहाँ से आया हूँ फिर दुबारा उसी रस्से पर चढ़कर जाऊँगा उस पार। आप में से एक आदमी आये और मेरे कन्धे पर सवार हो जाए, उसको भी लेकर मैं पार चला जाऊँगा। एक भी तैयार नहीं हुआ। टॉमस चुपचाप बैठा हुआ था, उसने अपने ग्यारह वर्ष के बेटे से कहा—बेटे तुम हमारे ऊपर विश्वास करते हो ? हाँ। हम तुम्हें डुबोयेंगे तो नहीं ? 'नहीं, आप कैसे डुबो सकते हैं ? आप तो हमारे पिता हैं। तो फिर हमारे कंधे पर बैठ जाइये। हम तुम्हारे समयानुसार चलेंगे और तुमको पार लगा देंगे। बच्चा कंधे पर सवार हो गया। उसे कंधे पर सवार करके टॉमस फिर उसी रस्से पर धीरे-धीरे पैर बढ़ाता हुआ चला गया और चार फर्लांग का रास्ता फिर पार कर लिया। चार फर्लांग से फिर आया और वहीं जा पहुँचा। लोगों से उसने कहा आप लोगों का विश्वास यदि भगवान पर रहा होता तो जैसे मेरा बच्चा मेरे साथ पार हो गया आप भी उसी तरह से पार हो जाते।

बेटे, मेरी जिन्दगी में खिलवाड़ भी शामिल है, बड़े से बड़े नुकसान भी शामिल हैं। मैंने अपने बॉस के, अपने मास्टर के ऊपर, अपने मंत्र के ऊपर सच्चे मन से श्रद्धा की। उसने कहा—हमारे कंधे पर बैठो, मैं उनके कंधे पर बैठ गया। बजाय यह ख्याल करने के कि मैं बचूँगा कि नहीं बचूँगा, अपने बाप के कंधे पर बैठा हुआ और अपने बॉस के मास्टर के कंधे पर बैठा हुआ बेटे मैं पार हो गया। पार हो गया हूँ। मेरे मंत्र के चमत्कार, मेरी शक्ति के चमत्कार, मेरी उपासना के चमत्कार का आधार श्रद्धा ही है। श्रद्धा की शक्ति ही उपासना का बल है। जो मैं आपसे निवेदन कर रहा था। मैं आपसे पूछता हूँ कि आपने गायत्री उपासना की, लेकिन क्या आपने श्रद्धा की शक्ति को अनुभव किया ? श्रद्धा की शक्ति का' अगर अनुभव किया तो मैं फिर यह पूछता हूँ कि आपने क्या सिद्धान्त और आदर्श जो मानवीय आदर्श हैं, उनके प्रति चलने की हिम्मत इकट्ठी की ? मैं पूछता हूँ कि आदर्श आपसे यदि यह पूछे कि आप हमारे कंधे पर सवार हो जाइये। तब क्या आप सिद्धान्तों और आदर्शों के कंधों पर सवार होकर जोखिम उठाने को तैयार हैं। अगर आप तैयार हैं तो मैं साठ साल के अनुभव की साक्षी देकर के आपको ये कह सकता हूँ कि गायत्री मंत्र चमत्कारी है। गायत्री मंत्र सिद्धिदायक है। गायत्री मंत्र पारस है, गायत्री मंत्र अमृत है, गायत्री मंत्र कल्पवृक्ष है। जो इसके अन्दर विशेषताएँ बतायी गई थीं वे सौ फीसदी सही हैं। मैं अपने पुस्तकों के आधार पर नहीं, अपने निजी अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि सारे के सारे अनुभव सही हैं, पर शर्त एक ही है—इसके प्रति एक शब्द का पालन करना पड़ता है—उसका नाम है 'श्रद्धा' और श्रद्धा का अर्थ अन्धश्रद्धा नहीं है, किसी देवी-देवता अथवा गुरु के प्रति श्रद्धा नहीं है, बल्कि उसका अर्थ है—आदर्शों से असीम प्यार। अगर आप श्रेष्ठता से असीम प्यार करने के लिये हिम्मत कर सकते हो और अपनी उपासना के साथ श्रद्धा का समन्वय कर सकते हो तो मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि जो मंत्र मेरे प्रथम गुरु मालवीय जी ने बताया था और जो मेरे दूसरे गुरु ने बताया था वह सही है। एक ने मुझे कर्मकाण्ड सिखाये थे और एक ने मुझे भावनाओं का समन्वय सिखाया था। दोनों के समन्वय के आधार पर मैं अपने कर्मकाण्डों को सही तरीके से करता हुआ और उसमें जीवन के श्रद्धा के तत्त्वों का समावेश करता हुआ पार होता चला गया। आप हमारे पीछे-पीछे आइये, जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं और देखिये आध्यात्मिकता की शक्ति जो दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है। आध्यात्मिकता के लाभ दुनिया में सबसे बड़े लाभ हैं, आप उन सब लाभों को उठा सकते हैं कि नहीं ? बेटे मैंने उन लाभों को उठाया और मैं निहाल हो गया। मैं चाहता हूँ कि आप भी उन्हीं लाभों को उठाएँ मेरे तरीके से और आप भी निहाल हो जाएँ जैसे कि मैं निहाल हुआ। अपने अनुभवों

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

के निष्कर्षों की आज के दिन इतनी ही जानकारी देता हूँ और बातें जो रह जाती हैं, प्रज्ञा और निष्ठा, उनकी जानकारी आपको कल दूँगा। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति।

गायत्री उपासना का स्वरूप

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

यहाँ इस शिविर में आपको गायत्री जयन्ती के समय पर गायत्री साधना करने के लिये बुलाया गया है। इस समय आपको घूमने-फिरने के लिए नहीं, शुद्ध रूप से साधना करने के लिए हमने आपको निमन्त्रण दिया था। साधना करने के उद्देश्य से जो आये हैं, उनको ठहरना चाहिए। घूमने-फिरने के लिए हरिद्वार आना बहुत व्यर्थ ही रहता है। शुद्ध रूप से इच्छा होनी चाहिए। साधना किसकी, गायत्री की। गायत्री की साधना के सम्बन्ध में आपको क्यों बुलाना पड़ा ? इससे पहले भी हम आपको कई बार साधना करा चुके हैं, आपको बता चुके हैं, फिर क्या जरूरत पड़ गई इस साधना को सिखाने की—इस साधना को बताने की। मित्रो ! बहुत समय से हम आपको गायत्री उपासना का कर्मकाण्ड एवं क्रिया-कलाप समझाते रहे हैं कि पावन गायत्री मंत्र क्या होता है और गायत्री उपासना कैसे की जा सकती है ? कर्मकाण्ड तो कलेवर मात्र है। यह उपासना का शरीर मात्र है, जिसे अभी हमने आपको बताया।

शरीर किसे कहते हैं ? शरीर उसे कहते हैं जो दिखायी पड़ता है, जो देखा जा सकता है, जो अनुभव में लाया जा सकता है। हमारा शरीर आपके सामने बैठा हुआ है, कैसा है ? इसमें अँगुलियाँ हैं, हाथ हैं, नाक है, कान है, दाँत है, बाल हैं। इसे हम देखते हैं। छू भी सकते हैं इस शरीर को, लेकिन इसके भीतर एक ऐसी विशेषता छिपी हुई है, जिसे आप देख भी नहीं सकते और सुन भी नहीं सकते। केवल अपने गहन अनुभव के द्वारा ही इसको जाना जा सकता है। आपका प्राण कैसा है—बताइये। साहब, प्राण दिखायी तो नहीं पड़ता, कितना शक्तिशाली है मालूम नहीं पड़ता ? कितना ज्ञानवान है मालूम नहीं पड़ता, कितना चरित्रवान है मालूम नही पड़ता। आँखों से मालूम नहीं पड़ सकता, दिखायी नहीं पड़ सकता। केवल विचारणा के द्वारा आप यह जान सकते हैं कि आपके शरीर में कोई प्राण होगा। फिर आप उससे भी गहरायी में जानना चाहें तो यह जान सकते हैं कि आचार्य जी का प्राण कितना शक्तिशाली होगा, कितना सामर्थ्यवान, कितना महत्त्वपूर्ण होगा, कितना विकसित होगा ? आप ज्यादा खोजबीन करेंगे तो ही आपको यह मालूम पड़ेगा। ज्यादा खोजबीन नहीं करेंगे तो आपको केवल हमारा शरीर दिखायी पड़ेगा। आप यहाँ हमारा दर्शन करने के लिए आये हैं, अच्छा साहब क्या देख करके आये ? हमारा शरीर देखकर आये। तो क्या फायदा हुआ इससे ? कुछ भी फायदा नहीं हुआ। बूढ़ा आदमी था, बैठा हुआ था, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं, सफेद बाल वाला था। हमने देखा तो माला पहना दी। क्या फायदा कर लाया ? कोई फायदा नहीं हुआ।

वस्तुतः दर्शन करने, सुनने की चीज नहीं। असल में जो फायदा उठाना चाहते हैं, वह किससे मिल सकता है ? जीवात्मा के आशीर्वाद से। शरीर का कोई आशीर्वाद नहीं है। हमारा आशीर्वाद हमारी भावनाओं में जुड़ा हुआ है—हमारे स्नेह में जुड़ा हुआ है, हमारे सिद्धान्तों में जुड़ा हुआ है। हमारे मन से जुड़ा हुआ है। अगर स्नेह के साथ में तुम्हें कोई आशीर्वाद दें या परामर्श दे दें तो उसका कोई असर शरीर पर पड़ेगा क्या ? शरीर पर कोई असर नहीं पड़ सकता। गायत्री उपासना—गायत्री साधना का क्रियापरक कर्मकाण्ड की तुलना शरीर से—कलेवर से की जा सकती है। शरीर और चेतना दो भिन्न चीजें हैं। इससे शरीर का लाभ है क्या ? शरीर का भी लाभ है। हम क्या सेवा कर सकते हैं हाथ से ? हम आपके लिये पानी पिला सकते हैं, तेल मालिश कर सकते हैं, हजामत बना सकते हैं और क्या कर सकते हैं ? पैर दाब सकते हैं। हाथ-पाँव से यही सेवा कर सकते हैं, लेकिन हम अपने ज्ञान के द्वारा आपका काया-कल्प कर सकते हैं और अपनी ज्ञान की भावनाओं के द्वारा कोई आशीर्वाद देना चाहें तो आपके जीवन का विकास कर सकते हैं। शरीर की अपेक्षा प्राण बहुत बलवान् हैं। शरीर हमारा वैसे भी कमजोर है, छोटा-सा है। लेकिन प्राण की शक्ति असीमित हैं। इसी तरह गायत्री उपासना का कर्मकाण्डपरक क्रिया-कृत्य भी है। गायत्री साधना का यह कर्मकाण्ड आप लोगों ने बहुत समय से सीखा है और जाना है। एक खास बात मैं समझता हूँ कि इतना लाभ तो जरूर हुआ होगा कि मन की एकाग्रता हुई होगी। गायत्री उपासना आप बहुत दिनों से करते रहे हैं फिर क्या लाभ हुआ ? अपनी दशा अस्वस्थ हो तो प्रगति रुक गयी होगी उससे और क्या लाभ हुआ होगा और कोई खास लाभ तो नहीं हुआ होगा, क्योंकि आपकी उपासना क्रिया-कलाप तक सीमित थी, कलेवर तक सीमित थी। यह भजन था उसका, कलेवर था, शरीर था जो कि बहुत दिनों से आपको हम सिखाते हुए चले आ रहे थे। उसमें क्रियाएँ करनी होती थी। किससे ? शरीर से। अब तक आपने कलेवर सीखा होगा। उसमें क्रियाएँ करनी पड़ती थीं।

क्रियाएँ क्या करनी पड़ती थीं ? कैसी क्रियाएँ करनी पड़ती थीं ? शरीर से करनी पड़ती थीं जैसे माला घुमानी पड़ती थी, किससे घुमानी पड़ती थी ? हाथ की उँगलियों से घुमानी पड़ती थी। किसकी माला ? लकड़ी की। लकड़ी की माला चमड़े की अँगुलियों से घुमानी पड़ती थी। हेरा-फेरी उपासना की, जिसको हम भजन कहते हैं, कलेवर कहते हैं। अब तक जो आप उपासना करते रहे हैं, जिसको मुख से उच्चारण करना पड़ता था, जीभ से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उच्चारण करना पड़ता था, वह किस चीज की बनी है ? चमड़े की। चमड़े की जीभ क्या बोलती थी ? गायत्री मंत्र बोलती थी, 'ॐ नमः शिवाय' बोलती थी, राम-राम बोलती थी। अभी तक जो उपासना धूपबत्ती के माध्यम से, चन्दन के माध्यम से, अगरबत्ती के माध्यम से, चावल के माध्यम से आप पूजा-उपासना जो करते रहे हैं सब भजन था। इस भजन-उपासना का लाभ उतना ही बन सकता है, जितना कि हमारे शरीर और हमारे कान के बीच अन्तर है, वही अन्तर भजन और उपासना में है।

अब इस समय हम यह मान लेते हैं कि आपको पौराणिक कबूतर वाली कहानी की कोई जरूरत नहीं रही। अब आपको सुन्दरता का प्रोनाउन्सिएशन बताना चाहिए, उच्चारण बताना चाहिए। अब आपको बालकन की गोलियों की विशेष आवश्यकता नहीं रही। अब किण्डर गार्डन के माध्यम से आपको अक्षरों का लिखना बताया जाएगा। हम समझते हैं कि आप रोज तो क्या, जिन्दगी भर किण्डर गार्डन के द्वारा अक्षर सीखते रहें। अब हमें आपको अक्षर सिखाना चाहिए, आपको लिखना सिखाना चाहिए, अब हमें आपको बोलना सिखाना चाहिए। अब हमें आपको उच्चस्तरीय शिक्षा देनी चाहिए। दूसरी बातें बतानी चाहिए, ताकि उसका वास्तविक लाभ उठा सकें। अब वास्तविक लाभ उठाने के लिए हमने आपको इस शिविर में बुलाया है। वह उपासना जो आदमी को समर्थ बना सकती है, वह उपासना जो आदमी को शक्तिवान बना सकती है, वह उपासना जो आदमी को सिद्धपुरुष बना सकती है, वह उपासना जो इस भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही जीवनों में आदमी को उठाकर कहीं से कहीं ले जा सकती है। उसका मूल, उसका प्राण हम आपको सिखाएँ, यही उद्देश्य है इस शिविर का। यह गायत्री का प्राण, साधना का प्राण है। चलिए हमारे साथ-साथ गहराई में डुबकी लगाइए ताकि आपको गायत्री की बावत अब तक जो जानकारी है, उसकी अपेक्षा अधिक जानकारी मिले।

साधना का अर्थ कर्मकाण्ड मात्र पूरा कर लेना नहीं है और न ही गायत्री कोई देवी है। नहीं साहब, वह देवी होती है जो हंस पर सवारी करती है, जो फर्र से इस पेड़ पर से उस पेड़ पर चली जाती है, फिर उस पेड़ पर से उस पेड़ पर चली जाती है। आप जानते हैं गायत्री कहाँ रहती है ? हाँ, महाराज जी आपने समझाकर तो भेजा है। एक हाथ में पानी का कमण्डलु लेती है। बेटे, हाथ में पानी का थरमस लेकर चलती है ? पानी का गिलास छोड़ जाएगी तो कैसे काम चलेगा ? एक हाथ में किताब लेती है। कौन-सी किताब लेकर चलती है ? अखण्ड-ज्योति की किताब लेती है, दूसरी किताब नहीं लेती है। नावेल पढ़ने के लिए नहीं है। रास्ते में किताब नहीं पढ़ेगी तो बेचारी को कैसे याद होगा ? और सवारी ? कौन-सी सवारी करती है ? रिक्शा, साइकिल की जरूरत नहीं है, मोटर की जरूरत नहीं है। गायत्री जाती है तो हंस पर सवार होकर जाती है। मोटर पैट्रोल खर्च करा लेती है, बहुत सारा खर्चा करा लेती है। गायत्री माता ने मोटर दूसरी तरह की खोज ली है। वह हवाई जहाज का भी काम कर सकती है और जमीन पर भी चल सकती है। किसकी सवारी है ? वह हंस की है, वह सिर्फ हंस पर सवारी करती है। पैट्रोल भी नहीं खाता है। ड्राइवर भी नहीं है। लगाम, लगाम भी नहीं है। गायत्री माता कह देती है भाई चल हरिद्वार की तरफ, तो चल देता है। गायत्री बड़ी विचित्र है, छोटी-सी गायत्री है, ऐसी गायत्री है जैसी तुम बच्चों की होनी चाहिए। रानी गायत्री की पूजा और भजन कैसा है ? वैसा ही जैसा कि बाराती गाते हैं, फूल चढ़ा देते हैं, चावल चढ़ा देते हैं, अक्षत चढ़ा देते हैं। गायत्री मंत्र बोल लेते हैं। यह क्यों है ? बेटे ! बालकों की गायत्री है, बालकों की साधना है। अब हम आपको जवानों की, दार्शनिकों की, विचारशीलों की गायत्री समझाना चाहेंगे, अब मैं आपको साहसियों की, विचारशीलों की, तपस्वियों की साधना सिखाना चाहूँगा। मैं समझता हूँ कि अब आप बच्चे नहीं रहे, वरन् जवान हो गए हैं, इसलिए जवानों से जवानों की-सी बात कहनी चाहिए। बच्चों को बच्चों की-सी बात कहनी चाहिए। जवानों को गायत्री की शिक्षा क्या है ? भाइयो ! मैं क्या कह सकता हूँ आपसे गायत्री की कितनी शिक्षाएँ हैं ? आज मैं पहले यही बताना चाहूँगा आपको कि गायत्री की क्या शिक्षाएँ और प्रेरणाएँ हैं। फिर गायत्री उपासना और साधना के रहस्य समझाऊँगा। यह सारे के सारे रहस्य इस शिविर में बताते हुए चला जाऊँगा, जिसके लिए मैंने आपको बुलाया है।

अलंकार की दृष्टि से ऋषियों ने बड़े महत्त्वपूर्ण विषयों को समझाने की कोशिश की है। सारे आर्ष-ग्रंथों, अठारह पुराणों के मैंने भाष्य किए हैं। पुराणों को लोग इतिहास मान बैठते हैं और फिर यह कहते हैं कि पुराणों में गप्पें लिखी हैं। लेकिन बेटे पंचतन्त्र की किताबों में भी गप्पें लिख रही हैं जैसे कौवे से लोमड़ी ने कहा—अरे भाईसाहब ! गाना गा दीजिए। अच्छा तो मैं गाना गाता हूँ—रोटी का टुकड़ा मुँह में से गिरा और लोमड़ी लेकर के भाग गई। क्यों साहब, लोमड़ी की बातचीत कौवा सुन सकता है ? नहीं। तो क्या कौवे की बातचीत लोमड़ी समझ सकती है ? नहीं साहब ! तो फिर इन कहानियों में ये क्या झूठ लिखा है ? नहीं बेटे ! ये झूठ नहीं है। बालकों को आकर्षक ढंग से, पहेली के ढंग से, प्रिय बुजुर्गों के ढंग से उनको महत्त्वपूर्ण बात समझा देती है तो क्या हर्ज है। उसमें मनोरंजन भी रहता है आकर्षण भी रहता है। इसी तरह का शिक्षण है। पुराणों में कोई क्या समझे ? पुराणों में विचित्र कहानियाँ हैं। कहानियों के माध्यम से लोगों को शिक्षण देने की कोशिश की है। बताने की कोशिश की है। बड़े महत्त्वपूर्ण विषयों को, जो साधारणतः समझ में नहीं आती है, कठिन विषयों, जटिल विषयों, फिलॉसफी को समझाने के लिए कथानकों का माध्यम लिया गया है, जो मैं आपको सुना चुका हूँ, इसका क्या अर्थ होता है। आत्मबल, आत्मशक्ति संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। इसे प्राप्त करने के लिए गायत्री का, ऋतंभरा-प्रज्ञा का अवलम्बन लेना होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री का ही दूसरा नाम ऋतंभरा-प्रज्ञा है। ऋतंभरा-प्रज्ञा—इसका नाम गायत्री है। कितनी शिक्षाएँ इसमें हैं ? यह भी काम कर सकती है। एक काम यह कर सकती है कि जो पाप, ताप, शोक और सन्ताप, कष्ट और अभाव जो हमारे जीवन में हैं, उन्हें यह उसी तरह सींगों से मारकर भगा सकती है जैसे कि विश्वामित्र और उनकी सेना को, जो गुरु वशिष्ठ को हैरान करने और नन्दिनी को हैरान करनें के लिए आए थे, तो नन्दिनी ने उनको मार गिराया और सफाया कर दिया था। इसी तरीके से अपने जीवन की मौलिक कठिनाइयाँ और बाधाएँ जो हमको रास्ते पर चलने में रुकावट डालती हैं, उन सारी की सारी कठिनाइयों को, हमारी भ्रामक मनःस्थितियों को, भ्रामक यश-लिप्सा कों ऋतंभरा-प्रज्ञा मारकर भगा सकती है। इस कहानी का यही अर्थ है कि यह मनुष्य की भौतिक और आत्मिक सफलताओं का द्वार खोल सकती है। हालाँकि आध्यात्मिक शक्ति, आन्तरिक शक्ति हमारे पास है। अकल की शक्ति का चमत्कार तो आपने देखा ही है। अकल आपके पास हो तो अच्छी नौकरी मिलेगी। कहाँ तक पढ़े हैं ? मैट्रिक पास हैं। अच्छा साहब, दो सौ रुपया तनख्वाह मिलेगी। आप क्या पास हैं ? बी. ए. पास हैं, तो आपको साढ़े तीन सौ रुपये तनख्वाह मिलेगी। एम. ए. पास हैं तो पाँच सौ रुपये से आपकी स्टार्ट करेंगे। पी-एच. डी. हैं तो जिस तरह से आपकी जानकारी होगी, उसी तरह से आपको पैसा मिलता जाएगा। यदि आप कमजोर हैं तो आपको एक रुपया रोज मिलेगा। पहलवान हैं, वजन ढोने वाले हैं तो चले जाइए ढकेल पर और पल्लेदारी कीजिए, बाइस रुपया रोज देंगे। अंकल की ताकत देखी है आपने ? हाँ देखी है। धन की ताकत देखी है ? बैंक में रुपया जमा कर दीजिए, ब्याज पर ब्याज मिलता चला जाएगा। यह तो हुई धन की ताकत। अब आप आध्यात्मिकता की ताकत को देखेंगे, जो दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है। इसके मुकाबले में दुनिया के पर्दे पर कोई नहीं हैं, क्योंकि ये चेतना की ताकत है। जड़ की ताकत सीमित है। जड़ क्या है ? जड़ हमारा शरीर है। जड़ क्या है ? जड़ हमारा पैसा है। जड़ क्या है ? जड़ हमारा व्यापार है। दिमाग भी हमारा जड़ पदार्थ का बना है, जिसे ज्ञानेन्द्रिय कहा जाता है, ये भी जड़ है। पदार्थ की सीमा है। पैसे की शक्ति, बुद्धि की शक्ति सब शक्तियाँ जड़ हैं। जड़ के द्वारा जो फायदा मिल सकता है, चेतना के द्वारा उससे हजारों गुना ज्यादा फायदा हो सकता है। लाखों गुना ज्यादा फायदा हो सकता है। चेतना की शक्ति अगर हमारे पास हो जिसे हम ब्रह्मबल कहते हैं और आत्मबल कहते हैं तो फिर उसका कहना ही क्या ?

मित्रो ! मैं कहानी का अर्थ समझाना चाहूँगा आपको, ताकि गायत्री की परिभाषा आपकी समझ में आ जाए कि गायत्री क्या हो सकती है ? गायत्री ऋतंभरा-प्रज्ञा का नाम है। एक कहानी सावित्री और सत्यवान की है। एक लड़की बड़ी रूपवती, बड़ी कुलवती, बड़ी सुन्दर, ऐसी सुन्दर कि ख्याति संसारभर में फैल गयी। सभी राजकुमार उसे देखकर यही कहते कि यह तो बड़ी सुन्दर राजकुमारी है। यदि यह हमको मिल जाती तो अच्छा होता। लड़की के पिता के सामने सभी राजकुमार हाथ पसारने लगे और कहने लगे कि इसे हमको दीजिए। लड़की ने अपने पिता से कहा कि हमको अपनी मर्जी का दूल्हा चुनने दीजिए। अच्छा तो आप चुन लें। ठीक है, रथ पर सवार होकर सेना को साथ लेकर सावित्री रवाना हुई। रवाना होते-होते वह सारे देशों के राजकुमारों से मिली और यह पता लगाया कि हमारे लिए कोई दूल्हा है क्या ? कोई भी दूल्हा उसको पसन्द नहीं आया। जंगल में एक दिन निकलकर जा रही थी सावित्री रथ समेत। उसने एक लड़के को देखा। वह एक लकड़हारा था। लकड़हारा बड़ा तेजस्वी मालूम पड़ता था और चेहरे पर उसके यशस्विता भी टपक रही थी। दृढ़ निश्चय भी टपक रहा था। सावित्री ने उसको रोका और पूछा लकड़हारे तुम कौन हो और कैसे हो ? उसने कहा—लकड़हारा तो इस समय पर हूँ, पर पहले लकड़हारा नहीं था। हमारे माता-पिता अन्धे हो गए हैं। यहाँ जंगल में आकर तप करते हैं, उन्हीं की रक्षा करने के लिए हमने यह आवश्यक समझा कि उनको भोजन कराने से लेकर के सेवा करने तक के लिए हमको कुछ काम करना चाहिए और जिम्मेदारी को निभाना चाहिए। इस जंगल में और तो कोई पेशा है नहीं, लकड़ी काटकर ले जाते हैं और गाँव में बेच देते हैं, पैसे लाते हैं और उनका सामान खरीदकर लाते हैं। माता-पिता को रोटी खिलाते हैं, सेवा करते हैं। आपने अपने भविष्य के बारे में क्या सोचा है ? भविष्य के बारे में क्या ? शादी नहीं करना चाहते ? अभी हमारे माता-पिता का कर्ज हमारे ऊपर रखा हुआ है, अभी हम शादी कैसे कर सकते हैं ? सावित्री ने कहा—तुम कुछ और नहीं कर सकते क्या ? पैसा नहीं कमा सकते ? पैसा कमा करके हम क्या करेंगे ? कर्तव्यों का वजन हमारे ऊपर रखा है। पहले कर्तव्यों का वजन तो कम कर लें, तब सम्पत्तिवान बनने की बात सोची जाएगी या शादी करने की बात देखी जाएगी। अपनी सुविधा की बात बहुत पीछे की है। पहले तो वह करेंगे जो हमारे ऊपर कर्ज के रूप में विद्यमान है, इसीलिए माता-पिता, जिन्होंने हमारे शरीर का पालन किया, पहला काम उनकी सेवा का करेंगे, इसके बाद और बातों को देखेंगे। पढ़ना होगा तो पीछे पढ़ेंगे। नौकरी करनी होगी तो पीछे करेंगे या शादी करनी होगी तो पीछे करेंगे। अभी तो हमको कर्ज चुकाना है, माता-पिता की सेवा करनी है।

लकड़हारे की बात सुनकर राजकुमारी रुक गई। अब वह विचार करने लगी कि बाहर से ये लकड़हारा है, लेकिन भीतर से कितना शानदार है ? कितना शानदार इसका कलेजा, कितना शानदार इसका दिल, कितना शानदार इसकी जीवात्मा ? इसने अपने सुख और भौतिक सुविधाओं को लात मार दी और अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता दी। यह बड़ा जबरदस्त है। लकड़हारा है तो क्या हुआ ? लकड़हारे से सावित्री ने कहा कि हम तो दूल्हा तलाश करने चले थे, पर अब हम आप से ब्याह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करेंगे। अब हम आपको ही माला पहनाना चाहते हैं। वह हँसा, उसने कहा—हमको अपने पेट का तो गुजारा करना ही मुश्किल पड़ता है फिर तुम्हारा गुजारा कैसे कर सकते हैं ? उसने कहा हम पेट पालने के लिए आपकी सहायता माँगने के लिए नहीं आए ? आपकी सहायता करने के लिए आए हैं। हमारा बाप बहुत बड़ा मालदार है, हमारे पास बहुत सारा पैसा है। हम आपकी सेवा कर सकते हैं ? यह सुनकर राजकुमार बोला—नारद जी बता गए थे कि एक साल बाद हमारी मृत्यु होने वाली है। सावित्री ने कहा कि—हमारे पास इतनी विशेषता है कि हम आपकी जान बचा सकते हैं। हम आपको सम्पन्न बना सकते हैं। आपको यशस्वी बना सकते हैं ? हम आपको सब कुछ उपलब्ध करा सकते हैं। हम बड़े मालदार हैं। सावित्री ने गले में माला पहना दी। क्या आपने सावित्री सत्यवान की कहानी पढ़ी है ? पढ़ी होगी तो जानते होंगे कि फिर क्या हुआ था ? राजकुमारी से बिवाह करने के बाद सत्यवान के जीवन में एक वक्त ऐसा भी आया था जब यमराज आए थे और सत्यवान का प्राण निकालकर ले गए थे। तब सावित्री ने कहा था-नहीं, यमराज बड़े नहीं हो सकते। हम बड़े हैं। आखिर सावित्री ने यमराज से अपने पति का प्राण छीन लिया था। आपने सुना है या नहीं सुना है। हमें नहीं मालूम पर, यह एक कहानी है, जो गायत्री का प्राण, गायत्री की जीवात्मा, गायत्री की वास्तविकता और गायत्री की फिलॉसफी है। आप इस फिलॉसफी की गहराई में जाइए। समुद्र के किनारे-किनारे द्वीपों में घोंघे पड़े होते हैं। गहरी डुबकी मारिए और मोती ढूँढ़कर लाइए। नहीं साहब ! मोती किनारे पर बिखरे होते हैं। हम तो किनारे पर डुबकी मारेंगे और मोती मिल जाएगा। बेटे ऐसा नहीं होता। किनारे पर मोती कैसे मिल जाएगा ? ठीक इसी तरह किनारे पर बैठकर गायत्री का भजन करेंगे तो उससे क्या मिलेगा ? यह तो किनारे बैठकर किनारे का भजन है। अरे डुबकी मार करके गायत्री के भजन की वास्तविक स्थिति ढूँढ़कर के ला। जहाँ से लोग शक्तिवान बन जाते हैं। सिद्धपुरुष बन जाते हैं। चमत्कारी बन जाते हैं। वहाँ तक डुबकी मार। वहाँ तक डुबकी नहीं मारेगा, किनारे तक बैठा रहेगा और नजर घुमाता रहेगा तो बेटे, सीप मिल सकती है, घोंघे मिल सकते हैं, समुद्र के किनारे। समुद्र दिखाई दे सकता है। झाग मिल सकता है, पर कीमती चीज नहीं मिल सकती। यह कहानी यही कहती है।

सावित्री किसे कहते हैं ? सावित्री बेटे गायत्री का ही दूसरा नाम है और सत्यवान ? सत्यवान उसे कहते हैं, जिस साधक ने अपना जीवन समय के लिए, सिद्धान्तों के लिए अर्थात् आदर्शों के लिए समर्पित किया है, उस आदमी का नाम है सत्यवान। सावित्री-गायत्री के लिए यह आवश्यक है कि उसका भक्त सत्यवान हो अर्थात् सिद्धान्तवादी हो। आदर्शवादी हो। उत्कृष्ट चिन्तन में लगा हो। कर्तव्यों में लगा हुआ हो ! इस तरह का अगर कोई व्यक्ति है तो उसे गायत्री का साधक कह सकते हैं। साहब, हम भी तो साधक हैं दिन भर चोरी-चकारी करते हैं, सारी जिन्दगी इसी में व्यतीत करते हैं और सबेरे एक घण्टा वक्त मिल जाता है तो माला लेकर बैठ जाते हैं। बेटे, वह साधना नहीं, उसका मखौल है। इसी तरह कितने लोग पूछते रहते हैं कि चंदन की माला अच्छी होती है कि रुद्राक्ष की। अरे बेटे चंदन से क्या मतलब है या रुद्राक्ष से क्या मतलब है ? अपने हृदय की बात कहते हैं, अन्तरात्मा की बात कहते हैं। चन्दन में क्या रखा है और रुद्राक्ष में क्या रखा है ? बेटा, तू समझता ही नहीं, अभी साधना के लिए पकड़ना पड़ेगा चेतना का स्तर, जहाँ शक्तियाँ निवास करती हैं, जहाँ भगवान निवास करते हैं, जहाँ आस्थाएँ निवास करती हैं। उस स्थान का नाम, उस स्तर कर नाम वह भूमि है, जिसे दिव्यलोक कहते हैं। जहाँ गायत्री माँ निवास करती हैं। चेतना निवास करती है, जिसको हमने ऋतंभरा-प्रज्ञा कहा है। चलिए हमें ऋतंभरा-प्रज्ञा ही कहने दीजिये। ऋतम्भरा-प्रज्ञा क्या है ? वह प्रज्ञा, वह धारणा, वह निष्ठा—जो आदमी को ऊँचा उठा देती है। ऊँचा उछाल देती है जिसकी प्रेरणा से आदमी ऊँची बातों पर विचार करता है और नीची बातों से ऊँचा उठता चला जाता है, उसे ऋतंभरा-प्रज्ञा कहते हैं। प्रज्ञावान के सामने आदर्श रहते हैं, ऊँचाई रहती है। छोटी-छोटी चीजों को—जिनमें कीड़े-मकोड़े लगे रहते हैं, कीड़े-मकोड़े समझता रहता है। चलिए मनुष्य कह देता हूँ। मनुष्यों की शक्ल होते हुए भी आप कीड़े-मकोड़े हो सकते हैं। हम कीड़े-मकोड़े उन्हें कहते हैं, जिनके उद्देश्य दो होते हैं। एक तो पेट पालना और दूसरा काम-वासना को पूरा करना। जानवर सिर्फ दो काम के अलावा तीसरा कोई विचार नहीं करते। पेट की भूख उनकी जब जबरदस्ती धक्का मारती है तो खाना तलाश करने के लिए चल देते हैं। घास खाने के लिए चल देते हैं। पेट भरने के लिए चल देते हैं। शिकार करने के लिए चल देते हैं। पेट की पुकार, पेट की आवश्यकता को पूरा करने के लिए जो आदमी काम करता रहता है, जो भी प्राणी काम करता रहता है, उसका नाम है कीड़ा, उसका नाम है मकोड़ा, उसका नाम है-पशु-पक्षी। इसका उद्देश्य केवल पेट भरना है। पैसे इकट्ठा करना है। पैसा और पेट भरना एक ही बात है। छोटे कीड़े पेट भरकर चुप हो जाते हैं। शहद की मक्खी समझदार है, इसलिए अपने छत्ते में जमा कर लेती है। चीटीं जरा-सी समझदार है, इसलिए अपने बिल में जमा कर लेती है। आदमी जरा कुछ ज्यादा समझदार है, इसलिए बैंक में जमा कर लेता है। जमीन में गाड़ लेता है। फर्क कुछ नहीं है। वह आदमी कीड़ा-मकोड़ा है, पशु और पक्षी है। उसका भी लक्ष्य केवल पेट पालना और औलाद पैदा करना है। बस एक सीमा में ही वह रहना पसन्द करता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मित्रो ! कीड़ा-मकोड़ा वह जिसे कुछ बात ध्यान में नहीं आती, बस पेट भरने जैसा एक फितूर आदमी के दिमाग में हावी होता है। दूसरों पर भी हावी होता है। कीड़े-मकोड़ों पर भी। कीड़े-मकोड़ों में मादा पर हावी होता है, पीछे नर उसका हिमायत करता रहता है, उसकी आवश्यकता पूरी करता है। कीड़े-मकोड़ों में नर ने कभी आज तक किसी मादा को नहीं छेड़ा। छेड़ा होगा तो मादा ने। उसी ने हुकुम दिया होगा। मादा ने इच्छा प्रकट की होगी तो नर ने उसकी सेवा कर दी होगी, बस। लेकिन सृष्टि का ये नियम है कभी कोई नर, कभी कोई जानवर चाहे जितने भी जाति-प्रजाति से क्यों न हों, सभी में यही नियम लागू होता है। बकरियों के झुण्ड में आप चले जाइये। एक बकरे को देखिए। बकरा चुपचाप कान लटकाये चल रहा होगा। बकरियाँ सौ होंगी, पर क्या मजाल कि बकरा किसी को आँख उठाकर देख ले, किसी की तरफ किसी को तंग कर दे। वह बकरी को कभी छेड़ेगा नहीं। बकरी का समय जब आ जाएगा और वह इशारा करेगी तो बकरा सेवा भी करेगा, लेकिन मनुष्य ? मनुष्य की वह मर्यादाएँ भी चली गईं। जानवर दो काम करते हैं—तीसरा कोई काम नहीं। जब उन पर खुराफात सवार होती है। काम-वासना के सम्बन्ध में दिमागी खुराफात पैदा होती है तो वे कामसेवन कर लेते हैं। बच्चे पैदा कर लेते हैं। बस यही दो काम हैं, उनको तीसरा कोई काम नहीं है। आज का इनसान भी पशु है, कीड़ा-मकोड़ा है, उसके सामने भी जीवन का कोई लक्ष्य नहीं, केवल दो ही लक्ष्य हैं। सारा समय, सारा श्रम, सारी शक्ति, सारी अकल, सारी सत्ता उसी काम में खर्च हो जाती है। किसमें ? पेट भरने में और बच्चे पैदा करने में और शादी-ब्याह करने में। काम-वासना के ख्वाब देखने और सपने देखने में। बेटे ! इनका नाम पशु और कीड़े ही हो सकता है, आदमी नहीं हो सकता।

बेटे ! ऋतंभरा-प्रज्ञा किसको कहते हैं ? ऋतंभरा-प्रज्ञा उसे कहते हैं जो आदमी को उछाल देती है ऊपर की तरफ। ऊँचे जाने वाली चीजों को कभी आपने देखा होगा। हवाई जहाज में हमने बहुत सारे सफर किए हैं। हवाई जहाज के सफर में हमने देखा तो नीचे जमीन की चीजें बहुत छोटी-छोटी जान पड़ीं। हमने हवाई जहाज में से चलती हुई रेलगाड़ियाँ देखीं। रेंगते हुए मनुष्यों को देखा। छोटे-छोटे मेढकों की तरीके से जानवरों को देखा, जरा-जरा से फुदकने वाले जानवरों की तरीके से-वे ऊपर से नन्हें-नन्हें दिखाई पड़ते थे। खेत देखे, गन्ने के खेत ऐसे मालूम पड़ते थे जैसे जरा-जरा से घास-फूँस हों और मित्रो ! हमने तालाब देखे, झीलें देखीं, नदियाँ देखीं, एक लकीर की तरीके से पानी की बहती हुई जरा-जरा सी झीलें। आदमी जब उछल जाता है ऊपर की तरफ, तो उसमें दो बातें हो जाती हैं। एक तो यह कि जितना दायरा दिखाई पड़ता था, पहले मान लीजिए यहाँ से इतनी लम्बी-चौड़ी जगह दिखाई पड़ती है, अब हम अगर किसी टीले पर खड़े हो जाएँ तो हमें टीले पर से चार मील दायरा दिखाई पड़ेगा। हवाई जहाज पर जब आप चले जाएँगे तो आपको ढाई सौ मील की लम्बाई-चौड़ाई का दायरा दिखाई पड़ेगा। ऊँचे उठे हुए व्यक्ति का दायरा बड़ा हो जाता है और विचार करने का, देखने का और सोचने का स्तर ऊँचा उठ जाता है, तब जबकि ऋतंभरा-प्रज्ञा जग जाती है। ऐसे व्यक्ति के लिए वे सभी वस्तुएँ, चीजें बिल्कुल नाचीज हैं, जिनकी जीवन में कुछ खास अहमियत नहीं है। आदमी की दैनिक जीवन की जरूरतें बिल्कुल थोड़ी-सी हैं, नगण्य-सी हैं। पेट भरने को जरा-सा मुट्ठी भर अनाज चाहिए, तन ढकने को मुट्ठी भर कपड़ा चाहिए और रहने को जरा-सी जगह चाहिए। आदमी की जरूरतें इतनी कम हैं कि छह फुट लम्बे आदमी का पेट आसानी से भरा जा सकता है और आदमी खुशी की जिन्दगी जी सकता है, पर आदमी जिस बेअक्ली की वजह से, जिस बेवकूफी की बजह से सारी जिन्दगी दुखों में व्यतीत कर देता है, कष्टों में व्यतीत कर देता है, चिन्ताओं में व्यतीत कर देता है, हाहाकार में व्यतीत कर देता है। रोते-झींकते व्यतीत कर देता है, वह बेटे, नासमझी है। इस नासमझी पर विजय प्राप्त करने वाली जो हमारी मनःस्थिति है, उसका नाम है ऋतंभरा-प्रज्ञा। जीवन का लक्ष्य क्या हो सकता है ? जीवन में शान्ति कहाँ से आ सकती है ? जीवन की दबी हुई सामर्थ्यों को हम कैसे विकसित कर सकते हैं ? ये हमारी मूर्च्छित सामर्थ्य है, शोचनीय सामर्थ्य है, गयी-गुजरी सामर्थ्य है, लेकिन इससे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण जो सामर्थ्य है, उनको विकसित करने के लिए क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए, ये समझ और ये अकल जहाँ से आती है उसका नाम ऋतंभरा-प्रज्ञा है।

गायत्री किसका नाम है ? ऋतंभरा-प्रज्ञा का। गायत्री किसे कहते हैं ? ऋतंभरा-प्रज्ञा को। गायत्री कोई देवी नहीं होती, कोई देवता नहीं होता। ऋतम्भरा-प्रज्ञा का ही नाम गायत्री है। वास्तव में अगर यही ऋतम्भरा-प्रज्ञा हमारे ऊपर प्रसन्न हो जाए तो हमको मालदार कर सकती है। सावित्री और सत्यवान की तरीके से। अगर वही गायत्री जिसको हमने ऋतम्भरा-प्रज्ञा के नाम से कहा है, हम पर प्रसन्न हो जाए तो हमको गुरु वशिष्ठ बना सकती है, विश्वामित्र बना सकती है और हम विश्वामित्र के तरीके से राज-पाट को भी ठोकर मार दें और ऋतम्भरा-प्रज्ञा को प्राप्त करने के लिए कोशिश करें।

मित्रो ! केवल नारी के ही भीतर जाने से काम चलने वाला नहीं है और भी आगे बढ़ें। इसके लिए क्या करें ? **"मातृवत् परदारेषु", "लोष्ठवत् परद्रव्येषु", "आत्मवत् सर्वभूतेषु।"** ये तीन आधार हैं, ये तीन कसौटियाँ हैं, जिनके ऊपर कसा जा सकता है कि आप फल प्राप्त करने के अधिकारी भी हैं कि नहीं और आत्मबल आपको मिल भी सकता है कि नहीं। आत्मबल आप सँभाल भी सकते हैं कि नहीं और आत्मबल की जिम्मेदारी वहन करने के लायक आपके भीतर कलेजा और हिम्मत है भी कि नहीं। ये बेटे तीन परीक्षाएँ हैं। ये तीन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पेपर हैं पी. एम. टी. के। मैडिकल कॉलेज में भर्ती होने के लिए तीन पेपर दीजिए। नहीं साहब, हम पेपर नहीं देना चाहते। हम तो धक्का मारकर मेडिकल कॉलेज में घुसना चाहते हैं। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। इम्तिहान दीजिए पास होजिए। पी. एम. टी. में डिवीजन लाइए और हम आपको दाखिल कर लेंगे। नहीं साहब, धक्का-मुक्की चलेगी। हम तो धक्के मारेंगे और धक्के मारकर सबसे आगे निकल जाएँगे। बेटे, पहले रेलवे स्टेशनों पर ऐसा होता था हमारे जमाने में। जो धक्के मारता था वो सबसे आगे चला जाता था। टिकट वही ले आता था। बाकी रह जाते थे। अब तो 'क्यू सिस्टम' हो गया हैं ना। आप कमजोर हैं ना। सबसे पीछे खड़े हो जाइए। नहीं साहब, वह पीछे वाला पहलवान खड़ा हुआ है। हटाइए उनको, नम्बर से खड़ा होना पड़ेगा। जो धक्के मारेगा वह आगे चला जाएगा। यह सब पुराने जमाने में चलता था और धक्के मारने वाला टिकट ले आता था, पर अब धक्केशाही चलती नहीं। साहब हम तो धक्के मारेंगे, काहे में धक्के मारेंगे ? भगवान जी को धक्के मारेंगे और सबसे पहले वरदान ले आएँगे। धक्केशाही नहीं चलेगी अब, लाइन में खड़ा हो, 'क्यू' में खड़ा हो और अपनी जगह साबित कर और अपनी हैसियत साबित कर और वह वरदान ले आ, ताकत ले आ।

गायत्री मन्त्र क्या हो सकता है, यह मैं आपको समझा रहा था। यह समझा रहा था कि गायत्री की कृपा और गायत्री का अनुग्रह हर आदमी को नहीं मिल सकता। माला घुमाने से नहीं मिल सकता। माला घुमाने से मिला होता तो आप में से हर एक को मिल गया होता। आप गायत्री मन्त्र की माला कब से घुमा रहे हैं ? अरे साहब, बहुत दिन हो गए। आपको छह वर्ष, आपको ग्यारह वर्ष, आपको तीस वर्ष हो गये, पर आपको क्या मिला ? महाराज जी, बस यही मिला है कि नाक कट गयी तो कह दिया कि नाक की ओट में भगवान छिपा हुआ है, अब कट गयी तो भगवान दिखने लगा है। बस इसी तरह ग्यारह माला जप करते हुए हमें २२ वर्ष हो गए और हम यूँ कहें कि हमें कुछ फायदा नहीं होता तो सब लोग यही कहेंगे कि अरे तू बड़ा पागल है, तूने काहे को नाक कटा ली। इसीलिये हम तो यही कहते रहते हैं हर एक से कि गायत्री माता अभी है, हमको प्रत्यक्ष तो नहीं दिखाई पड़ती पर रात को सपने में दिखाई पड़ती है। सपने में दिखाई पड़ती है तो क्या लेकर आती है तेरे लिए ? नहीं महाराज जी, लेकर तो कुछ नहीं आती मेरे लिए, वैसे ही खाली हाथ आ जाती है। धत् तेरे की। अबकी गायत्री माता मिलेगी तो खूब गालियाँ सुनाऊँगा। हमारे यहाँ तो कुछ लेकर आए हो। हाँ महाराज जी, देखिए हम तो केला लेकर आए। हाँ बेटा, खाली हाथ साधु के यहाँ नहीं आते। केला लेकर जरूर आना चाहिए और तू लेकर भी आया था। जब हम किसी के घर जाते हैं तो बच्चों और छोटों को देख लेते हैं। बच्चे घर में हैं क्या ? टॉफी लेकर के जाते हैं। लेमनचूस लेकर के जाते हैं। कुछ लेकर के जाते हैं। गुरु जी आए हैं, प्रसाद लेकर के आए हैं। मथुरा-वृन्दावन का प्रसाद लेकर के आए हैं। बेटे, कुछ लेकर के जाते हैं ? खाली हाथ नहीं जाते। रात में सपने में हनुमान जी तेरे लिए कुछ लेकर के आते हैं। नहीं महाराज जी, खाली हाथ आते हैं। धत् तेरे की। अब मुझे मिलेगा तो मैं गाली सुनाऊँगा हनुमान जी को। कहूँगा तू मेरे बेटे के यहाँ गया था और सपने में दिखाई पड़ा, पर तुझसे यह भी नहीं बन पड़ा कि पाँच सौ रुपयों के नोटों की गड्डी तो दे जाता। नहीं महाराज जी, वह तो कभी नहीं दे गए। धन्य हैं तेरे सपने के हनुमान जी। बेटे ! सपने का हनुमान कोई चीज नहीं दे सकता।

मैं यह चाहता था कि अब गायत्री की शिक्षा, गायत्री की वास्तविकता आपको बताऊँ। कलेवर सिखाने के बाद में वह बात सिखाऊँ जहाँ से गायत्री के चमत्कार, गायत्री की सिद्धियाँ, गायत्री का गौरव छिपा हुआ है। बेटा यह सब वहाँ छिपा हुआ है, जिसको हम ऋतम्भरा-प्रज्ञा कहते हैं। वास्तव में गायत्री का अर्थ आज ऋतम्भरा-प्रज्ञा करना पड़ेगा। ऋतम्भरा-प्रज्ञा कैसी होती है ? बेटे ! ऐसी होती है ऋतम्भरा-प्रज्ञा जिसको जो कोई भी आदमी अपने काम में लाएगा उसको कई तरीके अख्तियार करने पड़ेंगे। गायत्री का वाहन हंस है। गायत्री किस पर सवार होगी ? हंस पर सवार होगी और किस पर सवार होगी ? कौवे पर। नहीं महाराज जी, कौवे पर नहीं हो सकती गायत्री, हंस पर सवार होती है। हंस किसे कहते हैं ? हंस एक प्रतीक है। तू समझता क्यों नहीं है। अरे ये प्रतीक हैं। हंस पर गायत्री नहीं बैठ सकती। हंस पर कैसे बैठ सकती है, हंस तो जरा-सा होता है और गायत्री कितनी बड़ी होती है बता और इतनी बड़ी गायत्री हंस पर बैठेगी तो क्या हो जाएगा बेचारे का ? बेचारे का कचूमर निकल जाएगा। हंस पर क्या करेगी बैठकर ? गायत्री को बैठना होगा तो मोटर मँगा देंगे, हैलीकॉप्टर मँगा देंगे। हवाई जहाज दिला देंगे। गायत्री माँ को जाना होगा तो बेचारे गरीब हंस पर क्या बैठना होगा ? हंस पर नहीं, उस पर तो पैर समेटने को भी जगह नहीं है, पालथी मारकर भी नहीं बैठ सकती। जैसे चेयर होती है, पैर पसारने की वैसी भी जगह नहीं है उस पर टाँग को समेटकर बैठे तो भी उस पर नहीं बैठ सकती। अतः वह हंस पर क्या बैठेगी ? हंस की आफत आयेगी। फिर क्या है हंस ? हंस बेटे ! वह व्यक्ति है जिसकी दृष्टि ऋतम्भरा-प्रज्ञा के अनुकूल है। ऋतम्भरा-प्रज्ञा कैसी होती है, जैसे हंस की होती है। हंस की कैसी होती है ? हंस कीड़े नहीं खाता। वह मोती खाता है अर्थात् जो मुनासिब है, जो ठीक है, जो उचित है, उसको करेगा, पर जो गैर मुनासिब है, अनुचित है उसके बगैर काम नहीं चलेगा तो मर जाएगा, भूखा रह लेगा, चाहे मरना ही क्यों न पड़े, पर न तो कुछ अनुचित करेगा और न अभक्ष्य खायेगा। वह सोच लेगा कि न खाने से क्या आफत आ जाएगी। अच्छा साहब मरेंगे, पर गलत काम नहीं करेंगे। ऐसी क्रिया का नाम है—सफेद स्वच्छ-निर्मल हंस। हंस उस व्यक्ति का नाम है जो नीर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और क्षीर का भेद करना जानता है। पानी और दूध को मिलाकर दीजिए। नहीं साहब पानी हमें नहीं लेना है। हमको दूध लेना है। दूध को फाड़कर अलग कर देगा। पानी को फेंक देगा और दूध को ले लेगा। यहाँ भी वही स्थिति है। हंस केवल उचित को ही ग्रहण करता है, अनुचित को नहीं ग्रहण करता। ऋतम्भरा-प्रज्ञा उसी चीज का नाम है। इसे ही जाग्रत करने के लिए हम आपको गायत्री की साधना कराते हैं।

मित्रो ! साधना-उपासना का प्राण है—समर्पण। बस समर्पण कर लीजिए, फिर देखिये ऐसे ही मारा-मारी की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैं पहले ही कहे देता हूँ कि माला मत फिरा समर्पण करना सीख। बेटा ऐसा कर, इसमें बाँस की बाँसुरी की तरह अपने को खाली कर दे। फिर देख मजा आ जाएगा। नहीं गुरु जी आप तो कर्मकाण्ड बता दीजिये, क्रिया-कृत्य बता दीजिए। बेटे अभी हम इसी कलेवर की बात कह रहे थे, लेकिन बेटे कलेवर ही सब कुछ नहीं है। प्राण को भी समझ। प्राण किसे कहते हैं ? प्राण उसे कहते हैं जिसमें हमें अपनी चेतना का परिमार्जन करना पड़ता है और चेतना को साफ करना पड़ता है। चेतना की जो गलतियाँ हैं, चेतना की जो भूलें हैं, चेतना में जो दोष हैं, चेतना के ऊपर जो भ्रम, आवरण और मल-विक्षेप चढ़े हुए हैं, उनको हमें धोना पड़ता है, साफ करना पड़ता है और ऐसी रगड़ाई करनी पड़ती है जैसे कि जंग खाए हुए लोहे के बर्तन को साफ करने के लिए—चमकाने के लिए ऐसे रगड़ना पड़ता है, कभी जूट से रगड़ते हैं तो कभी ईंट से रगड़ते हैं, कभी बालू से रगड़ते हैं। बार-बार रगड़ते हैं, नहीं साफ होता है तो फिर रगड़ते हैं और जब तक जंग साफ नहीं हो जाती है, जब तक चमकने नहीं लगता, तब तक रगड़ते ही रहते हैं। अपनी अन्तर्चेतना पर भी जो मल, आवरण और दोष के तीनों आवरण चढ़े हुए हैं इनको साफ करने के लिए जो हमको मेहनत करनी पड़ती है, मशक्कत करनी पड़ती है, लड़ाई लड़नी पड़ती है, सख्ती बरतनी पड़ती है, उसको साधना कहते हैं। 'मन साधे सब सधे' यही साधना का स्वरूप है।

मैं अब आपको समझाने की कोशिश करूँगा कि साधना का स्वरूप क्या हो सकता है ? असली साधना क्या है ? नकली की तो मैं क्या कहूँगा आपसे। असली साधना कैसे की जाती है ? यह बताता हूँ आपको। असली साधना करता है किसान। किसके साथ—जमीन के साथ। जमीन के साथ में क्या काम करता है ? बेटे ! धूप में खड़ा रहता है। रगड़ता रहता है, खोदता रहता है, गोड़ता रहता है। साल भर तक अपना शरीर और अपना पसीना इस मिट्टी में मिला देता है। ठीक सालभर बाद इस मिट्टी में पसीना मिलाने के बाद में क्या करता है ? फसल पैदा होती है। अनाज पैदा होता है और मालदार हो जाता है। अपने आपके साथ में करेगा रगड़ तो गेहूँ का खेत जिस तरीके से फसल देने लगता है, उसी तरीके से हमारी परिष्कृत चेतना फसल दे सकती है और मैं बताऊँ ? अभी मैं बताता हूँ कि उपासना कैसे की जाती है ? उपासना ऐसे की जाती है जैसे कि अपने शरीर को पहलवान अभ्यास द्वारा मजबूत बना लेता है। कमजोर वाला आदमी जब शरीर के साथ मशक्कत करना शुरू कर देता है और उस पर चढ़े मुलम्मों को दूर करना शुरू कर देता है, निग्रह करना शुरू कर देता है और अपने आहार-विहार को नियमित बनाना शुरू कर देता है तो बेटे वह चंदगी राम पहलवान हो जाता है। टी. बी. की शिकायत उसकी दूर हो जाती है और, वह मजबूत हो जाता है। साधना करने से। शरीर की साधना यदि आप करें तो बीमार होते हुए भी चंदगीराम पहलवान की तरीके से २२ वर्ष की उम्र में टी. बी. के मरीज होते हुए भी आप अपनी इसी जिन्दगी में पहलवान बन सकते हैं, अगर आप शरीर की साधना करना चाहें तब। साधना किसे कहते हैं ? अभी तो मैं बता चुका हूँ कि साधना मलाई को कहते हैं और रगड़ाई को कहते हैं। जैसे किसान अपने शरीर की और मिट्टी की मलाई करता है और रगड़ाई करता है। शरीर के साथ में मलाई कीजिए और आप पहलवान बन जाइए। यह तो हुई साधना शरीर की। आप अपनी अकल और दिमाग के साथ में रगड़ शुरू कीजिए, मलाई कीजिए, घिसाई कीजिए और देखिए कि आपका दिमाग गया-गुजरा होते हुए भी—घटिया होते हुए भी, बेअकल होते हुए भी, आप कालिदास की तरीके से पहलवान बनते हैं कि नहीं बनते। आप पहलवान बन सकते हैं, कालिदास के तरीके से। रस्सी को पत्थर पर हम बार-बार घिसते हैं तो निशान बन जाता है। बेटे हमारी रगड़ इतनी जबरदस्त है कि अगर हम अपनी भोंड़ी अकल के साथ भी रगड़ करना शुरू कर दें तो हम विद्वान बन सकते हैं। राजा के तरीके से और कालिदास की तरीके से। अगर हम रगड़ करना शुरू कर दें तो प्रगति के किसी भी क्षेत्र में हमारे पास सिद्धियाँ आ सकती हैं और चमत्कार आ सकते हैं।

अकल की बाबत हमने कहा और शरीर की बाबत हमने कहा। लीजिए अब पैसे की बाबत बताते हैं। बाटा नाम का एक मोची था, बारह वर्ष की उम्र में जिसकी माता जी का देहान्त हो गया था, पिता जी का देहान्त हो गया था। जूतें सीना सड़क पर उसने शुरू किया। लेकिन इस विश्वास के साथ शुरू किया कि जूते की मरम्मत के साथ सिद्धान्त जुड़े हुए हैं और हमारा प्रत्यक्ष प्राण जुड़ा हुआ है, प्रेस्टिज प्वाइंट जुड़ा हुआ है कि जूता ऐसा न बन जाए कहीं कि कोई आदमी हमसे ये कहे कि ये जूता घटिया बनाकर के दे दिया। वाहियात बना करके दे दिया। जो भी काम हाथ में लिया तो उसे प्रेस्टिज प्वाइंट मानकर लिया, कि अपने हाथ से की हुई मरम्मत कहीं ऐसी न हो जाए कि आदमी कहे कि किस बेवकूफ ने मरम्मत की है ? सारी अकल खर्च कर दी फिर भी उसने सही मरम्मत नहीं की। कई आदमियों ने उसकी प्रशंसा की और कहा कि अरे मरम्मत करने वाला तो सबसे अच्छा लड़का वह है, जो नीम के दरख्त के नीचे बैठा रहता है। वह बारह साल का लड़का है, उससे बीसियों आदमियों ने मरम्मत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कराई और उसने ऐसी बढ़िया मरम्मत की कि लोग बाग-बाग हो गए। उसने पुराने जूतों को नया बना दिया। लोगों ने बहुत मरम्मतें कराईं। लड़का बड़ा हो गया, लोगों ने कहा बाटा क्या तू यह कर सकता है कि हमारे लिए अच्छे नये जूते बना दे ? नए जूते मैं कहाँ से बना सकता हूँ। मेरे पास चमड़ा भी नहीं है, सामान भी नहीं है, दरांती भी नहीं है, चीजें भी नहीं हैं। अगर यह मुझे मिल जाता तो मैं बना देता। लोगों ने कहा अच्छा दरांती हम देंगे, तू बना दिया कर। लोगों ने सामान लाकर के दिया। बाटा ने जूता बना दिया। जो जूते छह महीने चला करते थे वे एक साल चले, लोगों ने अपने परिचितों से कहना शुरू किया कि अच्छे जूते पहनने हैं, मुलायम जूते पहनने हैं तो आप बाटा की दुकान पर चले जाइए और इस तरह बाटा की दुकान चलते-चलते एक शानदार जगह पर जा पहुँची, जहाँ आज सारे हिन्दुस्तान में ही नहीं, वरन् विश्व भर में बाटा का जूता प्रसिद्ध हो गया। कहीं भी आप चले जाइये, देहात में चले जाइए, मैं भी तो एक बार अमेरिका गया वहाँ भी हर जगह वही बाटा का जूता देखने को मिला। हिन्दुस्तान में भी वही, वहाँ भी वही बाटा। सब जगह वही। अफ्रीका के गाँव में भी मुझे बाटा की दुकान मिली। न केवल हिन्दुस्तान बल्कि अफ्रीका में भी छाया हुआ था बाटा। मैं देखकर के आया हूँ। बाटा एक करोड़पति, उद्योगपति का नाम है।

मित्रो ! कहाँ से आता है पैसा ? कहीं से नहीं आता। पैसा रगड़ से, मेहनत से आता है। रगड़ता चले जा। रगड़ता तो है ही नहीं। शरीर को बचाए-बचाए फिरता है। काम से बचता-फिरता है, दूर-दूर रहता है। हरामखोर और कामचोर। कहता है हमको पैसा नहीं मिलता। हमारी उन्नति नहीं होती आर्थिक उन्नति नहीं होती। न तो योग्यता बढ़ाता है ? न श्रम में विश्वास करता है। न श्रम के साथ मनोयोग लगाता है। श्रम के साथ मन तो लगाता नहीं है। मनोयोग लगा। शरीर से बेकार धौकनी के तरीके से, कोल्हू के बैल के तरीके से उल्टा-सुल्टा काम करके फेंक दिया। योग्यता बढ़ाता ही नहीं है। बाटा के जमाने में योग्यता थी। नौवें दर्जे तक पढ़ा हुआ है। अभी भी विदेशों में चमार, धोबी, मोची और भटियारे रात को दो घंटे नाइट स्कूलों में पढ़ने के लिये जाते रहते हैं और जिन्दगी गुजरने तक एम. ए. कर लेते हैं और पी. एच. डी. बन जाते हैं और आपको फुरसत ही नहीं मिलती है। हरामखोरी और कामचोरी में समय बर्बाद करते रहते हैं। न योग्यता बढ़ाते हैं, न अपनी सामर्थ्य बढ़ाते हैं, न क्षमता बढ़ाते हैं, न मेहनत में दिलचस्पी लेते हैं, न मेहनत में मन लगाते हैं। ताकत घटिया कामों, बेकार कामों से नहीं मिलती। क्या हाल हो रहा है, भीतर वाली कमजोरी निकलती नहीं, योग्यता बढ़ती नहीं, तो उन्नति कैसे होगी ? भीतर वाले को योग्यता के रूप में विकसित करना होगा। मन से काम करना सीखना होगा, मशक्कत से काम करना सीखना होगा और बेटे मैं किसके सम्बन्ध में बताऊँ ? धन के सम्बन्ध से लेकर तू प्रतिभा, प्रतिष्ठा तक कहीं भी चला जा। परिश्रम करने वाले को ही सफलता मिलती है।

साधना के साथ में भी परिश्रम जुड़ा हुआ है। सच्ची साधना करता है वैज्ञानिक। छोटे वाले दर्जे के साथ में बड़ा वैज्ञानिक बड़ी मेहनत करता है और ताकतवर एटमबम बना देता है। यदि वह फट जाए तो सैकड़ों मील का सफाया कर दे। यह ताकत कहाँ से आती है ? एटम में से आती है ? एटम में से नहीं आती है, बेटे, साधना से आती है। साधना से ताकत को उभारा, ताकत को निखारा और ताकत को काम में लाया—ताकत को इस्तेमाल किया जाता है। ताकत को तो निखारता है नहीं, उभारता है नहीं, फिर सिद्धियाँ कहाँ से आएँ ? साधना किस चीज का नाम है ? साधना बेटे, इस चीज का नाम है जिसमें हम अपनी भीतर वाली क्षमता कां, भीतर वाली चेतना का विकास करते हैं और उसको उभारते हुए चले जाते हैं, विकसित करते हुए चले जाते हैं। चेतना का तो आप मूल्य भी नहीं समझते, मैं क्या करूँ ? चेतना का तो आप मूल्य भी नहीं पहचानते, आप तो बाहर ही बाहर तलाश करते हैं। इस देवी के सामने नाक रगड़ते हैं। उस देवता के सामने नाक रगड़ते हैं। इस मन्त्र के सामने नाक रगड़ते हैं, उस गुरु के सामने नाक रगड़ते हैं। इस पड़ोसी के सामने नाक रगड़ते हैं, उस अफसर के सामने नाक रगड़ते हैं, उस बॉस के सामने नाक रगड़ते हैं। आपको तो नाक रगड़ने की विद्या आ गई है। किसी की खुशामदें कीजिए, किसी की चापलूसी कीजिए, किसी के हाथ जोड़िए और वहाँ से काम बनाकर लाइए। बेटे, किसी के सामने चापलूसी करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि हमारे भीतर सामर्थ्य का स्रोत भरा पड़ा है, सामर्थ्य की शक्ति भरी पड़ी है। उसको उभारने में हम समर्थ हो सकें, उसे काम में लाने में समर्थ हो सकें, तो मजा आ जाए हमारी जिन्दगी में। हमारी जिन्दगी में क्या-क्या होता है ? हमारी भीतर वाली शक्ति कितनी है ? बेटे, यह समझो कि सारे सौरमंडल में जितनी ताकत और जो ढर्रा है वह सब ढंग और ढर्रा छोटे-से एटम के भीतर भरा पड़ा है। वृक्ष जो है, उसका पूरा रूप छोटे-से बीज के भीतर दबा पड़ा है। छोटे-से बीज के भीतर में पत्तियाँ और टहनी, फल और फूल सबका नक्शा, सबका खाका, सबका आधार इस बीज के अन्दर भरा पड़ा है। इसी तरह ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है, हमारे पिण्ड में दबा पड़ा है और भगवान में जो कुछ भी है हमारी जीवात्मा में दबा पड़ा है। भगवान के सारे के सारे ब्रह्माण्ड में जो शक्तियाँ और ताकतें हैं, वे सब बीज रूप में हमारे भीतर विद्यमान हैं। बीज को हम बोएँ, उगाएँ, बढ़ाएँ, खिलाएँ-पिलाएँ तो उससे पूरा का पूरा बरगद पेड़ खड़ा हो सकता है। साधना इसी का नाम है। बीज को विकसित करके बरगद कैसे बनाया जा सकता है ? साधना उसी प्रक्रिया का नाम है। साधना और कुछ नहीं है ? अपनी जीवात्मा को—अपनी अन्तर्चेतना को विकसित करते-करते हम महात्मा एक, देवात्मा दो और परमात्मा तीन, यहाँ तक जा पहुँचते हैं। इसे प्रायमरी स्कूल,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट और कॉलेज की पढ़ाई समझ सकते हैं। यही है आत्मा से परमात्मा तक विकसित होने की प्रक्रिया।

महात्मा, देवात्मा और परमात्मा और कुछ नहीं अपने आपे का विकास-विस्तार है। अपने आपका विकास ही साधना है और कुछ नहीं है। साधना और कोई करके देता है क्या ? नहीं कोई नहीं देता, हम अपने आपका विकास स्वयं करते हैं, अपने आपका निखार स्वयं करते हैं। आत्मशक्ति को आपने देखा नहीं। इंजन कितना बड़ा होता है ? इंजन साहब छह लाख रुपये का आता है। लेकिन ड्राइवर २५० रुपये का आता है। ड्राइवर घसीटता है इन्जन को। उसने कहा—खड़ा हो जा, इंजन खड़ा हो जाता है और हवाई जहाज। हवाई जहाज को चलाता कौन है ? हवाई जहाज कितने का आता है ? पाँच करोड़ रुपये का। कौन चलाता है ? बेटे ! पायलट चलाता है। पायलट नहीं होगा तो हवाई जहाज रखा रहेगा। मशीनें कितनी बड़ी क्यों न हों, ऑटोमैटिक क्यों न हों, कम्प्यूटराइज्ड क्यों न हों, लेकिन आदमी के बिना नहीं चल सकतीं। चेतना का मूल्य, चेतना की शक्ति कितनी बड़ी हो सकती है ? चेतना की शक्ति इतनी बड़ी है, जिसको उभारने की प्रक्रिया हम आपको सिखाते हैं, गायत्री मन्त्र के माध्यम से। चेतना, जो आपकी सो गई है, जो खो गई है, चेतना जो आपकी मर गयी है, जिसको आपने गँवा दिया है। जिस चेतना का आपने महत्त्व नहीं समझा। उस चेतना को हम आपको उभारना सिखाते हैं। गायत्री साधना उसी का नाम है। चेतना हमारी कितनी ताकतवर है ? यह हमारी भौतिक और चेतना दोनों क्षेत्रों का मुकाबला करने में सक्षम है। इसका मैं उदाहरण देना चाहूँगा। ये पृथ्वी कितनी बड़ी है ? साहब बहुत बड़ी है। पृथ्वी का वजन कितना है ? अरे साहब क्या कहने पृथ्वी का। बहुत वजन है और पृथ्वी की चाल ? पृथ्वी की चाल साहब १ घंटे में छह हजार मील है। बहुत बड़ी है ना। हाँ बहुत बड़ी है पृथ्वी। जहाँ इसका उत्तरी ध्रुव है वहाँ अगर एक इनसान का बच्चा चला जाए जहाँ पृथ्वी का 'बैलेंसिंग प्वाइंट' है और उस जगह पर एक बच्चा घूँसा मार दे खींचकर तो पृथ्वी अपनी नींव पर से डगमगा जाएगी। वह जिस कक्षा में घूमती है, उस कक्षा में न घूम करके अगर घूमना बन्द कर दे अथवा कोई और कक्षा बना ले तो हो सकता है कि वह बड़ी बना ले। हो सकता है ये कक्षा बहुत छोटी हो जाए। बच्चे का घूँसा लगे तो सम्भव है यह पृथ्वी भागती हुई चली जाए और ग्रह से टकरा जाए। मान लीजिए मंगल ग्रह में टक्कर मार दे और मंगल ग्रह का चूरा हो जाए और हमारी पृथ्वी का भी चूरा हो जाए तब यह हो सकता है कि बड़े दिन होने लगें। ३६५ दिन की अपेक्षा सम्भव है २०-२० दिनों का एक वर्ष हो जाए। सम्भव है २४ घंटों की अपेक्षा ६ घंटे का दिन हो जाए अथवा छह हजार घंटे का दिन हो जाए। कुछ पता नहीं कुछ भी हो सकता है। एक बच्चे की चपत खा कर—घूँसा खाकर। चेतना के सामने जड़ तो कुछ भी नहीं है। चेतना, जिसको आप भूल गए ? चेतना जिसको आपने समझा ही नहीं ? चेतना जिसका आप मूल्य ही नहीं समझते ? चेतना जिसका विकास ही नहीं करना चाहते ? यही है गायत्री साधना का उद्देश्य कि आप अपनी चेतना को परिष्कृत करें, समर्थ बनाएँ।

चेतना कितनी सामर्थ्यवान है ? बेटे, चेतना की सामर्थ्य दिखाने के लिए मैं आपको बीस लाख वर्ष पहले ले जाना चाहूँगा, जबकि पृथ्वी छोटे-छोटे जंगली जीवों और जानवरों से भरी पड़ी थी और इस पृथ्वी पर ऊबड़-खाबड़ गड्ढे जैसे चन्द्रमा पर सब जगह गड्ढे-टीले दीखते हैं, उसी तरह पृथ्वी पर हर जगह गड्ढे-टीले थे। ऊबड़-खाबड़ बड़ी कुरूप पृथ्वी थी और उसमें बहुत भयंकर जानवर घूमा करते थे। इसमें बाद में क्या कुछ परिवर्तन हुए ? यह आदमी की अकल और आदमी की चेतना है, जिसने सारी की सारी पृथ्वी को कैसा बना दिया है ? कहीं ताजमहल बने हुए हैं, कहीं पार्क बने हुए हैं, हजारों एकड़ जमीन समतल बनी हुई है। किसी जमाने में झाड़-झंखाड़ थे अब पता नहीं क्या से क्या हो गया। चम्बल जहाँ डाकुओं के रहने की जगह थी, देखना थोड़े दिनों बाद क्या हो जाता है ? बेटे, वहाँ बगीचे लहलहाते हुए दिखाई पड़ेंगे, कितनी फसलें उगती हुई दिखाई पड़ेंगी। धान पैदा होता हुआ दिखाई पड़ेगा और वहाँ गाँव और शहर बसे हुए दिखाई पड़ेंगे। आदमी की अकल, आदमी की चेतना की सामर्थ्य का क्या कहना ?

प्राणी जब पैदा हुआ था, तब आदिमानव के रूप में था, बन्दर के रूप में था। चेतना ने आवश्यकता समझी कि तुम्हें काम करना चाहिए और हमारे हाथों की अँगुलियाँ बन्दर की अपेक्षा ये दसों अँगुलियाँ ऐसी बेहतरीन अँगुलियाँ बन गयीं कि दुनिया में किसी के पास नहीं हैं, जैसी हमारे पास हैं। ऐसा बेहतरीन हाथ दुनिया में और किसी के पास नहीं है, जो यहाँ से भी मुड़ता हो वहाँ से भी मुड़ता हो। जो हर जगह से मुड़ जाता हो। ऐसा किसी जानवर का हाथ नहीं है। कहीं नहीं है। यह सब कैसे हो गया ? हमारी इच्छाशक्ति ने पैदा किया। सारी चीजें पैदा कर दीं। सारे के सारे चमत्कार ये चेतना के हैं, जमीन की सफाई से लेकर सभ्यता, संस्कृति और वाहन और विज्ञान सब किसका है ? ये आदमी की चेतना का चमत्कार है न, तू समझता क्यों नहीं है ? चेतना को अगर सँवारा जा सके, चेतना को अगर सँजोया जा सके तो आदमी क्या हो सकता है ? हम नहीं कह सकते कि आदमी क्या हो सकता है ? कहते हैं कि आदमी और भगवान एक हो सकते हैं। आदमी इतना विकसित हो सकता है जितना भगवान। चेतना का परिष्कार—चेतना का सुधार-इसी का नाम साधना है। जो चीजें ऊबड़-खाबड़ हैं, बेतुकी हैं, उन्हें ठीक तरीके से ठीक बना देने का नाम साधना है।

साथियो ! मैं आपको एक बात बताना चाहूँगा कि मनुष्य जीवन कैसा ऊबड़-खाबड़, बेघड़, कुसंस्कारी है। हमारा जीवन कैसा संस्कारविहीन, दिशाविहीन, लक्ष्यविहीन, क्रियाविहीन, अनुशासनविहीन और अस्त-व्यस्त है। इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चीजों को अगर ठीक तरीके से बना लिया जाए, विचारणाओं को अगर ठीक तरीके से बना लिया जाए, भावनाओं को ठीक तरीके से बना लिया जाए, क्रिया शक्ति को ठीक तरीके से बना लिया जाए तो मित्रो ! हम कैसे सुन्दर हो सकते हैं ? हम कैसे सुघड़ हो सकते हैं ? मैं आपको क्या बताऊँगा ? मैं तो एक ही शब्द में कह सकता हूँ कि अगर आपने चमत्कार वाली बात सुनी हो, लाभ वाली बात सुनी हो, वरदान वाली बात सुनी हो, आशीर्वाद वाली बात सुनी हो, वैभव वाली बात सुनी हो अध्यात्म की महत्ता वाली बात सुनी हो। अकल की बात सुनी हो। अध्यात्म की कभी कोई गरिमा आपने कभी सुनी हो। वरदान और आशीर्वाद वाली बात आपने सुनी हो तो समझना कि ये सारी की सारी विशेषताएँ जो बताई जा रही हैं, ये आदमी की अन्तर्चेतना के विकसित स्वरूप की बताई जा रही हैं और किसी की नहीं बताई जा रही हैं। देवी की बताई जा रही हैं तो चलिए देवी क्या हो सकती है ? यह बताता हूँ आपको। हमारी अन्तर्चेतना के अलावा कोई देवी नहीं है। हमारी अन्तर्चेतना जब विकसित होती तो कैसी हो जाती है ? ऐसी हो जाती है जिसको सिद्धि कहते हैं, जिसको हमको सँभालना और सँजोना आता है, इसे जीवन में हम संस्कृति कहते हैं। सभ्यता कहते हैं। जीवन में साधना इसी को कहते हैं। नाई क्या करता है ? नाई हमारी हजामत बना देता है और हमें ऐसा बना देता है जैसे मूँछें अभी निकलीं ही नहीं। यह मिरैकिल है, जादू है हजामत बनाने वाले का। हमको खूबसूरत बनाने वाले का। दर्जी, जो हमारे फटे-पुराने से कपड़े थे, उनका कुर्ता, बना देता है। जॉकेट-बना देता है। अरे बेटे, यह कपड़ा तो वही है ढाई गज जो सबेरे पड़ा हुआ था अब कैसा सुन्दर बना हुआ है कमाल है। यहाँ भी बटन यहाँ भी कच्चा। यहाँ भी गोट। यहाँ भी बाजू। देख ले ये किसका कमाल है ? दर्जी का कमाल है। अभी कैसा था कपड़ा ? मैला-कुचैला। उल्टा-सीधा सीम बँटी हुई थी। नील लग करके आ गई। टिनोपाल लग करके आ गया। ये क्या चीज है। ये चमत्कार है। ये साधना है। कपड़े की साधना किसकी है ? ये धोबी की साधना है। मूर्तिकार की साधना है ? पत्थर का एक टुकड़ा नाचीज-सा छैनी और हथौड़े को लेकर के मूर्तिकार जा बैठा और घिसने लगा, ठोकने लगा, घिसने और रगड़ने लगा। दो चार दिन के पीछे ऐसी बढ़िया लक्ष्मी की मूर्ति बन गई कि मालूम नहीं पड़ा कि यह वही पत्थर का टुकड़ा है कि लक्ष्मी जी हैं। बेटे ये क्या है ? ये साधना है और क्या है ?

अभी आपको मैं साधना का महत्त्व बता रहा था। ये घटिया वाली जिन्दगी, बेकार जिन्दगी, पत्थर जैसी जिन्दगी को आप बढ़िया और शानदार बना सकते हैं। सोने का एक टुकड़ा ले जाइए साहब ! अरे हम क्या करेंगे ? कहीं गिर पड़ेगा। अच्छा तो अभी हम आते हैं। उसका क्या बना दिया ? ये कान का बुन्दा बना दिया। ये अँगूठी बना दी। मीना लगी हुई। अरे, साहब बहुत सुन्दर बन गया है यह। क्या यह वही टुकड़ा है ? हाँ यह सुनार का कमाल है। सुनार की साधना है। उसने खाबड़-खूबड़ धातु के टुकड़े की कैसी सुन्दर अँगूठी बना दी, कैसा जेवर बना दिया ? कैसा नाक का जेवर बना दिया। कैसा-कैसा जेवर बना दिया। ये हमारी जिन्दगी ? बेतुकी जिन्दगी-बेसिलसिले की जिन्दगी ? बेतुकी जिन्दगी। बेहूदी जिन्दगी को हम जिस तरह से सँभाल पाते हैं ? साधना इसका नाम है। असल में साधना इसी का नाम है। वह जो हमने अभ्यास कराया था, शुरू में कि आपको तमीज सिखाएँ और तहजीब सिखाएँ। कौन-सी ? कल मैं इसको बताऊँगा कि पालथी मारकर बैठें। अरे तमीज से सीख। कभी ठीक काम करता है, कभी अकल के काम करता है कभी नहीं करता है। कमर ऐसी करके बैठना। हाँ साहब, ऐसे ही करके बैठूँगा। मटक नहीं, सीधे बैठ। मचक-मचक करता है। मित्रो ! ये सारे के सारे अनुशासन, सारी की सारी डिसीप्लीन यह आज का विषय नहीं है। यह मेरा कल का विषय है। इसे कल बताऊँगा आपको जो भी आपको साधना के बहिरंग क्रिया-कलाप सिखाते हैं, आखिर क्या उद्देश्य है इनका ? क्रिया का कोई उद्देश्य होना चाहिए। क्यों साहब, पालथी मारकर क्यों बैठते हैं ? पद्मासन में क्यों बैठते हैं, हम तो ऐसे ही बैठेंगे टाँग पसारकर। नहीं, बेटे, टाँग पसारकर मत बैठिये। नहीं साहब हम तो टाँग लम्बी करेंगे, इसको छोटी करेंगे। नहीं बेटे, ये भी गलत है। नहीं हम तो यूँ माला जप करेंगे। सिर के नीचे तकिये लगाकर। नहीं बेटे, ऐसे मत करना। ये ठीक नहीं है। यह क्या है-डिसीप्लीन है। साधना के माध्यम से हम अपने व्यावहारिक जीवन को किस तरीके से अनुशासित रूप दे सकते हैं, किस तरीके से उसे ढाल सकते हैं ? किस तरीके से अपने कर्म को, अपने विचारों को। अपनी इच्छाओं को, आस्थाओं को परिष्कृत एवं अनुशासनबद्ध कर सकते हैं, क्रमबद्ध कर सकते हैं। असल में साधना इसी का नाम है।

स्वर्णकार के तरीके से, कलाकार के तरीके से, गायक के तरीके से और वादक के तरीके से जो अपने को साध लेता है, उसे ही सच्चा साधक कहा जाता है। उसकी ही सही रागिनी निकलती है। सुर निकलता है। कैसे निकलता है ? बा ऽऽऽ। अरे बेटे ये क्या बोलता है ? यूँ मत बोल, तो फिर कैसे बोलूँ ? तू ऐसे बोल जैसे कि भैरवी रागिनी गायी जाती है। गुरु जी सिखाइये। बेटा तू आ जाना हमारे पास हम तुझे सिखायेंगे स रे ग म—सा रे गा .म प सिखा देंगे। तब तू ऐसे बोलना जैसे कोयल बोलने लगती है, जैसे मोर। अभी तू जैसे चिल्ला रहा था इसे सुर नहीं कहते। बेटे, ऐसे फिर मत बोलना। सुर को, गले को इस तरीके से साध कि ऐसी मीठी-मीठी आवाज आए कि बस मजा आ जाए और ये धागे और तार जो सितार में तार बँधे हुए हैं, उन्हें हिला, इसे भन् भन् भन् भन् मक्खी की तरीके से नहीं हम जैसे बताएँ उस तरीके से बजा। इस तार के बाद उसे बजा। इसके बाद इसे बजा फिर देख किस तरीके से इसमें से कैसी-कैसी सुरलहरी निकलती है, तरंगे निकल सकती हैं ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कैसी-कैसी ध्वनि निकल सकती है ? जिन पर तू थिरकने लगेगा और नाचने लगेगा तो महाराज जी यह कैसे बजेगा ? बेटे यह एक साधना है। किसकी ? धागों की, तारों की। यह किसकी है साधना ? गले की। यह है साधना पत्थर की। ये किसकी है साधना ? हर चीज की है। सोने की साधना, मुख की साधना और जीवन की साधना कि जीवन कैसे जिया जा सकता है ? जीवन कैसे उद्यमशील बनाया जा सकता है ? जीवन कैसे देवोपम बनाया जा सकता है ? जीवन की अस्त-व्यस्तता का उदारीकरण कैसे किया जा सकता है ? जीवन ठीक तरीके से कैसे जिया जा सकता है ? अगर ठीक तरीके से आप यह जान पाएँ तो बेटे आप धन्य हो सकते हैं, सब कुछ हो सकते हैं। आप बाहर का ख्याल निकाल दीजिए।

अब तक आप सोचते थे कि यह सब आप बाहर से पायेंगे। आपका ख्याल था कि बाहर बहुत सारी चीजें होती हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप ये सोच अपने मन से निकाल दीजिए। जो चीज बाहर दिखाई पड़ती है वास्तव में वह भीतर से ही आती है। बाहर तो उसकी खुशबू बिखरती हुई चली जाती है। जैसे—कस्तूरी हिरण की नाभि में होती है, परन्तु उसे यह मालूम पड़ता है कि हवा में से पूरब से वह आती है। पश्चिम से आ रही है। बेटे, सुगंध कहीं बाहर से नहीं आती ? भीतर से निकलती है। भीतर से क्या आती है ? महक। अच्छा साहब यह बताइए कि शहद की मक्खियाँ जो शहद इकट्ठा करती हैं वह शहद कहाँ से आता है ? फूल के भीतर से आता है। चलिए हम आपको फूल देते हैं, आप इसमें से शहद निकाल दीजिए; आप नहीं निकाल सकते तो इसे अपने कैमिस्ट के पास ले जाइए, किसी लैबोरेट्री में ले जाइए और उनसे कहिए कि गुरु जी ने भेजे हैं ये फूल और इसमें से आप शहद निकाल दीजिए। कोई नहीं निकाल सकता। मधुमक्खी के मुँह में जो केमिकल्स होते हैं वे फूल के रस को अपने ढंग से इस तरीके से डाइल्यूट करते हैं, इस तरह से कन्वर्ट करते हैं कि वे सारे के सारे रस शहद बन जाते हैं। इस तरह शहद कहाँ से आता है ? मक्खी के भीतर से आता है। नहीं साहब, बाहर से आता है फूलों में से। नहीं, फूलों में से नहीं आता है मात्र सहायता मिलती है फूलों से। दूध कहाँ से आता है, साहब ? गाय का दूध कहाँ से आता है ? घास में से आता है। अच्छा आप ले जाइए घास, मैं आपको बीस किलो घास देता हूँ इसमें से निकाल लाइए दूध। अरे ! महाराज जी इसमें तो नहीं है। इसमें नहीं है तो कहाँ से आ गया दूध ? कहीं से नहीं आ गया। गाय के भीतर जो केमिकल्स हैं, गाय के भीतर जो पदार्थ हैं वे घास को इस तरीके से कन्वर्ट करते हैं कि वह दूध के रूप में परिणत हो जाते हैं। गाय के पेट की जो मशीन है वास्तव में वह गाय के दूध की मशीन है। नहीं साहब, घास में दूध होता है, बिनौले में दूध होता है, खली में दूध होता है। नहीं बेटे, न बिनौले में दूध होता है, न खली में और न ही खली की बजह से गाय ज्यादा दूध पैदा कर लेती है, लेकिन असल में जो दूध पैदा करता है, वह इसका सिस्टम पैदा करता है। बाहर से कुछ नहीं आता। नहीं साहब, दूध बाहर से आता है। नहीं बाहर से नहीं आता। चर्बी कहाँ से आती है सूअर में ? साहब, उसको मक्खन खाने को दिया जाता है। सूअर को कौन मक्खन खाने को देगा ? सूअर को मक्खन खाते देखा है। कोई खिलाता है। कोई नहीं खिलाता कहाँ से आ जाता है ? गंदा मैला होता है। उसमें इतनी सारी चर्बी इकट्ठी होती हैं। चर्बी कहाँ से आती है ? अरे बेटा भीतर से पैदा होती है ? नहीं साहब कोई बाहर चला जाता है। चुपचाप। जब सोये रहते हैं कोई आता है और छटांक भर घी खिला जाता है। घास में से। घास में से नहीं आता है। उसके पेट में से आता है। जहर कहाँ से आता है। बता दो जरा ? कहाँ से आता है साहब ! साँप मिट्टी खाता है कीड़े खाता है। मिट्टी में कहाँ जहर है। नहीं है और कीड़े में कहाँ है जहर ? इसमें भी नहीं है जहर। चूहे में भी नहीं है। साँप में लाइए कहाँ से आ गया जहर ? उसके भीतर से पैदा होता है।

पेड़ जो होते हैं वे धरती और वायुमण्डल में से जल खींच लाते हैं। जहाँ कहीं भी पेड़ घने होते हैं, वहाँ वर्षा होती रहती है। लीबिया वालों ने गलती की। वहाँ पेड़ बहुत सारे थे। पेड़ों के ठेकेदार आए और उन्होंने पेड़ों को काटना शुरू कर दिया, पेड़ खत्म हो गए। बस बारिश खत्म हो गयी। वर्षा खत्म हो गयी। वर्षा खत्म होने से क्या परिणाम हुए ? सारे का सारा लीबिया रेगिस्तान हो गया। राष्ट्र संघ ने अपना पैसा देकर यह कहा कि इतने समृद्ध मुल्क में फिर से पानी बरसना चाहिए और पानी बरसाने के लिए आवश्यक है कि इसमें पेड़ लगाये जाएँ। ऐसे पेड़ लगाये जाएँ, पानी का ऐसा इन्तजाम किया जाए कि फिर से उस जमीन पर पेड़ उग आएँ, वह क्षेत्र हरा-भरा वन जाए। रेगिस्तान इसीलिए रेगिस्तान है कि वहाँ पर पेड़ नहीं हैं। अगर वहाँ पेड़ होने लगें, पेड़ लगाये जाने लगें तो थोड़े समय बाद सारा रेगिस्तान फिर से हरा-भरा हो सकता है। पेड़ों में वर्षा को खींचने की ताकत है, मैग्नेट है। मैग्नेट में खींचने की ताकत है। वह लोहे को खींच लेता है। धातुएँ जब बनती हैं, धातुओं की जब खदानें बनती हैं तो उसका तरीका यह है कि धातुओं के कण जहाँ कहीं भी होते हैं, वे अपने चुम्बक के जोर से मैग्नेट के जोर से जहाँ कहीं सजातीय कण होते हैं, जर्रे-जर्रे से खींच लेते हैं। सोने का जर्रा जहाँ पड़ा है, उसको खींचते चले जाएँगे। इस तरह सोने का जर्रा-जर्रा धीरे-धीरे खिंचता चला जाएगा और उस खदान में शामिल हो जाएगा। धातु की खदान बढ़ती चली जाएगी, बड़ी होती चली जाएगी, क्योंकि उसका चुम्बकीय मैग्नेट अपने सजातियों को खींचता चला जाता है। बेटे लाभ, उन्नति, प्रगति, वैभव, सिद्धियाँ और चमत्कार ये कुछ भी नहीं हैं। ये आदमी की विकसित चेतना के आकर्षण हैं, मैग्नेट हैं। अपनी चेतना का विकास कीजिए और पाइए हर चीज को।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रायः यह कहा जाता है कि जब गुरु मिलेगा तो ही सब मिलेगा। नहीं बेटे, ऐसे गुरु नहीं मिलेगा। तेरे भीतर की चेतना जाग्रत होगी तो गुरु आवेगा और तेरे पैर चूमेगा, तेरे भीतर की चेतना विकसित नहीं है। तूने अपने आपको घिनौना बनाकर रखा है। कमीना बनाकर रखा है, तो गुरु आएगा भी तो उसकी नाक कट जाएगी और सड़ जाएगी और सड़ी हुई नाक को लेकर के भाग जाएगा, कहेगा कि अरे ! बाबा ये कहाँ से आ गया मैं ? किसके पास आ गया ? नहीं गुरु के हाथ जोड़ूँगा, पैर छुऊँगा। नहीं बेटे ! नहीं हो सकता। देवता की शक्ति प्राप्त करने के लिए आपके अन्दर देवत्व विकसित होना चाहिए। भगवान की शक्ति का विकास करने के लिए आपके अन्दर भक्ति का विकास होना चाहिए। मन्त्र की शक्ति का विकास करने के लिए आपके भीतर संयमशीलता का विकास होना चाहिए। अपने आपको सुधारना, अपने आपको सँवारना, अपने आपको ठीक करना, बेटा इसी का नाम है अध्यात्म। इसी का नाम है गायत्री। इसी का नाम है—उपासना। इसी का नाम है, भजन। ताकि हम अपने भीतर की महानता को विकसित कर सकें, जगा सकें। किस तरह से हम अपनी अन्तर्चेतना को विकसित कर सकते हैं ? कैसे हम सम्पत्तिवान बन सकते हैं ? कैसे हम सेठ आदमी बन सकते हैं ? इस उपासना को मैं कल से आपको बताऊँगा।

अभी आपको गायत्री उपासना के आधार पर जो संकेत दिए गए थे, सिम्बल बताए गए थे। क्रियाएँ बताई गई थीं, उसके पीछे क्या उद्देश्य है ? क्या प्रेरणा है ? उसके कलेवर के पीछे प्राण कहाँ हैं ? बाहर वाला परिवर्तन वह है, जो हम आपको बता चुके हैं। अब हम उसका प्राण बताएँगे। शिक्षाएँ बताएँगे, दिशाएँ बताएँगे। धाराएँ बताएँगे। प्रेरणाएँ बताएँगे ताकि आप यह जान पाएँ कि हम अपने जीवन का परिष्कार करके किस तरीके से भगवान को पा सकते हैं ? मित्रो ! आध्यात्मिकता का यह एक ही उद्देश्य है। गायत्री उपासना का भी एक ही उद्देश्य है। गायत्री उपासना में जो शक्ति आती है, वहीं से आती है और कहीं से नहीं आती। गायत्री उपासना करें या नमाज पढ़ें, कहीं से भी आपको शक्ति आएगी तो अपने भीतर से ही आएगी। भगवान ने कहा है—**"आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः"** अपनी आत्मा ही अपनी दुश्मन है और अपनी आत्मा ही अपनी मित्र है। इसलिए मित्रो ! **"उद्धरेदात्मनाऽत्मानं"** तुम अपनी आत्मा का उद्धार स्वयं करो। स्वयं के द्वारा स्वयं का उद्धार करो। बाहर के लोगों से नहीं और न ही देवताओं के द्वारा उद्धार होगा। भगवान के द्वारा नहीं, गुरुओं के द्वारा नहीं, किसी के द्वारा नहीं, उद्धार होने वाला है। **"उद्धरेदात्मनाऽत्मानं"** अर्थात् उद्धार होगा तो अपने आप द्वारा ही अपना उद्धार होगा। **"नात्मानमवसादयेत्।"** अपने आपको गिराओ मत। नहीं साहब, कोई और गिरा जाता है मुझे। कौन गिरा जाता है तुझे ? भावी गिरा जाता है, भूत गिरा जाता है, भगवान गिरा जाता है, राहु गिरा जाता है। चल जाहिल कहीं का, बेकार की बात करता है। राहु पर इल्जाम लगाता है और केतु पर इल्जाम लगाता है। औरों पर इल्जाम लगाता है। बेकार के इल्जाम लगाता है और अपने ऊपर इल्जाम नहीं लगाता।

मित्रो ! क्या करना पड़ेगा आपको ? आपको यह करना पड़ेगा कि **'नात्मानमवसादयेत्'** अपने आपको गिराओ मत, अपने आपको उठाओ। अपने आपको उठाओ। आप ही अपने सबसे बड़े मित्र हैं, हम आप ही अपने आपके सबसे बड़े शत्रु हैं। इस तथ्य को आपने भगा दिया। इसको आपने विस्मृति के गर्त में फेंक दिया। अपने-अपने बारे में जिसके बारे में अध्यात्म यह सिखाता है **"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो।"** मूर्खो अपने आपको जानो, अपने आपको देखो, अपने आपको समझो। अपने आपको सुधारो और अपने आपको सही करो। फिर देखो जो कुछ भी तुम चाहते हो सब चीजें तुम्हारे पास खिंचती हुई चली आती हैं कि नहीं। मिलती हुई आती हैं कि नहीं। जब तक आप अपना उद्धार स्वयं करने को तैयार न होंगे, तब तक आपकी सफलताएँ दूर ही दूर बनी रहेंगी। मित्रो ! हमारी इसी विकसित अन्तर्चेतना, हमारी विकसित दृष्टि का नाम है स्थित-प्रज्ञता। इसी का नाम ऋतम्भरा-प्रज्ञा है। इसी का नाम है गायत्री। गायत्री की अगर उपासना हम कर सकें, साधना कर सकें, परिश्रम के द्वारा, आत्मशोधन के द्वारा, आत्म-परिष्कार के द्वारा, आत्म-संघर्ष के द्वारा तो मित्रो ! गायत्री के सारे के सारे चमत्कार और सिद्धियाँ आपके चरणों में स्वयं खिंचती हुई चली आएँगी। इसके बारे में अथर्ववेद में कहा गया है—

"स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानां। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिम् द्रविणम् ब्रह्मवर्चसम् मह्यमूदत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।"

आयु से लेकर के प्राण तक सब सारी की सारी चीजें—जिसमें धन भी शामिल है, सन्तान भी शामिल है, पुत्र भी शामिल है, असंख्य चीजें शामिल हैं, सारी चीजें मिल सकती हैं, उनको जो ऋतम्भरा-प्रज्ञा के रूप में प्राणवान् गायत्री की साधना करते हैं। साधना द्वारा ही हमको अपने अन्तरंग के मल और आवरणों का निराकरण करना होता है और अपनी दबी हुई विशेषताओं को, क्षमता को उभारना पड़ता है। यही है गायत्री उपासना का प्रारम्भिक रूप, यही है गायत्री की भूमिका। कल से मैं बताऊँगा कि गायत्री उपासना के जो क्रिया-कृत्य, कर्मकाण्ड बताए गये हैं, उसके लिए आपको क्या करना पड़ेगा, कैसे करना पड़ेगा, कौन-कौन से ऋषियों ने ऋतंभरा-प्रज्ञा की उपासना की और क्या पाया-आदि। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री उपासना की सफलता के आधारभूत तथ्य

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

गायत्री को हमने त्रिपदा कहा है, ऋषियों ने त्रिपदा कहा है। अगर आप गायत्री मंत्र से उपासना में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको एक महत्त्वपूर्ण शर्त पूरी करनी होगी, कुछ खास अवलम्बन लेकर चलना होगा, यही मेरे जीवन का निचोड़ है, सार है, निष्कर्ष है। गायत्री को जिसने सफल बनाया आप उस आधार को समझने की कोशिश करें।

यह प्रमुख आधार है—श्रद्धा। श्रद्धाविहीन, विश्वास-विहीन किसी तरीके से लोग चिन्ह-पूजा करते हुए चले जाते हैं। जरा सफलता मिल गई तो बाँट दिया गया गायत्री माता का प्रसाद सवा रुपए का और असफलता मिली तो, गायत्री माता को फेंक दिया और कह दिया कि मेरा गायत्री पर कोई विश्वास नहीं है। गायत्री मेरी कौन लगती है ? श्रद्धा का अर्थ यह नहीं है। माँ प्यार करती है, मिठाई भी खिलाती है और जब नाराज होती है तो गाल पर चपत भी लगाती है। बच्चे को फोड़ा हो जाता है तो डॉक्टर के पास चीरा लगवाने को भी ले जाती है। हर स्थिति में वह साथ रहती है। श्रद्धा वह जो लाभ में और हानि में, सफलता और असफलता में अविचल-अटूट बनी रहे, अडिग बनी रहे। अटूट विश्वास, अटूट श्रद्धा की शक्ति असीम है। मीरा ने जब एक पत्थर पर श्रद्धा जमाई तो वह गिरिधर गोपाल हो गया। रामकृष्ण परमहंस ने जब एक टुकड़े में श्रद्धा जमाई तो वह भगवान् हो गया। एकलव्य ने एक मिट्टी के टुकड़े में श्रद्धा जमाई तो श्रद्धा से वह द्रोणाचार्य हो गया। यह सब श्रद्धा का चमत्कार है। नहीं साहब, गिरिधर ने बड़ी कृपा की थी मीरा पर। गिरिधर गोपाल ने कोई कृपा नहीं की थी, वरन् मीरा की श्रद्धा ने पत्थर से टक्कर खाई और उसने एक नया भगवान बनाकर खड़ा कर लिया, छाया पुरुष के तरीके से जो मीरा के साथ-साथ चला करता था। रामकृष्ण परमहंस की श्रद्धा ने काली से टक्कर मारी और उनका विश्वास काली के रूप में श्रद्धा की छाया बनकर खड़ा हो गया। वही सहायता करता था। विश्वास बड़ी चीज है।

मैं आपको श्रद्धा की सामर्थ्य की बात कह रहा था। विचारणा भी एक शक्ति है, धन भी एक शक्ति है, बल भी एक शक्ति है, किन्तु दुनिया में सबसे बड़ी एक ही शक्ति और सामर्थ्य है, खासतौर से आध्यात्मिक क्षेत्र में और वह है—श्रद्धा की शक्ति। श्रद्धा की शक्ति का विकास करते हैं हम गुरु के माध्यम से। हमने अपने गुरु के माध्यम से अपनी श्रद्धा को परिपक्व किया है। अब हमारी उपासना में केवल हमारा गुरु ही रह गया है। हमने भगवान की अलग शक्ल बना दी है। वह बंशी बजाता हुआ नहीं है, वरन् बाल बिखेरे हुए नंग-धड़ंग है, जिसके पास कपड़े भी नहीं हैं, उसी रूप का भगवान। वह बहुत सामर्थ्यवान है। हमारा गुरु हमारे पास बैठा रहता है। बेटे, हमने श्रद्धा की दृष्टि से बना लिया। श्रद्धा की शक्ति असीम है। श्रद्धा भगवान के समान है। हमने अपनी उपासना में श्रद्धा की शक्ति को महत्त्व दिया है और उसे इतना अटूट मन में बनाकर रखा है कि हमारी श्रद्धा कोई डगमग नहीं कर सकता। हम सब चीज गँवा देंगे, पर श्रद्धा नहीं गँवा सकते। श्रद्धा हमारा संबल है, हमारी शक्ति है। श्रद्धा के आधार पर ही हमने गायत्री माता को पाया है। यदि आपको उपासना करनी है तो उपासना के पीछे एक ही शक्ति का समावेश करना, उसका नाम है-श्रद्धा। श्रद्धा में शक्ति है, चाहे मंत्र में करो, चाहे गुरु में करो, चाहे उपासना में करो, चाहे भगवान में करो, श्रद्धा जिसमें जोड़ दी जाएगी उसी में चमत्कार खड़े हो जाएँगे। यदि माला के साथ में आपने श्रद्धा का समावेश किया है तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आप सफल होंगे। मेरे जीवन का अनुभव और निचोड़ नंबर एक, जिसके सहारे मैंने आध्यात्मिक प्रगति की, गायत्री माता को अपनी मुट्ठी में लिया और खरीद लिया, श्रद्धा की कीमत पर।

श्रद्धा के साथ ही जरूरी है—चरित्र। चरित्र किसे कहते हैं ? चरित्र कहते हैं—कपड़े को रँगने से पहले धोने की जरूरत पड़ती है। धोएँगे नहीं अगर तो उस पर रंग नहीं चढ़ेगा। राम का नाम बीज है। बीज में बड़ी शक्ति है लेकिन उसके लिए जमीन चाहिए। हर जगह बीज काम नहीं दे सकता। प्रत्येक व्यक्ति का मंत्र सार्थक नहीं हो सकता। मंत्र को सार्थक करने के लिए, भगवान को अवतरित करने के लिए स्वच्छ मन की जरूरत है। मन आपका साफ नहीं तो भगवान आपको दिखाई नहीं देगा। मैला मन, गलीज मन, दुष्ट मन, स्वार्थी चरित्र, भ्रष्ट चरित्र यदि आपका है, तो मैं कहता हूँ कि भगवान आपके पास आएँगे तो सही, पर टक्कर मारकर वापस चले जाएँगे। उनकी नाक सड़ जाएगी और बदबू के मारे भाग खड़े होंगे। भगवान इस मामले में बहुत संवेदनशील हैं। वह एक बात परखते हैं—आदमी का ईमान, आदमी का चरित्र, आदमी की वृत्ति, आदमी के गुण, आदमी के कर्म और स्वभाव क्या है ? अगर आप साफ हैं अगर अपने आपको साफ बनाने की कोशिश की है तो मैं यह कहता हूँ कि भगवान् आपके पास भागते हुए चले आएँगे। रँगाई से पहले धुलाई जरूरी है। कारतूस की अपनी कीमत है, पर बंदूक की भी कीमत है, उसके बिना कारतूस चल नहीं सकता।

मंत्र सार्थक होते हैं, लेकिन हर एक के मंत्र सार्थक नहीं होते। चरित्रवान के मंत्र सार्थक होते हैं। शृंगी ऋषि का प्रसंग आता है। उनके पिता ने ब्राह्मणत्व पैदा करने के लिए उनको जंगल में रखा। खान-पान के बारे में, स्त्रियों के बारे में, सारी लोकभावनाओं के बारे में, तृष्णा और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वासना के बारे में उनको दूर रखा। जब राजा दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टि यज्ञ हुआ तो जरूरत इस बात की हुई कि कोई ऐसा ऋषि, कोई ऐसा संत तलाश किया जाए जिसके बोले हुए मंत्र सार्थक होते हुए चले जाएँ। गुरु वशिष्ठ से कहा गया। उन्होंने कहा—हम आपका पुत्रेष्टि यज्ञ करा तो दें, पर हमारी वाणी के उच्चारण से आपके संतान नहीं हो सकती। क्यों नहीं हो सकती ? हमारी वाणी जल गई, क्योंकि हम विवाहित हैं और हमारे सौ बच्चे हैं। सौ बच्चे होने से हमारा ब्रह्मचर्य समाप्त हो गया। मंत्र तो हमें आते हैं, पर हमारे वेदमंत्रों में कोई शक्ति नहीं है, इसलिए वे फलित नहीं हो सकते। फिर उन्होंने किसें ढूँढ़ा ? एक ही आदमी है—शृंगी ऋषि, जिसने जीवन भर में यह नहीं जाना कि स्त्रियाँ कैसी होती हैं ? वासना किसे कहते हैं ? तृष्णा किसे कहते हैं ? उन्होंने अपना व्यक्तित्व और चरित्र उच्चकोटि का बनाकर रखा था। उसी के फलस्वरूप उनके मंत्र सार्थक होते चले गये। पुत्रेष्टि यज्ञ कराया और राजा दशरथ के राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न—चार भगवान पैदा हुए। किससे हुए ? यज्ञ से। नहीं, यज्ञ तो वशिष्ठ भी करा सकते थे, अतः यज्ञ से नहीं, वे ब्राह्मण के मुख में से पैदा हुए थे। **'ब्राह्मणोस्य मुखमासीत्'**—ब्राह्मण के मुख में भगवान रहता है। उसके रहता है जो ब्राह्मण होता है, चरित्रवान होता है। भगवान् के लिए सबसे बड़ी परख यही है कि हमारा भक्त हमारे ऊपर विश्वास करता है कि नहीं। विश्वास नहीं करने वाले व्यक्ति का नाम चरित्रवान है।

साधक को चरित्रवान होना चाहिए। आप यह मत समझिए कि हर आदमी भगवान को बहला सकता है। वह हर आदमी के चंगुल में आने वाले नहीं हैं। अगर यह बात रही होती तो चोर, उचक्के, बेईमान और दुष्ट-दुराचारी भी भगवान को पकड़ करके और चाहे जिस तरीके से अपना उल्लू सीधा करते और देवी को बकरी भेंट करके चाहे जो काम करा लेते। भगवान को पाने के लिए मनुष्य को चरित्रवान होना चाहिए। शृंगी ऋषि तब बच्चे ही थे। एक बार राजा परीक्षित ने ध्यानमग्न उनके पिता लोमश ऋषि के गले में साँप डालकर अपमानित कर दिया। शृंगी ऋषि खेलने चले गए थे। लौटकर आए तो देखा कि हमारे पिता का अपमान किया गया है। क्रोध से वे काँपने लगे। उन्होंने जल हाथ में लिया, मंत्र पढ़ा और कहा कि जो मरा हुआ साँप हमारे बाप के गले में पड़ा हुआ है, वह जिंदा हो जाए। साँप जिंदा हो गया। साँप से उन्होंने कहा—साँप तू वहाँ चला जा जहाँ कहीं भी दुनिया में कोई भी व्यक्ति क्यों न हो, जिसने हमारे पिताजी का अपमान किया है उसे तू काट खा, जिंदा मत छोड़ना। यही हुआ, तक्षक राजा परीक्षित की ओर चल पड़ा। लोमश ऋषि की आँखें खुलीं तो उन्होंने कहा—बेटे, तूने यह क्या कर डाला ? राजा ने गलती कर दी तो हमें तो नहीं करनी चाहिए। पर अब क्या कर सकते थे, तीर तो निकल चुका था, मुँह से मंत्र के रूप में। लोमश ऋषि ने एक विद्यार्थी को भेजकर परीक्षित को संदेश दिया कि सातवें दिन तुझे साँप काट ही खाएगा, इसलिए तुझे सात दिन में जो करना हो सो कर ले। राजा ने भागवत् कथा सुननी आरंभ कर दी। सातवाँ दिन आया और तक्षक ने काट खाया।

मैं कह रहा हूँ—मंत्रों की शक्ति, भगवान की शक्ति, उपासना की शक्ति के बारे में, जिसमें एक चीज जुड़ी ही रहनी चाहिए और उसका नाम है—चरित्र। दुश्चरित्र आदमी, दुष्ट आदमी, दुराचारी आदमी यह ख्याल करे कि हम यह मंत्र जप करके, माला घुमा करके, पूजा करके किसी देवी-देवता को प्रसन्न करके काबू में ला सकते हैं, तो यह बिल्कुल असंभव है। मेरी जिन्दगी का सार यही है। चरित्र वाला पक्ष जिसमें मैंने अपने आपको धोबी के तरीके से धोया और धुनिए के तरीके से धुना। धुनिया जैसे थोड़ी-सी रूई को धुन-धुन करके इतनी मोटी बना देता है और धोबी कपड़े को पीट-पीट करके सफेद झक बना देता है, हमने भी अपने चरित्र को उसी प्रकार धोया और भगवान् का अनुग्रह पाया। यह उसी का परिणाम है, जो आपके सामने है। अगर आप उपासना का, मंत्र का लाभ देखना चाहते हैं, कोई आध्यात्मिक चमत्कार देखना चाहते हैं तो श्रद्धा उगाइए और चरित्र को धोइए। विधि आपको नहीं आती है तो इससे कोई नुकसान नहीं। बाल्मीकि को विधि नहीं आती थी।

'उलटा नाम जपा जग जाना।
बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।।'

उलटा नाम जप करके भी आप भगवान को पा सकते हैं, आप गलत मंत्र बोलिए, गलत उच्चारण से भी उद्धार हो जाता है। जो स्त्रियाँ नहीं बोल पातीं, उन्हें हम **'ॐ भूर्भुवः स्वः'** सिखा देते हैं। जिन्हें **ॐ भूर्भुवः स्वः** भी नहीं आता तो उन्हें केवल ॐ सिखा देते हैं। जब हम अफ्रीका गए तो बहुत-से नीग्रो लोगों को गायत्री मंत्र सिखाया। बहुत कोशिश करने पर भी उन्हें सही बोलना नहीं आया। वे बोले—"गुरुजी ! हमें गलत गायत्री मंत्र आता है, उससे कोई नुकसान तो नहीं होगा ?" नहीं, कोई नुकसान नहीं होगा। गायत्री ऐसी नहीं है कि आपके मंत्र गलत हो जाएँ तो उसके लिए जान की ग्राहक बन जाए। आपके अक्षर गलत हो जाते हैं तो हो जाने दीजिए। विधि में आप कहीं भूल करते हैं तो हमारी जिम्मेदारी। नवरात्रि अनुष्ठान में हम कहा करते हैं कि विधि आपकी गलत हो जाए, तो उसका पाप हम पर लगा दीजिए। विधि की कोई कीमत नहीं है, जैसी विधि आती हो, कर लीजिए, पर विधा के बारे में ध्यान रखिए।

श्रद्धा व चरित्र के बाद अगला जो उद्देश्य गायत्री मंत्र के साथ जुड़ा हुआ है, वह हमारे जीवन का सार और निचोड़ है—ऊँचा उद्देश्य रखिए। छोटे उद्देश्यों के लिए, घटिया कामों के लिए नहीं, भगवान के सामने किसी बड़े काम के लिए पल्ला पसारिए। भगवान को जिंदगी में साझीदार के तरीके से बनाइए, हिस्सेदार बनाइए। हिस्सेदार बनाना सबसे कीमती चीज है। कुछ चीज पाना चाहते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तो पाने के तरीके तीन हैं—एक माँगिए, भाईसाहब, कुछ दे दीजिए, कुछ नहीं है हमारे पास। दूसरा तरीका है, कर्ज लेने का और तीसरा तरीका है, अपना हक माँगने का कि हमने महीने भर मेहनत और मशक्कत की है पैसा लाइए हमारा। यह हमारा ड्यू है। फोकट में भी क्या कुछ मिल सकता है ? जहाँ तक मैंने समझा है कि फोकट नाम की चीज दुनिया में कोई नहीं है। नहीं साहब, हमने तो यही सुना है कि देवताओं से और गुरु से फोकट में आशीर्वाद मिल सकता है। बेटे, आशीर्वाद मिल भी सकता है, पर अगले जन्म में तुझे कर्ज के रूप में देना पड़ेगा। फोकट में लेना और फोकट में खाना अपने आपको दीन बनाना, दरिद्र बनाना, नीच बनाना और जलील बनाना एक बराबर है। भगवान के सामने हमको जलील नहीं बनना चाहिए। जलालत हमको नामंजूर है। आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की रक्षा हमको हर हालत में करनी चाहिए। हमें किसी के आगे पल्ला नहीं पसारना चाहिए। पल्ला पसारने का कोई नियम दुनिया में नहीं है। हर चीज कीमत देकर पाई जाती है।

आपको जिस आदमी ने यह बात सिखा दी है कि अध्यात्म देवी-देवताओं की खुशामद को कहते हैं, गुरु की खुशामद को कहते हैं, सिद्धपुरुषों की खुशामद को कहते हैं और कमाई किए बिना, मेहनत किए बिना चापलूसी से जीभ की नोंक की हेरा-फेरी करके, माला पहना करके, सवा रुपया दक्षिणा दे करके यह चीजें पाई जा सकती हैं, वह गलत आदमी था और आप उससे भी गलत आदमी हैं, जो ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं। दुनिया कायदे पर टिकी हुई है, नियम पर टिकी हुई है।

मित्रो ! आप उच्च उद्देश्यों के लिए गल जाना। हमने अपने गुरु के साथ में वायदा किया हुआ है कि हम आपकी आज्ञानुसार चलेंगे और अपनी जिंदगी में स्वयं के लिए, व्यक्तिगत फायदे के लिए कुछ काम नहीं करेंगे। हम आपके लिए काम करेंगे। गुरु ने कहा—जब तुम सब कुछ हमको दे रहे हो तो हमारी चीज तुम्हारी है। भगवान की हर चीज हमारे गुरु की है और गुरु की हर चीज हमारी है। आपको मालूम नहीं है, हमने वसीयत की हुई है। हमारे पास जो कुछ बाप-दादे छोड़ गए थे, उसका चप्पा-चप्पा हमने समाज के हित में खर्च कर डाला। हमने अपनी हर चीज भगवान को सौंप दी और संकीर्णता को पैरों तले रौंदकर फेंक दिया है। इसके बदले में जो पाया, आप देख रहे हैं। इससे कम कीमत पर ऊँची चीजें नहीं मिल सकतीं। स्वार्थी और संकीर्ण आदमी, मक्खी और मच्छर जैसे दिल वाले कृपण और कंजूस भगवान से नहीं पा सकते। किससे पाएँगे ? बेटे, हम आपको दे देंगे, क्योंकि आप हमारे बच्चे हैं। हम आपको मुहब्बत और प्यार करते हैं। हम जानते हैं कि प्यार की कीमत क्या चुकानी चाहिए ? आपके दुःख, दर्द, कठिनाई, मुसीबत के बारे में अगर हमने अपनी कुछ दौलत जमा की होगी तो आपकी सहायता करेंगे और आपको सुखी बनाने के लिए हरदम कोशिश करेंगे। हम यह वायदा तो नहीं करते कि आपकी हर मनोकामना को पूरी कर सकते हैं, पर भगवान ने जिसे साधक बनाया होगा, जो कुछ भी हमारे पास होगा, हम आपकी मुसीबत को हल करने के लिए निश्चित रूप से कोशिश करेंगे। यह हमारी और आपके बीच की बात है।

दूसरे संत और ऋषि आप पर दया करके, करुणा करके आपकी सहायता कर सकते हैं, लेकिन आपको बच्चे समझते रहेंगे। जब तक आप माँगते रहेंगे, आपकी हैसियत बच्चों जैसी बनी रहेगी। भगवान से, गायत्री माता से ऊँची चीजें, कीमती चीजें पाने के लिए आपको जो काम करना है वह है कि आप एक चीज को छोड़ जाइए। कार्लमार्क्स कहते थे कि मजदूरो ! तुम हमारी कंपनी में साम्यवाद में भर्ती हो जाओ, इसमें तुम्हारा बस एक ही नुकसान होगा कि तुम गरीबी खो बैठोगे। इसके अलावा फायदे ही फायदे हैं और मैं कहता हूँ कि एक चीज छोड़नी पड़ेगी आपको बाकी सब नफा ही नफा है। क्या छोड़नी पड़ेगी ? कृपणता। कृपणता आप पर हावी हो गई है। न पैसे की कमी है, न रोटी की कमी है। कृपणता को छोड़कर थोड़ा दिल बड़ा कीजिए, यह आज के समय की आवश्यकता है।

हमारे गुरु की आवश्यकता थी, उनके इशारे पर हम कठपुतली के तरीके से नाचते रहे। उनके इशारे का हमको ध्यान है। आज युगदेवता का, महाकाल का इशारा यह है कि हमको जन-जाग्रति के लिए काम करना चाहिए। हमको नवयुग लाने के लिए घर-घर में संदेश पहुँचाना चाहिए। विचारक्रान्ति अभियान आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि इस युग की सभी समस्याएँ इसलिए पैदा हुई हैं कि आदमी की अक्ल खराब हो गई है। न पैसा कम है, न कोई चीज कम है। अक्ल खराब है। अक्ल ठीक करने के लिए हमको विचार-क्रान्ति में हिस्सा लेना चाहिए। व्यक्ति और समाज, देश और धर्म-संस्कृति के लिए, मानवीय भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए हमको एक काम करना चाहिए कि ज्ञानयज्ञ के विस्तार के लिए पूरी कोशिश करें, प्रयास करें। घर-घर में जाएँ, जन-जन के पास जाएँ, अलख जगाएँ, नवयुग का संदेश सुनाएँ और यह कहें कि आदमी को कृपणता छोड़नी चाहिए। अपनी मनःस्थिति को ऊँचा बनाना चाहिए। चिंतन और चरित्र में ऊँचाइयों का, उत्कृष्टता का समावेश करना चाहिए। क्रिया-कलापों में आदर्शवादिता का समन्वय करना चाहिए। यही हमारा विचार-क्रान्ति अभियान है।

इसी के लिए इस पुनर्गठन वर्ष में हमने हर आदमी पर जोर दिया है और यह कहा है कि आपको अपनी कृपणता छोड़नी चाहिए और श्रेष्ठ विचार यदि आपके पास हैं तो क्रियारूप में परिणत करने चाहिए। खाने का सामान आपके पास है तो पकाना आना चाहिए। खाना पकाएँगे नहीं तो कैसे काम करेंगे ? विचार आपके पास हैं, मन बहुत अच्छा है, श्रद्धा बहुत है तो सक्रियता के रूप में परिणत कीजिए। तो सक्रियता के रूप में विचारों को परिणत करने के लिए क्या करना चाहिए ? हमारे पास एक ही काम है, जिसको ऋषि और ब्राह्मण करते रहे हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और ऋषि और ब्राह्मण करते रहेंगे। उसका नाम है—जनमानस का परिष्कार। इसके लिए प्राचीनकाल के ब्राह्मण, प्राचीनकाल के ऋषि, प्राचीनकाल के साधु-संत और वानप्रस्थ इस कार्य को किया करते थे। आज इसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस युग की सबसे बड़ी कोई आवश्यकता नहीं। योग्यता की कमी नहीं। अनाज, कपड़ा, रोटी, विद्या, साहस आदि किसी चीज की कमी नहीं है। कमी है तो अक्ल की। मित्रो ! अक्ल को बढ़ाने के लिए, जनमानस के परिष्कार के लिए युगदेवता ने, महाकाल ने पुकार लगाई है। अगर आप कृपणता को त्यागने के लिए तैयार हों, सेवावृत्ति के लिए उदारता से तैयार हों, तो मैं आप से वायदा करता हूँ कि गायत्री माता का वह चमत्कार जो ऋषियों को मिला था, ब्राह्मणों को मिला था और हमको मिला है, उसका लाभ आप भी उठा सकेंगे। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

ब्रह्मवर्चस कैसे जगाती है गायत्री ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

गुरु द्रोणाचार्य ने जब पांडवों को विद्याध्ययन कराया, तो प्राचीन परम्परा के अनुरूप उन्होंने वही मंत्र पढ़ाए जो ब्राह्मण ग्रंथों में लिखे हुए हैं। शतपथ ब्राह्मण में विद्यार्थी को अक्षर ज्ञान से भी पहले जो पाठ पढ़ाया जाता है, वह है—**'सत्यं वद्', 'धर्मं चर', 'स्वाध्यायन्मा प्रमदितव्यम्।'** यह ऋचाएँ अक्षर ज्ञान से भी पहले याद कराई जाती हैं, जिससे आदमी को मालूम पड़ जाए कि विद्या का उद्देश्य क्या है ? ज्ञान का उद्देश्य क्या है ? पढ़ने का उद्देश्य क्या है ? उद्देश्य पहले बताया जाता है और उसका प्रयोग पीछे पढ़ाया जाता है। क, ख, ग पीछे पढ़ाया जाता है, पहले यह बताया जाता है कि यह किस काम के लिए है ? द्रोणाचार्य ने पाँचों पांडवों को प्राचीन परम्परा के अनुरूप वही पाठ पढ़ाए—**"सत्यं वद्" "धर्मं चर", "स्वाध्यायान्मा प्रमदितव्यम्।"** चारों पांडवों ने तो वे सारे के सारे पाठ याद कर लिए, लेकिन सबसे बड़े भाई युधिष्ठिर वह पाठ याद न कर सके। उन्होंने कहा—गुरुदेव ! पाठ थोड़ा जटिल है। "सत्यंवद्" कहिए तो मैं सुना देता हूँ, लेकिन अध्यात्म में कोई ज्ञान ऐसा नहीं है जो केवल जवान की नोंक से कहा जाए और कान के छेदों से सुना जाए और जो परिणाम उसके बताए गए हैं, उन्हें पूरा करने में समर्थ हो सके। जीभ का नहीं, यह अध्यात्म का विषय है। आपने जो पाठ मुझे पढ़ाया उसके लिए मैंने कोशिश की कि वह मेरे जीवन में प्रयोग होता हुआ चला जाए और मेरी जीवात्मा इसको धारण कर ले तो बात बने। महाराज युधिष्ठिर सारे जीवन भर इसी पाठ को याद करते रहे। उसमें भी एक बार गलती हो गई थी और **"नरो वा कुंजरोवा"**—हाथी है या अश्वत्थामा आदमी यह पता नहीं चला, ऐसा कहकर उन्होंने गलती कर ही डाली।

मित्रो ! अध्यात्म में जो शिक्षण हम प्राप्त करते हैं, उसको जीवन में उतारना पड़ता है। इससे कम में कोई बात बनती नहीं, गाड़ी आगे बढ़ती नहीं। उच्चारण हमारे लिए आवश्यक तो है, पर काफी नहीं है। राम नाम या गायत्री मंत्र तो सभी याद कर लेते हैं। केन्या (पूर्वी अफ्रीका) का हमारा लड़का यहाँ बैठा हुआ है। उसके यहाँ कांगो का एक तोता है, जो ऐसा बढ़िया गायत्री मंत्र बोलता है कि उसकी और मनुष्य की आवाज में कोई फर्क ही नहीं मालूम पड़ता। पर क्या इतने से सुग्गे को गायत्री माता सिद्ध हो गई ? क्या वह आशीर्वाद दे सकता है ? नहीं, क्योंकि उसे मात्र अक्षर याद हैं। अक्षर याद कर लेने भर से अध्यात्म का कोई उद्देश्य पूरा नहीं होता, जैसा कि आम लोगों का ख्याल है। आम लोगों को मुद्दतों से इसी तरह बहकाया जाता रहा है कि अक्षर याद कीजिए, अक्षरों का उच्चारण कीजिए और स्वर्गलोक को चले जाइए। पर ऐसा होता नहीं है। शुरुआत हम राम नाम से करें, ठीक है। नाम तो लेना ही पड़ता है। नाम नहीं लेंगे तो बात कैसे बनेगी ? जिस तक पहुँचना है उसका नाम तो लेना ही पड़ेगा। स्टेशन का नाम बताए बिना तो उसका टिकट भी नहीं मिलता। वस्तु का नाम बताए बिना दुकानदार से कहते रहिए कि अमुक चीज, यह चीज, वह चीज दे दीजिए तो वह भी कहेगा कि भाग यहाँ से। नाम की पहले जरूरत है, क्योंकि नाम हमको दिशा बताता है। लेकिन अगर नाम के उच्चारण तक ही सीमित रहा गया तो समझना चाहिए कि जिस तरीके से सुग्गा राम नाम और गायत्री मंत्र को बोलता रहता है, पर लाभ कुछ नहीं पाता, उसी तरह उससे कम या अधिक लाभ आपको भी नहीं मिलेगा।

नाम उच्चारण आवश्यक है, पर इससे आगे उसे हमारी अंतरात्मा में इस गहराई तक समा जाना चाहिए कि वह हमारे व्यवहार में उतरने लगे। इस संदर्भ में प्रह्लाद की घटना मुझे याद हो आई। प्रह्लाद को उसके मास्टर ने सबसे पहले पट्टीपूजन कराया और रामनाम पट्टी पर लिखकर कहा—पहले रामनाम लिख, पीछे क, ख, ग भी बताएँगे। वह रोज रामनाम लिखने लगा। पहले दिन, दूसरे दिन, तीसरे दिन, चौथे दिन भी रामनाम। मास्टर ने कहा—अब रामनाम लिखना बंद करो और गिनती लिखो। उसने कहा—नहीं साहब, अभी तो हम रामनाम ही पढ़ेंगे, क्योंकि यह पाठ अभी पक्का नहीं हो पाया और वह रामनाम ही पट्टी पर लिखकर लाता रहा। पिता से शिकायत की गई। उन्होंने कहा-बच्चे ! आगे वाली पढ़ाई पढ़नी चाहिए। उसने कहा—नहीं, जहाँ तक ज्ञान का सम्बन्ध है, वहाँ तक पढ़ाई पक्की कर लेनी चाहिए, तब आगे पढ़ना चाहिए। प्रह्लाद सारी जिन्दगी भर उसी पढ़ाई में लगे रहे और उसे पक्की करते रहे। हम भी बार-बार गायत्री मंत्र याद करने की बात कहते हैं और अभी २४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हजार का जप करा रहे हैं। आप यह पूछ सकते हैं कि उसे चाहे हम एक बार जप कर लें या २४ हजार बार। फिर आप बार-बार क्यों कराते हैं ? उससे क्या फायदा ? गायत्री मंत्र याद भी हो गया और उसका अर्थ भी हम समझ गए कि हे भगवान हमारी बुद्धि को शुद्ध-पवित्र बना दीजिए। आप यही रेपिटिशन बार-बार क्यों कराते हैं ? किस काम के लिए कराते हैं ? आपको यह सवाल करना चाहिए और इसका जवाब मालूम करना चाहिए।

साथियो ! रेपिटिशन इसलिए कराते हैं कि हमारा मस्तिष्क बड़ा भुलक्कड़ है। ऐसा भुलक्कड़ है कि इससे ज्यादा भुलक्कड़ इस दुनिया में कोई होगा क्या ? जहाँ तक भौतिक जीवन का सवाल है, वहाँ तक हम और आप बिल्कुल सही हैं, कभी भुलक्कड़ नहीं हो सकते। इस मामले में हमारा दिमाग बहुत चालाक है, लेकिन इस मामले में वह इतना वाहियात है कि हम अपने जीवन-लक्ष्य को अनायास ही भूल जाते हैं। हम कौन हैं ? हमारा लक्ष्य क्या है ? हमारा कर्तव्य क्या है ? हमारे जीवन का स्वरूप क्या है ? हमको मालूम नहीं है। मूल चीज को हम एकदम भूल जाते हैं। बाहर की सब चीजें हमको याद रहती हैं कि दुकान में कितना नफा होगा, किसका लेना है, किसका देना है आदि बातें हमको ऐसे याद रहती हैं कि कभी भी उसमें भूल नहीं पड़ती। लेकिन जहाँ तक अपनी जीवात्मा का सवाल है, परमात्मा का सवाल है, इसमें भूल पर भूल होती चली जाती है। इसलिए इस भुलक्कड़पन को दूर करने के लिए हम बार-बार आपसे गायत्री मंत्र का जप कराते हैं, ताकि आपकी जीवात्मा में वह घुल जाए और आपके स्मरण में, अंतःचेतना में उसको प्रवेश करने का मौका मिल जाए। ग्रामोफोन के रिकार्ड के तरीके से हमारी जीभ की नोंक कई तरह से अक्षरों का, मंत्रों का उच्चारण कर लेती है, पर हमारे जीवन में वे समाविष्ट नहीं हो पाते, प्रवेश नहीं कर पाते। फलतः हमको बार-बार याद करना पड़ता है। उच्चस्तरीय सिद्धान्तों को जीवन में प्रवेश कराने के लिए, अंतःचेतना में नए संस्कार जमाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। जिस तरह इम्तहान की तैयारी के लिए उसे बार-बार याद करना पड़ता है, उसी प्रकार हम आपको गायत्री मंत्र के जप के रूप में बार-बार रेपिटिशन कराते हैं ताकि आपकी याददाश्त में से जो बेशकीमती चीज भूल गई, उस गँवाई हुई चीज को आप तलाश पाएँ।

भगवान रामचन्द्र की सीता जी को रावण चुरा ले गया। रामचन्द्र जी ने पहाड़ों से, नदियों से, तालाबों से, पेड़ों से, हवा से—हर एक से पूछताछ की कि कहीं सीता आपने देखी है। सीता के बिना राम बिल्कुल निर्जीव से हो गए थे। उनकी जीवात्मा निकल गई थी। वे हारे-थके हुओं के तरीके से वन-वन में घूम रहे थे और सीता-सीता पुकारते थे। हम भी पुकारते हैं अपनी जीवात्मा को, जिसको कि हमने गँवा दिया है, खो दिया है। साँप के फन में से और हाथी के सिर में से मणि निकल जाती है तो वह बेकार हो जाता है। साँप और हाथी के सिर में मणि होती है कि नहीं यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन मैं जानता हूँ कि मनुष्य के भीतर एक मणि अवश्य होती है, जिसको गँवा देने के बाद आदमी निष्प्राण हो जाता है, निस्तेज, निर्जीव, छूँछ हो जाता है और व्यथाओं, कष्टों, चिंताओं से घिर जाता है। सारे जीवन पर निराशा के बादल छा जाते हैं। वह मणि है हमारी जीवात्मा, जिसको हमने गँवा दिया। अब तो लोहार की मरी हुई धौंकनी की तरीके से साँस भर चलती है। आज आदमी मरे हुए के बराबर है। मनुष्य जीवन के साथ जो श्रेष्ठताएँ, उमंग, उत्साह और उल्लास जुड़े हुए होते हैं, जिन्हें कि आदमी अमृत की तरीके से बिखेरता रहता है वह चेहरे पर कहीं दिखाई नहीं देता। ऐसे खीजे हुए बेचैन एवं चिन्तित आदमी को मैं मरे हुए में शुमार करता हूँ। सीता जी के चले जाने के बाद रामचन्द्र जी चिंतित-दुःखी हो गए थे और अपना उत्साह, आनंद, अपनी खुशी को सीता के नाम से पुकारते थे। हम भी आपसे निवेदन करते हैं कि आप अपनी सीता को पुकारिए, आत्मा को पुकारिए, जिसका नाम हमने गायत्री माता रख दिया है। गायत्री माता को पुकारने के लिए गायत्री मंत्र का जप करने के लिए हमने कहा है।

गायत्री माता क्या हो सकती है ? गायत्री बेटे, आपकी जीवात्मा हो सकती है और वह उच्चस्तरीय जीवात्मा जब आपके अंतःकरण में प्रवेश करती है तो आपको आनन्द और उल्लास से भर देती है और देवता बना देती है। वह गायत्री माता, जो बीस साल पहले हमको एक छवि के रूप में सुपुर्द की थी, जिसको आप चंदन, धूपबत्ती चढ़ाते थे, प्रणाम करते थे, माला घुमाते थे, बहुत पुरानी बात है, जब आप छोटे वाले बालक थे, तब हमने बताया था कि गायत्री माता हंस पर सवारी करती है और हाथ में पुस्तक, पुष्प, कमंडलु लिए रहती है। पर आज मैं ज्ञान की बात कहता हूँ। जिस गायत्री माता का हम जप कराते हैं, उपासना और अनुष्ठान कराते हैं उसकी फिलॉसफी, उसका तत्त्वज्ञान, उसका सार, प्रकाश और मूल बताना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि अब आप इस लायक हो गए हैं कि खुले दिल से, खुले मन से आपको हम असलियत समझा सकते हैं कि आखिर गायत्री माता क्या हो सकती है, जिसके लिए हम आपको बार-बार कहते हैं। जो सिद्धियों की, चमत्कारों की देवी है, जो शांति की, वरदान की देवी है, जो ऐसी देवी है जिसको प्राप्त करने के बाद में और कुछ प्राप्त करना बाकी नहीं रह जाता। वह गायत्री मंत्र जो गुरु वशिष्ठ के पास था, जो विश्वामित्र के पास था, जिन्होंने अपना सारा राजपाट छोड़कर जंगल में तप करने के बाद गायत्री माता का साक्षात्कार किया था और जिसने कहा था—**"धिक्बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलं बलम्।"** मैं आपको उसी गायत्री मंत्र को बताना चाहता हूँ, जो आपको निहालकर सकता है, धन्य कर सकता है और आपको चमत्कारी बना सकता है, महामानव बना सकता है, देवता बना सकता है और भगवान बना सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह गायत्री मंत्र जो **'मह्यम् दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्'** प्रदान करता है, ब्रह्मतेजस् और ब्रह्मवर्चस् प्रदान करता है, वह गायत्री माता का प्राण है। जिसका हमने कलेवर-शक्ल बना करके रखा है अन्यथा जो निराकार शक्तियाँ हैं, वे देखी और दिखाई नहीं जा सकतीं। उनकी शक्लें नहीं होती हैं। ठंडी, गर्मी, प्रेम, मुहब्बत, क्रोध जैसी संवेदनाओं की शक्ल नहीं हो सकती। भगवान की केवल संवेदनाएँ, विचारणाएँ, प्रेरणाएँ, निष्ठाएँ, आस्थाएँ और अनुभूतियाँ हो सकती हैं। उनकी कोई शक्ल नहीं हो सकती। शक्ल हमारी कल्पना है। कल्पना इसलिए है कि हमको निष्ठा तक पहुँचने के लिए रास्ता मिल जाए। जिस तरह इंजैक्शन की सुई शरीर के भीतर रक्त में दवा पहुँचा देती है, उसी प्रकार शक्लों के माध्यम से हमारा मस्तिष्क किसी चीज को पकड़ सकता है। शक्ल के बिना, नाम और रूप के बिना हमारी स्मरण-शक्ति और दिमाग की बनावट काम नहीं कर सकती और हम उन संवेदनाओं को पकड़ नहीं सकते। इस संवेदना को, निष्ठा और आस्था को पकड़ने के लिए हमने शक्लों की, मूर्तियों की कल्पना की है।

गायत्री माता क्या हो सकती है ? अब मैं उसकी शक्ल की व्याख्या करूँगा। गायत्री माता बेटे, एक जवान स्त्री का नाम है जैसे कि हमने फोटो में छापा है और मंदिर में स्थापित किया है। जवान स्त्री इसलिए कि उसके प्रति तेरे भीतर मातृबुद्धि पैदा हो, आँखों में शुद्ध पवित्रता का भाव पैदा हो, क्योंकि मनुष्य की भावना और ईमान इन दो बातों में सबसे ज्यादा गंदा हो जाता है। एक धन को देखकर, दूसरा जवान स्त्री को देखकर। एक पैसे को देखकर आदमी भ्रष्ट हो जाता है। दूसरे विपरीत सैक्स की जवानी देखकर न जाने कैसा शैतान दिमाग में आ जाता है कि आदमी सब कुछ भूल जाता है, यहाँ तक कि अपने कर्तव्यों को भी भूल जाता है। कामिनी और कंचन—दोनों को देख करके जो अपने ईमान को सही रख सकता है, उसे कह सकते हैं कि यह आदमी बहादुर है, शूरवीर है। इसके पास वह शक्ति है जिसका नाम-ब्रह्मवर्चस है। जिसके पास ब्रह्मवर्चस है वह भगवान को भी मजबूर कर सकता है कि आप आइए जमीन पर और हमारे सामने खड़े होइए। भगवान को इसके आधार पर हम खड़ा कर सकते हैं। भगवान को इसके सामने नत होना पड़ता है। मित्रो, ब्रह्मवर्चस और ब्रह्मतेजस वह शक्ति है जो भगवान को अपना भक्त बना लेने के लिए मजबूर कर देती है। यह ब्रह्मतेजस आता कहाँ से है ? चरित्र में से आता है। पूजा चरित्र के लिए है। पूजा से भगवान नहीं मिल सकते। पूजा हमारा माध्यम है, लक्ष्य नहीं। पूजा के माध्यम से हम अपनी चरित्रनिष्ठा, विचारशीलता और आंतरिक उदात्तता का विकास करते हैं। उपासना इसी के लिए की जाती है।

मित्रो ! ब्रह्मवर्चस प्राप्त करने के लिए हमको वह साहसिकता जगानी पड़ेगी जो कि अध्यात्म का मूल उद्देश्य है। उसी के लिए सारे का सारा क्रिया-कलेवर खड़ा किया है, जिसमें सत्संग भी आता है, रामायण पाठ, गीता पाठ, गायत्री जप, देवदर्शन, तीर्थयात्रा आती है। ये सबके सब साधन हैं और साध्य है अपनी अन्तरात्मा का परिष्कार। अन्तरात्मा का परिष्कार जिस हिसाब से, जिस अनुपात से होता हुआ चला जाता है, उसी हिसाब से भगवान और उनकी शक्तियाँ मनुष्य के नजदीक आती हुई चली जाती हैं। अध्यात्म इसी के लिए बनाया गया था। उसका मूल उद्देश्य आदमी को श्रेष्ठ बनाना है, क्रमशः जीवात्मा से महात्मा, महात्मा से देवात्मा और देवात्मा से परमात्मा बनाना है। इन तीन सीढ़ियों को पार करते हुए चलना है। इसी मूल उद्देश्य को पूरा करने के लिए सारे के सारे धर्म-तंत्र बनाये गये, योगाभ्यास बनाये गये, तपश्चर्याएँ बनायी गईं। साधना विज्ञान बनाये गये और सारे का सारा अध्यात्म का इतना बड़ा कलेवर बनाया गया। आपको इसके उद्देश्यों को, पूजा-उपासना के उद्देश्यों को समझना चाहिए।

ब्रह्मवर्चस पैदा करने वाली गायत्री माता की छवि हमको यह बात बताती है कि हमारी आँखों में दिव्य तत्त्व का प्रवेश होना चाहिए। हमारी आँखों में जो चीज जैसी है, उसी तरह की देखने का माद्दा पैदा होना चाहिए। नारी क्या हो सकती है ? नारी हमारी माँ हो सकती है, बेटी हो सकती है, बहिन हो सकती है और उससे भी ऊँचा एक और स्थान है, उसको धर्मपत्नी कह सकते हैं। पत्नी नहीं धर्मपत्नी, जो हमारी सहअंगिनी, सहधर्मिणी है और समाज को श्रेष्ठ नागरिक देने के उद्देश्य से है। दोनों हाथों से जिस तरीके से नाव को चलाते हैं, उसी तरीके से स्त्री-पुरुष दोनों मिल करके जीवन की नौका को खेने के लिए और उसे पार करने के लिए खड़े हो जाते हैं। स्त्री हमारी सहधर्मिणी है, इसीलिए वह देवी है और पूजा करने योग्य है। अगर यह वृत्ति अपने अन्दर बसाई और बनायी जा सके तो हमारे मस्तिष्क की दिव्यसत्ता का अस्सी फीसदी बिखराव में जो नष्ट होता हुआ चला जाता है, उसे बचाया, रोका जा सकता है और अपनी आँखों में वह तेजस् पैदा किया जा सकता है, जिसके आधार पर हम भगवान को भी मजबूर कर सकते हैं और भौतिक लोगों को भी प्रभावित कर सकते हैं। अगर अपनी आँखों के द्वारा जो बिजली नष्ट होती रहती है उसको रोक पाएँ तब मैं आपसे कहता हूँ कि आपकी और हमारी आँखों में गान्धारी के तरीके से वह तेजस् पैदा हो सकता है कि हम अपने बच्चों को अगर यह आशीर्वाद दें कि तेरा शरीर लोहे का हो जाएगा तो लोहा बन सकता है और अपनी आँखों में वह ब्रह्मतेज पैदा किया जा सकता है जो गाँधी जी की आँखों में था। ३२ वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी स्त्री को 'बा' कहना शुरू कर दिया था, इससे उनकी आँखों में वह ब्रह्मतेज पैदा हुआ कि ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल को अपने वायसराय को यों लिखना पड़ा कि आप गाँधी जी से आँख मत मिलाना, उसकी आँखों में हिप्नोटिक पावर है। जिसको भी देख लेता है, उसी को वह प्रभावित कर लेता है, उसी को मैस्मराइज् कर देता है और अपने चंगुल में फँसा लेता है। आपमें से हर आदमी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की आँखों में वह मैग्नेट पैदा हो सकता है कि आप अपने लोगों को, पड़ोसियों को और हर आदमी को प्रभावित कर सकते हैं, अगर आप अपनी आँखों के बिखराव को रोक पाएँ तब।

मित्रो ! गायत्री माता हंस के ऊपर सवारी करती हैं। हंस से मतलब उस प्रतीक से है, जो हमारे भीतर एक वृत्ति पैदा करती है, संकल्प पैदा करती है कि जो आदमी हंस है गायत्री माता उसके ऊपर सवारी करेंगी। हंस गायत्री माता का प्रतीक है, जो जवान स्त्री के प्रति, भिन्न सैक्स के प्रति दिव्यता का, पवित्रता का भाव पैदा करता है, हंस वह आदमी जो मोती खाए, जिसके ऊपर दाग-धब्बे न हों। जो आदमी दूध और पानी को अलग करना जानता हो अर्थात् जिसके रोम-रोम में इनसाफ भरा हुआ पड़ा हो। हंस मोती खाता है अर्थात् जो विवेकवान है वे मोती खाते हैं अर्थात् न्याय की कमाई खाते हैं, ईमानदारी की कमाई खाते हैं और शुद्ध चीजें खाते हैं। वह आदमी हंस हैं, जो दूध और पानी में फर्क करते रहते हैं अर्थात् जो चीज सामने आती है, उसमें से यह फर्क करते हैं कि उचित क्या है और अनुचित क्या है ? यह कसौटी है खरे-खोटे की पहचान की। पुराने जमाने में जब सोने-चाँदी के सिक्के चलते थे, तब उनके ऊपर कसौटी लगाई जाती थी कि कौन सिक्का खरा है और कौन खोटा ? आपके पास जो भी घटना आये, परिस्थिति आये, व्यक्ति या विचार आये, प्रत्येक के ऊपर कसौटी लगाइये और देखिए कि इसमें क्या उचित है और क्या अनुचित है ? कौन नाराज होता है और कौन खुश होता है—यह देखना आप बंद कीजिए। यह दुनिया ऐसे पागलों की दुनिया है कि अगर आपने यह विचार करना शुरू कर दिया कि हमारे हितैषी किस बात में प्रसन्न होंगे, तो फिर आप कोई सही काम नहीं कर सकते। सही काम करना है तो फिर आपको यह बात उठाकर ताक पर रखनी पड़ेगी कि कौन नाराज होगा, कौन नहीं ? अगर आपको भगवान को प्रसन्न करना है और अपने ईमान को प्रसन्न करना है, जीवात्मा को प्रसन्न करना है तो लोगों की नाराजगी और प्रसन्नता की बाबत विचार करना एकदम बंद कर देना पड़ेगा। हमको भगवान की प्रसन्नता की जरूरत है, लोगों की प्रसन्नता नहीं। आपको सर्टिफिकेट लेना है तो अपनी जीवात्मा का लीजिए और किसी का मत लीजिए।

मित्रो ! वह गायत्री मंत्र जिसका हम आपको जप कराते हैं, जिस गायत्री माता की उपासना कराते हैं, वह सिर्फ उस आदमी के गले में माला पहना सकती है जो सत्यवान है। सत्यवान और सावित्री की कथा आपने सुनी होगी कि उसने सत्यवान का वरण किया था और कहा था कि हमने अपनी मनमर्जी से ब्याह किया है। यह सावित्री और गायत्री एक ही शक्ति का नाम है। गायत्री और सावित्री वरण कर सकती है। वरदान दे सकती है। कहना मान सकती है। उत्तर है—हाँ। नंदा नाई के बदले में पैर दबाने भगवान गए थे और गायत्री माता भी आपको दूध पिलाने के लिए और आपके पैर दबाने के लिए आ सकती है, आपका वरण कर सकती हैं, पर शर्त एक ही है कि आपको सत्यवान होना चाहिए। जो सत्यवान नहीं है, जिन्होंने अपना सारा जीवन झूठवान बना करके रखा है, जिसके व्यवहार में झूठ, विचारों में झूठ, नियम में झूठ, रोम-रोम में झूठ भरा पड़ा है, उसका यदि ख्याल हो कि गायत्री मंत्र बोलने के बाद में किसी ऐसी शक्ति को गुलाम बना सकता है, जो उसके मनमर्जी के मुताबिक जो भी मनोकामना होगी, उसको पूरा कर दिया करेगी, तो मेरे हिसाब से यह ख्याल गलत है। दुनिया में ऐसी कोई देवी नहीं है, जो किसी पूजा-पत्री करने वाले को निहाल इसलिए कर दिया करे कि उसने इतना जप किया, धूपबत्ती जलाई या इतना हवन कर दिया है। हवन, धूपबत्ती और जप की संख्या के नाम पर प्रसन्न होकर आदमी की मनोकामना को पूरी कर दिया करे, ऐसी देवी दुनिया में नहीं है।

गायत्री क्या हो सकती है ? उसका वाहन हंस क्या हो सकता है ? उसका सार और आधार समझाने की हमने भी कोशिश की है कि गायत्री उपासना से आपकी आँखों के अंदर दिव्यता, पवित्रता आनी चाहिए, जिससे आपको प्रत्येक के भीतर देवत्व दिखता हुआ चला जाए। कंचन और कामिनी के प्रति अपना दृष्टिकोण साफ करके रखें, ताकि आपकी आँखों में अर्जुन और शिवाजी की तरीके से वह तेज आ जाए। अर्जुन को गांडीव मिला था, आँखों का संयम कर लेने और उर्वशी के प्रति अपनी मातृ-बुद्धि रखने की वजह से और छत्रपति शिवाजी को देवी से तलवार मिली थी। तलवार और गांडीव देवी-देवता देते हैं या नहीं, लेकिन वे साहसिकता के रूप में, आदर्शवादिता के रूप में, चरित्रनिष्ठा के रूप में अवतरित अवश्य होते हैं और उसमें हजार हाथी के बराबर बल हो जाता है। अगर गांडीव में तथा शिवाजी की तलवार में हजार हाथी के बराबर ताकत रही होगी तो मैं इसको अचंभा नहीं मानता, सब सही है। अंतरात्मा की महानता में कितना बल होता है, आपसे मैं कैसे कह सकता हूँ ? आपने तो देखा भी नहीं है। अगर आप अध्यात्म की छाया में खड़े हुए होते तो आपको मालूम पड़ता कि गाँधी, बुद्ध, ईसा और विवेकानन्द में कितनी बड़ी ताकत थी और संतों में कितनी बड़ी ताकत थी ? अध्यात्म को आप समझते तक तो हैं नहीं। बार-बार वही माला, वही धूपबत्ती तक अपने आपको सीमित किए हुए हैं, फिर आपको किस तरीके से आध्यात्मिक लाभ हो सकता है ? गायत्री माता, जिसकी हम आपको उपासना कराते हैं, अनुष्ठान कराते हैं, उसकी भक्ति के अगर आप इच्छुक हैं तो यहाँ से जाने से पूर्व कम से कम उसका सही स्वरूप अपनी अंतरात्मा में अवश्य निर्धारित कर लीजिए। इससे आपका फायदा तो होगा ही, साथ ही अध्यात्म के ऊपर जो एक कलंक आ गया है कि इसका कोई माहात्म्य नहीं है, कोई फल नहीं है, वह दूर हो जाएगा। प्राचीनकाल में केवल सात ऋषि थे और उन सात ऋषियों की बजह से सारी दुनिया में अध्यात्म जिंदा था। अगर दुनिया में सात आदमी भी अध्यात्मवादी रह जाएँ तो भी अध्यात्म जिंदा रहेगा। वही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आदमी अध्यात्म के स्वरूप को जिंदा रखेंगे और उनकी बजह से ढेरों आदमी आ जाएँगे।

बेटे ! हमने अपनी जिंदगी में सही अध्यात्म को समझने की और जीवन में उतारने की कोशिश की और ढेरों आदमी आ गए। हम से एक लाख आदमी वे बँधे हुए हैं जो अखण्ड-ज्योति पढ़ते हैं। अखण्ड-ज्योति कौन-कौन पढ़ता है, अपने से बँधने का यह मैंने मानदंड रखा है। इससे एक लाख आदमी बँधे हुए हैं और एक लाख के सहारे, जो उनके स्त्री-बच्चे, पड़ोसी हैं, सब मिलाकर ५० लाख हो जाते हैं। एक सही अध्यात्मवादी ५० लाख आदमियों को प्रकाश देने में समर्थ है। हम लोगों को यह यकीन दिलाने, विश्वास दिलाने में समर्थ हैं कि गायत्री मंत्र में कुछ जान है और लोगों ने देखा कि आचार्य जी गायत्री मंत्र का जप करते हैं, इस मंत्र में कोई शक्ति होती है। बस इसी एक वजह से इतने लोग इकट्ठा हो रहे हैं और अभी जब तक मैं जिंदा हूँ मैं समझता हूँ कि सारी दुनिया भर में करोड़ों आदमियों को गायत्री मंत्र का उपासक बनाकर जाऊँगा, क्योंकि मैं एक सही अध्यात्मवादी आदमी हूँ और लोगों को यह मालूम है कि उपासना और उपासना का फल इनके पास है। इसलिए एक आदमी काफी है और सबके सब नास्तिक हो जाएँ तो इससे कोई बनता-बिगड़ता नहीं है। उस एक आदमी की वजह से ही ढेरों आदमी अध्यात्मवादी बन जाएँगे। इसलिए मैं चाहता था कि अध्यात्म का, गायत्री माता का असली स्वरूप आप समझ करके जाएँ, तब काम चले। तब फायदा हो। तब उद्देश्य की पूर्ति हो। तब फिर आपको भी आनन्द आए, गायत्री माता को आनन्द आए। फिर सबकी शिकायतें दूर हो जाएँगी। आपके पास वास्तविकता आ जाएगी और आपको जप करने के आधार और कारण मालूम पड़ते हुए चले जाएँगे।

हम आपको जो बार-बार जप कराते हैं, उसके कई प्वाइंट हैं। पहला प्वाइंट मैंने आपको शिक्षक-छात्र का पढ़ने-पढ़ाने का बताया है। दूसरा व्यायामशाला का। व्यायामशाला में आप जाइए और पहलवान जी से पूछिए क्यों साहब, क्या हो रहा है ? आप कितने दंड-बैठक करते हैं ? उत्तर मिलेगा २००-३०० बैठक करते हैं। यह क्या है ? रेपिटिशन जिसे बार-बार करना पड़ता है। मिलिट्री वाले लेफ्ट-राइट और कवायद के रूप में रोज रियाज करते रहते हैं। संगीत को जानने वाले रोज अपना रियाज करते रहते हैं। रियाज हाथ से गया कि संगीत हाथ से गया। स्नान करने और दाँत माँजने में हम रोज रेपिटिशन करते हैं। बर्तन साफ करते हैं तब, कपड़े साफ करते हैं तब, यह सब रेपिटिशन है। मन के ऊपर जो मलीनताएँ छाई हुई हैं, उसे धोने के लिए राम-नाम के माध्यम से, बार-बार जप करने के माध्यम से रेपिटिशन करना पड़ता है। हम बार-बार भगवान को पुकारते हैं। गज और ग्राह की लड़ाई में गज की एक टाँग ग्राह के मुँह में चली गई थी और ग्राह उसे घसीटता हुआ चला जा रहा था। जब गज ने देखा कि हमारा कोई ठिकाना नहीं है, बचाव की कोई सूरत नहीं है, तो उसने आवाज लगाई और भगवान को १००८ बार पुकारा। गजराज के एक हजार आठ बार पुकारने पर भगवान दौड़े हुए चले आये। बेटे, एक टाँग मुँह में पकड़कर घसीट ले गया था, कौन ? ग्राह। किसकी ? गज की और आप लोगों की तो सारी की सारी टाँगों को पकड़कर यह मगर घसीटे ले जा रहा है। एक काम, दूसरा क्रोध, तीसरा लोभ, चौथा मत्सर, पाँचवाँ अहंकार, छठा मोह—ये छह ग्राह कहाँ-कहाँ चिपके हैं—गर्दन पर, हाथ पर, पैर पर और पूँछ पर। ये सभी मुँह से पकड़ कर घसीटे ले जा रहे हैं। इसलिए हम भगवान को पुकारते हैं कि हे भगवान ! आप कहाँ हैं ? आइए। हमारी जीवात्मा ! आप कहाँ हैं ? आइए। हमारे जीवन-लक्ष्य, हमारे उद्देश्य, हमारे जीवन की महानता आप कहाँ हैं ? हे हमारे आदर्श ! आप कहाँ हैं ? आप आइए और हमको ले करके चलिए। बेटे, इसी के लिए हम जप कराते हैं आपसे।

जप का मोटा उद्देश्य तो मैं कितनी बार आपको समझाता रहा हूँ। गायत्री मंत्र का टाइपराइटर से उदाहरण देता रहा हूँ। मंत्र का हमारी जीभ से उच्चारण होता है। इससे शक्तिकेन्द्र खुल जाते हैं। बार-बार एक लयबद्ध और क्रमबद्ध शब्दों के उच्चारण करने से एक गति पैदा होती है—शब्द की गति। लोहे के पुल के ऊपर से फौजी कदम से कदम मिलाकर चलते हैं तो क्रमबद्ध एक लय उत्पन्न होती है, जिससे पुल के गिरने का जोखिम पैदा हो जाता है। इसलिए उन्हें कदम से कदम मिलाकर पुल पर चलने से मना कर दिया जाता है। इसी तरह एक लयबद्ध, दिशाबद्ध, क्रमबद्ध ढंग से उच्चारण किया हुआ शब्द इतना शक्तिशाली हो जाता है, जिसे समझाना मेरे लिए मुश्किल है। लेकिन साइंस के साथ मैं आपको समझा सकता हूँ, कि बार-बार एक ही शब्द को, एक ही गति से, एक चक्र से घुमा देने से 'सेंट्रीफ्यूगल फोर्स' पैदा हो जाती है। श्रेष्ठ शब्दों के गुंथन और बार-बार उनके उच्चारण के माध्यम से हमारे भीतर सेंट्रीफ्यूगल फोर्स पैदा हो जाती है। इसके अतिरिक्त बार-बार एक ही शब्दोच्चारण का एक साइकोलॉजिकल प्वाइंट भी है। पैरासाइकोलॉजी एवं मेटाफिजिक्स के हिसाब से हमारी चेतना चार हिस्सों में बँटी हुई है, जिसे प्रशिक्षित करने के लिए चार आधार और स्तर हैं। पहला वाला स्तर जिसको हम 'लर्निंग' कहते हैं। यह दिमाग का वह स्तर है, जो केवल एक बात को समझा देने से जानकारी मिल जाती है, जैसे आपको बता दिया कि ऋषिकेश यहाँ से २२ मील दूर है। इसकी जानकारी आपको हो गई। दूसरी परत वह है जिसे हम 'रिटेंशन' कहते हैं अर्थात् प्रस्तुत जानकारी को स्वभाव का अंग बना लेना। जिस बात को हम निरंतर करते रहते हैं, बहुत दिनों बाद वह हमारे स्वभाव में शामिल हो जाती है, आदत में शामिल हो जाती है। यह रिटेंशन कहलाता है। एक और परत है, जिसमें बहुत सी चीजें दबी हुई पड़ी रहती हैं और बड़ी मुश्किल से ही कभी-कभी याद आ जाती हैं। चेतना की इस परत में बहुत सारी चीजें दबी

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुई पड़ी होती हैं, जिन्हें हम भूल गए हैं। भूली हुई उन चीजों के ऊपर जब हम जोर देते हैं, उन पर प्रकाश फेंकते हैं तो वे स्मृतियाँ उठकर खड़ी हो जाती हैं, जाग जाती हैं, जिसे 'रीकाल' कहते हैं। आखिरी परत है—'रीकॉग्नीशन।' रीकॉग्नीशन उसे कहते हैं, जिसमें कि मान्यताएँ, आस्थाएँ, निष्ठाएँ और विश्वास जम जाते हैं। एक के बाद एक परत मिलती हुई चली जाती हैं। जप के द्वारा, उपासना के द्वारा अपनी जीवात्मा को उस स्थिति पर ले जाना पड़ता है जिसमें कि 'रीकॉग्नीशन' की स्थिति पैदा हो जाती है।

'सियाराममय सब जग जानी' यह वाक्य हमने हजार बार पढ़ा और हजार बार सुना है, लेकिन हमारे भीतर न राम के प्रति भावना पैदा होती है और न सिया के प्रति भावना पैदा होती है। हर आदमी हमें शिकार मालूम पड़ता है, हर मर्द शिकार मालूम पड़ता है, हर औरत शिकार मालूम पड़ती है। जबान से हम कहते हैं तो क्या बना ? रीकॉग्नीशन नहीं हो सका। मान्यताएँ, निष्ठाएँ परिपक्व नहीं हो सकीं। निष्ठाओं को परिपक्व करने के लिए बराबर रस्सी से जिस तरीके से पत्थर के ऊपर निशान बनाने के लिए रगड़ करनी पड़ती है, उसी तरीके से जप के द्वारा, उपासना के द्वारा बार-बार रगड़ बना करके अपनी अंतःचेतना के ऊपर निष्ठाएँ जमानी पड़ी हैं। इसीलिए हम आपको जप कराते हैं, इस तथ्य को आप लोग ध्यान रखना। आप जप करने का स्वरूप समझिए, कारण समझिए। किस कारण से जप कराते हैं, वह बजह समझिए। अगर आप समझ जाएँगे तो ठीक है, फिर आपको जप करना हो तो करना और न करना हो तो मत करना, पर कम से कम आपकी मान्यता तो सही होनी चाहिए। मान्यताएँ सही हो जाएँ, जानकारी सही हो जाए तो ठीक है। तब आप समझना कि पचास फीसदी मंजिल पार कर ली। आगे आपकी मर्जी। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति।

ब्रह्मतेजस के अभिवर्द्धन हेतु गायत्री उपासना

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

नारद पुराण का अनुवाद जिन दिनों मैं कर रहा था, उन दिनों एक बड़ी सुन्दर कथा पढ़ने को आई। वह कथा थी सत्यवान सावित्री की।

यह कथा आप सबने जरूर सुनी है। यह किसकी कथा है ? यह कथा आप सब ब्राह्मणों की है। ब्राह्मण माने—सत्यवान। सावित्री माने, वह माँ जिसके चरणों में हम और आप रोज मस्तक नवाते हैं। जिसको हम ब्रह्मशक्ति कहते हैं, आत्मशक्ति कहते हैं। जिसको हम वेदमाता और विश्वमाता कहते हैं। वह माता सावित्री है जो तलाश करती रहती है कि किसको वरण करूँ ? किसके साथ चलूँ ? किसका पल्ला भारी करूँ ? किसके साथ रहूँ ? उसको ऐसे आदमी की जरूरत है जो सत्यवान हो। सत्यवान माने ब्राह्मण। यह ब्राह्मण किसी वर्ण का नाम नहीं है, किसी कौम का नाम नहीं है, किसी जाति का नाम नहीं है। ब्राह्मण वह व्यक्ति है, जो ब्रह्म को जानते हैं, जिन्होंने ब्रह्म के तत्त्व को समझ लिया है, ब्रह्म के कर्तव्यों को जान लिया, वह ब्राह्मण हैं। ऐसे ही ब्राह्मण व्यक्ति को वरण करने के लिए, उनके साथ होने के लिए, उनके प्राण बचाने और रक्षा करने के लिए माँ गायत्री तलाश करती रहती है कि ऐसा कौन व्यक्ति है, जिसके गले में जयमाला पहना दी जाए ? ऐसा व्यक्ति ब्राह्मण होना चाहिए।

गायत्री मंत्र शक्ति का पुंज है, जिसकी प्रशंसा करते हुए वेद थकते नहीं। अथर्ववेद में वेदमाता गायत्री के बारे में कहा है—**'स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां ..... ।'** सात ऋद्धियाँ, सात विभूतियाँ, सात सिद्धियाँ दिया करती है गायत्री। किसको ? ब्राह्मण को। यह शर्त है कि ब्राह्मण के अलावा और किसी को नहीं देती। कोई भी जाए वह हर एक को मना कर देती हैं। आप लोग यही सुनते भी हैं कि गायत्री का अधिकार ब्राह्मण को है। उसे गायत्री का जप करना ही चाहिए। यहाँ ब्राह्मण का अर्थ किसी वर्ण-विशेष से नहीं है। यह विश्वमाता है। यह ब्राह्मण के लिए है, क्षत्रिय के लिए है, शूद्र के लिए है, हिंदू के लिए है, मुसलमान के लिए है, पारसी के लिए है, यहूदी के लिए है, काले लोगों के लिए है और सबके लिए है। विश्वमाता एक की नहीं हो सकती। सूरज एक का नहीं हो सकता, चन्द्रमा एक का नहीं हो सकता। हवा एक की नहीं हो सकती। पृथ्वी एक की नहीं हो सकती, भगवान एक का नहीं हो सकता और गायत्री भी एक की नहीं हो सकती। वह सबकी है। लेकिन यह कैसे कहते हैं कि वह ब्राह्मण की है ?· ब्राह्मण की इसलिए कहते हैं कि शक्ति को धारण करना, शक्ति को ग्रहण करना, शक्ति से ओत-प्रोत होना हर आदमी का काम नहीं है। इसके लिए भूमि चाहिए। भूमि अगर मनुष्य के पास न हो तो वह लाभ नहीं मिल सकता जो मिलना चाहिए।

गायत्री का लाभ प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ेगा ? गायत्री का जप करना पड़ेगा। पुरश्चरण करने पड़ेंगे। ध्यान करना पड़ेगा। गायत्री चालीसा का पाठ करना पड़ेगा। नवरात्रों का अनुष्ठान करना पड़ेगा। परंतु इतना ही काफी नहीं है। तब एक और भी काम करना पड़ेगा कि जो व्यक्ति इस शक्ति को धारण करना चाहता हो उसको अपने भीतर ब्रह्मतेजस उत्पन्न करना पड़ेगा। कोई जमाना था जब इस देश में ब्रह्मतेजस जगमगाता था।

मित्रो ! एक जमाना याद आया जब ब्राह्मण जगद्गुरु था। ज्ञान देने के लिए विश्व में वह जाता नहीं था वरन् सारे संसार के लोग शिक्षाएँ लेने के लिए हमारे पास आते थे। नालंदा और तक्षशिला के विश्वविद्यालय सारी दुनिया के लिए ज्ञान के केन्द्र बने हुए थे। ईसामसीह के बारे में जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नई खोज की गई है, उसके अनुसार यरुशलम से चलकर एक बालक तक्षशिला के विश्वविद्यालय में आया और कई वर्षों तक पढ़ा। पढ़ने के बाद में उसने रोम और दूसरे देशों में घूम-घूमकर सत्य और अहिंसा का शिक्षण देना शुरू किया। वही बालक पीछे ईसामसीह कहलाया। सारे विश्व के लोग इन विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए आते थे, जिनके शिक्षक, अध्यापक, डीन, वायस चांसलर ब्राह्मण होते थे, ऋषि होते थे और वे साधारण नहीं होते थे। मैं उनके गुणानुवाद गा रहा हूँ, जिन्होंने गायत्री की शक्ति को जाग्रत करके अपने भीतर धारण किया था। यह वर्ग यदि अपने उन्हीं कर्तव्यों पर टिका रहता तो आज विश्व की दशा कुछ अलग ही रही होती।

पूर्व पुरुष अपने पीछे अपनी संतानों को धन-दौलत देकर जाते हैं, चीजें देकर जाते हैं, लेकिन जिम्मेदारियाँ भी देकर जाते हैं। पूर्वज ऋषि हमको अपनी जिम्मेदारियाँ देकर गए हैं कि हम विश्व का संरक्षण, विश्व का मार्गदर्शन और दिशा देने का वजन अपने ऊपर लें। जनेऊ-संस्कार जब कराया जाता है, तब हर ब्राह्मण को एक प्रतिज्ञा करनी पड़ती है, कि **"वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहिताः"**—हम पुरोहित, राष्ट्र को जिंदा रखेंगे। राष्ट्र को, देश को जीवित और जिंदा रखने की जिम्मेदारी, जो पूर्व पुरुष छोड़ गए हैं, कदाचित हम उसे निभा सके होते तो हमने भी सिर ऊँचा उठा करके उन्हीं बातों को कहा होता जिनकी कि प्रशंसा हमारे शास्त्रों और ग्रंथों में ब्राह्मण की महत्ता के आगे सिर झुकाकर की गई है। हमको उन जिम्मेदारियों को निभाना ही चाहिए जो ब्राह्मण करते रहे हैं। प्राचीनकाल में ब्रह्मतेजस के धनी चाणक्य ने देखा कि राष्ट्र में अव्यवस्था फैल रही है। भारत छिन्न-भिन्न हो रहा है। उन्होंने चंद्रगुप्त को बुलाया और कहा, इसको सँभालने के लिए तुझको आगे बढ़ना चाहिए। चंद्रगुप्त के सिर पर चाणक्य का हाथ था। वे लड़ने नहीं गए तो क्या, लेकिन ऐसी शक्ति भर दी जिससे वह न जाने क्या से क्या कर सका ? यह काम आप भी कर सकते हैं यदि आपके पास गायत्री की शक्ति हो तब। लेकिन उस शक्ति को हम भूल गए। प्राचीनकाल में सारा विश्व आपके चरणों में इसलिए सिर झुकाता था कि हम शासन नहीं करते थे, पर शासकों पर नियंत्रण करते थे। रामराज्य में राम का राज्य हुआ, उनके पिता दशरथ का राज्य हुआ, उनके पिता रघु का, अज का, दिलीप का राज्य हुआ। पीढ़ियाँ होती चली गईं, लेकिन गुरु वशिष्ठ का नियंत्रण बराबर बना रहा। शासन चलते थे, पर उन्हें चलाते थे ब्राह्मण। कब ? तब, जबकि वे उसकी उपासना करते थे, जिसकी कि आराधना के लिए आप लोग हजार कुंडों का दीपक जला करके आरती उतारने चल रहे हैं। उस ब्रह्मशक्ति की जिस शक्ति से हम जगमगाते थे किसी जमाने में और राष्ट्रों पर नियंत्रण करते थे, शासकों को उत्पन्न करते, पैदा करते थे; शासकों को उतारते थे और चढ़ाते थे। विभूतियाँ हमारे चरणों के अंतर्गत रहती थीं, क्योंकि ब्रह्मतेजस हमारे पास था।

गायत्री आपकी माता है। आपकी माता वही नहीं है जिसने जन्म दिया वरन् आपकी माता शक्ति की पुंज विश्वमाता है। गायत्री को, अपनी माता को हम भूल गए। जो आदमी अपनी माता को भूल जाएगा, दूध कहाँ से पिएगा ? शक्ति का पुंज है यह गायत्री मंत्र। लेकिन हमारे मंत्र न जाने क्यों चमत्कार नहीं दिखा रहे हैं ? इसलिए नहीं दिखा रहे हैं क्योंकि एक हिस्सा हमारा बाकी रह गया है। जमीन को हमने सँभाला नहीं और बीज बो दिया। चरित्र जमीन है और मंत्र बीज। बीज वहीं उगेगा, फलेगा, जहाँ जमीन होगी। जमीन नहीं होगी तो बीज कैसे फलेगा ? मनुष्य का चरित्र सबसे बड़ा है। चरित्रवान की वाणी से वचन कहे जाएँगे, जो मंत्र बोले जाएँगे वे सत्य होते चले जाएँगे, मिथ्या नहीं हो सकते। शृंगी ऋषि द्वारा राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ की कथा आपने सुनी है। अब मैं आपको अपनी जिंदा आदमी की गवाही पेश करता हूँ। अभी पचास लाख व्यक्ति मेरे हैं। ठोस आदमी इसमें से एक लाख भी नहीं हैं, जो गायत्री मंत्र की विद्या सीखने, उसकी सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए आते हैं। फिर उनचास लाख कौन हैं ? ४९ लाख वे हैं जो दुःखी हैं, कष्ट में हैं, मुसीबत में हैं, जिनको सांसारिक और मानसिक कठिनाइयों ने घेर रखा है। वे भी आते रहे हैं और कहते रहे हैं कि मेरी ये दिक्कतें हैं, आप कोई सहायता कीजिए। मैंने कहा—भगवान से प्रार्थना करूँगा और भगवान से प्रार्थना सही होती चली गई। इस तरीके से कितने आदमी दुःखों को दूर कराने के लिए आते हैं। यह कैसे संभव हो गया ? गायत्री मंत्र की सिद्धि कैसे हो गई ? जप करने का महत्त्व क्या मैं अकेला ही जानता हूँ ? दूसरे किसी ने जप नहीं किया ? बहुतों ने जप किया, फिर फल क्यों नहीं मिला ? फल इसलिए नहीं मिला कि लोगों ने अपनी जीभ को जला दिया। झूठ बोला जीभ जल गई। पराया अन्न खाया, कुधान्य खाया जीभ जल गई। असत्य भाषण किया, दूसरों पर क्रोध किया जीभ जल गई। जली हुई जीभ के द्वारा किस तरीके से मंत्रों का उच्चारण और कैसे मंत्र को सफलता मिले ? जीभ जले नहीं, इसके लिए हमारे चरित्र और आचरण उच्चकोटि के होने चाहिए।

मंत्र कारतूस के तरीके से हैं और मनुष्य का व्यक्तित्व बंदूक के तरीके से। कारतूस का अपना महत्त्व है, पर उससे भी ज्यादा कीमती बंदूक है, जो बढ़िया लोहे की बनी और ढली हुई हो। हमें अपने चरित्र को, जीवन को उच्चकोटि का बनाना पड़ेगा। अपने आपको संयमी, ब्रह्मचारी, ईमानदार, नेक और शरीफ बनाना पड़ेगा। यही तो ब्राह्मण की परिभाषा है। ब्राह्मण जन्म से नहीं कर्म से होता है। कर्म भी हमारे ब्राह्मण जैसे होने चाहिए। अभी ब्राह्मणत्व खंडहर हो गया, टूट-फूट गया है जिसे फिर से 'रिपेयर' करने की जरूरत है। फिर हमको चरित्रवान, विद्यावान, सेवाभावी और ईमानदार बनने की जरूरत है। ऐसे व्यक्ति यदि हम अपनी साधना से पैदा कर सकते हैं तो हम ब्राह्मणत्व की सेवा कर सकते हैं और उस चमत्कार को देख सकते हैं जो गायत्री मंत्र के साथ में जुड़ा हुआ है, जो यज्ञ के माध्यम से जुड़ा हुआ है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ की महत्ता असाधारण है। राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ की कथा प्रसिद्ध है। रावण जब पराजित होने लगा तब उसने रामचंद्र जी की शक्ति का मुकाबला करने के लिए एक यज्ञ का आयोजन किया। राम और लक्ष्मण को जब पता चला तो उन्होंने कहा—यदि यज्ञ पूरा हो गया तो हमारी विजय मुश्किल हो जाएगी। हनुमान जी गए और यज्ञ का विध्वंस किया। यज्ञ की शक्ति बहुत बड़ी है। यह कोई समारोह या आयोजन नहीं वरन् शक्तियों का आह्वान है। यह उन शक्तियों का आह्वान है, जिसके द्वारा मनुष्य क्या से क्या बन सकता है ? ब्राह्मण पैदा नहीं होता, वह यज्ञ की अग्नि में पकाया जाता है। घड़ा पैदा नहीं होता, अग्नि के अवे में पकाया जाता है। **'महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयां क्रियते तनुः'**—ब्राह्मण पैदा नहीं होते, यज्ञों के द्वारा, महायज्ञों के द्वारा पकाए जाते हैं। चंद्रोदय और अभ्रक पकाया जाता है। खिचड़ी कहीं बनी-बनाई नहीं मिलती, पकाई जाती है। ब्राह्मण भी पैदा नहीं होते, वे यज्ञ के अवे में बनाए और पकाए जाते हैं।

प्राचीनकाल में पहले हम यज्ञ पिता को भोजन कराते थे तब भोजन करते थे। अग्निहोत्र हमारे जीवन का अंग था। गायत्री तपोभूमि में अखंड अग्नि स्थापित है। अखंड जप हमारे यहाँ होता है। उसका परिणाम है यह ब्रह्मवर्चस जिसकी आप उपासना करते हैं। आज की परिस्थितियों में यज्ञ की बहुत जरूरत है, जिसका कि आप लोग आयोजन कर रहे हैं। इससे मानव समाज की बड़ी सेवा होने वाली है। इससे लोगों के शारीरिक, मानसिक दुःख दूर हो सकते हैं। आप प्रयोग करके देखिए। जो लोग हवन में सम्मिलित हों उनके शरीर की बीमारियों के बारे में इम्तहान लेकर के देखिए कि हवन पर बैठने वालों की बीमारियाँ दूर हुई कि नहीं। मानसिक बीमारियाँ जिसमें क्रोध, काम, विकार, असंतोष, झल्लाहट, सनकीपन से लेकर पागलपन तक शामिल हैं, ऐसे लोगों को हवन पर बिठाकर देखिए कि शरीर और मन की बीमारियों को वह दूर करता है कि नहीं। यह व्यक्ति की बात है।

अब मैं व्यक्ति की नहीं, सारे विश्व के कल्याण की बात कहता हूँ। भगवान राम जब लंका विजय करके घर आए तब गुरु वशिष्ठ से पूछा—अब क्या करना चाहिए ? उन्होंने कहा—राम ! अभी तो स्थूल शरीर वाला रावण मारा है, पर सूक्ष्म रावण जिंदा है जो आकाश में फैला हुआ है। रावण ने जो बुरे कर्म किए थे, जो हवाएँ फैलाई थीं, जो गंदे विचार फैलाए गए थे उससे सारा आकाश क्षुब्ध हो गया है, उसे शांत करो। राम ने कहा—स्थूल रावण को तो मार दिया, पर यह कैसे मारा जाएगा ? गुरु वशिष्ठ ने कहा—अश्वमेध यज्ञ से। रामचंद्र जी ने दस अश्वमेध यज्ञ किए। बनारस के जिस स्थान पर दस अश्वमेध यज्ञ किए गए, उस स्थान का नाम दशाश्वमेध घाट पड़ा। गुरु वशिष्ठ जी ने कहा—अब वह रावण मारा गया, क्योंकि जिस आकाश में इतनी हाय, विध्वंस और हिंसा फैली हुई थी, उसका निवारण हो गया।

पिछले दिनों दो विश्वयुद्ध हो चुके हैं। उसमें कितनी आत्माएँ मारी गईं, कितने जीवों की हत्याएँ हुईं, कितनी गोलियाँ चलीं, कितनी बारूद आसमान में फैलाई गई। अंतरिक्ष दूषित और गर्हित हो गया। अब जो बच्चा पैदा होता है, वही संस्कार ले करके आता है गंदे आसमान में से। जो भी वृष्टि होती है, जो भी अनाज पैदा होता है, जो भी वनस्पतियाँ और प्राणी पैदा होते हैं—जन्म से ही वह संस्कार लेकर आते हैं। माता-पिता रोते हैं, अच्छी संतान हुई इससे न होती तो अच्छा रहता। यह संस्कार इस आसमान में फैले हुए हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने भी यही किया था। पांडवों ने कहा—भगवन् ! राजगद्दी मिल गई अब हम शांति से बैठेंगे। आप बताइए हमको अब क्या करना है ? कृष्ण ने कहा—सूक्ष्म दुर्योधन अभी नहीं मारा गया। सूक्ष्म कंस, सूक्ष्म जरासंध, सूक्ष्म शिशुपाल अभी नहीं मरे। केवल शरीरधारी शिशुपाल मरा। शरीरधारी कौरव मारे गए, पर सूक्ष्म कौरव मारने बाकी हैं। ये कैसे मरेंगे ? राजसूय यज्ञ किया गया।

उस यज्ञ से आकाश-अंतरिक्ष की शुद्धि की गई। अंतरिक्ष की शुद्धि के लिए और उन सबके लिए जो नई पीढ़ी के लोग पैदा होने वाले हैं, जो समस्याओं से उलझे हुए हैं, जो संकट और कठिनाइयों से भरे हुए हैं, उस सारी मानव-जाति का कल्याण करने के लिए जो यज्ञ कर रहे हैं, यह सबसे बड़ा परोपकार है। इससे बड़ा परोपकार और कुछ नहीं हो सकता। यह सारे मनुष्य जाति के लिए ब्रह्मभोज है। इससे बड़ा ब्रह्मभोज और दूसरा हो नहीं सकता। सारे विश्व के समस्त प्राणियों, वृक्ष-वनस्पतियों की इससे पुष्टि होती है। सब बलवान और नीरोग होते हैं। यज्ञ से असंख्य मनुष्यों के रोग, शारीरिक-मानसिक विकार दूर होते हैं। इससे विश्व में शांति होती है। दो महायुद्धों के द्वारा, गंदे सिनेमा और दूसरे गंदे गीतों के द्वारा जो आकाश प्रदूषित हो गया है, इसको वेद मंत्रों के द्वारा यज्ञ से दूर किया जा सकता है। इसमें सारे विश्व का कल्याण छिपा हुआ है और आप लोगों का कल्याण भी जिन्होंने यज्ञ का संकल्प किया है। आप लोग जो यज्ञ करने जा रहे हैं, उनके बारे में वेद भगवान ने ही विश्वास दिलाया, जिम्मेदारी उठाई, कसम खाई और कहा है—जिन लोगों ने मुट्ठी भरकर सामग्री से, हवन कर दिया, हमने उनकी मुट्ठियों को भर दिया। तुम घी का एक चम्मच भरकर लाए हवन किया, हमने तुम्हारी मुट्ठियों को घी से भर दिया। यह बैंक में जमा करने के बराबर है। यह चीजों को जलाता नहीं है वरन् हम जो चीजें हवन करते हैं उससे लाखों गुनी चीज इस सारे आकाश को मिल जाती है। यह एक वैज्ञानिक उपाय है। यज्ञ ब्रह्मतेजस जगाने की विधि है। यह वह कर्मकांड है जिससे न केवल हम और आप ब्रह्मसमाज के लोग अपना कर्तव्यपालन कर सकेंगे वरन सारी मनुष्य जाति के प्रति भी अपने कर्तव्यों का पालन कर सकेंगे।

गायत्री मंत्र जिसकी आप उपासना करते हैं, जिसको ब्रह्मास्त्र कहते हैं, यह ब्राह्मण का हथियार है। इसे कामधेनु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहते हैं, अमृत और पारस कहते हैं, जिसको छूकर लोहा सोना हो जाता है। यह गायत्री वेदमाता है। उसके प्रति आपके कर्मकांड सराहनीय हैं, लेकिन उससे भी अगला कदम आपका यह होना चाहिए कि जो भी गायत्री की उपासना करते हैं, उनको सत्यवान बनना ही चाहिए, ताकि यह सावित्री जो गायत्री का ही दूसरा नाम है, आपके गले में विजयमाला पहना सके। यह गायत्री शक्तियों का पुंज है, देवत्व की देवी है। यह ब्रह्मवर्चस है। यह सब कुछ है। कोई भी ऐसी चीज नहीं जो इसके पास न हो। यह सतयुग में भी फल देती है और कलियुग में भी फल देती है, पर शर्त एक ही है कि जिन-जिन लोगों ने गायत्री उपासना के प्रति कदम बढ़ाए हैं उनको दूसरा कदम यह बढ़ाना चाहिए कि अपने जीवन को उत्तम बनाएँ, उज्ज्वल बनाएँ। सदाचारी, विवेकवान, शिष्ट, पवित्र और परोपकारी बनाएँ। जैसे-जैसे अपने आपको साफ करते चले जाएँगे जीवन पवित्र और शुद्ध होता चला जाएगा, वैसे-वैसे ही भगवान के नाम का रंग, गायत्री का रंग आप पर चढ़ता हुआ चला जाएगा। यह रहस्य है, चाबी है गायत्री मंत्र की और अन्य सारे अध्यात्म की।

मित्रो ! मैं इसी राह पर अब तक चलता हुआ चला आया और यह अनुभव निकालने में समर्थ हो सका कि यह ब्रह्मतेजस जिसकी कि आप उपासना करते हैं और मैं उपासना करता रहा, एक शक्तिपुंज है। इसके बराबर उपासना करते हुए जो लाभ उठाया जा सकता है कोई दूसरा व्यापार, दूसरा लाभ और दूसरा परमार्थ नहीं। आप लोगों ने अनेक तरह के व्यापार और कार्य किए हैं। मेरा व्यापार जिंदगी भर यही रहा है और मैं जानता हूँ कि इस व्यापार से कितना लाभ उठाया जा सकता है ? कितना लाभ उठाया गया है ? मैं चाहता हूँ कि मेरे तरीके से आप लोग भी लाभ उठाएँ और उसी तरीके से लाभान्वित हों जैसे कि आपके पूर्व पुरुष लाभान्वित होते रहे हैं। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति।

ऋतम्भरा-प्रज्ञा का अवतरण

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

यह विश्व जब बना तब मानव भी अन्य प्राणियों की भाँति उसी तरह का था जैसा कि सभी प्राणी अपना शरीरयापन करने के लिए संघर्ष करते, भूख पूरी करने के लिए परिश्रम करते और बच्चे पैदा करने में लगे रहते हैं। ब्रह्माजी विचार करने लगे—इतना परिश्रम जो मनुष्य के ऊपर किया गया, किसलिये किया गया ? अगर मनुष्य को भी कीड़े-मकोड़े की तरह जीना था तो उसके लिए किसलिए परिश्रम किया गया, ब्रह्माजी ने विचार किया कि यदि यह प्राणी भी अन्य प्राणियों की तरह पेट पालता रहा, बच्चे पैदा करता रहा और अपने अहंकार के पूर्ति के लिए आपस में संघर्ष करता रहा, तब फिर इतना परिश्रम बेकार गया समझा जाना चाहिए। विचार करने के बाद ब्रह्माजी ने कहा—मनुष्य जिन विशेषताओं के लिए बनाया गया है, उसे उन विशेषताओं के लिए कुछ अनुदान भी देना चाहिए' और वह अनुदान उसे 'ऋतंभरा-प्रज्ञा' का दिया गया। विवेकशीलता, विचारशीलता, उच्चकोटि के आदर्शों में निष्ठा इन सब चीजों के समन्वय का नाम है 'ऋतंभरा-प्रज्ञा'। ऋतंभरा-प्रज्ञा अर्थात् विवेकशीलता, विवेकशीलता अर्थात् उन उद्देश्यों को याद रखना जिनके लिए भगवान् ने मानव प्राणी को बनाया। इस ऋतंभरा-प्रज्ञा की इस विश्व के प्रारम्भ में उसी तरीके से अतरणा हुई जिस तरीके से इस संसार में स्वर्ग से गंगा भगीरथ के द्वारा लाई गई।

ऋतंभरा-प्रज्ञा की धारा, आध्यात्मिक धारा स्वर्गलोक से आई, देवताओं से जमीन पर आई और मनुष्यों में प्रवाहित होने लगी। मनुष्यों में जब वह धारा प्रवाहित होने लगी, तब ऋतंभरा-प्रज्ञा का नाम पूजा-उपासना की, आध्यात्मिकता की भाषा में रखा गया—गायत्री विद्या—ब्रह्म-विद्या। आज उसी महान शक्ति का जन्मदिन है। वह महान शक्ति मनुष्य की तमाम शक्तियों को उभारने वाली है।

ऋद्धियों और सिद्धियों के बारे में अनेक बातें बताई जाती हैं। यह कहा जाता है कि मंत्र अनेक सामर्थ्यों के पुंज हैं, शक्तियों के, सिद्धियों के पुंज हैं। क्या यह बात सही है ? हाँ ! यह बात सही है, यदि गायत्री महामंत्र के स्वरूप को समझा जाए और जीवन में धारण किया जाए तब। गायत्री का स्वरूप ही न समझा जाए और उपासना जिस तरीके से की जाती है, उस तरीके से न की जाए तो उससे न तो भीतर से सिद्धियाँ उपजती हैं, न विभूतियाँ। स्वरूप क्या ? स्वरूप यह कि मनुष्य का जो विवेक सो गया है, उसे जाग्रत किया जाए।

ऋतंभरा-प्रज्ञा यह सिखाती है कि मनुष्य ! अहंकार में डूबे मत। बड़े आदमी बनने की चाह और ललक में अपने जीवन को बरबाद करे मत। 'ऋतंभरा-प्रज्ञा के तीन शिक्षण हैं। गायत्री मंत्र के तीन चरण हैं। ऋतंभरा-प्रज्ञा अर्थात् ब्रह्मविद्या, ऋद्धियों-सिद्धियों से भरी विद्या। इसका स्वरूप समझा जाना चाहिए जैसा कि मैं आपको समझा रहा हूँ और जैसा कि मैंने अपने जीवन में इस महाविद्या का स्वरूप समझने की कोशिश की।

मैंने ऋतंभरा-प्रज्ञा का पहला चरण यह समझने की कोशिश की कि मनुष्य को यश का भूखा नहीं होना चाहिए, बड़प्पन का भूखा नहीं होना चाहिए, अहंकार का पुतला नहीं होना चाहिए। दूसरों के ऊपर अपना रौब गालिब करने का और दूसरों की आँखों में बड़ा आदमी बनने का इच्छुक नहीं होना चाहिए। अगर आदमी इस तरह का नहीं बना, तब उसकी सारी सामर्थ्य और सारी की सारी जो विशेषताएँ हैं, भगवान ने जिसके लिए मनुष्य को बनाया है, वे उसके पास रह नहीं जावेंगी। मनुष्य निकम्मा और बेकार होकर रह जाएगा। मनुष्य का अहंकार जब तक बना रहेगा, उसकी पूर्ति का जब तक वह इच्छुक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

है, तब तक वह भगवान की इच्छा को पूरा नहीं कर सकता। न उसके पास समय बच सकता है, न शक्ति, न पैसा बच सकता है। आदमी का अहंकार बादल के बराबर, सुरसा के मुँह के बराबर है। इतना बड़ा है कि उसमें एक जीवन क्या, हजारों जीवन समाप्त हो जाएँ तो भी इसकी पूर्ति नहीं हो सकती। ऐसा आदमी भगवान के लिए काम कर सकता है ? नहीं। लोकमंगल और आत्मकल्याण के लिए काम कर नहीं सकता। समय और शक्ति को बरबाद करने वाले अहंकार को मिटाना ऋतंभरा-प्रज्ञा, गायत्री मंत्र का पहला चरण है।

दूसरा चरण यह कि मनुष्य को अपनी दो शारीरिक आवश्यकताओं के पूर्ति के लिए इतना व्याकुल-बेचैन नहीं होना चाहिए। मनुष्य को जो शरीर मिला है, वह उसके पहनने का लिबास मात्र है। आदमी का लिबास है, घोड़ा है, साइकिल है और इस साइकिल के लिए इतना बेचैन नहीं होना चाहिए कि सवार की इच्छा-आवश्यकता को ही भूल जाए। कलेवर की, इस शरीर की दो आवश्यकताएँ हैं—एक यह कि आदमी को भूख लगा करती है और रोटी की जरूरत होती है और भगवान ने, जिस दिन वह पैदा हुआ था यह विश्वास दिलाया था कि मनुष्य जब तक तू जिन्दा रहेगा, तब तक बराबर कोशिश करता रहूँगा और बराबर तेरी सहायता करता रहूँगा। कोई भी दिन ऐसा नहीं जाएगा कि अगर तू अपना पुरुषार्थ करता रहा तो पेट भरने के लिए कमी पड़े। भगवान ने, जिस दिन मनुष्य पैदा हुआ था, यह शिक्षण दिया कि माँ के पास गरम-गरम दूध के डिब्बे तुम्हारे लिए रखे हैं और यह सुविधा हमने इसलिए दी है कि जन्म होने पर तुम्हें यह मालूम पड़े कि हमारे ऊपर कोई संरक्षक शक्ति है। उसने यह शिक्षण दिया था, पैदा हुआ था मनुष्य जब, कि तेरे लिए धोबिन तैयार तेरे कपड़े धोने के लिए, तेरा खर्च उठाने के लिए, तेरा बाप तैयार। ये मेरे नुमाइंदे हैं तेरे लिए। मनुष्य ! पेट के लिए भटकना मत। पेट के लिए सिद्धान्तों को भूलना मत। पेट मैं तेरा भरता रहूँगा। जब कीड़ें-मकोड़ों का, सबका भरता हूँ तो मुझे पेट भरने के लिए चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। पेट के लिए कर्तव्य जरूर करना चाहिए, लेकिन अपनी अक्ल और भावना को उस पर बलिदान नहीं करना चाहिए। लेकिन हाय रे मनुष्य ! गायत्री मंत्र के इस शिक्षण को लात से रौंदता चला गया और यह उम्मीद लगाता रहा कि उसे भगवान का प्यार मिलेगा, ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ मिलेंगी। कैसे सम्भव था यह ?

तीसरा चरण एक और था। इन्द्रियाँ मनुष्य की बनाई गयी थीं कि मनुष्य का जीवन आनन्द से भरा हुआ रहे, उल्लास से भरा हुआ रहे। इस विवेकशील प्राणी को हँसने-हँसाने की, उल्लास की विद्या आनी चाहिए। इसके लिए उसे जिह्वा, आँख एवं कामेन्द्रियाँ मिली हुई थीं। सारी की सारी इसलिए कि मनुष्य आनंदित होकर जिये। पर हाय रे अभागे मनुष्य ! इन इन्द्रियों के भीतर जो ब्रह्मवर्चस-ब्रह्मतेज था, उन्हें नष्ट करता हुआ चला गया। जीभ का उपयोग आया होता तो उसने हर आदमी से मीठा वचन और प्यार का वचन बोला होता। उल्लास और आंनद से भरने वाला वचन बोला होता, आदमी को आगे बढ़ाने वाला वचन बोला होता। लेकिन आदमी जिह्वा इंद्रिय का उपयोग न कर सका। यदि किया होता तो हममें आप में से हर कोई १०० वर्ष जिया होता। हमने नशे पिए, जायके के लिए मिर्च-मसाले खाए, जो हमारी खुराक में शामिल नहीं थे। एक इंद्रिय का जिक्र मैंने किया, अन्य इन्द्रियों का मैं नहीं करना चाहता। करूँगा तो मनुष्य का निकृष्ट और पापी जीवन सामने आयेंगा और यह मालूम पड़ेगा कि जिसके लिए मनुष्य बनाया गया था, वह सारा का सारा उद्देश्य उसने चौपट करके रख दिया, ठीक उल्टी दिशाओं में चला।

ऋतंभरा-प्रज्ञा—गायत्री जिसका जन्मदिन है, तीन धाराओं के रूप में हमारे जीवन में प्रवाहित होती है, गंगा, यमुना और सरस्वती—तीन का जहाँ, जब कभी सम्मिश्रण बन गया, उसी जगह का नाम तीर्थराज बन गया। तीर्थ राज मनुष्य को बनाया गया था, तीन धाराओं के रूप में प्रवाहित होता हुआ। अहंकार से दूर, लोभ-तृष्णा-कामनाओं से दूर, इन्द्रियों के दुरुपयोग से दूर, मनुष्य इन तीन पापों से बचा हुआ रहता, तब उसके पास जो भगवान का दिया ब्रह्मवर्चस था, ब्रह्मतेज था, वह प्रस्फुटित होता और आदमी तीर्थराज बन गया होता।

ब्रह्माजी ने जब यह विश्व बनाया था तब विवेकशीलता, विचारशीलता रूपी उपहार जिस दिन मनुष्य को दिया, वह आज का गायत्री जयंती का ही दिन था। गंगा आज ही अवतरित हुई थी और गायत्री मंत्र के रूप में ज्ञान की गंगा आज के ही दिन अवतरित हुई थी। गंगा का एक स्वरूप स्थूल और एक स्वरूप सूक्ष्म है। गायत्री का एक स्वरूप स्थूल और एक स्वरूप सूक्ष्म है। गंगा का स्थूल स्वरूप आप देख सकते हैं—बाँध, नहरों के रूप में। गंगा खेतों के लिए पानी देती है, बिजली पैदा करती है। गंगा का सूक्ष्म रूप यह है कि जब आप नहाते हैं, यह प्रार्थना करते हैं कि स्वर्ग से आई देवी इस धरती पर प्रवाहित होती है और हमारे मन, हमारे अहंकार, हमारी अन्तरात्मा और हमारे अन्तरंग जीवन—इन सबको साबुन लगाती, मलीनताओं को धोती चली जाती है—पाप के कर्म-फल को नहीं, पाप-वृत्तियों को नष्ट करती हुई चली जाती है।

गंगा के पानी में नहाने वाले मात्र स्थूल गंगा का ही लाभ उठा पाते हैं। सूक्ष्म गंगा यह सिखाती है कि मनुष्य के अंतरंग में गंगा की पुण्य-पवित्रता और शीलता प्रस्फुटित होनी चाहिए और मनुष्यों की पाप-वृत्ति का समाधान होना चाहिए, पाप के दण्ड का नहीं। पाप के दण्ड का तो एक ही बचाव है कि पाप का प्रायश्चित करना चाहिए। आदमी ने जितना गड्ढा किया है, उतनी ही मिट्टी लाकर डालनी चाहिए। समाज को जितना नुकसान पहुँचाया है, उसकी पूर्ति होनी चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गंगाजी के साथ पवित्रता भरी पड़ी है, शांति और शीतलता भरी पड़ी है। उसे यदि हम अपने जीवन में स्थापित कर सकते हैं तो यही भावना भीतर आयेगी कि हमें गंगा के तरीके से निर्मल होना चाहिए, शीतल होना चाहिए। गंगा की तरह खेत और खलिहानों में अपने चारों तरफ खुशी, हरियाली पैदा करने वाला होना चाहिए, अगर यह भावना हमारे भीतर आयेगी तो पाप-वृत्तियाँ नष्ट हो जाएँगी और तब हम स्वर्ग-शांति-मुक्ति के अधिकारी होंगे। गंगा के सूक्ष्म स्वरूप के साथ यदि हम गंगा में स्नान करें तो यह अनुभव करते चलें कि गंगा माँ को अपने जीवन में प्रवेश करा रहे हैं, गंगा की लोकमंगल वृत्ति हमारे रोम-रोम में समाविष्ट हो रही है। जब नहा कर निकलें तब यदि यह अनुभव करते हुए निकलें कि अपनी पाप-वृत्तियों को हमने बहा दिया, भावी जीवन शुद्ध और पवित्र जियेंगे तो मैं कहता हूँ कि वह सारे का सारा माहात्म्य जो गंगा में स्नान का बताया गया है, वह जरूर सही होगा, जरूर लाभ देगा।

गायत्री मंत्र, ज्ञान गंगा, जिसका आज जन्म-दिन है, का स्थूल रूप वह है जो हमारी कल्पना के अनुसार एक महिला है कोई, कहीं आसमान में रहती है, हंस की सवारी करती है। हमारी आपकी स्थूल कल्पना है कि वह देवी खुशामद से प्रसन्न हो जाती है। हम जब आरती करते हैं उसकी, तो देवी फूलकर कुप्पा हो जाती है और कहती है—वाह भाई ! वाह, यह आरती करने वाला चेला खूब मिला और हम जब माला घुमाते हैं तो देवी बहुत खुश होती है कि हमारी जय बोलने वाला, पूजा-प्रशंसा करने वाला दुनिया में कोई नहीं था। अब यह भगत पैदा हो गया है। कैसी हमारी जय बोलता है, आरती उतारता है ?" वह यही देखती है कि भगत दे रुपया, दे पैसा, दे औलाद, कर इम्तिहान में पास, इन सबके अलावा और कुछ नहीं माँगता। यह स्थूल गायत्री है। इस स्थूल गायत्री के लाभों से मैं इनकार करता हूँ। यह यदि रहे होते तो हर मंदिर के पूजा करने वाले पुजारी को वे लाभ मिले होते। आप में से नब्बे फीसदी ऐसे हैं, जो गायत्री मंत्र का जप करते हैं। आपकी यह माला स्थूल माला है, स्थूल पूजा है। इसके बारे में मैं इनकार नहीं करता। मैं कहूँगा कि यह भी उपयोगी है। जितने समय आप पत्ते खेलते हैं, यहाँ-वहाँ मटरगश्ती करते हैं, उतने समय आप बैठ जाइए और भगवान का नाम लीजिए। मैं क्यों इससे इनकार करूँगा ? लेकिन जो लाभ-माहात्म्य बताया गया है, उसे यदि ग्रहण करना हो, वास्तव में अनुभव करना हो जैसा कि मैंने किया तो आपको उसके सूक्ष्म अंतरंग में प्रवेश करना होगा जिसका नाम गायत्री है।

गायत्री मंत्र जिसे आज के दिन ब्रह्माजी ने बनाया था, बहुत ऊँची स्थिति का बनाया था। जिसमें श्रद्धा का समन्वय था, विराट् दृष्टिकोण और आदर्शवादिता का समन्वय था। बाह्य कलेवर उसका था जरूर स्थूल। गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षर ? हाँ चौबीस अक्षर। जप करने के लिए माला की आवश्यकता ? हाँ, आवश्यकता। गायत्री मंत्र का पूजन करने के लिए रोली, चन्दन, धूप-दीप की आवश्यकता ? हाँ ! आवश्यकता। यह कलेवर है गायत्री माता के। लेकिन उसका अंतरंग ? जो विभूतियों और सिद्धियों से भरा पड़ा है, जिसे हम छू भी न सके, जिसके पास पहुँचने की कभी कोशिश भी नहीं की, वह अंतरंग हमसे अविज्ञात ही बना रहा।

गायत्री का अंतरंग यह कहता है कि मनुष्य को लोकमंगल के लिए, उत्कृष्ट जीवन जीने के लिए और प्रभु समर्पित जीवन जीने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। यह प्रेरणा है गायत्री मंत्र की। मनुष्य को अपने लिए ही नहीं जीना चाहिए। वह भगवान का सहायक है। भगवान ने उससे अपेक्षा रखी है कि वह उसकी दुनिया को सुन्दर बनाने की कोशिश करे। यह संकल्प धारण करे कि उसके पास जितना समय, बुद्धि, श्रम खुद को व अपने बच्चों को पालने के अतिरिक्त बचेगा उसे भगवान के लिए, लोकमंगल के लिए खर्च करेगा। भगवान बुद्ध, शंकराचार्य, गाँधी, लोकमान्य तिलक जब लोकमंगल के लिए जुट गए तो उनके घरवालों ने उन्हें बेवकूफ कहा। लोकमंगल के लिए जब कोई आदमी बड़ा काम करता है, तब उसकी पहचान यह है कि दुनिया के लोग उसको अमूमन बेवकूफ बताया करते हैं। इसलिए यह बात साफ है कि ये पागल मनुष्य जिस बात की प्रशंसा कर रहे हों तो समझना चाहिए कि दाल में कहीं काला है।

यह दुनिया इतनी बेवकूफ और बेहूदी है कि जिनकी प्रशंसा करती है वे उस लायक नहीं होते और जिन्होंने प्रशंसा की है उनका मुँह और तमीज तो प्रशंसा करने लायक है ही नहीं। इसलिए प्रशंसा के लायक वे व्यक्ति हैं आज, जिनकी कभी प्रशंसा नहीं होती। कभी आपका मन हो तो यहाँ से दो किलोमीटर की दूरी पर पिसनहारी का कुँआ है वहाँ जाइए। पिसनहारी कौन ? पिसनहारी बारह वर्ष की उम्र में विधवा हो गई थी। चक्की पीसती-पेट पालती। दो आने रोज कमाती, सात पैसों में गुजारा कर लेती। एक पैसा बचा लेती। जब मरने को हुई बुढ़िया तो उसके पास पाँच सौ रुपये थे। गाँव वालों को बुलाया और कहा—मेरी सारी जिन्दगी की धर्म की पवित्र कमाई है यह। यहाँ पानी का बड़ा अभाव है। इन रुपयों से एक कुँआ बना दिया जाए। जो भी इस रास्ते से गुजरें, उन्हें पानी मिले और वे मेरी जिन्दगी भर की कमाई का फायदा उठाएँ। पिसनहारी के इस कुँए का पानी मथुरा जिले की सब जगहों के पानी में सबसे बढ़िया और मीठा पानी है, जबकि शेष स्थानों पर पानी खारा है। लोग आते हैं, छाया में बैठते हैं, मीठा पानी पीते हैं। पिसनहारी का कहीं फोटो है ? नहीं। पिसनहारी का जुलूस, किताबें ? नहीं। पिसनहारी की कोई किताबें नहीं हैं, चंगेज खाँ की हैं, नादिरशाह के किस्से हैं, चीन की दीवार के हैं, डायनामाइट की खोज करने वाले अल्फ्रेड नोबुल की तारीफ की किताबें हैं। हमारे बच्चे उन्हें पढ़कर याद करते हैं। पिसनहारी का नाम इतिहास में नहीं है। इसलिए पहला शिक्षण गायत्री मंत्र का यह है कि यदि मनुष्य ऋद्धियों-सिद्धियों की ओर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

चलना चाहता हो तो उसे अपने पाप और पतन का एक द्वार बंद करना होगा और वह है अपने अहंकार की पूर्ति की, बड़प्पन की इच्छा। लोगों के सामने अपना चेहरा दिखाने व तालियाँ बजवाने की इच्छा। यह इच्छा यदि बनी रही तो आदमी सिद्धान्त और आदर्श के लिए, लोकमंगल के लिए काम नहीं करेगा। फिर तो पूजा भी यश के लिए करेगा। गायत्री मंत्र यह सिखाता है कि हमें बड़प्पन का भूखा नहीं होना चाहिए। अगर आदमी ने इस पर नियंत्रण कर लिया तो उसकी अस्सी फीसदी शक्तियों की बचत हो सकती है, उसकी जो अक्ल तबाह होती रहती है, उसका बचाव किया जा सकता है।

गायत्री मंत्र का दूसरा शिक्षण यह है कि मनुष्य के पास शरीर और मन की जो शक्तियाँ हैं, उन्हें वासना के द्वारा नष्ट-भ्रष्ट नहीं करना चाहिए। उन्हें संग्रहीत और निग्रहीत करना चाहिए। अपने आपको समेटना चाहिए, बिखेरना नहीं। आँख, नाक, वाणी, कान, कामेन्द्रिय आदि अपव्यय के लिए नहीं, सद्व्यय के लिए मिले हैं। अगर हम इसे देख-समझ सकते हों तो हमारे जीवन का पचास फीसदी भाग जो हमारी इन्द्रियों के द्वारा नष्ट होता चला जा रहा है, हम खोखले, निस्तेज होते चले जा रहे हैं, वह बच सकता है।

तीसरा शिक्षण यह कि हम अपने लोभ-लालच को, अपनी कामना-तृष्णा को निग्रहीत कर सकें तो हममें से हर आदमी कबीर बन सकता है। क्या कबीर को रोटी नहीं मिलती थी ? रैदास—मीरा, गाँधी को रोटी नहीं मिली ? किसको रोटी नहीं मिली ? और जिनको खूब मिली, उन्होंने कोशिश की कि रोटी के ऊपर रोटी रखकर खाएँ, पर वे खा नहीं सके। अगर उन्होंने अपनी इच्छा और अक्ल मोड़ दी होती लोकमंगल के लिए तो फिर वे सरदार पटेल हो जाते, महामना मालवीय हो जाते, देवदूत हो जाते, भगवान हो जाते। पर तीन ही राक्षस-पिशाच हैं जो हमको खा गए। दुर्गा के आख्यान में तीन ही राक्षसों का नाम आता है—महिषासुर, मधुकैटभ, शुंभ-निशुंभ। देवताओं को पराजित करने वाले इन तीन असुरों की तरह अहंता, तृष्णा और वासना रूपी असुर हमारी देव-शक्तियों को नित्य खाए जा रहे हैं।

त्रिपदा गायत्री की धारा जिसका कि आज जन्म-दिन है, इसलिए इस विश्व में आई थी कि गायत्री मंत्र के शिक्षण द्वारा—अर्चा, पूजन, अनुष्ठान द्वारा अपनी तीन धाराओं को प्रवाहित करें कि मनुष्य ! यश के पीछे मत भाग, अपने कर्तव्य के पीछे भाग। लोग क्या कहते हैं यह न सुनकर विवेक के पीछे भाग। दुनिया चाहे कुछ भी कहे, सत्य का सहारा मत छोड़।

आज गायत्री जयंती का दिन हमारे और आपके लिए संदेश लेकर आया है कि हमको चिंतन-मनन करना चाहिए। हजार बार सोचना चाहिए कि क्या हमारा जीवन प्रभु की इच्छाओं पर चलने वाला जीवन है ? हमें जो विभूतियाँ मिली थीं, सामर्थ्यें मिली थीं, उन्हें क्या हम मानव जीवन और भगवान के उद्देश्यों के अनुरूप खर्च कर रहे हैं या पेट के गुलाम होकर ही जी रहे हैं। जो इंद्रियाँ हमारे पास हैं, जिन्हें हम दुनिया में शांति और सुविधा उत्पन्न करने में खर्च कर सकते थे, क्या हम उन्हें पतन के लिए खर्च नहीं कर रहे ? इन तीनों प्रश्नों पर आज हमें तीन हजार बार विचार करना चाहिए।

मेरी उपासना की प्रक्रिया इसी प्रकार की चलती हुई चली गई। लम्बे जीवन भर मैं गायत्री मंत्र का जप करता रहा, स्थूल उपासना भी करता रहा, पूजा-प्रार्थना भी करता रहा। लेकिन अपने अंतरंग में गायत्री की उन तीन धाराओं को, जिन्हें मैं सूक्ष्म धाराएँ कहता हूँ, ज्ञान की गंगा कहता हूँ, भगवान् की प्रेरणा कहता हूँ, उनको अपने जीवन में धारण करने की कोशिश मैं करता रहा। अब जबकि यह मथुरा के मेरे जीवन का अंतिम गायत्री जयंती का अवसर है, तब मैं आपको अपने जीवन का अनुभव न सुनाऊँ तो यह उचित न होगा। इस अंतिम अवसर पर अपने सारे जीवन, साठ वर्ष के निष्कर्ष, जिसको आप चाहें तो गायत्री चमत्कार का मूल आधार कह सकते हैं, बता रहा हूँ। मेरे व्यक्तित्व में महानता आप समझते हों, गायत्री मंत्र की महत्ता के द्वारा आदमी को कुछ परिणाम मिल सकते हैं, अगर ऐसी आपकी मान्यता हो तो उस मान्यता के साथ एक और मान्यता जोड़ लेने की मेरी प्रार्थना है कि गायत्री ध्यान करने के लिए वास्तव में कोई महिला नहीं, विवेकशीलता और विचारशीलता की धारा के प्रवाह का नाम है, जो इस विश्व में प्रवाहित है, जो मनुष्य के मस्तिष्क को, क्रिया-कलाप को और अंतरात्मा को छूता है। ध्यान के समय आप हंस पर सवार हुई गायत्री का ध्यान करें बेशक, लेकिन यह भी ध्यान करें कि गायत्री माता सिर्फ हंस पर सवार होंगी, बगुले पर नहीं। हंस वह जो नीर-क्षीर का भेद जानता हो। दूध पी लेता हो, पानी को फेंक देता हो। इस दुनिया में पाप और पुण्य, अनुचित और उचित दोनों मिले हुए हैं। अंतरात्मा जिसे अनुचित कहे, उसे हम ठुकराएँ। जिसे उचित कहे उसी को स्वीकार करें, यह है हंसवृत्ति। यह है हंस पर सवारी। भगवान हम पर सवारी करें, इसलिए हमको हंस बनना चाहिए—सफेद बनना चाहिए।

यदि यह विवेकशीलता हमारे भीतर आ जाए तो हमारे जीवन की दिशाएँ बदल जाएँ। इस विवेकशीलता को मैं ऋतंभरा-प्रज्ञा कहता हूँ, गायत्री कहता हूँ। अगर यह हमारे अंतरंग में आ जाए तो हमारे जीवन का कायाकल्प हो जाए, हमारे काम करने और इच्छा करने के ढंग बदल जाएँ। तब हम भगवान बन जाएँ, हमारे पास न लक्ष्मी की कमी रहे, न विभूतियों की।

मैंने गायत्री उपासना को ऋतंभरा-प्रज्ञा के रूप में समझने की कोशिश की और समझाने की भी। लेकिन लोगों ने उसके बाह्य कलेवर को जो सुगम था और ऐसा मालूम पड़ता था कि हमारी कामनाओं और इच्छाओं को पूरा करने में सहायक है, उतने वाले हिस्से को पकड़ लिया और बाकी वाले हिस्से को गए भूल। असंयमी रोगी के लिए अच्छा हकीम कौन ? वह जो मनमर्जी का भोजन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने दे। सबसे अच्छी देवी कौन ? जो हमारी कामनाओं को पूरा करे। वही देवी है गायत्री। अपनी इच्छा के अनुरूप हमने दैवता को ढालने की कोशिश की इसीलिए देवता की समीपता से पूर्णतया वंचित रहे और वंचित रहेंगे। जिन्होंने भगवान की इच्छा के अनुरूप स्वयं को ढालने की कोशिश की, वे भगवान के कृपापात्र बन गए और सारे माहात्म्य गायत्री के प्राप्त कर सके। मैंने ऐसा ही जीवन जिया, इसी रूप में गायत्री मंत्र को समझा, उपासना की, जप किया और जप के साथ भावनाओं को हृदयंगम किया।

जब मैं चला जाऊँ और अब आप लोग यह विचार करें कि क्या गायत्री मंत्र सामर्थ्यवान है, तब आपको यह कहना चाहिए और समझना चाहिए कि हाँ—गायत्री मंत्र सामर्थ्यवान है। अगर आप उसकी भावना के अंतरंग में प्रवेश कर सकें तो आपको यह मानकर चलना चाहिए कि सारी की सारी जो सामर्थ्यें भगवान में हैं, वे सबकी सब भक्त में हो सकती हैं। भक्त में हो सकती हैं तो वह दुनिया को लाभ दे सकता है और अपना कल्याण कर सकता है।

आप अपनी मान्यताओं में यदि यह एक अध्यात्म और जोड़ लें तो मैं समझूँ कि मथुरा में गायत्री जयंती का मेरा यह अंतिम प्रवचन सार्थक हो गया। आपका सुनना और मेरा कहना सार्थक हो गया। गायत्री मंत्र और गायत्री विद्या का आविष्कार जिन महामानवों ने किया था, उनका उद्देश्य और प्रयोजन पूरा हो गया। इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

ॐ शांति।

गायत्री की युगान्तरीय चेतना

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आज गायत्री जयंती का पुण्य पर्व है तथा गंगा दशहरा भी आज है। गायत्री को आत्मा कहते हैं तथा गंगा को काया कहते हैं। आत्मा एवं काया का जन्म एक ही दिन हुआ था। आज गायत्री जयंती का पर्व मनाने के लिए हम एकत्रित हुए हैं। आज के दिन हम इतिहास पर नजर डालते हैं तो यह पाते हैं कि आज के दिन ही गंगा का भी अवतरण हुआ था। आज के दिन गंगा इस धरती पर आई थीं। मित्रो ! हमारा ख्याल है कि गंगा सर्वप्रथम भागीरथ की अंतरात्मा में कैसे आयीं होंगी ? सामान्य मनुष्य बड़ा तेज एवं चालाक होता है। उसे अपने अलावा किसी की बात समझ में नहीं आती है। उसे तो केवल स्वार्थ ही दिखाई पड़ता है। ऐसे मनुष्य को कर्तव्य, समाज की सेवा, परमार्थ तथा भगवान् समझ में नहीं आते हैं। उसके मन में हमेशा शैतान हावी रहता है। उसे पेट के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता है। परन्तु भगवान जब एक इनसान के मन में आये होंगे, जिसका नाम था भगीरथ, तो उसने यह सोचा होगा कि एक मनुष्य की सुख-सुविधा से ज्यादा महत्त्व का है-समाज की-संस्कृति की सेवा। उसने यही सोचा और क्या कर डाला ? उसने गंगा से भक्ति का नाता जोड़ डाला। यह भक्ति का प्रतीक है।

यह भक्ति अंतरात्मा में से उमगती है। भगीरथ एक राजकुमार था। उसके राजपाट थे, परन्तु उसने आदमी की खुशहाली के लिए अपना स्वार्थ, लोभ त्याग दिया। भगवान की भक्ति आती है तो करुणा के रूप में आती है, दया के रूप में आती है। गायत्री को हम माता कहते हैं, गंगा को भी हम माता कहते हैं। माता कोई देवी या औरत का नाम नहीं है। माता एक आदर्श का नाम है, सिद्धान्त का नाम है। गायत्री माता इसलिये कहलाती है कि उनके भीतर करुणा एवं दया है। माता का अर्थ करुणा एवं दया है। माता प्यार के लिये गलने का नाम है। आज तो लोग संतोषी माता की पूजा करते हैं, पता नहीं ये कहाँ से लोगों ने गढ़ा है। कितनी रोचक कहानियाँ बनायी हैं ? एक औरत थी, उसकी सास उसे तंग करती थी। संतोषी माता आयीं और उसने सास की पिटाई की। उसके बाद उसका पति तंग करता था। संतोषी माता आयीं एवं पति की पिटाई कर दी। यह मक्कार लोगों की कथा है। माता जब आती है तो एक मस्ती के रूप में, आदर्श के रूप में इनसान के पास आती है।

भगीरथ के हृदय में भी माता का उदय हुआ था। उसके सीने में, कलेजे में करुणा बही होगी। यह भावना की गंगा थी, जो विशाल होती चली गयी। हिमालय में से निकली विशाल गंगा बन गई। भगीरथ ने गंगा को मजबूर कर दिया कि आप स्वर्ग में बैठी हैं तथा धरती के लोग एक-एक बूँद पानी के लिए मजबूर हो रहे हैं, आपको शर्म आनी चाहिए। भगीरथ ने गंगा को मजबूर कर दिया। स्वर्ग की गंगा जो महलों में रहती थी, आराम का जीवन जीती थीं, वह भगीरथ के करुणा, त्याग एवं परमार्थ की भावना को देखकर मजबूर हो गई इस धरती पर आने के लिये। आज का यह ऐतिहासिक दिन महत्त्वपूर्ण है। गंगा कितनी विशाल है ? क्या आपने कभी सोचा ? वह हिमालय से भगीरथ के आवाज पर इस धरती पर आईं तथा इस धरती के लोग जो त्राहि-त्राहि कर रहे थे उन्हें राहत दी, उन्हें नया जीवन दिया। यह भगीरथ की त्याग-तपस्या का फल था, जिसके फलस्वरूप गंगा के अवतरण के साथ धरती धन्य हुई। आज का दिन गंगा अवतरण का महत्त्वपूर्ण दिन है। गंगा अगर स्वर्ग में रहती तो आज जो लोग गंगा के तट पर व्रत करते हैं, आरती करते हैं वह कौन करता ? गंगा ने सारे समाज को धन्य कर दिया। हम किसी औरत की जयंती मनाने नहीं आये हैं, हम आज आदर्शों की, सिद्धान्तों की जयंती मनाने आये हैं। उदारता की, इनसानियत की जयंती मनाने आये हैं। आप चाहें तो इसे गायत्री माता कह सकते हैं। आज गायत्री के अवतरण का भी दिन है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शेर खौफनाक होते हैं। उन्हें एक बार शिकार मिल जाए तो लम्बे पैर करके सोते रहते हैं। आपको ऐसा नहीं होना चाहिए। हमारा विचार है कि शेर से भी ज्यादा खौफनाक इक्कड़ व्यक्ति होते हैं, जो केवल अपने पेट, अपने बच्चे आदि को ही देखते हैं। समाज का उन्हें कुछ ध्यान नहीं होता है। अकेला हाथी इतना खतरनाक होता है कि उसका क्या कहना है ? उसी प्रकार इक्कड़ आदमी होता है। ऐसे आदमी ही आज समाज को तहस-नहस कर रहे हैं। जो आदमी यह सोचते हैं कि मेरा पैसा बढ़ना चाहिए, मेरी तरक्की होनी चाहिए। मेरे परिवार का विकास होना चाहिए। उन्हें हम इनसान नहीं, शैतान कहते हैं। ऐसे खतरनाक आदमी सारे समाज को बर्बाद कर देते हैं। संत भी हैं परन्तु वह भी 'इक्कड़' हैं। उनको भी निरंतर यही ध्यान रहता है कि मेरी सिद्धि होनी चाहिए, मेरा ही विकास होना चाहिए। ऐसा व्यक्ति भी 'इक्कड़' होता है।

आज गायत्री जयंती का दिन है, जिसे विश्वामित्र ने सिद्ध किया था। अपनी तपश्चर्या का लाभ उन्होंने सारे समाज को दिया था। एक दिन उन्होंने अपने शिष्य हरिश्चन्द्र से पूछा कि क्या हम आपको मार डालें, आपको तबाह कर दें ? तो उन्होंने कहा कि आपने जब इसके द्वारा ही महानता प्राप्त की है तो हम भी जलने के लिये तैयार हैं, आप सहर्ष इस कार्य को करें एवं हमारी आध्यात्मिक परीक्षा लें। गुरुवर ! हम भी इस मस्ती का लाभ उठायेंगे। राजा हरिश्चन्द्र अपनी परीक्षा में सफल हो गये और इस धरती पर धन्य हो गये। राजा हरिश्चन्द्र का ड्रामा देखकर महात्मा गाँधी रो पड़े थे और उन्होंने यह निश्चय किया कि हम भी इसी प्रकार का जीवन जियेंगे। मित्रो ! मुसीबतों का जीवन कुछ बिगाड़ नहीं सकता है। आदमी की जिन्दगी में से मुसीबतें निकल जाएँ तो, उसका जीवन दो कौड़ी का होता है। आदमी की जिन्दगी में इसके कारण ही निखार आता है, उसका विकास होता है। महापुरुष, संत इसी कारण से महान बने हैं और बढ़े हैं। अगर इनसान अपने लिये मुसीबत न उठायेगा तो दूसरों के लिए वह क्या कर सकता है ? हमने भी ऐसी मुसीबतें उठायी हैं। मित्रो ! ऐसी मुसीबत का ही नाम तप है जो हर इनसान के विकास के लिए आवश्यक है। आप इसके लिए घबड़ाएँ नहीं, उसे बुलाएँ। इसके द्वारा आदमी में पैनापन आता है, आदमी में निखार आता है। यह आदमी को सोने का बनाती है। आदमी को प्रामाणिक बनाती है। विश्वामित्र पर गायत्री आई तो उन्हें मुसीबतों से गला-तपाकर महान बना दिया।

हम आपसे प्राचीनकाल की बात न करके आज की बात करना चाहते हैं। आज गायत्री जयंती का दिन एक ऐतिहासिक दिन है। यह भगवान का दिन है। आपको दिखलाई नहीं पड़ता है। रामचन्द्रजी जब पालने में झूल रहे थे तो तब आपको भगवान दिखलाई पड़े ? आपको तो तब भगवान दिखलाई पड़े जब वे रावण को मारकर आये और राम राज्य स्थापित कर दिया था। परन्तु कुछ ऐसे आदमी भी होते हैं, जिन्हें भगवान पहले दिखाई पड़ जाते हैं। उसी प्रकार आज भी भगवान् का अवतार हो गया है। यह प्रज्ञा अवतार समय की आवश्यकता है। जब कभी-भी पृथ्वी पर अनीति, अत्याचार बढ़ता है, भगवान् का अवतार होता है। आज की ऐसी ही स्थिति है तथा इस कारण से 'प्रज्ञा अवतार' हो गया है। इसे भी कुछ लोगों ने राम की तरह पहचान लिया है तथा वे प्राणपण से उनके कार्यों में लगे हैं।

आज का दिन महत्त्वपूर्ण है। आज गायत्री जयंती का दिन है। अगले दिनों आज के दिन से ही इनसान के अंदर एक दिव्य हलचल होंगी। कुरीतियाँ मिटेंगी, अनीति समाप्त होगी। सभी धर्म एवं संस्कृतियाँ एक हो जाएँगी। धरती पर स्वर्ग का अवतरण होगा। जमाना एक हो जाएगा। भगवान एक हो जाएँगे। आज तरह-तरह की वेशभूषा पहने, विभिन्न भाषाओं को बोलते हुए लोग दिखाई पड़ते हैं। अगले दिनों ऐसा मालूम पड़ता है कि ये सब चीजें समाप्त होने वाली हैं। आचार, संस्कृति, भाषा सब एक हो जाएँगे। सारे के सारे धर्म, राष्ट्र, संस्कृति एक होने वाली हैं, अगले दिनों विशाल परिवर्तन होने वाला है। **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** की भावना पनपने वाली है। कमाने वाला अकेले नहीं खा सकता है, उसे समाज, परिवार, राष्ट्र को देखकर चलना होगा। हम कमाते तो जरूर हैं, लेकिन हमारे इस पैसे पर केवल हमारा ही हक नहीं है। हमारी बूढ़ी माता कमाती नहीं है, उसके लिये भी हमें देना होगा, उसकी व्यवस्था बनानी होगी। आप कमा तो सकते हैं, परन्तु खाने पर आपके ऊपर अंकुश लगा है। आप केवल अकेले खा नहीं सकते हैं। आप समाज को, परिवार को, नौकर को खिलाकर खाएँ। आने वाला दिन आपको दिखलाई पड़ता है कि नहीं, यह पता नहीं, परन्तु हमें दिखलाई पड़ता है कि ऐसा ही होने वाला है।

आज गायत्री माता का जन्मदिन है। यह बहुत ही शानदार दिन है। गायत्री माता किसी समय वेदमाता बनीं थीं, जिन्होंने सारे वेदों को जन्म दिया था। सारी संस्कृति एवं सभ्यता को जन्म दिया था। उस समय यह गायत्री माता वेदमाता बनीं थीं। उसके बाद गायत्री माता देवमाता बनीं। हिन्दुस्तान के निवासी देवता थे। वे स्वयं तो खाते कम थे, पर खिलाते अधिक थे। उन्होंने खाया कम, खिलाया ज्यादा। ब्राह्मणों ने खाया कम, खिलाया ज्यादा। ऋषियों ने खाया कम, खिलाया ज्यादा। यहाँ के नागरिकों ने खाया कम, खिलाया ज्यादा। यहाँ के नागरिकों ने सारी दुनिया में अपनी सम्पदा को बाँट दिया। वे विदेशों में चले गये, इण्डोनेशिया, अमेरिका आदि सारी दुनिया में चले गये और अपनी प्रतिभा को वह बिखेरते चले गये। वे देवमानव थे। उन्हें अकेले खाते समय मन में अप्रसन्नता होती थी तथा खिलाते समय वे प्रसन्न होते थे। अकेले खाने के समय वे शर्मिन्दा होते थे। एक बार हमें भी शर्मिन्दा होना पड़ा। माताजी ने किसी के कहने पर हमें एक गिलास मौसमी का रस दे दिया था। हम काम में व्यस्त थे, माताजी ने दिया तो हम उसे पी गये, परन्तु थोड़ी देर के बाद पेट में ऐसा लगा कि किसी ने हमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तेजाब पिला दिया। हमें मालूम पड़ा कि ये मौसमी का रस था। हमने अपने मुँह में अँगुलियाँ डालकर उल्टी कर दी तथा उस समय तक चैन नहीं आया जब तक कि मौसमी का रस पेट से न निकल गया। माताजी ने पूछा कि क्या मक्खी आ गई ? हमने कहा कि नहीं, हम इसे कैसे पी सकते हैं ? हमारे बच्चे जो गायत्री तपोभूमि में हमारे कहने से, हमारी आवाज पर आ गये हैं, उनको न दूध मिलता है, न घी। उनके बच्चे बिना दूध के रहते हैं। तब हम मौसमी का रस कैसे पी सकते हैं ?

मित्रो ! अगले दिनों लोगों को खाने से ज्यादा मजा खिलाने में आयेगा। अकेले खाने वालों को अगले दिनों लोग यह कहेंगे कि आपको शर्म नहीं आती है, आप खाते चले जाते हैं, खाते चले जाते हैं। आपको शर्म आनी चाहिए। पड़ोसी तथा पीड़ित-पतित एवं भूखे लोग आपको दिखलाई नहीं पड़ते हैं, मक्कार कहीं का। केवल अपना पेट, अपनी बीबी, अपने बच्चे ही दिखलाई पड़ते हैं। आपके भीतर से जब गायत्री माता उदय होंगी तो आपको चमत्कार रख देंगी। आपके विचारों में परिवर्तन कर देंगी। आपको सारा परिवार, समाज, देश दिखलाई पड़ेगा। आप देवता बनते चले जाएँगे। गायत्री माता हंस पर बैठकर कमण्डलु लेकर नहीं आती है, वह केवल करुणा के रूप में, दया के रूप में आपके अंदर आयेगी। यही उसका स्वरूप है जो आपको देवता बनाकर जाएगी। उस समय आपको देवता की तरह से जीना पड़ेगा। आप हैवान तथा शैतान की तरह से नहीं जी सकते हैं। आप मालदार एवं पूँजीपति की तरह से जी नहीं सकेंगे। आपके जीने एवं रहने का ढंग अजीब हो जाएगा। आप बाँटकर खायेंगे तथा दूसरों की मुसीबतों को बँटाने का काम करेंगे। आप अपनी खुशहाली को बाँट देंगे तब प्रसन्नता आपके अंदर से आ जाएगी।

आज करुणा की माता जन्म लेने वाली है। आज गायत्री माता जन्म लेने वाली है। आज प्रज्ञावतार जन्म लेने वाला है। अवतार कब जन्म लेते हैं जब—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

अवतार लेने के बाद भगवान केवल तीन काम करते हैं। सज्जनों की रक्षा, दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन और धर्म की स्थापना करनी पड़ती है उनको। भगवान एक ही काम करता है चाहे वह बाहरी दुनिया की दुष्प्रवृत्तियाँ हों या मनुष्य के अंदर हों, उसे तोड़ता, उसे नाश करता हुआ चला जाता है। उसे हटाता चला जाता है। वह उसके साथ ही निर्माण यानी जिलाने का काम भी करता है। सज्जनों की रक्षा भी करता है। वह डबल रोल करता है। भगवान इनसान की बुरी परिस्थितियों को तोड़ता चला जाता है तथा दूसरा काम बनाता चला जाता है अर्थात् परिस्थितियाँ ठीक करता चला जाता है यह भगवान का डबल रोल है—ध्वंस एवं सृजन का। इसी का नाम गलाई एवं ढलाई है। आप टाटा नगर चले जाना वहाँ देखना बड़ी-बड़ी चिमनियाँ बनी हुई हैं। उसमें लोहे के टुकड़े आदि डाल दिये जाते हैं। वहाँ पर उनकी गलाई होती है। उसमें सब गलकर एक हो जाते हैं। उसमें गलत चीजें भी गल जाती हैं। इसका क्या नाम हैं ? गलाई। उसके बाद अच्छी चीजें बन जाती हैं, उसे ढलाई करके नया रूप दे दिया जाता है। इसी प्रकार भगवान का ध्वंस एवं सृजन का काम भी चलता रहता है। भगवान अगर किसी को मुसीबत देता भी है तो कोई खास मकसद के लिये देता है।

मैं क्या कह रहा था आज गायत्री जयंती के दिन—कि अगले दिनों जो समय आने वाला है उसमें भगवान गलाई-ढलाई करेगा। आप हमारी आँखों से, हमारे दूरबीन से देखिये न। नहीं गुरुजी। अगले दिन तबाही आयेगी। बेटा तबाही आयेगी तो निर्माण के लिए आयेगी। तो क्या अगले दिन डरावने हैं ? हाँ डरावने भी हो सकते हैं। इसके लिए हम क्या कह सकते हैं। बच्चे पैदा होते हैं तो मुसीबत भी आती है, परन्तु उसके बाद खुशियाँ भी मनायी जाती हैं। मिठाई भी बाँटी जाती है। अगले दिन हमको खुशहाल दिखाई पड़ रहा है। अगले दिनों में हमें खूबसूरत इनसान दिखलाई पड़ रहे हैं। खुशहाल दुनिया दिखलाई पड़ रही है।

अगले दिन हमको गायत्री माता का वह दिन दिखाई पड़ रहा है, जो आज का दिन है, जो लोगों को प्रभावित करने वाला है। इनसान के भीतर का देवता जो सो गया है, वह जगने वाला है। अगले दिनों इनसान के भीतर से देवता जगेगा। इसे मनुष्य में देवत्व का उदय कहा जा सकता है। हमने इसके साथ यह भी कहा है कि धरती पर स्वर्ग का अवतरण होगा। अगले दिन दुनिया में बहुत शानदार एवं अच्छी परिस्थितियाँ आयेंगी। जमाना बहुत सुंदर आयेगा। धर्म, संस्कृति, भगवान सब एक हो जाएँगे। अगले दिन सब भगवान एक हो जाएँगे ताकि कोई आपस में न लड़ सकें। अगले दिनों भाषाएँ भी एक हो जायेंगी। जो आपस में लड़ती-मरती हैं, वह एक हो जायेंगी। अगले दिनों आचार एवं संस्कृति एक हो जायेगी। पर्व जो आयेंगे, उसमें सब को छुट्टी मिलेगी। कोई एक व्यक्ति का पर्व नहीं होगा। संस्कृति, सभ्यता, इनसान, राष्ट्र एक होने वाला है। एक ही संस्कृति अगले दिनों चलने वाली है। सारी दुनिया एक कुटुम्ब की तरह रहेगी। इसमें बूढ़ी माता तथा जो नहीं कमा रहें हैं, उनका भी हक होगा। सब मिल-बाँटकर खायेंगे। आपस में प्रेम, आत्मीयता होगी। कमाने वाला ही केवल नहीं खा सकता है। उन पर अंकुश लगा हुआ है।

आने वाले दिन हमको बहुत शानदार दिखलाई पड़ रहे हैं, आपको दिखलाई पड़ रहा है या नहीं। हम नहीं कह सकते। इस बार गायत्री माता सभी को देवता बनाना चाहती हैं। वे सभी को महान बनाना चाहती हैं। अगल बीस साल बड़े महत्वपूर्ण हैं। इस समय आप लोगों को कुछ विशेष काम करने हैं। आप सब लोग लोभ, मोह की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बेड़ियों को काट डालिये। अरे ये हथकड़ियाँ आपके हाथों में लगी हैं, उसे काटिये। ढेरों की ढेरों अकल, समय हर आदमी के पास है। आपने अभी तक इसे बेकार में खर्च किया है तथा बर्बाद किया है। अब आप समझदार आदमी बन जाएँ तथा इसका उपयोग अब आप सही ढंग से करना सीखें। आप कम में गुजारा करना सीखिये। औसत भारतीय का जीवन जीना सीखिये ताकि कुछ राष्ट्र एवं समाज के लिए भी खर्च कर सकें। आप अपने बच्चों को संस्कारवान बनाने का प्रयास करें। आपका बच्चा लुहार, बढ़ई हो जाए तो कोई हर्ज की बात नहीं है। अगर आप बड़े आदमी जैसे वकील, दरोगा, डॉक्टर, इंजीनियर न बनाकर उसे संस्कारवान बनाएँ तो बेहतर है। ये बड़े आदमी आपके लिये, अपने लिये, समाज के लिये समस्या बन जाएँगे तथा तबाही लाएँगे। आप उन्हें संस्कारवान बनाएँ। आप अपने विचारों में अगर परिवर्तन कर सकें तो बहुत मजा आयेगा। आज गायत्री का जन्मदिन है, अगर वह आपके जीवन में आ गयी तो वास्तव में आपको धन्य कर देगी।

अभी तो आपकी शक्ति, सामर्थ्य, धन, अक्ल सब बेकार कामों में खर्च हो रहा है। लेकिन जिस दिन गायत्री माता आपके जीवन में आयेगी तो सारे के सारे जीवन क्रम में उलट-फेर हो जाएगा। हमारा गुरु जिस दिन हमारे पास आया आज से पचपन वर्ष पूर्व तो उसने हमारे लोभ, मोह की बेड़ियों को काट डाला। वह दिन परम सौभाग्य का दिन था। उस दिन मेरे गुरु के रूप में भगवान आये थे और उस दिन से हम अपनी सारी चीजें अपने गुरु को, भगवान को सौंपते चले गये। हम अपनी अकल को, पैसे को, सब कुछ को भगवान को सौंपते चले गये और मालदार होते हुए चले गये। एक दिन एक व्यक्ति कह रहा था कि बच्चा जिस दिन जन्म लेवे, उसके नाम एक हजार जमा कर दीजिये तो वह ३६ साल बाद एक लाख ३२ हजार हो जाता है। पहले हमें विश्वास नहीं हुआ, परन्तु जब उसने बतलाया कि हर पाँच साल के बाद डबल होता चला जाता है। पता नहीं यह कहाँ तक सत्य है, परन्तु हमने भगवान के बैंक से तो न जाने कितनी चीजें प्राप्त कर लीं तथा आज हम आप सबों से ज्यादा मालदार हैं। हमारे गुरु ने, भगवान ने अपने बैंक से इतना दिया कि कोई भी बैंक या ऑफिस इतना नहीं दे सकता है।

अतः आज हम आप सबों से कहना चाहते हैं कि आप सब लोग मोह, लोभ की अपेक्षा, बेटे, पोतों को देने की अपेक्षा समाज को, राष्ट्र को खिलाना सीखें तो आपके भी मालदार होने की गुंजायश होगी। आपसे प्रार्थना है कि आप स्वयं खाने की अपेक्षा खिलाना सीखें। आप कहते हैं कि हम खायेंगे तो पहलवान हो जाएँगे। हम कहते हैं कि आप खाने से पहलवान नहीं हो सकते हैं। आप अगर अकेले खायेंगे तो आप सबों के पेट में दर्द होगा तथा डाइबिटीज होगी। आप विटामिन 'ए' खायेंगे, अण्डा खायेंगे तो ही पहलवान नहीं हो जाएँगे। घास या पत्ते खाने से भी आदमी ताकतवर हो सकता है। हम जब हिमालय चले जाते हैं, उस समय हमें केवल वहाँ पर घास तथा पत्ते ही मिलते हैं। परन्तु क्या हम तुमसे कम ताकतवर हैं। वहाँ कंद-मूल भी नहीं है। हम पत्ते को उबालकर खा लेते हैं और आज हमारी सेहत १७ वर्ष के लड़के की तरह है। हम कितना काम करते हैं, आप जानते नहीं ? हम आज ७० वर्ष के हो गये परन्तु १७ वर्ष के लगते हैं। आप वही खाएँ जो ब्राह्मण, सदाचारी, अपरिग्रही खाते रहे हैं, तो आप देखेंगे कि आपकी सेहत कैसी रहती है ?

आप आज गायत्री जयंती के दिन यहाँ आये हैं तथा यहाँ पर्व मना रहे हैं। आपसे प्रार्थना है कि आप लोकहित के लिये जीवन जीना सीखें। प्रभु के चरणों में समर्पित हों तो आपका यह पर्व मनाना सार्थक होगा। यह नसीहत हम आपको इस पावन पर्व के दिन दे रहे हैं। यह नसीहत हमारे गुरु ने हमें दी थी। उसके पहले हमारी माताजी ने दी थी, जो ६२ वर्ष की होकर मरी थीं। वे एकादशी का व्रत करती थीं और उस दिन वे 'सीधा' निकालकर देती थीं और कहती थीं कि हमने पेट काटकर बचाया है इसे मंदिर में देकर आओ। "पेट काट कर बचाना और लोकहित में यानी कि भगवान को देना—इसी का नाम यज्ञ है।" आप हवन तो करते हैं, परन्तु कुर्बानी, परोपकार, सेवा के लिये कुछ करना नहीं चाहते हैं। मित्रो, इसी का नाम अग्निहोत्र है, इसी का नाम यज्ञ है। अगर आप भी इस यज्ञ की प्रवृत्ति, लोकहित का जीवन जीने की प्रवृत्ति लेकर चले जाएँ तो आपका जीवन धन्य हो जाएगा। हम मरते-मराते, जीवन के अंतिम क्षणों में आपको एक नसीहत देकर जाना चाहते हैं कि आप एक शानदार आदमी बनें। लोकहित का जीवन जीना सीखें।

आज गायत्री जयंती के दिन हम एक बात और कहना चाहते हैं कि अगर आप आज अपने गुरु के नसीहत के मुताबिक, गायत्री माता के नसीहत के मुताबिक, जो करुणा और दया की प्रतीक है—लोकमंगल हेतु अपने अक्ल, धन, समय को लगा सकेंगे तो आपका जीवन धन्य हो जाएगा। अगले दिनों आप शानदार जीवन जीएँ, आप किफायतसारी जीवन जीएँ। आप अपने औलाद का, परिवार वालों का मोह न करें तो आपकी जिन्दगी तथा भविष्य शानदार बनता हुआ चला जाएगा। आपको हम जिम्मेदारी से विमुख होने को नहीं कहते हैं। हमें परिवार शब्द से बहुत प्रेम है तथा हमने संस्था का नाम गायत्री परिवार, प्रज्ञा परिवार रखा है। परन्तु हम एक बात कहना चाहते हैं कि आप उसमें लिप्त न हों, मोहग्रस्त न हों। हमने युग-निर्माण परिवार, गायत्री परिवार इसी उद्देश्य से बनाया है। आपने परिवार तो बनाया है। परन्तु आपने उसे बड़ा बना दिया है यानी कि मालदार बना दिया है। आप बड़ा मत बनाइये, आप केवल संस्कारवान बनाने का प्रयास करें। आप लोभ, मोह को कम करें तथा आप लोग कुछ समाज, देश तथा संस्कृति के लिये काम करें तो मजा आ जाएगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह समय बीजारोपण का है। यह गायत्री का, प्रज्ञावतार का दिन है। यह सारे विश्व में फैलने वाली है, आप देख लेना। गायत्री महामंत्र जो विवेक, सद्विचार, सद्भावना, प्रेरणा, शालीनता, उज्ज्वल भविष्य, नये युग का मंत्र है, यह सारे विश्व में फैलने वाला है। यह मत्स्यावतार की तरह फैलने वाला है, यह हम आपको दिखा देंगे। ब्रह्माजी ने जिस मछली को कमण्डलु, तालाब, नदी, समुद्र में डाला था वह बढ़ती चली गई। आने वाले दिनों में यह गायत्री माता भी इसी प्रकार बढ़ने वाली है आप विश्वास रखें। इस प्रकार की कथा आपने सुनी है, परन्तु हमारे जैसा नाचीज आदमी यह कह रहा है, आप नोट कर लें। आगे गायत्री भी मछली के रूप में सारे विश्व में फैलने वाली है। आज भी हमारे २४ लाख व्यक्ति हमारा कहना मानते हैं, हमें गुरुजी कहते हैं। वे हमसे दीक्षा प्राप्त किये हैं। वे हमसे जुड़े हैं। एक आवाज पर हर प्रकार की कुर्बानी के लिए तैयार रहते हैं। आप समझते नहीं हैं २४ लाख किसे कहते हैं ? आपने कभी सोचा है २४ लाख आँखें, २४ लाख हाथ तथा २४ लाख घण्टे कितने होते हैं ? हमारी ताकत बड़ी महान है। २४ लाख घण्टे कितने होते हैं ? इनसान आठ घण्टे काम करता है, परन्तु २४ लाख व्यक्तियों के एक घण्टे श्रम का मतलब है—४ लाख आदमियों का श्रम। ६ घण्टे प्रतिदिन के हिसाब से उन्हें औसतन २० रुपये भी प्राप्त हो जाते हैं तो जरा मूल्यांकन कर लेना कि हम कितने बड़े तथा सामर्थ्यवान आदमी हैं। आप जरा मूल्यांकन करें कि एक दिन में, एक माह में और एक साल में यह कितना हो जाता है ? यह गायत्री माता भी मत्स्यावतार की तरह से हमारे कमण्डलु में से बढ़ते-बढ़ते कहाँ तक पहुँच गयी है। हमने २४ गायत्री शक्तिपीठ बनाने का संकल्प लिया था, कसम खायी थी। परन्तु आज कितने बन गये, आपको पता नहीं है।

अब हम गायत्री माता के बारे में कहना चाहते हैं। यह विकसित होने जा रही है। इसका विकास होने जा रहा है। अगर किसी डूबते हुए को तिनके का सहारा मिल जाता है तो वह बढ़ता, फलता, फूलता चला जाता है। इसी गायत्री जयंती से हमने नया संकल्प लिया है। हिन्दुस्तान में सात लाख गाँव हैं। हिन्दुस्तान में हमने जन्म लिया, यहाँ की मिट्टी में हमने खेला है, यहाँ हमने पढ़ाई की है, जन्म हुआ है, हवा खायी है। इसी संस्कृति में हमने जीवन जीना सीखा है। इस संस्कृति का कर्ज हमारे ऊपर है। अतः विवेक की देवी, दया, करुणा, उज्ज्वल भविष्य की देवी को एक लाख व्यक्तियों के द्वारा २४० करोड़ जप गाँवों में हमें कराना है। धर्मानुष्ठान की शृंखला में हम अभूतपूर्व कार्यक्रम प्रारम्भ करने जा रहे हैं, जो आज तक के इतिहास में एक अभूतपूर्व कार्य माना जा सकता है। पुराने जमाने में नैमिषारण्य में सारे ऋषि आते थे एवं उनका भावभरा संकल्प होता था। आज गायत्री जयंती के दिन-विवेक की देवी के जन्म-दिन पर आप सब जो बैठे हैं, वे सब हमारे पूर्व जन्म के ऋषि, मुनि हैं, जो कि प्रारम्भ में भी काम किये हैं तथा आगे भी काम करेंगे। आज का यह धर्मानुष्ठान इस युग का महत्त्वपूर्ण धर्मानुष्ठान है।

आज से एक लाख व्यक्तियों द्वारा २४० करोड़ जप नित्य का प्रारम्भ हो गया। आज का दिन बड़ा शानदार दिन है। धर्मानुष्ठान की श्रृंखला में—अनुष्ठान की श्रृंखला में आज का दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है। नैमिषारण्य में एक लाख व्यक्ति कभी इकट्ठा नहीं हुए। पहले माइक नहीं था। आज १० हजार व्यक्ति इकट्ठे हुए हैं। आप बिना माइक के प्रवचन नहीं दे सकते हैं। मित्रो, एक लाख व्यक्ति मायने रखता है। यह गायत्री माता का विस्तार है। आज से एक लाख व्यक्तियों द्वारा नित्य २४० करोड़ का जप का कार्य होगा। यह वातावरण का संशोधन, धरती पर स्वर्ग एवं मनुष्य में देवत्व लाने के लिये प्रारम्भ किया गया है। इससे सारे वातावरण में परिवर्तन हो जाएगा। १ लाख गाँव में हम गायत्री चरणपीठ बना देंगे। हमने इसकी अनुमानित लागत २५० रुपये रखी है। हम इसे उपस्थित करा देंगे। इस काम के लिए कोई भी व्यक्ति इतनी धनराशि दे देगा तथा हमारा यह काम पूरा हो जाएगा। मित्रो ! यह हमारा सपना है जो पूरा होगा। हमने हमेशा सपना देखा है। यह भी हमारा एक सपना है। हमने बहुत शानदार सपना देखा है तथा उसे रंगीन बनाने की कोशिश की है। यह भी हमारा एक सपना है। क्या सपना है ? १ लाख व्यक्तियों में जनचेतना जगाना तथा २४० करोड़ जप करने की पद्धति प्रारम्भ करना। हर गाँव में नित्य हवन, चालीसा का पाठ, मंत्रलेखन, जप तथा जन्मदिन मनाया जाएगा। हम हर गाँव में ४ घण्टे काम करने वाला एक आदमी रख करके जाएँगे जो उपरोक्त सारे कामों को पूरा करेगा तथा गाँव के अंतर्गत चेतना जाग्रत करेगा। वह ५० रुपये में भी काम कर सकता है। हर घर में दो-दो आदमी बेकार बैठे रहते हैं। उन्हें खेती तथा दूसरा काम कुछ भी नहीं है, उन्हें आप कहेंगे तो वह ४ घण्टे समय दे देगा। आप उसे ५०/- दे दें। इसके अलावा उस गाँव में एक-एक मुखिया, (मैनेजर) मिल जाएगा जो कामों की देखभाल करेगा। इस प्रकार हर गाँव के दो आदमी के हिसाब से २ लाख आदमी हमारे हो जाएँगे जो हमारे कामों को निष्ठा के साथ पूरा करेंगे।

हमने संकल्प लिया है कि देश के अंदर से निरक्षरता को हम मिटायेंगे तथा लोगों को साक्षर बनाएँगे। सरकार यह काम नहीं कर सकती है। वह तो प्राइमरी स्कूल की व्यवस्था ही नहीं देख पाती है। जैसे स्वामी केशवानंद जी ने शेखावटी के गाँवों में मुट्ठी फण्ड योजना के द्वारा प्राइमरी स्कूल खोला था। हम भी उस योजना को सफल करेंगे। इसके साथ ही हर आदमी की सेहत की जिम्मेदारी हम उठायेंगे जो असंयम, खानपान, रहन-सहन के कारण चौपट हो गई है। हम उसे लोगों को समझाकर परिवर्तन करेंगे। आज जो अनास्था संकट हावी हो गयी है उसे हम दूर करेंगे। हम बहुत-से काम करेंगे। आज सामाजिक कुरीतियाँ जो बढ़ रही हैं उसे हम समाप्त करेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आज गायत्री जयंती के दिन से अपने चरणपीठ तथा १ लाख परिजनों के सहयोग से हम बड़े से बड़े कदम उठाने वाले हैं। कौन-से कदम उठाने वाले हैं ? दहेजप्रथा और फिजूलखर्ची को समाप्त कर देंगे जिसने इनसान को गरीब बना दिया है। समाज को बर्बाद करके रख दिया है। एक लाख आपने फिजूलखर्ची में बर्बाद कर दिया। आपने सोचा नहीं कि एक लाख रुपये का ब्याज मासिक एक हजार आता है। आपने यह विचार ही नहीं किया। आपने अपने नाक कटने की बजह से आतिशबाजी, बाजा, गाजा तथा फैशनपरस्ती को बढ़ावा दिया। यह बेहूदापन बंद करें। अगर आपकी नाक इस कारण कटती है तो सूर्पनखा की तरह से आपकी नाक अवश्य कटनी चाहिए। हमने साहस के साथ कदम उठाया है। लानत भरे यह विवाह मुझे बिल्कुल नापसंद हैं। इसे दैत्य विवाह कहते हैं। यह सभ्यता के नाम पर डकैती और बलात्कार है। हमारे संकल्प महान हैं जो शक्ति हमारे साथ है उसके माध्यम से हम यह काम अवश्य पूरा करेंगे।

आज गायत्री जयंती के दिन जो शादियाँ हो रही हैं, यह प्रतीक हैं, यह प्रारम्भ है। हमने शादियों का धंधा नहीं लिया है। आज से हमने क्रान्ति का प्रारम्भ किया है। शादियों के अवसर पर हंस की मोटर पर बैठा हुआ आदमी हमें नरपिशाच-सा नजर आता है।

मित्रो ! हम इसके विरोध में बगावत शुरू करेंगे। कहाँ से करेंगे ? हम देहात से शुरू करेंगे। यह शहर तो बर्बाद हो गये हैं। न जाने कितनी पार्टियाँ, कितने नेता, कितने पेपर यह सारा बर्बाद हो गया है ? आज गायत्री जयंती के पुनीत पर्व पर हम देहातों में चलें। हिन्दुस्तान की आत्मा-आबादी देहातों में बसती है। उसके विकास के लिए, प्रगति के लिये हम उधर की ओर चलें। यह क्षेत्र खाली पड़ा है, जहाँ न कोई सम्प्रदायवाद है, न कोई आडम्बर है। असली हिन्दुस्तान तो वहीं है, जो खाली पड़ा हुआ है। हम उसका विकास करना चाहते हैं। गायत्री माता तथा हमारा गुरु हम पर हावी है और न जाने कैसी-कैसी बेचैनी पैदा करता है, हमें सोने भी नहीं देता है। आज गायत्री जयंती के दिन भगवान करे यह बेचैनी आपके अंदर भी आवे। आप भी हमारी तरह से समाज के लिये, राष्ट्र के लिये, पीड़ा-पतन के निवारण के लिये कुछ अपनी अकल, समय और धन दे सकें तो यह दुनिया सुंदर वन सकती है तथा धरती पर स्वर्ग एवं मनुष्य में देवत्व का उदय हो सकता है। जो वास्तव में हमारा सपना है। गायत्री माता, करुणा की माता अब अपना विस्तार चाहती है। आप उठिये तथा हमारे साथ चलने के लिये आगे आइये। हमें तथा हमारे भगवान को सहयोग कीजिये तथा यह मानव जीवन जो मिला है, उसे हमारी तरह धन्य बनाने का प्रयास कीजिए।

भगवान करे आपको भी सामर्थ्यवान देवी प्राप्त हो। आपको भी ऋद्धि-सिद्धि मिले। जो हमें ऋद्धि-सिद्धि का चमत्कार मिला है, वह आपको भी मिले। हमें लाखों आदमियों के आँसुओं को पोंछना अच्छा लगता है। आप भी गायत्री माता से माँगिये। आप तो केवल अपने लिये माँगते हैं। आप समाज के लिए, राष्ट्र के लिए माँगिये तो इसके साथ आपको भी मिलेगा। हमें वर्तमान और भविष्य काल दोनों ही शानदार दिखलाई पड़ रहा है। हम गायत्री माता से यही प्रार्थना करते हैं कि हे माता ! हमें दया, करुणा, क्षमा, शालीनता और ममता दीजिये। मित्रो ! आपको भी यही माँगना चाहिए। यही हमारी, गायत्री माता तथा महाकाल की प्रेरणा है। अगर आप इसे समझ जाएँ तथा उस पर चलने, उसे उतारने का प्रयास करेंगे तो आज का गायत्री जयंती तथा आपका जीवन धन्य हो सकता है। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

युग शक्ति का अवतरण

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो एवं भाइयो !

ये जमीन जिस दिन भगवान ने बनाई उसी दिन प्राणियों को भी बनाया, उसी दिन सूरज को भी बनाया। मुद्दतें हो गईं, किसी का किसी से कोई खास सम्बन्ध नहीं हो सका। जब मनुष्य की बुद्धि का विकास हुआ तो उसने सूरज की धूप को, रोशनी को अपने कब्जे में करने की कोशिश की। सबसे पहले मिली उसे आग। जिस दिन उसे अग्नि प्राप्त हो गई, मनुष्य और जानवर के बीच फर्क पड़ना शुरू हो गया। आग ने मनुष्य का कायाकल्प कर दिया। आदमी की भौतिक जिंदगी में प्रगति की एक क्रांति खड़ी हो गई। मुद्दतें बीत गईं। मुद्दतों के बाद एक और आग मनुष्य के हाथ लगी जिसका नाम है विद्युत, बिजली। आज से चार-पाँच सौ साल पहले बिजली आदमी के हाथ में आई व इसने आदमी की दुनिया ही बदल दी। पाँच सौ साल पहले के आदमी की और आज के आदमी की तुलना आप नहीं कर सकते। आज बिजली के कारण इतनी सुविधाएँ हैं। तब की कल्पना कीजिए जब आदमी आज से पाँच सौ साल पहले बिना बिजली के अँधेरे में बिना यंत्रों के काम करता होगा। टार्च की रोशनी से लेकर अनेक कामों तक व टेलीफोन से लेकर कितने ही कामों तक बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियाँ चलाने तक आदमी के काम बिजली ही आई व इसने मानव जीवन में एक क्रांति ला दी।

ताप की एक तीसरी और शक्ति मनुष्य के हाथ में आई। तीसरे ताप का नाम क्या है—एटम !' एटम की, अणु की शक्ति हाथ न आई होती तो अब तक इतनी लड़ाइयाँ लड़ी गई होतीं कि दुनिया से तीन-चौथाई आदमी खत्म हो गए होते। फर्स्ट वर्ल्ड वार हुआ, सेकण्ड वर्ल्ड वार हुआ, लेकिन उसके बाद माहौल में गरमी इतनी अधिक बढ़ी-चढ़ी थी, स्वार्थ इतने बढ़े हुए थे कि अगर एटामिक हथियार हाथ में न आए होते तो आज तक न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाने कितनी लड़ाइयाँ हो चुकी होतीं और हर जगह न जाने क्या-क्या मुसीबतें आ गई होतीं ? ताप ने, एटम की शक्ति ने रोक दिया मनुष्य को कि लड़ना मत। जो कोई भी लड़ेगा, मारा जाएगा। छोटे-मोटे हमले लोग कर सकते हैं, पर बड़ा युद्ध तो हमला करने वाले को भी तहस-नहस कर देगा। बड़ी तादाद में आपने कदम बढ़ाए तो यह एटॉमिक एनर्जी आपको खत्म करके रख देगी।

ताप की इन तीन शक्तियों ने मनुष्य के हाथों में साधन दिए, उसकी भौतिक उन्नति कर उसने जाने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया, लेकिन एक शक्ति ऐसी है ताप की जो पहले से मौजूद थी व जिसने आदमी का कायाकल्प किया है। वह है ज्ञान की शक्ति। एक ज्ञान वह है जो शिक्षा के रूप में, उसकी भौतिक शक्ति के रूप में हमारे समक्ष है। जिससे हम डॉक्टर बन जाते हैं, मास्टर, वकील बन जाते हैं, शिल्पी बन जाते हैं, कलाकार बन जाते हैं। हथियार व पैसे की तरह यह भी भौतिक शक्ति है। आदमी की खुशहाली के काम आती है, लेकिन यह वह नहीं है, जिससे आदमी, आदमी बनता है, जीवन को ऊँचा उठाना सीखता है। वह शक्ति जो आदमी को खुशी देती है, शांति देती है, उसके जीवन में संवेदना का रस पैदा करती है, मानव-मानव के मध्य सहयोग की भाषा सिखाती है, परस्पर स्नेह और दुलार पैदा करती है, सहकारिता की आधार शक्ति है, वह विद्या है। यह थी तो पहले से, लेकिन आदमी के हाथ में जब से आई, आदमी न जाने क्या से क्या होता चला गया। जानवर से आगे बढ़कर सही अर्थों में मानव बन गया। यह ज्ञान की शक्ति, विद्या की शक्ति का अवतरण कब धरती पर हुआ ? यह हम देखते हैं तो पाते हैं कि सृष्टि के प्रारम्भ में आकाशवाणी हुई थी व ब्रह्माजी को यह कहा गया था कि आपको तप से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। तब उनके हाथ गायत्री मंत्र आया। ब्रह्माजी ने गायत्री मंत्र के चार चरणों को चार व्याख्यानों में विभाजित कर उसको प्रतिपादित करना आरम्भ कर दिया। इन चार व्याख्यानों का नाम पड़ गया चार वेद। कब की बात है यह ? यह बड़ी पुरानी बात है। वेदों की उस सभ्यता व संस्कृति का आगमन क्या हुआ, आदमी आदमी नहीं रह गया, देवता बन गया। इस देश में रहने वाले सभी जीवधारी जिनका नर तन था, तैंतीस कोटि देवताओं में गिने जाने लगे।

वे आदमी नहीं थे। आदमी तो मामूली होते हैं, पेट भरते हैं और जिंदा रहते हैं किसी तरह, लेकिन देवता वे होते हैं जो खुश रहते हैं और खुश रखा करते हैं। खीज उनके पास कभी आ नहीं सकती, क्योंकि शैतान उनके पास नहीं आता। हैरानी, बीमारी, खीज, चिंता, दुःख, क्लेश ये सब पाप की, शैतान की देन हैं। जब आदमी देवता बन गया तो ये सब संताप चले गए। देवता दिव्य होता है, खूबसूरत होता है, जवान होता है, हर आदमी की जरूरतें पूरी करता है। देवता बड़ा जबर्दस्त होता है और हर भारतीय नागरिक किसी जमाने में देवता था। कब से था ? जब से वह ताप हाथ में आया, जिसे मैं ज्ञान का ताप कहता हूँ, विद्या का ताप कहता हूँ और दूसरे शब्दों में गायत्री का ताप कहता हूँ। इसके आते ही आदमी देवता बन गया, निहाल हो गया। उस समय धन-दौलत तो कम थी, पर प्रसन्नता-संतोष ज्यादा था और वही सबसे बड़ी संपत्ति है। तब अपेक्षाकृत गरीबी थी, लेकिन गरीब होते हुए भी मनुष्य कितना सुखी, कितना मोहब्बत, दुलार, सहयोग सुख से भरा था मैं आपको क्या बताऊँ मित्रो ! सौ वर्ष से अधिक जिंदा रहते थे लोग, क्योंकि मजेदार जिंदगी थी। आज हमारी आत्मा इनकार करती है, कहती है हम जिंदा नहीं रहना चाहते। आत्मा जब कभी नाखुश होती हैं तो शरीर कहता है कि ठीक है आप जाइए जैसी आपकी मर्जी हो। आत्मा चली जाती है, जल्दी मर जाती है, शरीर किसी तरह जिंदा रहता है ? आत्माविहीन जिंदगी—यह बड़ी घिनौनी जिंदगी है जो जी रहा है आज का आदमी। इसमें भीतर सब कुछ जलता रहता है, रोम-रोम, नस-नस, अन्तःकरण जलते रहते हैं। कोई भी ठंडी चीज इस आग को मिटा नहीं सकती। मित्रो ! पुराने जमाने को मैं याद करता हूँ तो यह बात सही मालूम पड़ती है। **"स्वर्गादपि गरीयसी"** स्वर्ग से श्रेष्ठ यह भूमि किसी जमाने में रही होगी, मैं यह विश्वास करता हूँ। न बस थी, न टेलीफोन थे, किन्तु फिर भी स्वर्गादपि गरीयसी थी। स्वर्ग किसे कहते हैं ? जहाँ आदमी रहते हैं और आदमी-आदमी के बीच वे रिश्ते होते हैं, जिन्हें देखकर आदमी की हिम्मत बँध जाती है, धीरज बँध जाता है। मेहमान को **"अतिथि देवोभव"** कहकर घर में सम्मान से बिठाया जाता था। आज तो यदि अतिथि आ जाएँ तो आप सावधान रहना। उसे ठहरने मत देना। सारी आफत मचा देगा वह। होशियार रहना उससे। कहना—"भाई साहब आप होटल में ठहरिए।" अतिथि आपके घर ठहरने लगा तो आपकी बहिन-बेटियों का कोई ठिकाना नहीं। मित्रो ! आज जीवन नरक बन गया है, क्योंकि सामान बहुत है, पैसा बहुत है पर उसका उपयोग करने की अक्ल देने वाली विद्या कहीं नहीं। वह विद्या, वह ज्ञान जिससे खुशहाली आती थी, जिसे संक्षेप में गायत्री मंत्र कहते हैं।

ब्रह्माजी का दिया हुआ यह हथियार गायत्री मंत्र जिस दिन से मनुष्य जाति को मिला, उसी समय से उसे ज्ञान, चैन, संतोष, नैतिकता, प्रेम, सहयोग मिलने का सिलसिला चालू हो गया। यह इनसान की जिंदगी में सौभाग्य का दिन था। उसी ने आपको, हमको, सबको एक धागे से जोड़ रखा है। हम सबको एक धागे में पिरो दिया है। ब्रह्माजी ने वेदों के ज्ञान के रूप में ऋषियों को यह विभूति दी और वही गायत्री अब युगशक्ति बनने जा रही है। इसी गायत्री का छोटा वाला रूप है "प्रतीक पूजा।" क्या होती है प्रतीक पूजा ? बेटा ! प्रतीक उसे कहते हैं, जिसमें किसी चीज का छोटा-सा रूप सामने रख देते हैं, यह प्रतीक कहलाता है। प्रतीक नमूने को कहते हैं। जैसे आप हमारा फोटो ले जाएँ। फोटो को आप माला चढ़ा दें। क्या है यह ? यह प्रतीक पूजन है। वस्तुतः कागज में कुछ भी नहीं है। कागज के पीछे जो व्यक्ति है, उसमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आपकी गहन श्रद्धा को कायम रखने के लिए प्रतीक पूजन करते हैं। गायत्री की प्रतीक पूजा वह है जो हमने आपको आज से तीस साल पहले सिखाई थी। हमने यह बताया था आपको कि कैसे पंचपात्र हाथ में लेकर आचमन करना चाहिए, चोटी में गाँठ लगानी चाहिए। चौकी पर एक तस्वीर रखकर धूप, दीप, रोली, अक्षत चढ़ाना चाहिए। माला जपनी चाहिए। यह क्या था ? यह प्रतीक था। यह आपने क्यों कराया ? प्रतीक इसलिए कराया कि आपको उसकी बारीकियाँ, गहराइयाँ समझने का मौका मिले। हमें जानकारी बनी रहे कि गायत्री मंत्र क्या है, कितना महान है। घड़ी हमें अपने कर्तव्यों का भान कराने के लिए घंटे बजाती है, इसी तरह हम आप से कहते थे कि रोजाना पूजन करना चाहिए। आपकी भौतिक व आध्यात्मिक प्रगति इस पर टिकी हुई है, इसीलिए हमने आपसे नियमित गायत्री का जप करने को कहा। किन्तु यदि आपने गायत्री मंत्र की क्षमताएँ व उसके भीतर छिपे रहस्य नहीं जाने तो क्या कहेंगे ? मैं उसे नित्य कर्म करूँगा। नित्य कर्म उन बहुत कामों को कहते हैं जो रोज करना जरूरी हैं। यदि आप रोज नहाएँ तो क्या बाल-बच्चे हो जाएँगे, रुपया मिल जाएगा ? नहीं बेटे, हम वायदा नहीं कर सकते। आपकी मर्जी है आप रोज नहाएँ। चाहे न नहाएँ। नहीं नहाएँगे तो बीमार पड़ेंगे। पर नहाने से कोई पुण्य मिलेगा, यह भी जरूरी नहीं है। इसे नित्य कर्म कहते हैं। रोज मन पर छाने वाली धूल को, गंदगी को साफ करने के लिए गायत्री मंत्र के उस स्वरूप की जरूरत है, जिसे हम प्रतीक पूजा कहते हैं। वह काफी है और उसका महत्त्व वहीं तक है।

अगला वाला महत्त्व फिर शुरू होता है। उसी की आज सबसे बड़ी जरूरत है। ऐसा साहस देने वाला है यह गायत्री का अगला वाला स्वरूप, जो आदमी को व्यक्तित्ववान बनाता है, महापुरुष बनाता है, ज्ञानवान बनाता है, तपस्वी बनाता है। गायत्री मंत्र जिसे हम याद करते हैं, बार-बार कहते हैं, हमें बताता है कि गयः का वरण करने वाली गायत्री। गय कहते हैं प्राणों को। इसका एक ही मतलब है कि जब कभी गायत्री मनुष्य के जीवन में प्रवेश करती है, उसके अन्दर प्राण भर देती है, जीवट भर देती है। जीवट वह है जो अंदर से कुछ कर गुजरने की उमंग पैदा करती है। गायत्री व्यक्तिगत जीवन को समुन्नत बनाती है, खुशहाल बनाती है, समृद्ध बनाती है, दीर्घजीवी तथा मजबूत बनाती है। ऐसी गायत्री सिखाती है कि दौलतमंद तो बनो, पर अंदर की हिम्मत भी इकट्ठी करो तभी दौलत का सही उपयोग कर सकोगे। पैसा कभी भी ताकत नहीं बन सकता। ताकत कौन-सी ? वह जो आदमी का व्यक्तित्व है, उसके भीतर का दृष्टिकोण है, वह ताकत। आज जो आदमी कमजोर होता चला जा रहा है, ज्ञान के हिसाब से, समृद्धि के हिसाब से, व्यक्तित्व के हिसाब से, तो एक ही चीज की जरूरत थी और वह थी हमारे भीतर प्राण-शक्ति की। प्राणों का विस्तार करने के लिए, अंदर की ताकत बढ़ाने के लिए हम गायत्री का विस्तार करते हैं, आपसे गायत्री का जप करने को कहते हैं।

गायत्री एक साइंस है। एटम की साइंस से भी बड़ी ताकत है। यह ऐसी शक्ति है जो सारी मनुष्य जाति ही नहीं, प्राणी मात्र ही नहीं, सारे ब्रह्मांड से सम्बन्ध रखती है। ऐसी ताकत है, जो आदमी के भीतर उमंगों के रूप में, आदर्शों के रूप में, श्रेष्ठताओं के रूप में आती है व जीवन का कायाकल्प करती चली जाती है। इसी गायत्री के अवतार की बात हम आपसे कह रहे थे। कह रहे थे, युगशक्ति का अवतार होने जा रहा है। कैसे होगा ? यह होगा छोटे-छोटे मनुष्यों की चेतना के विकास के रूप में। चेतना का विकास अगले दिनों होकर रहेगा। मनुष्य जाति के भाग्य का फैसला होकर रहेगा। इनसान के अंदर का फिर देवता पैदा होगा, भगवान् पैदा होगा। मानव में देवत्व आएगा और धरती पर स्वर्ग आएगा। हर व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन में हिस्सा बँटाएगा।

इनसान अपने आप तक सीमित नहीं रह सकता अब। इनसान सामाजिक प्राणी है इसलिए उसे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। पीड़ा और पतन यह दो कसौटियाँ भगवान ने दी हैं, इनसान की परख करने के लिए। व्यवहार की पीड़ा और बौद्धिक पतन मनुष्य का कम करने में हम क्या मदद कर सकते हैं ? यह भगवान हमसे पूछता है। आप कर सकते हैं तो आप अच्छे इनसान हैं और खरे सोने के समान हैं। यही खुशहाली लाने वाला, मानव मात्र को एक बनाने वाला, तीसरा वाचा चरण है, जिसके ऊपर नवयुग की आधार-शिला रखी जाने वाली है।

मित्रो ! इस समय मनुष्य जाति के भाग्य का उदय होने वाला है। इनसान फिर सिर उठाकर चलेगा। इनसान का गर्दन झुकाकर चलना मुझे पसन्द है। आदमी की कमर झुकी हो तो कोई बात नहीं, किन्तु सिर झुका हुआ नहीं रहना चाहिए। आग की लौ की तरह से, अग्नि देव की लपटों के तरीके से आदमी होगा, युगशक्ति का चमत्कार होगा तो कमजोर से कमजोर आदमी में इतनी हिम्मत, इतनी ताकत आ जाएगी कि वह सिर उठाकर चलना सीख लेगा। युगशक्ति का अवतार अर्थात् एक ऐसी जीवट का पैदा होना है, जिसमें सिद्धान्तों की और आदर्शों के परिपालन की बहादुरी आदमी में पैदा हो सके। दूसरा चमत्कार होने जा रहा है धरती पर स्वर्ग के अवतरण का। धरती स्वर्ग बनने जा रही है। जिसमें आदमी, आदमी से प्यार करना सीखेगा। प्यार के साथ सहयोग भी करेगा। सहयोग और प्यार जब साथ-साथ रहें तो मैं समझता हूँ कि धरती पर स्वर्ग आ गया, खुशहाली आ गई। गरीबी रहेगी तो रहे, कोई हर्ज की बात नहीं है, किन्तु कृपणता नहीं रहनी चाहिए। संतों में से हर एक के पास गरीबी थी, पर वे कृपण नहीं थे। गरीबी से आदमी दुःखी नहीं होता। दुःखी कृपणता से होता है। कृपण कौन ? तंगदिल, प्यार-मोहब्बत न बाँटकर संकीर्णता फैलाने वाला दरिद्र व्यक्ति जो बाहर से न सही, चिंतन की दृष्टि से दरिद्र है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आप प्यार बाँटेंगे तो बदले में प्यार मिलेगा। आप बच्चों को प्यार नहीं दे सके इसीलिए आप बच्चों के प्यार से महरूम हैं, आपने बाप को प्यार दिया नहीं, इसलिए आप उनके आशीर्वाद से महरूम रह गए। आपने समाज के कर्तव्यों का पालन किया नहीं, इसलिए आपकी समाज ने उपेक्षा की, कोई सहायता नहीं की। प्यार से ही सहयोग मिलता है, सम्मान मिलता है। ऐसी धरती की कल्पना, मित्रो ! मैं करता हूँ जिसमें सब एक-दूसरे के साथ प्यार व सहकार करेंगे। कब ? जब जन-जन तक गायत्री का संदेश पहुँचेगा तब। लेकिन गायत्री एकाकी नहीं है। गायत्री ज्ञान-पक्ष है और यज्ञ उसका कर्म-पक्ष है। ज्ञान एकाकी नहीं हो सकता। एकाकी ज्ञान में कोई दम नहीं है। एकाकी ज्ञान पंडितों के पास होता है, फिलॉसफरों के पास होता है। ज्ञान और कर्म का समन्वय होना चाहिए। गायत्री और यज्ञ का समन्वय होना चाहिए। इसीलिए आपके समक्ष इस साधना स्वर्ण जयंती वर्ष में हमने एक कार्यक्रम सुपुर्द किया है कि इस तत्त्वज्ञान को घर-घर पहुँचाने का जिम्मा उठाएँ। हम आपको बदले में इनाम देंगे। दौड़ लगा कर दिखाइए, इनाम पाइए। नहीं साहब, वैसे ही दे दीजिए। नहीं मित्रो ! भगवान, इस युग में जितनी भी देवात्माएँ हैं, उन्हें कुछ उपहार देना चाहता है। इतिहास की भूमिका में आपके लिए यह एक सुनहरा मौका है। इसके बाद युगों-युगों तक ऐसा मौका नहीं आने वाला। गाँधी फिल्म आई थी। उसमें नमक सत्याग्रह वालों को जाते हुए हम देखते रहे। यह महादेव भाई जा रहे हैं, यह प्यारे लाल जा रहे हैं, यह हरिभाऊ उपाध्याय जा रहे हैं। हम नाबालिग थे अतः नहीं जा पाए। हम पछताते रह गए। आए हुए समय को चूकने वाला पछताता ही रहता है। अब आप जेल जाएँगे तो स्वतंत्रता सेनानी को न पेंशन मिलेगी, न मिनिस्टर का पद। वह जो समय आया था न, वह चूक गए। अब कुछ नहीं हो सकता।

मैंने आपको इस समय इसलिए बुलाया कि यह चूकने का समय नहीं है। खाने-कमाने के लिए पूरी जिंदगी आपकी है। सारी जिंदगी थी व जो आपकी बची हुई है, वह भी उसी में लगने वाली है। यह एक महत्त्वपूर्ण समय है, युग-परिवर्तन का समय है। इसमें आपका सहयोग बन सके तो उन कार्यों को करिए जो भगवान ने हमारे गुरुदेव के सुपुर्द किए और हमारे गुरुदेव ने हमें सुपुर्द किए। हम आपके सुपुर्द करना चाहते हैं ताकि सारे संसार में गायत्री मंत्र का विस्तार हो। यह मात्र हिन्दुओं तक सीमित न रहे। यह ब्राह्मणों का मंत्र मात्र बनकर न रह जाए बल्कि विश्वमानव का मंत्र बने। कभी यह गायत्री वेदमाता थी। कब थी ? जब वह ज्ञान के रूप में, आग के रूप में, तप के रूप में अवतरित हुई थी। अब क्या हो गई ? अब यह नाम बदल गया। अब वह देवमाता हो गई, देवत्व जिनके रोम-रोम में उतर जाए उनकी माता और अब बनने जा रही हैं—विश्वमाता। विश्वमाता से क्या मतलब है ? विश्वमाता से मतलब है सारा विश्व एक नए आधार पर एक होने जा रहा है। एक नई संस्कृति आ रही है। एक नया सार्वभौम धर्म आ रहा है। सारी दुनिया इस एक ही केन्द्र के ऊपर इकट्ठी होने जा रही है, बँधने जा रही है। एक आचार-संहिता में मातृभाव में बँधने जा रहे इस विश्व के निर्माण में आपकी भागीदारी हो, इसके लिए आपको मैं इस महापुरश्चरण में, धर्मानुष्ठान में भागीदारी करने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

मैंने उज्ज्वल भविष्य के सपने देखे और सबको दिखाए हैं। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो सतत् डराते रहते हैं। सूरज की तबाही दुनिया की तबाही। नहीं मित्रो ! भगवान की तबाही कभी नहीं आएगी, खुशहाली की तबाही कभी नहीं आएगी। आएगा तो अब उज्ज्वल भविष्य और धरती पर स्वर्ग व आधार बनेगा मानव में देवत्व। कैसे ? गायत्री के तत्त्वज्ञान से, भारतीय संस्कृति के अनुगमन से। आप समय रहते उससे जुड़ सकें, औरों को जोड़ सकें, इससे बड़ी समझदारी और क्या हो सकती है ? मेरी बात समाप्त।

ॐ शांति।

गायत्री उपासना सफल एवं सार्थक कैसे बने ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

गायत्री महाशक्ति के सम्बन्ध में कितने ही सवाल हैं, जिनका मैं सबेरे जब ध्यान कराता हूँ, तब आपको थोड़ा-सा इशारा किया करता हूँ। गायत्री को त्रिपदा कहा गया है, इस सम्बन्ध में त्रिपदा की शक्ति के बारे में मैं जब सुबह आपको प्रातःकाल ध्यान करा रहा था, तब बता रहा था कि तीन चरणों वाली गायत्री, तीन टाँगों वाली गायत्री के तीन फायदे हो सकते हैं, पर शर्त यह है कि अगर आप ठीक तरह से उपासना करें तब। क्या-क्या, फायदे हो सकते हैं ? त्रिपदा को कल्पवृक्ष, अमृत और पारस—इन तीन नामों से पुकारा गया है। क्यों साहब ! ये तीनों चीज कहाँ रहती हैं ? मालूम नहीं कहाँ रहती हैं ? सुना है स्वर्गलोक में रहती हैं और देवताओं के पास रहती हैं। देवताओं के पास रहती हैं तो जमीन पर भी रह सकती हैं ? हाँ जमीन पर भी रह सकती है, तीनों चीजें। अमृत भी जमीन पर रहता है। पारस भी जमीन पर रहता है और कल्पवृक्ष भी जमीन पर रहता है। ये तीनों डालियाँ, तीनों शाखाएँ उपासना की हैं। जिसका हम शिक्षण करते हैं, जिसका हम सिद्धान्त बताते हैं और जिसका हम मर्म हृदयगंम कराने के प्रयत्न करते हैं। कैसे होता है कल्पवृक्ष ? कल्पवृक्ष के बारे में कहावत है कि उसके नीचे जो कोई भी जाकर बैठता है उसकी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं। मनोकामना किसे कहते हैं ? मनोकामनाएँ बेटे, कई तरह की हो सकती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सांसारिक मनोकामनाएँ वे कहलाती हैं, जो सांसारिक वस्तुओं को पूरा करने से सम्बन्धित होती हैं। सांसारिक मनोकामना को पूरा करने का लाभ कल्पवृक्ष के नीचे मिल जाता है। ऐसा बताया गया है तो क्या उपासना भी कल्पवृक्ष हो सकती है ? हाँ, उपासना ही कल्पवृक्ष हो सकती है। कैसे हो सकती है ? मैं आपको बताता हूँ।

सांसारिक मनोकामनाएँ क्या होती हैं ? सांसारिक मनोकामनाएँ घुमा-फिरा कर एक ही हैं कि हमारे शरीर के लिए सुविधाएँ जुटें, पैसा जुटे, यही मनोकामना है और कुछ नहीं है। पैसा, सुविधा मिल जाए तो बाकी सब खरीद ली जाती हैं। पैसा मिल जाए तो सब हो जाती हैं। क्यों साहब ! उपासना से पैसा भी मिल सकता है ? हाँ पैसे भी मिल सकते हैं। आप कहें तो मैं पुरानी बात बता सकता हूँ। गुरु जी पुरानी बात बताइये। चलिए पुरानी बात बता सकता हूँ कि उपासना एक कल्पवृक्ष है। विभीषण उपासना करता रहा। विभीषण ने न कोई फौजदारी की, न कोई लड़ाई लड़ी, न कोई व्यापार किया, न कोई खेती-बाड़ी की। कुछ भी नहीं किया। लेकिन वह लंका का, जो सोने की बनी हुई थी, राजा बन गया। तो सोना कमा लिया ? हाँ सोना कमा लिया। किसने कमा लिया। विभीषण ने कमा लिया और किसने कमा लिया ? सुग्रीव ने कमा लिया। हार गया था, सब कुछ छिन गया था। बीबी-बच्चे भी छिन गए थे। राजपाट भी छिन गया था। सब कुछ चला गया था हाथ से। कुछ भी नहीं रह गया था। प्राण बचाने के लिए एक पहाड़ की खोह में छुपा बैठा रहता था। दिन काटता रहता था। लेकिन उपासना के माध्यम से उसने अपना गँवाया हुआ राजपाट पा लिया।

अच्छा और किसने पा लिया ? अभी और बताता हूँ किसने पा लिया ? नरसी मेहता का नाम आपने सुना है ? नरसी मेहता गुजरात में रहते थे और भगवद् भजन के साथ जनकल्याण में जुटे रहते थे। सुना है उन नरसी मेहता के यहाँ वरसी थी भगवत् कृपा दौलत के रूप में, अक्षय झोली के रूप में। सुना है आपने ? हाँ सुना है। अच्छा चलिये और बताता हूँ आपको। सुदामा का नाम सुना है आपने ? हाँ साहब सुदामा का नाम सुना है हमने। सुदामा जी मालदार हो गए थे। कहाँ से लाए ? क्या-क्या उद्योग चलाए थे उन्होंने बताना जरा ? फैक्ट्रियाँ खोली थीं ? कारखाने खोले थे ? सुदामा जी की कहीं फैक्ट्रियाँ नहीं थीं और न कारखाने ही। लेकिन द्वारकापुरी में जो कुछ भी था वह सारे का सारा वैभव पोरबन्दर में आ गया था—सुदामापुरी में आ गया था। अरे गुरु जी ! अगर ये बात सही है तो आप पुरानी बात नहीं, कोई नयी बात बताइये। ये तो मरे हुए व्यक्तियों की बात है। गुरुजी आपको जिन्दा व्यक्तियों की बात बतानी चाहिए। अच्छा जिन्दा व्यक्तियों की बता दूँगा, बेटे कि उपासना का कल्पवृक्ष कैसे फलदायी हो सकता है ? मरे हुए व्यक्ति की बात बताता हूँ, जो अपनी जिन्दगी में तो नहीं कमा सके, पर बाद में मालदार हो गए। मसलन नानक जी। नानक जी जो थे, वे एक किसान के बेटे थे दुकानदार के बेटे थे। बेटा जब बड़ा हो गया तो पिता नाराज हुए कि पैसे कमाने चाहिए और अपना पेट पालना चाहिए, तो नानक ने कहा—हम क्या कर सकते हैं ? हमारी तो अकल कमजोर है। पिता ने नानक को बीस रुपया दिया और कहा कि बीस रुपये लेकर के आप पड़ोस के गाँव में जाइए और दुकानदारी का सामान खरीदकर लाइए, दुकानदारी शुरू कीजिए और अपना पेट पालिए, हम रोटी नहीं खिलाएँगे। नानक बीस रुपये लेकर गए और जहाँ सामान लेने जाने वाले थे, उसी रास्ते में संतों की एक मण्डली मिल गयी। वे उन्हीं के साथ सत्संग में लग गये। शाम को सब लोग भूखे सोने लगे। खाने का कोई इन्तजाम नहीं था अतः नानक ने बीस रुपये निकाले और सन्तों के खाने-पीने में खर्च कर दिये। सारे रुपये खर्च हो गए। दूसरे दिन नानक घर आए। पिताजी ने पूछा बेटा बीस रुपये तुम लेकर गए थे, उसका सामान बाजार से खरीदकर लाए होंगे दुकानदारी चलाने को। नहीं पिताजी, मैंने एक ऐसी दुकानदारी की है, जिसमें हजारों का मुनाफा होता है। ऐसी कौन-सी दुकानदारी है बेटे जरा बताना ? उन्होंने कहा—सन्तों के काम में हमने खर्च कर डाले। बाप बहुत नाराज हुए और नानक को मारपीट कर घर से निकाल दिया। घर से निकलने के बाद बहुत दिन पीछे नानक वापस आए। वास्तव में उन्होंने अपना धन ऐसे काम में लगा दिया था कि जिसमें से धन हजारों गुना-लाखों गुना होकर के आये।

एक बार नानक के गुरुद्वारे में जब मैं गया तो मैंने देखा कि नानक को मरे हुए सैकड़ों वर्ष हो गये, परन्तु उनका मकान कितना जबरदस्त है ? स्वर्ण मंदिर आप में से किसी ने देखा होगा शायद, बहुत कीमती मंदिर है। करोड़ों रुपये कीमत का बना हुआ मंदिर है। उसमें बहुत सोने का इस्तेमाल हुआ है। ये क्या बात कह रहा हूँ मैं ? यह कि मरने के बाद नानक मालदार हो गए थे। नानक जब जिन्दा थे तब मालदार नहीं हुए थे, लेकिन मरने के बाद वे मालदार हो गये।

कल एक और आदमी का नाम गिना रहा था मैं। किनका नाम गिना रहा था ? कल मैं बुद्ध का नाम गिना रहा था और यह बता रहा था कि इस कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर के सांसारिक दृष्टि से मरने के बाद में वे मालदार हो गए थे। स्वर्ण मंदिर जैसा कि मैंने आपको अभी-अभी बताया। उसी तरह आप कभी वर्मा जाएँ तो वहाँ एक स्वर्ण मंदिर बना हुआ है। लंका में तो नहीं है स्वर्ण मंदिर। लंका में तो मैं गया हूँ। कहते हैं सोने की लंका थी, लेकिन अगर आप सोने की इमारतें, मकान देखना चाहें तो वर्मा जाइये वहाँ पैगोड़ा है, उसमें बहुत सोना लगा हुआ है। रंग जी के मंदिर में भी हमारे यहाँ सोना लगा हुआ है। कितना लगा हुआ है ? बारह किलो बताते हैं, पर वहाँ बहुत सोना लगा हुआ है। वहाँ पर बीस-तीस मन सोना जरूर लगा होगा। वर्मा के पैगोड़ा में। आप ये किसकी बात कह रहे हैं ? बेटे ! मैं बुद्ध की बात कह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

रहा हूँ। उस बुद्ध की बात जिसकी मैं जावा की बात कह चुका हूँ। साँची के स्तूपों की बात कह चुका हूँ। बौद्ध-गया के मंदिरों की बात कह चुका हूँ। इस सारे संसार में जो बौद्धधर्म के बड़े-बड़े विशालकाय विहार बने हुए हैं, उनकी बात बता चुका हूँ मैं। इस तरह कोई मालदार हो सकता है क्या ? हाँ बेटे ! मालदार हो जाता है। किससे मालदार हो जाता है ? कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर के। कल्पवृक्ष अगर नहीं होता, वैसी कोई चीज नहीं होती तो आज हमारी आध्यात्मिकता की जिस तरह मिट्टी-पलीद हो रही है, ऐसी आध्यात्मिकता की मिट्टी पलीद होने वाली बात रही होती तो ऋषियों ने उपासना का कभी समर्थन न किया होता और लाखों मनुष्यों का श्रम, लाखों मनुष्यों का समय, लाखों मनुष्यों के धन के साथ खिलवाड़ न की होती, अगर कल्पवृक्ष के वास्तविक कोई लाभ न हुए होते तब। यह क्या है ? यह उपासना का कल्पवृक्ष है।

महाराज जी ! आप तो पुराने जमाने की बात कह रहे हैं। नहीं बेटे पुराने जमाने की ही बात नहीं कह रहा हूँ, अभी के जमाने की ही बात भी बता सकता हूँ कि उपासना से आदमी मालदार हो सकता है, क्योंकि आपकी दृष्टि से किसी चीज की सफलता की निशानी मेरे ख्याल से मालदार बनना ही रहा होगा। जब आप ऋद्धि-सिद्धि की बात कहते हैं तो आपकी दृष्टि में एक ही चीज रहती है मालदार होना। कल्पवृक्ष इसीलिए कहा गया है कि उससे आदमी मालदार हो सकता है। इस कल्पवृक्ष से कौन-कौन से आदमी मालदार हो गये थे। नाम बताइये ? मालदार आदमियों में मैं कई नाम आपको गिना सकता हूँ। हिन्दुस्तान के कहें तो हिन्दुस्तान के गिना सकता हूँ और विदेशों के कहें तो विदेशों के गिना सकता हूँ। हिन्दुस्तान के गिना दीजिए ? अच्छा हिन्दुस्तान के जिन्दा आदमियों के नाम गिनाता हूँ। एक मामूली-सा वकील था। छोटा-सा वकील जो नागपुर की अदालत में वकालत करता था। साइकिल से घर जाया करता था। उसने रास्ते में पड़े हुए ६ कोढ़ियों को देखा। उनका चेहरा देखा और कहा चेहरे से ऐसे मालूम पड़ते थे कि वे भले घर के आदमी हैं, पर कोढ़ी हो गए थे और सड़क पर बैठे हुए भीख माँग रहे थे। वकील ने अपनी बाइसिकल रोकी और उतरकर उनके पास गये और कहा—भाईसाहब ! आप कुछ ऐसे मालूम पड़ते हैं मानो कोई समझदार और पढ़े-लिखे लोग हों, फिर आप भीख क्यों माँगते हो ? देखिए हम कोढ़ी हो गए हैं और कुछ नहीं कर सकते हैं। कोढ़ी हो गए हैं तो आपके हाथ कोढ़ी हो गए हैं ना, आपका सारा शरीर तो कोढ़ी नहीं हो गया है। साहब, सारा शरीर तो कोढ़ी नहीं है, बस अँगुलियों और पैर ही कोढ़ी हो गए हैं। इससे कोई हर्ज की बात नहीं, आइए इस बाकी वाले हिस्से को हम ठीक तरीके से इस्तेमाल करें। हम आपको यह बात बतायेंगे कि किस तरीके से अपना गुजारा कर सकते हैं बिना भीख माँगे ?

वकील ने बाइसिकल अपने घर वालों के सुपुर्द की और उन छह कोढ़ियों को लेकर अपने गाँव चला गया। गाँव में थोड़ी-सी जमीन थी महाराष्ट्र में। वहाँ मुर्गीपालन को खराब धन्धा नहीं मानते, हमारे यहाँ तो खराब मानते हैं। उन्होंने सबसे पहले मुर्गियाँ पाल लीं। मुर्गियों के बाद में बकरियाँ पाल लीं। भेड़ें पाल लीं। उन छह कोढ़ियों की मदद से वहीं जंगल में झोंपड़ी बनाकर रहने लगे। वे कोढ़ी मुर्गी पालने में, बकरी पालने में, भेड़ पालने में मदद करने लगे। घास-पात की उन्हीं की सहायता से उन्होंने झोंपड़ी बनाई। यह शुरुआत थी। अब बेटे मैं उनके मालदारी की बात कहता हूँ। मालदारी की बात कहिए। वही कोढ़ीखाना आज अभी जिनका मैं नाम ले रहा था जिन्दा आदमी का नाम ले रहा था उनका नाम है बाबा साहब आम्टे। वे जिन्दा हैं। मर गए, नहीं जिन्दा हैं अभी। बाबा साहब आमटे को तीस साल हो गए उस संस्थान को चलाते हुए, उस कोढ़ीखाने को चलाते हुए। उसकी आज क्या स्थिति है ? आज बेटे, वह विश्वविद्यालय है। किस बात का विश्वविद्यालय है ? अपंगों के कार्यकर्त्ताओं को शिक्षण देने का, अपंगों, अन्धों को, लँगड़ों को, कोढ़ियों को शिक्षित करने वाले कार्यकर्त्ताओं का शिक्षण करने का एक विश्वविद्यालय है महाराष्ट्र में। और क्या है ? और वहाँ दो सौ बैड कोढ़ियों के हैं। कोढ़ियों के अलावा और भी लोग रहते हैं। आँखों से अंधों का विद्यालय भी है और ब्रेल लिपि में उन्हें शिक्षण दिया जाता है। अपंगों के लिए शिक्षण किया जाता है। पोलियो से जिनके हाथ-पाँव खराब हो गए उनके लिए शिक्षण की व्यवस्था है। सब मिलाकर के दो हजार आदमियों के रहने का और निवास करने का स्थान है। इतना बड़ा स्थान महाराज जी कैसे बन गया ? बाबा साहब आमटे बड़े मालदार हैं क्या ? हाँ बेटे बड़े मालदार हैं। एक बार रीडर डाइजैस्ट अखबार आपने कभी देखा हो, अँग्रेजी का अखबार है। विदेश से निकलता है, हिन्दुस्तान से भी निकलता है उसका एक डेलिगेशन आया था। उसने कहा था हिन्दुस्तान की अच्छी समाजसेवी संस्थाओं में से कौन-कौन सी हैं ? उन्होंने बाबा साहब आमटे की संस्था को बहुत पसन्द किया और एक लाख रुपए का चैक उनको भेजा कि यह छोटी-सी हमारी भेंट स्वीकार कीजिए। एक बार आस्ट्रेलिया गवर्नमेण्ट का डेलिगेशन आया। उसने कहा—हिन्दुस्तान की अच्छी समाज सेवीसंस्थाओं का नाम बताइए। उसने बाबा साहब आमटे की संस्था की देखा और एक जहाज गेहूँ भरकर जो करीब पचास लाख रुपये का था, उस संस्था के लिए भेजा और कहा कि हमारा यह अनुदान—हमारी यह छोटी-सी भेंट भारत सरकार के मार्फत हम उस संस्था को भेंट करते हैं। तब वहाँ थोड़ी-सी जमीन थी। अब कितनी जमीन है ? बेटे अब सैकड़ों एकड़ जमीन है, संस्था के पास। बड़ी समर्थ संस्था है। बाबा साहब आमटे संस्था के संचालकों में से हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ये क्या कह रहा हूँ ? बेटा, मैं मालदारी की बात कह रहा हूँ। मालदारी की बात तो ही आप समझते हैं और कोई भाषा ही नहीं समझते। गुरुजी हमें कोई और भाषा नहीं आती हम तो सिवाय मालदारी के न भगवान की भक्ति का कोई मतलब निकालते हैं, न पूजा का मतलब निकालते हैं ? न सिद्धि का मतलब निकालते हैं। हमारी एक ही कसौटी है बस मालदारी की बात। चलिए मैं आपको बताता हूँ एक और मालदार आदमी का नाम। वह प्राइमरी स्कूल का अध्यापक था। उसके जी में आया कि नौकरी करते रहेंगे तो गवर्नमेण्ट जहाँ हमें भेजेगी वहीं जाना पड़ेगा। सरकार प्रायः खाते-पीते गाँव में ही भेजती है, उन देहातों में नहीं भेजती है, जहाँ पर पढ़ाई-लिखाई का कोई इन्तजाम नहीं है। वहाँ पर गवर्नमेण्ट क्यों भेजने लगी ? क्यों स्कूल खोलने लगी ? अब तो हम स्वयं अपने बलबूते पर जाकर के वहाँ काम करेंगे, जहाँ कोई नहीं कर सकता। एक छोटे-से देहात में वे चले गए और देहात में जाकर के वहाँ पर छोटी बच्चियों को बुलाकर एक प्राइमरी स्कूल खोल लिया। उस प्राइमरी स्कूल में खुद पढ़ाने लगे। पेड़ के नीचे पढ़ाने लगे, फिर घास-फूस इकट्ठा करके छप्पर बना लिया। यह क्या हुआ ? यह शुरुआत हुई। फिर आखिर में क्या हुआ ? आखिर में यह हुआ कि वहाँ पर राजस्थान का वनस्थली बालिका विद्यालय बन गया। कभी आपने देखा हो या आप कभी गए हों तो हिन्दुस्तान की नारी-संस्थाओं में, कन्या शिक्षण संस्थाओं में लगभग विश्वविद्यालय स्तर की वह संस्था है। अभी तक उसे विश्वविद्यालय की मान्यता नहीं मिली, पर मैं समझता हूँ उसका विस्तार, उसका फैलाव, उसकी सम्पत्ति, उसकी शिक्षण की प्रक्रिया लगभग उसी स्तर की होनी चाहिए जैसी कि विश्वविद्यालय की होती है।

ये किनकी बात मैं कह रहा हूँ ? हीरालाल शास्त्री की बात मैं कह रहा हूँ। हीरालाल शास्त्री कौन थे ? हीरालाल शास्त्री प्राइमरी स्कूल के अध्यापक का नाम है, जो पहली बार हिन्दुस्तान सरकार के साथ में अँग्रेज सरकार का हिन्दुस्तान की काँग्रेस के साथ जब सरकार का राजीनामा हुआ तो सरकार ने राजीनामे के समय कहा—अच्छा तो शुरू में एक बार अपनी मर्जी की गवर्नमेण्ट बना लीजिए, फिर जब चुनाव होगा तब देखा जाएगा। राजस्थान में काँग्रेस को जब गवर्नमेण्ट बनाने का मौका मिला तो पंडित नेहरू ने टेलीफोन उठाया और श्री शास्त्री जी को बुलाकर यह कहा कि आपको एक जरूरी काम के लिए हमने बुलाया है। शास्त्री जी ने कहा—आप बताइये क्या हुक्म है—हमारे लिये। आपके लिए ये हुक्म है कि आपको राजस्थान का मुख्यमंत्री बनना होगा। हम तो प्राइमरी स्कूल के अध्यापक हैं और हम तो बराबर इन लड़कियों के शिक्षण में लगे हुए हैं। नहीं, आपको बनना पड़ेगा तो फिर आप हुक्म कीजिए मैं बनने को तैयार हूँ। राजस्थान का मुख्यमंत्री सबसे पहले जब काँग्रेस सरकारें बनी थीं, तो हीरालाल शास्त्री को मुख्यमंत्री बनाया गया। इसके पश्चात् ? अभी-अभी इनका स्वर्गवास हुआ है। आपने कभी देखा होगा टिकट चलते हुए। हीरालाल शास्त्री का पच्चीस पैसे का टिकट चलता है। डाकखाने के लिफाफे पर। हीरालाल शास्त्री किस आदमी का नाम है ? बड़े मालदार आदमी का नाम है। बड़े सेठ आदमी का नाम है, तो क्या कोई सेठ हो सकता है ? कैसे हो सकता है ? उपासना से हो सकता है।

मित्रो ! आध्यात्मिकता के सहारे व्यक्ति मालदार भी हो सकता है और सम्पन्न भी हो सकता है, जैसे कि गाँधी जी करोड़ों रुपए की इमारत में जो आदमी रहता था और जिसका सारे भारतवर्ष में मान है। हो सकता था ? हाँ हो सकता था। कैसे हो सकता है ? उपासना के सहारे। उपासना किसे कहते हैं ? अध्यात्म को कहते हैं। उपासना का सिद्धान्त ही मैं आपको समझाने वाला था और कुछ समझाने वाला नहीं था। सिद्धान्त आपकी समझ में आ जाता तो आपका समय और हमारा समय सार्थक हो जाता। उपासना अगर आपके समझ में आ जाती और उपासना करने की विधि कोई आपको सिखा जाता तो आप निहाल हो जाते। अभी मैंने बताया कि उपासना से मालदार होने वाले आदमी का नाम गाँधी था। क्या गाँधी जी मालदार थे, बाप-दादाओं के हिसाब से ? नहीं, बाप-दादाओं के हिसाब से मालदार नहीं थे। पोरबन्दर के हजार कुण्डीय यज्ञ में मैं गया। वहाँ अपना गायत्री यज्ञ हुआ था। सबसे पहले पोरबन्दर जाने का मेरा मन इसलिए हुआ कि गाँधी जी का जन्म जिस घर में हुआ है, वहाँ जाकर देखूँ तो सही कि जिस गाँधी का इतना सम्मान है. तो इनके बाप-दादा क्या करते थे ? मैंने सुन रखा था कि कोई दीवान थे, कोई बहुत बड़े आदमी थे तो शायद उनके मकान भी बड़े-बड़े होंगे। घर जाकर देखा तो मुझे बहुत निराशा हुई। बहुत छोटा-सा घर था। इतना छोटा-सा घर यदि हरिद्वार में रहा होता तो कोई आदमी ५० रुपये महीने से ज्यादा किराया नहीं दे सकता था। बिल्कुल छोटा-सा मकान, बिल्कुल मामूली-सा मकान। गाँधी का जो मकान मैंने देखा तो लगा कि गाँधी जी बड़े आदमी के बेटे रहे होंगे, जरूर उनकी घरेलू स्थिति अच्छी रही होगी। जिस घर में गाँधी जी ने अपना पढ़ना-लिखना जारी रखा था उस कमरे को देखकर मेरा गर्व विलीन हो गया। लोगों के सामने मैं गरीबी का इजहार किया करता था और यह कहा करता था कि मैंने चारों वेदों के भाष्य नौ फुट लम्बी और नौ फुट चौड़ी और नौ फुट ऊँची कोठरी में बैठकर किए हैं और मैंने इतना सारा कार्य इतनी छोटी जगह पर बैठकर किया है, इतनी गरीबी में रहकर के किया है, बेटे क्या बताएँ ? लेकिन गाँधी जी की कोठरी को जब मैंने देखा जिसमें उन्होंने पढ़ा था, तो मेरा मस्तक नीचा हो गया। उसमें छः फुट से अधिक शायद ही ऊँचाई रही होगी और सोने के लिए मैं समझता हूँ शायद वह कोठरी जो गाँधीजी के हिस्से में आई थी, सात-आठ फुट लम्बी रही होगी। उसकी चौड़ाई मैं समझता हूँ, ४-५ फुट से ज्यादा नहीं रही होगी। बहुत छोटी-सी कोठरी थी जिसमें आदमी मुश्किल से एक तख्त बिछा सकता होगा या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करवट ले सकता होगा। इतनी छोटी-सी कोठरी में रहते थे गाँधी जी। गरीबी हालत में पढ़े थे। लेकिन अमीरी ? उनकी अमीरी को मैं क्या कह सकता हूँ ? उनके मरने के बाद में राजघाट की समाधि—यदि आपने देखी हो तो जरा पता लगाना कितनी कीमत की हो सकती है।

गाँधी जी ने अपने जिन्दगी में जो भी काम किए, कोई भी काम उनका करोड़ से कम की गिनती में नहीं आता। करोड़ रुपए से कम वे गिनना नहीं जानते थे, हमारी गिनती तो एक-दो, तीन-चार से होती है, पर उनकी गिनती करोड़ से होती है। उन्होंने चरखा बनाया, करोड़ रुपए का बनाया। उन्होंने सर्वोदय की कार्यपद्धति बनाई, करोड़ों रुपए की बनाई। उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा का जो भी कार्य आरम्भ किया, करोड़ों रुपए से आरम्भ किया। उन्होंने करोड़ों रुपए खर्च करा दिए। मरने के बाद गाँधी स्मारक निधि के नाम पर पैंसठ करोड़ रुपया जनता ने दिया और उनकी धर्मपत्नी का जब स्वर्गवास हो गया तो पैंतीस करोड़ के करीब रुपया कस्तूरबा स्मारक फंड में जमा किया गया। दोनों को मिलाकर सौ करोड़ रुपया खर्च किया गया। गाँधी जी माने सौ करोड़ रुपया। बड़े मालदार आदमी थे वे। नहीं साहब, वे तो थर्ड क्लास में चला करते थे। बेटे, थर्ड क्लास में चला करते थे, पर तुझे मालूम भी है कुछ, जब थर्ड क्लास में चला करते थे तो पूरा डिब्बा रिजर्व हुआ करता था, पूरी बोगी रिजर्व होती थी। बोगी किसे कहते हैं ? जिसमें ३६ सीट होती हैं और आप तो फर्स्ट क्लास में आए। फर्स्ट क्लास में तीन गुना किराया लगता था, कौन इतना किराया देता ? पहले जमाने की अपेक्षा अब तो मुझे मालूम नहीं क्या लगता है ? पहले थर्ड क्लास की तुलना में फर्स्ट क्लास का किराया पौने तीन गुना अधिक लगता था और गाँधी जी के थर्ड क्लास का किराया ३६ गुना देना पड़ता था, तब तो यह बड़ा महँगा पड़ता था ? हाँ बेटे ! बड़ा महँगा पड़ता था ? और गाँधी जी तो बड़े गरीब थे, बकरी का दूध पीते थे और बहुत सस्ता खाते थे। लेकिन उनकी बकरी अंगूर खाती थी। अंगूर का दूध क्या भाव होता था ? घास का दूध ढाई रुपये में हम खरीदते हैं और अंगूर का दूध कितना पड़ेगा जरा बताना ? घास में और अंगूर में कितना फर्क है ? घास क्या भाव आती है और अंगूर क्या भाव ? घास का दूध ढाई रुपये आ सकता है तो अंगूर का दूध क्या भाव पड़ेगा ? बेटा २५० रुपये किलो पड़ेगा। २५० रुपये का दूध पीते थे गाँधी जी। हाँ बेटे ! क्यों ? क्योंकि वह बहुत मालदार आदमी थे। गाँधी जी बहुत मालदार आदमी थे। यह मालदारी कहाँ से आ गयी ? मालदारी कौन-से व्यापार से कमा ली ? एक ही व्यापार था—उसका नाम चाहे तो अध्यात्म कह लीजिए और चाहे तो उपासना कह लीजिए।

अध्यात्म फिलॉसफी का नाम है और उपासना प्रैक्टिस का नाम है। 'थियॉरी' और 'प्रैक्टिस' दोनों को मिलाकर एक बात सम्पूर्ण हो जाती है। उपासना और अध्यात्म दोनों को मिला देंगे तो एक बात सम्पूर्ण हो जाएगी। अध्यात्म के सिद्धान्त जो अभी हमारी—आपकी समझ में नहीं आते यदि समझ में आ जाते तो बेटे गजब हो जाता। फिर आपको यह कहने की शिकायत नहीं पड़ती कि भजन से कोई फायदा नहीं हुआ। भजन करने में हमारा बहुत समय चला गया और हमने इससे कुछ नहीं पाया। ये शिकायतें आपको नहीं करनी पड़ सकती थीं, अगर आपको सिद्धान्त समझ में आ जाते, कुछ समझा जाता तब। कोई अभागा, कोई बाहर वाला उसे समझा गया है, उसके छींटें-छिलके से हमारी जान-पहचान करा गया है, किसी ने आपको सच्ची और आँखों देखी बात नहीं बताई, मैं चाहता था कि बताऊँ और उसके भीतर की जो तह की बातें हैं, वह भी आपको समझाऊँ। दूसरी चीज क्या चीज हो सकती है ? मैंने बताया था आपको कि उपासना एवं अध्यात्म दोनों एक ही बात है। इसका एक और नाम है पारस और तीसरा नाम है—अमृत। पारस किसे कहते हैं ? पारस उसे कहते हैं जिसे छूकर के आदमी का कुछ से कुछ रूपान्तरण हो जाए। पारस के स्पर्श मात्र से व्यक्ति का रूपान्तरण हो जाता है। पुरानी शक्ल नहीं रहती, जिसके द्वारा रूपान्तर हो जाता है, उसका नाम है 'पारस', जो आदमी की पुरानी वाली शक्ल ही बदल देता है। पुरानी शक्ल को बदल देता है ? हाँ बेटे, पुरानी शक्ल को बदल देता है और उस चीज का नाम होता है पारस। पारस किसे कहते हैं ? पारस बेटे अध्यात्म को कहते हैं। बताइए ? आपको पुराने-नमूने बताऊँ कि नए बताऊँ ? महाराज जी पुरानों पर तो हमारा कम विश्वास है। पुरानों में तो ऐसी बात मालूम पड़ती है जो गप-शप जैसी हो या कुछ अलंकारिक बना दी गयी हो। इसलिए पुरानों को तो मत बताइए, आप नयी बातें बता दीजिए। चलिये नयी बातें बता देते हैं।

पारस किसे कहते हैं ? पारस उसे कहते हैं, जिसे लोहे जैसा तुच्छ आदमी छूकर बड़ा समर्थ हो सकता है। बताइए ? अच्छा बेटे, अभी बताता हूँ कि कैसे हो सकता है। प्राचीनकाल की बातों को तो आपने मना कर दिया है अतः मैं अब आपको नए आदमियों के नाम बताऊँगा, जिनका कायाकल्प हो गया। कौन-कौन से व्यक्तियों का काया-कल्प हो गया ? कायाकल्प करने वालों में एक आदमी का नाम मैं बता सकता हूँ। क्या बता सकता हूँ ? जिन्दा आदमियों के नाम बताऊँगा जिनकी जिन्दगी में कायाकल्प हो गया। शेखावटी का था एक जाट। माँ-बाप गए मर। वह बेचारा अपने पड़ोसियों के यहाँ मजदूरी करने लगा। वे-पढ़ा-लिखा था। बीस साल का था। ब्याह शादी ? अरे कौन ब्याह-शादी करेगा। घर नहीं है, जिसके खेती नहीं, बाड़ी नहीं, पढ़ा-लिखा नहीं ऐसे व्यक्ति की ब्याह-शादी की कोई बात नहीं हो सकती। जाट जब २२ साल का हो गया और अपनी मेहनत-मजदूरी करके कुछ कमाने लगा। तब इतनी मेहनत-मजदूरी के क्या पैसे मिलते थे ? ३ आने, ४ आने का मजदूर आया करता था तब ३-४ आने की मजूरी से अपना पेट पाल लिया करता। एक दिन जाट के मन में यह बात आयी कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई नयी बात करनी चाहिए, भगवान का भजन करना चाहिए। दूसरे दिन उसने लाल रंग का गेरू लाकर कपड़े को रँग लिया और कुर्ते को रँग लिया और बस संत—महात्मा हो गया। सारा गाँव कहता बदमाश कहीं का, काम नहीं करेगा तो क्या करेगा ? जाट ने कहा—इस गाँव में नहीं रहूँगा कहीं और चला जाऊँगा। जाट गाँव में से निकल गया और साधू हो गया—महात्मा हो गया, बाल बढ़ा लिए, दाढ़ी बढ़ा ली। इस तरह जहाँ जाता वहीं भीख माँग लाता और जीवन व्यतीत करता। कभी यहाँ चला गया, कभी वहाँ चला गया, हरिद्वार चला गया, दूर-दूर तक घूमता रहा वह। मोटा भी हो गया और मेहनत-मजूरी भी नहीं करनी पड़ी। एक दिन वह विचार करने लगा कि जिसका हमने यह भेष बनाया है, अध्यात्म का लबादा पहना है, उसको ग्रहण कर लेना चाहिए। वास्तव में संत बन जाना चाहिए।

हम और आप लबादा ही पहने थे और लबादा ही पहने हैं। भीतर न कभी अध्यात्म ने प्रवेश किया, न कभी उसने चमत्कार दिखाया। न हमको किसी अभागे ने कभी यह बताया कि अध्यात्म किस चीज का नाम है ? उपासना के पीछे जो फिलॉसफी छिपी हुई है, जो तत्वज्ञान छिपा हुआ है, कोई सिखाने नहीं आया सिर्फ छिलके और कलेवर बता जाते हैं, विधियाँ बता जाते हैं, विधान बता जाते हैं, पर वास्तव में गहराई कोई बताता नहीं है। प्राण कोई बताता नहीं है। लाश हमको दिखा जाते हैं। प्राण की कोई जानकारी नहीं देते। मित्रो, जाट यह विचार करने लगा कि अध्यात्म का कलेवर पहना है तो वास्तविक अध्यात्म भी करना चाहिए। कई दिन विचार करता रहा कि क्या करना चाहिए ? समझ में आ गया कि यह करना चाहिए। अध्यात्म का अर्थ क्या होता है यह उसकी समझ में आ गया। आपकी समझ में नहीं आया, पर उसकी समझ में आ गया। मैं बताऊँगा क्या समझ में आ गया। उस अध्यात्म को समझने के बाद में जाट अपने गाँव चला गया और सोचा अगर अध्यात्म सही चीज है तो उसकी इज्जत हर जगह होगी ? गाँव में बेइज्जती एवं और जगह इज्जत हो तब तो वह चीज गलत है, झूठी चीज है। सही चीज है, तो गाँव में भी इज्जत होनी चाहिए। उसने निश्चय कर लिया कि मैं गाँव में ही जाऊँगा और अगर मेरा अध्यात्म सही है और जो मेरी वास्तविकता को जानते हैं—असलियत को जानते हैं, तो मैं वहीं जाकर दिखाऊँगा कि अध्यात्म सही है। एक प्लान बनाकर चला गया अपने गाँव में। जा करके क्या काम किया उन्होंने ? जो उनकी जान-पहचान के थे, जिनके यहाँ नौकरी करते थे वहाँ जा पहुँचे। उन्होंने कहा—अरे ! तू फिर आ गया। बेशरम फिर आ गया गाँव में ही। मजदूरी से, मेहनत से जी चुराने वाले महात्मा का ढोंग बनाकर आ गया है। वह चुप हो गया; उसने कुछ कहा नहीं। जब सब किसान अपने-अपने काम पर चले गए तो वह उनके घरों में जा पहुँचा। स्त्रियों के पास पहुँचा—दादी राम-राम। राम-राम बेटा ! तू तो कहाँ चला गया था तब से। अरे दादी मैं तो महात्मा हो गया। अच्छा भाभी तुम तो पहले भाभी थीं अब तो माताजी हो गयीं। माताजी नमस्कार। हम तो तुम्हारी भाभी थीं ? भाभी पहले कभी थीं अब तो माताजी हैं हमारी। कहाँ चले गए थे। बहुत दूर चले गए थे। अब कहें तो गाँव में रहें नहीं तो चले जाएँ। नहीं आप गाँव में ही रहें तो फिर एक रोटी दे दिया करें तो गाँव में रहा करूँगा। एक रोटी हम दे दिया करेंगे। घर वाले लड़ेंगे तो नहीं। ठीक बात है। एक रोटी का वादा सारे गाँव में करा लाया। शरम रखो हम भी जाट हैं, तुम भी जाट हो, हमें दूसरे बिरादरी वालों के यहाँ भीख माँगनी पड़ती है जाट रोटी भी नहीं खिला सकते। जाटवाद फैला दिया। अच्छी बात है हम रोटी खिला दिया करेंगे। उन्होंने कहा—एक-एक रोटी हमारे यहाँ से ले जाया करो। एक-एक रोटी जाट माँगकर ले आता सौ घर थे सौ रोटी माँग लाया। क्या करूँ इसका, खानी तो चार हैं, पर आ गईं सौ। उसने कहा माताजी बात यह है कि हमको रोज-रोज आने में डर लगता है, कि कहीं भइया जी आ जाएँगे और ताऊ जी आ जाएँगे, तो आपको भी मारेंगे और हमको भी मारेंगे। हाँ ये तो है तो ऐसा करो, मैं आपको मिट्टी का एक घड़ा दे जाता हूँ, जिसमें मेरी एक रोटी का अनाज डाल दिया करो। इकट्ठी करके मैं अपने आप पीस लियां करूँगा। पीसता तो मैं पहले भी था, मेरा घर तो अभी भी है, टूटा हुआ, मैं अपने हाथ से पीस लिया करूँगा। आप अनाज डाल दिया करें। जब मेरी मर्जी आएगी और भैया जी या ताऊ जी घर में नहीं होंगे तो चुपके से अनाज ले जाया करूँगा।

सौ घरों में ऐसे मिट्टी के घड़े रख दिए। एक-एक मुट्ठी अनाज आने लगा। महीने भर में सारा अनाज इकट्ठा हो गया। जब सारा अनाज इकट्ठा हो गया तब उसने देखा कि सौ घरों में एकत्र मुट्ठी-मुट्ठी अनाज कितने दाम का हो सकता है तो पता चला कि वह ३० रुपये का होता है। उस समय मंदी के जमाने की बात है उस जमाने में मिडिल क्लास अध्यापक ५-५, ६-६ रुपए महीने मिल जाते थे। उन्होंने दस-दस रुपये के तीन अध्यापक रख लिए। उनसे कहा—गाँव में सारे बच्चे पढ़ेंगे—बेटियाँ पढ़ेंगी। लड़कियों के लिए अलग, लड़कों के लिए अलग। ५०-५० बच्चों के हिसाब से १०० बच्चे पढ़ने लगे। एक अच्छा स्कूल खड़ा हो गया। कहाँ से स्कूल चलता है ? खर्च कैसे कौन करता है ? करता है—केशवानन्द। पहले उसका नाम कुछ और था, बाद में केशवानन्द नाम रख लिया। केशवानन्द ने इस तरह से प्राइमरी स्कूल का शिक्षण शुरू किया। एक दिन गाँव में गया और कह गया—माताजी हम जो भीख माँगते थे, वास्तव में ईमानदारी की बात यह है कि हम स्कूल के लिए माँगते थे। स्कूल और हम तो एक ही हैं। हमें मत दीजिए, हम तो हाथ-पैर चलाकर अपना गुजारा कर लेंगे, पर आप स्कूल के लिए दिया कीजिए। यह जो घड़ा है जब भर जाएगा तब एक आदमी इसे ले जाया करेगा और आप यह समझ लेना कि आप केशवानन्द को दे रही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। वास्तव में यह स्कूल के लिए है इससे और भी स्कूल खुलेगा। शेखावाटी के सारे गाँवों में केशवानन्द घूमा और साठ के साठ गाँवों में स्कूल खुलवा दिए और गाँव के सब बच्चों को पढ़ने का इन्तजाम कर दिया।

साथियो ! मैं क्या कह रहा हूँ ? मैं अध्यात्म की बात कह रहा हूँ। अध्यात्म को ही भजन कहते हैं क्या ? चल हट। भजन तो इसका कलेवर है। भजन तो इसकी लाश है। भजन इसका लिफाफा है। भजन अध्यात्म नहीं है। भजन अध्यात्म का लिफाफा है। लिफाफे के अन्दर क्या हुआ कि स्वामी केशवानन्द ने सौ गाँव के अन्दर करीब अस्सी प्राइमरी स्कूल खुलवा दिये। जब विद्यार्थी ज्यादा हो गये और आगे की पढ़ाई करने के इच्छुक हो गये तो उसने उन्हीं सब गाँवों से व्यवस्था बनाकर उसकी भी पूर्ति कर दी। तब तक लोग भी समझदार हो गए थे। श्रद्धा भी करने लगे थे। उन्होंने मिडिल स्कूल बनवा दिए। मिडिल स्कूल की पढ़ाई पूरी हो गई तो हाईस्कूल बनवा दिए। इसके बाद में कॉलेज बनवा दिए। अगर संगरिया, बीकानेर में कभी आप गए हों तो वहाँ बीकानेर जिले में संगरिया नाम का गाँव है। संगरिया गाँव में सात कालेजों का एक यूनिट बना हुआ है, जिसमें लड़कियों की एम. एस-सी. तक पढ़ाई होती है। उसमें कॉमर्स वाले विभाग हैं, साइंस वाले विभाग हैं, उसमें कितने टीचर्स-ट्रेनिंग वाले विभाग हैं ? सात कॉलेज हैं वहाँ जिस तरीके से हीरालाल शास्त्री को टेलीफोन किया गया था उसी तरह जब स्वराज्य हुआ तब पुरुषोत्तम दास टंडन, जो कांग्रेस के प्रेसीडेण्ट थे, उन्होंने स्वामी केशवानन्द के नाम फोन मिलाया और कहा—हम स्वामी केशवानन्द से बात करना चाहते हैं। कहिए क्या बात है ? आपको उस डिवीजन से शेखावटी डिवीजन से पार्लियामेण्ट के मेम्बर के लिए खड़ा होना चाहिए। काँग्रेसी होने के नाते मैं आज्ञा भी नहीं मान सकता और मैं खड़ा भी नहीं होना चाहता तो उन्होंने ऐसे अडंगे अटकाना शुरू कर दिया जिससे कि उनकी बात भी रह जाए और वे खड़े भी न हों और जाकर मना भी न करें। ऐसे अडंगे अटकाना शुरू कर दिया। क्या अडंगा अटकाया ? एक तो मैं किसी के पास वोट माँगने नहीं जाऊँगा। अच्छा साहब, मंजूर है। दूसरा मैं खड़ा होना नहीं चाहता। एक अडंगा यह अटकाया कि मेरे मुकाबले में कोई खड़ा हो गया तो मैं खड़ा नहीं होऊँगा। अपना पर्चा वापस ले लूँगा। खड़े होने पर हम कैसे रोक सकते हैं, नहीं साहब खड़ा हो गया तो हम नहीं खड़े होंगे। स्वामी केशवानन्द खड़े होना नहीं चाहते थे। पुरुषोत्तम दास टंडन ने कहा जो होगा सो देखा जाएगा। आप अपना पर्चा दाखिल कर दीजिए। पर्चे कई और आदमियों ने दाखिल कर दिए। शेखावटी डिवीजन के जाटों ने कहा आप हमारे स्वामी जी के मुकाबले में खड़े होंगे तो आपको हमारी गाँव की सीमा में से होकर निकलना मुश्किल हो जाएगा। सबने अपने नाम वापस ले लिये। सारे के सारे शेखावटी डिवीजन जिसमें कि जाट ही जाट भरे हैं। जब उन्होंने कहा आप हमारे स्वामी जी के मुकाबले में खड़े होंगे और जब इतनी लाल-लाल आँखें एक साथ निकलीं तो काँपते हुए उन्होंने पर्चा वापस ले लिया। स्वामी जी पार्लियामेण्ट के मेम्बर हो गए। पाँच साल के लिए मेम्बर हो गये। दूसरी बार पाँच साल के लिए मेम्बर हुए। तीसरी बार पाँच साल के लिए मेम्बर हुए। चौथी बार भी पार्लियामेण्ट के वे ही मेम्बर थे और तब तक रहे जब उनका एक्सीडेण्ट हो गया, जीप की चपेट में आकर और उनकी मृत्यु हो गई। यहाँ शांतिकुंज भी वे आए थे, जब मैं हिमालय चला गया था। उन्हें पता चला कि आचार्य जी बाहर चले गए, तो उन्होंने माता जी से कहा—आपने रोका नहीं आचार्य जी को। वे हिमालय चले जाते हैं और यहाँ का काम पड़ा है। उन्होंने कहा स्वामी जी, आप नाराज न हों वे थोड़े दिन के लिए गए हैं, फिर आ जाएँगे और फिर काम करेंगे। हाँ, तो थोड़े दिन के लिए जाने में कोई हर्ज नहीं है। चले तो नहीं गए हैं। नहीं चले नहीं गए हैं। स्वामी जी आपको किसी बात की दिक्कत है, परेशानी है। नहीं हमें कोई परेशानी नहीं है। आपकी कृपा है, यहाँ कोई दिक्कत की बात नहीं है। इस तरह व्यक्तित्व था स्वामी केशवानन्द का।

वे कितने दबंग आदमी थे इसे इस बात से जान सकते हैं आप। राजस्थान गवर्नमेण्ट के शिक्षा विभाग में वे एक दिन पहुँच गए। उन्होंने कहा—तुमने आचार्य जी की पुस्तकें पढ़ी हैं। हमें तो मालूम नहीं, कौन आचार्य जी हैं ? तुम्हें क्यों मालूम पड़ेगा, तुम्हारे यहाँ पर तो खुशामदी और चापलूस आ जाते हैं और उनकी ही बात तुमको मालूम पड़ती है। तुम किसी आदमी से सी. आई. डी. से यह पता लगा लेते हो कि डाकू कौन है और चोर कौन है, परन्तु यह पता नहीं लगा सकते कि इसमें भला आदमी कौन है और इसमें विद्वान कौन है ? आपको पता लगाना चाहिए था और आचार्य जी का साहित्य आपको मँगाना चाहिए था। आप ही बताइये साहब, हमने तो कभी देखा भी नहीं है कि आचार्य जी का साहित्य कैसा हैं ? उन्होंने सारे के सारे स्कूल एवं कॉलेज की लाइब्रेरियों, शिक्षण-संस्थाओं में हमारे साहित्य को रखने की सिफारिश की। किस-किस को लाइब्रेरियों से लेकर राजस्थान गवर्नमेण्ट के शिक्षामंत्री तक से कहा और हमारे यहाँ गायत्री तपोभूमि एवं अखण्ड-ज्योति कार्यालय में भी चिट्ठी लिखी कि जहाँ कहीं भी किताबों के आर्डर आएँ आप भेज दीजिएगा, पैसा मैं वसूल करके भेज दूँगा, पैसे की जिम्मेदारी मेरी। जितने भी उनके आर्डर आये हमने भेज दिए। मैं सोचता हूँ कि शायद साठ-सत्तर हजार रुपए के मनीआर्डर आए होंगे हमारे यहाँ पर। जो भी साहित्य था पुराना-धुराना, नया बचा-खुचा, सब स्वामी जी ने साफ करा दिया और सत्तर हजार रुपया राजस्थान गवर्नमेण्ट से वसूल कराकर हमें भिजवा दिया। वे बड़े दबंग आदमी थे। स्वामी केशवानन्द ने एक बार कहा था कि राजस्थान गवर्नमेण्ट ने मुझसे यह कहा कि आप तीस लाख रुपया अगर इकट्ठा कर दें तो हम आपके सांगरिया के यूनिट को विश्वविद्यालय बनवा देंगे, तो मैं जाने वाला हूँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कलकत्ता और वहाँ से तीस लाख रुपया इकट्ठा करके लाऊँगा और फिर विश्वविद्यालय बनवाऊँगा। पर इसी बीच उनका स्वर्गवास हो गया।

यह किनकी बात कर रहा हूँ ? स्वामी केशवानन्द की बात कह रहा हूँ। मैं पारस की बात कह रहा हूँ। पारस किसे कहते हैं ? पारस उसे कहते हैं जो आदमी के जीवन का कायाकल्प कर दे। कायाकल्प हो गया ? हाँ एक बिना पढ़े-लिखे जाट का कायाकल्प हो गया। मैं उसी की बात कह रहा हूँ जो पार्लियामेण्ट का मेम्बर ही नहीं, सारी की सारी शेखावटी का हृदय सम्राट था। यह हो सकता है ? हाँ हो सकता है। शर्त केवल यही है कि अध्यात्म आपके पास हो। पारस आपके पास न हो तब ? पारस नहीं है तब बेटे मैं नहीं जानता। लेकिन अध्यात्म के बारे में मेरा विश्वास है कि असली अध्यात्म का अगर किसी ने स्पर्श किया होगा तो उसकी हैसियत गई-गुजरी नहीं रह सकती। तब उसकी हैसियत ऊँची होनी चाहिए, बढ़िया होनी चाहिए। बेटे, पारस के और किस्से सुनाऊँ ? हाँ गुरुजी। सुना दीजिए।

एक मराठा बालक ऐसे ही जानवर चराता हुआ घूमता-फिरता था। एक दिन एक स्वामी जी आये और उसकी बाँह पकड़ ली। उसने पूछा—क्या बात है महाराज जी ? उन्होंने कहा—बेटे हम तुझे राजा बनाना चाहते हैं। हमें राजा बनाना चाहते हैं आप ? हाँ आपको ही बनाना चाहते हैं। पर हम तो जानवर चराते हैं। बिना पढ़े-लिखे हैं। फिर आप हमें राजा कैसे बना देंगे ? राजा बना देंगे तो बना दीजिए, फिर बातचीत हुई। उन्होंने कहा—आपको असली अध्यात्म के सम्पर्क में आना पड़ेगा, पारस के सम्पर्क में आना पड़ेगा। पारस क्या हो सकता है ? यह मैं थोड़ी देर में बताऊँगा कि पारस क्या हो सकता है ? पारस छूना स्वीकार करा लिया समर्थ गुरु रामदास ने। उस मराठा बालक से उन्होंने कहा—आप आज से छत्रपति शिवाजी होंगे। छत्रपति शिवाजी हो गए। छत्रपति शिवाजी होकर जो रोल अदा किया वह एक अनोखा रोल है। बेटे, हिन्दुस्तान की आजादी दिलाने की शुरुआत जहाँ से होती है, वह छत्रपति शिवाजी से प्रारंभ होती है और खत्म कहाँ होती है ? खत्म वहाँ होती है, जहाँ सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज थी। बीच में कई बार सत्याग्रही आ जाते हैं, काँग्रेसी आ जाते हैं और लोग आ जाते हैं। क्रान्तिकारी आ जाते हैं, लेकिन आजादी की लम्बी लड़ाई वहाँ से शुरू होती है, जहाँ से शिवाजी का उदय होता है।

ये कौन-सी बात है शिवाजी की ? शिवाजी की नहीं है और न ही समर्थ गुरु रामदास की बात है। ये अध्यात्म की बात है और उपासना की बात है। उपासना का तत्त्वज्ञान और फिलासफी मैं समझाऊँगा आपको थोड़ी देर में कि उपासना क्या हो सकती है और अध्यात्म क्या हो सकता है ? अभी तो यह बताता हूँ कि पारस किसे कहते हैं ? पारस उसे कहते हैं जिसके स्पर्श से जो चीज जैसी हो, वैसी न रहकर के बेशकीमती हो जाए। लोहा कम कीमत का होता है। पारस को छू करके बहुत कीमत का हो जाता है। कम कीमत की चीज जब बेशकीमती हो जाए, जिस तरीके से उस तरीके का नाम है पारस तो कोई और उदाहरण बताइये ? अच्छा एक और उदाहरण बता सकते हैं। एक छोटा-सा बच्चा घूम रहा था। बच्चे को एक स्वामी जी ने पकड़ लिया और कहा कि आपको हम चक्रवर्ती शासक बनाना चाहते हैं। चक्रवर्ती तो क्या, वह एक छोटे-से इलाके का राजा था। छोटे-से इलाके का राजा था वह लड़का जिसको उन्होंने कहा कि आपको तो मैं चक्रवर्ती बनाऊँगा। चक्रवर्ती बनाना चाहते हैं आप, परन्तु हमें कैसे बना सकते हैं ? हम तो गद्दी पर ही नहीं बैठ सकते। हम तो अछूत हैं। अछूत नहीं था वह। क्या था ? वह था चन्द्रगुप्त मौर्य। मौर्य किसे कहते हैं। मौर्य, बेटे नाई जो हजामत बनाने वाले होते हैं, इन्हीं में से राजा की एक रखैल थी। उनके पेट में से चन्द्रगुप्त मौर्य पैदा हुए थे। राजा-रानी के पेट में से पैदा नहीं हुआ था वह। उस जमाने की परम्परा में यह कोई अनहोनी बातें नहीं थीं। पुराने-जमाने की परम्परा में ऐसा था कि जो राजपूत होते थे, सवर्ण होते थे, वही गद्दी पर बैठते थे। अछूतों को गद्दी पर नहीं बैठने देते थे। इसी कारण से चन्द्रगुप्त भी कह रहा था कि हमको आप चक्रवर्ती कैसे बनाएँगे, हमको तो गद्दी पर भी बैठने का अधिकार नहीं है। नहीं, तुम्हारा अधिकार है और हम बना देंगे। चाणक्य ने क्या कर डाला ? चन्द्रगुप्त मौर्य को सम्राट बना दिया। वह केवल सम्राट ही नहीं हो गया, वरन् इतना बड़ा चक्रवर्ती शासक हो गया जितना कि हिन्दुस्तान की तारीख में इतने बड़े नक्शे हैं, जी और कहीं दिखाई नहीं पड़ते, जितने कि उसके हैं। बहुत बड़ा भारत कहते हैं। बृहत्तर भारत कहाँ तक और कितना फैला हुआ था ? वहाँ तक फैला हुआ था बृहत्तर भारत, जितना कि संसार में सबसे बड़ा कोई दूसरा देश हुआ ही नहीं इतिहास में। इतिहास से पहले की बात मैं नहीं कहता। आधुनिक इतिहास की बात कहता हूँ कि इतिहास में सबसे बड़ा साम्राज्य बृहत्तर भारत था। इसमें अफगानिस्तान भी आता था, इसमें मध्य एशिया के बहुत से इलाके भी आते थे। ये किसका राज्य था ? चन्द्रगुप्त मौर्य का। महाराज जी ! चन्द्रगुप्त मौर्य को चक्रवर्ती कैसे बना दिया ? कहाँ पढ़ा था वह ? क्या-क्या किया था उसने ? पैसा कहाँ से लाया था ? बेटे, हम नहीं जानते कहाँ से लाया था। लेकिन हम यह जरूर जानते हैं कि चाणक्य ने इतना बड़ा रुतबा उसे प्रदान कर दिया था। चाणक्य ने ? नहीं अध्यात्म ने। चाणक्य अलग बात है। चाणक्य एक व्यक्ति का नाम है और चन्द्रगुप्त एक व्यक्ति का नाम है, परन्तु चमत्कार सिद्धान्तों पर टिका हुआ है, आदर्शों पर टिका हुआ है। इन्हीं आदर्शों और सिद्धान्तों के आधार पर चाणक्य स्वयं इतना महान बनता हुआ चला गया और चन्द्रगुप्त को भी महान बना दिया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अच्छा साहब ! और उदाहरण बताइए ? बेटे मैं और बता सकता हूँ, जिनका कि काया-कल्प हो गया। काया-कल्प किनका हो गया ? विवेकानन्द छोटी-सी नौकरी माँगने की हैसियत से रामकृष्ण परमहंस के पास गये। वहाँ कहने लगे हमारे पिताजी की मृत्यु हो गयी है आप हमको कहीं सलैक्ट करा दीजिए। कहीं कोई एल. डी. सी. की पोस्ट दिला दीजिए। वहाँ सौ रुपये की तनख्वाह मिल जाए और भाई-बहिनों का हम पालन कर सकें। माँ विधवा हो गई है और हम भाई-बहिन रह गए हैं। पेट पालना मुश्किल है। रामकृष्ण ने कहा—जा इस काली के पास जा उसी से माँग ले। विवेकानन्द ने काली को देखा। विकराल काली जमीन से आसमान तक छाई हुई थी। काली महानता को कहते हैं। महानता को देखा है आपने कभी ? आपने महानता को कभी नहीं देखा है। आपने पत्थर का खिलौना भर देखा है और उसी पर टनाटन घण्टी बजाते रहते हैं। वह काली देखी ही नहीं, वह गायत्री देखी ही नहीं, जो जमीन से लेकर आसमान तक मानवीय महानता के रूप में, सिद्धान्तवादिता के रूप में, आदर्शवादिता के रूप में जीभ लपलपाती और आग की तरीके से जलती हुई दिखाई पड़ती है। विवेकानन्द ने इस काली को देखा और उसे देखकर काँप गए। परमहंस के पास आए उन्होंने कहा—काली के पास आए तब तुम्हें कुछ और बना देते हैं। अब हम आपको बदल देते हैं। बदल देने के बाद में मनुष्य की सामान्य समस्याएँ बाकी रह जाती हैं क्या ? नहीं सामान्य समस्याएँ क्या बाकी रह जाएँगी ? पेट पालने की समस्या ? अरे बाबा, पेट पालने की समस्या भी कोई समस्या है क्या ? कीड़े अपना पेट पाल लेते हैं, मच्छर पाल लेते हैं, मक्खी पाल लेती हैं। कुत्ते पाल लेते हैं, चिड़ियाँ पाल लेती हैं। फिर तेरे सामने क्या आफत है ? नहीं साहब, पेट पालना बड़ी समस्या है। पेट पालना कोई समस्या नहीं है। पेट किसी के पास ज्यादा तो नहीं है। मेढक कहाँ तक पढ़ा है। मेढक ने बी. ए., एम. ए. किया है क्या ? नहीं साहब, एम. ए. पास तो नहीं किया। तो कहाँ से आती है तनख्वाह ? तनख्वाह यहीं तालाब में से आती है। मछली तालाब में से आ जाती है पकड़ लेता हूँ खा जाता हूँ। कीड़े पकड़ लेता हूँ खा जाता हूँ। चिड़ियाँ पेट पाल लेती हैं, मेढक पेट पाल लेता है। नहीं साहब नौकरी कहाँ से लगेगी ? तेरे सिर से, छोटा आदमी केवल पेट पालने की चिन्ता में ही डूबा रहता है।

मित्रो ! रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द को छुआ और छूने के बाद जाने क्या बना दिया, कितना विशाल बना दिया, जो नौकरी पाने के लिए आया था। विदेश से घूम करके विवेकानन्द आया तो कलकत्ते की सड़कों पर उसका जब जुलूस निकाला गया—हाईकोर्ट के जज और सीनियर एडवोकेट लोग आए। उन्होंने कहा—विवेकानन्द की गाड़ी में घोड़ों को लगाने की जरूरत नहीं है, घोड़ों का काम हम कर सकते हैं। विवेकानन्द का जब जुलूस निकला, तब उसमें जज भी शामिल थे और दूसरे लोग भी शामिल थे। कलकत्ते के संभ्रान्त नागरिक उस जुलूस में उस बग्घी को खींचते हुए चले जा रहे थे। विवेकानन्द बहुत बड़े आदमी थे, मैं कल कह चुका था। कन्याकुमारी पर उनका दो करोड़ रुपए का भव्य स्मारक बना हुआ है। रामकृष्ण परमहंस की कल मैं चर्चा कर चुका हूँ। वेलूर मठ जो उनने एक गुरु के नाम पर बनाया था, गजब का है।

मैं क्या कह रहा था ? बेटे, मैं पारस की बात कह रहा था। पारस उसे कहते हैं जिससे आदमी की शक्ल बदल जाए। आदमी की सूरत बदल जाए। नहीं सूरत नहीं बदल जाता, आदमी की प्रकृति बदल जाती है। स्तर बदल जाती है, अगर असली अध्यात्म आए तब। नकली अध्यात्म आए तो नकली की तो बात ही नहीं। नकली का तो मैं जिक्र ही नहीं करता। नकली का अगर मैं जिक्र करता तो आपको तो नहीं, पर मुझे भी शरम आ जाती। मंदिरों में पूजा करने वाले एक लाख के करीब पुजारी हिन्दुस्तान में हैं। सब के सब सबेरे से शाम तक ठाकुर जी कों भोजन कराते हैं। कभी हजामत बनाते हैं। कभी चाय पिलाते हैं, कभी ब्रेकफास्ट कराते हैं, कभी पंखा झलते हैं। जैसे गरीब भगवान वैसे ही गरीब पुजारी। पुजारी बेचारे को न रोटी खाने को मिलती है, न कपड़ा पहनने को मिलता है। पुजारी भी और ठाकुर जी भी बीमार। पुजारी भी भूखा बैठा है, ठाकुर जी भी भूखे बैठे हैं। दोनों की ही एक-सी हालत है, दोनों ही फटेहाल हैं। ठाकुर जी का भी कुर्ता फटा हुआ है और पुजारी जी का भी कुर्ता फटा हुआ है। पुजारी भी कच्ची रोटी खा रहे हैं और भगवान जी भी कच्ची रोटी खा रहे हैं। मकड़ी का जाला भगवान जी के कमरे में छाया हुआ है और पुजारी जी के भी घर में छाया है। दोनों की एक-सी हैसियत है। यही अध्यात्म है क्या ? बेटे ! नहीं, यह अध्यात्म नहीं है। अध्यात्म कहीं होता तो आग की तरीके से जलता रहता, सूरज की तरीके से चमकता रहता और सोने की तरीके से जगमगाता रहता। असली अध्यात्म सिखाने वालों को मैं कुछ नहीं सिखाना चाहता।

असली अध्यात्म वह है जिसको छूकर आदमी पारस बन सकता है। असली अध्यात्म उस चीज का नाम है, जिसको पी करके आदमी अमर हो सकता है। अमर होने वाली चीज का नाम है—अमृत। अमृत, गुरु जी ऐसा होता है क्या ? अमृत मेरे ख्याल से ऐसा तो नहीं होता है। क्यों ? अगर इस दुनिया में अमृत होता और थोड़े-से भी आदमियों को भी पीने को मिल जाता तो वे जिन्दा बने रहते। जिन्दा होने के बाद मरने का नम्बर नहीं आए और नए बच्चे पैदा होते रहें तो फिर दुनिया में इतनी घिच-पिच हो जाएगी कि रहने लायक कहीं जगह नहीं मिलेगी।

अमृत कहीं नहीं है। अमृत अगर दुनिया में होता तो मुसीबत हो जाती। अमृत है दुनिया में, परन्तु वह दूसरा अमृत है। किस चीज का नाम है ? अमृत बेटे, अध्यात्म को कहते हैं। अध्यात्म अमृत को कहते हैं। अध्यात्म का अमृत अगर हमारे भीतर आ जाए तो फिर हम क्या होते ? तो फिर हम अजर-अमर हो सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

फिर हमको कोई मार नहीं सकता। कोई नहीं मार सकता ? नहीं कोई नहीं मार सकता। देखिए ध्रुव जो है, आसमान में टँगा हुआ है। यह मरेगा ? नहीं, यह नहीं मर सकता। सारे ग्रह परिक्रमा करते हैं, सूर्य-मण्डल की परिक्रमा करते हैं और यह आसमान में टँगा हुआ है। सात ऋषि आसमान में टँगे हुए हैं तो क्या मर गए ऋषि ? मर नहीं सकते ऋषि। अध्यात्मवादी मरता नहीं है। अध्यात्मवादी की मृत्यु नहीं हो सकती। प्राण की दृष्टि से भी और कीर्ति एवं यश की दृष्टि से भी। वह कभी मर नहीं सकता। सातों ऋषि टँगे हुए हैं आसमान में वे अमर हैं।

कौन-कौन टँगा हुआ है ? जमीन वालों के नाम बताइए ? जमीन वालों के नाम बताता हूँ—अभी। बताइए एक-आध का नाम ? चलिए मैं औरों के नाम बता सकता हूँ जैसे राजा हरिश्चन्द्र का। गुरु जी ! हरिश्चन्द्र जो थे वे तो मर गए। नहीं, बेटे मेरे ख्याल से वे मरे नहीं हैं। गाँधी जी सबसे पहले जब राजा हरिश्चन्द्र का एक बार ड्रामा देखने गए, तब उनकी उम्र थोड़ी-सी रही होगी, नौ-दस साल के रहे होंगे तो उन्होंने राजा हरिश्चन्द्र जी का ड्रामा देखकर यह कहा कि हम भी राजा हरिश्चन्द्र होकर उनकी जैसी जिन्दगी जियेंगे और वे हरिश्चन्द्र होकर ही जिए। उन्होंने कहा—सत्याग्रह का—सत्य का ही जीवन जियेंगे। चाहे नफा हो चाहे नुकसान हो। जीवन जीते-जीते वे हरिश्चन्द्र बन गए। उनका गुरु कौन था ? गाँधी जी का गुरु बेटा हरिश्चन्द्र था, जिसने दीक्षा दी थी जब वे ड्रामा देख रहे थे। हरिश्चन्द्र तो मर गए ? नहीं बेटा हरिश्चन्द्र मर नहीं सकते। यह तो एक गाँधी का मैंने तुझे हवाला दिया, पर न जाने कितने गाँधी बनाये होंगे उन्होंने। अनीति की राह चलने वालों का उन्होंने हाथ पकड़ लिया होगा। हरिश्चन्द्र ने कहा होगा—अरे ! हम भी तो एक थे। जो सत्य के लिए अपने बीबी-बच्चों को बेच चुके थे और एक तू है दुष्ट कि तेरे पास खाने को भी है, गुजारे को भी है और तू अपना ईमान डिगाता फिरता है। हरिश्चन्द्र ने न जाने कितने आदमियों को गाल में चपत मारी होगी ? कितने आदमियों को सिखाया होगा ? मर गया ? मर नहीं सकता हरिश्चन्द्र। और कौन-कौन नहीं मरा ? बेटा, मेरे ख्याल से भगीरथ भी नहीं मरे। भगीरथ कौन से थे ? भगीरथ तप करने के लिए चले गए और गंगा जी को लेकर आए। गंगा जी आने को जब तैयार हो गईं तो उन्होंने भगीरथ से कहा—मैंने आपकी बात तो मान ली, पर एक बात आप हमारी भी मान लीजिए। तो भगीरथ ने कहा आप बताइये तो सही हम मान लेंगे। गंगा जी ने कहा—आज से आप हमारे बाप और हम आपकी बेटी। माता जी आप ये क्या कहती हैं ? आप तो स्वर्गलोक से आयी हैं, तरण-तारणी हैं, सबका उद्धार करती हैं। ठीक है, उद्धार करते हैं, पर उस व्यक्ति का जिसके भीतर अध्यात्म होता है। वह गंगा से भी बड़ा है। मैं आपकी बेटी रहना चाहती हूँ। उसी दिन से गंगा का नाम भगीरथी पड़ गया। भगीरथ की बेटी का नाम भगीरथी। जनक की बेटी का नाम जानकी। गंगा जी के बाप का नाम भगीरथ। भगीरथ तो एक इनसान था ? हाँ बेटे इनसान था। गंगा जी तो देवता है। ठीक है और वह स्वर्गलोक से आई थीं। ठीक बात है ये। लेकिन ये भी ठीक बात है कि उस भगीरथ ने अध्यात्म को छुआ था। अध्यात्म किसे कहते हैं ? बेटा मैं यही कह रहा था। उपासना किसे कहते हैं ? मैं यही बता रहा था। अगर आप इतना समझ जाएँ तो ये शिविर हमारा सार्थक हो गया. और अगर यह समझ न आए तो आज तक का शिविर और आपका भजन गड्ढे में चला गया और भविष्य में भी जो उपासना-भजन करेंगे सब बेकार जाने वाले हैं। अब तक जो भी पढ़ा-पढ़ाया है वह धूल के बराबर है।

असली अध्यात्म किसे कहते हैं ? असली अध्यात्म वह है, जिसमें कि इनसान भगवान के नजदीक चला जाता है और नजदीक चले जाने के बाद में उसकी विशेषताओं को ग्रहण कर अपने भीतर हृदयंगम कर लेता है और समा लेता है। चलिये भगवान की दो विशेषताएँ मान लेते हैं। वैसे तो बहुत-सी विशेषताएँ हैं, पर दो मान लेता हूँ। एक विशेषता यह है कि भगवान निर्मल है। उस पर कोई मलिनता नहीं है। हम यह प्रयत्न करें कि हमारे जीवन में से मलिनताएँ धुलती हुई चली जाएँ। यह मलिनताएँ ही हैं, जो हमको आगे नहीं बढ़ने देतीं। कौन रोकता है हमको ? कोई नहीं रोकता हमें। ये कषाय और कल्मषों का पर्दा है, जिसने हमारे व हमारे भगवान के बीच में दरार की तरीके से, दीवार के तरीके से खड़ा हो गया है। इसी को तोड़िए। भगवान की प्रार्थना करेगा। काहे की प्रार्थना करेगा तू भगवान को बुलाऊँगा। भगवान की बात सुनूँगा। तो तुझे सुनाई नहीं पड़ता क्या ? दिखाई नहीं पड़ता क्या ? नहीं महाराज जी मुझे तो दिखाई नहीं पड़ता। देख, अपने सीने पर हाथ रखकर, देख-कौन बोल रहा है ? इसके भीतर एक शंकर भगवान का डमरू बजता है। डम-डम, लप-डप, लप-डप। ये कौन बोल रहा है ? ये शंकर भगवान बोल रहे हैं। कहाँ बैठा हुआ है ? ये हृदय में बैठा हुआ है। दिखाई नहीं पड़ता क्या ? नहीं महाराज जी, मुझे तो दिखाई नहीं पड़ता। आँखें खोल और ईमान के रूप में, सदाचारिता के रूप में, उत्कृष्ट आदर्शों के रूप में जो भगवान बैठा है, उसे देख। अपनी नाक की ओर ध्यान दे। इसमें श्रीकृष्ण भगवान की बाँसुरी बजती है। कैसी सुन्दर बजती है ? कहाँ बजती है ? किसकी बजती है ? भगवान की बेटे। नाक के ये जो दो सुराख हैं, इसमें से कृष्ण भगवान की बाँसुरी बजती रहती है। इसे तू सुन। महाराज जी मैं कैसे सुनूँ ? क्या करूँ ? बेटे, मलिनताओं को जब तक धोएगा नहीं, कषाय-कल्मषों को जब तक शुद्ध नहीं करेगा, अपने आपको परिष्कृत नहीं करेगा, अपने गिरेबान में मुँह नहीं डालेगा, अपने दोषों पर ध्यान नहीं देगा, दुर्गुणों की ओर ध्यान नहीं देगा तब तक ये दीवार खड़ी रहेगी। भगवान् तुझसे हजार मील दूर रहेगा और तू भगवान से हजार मील दूर रहेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कस्तूरी हिरण की नाभि में छिपी होती है, पर वह उसे बाहर तलाश करता-फिरता है, भीतर नहीं तलाश करता। इसी तरह तू भीतर जब तलाश करेगा तो तेरी सुगन्धि का ठिकाना नहीं रहेगा। शुद्ध जीवन, पवित्र जीवन, परिष्कृत जीवन यदि किसी के पास है तो, मैं कहता हूँ कि उसके पास अध्यात्म है। अध्यात्म का शिक्षण-अध्यात्म का उपदेश यही है। अध्यात्म का सारे का सारा शिक्षण इस बात पर टिका हुआ है कि आदमी अपने आपको धोए उन मलिनताओं को धोए, कुसंस्कारों को धोए। अपनी आकांक्षाओं को धोए, अपनी क्रियाशीलता को धोए, अपनी धारणाओं को धो करके स्वच्छ और निर्मल बनाये। राजहंस के तरीके से जैसे गायत्री माता का वाहन हंस है, धुला हुआ हंस, नीर-क्षीर विवेक करने वाला हंस-मोती चुगने वाला हंस, पवित्र जीवन जीने वाले हंस की तरह यदि आप हैं तो मैं आपसे वादा करता हूँ कि आपके लिए मैं गायत्री माता को बुला करके ला दूँगा। यह काम आप मेरे जिम्मे सौंप दीजिए। बेटे, भगवान यहीं आएगा। भगवान से मेरी जान-पहचान है। भगवान को मैं जबरदस्ती पकड़ करके ले आऊँगा। बेटे, यदि तू मेरे ऊपर विश्वास करता है तो मैं तुझे विश्वास दिला सकता हूँ कि भगवान यहीं आयेगा, बस एक काम तू कर दे और एक काम मैं कर दूँगा। क्या काम कर लूँ मैं ? एक काम कर अपने आपको मुझे सौंप दे और अपने कषायों को-अपने कल्मषों को, अपने दोषों को, अपनी संकीर्णताओं को और अपनी स्वार्थपरता को धोने का प्रयत्न कर। यह काम तेरा है।

मेरा काम ? मेरा काम यह है कि तुम्हारे पास भगवान को ला दूँगा और तेरे पास खड़ा कर दूँगा। नहीं गुरुजी, भगवान के यहाँ जाना पड़ता है, वह तो बड़ी मुश्किल से भी नहीं आते। बेटे, भगवान् से ज्यादा सरलतापूर्वक आने वाली कोई चीज नहीं हो सकती। भगवान तो तलाश करता-फिरता है—मारा-मारा फिरता है कि कोई भक्त कहीं से आ जाए तो मैं चला जाऊँ। देख मैं भगवान का कच्चा चिट्ठा खोलकर दिखा सकता हूँ। भगवान बड़ा भूखा है। भगवान बड़ा प्यासा है। मारा-मारा डोलता है। तलाश करता डोलता है भिखारी के तरीके से। शबरी के यहाँ वह भीख माँगने को गया था और कहा था—तेरे पास कुछ खाने को हो तो दे दो। शबरी ने जूठे बेर उन्हें खिलाए थे और कहा था कि तुझे खाना है तो खा ले, मेरे पास तो यहीं हैं। भगवान ने कहा—मैं इसी से अपना गुजारा कर लूँगा। वह भूखा फिरता है ढूँढ़ता-फिरता है, कि अगर कोई शबरी जैसी महिला हो तो मैं उसके पास जाऊँ। शबरी किसे कहते हैं ? शबरी किसी स्त्री का नाम नहीं है, यह एक फिलॉसफी का नाम है। वह फिलॉसफी जो जंगल में रहकर गरीबी में अपना गुजारा कर सकती है। जो बची हुई जिन्दगी को लोगों के दुःख और कष्टों को दूर करने के लिए खर्च कर सकती हैं। शबरी का एक ही क्रिया-कलाप था—वह मातंग ऋषि के आश्रम में जाने वाली विद्यार्थियों की सड़क को रोज झाड़ती थी, जिससे काँटे उनके पैरों में चुभने न पाएँ। सारी जिन्दगी लोकहित के लिए, लोक-पीड़ाओं को दूर करने के लिए, लोगों के कष्टों में सहायता करने के लिए उसने व्यतीत कर डाली। अगर आप शबरी नहीं हैं तो शबरी होने की कोशिश कीजिए, तो आपका मन उदार हो जाएगा। अगर आप उदार हो जाएँगे तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपके यहाँ भी भगवान इसी तरीके से भीख माँगने आएगा जैसे शबरी के यहाँ आया था।

बेटा, भगवान तो बहुत भूखा है, वह भावनाओं का भूखा है। श्रीकृष्ण भगवान् विदुर के घर गये तो उनको विदुर की पत्नी केले के छिलके खिलाती जा रही थी और केले का गूदा जमीन पर डालती जा रही थी। महात्मा विदुर आये तो उन्होंने कहा अरे मूर्ख, ये क्या करती है ? भगवान् को केले के छिलके खिलाती है और गूदे को जमीन पर डालती जाती है। भगवान ने कहा विदुर आप नहीं जानते मैं क्या खाया करता हूँ और मुझे क्या खिलाया जाता है ? केवल प्यार खाता हूँ। न मैं मिठाई खाता हूँ, न अमुक चीज खाता हूँ। जिसको भक्ति आप कहते हैं, प्यार कहते हैं, प्यार की व्याख्या बेटे यदि आप जान जाएँ तो आपकी भक्ति धन्य हो जाए। प्यार किसे कहते हैं ? प्यार उसे कहते हैं जिसमें कि आदमी अपने प्रेमी के लिए, अपने प्रियतम के लिए अपने को निछावर कर देता है। प्रेम उस चीज का नाम है, जिससे कि हम प्यार करते हैं, उसे सुखी बनाने के लिए उसकी मन की इच्छा पूरी करने के लिए हमारे पास जो कुछ भी होता है उसे सौंप देते हैं। माँ अपने बच्चे को प्यार करती है तो प्यार के बदले में अपना सब कुछ सौंप देती है। अगर आप भगवान को प्यार करते हैं तो आपके पास जो कुछ भी है लाकर के भगवान के पास सुपुर्द करें और यह कहें कि ये चीजें हमारे पास हैं और यह हम आपके लिए लाए हैं। प्यार इससे कम में नहीं हो सकता।

नहीं साहब, प्यार तो इसे कहते हैं जिसमें किसी से हम कोई लाभ उठा लेते हैं और उसे चंगुल में फँसाकर हजम कर जाते हैं। हाँ ठीक है, मैं आपके प्यार को जानता हूँ। आप तो सयानी बच्चियों के साथ में ऐसा ही प्यार करते हैं न। साहब हमारा तो प्यार ऐसा ही है। पहले हम प्रेमपत्र लिखते हैं, फिर हम मिठाई भेजते हैं, फिर उसको सिनेमा दिखाने का लालच देते हैं और फिर उसका ईमान खराब कर देते हैं और उसको बेइज्जत कर देते हैं, उसकी जिन्दगी खराब बना देते हैं। उसकी ब्याह-शादी में अड़ंगा लग जाता है और उस बेचारी की सारी की सारी जिन्दगी बेइज्जत हो जाती है। ये कैसा रहा प्यार आपका ? नहीं हमारा प्यार ऐसा ही है। हमारा प्यार ऐसा होता है जैसेकि भेड़िये का। भेड़िये का प्यार कैसा होता है ? भेड़िया छोटे बच्चे को बहुत प्यार करता है। कैसे प्यार करता है ? यह तलाश करता-फिरता है कि खरगोश कहीं से मिले तो मैं चटकर जाऊँ। छोटा बच्चा मिले तो बहुत अच्छा, क्योंकि खरगोश के बड़े बच्चे में हड्डियाँ मजबूत होती हैं। भेड़िया छोटे बच्चे को खाता रहता है। प्यार आपका ऐसा ही है ना ? हाँ, प्यार में जो

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई भी मिल जाए, उसको हम हड़प कर जाएँ। कौन मिल जाए ? साईं बाबा मिल जाए तो उसको मैं साफ खा जाऊँ। कैसे खा जाऊँगा ? महाराज जी मैं वह वरदान माँगूँगा कि सब हैरान रह जाएँगे। तेरे वरदान को पूरा करने के लिए तू यह नहीं समझता है कि कोई भी चीज दुनिया में फ्री नहीं मिलती। साईं बाबा अगर कोई चीज देंगे तो उन्हें अपना पुण्य और अपना तप खर्च करना पड़ेगा। रामकृष्ण परमहंस आशीर्वाद दिया करते थे और उनके 'क्रेडिट' का 'बैलेन्स' बिगड़ गया। गले में कैन्सर हो गया। स्वामी विवेकानन्द ने पूछा—महाराज जी आप जैसे ऋषि और आप जैसे महात्मा-सन्त को कैसे कैन्सर हो गया गले में ? उन्होंने कहा बेटे तू जानता नहीं है, मैंने हिसाब रखा नहीं। मैं आशीर्वाद देता चला गया। तप की पूँजी कम पड़ गई, फिर भी मैंने लोगों को दिया। जबान से कह देने भर से आशीर्वाद फलित नहीं होते।

आशीर्वादों को फलित करने के लिए तपस्वियों को अपने पुण्य और तपों की शक्ति खर्च करनी पड़ती है। लोग हमारे यहाँ आँखों में आँसू भर कर आते हैं और बेटे हम उन्हें हँसते हुए और मुसकराते हुए भेजते हैं। महाराज जी आपकी जबान में जादू है, आप तो हर एक को यह कह सकते हैं। नहीं—बेटे, जबान में जादू नहीं है हमारी। हम मेहनत करते हैं और तप करते हैं और जो हम कमाते हैं, अपनी उस कमाई का एक-एक हिस्सा हम बाँट देते हैं। आशीर्वाद नाम की कोई चीज दुनिया में नहीं है। आशीर्वाद-आशीर्वाद की बेकार की बक-बक लगाये हुए हैं। क्या आशीर्वाद होता है ? कोई आशीर्वाद नहीं होता। आप कमाइए, हमको दीजिए, हम कमाएँगे आपको देंगे। यह आज की दुनिया का बिल्कुल सीधा-सा कायदा है और नियमित कायदा है और विशुद्ध कायदा है। बाजार में आप जाइए, आपके पास पैसा है तो दूध खरीद लीजिए। आपके पास पैसा नहीं है तो हमसे पैसा ले जाइए और दूध खरीद लीजिए। दुकानदार पैसा लेगा हर हाल में, आपके पास पैसा है तो भी और हमारे पास है तो भी।

सुख प्राप्त करने के लिए मित्रो ! क्या हो सकता है ? भगवान से आप प्यार करते हैं। नहीं बेटे, भगवान से आप प्यार नहीं करते हैं। प्यार अगर किया होता आपने शबरी की तरीके से तो भगवान आपके यहाँ खुराक माँगने आते। अगर आपने प्यार किया होता तो गोपियों की तरीके से प्यासा भगवान माँगकर यह कहता कि बहिन मेरा तो गला सूख गया है, जरा-सी कोई मुझे छाछ पिला दे तो मजा आ जाता। गोपियों ने कहा—यह छाछ, फोकट की नहीं है, जरा नाचकर दिखाइए। नाच करके दिखाते थे भगवान आँगन में, तब गोपियाँ थोड़ी छाछ पिलाती थीं। अभी और छाछ पिलाइए, तो फिर दुबारा कीजिए नाच। भगवान नाच करने के लिए बड़ा प्यासा है, बड़ा भूखा बैठा है। उसको किसकी जरूरत है ? उसे केवल एक चीज की जरूरत है जिसे प्यार कहते हैं और जिसे मोहब्बत कहते हैं और जिसे हम सफाई कहते हैं। स्वच्छता कहते हैं। स्वच्छता और सफाई अगर हमारे जीवन में आ जाए, उदारता अगर हमारे जीवन में आ जाए, पात्रता हमारे जीवन में आ जाए, तो मजा आ जाए।

नहीं साहब ! पात्रता की आवश्यकता नहीं है। भगवान से हम यह माँगेंगे, वह माँगेंगे। बेटे पात्रता की बहुत जरूरत है। पाने के लिए पात्रता की जरूरत है। एक आया छोकरा और जा करके किसी मालदार आदमी के पास बैठ गया। मालदार ने कहा—आप आ गए। अच्छा—इनको ले जाना, ठहराना और अच्छी चाय लाना और पिश्ता की बर्फी लाना। वे आ गए, अरे भाई, ये बड़े भले आदमी हैं। एक लड़का वह था जिसके साथ सेठ ऐसे व्यवहार करने लगा। दूसरा लड़का आया शक्ल वैसी ही थी। उम्र उतनी बड़ी थी। सेठ ने कहा अच्छा तो ठीक है, तुम आ गए। अरे मुनीम इन्हें पाँच रुपये दे देना। अच्छा बेटा अभी चले जाओ। पीछे आना। इस वक्त हम जाएँगे। कुछ माँगने आया था—चन्दा-वन्दा। माँगने आया था अतः उसे बैठने भी नहीं दिया। क्यों साहब ! सेठ जी यह क्या मामला है ? इसको तो आप मिठाई खिलाते है, पिश्ते की बर्फी खिलाते हैं। इसको आप ये करते हैं वो करते हैं और दूसरे को भगा देते हैं। आपको मालूम नहीं कि ये मेरा जँवाई है। जँवाई से मतलब यह है कि यह हमारी बेटी की रखवाली करता है। बेटी को खुशहाल रखता है। जो कमाकर लाता है हमारी बेटी को खिला देता है। इसीलिए अपनी बेटी के लिहाज की बजह से हमें इस जँवाई का ख्याल रखना पड़ता है। भक्त क्या है ? भक्त है भगवान का जँवाई। भक्त किसे कहते हैं। भक्त कहते हैं भगवान के जँवाई को। उसे पैसा चुकाना नहीं पड़ता है भगवान को ? किसलिए चुकाना पड़ता है ? इसीलिए चुकाना पड़ता है कि उसकी दुनिया का, उसकी बेटी का पेट भरता है। बेटी की देखभाल करता है। बेटी को खुराक देता है। जो उसकी बेटी को खुराक देता है भगवान उसकी इज्जत करता है। भगवान उसका सम्मान करता है।

आप तो भक्ति को क्या मान बैठे हैं ? खिलवाड़। पूजा में चावल यहाँ रख देंगे, नाक में से हवा निकाल देंगे। घण्टी बजा देंगे। यह खिलवाड़ ही तो करते रहते हैं आप लोग। यह खिलवाड़ क्या है ? यह है कला। चलिए अब मैं आपके खिलवाड़ की बुराई करूँगा। यह कला है। कला किसे कहते हैं ? कला कहते हैं बाजीगरी को। बच्चे क्या दिखाते हैं ? कला दिखाते हैं। ओ हो क्या नाचते हैं। कभी कहते हैं कि मैं तो नाराज हो जाऊँगा और मैं तो ये ले लूँगा। अच्छा तो माँगने से भी मिलती हैं चीजें। हाँ बेटे माँगने से भी मिलती हैं। लेकिन माँगने वाले की सीरत और माँगने की कीमत पर जो मिलती हैं वो बहुत छोटी चीजें मिलती हैं। भिखारियों को आप देख लीजिए हरिद्वार में बैठे रहते हैं और लक्ष्मण झूला पर बैठे रहते हैं। सेठ आते हैं और एक-एक रुपया दे जाते हैं और गरीब आदमी आते हैं तो दो-दो सिक्का बाँट देते हैं—फेंक जाते हैं। किसी ने कुछ दिया है उनको तो किसी ने कुछ। सारे दिन मशक्कत करते हैं और जो पाते हैं वह जरा-सी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चीज पाते हैं। पेट भरने लायक पाते हैं चाहे बिड़ला सेठ आ जाए तो और चाहे कोई भी आ जाए तो, चाहे दो पैसे देने वाले आ जाए तो। बेचारे सारे दिन मेहनत करते हैं तो पेट भरने तक के लायक पाते हैं और मशक्कत करने वाले ? मशक्कत करने वालों ने मकान बना लिया। कोठियाँ बना लीं, महल बना लिए और ऊँचे हो गए और अपने बाल-बच्चों के लिए पैसे कमा लिए मशक्कत करने वालों ने।

आध्यात्मिकता के दो तरीके हैं। एक तरीका तो वह है जो भीख माँगने से, नाक रगड़ने के माध्यम से उपयोग किया जाता है। सारी दुनिया उसी के पीछे पड़ी हुई है और कहती है कि माँगने का तरीका बताइए। कैसा तरीका बतावें ? तीन ओऽम् लगाने का। अच्छा आप बताइए। दो ओऽम् लगाने का। आप बताइए बीजमंत्र लगाने का। इसका क्या मंत्र है ? इसका क्या मतलब है ? इसका मतलब है हाथ जोड़िए तो चवन्नी मिलेगी और यों हाथ जोड़िए तो तीन रुपये मिलेंगे और यों हाथ जोड़िए तो ढाई रुपये मिलेंगे। हाथ जोड़िए भाईसाहब। श्रीमान् कहिए तो चवन्नी मिलेगी। महोदय जी कहिए तो अठन्नी मिलेगी और ऐसे कह दीजिए तो एक आना मिलेगा। बेकार की बात करता है। कर्मकाण्डों के माध्यम से भगवान को पकड़ने के लिए चले हैं। कर्मकाण्डों का बादलों की तरह महत्त्व है। बादलों की तरह बढ़ाइए मत। जितना है उतना रखिए। प्राण क्या है ? चमत्कार क्या है ? उसके माध्यम से अभी जो उदाहरण दे चुका हूँ, वह लाभ हो सकते हैं। वही वास्तविक लाभ हैं। हमारा सारा जीवन-क्रम अध्यात्म में समाविष्ट हैं। हमारा जीवन-क्रम वैसा हो जैसा कि भगवान के नजदीक बैठने वालों का होना चाहिए। भगवान् के नजदीक बैठने वालों की इज्जत वैसी होनी चाहिए, जैसी कि भगवान् की है। हमारा चिन्तन और हमारे विचार करने की शैली उसी की तरह की रहनी चाहिए जैसी कि भक्तों में रही है। भक्तों का इतिहास हम देखते हैं प्राचीनकाल से लेकर के अनादिकाल तक तो हमको मालूम पड़ता है कि भक्त किस तरीके से रहे हैं ? भक्तों ने अपने जीवन में क्या हेर-फेर किया है। भक्तों के चिन्तन में क्या विशेषताएँ आई हैं ? भक्तों के क्रिया-कलाप में और उद्देश्य में क्या फर्क आया है ? हम देखते हैं शुरू से लेकर अन्तिम दिन तक। भक्त की हम पहचान देखते हैं और भक्त का लिफाफा ? लिफाफे तो कई तरीके के पहने जा सकते हैं। बहरूपिए कई तरीके के लिफाफे पहन लेते हैं। कभी राजा बन जाते हैं। कभी सिपाही बन जाते हैं। कभी औरत बन जाते हैं तो कभी मर्द बन जाते हैं। कई तरीके के लिफाफे पहन लेते हैं।

मित्रो ! आज के भक्तों का लिफाफा भी इसी तरह है। कभी इसका लिफाफा, कभी उसका लिफाफा, कभी पीला कपड़ा, कभी हरा कपड़ा। पीले कपड़े से क्या मतलब है ? पीले कपड़े से मतलब है त्यागी का होना। सन्त का होना। महात्मा का होना। ज्ञानी का होना। तो आपने पीले कपड़े पहन लिए। बिल्कुल, अब गायत्री माता प्रसन्न हो जाएगी। गुरु जी ! गायत्री माता आवेगी तो ये देखेगी कि यह महात्मा बैठा हुआ है और बेटे तेरे पेट में जो टट्टी भरी हुई है वह ? वह तो पता ही नहीं चलेगा, गायत्री माता को। बस यही भेष बना लूँगा और तिलक लगा लूँगा और गायत्री माता आयीं और बाहर से देखा वाह ! तिलक वाला बाबाजी बैठा हुआ है। सीधे चली आएँगी और पेट का तो उसे मालूम ही नहीं। पेट का तो किसी को पता नहीं चलता। पेट का तो मुझे ही मालूम है या मेरी बीबी को मालूम है। गायत्री माता या शंकर जी तो पागल हैं। हर दर्जे की उन्हें तो केवल बाहर की चीजें दिखानी देनी चाहिए। जीभ चाहे बक-बक करने में लगी हुई हो। हाथ चाहे कोई हेरा-फेरी करने में लगे हुए हों। बस उन्हें कुछ पता ही नहीं चलता है तो क्या तेरी नीयत का उनको कुछ मालूम नहीं चलता। तेरी ईमानदारी का कुछ मालूम नहीं। तेरे चरित्र का तो कुछ पता ही नहीं है। तेरे स्वभाव का तो कुछ पता ही नहीं है। तेरे दृष्टिकोण का तो कुछ पता ही नहीं है। बेटे ये तू क्या कह रहा है ? क्यों इसी को उपासना कहते हैं ? उपासना तो बेटे, उस चीज का नाम है जिसका कल मैं उदाहरण दे रहा था। गर्मी और सर्दी के पास हम बैठते हैं तो हम गर्म और सर्द हो जाते हैं। भगवान की विशेषताओं के सम्पर्क में हम आ जाएँ तो भगवान की विशेषताएँ हममें पैदा होनी चाहिए। हमारे भीतर चारित्रिक पवित्रता पैदा होनी चाहिए। हमारे भीतर करुणा पैदा होनी चाहिए। भगवान की भक्ति इससे कम में न आज तक किसी के पास आयी है और न आएगी।

जिसके भीतर करुणा नहीं आयी, दूसरों के दुःखों को देखकर दर्द नहीं आया, तो फिर भगवान कैसे आ सकता है ? मैंने कितनी बार एक कहानी आपको सुनाई है। कौन-सी वाली ? नेवले वाली कहानी। नेवला सोने का हो गया था। पाण्डवों के यहाँ गया था। कैसे हुआ था ? एक ब्राह्मण ने किया था। ब्राह्मण को चांडाल की सात दिन बाद एक रोटी मिली थी तो वह खड़ा हो गया था और चिल्लाने लगा था। हम सात दिन के भूखे लोग हैं, हमसे भी ज्यादा कोई दुःखी हो तो आए और हिस्सा बँटाए। एक चांडाल ने कहा हमने एक महीने से रोटी नहीं खायी है। तो आप आइए पहला हक आपका है, फिर हमारा। एक महीना हो जाएगा तब हम रोटी खाएँगे। आप खा सकते हैं। चांडाल आया था। बेटे और रोटी खा गया था। ये है करुणा। करुणा तेरे अन्तःकरण में है तो मैं वादा कर सकता हूँ कि भगवान को लाकर तेरे चरणों में बैठा दूँगा। चरणों में बैठा देंगे ? हाँ चरणों में बैठा दूँगा। चरणों में बैठता रहा है भगवान। सुदामा के पैर धोकर भगवान ने पिए थे और राजा बलि के दरवाजे पर हाथ जोड़कर खड़ा रहता था भगवान और यह कहता था हम ५२ अंगुल के हैं और आप ५ फुट ६ इंच के हैं। आप राजा हैं और हम भिखारी हैं और हमें साढ़े तीन फुट जगह चाहिए। साढ़े तीन फुट जगह माँगने को आया था। आप पैदा तो कीजिए करुणा। करुणा है तेरे भीतर ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

करुणा है नहीं और सवाल पूछता है भगवान से। करुणा किसे कहते हैं ? करुणा उसे कहते हैं, जो पीड़ितों को देखकर रो पड़ता है। जो पिछड़े हुए को देखकर रो पड़ता है। रो पड़ने वाला कैसा होता है ? रो पड़ने वाला ऐसा होता है जैसे ठक्कर बापा ! ठक्कर बापा गाँधी जी के मिशन में काम करते थे। वे भंगियों के मोहल्ले में काम करते थे। भंगियों की दयनीय स्थिति, दुःखियों की दयनीय स्थिति देखकर उनके आँसू आ गए। आँसुओं में डूबकर उन्होंने इन्जीनियरिंग के पद से इस्तीफा दे दिया और भंगियों के मोहल्ले में नौकरी कर ली और उनके साथ-साथ काम करने लगे। बच्चों को पढ़ने से ले करके भंगियों को योग्य बनाने तक काम करने लगे। इसे कहते हैं करुणा। और निष्ठुर ? निष्ठुर वह जो आदमी अपनी बीबी के लिए पाँच हजार रुपये की हीरे की अँगूठी खरीदकर लाया है। ये कौन हैं ? ये हैं निष्ठुर। और क्या कहता है ? आँखों के सामने बुढ़िया खड़ी हुई थी और ये कह रही थी कि हमारी आँखों में मोतियाबिन्द हो गया है, अगर आप पाँच सौ रुपये का इन्तजाम कर दें, हमारे खाने-पीने के लायक, किराये-भाड़े के लायक, तो हम अस्पताल में चली जाएँ और अपनी आँखों का ऑपरेशन करा लें। हमारी आँखों की जो रोशनी खत्म हो गई है, वह फिर से हमारी आँखों में पैदा हो जाएगी। बेटे ! बुढ़िया चिल्ला रही थी कि हमें पचास रुपए दीजिए, ताकि हमारी आँखें ठीक हो जाएँ। हम अंधी हो गई हैं। पचास रुपया हम नहीं दे सके। वह बुढ़िया जो हमारे सामने खड़ी हुई थी, जो हाथ पसार रही थी। पचास रुपया अगर आपके पास हो तो आप कृपा कीजिए। हमारी आँखें अच्छी हो सकती हैं। हमने कहा नहीं, आपकी आँखों से हमें कोई सहानुभूति नहीं है। हमें अपनी बीबी के लिए पाँच हजार की अँगूठी बनवानी है। आप कौन हैं ? निष्ठुर। पत्थर के बने हुए हैं, स्टील के बने हुए हैं, फौलाद के बने हुए हैं जिसे अपनी ही महत्त्वाकांक्षा, अपना ही लालच, अपना ही लोभ, अपना ही बड़प्पन दिखाई पड़ता है। दुनिया की पीड़ा दिखाई नहीं पड़ती। दुनिया का कष्ट दिखाई नहीं पड़ता। ये आदमी करुणा से रहित हैं जो कहते हैं कि केवल मुझे अमीर बनाइए। मेरे बेटे को इन्कमटैक्स ऑफिसर बनाइए। मेरे लिए हवेली लाइए। मेरे को मोटर दिलवाइए। बस मेरे लिए—मेरे लिए रटता रहता है।

मनुष्य के भीतर जब करुणा आती है, तब वह कहता है कि मैं गलकर रहूँगा, गरीबी से रहूँगा, दुःखियारों की तरीके से रहूँगा और ये मेरे पसीने की बूँद भी है तो मैं खर्च करता हुआ चला जाऊँगा। इसका नाम है—करुणा। मैं कहता हूँ कि अगर करुणा तेरे पास है तो भगवान भी तेरे पास में है। भगवान् आएगा ? हाँ बेटे भगवान आएगा। कैसे आएगा ? आदमी का इम्तिहान लेने के लिए कि आदमी के भीतर करुणा है कि नहीं। करुणा के कितने सारे उदाहरण हमने आपको सुनाएँ। एकनाथ का एक बार मैं किस्सा सुन रहा था। गधे की कहानी कह रहा था। प्यासे गधे के रूप में भगवान पड़े हुए थे और यह तलाश कर रहे थे कि कोई करुणावान आदमी निकल रहा है कि नहीं। उधर बहुत-से सन्त गए, बाबाजी गए, दूसरे गए, तीसरे गए। जय बोलते चले गए। जय बम भोला की रट लगाते चले गए। शंकर जी पर जल चढ़ाते चले गए। एकनाथ कंधे पर काँवर में गंगाजल लेकर जा रहे थे, उन्होंने गधे को पड़े हुए देखा। गधे ने कहा—हम प्यासे हैं, हमें पानी पिला सकते हों तो पिला दीजिए। संत एकनाथ ने काँवर में से गंगाजल लेकर गधे के मुँह में डाल दिया। गधे ने कहा मुझे अभी और पानी चाहिए। दूसरा घड़ा भी डाल दिया। दूसरा घड़ा पीकर गधा उठकर के खड़ा हो गया। उन्होंने कहा—हम ही तो रामेश्वरम हैं और हम तो भगवान हैं। आप रामेश्वरम् जा रहे थे क्या ? हाँ रामेश्वरम तो हम ही तो रामेश्वरम हैं। आइए हमसे मिलिए तो सन्त एकनाथ कहने लगे आप तो गधे हैं और बीमार पड़े हुए हैं ! हाँ हम तो गधे ही हैं और बीमार पड़े हुए हैं। गधे मायने वह आदमी जो बौद्धिक स्थिति से गिरे हुए हैं। जिन आदमियों की विचारणाओं को अज्ञानता ने छा दिया है। उनका नाम है गधा। और प्यासा ? प्यासा आदमी वह जो हर दम हारा है, जिनको भौतिक दृष्टि से अभाव और आध्यात्मिक दृष्टि से अज्ञान घेरे हुए हैं। दोनों से जो घिरे हुए हैं, वह गधा अभी भी आपके सामने पड़ा हुआ है और यह कहता है कि आप अपने गंगाजल को हमें पिला सकते हैं क्या ? अगर पिला सकते हैं तो मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ भगवान की ओर से कि भगवान आपको छाती से लगाने के लिए तैयार हैं।

आपके पास दया नाम की कोई चीज है क्या ? नहीं, दया नाम की चीज नहीं है तो फिर मैं नहीं कह सकता कि भगवान आपको मिलेगा या नहीं। बेटे मैं तो यह कहता हूँ कि दया और उपासना एक ही चीज है। उपासना और दया में कोई फर्क नहीं पड़ता। नहीं, महाराज जी आप तो उपासना का अर्थ यह बता रहे थे कि नजदीक बैठने को उपासना कहते हैं। बेटे, नजदीक बैठने को कहते हैं, पर भगवान के हृदय के नजदीक बैठने को कहते हैं। नहीं, आप तो ये कह रहे थे कि पूजा की चौकी पर जा बैठा करो, उसके नजदीक बैठा करो। अच्छा तो तूने यही मतलब समझा है। शरीर को तू पास बैठा देगा। हाँ महाराज जी, मैंने तो यही समझा कि मन्दिर के पास जाएँगे। उपासना का मतलब पास बैठना—सो मंदिर के पास बैठेंगे। बाहर से भगवान के दर्शन करेंगे तो उतना पुण्य नहीं होगा तो कैसे पुण्य होगा ? वृन्दावन में रंग जी के मंदिर में यह कहते रहते थे पुजारी कि आपको भीतर से भगवान के दर्शन करने हों तो ५० रुपए निकालिए। भगवान के पैर छूने हों तो १०१ रुपए निकालिए। भगवान को स्नान कराना हो तो २०१ रुपए निकालिए। हमने तो समझा था कि उपासना का अर्थ यह होता है कि भगवान के जितने अधिक पास हम चलते चले जाएँगे उतना ही फायदा हमें होगा। नहीं बेटे, ये तेरा ख्याल गलत है। पास बैठने वाले अगर हमारी भावनाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के नजदीक नहीं हैं, हमारे विचारों के सम्पर्क में नहीं हैं तो उनसे क्या सहानुभूति हो सकती है ? अरे, नहीं साहब पास रहने का बहुत फायदा होता है। बेटे, पास रहने का मतलब-भावनाओं के पास रहना होता है। हमने तो ये समझा था कि शरीर का शरीर से नजदीक होना उपासना है। नहीं बेटे, शरीर के नजदीक तो हमारे सिर में जुँए भी रहते हैं और ये तो २४ घंटे जैसे अम्मा अपने बच्चे को छाती पर लगाए रहती है, ऐसे हम अपनी जूँ को सिर पर लगाए रहते हैं और आपके पास कौन रहता है ? बेटे, खटमल जो है हमारी चारपाई पर सोता रहता है। बच्चा तो कभी-कभी आता है और कहता है—पिताजी हमें सुला लीजिए। तो उसको हम १५ मिनट, आधा घंटा सुलाते हैं। और फिर कहते हैं कि अब बेटा जाओ। उसकी माता जी को दे देते हैं। माता जी इसको ले जाइए, हमें तंग कर रहा था। बच्चा अब तो सो गया अब आप ले जाइए। हम नहीं सुलाएँगे। लेकिन खटमल तो हमारी खाट में ही सोता रहता है। जूँ हमारी खाट पर सोता है और बेटे एक और तरह का जूँ आता है। सिर का जूँ तो फिर भी यहाँ-वहाँ घूमता रहता है, पर ये तो ऐसे चिपक जाता है कि फिर हटता ही नहीं है। क्या कहते हैं ? इधर हमारे यहाँ जोंक कहते हैं उसको जो खुजाने से बड़ी मुश्किल से छूट जाती है। खून में ही चिपकी रहती है। खून पी जाती है। वह बिल्कुल पास बैठती है जोंक। जोंक एक बार चिपक जाए तो फिर यह कहती है कि मैं तो आपकी शरणागत हूँ। आपकी शरण में पड़ी हूँ। आपके चरणों में ही पड़ी हूँ, अब आपसे अलग नहीं हो सकती और आपके साथ ही रहूँगी और आपके साथ मरूँगी। यह तब तक चिपकी रहती है जब तक खून नहीं पी जाती। तो महाराज जी जोंक कौन है ? जोंक क्या करती है ? बेटे, उपासना करती है। जूँ क्या करता है ? उपासना। खटमल क्या करता है ? उपासना। उपासना किसे कहते हैं पास बैठने को। इन सबको उपासना कहते हैं, सब पास बैठे रहते हैं। एक और भी जानवर है जो और भी पास बैठा रहता है। कौन बैठा रहता है पेट के सफेद रंग के कीड़े ? वे ऐसे बैठे रहते हैं जैसे माँ के पेट में गर्भ में बच्चा बैठा रहता है।

बेटे ! शरीर से पास होना ही उपासना नहीं कहलाती। तो महाराज जी फिर हमारी उपासना कैसी है ? तेरी उपासना—बस ऐसे ही समझ ले बेटा जैसे बिच्छू अपनी माँ के पेट में बैठा रहता है और भीतर ही भीतर खाता रहता है और जब माँ के सारे मांस को खा जाता है तो फाड़कर बाहर आ जाता है। तेरी इसी तरह की उपासना है। इस उपासना में चमत्कार हो सकते हैं ? मेरी दृष्टि से तो नहीं हो सकते हैं। उपासना के लिए जीवन का क्रम बदलना होगा। दृष्टिकोण बदलना होगा, चिंतन बदलना होगा, व्यवहार बदलना होगा, कर्म बदलना पड़ेगा। ये बदलाव लाये बगैर बिना वे चमत्कार जो अध्यात्म के माध्यम से हुए हैं मिल नहीं सकते। उपासना का उद्देश्य हैं—अपने आपका शिक्षण करना कि आदमी को अपने आपको नेक-नीयत बनाना चाहिए, चरित्रवान बनाना चाहिए। ये सारे के सारे शिक्षण हमारी उपासना पद्धति के आधार पर लिखे हुए हैं। यह उसकी फिलॉसफी है। किसकी ? उपासना की और हमारी यह फिलॉसफी है कि जितना अधिक आदमी संत और अध्यात्मवादी होता हुआ चला जाएगा, उसको उतनी ही मात्रा में उदार बनना पड़ेगा। उसको उतनी ही मात्रा में लोकसेवी बनना पड़ेगा। अपने साथ में किफायत बरतनी और दूसरों के हित के लिए अधिक से अधिक त्याग और बलिदान करने के लिए कमर बाँधनी पड़ेगी। यही है बेटे आध्यात्मिकता की निशानियाँ, यही है आध्यात्मिकता का अध्यात्म। बेटे भगवान के यहाँ हमेशा इस बात का हिसाब रहा है कि तेरी क्रिया क्या है और तेरे कर्म क्या हैं ?

कर्म से भागता है अभागे। हाँ, मैं तो कर्म से भागता रहता हूँ। खिलवाड़ करता रहता हूँ। मैं तो जादू-मंत्र करता रहता हूँ। खिलवाड़ करता रहता हूँ। कर्म से मैं भागता हूँ। नहीं, कर्म से भागें नहीं। यह खिलवाड़ जिसे हम कर्मकाण्ड और उपासना कहते हैं, जिसको हम प्राणायाम और ध्यान कहते हैं, यह इसका कलेवर है, यह इसका श्रृंगार है। यह शोभा है। यह इसका प्राण है। मनुष्य का जीवन है। मित्रो ! द्रौपदी को उसके कर्म के बदले में सारे के सारे वस्त्र मिलते हुए चले गये। चमत्कारों की बात, सिद्धियों की बात, स्वर्ग में उड़ने की बात, पाताल लोक की बात, आसमान की बात, ये बातें आप मत कीजिए, जमीन पर चलिए। एक समय संत राबिया नाम की मुस्लिम महिला हुई। उसकी सब जगह बड़ी ख्याति थी कि वह बड़ी सिद्ध है, बड़ी संत है। एक और संत थे हसन। हसन उनके पास गए। अपना चमत्कार राबिया को दिखाने के लिए कि तुम क्या समझती हो कि तुम ही सिद्ध हो। अरे हम तुम से भी बड़े सिद्ध हैं। सिद्धि का चमत्कार दिखाने के लिए वे राबिया के यहाँ गये। राबिया ने सुना कि हसन हमारे यहाँ आ गए हैं, तो बड़ी प्रसन्न हुईं। जब उन्होंने राबिया को अपनी चमत्कारिक शक्ति दिखाने के लिए कहा कि आओ राबिया आज हम लोग साथ-साथ नमाज पढ़ेंगे। हाँ, ठीक है, कोई हर्ज की बात नहीं। तो उन्होंने पास में पानी के तालाब में अपना मुसल्ला फेंक दिया। मुसल्ला उसे कहते हैं जो पूजा का आसन होता है जिस पर नमाज पढ़ी जाती है। मुसल्ला जब फेंक दिया पानी के ऊपर तो वह पानी के ऊपर तैरने लगा डूबा नहीं। उन्होंने राबिया को दावत दी कि जमीन पर क्या करेंगे, पानी पर तैरेंगे और नमाज पढ़ेंगे। राबिया उनका मतलब समझ गईं। सामान्य जीवन जीना, व्यावहारिक जीवन जीना, जमीन पर चलना आपको नापसन्द है, आप पानी पर चलना चाहते हैं। आसमान पर चलना चाहते हैं ठीक है, राबिया समझ गईं। राबिया ने चमत्कार दिखाने के लिए एक और काम किया। उसने अपना मुसल्ला आसमान में फेंक दिया जो हवा में तैरने लगा। राबिया ने कहा—हसन इस समय नमाज पानी में पढ़ने से क्या फायदा ? चलो हवा में तैरेंगे और हवा में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तैरकर नमाज पढ़ेंगे। संत की आँखें नीची हो गईं। वह नीचे बैठे हुए थे। शर्मिन्दा हो गए थे। वह अपना चमत्कार दिखाना चाहते थे। उन्होंने और भी बड़े चमत्कार दिखा दिए। राबिया गंभीर हो गईं। उसने कहा—हसन ! पानी, जिस पर आप चलना चाहते हैं, उस पर तो नाचीज मछली भी चल सकती है और हवा जिसके ऊपर मैं आपको चलाना चाहती थी, उस पर एक मक्खी और मच्छर भी चल सकता है। हम और आप मक्खी और मच्छरों से बड़े हैं। आओ जमीन पर चलें। जमीन पर नमाज पढ़ें। मित्रो ! जमीन पर चलना चाहिए। स्वर्गलोक की बात, मक्खी लोक की बात ठीक है, वह भी करिए, लेकिन पहले अपनी जमीन ठीक करिए! बादलों की बात, पानी की बात, ऊँचे की बात, राष्ट्रों की बात, नीचे की बात, चमत्कारों की बात और दूसरी बातें—वहाँ से कीजिए जहाँ कि हमारे जीवन का चमत्कार होता है और वह है श्रेष्ठता का जीवन, शालीनता का जीवन, पवित्रता का जीवन, गरिमा से भरा हुआ जीवन, आत्मा को संतोष देने वाला जीवन। हमको लोकसंग्रह और लोकमंगल और लोककल्याण देने वाला जीवन, भगवान का अनुग्रह लाने वाला जीवन और लोकहित करने वाला जीवन, भगवान् को संतोष देने वाला जीवन, आत्मा को शान्ति देने वाला जीवन, और लोकसम्मान और लोकश्रद्धा से भरा हुआ जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। यही है अध्यात्म। उपासना का यही है अर्थ। भगवान के पास जा करके हम यही सीखते हैं और हमें यही सीखना चाहिए। अगर आपने जीवनक्रम में इस तरह की पद्धति अपनाई होती, मन में निश्चित की होती या की हो तो आपके लिए अध्यात्म का द्वार खुला हुआ है। उपासना का लाभ और चमत्कार, अमृत आपके पास है। अमृत और कल्पवृक्ष आपके पास है और पारस आपके पास है।

तो क्या गुरुजी ! पारस आपको मिला है। हाँ बेटे, मिला है। हमने पारस के रूप में, अमृत के रूप में, कल्पवृक्ष के रूप में अपने तीनों शरीरों के भीतर भगवान को अवतरण करने की कोशिश की है। व्यावहारिक जीवन में सिद्धान्तों का समावेश करके, व्यावहारिक जीवन में आदर्शों का समन्वय करके। आदर्शों का अगर आप समन्वय न कर सकेंगे, जीवन को श्रेष्ठ और शालीन न बना सकेंगे, अपने भीतर करुणा और उदारता का वर्धन न कर सकेंगे, अपने भीतर पवित्रता का समावेश न कर सकेंगे तो आपकी उपासनाएँ क्या फल दे सकती हैं। मैं नहीं जानता। पर मैं चाहता जरूर हूँ कि आपकी उपासना, साधना से भरी हुई पड़ी हो। आपका पूजन और आपका व्यक्तित्व और आपका भक्तिमय जीवन सिद्धान्तवादी हो, आदर्शवादी हो। चिंतन उत्कृष्ट हो और आदर्श एवं कर्तव्य आपके भीतर समाए हुए हों। अगर आप ऐसा कर सकें तो मैं अपने जीवन की, अपने सत्तर वर्ष के जीवन की साक्षी दे करके उसकी कसम खा करके कह सकता हूँ और भगवान की ओर से आश्वासन और विश्वास दिला करके कह सकता हूँ कि आपको उपासना से कभी निराश नहीं होना पड़ेगा। उपासना से ज्यादा बढ़कर के बुद्धिमानी, उपासना से बढ़कर तिजारत, उपासना से बढ़िया लाभदायक चीज और दुनिया में हो नहीं सकती। उपासना का अर्थ है अध्यात्म और उदार जीवन। करुणा से भरा हुआ जीवन। लोकहित के लिए समर्पित जीवन और बादलों की तरीके से लोकहित के लिए खर्च होने वाला जीवन। मैंने यही कोशिश की, इसी तरह की उपासना जीवन में प्रारम्भ करूँ और मैंने पाया भगवान मेरे नजदीक हैं। अपने आप को भगवान के नजदीक और भगवान को अपने नजदीक पाया। हम दोनों पास-पास रहते हैं।

यही वह चीज हैं जो हम दोनों को गोंद की तरीके से मिलाती है, जोड़ती है। आप भी अगर चाहें तो इन्हीं दोनों चीजों का आधार लेकर अपने और भगवान को साथ-साथ जोड़ सकते हैं। जहाँ भगवान आएगा वहाँ प्रकाश भी आएगा। जहाँ भगवान आएगा वहाँ सम्पत्ति भी आएगी। जहाँ भगवान आएगा वहाँ से अँधेरा भी दूर होगा। जहाँ भगवान आएगा वहाँ से कष्ट और क्लेश भी दूर होंगे। आप अपनी नाव को पार कर सकेंगे और अपनी नाव में बैठाकर असंख्यों को पार करा सकेंगे। आपके लिए नितान्त सम्भव है अगर आध्यात्मिकता और उपासना को आपने सही रूप में समझा हो तब जैसा कि मैंने समझा अपने जीवन में। कृपा कीजिए आप भी उसी मायने में उपासना को जीवन में काम में लाइए। कदम बढ़ाइए हिम्मत के साथ, श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए और लोकमंगल से भरे हुए जीवन के लिए। समाजहित जीवन चरित्रवान जीवन। अगर आप ऐसे जीवन जी पाएँगे, तो कोई भी उपासना आपके लिए चमत्कारिक फल देने में समर्थ हो सकती है। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

हमारी स्वयं की गायत्री उपासना कैसे फली ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

जिस पुनीत गायत्री पर्व को आप मनाने के लिए आए हैं, उसका बहुत महत्त्व है। आपने तो केवल उसको सुना है, पर मैंने देखा है। देखा ही नहीं जाना और पाया है। आपके लिए यह पर्व सामान्य जानकारी के लिए आकर्षक भी हो सकता है, पर मेरे लिए तो जीवन है। मेरे नस-नस में गायत्री पर्व घुसा हुआ है। माँस में, अस्थियों में, मस्तिष्क के प्रत्येक कण में घुसा हुआ है। जीवन की गतिविधियों में भरा हुआ है। ऐसा है यह गायत्री पर्व, जिसके लिए कितनी श्रद्धा लेकर हमने इतनी लम्बी जिंदगी जी ली। इसमें कोई शक नहीं कि आपका दृष्टिकोण दूसरा हो सकता है और मेरा दूसरा, लेकिन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारे दोनों के लिए यह हमारी माँ है। आप छोटे बच्चे हों तो क्या और हम बड़े बच्चे हों तो क्या ? लेकिन हम दोनों की माँ एक ही है, 'गायत्री माता', जिसको हम भारतीय संस्कृति की जननी कहते हैं। भारतीय धर्म की जीवात्मा कहते हैं। वेदों के मंत्रों से लेकर पुराणों तक का सारा वाङ्मय जिसकी व्याख्या के स्वरूप बना, जिससे सारे देवी-देवता, २४ देवता, त्रिपदा के तीन देवता, २४ अक्षरों के २४ अवतार, सारे का सारा पूजा-पाठ का परिकर गायत्री के अलावा और कुछ नहीं है। भारतीय संस्कृति और भारतीय धर्म विशुद्ध गायत्री स्वरूप हैं।

गायत्री की महत्ता के बारे में कितना सारा बताया गया है, कितने गुण गाए गए हैं ? लेकिन आमतौर से आदमी निराश देखे गए हैं और यह कहते सुने गए हैं कि हमको वे लाभ सुनने को तो मिलते हैं, पर पाए नहीं जा सकते। मेरा मत इससे भिन्न है। आपकी शिकायत है कि गायत्री का कोई चमत्कार हमने नहीं देखा, लेकिन मैंने देखा है। कुछ ऐसे चमत्कार हैं, जो मैं आपको भी दिखा सकता हूँ, पर कुछ ऐसे हैं जो मेरे लिए दिखाना सम्भव नहीं है अथवा दिखाना नहीं चाहता। गायत्री के ऐसे सारे के सारे चमत्कारों के बारे में ऋषियों ने जो कुछ भी कहा है, उन्हें अक्षरशः मैंने सही पाया है। फिर आपने गलत क्यों पाया और मैंने सही क्यों पाया ? गायत्री जयंती के पुण्य पर्व पर आइए इसी महत्त्वपूर्ण तथ्य पर प्रकाश डालें और पर्दे को उठाने की कोशिश करें कि हमारे लिए गायत्री क्यों चमत्कारी है और आपके लिए क्यों निराशाजनक है ? अक्षर तो वही २४ हैं। माला तो वही है। पूजा के विधि-विधान भी वही हैं फिर आप में फर्क कैसे पड़ गया ? हम यही कहते हैं कि आप इसे जान लें।

गायत्री के सम्बन्ध में हमारे गुरुदेव ने, जब पहले दिन आए थे, तभी उसका तत्त्वज्ञान समझा दिया था और कहा था कि गायत्री की शक्ति बादलों की तरह बरसती है, लेकिन इसके लिए एक शर्त है कि मिट्टी मुलायम होनी चाहिए और गड्ढा होना चाहिए। मिट्टी मुलायम होगी तो हरियाली पैदा हो जाएगी और गड्ढा होगा तो बादलों का पानी जमा हो जाएगा। टीले पर, चट्टानों के ऊपर पानी बरसेगा तो हरियाली कैसे पैदा हो जाएगी ? बादल अपने आप में एक इकाई है, लेकिन समग्र नहीं है, जिसको ग्रहण करना है, धारण करना है उसकी अपनी स्थिति और योग्यता भी होनी चाहिए, व्यक्तित्व भी होना चाहिए। उन्होंने एक बात और कही जिसे हमने गिरह बाँध ली, पर आप तो सुनने को भी तैयार नहीं हैं। वह थी—भगवान की कोई साधना नहीं होती। कोई भगवान की साधना कैसे कर सकता है ? साधना सिर्फ अपने आपे की करनी पड़ती है। अपने आपे की साधना कर लेने और पात्रता विकसित कर लेने के बाद में दैवी-शक्तियों का अनुदान अनायास ही बिना माँगे मिलता हुआ चला जाता है। मेरे गुरु ने जिस दिन दीक्षा दी उसी दिन मुझे वास्तविकता समझा दी और कहा कि सारे का सारा ध्यान अपने ऊपर केन्द्रित कर लीजिए। मैंने अपने ऊपर केन्द्रित रखा और यही कहता रहा—आदर्शों को, सिद्धान्तों को भगवान कहते हैं, उत्कृष्टता को भगवान कहते हैं और उसी की आराधना के लिए, उसी की उपासना के लिए अपने हर एक साँस को, हरेक चप्पे को, योग्यता के हर एक कण को मैंने नियोजित कर दिया। हमने भगवान की महत्ता को समझने की कोशिश की और उसने हमको गायत्री के नजदीक ला दिया। आप तो लाखों मील दूर हैं। इसलिए कि आपने केवल सुना है और कृत्यों को किया है, अतः निराश नहीं रहेंगे तो क्या करेंगे ? लेकिन हमको पूरी तरीके से, सच्चे मन से हजार बार कहने की हिम्मत पड़ती है कि गायत्री शक्तिवान है, सामर्थ्यवान है और चमत्कारी है। गायत्री में वह सब कुछ है जिसके बारे में बताया गया है।

लेकिन मित्रो ! यह कैसे सम्भव हो सका ? ऐसे सम्भव हो सका कि हमारे दृष्टिकोण में और आपके दृष्टिकोण में फर्क रहा। आपने उस तरीके से उपासना की कि आपको लाभ मिला या नहीं, परन्तु हमारी नीयत दूसरी ही रही है। हमने पाने का कभी विचार ही नहीं किया। शुरू के दिन से आखिरी दिन तक हमने केवल देने का ही विचार किया है। आपने किस स्तर की उपासना की है ? हमने दधीचि जैसे स्तर की उपासना की है। हमने कमाया तो था, लेकिन देवताओं से कहा—कुछ हमारे पास है। आप दुनिया को देते हैं तो कुछ हमसे भी लेते जाइए। ऐसे इनसान होते भी रहे हैं और हर अध्यात्मवेत्ता का स्तर यही होना चाहिए। देवता केवल दिया ही नहीं करते, उन्हें भी जरूरत होती है। आप जानते नहीं हैं क्या ? एक बार देवताओं को जरूरत पड़ी थी और वे इनसानों की सहायता माँगने के लिए आए थे। उन्होंने दशरथ से कहा था कि हम बहुत हैरान हैं और हमको इनसान के मदद की जरूरत है। तब दशरथ जी कैकेयी के साथ अपना रथ लेकर स्वर्गलोक को देवताओं की सहायता करने गए थे। दधीचि ने देवताओं की जरूरत पूरी की थी और हमारे पूजा करने के तरीके भी उसी तरीके से रहे हैं। देवताओं ने एक और आदमी से हाथ पसारा। उसका नाम था—अर्जुन। अर्जुन देवताओं की मदद करने के लिए गए थे। मदद करने के बाद में जब देवताओं ने अपना काम बना लिया तो सोचा इसे उसी स्तर का कुछ इनाम देना चाहिए। सो स्वर्गलोक की सबसे खूबसूरत महिला-उर्वशी को उन्होंने पेश कर दिया और कहा—पैसे के बाद में लोग खूबसूरती चाहते हैं, विषय-विकारों को चाहते हैं, आप यह ले जाइए। अर्जुन ने मना कर दिया और कहा—हमने तो अपने आपको संयमी जीवन में ढाल लिया है, क्या करेंगे इन बेकार की चीजों को ? तब देवताओं ने उससे भी शानदार चीज गांडीव दिया था जो मनुष्यों का नहीं देवताओं का बनाया हुआ था। गांडीव इसलिए दिया गया था कि जहाँ कहीं भी उससे तीर चलाएगा, पार करता हुआ चला जाएगा, असफल हो ही नहीं सकता। समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को भवानी से तलवार दिलाई थी, ऐसी शानदार तलवार जो चीरती हुई चली गई, पार करती हुई चली गई।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मित्रो ! मैंने वही किया है। उपासना मैंने इसी ढंग से की है। हमने सिर्फ एक काम किया है—अपने आपको धोया है, अपने आपके ऊपर पॉलिश की है और अपने आपको रगड़ करके तेज चाकू के तरीके से बना दिया है कि जहाँ कहीं भी मारेंगे चीरता हुआ चला जाएगा। यह है हमारा व्यक्तित्व और आप तो उल्टा चलते हैं। पूजा-उपासना को जीवन से दूर रखना चाहते हैं। बिजली के पॉजिटिव और निगेटिव दोनों तारों को अलग-अलग रखना चाहते हैं तो उनके अन्दर करेंट कैसे आएगा ? उपासना में त्याग की बात सिखाई जाती है और आप भोग की बात कहते हैं। योग भावनात्मक है, क्रियात्मक नहीं, योग में जहाँ लोभ और मोह के ऊपर अंकुश लगाना पड़ता है, वहाँ आप उसी की पूर्ति करना चाहते हैं। आप उल्टा चलते हैं। साबुन से कोयले का काम लेना चाहते हैं। यह भी कोई तरीका है। मैं आपके विचारों में क्रान्ति लाना चाहता हूँ, न केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में, वरन् सामाजिक क्षेत्र में, व्यवस्था के क्षेत्र में एवं भावनात्मक क्षेत्र में भी क्रान्ति लाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि इस गायत्री जयंती के पुनीत पर्व पर आप भी अपने मन की सफाई करके जाइए, ब्रेनवाश कर ले जाइए, दिशा लेकर जाइए और उस वास्तविकता को जानकार जाइए कि जहाँ से चमत्कार उत्पन्न होते हैं, सिद्धियाँ उत्पन्न होती हैं।

हमारे जीवन में ऐसा ही हुआ। २४ साल तक उपासना करता रहा और सिर्फ जौ की रोटी और छाछ खाता रहा, अपनी जीभ को धोते रहने के लिए। इसलिए कि जिस जीभ से मुझे मंत्रों का उच्चारण करना है, आशीर्वाद देने हैं, उपदेश देने हैं, लोगों को सलाह देनी है उस जीभ को जरा पैनी तो कर लूँ, फौलाद तो बना लूँ। इसलिए मैंने अपनी जीभ से जद्दोजहद की है। हमने प्रत्येक के ऊपर संयम किया है। हमने समय के ऊपर, विचारों के ऊपर और अपने पैसे के ऊपर संयम किया है। हमने किसी का खाया नहीं, खिलाया है। हमने अपने आपसे जद्दोजहद की है। पैसे के बारे में जद्दोजहद, दिमाग के बारे में जद्दोजहद, विचारों के बारे में जद्दोजहद, आचरण के बारे में जद्दोजहद की है। हमारा मनोरंजन एक ही रहा है, भगवान का काम। हमारी भावना एक है, मन एक है, लक्ष्य एक है, हमारा प्रिय एक है और वह है हमारा भगवान। सोते हुए सपना दीखता है तो हमको भगवान दीखता है। पूजा की कोठरी में बैठते हैं तो हमें चारों ओर भगवान की सुगंध आती है। जहाँ कहीं भी जाते हैं और अपना दिल टटोलकर देखते हैं तो वहाँ भगवान धड़कता हुआ दिखाई पड़ता है। प्राण में, नस-नाड़ियों में, साँसों में भगवान की हवा चलती हुई दिखाई पड़ती है। हमारे चारों ओर भगवान दिखाई पड़ता है। हमने भगवान को अनुभव किया है, पर आप तो देखने की फिराक में रहते हैं। क्या देखेंगे भगवान को ? आँखों से मिट्टी देखी जाती है। मिट्टी के अलावा क्या किसी ने देखा है भगवान को ? देखा किसी ने नहीं है, पर अनुभव किया है। हमने अपनी प्रत्येक गतिविधियों में, उद्देश्यों में, विचारों में भगवान को नाचते हुए, रास करते हुए देखा है, हमारी नियति और गतिविधियाँ अध्यात्म से ताल-मेल रखती हैं। हम यह अनुभव करते हैं कि अध्यात्म के सही तरीके से हम नजदीक आए हैं और सही तरीके से फायदा उठाने में समर्थ हुए हैं।

मित्रो ! हमने क्या किया और क्या पाया ? पाने की बात मालूम है आपको, जिसे मैं हजार बार बता चुका हूँ। शरीर की बाबत बता चुका हूँ कि यह शरीर भगवान का है। अपने-अपने शरीर को भगवान के हाथों बेच दिया है। अब यह हमारा नहीं, हमारे बॉस का है। इसलिए उसको इसकी एक बार नहीं ९९ बार रखवाली करनी पड़ेगी। हमने अपनी अक्ल भगवान को बेच दी है। अब यह भगवान की जिम्मेदारी है कि अक्ल को सँभाले। आइन्स्टीन के दिमाग के बारे में पहले ही १० लाख डालर के बीमे कराए गए थे कि मरणोपरांत उनका दिमाग निकाल लिया जाएगा और रिसर्च लैबोरेटरी में यह खोज-बीन की जाएगी कि उनका इतना शानदार दिमाग किस तरीके से हो गया है। अपने बारे में अभी तो मैं कुछ नहीं बताता, पर पीछे देख लेना हमारे दिमाग के बारे में। हमने ऐसी-ऐसी अजीब कल्पनाएँ की हैं कि सारे विश्व के ४५० करोड़ मनुष्य तराजू के एक पलड़े पर और हमारा बाँट एक पलड़े पर। हम जमीन पर रहने वाले ४५० करोड़ मनुष्यों के भाग्य को बदल डालने का दावा करते हैं। उनको हैरानी से बचा लेने का दावा करते हैं। आदमी के उज्ज्वल भविष्य की संरचना का दावा करते हैं और इन दिनों चल रही वे हवाएँ, जिनसे एक-एक आदमी उल्टा हो जाता है, इन हवाओं को, फिजाओं को मोड़-मरोड़ डालने का दावा करते हैं हम। हमारी सम्पदाओं, विभूतियों का अता-पता नहीं है किसी को। हमारे पास बहुत सम्पदाएँ हैं और हमारी सेवाओं के बारे में जिसे हर आदमी जानता है कि गुरुजी के दरवाजे पर से कोई भी आदमी खाली नहीं गया है। यह हमारी शान है। इस शान को हम कायम रखेंगे। आपकी मनोकामनाओं के बारे में हमारी सहायता तो नहीं के बराबर है, लेकिन अगर आप सौ मन मुसीबत लेकर आए थे तो २५ मन मुसीबत हमने मिटा दी है। आपकी सौ फीसदी जरूरतें हम कहाँ से पूरी करेंगे, लेकिन हम यकीनपूर्वक कह सकते हैं कि ईमानदारी के साथ अपनी सामर्थ्य के अनुसार हमने हर आदमी को पूरा-पूरा फायदा पहुँचाया है। मित्रो ! यह हमारे चमत्कार हैं जिसे आप जानते हैं और जो नहीं जानते, उन बहुत-सी बातों को हमने छिपाकर रखा है। छिपाकर रखी गई बातों को जानने के लिए उस समय तक इंतजार करना पड़ेगा आपको जब तक हमारा शरीर जिंदा है। सबूत हमने सब जमाकर रखे हैं। हमने कहा है कि आदमी के पाँच शरीर होते हैं और हम पाँच शरीरों से काम करते रहे हैं। हमारे जाने के बाद आप देख लेना कि आचार्य जी एक नहीं पाँच शरीरों से काम करते रहे हैं और बहुत-सी बातें हैं जो हमने सब छिपाकर रखी हैं। आप देख लेना वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चमत्कार जिन्हें रहस्य कहते हैं, जादू कहते हैं, अतींद्रिय क्षमताएँ कहते हैं, वे सब भी हमारे पास हैं।

गायत्री को त्रिपदा कहते हैं। इसकी व्याख्या 'सत्यम', 'शिवम्', 'सुंदरम्' के रूप में, सरस्वती, काली, लक्ष्मी के रूप में, ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में, सच्चिदानंद के रूप में की जाती है। यह उसका दर्शन-पक्ष है। दर्शन और प्रयोग कर्मकांड पढ़ना हो तो 'गायत्री महाविज्ञान' में हमने सब कुछ लिख दिया है, पढ़ लीजिए और भी कर्मकांडों को देखना हो तो आद्य शंकराचार्य की 'गायत्री पुरश्चरण पद्धति' तथा 'देवी भागवत्' पढ़िए। पर जो बात मैं बताना चाहता हूँ वह सिर्फ एक है कि आदमी के जीवन में गायत्री का प्रयोग कैसे किया जाए ? आदमी के जीवन में गायत्री का समावेश कैसे हो ? अध्यात्म थिऑरी में नहीं व्यक्तित्व में होना चाहिए और व्यक्तित्व थिऑरी में नहीं रहता, वह आदमी के साथ घुला रहता है। हमारे साथ व्यक्तित्व घुला हुआ है। अध्यात्म हमारे मस्तिष्क में, नस-नाड़ियों में, क्रिया-कलापों में, गतिविधियों में, चिंतन में—सबमें घुला हुआ है। हमारे तीन शरीर हैं, आपके भी तीन शरीर हैं। एक है हमारा कारण शरीर जिसको अंतरात्मा या अंतःकरण कहते हैं। उससे हमने उपासना की है, मस्तिष्क से साधना और शरीर से आराधना की है।

उपासना कहते हैं नजदीक आने को। लकड़ी और आग जब नजदीक आ जाते हैं, तब लकड़ी आग हो जाती है। हमने अपने आपको भगवान् के लिए समर्पित किया है और कहा है कि हमारी शक्तियाँ आपकी हैं। हमारा धन आपका है। हमारी अक्ल आपकी है। आप हुक्म दीजिए कि हमें क्या करना चाहिए ? उपासना इसी चीज का नाम है और कोई उपासना नहीं होती। यह विशुद्ध रूप से विचारपरक है, भावनापरक है, आस्थापरक है, निष्ठापरक है और श्रद्धापरक है। हमारी उपासना एक है—समर्पण की, श्रद्धा की। हमने नाले की तरह से अपने आपको नदी के साथ में मिला दिया है और उसमें मिल जाने की वजह से हमारी हैसियत, हमारी औकात, हमारी शक्ति और हमारा स्वरूप नदी जैसा बन गया है। आप भी अपने आपको मिलाइए न और भगवान से कहिए न कि आप हुक्म कीजिए, आज्ञा कीजिए और हम चलेंगे। हमारी उपासना हमारे ऊपर इसी रूप में छाई रही है। उपासना की निष्ठा को जीवन में हमने उसी तरीके से घोलकर रखा है जैसे एक पतिव्रता स्त्री अपने पति के प्रति निष्ठावान रहती है और कहती है—**'सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं।'** आपके पूजा की चौकी पर तो कितने बैठे हुए हैं ? ऐसी निष्ठा होती है कोई ? एक से श्रद्धा नहीं बनेगी क्या ? मित्रो ! हमारे भीतर श्रद्धा है। हमने एक का पल्ला पकड़ लिया है और सारे जीवन भर उसी का पल्ला पकड़े रहेंगे। हमारा प्रियतम कितना अच्छा है। उससे अधिक रूपवान, सौंदर्यवान, दयालु और संपत्तिवान और कोई हो नहीं सकता। हमारा वही सब कुछ है, वही हमारा भगवान है। आप ऐसी निष्ठा पैदा नहीं करेंगे क्या ? उपासना इसी को कहते हैं, जिसमें समर्पण की भावना हो, माँगने की नहीं देने की भावना हो। जवान औरत आती है और अपना ईमान, अपना मन, अपनी भावना, अपना शरीर, अपना गोत्र, वंश सब पति के हाथ पर रख देती है। हमने भी सब कुछ रख दिया है अपने पति के हाथ पर और कहा है कि हम आपके हैं और आपके होकर ही रहेंगे। आपके अलावा हमारा कौन है और हम किसके नजदीक जाएँगे ? किसका पल्ला पकड़ेंगे ? आपका कहना नहीं मानेंगे तो किसका मानेंगे ? आप ही हमारे हैं और हम आपके हैं। मित्रो ! यह उपासना है हमारी, जिसने हमारी अंतरात्मा को भक्ति से भर दिया है। भक्ति कहते हैं समर्पण को। इसी को 'अद्वैत' कहते हैं, 'एकत्व' कहते हैं।

गायत्री उपासना का दूसरा स्वरूप है—साधना। साधना अपने आपकी करने को कहते हैं। हमने अपने आपको कितना कसा है, शरीर को, इन्द्रियों को कितना कसा है ? अपने व्यवहार को कितना कसा है ? अपनी इच्छा-आकांक्षाओं और महत्वाकांक्षाओं को चूरा करके फेंक दिया है। अपने आपको धोने के लिए, परिष्कृत करने के लिए हमने धोबी के तरीके से बेरहमी के साथ पीट-पीट कर धोया है और धुनिए के तरीके से अपने आपको धुना है। क्या आप अपने आप से जद्दोजहद नहीं करेंगे ? अपने आप से लड़ेंगे नहीं क्या ? गायत्री का चमत्कार देखने का अगर आपका मन है, वास्तविक रूप में गायत्री से मुहब्बत है तो आप साधना के लिए आमादा हो जाइए, साधक बनिए। साधना भगवान की नहीं अपनी होती है। भगवान पर क्या चंदन चढ़ाएँगे, चावल चढ़ाएँगे, स्नान कराएँगे ? भगवान पर रहम कीजिए। पहले अपनी गंदगी धोइए, अपने को स्नान कराइए। अपना तो कराते नहीं हैं स्नान, भगवान को और कराएँगे। अपने आपको धोइए—साधना इसी को कहते हैं।

मित्रो ! हमने आराधना की है। आराधना उसे कहते हैं जिससे सेवा-पूजा करनी पड़ती है। सेवा हमने भगवान की, की है। भगवान किसे कहते हैं ? सिद्धान्तों को कहते हैं, आदर्शों को कहते हैं। उन खिलौनों को भगवान नहीं कहते हैं जिनको आपने भगवान मान रखा है। वे तो हमारी ध्यान-धारणा के लिए एक 'मीडियम' हैं। आदर्शों को भगवान कहते हैं, जिसके तईं हमारी गतिविधियाँ, हमारे पसीने का एक-एक चप्पा, समय का एक-एक कण लगा है। सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन को, लोकमंगल को, संस्कृति की सेवा को आराधना कहते हैं। सूरज निकलने से लेकर डूबने तक हम बराबर भगवान के काम में लगे रहते हैं। यही हमारा भजन है, उपासना है, तप है और सेवा है। आपकी अंतरात्मा को उछाल देने के लिए ही हमारी वाणी चलती है। जनता-जनार्दन को ऊँचा उछाल देने के लिए ही हमारी लेखनी चलती रहती है। हमारी गतिविधियों का चप्पा-चप्पा इसी के लिए चलता रहता है। लोकहित के लिए, जनता-जनार्दन के लिए, सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन के लिए हम बराबर १२ घंटे काम करते हैं। यही हमारी आराधना है, मशक्कत है। हमारा श्रम है, साधन है। भौतिक सामर्थ्य जो कुछ भी है हमने आराधना में लगा दी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, चिन्तन साधना में और अन्तःकरण उपासना में लगा दिया है। यह है चमत्कारों के स्रोत। आप इसको सुनना, नोट करके रखना और जहाँ तक सम्भव हो सके वहाँ तक चलना। भागना नहीं आता, दौड़ना नहीं आता, तो छोटे बच्चे की तरीके से दीवाल पकड़कर, गाड़ी के सहारे चलना सीखिए, एक कदम आगे बढ़िए। लोभ, मोह की हथकड़ी और बेड़ी को, जिसने आपको मजबूती से जकड़ रखा है, छोड़िए। थोड़ी ढील करिए फिर देखिए आपको आगे बढ़ने का मौका मिलता है कि नहीं। श्रेष्ठता की दिशा में, शालीनता की दिशा में, महानता की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाइए। अपने बच्चों, सम्बन्धियों, मित्रों के प्रति हमने अपने कर्तव्य का पालन किया है। उनके लिए संस्कृति छोड़ी है, संस्कार छोड़े हैं, परम्पराएँ छोड़ी हैं और आप तो लालच करते हैं। उनके लिए जमा करना चाहते हैं। जो हराम का खाएगा देख लेना उसका पेट फटेगा। पेट फटने का मतलब है—कुमार्गगामी, दुर्व्यसनी होना। हराम का पैसा किसी को भी नहीं फला है। हराम के पैसे ने आज तक किसी को भी निर्मल क्षीर नहीं बनाया है। वह अपनी दुर्गति कराकर रहेगा।

मित्रो ! हमारे आध्यात्मिकता की यही निशानी है। एक हमारा पराक्रम है, जिसमें हमने पुराने ढर्रे को, लोभ को, लालच को तोड़ने की कोशिश की है और दूसरा पराक्रम—जिसमें हमने आगे बढ़ने की कोशिश की है। इस तरह हम सिद्धान्तों की दिशा में, उद्देश्यों की दिशा में आगे बढ़ते चले गए और उनमें चमत्कार पाया। गायत्री माता बड़ी चमत्कारी हैं। इसमें सिद्धियों के जखीरे भरे पड़े हैं, साधनों के जखीरे भरे पड़े हैं और न जाने क्या-क्या भरा पड़ा है ? गायत्री की महत्ता को मैं किस मुँह से कहूँ, जिसमें आदमी भौतिक जीवन में समृद्ध हो जाता है और आध्यात्मिक जीवन में सुसंस्कृत हो जाता है। हमने आध्यात्मिक जीवन में सुसंस्कारिता पाई है और भौतिक जीवन में समृद्धि। यह समृद्धि हमारे काम आई है और हमारे मित्र और कुटुम्बियों में से हर एक के काम आई है। ऐसी समृद्धि आप नहीं इकट्ठी करेंगे क्या ?

आज गायत्री जयंती के दिन मेरा भाव और मन था कि आपको अपने जीवन के रहस्य, निश्चय और अपने विश्वासों को आपके सामने परदे के तरीके से खोल करके ही रहूँ, रहस्यों को बताऊँ। आपको चमत्कारों की दिशा में गायत्री माता का अनुग्रह प्राप्त करने की पूरी-पूरी छूट है, लेकिन इस दिशा में चलिए तो सही। धीरे चलिए, पर शुरुआत तो करिए। शुरुआत करने के लिए हमने प्रज्ञा अभियान चलाया है। इससे दुनिया का लाभ होगा कि नहीं, पर आपका जरूर भला हो जाएगा। आप अपने आप पर नियंत्रण करने और उदार बनने में जरूर समर्थ हो जाएँगे। आप समर्थ हो गए तो दुनिया समर्थ हो जाएगी। साँचे ही अगर ठीक न हो सकेंगे तो हम दुनिया को कैसे ढालेंगे ? आप पहले अपने आपको बदल डालिए। हमने अपने आपको जितना बनाया है, भगवान हमें उसी हिसाब से अनुग्रह देते हुए चले गए। यही हमारा रहस्य और यही हमारी आत्मकथा, यही है हमारे सारे के सारे रहस्यों का उद्घाटन, जो आज गायत्री जयंती के दिन हमने आप लोगों के सामने अपना जी खोलकर रख दिया है। आपको करना हो तो इसी तरीके से करना, न करना हो तो आपकी मर्जी। आपको खेल-खिलवाड़ पसन्द है तो ठीक है बच्चों की तरीके से खेल-खिलवाड़ ही करते रहिए। इसमें भी क्या हर्ज है ? मनोरंजन ही सही, लेकिन आप लंबी चीजें नहीं पा सकेंगे। लंबी चीजें, महत्त्वपूर्ण चीजें पाने के लिए, जिसकी आज बहुत जरूरत है, आपको यही करना चाहिए। अब हम जगह खाली कर रहे हैं और आपको उस जगह पर बिठा रहे हैं और यह कहते हैं कि जैसी शानदार जिंदगी हमने जी ली, चमत्कारों से भरी हुई जिंदगी हमने जी ली, जैसी महिमा और गरिमा हमने प्राप्त कर ली, आपको हम दावत देते हैं आज गायत्री जयंती के दिन कि यह रास्ता आपके लिए भी खुला हुआ है। जरा हिम्मत दिखाइए न हम दावत देते हैं। आप आइए और जिस रास्ते पर हम चले हैं आप भी चलिए। जो हिम्मत हमने दिखाई है आप भी दिखाइए और इसी जीवन में धन्य और कृत-कृत्य हो जाइए। अपने आपको कृत-कृत्य बना लीजिए और सारे समाज को धन्य बना दीजिए। ऐसा मौका फिर कभी पाएँगे क्या ?

आज गायत्री जयंती के दिन मेरे मन के उद्गार यही थे जो मैंने आप लोगों के सामने पेश कर दिए, व्याख्यान के रूप में नहीं, वरन् सिर्फ इसलिए कि आप इस पर विचार करें और गौर करने के बाद में ऐसे कदम बढ़ाएँ जैसे हमने अपने जीवन में बढ़ाए। इसी आशा के साथ आज हम आप लोगों को विदा करते हैं कि आप इन पर बार-बार विचार करेंगे और बार-बार यह कोशिश करेंगे कि इन सिद्धान्तों को जहाँ तक सम्भव हो वहाँ तक जीवन में उतारने की कोशिश करेंगे। आज की बात समाप्त।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्।।
ॐ शान्ति।

हमारी यज्ञीय परम्परा

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

एक समय की कथा है कि एक भूखा चांडाल एक ब्राह्मण के साथ आया। वह बहुत भूखा था। ब्राह्मण ने, उनकी पत्नी तथा सभी बच्चों ने अपने-अपने हिस्से की रोटी उस चांडाल को दे दी। चाण्डाल रोटी खाकर संतुष्ट हो गया। उसने रोटी खाई, पानी पिया और उसके बाद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

एक स्थान पर कुल्ला किया, अपना हाथ धोया। उसके हाथ धोने के बाद एक नेवला आया। कहते हैं कि वह वहाँ पर लोटने लगा और लोटते ही उसके काले बाल सुनहरे हो गये। उस नेवले से लोगों ने पूछा कि तू तो काला था, सुनहरा कैसे हो गया ? उसने कहा—एक स्थान पर यज्ञ हुआ है। वहाँ मैं गया था और लोट लगाई तो मेरे बाल सुनहरे हो गये।

मित्रो, यज्ञ महान चीज है जो बड़े आदमी ही नहीं, छोटे आदमी भी कर सकते हैं। आप समझते नहीं। लोग हवन करें तथा पैसे खर्च करें, यह कोई हवन आवश्यक नहीं है। आप अगर किसी बुढ़िया के, किसी बहिन या भाई के आँखों के मोतियाबिन्द का आपरेशन करा देते हैं तो वह भी यज्ञ है। आप यदि इस प्रकार का यज्ञ करने वाले हैं या करते हैं तो आपको हम एक श्रेष्ठ यजमान, श्रेष्ठ होता कहेंगे तथा आपका स्वागत करेंगे। आपने उस बुढ़िया के, जिसे आँखों से नहीं दिखता था, अगर आपने ढाई सौ रुपये खर्च करके उसकी आँखों में नई ज्योति ला दी है तो हम आपको होता कहेंगे, यजमान कहेंगे और यह कहेंगे कि आप सच्चे हवनकर्त्ता है। यह हमारी संस्कृति है तथा हर इनसान का कर्त्तव्य हैं कि वह दूसरों की मुसीबतों के समय पर सहयोग करें। आदमी दूसरों के दुःखों, मुसीबतों एवं तकलीफों का ध्यान रखें।

अगर इस प्रकार का हमारा दृष्टिकोण होगा तो क्या हमारे समाज में समस्याएँ रहेंगी ? क्या यहाँ कोई चोरी करेगा ? क्यों कोई कहीं डकैती डालेगा ? नहीं मित्रो, कोई नहीं करेगा। इनसान के सामने कोई समस्या नहीं रहेगी। उसके भावनाओं में परिवर्तन आयेगा। वह यह सोचेगा कि वह जंगलों में नहीं चल रहा है, वरन् ट्रेन में चल रहा है। चोरी करने से पूर्व व्यक्ति सोचेगा कि जिसे वह नुकसान पहुँचाने जा रहा है तो क्या आवश्यकता के पैसे उसके पास हैं जिसकी हम जेब काटकर उसे परेशान करने जा रहे हैं। वह बेचारा कहाँ भीख माँगेगा, कहाँ मारा-मारा फिरेगा। आज अगर हमारी स्थिति में ऐसा ही परिवर्तन हो जाए तो फिर इस प्रकार की समस्याएँ कहाँ रहेंगी ? कहाँ बर्बादी रह जाएगी ? मित्रो ! अपराध कैसे रह पायेगा ? अगर मनुष्य अपने दिल के अन्दर भावना को जोड़ लें। अभी हमारे शरीर तो इनसान के हैं परन्तु दिल हैवान के हैं। अगर दिल इनसान के होते तो कोई समस्या नहीं होती। अगर रामायण की एक चौपाई आपको याद हो जाए तो हम यह समझेंगे कि आपने पूरी रामायण पढ़ ली। वह है **"सियाराम मय सब जग जानी। करहूँ प्रणाम जोरि जुग पानी"**। यदि यह दृष्टिकोण आ जाए तो कोई कैसे किसी के स्वास्थ्य को चौपट कर देगा ? तब व्यापारी यह सोचेगा कि धनिया खरीदने आया है राम—उसे गधे की लीद मिला हुआ धनिया कैसे दे दूँ ? अरे हम अगर गायत्री के सिद्धान्तों पर, आध्यात्मिकता के सिद्धान्तों पर चलने वाले हों तो क्या हम पाप कर सकते हैं ? नहीं, कभी नहीं कर सकते और न ही अपराध कर सकते हैं। तब पाप और अपराध समाज से मिट जाएगा। आज अगर इस प्रकार के सिद्धान्त लोगों में आ जाते तो गायत्री और यज्ञ की फिलॉसफी लोगों की समझ में आ जाती। इनसान महान बन जाते।

आपने नाच क्या सीख लिया है, यह बेकार की चीज है। आज मित्रो, नृत्यांगना आपके देश एवं समाज की तबाही कर रही हैं। अगर नृत्यांगना आपके जीवन में न आती तो मजा आ जाता तथा उसके स्थान पर मोहब्बत आ जाती तो हम यह समझते कि आपके जीवन में यज्ञ का सिद्धान्त आ गया। अगर आप मोहब्बत अपनी धर्मपत्नी से कर लेते तो मजा आ जाता। आप तथा आपकी धर्मपत्नी एक-दूसरे के लिये जान देकर जिया करते तो मजा आ जाता। तब आपके परिवार में एक नया उत्साह एवं उमंग पैदा हो जाएगा। मित्रो, यह भी यज्ञ का ही सिद्धान्त है। अभी तो आपकी धर्मपत्नी यदि आपके भोजन में थोड़ा कम या ज्यादा नमक डाल देती है, बर्तन साफ करने में थोड़ी-सी कमी होती है, तो आप उसे भला-बुरा कहते हैं और उसे मारने तक उतारू हो जाते हैं। यह कैसी विडम्बना है ? आपने यह कभी नहीं सोचा कि वह अपने माँ-बाप को छोड़कर आयी है। वह आपसे न पेमेण्ट माँगती है न पेन्शन माँगती है, न सण्डे की छुट्टी माँगती है। कितनी महान है यह नारी जाति ? ऐसी देवी को आपने नहीं देखा होगा। आपने पत्थर की देवी देखी होगी जो बकरे तक खा जाती है। अगर आप इस देवी की आरती नहीं उतार सकते हैं, पूजा नहीं करते हैं तो कम से कम भाव-संवेदना भरी आँखों से देख तो लिया करें। अगर इस प्रकार जीवन जीना सीख लें, प्यार भरा जीवन जीना सीख लें तो मजा आ जाएगा।

अगर आपने अपने घर, परिवार, बीबी, बच्चों को संस्कारवान नहीं बनाया, अपनी भाव-सम्वेदना प्रगट नहीं की तो आपके लिये तबाही आयेगी। आप जब बुड्ढे हो जाएँगे तो आपको कोई नहीं पूछेगा। याद रखिये आप में से अधिकांश व्यक्ति अब बुड्ढे होने वाले हैं। आपके बाल भी हमारे जैसे सफेद होने वाले हैं। आपकी आँखों में भी चश्मा अब लगने वाला है। आपका बच्चा भी जब बड़ा हो जाएगा तो आपको मजा चखायेगा कि आपने उसकी माँ को भला-बुरा कहा है। माँ जब गुस्से में अपने बच्चे को दूध पिलाती है, उस बच्चे को भी माँ-बाप के प्रति क्रोध आता है। आपका व्यवहार जो इस समय हुआ है—आप देखना कि बुढ़ापे में आपकी बहू और आपकी पत्नी कैसे गुस्सा निकालती हैं ? अगर घर में लोग आपस में प्रेम करना सीखते, मोहब्बत करना सीखते तो मजा आ जाता तथा उनका जीवन धन्य हो जाता। आध्यात्मिकता हमारे घर में भर जाती। सारे घर में आनन्द-उल्लास का वातावरण रहता। आपस में प्रेमभाव होते। घर-परिवार ही स्वर्ग बन जाता।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म का मतलब होता है प्रेम, आत्मीयता। एक समय की बात है—स्वामी रामतीर्थ जापान गये। वे एक फैक्टरी देखने गये। सभी अपने-अपने कार्मों में लगे थे। एक बार बाबाजी को देख लिया तथा अगले ही क्षण पूरे तत्परता के साथ हर आदमी अपने-अपने कामों पर लग गया। किसी के पास इतना समय नहीं था कि उन्हें देखे। जापान के लोग बड़े परिश्रमी होते हैं। सप्ताह में ५ दिन काम करते हैं, परन्तु उससे ही जापान नित्य प्रगति पर बढ़ता जा रहा है। वे पूरे मनोयोग के साथ काम करते हैं। वे राष्ट्र का महत्त्व समझते हैं। उनका कहना है कि हम मजदूर हैं तो क्या ? हमें अपने देश को आगे बढ़ाना है। हम सप्ताह में ५ दिन परिश्रम करेंगे तथा देशहित में उत्पादन बढ़ायेंगे। दो दिन अपने परिवार के साथ हँसी-खुशी का जीवन जियेंगे। कारखाने से आने के बाद सब हँसी-खुशी का जीवन जीते रहते हैं। कोई चाय बनाता है, कोई गीत गाता है। सब आनन्द से विभोर हो जाते हैं। रामतीर्थ बहुत ही प्रभावित हुए। आपको प्यार आता है ? कभी नहीं। आप तो अपनी बीबी की हमेशा शिकायत करते हैं। वह काली है, मोटी है। शादी के समय भी दहेज लेकर नहीं आयी। आप कभी खुश नहीं रहते हैं।

रामतीर्थ का वहाँ व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा—हम संस्कृत के श्लोकों को पढ़कर आपको वेदान्त का—अध्यात्म का शिक्षण क्या दें ? आपको देखकर हम नतमस्तक हैं। आप सब सच्चे अर्थों में अध्यात्मवादी हैं। आप में से हर आदमी काम के प्रति इतना ईमानदार है कि उसका क्या कहना ? आप कार्य को भगवान की पूजा समझते हैं। आपका क्या कहना ? आपको हम कहना चाहते हैं कि आपसे हमें शिकायत नहीं है। आप शंकर जी के मंदिर में जाते हैं या नहीं, यह हम नहीं कह सकते हैं, परन्तु आप पक्के अध्यात्मवादी हैं। आपके काम करने के ढंग, फर्ज तथा जिम्मेदारी सराहनीय एवं अनुकरणीय है। आपको भगवान ने जो चीज दी है, उसका उपयोग जानते हैं। भगवान ने मनुष्य को हँसने की कला दी है। आपका त्याग सराहनीय है, जो आपस में प्रेम, मोहब्बत का जीवन जीते हैं।

अपने देश में आप ३५० रुपये पाते हैं। उसमें से ५० रुपये आप सिनेमा में खर्च कर देते हैं। २० रुपये आप सिगरेट में फूँक देते हैं। आपको तो बजट बनाना भी नहीं आता है। अगर आप पूरे ३५० रुपये बच्चों के विकास के लिये, प्रगति के लिये खर्च कर देते तो आपके परिवार की स्थिति कुछ और ही होती। अगर किसी को हँसना आता है, हँसाना आता है, प्यार करना आता है, बजट बनाकर खर्च करना आता है, तो वह हमारे शब्दों में सच्चा अध्यात्मवादी है। गायत्री का उपासक है, यज्ञकर्त्ता है।

सारे विश्व की समस्या का हल यज्ञीय दर्शन से संभव है। इसके द्वारा ही युद्ध की समस्या, चीन, पाकिस्तान की समस्या हल हो सकती है तथा विश्व में शांति आ सकती है। दुनिया के अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का हल इस यज्ञीय दर्शन द्वारा हो सकता है। आज विश्व के सामने जो प्रमुख समस्याएँ हैं वे हैं—(१) युद्ध (२) दुश्मन (३) पराजय। अगर आपस में मिल-बैठकर विचार करें—जैसे पंचायत में होता है तो दुनिया की हर समस्या का हल हो सकता है। दुनिया में खून-खराबा समाप्त हो सकता है। समुद्र के खारे जल को मीठा बनाया जा सकता है। उसमें एक प्रकार की 'काई' उगाई जा सकती है जिससे खाद्य समस्या का हल हो सकता है। बंजर एवं बेकार पड़ी जमीन को रहने योग्य बनाकर जनसंख्या अभिवृद्धि की समस्या का हल हो सकता है। आदमी अगर मेहनत तथा मसक्कत करे तो पहाड़ों पर भी खेती की जा सकती है। अगर हम पानी की व्यवस्था पूरी कर लें तथा प्यासों को नया जीवन दे दें। हम युद्ध के लिये जो खर्च करते हैं उसे मनुष्य के विकास में खर्च कर दें तो इनसान के अन्दर खुशी आ सकती है। मित्रो ! यही है यज्ञीय फिलासफी। इससे रेगिस्तान को हरा-भरा बना सकते हैं। अभी जो गोला-बारूद बनाया जा रहा है, अस्त्र-शस्त्र बनाये जा रहे हैं उसके स्थान पर अगर ट्यूबवेल बनायी जाए तो मनुष्य को कितना फायदा होगा ? इस प्रकार हर गाँव में खुशहाली आ सकती है। अगर हम युद्ध के खर्चे को बन्द कर दें तो अभी जितनी अकल और पैसा मिसाइल और राकेट बनाने में खर्च होता है, अगर वह खेती के विकास में, अन्न उगाने में, बच्चों की शिक्षा एवं गरीबी के विकास में खर्च हो जाए तो मज़ा आ जाए।

हम सारी समस्याओं का हल अक्ल, पैसा तथा राजनीति के द्वारा नहीं कर सकते हैं। अगर कर सकते हैं तो केवल इनसानियत से। इसके द्वारा ही राष्ट्रीयता के झगड़े, युद्ध के झगड़े, भाषा, प्रान्तवाद, जातिवाद, सीमा विवाद आदि सारी समस्याओं का हल हो सकता है। आप महात्मा गाँधी की जय बोलते हैं, परन्तु उनके आदर्शों को धारण नहीं करते हैं। आप कुर्सी के लिये उस तरह से लड़ते हैं जैसे कुत्ते रोटी के लिये लड़ते हैं। अगर भले आदमी आप भारतीय संस्कृति के संरक्षकों को याद करते, उनके कार्य, त्याग, सेवा को याद करते तो मजा आ जाता। अगर आप यह कहते कि आप कुर्सी पर बैठें हम इधर ही रहकर सेवा करेंगे जैसाकि राम को भरत ने कहा था, वैसा आदर्श प्रस्तुत करते तो मजा आ जाता। आदमी के छोटे दिल और व्यवहार के कारण न जाने कितनी समस्याएँ खड़ी हो गई हैं ? राजनीति पैदा करके नेताओं ने प्रान्त को, देश को बर्बाद कर दिया। काहे का प्रान्त, काहे का विवाद—एक ही भूमि में—भारत में लोग पैदा हुए। अगर ये विचार आ जाते तो मजा आ जाता।

जरा-सी दीवाल की समस्या ने एक ही देश के निवासियों को हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी बना दिया और वे एक-दूसरे को अपने-अपने क्षेत्र से निकालने लगे। एक ओर पाकिस्तानी तो दूसरी ओर हिन्दुस्तानी हैं। कमोवेश अब वही प्रान्तीयता के नाम पर हो रहा है। यदि मध्य प्रदेश का पानी महाराष्ट्र में चला गया तो क्या हुआ ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अरे ! भले आदमियो, छोटी-छोटी समस्याओं के लिये अपने जीवन का सर्वनाश क्यों कर रहे हो ? आपस में एक-दूसरे का गला क्यों काट रहे हो ? धिक्कार है तुम्हारी इनसानियत को। मित्रो ! थोड़ी-सी अकल हमारे अन्दर आ जाती तो हम सारी समस्याओं का हल कर लिया करते।

मित्रो इन समस्याओं का हल किसी असेम्बली से नहीं होने वाला है। इसका हल मनुष्यों के बड़े दिल तथा उदारता से ही सम्भव है। इसके लिये यज्ञीय दर्शन को समझना होगा। उसे आचरण में लाना होगा।

आज समूची मानव जाति सारे देश विश्वयुद्ध के शिकंजे में इस तरह फँसे हुए हैं कि उसका क्या कहना ? आज हर जगह तलवार लटकी हुई है। न जाने कब तलवार गिर जाए और गला कट जाए। कोई भी देश किसी समय भी इसका भुक्तभोगी बन सकता है।

मित्रो ! आज चौबीस घंटे मानवता त्राहि-त्राहि कर रही है। उसे शांति तथा चैन की नींद हराम हो गयी है। सभी मछलियों की तरह तड़प रहे हैं। मित्रो इस मानवता को त्राहि से बचाने के लिए कौन काम करेगा ? इसमें काम करेगा बड़े दिल 'वाला तथा उदारता सम्पन्न मानव। इसमें यदि मनुष्य को दिल तथा उदारता बढ़ती चली जाएगी तो 'एटम बम' भागते हुए चले जाएँगे छिपकली की तरह से। उस समय मनुष्य के त्याग की सराहना होगी। आदमी मौत को घृणा की दृष्टि से देखेगा। लोगों की निगाह, दृष्टिकोण बाप, भाई, भतीजे की तरह होगी। उस परिस्थिति में मित्रो कौन बरसायेगा मौत ? किसी के लिये आप बतलाएँ न। मित्रो, इसे ही कहते हैं त्याग, सद्भावना, यज्ञ। यह त्याग ही दुनिया में नया रूप लायेगा। दिल की उदारता से ही दुनिया का कायाकल्प होगा। मित्रो ! यह आज नहीं तो कल आयेगा ही। कल नहीं तो परसों अवश्य आयेगा। परसों नहीं तो १००० वर्ष बाद आयेगा, परन्तु वह दिन जब भी आयेगा सभी लोग भारतीय संस्कृति के अनुयायी होंगे तथा बड़ा दिल तथा उदारता उनके अस्त्र-शस्त्र होंगे। उसी दिन विश्व की मानवता शांति पा सकेंगी तथा लोग अमन-चैन की जिन्दगी जी सकेंगे। उस समय इस धरती पर स्वर्ग होगा। मानवता के विकास उनके आदर्श सिद्धान्त होंगे। मित्रो जब कभी भी दुनिया में शांति आयेगी वह दिन भारतीय संस्कृति के विकास का दिन होगा तथा लोग भारतीय संस्कृति के आधार पर यज्ञ के दर्शन का झंडा फहरायेंगे। हर आदमी के दिल एवं दिमाग में यज्ञीय भावना जाग्रत हो रही होगी। हमारे समाज एवं परिवार का निर्माण यज्ञीय आधार पर हुआ है, अतः उसका विकास तदनुरूप ही होना चाहिए। मैं आपको बतला देना चाहता हूँ कि जिस दिन लोगों के मन में यज्ञीय भावना जाग्रत हो जाएगी उस दिन से ही शांति आयेगी। लोग अमन-चैन का जीवन जी सकेंगे। समाज और देश का वातावरण बदल जाएगा। हम उसी दिन का ख्वाब देखते रहेंगे। आप से भी मेरा अनुरोध है कि आप भी उसी दिन का ख्वाब देखें। हम चाहते हैं कि यह भारतीय अध्यात्म, भारतीय विचारधारा दुनिया में फैले, विश्व में फैले तथा दुनिया में शांति आवे तथा खुशी आवे।

यह दिन अवश्य आयेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। आपका हमने थोड़ा-सा कीमती समय लिया, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की थोड़ी-सी मोटी बातों को समझाने का प्रयास किया। भारतीय परम्पराओं के आधार पर गायत्री एवं यज्ञ की वास्तविकता एवं परम्पराओं को थोड़ा-बहुत समझने में शायद आपको यह काम आये, शायद यह कि यह विचार पसंद आये, शायद आप ऊँचे आदर्शों पर चलने की कोशिश करें।

हमें विश्वास है कि सारी दुनिया में जब भी खुशी आयेगी, सारी दुनिया में जब भी शांति आयेगी, जब भी सारी दुनिया की समस्याओं का हल होगा, तो लोगों को इसी सिद्धान्त को अपनाना होगा जो हमारे ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व गायत्री मंत्र एवं यज्ञ के सिद्धान्त में बतलाया था। हमारे ऋषियों ने इस सिद्धान्त को सारे विश्व को दिया था तथा सारे विश्व के लोग इस गायत्री एवं यज्ञ के सिद्धान्त को, जिसे हम सद्विचार एवं सत्कर्म के सिद्धान्त, सद्भावना एवं सद्विवेक का सिद्धान्त कहते हैं, लोगों ने इस खुशी के साथ अपनाया था तथा इसे सर्वसम्मति से माना था। इस प्रकार की भावनाओं के कारण ही हमारे पूर्वज सब जगह वंदनीय तथा पूजनीय थे। उनका सब जगह आदर-सत्कार था। उनकी बातों को सब माना करते थे। **"धियो यो नः प्रचोदयात्"** एवं **'इदं न मम'** का नारा सारे विश्व में गूँजता रहता था। आज भी यह सिद्धान्त ज्यों का त्यों है। युग बदल गया हो, कलियुग आ गया हो, सतयुग चला गया हो, परन्तु आसमान जहाँ का तहाँ है। तारे जहाँ के तहाँ हैं। सूर्य, चन्द्र जहाँ के तहाँ हैं। उसी प्रकार गायत्री एवं यज्ञ के सिद्धान्त जिसे हम आदर्श या मानवता के विकास का सिद्धान्त कह सकते हैं, वह भी जहाँ के तहाँ हैं। दुनिया को संदेश देने के लिये यह दोनों झंडे फहरा रहे हैं तथा फहराते रहेंगे विश्व के प्रत्येक लोगों को अंततः इसी झंडे के नीचे आना होगा तभी वे स्थायी शांति प्राप्त कर सकते हैं ऐसा हमें विश्वास है। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

यज्ञों से सूक्ष्म वातावरण का संशोधन एवं जनमानस का परिष्कार

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !

लंका-दहन के पश्चात् राक्षस तो मारे गये, लेकिन वातावरण ज्यों का त्यों गंदा बना रहा। वातावरण में राक्षसपन बराबर बना हुआ था। फिर उसका निवारण कैसे हो ? वातावरण का मुकाबला कैसे किया जाए ? तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रामचन्द्र जी ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे। दशाश्वमेध घाट, कभी आप बनारस जाएँ तो वहाँ देखें कि वहाँ घाट का नाम 'दशाश्वमेध घाट' रखा गया है।

कौरवों के जमाने में कंस से लेकर के जरासंध तक जो अत्याचार कर रहे थे, वे महाभारत में मारे तो गये, लेकिन वातावरण नहीं मारा गया। वातावरण वैसा ही गंदा बना रहा और वैसे ही उसमें दुष्टता भरी रही। उसका शमन कैसे हो ? इसका एक ही उपाय भगवान कृष्ण ने बताया कि इसके लिए यज्ञ करना चाहिए। राजसूय यज्ञ उसी समय हुआ था और उसका उद्देश्य था—वातावरण का संशोधन।

वातावरण दिखायी नहीं पड़ता, पर उसका प्रभाव ऐसा बुरा होता है कि चारों ओर हाहाकार फैल जाता है। आज भी वातावरण वैसा ही दूषित है, जैसा कि दो घटनाएँ मैंने सुनायीं जो उस समय था। आज भी चारों ओर अशांति फैली हुई है। सारे विश्व में वातावरण की वजह से दुर्घटनाएँ बराबर हो रही हैं। कहीं सूखा पड़ रहा है ? कहीं पानी बरस रहा है। कहीं बाढ़ आ रही है, कहीं बीमारियाँ फैल रही हैं। ये तो यहाँ हैं, सारे संसार भर में देखिये, लड़ाई का वातावरण बन रहा है। जगह-जगह युद्ध चल रहे हैं, जगह-जगह द्वेष हो रहे हैं, जगह-जगह मारधाड़ हो रही है, मार-काट हो रही है और आतंकवाद फैला हुआ है। बहुत-सी बातें हो रही हैं। ये कैसे हो रही हैं ? ये वातावरण के दूषित होने की वजह से हो रही हैं। इसकी प्रेरणा वातावरण से मिलती है। वातावरण से प्रकृति भी नाराज है, आज प्रकृति भी हमारा संग नहीं दे रही है। फसल ठीक तरह से पैदा नहीं हो रही। मनुष्यों में जो शांति और चैन होना चाहिए, वह भी नहीं मिल रहा है।

क्या उपाय करना चाहिए वातावरण संशोधन करने के लिए ? वायुमंडल भी दूषित है। वातावरण ही नहीं, वायुमंडल भी। कैसे ? ये कारखाने चलते हैं, मिलें चलती हैं। इनका धुआँ निकलता है। इन धुओं की वजह से वायुमंडल भी दूषित हो रहा है। एटमबमों का जो परीक्षण चल रहा है, उसकी वजह से विकिरण फैल रहा है और विकिरण की वजह से संतानें खराब हो रही हैं। बुरे स्वभाव की हो रही हैं। अंधी-पंगी हो रही हैं। वातावरण का प्रभाव, वायुमंडल का प्रभाव, विकिरण का प्रभाव सारे संसारभर में छाया हुआ है। इसका क्या उपाय करना चाहिए ? ये पुस्तकीय उपायों से काम नहीं चल सकता। इसके लिए तीर-तलवार काम नहीं दे सकते। मनुष्य का सांसारिक पुरुषार्थ काम नहीं दे सकता। इसके लिए आध्यात्मिक पुरुषार्थ ही कारगर हो सकता है। आध्यात्मिक पुरुषार्थों में यज्ञ की बड़ी महत्ता बतायी गयी है। यज्ञ की ऋषियों ने बड़ी महत्ता गायी है। यज्ञ को पिता बताया गया है और गायत्री को माँ बताया गया है। गायत्री और यज्ञ मिलकर के माता-पिता होते हैं। गायत्री यज्ञों से वह शक्ति पैदा होती है, जो कि नया दृश्य पैदा कर सके और वातावरण में जो गंदगी भरी पड़ी है उसको झाड़-बुहारकर साफ कर सके। यह सफाई करने की शक्ति केवल यज्ञ में है। यज्ञ से आप सारे संसारभर की सेवा कर सकते हैं।

एक संत थे। उन्होंने एक चवन्नी भेजी, दूसरे संत के पास और यह कहा कि इस चवन्नी की कोई चीज लेकर तुम्हारी जमात में जितने आदमी हैं—सबको खाना खिला दीजिए। उन्होंने चवन्नी का घी मँगाया और उसमें से ही हींग और लौंग मँगायी और दाल में बघार लगा दिया। सभी खाने वालों ने खाया और सबने कहा—हमने खा लिया और फिर दूसरे संत की परीक्षा लेने के लिए उन्होंने एक पैसा भेजा और एक पैसा भेजकर कहा कि आप इससे सारे संसार भर को भोजन करा दीजिए। सारे संसार भर को ? थोड़े-से आदमियों को तो करा सकते हैं, पर एक पैसे में सारे संसारभर को भोजन कैसे कराया जाए ? उन्होंने कहा—कराया जा सकता है ? एक पैसे का घी और हवन-सामग्री उन्होंने उठाकर लिया। उस जमाने की बात कह रहा हूँ, जबकि एक पैसे की बहुत कीमत थी। तो, उसको लिया और यज्ञ कर दिया। हवन करने से सारे के सारे वायुमंडल में उसकी सुगंध फैल गयी और जिस किसी ने साँस ली, उन सबकी साँस में हवन की वह सूक्ष्म सामग्री गयी। उससे सारे संसार के मनुष्यों को ही नहीं—पशुओं को, पक्षियों को, प्राणियों को, सबको खाने को मिला। आहार मिला, वायु मिली। वायु जो मिली, उससे उनका परिपोषण हुआ। उनके शरीर के रोग-निवारण हुए। उससे एक पैसा कितना काम आया ? किसी को एक पैसा आप दान दे दें या खिला दें, तो उससे क्या हो सकता है ? लेकिन यज्ञ कर दें, तो यज्ञ हवा में शामिल होकर के इस तरीके से फैल जाता है जैसे पानी में तेल डाल दें आप, तो वह तमाम जगह फैल जाता है। इसी प्रकार से यज्ञ में जो चीज हवन की जाती हैं, उन सबका सारे वातावरण पर असर पड़ता है। सारे वायुमण्डल पर असर पड़ता है।

वायुमंडल का संशोधन करने के लिए, प्रकृति का संशोधन करने के लिए और सारे संसार में सुख-शांति लाने के लिए, कलह-क्लेशों को दूर करने के लिए यज्ञ सबसे बड़ी चीज है भारतीय धर्म में। इसके बारे में इतनी ज्यादा प्रशंसा की गयी है, इतना महत्त्व बताया गया है, इतने गुणगान किये गये हैं कि यज्ञ से बड़ा पुण्य और परोपकार कोई और नहीं हो सकता। आप लोग यज्ञ कर रहे हैं इससे वायुमंडल का संशोधन होने से बीमारियों को दूर होने से लेकर के लड़ाई-झगड़े, क्लेश, कुपात्र संतानें पैदा होने से लेकर के जो भी इस तरह की कठिनाइयाँ हैं, उनके समाधान होने में मदद मिलेगी। इसलिए यह करके जो आप बड़ा पुनीत कार्य कर रहे हैं, बड़ा पुण्य कार्य कर रहे हैं उसके लिए हम बधाई देते हैं।

इस समय इसकी क्या आवश्यकता पड़ गयी ? इस समय एक और नयी बात पैदा हो गयी। इस समय युद्ध के संकट और दूसरे संकट तो प्रत्यक्ष हैं ही जो दिखायी पड़ रहे हैं। आतंकवाद का भय भी आपको सब तरफ फैला दिखायी पड़ रहा है, सारे विश्व में दिखायी पड़ रहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है। हिन्दुस्तान में ही नहीं, पंजाब में ही नहीं सारे विश्व में ही यह वातावरण दूषित हो रहा है। इस दूषित वातावरण का संशोधन करने के लिए यज्ञ से बड़ी कोई और वस्तु नहीं है जिससे कि हम सूक्ष्म-जगत का परिष्कार कर सकें। इनकी वजह से ही यज्ञों को पुनरावृत्ति के रूप में करना पड़ा।

हमारे जीवन को पचहत्तर वर्ष हुए। ये पचहत्तर पन्ने की किताब है। इसमें सारे अध्यात्म के रहस्य हमने खोल-खोल कर रखे हैं। आपने कोई किताब न पढ़ी हो जीवन में, तो हमारा जीवन पढ़ लीजिए और हमारे जीवन से आप देख लीजिए, कि अध्यात्म सार्थक कैसे हो सकता है ? इसकी हीरक जयंती सब लोगों ने मिलकर मनायी है तो कोई नाराजगी नहीं हुई। प्रसन्नता ही हुई है। 'अखण्ड ज्योति' परिवार के चौबीस लाख के करीब आदमी हैं। पत्रिकाएँ भी बहुत निकलती हैं। इन सबकी इच्छा थी कि हीरक-जयंती मनायी जाए। हीरक जयंती में ही यह संकल्प किये गये थे कि एक-एक लाख के पाँच बड़े यज्ञ होंगे जो आपने पढ़े ही हैं। जो आप कार्यान्वित कर ही रहे हैं।

यहाँ का नालंदा विश्वविद्यालय सबसे ज्यादा सफल रहा है। इसमें एक हजार आदमी के करीब शिक्षण प्राप्त करने के लिए हमेशा आते रहते हैं प्रत्येक महीने। जब तक एक लाख आदमियों को शिक्षित न कर लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। पहला संकल्प था। इसके अलावा था एक लाख जन्मदिन मनायेंगे, एक लाख पेड़ लगायेंगे और बहुत-सी बातें थीं। वे हमारी हीरक-जयंती से सम्बन्धित हैं। उसकी पूर्णाहुति इसी यज्ञ के साथ हो रही है, जो आपके यहाँ होगा इस वर्ष। हमारे हीरक-जयंती की भी पूर्णाहुति है।

दूसरी बात 'अखण्ड-ज्योति' की यह स्वर्ण-जयंती है। 'अखण्ड-ज्योति' की वजह से हमने संगठन किया है। इतने विचार लोगों को दिये हैं। जो पत्रिकाएँ आजकल निकलती हैं उनमें दो लाख से ज्यादा 'अखण्ड-ज्योति' निकलती हैं। एक लाख से ज्यादा गुजराती की निकलती हैं। मराठी की पत्रिका निकलती हैं, उड़िया की निकलती हैं। हिन्दी का एक दूसरा पत्र निकलता है। सब मिलाकर छह-सात लाख पत्रिकाएँ निकलती हैं। इनके द्वारा हमारे विचारों ने दुनिया में एक बड़ा संगठन खड़ा कर दिया है। चौबीस लाख आदमियों का एक संगठन है। यह संगठन इसी वजह से बना है कि हमारे विचारों को 'अखण्ड-ज्योति' के द्वारा हमारी वाणी को लोगों ने सुना और हमारी लेखनी को चखा। लेखनी और वाणी दोनों का सम्मिश्रण है, यह अखण्ड-ज्योति। इसका पचासवाँ वर्ष शुरू होता है। उनचास वर्ष पूरे हो गये और अब इसी महीने से, इसी साल से पचासवाँ वर्ष प्रारम्भ हुआ है तो इसकी स्वर्ण-जयंती है। स्वर्ण-जयंती मनाने में यज्ञ और गायत्री ये ही दो तो हमारे माता-पिता रहे हैं। गायत्री का तो इसके साथ में जप होगा ही, आहुतियाँ तो दी ही जाएँगी, गायत्री-यज्ञ है ही। इससे हम अपने माता-पिता को, अखण्ड-ज्योति को भी पूर्णाहुति के रूप में याद करते हैं और अखण्ड ज्योति का स्वर्ण-जयंती वर्ष मनाते हैं।

इसके सिवाय, तीसरा हमने जो कार्य किया, वह तीन वर्ष का सूक्ष्मीकरण—अनुष्ठान किया था। तीन वर्ष पूरे होते हैं। अधिकांश समय हमें एकांत में रहना पड़ा, मौन में रहे और क्या-क्या किया ? उन सब बातों को बताने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए आपको जनवरी की 'अखण्ड-ज्योति' पढ़नी चाहिए। जनवरी की 'अखण्ड-ज्योति' को हम 'कुण्डली-जागरण' अंक अथवा 'सावित्री-साधना' अंक के नाम से छाप रहे हैं। इस सावित्री-साधना का क्या विज्ञान है ? किस तरीके से, संभव हुई ? ये हम 'अखण्ड-ज्योति' के जनवरी के अंक में बतायेंगे और इक्कीसवीं सदी कैसे आयेगी ? नया युग कैसे आयेगा ? नये युग में क्या-क्या बातें होंगी ? यह सब बातें फरवरी के अंक में होंगी। 'अखण्ड-ज्योति' का जो स्वर्ण-जयंती वर्ष है, यह भी बड़ा शानदार वर्ष है। क्योंकि बहुत कम पत्रिकाएँ ऐसी हैं, हिन्दुस्तान में जो पचास वर्ष से ज्यादा से चल रही हैं। इनकी संख्या अँगुलियों पर गिनने लायक हैं। कोई पत्रिका दो वर्ष निकलती है, कोई एक वर्ष निकलती है, तो कोई चार वर्ष निकलती है। प्रायः बंद हो जाती हैं। इतने लम्बे समय तक लगातार, जिसका कभी विराम न हुआ हो, जिसके कभी साप्ताहिक अंक न निकले हों, जिसकी कभी नागा न हुई हो, इस तरह की पत्रिका शायद ही कहीं कोई हो भारतवर्ष में। इसकी भी स्वर्णजयंती मनायी जा रही है।

आपका जो यज्ञ है, यह उस स्वर्ण-जयंती का भी यज्ञ है। हमारी ये तीन वर्ष की जो साधना हुई है, वह भी सारे विश्व-कल्याण के लिए हुई है। वातावरण संशोधन के लिये हुई है और जो संसार में पाप-अनाचार फैले हुए हैं, उसके साथ संघर्ष के लिए, उसके साथ में लोहा लेने की शक्ति पैदा करने के लिए हुई है। ये साधना बड़ी महत्त्वपूर्ण है। न केवल संसार के लिए है, बल्कि हमारा सारा कुटुम्ब जो है उसके लिए भी। अपने कुटुम्ब के लिए इतनी बड़ी सेवाएँ जो की हैं उसके लिए हमको अभी संतोष नहीं हो रहा है। अब ये हमारा मन है कि हमारे जो कुटुम्बी हैं, गायत्री परिवार के परिजन हैं इनकी कुछ और ज्यादा सेवा करें। ज्यादा सेवा करने के लिए पूँजी की आवश्यकता है। सम्पदा तो होनी ही चाहिए। हमारे पास कुछ साधन तो हों, जिससे हम सेवा करें। सेवा मुँहजबानी थोड़े ही हो जाती है। उसके लिए ये तीन वर्ष इसीलिए बीत गये हैं कि संसार का वातावरण संशोधित हो और अपने प्रज्ञा-परिवार के जितने भी व्यक्ति हैं, उनकी सेवा करने का, उनकी सहायता करने का, उनके दुःखों को दूर करने का, उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए जितनी सहायता हम कर सकते हैं, उसके लायक शक्ति एकत्रित करने के लिए, उपार्जित करने के लिए भी ये यज्ञ हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इन यज्ञों के साथ यह तीन बातें साथ में जुड़ी हुई हैं। वातावरण, वायुमण्डल और विकिरण सम्बन्धी समस्याएँ जो सारे संसार भर में फैली हुई हैं, उनके समाधान के लिए यह यज्ञ देखने में छोटा-सा मालूम पड़ेगा आपको। लेकिन सौ कुण्डीय यज्ञ भी कम है इस समस्या को देखते हुए। कितनी बड़ी समस्या है और उस समस्या से संघर्ष करने के लिए कितना बड़ा काम करना चाहिए ? वह बड़ा काम हम यों करने जा रहे हैं—सौ कुण्डीय के हिसाब से जो यज्ञ करने जा रहे हैं, वे एक लाख कुंड में समाप्त होंगे। एक लाख कुण्डों तक चलेंगे। सौ को सौ से गुणा कर दें तो दस हजार होते हैं और फिर उसको दस से गुणा कर दो तो एक लाख होते हैं तो जूनियर और सीनियर यज्ञों को मिलाकर के एक लाख यज्ञ करने का हमने संकल्प किया है। ये पूरा होकर रहेगा। हमारा कोई संकल्प अधूरा नहीं रहा। गायत्री शक्तिपीठें जब बनायी थीं तो चौबीस का संकल्प छपा था। आपने पहली पुस्तक हमारी देखी होगी। उसमें चौबीस स्थान भी दिये थे कि चौबीसों स्थानों में गायत्री शक्तिपीठें बनाकर के रहेंगे। बस, वह संकल्प प्रकाशित हुआ और उसके बाद में चौबीस सौ बनीं। यानी सौ गुनी ज्यादा हो गयीं। अभी हमारा एक लाख कुण्डों का संकल्प है। पहले ये सौ-सौ कुण्डीय-यज्ञों को करने का संकल्प हुआ। फिर अभी और बढ़ा है। एक लाख कुण्डों का तो बड़ी आसानी से पूरा हो जाएगा। इसमें किसी तरह की—न पैसे की दिक्कत पड़ेगी और न कोई और तरह की दिक्कत पड़ेगी।

केवल यज्ञ ही इसमें शामिल नहीं है। इसके साथ-साथ में राष्ट्रीय-एकता सम्मेलन भी जुड़े हुए हैं। आजकल छिन्न-भिन्न होता हुआ दिखायी पड़ता है—देश। भाषाओं के नाम पर, सम्प्रदाओं के नाम पर और जाति-बिरादरियों के नाम पर। हजारों चीजें ऐसी हैं जो हमारे बीच बिखराव पैदा करती हैं। इस बिखराव को एकता में बदलने के लिए, सबको एक सूत्र में बाँधने के लिए, सबको एक परिवार के रूप में गठित करने के लिए हमने ये राष्ट्रीय एकता सम्मेलन प्रत्येक यज्ञ के साथ जुड़े हुए रखे हैं। चाहे जूनियर यज्ञ हों, चाहे सीनियर यज्ञ हों। चाहे एक कुण्डीय यज्ञ हों, चाहे पाँच कुण्डीय यज्ञ हों। सबमें राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का नाम दिया जाएगा और उस विषय में व्याख्यान और प्रवचन और उपस्थित जनता को उनका मार्गदर्शन करने का भी क्रम रहेगा।

इस तरीके से इसमें दोहरा लाभ है। इन समस्त लाभों को देखते हुए जो खर्च इसमें आयेगा, वह तो नगण्य है। उसकी तो बहुत कम कीमत है। इसमें तो हमने और भी सब बातों की किफायत कर दी है। यज्ञ का सारे का सारा सामान यहीं से भेजा जा रहा है और वहाँ के लोगों को जहाँ ये आयोजन होंगे, वहाँ तो कम पैसे ही खर्च करने होंगे। इस तरीके से यह योजना क्रमबद्ध रूप से बनायी गयी है। इन सबसे सारे भारतवर्ष के कोने-कोने में यज्ञों की हवा बनाने का उद्देश्य है। इस हवा को बनाने में आप मदद दीजिए। इसमें आप सहयोग दीजिए। इसमें आप सम्मिलित होइये और यहाँ से हमारे प्रवचन सुनने के बाद में ये विचार लेकर के जाइये कि "हमको अपने गाँव में अपनी बस्ती में अपने इलाके में भी इन यज्ञों को करना है। छोटे यज्ञ भी होंगे आगे जाकर के। छोटे हों चाहे बड़े हों, पर कहीं न कहीं इन यज्ञों की हवा फिर सारे भारतवर्ष में पैदा करनी है हमको। तो उसमें आपके सहयोग की जरूरत है, सहायता की जरूरत है। अगर आप सहायता करेंगे, सहयोग करेंगे तो आप खाली हाथ नहीं रहेंगे। यज्ञ भगवान ने कहा है—हे यज्ञ करने वालो ! तुम चम्मच भरकर घी लाये—तुम मुट्ठी भरकर सामग्री लाये। हमने तुम्हारी मुट्ठियों को खाली हाथ नहीं रहने दिया है। तुम्हारी मुट्ठियों में हजार गुनी कीमती चीजें भर दी हैं।"

इस यज्ञ में शामिल होने वालों का जो समय लगेगा, श्रम लगेगा, पैसा लगेगा—हम आपको यकीन दिलाते हैं, कि उसका सौ गुना होकर के आप लोगों को घूम-फिरके मिलेगा। आप उससे ज्यादा लाभ उठायेंगे। शारीरिक लाभ भी उठायेंगे, मानसिक लाभ भी उठायेंगे। पारिवारिक लाभ उठायेंगे, आर्थिक लाभ उठायेंगे और आध्यात्मिक लाभ उठायेंगे। सब तरह के लाभ आपको इन यज्ञों से होंगे। ऐसा हम आपको यकीन दिलाते हैं। इन शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करते हैं।

ॐ शांति।

महायज्ञों का स्वरूप व उद्देश्य

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मनुष्य के सामने अनेक समस्याएँ हैं। आइए विचार-विनिमय करने के पश्चात् उनका समाधान करें। प्राचीनकाल से यही तरीका रहा है। तब सरकारें भी अपना काम करती थीं, पर समाज सरकारों पर आश्रित नहीं था। सरकार का अपना एक दायरा है छोटा-सा, कि चोर-उचक्कों को पकड़ना चाहिए। देश की सुरक्षा के लिए अगर खतरा पैदा हो तो सामना करना चाहिए और जो टैक्स वसूल होता है, उसे प्रजा की उन्नति में खर्च करना चाहिए। बस यही दायरा है सरकार का, इससे ज्यादा नहीं। मनुष्यों के विचारों पर, भावनाओं पर सरकार का कोई असर नहीं होता। पैसे का असर होता है, पैसा आपको देना पड़ेगा, लेकिन अगर यह कहा जाए कि आप ब्रह्मचर्य से रहिए, तो कहेंगे कि नहीं। आप हमें पकड़कर गिरफ्तार कर लीजिए, फेमिली प्लानिंग तो आप जबरदस्ती भी कर सकते हैं, पर ब्रह्मचर्य आपके कहने से नहीं हो सकता। आप कौन होते हैं कहने वाले ? विचारों के ऊपर, भावनाओं के ऊपर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं होता। तब इन पर किसका नियंत्रण होता है—समाज का नियंत्रण होता है, विचारशीलों का नियंत्रण होता है। विचार तैयार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करना, समाज की परम्पराओं को तैयार करना और उनको दिशा देना विचारशीलों का काम है।

हमारी समाज-व्यवस्था ऐसी है कि उसमें बार-बार विकृतियाँ खड़ी हो जाती हैं और बार-बार उनका समाधान ढूँढ़ने की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए बार-बार हम विचारशील लोगों को एकत्र होना पड़ता है। प्राचीनकाल में विचारशीलों के एकत्रित होने की पद्धति, विचार-विनिमय की पद्धति, समस्याओं के समाधान करने की पद्धति का नाम था—यज्ञ। दो तरह के यज्ञ होते थे। प्राचीनकाल के यज्ञों का जब हम इतिहास देखते हैं तो दो तरह के बड़े यज्ञों का वर्णन मिलता है। एक इतिहास मिलता है राजसूय यज्ञों का। राजसूय यज्ञ कैसे होते थे ? जैसा युधिष्ठिर ने किया था। अश्वमेध कैसे होते थे ? जैसा कि रामचंद्र जी के जमाने में हुआ था। अश्वमेध का घोड़ा छोड़ करके उन्होंने उसके द्वारा विचारशीलों को निमंत्रण भेजा था और यह कहा था कि आप लोग एक स्थान पर एकत्र हों—संघबद्ध हों। एक-दूसरे का कहना मानें, मिल-जुल कर चलें। राजसूय यज्ञ इसी प्रकार राजनीतिक दिग्विजय के लिए होते थे। इस तरह के बड़े-बड़े यज्ञ होते थे, जहाँ सब लोग जमा होते थे और राजनीतिक समस्याओं के ऊपर, सांस्कृतिक समस्याओं के ऊपर, आर्थिक समस्याओं के ऊपर, सुरक्षात्मक समस्याओं के ऊपर विचार-विनिमय होते थे और जो फैसले होते थे, वे सर्वमान्य होते थे। इनमें सामूहिक हवन भी होता था। तब प्रत्येक आदमी के दैनिक जीवन के क्रिया-कृत्य में भी हवन होता था, पर सामूहिक यज्ञों में ऐसा नहीं होता था कि १०-११ हजार आदमी आ गए और कहने लगे कि लाइए १०-११ हजार हवन-कुंड खोदिए। १० हजार चौके चलाइए। १० हजार चिमटे और तवे लाइए। जब एक स्थल पर खाना पक सकता है, मिल-जुलकर सामूहिक दावत खाई जा सकती है तो एक ही स्थल पर हवन क्यों नहीं हो सकता ? सामूहिक हवन कैसे हो सकता है ? ऐसे ही जैसे हम आप एक सौ कुंडीय यज्ञों के बड़े आयोजनों में करते हैं। लोग पारी-पारी से आते-जाते हैं। उनसे यही कहा जाता है कि अपनी पारी से आते जाइए, परिक्रमा एक साथ लगाते जाइए और जयकारा एक साथ बोलते जाइए, सामूहिकता का मजा भी आएगा और सुविधा-व्यवस्था भी रहेगी। राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ सामूहिक होते थे, जिनमें हवन मुख्य होता है।

उस जमाने में हवन किए बिना कोई रोटी भी नहीं खाता था। अग्निहोत्र हमारा स्वाभाविक दैनिक कृत्य है। जिस प्रकार स्नान, भजन, भोजन दैनिक कृत्य हैं, उसी प्रकार गायत्री उपासना और यज्ञ हमारा आध्यात्मिक नित्य कर्म है और होना ही चाहिए। बड़े यज्ञ कभी-कभी होते थे। उनमें बड़ी समस्याओं का समाधान करने के लिए, राजनीतिक समस्याओं का समाधान करने के लिए बड़ी जनगोष्ठियाँ होती थीं। इसमें राजनीतिज्ञ, समाजविज्ञानी तथा समाज पर अधिकार-प्रभाव रखने वाले श्रेष्ठजन जमा होते थे और सामाजिक समस्याओं, आर्थिक समस्याओं एवं अन्यान्य समस्याओं का मिल-जुलकर समाधान खोजते थे। इसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता था, वरन् उसे कहा जाता था कि आपको ऐसा मानना चाहिए और कानून बनाना चाहिए। इसीलिए प्राचीनकाल में राजनीतिक क्षेत्र के लोग राष्ट्रीय समागम के नाम पर जगह-जगह जमा होते थे और स्थानीय समस्याओं तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान किए जाते थे। बीच-बीच में कभी-कभी राजनीतिक असेंबलियों की, धार्मिक असेंबलियों की अलग-अलग मीटिंग होती थीं। इसका एक और पक्ष था जिसका नाम था—वाजपेय यज्ञ। वाजपेय यज्ञों में मोक्ष की भावनात्मक और चिंतन-परक, नैतिक, आध्यात्मिक जो भी समस्याएँ होती थीं, उनका समाधान करने के लिए वे लोग एकत्र होते थे, जिन्हें हम धार्मिक कह सकते हैं। उनके भी आयोजन होते थे। उन आयोजनों का ही नाम था वाजपेय यज्ञ।

प्राचीनकाल के इतिहास में इन दो प्रकार के विशिष्ट यज्ञों की परंपरा दिखाई पड़ती है—वाजपेय यज्ञ और राजसूय यज्ञ की परम्परा। वाजपेय यज्ञों का अपने आप में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, क्योंकि मनुष्य को वास्तव में सामाजिक समस्याएँ मालूम पड़ती ही नहीं हैं। कारण हर समस्या आदमी की मानसिक और भावनात्मक समस्या है। मानसिक और भावनात्मक क्षेत्र में विकृतियाँ आ जाने की वजह से सामाजिक क्षेत्र में, राजनीतिक क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में, पारिवारिक क्षेत्र में, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विकृतियाँ पैदा होती हैं। इसकी जड़ें मनुष्य के भीतर होती हैं। इसलिए वे व्यक्ति जो आदमी के चिंतन से सम्बद्ध होते थे, आध्यात्मिक समस्याओं से सम्बद्ध होते थे, एक स्थान पर जमा होते थे और विचार-विनिमय करने के लिए जमा होते थे। उसका ही नाम था—वाजपेय यज्ञ। वाजपेय यज्ञों की असेंबलियाँ स्थायी होती थीं। कुंभ के मेले भी उसी में शुमार थे। कुंभ के मेले में धार्मिक लोग आते थे। वे एक स्थान पर बैठने न पाएँ, परिभ्रमण करते रहें, उसके लिए नियम और मर्यादाएँ निर्धारित थीं। असेंबलियाँ कुंभ मेलों के नाम पर घूमती-फिरती रहती थीं। ढाई-तीन वर्ष बाद नासिक जाइए, उज्जैन जाइए, हरिद्वार जाइए, इलाहाबाद जाइए। यह हिन्दुस्तान का मुख्य भाग है—हिंदी भाषी प्रांत। इसमें विचारशील लोग इसी तरह से घूमते रहते थे। यह क्या थे ? वाजपेय यज्ञ थे। इसमें विचारशील लोग एकत्रित होते थे। इनमें हवन भी होते थे, सत्संग-कथाएँ भी होती थीं, पर मुख्यतः इनमें विचार-विनिमय होता था—सामाजिक समस्याओं के ऊपर।

आप लोग जो इस महापुरश्चरण में, वाजपेय यज्ञ में सम्मिलित हुए हैं, उसके सामाजिक रूप को मैं बताना चाहता हूँ। आध्यात्मिक स्वरूप की ओर मैं कल इशारा कर चुका हूँ। अब मैं इस ओर इशारा करने वाला हूँ कि आज के समय की कितनी ज्यादा समस्याएँ हैं। आर्थिक समस्या, दहेज की समस्या, शराब-खोरी की, नशेबाजी की समस्या, चोरी और अपराधों की समस्या, भाषायी समस्या, अन्यान्य समस्याएँ, वैयक्तिक और सामाजिक समस्याएँ जैसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कितनी ही समस्याएँ आज देश के सामने हैं। उनकी जड़ एक ही है—मनुष्य के अंतरंग की गंदगी। नाली में जब कीचड़ सड़नी शुरू होती है तो चहुँओर गंदगी फैल जाती है। यही स्थिति आज मानवी मस्तिष्क में छाई हुई विकृतियों की है। हमारी बात, हमारे समाधान प्रज्ञा की निशानियाँ हैं, जो समय से पहले की चीज मालूम पड़ती हैं, पर हैं वस्तुतः अपने समय की। युगऋषि हमेशा अवतरित होते रहे हैं और सामयिक समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करते रहे हैं। प्राचीनकाल के समाधान आज की स्थिति में लागू नहीं हो सकते। आज की परिस्थिति में काम के नहीं हो सकते। हर समय की, हर युग की परिस्थितियों के अनुरूप कानून तो बनाए नहीं जा सकते। लेकिन इतना अवश्य है कि आप सारी स्मृतियाँ, सारे धर्मग्रंथ ढूँढ़ डालिए, उनमें न दहेज के खिलाफ लिखा गया और न समर्थन में लिखा गया। इस सन्दर्भ में कोई श्लोक नहीं मिलेगा। कारण प्राचीनकाल में जब दहेज-प्रथा थी ही नहीं तो उसका विरोध और खंडन कैसे होता ? इसलिए उनमें लिखा ही नहीं। यह तो आज की आधुनिक काल की समस्याएँ हैं जिनका समाधान करने के लिए हम कहते रहते हैं।

वाजपेय यज्ञ की, प्राचीन महापुरश्चरणों की प्रक्रिया के सामाजिक पहलू को अभी मैं आपको बता रहा था। अब मैं उसके नैतिक पहलू को बताता हूँ। नैतिक पहलू वह है, जिसमें आदमी के भीतर ईमानदारी रहनी चाहिए। क्योंकि जिस हवा में हम साँस लेते हैं, वह सामूहिक संपदा है। इसमें हम श्वास लेते हैं और नौ सुराखों में से गंदगी बाहर फेंकते हैं, जो सामूहिक सम्पदा को गंदा करती है। इसलिए सामूहिक सम्पदा को जो हमने खराब क्रिया है, उसे हमें ही सही करना होगा। यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, कर्तव्य है कि जिस सामूहिक वायुमंडल को हमने गंदा किया है, उस वातावरण का संशोधन करने के लिए, परिष्कार करने के लिए हम आगे आएँ। यह सामाजिक न्याय है, मर्यादा है कि जो हमने समाज से लिया है, उसे वापस दें। इस वृत्ति का विकास करने के लिए हमको यज्ञीय परम्पराओं पर विचार करना चाहिए। यज्ञ परम्परा को यदि हम जिंदा करना चाहते हैं तो उसके लिए प्रशिक्षण होना भी जरूरी है। एक प्रशिक्षण हम यह देना चाहते हैं कि हर आदमी को रोटी खाते समय यह विचार करना चाहिए कि हमने कमाया जरूर है, पर इसमें हक दूसरों का भी है, अकेले का ही नहीं है। आपने कमाया है, पर आप खा नहीं सकते। साढ़े छह सौ रुपये आपको मिलते हैं, बेशक, पर आप उसे खाइए मत, क्योंकि इसमें दूसरे लोगों का भी हिस्सा है। कौन-कौन का हिस्सा है ? आपके हिसाब से आपकी बीबी का हिस्सा है, आपके बच्चों का हिस्सा है, आपकी माँ का हिस्सा है, भाई का हिस्सा है, बहिन का हिस्सा है, सारे कुटुम्ब के लोगों का हिस्सा है। आप बाँटकर खाइए। नहीं साहब ! हम तो अपने हाथ से कमाते हैं और खा सकते हैं। आप खा तो सकते हैं, पर यह अनैतिक है, इम्मोरल है। इसलिए हमें बाँटकर खाना चाहिए। आम लोगों का यही ख्याल है कि जब हमने कमाया है तो हमें ही खाना चाहिए और अधिक से अधिक अपने कुटुम्बियों को खिलाना चाहिए।

अब हमको क्या करना चाहिए ? बेटे, हम इनसान हैं और इनसानी विचारधारा को कायम रखने के लिए हर आदमी को यह बताना चाहिए कि आपके भोजन में कई हिस्सेदार हैं, हकदार हैं। उन हकदारों में आपका बच्चा भी शामिल है और पड़ोसी भी, आगंतुक भी। आपने बच्चे को भूखा रखा है और वह दुबला हो गया है तो यह गुनाह है। आप बच्चे को दूध नहीं देंगे तो उसमें इतनी ताकत कहाँ से आएगी कि वह आपकी जेब में से पैसे छीन सके। इस तरीके से आदमी के ऊपर अनेक जिम्मेदारियाँ हैं—नैतिक जिम्मेदारियाँ हैं, सामाजिक जिम्मेदारियाँ हैं।

मित्रो ! अभी मैं यह कह रहा था कि आप हर आदमी को यह समझाना कि अपने में इनसानियत पैदा कीजिए। आप हवन करते हैं ठीक है, पर पहले समस्याओं का समाधान कीजिए। अभी पंडित लोग हवन करते और कराते हैं इसलिए कि मालदार हो जाएँ। बत्ती जलाते हैं, हवन करते हैं, पूजा-उपासना करते हैं, केवल देवी-देवताओं को बरगलाने के लिए। बरगलाना हम इसलिए कहते हैं क्योंकि देवी-देवताओं को अपनी ओर आकर्षित करने का सीधा तरीका है आपकी भलमनसाहत और आपकी ईमानदारी। यह वह मैग्नेट है जिसके आकर्षण की वजह से देवता खिंचते हुए चले आते हैं। यही सही तरीका है, यही प्रोसीजर है और वास्तविकता है। यह एक सच्चाई है कि आप इतने सच्चे, ईमानदार और सही आदमी हों कि देवी-देवता आपसे मुहब्बत करते हों और आपकी सहायता करते हुए आपके ऊपर फूल बरसाते हुए चले आते हों। यही 'प्रोसीजर' सही है और वह 'प्रोसीजर' जो आप इस्तेमाल करते हैं, गलत है। बरगलाना-बहकाने को कहते हैं। बरगलाना भी ऐसा कि जो कोई गलत काम करने के लिए तैयार न होता हो तो उसे इस तरीके से पट्टी पढ़ावें कि वह रजामंद हो जाए। जीभ की नोंक से लपालपी करने और पूजा-पत्री के छोटे-मोटे टंट-घंट करने के बाद में देवी-देवताओं को जो आप बरगलाते हैं, वह बंद कीजिए। देवताओं के साथ मखौलबाजी करना शोभा नहीं देता। देवताओं की आदत के बारे में मैं जानता हूँ। वे जलती हुई आग और बिजली के तरीके से हैं। यदि उनके साथ मखौलबाजी शुरू की तो वे ऐसा चाँटा मारेंगे कि किस्मत ही बदल जाएगी।

बेटे ! हम हवन कराते हैं, पर देवताओं को बरगलाने के लिए नहीं कराते। हमारा मकसद है कि इनसान के भीतर का जो देवता सो गया है, रूठ गया है, मूर्च्छित पड़ा हुआ है, उसको हम जगा दें। इसके लिए हम अगले दिनों एक आंदोलन शुरू करना चाहते हैं—बलिवैश्व यज्ञ का। हमने बहुत दिनों पहले बताया था कि आप लोग गायत्री मंत्र की एक माला या तीन माला रोज किया कीजिए, गायत्री चालीसा का पाठ किया कीजिए, मंत्रलेखन किया कीजिए। अब वही प्रक्रिया हम जन-जन से कराना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाहते हैं कि हर आदमी को बलिवैश्व करना ही चाहिए। इसे नित्यकर्म में सम्मिलित करना ही चाहिए। लोगों को नित्यकर्म का पता ही नहीं। ये यह भी नहीं जानते कि 'संध्या' किसे कहते हैं। हर मुसलमान जानता है कि नमाज किसे कहते हैं, पर आपको संध्या का अर्थ ही नहीं मालूम कि यह कैसे और किस टाइम की जाती है। महादेव बाबा पर पानी चढ़ा आते हैं और यह पता नहीं कि संध्या क्या है ? इसलिए बलिवैश्व न मालूम हो तो कोई अचंभे की बात नहीं। गायत्री माता के तरीके से यज्ञ पिता भी हमारे पूजा करने के लायक हैं। उसका प्रतीक बलिवैश्व है। हर दिन भोजन करने से पहले उनको पाँच ग्रास-अपने चौके में जो बना है, उसमें से निकालकर उसमें हवन करना पड़ता है। इससे क्या फायदा होता है ? इससे यह फायदा होता है कि यह बात हमारे ध्यान में आती है कि रोटी खाने से पहले देवता का हक है। देवता भी आपके हिस्सेदार हैं। देना, देकर खाना देवत्व की निशानी है। इस यज्ञीय परम्परा का विस्तार होना ही चाहिए।

यज्ञीय परम्परा का विस्तार आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। सामाजिक परिस्थितियों को भी ठीक करना चाहिए, लेकिन वातावरण का संशोधन और भी अधिक आवश्यक है। वातावरण की ओर लोगों का ध्यान नहीं गया है। यह भी अपने आप में एक कीमती चीज है। यज्ञ का शारीरिक सेहत, मानसिक सेहत और आत्मिक सेहत पर प्रभावकारी असर तो होता ही है, वातावरण का संशोधन भी होता है। हमने ब्रह्मवर्चस शोध-संस्थान की आधारशिला इसी 'परपज' के लिए रखी है। इसमें रिसर्च के लिए हमको बड़े-बड़े साधन और बड़ी-बड़ी वस्तुओं की जरूरत पड़ेगी। एक से एक बड़ी कीमती चीजों का हमने इंतजाम किया है। आदमी के दिमाग को परखने वाली, दिमाग का पता लगाने वाली मशीनें, दिमाग की क्या परिस्थिति है, दिमाग की हलचलों का फोटो लेने वाली मशीनें जैसे—ई. ई. जी. मशीन, हार्ट की एक-एक हरकत को जानने वाली मशीनें, हवा का प्रेशर परखने वाली मशीनें, पेड़-पौधों पर पड़ने वाले असर को मापने वाली मशीनें, वायरस और बैक्टीरिया के प्रभावों को जानने वाली मशीनें, जो कितनी महँगी हैं, ब्रह्मवर्चस में लगाई गई हैं। तो आप कैसे करेंगे ? बेटे, हम कर लेंगे, हमारे गुरु का प्लान है, तू तो केवल सुन भर ले। आज की सामयिक समस्याओं में, व्यक्ति के नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक जीवन में घुसी हुई विकृतियों का निवारण मुख्य है। ऐसे-ऐसे असंख्य कारण हैं, जिसकी वजह से हमने यज्ञों का आयोजन किया है और महाकाल की इच्छानुसार इसका विस्तार भी हो रहा है। आप देखते नहीं किस तेजी के साथ इसका विस्तार बढ़ता हुआ चला जा रहा है ? पहले हमारे २५ कुंडीय २५ यज्ञ थे, पर अब यह मालूम पड़ता है कि इसके लिए प्रत्येक प्रांत कुश्ती लड़ रहा है कि यह यज्ञ तो हमको मिलना ही चाहिए। गुजरात के लोग कहते हैं कि हम आपके बड़े बेटे हैं, यह यज्ञ आप हमको दीजिए। इसी तरह अन्यान्य प्रांतों के लोग भी अपने-अपने यहाँ यज्ञ कराने के लिए संकल्पित दिखाई देते हैं।

मित्रो ! यह विशिष्ट समय है। इसमें ऊँचे कर्म और ऊँचे विचार—इन दोनों को मिलाकर के लोगों को नए ढाँचे में ढाला जाएगा और समाज को नए ढाँचे में ढाला जाएगा। यह सतयुग की वापसी का समय और संभावनाएँ हैं। ऐसे विशिष्ट समय में जबकि हमारे सामने कई तरह के प्रश्न उपस्थित हो रहे हैं, तब हमने इस समय महापुरश्चरण को प्रारम्भ किया है। आप में से प्रत्येक आदमी को महापुरश्चरण में भाग लेना चाहिए और उसके उत्तरदायित्व को निभाना चाहिए। यह आपका इम्तहान है, परख है आपकी। भगवान कई बार आदमी की परख करते हैं, परखते रहते हैं और देखते हैं कि आप में शौर्य, साहस, भक्ति और आत्मज्ञान का कुछ माद्दा है या नहीं ? आप किस तरह के आदमी हैं ?

गुरुजी ! आपके यज्ञ पूरे हो जाएँगे ? हाँ बेटे, यज्ञ पूरे हो जाएँगे। कैसे पूरे होंगे ? देख, मथुरा में हमने एक हजार कुंड का यज्ञ किया था और उसमें चार लाख आदमी आए थे और पाँच दिन ठहरे थे। पाँच दिन में ४० लाख आदमियों को भोजन कराया, ५० लाख रुपए खर्च हुए थे—४० लाख भोजन में और १० लाख अन्यान्य व्यवस्थाओं में। कहाँ से आता था ? बस यही नहीं बता सकता आपको कि कहाँ से आया था, लेकिन हम आपको यह बताते हैं कि यह जो आयोजन है, यह जो इतनी बड़ी व्यवस्था है—यह प्रज्ञावतार की व्यवस्था है और यह फैलती हुई चली जाएगी। आप लोग भाग्यवान हैं कि जिन लोगों ने आगे आ करके यह संकल्प अपने जिम्मे लिए हैं। जिन्होंने अपने जिम्मे लिए हैं, वे क्या पूरे हो जाएँगे ? हाँ पूरे हो जाएँगे। यदि आपका शौर्य, साहस और पराक्रम घटिया दर्जे का होगा, तभी यज्ञ असफल होगा और आपकी योग्यता की घोषणा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। तब आपको अयोग्य ठहराना पड़ेगा। यज्ञ तो हमारे पूरे हो जाएँगे, कोई भी चिंता मत करना, लेकिन आपको यहाँ से जाना है तो अपने पुरुषार्थ और पराक्रम की तैयारियाँ करके जाना चाहिए। यह काम बड़ा है और श्रेय भी आपको खूब मिलेगा। आप समय पर जाग गए, यह बहुत अच्छी बात है। समय पर न जागते तो काम तो हो जाता, पर आपको जो श्रेय मिल रहा था, वह नहीं मिल सकता था। स्वतंत्रता आंदोलन में जिनको तीन-तीन महीने की सजा हो गई, उनको अब ३०० रुपए पेंशन मिलती है और वे स्वतंत्रता सेनानी का ताम्रपत्र लिए फिरते हैं। यह वक्त भी ऐसा है कि अगर आप नहीं चूकते हैं तो अच्छा है। अगर आप इस समय को पहचान लें, समय की प्रधानता को देख लें, भगवान की इच्छा और भगवान की महानता को समझ लें तो ज्यादा अच्छा है। फिर आपका भी नंबर उसी तरीके से आ जाता है जैसे कि हम बार-बार गिलहरी को और जटायु गिद्ध को याद करते रहते हैं। गिद्ध और गिलहरी ने समय को पहचान लिया था। उन्होंने अपनी जुर्रत दिखाई, हिम्मत दिखाई कि किस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय पर क्या करना चाहिए ? उनमें हिम्मत थी, हौसला था, भावना थी और वे अजर-अमर हो गए। गिलहरी वाला वक्त, गिद्ध वाला वक्त, जेल जाने वाला वक्त फिर से आ गया है। आज आप चाहें तो प्रज्ञावतार का हाथ बँटा सकते हैं। आप चाहें तो युग-परिवर्तन की बेला में आगे वाली पंक्ति में, चलने वाली सेना में अपना नाम लिखा सकते हैं।

तो क्या यह यज्ञ आगे फैलेगा ? हाँ यह यज्ञ आगे बहुत फैलेगा और गायत्री माता सुनिश्चित रूप से विश्वव्यापी बनेंगी, आप देख लेना। हम तो रहेंगे नहीं और आप भी शायद न रहें, पर आपकी औलाद जरूर रहेगी। आप देखना सारे विश्व का जो यह नवीनीकरण हो रहा है उस नवीनीकरण में गायत्री की फिलॉसफी और यज्ञ की कार्य-पद्धति की मुख्य भूमिका रहेगी। आदमी का व्यवहार कैसा होगा—यह प्रेरणा हमको यज्ञ से मिलेगी और मनुष्य का चिन्तन कैसा होगा, व्यक्ति का, समाज का, राष्ट्र का और विश्व का चिंतन कैसा होगा ? यह सारी की सारी प्रेरणाएँ गायत्री के उस बीज-मंत्र से मिलेंगी जो चिरपुरातन और चिरनवीन है। चिर-पुरातन और चिर-नवीन का ऐसा संयोग कदाचित ही कहीं मिलेगा। नवीनतम युग और प्राचीनतम संस्कृति—दोनों का समन्वय करने के लिए हम बहुत महत्त्वपूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। आप उसमें सम्मिलित हो रहे हैं, यह अधिक खुशी की बात है।

अब क्या करना चाहिए ? अब आप एक काम करना कि पहले वाले यज्ञों और इन यज्ञों में क्या मौलिक फर्क है, यह समझकर जाना। इसी के लिए आपको यहाँ बुलाया है। पहले वाले यज्ञों में पैसा प्रमुख था। पैसा हमको दे दीजिए और जो भी आप कहेंगे हम लाकर के आपको दे देंगे। आप चाहें १०० कुंडीय यज्ञ करा लें, चाहे हजार कुंडीय—सब व्यवस्था घर बैठे हो जाएगी। लेकिन इन यज्ञों में पैसा नहीं जनशक्ति मुख्य है। जनशक्ति का वह अंश जो धर्म-श्रद्धा से जुड़ा हुआ है। उसका संग्रह करना बहुत बड़ा काम है। इसके लिए हम यहाँ से कलावा बाँधकर आपको भेज देंगे और आप अपने घर जाकर हमारी 'टीम' के साथ काम करना। हमें कमेटी नहीं, टीम चाहिए। खिलाड़ियों की एक टीम होती है, जो जीने-मरने और हँसने-खेलने में एक साथ रहती है। दस आदमियों की एक टीम हम यहाँ से भेज देंगे, आप उसके साथ काम करना। आपका काम सफल हो जाएगा। सफल न होगा तो हम सफल कर देंगे। सफलता-असफलता की आप चिंता मत करना। आपको जो हमने काम सौंपे हैं उसे एकनिष्ठ हो करके, एकभाव से तत्पर हो करके करें। इसमें परीक्षा आपकी सफलता की नहीं वरन् इस बात की है कि आपने कितनी मेहनत की, भाग-दौड़ करने में कितना समय लगाया ? अगर आप यह काम कर सकेंगे, जो अत्यधिक महत्त्वपूर्ण आयोजन, जिसको हम 'वाजपेय यज्ञ' कहते हैं, नवयुग के आगमन की पुनीत बेला का शुभ आयोजन कहते हैं, प्रभातकालीन नवयुग आने की आरती कहते हैं, धर्मानुष्ठान कहते हैं, आप धन्य हो जाएँगे। यह इतना महत्त्वपूर्ण कार्य है जो देखने-सुनने में छोटा मालूम पड़ता है। गाँधी जी के नमक सत्याग्रह का लोग मखौल उड़ाते थे कि नमक बना करके स्वराज्य ले लेंगे। नमक से स्वराज्य आता है कहीं ? आज हम देखते हैं कि नमक सत्याग्रह कैसे सफल हुआ ?

२५ कुंडीय यज्ञों का आयोजन भी गायत्री महापुरश्चरण की शृंखला मिला करके मालूम पड़ता है कि यह कोई साधारण कृत्य है, धर्मानुष्ठान है, पूजा-पाठ है। देखने में इसका रूप जो भी हो, इसकी संभावना बहुत बड़ी है। इसके आधार पर मनुष्य के तीनों शरीरों के स्वास्थ्य-संवर्द्धन का, मनुष्य-समाज को नए ढंग से शिक्षित करने का, शालीन बनाने का, विश्वव्यापी आंदोलन का यह हमारा शुभारंभ है। आप यह मानकर चलना कि विश्व का नया निर्माण करने के लिए हमारा यह अनुष्ठान उसी तरह का आयोजन है, जिसमें कि मनुष्य के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए जो दैवी-शक्तियाँ काम कर रही हैं, जिसके शुभारंभ और श्रीगणेश के दिन यह हमारा गायत्री महापुरश्चरण सम्पन्न होता है। इसमें सहयोग देने के लिए, इस अवसर का लाभ उठाने के लिए आप लोग हमारे साथ आइए। गोवर्धन उठाया जा रहा है आप उसमें हिस्सा बँटाने के लिए अपनी लाठी लेकर खड़े हो जाइए। हमें प्रसन्नता है कि आप जरूर लाठी लेकर खड़े होंगे और गोवर्धन उठाने में सहायता करेंगे। सेतु बाँधा जा रहा है, हमें खुशी है कि आप लोग भी अपने पत्थर और लकड़ी लेकर के उसमें सहयोग देने के लिए आ गए। आपका यह सहयोग जितना सराहनीय है, उतना ही मानव जाति के नए निर्माण में सहायक सिद्ध होगा। यह आपका सौभाग्य है जो आप लोगों को यहाँ खींच करके ले आया। यह सौभाग्य आप लोगों को बहुत कुछ प्रदान करे, ऐसी परब्रह्म परमात्मा से प्रार्थना है।

ॐ शांति।

भारतीय संस्कृति के प्रतीक—शिखा और सूत्र

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !

ईश-पूजन की आवश्यकता के बारे में मैं आपको हमेशा से कहता और बताता चला आ रहा हूँ। पूजा की आवश्यकता हमेशा पड़ेगी और पग-पग पर पड़ती रहेगी। पूजा के खिलाफ मुसलमान सबसे ज्यादा हैं। मुसलमान सर्वप्रथम जब हिन्दुस्तान में आये और हिन्दुस्तान में आकर उन्होंने मंदिरों को तहस-नहस कर डाला। सोमनाथ के मंदिर को तोड़-फोड़ कर उन्होंने फेंक दिया। यहाँ श्री रामचन्द्रजी का मंदिर अयोध्या में बना हुआ था उसे भी उन्होंने तोड़-फोड़कर फेंक दिया। यहाँ कृष्ण भगवान का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मंदिर मथुरा में बना हुआ था, उसे तोड़-फोड़ कर फेंक दिया। उनका ख्याल था कि व्यक्ति की मूर्ति पूजा नहीं करनी चाहिए। उनका ये ख्याल था कि पृथ्वी को हम मंदिरविहीन कर देंगे। अंत तक मूर्ति पूजा न करने की बात पर वे कायम रहे। मक्का शरीफ में आप जाइए वहाँ एक संगेअवसद नाम का पत्थर रखा हुआ है। वह काले रंग का है। जो कोई भी मुसलमान काबा में जाता है, मक्का-मदीना में जाता है, हज करने के लिए, तो उसको पत्थर के सामने इजरा करना होता है और बोसा लेना पड़ता है, चुम्बन लेना पड़ता है। अगर चुम्बन नहीं लिया, बोसा नहीं लिया उस काले रंग के पत्थर का तो, उनकी हज यात्रा निरर्थक हो जाएगी। वह जो उनकी इबादत है और हज है, वह खत्म हो जाएगी। यह क्या बात हो गयी ? हमने भी अपना गोल-मटोल शंकरजी बनाये थे और शालिगराम जी बनाये थे, उन्होंने इसे चौड़ा वाला पत्थर बना दिया। मूर्तिपूजा से पिण्ड कहाँ छूटा ? किसी का भी नहीं छूट सकता। मूर्तिपूजा की खिलाफत आर्य समाज वाले भी करते हैं। आर्य समाज वाले मूर्ति पूजा को नहीं मानते, लेकिन उनके यहाँ भी स्वामी दयानंद की मूर्ति लगी हुई है। स्वामी दयानंद की मूर्ति को उतारकर हम यदि उसका अपमान करने लगें तो क्या कोई आर्य समाजी को यह अच्छा लगेगा ? जबान से भले ही न कहे, लेकिन बाद में बहुत गालियाँ देगा और लड़ने आयेगा और कहेगा कि आपने हमारे स्वामीजी का क्यों अपमान किया ? उनकी फोटोग्राफ या तस्वीर अगर हम ले आएँ और उनका अपमान करने लगें तो क्या कोई आर्य समाजी बर्दाश्त करेगा ? नहीं करेगा, उसको बहुत बुरा लगेगा। उसके चेहरे से आप देख सकते हैं।

यह क्या हो गया ? यह प्रतीक-पूजा हो गयी—कम्युनिस्ट पार्टी वाले इस बात को नहीं मानते कि कोई भगवान है और कोई पूजा है और कोई मंदिर होना चाहिए। वे भगवान की बात पर यकीन नहीं करते और मूर्ति-पूजा को नहीं मानते, लेकिन उनका लाल झण्डा क्या है ? लाल झण्डे को अगर हम फाड़कर फेंक दें और लाल झण्डे को हम उनके सामने जलाएँ तो वह कम्युनिस्ट हमसे लड़ने आयेगा और यह कहेगा कि आपने हमारा लाल झण्डा क्यों जला दिया ? भाई, वह तुम्हारा कौन था ? वह तो हमारा था, हमने उसे अपने पैसे देकर खरीदा था। हमने इसे वहाँ लगाया था। हमने दियासलाई लगा दी। हमने इसका अपमान कर दिया। तुम्हें इससे क्या शिकायत ? तुम्हें इससे क्या लेना-देना ? वाह ! लेना-देना क्यों नहीं ? यह अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट पार्टी का झण्डा है, आपने इसे जला दिया और खाक कर दिया। कम्युनिस्ट हमसे लड़े बिना नहीं रहेगा और राष्ट्रीय विचारधारा के लोग-काँग्रेस के लोग जिन्होंने झण्डे के लिए कितनी ज्यादा कुर्बानियाँ दीं, बलिदान दिया। उन दिनों पटना के हाईकोर्ट के ऊपर विद्यार्थी झण्डा लगाने के लिए जा रहे थे और गवर्नमेण्ट ने मना किया और कर्फ्यू लगाया और कहा आपको नहीं जाना चाहिए। विद्यार्थी नहीं माने। उन्होंने कहा—हमारे देश का झण्डा हाईकोर्ट पर अवश्य फहराया जाएगा। विद्यार्थी चले जा रहे थे। सिपाहियों ने कहा—अच्छा आप आगे जाएँगे तो हम गोलियों से भून देंगे। उन्होंने कहा—आप गोलियों से भून दीजिये। वे सात विद्यार्थी थे पटना में मारे गये और जिनका अभी भी स्मारक बना हुआ है झण्डे के लिए। झण्डे से क्या फायदा ? झण्डा तो एक रुपये का था बारह आने का था और जान कितनी कीमती थी ? झण्डे के लिए उसे क्यों खर्च कर डाला ? झण्डे के लिए क्यों आपने नुकसान उठाया, कष्ट उठाया ? झण्डे की बात नहीं है। उसके पीछे जो भावनाएँ जुड़ी हुई हैं, जो हमारे प्रतीक जुड़े हुए हैं वे बड़े कीमती हैं।

हमारी मूर्तियाँ जो हमारे मंदिरों में स्थापित हैं, गीता की पुस्तक और भागवत् की पुस्तक जिनको हम सिर पर रखकर जुलूस निकालते हैं, और गुरु ग्रन्थ साहब जिसके सामने हम मत्था टेकते हैं, वेद की पुस्तक जिनका हम जुलूस निकालते हैं—ये सब हमारे प्रतीक-पूजन हैं और प्रतीक-पूजन बड़ा आवश्यक है। मैं तो प्रतीक-पूजन की हिमायत करता रहा हूँ। प्रतीकों की स्थापना मैंने जिन्दगी भर की है। गायत्री तपोभूमि पर भी की। गायत्री माता वहाँ विद्यमान हैं और यहाँ पर गायत्री प्रतीक स्थापित हैं। अखण्ड-ज्योति कार्यालय में जहाँ हम रहते थे वहाँ भी दीपक के रूप में गायत्री माता के फोटोग्राफ और तस्वीर के रूप में हमारा प्रतीक स्थापित है, पर मैं कई बार इन चीजों के बारे में आपको बुरी-भली कहता हूँ। यह क्यों कहता हूँ ? प्रतीकों का कई बार मजाक उड़ाता हूँ क्यों ? प्रतीकों का मजाक मैं इसलिए उड़ाता हूँ कि प्रतीकों के बारे में मैं बार-बार गरम बात इसलिए कहने लगता हूँ कि आपने प्रतीक को सब कुछ मान लिया है। प्रतीक ही सब कुछ नहीं है। वे रेलवे लाइन पर खड़े हुए सिंगनल की तरीके से हैं जो हमको यह बताते हैं कि हमको कहाँ चलना चाहिए और कहाँ जाना चाहिए ? मूर्ति को आप मानकर चलेंगे कि ये सब सामर्थ्यवान हैं और ये सर्व-समर्थ हैं तो हम नाराज होंगे आपसे और जब आपसे कहेंगे कि यह गीता की पुस्तक के तरीके से हैं। श्री कृष्ण भगवान का ज्ञान जो उन्होंने अर्जुन को दिया था, उस सारे के सारे ज्ञान को हमने कैद कर रखा है—पकड़ करके रखा है, ढाई आने वाली किताब में जिसे गीता की किताब कहते हैं। गीता की पुस्तक में तो ज्ञान भरा हुआ है, परन्तु अगर आप ये कहेंगे कि नहीं साहब, हमको ज्ञान से क्या लेना-देना है। हम तो इसी पुस्तक की आरती उतारेंगे, इसी की हम जय बोलेंगे, इसी की हम कल्पना करेंगे, इसी को हम दीपक दिखायेंगे। वह जो श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को ज्ञान बताया था, उससे हम कोई ताल्लुक नहीं रखेंगे तो मैं आपसे नाराज होऊँगा और यह कहूँगा कि आपने गीता का मूल्य नहीं समझा—महत्त्व नहीं समझा। आप तो खिलौने के पत्थर और न जाने किन-किन बातों को लेने लगे। मैं हमेशा यह चाहता रहा हूँ कि मेरे समझाने का मतलब आपकी समझ में आना चाहिए। जब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आप यह कहेंगे कि हम इसको सब कुछ मानते हैं कि बद्रीनारायण वाले श्रीकृष्ण भगवान बड़े जबरदस्त हैं। उन्हीं को लेकर हम बैकुण्ठ को चले जाएँगे और वहाँ जो वृन्दावन में रहते हैं, वह निकम्मे हैं, बेकार हैं, उनमें कोई ताकत नहीं है। बद्रीनारायण वाले भगवान में बड़ी ताकत है तो मैं नाराज होऊँगा और मैं कहूँगा आप मूर्ति-पूजा का महत्त्व नहीं जानते—रहस्य नहीं जानते। जहाँ कहीं भी बद्रीनारायण, जहाँ कहीं भी श्रीकृष्ण भगवान हैं, चाहे वह आपके मकान पर रखे हुए हों, चाहे बद्रीनाथ, चाहे वृन्दावन में रखे हुए हों, कहीं भी रखे हुए हों, आप ये मत कहिये कि वृन्दावन वाला जबरदस्त है श्रीकृष्ण भगवान और मथुरा वाला कमजोर है। ये बात आप कहेंगे तो मैं नाराज होऊँगा। मूर्तियाँ सारी की सारी जहाँ कहीं भी रखी हैं वे भगवान के रूप की—श्रीकृष्ण की याद दिलाती है, बस काम खत्म हो जाता है।

मूर्तियों में आप ताकत बताने लगेंगे तो क्या हो जाएगा ? तब ये बुत-परस्ती हो जाएगी। मोहम्मद साहब ने बुत-परस्ती के खिलाफ आंदोलन शुरू किया था। पूजा को तो कोई भी मना नहीं कर सकता। मोहम्मद साहब तो क्या कोई भी मना नहीं कर सकता। लेकिन बुतपरस्ती को सभी मना करते हैं। बुत-परस्ती क्या थी ? पहले—एक गाँव का एक बुत होता था और बद्दू लोग, डाकू लोग जहाँ कहीं भी चले जाते थे और छापा मारते थे पुराने जमाने में। सोना-चाँदी तो था नहीं, नोट थे नहीं। अनाज था, जानवर थे, भेड़-बकरियाँ थीं और मोटे, हट्टे-कट्टे जवान आदमी थे और स्त्रियाँ थीं। इन्हीं को ये लोग लेकर भाग जाते थे। उस जमाने में यही दौलत थी। किसी की जवान छोकरी देखी, किसी की जवान लड़की देखी, औरत देखी बस उसको लेकर डाकू चल दिए। जो कोई मोटा आदमी देखा, मजबूत आदमी देखा उसको लेकर चल दिए और बोले—हमारा यह काम करो, वह काम करो। गुलाम बना लेते थे उन लोगों को। पुराने जमाने का रिवाज यही था। पुराने जमाने के बद्दू लोग जहाँ पर मोहम्मद साहब पैदा हुए थे, बहुत-सी औरतों को ले आते थे। किसी के पास सौ औरतें थीं, किसी के पास २५० औरतें थीं, किसी के पास ५० औरतें थीं। उनके बच्चे पैदा होते थे। बच्चों का क्या होगा ? औरतों का तो यह भी है कि कुछ खेती-बाड़ी में काम आ सकती हैं, कुछ मेहनत-मशक्कत कर सकती हैं। बच्चे तो खामख्वाह तंग करेंगे। उनका क्या होगा ? बच्चों के लिए मकान कहाँ से आयेगा ? बच्चों के लिए दूध कहाँ से आएगा ? तब ऐसा हुआ करता था कि साल भर में एक दिन ऐसा आता था कि जिसके पास जितने बच्चे होते, जरूरी वाले दो-चार बच्चे रख लिए जाते थे और बाकी बच्चे मूर्ति के सामने उसे समर्पित कर दिए जाते थे। जितने ज्यादा बच्चे दिए जाएँगे उतना ज्यादा बुत प्रसन्न रहेगा और आशीर्वाद देगा और सब काम कर देगा। जितने कम बच्चे बुत को दिये जाएँगे उतना ही उस गाँव का बुत नाखुश हो जाएगा, उतनी ही बीमारी फैला देगा और नुकसान कर देगा। इसलिए गाँव में एक काम्पटीशन होता था और हर उस गाँव का अलग। हर गाँव का अलग 'बुत' होता था। उन बुतों में लड़ाई होती थी। एक गाँव वाले अपने बुत से कहते थे कि तू उस गाँव वालों से लड़ाई लड़ तो दूसरे गाँव वाले इसी तरह अपने बुत से कहते थे। इस तरह गाँव-गाँव में बुत भरे हुए थे।

मोहम्मद साहब जब पैदा हुए तब उन्होंने कहा कि यह बड़ी वाहियात बात है। तुम लोग अलग-अलग बुत मानते हो, पर खुदा तो एक है। इतने सारे खुदा कैसे हो सकते हैं ? गाँव-गाँव का खुदा भी कहीं हो सकता है। यह आपने क्या बहम पाल रखा है। बच्चों को 'जिबह' (वध करना) नहीं करना चाहिए। वाह ! बच्चों को जिबह नहीं करेंगे तो हमारा बुत खायेगा क्या ? अच्छा तो एक काम करो—बकरी को मार डालो। ऊँट को 'जिबह' कर लो। गाय को 'जिबह' कर लो। कई बच्चों को मारो मत। ठीक बात है। मोहम्मद साहब ने अपने ढंग से स्वयं काम कर दिया था उस जमाने में। मोहम्मद साहब बुत-परस्ती के खिलाफ थे। वह और किसी तरह की बुत-परस्ती थी, हमारे आपके जैसी नहीं। वह मूर्ति-पूजा की कैसे खिलाफत कर सकते थे ? मूर्ति-पूजा का कोई खण्डन नहीं कर सकता। मूर्ति-पूजा दुनिया में रही है और रहेगी। लेकिन मूर्ति-पूजा के हम खिलाफ होंगे, मूर्ति-पूजा का कोई खण्डन नहीं कर सकता। मूर्ति-पूजा दुनिया में रही है और रहेगी। लेकिन मूर्ति पूजा के हम खिलाफ होंगे, मूर्ति-पूजा से हम इनकार करेंगे और मूर्ति-पूजा के लिए आपके बहम को हटायेंगे, दुनिया से बहम को हटायेंगे और आपकी श्रद्धा को हिलायेंगे। कब ? जब आप यह ख्याल करने लगेंगे कि जो पत्थर अमुक जगह पर रखा हुआ है वह बड़ा ताकतवर है। उसके ऊपर आप कपड़ा पहना देंगे और उस पर छत्र चढ़ा देंगे तो वह आपका अमुक काम बना देगा, तमुक काम बना देगा। ये वाहियात बातें आप करेंगे तो मैं नाखुश होऊँगा। यह कहिए कि ये बातें आपके समझ में नहीं आतीं। इसके पीछे जो किस्सा है, वजह है, वह यह है कि ये सारी की सारी चीजें यह याद दिलाने के लिए हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर सबके भीतर समाया हुआ है। श्रीकृष्ण भगवान के मंदिर में जरूर जाएँगे और वहाँ सिर झुकाएँगे और सिजदा करेंगे, प्रणाम करेंगे। लेकिन वह हमारा प्रणाम उस पत्थर के लिए नहीं है। हमारा वह प्रणाम उनके लिए है जो आज से ५००० वर्ष पूर्व भगवान जी आए थे जिन्होंने दुनिया में नई धारा और नया विचार मनुष्य को देकर चले गए थे। हम उस मूर्ति का ध्यान करते है सिजदा करते हैं। हमारा ईमान और हमारी निष्ठा वहाँ रहती है, उन्हीं कृष्ण के ऊपर जो सारे विश्व में समाए हैं और सब जगह समाए हुए हैं। मूर्ति-पूजा के बारे में, प्रतीक-पूजा के बारे में बार-बार आपके मन को कच्चा कर देता हूँ। बार-बार आपकी निष्ठा को डिगा देता हूँ। मेरी बात को समझिए, मेरी बात को समझने की कोशिश कीजिए कि क्या कहता हूँ ? मैं यह कहता रहूँगा कि प्रतिमा को आप पूरा मान देंगे तो बात बनेगी नहीं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राष्ट्रीय झण्डा हमारे घर में लगा हुआ है—तिरंगा झण्डा हमारे घर में लगा हुआ है, जो इस बात का द्योतक है कि हम सबसे बड़े देशभक्त हैं। आप देशभक्त हैं—तो हिन्दुस्तान में छायी मुसीबतों और असुविधाओं से आपको पीड़ा होती है क्या ? नहीं, साहब हमको क्या पीड़ा होगी। आप अपने घर में अपनी खुशहाली में हिस्सा बँटाते हैं ? नहीं, साहब हम क्यों खुशहाली में हिस्सा बँटायेंगे। हम तो देशभक्त हैं। देशभक्त क्यों हैं ? देखिए हमारे घर में तिरंगा झण्डा लगा हुआ है। तिरंगा झण्डा इस बात का प्रतीक था कि हमारे मन में देशभक्ति का जागरण होना चाहिए।

मित्रो ! मूर्तियाँ इस बात की प्रतीक हैं कि हम उन भावनाओं को जिनको हम बार-बार भूल जाते हैं और जो बातें हमारे दिमाग में से निकल जाती हैं, हमारे ख्यालों में से निकल जाती हैं ? उन्हें हम अपने ख्यालों में जगाएँ। जो बातें श्री कृष्ण भगवान जी के साथ जुड़ी हुई हैं, जो बातें भगवान शंकरजी के साथ जुड़ी हुई हैं, जो बातें भगवान श्री रामचन्द्रजी के साथ में जुड़ी हुई हैं, जो बातें गणेश जी के साथ में जुड़ी हुई हैं। जो देवी के साथ में जुड़ी हुई हैं, वह ख्यालात, वह विचारधारा, वह प्रेरणा और वह प्रकाश, वह सारी की सारी चीजें इन मूर्तियों को देखकर हमारे मन में उठेंगी। अगर वह मूर्तियाँ और वह प्रतीक हमारे मन में भावना को उठायेंगे तो हम उनका स्वागत करेंगे। उनके आगे प्रणाम करेंगे। उनकी उपयोगिता को स्वीकार करेंगे और गाँव-गाँव उनके मंदिर बनायेंगे। उनकी जय बोलेंगे। लेकिन अगर लोग इस बहम में घुसते चले आयेंगे कि जो कुछ भी है ये मूर्ति का पत्थर का टुकड़ा ही सब कुछ है। लेकिन इस श्रम से जब आपको कुछ भी नहीं मिलेगा तो आप ये कहने लगेंगे कि ये सब बेकार हैं। तब हम आपको अज्ञानी बताएँगे और फिर हम आपसे नाराज होंगे और आपके अज्ञान को उखाड़ने की कोशिश करेंगे और आपसे कहेंगे कि आप ये क्या करते हैं गड़बड़। जो चीज जिस काम के लिए बनाई गयी है उस उद्देश्य पर आप ध्यान दीजिए, उस काम की महत्ता को समझिए।

मित्रो ! प्रतीक हमारे माध्यम हैं और माध्यम केवल इसलिए हैं कि उनके साथ में जो मूल प्रेरणा और मूल प्रकृति जुड़ी हुई है, उसके सम्बन्ध में हम जानकार रहें और उसको अपने हृदय में स्थान देने की कोशिश करें। न केवल हृदय में स्थान देने की कोशिश करें, बल्कि अपने जीवन का एक हिस्सा बना लें। ये है प्रतीक-पूजा का आदर्श और प्रतीक-पूजा का उद्देश्य। हमने आपसे यही कहा था। अब हम गायत्री माँ का प्रतीक घर-घर में स्थापित करना चाहते हैं और हर आदमी के दिमाग में इस बात की प्रेरणा स्थापित करना चाहते हैं कि हमको मनुष्यता का अनुयायी होना चाहिए और हमको नारी जाति के प्रति निष्ठावान और श्रद्धावान होना चाहिए। मानवता के प्रति निष्ठावान और श्रद्धावान होना चाहिए। ये सारे के सारे 'सिम्बोल' हमारे इस गायत्री माता के साथ जुड़े हुए हैं। हमको विवेकशील होना चाहिए और विवेकशीलता की इज्जत करनी चाहिए। ये सारे के सारे सिद्धान्त गायत्री माता के साथ जुड़े हुए हैं। इन सारे सिद्धान्तों को लेकर के जो गायत्री माता का पूजन करेंगे तो उनका प्रतीक-पूजन सही होगा, सार्थक होगा और उससे दुनिया का फायदा होगा। मनुष्य जाति का उद्धार हो जाएगा। यही प्रतीक-पूजन का उद्देश्य है।

प्रतीकों के सम्बन्ध में विडम्बना की शुरुआत वहाँ से आरम्भ होती है, जहाँ हमने यह मानना शुरू कर दिया कि ये मूर्ति जो बैठी हुई है, बड़ी ताकतवर है। उसको हम मिठाई खिला देंगे, उसकी हम आरती उतारेंगे तो वह हमारा उद्धार कर देगी और हमें मालामाल कर देगी। ये ख्यालात आप करने लगेंगे तो हम नाराज होंगे। वास्तविकता को आप समझते क्यों नहीं। वास्तविकता को आप समझिए। वास्तविकता को समझने की कोशिश कीजिए कि मूर्ति-पूजा क्यों बनाई गई थी और किसके लिए बनाई गई थी ? एक दिन हमने आपसे एक बात कही थी कि गायत्री माँ, जो हमारी भारतीय संस्कृति की जीवात्मा है, जो हमारा प्राण है, जो चारों वेदों की जननी है। उसको एक 'सिम्बोल' को लेकर के हम सारे हिन्दू समाज को एक स्थान पर इकट्ठा कर सकते हैं। जो हमारे अनेक देवताओं के माध्यम से, सम्प्रदायों के माध्यम से, मंत्रों के माध्यम से, पैगम्बरों के माध्यम से हजारों और लाखों टुकड़ों में हिन्दू धर्म फैल गया और बिखर गया है, अब हम इसको फिर से इकट्ठा करना चाहते हैं। हम उसका बिखराव बर्दाश्त नहीं करेंगे। अब हम यह करेंगे कि हिन्दू समाज का कोई न कोई तो प्रतीक होना चाहिए। कोई न कोई तो एक 'सिम्बोल' होना चाहिए। कहीं तो एक जगह इकट्ठे होना चाहिए। राष्ट्रीय झण्डे के प्रति हम सारे हिन्दुस्तानी नतमस्तक होते हैं। इसमें हिन्दू भी शामिल हैं, मुसलमान भी शामिल हैं, ईसाई भी शामिल हैं। इस माध्यम से जब सारे के सारे लोग इकट्ठे किए जा सकते हैं तो क्या हम हिन्दू संस्कृति को इकट्ठा करने के लिए माध्यम तलाश नहीं कर सकते। हाँ, माध्यम हमारा था और वही रहना चाहिए और वही रहेगा। कौन है वह माध्यम ? वह है गायत्री मंत्र। गायत्री मंत्र हमारा माध्यम है और वही रह सकता है, दूसरा कोई बन ही नहीं सकता। हमारे पुराण, हमारे कुरान वे हैं, जिसको हम वेद कहते हैं। वेद कैसे हैं ? और वेदों का मूल हमारा कलमा, हिन्दू का कलमा क्या है ? हिन्दू का कलमा एक है और वह है गायत्री मंत्र। हम दूसरों को भी इज्जत देते हैं। आप किस देवता की पूजा करते हैं आपको मुबारक, हमें क्या झगड़ना आपसे। आप श्रीकृष्ण भगवान की पूजा करते हैं तो खुशी-खुशी करें और आप **"श्री कृष्णाय नमो नमः"** का जप करें हमें कोई एतराज नहीं आपसे। लेकिन जब आप यह कहेंगे कि हिन्दू धर्म का मूल है—**"श्री कृष्णाय नमो नमः"** तो हम यह पूछेंगे कि जब ५००० वर्ष पहले भगवान श्रीकृष्ण का जन्म नहीं हुआ था, तब आप किसकी पूजा करते थे ? श्रीकृष्ण भगवान किसकी पूजा करते थे ? श्री कृष्ण भगवान क्या यह जाप करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थे **"श्री कृष्णाय नमो नमः"**। नहीं, ये जप नहीं करते थे। ५००० वर्ष पूर्व क्या उपासना थी ? बताइए न आप।

मित्रो ! तब एक ही उपासना रही है हमारी। ब्रह्माजी को आकाशवाणी के रूप में वह मिली थी। वह था 'गायत्री मंत्र' और जिसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश ही नहीं राम और कृष्ण जो हमारे हिन्दू धर्म के सूर्य और चन्द्रमा माने जाते हैं उन्होंने भी इस उपासना को अपनाया था। आप भागवत् में पढ़ लीजिए, आप बाल्मीकि रामायण में पढ़ लीजिए। दोनों को जो दीक्षाएँ दी गई थीं, वह गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी और जब तक दोनों जिन्दा रहे तब तक वे गायत्री मंत्र की उपासना करते रहे। शिव की उपासना का मंत्र यही है। सूर्यवंशी राजा और चन्द्रवंशी राजा जितने भी हुए सबकी उपासना का मंत्र यही एक है और हमारी नमाज वही एक है। हमारी संध्या गायत्री के बिना संभव नहीं है। हम गायत्री के बिना संध्या कैसे कर सकते हैं ? ये हमारा प्रतीक है और हम इस प्रतीक को सिम्बोल को हर जगह जमायेंगे और इसलिए जमायेंगे कि सारे हिन्दू समाज को यह मालूम हो जाए कि हमारी मूल जड़ कहाँ है और उद्गम कहाँ है ? ताकि हम सारे समाज को एक सूत्र में पिरो सकें और सारे समाज को हम विवेकशीलता का अनुयायी बना सकें। हम विवेकशील लोग हैं। हम विचारशील लोग हैं। हम अंध-परम्पराओं के अनुयायी नहीं हैं। हम हर चीज को विवेक की कसौटी पर कसते हैं, क्योंकि हमारा मंत्र—हमारी उपासना गायत्री मंत्र है—**"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।"** हम बुद्धि के उपासक हैं, हम विवेक के उपासक हैं, हम विचारों के उपासक हैं, हम तर्क के उपासक हैं। हम दलील के उपासक हैं, हम सच्चाई के उपासक हैं। हम किसी के 'फालोवर' नहीं हैं—हम केवल सच्चाई के फालोवर हैं। ये सारी के सारी प्रेरणा कहाँ से मिल सकती है ? ये सारी प्रेरणाएँ गायत्री मंत्र से मिल सकती हैं। इसलिए हम कमर कसकर खड़े हो गए हैं कि गायत्री मंत्र की पूजा करने के लिए हम हर आदमी को मजबूर करेंगे और गायत्री मंत्र की महत्ता को अंगीकार करने और हृदयंगम करने की सलाह देंगे और परामर्श देंगे।

एक दिन हमने आपको ये भी कहा था कि उपासना को सस्ती बनायेंगे और हर बच्चे-बच्चे को उपासना करने के लिए कहेंगे हम यह कहेंगे कि गायत्री माता का एक फोटो अपने घर में पूजास्थली पर रखिये। यदि आप निराकार को मानने वाले हैं तो गायत्री मंत्र टाँग लीजिए। हमें कोई एतराज नहीं है। साकार उपासना को मानने वाले हैं तो आप गायत्री माता की तस्वीर रख लीजिए और सुबह-शाम संध्यावंदन का क्रम आरम्भ कीजिये। कोई भी व्यक्ति या स्कूल जाने वाला बच्चा सबसे पहले अपने चप्पल उतार दे, अपनी टोपी उतार दे और अपने सिर को नीचा झुकाए। हाथ जोड़ करके प्रणाम करे, भारतीय परम्पराओं की अनुभूति करे और पाँच बार गायत्री मंत्र मन ही मन बोल ले और नमस्कार करके स्कूल चला जाए पढ़ने के लिए। स्त्रियाँ खाना पकाने से पहले स्नान कर लिया है तो ठीक, नहीं भी कर लिया है तो भी ठीक, वे सिर को उघाड़ करके और पैरों से चप्पल उतार करके खड़ी हो जाएँ और पाँच बार मन ही मन गायत्री मंत्र का जप करें और उसके बाद में खाना पकाने के लिए चली जाएँ। दुकानदार अपनी दुकान को चला जाए। गायत्री माता का चित्र दुकान में लगा हुआ है, उसके आगे मस्तक झुकाएँ, सिर झुकाएँ और पाँच बार मन ही मन गायत्री मंत्र जप लें। खड़े हो करके यह उपासना कर लें और अपनी दुकानदारी को चलाएँ। अध्यापक या बच्चे स्कूल को चले जाएँ। इससे सस्ती उपासना तो और कोई नहीं हो सकती। मित्रो ! इसमें तो शिकायत की बात भी नहीं है कि हमको समय नहीं मिलता और देखिए स्नान नहीं हुआ और ये नहीं हुआ और जनेऊ तो था नहीं। फिर कैसे करेंगे गायत्री जप। जनेऊ पहनना हो तो जरूर पहनना, हमें कोई शिकायत नहीं है और आपको स्नान करना हो तो जरूर करना। हम किससे मना करते हैं ? लेकिन यदि आप बीमार हो गए हैं और आप नहीं नहा सकते हैं, तो आपको ये कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि चूँकि हम नहाए नहीं थे, इसलिए हम गायत्री मंत्र की उपासना नहीं कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में भी आपको जरूर करनी चाहिए उपासना।

गायत्री मंत्र के बारे में हर हिन्दू से कहेंगे, हर घर में जाएँगे, हर आदमी को समझाएँगे और ये कहेंगे कि आपने अपने संस्कृति के माता और पिता को भुला दिया था अब अपने माता-पिता के नाम याद रखिए। आपकी माता का नाम क्या है और पिता का नाम क्या है ? हमको नहीं मालूम साहब। आपका पिता कौन है ? हमको नहीं मालूम। अरे भाई ये क्या वाहियात बात बकते हो। आपकी माँ कौन थी, हमें नहीं मालूम कि हमारी माँ कौन थी ? ये कोई जवाब है। जब कोई ये कहेगा कि हमको हमारी माँ का नाम नहीं मालूम है तो हम उसको वर्णशंकर कहेंगे। तुमको अपनी माँ का नाम नहीं मालूम है। आपके पिता कौन हैं बताइए, कोई नहीं—हमको नहीं मालूम है कौन है हमारा पिता ? फिर हम आपको क्या कहेंगे फिर हम आपको वर्णशंकर कहेंगे। आपको अपने पिता का और माता का नाम मालूम होना चाहिए और हर घर में उनकी स्थापना होनी चाहिए। भारतीय धर्म के माता-पिता कौन है ? आपको उनका नाम मालूम होना चाहिए और आपको उनकी इज्जत करनी चाहिए जैसे कि ऋषियों ने, देवताओं ने और हमारे मुनियों और पैगम्बरों ने अनादिकाल से की और होती रहेगी। हमारे माता-पिता बदले नहीं जा सकते। आपको बुत-परस्त वालों ने, मजहब वालों ने बहका दिया है। इससे हमारी वैदिक संस्कृति को झुठलाया नहीं जा सकता। उनकी बात का उत्तर नहीं दिया जा सकता। हरेक चालाक बाबाजी ने अपने-अपने नाम का मजहब खड़ा कर दिया है और अपने-अपने पैगम्बर बनकर बैठे हैं और अपना-अपना मंत्र बना दिया है और अपनी-अपनी पुराण बना दी है। हम ये नहीं चलने देंगे। हम ये कहेंगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि हिन्दू धर्म एक ही था और एक ही रहेगा। ठीक है मजहबपरस्तों को अपने चेलों और चेलियों की हजामत बनाने के लिए तरह-तरह के सम्प्रदाय बनाने पड़े, पर इसकी क्या कीमत हो सकती है और इसकी क्या वकत हो सकती है, इसे हर विवेकशील को जानना और समझना चाहिए। जब सूरज निकलना शुरू होगा तो ये चमगादड़ और ये उल्लू अपनी जगह से भाग खड़े होंगे और इनकी कलई खुल जाएगी। इन्होंने ही हिन्दू धर्म के टुकड़े काट-काट कर के फेंक दिए और अपने-अपने नाम के मजहब खड़े कर दिए। अब वे अपने-अपने नाम के मजहब नहीं चला सकेंगे। मजहब हमारा एक था और एक ही रहेगा और हमारे माता-पिता एक ही थे और एक ही रहेंगे। बदले नहीं जा सकते। हमारी माँ गायत्री माँ है और हमारे पिता यज्ञ भगवान हैं। इन दोनों को हम जिन्दा रखेंगे और इन्हीं की पूजा करेंगे। हर एक आदमी जो इनको भूल गया है और अपनी वास्तविकता को भी, हम अब ये सिखाने की कोशिश करेंगे कि हमारी माँ कौन थी और हमारे पिता कौन थे ? माँ और बाप की इज्जत करनी चाहिए—**"मातृ देवो भव, पितृ देवो भव"** माता-पिता हमारे देव हैं, हमें इनकी पूजा करनी चाहिए।

मित्रो ! अब हमको घरों में गायत्री माँ की स्थापना करनी चाहिए। गायत्री माता के 'सिम्बोल' प्रतीक और उनकी चौकियाँ अपने घरों में स्थापित करनी चाहिए। जहाँ पर थोड़ी देर बैठ करके घण्टे-आधा घण्टे बैठकर के भजन कर लिया करें और गायत्री मंत्र का अनुष्ठान कर लिया करें। हमको जहाँ कहीं भी मौका मिले, उस तरह की स्थापना करनी चाहिए, जिस तरह हम यहाँ गायत्री माता की स्थापना कर रहे हैं और हमने गायत्री तपोभूमि में स्थापना की है। इस बात की जरूरत समझी जाए और जहाँ भी मौका मिले, जहाँ आवश्यकता हो वहाँ गायत्री माँ की स्थापना करनी चाहिए। हमने लोगों से यह भी कहा है कि आप चाहें तो मूर्तियाँ स्थापित करने की अपेक्षा एक चित्र स्थापित कर लें। इसमें एक फायदा आपको यह हो जाएगा कि आपके ऊपर वे जिम्मेदारियाँ नहीं आयेंगी जो हमारे ऊपर जिम्मेदारियाँ आती हैं। मूर्ति स्थापित करने से हमको भोग लगाना पड़ेगा, प्रसाद बाँटना पड़ेगा, सबेरे उनकी पूजा करनी पड़ेगी। हमें आरती करनी पड़ेगी। हमें ये करना पड़ेगा वो करना पड़ेगा। अतः जहाँ जैसी जिम्मेदारियाँ उठाना सम्भव हो सके वहाँ वैसी ही उठाई जाएँ। जहाँ पर सम्भव नहीं, वहाँ पर तस्वीर स्थापित कर ली जाए और वहाँ पर सब के सब लोग इकट्ठे हों, गायत्री परिवार वाले इकट्ठे हों, गाँव वाले इकट्ठे हों, महिलाएँ इकट्ठी हों, बच्चे इकट्ठे हों और सब इकट्ठे होकर सायंकाल को केवल आरती उतार लिया करें। आरती के समय शंख बजा दिया जाए, घड़ियाल बजा दिया जाए। अगर आपके पास प्रसाद बाँटने के लिए न हो, शक्कर न हो तो पंचामृत वाला प्रसाद प्रस्तुत कर सकते हैं। पानी में थोड़ी-सी शक्कर, थोड़ा-सा गंगाजल, तुलसी के पत्ते। बस उसी का हम पंचामृत बनाएँगे और उसी को सबको देंगे। अगर प्रसाद हमारे पास नहीं है, पैसे हमारे पास नहीं हैं तो हमारी पंचामृत वाली जो पद्धति है जिसमें चंदन घुला रहता है, उसका ही हम प्रसाद बाँट सकते हैं। उसमें कोई हर्ज की बात नहीं है।

गाँव-गाँव में, घर-घर में मोहल्ले-मोहल्ले में इस तरह के मंदिर स्थापित करने पड़ेंगे, ताकि वहाँ पर स्त्रियाँ, बच्चे, बुजुर्ग और बूढ़े और बालक सब इकट्ठे हो सकें और प्रार्थना में शामिल हो सकें। आप लोग आरती कीजिए और लोगों को अपने माता-पिता की अर्थात् गायत्री और यज्ञ की जानकारी कराइये। हम प्रतीकों को जिन्दा रखेंगे। हम प्रतीकों को नष्ट करने वाले नहीं हैं। हम प्रतीकों का मजाक उड़ाने वाले नहीं हैं। प्रतीकों के प्रति हम अनास्था उत्पन्न करने वाले नहीं हैं। हम तो अनास्था वहाँ उत्पन्न करते हैं और बार-बार आपसे झगड़ने के लिए इसलिए खड़े हो जाते हैं कि आप प्रतीक को ही सब कुछ मान बैठते हैं और प्रतीक जिस काम के लिए बनाया गया था उस पर आप ध्यान देना नहीं चाहते। जब आप कलम या पेन जेब में लगाते हैं तब हमें क्या एतराज हो सकता है। लेकिन जब आप यह कहते हैं कि हम फाउण्टेन पेन लगा करके एम. ए. हो गए हैं, तब हम आपसे लड़ाई करते हैं और कहते हैं फाउण्टेन पेन रखिए, लेकिन पढ़ना भी सीखिए, लिखना सीखिए, गणित सीखिए, ज्योमिट्री सीखिए, किताब पढ़ना सीखिए और फाउण्टेन पेन का इस्तेमाल कीजिए। अगर आप यह कहें कि नहीं साहब, फाउण्टेन पेन का क्या इस्तेमाल करना, हमारा पेन तो परब्रह्म परमात्मा है। हमारी जेब में वह लगा हुआ है अतः हम तो एम. ए. हैं, देखिए हम पेन खरीदकर लाए हैं तो हम आपसे लड़ाई करेंगे और कहेंगे कि आप पेन को क्यों एम. ए. बताते हैं। पेन के सहारे तो एम. ए. पास किया जाता है, बस इससे आगे बढ़िए मत।

मूर्तियों के माध्यम से, प्रतीकों के माध्यम से, तस्वीरों के माध्यम से हमको अपने हृदय के कपाट खोलने पड़ते हैं और अपने मस्तिष्क का परिष्कार करना पड़ता है। हमको अपने जीवन का उद्धार करना पड़ता है। साथ ही हमको यह बात मालूम करनी पड़ती है कि हमको जाना कहाँ है ? चलना कहाँ है ? यदि आपकी मंशा में यही उद्देश्य निहित है तो हम आपकी पूजा की बराबर प्रशंसा करेंगे और बराबर सराहना करेंगे। हमको लड़ना तब पड़ता है, हमको गुस्सा तब आता है और हम आपको झकझोरते तब हैं, जब आप मूर्ति को ही सब कुछ मान बैठते हैं और कहते हैं कि यही हमारी मनोकामना पूर्ण करेगी। यही हमको बेटा देगी। यह मूर्ति हमारा ये करेगी, हमारा वह करेगी। जब आप ऐसा कहना शुरू कर देते हैं तब हम आपसे नाराज होते हैं और यह कहते हैं कि असलियत को क्यों नहीं समझते ? असलियत को समझिए। असलियत को जब आप समझेंगे नहीं तो आप मूर्ति-पूजक नहीं रहेंगे फिर आप बुत-परस्त हो जाएँगे। मूर्ति-पूजन और बुत परस्त में जमीन-आसमान का फर्क है। मूर्ति-पूजक वो है जो मूर्ति का इस्तेमाल गीता की पुस्तक के तरीके से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया करते हैं और ज्ञान को जहाँ से वह ज्ञान आता है, भगवान् जहाँ रहते हैं, वहाँ तक अपने मन को भगाकर ले जाते हैं और ज्ञान को पकड़कर लाते हैं। वे आदमी मूर्ति-पूजक हैं बुतपरस्त नहीं। बुत-परस्त कौन थे ? वो लोग थे बुतपरस्त जिन्हें बद्दू कहा जाता था। आप लोग बद्दू लोगों की नकल करना शुरू कर देंगे तो फिर हम आप पर झल्लायेंगे और कहेंगे कि आप तो बुत परस्त बद्दू हो जाते हैं। बद्दू आप होइये मत और किसी भी मूर्ति को ये मानकर जाइए मत कि वह सामर्थ्यवान है। उसमें चमत्कार है और वह देवी तो ऐसा कर देती है, वैसा कर देती है। वह चमत्कारी देवी है। वो चमत्कारी देवी नहीं है। चमत्कारी केवल एक भगवान है जो सारे विश्व में समाया हुआ है। उसी की शक्ति हमारे विचारों से सम्बन्ध रखती है, हमारे आचरण से सम्बन्ध रखती है। आचरण और विचारों से सम्बन्ध रखने वाली देवी को अगर आप उस मूर्ति के माध्यम से पकड़ते हैं तो हम आपको ठीक कहेंगे और हम आपको मुबारकवाद देंगे और कहेंगे आप ठीक जानकार लोगों में से हैं, आप सही आदमी हैं।

मित्रो ! क्या हम प्रतीकों की उपेक्षा कर सकते हैं ? नहीं, हम प्रतीकों की उपेक्षा नहीं कर सकते। प्रतीकों के माध्यम से हम उस ज्ञान को जो हमारी भारतीय संस्कृति का मूल है, हर आदमी के गले में उतारने की हम कोशिश करेंगे। इन्जेक्शन की सिरिंज के बिना हम किसी तरीके से दवा आपके खून में प्रवेश करा सकते हैं। दवा हमारे पास बहुत बढ़िया वाली रखी है। उसको जो इन्जैक्शन से लगाने के लिए सुई तो हमको चाहिए ही। सुई क्या है ? सुई—मित्रो ! जिसको हम प्रतीक-पूजा कहते हैं। इसके अन्दर जो दवा भरी जाती है। जो सिंरिंज लगाई जाती है वो क्या है ? वो है जिसको हम विचारणाएँ कहते हैं, भावनाएँ कहते हैं, दिशाएँ कहते हैं। जिसके लिए हमें, प्रतीक-पूजा के बारे में फड़फड़ा कर आगे बढ़ना होगा। प्रतीक-पूजा के लिए हमको कदम बढ़ाना पड़ेगा और हिम्मत बढ़ानी पड़ेगी। गाँव-गाँव में मंदिर और मोहल्लों में मंदिर, घर-घर में मंदिर हमको स्थापित करने पड़ेंगे। फोटोग्राफ के माध्यम से और तस्वीरों के माध्यम से क्योंकि मूर्ति के साथ में ऋद्धि-सिद्धि का बहम शामिल हो गया है। इसलिए हम मूर्तियों को इतना प्रोत्साहन नहीं देंगे, क्योंकि लोग हर मूर्ति को चमत्कारी कहने लगते हैं। ये क्या आफत आ गयी ? चमत्कारी कहिए मत किसी को। उसको आप प्रतीक कहिए। इसलिए हम थोड़े दिनों तक ये कोशिश करेंगे कि मूर्तियाँ कम से कम स्थापित हों और तस्वीरें ज्यादा से ज्यादा स्थापित हों। हर जगह उनकी स्थापना हो ताकि हम उनके माध्यम से, उनके सहारे से उनकी व्याख्या करते हुए उसको समझाते हुए—उसको बताते हुए भारतीय संस्कृति का मूल जो हमारा था—गायत्री मंत्र और यज्ञ अर्थात् विवेकशीलता और क्रियाशीलता अर्थात् अच्छे कर्म और अच्छे स्वभाव। इन दोनों का संवर्द्धन करने और उन्हें अक्षुण्ण रखने के लिए हम नए सिरे से मनुष्य को नया मनुष्य बना सकें।

मनुष्य में देवत्व का अवतरण करने के लिए, मनुष्य में भगवान का अवतरण करने के लिए और जमीन पर स्वर्ग को लाने के लिए हम यह कहेंगे कि इन प्रतीकों को—इन सिम्बलों को आप फिर से सम्हालिए, क्योंकि ये हमारी बंदूकें हैं—ये हमारे हथियार हैं और इन हथियारों के माध्यम से मनुष्यों के अज्ञान से लड़ाई लड़नी है, ये हमारी छैनी-हथौड़े हैं। इन छैनी-हथौड़ों को हम दूर नहीं फेंक सकते हैं। यह छैनी-हथौड़ा हर दम काम करेगा। लेकिन छैनी-हथौड़े को अगर फेंक देंगे और खाली ये कहेंगे कि हमारी ताकत में बल है और हम तो लोहे को भी ठीक कर सकते हैं। अभी मुक्का मारेंगे और लोहे को ठीक करेंगे, तो मुक्के से ही काम नहीं बनेगा। छैनी-हथौड़े भी आपको रखने होंगे। छैनी-हथौड़े से ही कलाई में ताकत आयेगी। हमारे पास विचारणाएँ होनी चाहिए, भावनाएँ होनी चाहिए सही, लेकिन हमारे पास प्रतीक भी होने चाहिए और हमारे पास 'सिम्बल' भी होने चाहिए। प्रतीक और सिम्बलों के साथ-साथ हमको विचारणा और विवेकशीलता का विस्तार करना है। यही हमारी क्रिया-पद्धति है।

गायत्री परिवार की यही क्रिया-पद्धति है। हमारी और आपकी यही क्रिया-पद्धति होनी चाहिए। हम आस्तिकता की स्थापना करने के लिए चले हैं। हम आध्यात्मिकता की स्थापना करने के लिए चले हैं और हम धार्मिकता की स्थापना करने के लिए चले हैं। यही तो हमारे उद्देश्य हैं तीन, जिनको आप गायत्री माता के तीन चरण कहते हैं। यही हैं तीन चरण, जिनकी हमने अपने ढंग से व्याख्या करना शुरू कर दिया है। भगवान पर निष्ठा और भगवान पर आस्था और भगवान पर विश्वास हम हर आदमी के मन में स्थापित करेंगे। गायत्री मंत्र का चरण नम्बर एक। गायत्री मंत्र का चरण नम्बर दो—हम हर आदमी को धार्मिक बनाना शुरू करेंगे और हर आदमी को सामाजिक बनाना शुरू करेंगे। हर आदमी को समाजपरक और सूक्ष्म-सेन्स को, भाव-संवेदना को अपनाने वाला बनाना शुरू करेंगे। हम हर आदमी को अध्यात्मवादी बनाना शुरू करेंगे अर्थात् अपने ईमान को साबित करने वाला, अपने चरित्र को सही और उज्ज्वल रखने वाला बनाने की कोशिश करेंगे। हमारा मतलब आध्यात्मिकता से यही है। हमारा मतलब आस्तिकता से यही है। हमारा मतलब धर्मनिष्ठा से यही है। इन तीनों की स्थापना करने के लिए हम गायत्री मंत्र का तिरंगा झण्डा लेकर चले हैं। इस तिरंगे झण्डे को हम बहुत प्यार करते हैं और इस झण्डे की हर जगह उसी तरह स्थापना करना चाहते हैं। जिस तरह से हमारे पूर्वजों ने और हमारे ऋषियों ने उसे प्यार किया और सुदृढ़ बनाया था।

गायत्री मंत्र की, गायत्री माता की—भगवान् की मूर्तियाँ हमारे घरों में होनी चाहिए। लेकिन इससे भी ज्यादा शानदार, इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हर इनसान के, हर व्यक्ति के और हर हिन्दू के हृदय में इनकी स्थापना की जाए। गायत्री मंत्र केवल हिन्दुओं के लिए ही नहीं है, वरन् वह प्रत्येक धर्मावलम्बी व मजहब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के मानने वालों के लिए है। हमें उन्नति करनी है तो इन प्रतीकों को फिर अपनाना पड़ेगा, जिसको हम गायत्री कहते हैं। जिसकी स्थापना शरीरों में की गयी थी। स्थापना मंदिरों में नहीं, पूजा घरों में ही नहीं, बल्कि प्रत्येक हिन्दू के शरीर के ऊपर इसकी स्थापना हुई। कैसे स्थापना हुई ? शिखा और सूत्र के रूप में हुई। शिखा क्या है ? शिखा—एक विवेकशीलता की देवी, ज्ञान की देवी हमारे मस्तिष्क के ऊपर हावी है। मस्तिष्क के ऊपर हावी है और हमारे झण्डे के रूप में फहराती है। शिखा क्या है ? शिखा गायत्री है। जिस प्रकार से शंकर भगवान का सिम्बल, शंकर भगवान का चित्र हम गोल-मटोल बना देते हैं और मंगलमय हो लेते हैं, उसी तरह से गायत्री माता का सिम्बल और चित्र यह गायत्री माता की मूर्ति के रूप में हमारी शिखा के ऊपर रखा गया है। हम शिखा की स्थापना करायेंगे और हर आदमी से कहेंगे कि आपको शिखा जरूर रखनी चाहिए, क्योंकि ये गायत्री माता का प्रतीक है, गायत्री माता की मूर्ति है। हम हर आदमी से कहेंगे कि आपको अपने कंधों के ऊपर सामाजिक कर्त्तव्य, नैतिक कर्त्तव्य की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। वे कर्त्तव्य क्या हैं ? कर्म क्या हैं ? उसको हम यज्ञोपवीत कहते हैं, जो हमारे कंधे पर रखा हुआ है। कर्म हमारे कंधे पर रखा हुआ है। कर्म करने की जिम्मेदारी हमारे कंधे पर रखी हुई है। कर्म करने की जिम्मेदारी हमारे हृदय पर टँगी रहनी चाहिए। कर्म करने की जिम्मेदारी हमारे कलेजे से चिपकी रहनी चाहिए। कर्म हमारे आगे भी रहना चाहिए, कर्म हमारे पीठ के ऊपर भी रहना चाहिए। ये क्या है ? ये है यज्ञोपवीत। यज्ञोपवीत हमारे कंधे पर रखा हुआ है, हमारे कलेजे पर रखा हुआ है, हमारे हृदय पर रखा हुआ है, हमारी पीठ पर रखा हुआ है। हमने चारों ओर से अपने आपको खींचकर बाँध दिया है, जिससे कि यह सतत ख्याल बना रहे कि सामाजिक कर्त्तव्य, नैतिक कर्त्तव्य और पारिवारिक कर्त्तव्य से हम जुड़े हुए हैं और बँधे हुए हैं।

जानवर के गले में रस्सा बाँध देते हैं और फिर उसे खूँटे से बाँध देते हैं ताकि दायरे में रहा करे, मर्यादा में रहा करे, कायदे में रहा करे, कानून में रहा करे। हमारे ऋषियों ने भी हमको एक रस्से से बाँध दिया है, जो हमारे कंधे से बँधा हुआ है, हमारे हृदय से बँधा हुआ है, हमारे कलेजे से बँधा हुआ है, हमारी पीठ से बँधा हुआ है। चारों ओर से हमें जकड़कर बाँध दिया है और हमारे विवेक को, हमारी अक्ल को बाँध दिया है। यह क्या है ? यह है—यज्ञोपवीत और शिखा। शिखा और यज्ञोपवीत क्या है ? बताइए। ये हैं हमारे गायत्री मंत्र और यज्ञ। ये दोनों के दोनों प्रतीक हैं। यज्ञ से उपवीत क्या हुआ ? यज्ञ से प्राणप्रतिष्ठा किया हुआ धागा। इसका नाम क्या है ? यज्ञोपवीत, जो हमारे कंधे पर स्थापित है। और शिखा ? ये गायत्री मंत्र की व्याख्या है, जो हमने अपने मस्तिष्क के पास स्थापित की है। यह हमारे मस्तिष्क रूपी किले के ऊपर छाई रहती है और हमारे झण्डे के रूप में फहराती रहती है।

यह शरीर ही हमारा किला है। यह हमारा लाल किला है। स्वतंत्रता-दिवस के समय हमने लाल किले के ऊपर झण्डा फहरा लिया था। कब फहरा लिया था ? आज से छब्बीस-सत्ताईस वर्ष पहले। जिस दिन अँग्रेज यहाँ से विदा हुए थे उस दिन हमने अपने दिल्ली वाले लाल किले के ऊपर तिरंगा झण्डा फहराया था। इसी तरह भारतीय संस्कृति का—मानवी मूल्यों का—सद्गुणों का झण्डा हमारे मस्तिष्क के ऊपर फहराता है। यह शरीर हमारा किला है। यह हमारे व्यक्तिगत जीवन का किला है। इसके ऊपर हम झण्डे की स्थापना करते हैं और हम व्यक्तिगत शिखा की स्थापना करते हैं। अब हम शिखा को प्यार करना सिखाएँगे लोगों को। शिखा को प्यार करना और मौहब्बत करना अब हम सिखायेंगे। किले को प्यार करना और किले को मोहब्बत करना अब हम सिखाएँगे लोगों को। हम घर-घर जाएँगे इसे सिखाने, क्योंकि हिन्दू धर्म महान् है, हिन्दू धर्म विश्व का धर्म है, ये मनुष्यों का धर्म है। हिन्दू धर्म कोई मजहब नहीं है। अभी-अभी हमने एक किताब लिखकर तैयार की है शायद एक-दो महीने में छपकर तैयार हो जाए। हिन्दू धर्म के जो सारे सिद्धान्त हैं, वे मात्र हिन्दू लोगों के लिए ही नहीं है, बल्कि ये यूनीवर्सल हैं। ये विश्वव्यापी हैं, मानवमात्र के लिए हैं। हर देश के निवासी के लिए हैं। हर प्रदेश के निवासी के लिए हैं। चाहे वह हिन्दू धर्म को मानता हो, चाहे न मानता हो। ये सारे के सारे सिद्धान्त मानवमात्र के सिद्धान्त हैं, विश्वव्यापी सिद्धान्त हैं, सार्वभौम सिद्धान्त हैं। सारे के सारे धर्मों का निचोड़ हमारे हिन्दू धर्म में है।

हिन्दू धर्म का मूल क्या है ? हिन्दू धर्म का मूल वह है, जिसको हम शिखा कहते हैं, जिसको हम यज्ञोपवीत कहते हैं। अब हम इस झण्डे को नष्ट नहीं होने देंगे और हर हिन्दू को कहेंगे कि आप इसको प्यार करना सीखिए। आप भी अपनी संस्कृति को प्यार करना सीखिए, आप अपनी माँ को प्यार करना सीखिए और आप अपने बाप को प्यार करना सीखिए। ये हमारा महत्त्वपूर्ण क्रिया-कलाप है और इस क्रिया-कलाप का हम विस्तार करेंगे और आपके मनों में और जनता के मनों में स्थापित करेंगे। जब मुसलमान भारत आये थे, तब उन्होंने कहा था कि सुनो हम तुम्हारी चोटी काटना चाहते हैं। अब तुम्हारी चोटी को उतार देंगे। लोग बोले ठीक है, ताकत आपके हाथ में है और फौज आपके साथ में है और बंदूक आपके हाथ में है। हम क्या कर सकते हैं ? हथियार हमारे पास नहीं है। आप जरूर हमारी चोटी काट सकते हैं, लेकिन एक मेहरबानी कीजिए। क्या मेहरबानी करें ? आप इस चोटी को यहाँ से न काटकर गर्दन से काट दीजिए। कारण, चोटी की जड़ यहाँ तक आई है। यदि आप इसे यहाँ से काट डालेंगे तो हमको संतोष बना रहेगा और कोई हमको दुःख का एहसास नहीं होगा और शान्तिपूर्वक दुनिया से चोटी भी चली जाएगी और हम भी चले जाएँगे। अतः आप हमारा सिर काट डालिए। लाखों व्यक्तियों के सिर को मुसलमानों ने कलम करा दिया था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी शिखा और जनेऊ को हम कितना प्यार करते थे ? आपको तो नहीं मालूम, पर हमें मालूम है। आपको तो साढ़े चौहत्तर का आशय भी नहीं मालूम कि किसे कहते हैं साढ़े चौहत्तर ? पहले जमाने में, पुराने जमाने में लोग लिफाफे पर साढ़े चौहत्तर नम्बर डालते थे। आपको मालूम है क्यों डालते थे ? जो कोई उस लिफाफे को खोल लेगा उसको साढ़े चौहत्तर मन जनेऊ जो अगणित हिन्दुओं ने पहने रखे थे और काट डाले गये थे मुसलमानों के द्वारा, उसकी जो हत्या उन्हें करनी पड़ी होंगी, पाप पड़ा होगा, उस आदमी को भी पाप पड़ेगा जो हमारी चिट्ठी को बिना बताए हुए खोल लेगा और चुपचाप पढ़ लेगा और फिर चिपका देगा। बंद कर देगा। उतना ही उसे पाप पड़ेगा। पता नहीं पाप पड़ता था कि नहीं और वह साढ़े चौहत्तर मन जनेऊ थे कि नहीं। मैं इस बहस में नहीं जाऊँगा। लेकिन भावना ये थी कि हम लोगों ने साढ़े चौहत्तर मन जनेऊ और शिखाएँ कटवा दी थीं और उसके लिए आप अंदाज लगा लीजिए साढ़े चौहत्तर मन जनेऊ जिस तराजू पर तौले गए होंगे उसके लिए कितना खून बहाया गया होगा ? कितनी गर्दनें कटाई होंगी ? हमने बहुत गर्दनें कटाई हैं। हमने अपना बहुत खून बहाया है, क्योंकि हम अपनी शिखा को प्यार करते हैं। जनेऊ को हम प्यार करते हैं। अपनी चोटी को प्यार करते हैं हम। शिवाजी न होते तो चोटी भी न होती सबकी। चोटी की रक्षा करने के लिए राणा प्रताप, शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी और किसका-किसका नाम बताएँगे आपको कि चोटी के लिए कितनों ने अपनी जान न्योछावर कर डाली, कुर्बानी कर डाली। अब यह चोटी हमारे हाथ से चली गई, नीचे आ गई। अब यह खिसक रही है। कौन काट रहा है इसको ? मुसलमान काट रहे हैं इसको ? नहीं, ईसाई भी नहीं काट रहे हैं इसको ? तो फिर कौन काटता है ? इसको वो काटता है, जिसको हम इस युग की अनास्था कहते हैं, यही अनास्था चोटी को काटती चली जाती है। आप पता लगा लें कि किन-किन बच्चों के सिर पर चोटी हैं ? आपको एक भी बच्चे के सिर पर चोटी दिखाई नहीं पड़ेगी, यही हाल जनेऊ का है।

अगर हम जनेऊ का पता लगाने के लिए चलें और किसी कॉलेज, किसी विश्वविद्यालय में जाएँ और बच्चों को नंगा करके देखें और पूछें कि बच्चों तुम्हारे पास जनेऊ है क्या, जरा हमको दिखाना। उत्तर मिलेगा—जी नहीं। अब जनेऊ खत्म हो गया। हमारे—आपके जैसे दकियानूस कहलाने वाले लोगों के ऊपर शायद जनेऊ रखा भी हो, लेकिन वहाँ भी दकियानूसी शब्द लगा हुआ है। जनेऊ हमें जँचता नहीं है। उल्टे कहा जाता है कि जो कोई जनेऊ पहनेगा उसके घर में मौत हो जाएगी। हमारे यहाँ तो सात पीढ़ी से जनेऊ नहीं पहना गया। बेटे को हम जनेऊ पहनाएँगे तो हमारी अम्मा नाराज हो जाएगी और यह कहेगी कि हमारे तो बाप-दादाओं ने भी नहीं पहना। इसे कहाँ से ले आया हमारे घर में, कोई और अनिष्ट हो जाएगा और अशुभ हो जाएगा। जनेऊ को तू उतार दे। हमारे घर में जँचता नहीं है। जनेऊ हम कैसे पहनेंगे ? हमारे तो पिताजी जिन्दा हैं। क्या हम मार डालें पिता को ? नहीं आप मार न डालें पिता को। तो क्या करेंगे ? जब तक हमारे पिता जिन्दा हैं तब तक हम जनेऊ कैसे पहन सकते हैं ? बाप जनेऊ पहनेगा। बाप जब मर जाएगा तो बेटा जनेऊ पहनेगा। अजीब किस्सा है कि अगर बाप के सामने बेटा पहनेगा तो बाप मर जाएगा। अरे बाबा ये क्या कहता है कि जनेऊ हमारे वंश में और हमारे खानदान में किसी ने नहीं पहना।

दुनिया में कौन-कौन से रिवाज चले हुए हैं कि जनेऊ कौन पहनेगा ? मर्द पहनेगा औरत नहीं पहनेगी। लड़कियों को हम धन्यवाद देते हैं, क्योंकि शिखा की लाज, शिखा की इज्जत इन लोगों ने रख ली है। कोई-कोई लड़कियाँ तो बहुत लम्बी-लम्बी चोटी रखाती हैं। मर्द से कहते हैं कि अरे बाबा छह इंच की न सही तीन इंच की चोटी रख ले, पर इनको तीन इंच की रखने में भी परेशानी मालूम पड़ती है। इन छोकरियों में से किसी की एक फुट लम्बी है तो किसी की डेढ़ फुट लम्बी है। किसी की दो फुट लम्बी है तो किसी की ढाई फुट लम्बी है। ये भी नहीं है कि कोई पतली चोटी हो वरन् लड़कियों की मोटी-मोटी चोटियाँ हैं। कई बार तो ऐसा करती हैं कि इनको जब मजा आता है, मौज आती है तो बाजार चली जाती हैं और चोटी में चोटी डाल लेती हैं। किसी-किसी को शर्म आती है जब वे अपने खाविंद को देखती है कि वह ऐसा सफाचट है कि उसने चोटी कटा ली है तो वह दो भी रख लेती हैं। एक अपनी चोटी रख लेती हैं और दूसरी अपने खाविंद के लिए। जनेऊ भी तो हम दो पहनते हैं—एक अपना पहनते हैं और एक अपनी बीबी के बदले का पहनते हैं। इसी तरह लड़की कहती है कि एक चोटी अपने खाविंद के बदले की रखायेंगी और एक अपने बदले की। यही तो बात है कि जो धर्म बचा हुआ है, वह इन लड़कियों की वजह से बचा हुआ है। ये लड़कियाँ न होतीं तो इस चोटी का पता लगाना मुश्किल पड़ जाता। किसे कहते हैं—चोटी और कैसे धारण की जाती है ? चोटी कहाँ से आती है ? चोटी की कौन रखवाली करता है ? चोटी की हम रक्षा करेंगे और जनेऊ की हम रक्षा करेंगे।

मित्रो ! हमारा यह उद्देश्य होना चाहिए, हमारा शिक्षण होना चाहिए, प्रयास होना चाहिए कि जहाँ कहीं भी हम यज्ञ कराने जाएँ वहाँ युवकों से हम यह पूछें कि आप हिन्दू धर्म को, मजहब को मानने वाले हैं। हाँ ! तो फिर ये बताइये, कि पुलिस का सिपाही अपना 'सिम्बोल' पहने रहता है, उसके कमर में एक पेटी बँधी रहती है और उसके ऊपर लगा रहता है एक पीतल का बिल्ला। उस पीतल के बिल्ले पर क्या लिखा रहता है ? 'यू. पी. पी.' लिखा रहता है। पहले अँग्रेजी में लिखा रहता था और अब हिन्दी में लिखा रहता है—उत्तर प्रदेश पुलिस—'उ. प्र. पु.'। मध्यप्रदेश पुलिस में—'म. प्र. पु.'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लिखा रहता है। पीतल का बिल्ला न हो किसी के पास तो समझ लीजिए कि वह सिपाही नहीं है और कमर में पेटी बँधी हुई न हो तो समझ लीजिए कि वह पुलिस का सिपाही नहीं है। सिपाही को कमर में पेटी बाँधनी चाहिए।

जब कभी किसी का फौज में कोर्टमार्शल होता है तो सबसे पहला यह काम किया जाता है कि उसकी पेटी उतार ली जाती है, उसका बिल्ला उतार लिया जाता है उसको 'क्रिमिनल' मान लिया जाता है तथा उसको लाइन में खड़ा किया जाता है फिर उसका कोर्टमार्शल किया जाता है और यह कहा जाता है कि तुम हमारी इज्जत मत खराब करो। पेटी की इज्जत—राष्ट्र की इज्जत है। तुमने ऐसे खराब काम किए हैं, इसलिए सबसे पहले तुमको यह सजा दी जाएगी कि तुम्हारी पेटी और तुम्हारा बिल्ला हम जब्त कर लेते हैं। पुलिस में भी यही होता है और फौज में भी यही होता है। हमारा बिल्ला जब्त किया या नहीं किया, हम पुलिस के सिपाही हैं कि नहीं, हम फौज के सिपाही हैं कि नहीं, हम हिन्दू धर्म के सिपाही हैं कि नहीं, हम हिन्दू धर्म में दीक्षित हैं कि नहीं, इसकी पहचान आपके शिखा और सूत्र से होती है। अगर आप हिन्दू धर्म में दीक्षित हैं तो लाइए वह निशान आपके कंधे पर 'यू. पी. पी.' लिखा हुआ है कि नहीं और कमर में पेटी बँधी हुई नहीं है और अगर आपकी पेटी छीन ली किसी ने तो आपको यह कहना पड़ेगा कि पुलिस में से हमें बर्खास्त कर दिया गया—फौज में से बर्खास्त कर दिया गया और हमारा कोर्टमार्शल किया गया। अगर आप का बिल्ला छीन लिया गया, पेटी छीन ली गई, जनेऊ छीन लिया गया और आपकी शिखा उतार ली गई हो तो फिर इसका मतलब यह होगा कि आपको हिन्दू धर्म में से बर्खास्त कर दिया गया। हिन्दू धर्म से कोई और धर्म होगा आपका।

हमारी यही तो निशानियाँ थीं। अब हम पहले निशानियों को जिन्दा करेंगे। निशानियों को जिन्दा करने के बाद उसकी जो शिक्षाएँ हैं, जो कोई भी दिशाएँ हैं, उनकी जो भी प्रेरणाएँ हैं, जो भी निष्ठाएँ हैं उन्हें हम लोगों के हृदय में प्रवेश करायेंगे। इसके लिए पहले हम सिम्बोल स्थापित करेंगे। इसके बाद हम यह करेंगे कि जहाँ कहीं भी मित्रो ! हमारे यज्ञ होंगे, वहाँ पर ध्यान देना पड़ेगा, जिस तरह से छोटे बच्चों का मुण्डन-संस्कार किया जाता था अब हमको बड़ी उम्र वालों का मुण्डन-संस्कार कराना पड़ेगा। छोटे बच्चों का मुण्डन-संस्कार क्या है ? मुण्डन-संस्कार हर एक के यहाँ पर होता है और हर हिन्दू यह चाहता है कि हमारे बच्चों का मुण्डन हो और वह भी गंगाजी पर हो, जमुना जी पर हो। देवी के सामने हो। यह मुण्डन क्या है ? मुण्डन कोई संस्कार नहीं है। यह शिखा-स्थापना का संस्कार है। चोटी हम रखा लेते हैं बाकी बालों को काट देते हैं। बाकी बालों को नहीं काटेंगे तो आप शिखा रखायेंगे कैसे ? इसलिए शिखा को रखाने के लिए हमको बाकी बाल कम कर देने पड़ते थे। इसका नाम क्या था ? मुण्डन-संस्कार। मुण्डन-संस्कार मित्रो ! कन्या का भी करना पड़ता है और बच्चों का भी कराना पड़ता है। जब तक मुण्डन-संस्कार न होगा, शिखा नहीं रखाएँगे तब तक हिन्दू कैसे कहलाएँगे ? हिन्दू होने की निशानी ही मुण्डन-संस्कार है। लेकिन आज हमारी शिखाएँ गायब हो गई हैं अतः इस संस्कार को हम फिर शुरू करेंगे। हम यज्ञ के लिए जो स्थान तलाश करेंगे वहाँ सबसे पहले यह पूछना शुरू करेंगे कि आपके सिर पर शिखा है कि नहीं और जो कहेगा कि शिखा नहीं है, तो उससे यह प्रार्थना करेंगे आपका मुण्डन-संस्कार होना आवश्यक है। मुण्डन-संस्कार के लिए शायद वह तैयार न हो तो यह कहना पड़ेगा कि आप इतनी कृपा कीजिए कि आपके तीन-तीन इंच के जो बाल हैं, उन्हें एक-एक इंच कम करा दीजिए। एक इंच बाल कम करा देंगे तो जहाँ कहीं भी शिखा आपके स्थान पर बनी रहती है, वहाँ एक इंच बाल बड़े हो जाएँगे। आपको छह महीने या साल भर बाद फिर से यदि अपने बाल कम कराने पड़ें तो फिर एक इंच बढ़ा देना। इस तरह आपकी शिखा दो-तीन साल में दो-तीन इंच बड़ी हो जाएगी और इस तरह आपके शिखा की स्थापना हो जाएगी। आप शुरुआत अभी से कीजिए। जाइए नाई से हजामत बनवाकर आइए और मुण्डन-संस्कार कराकर आइए।

मित्रो ! मुण्डन-संस्कार हमारे हिन्दू धर्म का मूल है। लोग गंगाजी जाते हैं, जमुना जी जाते हैं, हरिद्वार आते हैं, सब जगह मुण्डन होते हैं। आप मध्यप्रदेश जाइए और बिहार जाइये सब जगह गंगा या नर्मदा किनारे मुण्डन होता हुआ चला जा रहा है। जो लोग दक्षिण भारत में जाते हैं, वे वहाँ देखते हैं कि जो विधवाएँ होती हैं वे सब अपने सिर के पूरे बाल कटाकर के आती हैं। वहाँ पर बाल काटने का और कटे हुए बालों का ठेका होता है लाखों रुपए का। सारे के सारे कटे हुए बालों को इकट्ठा कर लेते हैं और फिर उनको विलायत भेजते हैं। लाखों रुपये का सौदा होता है इनका। जो सुहागिन हैं उनको नहीं काटना पड़ता, पर जो सुहागिन नहीं हैं या जो विधवा हो जाती हैं उसको बाल कटाने पड़ते हैं, मुण्डन कराना पड़ता है। साथियो, मुण्डन के बारे में हमें लोगों को शिक्षा देनी पड़ेगी और यज्ञोपवीत के बारे में यह ये फिजा पैदा करनी पड़ेगी। जनेऊ के बारे में यह बहम हमें निकालना पड़ेगा कि ये पंडित के हिस्से का है और ये बनिये के हिस्से का है या क्षत्रिय के हिस्से का है। जनेऊ पहनने का अधिकार किसी एक वर्ग-विशेष के हिस्से का नहीं होता। ये अटूट है, मजबूत है, शानदार है और हर आस्तिक के लिए है।

यज्ञोपवीत धारण करने के कुछ नियम हैं, कुछ मर्यादाएँ हैं, जिन्हें जानना आवश्यक है। यज्ञोपवीत को छह महीने में बदलना चाहिए, क्योंकि पसीने से छह महीने में वह मैली पड़ जाती है और धागे कमजोर हो जाते हैं। अतः हर छह महीने बाद यज्ञोपवीत के धागे को बदल देने चाहिए। सूर्यग्रहण पर भी बदल देते हैं, चन्द्रग्रहण पर बदल देते हैं, कई बार बदलते हैं। यदि ऐसा नहीं हो पाता तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कम से कम छह महीने में तो बदल ही देने चाहिए। छह महीने के लिए हमने इसलिए कहा है कि छह महीने में जनेऊ पुरानी पड़ जाती है। महिलाएँ प्रायः हर महीने अपना जनेऊ बदल लेती हैं और नया धारण कर लेती हैं। इसी तरह कई लोग महीने में एक बार बदलते हैं। पैसे, दो पैसे, पाँच पैसे का जनेऊ आता है। वैसे तो लोग अन्य मदों में ढेरों पैसा खर्च कर देते हैं, तो महीने भर में एक जनेऊ पर खर्च क्यों नहीं कर सकते हैं ? उससे क्या आफत आ जाएगी ? अतः हमको यज्ञोपवीत की स्थापना करनी पड़ेगी और हम उसे व्यापक आह्वान के रूप में बनाएँगे। जहाँ कहीं भी हमारे यज्ञ होंगे, जो कोई भी व्यक्ति हमारे यज्ञ में शामिल होने का इच्छुक होगा, उनसे हम ये कहेंगे कि यज्ञोपवीत करा लीजिए और जनेऊ पहन लीजिए। यदि वह कहेगा कि जनेऊ पहनेंगे तो हमारी अम्मा नाराज हो जाएगी। अम्मा नाराज हो जाएगी, तो आप ऐसा कीजिए कि यदि यज्ञ में शामिल होना चाहते हैं तो आपको जनेऊ हम पहना देते हैं, आप पहन लीजिए। इसे आप चौबीस घण्टे पहन लीजिए। चौबीस घण्टे के बाद आप इसे विसर्जित कर देना। यदि आप हवन में शामिल होना चाहते हैं तो जनेऊ जरूरी है। जनेऊ हमारे हिन्दू धर्म का अक्षुण्ण अंग है। इसलिए इसे अपनाना शुरू कीजिए, अभ्यास करना शुरू कीजिए। अब हम हवन को व्यापक बनाने की सोच रहे हैं तो यज्ञोपवीत को भी व्यापक बनाना पड़ेगा। हवन-यज्ञ और यज्ञोपवीत वास्तव में एक ही चीज है।

यज्ञ से ही मनुष्य को मुक्ति हासिल नहीं होती। इसके लिए अपने अंतराल में छिपी दिव्य-ज्योति को जाग्रत करना पड़ता है। यज्ञ की अग्नि तो हवन-कुण्ड में समाप्त हो जाती है, पर अखण्ड-ज्योति तो कई-कई दिन रखी जाती है। अखण्ड-ज्योति समष्टि की अनंत प्रकाश की प्रतीक है। कितने ही मंदिर ऐसे होते थे, जहाँ अखण्ड ज्योति की रक्षा की जाती थी। अब वे कहाँ रहे जहाँ अखण्ड दीपों की रक्षा की जाती हो। अखण्ड नियम और अखण्ड दीपक की रक्षा एक ही बात है। ये तो किन्हीं-किन्हीं ऋषियों के यहाँ और किन्हीं-किन्हीं महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के यहाँ पाई जाती है। हमने भी अखण्ड-ज्योति जलाई है ताकि आप अखण्ड-ज्योति को और गायत्री माता को अपने कंधों पर, अपने हृदय पर रखें साथ ही साथ और लोगों के कंधों पर भी उन्हें स्थापित करें। यह काम आपको करना ही पड़ेगा। इसका यह नियम है कि स्वयं प्रकाशित हों और अन्यों को भी प्रकाशित करें, प्रेरित करें। यह एक नियम है, एक कायदा है। ये निष्ठाएँ हमको फिर से अपने हिन्दू धर्म में पैदा करनी चाहिए और विश्व में सारे के सारे लोगों में पैदा करनी चाहिए। इससे रीति और रस्म बदलकर रहेगी। लेकिन अगर हमने यह मानकर रखा कि केवल यज्ञोपवीत करा लेने, जनेऊ पहन लेने और शिखा रखा लेने भर से हमारी तरक्की हो जाएगी, तो ऐसा नहीं समझना चाहिए। अभी मैं आपको मूर्ति-पूजा और बुत-परस्ती के बारे में कह रहा था। ठीक इसी तरह अगर आपने शिखा रखी और यज्ञोपवीत पहना, लेकिन शिखा रखने के बाद और यज्ञोपवीत पहनने के बाद में आपने उसका मूल्य समझा नहीं, उत्तरदायित्व समझा नहीं, शिक्षा को समझा नहीं, प्रेरणा को समझा नहीं, हकीकत को समझा नहीं तो आपको उससे उपेक्षा पैदा होती चली जाएगी और हमारे बच्चे जनेऊ पहनने से इनकार करेंगे। हमारे बच्चे चोटी रखने से इनकार करेंगे।

आज हमारे हिन्दुओं के बच्चों ने इनसे क्यों इनकार किया ? बताइए न आप ? हिन्दुओं के बच्चों ने इसलिए इनकार किया क्योंकि उन्हें किसी ने भी ये बताया नहीं कि आखिर ये क्या है ? हम लोगों ने इसे यज्ञोपवीत नाम क्यों दिया ? इसके पीछे शिक्षा के बारे में कोई जानकारी नहीं दी कि शिखा क्या है और उसके पीछे क्या जिम्मेदारियाँ हैं ? यज्ञोपवीत क्यों पहनाई जाती है और ये क्या याद दिलाती है ? जनेऊ पहना तो दिया, आपने जनेऊ पहनाने की दक्षिणा भी दे दी पंडित जी को और हवन भी करा दिया और ब्रह्मभोज भी करा दिया—दो हजार रुपए भी खर्च कर दिए, लेकिन यज्ञोपवीत पहनने के बाद जब बच्चे ने पूछा पिताजी ये क्या है ? इसे क्यों पहनते हैं ? हमें क्यों जनेऊ पहनाया गया है ? तब आपका जवाब होता है—चुप बे, ज्यादा बोलता है। हमारे बाप-दादा पहनते थे, इसलिए हम भी पहनते हैं। हम ब्राह्मण हैं। तुझे शर्म नहीं आती—पूछता है क्यों पहनते हैं ? सभी ब्राह्मण जनेऊ पहनते हैं। लेकिन पंडित जी ब्राह्मण तो सब पहनते हैं, पर क्यों पहनते हैं ? आखिर ये क्या चीज है ? चुप रह ! क्यों पहनते हैं ? पंडित जी-पंडित जी हर वक्त धर्म के बारे में पूछताछ करता रहता है। धर्म के बारे में पूछताछ का जवाब देने में यदि आप समर्थ न हो पाएँ तो मित्रो ! आपकी निष्ठा कमजोर होती चली जाएगी और हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ, संस्कार परम्पराएँ विलुप्त होती चली जाएँगी। अतः संस्कार परम्परा के बारे में आपको बताना पड़ेगा, शिखा के बारे में बताना और समझाना पड़ेगा, जनेऊ के बारे में बताना और समझाना पड़ेगा। अगर आपने इस सम्बन्ध में बताना और समझाना शुरू कर दिया तो एक भी हिन्दू का बच्चा यह नहीं कह पायेगा कि हमने यज्ञोपवीत तो करा लिया, पर हम जनेऊ नहीं पहनेंगे।

आप पूरे यूरोप में जाइये, वहाँ तो हमसे अधिक पढ़े-लिखे लोग हैं। हमारे बच्चों को तो अँग्रेजी आती भी नहीं है मैट्रिक पास हैं, लेकिन कोई जनेऊ नहीं पहनता और साहब बना फिरता है। जबकि सारे के सारे यूरोप में आपको सब के सब शिक्षित आदमी मिलेंगे। कोई आदमी ग्रेजुएट से कम नहीं मिलेगा। जो आदमी दिन में नहीं पढ़ सकते वे रात में पढ़ते हैं और ग्रेजुएट हो जाते हैं। लेकिन आपको मालूम होना चाहिए कि कोई भी आदमी, कोई भी ईसाई कहीं भी निकलता है तो अपनी प्रापर ड्रेस में निकलता है। जिसमें 'टाई' भी शामिल है। टाई क्या है ? टाई ईसाइयों का यज्ञोपवीत है। 'क्रूस' जिसमें ईसा मसीह को फाँसी लगाई गई थी। टाई उस फाँसी का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रतीक है। प्रत्येक ईसाई जिसमें कि बड़े से बड़ा आदमी शामिल है और छोटे से छोटा भी शामिल है या जो भी ईसामसीह में विश्वास करता है, यकीन करता है वह गले में फाँसी का फंदा, टाई के रूप में लगाकर सड़कों पर निकलता है और कहता है कि ये हमारी शान है और हमारी इज्जत है और हम पहनकर निकलते हैं। अरब देशों में मुसलमान तिरछी टोपी पहनकर निकलते हैं। हमारे हिन्दुस्तान में भी वे तिरछी टोपी पहनकर निकलते हैं और कुछ लोग बालों वाली टोपी पहनकर निकलते हैं और चूड़ीदार पैजामा तथा अचकन पहनकर निकलते हैं। आप जाइए वहाँ। कहाँ ? जामिया-मिलिया इस्लामिया कॉलेज में और दूसरे कॉलेजों में भी मुसलमानों के लड़कों को देखिए ना। अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी में जाइए ना, वहीं आपको आगे वाली मूँछें कटाए हुए और पाजामा एवं चप्पल पहने हुए आपको मुसलमानी लिबास में, उसी लहजे में, उसी तर्ज में काम करते हुए मिलेंगे, दिखाई पड़ेंगे। आप जामिया मिलिया कॉलेज में जाइए, अन्य स्कूल, कॉलेजों में जाइए आपको प्रत्येक जगह वे सारे के सारे मुसलमानी लिबास में मिलेंगे, क्या वो पढ़े-लिखे नहीं हैं ? क्या हिन्दुओं के लड़के पढ़े-लिखे हैं ? क्या हिन्दुओं के लड़कों के दिमाग सातवें आसमान पर नहीं हैं ? क्या हिन्दुओं के लड़कों को बहस करना आ गया ? मुसलमान के लड़कों को बहस करना नहीं आया ? उनको भी आता है।

आप सिक्खों के कॉलेजों में जाइये। वहाँ के सारे के सारे स्टूडेण्ट आपको साफा पहने हुए मिलेंगे। अपने सिर पर कलगी लगाये हुए दिखेंगे और अपने हाथ में कृपाण लिये हुए या बगल में डाले हुए दिखाई देंगे। क्या वो पढ़े-लिखे हुए नहीं हैं ? क्या सारी अकल आपके ही हिस्से में आ गई है। क्या वे पढ़े-लिखे नहीं हैं ? विद्या उनको नहीं आती। नहीं साहब, वह तो शिक्षा ने ऐसा बना दिया हमें। तो शिक्षा ने हमें ही बना दिया, उन्हें नहीं बनाया ? शिक्षा उन्होंने भी तो पढ़ी है। एम. ए. पास हैं और मुसलमान भी तो एम. ए. पास हैं। फिर हमारे यहाँ ये क्या हो रहा है ? मित्रो ! इसकी जिम्मेदारी हमारी और आपकी है। धर्म के बारे में, यज्ञोपवीत के बारे में बताने और समझाने की कोशिश हमने नहीं की। ये शिखा क्या है ? ये यज्ञोपवीत क्या है ? इसका हमने कभी समाधान कर दिया होता, उनको समझा दिया होता तो निश्चित हमारे बच्चे में ये गुण आ गये होते। तब हमारे घर के प्रत्येक बच्चे के छाती पर जनेऊ तो रखा होता और सिर पर शिखा स्थापित होती। वे उनमें छिपी प्रेरणाओं का अनुसरण कर रहे होते। अभी भी समय है सँभल जाने के लिए कि जब भी हमारे बच्चे हमसे बहस करने आयेंगे और प्रश्न करेंगे कि बताइए शिखा क्या है ? तो हमको उन्हें एक घण्टा समय देना पड़ेगा और बराबर बताना पड़ेगा कि शिखा का मतलब क्या है ? मकसद क्या है ? उद्देश्य क्या है ?

एक दिन हमने आपको गायत्री मंत्र के बारे में, ज्ञान की देवी के बारे में बताया था। गायत्री मंत्र की वह सारी की सारी व्याख्या आपको अपने बच्चे को समझानी पड़ेगी जो कि शिखा के बारे में जानकारी प्राप्त करने आया है और चोटी के बारे में जानने आया है कि यह क्या है ? चोटी गायत्री माता की प्रतीक है, यह बात आपको बतानी पड़ेगी। फिर वह पूछेगा कि गायत्री मंत्र क्या होता है ? गायत्री मंत्र क्या होता है, ये भी मैंने आपको एक दिन बताया था इसके लिए मैंने आपको तीन घण्टे का समय दिया था, आपको याद होना चाहिए। इस तरह जो आदमी शिखा के बारे में जानना चाहता हो, उसे उसकी सारी की सारी फिलॉसफी के बारे में समझाना चाहिए कि शिखा क्या होती है ? गायत्री क्या है और गायत्री की मूर्ति क्या है ? इस तरह आपका बच्चा गंभीर हो जाएगा और तब जनेऊ को समझने, शिखा को समझने से इनकार नहीं कर सकेगा। यज्ञोपवीत के बारे में भी यही करना पड़ेगा आपको। जो बच्चा यह पूछने के लिए आपके पास आया है कि गुरुजी, ये क्या चीज हैं जिसे आप पहनाते हैं। यह तो मैला-कुचैला हो जाता है। आप बेकार में ही बार-बार हमारे गले में बाँध देते हैं। आप इसे क्यों बाँध देते हैं, बताइये न तो आपको यज्ञोपवीत पहनाने के साथ ही उसे यज्ञोपवीत धर्म की शिक्षा देनी पड़ेगी। यज्ञोपवीत की वह शिक्षा जो मैंने एक दिन सबेरे भी आपको समझाई थी और शाम को भी समझाई थी।

यज्ञ की फिलॉसफी के बारे में भी लोगों को बताना पड़ेगा कि यज्ञ हिन्दू धर्म का अक्षुण्ण अंग क्यों है ? हमारी संस्कृति का अक्षुण्ण अंग क्यों है ? इसकी प्रेरणाएँ क्या हैं, इसका प्रकाश क्या है ? इसकी शिक्षाएँ क्या हैं ? इस सम्बन्ध में हम प्रत्येक के बारे में किताब में छपवा रहे हैं। इसमें शिखा और सूत्र के बारे में बता भी रहे हैं। शिखा और सूत्र के बारे में एक हमारी पुस्तक भी है। पहले एक मोटी किताब भी थी, एक बड़ी किताब भी थी। पर अब बड़ी किताब तो रही नहीं, अतः एक अन्य छोटी किताब प्रकाशित कर रहे हैं। इस तरह से शिखा और यज्ञोपवीत के बारे में बहुत जानकारी हमको देनी है और हम जरूर देंगे, क्योंकि हमारे हिन्दू धर्म का मूल स्थापना स्तंभ यज्ञोपवीत है। पर आपने यज्ञोपवीत केवल उसी तरीके से पहनना शुरू कर दिया जिस तरह से आप मूर्तियों के बारे में कहते चले आ रहे हैं। मूर्तियों की स्थापना के बारे में मान्यता बनाकर और उनके बारे में चर्चा करते चले आ रहे हैं। कलेवर को मान्यता देने और उसमें भरी प्राणऊर्जा को, प्रेरणा को भूलते चले जा रहे हैं। संध्या तो करते हैं, पर यह नहीं मालूम कि संध्या का उद्देश्य क्या है ? संध्या क्यों की जाती है ? लोग साधु-संन्यासी तो बन जाते हैं, पर इसके उद्देश्यों का ज्ञान उन्हें नहीं होता है। साधु और संन्यासी वे होते हैं जिसने कि संकल्प लिया था कि हम समाज के लिए काम करेंगे, देश के लिए काम करेंगे, संस्कृति के लिए काम करेंगे। पर आज सर्वत्र उलटा ही दिखाई देता है। लोगों को मालूम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी नहीं कि साधु-संत कैसे होते थे ? आज तो जहाँ देखो वही लाल-पीले कपड़े पहनने वाले, चिमटा बजाने वाले और बाबाजी कहलाने वाले—संन्यासी कहलाने वालों की भीड़ नजर आती है। इससे तो संन्यास की महत्ता कम हो जाएगी और लोग बाबाजी की पूजा करने से इनकार कर देंगे, सम्मान करने से इनकार कर देंगे, आपने देखा नहीं। आप लोग देखिये, कुंभ के मेले में देखकर आइए। इससे यह मालूम हो जाता है कि विवेकशीलता का समाधान हमारे पास नहीं है।

लोग बार-बार हमारे पास आते हैं और पूछते हैं कि गुरुजी कितनी महँगाई है। इसका प्रभाव कुंभ जैसे मेलों पर भी पड़ा है। अभी भी आप देखेंगे कि हरिद्वार का, ऋषिकेश का, हर की पौड़ी का क्या हाल होता है ? लाखों आदमी आते हैं। पिछले साल भी आए थे, तब भी महँगाई थी। इस साल भी आने वाले हैं। आगे और भी ज्यादा आने वाले हैं। इसकी क्या वजह है कि इतने कम लोग आते हैं ? कुंभ में आने वालों का सफाया कैसे हो गया ? जब पहले पचासों हजार आदमी आते थे अब पच्चीस हजार भी नहीं है। कितने स्नान हो चुके। वसंत पंचमी का स्नान खत्म हो गया। शिवरात्रि का स्नान खत्म हो गया और कौन-कौन से दो खत्म हो गए। चार तो स्नान खत्म हो गए। पच्चीस हजार आदमी भी नहीं आये। इस व्यवस्था में ढेरों रुपया गवर्नमेण्ट का खर्च हो गया। अब देखिए क्या होता है ? अब एक ही स्नान रह गया है जो पहली तारीख को पड़ने वाला है। उसमें भी आप देख लेना बहुत थोड़ी-सी दस हजार की होगी। बहुत थोड़े-से आदमी आएँगे और वह भी उस दिन आएँगे, जिस दिन तेरह तारीख को कुंभ का मेला है। उसमें आपको कुछ भीड़-भाड़ दिखाई पड़ेगी। बस उसके बाद सफाया हो जाएगा। ऐसा क्यों हुआ कि किसी जमाने में कुंभ मेले का यह हाल होता कि इन मेलों में हिन्दुस्तान के सारे के सारे संत और सारे के सारे ऋषि और सारे के सारे ब्राह्मण, एक बड़ा-सा व्यापक सम्मेलन किया करते थे, जिसमें सभा, गोष्ठी और अधिवेशन होते थे। इन अधिवेशनों का ध्येय आध्यात्मिक होता था। वे कोई छोटे-मोटे नहीं होते थे, बल्कि बड़े और अच्छे अधिवेशन होते थे, जिसमें प्रत्येक संत और प्रत्येक ऋषि और प्रत्येक ब्राह्मण, प्रत्येक धर्मगुरु और प्रत्येक महंन्त इकट्ठा होते थे और विचार-विनिमय करते थे कि इस मानव समाज में आध्यात्मिकता की जो कमी आ गई है और धार्मिकता में जो न्यूनता आ गई है। धार्मिकता की निष्ठाएँ जो कमजोर पड़ गई है। उसका समाधान क्या है और हम लोग उसके लिए क्या काम करेंगे ? बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण फैसले हुआ करते थे। लोग इन अवसरों पर मिलते थे और बड़ा भारी काम किया करते थे। ये विचारों के यज्ञ थे। यह हमारी पार्लियामेण्ट थी जो बारह वर्ष पीछे इकट्ठी होती थी। एक बार फिर हरिद्वार में इकट्ठी हो गई और एक बार नासिक में हो गई। एक बार प्रयाग में इकट्ठी हो गई तो एक बार उज्जैन में। इस तरह हिन्दुस्तान के चारों कोनों में यह पार्लियामेण्ट बारी-बारी से इकट्ठी होती रहती है। जैसे कि ऑल इण्डिया काँग्रेस के अधिवेशन होते हैं। इस साल बम्बई में होने वाला है। तो अगले साल सौराष्ट्र में होने वाला है और फिर बिहार में होने वाला है, मद्रास में होने वाला है। इसी तरीके से कुंभ का मेला भी कभी नासिक में होने वाला है, कभी उज्जैन में होने वाला है, कभी हरिद्वार में होने वाला है, कभी इलाहाबाद में होने वाला है। वे सब जगह होते थे चारों दिशाओं में। इन कुंभ मेलों में हिन्दुस्तान भर के लोग आते थे, स्नान करते थे और विचार करते थे। लेकिन अब उस तरह की बात समाप्त हो गई। अब उस तरह की प्रथा समाप्त हो गई, उस तरह की परम्पराएँ समाप्त हो गई। अब किस तरह की परम्पराओं की शुरुआत हो गई ? अब इस तरह की परम्पराएँ शुरू हो गई कि नहाएगा पहले कौन ? बाबाजी नहाएगा पहले या पहले नागा नहाएगा ? वैरागी पीछे नहाएगा। नागा बाबा पहले क्यों नहाएगा ? वैरागी को कहना चाहिए कि नागाजी आप नंगे हैं, आप हट जाइए और देखिये आपको ठण्ड लग जाएगी। नागा साधु यह नहीं कहेगा कि पहले आप नहा लीजिए, हम पीछे नहा लेंगे। हमारी क्या है हम तो नंगे फिरते हैं, हमारे लिए ठण्ड की क्या बात है ? पर ऐसा नहीं होता। वह कहता है कि आप वैरागी हैं और आप तो कपड़े पहनते हैं। आपको कपड़े सुखाने पड़ेंगे। हमारे पास तो कपड़े भी नहीं हैं, हमें सुखाने भी नहीं पड़ेंगे, अतः हम पहले नहाकर चले जाएँगे, आप पीछे नहा लीजिएगा। इस तरह स्नान को लेकर कभी-कभी साधु-बाबाओं में सिर-फुटौवल की नौबत आ जाती है। कुंभ में नहाएगा तो नागा पहले नहाएगा और वैरागी नहाएगा तो उसका भूसा बना देगा। नागा बाबा कहें कि पहले हम नहाएँगे। अगर पहले तू नहाएगा तो तेरी आफत आएगी। वैरागी कहता है कि हम पहले आये, तो हम पहले नहाएँगे। ऐसे बाबा जी को प्रणाम है जो यह कहते हैं कि हमको पहले नहाना है तो हम नहाएँगे। ऐसे बाबाओं में से किसी को जरा भी शर्म और हया नहीं है कि जो पहले तो लिहाफ ओढ़कर के पड़े रहते हैं, कम्बल ओढ़कर रहते हैं। जाड़े के दिनों में लिहाफ ओढ़ते हैं, कम्बल ओढ़ते हैं और गर्मी के दिनों में दुपट्टा ओढ़कर लू से बचते हैं, लेकिन जब गंगाजी स्नान करने आते हैं तो जहाँ पर हजारों-लाखों की संख्या में स्त्रियाँ और बच्चे और बच्चियाँ होती हैं, उन लोगों के बीच लँगोटी पहनकर चलते हैं या नंगे होकर निकलते हैं तो उन्हें लज्जा, हया, शर्म नहीं आती। बाबाजी बनते हैं और संत बनते हैं और क्या-क्या बनते हैं ? उन्हें हया, शर्म आनी चाहिए। मित्रो ! इस तरह से जनता का समाधान क्या होगा, कैसे होगा ? जनता का समाधान नहीं होगा तो वह इन्हें मार डालेगी। जनता जीने नहीं देगी आपको और आपको सुनना, करना बंद कर देगी और कहेगी कि देखो अमुक बाबाजी आए हैं उनसे सावधान रहना।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इस तरह से मित्रो क्या हो जाएगा ? अनास्था का, उपेक्षा का वातावरण बन जाएगा यदि हमने आध्यात्मिकता के मर्म को नहीं समझा। अतः हमको यज्ञोपवीत और शिखा का समाधान करना पड़ेगा कि इनकी प्रेरणाएँ क्या हैं ? शिक्षाएँ क्या हैं ? आखिर क्या है इनमें ? तो और ये बुद्धिजीवी जनता उमड़ती और घुमड़ती क्यों चली आ रही है ? हर बात में क्यों और कैसे ? क्यों और कैसे ? का सवाल उठता चला आ रहा है। जनेऊ के बारे में, यज्ञोपवीत के बारे में आपको ये क्यों और कैसे का जवाब देना पड़ेगा ? गायत्री मंत्र और यज्ञ की व्याख्या करनी पड़ेगी। हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की व्याख्या करनी पड़ेगी। जनेऊ और शिखा पर हमारा कोई मन्तव्य नहीं है। हमें इन सवालों की स्तंभों की स्थापना के माध्यम से हर आदमी के हृदय में, हर आदमी के कलेजे में, हर आदमी के दिल में हिन्दू सभ्यता, हिन्दू संस्कृति के प्रति निष्ठा पैदा करनी पड़ेगी। कर्मकाण्ड हमारी पुस्तकों में लिख दिए गए हैं। आप इन कर्मकाण्डों की व्याख्या नहीं करेंगे, तो ये खत्म हो जाएँगे, यह तथ्य आपको मालूम होना चाहिए।

यज्ञ की हम व्याख्या करते हैं तो आप हमसे कहते हैं कि गुरुजी आप यज्ञ की व्याख्या क्यों करते हैं ? आप तो दनादन हवन कराइए और धड़ाधड़, तड़ातड़ आँसू गिराइये। व्याख्या क्यों करते हैं ? बेटा, हम व्याख्या नहीं करेंगे तो लोग हवन में से उठा करके फेंक देंगे। पिछले दिनों हमारे यहाँ क्या हुआ ? मथुरा में एक वकील थे उन्होंने अपनी लड़की जो एम. ए. पास थी, का एक लड़के से ब्याह किया जो विलायत पास होकर के आया था। बारात आई, खूब जोर-शोर से, बहुत धूम-धाम से उन्होंने शादी की। लड़के और लड़की दोनों बैठे हुए थे जहाँ संस्कार हो रहा था। भाँवर पड़नी थी। पंडित लोग बहुत जोर-जोर से श्लोक बोल रहे थे—चावल रखिए, हाथ रखिए, ऐसे कीजिए, वैसे कीजिए, सब चावल फेंक दीजिए और दीपक को प्रणाम कीजिए, ढाई रुपया इसमें दक्षिणा का और नौ पैसे यहाँ रखो और तीन पैसे यहाँ रखो। लड़के ने पूछा पंडित जी गुस्ताखी माफ करें तो एक बात पूछूँ ! हाँ ! हाँ ! पूछो बेटा जो पूछना हो। यह आप क्या कह रहे हैं ? आप जो कुछ बहुत देर से कह रहे हैं यह हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा है और ये पंडित जी बोलते हैं वह भी समझ में नहीं आ रहा कि आप लोग क्या बोलते हैं। मैंने देखा कि पंडित जो था वह समझदार था, उसने कहा—जो बात कहनी चाहिए वह हम संस्कृत में कह रहे हैं। आपको जो प्रतिज्ञा करनी चाहिए, जो देवताओं को आश्वासन देना चाहिए, जो अपनी स्त्री से वायदा करना चाहिए हम सब संस्कृत में कह रहे हैं और तुमको जो नियम पालन करना चाहिए वह भी संस्कृत में हम कह रहे हैं। लड़के ने कहा अच्छा बाबा, हम समझ गये जो आप हमारे लिए बयान दे रहे हैं। जैसे कोई वकील कचहरी में बयान देता है, कोर्ट में बयान देता है उसी तरह से आप हमारी तरफ से बयान दे रहे हैं। हाँ बेटा अब समझ गया तू ! हम तुम्हारी तरफ से वकील हैं, मुख्तियार हैं और तेरी तरफ से बहस कर रहे हैं और तेरी तरफ से बयान दे रहे हैं और तू चुपचाप बैठा हुआ है और ये पंडित जी क्या कर रहे हैं ? ये पंडित जी जो हैं, लड़की को जो बहस करनी चाहिए, जो प्रतिज्ञा कहनी चाहिए और जो नियम पालन करने चाहिए—जो कुछ इसे बात कहनी चाहिए वह ये पंडितजी कह रहे हैं। तो ये लड़की ? ये लड़की यहीं है, यहीं बैठी रहेगी इसके गुरु हम हैं। इसके मुख्तियार हम हैं और ये करेंगे और वो करेंगे। अच्छा पंडितजी, अब हम समझ गए और हम आपके आभारी हैं कि समझा दिया आपने हमको।

उसने लड़की से कहा—तो एक काम करते हैं चलो तुम्हें बाहर घुमा लाएँ और मिला लाएँ उन लोगों से जो लोग हमको देखने आए हैं। हम उनका स्वागत करेंगे और उनके हाथ जोड़ेंगे और उन पंडितजी से कहा—अब क्या काम बाकी रह गया है ? पंडित जी बोले—अब बेटा थोड़ा-सा काम रह गया है। परिक्रमा करनी है और भाँवर पड़नी है और सब कुछ कर लिया। तो ऐसा कीजिए पंडितजी आप लोग आपस में भाँवर कर लीजिए और ब्याह रचा लीजिए। जब आप हमारे बदले की बात कह सकते हैं तो आप परिक्रमा या भाँवर क्यों नहीं ले सकते ? आप आपस में एक-दूसरे की बाँह पकड़ लीजिए और बाकी सभी काम पूरा कर लीजिए और हमें जाने दीजिए। बात तो थी मजाक की, परन्तु मैंने उसे बहुत गंभीरता से लिया। मैंने बहुत विचार-मंथन किया कि हमें अपने बच्चों को इस बात की जानकारी देनी चाहिए कि कर्मकाण्डों के पीछे क्या रहस्य छिपा है ? कर्मकाण्डों का, क्रिया का, हवन का क्या उद्देश्य है ? क्यों इसमें घी डाली जाती है ? क्यों लकड़ी डाली जाती है ? क्यों आग में समिधा और हवन-सामग्री डाली जाती है ? आरती क्यों उतारी जाती है ? और घी में हाथ क्यों मला जाता है ? भस्म क्यों लगाई जाती है ? ये सारे के सारे क्रिया-कृत्यों का, कर्मकाण्डों का शिक्षण हम देने में समर्थ नहीं हो सके तो मित्रो ! अगली पीढ़ी में कर्मकाण्डों का यही हाल होगा जैसे कि मैंने अभी एम. ए. पास उक्त लड़की के बारे में बताया। अगर आप इन बातों को समझाएँगे नहीं, बताएँगे नहीं तो ? आपका भी वही हाल होगा जो उन पंडितजी का हुआ था। अतः आपको इन बातों को समझाना पड़ेगा, बताना पड़ेगा हमको संन्यास की महत्ता बतानी पड़ेगी, समझानी पड़ेगी कि व्यक्ति संन्यासी क्यों होता है ? और क्यों होना चाहिए ? संन्यासी को क्या करना चाहिए और वह क्या-क्या करता है ? संन्यासी का स्वरूप साफ नहीं करेंगे तो आप देखना—अभी कुंभ में २५ हजार आदमी तो भी हैं, पर अगले वाले कुंभ में पाँच हजार आदमी भी नहीं आयेंगे और इसी तरह से गवर्नमेण्ट की पुलिस और गवर्नमेण्ट के सफाई मजदूर और गवर्नमेण्ट के टीका लगाने वाले बैठे रहेंगे। कोई नहीं आएगा। कहेगा इन पागलों के पास जाने की जरूरत क्या है ? ये नागा, ये पंडे और जो शहरों में रहते हैं और सड़कों पर नंगे फिरते हैं, उन्हें देखने कौन जाएगा ? और किसलिए जाएगा ? उनसे अच्छे तो वे हैं जो कोढ़ी हैं, अपाहिज हैं, लँगड़े हैं, अपंग

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। लोग उन्हें खिलाते हैं। वस्तुतः वे ही समाज सेवक हैं, ये ही लोकसेवी हैं, जो जनता की भलाई करते हैं। नहीं साहब, जो भजन करते हैं, ध्यान करते हैं, वे लोकसेवी हैं। नहीं, ऐसा नहीं है। भजन करते हैं—तो अपने घर करें, मेहनत करें, मशक्कत करें। जो आदमी मेहनत करता है और अपने हाथ-पाँव की कमाई खाता है, वही स्वर्ग-मुक्ति का अधिकारी है। बैकुण्ठ आपको तभी मिलने वाला है, स्वर्ग आपको तभी मिलने वाला है, मुक्ति आपको तभी मिलने वाली है, सिद्धि तभी आपको मिलने वाली है, चमत्कार आपको तभी मिलने वाला है और यश आपको तभी मिलने वाला है, जब आप मेहनत करेंगे, मशक्कत करेंगे। तो आप पैसा खर्च कीजिए, नहीं साहब, हम तो भजन करेंगे और ऐसे ही मुफ्त में भोजन खाएँगे और पैसे कमाएँगे। नहीं भाईसाहब, अब ऐसा नहीं चलने वाला है।

इसलिए मित्रो ! क्या होने वाला है ? अगले दिनों क्या स्थापना होने वाली है ? अगले दिनों विवेकशीलता की स्थापना होने वाली है। हम उस विवेकशीलता की स्थापना करने से डरने वाले नहीं हैं। हम विवेकशीलता से डरते नहीं हैं। हम बहस करने वालों से डरते नहीं हैं। हमें जो सबसे बड़ा भय है, वह उस आदमी का है, जो बिल्कुल जड़ हो गया है, जिसकी अक्ल रूढ़िवादिता में बदल गई है। जिसके मन में क्यों और कैसे का सवाल पैदा नहीं होता ? हमको उससे है डर। हमको उससे डर नहीं है जो महात्माओं की निन्दा करता है, जो महात्माओं से जवाब-तलब करता है। हमको उस आदमी का भय नहीं है क्योंकि हमारे पास ऐसे जबरदस्त जवाब हैं कि हम उसके दिमाग को घुमा सकते हैं, हम उसके हृदय को हिला सकते हैं। उसके मन को हिला सकते हैं, हमारे पास बहुत जबरदस्त दलीलें हैं। मित्रो ! हमारे पास हर आदमी की दलीलों का जवाब देने के लिए हर आदमी को वास्तविकता समझाने के लिए तर्क है। इसीलिए हम बात वहाँ से शुरू करेंगे, जहाँ से कि उसका हर बात में रोना शुरू होता है। जहाँ वह प्रश्न करता है कि शिखा से क्या फायदा ? उसने बहुत सवाल कर लिया। अब हम उसकी बात का जवाब देंगे। अब हमारी बारी आई है, हम जवाब देंगे। अब हम यह सिद्ध करेंगे कि जनेऊ क्यों पहनना चाहिए ? जनेऊ से क्या हो सकता है ? इसको हिन्दू धर्म की, हिन्दू संस्कृति की स्थापना करने के लिए और उसकी विचारणा और प्रेरणाओं को हर घर में, जन-जन में स्थापित करने के लिए हम चलेंगे। हम और आप कदम से कदम मिलाकर सारे भारतवर्ष में, सारे विश्व में इसलिए चलेंगे कि हमारे हिन्दू धर्म का जो मान था, उसकी जो गौरवमयी परम्परा थी, उसकी पुनः स्थापना की जा सके।

इसके लिए करना क्या होगा ? हम इसके स्तंभों की स्थापना करेंगे, प्रतीकों की, सिम्बलों की स्थापना करेंगे। प्रतीकों की स्थापना करने के बाद, सिम्बलों की स्थापना करने के बाद हम उसकी व्याख्या करना शुरू करेंगे, विवेचना करना शुरू करेंगे। निष्ठा और आस्था का जमाना शुरू करेंगे। यह है हमारे गायत्री और गायत्री यज्ञ अभियान का एक अंश, जिसको हमने शिखा-सूत्र आंदोलन के रूप में लिया है। इसको हमने गायत्री मंत्र और गायत्री यज्ञ के साथ जोड़कर रखा है। आपको इसके लिए तैयार होना चाहिए और सारे भारतवर्ष में और सारे विश्व में शिखा-सूत्र की स्थापना करनी चाहिए। इसके लिए हमें कमर कसकर खड़ा होना चाहिए। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति।

नवरात्रि साधना का तत्त्वदर्शन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो !

नवरात्रि अब समाप्त होने जा रही है। आइए जरा विचार करें, इन दिनों हमने क्या किया व किसलिए किया ? इन दो ,प्रश्नों के उत्तर ठीक तरह से सोच लेंगे तो यह सम्भावना भी साकार होती चली जाएगी कि इससे हमें क्या मिलना चाहिए व क्या फायदा होना चाहिए ? आपकी सारी गतिविधियों पर हमने दृष्टि डाली व उसमें से यह निष्कर्ष निकाले हैं कि आपको अपने स्वाभाविक ढर्रे में हेर-फेर करना पड़ा है। स्वाभाविक ढर्रा यह था कि आप बहुत देर तक सोए रहते थे। दिन में जब नींद आ गई सो गए, रात्रि देर तक जगते रहे। अब ? अब हमने आपको दबोच दिया है कि सबेरे साढ़े तीन बजे उठना चाहिए। उठना ही पड़ेगा। नहाने का मन नहीं है। नहाना ही पड़ेगा। ये क्या किया ? यह हमने आपको दबोच दिया व पुराने ढर्रे में आमूलचूल हेर-फेर कर दिया है।

आप क्या खाते थे—हमें क्या मालूम ? आप नीबू का अचार भी खाते थे, पापड़ भी खाते थे, चटनी भी खाते थे, जाने क्या-क्या खाते थे ? हमने आपको दबोच दिया, कहा—यह नहीं चल सकता। यह खाना पड़ेगा व अपने पर अंकुश लगाना पड़ेगा। टाइम का आपका कोई ठिकाना नहीं था। जब चाहा तब बैठ गए। मन आया तो पूजा कर ली, नहीं आया तो नहीं की। अब आपको व्रत व संकल्प के बंधनों में बाँधकर हमने दबोच दिया कि सत्ताईस माला तो नियमित रूप से करनी ही होंगी। ढाई घंटे तो बैठना ही पड़ेगा। संकल्प लेने के बाद उसे पूरा नहीं करेंगे तो गायत्री माता नाराज होंगी, आपको पाप लगेगा, आप नरक में जाएँगे, अनुष्ठान खंडित हो जाएगा, यह डर आपको दिखाकर आपको दबोच दिया गया। पूर्व की गतिविधियों में हेर-फेर करके आपको इस बात के लिए मजबूर किया गया कि जो आदतें अपने स्वभाव में नहीं हैं, उनका पालन भी करना आना चाहिए।

क्या नौ दिन मात्र काफी नहीं हैं ? नहीं, नौ दिन काफी नहीं हैं। यह अभ्यास है सारे जीवन को कैसे जिया जाना चाहिए, उसका ? आप इस शिविर में आकर और कुछ सीख पाए कि नहीं पर एक बात अवश्य नोट करके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाना। क्या ? वह है अध्यात्म की परिभाषा अर्थात् 'साइंस ऑफ सोल', अपने आपको सुधारने की विधा, अपने आपको सँभालने की विधा, अपने आपको समुन्नत करने की विधा। आपने तो यह समझा है कि अध्यात्म अर्थात् देवता को जाल में फँसाने की विधा, देवता की जेब काटने की विधा। आपने यही समझ रखा है न। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आप जो सोचते हैं बिल्कुल गलत है। जब तक बेवकूफी से भरी बेकार बातें आप अपने दिमाग में जड़ जमाए बैठाये रहेंगे, तब तक आप भटकते ही रहेंगे, झख ही मारते रहेंगे। खाली हाथ मारे-मारे फिरेंगे। आप देवता को समझते क्या हैं ? देवता को कबूतर समझ रखा है, जो दाना फैला दिया और चुपके-चुपके कबूतर आने लगे। बहेलिया रास्ते में छिपकर बैठ गया, झटका दिया और कबूतर रूपी देवता फँस गया। दाना फेंककर, चावल फेंककर, नैवेद्य फेंककर, धूपबत्ती फेंककर बहेलिए के तरीके से फँसाना चाहते हैं, उसका कचूमर निकालना चाहते हैं ? इसी का नाम भजन है ? तपश्चर्या, साधना क्या इसी को कहते हैं ? योगाभ्यास का सिद्धांत यही है ? मैं आपसे ही पूछता हूँ, जरा बताइए तो सही।

आप देवियों को क्या समझते हैं ? हम तो मछली समझते हैं। आटे की गोली बनाकर फेंकी व बगुले की तरह झट उसे निगल लिया। धन्य हैं आप। आपके बराबर दयालु कोई नहीं हो सकता। मछली को पकड़ा तो कहा कि बहिनजी आइए जरा। आपको सिंहासन पर बैठाएँगे, आपकी आरती उतारेंगे और आपका जुलूस निकालेंगे। ऐसी-ऐसी बातें करते हैं और जीवन भर इसी प्रवंचना में उलझे रहते हैं। देवियाँ कौन हैं ? मछलियाँ। देवता कौन हैं ? कबूतर। आप कौन हैं ? बहेलिया। यही धंधा है। चुप। बहेलिए का मछली मार धंधा करता है कहता है हम भजन करते हैं, हम देवी के भक्त हैं। हम आस्तिक हैं। चुप, खबरदार। कभी मत कहना ऐसी बात। इसी को भजन कहते हैं तो हम यह कहेंगे कि यह भजन नहीं हो सकता आप ध्यान रखिएगा। आप अपने ख्यालातों को सही कीजिए, अपने विचारों को सही कीजिए, अपने सोचने के तरीके को बदलिए यह हम आपको कहते हैं।

मित्रो ! मैं आपसे कह रहा था कि आप एक सिद्धांत यहाँ से नोट करके ले जाना कि अध्यात्म का अर्थ होता है—अपने आपको सही करना—साइंस ऑफ सोल। यह आत्मा को चेताने का विज्ञान है। चमत्कारों, मैजिक व सिद्धियों का विज्ञान नहीं है। सीधा-सादा-सा अर्थ है—अपने आपे को कैसे सही रखा जाए, यह प्रशिक्षण देने की विधा। जब आप अपने आपको सही कर लेते हैं तो यकीन रखिए कि आपकी सभी समस्याओं का हल स्वतः हो जाता है। फिर एक भी समस्या ऐसी नहीं है जो ठीक न हो सके। आपकी सेहत खराब रहती है न। चलिए अध्यात्म का मर्म समझिए व देखिए आप स्वस्थ होते हैं कि नहीं। बीमारियों से हमने एक बार पूछा—क्यों बहिनजी ! आप मारी-मारी फिरती हैं, चाहे जिस पर हमला कर देती हैं, चाहे जिसको बीमार कर देती हैं। ये क्या बात है ? बीमारियों ने कहा—जो हमें बुलाता है, हम उसके पास जाते हैं ? मनुष्य अपने असंयम द्वारा हमें हमेशा आवाज देता रहता है, बुलाता रहता है तो हम उसी के साथ बनी रहती हैं। आपने देखा, सुना ? बीमारी कभी कबूतर के पास नहीं जाती, बंदर के पास नहीं जाती सिर्फ आपके पास आती है। क्यों ? क्योंकि आप बुलाते हैं। आप दैवी प्रकोपों को बुलाएँगे तो वे आएँगे व आप सौभाग्यों को बुलाएँगे तो वे आएँगे। आप कहेंगे नहीं, हम बीमारियों को नहीं बुलाते, दैवी प्रकोपों-दुर्योगों को नहीं बुलाते तो ऐसा ही होगा। पर काम तो वही करते हैं, जिससे बीमारी को आना चाहिए व आपके पास सतत् बैठे रहना चाहिए। आप अपनी जीभ पर लगाम लगाइए, इंद्रियों पर नियंत्रण कीजिए, टाइम-टेबल को ठीक कीजिए, तब देखिए कि क्या होता है, आपको कौन बीमार करता है ?

गाँधी जी तीस साल की उम्र के थे। आँतें सूख गई थीं। रोज एनीमा से दस्त करते थे। उन्होंने लिखा है कि जब वे दक्षिण अफ्रीका में थे तो सोचते थे कि यही कोई पाँच बरस और जिएँगे। एनीमा सेट कोई उठा ले गया व जंगल में फँस गए तो बेमौत मारे जाएँगे। जिंदगी का अब कोई ठिकाना नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। गाँधी जी ने अपने आपको ठीक कर लिया, सुधार लिया। अपना आहार ठीक कर लिया तो आँतें भी उसी क्रम से ठीक होती चली गईं। ८० वर्ष की उम्र में वे मरे। मरने से पहले वे कहते थे अभी हम १२० साल तक जिएँगे। मेरा ख्याल है कि वे जरूर जिए होते यदि गोली का शिकार नहीं होते। जब गाँधी जी की आँतें उन्हें क्षमा कर सकती हैं, शरीर उन पर दया कर सकता है तो आपके साथ यह क्यों नहीं हो सकता ? शर्त एक ही है कि आप अपनी जीभ को छुट्टल साँड़ की तरीके से न छोड़कर उस पर काबू करना सीखें। जीभ ऐसी, जिसने आपकी सेहत को खा लिया, आपके खून को खा लिया, माँस को खा लिया। कौन जिम्मेदार हैं—जीवाणु, वातावरण। नहीं, आप स्वयं व आपकी यह जीभ। यदि आप इसे काबू में कर सकें तो मैं बीमारियों की ओर से मुख्तारनामा लिखने को तैयार हूँ कि आपको कभी बीमारी नहीं होने वाली।

ऐसे कई नमूने मेरे सामने हैं, जिसमें लोगों ने नेचर के कायदों का पालन करके अपनी बीमारी को दूर भगा दिया। चंदगीराम भरी जवानी में तपेदिक के मरीज हो गए थे। कटोरा भर खून रोज कफ के साथ निकलता था। हर डाक्टर ने कह दिया था कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है। एक सज्जन आए व बोले, आप अगर मौत को पंसद करते हों तो उस राह चलिए व यदि जिन्दगी पसंद हो तो मेरे बताए मार्ग पर चलिए। जिंदगी का रास्ता क्या ? अपने ऊपर संयम, जीभ पर संयम। आहार का संयम, विहार का संयम। शरीर से श्रम कीजिए व वर्जिश कीजिए। प्राणों का सागर चारों तरफ भरा पड़ा है, खींचिए। सादा भोजन कीजिए व सीमा में करिए। फिर देखिए, क्या होता है ? देखते-देखते टी. बी. का रोगी वह व्यक्ति पहलवान चंदगीराम बन गया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आप में से हर व्यक्ति पहलवान बन सकता है, अपनी कमजोरियाँ ठीक कर सकता है, अपनी सेहत ठीक कर सकता है, अपनी परिस्थितियाँ अपने अनुकूल बना सकता है, तनाव भरी इस दुनिया में भी प्रसन्नतापूर्वक रह सकता है। पर क्या करें मित्रो ! आप दूसरों को, उसकी कमियों को तो खूब देखते हैं पर अपनी कमियों-गलतियों, असंयमों को कम देखते हैं। अपने आप पर नियंत्रण बिठाने का आपका कोई मन नहीं है। इसीलिए मैं आपको कभी अध्यात्मवादी नहीं कह सकता। मात्र दीन-दुर्बल आदतों का गुलाम भर कह सकता हूँ।

मित्रो ! मैं आपको इस नवरात्रि अनुष्ठान के बारे में बताते हुए मूलभूत सिद्धांतों की समीक्षा कर रहा था। यहाँ हमने आपको दबोचा है, क्यों ? क्योंकि आप अपने सोचने के तरीके से लेकर रहन-सहन, आहार-विहार के तरीकों को जब तक इस गलत प्रकार से अख्तियार किए रहेंगे, सुधार और हेर-फेर नहीं करेंगे तब तक आपकी एक भी समस्या हल नहीं होने वाली। नहीं गुरुजी ! आप तो वरदान-आशीर्वाद देते हैं। सिद्ध पुरुष हैं। हाँ, हैं हम वरदान भी देते हैं व आशीर्वाद भी। लोगों को चमत्कार भी दिखा देते हैं, यह बात भी सही है। पर हम देते उन्हीं को हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं, पहले अपने आपको ठीक करने के लिए एक कदम आगे बढ़ाते हैं। चमत्कार तो सिरदर्द के लिए एस्पीरिन की दवा की तरह है। आप ठीक हो जाते हैं ? नहीं, आप तब तक ठीक नहीं हो सकते, जब तक पेट ठीक नहीं करेंगे। टाइमली रिलीफ हम देते हैं पर ताकत तो ठीक होने की अंदर से उभारनी पड़ेगी। खून हम बाहर का आपको इसलिए लगाते हैं ताकि आपका अपना सिस्टम काम करना आरंभ कर दे। वरदान-चमत्कार किसी को परावलम्बी बनाने के लिए नहीं, उसे सहारा देने के लिए ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

नवरात्रि अनुष्ठान में यही अध्यात्म के मूलभूत सिद्धांत मैंने आपको समझाने का प्रयास किया कि आप अपने पैरों पर खड़ा होना सीखिए। अपने चिंतन और व्यवहार को सही ढंग से रखना सीखिए। आपकी अब तक की जिंदगी बहमों में बीत गई। अब उनसे मुक्ति पाना सीखिए। अपने आपको दबोचना सीखिए यह नवरात्रि अनुष्ठान का तपश्चर्या वाला हिस्सा है, जिससे हमने आपको अपने आप पर नियंत्रण करना सिखाया। यह बताया कि कम खाने से शरीर का कोई नुकसान नहीं बल्कि लाभ ही होता है। इसलिए आपको आदतें बदलकर उपवास करना सिखाया, अस्वाद व्रत समझाया। आध्यात्मिक प्रगति के रास्ते का यह पहला कदम है।

आहार संयम के बाद हमने आपको कहा था कि आपको विचारों पर संयम रखना आना चाहिए। आपको ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए। गायत्री माता का फोटो आपने रखा था अपने सामने व उसी की आरती रोज करते रहे। क्यों ? कभी सोचा आपने ! मूर्ति क्यों रखी है, सोचा आपने ? बताइए इस चित्र व मूर्ति को देखकर कि इसकी उम्र कितनी होनी चाहिए ? आपने देखा कि वह बीस साल की जवान युवती जैसी है। अस्सी साल की बुढ़िया तो नहीं है ? नहीं गुरुजी, वह तो उठती उम्र की जवान षोडषी दीखती है। आपका ख्याल ठीक है। यह हमने जान-बूझकर बनाई है। गायत्री माता की असली उम्र तो न जाने कितनी है ? जब हम अपने गुरुजी की उम्र सात सौ साल बताते हैं तो सोच सकते हैं कि गायत्री माता की उम्र क्या व कितनी होगी ? उस उम्र की आप कल्पना भी नहीं कर सकते। सृष्टि जितनी पुरानी है, उससे भी कहीं अधिक आयु की यह गायत्री माता है। फिर १६ साल की यह सुन्दर नयन-नक्शों वाली युवती क्यों बनाई ? अरे ! हमने आपको विचार करना सिखाया कि युवा नारी के बारे में आपको पवित्र दृष्टि रखते हुए यौन-शुचिता का अभ्यास करना चाहिए। आप बेहूदे हैं। नारी को बाहर के तरीके से देखते हैं। नारी में आपको माता, बहिन, बेटी नहीं दिखाई पड़ती। आपको तो सब वेश्या ही वेश्या दिखाई पड़ती हैं। हम आपकी दृष्टि बदलना चाहते हैं। कामुकता प्रधान चिंतन से आपको निकालकर एक नई दृष्टि देना चाहते हैं। यही मानसिक ब्रह्मचर्य है। आपको इसका, मर्यादा का पालन करना चाहिए, यह हमने आपको सिखाया।

आप कहेंगे गुरुजी हम तो ब्रह्मचारी हैं। एक बार जेल चले गए थे, मारपीट हो गई थी तो हम ढाई वर्ष पत्नी से दूर जेल में रहे। हाँ साहब आप तो पक्के ब्रह्मचारी हो गए। अखंड ब्रह्मचर्य से भारी तेजस्वी आँखों में आशीर्वाद-वरदान की क्षमता आप में आ गई। पागल हैं ना आप। ढेरों आदमी बीमार होते हैं, नपुंसक हो जाते हैं, सब ब्रह्मचारी होते हैं। काहे का ब्रह्मचारी। मित्रो ! ब्रह्मचर्य चिंतन की शैली है। आपके विचारों का प्रतीक है, जो आपके जीवन में एक अंग बन गए हैं। जो संस्कार आपके जन्म-जन्मांतरों से चले आ रहे हैं, उनका एक रूप आपकी कुदृष्टि व विचारों की झलकी के रूप में देखने को मिलता है। किसी जमाने में आप ८४ लाख योनियों में एक कुत्ते भी थे क्या ? हाँ गुरुजी जरूर रहे होंगे। बढ़ते-बढ़ते तभी तो अब आदमी बने हैं। जब कुत्ते रहे होंगे तब आपके सामने माँ-बहिन का कोई रिश्ता था ? नहीं साहब !

मित्रो ! हम ये कह रहे थे कि आप गलत सोचने का तरीका अपना बदल लें। रहन-सहन के तरीके बदल लें। जो साधन-सामग्री आप के पास है, रुपया-पैसा, चाँदी, जमीन है, अक्ल है, इनका सदुपयोग करना आप सीख लें। आपके कमाने का क्या तरीका है ? मुझे नहीं मालूम। पर आप एक बात का जवाब दीजिए कि आप इन्हें खर्च कैसे करते हैं ? किस आदमी ने कैसे कमाया यह हिसाब मैं नहीं करता। मैं तो अध्यात्म की दृष्टि से विचार करता हूँ कि किस आदमी ने कैसे खर्च किया ? जो कमाया वह खर्च कहाँ हुआ ? मुझे खर्च का ब्यौरा दीजिए। बस ! अगर आप खर्च अपव्यय में करते हैं गलत कामों में करते हैं, फिजूलखर्ची करते हैं तो मैं आध्यात्मिक दृष्टि से आपको बेईमान कहूँगा। आप कहेंगे, हमारी कमाई है। हाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आपकी ही कमाई है, पर आप खर्च करते हैं। यह बताइए आपका धन, आपकी अक्ल, आपके साधन, श्रम किन कामों में खर्च होते हैं ? इनका ब्यौरा लाइए, उसकी फाइल पेश कीजिए हमारे सामने। आपने बेटे को खैरात में बाँट दिया, ऐय्याशी में उड़ा दिया, जेवर बनवाने में खर्च कर दिया तो हम आपको अध्यात्मवादी कैसे कहें ? खर्च के बारे में भगवान का बड़ा सख्त नियंत्रण है।

आदमी को हम अध्यात्म का अंकुश लगाते हुए ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसा आदमी जीने को कहते हैं। आपको ५०० रुपये तनख्वाह मिलती है। लेकिन आप उसे औसत नागरिक के नाते खर्च कीजिए। विद्यासागर की तरह ५० रुपयों में अपनी गृहस्थी का गुजारा करें व ४५० रुपयों में अन्यों के लिए, समाज के लिए, दुःखी-अभावग्रस्तों के लिए सुरक्षित करिए। उनके साढ़े चार सौ रुपयों से हजारों विद्यार्थी निहाल हो गए। जो फीस नहीं दे सकते थे, जो कापी नहीं खरीद सकते थे, जिनके पास मिट्टी का तेल नहीं था उनके लिए सारी व्यवस्था विद्यासागर ने अपने यहाँ कर रखी थी। इसे क्या कहते हैं—यह अध्यात्म है। अध्यात्मवादी आप कब होंगे, मैं यह नहीं जानता किन्तु जिस दिन अध्यात्मवादी बनने का सिलसिला शुरू हो जाएगा, तब फिर मैं आपको भगवान की शपथ देकर, अपने अनुभव की साक्षी देकर विश्वास दिलाऊँगा कि अध्यात्म के बराबर नगद फल देने वाली चमत्कारी विद्या कोई नहीं हो सकती। लाटरी लगाने, जेब काटने से भी ज्यादा फायदेमंद दूरदर्शिता भरा रास्ता है अध्यात्म का। यह आप समझ गए तो आपका मानसिक कायाकल्प, आध्यात्मिक भावकल्प हो जाएगा व नवरात्रि साधना सफल मानी जाएगी।

इस बीच अपने आप से नित्य अग्निहोत्र करने को कहा, जप का एक अंश अग्निहोत्र कीजिए। आप अग्निहोत्र को एक कर्मकांड मान बैठे हैं। अग्निहोत्र यज्ञ-विज्ञान का नाम है। यह एक परम्परा ही नहीं, इसका साइंटिफिक बेस भी है। यज्ञ कहते हैं कुर्बानी को, सेवा को। भूदान यज्ञ, नेत्रदान यज्ञ, सफाई यज्ञ, ज्ञानयज्ञ हजारों तरह के यज्ञ हैं। इन सबका एक ही अर्थ होता है लोक हितार्थ आहुति देना। यज्ञ कीजिए, पूर्णाहुति दीजिए, पर जनकल्याण का ध्यान रखिए। संस्कृति की रक्षा के लिए, देश और मानवी आदर्शों को जीवंत रखने के लिए अपने पसीने की आहुति दीजिए, अपनी ज्ञान की आहुति दीजिए, उस चीज की भी आहुति दीजिए जिसे आपने दाबकर रखा है अपने बेटे के लिए। मित्रो ! अगर आप ऐय्याशी, फिजूलखर्ची, विलासिता की कुर्बानी देने की हिम्मत दिखा सकें तो यज्ञ सफल है। तब आप असली अध्यात्मवादी होंगे। जिस दिन आप ऐसे बन जाएँगे, तब आप देखेंगे असली चमत्कार। उस दिन आप देखेंगे असली भगवान। तब आपको सुदामा के तरीके से आपके चरणों को धोता हुआ, शबरी के तरीके से आपके दरवाजे पर झूठे बेर खाता हुआ और राजा बलि के तरीके से आपके दरवाजे पर साढ़े तीन गज जमीन माँगता हुआ, गोपियों के दरवाजे पर छाछ माँगता हुआ आपको भगवान दिखाई पड़ेगा।

आइए, भगवान ने आपको बुलाया है। जेब खाली कीजिए। बीज के तरीके से गलिए और दरख्त की तरह फलिए। मैंने यही जीवन भर सीखा व आपको भी सिखाना चाहता हूँ। आपको यदि यह समझ में आ गया तो मैं पूरे मन से आशीर्वाद देता हूँ कि जो भी नवरात्रि अनुष्ठान के, गायत्री साधना के चमत्कार आपने सुने हैं वह आपके जीवन में फलित हो जाएँ। आप जिस मकसद से आए थे, वह पूरा हो व आप जब भी अनुष्ठान करें समूचा लाभ उठा सकें, इसलिए आपको कुछ बातें मैंने बताईं। भगवान करे आपको यह समझ में आए व आप लाभान्वित हों। हमारी बात समाप्त।

ॐ शांति।

हेमाद्रि संकल्प और उससे जुड़े अनुशासन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आज श्रावणी का पुनीत पर्व है, जिसको मनाने के लिए हम और आप एकत्रित हुए हैं। आइये विचार करें कि यह पर्व हमारे लिए क्या संदेश लेकर आया है और क्या दिशा-धारा निर्धारित करने आया है। हमारी महान परम्पराएँ हैं जो प्रायः हमारे स्मृति-पटल से बिखर जाती हैं, जिन्हें हम भूल जाते हैं। हम लोगों के साथ कुछ ऐसा ही है। आदमी का झुकाव, मनोवृत्तियों का झुकाव नीचे की दिशा में है। ऊपर की दिशा में चलने के लिए बड़े प्रयत्न करने पड़ते हैं। कुएँ में से पानी निकालने के लिए कई तरह की मेहनत करनी पड़ती है। जमीन से, सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने के लिए कई तरह के इंतजाम करने पड़ते हैं। छत पर से नीचे गिरना हो तो कुछ मेहनत करने की जरूरत नहीं है। किसी खड्डे में कोई चीज आपको धकेलनी हो तो मेहनत करने की जरूरत नहीं है। ऊपर चढ़ाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। इसीलिए ऋषियों के द्वारा भारतीय संस्कृति का स्वरूप इस तरीके से बनाया गया है कि जिससे आदमी को ऊँचा उठने का, आगे बढ़ने का मौका मिल सके। मनुष्य गिरता तो है ही, गिरने में क्या दिक्कत है ? मन की बनावट ही ऐसी है। इसके अन्दर जन्म-जन्मान्तरों के पशुवत् संस्कार चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद आ गये हैं। ये कुसंस्कार आदमी के लिए काफी हैं कि उसी नीचे गिराते रहें और नीचे की वृत्तियों की तरफ उसका ध्यान आकर्षित करते रहें। इसमें कुछ करना नहीं है।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संस्कृति किसलिए बनायी गयी ? धार्मिक परम्पराएँ और अध्यात्म का ढाँचा किसलिए बनाया गया ? अध्यात्म का ढाँचा और संस्कृति की परम्पराएँ सिर्फ एक काम के लिए बनायी गयीं कि मनुष्य को ऊँचा उठाया जाए, आदमी को आगे बढ़ाया जाए। इन दो उद्देश्यों को लेकर संस्कृति बनायी गयी है। भारतीय संस्कृति में त्योहारों और पर्वों का अपने आप में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्रावणी का तो सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण स्थान है। ब्रह्मकर्म में श्रावणी का पहला नम्बर आता है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी श्रावणी पर्व अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। अनेक पर्वों के अपने-अपने आधार हैं। हमारा आर्थिक संतुलन किस तरीके से स्थित रहे और हमारी अर्थोपार्जन से लेकर के अर्थ के व्यय करने तक की नीति क्या होनी चाहिए—ये आधार हैं दीपावली का। विजयादशमी का त्योहार है जो हमको विजय प्राप्त करने के लिए, विजयी और सफल जीवन जीने के लिए, भौतिक सामर्थ्यों का किस तरीके से संकलन करना चाहिए, हथियारों से कैसे सुसज्जित रहना चाहिए, स्वास्थ्य-सम्वर्द्धन कैसे रहना चाहिए, दुर्गा के तरीके से हमारी शक्तियों का एकत्रीकरण कैसे होना चाहिए, बगैरह-बगैरह समर्थता की शिक्षा हमको विजयादशमी से मिल सकती है। वसंत शिक्षा का त्योहार—हमारे लिए शिक्षा की जरूरत है। हमको पढ़ना चाहिए। विद्या बिना आदमी किसी काम का नहीं होता। ये वसंत पंचमी सरस्वती के जन्मदिन का त्योहार है। होली का अपना महत्त्व है, गन्दगी के विरुद्ध लड़ने, पाप और अनाचार के विरुद्ध लड़ने के लिए। गन्दगी को जलाने, फूँक देने और नष्ट करने के लिए हमारा होली का त्योहार है। एक से एक बढ़िया त्योहार है। इन सारे के सारे त्योहारों में ज्यादा महत्त्वपूर्ण त्योहार वह है, जो कि आज आपके सामने उपस्थित है—श्रावणी पर्व।

श्रावणी क्या है ? श्रावणी यज्ञोपवीत का त्योहार है। इसमें यज्ञोपवीत को हम हर साल बदल देते हैं। ठीक उसी तरह जैसे हम बन्दूक का, मोटर का, लाइसेंस हर साल बदलते हैं। बहीखाता भी हर साल बदलते हैं। बहुत से काम ऐसे हैं, जो हर साल बदलने पड़ते हैं। क्यों ? ताकि हमको देखने का, निरीक्षण करने का मौका मिलता रहे। यह रिन्यू कराने का त्योहार है। यज्ञोपवीत बहुत महत्त्वपूर्ण चीज है। बेटे, यज्ञोपवीत एक तरह के संकल्प का प्रतीक है, जिसमें आदमी दूसरा जन्म लेने की प्रतिज्ञा करता है। दूसरा जन्म क्या है ? दूसरा जन्म है—द्विज का। यज्ञोपवीत दूसरे जन्म का सर्टिफिकेट है। यह इस बात का संकेत है कि हमें इनसान की जिन्दगी जीनी चाहिए। इनसान का जन्म मिलना, ये भगवान की कृपा के ऊपर है और उसका ठीक तरीके से इस्तेमाल करना इनसान के ऊपर है कि वह अपनी जिन्दगी को उस उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करे जिसके लिए भगवान ने जन्म दिया है। भगवान ने किस काम के लिए जन्म दिया है ? भगवान ने किसी खास मकसद के लिए जन्म दिया है कि आदमी को हैवान नहीं रहना चाहिए, इनसान बनना चाहिए। इसके लिए इनसान का कलेवर और इनसान का लिफाफा, इनसान के हाथ-पाँव, इनसान के कलपुर्जे और इनसान की मशीन ये सारी की सारी चीजें हमारे सुपुर्द कर दी गयी हैं। भगवान के द्वारा इसके बाद की जिम्मेदारी अब हमारी है कि जिस काम के लिए यह मशीन हमको दी गयी है, उस काम को पूरा करें। इनसान होकर के दिखाएँ। हैवान से एक दर्जा आगे बढ़ें, तरक्की करें। इस तरक्की के बाद में, एक दर्जा ऊँचा उठने के बाद में इस बात का सबूत पेश करें कि इनसान से अगले वाले दर्जे प्राप्त करने का हमको हक है। इनसान से आगे के दर्जे ? हाँ, इनसान से आगे और भी दर्जे हैं। कौन-से हैं ? जिसको हम देवत्व का दर्जा कहते हैं। इनसान अपनी जिन्दगी में एक और कदम बढ़ा सकता है, एक और प्रमोशन प्राप्त कर सकता है, जिसको देवता कहते हैं। देवता कौन होते हैं ? देवता इनसान होते हैं। कैसे इनसान होते हैं ? जैसे हमारे बुजुर्ग थे। यहाँ देवता निवास करते थे। देवता का विचार, देवता का चिंतन अलग होता है। देवता और इनसान की शक्ल में तो फर्क नहीं होता, पर दृष्टिकोण में जमीन-आसमान का फर्क होता है। आप इस बात के लिए अगर सबूत पेश करें कि हमको देवता बनना चाहिए तो देवताओं के अन्दर जो विशेषताएँ होती हैं, देवताओं को जो सम्मान मिलता है, देवताओं में जो सामर्थ्य होती है, देवता अपने आप में हँसते-हँसाते रहते हैं। देवता अपनी सुगन्धि से वातावरण को न जाने क्या से क्या बना सकते हैं ? वह दूसरा दर्जा आप पा सकते हैं इसी जिन्दगी में।

आपने तो न जाने क्या-क्या कल्पनाएँ कर रखी हैं कि मरेंगे तो स्वर्गलोक में जाएँगे। कहाँ मरेंगे आप ? शरीर बदल लेते हैं बार-बार। कपड़ा पुराना होता है तो बदल लेते हैं। नहाना भी पड़ता है। बनियान में गंध आ जाती है, धोती में गंध आ जाती है तो रोज धोकर के दूसरी बदल लेते हैं। दूसरे दिन फिर दूसरी बदल लेते हैं। मरेंगे, मरकर फिर कहाँ जाएँगे ? बैकुण्ठ लोक में जाएँगे। कहाँ है बैकुण्ठ ? बैकुण्ठ इसी जमीन पर है। आपको मालूम नहीं है। स्वर्ग भी इसी जगह है और नर्क भी। देवता भी इसी जगह पर रहते हैं और राक्षस भी। इनसान भी इसी में रहते हैं। ये सारी किस्में मनुष्यों की हैं। तरक्की के लिए मैट्रिक के बाद आप बी. ए. कर लें, बी. ए. के बाद आप एम. ए. कर लें और पोस्ट ग्रेजुएट हो जाएँ। इसी तरीके से सिपाही से आप दरोगा हो जाएँ, दरोगा से आप सुपरिन्टेडेन्ट हो जाएँ। इस तरीके से बहुत से चांस हैं। आप चाहें तो एक और भी मौका है कि देवताओं के बाद आप भी भगवान हो सकते हैं। भगवान ? हाँ भई भगवान भी हो सकते हैं। इनसान परब्रह्म नहीं हो सकता, पर भगवान हो सकता है। परब्रह्म और भगवान में क्या फर्क है ? परब्रह्म वह है जो सारे के सारे ब्रह्माण्ड के ऊपर नियंत्रण रखे हुए हैं, काबू रखे हुए हैं, कब्जा रखे हुए हैं। सारी सृष्टि का संचालन जो व्यवस्थित रूप से चलाता है और बनाता है उसका नाम है—परब्रह्म ! भगवान उनको कहते हैं, जिन्हें हम देवदूत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहते हैं जो विश्व की व्यवस्था को कायम रखने के लिए आते हैं और अपना काम करने के बाद चले जाते हैं। इन्हें अवतार भी कहते हैं—जैसे भगवान रामचन्द्र जी, भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र जी, भगवान् परशुराम और भगवान बुद्ध आए। आदमी का ऊँचे से ऊँचा स्तर भगवान का है। आपके लिए चांस है। इनसान का जन्म पाकर के ठीक तरीके से अपनी मंजिल के ऊपर चढ़ते चले जाएँ ताकि वह सब पा सकें। इसी का स्मरण दिलाने, जानकारी कराने के लिए संस्कार कराये जाते हैं।

हिन्दू का बच्चा जब थोड़ा बड़ा, समझदार होने लगता है तो हिन्दू परम्परा के मुताबिक उसका यज्ञोपवीत कराया जाता है। यज्ञोपवीत तीन लड़ का एक धागा है, जिसे कंधे पर धारण किया जाता है। जब मल-मूत्र विसर्जन के लिए जाते हैं तो उसे कान पर चढ़ा लेते हैं और हाथ साफ करके कान से उतार लेते हैं। उससे क्या हो जाता है ? ये हमारे प्रतीक हैं। प्रतीकों के पीछे न जाने क्या से क्या शिक्षण भरा हुआ पड़ा है ? प्रतीक हमारी गीता की पुस्तक, हमारे मंदिर में पत्थर की प्रतिमा। श्रद्धा आरोपित करके इन प्रतीकों को हमने शक्तिपुंज, भगवान बना दिया है। मीरा के गिरिधर, रामकृष्ण परमहंस की काली, एकलव्य के लिए गुरु प्रतिमा, ये भगवान थे। नहीं साहब ये तो खिलौने थे। हाँ भगवान के प्रतीक खिलौने भी हो सकते हैं, लेकिन अगर उन्हें श्रद्धा से समन्वित कर दिया जाए, तब उसी मिट्टी का खिलौना जिसे एकलव्य ने किसी संस्कार बिना, किसी मंत्र के अपने आप बना लिया था, उसने गजब करके दिखा दिया और मीरा ने—जिसका संस्कार भी नहीं हुआ, प्राण-प्रतिष्ठा भी नहीं हुई, मन्त्रोच्चार भी नहीं किये, उस पत्थर के टुकड़े में से भगवान बना दिया था। धागे को श्रद्धा से समन्वित करके हम जनेऊ में से भगवान को बना सकते हैं। कैसे बना सकते हैं ? जनेऊ में अगर हमारी निष्ठाएँ और आस्थाएँ शामिल हो जाएँ तो क्या से क्या हो सकता है ? उस श्रद्धा को जिस श्रद्धा के आधार पर हैवान को इनसान बनाने के लिए जनेऊ पहनाया जाता है। उसके साथ मौलिक फिलासफी, तत्त्वज्ञान जोड़ दिया जाता है कि दूसरे जन्म से मतलब ये है कि आदमी जब पैदा होता है तो शरीर से तो इनसान होता है, लेकिन मानसिक स्तर की दृष्टि से, चिंतन और विचारों की दृष्टि से हैवान होता है, नरपशु होता है। नरपशु किसे कहते हैं ? जिनका कि शरीर तो इनसान का होता है, पर दिल-दिमाग हैवान का होता है। उसका नाम नरपशु है। नरकीटक और नरपिशाच आपने सुने होंगे। परिस्थितियाँ जब मजबूर करती हैं तो आदमी नरपिशाच भी हो सकता है और नरकीटक भी ? लेकिन वे कम होते हैं। आमतौर से आदमी नरपशु पाये जाते हैं।

नरपशु कैसे पाये जाते हैं ? पशु और इनसान की मनोवृत्तियों में क्या फर्क है ? शरीरों में तो बहुत फर्क है। शरीर में मूल फर्क ये हैं कि आदमी बोल सकता है, जानवर बोल नहीं सकता। आदमी में समझ होती है, जानवर में समझ नहीं होती। आदमी दो पैरों से खड़ा हो सकता है, जानवर दो पैरों से खड़ा नहीं हो सकता। रीढ़ की हड्डी की बनावट—आदमी की दूसरी तरह की है। इनसान को हँसना-रोना आता है और जानवर को हँसना-रोना नहीं आता। शरीर की दृष्टि से आदमी भिन्न है। आदमी का काम करने, पुरुषार्थ करने के लिए इतना शानदार हाथ दिया गया है कि मैं कहता हूँ कि यह गजब का है। इससे आदमी न जाने क्या कर सकता है ? आदमी का दिमाग कमाल का है। ये क्या है ? ये इनसान और जानवर की बनावट में साफ फर्क है, जो मैंने आपको बताया। लेकिन एक मामले में दोनों एक हैं ? आदमी की नीयत और मनोवृत्ति। जानवरों की मनोवृत्ति की धुरी दो हैं। पृथ्वी की धुरी दो हैं—एक उत्तरी ध्रुव, एक दक्षिणी ध्रुव। गाड़ी की धुरी दो हैं—एक दायाँ वाला पहिया, एक बायाँ वाला पहिया। बैलेन्स इन्हीं पर टिका रहता है। एक को गिरा दें तो फिर गाड़ी गिर पड़ेगी। इसी तरीके से हैवान दो चीजों पर टिका रहता है। उसकी नीयत आप खोलिये, पोस्टमार्टम कीजिए, उसके दिमाग को तौलकर देखिये तो हैवान के विचारों में दो चीज पाइयेगा, तीसरी कोई चीज नहीं पायी जाएगी। आदमी क्या सोचता है और क्या करना चाहता है ? आदमी की इच्छाएँ, प्रेरणाएँ, विचारणाएँ, क्रियाएँ क्या हैं ? आदमी की इच्छाएँ पहले होती हैं, इच्छाओं पर विचार करने के लिए दिमाग मजबूर होता है और विचार करने के बाद में शरीर को उसका हुक्म मानना पड़ता है। शरीर दिमाग का कहना मानता है और दिमाग हमारी मान्यताओं, आस्थाओं, आकांक्षाओं का हुक्म मानता है। दिमाग हमारा खराब है, हमारी आस्थाएँ और नीयत खराब हैं। इसीलिए हमारी नीयत, इच्छाएँ, रुचि, लक्ष्य आदमी की नहीं हैवान की हो जाती है, तब दिमागी दृष्टि से, विचारों की दृष्टि से इनसान और हैवान में कोई फर्क नहीं पड़ता। दोनों हूबहू एक हो जाते हैं। इनकी नीयत में दो ही चीज दिखाई पड़ती हैं—पैसा और औलाद। आप क्या चाहते हैं ? पैसा ? आप क्या चाहते हैं ? औलाद ? तीसरी कोई चीज न हो तो आप शरीर की दृष्टि से कौन हैं ? हम नहीं जानते, लेकिन आप मन की दृष्टि से, भावना की दृष्टि से, चिंतन और आस्थाओं की दृष्टि से कौन हैं, विचारिये।

हैवान को इनसान बनने के लिए क्या करना चाहिए ? वही जो यज्ञोपवीत में सिखाया गया है। यज्ञोपवीत में सारे का सारा पाठ्यक्रम, सारे का सारा कैरिकुलम, सारी की सारी स्कीम्स, जो स्कूलों में पढ़ाया जाता है, जो छोटे रूप में, संक्षेप में इसके भीतर बना दिया गया है। क्या करना चाहिए आदमी को ? आदमी को हैवान के बदले दो काम करने चाहिए, एक तो हजारों जन्मों के साथ जो मलीनताएँ आदमी के ऊपर हावी हो गयी हैं, इनसे लोहा लेना चाहिए, उन्हें दूर करना चाहिए। हमें लड़ाई लड़नी चाहिए उन निकृष्ट मनोवृत्तियों और कुसंस्कारों से जो न जाने किस-किस जन्म के, ज्यों के त्यों अभी भी हमारे भीतर मौजूद हैं। लड़ाई से तात्पर्य—तप,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संयम, कानून, मर्यादा और मनोबल से है। तपश्चर्या के अन्तर्गत ये सब चीजें आती हैं, जिन्हें यज्ञोपवीत संस्कार कराते समय सिखाया जाता है। आपको अपने कुसंस्कारों के विरुद्ध बगावत खड़ी करनी चाहिए और अपने भीतर इनसानी ताकत विकसित कर देवत्व धारण करना चाहिए।

एक काम तो यह है कि हमें अपने स्वार्थ को जानना चाहिए। स्वार्थ क्या है ? स्वार्थ यह कि हम जीवन में तरक्की करें। तरक्की से हमको आत्मसंतोष, यश मिलेगा और इतिहास के पन्नों पर हम अपना नाम छोड़ करके जा सकेंगे। हमारा स्वार्थ और भी है कि इस दुनिया में जो खुशी हमको मयस्सर न हो सकी, वो खुशी जिन्दगी में आनी चाहिए। खुशी-प्रसन्नता के समावेश का नाम है—स्वर्ग। स्वर्ग कोई गाँव, बस्ती, कोई लोक नहीं है। फिफ्थ डायमेंशन, फोर्थ डायमेंशन ये विचारों और चिन्तन के डायमेंशन होते हैं। स्वर्ग भी एक डायमेंशन है—हमारे दृष्टिकोण का। इसमें हम देखना शुरू करते हैं तो इस दुनिया में बड़ी खुशी, खूबसूरती, आनन्द और तरह-तरह के नजारे दिखायी पड़ते हैं। हमको बेहद शांति दिखायी पड़ती है चारों ओर। इसका नाम है स्वर्ग। नर्क क्या है ? नर्क उसी का नाम है कि जहाँ कहीं भी हम निगाह फेंकते हैं अथवा स्पर्श करते हैं, हाथ डालते, सम्बन्ध बनाते हैं, वो सब बागी हो जाते हैं। कौन-कौन बागी हो जाते हैं—हमारी बीबी, हमारे बच्चे, हमारे पड़ोसी, हमारा समाज, यहाँ तक कि हमारा शरीर भी कहता है मारूँगा डण्डे से आपको। हमारा चिंतन, दृष्टिकोण जब विकृत हो जाता है तो हमारा शरीर, दिमाग बगावत कर देता है। हमारे कम्प्यूटर ने हमारे विरुद्ध झंडा खड़ा कर दिया कि आपको सोने नहीं देंगे, चैन से रहने नहीं देंगे। चिंताओं, निराशाओं से दिमाग हैरान हो जाता है। बेटे ! हमारे जीवन में नर्क भी है और स्वर्ग भी, बन्धन भी हैं और मुक्ति भी। चारों ओर के बन्धनों ने हमको जकड़ रखा है—पैरों में, हाथों में, गले में सब जगह बन्धन। ये हमारी कमजोरियाँ हैं, वरना आदमी के ऊपर क्या बन्धन हो सकता है ? जानवर पर बन्धन हो सकते हैं, पैर में, गले में रस्सी बाँध दी। इनसान को कोई नहीं बाँध सकता, लेकिन उन्नति के मार्ग पर जिन बन्धनों ने रोककर रखा है। वे आपकी कमजोरियों और दृष्टिकोण से ताल्लुक रखते हैं। अगर इन्हें तोड़ा जा सके तब ? आपकी मुक्ति हो सकती है। इसी को कबीर ने 'जीवन-मुक्त' कहा था और यह नाम मुझे बहुत पसन्द आया। स्वर्ग वह जो आदमी की इसी जिन्दगी में—खुशी, उमंग, उत्साह और आशाओं के रूप में है। ये चीजें अगर मिल जाती हैं तो आपका स्वार्थपूर्ण हो जाता है। जीवन को नेक, समुन्नत सुसंस्कृत, सभ्य, शालीन बनाएँ तो स्वार्थ पूर्ण है।

परमार्थ—एक और उद्देश्य है। इनसान की जिन्दगी का परमार्थ किसे कहते हैं ? जिससे भगवान की इच्छाएँ पूरी हों। भगवान के प्रति आपका ख्याल है कि वह एक छोटी तबियत का है। आप जैसे छोटे हैं, बिलकुल वैसा ही छोटे मॉडल का भगवान आपने बनाकर रख लिया है, जो खुशामद, चापलूसी, चमचागीरी, प्रार्थना, पूजा कराने के लिए मारा-मारा फिरता है। आऽह ! आप और आपका बनाया भगवान—"राम मिलायी जोड़ी और एक अंधा, एक कोढ़ी।" दोनों हूबहू एक जैसे सगे माँ जाए भाई। एक चापलूसी पसन्द करता है और दूसरे को चापलूस बनाता है। नारियल खाइये, मनोकामना लाइये। बेटे, ये भगवान नहीं हैं। मैं तो दूसरे भगवान की बात कहता हूँ। कौन-सा ? जो आपके हृदय में करुणा, सहृदयता, उदारता के रूप में विद्यमान रहता है। करुणा के रूप में भगवान ? हाँ करुणा के रूप में भगवान। वाल्मीकि ने एक बहेलिये के तीर से क्रोंच पक्षी को घायल देखा। क्रोंच पक्षी तड़प रहा था। उसकी बीबी उसके पास बैठी रोती-बिलखती, प्राण त्याग रही थी। उसकी करुणा को, उसके दुःखों को, उसकी संवेदना को वाल्मीकि ने देखा। उनके पत्थर जैसे कठोर हृदय के भीतर करुणा की धारा आ गयी और जिस क्षण करुणा की धारा आयी, उसी क्षण से उनके अंदर से अध्यात्म फूट पड़ा। अध्यात्म माने भगवान, भगवान माने अध्यात्म। करुणा किसे कहते हैं ? जिसको हम सेवा कहते हैं, उदारता, परमार्थ कहते हैं। भगवान ने ये अपेक्षा की इनसान से कि वह निष्ठुर, कृपण, स्वार्थी न बने। उसे उदार, परोपकारी, लोकसेवी बनना चाहिए और भगवान के कार्मों में हिस्सा बँटाना चाहिए। भगवान ने इनसान को अपने सेक्रेटरी के रूप में, इंजीनियर के रूप में इसीलिए बनाया है कि हमारे बगीचे को, हमारे उद्यान को अच्छा, सुरम्य बनाने में हमारा हाथ बँटाये। बड़े बेटे से बाप हमेशा उम्मीद करता है कि हमारा बेटा जब बड़ा हो जाएगा तो हमारे कारोबार में हाथ बँटायेगा। ठीक इसी तरह भगवान ने अपने बड़े बेटे इनसान से ये उम्मीद की है कि उसकी दुनिया को सभ्य, सुसंस्कृत, समुन्नत बनाने के लिए हमारा हाथ बँटायेगा। ये ही पूजा है, ये ही भजन है, भाई साहब, आप सुनते क्यों नहीं ? नहीं साहब भजन में तो हम ग्यारह माला का जप करते हैं। ग्यारह माला के पीछे ये ही मकसद है, आप समझते क्यों नहीं ?

हमारा परमार्थ इस बात में है कि हम इनसान की जिन्दगी अपनाकर सादा जीवनयापन करें, कम में गुजारा करें, कम खर्च में काम चलाएँ और जो हमारे पास शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार के साधन बच जाते हैं, उनको भगवान के काम में लगाएँ। भगवान की बैंक में जमा करें, ताकि हजारों गुना होकर के फिर हमारे पास आए और भगवान हमारी ईमानदारी पर विश्वास करें। हमारा जो प्रमोशन है देवता का, अवतार का, ये सारे के सारे प्रमोशन हमको टाइम पर मिलते चले जाएँ। ये हमारा परमार्थ है—भगवान को प्रसन्न करना, जीवन में उदार होना। हम एकादशी उपवास करें तो ? मर्जी है आपकी। पेट अच्छा होगा, पर एकादशी व्रत भर से भगवान प्रसन्न नहीं होता, उदारता और परमार्थ परायणता के बिना। इसीलिए मित्रो ! मैं यह कहता हूँ कि भगवान की प्रसन्नता के लिए फिर एक बार समझिये। भगवान का स्वरूप आदमी की संवेदना में, उदारता के रूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में, परमार्थपरायणता, लोकमंगल के रूप में होना चाहिए और इस विश्व को सुखद, समुन्नत बनाने के रूप में होना चाहिए। न भगवान का रूप इससे कम में है और न इससे ज्यादा होने की जरूरत है। आदमी का स्वार्थ इससे कम में नहीं हो सकता। सांसारिक स्वार्थ भी मैं इसी को कहता हूँ। संसार का स्वार्थ-जिन आदमियों ने अपने व्यक्तित्व को गौण और स्वभाव को श्रेष्ठ बनाया है, उनके ही स्वार्थ पूरे हुए हैं। सुखी, सम्पन्न, यशस्वी वे ही रहे हैं। पारिवारिक आनन्द, शारीरिक आनन्द उन्हीं ने उठाया है। संसार और परमार्थ दोनों एक में मिले हुए हैं। अध्यात्म और भौतिकवाद अलग नहीं हैं, दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमारा शरीर और आत्मा दोनों एक-दूसरे से जुड़े हैं। अलग हैं ? अलग नहीं हो सकते। अलग निकलेंगे तो शरीर बेकार हो जाएगा और हम बेकार हो जाएँगे। भौतिकता और आध्यात्मिकता दोनों आपस में जुड़ी हुई हैं। स्वार्थ और परमार्थ दोनों जुड़े हुए हैं। इन दोनों की शिक्षा के लिए सारी की सारी फिलॉसफी और सारे का सारा दर्शन हमारे यज्ञोपवीत में जोड़ दिया गया है।

यज्ञोपवीत जो हमको ये सिखाता है कि आदमी को हैवान का चोला छोड़ना और इनसान की जिन्दगी में प्रवेश करना चाहिए। आदमी को उदार और उदात्त बनना चाहिए। यही शिक्षण है। सारे के सारे शिक्षण को आपने देखा ? हमने कर्मकाण्ड कराये, यज्ञोपवीत पहनाया और आपको याद दिलाया कि आपके जीवन का मकसद, आपके जीवन का लक्ष्य क्या है ? इनसान के कलेवर में रहने वाले शैतान को ठोकर मारकर भगा दीजिए और जिस भगवान के निवास करने की पूरी-पूरी गुंजाइश है, उसे स्थापित कर लीजिए। यही है जीवन का लक्ष्य, इसी को दूसरा जन्म कहते हैं। जनेऊ पहनाते समय, यज्ञोपवीत करते समय यही शिक्षाएँ दी जाती हैं और यही दी जानी चाहिए। इसी के लिए आपको दो काम करने पड़े थे—एक तो दस स्नान करने पड़े और दूसरा हेमाद्रि संकल्प करना पड़ा। यज्ञोपवीत करते समय, श्रावणी पर्व मनाते समय विशेष उपासना की प्रक्रिया को पूरा करते समय में ये दो आधार बहुत आवश्यक हैं। कौन-कौन से ? आपको दस स्नान करने चाहिए। इसका क्या मतलब है ? हमारे पास इन्द्रियाँ अपने-अपने ढंग से मलीनताएँ पैदा करती हैं, जिससे हमारा स्वरूप, हमारे जीवन की श्रेष्ठता और शालीनता मलीन होती चली जाती है। इसीलिए इनकी धुलाई, मजाई, घिसाई, पिसाई और धुनाई करना जरूरी है। दस स्नान से धोइये आप इनको। शरीर को ? हाँ, शरीर को तो आप साबुन से भी धो लें तो कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। दस स्नान की फिलॉसफी आप समझिये कि हमको अपनी दसों इन्द्रियों के माध्यम से होने वाले गुनाहों और गलतियों से बाज आना चाहिए।

हमारे प्राण हैं दस। पाँच प्राण और पाँच उपप्राण, ये हमारी चेतना के दस हिस्से हैं। पाँच तत्त्वों के भी दो हिस्से हैं—पंच तन्मात्राएँ और पंचतत्त्व। पंचतन्मात्राएँ—शब्द, रस, रूप, गंध और स्पर्श हैं और अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी ये पाँच तत्त्व हैं। आप शरीर की धुलाई कीजिए, जिससे ये बना हुआ है और मन की धुलाई कीजिए जो कि प्राणों से बना हुआ है। आपको सबेरे दस स्नान का ये मकसद, ये प्रेरणा, ये इच्छाधारा, ये संकेत समझा होगा, तब तो ठीक है और अगर संकेत नहीं समझा होगा तो—"साँप निकल गया लकीर पीटें" ये आपकी मर्जी की बात है। आजकल कर्मकाण्डों और पूजा के नाम पर लकीर पिटती है। आदमी ने लकीर पीटने के पीछे, कर्मकाण्डों के पीछे जो दिशाधाराएँ रहनी चाहिए थीं और रहती थीं, उन्हें न जाने क्यों भुला दिया है ? उनसे महरूम और वंचित रह गये। चंदपूजा से आदमी को न जाने कैसे संतोष हो जाता है। जैसे आचमनम् समर्पयामि, अर्घ्यम् समर्पयामि, स्नानम् समर्पयामि, एक चम्मच जल के पीछे छिपी प्रेरणा और दिशाधारा समझिये। वह ये कि आपके शरीर में से जो पसीना निकलता है अर्थात् जो श्रम आपकी मेहनत और मशक्कत है उसे आप भगवान् के लिए लगाइये। वह लोकहित के लिए हो, उसी से आप स्नान करा सकते हैं। ये अक्षत्, नैवेद्य कहाँ हैं दिखाना जरा ? शक्कर की गोलियाँ नहीं, भगवान् का नैवेद्य है—हमारे श्रमदान के साथ-साथ में हमारा अंशदान। हमारी कमाई का एक हिस्सा भी जुड़ा रहना चाहिए। गवर्नमेंट का एक टैक्स-इन्कमटैक्स और आदमी के धर्म का टैक्स—हर आदमी की कमाई में भगवान् का एक शेयर, यही है 'अक्षत समर्पयामि' की प्रेरणा, आप सुनते नहीं, दिशा-निर्देशों को समझते नहीं और लकीर पीटने पर उतारू हो गये हैं। पीछे से कहते हैं भगवान प्रसन्न नहीं हुआ, हमारा उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। इसलिए मित्रो ! आज श्रावणी के दिन आप ये कोशिश करें, अपने गरेबान में मुँह डालें और जहाँ कहीं भी मलीनताएँ दिखायी पड़ें उनसे बगावत करने के लिए आमादा हो जाइये। ये आपके दस स्नानों की शिक्षा है।

हेमाद्रि संकल्प किसे कहते हैं ? चिन्तन और कृत्य जो हम शरीर से करते हैं। आदमी का चिंतन—बीज है और कृत्य उसका फल। विचार भी एक काम है, उसका परिणाम भी होता है। गंदे विचार करते रहिये फिर देखिये आपका पतन कैसे होता है, दिमाग कैसे खराब होता है। हेमाद्रि संकल्प इस बात को बताता है कि हमारे जीवन में जो निषेधात्मक पक्ष है—उसको ठीक करें, धोएँ, लोहा लें, लड़ें बराबर अपने आपसे। लड़ाई में कमजोरी को जाहिर कर दिया तो आपके ऊपर आसुरी शक्तियाँ हावी हो जाएँगी। इसलिए हर समय आपको चौकीदारी करनी चाहिए। जिस दिन पहरा बन्द कर देंगे, उसी दिन आपके घर का सफाया हो जाएगा, चोर माल उठा ले जाएँगे। इसके अतिरिक्त दो काम आपके और हैं—एक ऋषिपूजन और दूसरा देवपूजन। हमारे जीवन को ऊँचा उठाने के लिए सत्संग और स्वाध्याय अति आवश्यक है। चारों ओर के वातावरण का असर हम पर पड़ता है। उसे दूर करने के लिए हम ज्ञान का, विचारणाओं का लगातार शिक्षण करें। अगर हमें श्रेष्ठ जीवन जीना है तो गंदे विचार जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिना प्रयत्न के हमारे ऊपर हावी होते हैं, उनसे लोहा लेने, अच्छा जीवन जीने के लिए श्रेष्ठ विचारों के सम्पर्क में रहना पड़ेगा। हमारे मन में बड़ी मलीनता आती हैं। तो बेटे ! उसको उखाड़ फेंक, उनसे लोहा ले, जद्दोजहद कर। हाथी से हाथी की टक्कर होती है और भैंसे से भैंसे की। लाठी से लाठी की टक्कर होती है और बन्दूक से बन्दूक की। तेरे ऊपर जो कुविचार छाये रहते हैं, उनसे मुकाबले के लिए अच्छे विचारों की सेना से लड़ा दे। मित्रो ! ये क्या है ? आपने उत्तम जीवन जीने के लिए जो देवपूजन, ज्ञान का पूजन और ऋषिपूजन किया।

ऋषि का अर्थ—वे व्यक्ति जो प्रभावशाली प्रतिभाओं के रूप में आपके ऊपर दबाव डाल सकते हों, आपको अनुशासन में रखने के लिए समर्थ हों। ऋषि वह जो आदमी को मजबूर कर सकते हैं, जो आदमी से धड़ल्ले से कह सकते हैं। आप ऋषि का अनुशासन पाये बिना आगे नहीं बढ़ सकते, कुसंस्कारों से छुटकारा नहीं पा सकते। ऋषि का पूजन हमने इसीलिए कराया कि आपके जीवन में अनुशासन आए। ऋषि हमारे जीवन की महती आवश्यकता हैं। ऋषि का सम्पर्क जिनसे हो गया, वे धन्य हो गये। नारद जी ऋषि थे। उनका सम्पर्क प्रह्लाद और ध्रुव से हो गया, वे धन्य हो गये। हिमाचल के राजा की लड़की से नारद जी का सम्पर्क हो गया, वह धन्य हो गयी। वाल्मीकि से नारद जी का सम्पर्क हुआ, वह भी धन्य हो गये। कैसे हो गया ? दबाव डालने वाले व्यक्ति जो आदमी की इच्छा के विरुद्ध भी बात कह सकते हों, उसे नाखुश भी कर सकते हों और उस पर झल्ला भी सकते हों—ऐसे आदमी कौन होते हैं ? ऋषि जीवन को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने के लिए आदमी को उन लोगों के साथ सम्पर्क बनाना चाहिए। ऐसे आधार खड़े करने चाहिए, जिनके बल पर हमारे लिए आगे बढ़ सकना सम्भव हो सके। श्रेष्ठ जीवन जीने, भगवान के रास्ते पर चलने की, भगवान का प्रिय होने की, परमार्थपरायण होने की, अध्यात्म का जीवन में विकास होने की आवश्यकताएँ हैं ये।

स्वाध्याय और सत्संग क्या हैं ? श्रेष्ठ पुरुषों का सान्निध्य और सद्ज्ञान के प्रति निष्ठावान होना। अगर दो काम आपने नहीं किये हैं तो आप ग्यारह माला जपें, चाहे ग्यारह हजार माला जपें, कुछ नहीं होने वाला। विचारों को आप काटते नहीं हैं। जीवन को ऊँचा उठाने के लिए जिस क्रेन की जरूरत है, उससे आपका सम्पर्क ही नहीं है। आप जान को तो निकाल देते हैं और लाश को लिए फिरते हैं। लाश को लेने से काम नहीं चलेगा, दिशाओं को लेने से काम चलेगा। मित्रो ! आज हमने शिक्षण किया यज्ञोपवीत का, जिसे चौबीसों घण्टे कंधे पर धारण करते हैं। हम इसकी शिक्षाओं को, जीवन के लक्ष्य को ध्यान में रखेंगे, भुलायेंगे नहीं। हर साल इसको रिन्यू कराते हैं। टट्टी-पेशाब के समय आपको यज्ञोपवीत का ध्यान रखना चाहिए। जब पुराना हो जाता है, छह महीने हो जाते हैं, तब इसे आपको बदल देना चाहिए। क्यों ? बार-बार हमें ध्यान रहे कि जनेऊ का भी हमारे जीवन में कुछ काम है। यज्ञोपवीत हमारे जीवन से विछिन्न नहीं है। घर में बच्चा हो, घर में गमी हो, चन्द्रग्रहण हो, सूर्यग्रहण हो। लाइये नया जनेऊ, बदलना पड़ेगा ? हाँ, बदलना पड़ेगा, ताकि आपको याद रहे। जनेऊ अर्थात् जीवन-लक्ष्य आपको याद बना रहे और जीवन-लक्ष्य के लिए जो काम आपको करने हैं, वे ध्यान में बने रहें। ये जीवन की महती आवश्यकता है। इन्हीं दोनों आवश्यकताओं को पूरा कर सकें तो बात बन जाती है।

सुरक्षा के लिए क्या करना पड़ता है ? कोई राष्ट्र, कोई समाज, कोई व्यक्ति, कोई कुटुम्ब सुरक्षित किस तरीके से रह सकता है ? इसके लिए दो सूत्र हैं—एक लड़कियाँ अपने भाई के हाथ में राखी बाँधती हैं। बहिन राखी लेकर आयी और आपने उसे पाँच रुपये, एक धोती या दुपट्टा दे दिया और हो गया कार्य खत्म। अरे ! भाईसाहब, इसके लिए नहीं आती बहिन। भिखारिन नहीं है जो आपसे कुछ माँगने आएगी। किसलिए आयी थी ? ये प्रतीकों का त्योहार है। लड़कियाँ गा रही थीं—"भैरी राखी।" भैरी से मतलब है कि नारी समाज कोई व्यक्ति विशेष नहीं। कोई लड़की प्रतिनिधित्व करती है—सारे नारी समाज का। किसी का राष्ट्रीय, पारिवारिक और सामाजिक जीवन सुरक्षित बन सके, इसके लिए दो अपेक्षाएँ हैं। दो की रक्षा। काहे की रक्षा होनी चाहिए ? एक रक्षा नारी के सम्मान की होनी चाहिए। नारी का सम्मान-शील भी उसी में आता है। नारी को दूसरे दर्जे का नागरिक, जैसा कि आज है, नहीं बनना चाहिए। उसको बलिष्ठ रहना चाहिए। नर के द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में उसका सम्मान होना चाहिए। इसके लिए ये रक्षासूत्र नारी की ओर से बाँधा जाता है। उसका सम्मान, उसकी इज्जत, उसका गौरव हर जगह होना चाहिए। नर-नारी दोनों इनसान हैं। दोनों को एक-दूसरे की इज्जत करनी चाहिए। विचारों का विनिमय, मतभेदों का जहाँ तक ताल्लुक है आप बातचीत कीजिए, समझौता कीजिए, लेकिन सम्मान पर किसी के आँच मत आने दीजिए। न मर्दों की ओर से नारी के सम्मान पर आँच आनी चाहिए, न नारी की ओर से मर्द के सम्मान पर आँच आनी चाहिए। नारियाँ मर्द के सम्मान पर ठेस नहीं पहुँचातीं, पर अक्सर मर्द की ओर से नारी के सम्मान पर ठेस पहुँचायी जाती है। ये नहीं होना चाहिए। नारी के सम्मान की रक्षा, सामाजिक सुरक्षा के लिए सूत्र है। जहाँ नारी सम्मान पायेगी, विकसित होगी, वहाँ उसका अंतरंग विकसित होगा। जहाँ आपने उसके सम्मान में कमी करना शुरू किया, वह नारी के लिए न जाने क्या से क्या हो जाएगा और उसकी अंतरात्मा, उसका गौरव गिरता हुआ चला जाएगा। एक और कारण भी है कि आर्थिक दृष्टि से नारी का कमजोर होना उसके लिए कितना अभिशाप हो जाता है ? आपकी कमाई और आपकी बुद्धि का एक हिस्सा इस काम के लिए लगना चाहिए। नारी ने पुकार की है कि हमारी आर्थिक कमजोरी का अनुचित लाभ न उठाने दिया जाए। सारे समाज का कर्त्तव्य है कि जब नारी से सारा लाभ उठाता है—माता, पत्नी, बेटी और बहिन के रूप में,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो उसका टैक्स भी चुकाना चाहिए। नारी का आर्थिक स्वावलम्बन कमजोर पड़ता है, तो उसकी मदद करें—ये रक्षासूत्र की प्रेरणा और शिक्षा है।

एक और रक्षासूत्र है—सामाजिक सुरक्षा का, जो ब्राह्मण यजमान को बाँधता है। ये क्या है ? ये श्रेष्ठ पुरुषों का अनुशासन है। आज तो सारे अनुशासन खत्म हो गये हैं। सरकार ने कानून के रूप में अनुशासन बनाये थे, वह भी खत्म हो गये। दहेज, बाल-विवाह, रिश्वतखोरी के विरुद्ध कानून बने हुए हैं। जो कानून का उल्लंघन करेगा, जेल जाएगा। पर कौन मानता है ? सरकारी कानून समाज में सुव्यवस्था बनाने के लिए काफी नहीं हैं तो फिर कौन-सा होना चाहिए ?

येन बद्धो बलीराजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

रक्षा-सुरक्षा का आधार यह है, जिसके अनुशासन, नीति की मर्यादाओं में ऋषि-ब्राह्मण बाँधता है। इसीलिए प्राचीनकाल का प्रत्येक यजमान, गुरु, पुरोहित, ऋषि के यहाँ जाता था। आप हमारे हाथ में रक्षा का सूत्र बाँध दीजिए, सुरक्षा की जिम्मेदारी लीजिए। लेकिन इस दृष्टि में एक शर्त थी—

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

जिससे तुम शक्ति की या सहायता की अपेक्षा करते हो, उसके ज्ञान, अनुशासन को स्वीकार करो। उसमें बँध जाओ। हम आपके सुख और शांति की गारन्टी लेंगे, लेकिन आप भी एक गारन्टी दीजिए कि आपके ऊपर जो नैतिक अनुशासन स्थापित किया गया है, उसका आप पालन करेंगे।

मित्रो ! ये जो रक्षा के सूत्र का आधार है, उसका उद्देश्य है रक्षा। पुरोहित द्वारा यजमान का रक्षाबंधन और नारी द्वारा नर का रक्षाबंधन। यहाँ बहिन, भाई को बाँधती है, ऐसा रिवाज है। पर मैं कहता हूँ कि कोई भी नारी किसी भी नर को सूत्र बाँध सकती है, चाहे वह भाई, पिता, पुत्र क्यों न हो ? रक्षाबन्धन पर नारी की नर से सुरक्षा की अपेक्षा और यजमान की ओर से पुरोहित से सुरक्षा की माँग अथवा पुरोहित की ओर से यजमान से सुरक्षा की माँग। विश्वामित्र की माँग पर यज्ञ की रक्षा के लिए रामचन्द्र जी गये और ऋषि ने दिव्यास्त्र प्रदान कर उनकी सुरक्षा की। गुरु वशिष्ठ द्वारा राजा दिलीप से सुरक्षा की माँग की गयी थी। यजमान भी सुरक्षा की माँग कर सकता है और पुरोहित भी, जिससे व्यक्ति सुरक्षित और समाज सुदृढ़ बनता है। हमारी मजबूती जिन सूत्रों के साथ बाँधी गयी है आप उसको समझें, उसकी प्रेरणा को जानें, उन्हें हृदयंगम करें तो आज का हमारा शानदार त्योहार सार्थक हो, जिसमें वेद और ऋषियों की पूजा हुई, दस स्नान हुए, हेमाद्रि संकल्प हुआ और पितरों के लिए तर्पण किया गया। जो हमारे पितर हैं, पूर्वपुरुष, देवपुरुष—जिनकी आत्माएँ कहीं होंगी तो वे हमसे अपेक्षाएँ करती हैं। ऋषि जिन्होंने संस्कृति का निर्माण किया, आपसे कुछ अपेक्षाएँ करती हैं। उनको तृप्त करने के लिए तर्पण किया जाता है। ये सारी की सारी विधियाँ कर्मकाण्ड की दृष्टि से बड़ी उपयोगी हैं। आपने इसमें भाग लिया आप कर्मकाण्ड को पूरा करने के लिए गंगा जी गये, पानी में खड़े रहे, दूर-दूर से आप श्रावणी पर्व मनाने आए, आप इस संस्कृति परम्परा के प्रति रुचि रखते हैं, श्रद्धा रखते हैं आपकी बड़ी प्रशंसा। लेकिन इससे भी ज्यादा प्रशंसा उस दिन होगी, जब आप इस पर्व के साथ में जुड़ी प्रेरणाओं को हृदयंगम करेंगे, जीवन में धारण करेंगे। न केवल जीवन में धारण करेंगे, बल्कि दैनिक जीवन के व्यवहार में इनका समावेश करने की पूरी कोशिश करेंगे, तो धन्य हो जाएगा हमारा ये पर्व, जो श्रावणी के नाम से प्रख्यात है, जिसको यज्ञोपवीत का पर्व भी माना जाता है। ऋषि भी धन्य हो जाएँगे, जिन्होंने श्रावणी पर्व चलाया और उसके साथ-साथ में इन महान् परम्पराओं का, क्रिया-कृत्यों का समावेश किया। मुझे आशा है कि आप इस पर ध्यान देंगे और आज श्रावणी से प्रेरणा लेकर के जाएँगे। इनको जीवन में धारण करने का प्रयत्न करेंगे। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

आत्मबल सम्पादन ही सर्वोपरि लक्ष्य हो

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

मानव जीवन भगवान द्वारा प्रदान की गयी एक बहुमूल्य निधि है। मनुष्य विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। यह एक ऐसा सत्य है, जिसे तथ्यों के आधार पर भी स्वीकार करना ही पड़ता है साथ ही, हर व्यक्ति इस गौरवपूर्ण स्थिति को अनुभव भी करता है। परन्तु दूसरी ओर यह बात भी उतनी ही सत्य है कि अधिकांश व्यक्ति क्षुब्ध, दीन-हीन एवं दुःखी जीवन जीते रहते हैं। इस प्रकार अनन्त मनुष्यों की समस्याएँ भी अनेक हैं, जिसके कारण वे हमेशा दुःखी रहते हैं, उदास रहते हैं। वास्तव में हमें इस मानव-जीवन को भौतिक दलदलों में फँसाकर रोने-कलपने की अपेक्षा ऊपर उठाना चाहिए तथा परमेश्वर के द्वारा बनाये गये इस संसार में सुख-शान्ति का रसास्वादन करते हुए अपने आपको धन्य बनाने का प्रयास करना चाहिए। यह बात भी सत्य है कि भगवान ने वरिष्ठता के कारण मनुष्य को कुछ अधिक ही दिया है, परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम अपनी इन विशिष्ट क्षमताओं को न पहचान पाए, न विकसित कर पाए और न ही उनको सही दिशा दे पाये यही कारण है कि भगवान का इतना श्रेष्ठ अनुदान पाकर भी हम दुःखी हैं और रात-दिन रोते-कलपते रहते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीनकाल में भारतीय तत्त्ववेत्ता ऋषि-मुनि इस तथ्य को जानते थे तथा वे मनुष्य जाति को आगे बढ़ाने, प्रगति करने एवं सुखी-समुन्नत बनाने के लिए सदा प्रयत्नशील रहते थे। बेटे, आज हम उसी परम्परा के अनुसार मनुष्य को सुखी बनाने हेतु युग-निर्माण योजना के माध्यम से प्रयत्नशील हैं, ताकि हम भी भगवान के श्रेष्ठ पुत्र को सुखी बना सकें।

वास्तव में आपको यह मालूम नहीं है कि हमें सुख कहाँ मिल सकता है तथा शान्ति कहाँ मिल सकती है ? इस सुख-शान्ति की खोज में हम इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं, परन्तु हमें वह चीज प्राप्त नहीं होती है। हिरन जंगलों में पानी के लिए रातभर घूमता रहता है, परन्तु उसे पानी नहीं मिलता है। दिन में वह रेगिस्तान में चमकते बालू के ढेर को पानी समझकर उधर को जाता है, परन्तु वहाँ भी उसे निराशा ही हाथ लगती है। वही हालत आज मनुष्यों की हो रही है। अशान्त मनुष्य भी मृगतृष्णा की तरह इधर-उधर भटक रहा है। वह समझता है कि हमें शान्ति उत्तम स्वास्थ्य से, धन से और विद्या से मिलेगी और वह इसी के पीछे पागल हो रहा है। उसे मालूम नहीं है कि किसी भी क्षेत्र में मनुष्य को आगे बढ़ने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। उसे अपनी प्रत्येक गतिविधियों का सर्वेक्षण करना पड़ता है एवं उसके साथ कुछ नये लक्ष्य निर्धारित करने पड़ते हैं।

यह एक कटु सत्य है कि मनुष्य शरीर धारण करने का अवसर ही प्रगति का शुभ अवसर है परन्तु, यह बात ध्यान देने योग्य है कि प्रगति की आकांक्षा मात्र से प्रगति सम्भव नहीं है। इसके लिए मनुष्य को प्रयास, पुरुषार्थ एवं साहस करना पड़ता है। सामान्य लौकिक पद-प्रतिष्ठा के लिए भी जब पुरुषार्थ करना पड़ता है, तो आत्मिक प्रगति जैसे महान लक्ष्य के लिए इसकी उपेक्षा करना नितान्त भूल मानी जानी चाहिए। पहले हम स्वास्थ्य की बात को ही लें, तो आज के युग में मनुष्य अच्छी सेहत के लिए विटामिन—ए, बी, सी से लेकर न जाने क्या-क्या अभक्ष्य पदार्थ खाता रहता है, परन्तु ताकत मिलने की बजाय उसका पतन ही होता चला जाता है। आज कृत्रिम रूप से ताकत बढ़ाने के विभिन्न प्रयोगों के कारण हर व्यक्ति ४०-५० वर्ष की आयु में ही अपने को वृद्ध मानने लगता है। उसमें कुछ करने की हिम्मत, साहस प्रायः समाप्त होता दिखाई देता है। उनकी शक्तियाँ प्रायः पंगु हो जाती हैं।

परन्तु अगर हम महापुरुषों की ओर ध्यान दें, तो पायेंगे कि इन लोगों ने अपने जीवन में ५०-६० साल के बाद ही महान कार्य सम्पादित किये हैं। महात्मा गान्धी ने ५३ वर्ष की आयु के बाद ही अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। युवावस्था में ही वृद्धावस्था आ घेरने का प्रमुख कारण यह है कि हमें इस बात की जानकारी नहीं है कि हमारे शरीर के संचालन के लिए प्रकृति ने भी कुछ व्यवस्था बना रखी है। अगर हम उस क्रम में कोई गतिरोध पैदा करते हैं, तो हमारे स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव आते हैं। हमारा शरीर कमजोर हो जाता है। उस समय मौसम एवं वातावरण के परिवर्तन का भी प्रभाव शरीर पर पड़ता है। हमारे शरीर पर विजातीय तत्त्वों का भी आक्रमण होता है, परन्तु आपको मालूम नहीं है कि हमारे शरीर के भीतर ऐसी प्रतिरोधक शक्ति भी भगवान ने दे रखी है, जो उन आक्रमणकारी तत्त्वों को नष्ट करती रहती है। यह सब मनुष्य के शरीर के अन्दर होता रहता है। वास्तव में यह एक परिशोधन प्रक्रिया है, जो प्रकृति द्वारा सम्पन्न होती है।

मनुष्य को अपने शरीर को ठीक रखने के लिए अपने आहार-विहार तथा संयम पर ध्यान रखना चाहिए। बीमारी के दिनों में हमें यह करना चाहिए कि अपने शरीर को अनावश्यक श्रम से बचाएँ और प्रकृति को अपना काम करने दें। प्राकृतिक चिकित्सा जैसे—जल, मिट्टी, धूप आदि की सहायता प्राप्त करें। घबराने की अपेक्षा, रोग-निवृत्ति में थोड़ा समय लगे तो उसे धैर्यपूर्वक हमें सहन कर लेना चाहिए। इस प्रकार थोड़ी-सी सावधानी बरत लेने पर हम रोग से छुटकारा पा जाएँगे और स्वस्थ हो जाएँगे। वस्तुतः स्वास्थ्य के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए, तभी हम स्वास्थ्य बल से लाभ उठा सकते हैं अन्यथा हम अल्पायु में ही बूढ़े हो जाएँगे। स्वास्थ्य-बल का लाभ लेने के लिए हमें संयम, नियम, आहार, विहार, श्रम आदि तत्त्वों पर विशेष ध्यान देना होगा। हमने साल में दो बार गायत्री अनुष्ठान की प्रक्रिया इसीलिए चलायी है, ताकि आप लोग अपने स्वास्थ्य-बल को ठीक रख सकें।

स्वास्थ्य-बल के बाद दूसरा बल विद्या-बल माना गया है। लोग हमें कहते हैं कि विद्या मनुष्य को शान्ति प्रदान करती है, मनुष्य को ऊँचा उठा देती है, इस सन्दर्भ में आप भी कुछ प्रकाश डालने-समझाने की कृपा करें।

मित्रो ! यह सत्य है कि प्राणिजगत् में सर्वोपरि गौरव पाने का अधिकार जो मनुष्य को मिला है, उसका मूल कारण उसकी विकसित बुद्धि एवं विवेक ही है। मनुष्य में यही एक ऐसी विशेषता है, जिसके कारण वह प्राणिजगत् का स्वामी तथा गुरु बना हुआ है। यद्यपि यह सत्य है कि शारीरिक रूप से पशुओं की तुलना में मनुष्य बहुत ही निर्बल तथा अपूर्ण है, किन्तु परमात्मा से विशेष वरदान के रूप में मिली हुई बुद्धि ने उसे सर्वश्रेष्ठता प्रदान कर दी है। मनुष्य के बौद्धिक विकास के प्रमाण के रूप में हम आज के उन्नत ज्ञान, आश्चर्यजनक वैज्ञानिक प्रयोग, विशाल उद्योग, चिकित्सा विज्ञान आदि की ओर देखकर गर्व अनुभव करते हैं। यह सब वास्तव में मनुष्य की बुद्धि का चमत्कार है।

विद्या के अभाव में उन्नति असम्भव है। यही वह पूँजी है जो सच्चे अर्थों में मनुष्य का उत्थान करती और यश, गौरव का अधिकारी बनाती है। ऐसा एक भी उदाहरण इस संसार में नहीं पाया जा सकता, जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि बिना ज्ञान एवं विद्या के सभी प्रकार की उन्नति एवं प्रगति सम्भव मानी जा सकती है। वास्तव में उत्कर्ष का एक ही उपाय है और वह है—'ज्ञान'—'विद्या'—इसके बिना मनुष्य की आध्यात्मिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

या भौतिक प्रगति सम्भव नहीं है। मनुष्य के मानसिक, सामाजिक, आर्थिक एवं व्यक्तिगत हर प्रकार की उन्नति का मूल कारण विद्या ही है। आज संसार में विद्यावान की ही पूजा होती है। अशिक्षित-अज्ञानी की कहीं पूछ नहीं होती है। जिस प्रकार नेत्रहीन के लिए सारा संसार अंधकार से पूर्ण रहता है, सुन्दर दृश्यों तथा रंगों के आनन्द से वह वंचित रह जाता है उसी प्रकार ज्ञान के अभाव में मनुष्य इस संसार का मधुर रहस्य, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला आदि का रसास्वादन नहीं कर सकता है। इसके अभाव में मनुष्य इस स्वर्गीय संसार में पशु के तुल्य ही माना जा सकता है। ऐसा मनुष्य केवल पेट और प्रजनन में ही इस दुर्लभ मानव जीवन को नष्ट कर देता है।

इस संसार में आत्मा से लेकर जितने भी शारीरिक सुख हैं, वह विद्या के अभाव में हम प्राप्त नहीं कर सकते हैं। ज्ञान को—विद्या को ही मनुष्य की वास्तविक शक्ति माना गया है। वास्तविक वस्तु वह है जो सदैव रहने वाली हो, चिरस्थायी हो। संसार में हर वस्तु एक निश्चित काल पश्चात् नष्ट हो जाती है। धन नष्ट हो जाता है, तन जर्जर हो जाता है, साथी-सहयोगी छूट जाते हैं, केवल ज्ञान ही एक ऐसा अक्षय तत्त्व है जो कहीं भी, किसी भी अवस्था और किसी काल में मनुष्य का साथ नहीं छोड़ता है।

धनबल को भी एक शक्ति माना गया है, किन्तु यह उसकी वास्तविक शक्ति नहीं है। इसका मूल स्रोत ज्ञान ही है। ज्ञान के आधार पर ही धन की उपलब्धि होती है और ज्ञान के बल पर ही समाज में लोगों को अपना सहायक तथा सहयोगी बनाया जाता है। अज्ञानी व्यक्ति के लिए संसार की कोई वस्तु सम्भव नहीं है अतः हम चाहते हैं कि आप भी ज्ञानवान बनें। अपने घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय रखें तथा हमारे साहित्य को पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाने का प्रयास करें। यह साहित्य हमने अपने मार्गदर्शक के आदेशानुसार तैयार किया है। इसमें हमने प्राण का अंश लगाया है और अपनी भावनाओं को, संवेदनाओं को और अन्तः की पीड़ा को उँड़ेल दिया है। आप इसे पढ़ेंगे तो आपका विचार बदलता चला जाएगा तथा आप समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त करते हुए चले जाएँगे।

प्रायः धनबल के बारे में लोगों की मान्यता यह है कि यह धन जिसके पास अधिक होगा वह उतना ही प्रसन्नचित्त होगा तथा उसके अन्दर खुशियों का भण्डार होगा, परन्तु हमारा यह सोचना गलत है। आज जिसके पास जितना अधिक धन है, वह उतना ही अधिक अशान्त तथा सुख-चैन से वंचित है। शक्ति भी उसमें नहीं है। हमारे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि धन कोई बुरी चीज है, निःसन्देह धन एक शक्ति है और वर्तमान समय तो ऐसा हो गया है, कि बिना धन के मनुष्य का जीवन निर्वाह भी सम्भव नहीं रहा। परन्तु यह बात भी सत्य है कि धन तभी तक शुभ और हितकारी है, जब तक उसे ईमानदारी के साथ कमाया जाए और उसका सदुपयोग किया जाए। इसके विपरीत यदि हम धन कमाने और चारों तरफ से उसे बटोरकर अपनी तिजोरी में बन्द करने को ही अपना लक्ष्य बना लेते हैं और इस सम्पत्ति का चाहे जैसा भी दुरुपयोग करने का निश्चय कर लेते हैं, तो यह हमारे लिए अभिशाप बन जाता है। ऐसे मनुष्य अपना पतन तो करते ही हैं, साथ ही दूसरे लोगों को उनके उचित अधिकार से वंचित करके विपत्ति का कारण बनते हैं।

आजकल समाज में, देश में यही हो रहा है। जिसमें अक्ल, चतुरता और शक्ति की तनिक भी अधिकता है, वह कोशिश करता है कि मैं संसार की अधिक से अधिक सुख-सामग्री अपने कब्जे में कर लूँ। अपनी इस हवस को पूरा करने के लिए वह अपने पड़ोसियों के अधिकारों के ऊपर हमला करता है और उनके हाथ की रोटी, मुख का ग्रास छीनकर खुद मालदार बनना चाहता है। वास्तव में एक आदमी का मालदार बनने का अर्थ है—अनेकों का शोषण, अनेकों की सुख-सुविधाओं का अपहरण। इस प्रकार समाज के अन्तर्गत अधिक धन इकट्ठा होने से आपस में राग-द्वेष पनपता है। इस तरह हम देखते हैं कि धन की अधिकता समाज में मनुष्य-मनुष्य के बीच विरोध पैदा करती है, वैमनस्य को बढ़ाती है। वास्तव में हमने मिट्टी के ढेलों को धन मानकर रखा है। यह हमारी कमी है। इसके द्वारा कभी भी मनुष्य का कल्याण न तो हुआ है और न कभी सम्भव होगा।

मनुष्य धन इसलिए जमा करना चाहता है कि उसे आगे सुख और संतोष मिल सके, किन्तु जमा करने की यही आदत जब तृष्णा बन जाती है तो उस व्यक्ति को धर्म एवं अधर्म का ख्याल नहीं रहता और अज्ञानतावश वह ऐसा काम कर बैठता है, जिसके द्वारा उसका कल्याण होने की बजाय उसे जीवन भर दुःख ही भोगना पड़ता है। अतः हमें ऐसे धन से दूर ही रहना चाहिए। इस प्रकार के धन के संचय होने पर हमारी आने वाली पीढ़ी का भी संस्कार दूषित हो जाता है तथा वह भी पतन की ओर अग्रसर हो जाती है। अतः हम इस धनबल के पीछे न पड़कर संस्कारवान् बनने का प्रयास करें ही, अपने बच्चों को भी संस्कारवान् बनाएँ।

वास्तव में हमारे ख्याल से स्वास्थ्यबल, विद्याबल एवं धनबल से ज्यादा महत्त्वपूर्ण एक और बल है, जिसका नाम—'आत्मबल' है। आत्मबल के धनी ऋषि-मुनियों ने, हमारे पूर्वजों ने सब कुछ प्राप्त कर लिया था। यह एक तथ्य है कि भौतिकबलों से भौतिक साधन मिलते हैं और आत्मबल के सहारे आत्मिक प्रगति के साधन मनुष्य को मिलते हैं। महान् पुरुष जिस स्वर्गीय परिस्थितियों में निवास करता है तथा उसे जो भी विभूतियाँ जगत् में प्राप्त होती हैं, उसका प्रमुख माध्यम आत्मबल ही होता है। अन्य तीन बलों की जो बातें हमने बतलायी हैं, उससे इन चीजों की प्राप्ति नहीं होती है। हर मनुष्य को आत्मिक प्रगति एवं सफलता के लिए यही सिद्धान्त अपनाना पड़ता है। आत्मबल ही मनुष्य की वह पूँजी है, जिसके आधार पर मनुष्य दैवी-अनुग्रह, भगवत्कृपा एवं ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त कर सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य को शरीरबल प्राप्त करने के लिए आहार-विहार का संयम, धनबल के लिए योग्यता, श्रम, कार्यकुशलता तथा ज्ञानबल के लिए अध्ययन, लेखन, शिक्षक, गुरु, साहित्य आदि की आवश्यकता पड़ती है। ठीक उसी प्रकार आत्मबल के लिए मनुष्य को संकल्प, संयम, आदर्शों के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास की नितान्त आवश्यकता है। फूटे हुए बर्तन में दूध दुहने से कोई फायदा नहीं मिलता है, उसी प्रकार मनुष्य के भीतर कषाय-कल्मष भरे हों तो ईश्वर-प्रदत्त चीजें अर्थात् आत्मबल नहीं मिल सकता है। उसे पहले अपने आपका सुधार करना आवश्यक है। इसके द्वारा ही मनुष्य का कल्याण हो सकता है। अतः इसे अपने अन्दर धारण करने का प्रयास करना चाहिए। इसका एक ही माध्यम है कि व्यक्ति अध्यात्मवादी दृष्टिकोण अपनाए एवं परिस्थितियों से प्रभावित न हो।

आज हर व्यक्ति समस्याओं के जाल में निरन्तर उलझता जा रहा है। इसका प्रमुख कारण है व्यक्ति के अन्दर आध्यात्मिक दृष्टिकोण का अभाव। हमें हर प्रकार से यह समझ लेना चाहिए कि मनुष्य के विकास के लिए उसके सामने दो ही रास्ते हैं—(१) भौतिकवादी रास्ता और (२) अध्यात्मवादी रास्ता। चाहे तो आप इसे प्रेय एवं श्रेय मार्ग भी कह सकते हैं। मनुष्य में उत्कृष्ट चिन्तन की पृष्ठभूमि बनाने का काम अध्यात्म करता है। आत्मा में विद्यमान परमात्मा को हम कैसे विकसित करें, इस विद्या का नाम अध्यात्म है, परन्तु आज का मनुष्य तो पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड, अनुष्ठान तथा हनुमानजी को प्रसाद चढ़ा देने की प्रतिमा को ही अध्यात्म क्या, सब कुछ मान बैठा है। यह उसकी भूल है। वास्तव में अध्यात्म का मतलब है—आदमी के चिन्तन, चरित्र, आदर्श एवं व्यवहार को ऊँचा उठाना जो इस तथ्य को जानता है, वही सच्चा अध्यात्मवादी है।

प्रायः लोग मनौती मानने और प्रसाद चढ़ा देने, धूपबत्ती, अगरबत्ती जला देने और पूजा-पाठ को ही अध्यात्म मान बैठते हैं। वे नहीं जानते कि देवता बहुत ही व्यस्त होते हैं। एक कम्पनी को सँभालने में मैनेजर का कचूमर निकल जाता है, फिर भगवान को तो सारी सृष्टि का नियन्त्रण करना पड़ता है। अतः उसके पास उतना समय कहाँ जो आपके प्रसाद के लिए दौड़ा चला आवे और आशीर्वाद, वरदान दे जाए। भगवान मूर्ख नहीं है जो आपकी माला और पूजा से प्रसन्न हो जाए। आपको अपने चरित्र एवं व्यक्तित्व को ऊँचा उठाना होगा तभी परमात्मा की अनुकम्पा आपको मिल सकती है। इसके लिए ऋषियों ने चार साधनाएँ बतलायी हैं, जो मनुष्य को करनी चाहिए। वे हैं—**'सादा जीवन उच्च विचार', 'आत्मवत् सर्वभूतेषु', 'लोष्ठवत् परद्रव्येषु'** एवं **'मातृवत् परदारेषु।'** इन सूत्रों को अपनाकर ही हम अध्यात्मवादी बन सकते हैं तथा हमारे अन्दर अध्यात्म का बल—'आत्मबल' आ सकता है।

अगर हम अध्यात्मबल का व्यापार करें तो अधिक लाभ कमा सकते हैं। गुरुनानक का उदाहरण सामने है। नानक के पिताजी ने नानक को २० रुपये दिये और उन्हें व्यापार करने को कहा। आत्मबल के धनी नानक ने ऐसा व्यापार किया कि आज वह करोड़ों के व्यापारी बन गये। आपने अमृतसर में स्वर्णमन्दिर देखा होगा, वह आत्मबल का व्यापार है। आत्मबल का व्यापार अध्यात्म का व्यापार कहलाता है, भगवान बुद्ध, जो अपने बचपन में एक बूढ़े, बीमार तथा एक मरे हुए आदमी को देखकर घबरा गये थे, उन्होंने जब आत्मबल का व्यापार किया तो विश्व के अनेक जगहों में उनके मन्दिर सोने के बने हुए हैं। द्रोपदी ने भी अध्यात्म का व्यापार किया था। चीरहरण के समय भगवान् ने उसे सभी स्थानों का कपड़ा अनुदान में दे दिया था। दुःशासन उसे नंगा न कर सका, कपड़े से कपड़े निकलते चले गये। हनुमान जी ने भी अपने जीवन में अध्यात्म का ऐसा व्यापार किया कि सारे देश में आज जितने अधिक मन्दिर उनके बने हुए हैं, उतने मन्दिर राम के नहीं हैं। यही सबसे महत्त्वपूर्ण बल है।

एकलव्य ने भी अध्यात्म का व्यापार किया था और मिट्टी के द्रोणाचार्य से इतना सीख लिया कि कुत्ते का मुँह तक सिल दिया था। अर्जुन जो पहले कायर बना हुआ था, परन्तु भगवान श्रीकृष्ण के समझाने पर जब उसने भी अपने अन्दर आत्मबल धारण किया तो वह फायदे में रहा। भगवान आगे-आगे थे तथा उसके सारथी बनकर चल रहे थे।

बेटे, आत्मबल एक सुन्दर तथा नफे का व्यापार है। हम भी इसके व्यापारी हैं। हमारा आपसे निवेदन है कि आप भी भगवान की इस लिमिटेड कम्पनी में अपना शेयर खरीद लीजिए और भागीदार बन जाइये। आप भी फायदे में रहेंगे। सुना है रुड़की में हरिद्वार के पास एक बड़ा पावर हाउस है। उसी तरह भगवान के पास भी एक बिजलीघर है। उसी से हम सभी को जिसने आत्मबल का व्यापार किया है, शक्ति मिलती रहती है और हमारा काम चलता रहता है। इस आत्मबल की प्राप्ति अध्यात्म मार्ग पर चलने से ही होती है।

अध्यात्म एक भावना का नाम है, श्रद्धा का नाम है। आप जिस श्रद्धा एवं भक्ति के साथ गायत्री माता के फोटो को देखते हैं, आपको उसी प्रकार का लाभ मिलता है। इसे हम अध्यात्म का लाभ कहते हैं। अनुष्ठान उसे कहते हैं, जो किसी खास विधान एवं खास उद्देश्य से किया जाता है। अनुष्ठान में आहार का नियन्त्रण परम आवश्यक है। अभी तो गर्मी के कारण हमने अनुष्ठान में आपको छूट दे रखी है। यह एक तथ्य है कि भगवान को प्राप्त करने के लिए भावना पवित्र होनी चाहिए तथा भावना को पवित्र करने के लिए आहार को ठीक करना परम आवश्यक है। आपके आहार के अनुसार ही भावना होगी। आपने गलत ढंग से पैसा कमाया है और उस पैसे का अन्न ग्रहण किया है तो आपकी भावना भी दूषित होगी। आपका आहार तमोगुणी होगा तो भावना भी उसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकार की होगी। अतः हर साधक को अपने भोजन के बारे में सही मात्रा, सही समय तथा संस्कार सम्बन्धी दोष एवं अवांछनीयता का ध्यान रखना चाहिए।

संस्कारवान बनने के लिए अपने आहार का नियंत्रण करना आवश्यक है, तभी हमारी उपासना में सामर्थ्य एवं बल की प्राप्ति होगी। हमने चौबीस साल तक जौ की रोटी तथा छाछ का आहार लिया है। अपने को परिष्कृत-परिमार्जित किया है। वास्तव में उपासना के लिए अपने को पवित्र बनाना परम आवश्यक है। इसी कारण से कबीर ने कहा है—

कबिरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।
पाछे-पाछे हरि फिरैं, कहत कबीर-कबीर।।

हमने चौबीस वर्ष जो आहार-संयम किया था, उसके कारण आज भी हमारी पाचनशक्ति ठीक है। हम जो ग्रहण करते हैं, उसे पेट ठीक ढंग से पचा लेता है। पिप्पलाद ऋषि ने अपना सारा जीवन केवल पीपल के फल से ही काटा था। इससे उन्हें बहुत फायदा था।

आहार के द्वारा मनुष्य के विचार बनते हैं। शास्त्रों में कहा गया है—'जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन।' आपमें से अधिकांश होटलों में खाते हैं। वहाँ आपको जूठन भी मिलता है। वहाँ काम करने वाले नौकर ठीक से बर्तनों की सफाई या मँजाई नहीं करते हैं। इस में रखे थोड़े-से पानी में बार-बार धो-पोंछकर पुनः आपको परोसकर दे देते हैं। इस प्रकार के आहार द्वारा आपका अन्नमय कोश कैसे ठीक होगा ? आपकी उपासना कैसे ठीक ढंग से संचालित होगी।

आपने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन भी नहीं किया है। आपकी पत्नी कितनी खूबसूरत, सुकोमल आयी थी, आपने उसके साथ भी संयम नहीं बरता और बच्चे पर बच्चे पैदा करते चले गये। आपकी जो थोड़ी-सी शक्ति अर्जित होती थी, वह भी बार-बार निकल जाती रही। अगर आपको कुछ बनना है, उपासना-साधना करनी है, तो आपको सीमित ब्रह्मचर्य का पालन कर संयमशील बनना चाहिए, तभी मन की चंचलता थमेगी और आपका मन उपासना में लगेगा।

आपने अपनी जीभ को भी नहीं साधा है। इसके द्वारा न जाने क्या-क्या खाते रहते हैं ? दिनभर बकरी की तरह से आपका मुँह चलता रहता है, जबकि यह कहा गया है कि बिना कड़ी भूख लगे मनुष्य को कुछ भी नहीं खाना चाहिए। इससे लाभ की बजाय हानि ही होती है। आपने अगर अपनी जीभ को साध लिया, किसी की चुगली नहीं की, कभी अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाया, किसी का दिल नहीं दुःखाया तो आपकी यह जीभ भगवान बन जाएगी। आप जिस किसी को भी कुछ कहेंगे वह उसके लिए वरदान सिद्ध हो जाएगा। हमने अपनी जीभ को अपनी इन्द्रियों को साधा है, तब ही यह चमत्कार आपको यहाँ दिखायी पड़ रहा है।

अनुसूया ने ब्रह्मचर्य का पालन किया था। एक बार ब्रह्मा, विष्णु और महेश उनके पास भिक्षा माँगने गये और कहा कि आप कपड़ा निकाल कर देंगी तो हम ग्रहण करेंगे। अनुसूया ने अपने ध्यान में देखा तो मालूम पड़ा कि ये त्रिमूर्ति हैं। अतः वह बोल पड़ीं कि आप लोग बच्चे हो जाएँ तो हम आपके आदेश का पालन करेंगे। इस प्रकार कहते हैं कि वे बच्चे बन गये तथा अनुसूया ने उन लोगों को प्रेम से भोजन कराया था। यह है बेटे, साधना-उपासना का महत्त्व, जो साधारण से के आदमी को महान् बना देता है।

मित्रो, ब्रह्मचर्य के साथ-साथ मनःसंयम भी बरतना आवश्यक है। संयम शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार का होता है। स्त्री-पुरुष के बीच एक स्वाभाविक आकर्षण होता है। जब भी कोई जवान व्यक्ति एक-दूसरे को देखते हैं तो उन्हें लगाव महसूस होता है। दोनों अगर अपनी भावनाओं में परिवर्तन कर लें तो दोनों ही महानता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जो इस प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक संयम का प्रतिपादन करती हैं। शिवाजी ने जब मुगलों पर विजय पायी थी, तो उनके सेनापति ने एक सुन्दर युवती को लाकर उनके सामने खड़ा कर दिया था। शिवाजी में शारीरिक एवं मानसिक संयम विद्यमान था। उसे देखकर उनकी भावनाओं में परिवर्तन आया और वे बोल उठे—काश अगर हमारी माँ भी ऐसी सुन्दर होती तो हम भी सुन्दर होते। उन्होंने सेनापति को बुलाकर भला-बुरा कहा और उसे उसके निवास स्थान पर छोड़ आने का निर्देश दिया।

स्वामी विवेकानन्द जब विदेश गये थे, तो एक लड़की ने भी उनकी परीक्षा ली थी, परन्तु वे डिगे नहीं, अपनी वासना को जला दिया और उस लड़की को शिष्या बना लिया। एक साथ काम करने वाली लड़की आगे चलकर सिस्टर निवेदिता के नाम से प्रख्यात हुई। यह सब आप जानते ही हैं। यह सब संयम की बात है। अपनी भावनाओं के परिवर्तन की बात है। साधक को इस प्रकार का होना आवश्यक है। आपको आत्मबल प्राप्त करने के लिए अध्यात्म के रास्ते पर चलना होगा और उसके लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों को अपनाना होगा। पहला—माला के विधान को समझना होगा—यानी कि व्यक्तित्व का परिष्कार करना होगा। दूसरा—एक नये किस्म की आरती एवं दीपक का थाल सजाना होगा—अर्थात् अपने को भगवान् के प्रति समर्पित करना होगा। तीसरा—आहार पर नियंत्रण करना होगा। चौथा—शारीरिक एवं मानसिक संयम साधना होगा और पाँचवाँ—स्वाध्यायशील बनना होगा। आप इस प्रकार कर सकेंगे तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपका जीवन महान् बन जायगा। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओजस्वी, तेजस्वी एवं मनस्वी व्यक्तित्वों का निर्माण

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

वसंत पर्व के समय पर हमारी यह शिविर-शृंखला जिस उद्घाटन-प्रयोजन के लिए चल रही है, उसमें सम्मिलित करने के लिए आपको दूर-दूर से बुलाकर क्यों कष्ट दिया, आइये जरा इस पर विचार करें। इस समय इधर तीन कार्य चल रहे हैं, जिनमें सम्मिलित होने के लिए आप लोगों को बुलाया गया है। यह तीन कार्य हैं—(१) ब्रह्मवर्चस का उद्घाटन (२) प्रज्ञामंदिर का उद्घाटन और (३) गायत्री नगर का उद्घाटन। आँख से देखने पर यह तीनों ही चीजें बहुत छोटी मालूम पड़ती हैं, लेकिन अगर आप विवेक की आँख से देखें तो इनमें कायाकल्प करने वाले और व्यक्ति को बदल देने वाले सारे के सारे तत्त्व मौजूद हैं, भले ही बाहर से देखने में ये छोटी-छोटी प्रतीत होती हों। इनमें से एक ब्रह्मवर्चस् आश्रम का निर्माण है, जो बाह्य दृष्टि से एक मंदिर जैसी चीज है, जिसे बिलकुल एक सामान्य-सा निर्माण कहा जा सकता है, पर भीतर की दृष्टि से यह बहुत बड़ी एवं अभूतपूर्व बात है। यह इस बात का एक प्रतीक है कि उलट-पुलट करने वाली कोई बहुत बड़ी चीज आने वाली है। मनुष्यों को दिशा देने वाली कोई नयी चीज उत्पन्न होने वाली है।

प्रतीक किसे कहते हैं ? प्रतीक बेटे, उसे कहते हैं जैसे कि सम्राट जार्ज पंचम जब इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठे थे, तब हमको बचपन की यह कहानी याद है कि उनके हाथ में एक चाँदी की छड़ी या डण्डा रहता था। लोगों ने जब उनसे पूछा कि यह डण्डा किस काम आता है तो उन्होंने कहा कि यह राजसत्ता का प्रतीक है। हम सम्पूर्ण राष्ट्रमण्डल के बादशाह हैं। उसका यह प्रतीक है—रोल। रोल को लिए बिना वे गद्दी पर नहीं बैठ सकते थे। इसी तरह हिन्दुस्तान की राजसत्ता जब ट्रांसफर हुई थी और अँग्रेज सरकार अपना शासन हिन्दुस्तान की सरकार को देकर गयी थी तो क्या चीज देकर गयी थी—फाइलें—नहीं ? तब लार्ड माउण्टबेटन ने राजगोपालाचार्य को गवर्नर बनाया था और उनके हाथ में एक रोल थमा दिया था। यह रोल या डण्डा क्या है ? यह हिन्दुस्तान के शासन की बागडोर का प्रतीक है, सिम्बल है। वह सिम्बल हमें सौंप दिया गया और किलों पर से यूनियन जैक उतारकर तिरंगा झंडा फहरा दिया गया। तिरंगा हो या यूनियन जैक, ये प्रतीक हैं। यूनियन जैक पर जो तिरछी नीली और लाल लकीरें बनी हुई थीं, वे अँग्रेजी शासन की प्रतीक थीं और तिरंगा हिन्दुस्तान के शासन का प्रतीक है, जिसमें तीन पट्टियाँ लगा दी गयी हैं। इनमें एक पट्टी शौर्य और साहस की प्रतीक है, दूसरी सादगी की और तीसरी श्रम की, समृद्धि की प्रतीक हैं। तीनों प्रतीकों से तिरंगा झण्डा बना दिया गया है। प्रतीक सबमें माने जाते हैं और जब तक दुनिया है, तब तक प्रतीक-पूजा भी कायम रहेगी। मुसलमान प्रतीक-पूजा को नहीं मानते हैं, लेकिन 'संगे अवसद' जो काबा शरीफ में एक काले रंग का पत्थर रखा हुआ है, प्रत्येक मुसलमान जब वहाँ हज यात्रा के लिए जाता है तो उसे उस काले पत्थर का चुम्बन लेना पड़ता है—'बोसा' लेना पड़ता है। जो उसका बोसा नहीं लेता उस व्यक्ति की जियारत कबूल नहीं मानी जाती। यह क्या है ? प्रतीक है।

आइये हम और आप अब प्रतीक की उस गहराई में प्रवेश करें, जिसके लिए उक्त तीनों प्रतीक बनाये गये हैं। जीवन के अन्तिम दिनों में भगवान ने, महाकाल ने त्रिपदा गायत्री ने तीन महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ प्रतीक रूप में हमारे मजबूत कंधों पर डाल दी हैं और हमने आपको बुलाया है कि आइये इस सेतुबन्ध को बाँधने में हम और आप मिल-जुल कर काम करें, गोवर्धन पहाड़ को मिलजुल कर उठाएँ। इसी के लिए आपको इस उद्घाटन सत्र में बुलाया गया है। बेटे यह उद्घाटन नहीं, वरन् एक प्रकार की प्रतीक-पूजा है। इस प्रतीक-पूजा के पीछे जो उद्देश्य काम करते हैं और जिसके लिये हम व्याकुल हैं और सारा श्रम, सारी अकल और सारे मनोयोग के आधार पर उनको पूरा करने में लगे हुए हैं, उसमें हम आपको भी दावत देते हैं कि इनके पीछे जो विचारणाएँ काम करती हैं, आइये उसको पूरा करने में मदद कीजिए।

ब्रह्मवर्चस क्या चीज है ? बेटे, ब्रह्मवर्चस एक फैक्ट्री है, एक कारखाना है, एक भट्टी है। इस भट्टी में क्या होगा ? गलाई और ढलाई। भट्टियाँ कई तरह की होती हैं। कहीं काँच की भट्टी है तो कहीं लोहे की भट्टी है, तो कहीं अमुक भट्टी है, लेकिन हमने जो भट्टी बनाई है उसमें हम गलाई और ढलाई का काम करेंगे। इस कारखाने में हम दो चीज तैयार करेंगे—एक तो ताकत और दूसरी बिजली, जिसके आधार पर नये युग का ढाँचा खड़ा होगा। प्रत्येक मशीन-प्रत्येक क्रिया किसी न किसी ताकत से चलती है। कोई भी तंत्र किसी न किसी ताकत से घुमाया जाता है। ताकत न हो तो वह चलेगा ही नहीं। जिस ताकत के द्वारा नये युग के निर्माण करने का तंत्र चलने वाला है, 'ड्रिलिंग' मशीन जिसके द्वारा जमीन में सुराख किया जाने वाला है—यह किस ताकत से चलेगी ? बेटे—यह जिस ताकत से चलेगी वह 'एटामिक' ताकत नहीं है, वरन् वह आत्मिक ताकत है। आत्मिक ताकत के बिना हम नया युग नहीं ला सकेंगे। नया युग लाने के लिए हम ऐसी बात नहीं करते जिसके लिए हमको पैसे की जरूरत हो। हम आत्मबल की जरूरत समझते हैं। आत्मबल अगर हमारे पास होगा तो हम मनुष्यों की चेतना को बदल सकेंगे।

परिवर्तन में क्या बदलना है ? क्या खाने-पीने के तरीके बदलने हैं ? नहीं बेटे, यही दाल-रोटी सब खायेंगे चाहे नया युग आ गया तो भी और नहीं आया तो भी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो फिर क्या बदलेंगे ? हम लोगों की विचारणाएँ बदल देंगे, चिन्तन बदल देंगे, आस्थाएँ बदल देंगे, दृष्टिकोण बदल देंगे और आदमी का ईमान बदल देंगे। ईमान को बदलने के लिए किस ताकत की जरूरत पड़ेगी, क्योंकि बदलना हमको चिन्तन है, खाना-कपड़ा नहीं। आदमी का चिन्तन बदलने के लिए लकड़ी की, पैसे की जरूरत नहीं है। जरूरत है रुहानी बल की—आत्मबल की जिससे विचारों को बदलना है। विचारों को कोई और दूसरी चीज नहीं बदल सकती हैं। पैसा विचारों को नहीं बदल सकता। दुनिया की कोई भी चीज विचारों को नहीं बदल सकती। विचारों को बदलने के लिए जिस आत्मबल की जरूरत है उसे हम पैदा करेंगे। युगशक्ति की शक्ति आत्मबल की शक्ति होगी। आत्मबल की शक्ति आप कैसे पैदा करेंगे ? इसके लिए हमने ब्रह्मवर्चस की छोटी-सी फैक्ट्री लगायी है। इसमें हम यह कोशिश करेंगे कि आत्मबल सम्पन्न मनुष्यों का निर्माण करें।

गुरुजी ! आप कैसे मनुष्यों का निर्माण करेंगे ? उनमें किस चीज का निर्माण करेंगे ? उन्हें क्या सिखाएँगे ? क्या आप उन्हें इंजीनियरिंग सिखाएँगे ? नहीं इंजीनियरिंग नहीं सिखाएँगे। हम दो तरह के आदमी बनायेंगे—एक का नाम होगा—मनस्वी और दूसरे का नाम होगा—तपस्वी। तो क्या आप मनस्वी और तपस्वी केवल इसी जगह बनाएँगे या और कहीं अन्यत्र भी ? नहीं बेटे, यह तो हमारी नर्सरी है। इस नर्सरी में हम छोटे-छोटे पौधे उगायेंगे और फिर उनको सारे संसार भर में भेज देंगे। यहाँ हम एक नमूने की मॉडल की, चीजें तैयार करेंगे और फिर सारे विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिए—हर आदमी को विचार देने के लिए उन्हें भेज देंगे। नये युग के लिए इन मॉडलों को हमने देवता कहा है। देवता की शर्त क्या होती है ? देवता के दो हिस्से हैं—एक मनस्वी और दूसरा तपस्वी। मनस्वी पूर्वार्द्ध है और तपस्वी उत्तरार्द्ध। मनस्वी मैट्रिक स्कूल, हाईस्कूल है तो तपस्वी कॉलेज कोर्स है। तपस्वी स्तर के मनुष्य जिसको हम देवत्व सम्पन्न कहते हैं, अगले दिनों तैयार करने पड़ेंगे। उन्हें तैयार करने के लिए हम शिक्षण करेंगे। क्या-क्या शिक्षण करेंगे इस ब्रह्मवर्चस में जिसका, उद्घाटन कराया है आपसे ? बेटे इसके पीछे हमारे बड़े-बड़े ख्वाब हैं। यद्यपि कम्पनी जरा-सी है, कारखाना जरा-सा है, इमारत जरा-सी है, लेकिन हम जो काम करने वाले हैं, वह केवल इस इमारत भर के लायक नहीं, हिन्दुस्तान के लायक नहीं, हिन्दुओं के लायक नहीं, वरन् सारे विश्व के लिए है। यह जगह हमारे बैठने के लिए है। बैठने के लिए—खड़े होने के लिए कहीं न कहीं तो जगह चाहिए। यह हमारे खड़े होने की जगह है, लेकिन हमें जो काम करना है, वह थोड़े-से दायरे में नहीं करना है, वरन् सारे संसार में करना है। व्यापक रूप से विस्तृत रूप से करना है।

क्या काम करना है ? एक तो हमको मनस्वी तैयार करने हैं और दूसरे-तपस्वी तैयार करने हैं। मनस्वी कैसे होते हैं ? मनस्वी ऐसे होते हैं जो मन के गुलाम नहीं होते, वरन् मन के स्वामी होते हैं। मन के स्वामी का नाम है मनस्वी पर, आज तो सारा मानव समाज ही मन का गुलाम है। मन के गुलाम से मतलब है—लोभ का गुलाम और मोह का गुलाम। सिद्धान्तों से उन्हें कोई मतलब नहीं। सिद्धान्त उनके लिए केवल कहने और सुनने भर के लिए हैं। सिद्धान्त उनके जीवन में से बहुत दूर हैं। वे नर-वानरों, नर-पशुओं और नर-कीटकों की तरीके से जिन्दा रहते हैं। सिद्धान्त उनके लिए कोई मायने नहीं रखते। उनके लिए लोभ मायने रखता है, मोह मायने रखता है, लेकिन ईमान कोई मायने नहीं रखता। इस पीढ़ी को हम बदल देना चाहते हैं और नया युग लाना चाहते हैं। इसलिए हम गलाई करेंगे और ढलाई करेंगे। गलाई-ढलाई क्या होती है ? बेटे, गलाई वह है जैसे कि छापेखाने की टाइप जब घिस जाते हैं तो उनको गलाने और ढालने के लिए फैक्ट्री में भेज देते हैं। जैसे ही वह भट्टियों में गला, उसे ढालकर नया टाइप बना देते हैं। इसी तरह टूटे-फूटे पुराने बर्तनों को भट्टियों में गलने भेज दिया जाता है। जहाँ उन्हें दुबारा ढालकर नया बर्तन बना देते हैं। पुराना गलाकर ढालने के बाद बिलकुल नया आ जायेगा। हम भी नया युग लाने के लिए नया इनसान बनाना चाहते हैं। नये इनसान को मनस्वी बनाना चाहते हैं।

मनस्वी कैसा होता है ? मनस्वी ऐसा होता है जो मन का मालिक होता है और अपने इशारे से मन को चलाता है और कहता है कि भाईसाहब हम आपके गुलाम नहीं हैं। हमको यह शरीर और मन सहित ग्यारह इन्द्रियाँ काम करने के लिए मिली हैं। वे हमारे इशारे पर चलेंगी। इन्द्रियों को हमारा इशारा मानना पड़ेगा। आपका इशारा क्या होगा और आप क्या करायेंगे ? हम भगवान के यहाँ से आते हैं, भगवान ने हमारे जिम्मे सिद्धान्त दिये हैं, आदर्श दिये हैं। उन आदर्शों और सिद्धान्तों पर चलने के लिए हम मन को हुक्म देंगे कि आपको हमारा आदेश मानना ही पड़ेगा। शरीर को हमारा हुक्म मानना पड़ेगा। इस तरीके से जो आदमी अपने जीवन की बागडोर और अपने जीवन की गतिविधियों की बागडोर अपने हाथ में सँभाल लेते हैं—उनका नाम होता है—मनस्वी। अब हम मनस्वी बनायेंगे। मनस्वी से क्या हो जाएगा ? बेटे, मनस्वी से ऐसा हो जाएगा कि इनसान के भीतर जो हम ख्वाब देखते हैं कि देवता का उदय होना चाहिए तो उसके भीतर देवत्व का उदय हो जाएगा। अपने मन का जो मालिक है वही देवता होता है। देवता कैसे होते हैं ? देवता ऐसा होता है कि उसके सामने उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ, इच्छाएँ, उसकी कामनाएँ, भावनाएँ, उमंगें जो उठती हैं, वे यह उठती हैं कि हमारा जीवन आदर्शों के लिए है, सिद्धान्तों के लिए है। जहाँ से हम चले हैं, उसके लिए हैं।

साथियो ! भगवान ने मनुष्य को जो बहुमूल्य जीवन दिया है, वह मौज उड़ाने के लिए—मजा उड़ाने के लिये नहीं दिया है। अगर इतने भर के लिए भगवान ने मनुष्य को जन्म दिया होता तो फिर भगवान को जितनी गालियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

दी जा सकें, उतना ही कम है। फिर भगवान को पक्षपाती कहा जाता, अन्यायी कहा जाता। चौरासी लाख योनियों में से जो चीजें किसी को नहीं मिलीं, लेकिन इनसान को मिलीं, तो निश्चय ही वह मौज-मजा उड़ाने के लिए, स्वार्थ सिद्ध करने के लिए, अय्यासी करने के लिए नहीं मिली हैं, वरन् एक अमानत के रूप में आपको मिली हैं। जिस दिन आदमी को यह ख्याल आ जाए कि यह जो अमानत मिली है इसका इस्तेमाल हमको ईमानदार आदमी के तरीके से करना चाहिए, बेईमान या बदमाश आदमी के तरीके से नहीं, तो समझना चाहिए कि वह मनस्वी हो गया। बेईमान कौन होता है ? बेईमान उस मुनीम का—खजांची का नाम है जिसके हाथ में बहुत सारा पैसा दिया गया कि वह इसे सरकारी कामों में खर्च करेगा, लेकिन उसने इसे सरकारी कामों में खर्च न करके अपने लिए खर्च कर डाला। वह आदमी क्या हो सकता है आप समझ सकते हैं। वह आदमी एक 'क्रिमिनल' है। इसी तरह वह आदमी भी क्रिमिनल है जो अपनी अकल को, दौलत को, अपने प्रभाव को, विशेषताओं को अपनी अय्यासी में, अपने लोभ और मोह में खर्च कर डालता है। ऐसा आदमी कानून की दृष्टि में न सही, आध्यात्मिक दृष्टि से क्रिमिनल है। सरकारी कानून, जिसके आधार पर मुकदमे चलते हैं, वे तो चोरों और चालाकों द्वारा चोरों के लिए बना दिये गये हैं। हम सरकारी कानूनों की बावत नहीं कहते कि ये बातें जुर्म हैं कि नहीं, लेकिन बेटे, आध्यात्मिक दृष्टि से जो बातें जुर्म हैं, उसकी बावत हम आपका ध्यान आकर्षित करते हैं।

आदमी की अकल भगवान की धरोहर है। आदमी की क्षमताएँ भगवान की धरोहर हैं और वे सिर्फ इस काम के लिए मिली हुई हैं कि उसे भगवान की सुन्दर दुनिया को खूबसूरत बनाने के लिए, सुन्दर-समुन्नत बनाने के लिए, संस्कारवान बनाने के लिए खर्च करनी चाहिए। यह उसकी जिम्मेदारी है, जो भगवान् ने उसके जिम्मे सौंपी है। अगर आपका यह ख्याल हो कि मरने के बाद आपसे सवाल-जवाब पूछा जाएगा कि आपने कोई भजन-पूजन किया या नहीं तो, बेटे, भगवान के यहाँ ऐसा कोई एकाउण्ट नहीं है। भगवान के यहाँ तो केवल एक ही सवाल-जवाब होता है कि आपने इंसानी जिंदगी किन-किन कामों में खर्च की, जवाब दीजिए ? हमने आपको दुनिया को सुन्दर-समुन्नत बनाने के लिए, ऊँचा उठाने के लिए, आदर्शवादी बनने और बनाने के लिए, अपने सहायक-असिस्टेण्ट के रूप में भेजा था, आपने वे काम किये कि नहीं ? आपको हमने इतनी सुन्दर अकल, दिमाग, इतने सुन्दर हाथ-पाँव दिये थे, जो धरती पर और किसी को नहीं मिले। आपको हमने पेट भरने और तन ढकने लायक इतनी चीजें दे दी थीं कि घंटे-आधे घंटे की मेहनत से ही आप अपना गुजारा कर सकते थे और बाकी समय को क्षमता और सम्पदा को हमारे काम में खर्च करना चाहिए था। पर आपने ऐसा क्यों नहीं किया ? कर भी क्या सकते थे ? यह जो हमारा मन है, यह ऐसा बेईमान, बदमाश, दुष्ट, दुराचारी, अन्यायी-अत्याचारी नौकर और साथी है, जो बेकाबू हैं। मिला तो यह हमको इसलिए था कि इसकी मदद से हमको अपने जिन्दगी की नाव पार लगानी है, पर हमने इसे ऐसे घसीट-घसीट कर मारा है जैसे कोई-कोई लड़के अपने बाप को जब वह बुड्ढा हो जाता है तो पैसा छीनने के लिए मारते-पीटते और पैसा छीन लेते हैं। कोई-कोई ऐसा होता है बदमाश।

गुरुजी ! कौन-कौन सा है ऐसा बदमाश, उसका नाम बताइये ? बेटे, उस बदमाश का नाम है—आपका मन, जिसने आपके ईमान को, आपकी जीवात्मा को मारा-पीटा है, लातें लगायी हैं, गालियाँ दी हैं और जितना भी पीड़ित कर सकता था, उत्पीड़न दे सकता था, जितना भी गिरा सकता था, वह सब गिरा दिया। यदि यह हमारा और आपका मन यदि काबू में होता तो आज हमारी हैसियत कुछ दूसरी ही होती। अगर आपका मन काबू में होता तो आपमें से अधिकांश व्यक्ति विवेकानन्द होते, कबीर होते, रैदास होते, पर यह नहीं मानता है कसाई-हत्यारा हमारे ऊपर दिन-रात हावी रहता है और भगवान के बारे में भी न जाने क्या-क्या ऊल-जलूल पट्टी पढ़ाता रहता है हमको। भगवान का भजन करने से मतलब केवल एक ही है कि हम अपने मन की सफाई करें और यह याद रखें कि भगवान के यहाँ से हम किस काम के लिए आये हैं और किस काम के लिए जाना पड़ेगा ? लेकिन यह चालाक और बेईमान मन न जाने क्या पट्टी पढ़ा देता है। ये यों कह देता है कि भगवान की धूपबत्ती जला दीजिए और उन्हें चावल खिला दीजिए, फूल-माला सुँघा दीजिए, भगवान को हनुमान चालीसा सुना दीजिए और भगवान को बना लीजिए, फिर भगवान से चाहे जो काम करा लीजिए। हमारा मन बड़ा चालाक, बड़ा बेईमान, बड़ा दुष्ट और जालिम है जो हमको न जाने क्या-क्या पढ़ाता और कराता रहता है ?

मित्रो ! हम मनस्वियों की नयी पीढ़ी बनाने के इच्छुक हैं। ऐसे मनस्वी, ऐसे हिम्मत वाले अपने मन के स्वामी आदमी अगले दिनों ढालने के लिए हम बड़े इच्छुक हैं जो सिद्धान्तों के लिए-आदर्शों के लिए जिएँ। सिद्धान्तों और आदर्शों के लिए जीने वाले का स्वरूप क्या होना चाहिए ? बेटे एक स्वरूप बता सकता हूँ कि एक बात जिस आदमी के भीतर हो, समझना चाहिए कि वह आदमी मनस्वी है और वह भगवान का काम कर सकता है। ऐसे ही व्यक्ति की आध्यात्मिक शक्तियाँ बढ़ेंगी और वह दुनिया के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य करेगा और अपने जीवन की नाव को खेकर पार लगा देगा, पर एक बात आ जाए तब। बताइये उस मनस्वी की क्या पहचान है ? मनस्वी की पहचान एक है—सिर्फ एक—कि वह अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की धुरी बदल दे ? अभी तो चौबीसों घंटे यही राक्षस हमारे ऊपर हावी बना रहता है कि हमारी महत्वाकांक्षाएँ, हमारा अहंकार रावण के बराबर होना चाहिए, हमारी अमीरी हिरण्यकश्यपु के बराबर होनी चाहिए और हमारी ताकत भस्मासुर के बराबर होनी चाहिए। हमारी वासना बढ़नी चाहिए, तृष्णा बढ़नी चाहिए, अहंता बढ़नी चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारे लोभ-मोह की पूर्ति होनी चाहिए। अहंकार की पूर्ति होनी चाहिए। अगर हम इसे बदल सकें और मनस्वी बन सकें तो हमारे चिन्तन की दिशा अलग बदल जाएगी। फिर मैं समझ लूँगा कि अब आप कल्याण की दिशा में चल पड़े और आपके पास बहुत सारी चीजें आ गयीं। क्या-क्या चीजें बदल जाएँ ? बस एक ही चीज बदल जाए और वह यह कि महत्त्वाकांक्षाओं का प्वाइंट बदल जाए।

इन दिनों मनुष्य को भौतिक इच्छाएँ खाये जा रही हैं। उसने आपके शरीर को खा लिया, आपकी अकल को खा लिया, आपके प्रभाव को खा लिया, आपकी प्रतिभा को खा लिया। तो क्या भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ खराब हैं ? नहीं, बेटे वे खराब उस सीमा तक नहीं हैं, जिसमें कि आदमी को शरीर के गुजारे के लिए जितना धन आवश्यक है, अकल, समय, श्रम आवश्यक है, बस उतना लगाये और बची हुई चीजें भगवान् के लिए लगाये। मनस्वी आदमी वे हैं, जो अपने जीवन का निर्धारण और जीवन की दिशाधारा को सही कर सकते हैं। उनको मैं मनस्वी कहता हूँ, जो अपने मन और अकल को सलाह देते हैं, परामर्श देते हैं कि आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए ? 'मनस्वी की पहचान एक ही है कि उसके जीवन में सदा सादा जीवन उच्च विचार' के ऊँचे विचार आते हैं। ऊँचे विचार लाने के लिए सादा जीवन आवश्यक है। आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सांसारिक महत्त्वाकांक्षाओं को 'गिराया जाना आवश्यक है। सांसारिक महत्त्वाकांक्षाएँ आप नहीं गिरायेंगे तो आपको दो शिकायतें हमेशा बनी रहेंगी। ये कभी दूर नहीं हो सकतीं। कौन-कौन सी ? पहली शिकायत तो यह आपको हमेशा बनी रहेगी कि हमको अच्छे कामों के लिए समय नहीं मिलता। दूसरी शिकायत यह बनी रहेगी कि अच्छी बातों में, भजन-पूजन में हमारा मन नहीं लगता। फिर आप कहेंगे कि गुरुजी कोई विधि बता दीजिए जिससे मन लगने लगे। बेटे, मन लगाने की विधि यह है कि जिन महत्त्वाकांक्षाओं में तेरा मन लगा हुआ है वहाँ से उस प्वाइंट को हटाकर दूसरे प्वाइंट पर लगा, फिर देखना तेरा मन लगता है या नहीं। एक जगह से मन हटाकर दूसरी जगह लगा, सफलता का यही रहस्य है।

अध्यात्म क्या है ? अध्यात्म कोई जादू नहीं है, भजन, प्राणायाम, ध्यान जैसी कोई क्रिया नहीं है, वरन् जीवन जीने की शैली है, सोचने का एक तरीका है और जीवनयापन करने की एक पद्धति है। पर आप तो इसे एक जादूगरी समझते हैं कि हाथ को यहाँ धर देंगे, नाक में से हवा निकाल देंगे, ये मुद्रा कर लेंगे, हाथ की हेरा-फेरी करेंगे, चावल, रोली को यहाँ धरेंगे, इसको यों जोड़ देंगे। हाथों की बाजीगरी और जीभ की नोंक से रंग-बिरंगे अक्षरों को कह करके हम भगवान को काबू में रखेंगे। बेटे, यह अध्यात्म नहीं हो सकता। ये सिद्धान्त गलत है। सही बात एक ही है कि हमारे जीवन का स्वरूप, जीवनयापन का तरीका, स्तर, ढंग एवं सोचने का तरीका अगर बदल जाता है तो फिर हमको भगवान को तलाशना नहीं पड़ता। भगवान हमको तलाशा करता है। हमारा जीवन इस बात का साक्षी है। हमने भगवान् को नहीं तलाश किया। भगवान ने हमको तलाश किया। गुरु को हमने तलाश नहीं किया है, गुरु ने हमको तलाश किया। फूल ने शहद की मक्खी को तलाश नहीं किया। भौंरे को बुलाने के लिए फूल नहीं गया, भौंरा फूल के पास आया। तितलियों की खुशामदें करने के लिए उन्हें बुलाने के लिए, इस्तहार देने के लिए फूल नहीं गया था, तितलियाँ पास आयी थीं।

साथियो ! मैं यह कह रहा था कि मनस्वी व्यक्ति अपने जीवन को उस स्तर का बनाते हैं, जिसके हम ख्वाब देखते हैं, कल्पना करते हैं जिसका हम प्रयास करते हैं। नये युग में जिन देवताओं की जरूरत पड़ेगी, उन देवताओं की शुरुआत करने के लिए हमने ब्रह्मवर्चस की स्थापना की है, जिसका कि अभी उद्घाटन कराया है। उसके आधार पर हम विचार करते हैं कि नये युग का आदमी कैसा होगा ? मनुष्य में से देवता उदय होगा तो कैसा होगा ? मनुष्य में से देवता उदय होने से सिर्फ एक बात होगी कि आदमी की महत्वाकांक्षाएँ बदल जाएँगी। आदमी की खुशी जहाँ टिकी हुई है, खुशी टिकने के ये प्वाइंट बदल जाएँगे। आज हमारी खुशी पैसे पर टिकी हुई है। पैसे को पूरा करने के लिए हम हनुमान जी का इस्तेमाल करते हैं, संतोषी माता, साईंबाबा का इस्तेमाल करते हैं, जो भी आदमी आ जाता है उसका इस्तेमाल करते हैं। हर किसी से माँगते हैं। हर किसी को बहकाते हैं कि बहकावे में आकर वह मेरा उल्लू सीधा कर जाए। यह बात मैं भली-भाँति जानता हूँ कि आपके मन में क्या है। पर मैं चाहता हूँ कि जिस अध्यात्म से मनस्वी पैदा होते हैं, जिसको हम देवता कहते हैं, आप वह बनें। मनुष्य में से देवता उदय हो। मनुष्य में से जब देवता पैदा होगा तो वह अपने आप में दिव्य होगा और जो कोई भी उसके समीप आवेगा वह भी उसी तरह का बनाता चला जाएगा।

नये युग के मनुष्य को बनाने के लिए हम मनस्वी पैदा करेंगे। मनस्वी पैदा करने का मतलब यह है कि वह व्यक्ति अपने मन से कहेगा कि जिस देश में हम पैदा हुए हैं उसके औसत नागरिक स्तर के जीवनयापन का मापदण्ड बनाना चाहिए। भारत का औसत नागरिक क्या खाता है, वह खाइये। वह जिस स्तर का जीवनयापन करता है, आप भी उसी स्तर पर करिये। औसत नागरिक स्तर की आवश्यकताएँ क्या हैं ? आप तय कीजिए और अपना मापदण्ड बनाइये। मनस्वी व्यक्ति ऐसे ही होते हैं और ऐसे ही होने चाहिए। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का मैं मनस्वियों में नाम लेता हूँ। वे पाँच सौ रुपया महीने कमाते थे, लेकिन ५० रुपये में अपना और अपने कुटुम्ब का खर्च चलाते थे। शेष बचे हुए ४५० रुपये गरीब विद्यार्थियों, मुसीबतग्रस्तों के लिए सुरक्षित रखते और उससे उनकी मदद करते थे। मनस्वी उसे नहीं कहते जो प्राणायाम करता है और ग्यारह माला जप करता है। मनस्वी वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

होता जो बहादुरों और ईमानदार आदमियों की तरीके से अपने जीवनयापन के सम्बन्ध में, अपने जीवन-पद्धति के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण फैसले कर लेता है। अगर आप यह फैसला कर लें तो आपके जीवन में कायाकल्प हो जाएगा। कैसे हो जाएगा ? अभी तो चौबीसों घंण्टे आपकी अकल एक ही बात के सपने देखती रहती है, कि लोभ-मोह की पूर्ति कैसे हो ? सारी की सारी अकल, सारी की सारी इच्छाएँ-आकांक्षाएँ उसी काम में लगी रहती हैं। क्या आप इसे खाली नहीं कर सकते ? अकल को खाली कीजिए। अकल को अगर खाली करेंगे तो आप मनस्वी कहलायेंगे। गुजारे से सब्र कीजिए—संतोष कीजिए, तब आपका बचा हुआ मन जो चौबीसों घण्टे महत्त्वाकांक्षाओं में, लिप्साओं में और लालसाओं की पूर्ति में लगा रहता है, बदल जाएगा और फिर बदले हुए मन के सामने वे सिद्धान्त काम आयेंगे जिसको मैं अध्यात्म कहता हूँ, भगवान कहता हूँ, ईमान कहता हूँ, धर्म कहता हूँ। धर्म के लिए, ईमान के लिए, भगवान के लिए फिर आपकी अकल काम करेगी, श्रम काम करेगा, आपकी क्षमता, कुशलता और सम्पदा काम करेगी।

इससे क्या हो जाएगा ? इससे आप महामानव हो जाएँगे, ऋषि हो जाएँगे। ऋषि उस आदमी का नाम है जिसे नयी वस्तु संग्रह करने की जरूरत नहीं है। उसके लिए न नया धन चाहिए, न नया बल चाहिए, जो चीजें पास में है वे इतनी ज्यादा हैं—'टू मच'—बहुत ज्यादा हैं, आप उनका इस्तेमाल करना सीखिये। अभी तो आप उनका गलत कामों के लिए इस्तेमाल करते हैं, पर जिस दिन आप सही इस्तेमाल करने लगेंगे, पायेंगे कि आपके भीतर कितनी शांति, कितना संतोष, कितनी क्षमता, कितनी प्रतिभा विकसित होती है ? जिस दिन आपके भीतर यह क्षमता और प्रतिभा विकसित होगी, उस दिन मैं आपसे वायदा करता हूँ कि देवता आपकी सहायता करने के लिए आयेंगे। देवता आपकी आरती उतारने के लिए आयेंगे। रामायण में मैंने पढ़ा है कि श्रेष्ठ दिशा में जीवनयापन करने वालों पर देवता फूल बरसाने आये थे। रामचन्द्र जी का जन्म हुआ तो, ब्याह हुआ तो देवता विमान से फूल बरसाने लगे। जब रामचन्द्र जी ने धनुष तोड़ा तो स्वर्गलोक से देवता फूल बरसाने लगे। इस बात पर मैं विचार करता रहा कि देवता क्या कोई माली हैं या इनके पास फूलों की दुकान है, जो फूल बरसाने का ही काम करते हैं। पीछे मैंने समझा कि फूल बरसाने से क्या मतलब है ? फूल बरसाने से मतलब होता है—दैवी-शक्तियाँ, श्रेष्ठ मनुष्य और आदर्श मनुष्य उनकी सहायता करते हैं। उन व्यक्तियों की जिन्होंने अपने व्यक्तित्व की धुरी बदल दी, चिन्तन का स्वरूप बदल दिया, आकांक्षाओं को बदल दिया। जो व्यक्ति अपनी प्रियता को, चिन्तन की दिशाधारा को बदल देता है, वही देवता हो सकता है।

हमने मनुष्य में देवत्व के उदय का सपना देखा था। आइये उस पर विचार करें कि हम उस सपने को साकार कैसे कर सकते हैं ? इस संदर्भ में हमने ब्रह्मवर्चस के माध्यम से एक फिलॉसफी बनायी है; एक क्रिया-पद्धति बनाई है। ब्रह्मवर्चस में क्या होगा ? प्रशिक्षण होगा। कैसे होगा ? इसमें प्रातःकाल ढाई घण्टे की साधना है जिसे पंचकोशी साधना एवं कुण्डलिनी साधना कहते हैं। इसमें योगाभ्यास भी करायेंगे और दोपहर को ब्रह्मज्ञान का प्रशिक्षण देंगे, जिसे हम आत्मज्ञान कहते हैं। यह भी ढाई घण्टे का प्रशिक्षण है। इसमें ब्रह्मविद्या के—ईश्वर, जीवन, प्रकृति से लेकर धर्म और विज्ञान के बारे में ऋषियों ने जो कहा है, उनकी बातें बतायेंगे। इस तरह सबेरे हम तप करायेंगे, योगाभ्यास करायेंगे और दोपहर को शिक्षण करेंगे। शाम को लोकमंगल के लिए लोकशिक्षण करेंगे कि आज की परिस्थितियों में हमें क्या करना चाहिए ? उसकी गतिविधियाँ, स्वरूप और क्रियाशैली क्या हो ? ऋषि केवल भजन ही नहीं करते थे, वरन् उसके साथ लोकमंगल की सेवा-साधना भी किया करते थे। ब्रह्मवर्चस में भी सेवा, स्वाध्याय एवं साधना-तपश्चर्या वाले तीनों अंशों की समन्वित साधना चलेगी। हम तपश्चर्या कराना चाहते हैं। तपश्चर्या में सबसे पहले एक काम करना पड़ता है—महाभारत की लड़ाई लड़नी पड़ती है। अर्जुन को श्रीकृष्ण बार-बार यही कहते थे कि **"ततो युद्धाय युज्यस्व"** किन्तु अर्जुन बार-बार बहाने बनाता रहा और कहता रहा कि मैं नहीं लड़ूँगा। पीछे भगवान के बार-बार समझाने पर उसने कहा—**"करिष्ये वचनं तव"** अर्थात् आपकी आज्ञा मानूँगा तो उन्होंने कहा तो फिर उतर कुरुक्षेत्र में और लड़ाई कर। अर्जुन लड़ने लगा और विजयी हुआ।

बेटे ! अध्यात्म क्षेत्र में भी लड़ना पड़ता है। किससे लड़ना पड़ता है ? अपने मन से। हमारा यह मन बड़ा कमीना है। इस लड़ाई में अगर हमारी विजय हो जाती है तो समझना चाहिए कि हमने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर ली। कहा भी है—"न मारा आपको जो खाक हो अक्सीर बन जाता।"

तात्पर्य यह है कि अगर हम अपने आपको मार लें, अपने मन को काबू में कर लें, अपने मन को हम अपनी इच्छानुसार चला लें तो मजा आ जाए तो फिर आप कौन हो जाएँगे ? मनस्वी हो जाएँगे, संत हो जाएँगे और देवता का पूर्वार्द्ध पूरा कर लेंगे। अपने आप से लड़ाई लड़ने, अपने मन पर कंट्रोल करने, इन्द्रियों पर काबू करने वालों और जन्म-जन्मान्तरों के हैवानी कुसंस्कारों से पीछा छुड़ाने वालों को हम मनस्वी कहते हैं। मनस्वी ही अपने जीवन को बदल सकेंगे और समय को, युग को बदल सकेंगे। यदि वे मनस्वी नहीं होंगे तो न अपनी जिन्दगी को बदल सकेंगे और न दूसरों को बदल सकेंगे। इसलिए मनस्वी पैदा करना हमारा काम है।

मनस्वी व्यक्तित्व पैदा करने के लिए ही ब्रह्मवर्चस संस्थान की स्थापना की गयी है। यहाँ पर हम लोगों को बुलायेंगे और बतायेंगे कि मनस्वी कैसा होना चाहिए ? मन से कैसे लड़ना चाहिए ? मन के विकृत होने से जिन्दगी कैसे खराब हो जाती है और मन को काबू में लाने से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य कैसे मुक्त हो जाता है ? **'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो'**—यह मन ही है जो हमको बाँधता है और यही हमको मुक्त भी बना देता है। यह मन ही है जो हमको राक्षस बना देता है, देवता बना देता है। चाहे हम इसको विधाता कह लें, चाहे पिशाच कह लें, वह एक ही है। इसे किस तरीके से निग्रहीत कर सकते हैं, यह विधि यहाँ सिखायेंगे और यहाँ से सारे संसार में फैलायेंगे। इसलिए ब्रह्मवर्चस का पहला वाला अध्याय, पहला उद्देश्य हमारा यह है कि हम आदमियों को मनस्वी बनाएँ। मन से लड़ने वाला, मन पर काबू करने वाला, मन को हीरा बना देने वाला बनायेंगे। आदमी का मन ही है जो उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित करता है, नींद नहीं आने देता, शराबी, नशेबाज बनाता है, डाकू बनाता है और यही वह पारस भी है जो हमको ऋषि बना देता है, संत बना देता है, देवता बना देता है। इसलिये मन के साथ जद्दोजेहद करना, मन को परिष्कृत करना यह एक कला है, फिलॉसफी है, एक साइंस है, एक विधि-विधान है। उसको हम ब्रह्मवर्चस में सिखायेंगे। यह एक नमूना है, मॉडल है, प्रयोगशाला है, फैक्ट्री हैं, फार्महाउस व नर्सरी है। जहाँ प्रयोग करने के बाद में विश्वभर को बतायेंगे कि मन को काबू में करके मनस्वी कैसे बना जा सकता है ? और स्वयं को तथा अन्यान्यों को कैसे ऊँचे उठाया जा सकता है ? हमारी यह प्रयोगशाला है। यह आश्रम हमारी शुरुआत का एक केन्द्र है, जहाँ हम शिक्षण करेंगे और नक्युग की एक हवा पैदा करेंगे। मनस्वियों को ढालने की यह एक बहुत बड़ी फैक्ट्री है, जिसका प्रत्यक्ष परिणाम अगले ही दिनों सबके सामने आने वाला है।

ब्रह्मवर्चस प्रशिक्षण के उत्तरार्द्ध में हम एक और तरह का आदमी ढालना चाहते हैं जिसका नाम होगा—'तपस्वी'। तपस्वी किसे कहते हैं ? बेटे, तपस्वी उसे कहते हैं जो अपने व्यक्तिगत जीवन को ठीक कर लेता है उसका दूसरा नाम है ब्राह्मण। ब्राह्मण नाम नहीं है, ब्राह्मण कोई कौम नहीं होती, जाति नहीं होती। जाति तो न जाने किसने बना दी ? ब्राह्मण एक वर्ग होता है, एक तबका होता है। ब्राह्मण उस तबके को कहते हैं, जो अपने मन को काबू में रख करके अपने जीवन की विधि और प्रक्रिया को ऐसे व्यतीत करता है, जिसको सिद्धान्तवादी जीवन कहना चाहिए। कहते हैं कि ब्राह्मण अपने आप तक सीमित रहता है, अपने को ठीक करने में लगा रहता है। अपने आपको ही सही करता है अपने आपको ही संस्कारवान बनाता है तो क्या यह काफी है ? नहीं, बेटे इतना ही काफी नहीं है। यह तो पहला अध्याय है, अपने आप को सही बनाना, लेकिन जब मैट्रिक हो जाए तो फिर ग्रेजुएट भी होना चाहिए।

ग्रेजुएट कौन होता है ? ग्रेजुएट तपस्वी होता है। तपस्वी किसे कहते हैं ? संत को तपस्वी कहते हैं। संत किसे कहते हैं ? जैसे मक्खन के ऊपर जब धूप पड़ती है तब वह पिघल जाता है, ठीक उसी तरह जो व्यक्ति अपने युग की—अपने समय की, मनुष्य जाति की, समस्त प्राणियों की पीड़ाओं को देखकर पिघल जाता है, उसे संत कहते हैं। संत रोता नहीं, वरन् उसके भीतर एक हूक उठती है, टीस उठती है, संकल्प जाग्रत होता है और पीड़ा एवं पतन के रोने के जो कारण थे, उनको दूर करने के लिए वह कृष्ट उठाता है। वह उनसे मोर्चा लेने के लिए सीना तानकर खड़ा हो जाता है। रामचन्द्र जी तपस्वी का जीवन जी रहे थे। एक बार उन्होंने ऋषियों की हड्डियों का एक समूह देखा तो उनकी आँखों में आँसू आ गये। तपस्वियों के आँसू कैसे होते हैं ? उनके आँसू में से टपकती है आग—ऐसी आग कि जिसके ऊपर मुसीबत है उसे दूर करने में हमको मदद करनी चाहिए। फिर वह आदमी मदद के लिए तनकर खड़ा हो जाता है। रामचन्द्र जी ने ऋषियों की हड्डियों के समूह को देखकर भुजा उठाकर प्रण किया कि अब इस पृथ्वी पर राक्षसों को नहीं रहने दूँगा। या तो मैं मरूँगा या उनको मारकर छोड़ूँगा—"डू आर डाई" या तो हम करेंगे या मरेंगे। मित्रो ! इतना साहस जिसके अन्दर होता है वह आदमी तप करने, कष्ट उठाने के लिए तैयार हो जाता है। उसे हम तपस्वी कहते हैं।

तपस्वी कैसे होते हैं ? तपस्वी उस प्रकाश-स्तंभ की तरह होते हैं जो एकाकी समुद्र के बीच में खड़ा रहता है और उसके ऊपर एक बत्ती सदैव जलती रहती है चाहे रात हो या ठण्डक हो या बरसात हो। यह बत्ती बताती रहती है कि जहाजों को—नावों को इधर से आना चाहिए—उधर से नहीं, जिधर चट्टान है। वहाँ जोखिम है, आप वहाँ डूब जाएँगे, टक्कर खा जाएँगे—आप दूसरे रास्ते से आइये, प्रकाश-स्तंभ यही बताते रहते हैं। तपस्वी भी एक प्रकार के प्रकाश-स्तंभ हैं। वे स्वयं मुसीबत उठाते रहते हैं और अकेले खड़े रहते हैं। उन्हें न सिनेमा देखने का मौका है, न खाने-पीने का शौक है, न कोई यार-दोस्त है, न चौपड़ है, न शतरंज। वे अकेले खड़े रहते हैं और रास्ता बताते रहते हैं। इन्हें हम तपस्वी कहते हैं। इनके भीतर एक हूक उठती है, दर्द उठता है कि हमको दूसरों के दुःख-दर्द को दूर करने के लिए, भगवान की इच्छा पूरी करने के लिए क्या करना चाहिए, फिर उनकी गतिविधियों में फर्क पड़ जाता है। कैसे फर्क पड़ जाता है ? जब वे ऊपर आसमान की ओर देखते हैं तो कहते हैं कि भगवान की बनायी हुई मूल्यवान चीजें किस तरीके से जीवन-यापन करती हैं, हमको भी इसी तरीके से जीवन-यापन करना चाहिए। वे इसका अभ्यास करते हैं कि भगवान के दूत किस तरीके से काम करते हैं और हमें किस तरह से करना चाहिए ? समुद्र में से पानी का गट्ठर लादकर के बादल रवाना होते हैं और दौड़ते हुए कहाँ-कहाँ तक चले जाते हैं ? जहाँ खेत सूखे पड़े हुए हैं। बादल अपनी हस्ती को, अपने परिश्रम को, मेहनत को बिना कीमत के सूखे खेतों में गलाते हुए चले जाते हैं। ये कौन हैं ? ये संत हैं और तपस्वी हैं। तपस्वी—जिनका काम ही है कि हम अपने आपका नुकसान उठाएँगे, पर समाज को, दुःखियारों को, पिछड़े हुओं को, पतितों को सुखी बनाने के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपने आपको हम खत्म कर देंगे, खपा देंगे। वे ऊपर को देखते हैं तो उनकी हिम्मत बड़ी हो जाती है और उसी तरह के वे काम करने लगते हैं।

देवता बराबर काम करते रहते हैं। यह जमीन, यह आसमान, यह संसार देवताओं से रहित नहीं है, तपस्वियों से रहित नहीं है। जमीन की ओर निगाह डालकर देखते हैं तो मालूम पड़ता है कि यहाँ तपस्वियों की कमी नहीं है। यह जमीन वजन उठाती है, टट्टी, पेशाब उठाती है, लात खाती है, फिर भी अपने भीतर से अनाज उगाती है, घास उगाती है, फूल पैदा करती है, सोना-चाँदी, रसायन आदि हर चीज देती जाती है। ये कौन हैं ? तपस्वी हैं। संत को चारों ओर तपस्वियों की परम्परा दिखाई पड़ती है। तपस्वियों की वजह से ही दुनिया जिन्दा है। जो दुनिया में खूबसूरती है, खुशहाली है, आनन्द है, शराफत है, अच्छाई है, केवल तपस्वियों की वजह से जिन्दा है। कौन-कौन तपस्वी हैं ? तपस्वी मनुष्य भी हो सकते हैं, लेकिन दुनिया में तपस्वियों की बहुत सारी सत्ताएँ हैं, जो दुनिया में शान्ति कायम रखती हैं। दुनिया में जो खुशहाली आती है वह तपस्वियों के बलबूते पर आती है। पेड़ों की ओर जरा निगाह डालकर देखिये—वह हमेशा फल पैदा करता है। पत्ता जानवरों को खिला देता है, अपनी छाया में पक्षियों को विश्राम देता है। अपने फलों को जमीन पर गिराता जाता है। कौन हैं ये ? तपस्वी हैं।

तपस्वियों की बिरादरी अभी दुनिया में से खत्म नहीं हुई है। तपस्वी जब निगाह उठाकर देखता है तो नदियाँ लहलहाती हुई दिखती हैं और प्यासों की प्यास बुझाने, पक्षियों को पानी-पिलाने, खेतों की सिंचाई करने का काम करती हैं। तपस्वी जब घर आता है तो एक और बात देखता है—अपनी माँ को और अपनी धर्मपत्नी को। माँ कौन है ? तपस्विनी है जिसने अपने रक्त को, माँस को, हड्डियों को गलाकर के अपने बच्चे के लिए सौंप दिया और अपनी छाती का लाल रक्त सफेद रंग के दूध में बदलकर अपने बच्चे को पिला दिया। ये कौन हैं ? तपस्विनी है। क्या दाम लिया ? कोई दाम नहीं लिया, वरन् अपने प्यार की वजह से अपने को न्योछावर कर दिया। माँ तपस्या की मूर्ति होती है और कौन होती है तपस्या की मूर्ति ? निगाह उठाकर देखते हैं तो धर्मपत्नी दूसरी तपमूर्ति नजर आती है। चौबीसों घंटे काम करने वाली, प्रेम देने वाली, श्रम करने वाली, सेवा करने वाली, अपने शरीर का रस निचोड़कर देने वाली, सारा जीवन और अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को अर्पित कर देने वाली और बदले में गालियाँ खाने वाली—ये कौन हैं ? ये तपस्विनी है। यदि यह तपस्वी न होती तो दुनिया राक्षस हो जाती, आदमी पिशाच हो जाता और उसका कहीं ठिकाना न रहता। इसलिए तपस्विनी है मेरी माँ, तपस्वनी है धर्मपत्नी, तपस्विनी है धरती। तपस्वी हैं—पेड़, बादल, घास सब जगह तपस्वियों की बिरादरी है। सच्चा तपस्वी अपने सारी जिंदगी को लोकहित के लिए—देश के लिए, श्रेष्ठ कार्यों को पूरा करने के लिए खर्च कर डालता है। तपस्वी वे नहीं हैं जो नंगे बैठे रहते हैं और धूनी रमाते हैं। वे और कुछ हो सकते हैं, पर तपस्वी नहीं।

तपस्वी अपने लिए ही नहीं, दूसरों के लिए भी कष्ट उठाते हैं, लेकिन किसलिए उठाते हैं, यह आप लोगों को मालूम होना चाहिए। हमारी माँ एकादशी के दिन उपवास रखती थीं। उस दिन कुछ भी नहीं लेती थीं। दूसरे दिन द्वादशी को हम बच्चों को बुलाती थीं और जो सामग्री खाने के काम आती थीं जैसे—आटा, दाल, चावल, गुड़, घी आदि थाली में रखकर कहती थीं, जाओ बेटा, इसे मंदिर में देकर आओ। हम दे आते थे। तब माँ पानी पीती थीं। क्या मतलब है इसका ? इसका मतलब यह है कि हम तपस्वी हैं और कष्ट उठायेंगे। कष्ट उठाने की वजह से जो आपने बचत की है, उसे अच्छे कामों में लगायेंगे। तू जानता है उपवास किसलिए करते हैं ? उपवास इसलिए करते हैं—पेट पर पट्टी बाँधते हैं कि अमुक दिन हम नहीं खायेंगे और उससे जो बचत होगी उसे अच्छे कामों में खर्च कर देंगे। इसका नाम है—तप। हम अगले दिनों ऐसी ही पीढ़ी पैदा करना चाहते हैं जो तपस्वियों की पीढ़ी हो। तपस्वियों में क्या बात होती है ? बेटे तपस्वी साक्षात् देवता होते हैं। वे स्वयं तो मुसीबत उठा लेते हैं, लेकिन अपने पुण्य की वजह से, तप की वजह से, अपनी शक्ति की वजह से असंख्यों का बेड़ा पार कर देते हैं। अगले दिनों हम असंख्यों का बेड़ा पार करने वाले तपस्वियों की नयी पीढ़ी बनायेंगे। कैसे बनायेंगे ? क्या इसी में बना देंगे ? नहीं बेटे, इसी में तो नहीं बनाते, पर हाँ हम एक ऐसी विचारधारा, एक ऐसी कार्य-पद्धति, विचार करने का ढंग और एक ऐसी फिजा पैदा करेंगे जो सारे के सारे समाज में छाती हुई चली जाएगी और लोगों की लिप्साओं को, लोभ और मोह के दृष्टिकोण से बदलती हुई चली जाएगी। यह आदमी को झकझोरकर रख देगी और कहेगी कि हे इनसान ! तू इनसान की तरीके से जी। वनमानुषों, नर-पशुओं और नर-कीटकों की तरीके से मत जी। एक ऐसी पैनी हवा उठेगी जो हर आदमी के कान पकड़ेगी और झकझोरेगी और यह कहेगी कि आपको नये युग के अनुरूप जीना चाहिए, सिद्धान्तों, आदर्शों, लोकहित एवं संसार को शांति के लिए जीना चाहिए।

ऐसे व्यक्ति पैदा करने के लिए हमने ब्रह्मवर्चस बनाया है। इसमें मन की मलीनता को धोने के लिए उपासनाएँ भी करायेंगे। हमारे भीतर का भगवान सो गया है—देवता सो गया है, हमारे भीतर की शक्तियाँ सो गयी हैं, सिद्धियाँ सो गयी हैं, चमत्कार सो गये हैं। हमारे भीतर का आनन्द सो गया है, हमारे भीतर का शिव सो गया है। सौन्दर्य सो गया है, भीतर की कला सो गयी है। सब कुछ सो गया है। अभी तो इस ढाँचे में कोई पिशाच, कोई भूत-मसान लाल-पीले कपड़े पहने हुए घरों में घूम जाया करता है। इस पिशाच के भीतर से ही हम देवता को जगायेंगे। इन सारे के सारे क्रियाकलापों को करने के लिए हमने ब्रह्मवर्चस बनाया है। यहाँ से हम एक विचार, एक कार्य-पद्धति, प्रोसीजर पैदा करेंगे और न जाने क्या से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्या पैदा करेंगे ? नये युग का आह्वान करने के लिए एक ऐसी फैक्ट्री की जरूरत थी जिससे युगशक्ति का उदय किया जा सके। ब्रह्मवर्चस की स्थापना इसी के लिए की गयी है।

हमने बहुत पहले तीन घोषणाएँ की थीं कि हम व्यक्ति-निर्माण के लिए, परिवार-निर्माण के लिए और समाज-निर्माण के लिए काम करेंगे। यह हमारे मिशन का एक स्वरूप है। व्यक्ति-निर्माण के लिए हम ब्रह्मवर्चस और उसकी कार्य-पद्धति बनाते हैं। मानव-उत्कर्ष की सारी की सारी प्रक्रिया हम यहाँ से पैदा करेंगे इनसान को मनस्वी और तपस्वी बनाने के लिए। तपस्वी अर्थात् मनुष्य में देवत्व उदय होने की प्रक्रिया अर्थात् व्यक्ति-निर्माण। व्यक्ति कैसे बनाया जा सकता है ? यह प्रक्रिया हमारे छोटे-से आश्रम ब्रह्मवर्चस से आरम्भ होगी। आप इसके भविष्य को देखिये, इसके पीछे छिपी महानता को देखिये, झण्डे के इस प्रतीक को देखिये। यह है तो एक प्रतीक, पर इसके पीछे न जाने क्या से क्या सत्ता भरी पड़ी है ? एक बड़ी चीज की जिम्मेदारी भगवान् ने हमारे ऊपर सौंपी है और इसके लिए हमने एक बड़ा प्लान बनाया है। इस बड़े काम में सहायता देने के लिए ही आपको बुलाया गया है। आपको इसके लिए बुलाया गया है कि हम समाज में एक ख्वाब पैदा करेंगे, नया युग लाने के लिए, नये मनुष्यों को पैदा करेंगे। युगशक्ति पैदा करेंगे। आध्यात्मिक शक्ति पैदा करेंगे। लोगों में मनस्वी तत्त्व पैदा करेंगे जो मन से लोहा ले सकने में समर्थ हो सकें। हम मनुष्यों में तपश्चर्या का माद्दा—अर्थात् श्रद्धा और उदारता पैदा करेंगे, करुणा पैदा करेंगे, सेवा की वृत्ति पैदा करेंगे। अभी आदमी के भीतर तो निष्ठुर पिशाच बैठा हुआ है और कहता रहता है कि ला हमारे लिए धन, ला हमारे लिए मोह। यह पिशाच न तो सिद्धान्तों को भीतर आने देता है, न आदर्शों को आने देता है, न करुणा को आने देता है, न सेवा को आने देता है। चाहे भजन करने जाएँ, चाहे मंदिर में जाएँ, हर जगह से यह अपना उल्लू सीधा करता रहता है।

मित्रो ! हम मनुष्यों को बदलना चाहते हैं। इसके लिए हम आपको भी दावत देते हैं। इसके लिए क्या करना पड़ेगा ? इसके लिए आप अपने जीवनक्रम में थोड़ा-सा हेर-फेर कर दें और भगवान को अपने जीवन में हिस्सेदार बना लें। हमने कई बार अपील की है कि आप लोग अपने जीवन में ईश्वर को साझीदार बना लें। बैंक को आप हिस्सेदार बना लेंगे तो आपका काम अच्छा चलेगा। बड़ी-बड़ी मिलें ऐसे ही चल रही हैं। उनमें पचास प्रतिशत पैसा बैंक का लगा हुआ है। बैंक उनको पैसा देती है, उसकी बिल्टियों पर एडवांस देती है, तब सारे काम चल रहे हैं। आप भी भगवान की बिल्टी लें, भगवान को हिस्सेदार बनाएँ और मालदार बनें। यदि कोई यह कहता है कि नहीं महाराज जी, भगवान की हमें कोई जरूरत नहीं है और हम तो ऐसे ही थोड़ा-बहुत चालाकी से, बेईमानी से काम चला लेंगे, तो बेटा इससे काम चलेगा नहीं। सम्पन्न बनना हो, मालदार बनना हो तो भगवान को हिस्सेदार बनाना ही होगा। मैंने बार-बार लोगों से कहा है कि आप अपने जीवन में से थोड़ा-सा हिस्सा भगवान के लिए खर्च करें और थोड़ा-सा अपने लिए। भगवान के लिए जो हिस्सा खर्च करेंगे, उसके बदले में आप पायेंगे। भगवान को बहकाएँगे तो नहीं पाएँगे। वह सब भगवान को बहकाना है, जो आप अब तक करते रहे हैं, ध्यान रखिये। भगवान को जिन्दगी में हिस्सेदार बनाने का मतलब यह है कि आप अपने समय का एक हिस्सा, अपनी अक्ल का एक हिस्सा, अपनी क्षमता का—प्रतिभा का एक हिस्सा, अपने प्रभाव का एक हिस्सा और अपने पैसों का एक हिस्सा भगवान् के कामों में लगाइये। नहीं, महाराज जी, हम इस चक्कर में नहीं फँस सकते। चक्कर में नहीं फँस सकते तो आप तालाब के तरीके से सड़ेंगे और कोई बड़ी चीज नहीं पा सकेंगे।

साथियो, मनुष्यों को श्रेष्ठ बनाने के लिए, सुखी और समुन्नत बनाने के लिए, नवयुग के अनुरूप शांति से रहने और रहने देने में सहायता करने वालों के लिए ब्रह्मवर्चस का यह प्रशिक्षण आरम्भ किया गया है। व्यक्ति निर्माण हमारा आधार है। ब्रह्मवर्चस के पीछे, जो एक छोटी इमारत के रूप में बनाया गया है, हमारा एक ही उद्देश्य है—युगशक्ति का उदय, आध्यात्मिक शक्ति का उदय, व्यक्ति को मनस्वी और तपस्वी बनाना और मनुष्य के भीतर उन शक्तियों को उदय करना, जिससे वह अपने जीवन की नाव पार कर सके और असंख्यों की नाव पार करा सके।

दूसरे नम्बर पर है—प्रज्ञा-मंदिर, जिसका कि उद्घाटन करने के लिए हमने आपको बुलाया है। कौन-सा प्रज्ञा मंदिर—गायत्री ज्ञान मंदिर। गुरुजी, गायत्री की मूर्ति तो हमारे यहाँ पहले से ही रखी हुई है, फिर दुबारा क्यों ? बेटे, ये मूर्ति नहीं है, यह प्रज्ञा मंदिर है। प्रज्ञा को हम सर्वोपरि मानते हैं। प्रज्ञा से बढ़कर और कोई चीज नहीं है—**'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।'** इसलिए हम भगवान को प्रज्ञा के रूप में पूजा करते हैं। प्रज्ञा किसे कहते हैं ? प्रज्ञा विवेकशीलता को कहते हैं—दूरदर्शिता को कहते हैं। अक्ल तो हमारे पास है, पर प्रज्ञा हमारे पास नहीं है, विवेक हमारे भीतर नहीं है। अक्ल किसे कहते हैं—और प्रज्ञा किसे कहते हैं ? अक्ल बेटे, वही होती है जो बी. ए., एम. ए. पास करने के बाद में खरीदी जा सकती है। कैसी होती है अक्ल ? अक्ल ऐसी होती है जो हमारे लिए तुरन्त फायदा कराती है और यह नहीं देखती कि कल जो नुकसान होगा वह होता रहे। प्रज्ञावान कौन होता है ? किसान होता है। वह अभी नुकसान उठाता है और छह महीने बाद फायदा उठाता है। प्रज्ञावान विद्यार्थी होता है वह तुरन्त नुकसान उठाता है, दस-पन्द्रह साल तक पढ़ता है और फिर वह गजटेड अफसर बन जाता है। प्रज्ञावान दुकानदार होता है, जो अपना घर खाली कर देता है, फिर उसके बाद कमाता है। जो दूर की बात सोचता है, उस दूरदर्शी को हम प्रज्ञावान कहते हैं और जो अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए, छोटे-छोटे सामयिक स्वार्थों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लिए अपने भविष्य को अंधकारमय बना लेते हैं, उनको मैं अक्लमंद कह सकता हूँ। विनाश की जड़ अक्ल ही है।

अक्लमंद कैसे होते हैं ? अक्लमंद ऐसे होते हैं जैसे आप। आप बहुत अक्लमंद हैं, आपकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। आपकी अक्ल का मुकाबला कोई और कर सकता है क्या ? नहीं और कोई नहीं कर सकता सिवाय कौआ के ? कौआ बड़ा अक्लमंद होता है, बहुत चालाक होता है। मनुष्य की सारी की सारी अक्ल ऐसे ताने-बाने बुनती रहती है कि क्या कहा जाए। बेटे, ताने-बाने बुनने वाली इस अक्ल के स्थान पर हम एक नयी सत्ता को स्थापित करना चाहते हैं, उसका नाम है—प्रज्ञा। प्रज्ञा के सामने हम मस्तक झुकाते हैं, प्रज्ञा की देवी को हम नमस्कार कहते हैं। प्रज्ञा की देवी कौन है ? गायत्री माता। गायत्री माता कौन है—प्रज्ञा। प्रज्ञा किसे कहते हैं—ऋतंभरा-प्रज्ञा को, दूरदृष्टि को, विवेकशीलता को, न्यायदृष्टि को। इसी गायत्री माता की हम साधना करते हैं तो महाराज जी, गायत्री माता वह है जो थैली में रुपये लेकर आती है ? नहीं, बेटे, वह रुपये वाली नहीं है। मित्रो ! आपको यह जानना चाहिए कि वस्तुतः गायत्री किसका नाम है ? गायत्री है श्रद्धा का नाम, प्रज्ञा का नाम। हम इसी प्रज्ञा की स्थापना करेंगे और जन-जन से कहेंगे कि आप प्रज्ञा के सामने मस्तक झुकाइये, विवेकशीलता के सामने मस्तक झुकाइये।

हमने जो भी स्थापनाएँ की हैं, उसका नाम है—श्रद्धा। हम श्रद्धा की स्थापना करते हैं। श्रद्धा क्या ? श्रेष्ठता के प्रति असीम प्यार—इसका नाम है श्रद्धा। श्रद्धा मनुष्यों के भीतर से चली गयी। श्रेष्ठता के लिए हम जबान से भले ही प्रशंसा कर दें, लेकिन असीम प्यार करने वाली वह श्रद्धा चली गयी, जिसके लिए आदमी त्याग कर सके, कष्ट उठा सके। यह देवी कौन है, जिसकी हमने स्थापना की है ? इसका नाम है-श्रद्धा। ये कौन है ? बेटे ये नारी की गरिमा की स्थापना है। नारी की गरिमा कैसी होती है ? नारी की गौरव-गरिमा सत्य, शिव और सुन्दर की तीनों विशेषताओं से सम्पन्न एक प्रतीक है। नारी का एक प्रतीक है, एक सिम्बल है जो हमारी बेटी के रूप में, भगिनी, धर्मपत्नी और हमारी माता के रूप में विद्यमान है। श्रद्धा नारी के प्रति श्रेष्ठता के भाव-गरिमा के भाव जाग्रत करती है। नारी के प्रति श्रद्धा, नारी के प्रति नमन, नारी के प्रति सम्मान, आस्था उत्पन्न करने के लिए ही हमने गायत्री माता को नारी के रूप में बना दिया। तो क्या आप नर के रूप में भी बना सकते थे ? हाँ, हम नर के रूप में भी बना सकते थे, क्योंकि ब्राह्मीशक्ति, ब्रह्मा और गायत्री एक ही शक्ति है। सरस्वती, लक्ष्मी और विष्णु एक ही बात है। पार्वती और शंकर एक ही बात है। इस माध्यम से हम नारी की गरिमा बढ़ाते हैं और यह कहते हैं कि नारी के प्रति अर्थात् पवित्रता के प्रति, करुणा के प्रति, कला के प्रति, सौन्दर्य के प्रति, तपश्चर्या के प्रति नमन करें। हमने यही स्थापना की है।

देश भर में हमने प्रज्ञा मंदिरों की स्थापना की है। प्रज्ञा मंदिरों से आप क्या करेंगे ? प्रज्ञा मंदिरों से बेटे हम वह काम करेंगे जो बहुत दिनों पहले मिशन के लिए यह घोषणा की थी कि हम नया समाज बनाएँगे। तो नये समाज का आधार क्या होगा—बताइये ? हर एक के मेनीफेस्टो होते हैं। नया समाज बनाने का आधार हमारा यह है कि हम आदमी का चिन्तन बदल देंगे और जनमानस का परिष्कार करेंगे। हम हर आदमी का मन बदल देंगे। मन बदलने से क्या होगा ? मन बदलने से व्यक्ति की समस्याएँ और समाज की परिस्थितियाँ दोनों बदल जाएँगी। हमने आपको कितनी बार बताया है कि हर आदमी की व्यक्तिगत समस्याएँ और समाज की असंख्य समस्याएँ हैं। इन सबका एक ही कारण है—आदमी का मन। आदमी का मन अगर सड़ेगा तो उसमें से कीड़े, मच्छर, बदबू पैदा होगी। कीचड़ को आप साफ कर दीजिए, फिर मच्छर भगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हमारे चिन्तन की मलीनताएँ सारे के सारे समाज में असंख्यों परिस्थितियाँ पैदा करती हैं—राष्ट्रीय, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में। इसलिए हम समाज-निर्माण के लिए इस बात का शिक्षण करते हैं कि शालीनता, सज्जनता, भलमनसाहत, ईमानदारी और शराफत आदि तत्त्वों को आगे बढ़ाना चाहिए। समाज का अभिनव निर्माण इन्हीं आधारों पर खड़ा होगा।

मित्रो ! गायत्री माता क्या है ? यह ईमानदारी और नेकनीयती, सज्जनता और शराफत की देवी है। इसके माध्यम से हम सबको समझाएँगे। राजहंस इसका वाहन है। इसे यह पसंद करती है, दुलार करती है और चौबीसों घंटे साथ लिए फिरती है। यह राजहंस ऐसा है, जो नीर-क्षीर का विवेक करता है, जो मोती खाता है—कीड़े नहीं खाता। नहीं गुरुजी, हंस तो कीड़े खाते हैं। हाँ बेटे, हंस कीड़े खाते हैं, पर गायत्री माता का राजहंस अलग है। गायत्री माता की स्थापना करके हम राजहंस पैदा करना चाहते हैं। हम गायत्री उपासकों में राजहंस की वृत्ति पैदा करना चाहते हैं। सावित्री की उपासना करने वालों को सत्यवान बनाना चाहते हैं। गायत्री का ही नाम सावित्री है और सावित्री का वरण करने के लिए-माला पहनने के लिए सत्यवान की जरूरत पड़ती है। गुरु जी ! आप तो सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर रहे हैं, देवी-देवताओं की बात नहीं करते ? क्या देवी-देवता फायदा नहीं कराते ? हाँ बेटे, देवी-देवता फायदा कराते हैं, लेकिन वे देवी-देवता सिद्धान्त होते हैं, आदर्श होते हैं। मनुष्य की महानता—मनुष्य के गुण होते हैं, श्रेष्ठताएँ होती हैं। देवी वह नहीं होती जो पहाड़ पर मंदिर में बैठी रहती है और बकरे खाती है। देवी ऐसी नहीं हो सकती वह तो कोई डाकिन होगी, भूतिन होगी। आपको देवी और हमारी देवी में फर्क है। हमारी देवी देवत्व की निष्ठाएँ हैं, देवत्व के प्रति आस्थाएँ हैं। देवत्व के संकल्प, देवत्व की मान्यताएँ, भावनाएँ हैं। इन्हीं का हम विस्तार करना चाहते हैं। प्रज्ञा मंदिर हमने इसीलिए बनाया है। तो क्या आप इसी मंदिर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में से गायत्री उपासना सबको सिखा देंगे ? नहीं बेटे, हमने तो ये प्रतीक बनाया है। यह एक सिम्बल है। हम चाहते हैं कि इसका विस्तार हो।

प्रज्ञा विस्तार के लिए क्या-क्या काम करने होंगे ? इसके लिए हमें बहुत काम करने होंगे। हमने आप लोगों को इसीलिए बुलाया है कि लोगों की अक्ल को बदलने के लिए कई कार्यक्रम हाथ में लेने चाहिए। आदमी को विवेक की विचारधारा, अक्ल की नहीं—विवेक की, न्याय की, सिद्धान्तों की, आदर्शों की विचारधारा को बताने के लिए हृदयंगम कराने के लिए हमको और आपको दो काम करने चाहिए। एक तो लोगों को अपने पास बुलाना चाहिए और दूसरा लोगों के घरों पर जाना चाहिए। यह प्रज्ञा की देवी गायत्री माता की सबसे बड़ी सेवा है। तो क्या भजन करें ? हाँ भजन तो करना ही पड़ेगा। भजन तो हम भी करते हैं, लेकिन उतने से ही काम पूरा नहीं होगा। भजन के साथ-साथ में उसको चरितार्थ करना भी बेहद जरूरी है। इस वास्ते हमने एक आन्दोलन आपको दिया है कि आप ज्ञानरथ चलाएँ—गायत्री माता का ज्ञान रथ। ज्ञानरथ कैसा होता है ? ज्ञानरथ ऐसा होता है जैसा कि जगन्नाथ जी का रथ निकलता है और रथयात्रा होती है। वृंदावन में रंगजी का एक मंदिर है। उस मंदिर से जब रथ यात्रा निकलती है तो वह घर-घर जाती है। बूढ़े और बच्चे जो मंदिर नहीं पहुँच पाते, उनके लिए भगवान् को रथ पर बिठाकर घर-घर ले जाते हैं और कहते हैं कि देखिये साहब, आप जो रंगजी के मंदिर नहीं पहुँच पाये थे, अब हमने भगवान को आपके घर में लाकर रख दिया है, आप दर्शन कीजिए।

युग के अनुरूप विचार-क्रान्ति के लिए, ज्ञानयज्ञ के लिए हम भी अलख निरंजन कहते हुए बादलों की तरीके से, तीर्थयात्रा की तरीके से घर-घर जाएँगे अपने साहित्य को लेकर। जो लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं, समझ भी नहीं सकते, उनके लिए लेखनी के अलावा एक और चीज रह जाती है, उसका नाम है वाणी। वाणी को हम घर-घर लेकर जाएँगे और अलख जगाएँगे। तीर्थयात्रा प्राचीनकाल में इसीलिए होती थी। पदयात्रा का और कोई उद्देश्य नहीं था। यह मात्र धर्मप्रचार के लिए अर्थात् ज्ञानप्रचार के लिए होती थी। चाहे वह ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा हो या नर्मदा की परिक्रमा। धर्म क्या होता है—अच्छे ज्ञान और अच्छे विचार। अच्छे विचारों को फैलाने के लिए घर-घर जाना पड़ता है।

ये क्या है ? ये बेटे वही है जिसे हम प्रज्ञा का—गायत्री माता का प्रचार कहते हैं। प्रज्ञा का प्रसार करने के लिए सम्मेलनों की बात कहते हैं। घर-घर जाना जब मुश्किल पड़ता है तब लोगों को एक जगह जमा कर लेते हैं और अपनी बात उनसे कम समय में कह देते हैं। आप क्या बोलते हैं ? बेटे हम गायत्री मंत्र बोलते हैं—चौबीसों घंटे। नहीं गुरुजी आप तो व्याख्यान करते हैं। नहीं बेटे हम व्याख्यान नहीं करते—गायत्री मंत्र बोलते हैं—केवल गायत्री मंत्र। हमारी वाणी से और कोई दूसरा शब्द नहीं निकलता। हमारा सारा जीवन गायत्री माता को समर्पित है। इसलिए हम गायत्री के अलावा दूसरा शब्द बोल नहीं सकते। एक स्वामी जी केवल एक ही शब्द बोलते थे—हरे राम-हरे कृष्ण। इसके अलावा और कोई दूसरा शब्द नहीं बोलते थे, मात्र इशारा कर देते थे। हम भी गायत्री मंत्र बोलते हैं। हमारा मिशन गायत्री मंत्र बोलता है।

गायत्री मंत्र का अर्थ क्या है ? गायत्री मंत्र का अर्थ है—अवांछनीयता के विरुद्ध संघर्ष। गायत्री मंत्र के 'भर्गो' शब्द के माने हैं—जो अवांछनीय तत्त्व है उसको भून डालना, उसके विरुद्ध लोहा लेना, संघर्ष करना। यही विचार-क्रान्ति है और ज्ञानयज्ञ क्या है ? ज्ञानयज्ञ वह है जिसमें से सद्भावना का उदय होता है, श्रेष्ठता का उदय होता है। यही काम हमको और आपको करना है। बहुत-से कार्यक्रमों के लिए हम आपको बुलाते रहते हैं। ये सब क्या है ? बेटे, यह गायत्री मंत्र की उपासना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। आपको तो इसलिए मालूम नहीं पड़ता कि आप माला घुमाने को ही गायत्री मंत्र कहते हैं और अच्छे विचारों के विस्तार के लिए जो प्रयास किये जाते हैं, उसको आप गायत्री मंत्र नहीं मानते। वस्तुतः अच्छे विचारों का—अच्छी भावनाओं का संवर्द्धन करना विशुद्ध गायत्री मंत्र की उपासना करना है। मैं चौबीसों घंटे इसी महामंत्र की उपासना करता हूँ—जप करता हूँ। सोलह घंटे काम करता हूँ, नहाने-धोने, खाने-पीने, सोने सबमें गायत्री मंत्र की उपासना करता हूँ। अच्छे विचारों को फैलाना, जन-जागरण करना, लोगों की भावनाओं को परिवर्तित करना, उसके लिए परामर्श देना—ये सारे के सारे कार्य हैं जो आपको करना चाहिए।

ब्रह्मवर्चस में प्रज्ञा मंदिर की स्थापना करने के लिए जो आप आये हैं, इसमें हम आपको गायत्री मंत्र का साक्षात्कार, गायत्री मंत्र का दर्शन, गायत्री मंत्र की विशेषता और गायत्री मंत्र को जीवन में समावेश कर लेना—इसकी विधियाँ सिखाएँगे। सारे विश्व में हम गायत्री मंत्र की हवा पैदा करेंगे। चारों ओर गायत्री मंत्र की हवाएँ पैदा करेंगे जिसे सभी मानेंगे। गायत्री मंत्र की जो निष्ठाएँ हैं, जो प्रेरणाएँ हैं, गायत्री मंत्र की जो दिशा है, जो कल्पना है, वह हर एक को हृदयंगम करायेंगे और उनसे यह कहेंगे कि यह सार्वभौम मंत्र है, सार्वजनीन मंत्र है और इसमें व्यक्ति विशेष के लिए कोई अंतर नहीं पड़ता। ज्ञानरथ चलाने से लेकर सम्मेलन करने तक सभी हमारे कार्यक्रम गायत्री माता को घर-घर पहुँचाने के लिए हैं। हमारे सम्मेलन राजनैतिक सम्मेलन नहीं हैं। हमारे सम्मेलनों में केवल मनुष्यों के भीतर से सद्भावना जगाना, सत्प्रेरणा जगाना, सत्प्रवृत्तियाँ जगाना—बस यही एक उद्देश्य है। इसी के लिए हम आपको कार्यक्रम देते हैं, क्षेत्रीय सम्मेलन बुलाने के लिए कहते हैं। क्षेत्रीय सम्मेलनों में हम गायत्री माता के सद्विचारों का प्रसार करेंगे। इसके लिए जो भी व्यक्ति भेजे जाएँ, हम चाहते हैं कि वे हमारे शब्दों में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बोलें, हमारी वाणी में बोलें और हमारे जैसे बोलें। अगले दिनों समाज का नया निर्माण करने के लिए, विचारों को विस्तार देने के लिए प्रज्ञा मंदिरों का विस्तार होगा। आज तो एक शुरुआत है, जिसका कि अभी-अभी उद्घाटन हुआ है।

साथियो ! गायत्री एक परिवार है। परिवार-निर्माण करने की प्रणाली है। परिवारों का निर्माण कैसे करना चाहिए—इस सम्बन्ध में हमने एक बार 'लार्जर फेमिली' नाम से एक लेख छापा था। उसमें घर-परिवार कैसे बनने चाहिए, कुटुम्ब-समाज कैसे बनने चाहिए, यह बताया गया था। गायत्री परिवार, युग-निर्माण परिवार, अखण्ड-ज्योति परिवार जैसे शब्द हमें बहुत प्यारे लगते हैं। बेटे, यह हमारा परिवार है जिसमें स्वर्ग का अवतरण होने वाला है। स्वर्ग का अवतरण सबसे पहले कहाँ होगा ? परिवार में होगा, फिर वहाँ से व्यक्तियों में फैलेगा और समाज में फैलेगा। स्वर्गीय वातावरण वाले पारिवारिक खदानों से ही नर-रत्न पैदा होते हैं। कॉलेज में से गुरुकुल में से नर-रत्न पैदा नहीं होते। हाँ गुरुकुल यदि कोई परिवार होगा तो वहाँ से पैदा हो जाएँगे। परिवार नहीं होगा तो वहाँ भी पैदा नहीं होंगे। परिवार कैसे बनने चाहिए ? परिवार ऐसे बनने चाहिए जैसे कि एक महिला ने परिवार की पाठशाला में, प्रयोगशाला में तीन ब्रह्मज्ञानी बना दिये थे, जिनके नाम था विठोबा, विनोबा और बालकोवा। परिवार को कौन चला सकता है ? परिवार को चलाने का स्वामी-अधिकारी एक ही है और उसका नाम है—नारी। नारी के पास वह शक्ति है जो मनुष्य की अक्ल को तो नहीं, पर हृदय को ठीक कर सकती है। नारी के पास हृदय तत्त्व बहुत विशाल है। शरीर से, ताकत से ही वह कमजोर पड़ती है, लेकिन श्रद्धा में बढ़ी-चढ़ी ही होती है। मनुष्य के भीतर की मनुष्यता को, शालीनता को विकसित करने के लिए एक ही तत्त्व काम करता है और उसका नाम है—श्रद्धा। श्रद्धा—भावना से भरी हुई नारी को हम जगाना चाहते हैं। परिवार संस्था को जीवित करना चाहते हैं।

आज परिवार-संस्था खत्म हो गयी है और रह गये हैं बस स्त्री-पुरुष। स्त्री-पुरुष कौन होते हैं ? वासना के शिकार। ब्याह किसके लिए होता है ? वासना के लिए—प्रेम के लिए नहीं। प्रेम किसे कहते हैं ? बेटा, प्रेम तो चला गया, प्रेम तो दुनिया में रहा ही नहीं, श्रद्धा तो है ही नहीं, सहयोग तो रहा ही नहीं। परिवार संस्था खत्म हो गयी। परिवार कैसे होने चाहिए ? इस संस्था को जीवित रखने के लिए हम नया प्रयोग करते हैं और अपने कुटुम्बियों-कार्यकर्त्ताओं को बुलाकर कहते हैं कि आप अपने कुटुम्ब हमारे हवाले कीजिए, हम उनका शिक्षण करेंगे। गुरुजी आप तो संत हैं। हाँ बेटे, हम संत हैं, इसलिए हम कुटुम्बों का शिक्षण कर सकते हैं। भगवान राम के बीबी-बच्चों का शिक्षण महर्षि बाल्मीकि ने जैसे अच्छी तरह से किया था, वैसा कोई दूसरा नहीं कर सकता था। लव, कुश और सीता को जिस सुख और शान्ति से उन्होंने रखा, वैसा और कोई नहीं रख सकता था। यह काम केवल संत ही कर सकते हैं। परिवारों का निर्माण कैसे करना चाहिए ? इसके लिए हमने एक प्रयोगशाला बनायी है। एक कॉलोनी बसाई है—नाम है उसका गायत्री नगर। इसमें हम शिक्षण देंगे कि नारी को कैसे विकसित करना चाहिए ? नारी-शिक्षण कैसे होने चाहिए ? लार्जर फेमिली सिस्टम कैसे बनने चाहिए ? घरों में स्वर्गीय वातावरण कैसे बनाने चाहिए ? इसके लिए हम सौ क्वार्टरों की, सौ फैमिली की एक प्रयोगशाला बना रहे हैं। आप भी अपने घरों में लार्जर फैमिली का परिवार निर्माण करने की प्रक्रिया का पालन करेंगे।

अपने कुटुम्बों का निर्माण करने के लिए आपको क्या करना चाहिए ? इसकी शुरुआत करने के लिए हम तिनके के बराबर सबसे छोटा एक प्रोग्राम बताते हैं। आप अपने परिवार में आस्तिकता, धर्म और श्रद्धा इन तीनों को प्रवेश कराने का प्रयत्न कीजिए। इसके लिए आप अपने घरों में गायत्री माता के, भगवान के चित्र स्थापित कीजिए। चौकी पर स्थापित कर सकें तो अच्छा है, अन्यथा यदि जगह कम है तो जरा-सा ऊँची दीवार के ऊपर गायत्री माता के एक चित्र लगा दें, जहाँ कि छोटे बच्चों के हाथ न पहुँच सकें। अब एक नियम बना लें कि घर का कोई भी सदस्य तब तक खाना नहीं खायेगा जब तक कि भगवान को, गायत्री माता को प्रणाम नहीं कर लेगा। दो मिनट—पाँच मिनट गायत्री माता का जप कर लें, पर यदि समय न हो तो भी चित्र के सामने नंगे पैर जाइये हाथ जोड़िये, माथा झुकाइये। यह न्यूनतम उपासना है। पाँच बार गायत्री मंत्र का जप मन ही मन करें और प्रकाश अथवा गायत्री माता का ध्यान करें। आस्तिकता की शुरुआत के लिए यह न्यूनतम मर्यादा है। हम चाहते हैं कि आप लोगों के घरों में ऐसा एक भी व्यक्ति न बचे, जिसमें आस्तिकता की शुरुआत न हो गयी हो। गायत्री महामंत्र क्योंकि सार्वभौम मंत्र है, अतः अगले दिनों जब नया विश्व बनेगा तो एक आधार जरूर रखना पड़ेगा किसी न किसी उपासना का। अपना भगवान यह कहता है कि सारे विश्व में अगले दिनों जो उपासना होने वाली है, वह गायत्री मंत्र की होने वाली है। अतः आप अभी से अपने घरों में वह आस्तिकता पैदा करें और अपने पड़ोसियों तक इसे फैलाएँ। न्यूनतम गायत्री उपासना का यह क्रम अवश्य अपनाएँ।

एक बात और रह जाती है और वह है यज्ञ। यज्ञ का क्रिया-कलाप भी हर घर में चलना चाहिए। भले वह न्यूनतम ही क्यों न हो। यज्ञ का क्रिया-कलाप कम से कम क्या हो सकता है ? बेटे, यज्ञ का कम से कम क्रिया-कलाप इतना सरल है, जिसे स्त्रियाँ कर सकती हैं और गायत्री को तथा यज्ञ को जिंदा रख सकती हैं। इसलिए मैंने आपसे प्रार्थना की है कि आप इसमें मदद करें। आप यज्ञ और गायत्री माता का पूजन न कर सकते हों तो अपने घर की स्त्रियों को इसके लिए प्रोत्साहित करें। उनकी हिम्मत बढ़ा दें। इतने से भी काम चल सकता है। यज्ञ की परम्परा इतने से भी जिंदा रह सकती

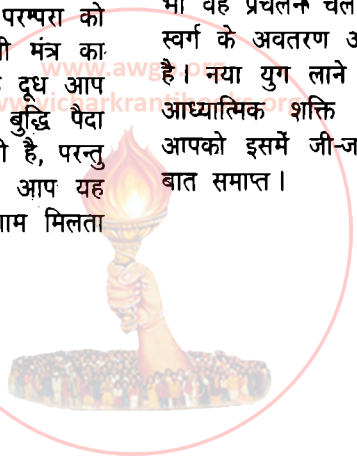
Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। इसके लिए करना यह है कि खाना बनाते समय चूल्हे में से थोड़ी-सी अग्नि निकालें और जरा-सा दो बूँद घी की आहुति स्वरूप डाल दें। अब रोटी के छोटे-छोटे पाँच टुकड़े किये जाएँ और प्रत्येक बार गायत्री मंत्र बोलते हुए पाँच बार उन टुकड़ों में जरा-सा घी और शक्कर या गुड़ मिलाकर स्वाहा के साथ चूल्हे की अग्नि में समर्पित कर दिया जाए। प्रारम्भ में हथेली की अंजली-सी बनाकर उसमें थोड़ा जल भर लें और गायत्री मंत्र बोलते हुए अग्नि के चारों ओर छिड़क दें। दो बूँद शुरू में और दो बूँद आखिर में घी डाल दें तथा एक बूँद पूर्णाहुति की एवं एक बूँद वसोधारा की डाल दें। प्रारम्भ में अग्नि को प्रज्वलित करने का मंत्र **ॐ अग्ने नय सुपथ राये** ..... । आता हो तो बोल लीजिए, अन्यथा कोई जरूरत नहीं है। गायत्री मंत्र से ही पूरा हवन कर लीजिए। अब आपको यज्ञ से बचा हुआ भोजन-संस्कारित भोजन मिलेगा।

आप सिद्धान्तों को लेकर चलिए, प्रतीक को देखिये। बड़ा यज्ञ नहीं कर सकते तो कोई बात नहीं, लेकिन प्रतीक तो चलना ही चाहिए। प्रतीक को जिंदा रखिये, मेरा उससे भी काम चल जाएंगा। समय आयेगा तो हम प्रतीक को आगे बढ़ा देंगे। आप अपने घरों में यज्ञीय परम्परा को जिंदा रखिये। स्त्रियाँ खाना पकाते समय गायत्री मंत्र का जप किया करें। यह अन्न, यह आहार और यह दूध आप में और बच्चों में नये युग के अनुरूप नयी बुद्धि पैदा करेगा। देखने में यह छोटी-सी बात मालूम पड़ती है, परन्तु इसके सत्परिणाम और फलितार्थ असाधारण हैं। आप यह छोटी-सी शुरुआत तो करें, फिर देखें क्या परिणाम मिलता है। अभी हम आपके ऊपर बड़ी चीज लादना नहीं चाहते। बच्चों के ऊपर बड़ी एवं भारी चीज का वजन लादना बड़ा मुश्किल है, अतः आप छोटी-सी चीज से शुरू कीजिए और फिर क्या काम करें ? आप फिर एक और कदम यह बढ़ाइये कि प्रातः और सायंकाल गायत्री माता की सामूहिक प्रार्थना—आरती किया करें। यदि दोनों वक्त सामूहिक आरती हो सके तो अति उत्तम है अन्यथा सुबह या शाम में से एक बार सामूहिक रूप से गायत्री माता की आरती-भगवान की प्रार्थना अवश्य किया करें। प्रार्थनाएँ सामूहिक रूप से गायी जाएँ। इसके साथ ही घर के सभी सदस्य मिलकर सहगान के आधार पर एक-दो गीत गा दें, प्रार्थना गा दें। इससे जो वातावरण बनेगा वह व्यक्ति को अन्दर तक झकझोरकर रख देगा, अन्दर तक हिलाकर रख देगा। हमारे यहाँ इसी तरह की सामूहिक प्रार्थनाएँ होती हैं, आपने देखा होगा कि कैसे मन को कँपा देती हैं, हृदय को झंकृत कर देती हैं। यही संगीत परम्परा आप अपने घरों में जारी रखें। इससे न केवल घर-परिवार में आस्तिकता का वातावरण बनेगा, वरन् पड़ोस में—समाज में भी वह प्रचलन चल पड़ेगा, जिसकी आवश्यकता धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के उदय के लिए है। नया युग लाने के लिए, नया समाज बनाने के लिए आध्यात्मिक शक्ति पैदा करना अनिवार्य है। हम और आपको इसमें जी-जान से जुट पड़ना चाहिए। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आध्यात्मिक कायाकल्प के सूत्र और सिद्धान्त

आध्यात्मिक कायाकल्प के मूलभूत सिद्धान्त

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

कल्प का मतलब होता है—बदल डालना, परिवर्तन। आप अपने आपको बदल लें, परिवर्तन कर लें, तो मजा आ जाएगा, फिर तो आपका कल्प-परिवर्तन बिल्कुल सही रहेगा। आप यह ख्याल तो रखिए मत कि बुड्ढे से जवान हो जाएँगे, हम बुड्ढे को जवान बना देंगे। बुड्ढे को जवान बना भी देंगे, तो फिर करेंगे क्या आप ? आप जवानी में क्या अच्छाई पाते हैं और बुड्ढे में क्या खराबी पाते हैं ? हमको तो बुढ़ापे में शान मालूम पड़ती है। अपने सफेद बाल हो गए हैं, भारी-भरकम हमारा स्तर हो गया है, समझ का विकास हो गया है, हर आदमी हमारी इज्जत करता है। आपको क्या आफत आ गई है जो कहते हैं—जवान बना दीजिए ? जवान बनकर क्या दूसरा विवाह करेंगे ? क्या सिनेमा में जाने का मन है कि नाचने का मन है ? क्यों ? जवानी में क्या है ? और बुढ़ापे में क्या खराबी है ? आप बुड्ढे को जवान बनाने वाली बात मत सोचिए। आप दूसरी बात सोचिए कि आपका मनःसंस्थान जो बुड्ढों जैसा हो गया है; हारा हुआ-सा हो गया है; थका हुआ जैसा हो गया है; गया-बीता-सा हो गया है आप उसमें जवानी ले आइए; उसमें स्फूर्ति ले आइए; उसमें साहस ले आइए; उसमें हिम्मत ले आइए; उसमें नया दृष्टिकोण ले आइए; आप आशा और उमंग ले आइए। यह आप नहीं कर पाएँगे क्या ? जरूर कर पाएँगे, कोई दिक्कत की बात नहीं है। ऐसी जवानी आपको बड़ी आसानी से मिल सकती है और अध्यात्म आपको ऐसी ही जवानी दिलाने का वायदा करता है। उस जवानी की आप उम्मीद मत कीजिए, जो कि च्यवन ऋषि को प्राप्त हो गई थी। च्यवन ऋषि बुड्ढे से जवान हो गए थे। हमारे लिए तो यह मुश्किल है। हमारे लिए मुश्किल न रहा होता, तो अपने आपको ही हम जवान बना लेते। हम तो खुद ही बुड्ढे हैं। गाँधीजी को जवान बना दिया होता। बुड्ढे जवान नहीं बन सकते। च्यवन ऋषि बन गए थे कि नहीं बन गए थे यह बात जाने दीजिए; वह उनको अभ्यन्तर की कृपा रही होगी और शरीर उनका फिर बुड्ढा रहा होगा कि जवान—यह भी एक शक है। सम्भव है उनके भीतर के मनःसंस्थान में जवानी आ गई हो और मनःसंस्थान में जवानी आ जाए, तो आदमी वास्तव में जवान है। शरीर बुड्ढा होने से क्या फर्क पड़ता है ? कोई फर्क नहीं पड़ता। गाँधीजी जब मरे थे, तब उनयासी वर्ष के थे। नेहरू जी भी चौहत्तर वर्ष के करीब थे। अस्सी वर्ष के लोगों का चलना-फिरना दूभर हो जाता है और कहते-फिरते हैं कि अब मरे कि तब मरे ! मरने के दिन आ गए; लेकिन यह लोग बूढ़े होकर मरे थे ? आप ऐसी जवानी चाहते हों, तो आपको ऐसा बनाने में हमको कोई दिक्कत नहीं है; लेकिन आप यह ख्याल लेकर आएँगे कि यहाँ से जब जाएँगे, तो बाईस साल के होकर के जाएँगे, तो फिर आपको निराश होना पड़ेगा। हम नेचर का मुकाबला नहीं कर सकते; हम प्रकृति को नहीं बदल सकते। नेचर को कैसे बदलें ? कभी आप कहते हैं कि बुड्ढे को जवान बना दीजिए, फिर दूसरे दिन कहेंगे कि जवान को बच्चा बना दीजिए, फिर तीसरे दिन कहेंगे हमको माँ के पेट में बिठा दीजिए, फिर चौथे दिन कहेंगे कि हमें पिताजी के अन्दर शुक्राणु के रूप में पहुँचा दीजिए, फिर कहेंगे कि पिछले जन्म में हम जहाँ थे, वहाँ भिजवा दीजिए। प्रकृति को हम कैसे बदल देंगे ! प्रकृति को कोई नहीं बदल सकता ! प्रकृति अपनी जगह सही है, इसलिए बुड्ढे शरीर को जवान बनाने वाली बात तो मुमकिन नहीं है; लेकिन यह पूरी तरह सम्भव है कि मनःसंस्थान जवान हो जाए। जवानों की उमंगें अलग होती हैं, बुड्ढों की उमंगें अलग होती हैं। आप कुछ कर ही डालिए। आप आए हैं, तो अपने आपको बदल ही डालिए।

पहला काम आप यह कीजिए कि अपनी पार्टी बदल दीजिए। आप पार्टियाँ बदलते हैं, जैसे रोजाना लोग पार्टियाँ बदल देते हैं न, कोई काँग्रेस वाला प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में हो गया; कोई जनसंघ वाला लोकदल में हो गया; कोई लोकदल वाला किसी में हो गया। आप देखते हैं न, रोज लोग पार्टियाँ बदल लेते हैं। आप भी कृपा करके अपनी पार्टी बदल दीजिए। आप जिस पार्टी के मेम्बर अब तक रहे हैं, वह कौन-सी पार्टी है ? आपको जरा बुरा लगेगा। वह दैत्यों की और असुरों की पार्टी रही है। अब तक आपकी जानवरों की पार्टी रही है। आप कहेंगे कि जानवरों की पार्टी कैसे रही है ? इसके लिए मैं आपके सामने डार्विन की किताबें पेश कर सकता हूँ कि आप बन्दर की सन्तान हैं; बिना उद्देश्य वाले बन्दर, पेड़ के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ऊपर भटकते फिरने वाले बन्दर, जिनकी न कोई दिशा है, न कोई लक्ष्य है, न जीवन का कोई स्वरूप है, न भविष्य की कोई महत्त्वाकांक्षा है। जैसे भी बने अपने टाइम- को पास करने वाले को बन्दर कहते हैं। इस मामले में मैं डार्विन महोदय से सहमत हूँ कि आदमी बन्दर की औलाद है। बन्दर पेट से पैदा हुआ कि नहीं, यह तो मैं नहीं जानता; क्योंकि आदमी की फिर पूँछ कहाँ गई ? बन्दरों की जब पूँछें कायम हैं, तो फिर आदमी की पूँछ कहाँ गई ? आदमी की अगर पूँछ नहीं है, तो मुझे यह कहने में शक है कि आदमी बन्दर की औलाद है कि नहीं; लेकिन इस मामले में बन्दर की औलाद हम लोग रहे हैं कि हमारा जीवन निरुद्देश्य है। आप उद्देश्यपूर्ण जीवन जिएँ और अपनी दिशा बदल लें। आप भूल गए हैं, जिस दिशा में आप लोग चल रहे हैं, वह दिशा आपके लिए मुनासिब नहीं है। आप छाया के पीछे दौड़ते रहे हैं। मेरी प्रार्थना है—आप छाया के पीछे दौड़ना बन्द कर दें और प्रकाश की ओर मुँह करके चलना शुरू करें। छाया के पीछे आप भागते रहेंगे, तो आपको सिवाय हैरानी और थकान के कुछ हासिल नहीं होगा। मृगतृष्णा में भटकते हुए हिरनों को और क्या मिलता है ? कस्तूरी की जहाँ-तहाँ तलाश करने वाले हिरन को और क्या मिलता है ? सिवाय निराशा के, तो आपको क्या मिलेगा ? आप छाया के पीछे, माया के पीछे बेतहाशा दौड़ रहे हैं और आपको अब तक नाउम्मीदी ही रही है; क्योंकि छाया तब तक आगे निकल जाती है। जहाँ आप छाया पकड़ना चाहते हैं, वहाँ कदम बढ़ाया और छाया आगे बढ़ गई। आपकी महत्त्वाकांक्षाएँ और कामनाएँ जिसको कि मैं छाया कहता हूँ और माया भी कहता हूँ, जितना आप उसकी तरफ चलते हैं, वह और आगे निकल जाती है। आप जो चीज चाहते थे, आपकी इच्छा उससे बड़ी हो जाती है, फिर आप कहाँ तक उसकी पूर्ति करेंगे ! छाया के पीछे आप भागते रहेंगे, तो आपको हैरानी होगी और अगर आप छाया की ओर से मुँह मोड़ लें तथा प्रकाश की तरफ चलने लगें तब ? तब फिर आप देखेंगे कि छाया आपके पीछे-पीछे चलने वाली है। आपका चेहरा, जब छाया की तरफ मुँह करके चलते हैं, तब काला होता है। फोटोग्राफर ने फोटो काले रंग का बनाकर दिया था; क्योंकि आप प्रकाश की तरफ पीठ करके चल रहे थे। अब आप प्रकाश की तरफ मुँह करके चलेंगे, तो दो परिणाम होंगे। एक तो चेहरा चमकने लगेगा आपका, दूसरा, छाया, जिसके पीछे आप बेतहाशा भागते थे और जिसको आपने इष्ट मान रखा था और जो आपसे दूर रहना चाहती थी, वह छाया अपना रुख बदल लेगी और आपके पीछे-पीछे चलना शुरू कर देगी। आप ऐसा करें, तो मजा आ जाए। आपके पास एक ही बीमारी है पास का देखने की, जिसे शॉर्ट-साइट कहते हैं, नजदीक का देखना। बहुत-से आदमियों की आँखें खराब हो जाती हैं, वह पास का तो थोड़ा-बहुत किसी तरह देख लेते हैं; लेकिन दूर का नहीं देख पाते। लगता है आपको ऐसी ही किसी बीमारी ने शिकार करके रखा है। आज का फायदा, आज का फायदा। आज के फायदे के अलावा दूसरी कोई चीज दिखाई ही नहीं पड़ती। आप अपने नजरिये को ठीक कर पाएँ, तो आप देखेंगे आपके पास करने और देखने के लिए और भी बहुत सारी चीजें हैं, जैसे—आपको बुढ़ापा देखने लायक नहीं है क्या ? बुढ़ापा देखना चाहिए, बुढ़ापा देखेंगे, तो आप जवानी को सही तरीके से प्रयोग करना सीख जाएँगे। मौत दिखाई नहीं पड़ती आपको ? जरा देखिए तो सही, मौत कितनी खूबसूरत और शानदार है, जो आपको अपनी गोदी में बिठा करके भाग खड़े होने के लिए तैयार किए हुए बैठी है। आपको दिखाई नहीं पड़ती ? कृपा करके हमारी आँख से देखिये, अपनी मौत को देखिये। अपनी मौत को अगर आप देखें, तो क्या करेंगे ? तो राजा परीक्षित की तरह अपने रवैये को बदल लेंगे और सिकन्दर की तरह वह मौका नहीं आने देंगे, जिसमें आप फूट-फूटकर रोएँ कि हमने अपनी बेशकीमती जिन्दगी छाया के लिए खर्च कर डाली। आपकी जरूरतें ही कितनी हैं ? थोड़ी-सी ही तो जरूरतें हैं। आप अपनी पार्टी को बदल दीजिए। आप अपनी जरूरतें आसानी से बदल सकते हैं; लेकिन हविश को आप किसी भी कीमत पर पूरा नहीं कर सकते। इतनी जरूरतें आप समझ लें और इसी के आधार पर अपना दृष्टिकोण अपना लें, तो मैं समझूँगा आपका कायाकल्प हो गया।

आपको विवेकशील, दूरदर्शिता अपनानी चाहिए। गायत्री माता का वाहन हंस है न ? हंस में क्या बात है, बताइए ? हंस में दो विशेषताएँ हैं। एक विशेषता यह है कि दूध और पानी को अलग कर देता है, दूसरी विशेषता यह है कि वह मोती चुनकर खाता है, कीड़े-मकोड़े नहीं खाता। तालाब में पाये जाने वाले हंस की बात तो मैं नहीं कह सकता, यह बात उनमें होती है कि नहीं; पर मैं राजहंसों के बारे में, परमहंसों के बारे में कह सकता हूँ और यह कह सकता हूँ कि आपको उन्हीं की बिरादरी में शामिल होना चाहिए। गायत्री माता का वाहन बनने के लिए उचित और अनुचित में फर्क कीजिए। आप जो करते रहे हैं, उसमें उचित कहाँ तक था और अनुचित कहाँ तक था, आप विचार कीजिए थोड़ा-सा। आपको यही मालूम पड़ेगा कि आप अनुचित-ही-अनुचित करते रहे हैं। इसी प्रकार से जब आप देखेंगे कि जो आपने खाया है, अर्थात् ग्रहण किया है, अर्थात् कमाया है, वह, वह नहीं है, जो आपको ग्रहण करना चाहिए था। आपको ग्रहण करने के लिए और बहुत सारी चीजें थीं। आप प्रेय की बिरादरी में रहे हैं, विलास की बिरादरी में रहे हैं, संग्रह की बिरादरी में रहे हैं, लोभियों की बिरादरी में रहे हैं। अब कृपा करके आप अपनी बिरादरी बदल दीजिए। आप विचारशीलों की बिरादरी में शामिल हो जाइये, आप दूरद्रष्टाओं की बिरादरी में शामिल हो जाइये, आप देवताओं की बिरादरी में शामिल हो जाइये, आप यह बिल्कुल कर सकते हैं। दो में से एक का चुनाव करना आपके लिए बिल्कुल मुमकिन है। आप बड़प्पन चुनना चाहते हैं कि महानता ? यह चुनने का समय है। दो

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कैण्डीडेट खड़े हुए हैं और दोनों आपसे वोट माँगते हैं। एक सम्पन्नता है, जो यह कहती है—आप मालदार बन जाइए; लेकिन मालदारी के साथ-साथ दूसरी शर्तें जुड़ी हुई हैं। आपको बेईमान बनना ही पड़ेगा। आपको जिन्दगी में दूसरे काम करने के लिए किसी तरह की फुरसत पाने का हक छोड़ना पड़ेगा। चौबीस घण्टे मेहनत करने के बाद में अपव्यय, गुजारा और उसके बाद जमा करने के पश्चात् बड़े आदमी बनना शायद सम्भव हो जाए; लेकिन इसी कीमत पर सारी जिन्दगी खत्म करनी पड़ेगी। एक ओर यह सम्पन्नता है, जो आपको व्यसन पैदा करती है; जो आप में आलस्य पैदा करती है; जो कि अहंकार पैदा करती है; जो आपके समुदाय में ईर्ष्या पैदा करती है; जो आपको शराब की बोतल की तरह नशे में डुबो देती है और आपको कहीं का मारा कहीं घसीट ले जाती है। दूसरी ओर एक और चीज है आपके पास—'सादगी'। जिसको आपको वोट देना है, वह है—महानता। महानता को आप नहीं जानते ? आपने गाँधीजी का नाम सुना है ? बुद्ध का नाम सुना है न ? विवेकानन्द को जानते हैं न ? महापुरुषों में से इन लोगों के नाम नहीं मालूम आपको ? यह सभी महापुरुष थे, जिन्होंने कि महानता को चुना और महानता में अपनी सफलता को पाया और इन विभूतियों को, जो गुण, कर्म और स्वभाव की हैं—उनके बारे में यह विश्वास किया कि यह आदमी की सफलता की निशानियाँ हैं। आप सफलता की निशानियों को मानिये। आप वैसा मत कीजिए जैसा कि रावण ने किया था। आप विभीषण का रास्ता इख्तियार कीजिए। विभीषण का रास्ता कुछ बुरा था क्या ? क्या बुरा था, बताइए ? आरम्भ में हैरानी हुई; पर सन्तोष तो रहा; रावण को सुविधा मिली; पर असन्तोष रहा। हर समय उसकी जीवात्मा धिक्कारती रही, उसकी बीबी भर्त्सना करती रही, सारे समाज ने और ऋषियों ने हाहाकार किया और भगवान ने उसके ऊपर कोप के बाण बरसाये। इतनी कीमत पर सुविधा को इकट्ठा कर लेना कोई समझदारी है ? नहीं, पर विभीषण की समझदारी है। ठीक है—गालियाँ खाता रहा, तो क्या हुआ ? अपने फटे-टूटे झोंपड़े में रहता रहा, तो क्या ? और इस तरह सादा जीवन उच्च विचार के तरीके से अपना जीवन व्यतीत करता रहा, तो क्या ? लेकिन भगवान का प्यारा तो हुआ और भगवान के प्यारे आदमी अभावग्रस्त नहीं रहते—यह बात और याद रखना। रावण अभावग्रस्त पहले भी था, जीवनभर अभावग्रस्त रहा। हमेशा हविश खाती रही और आखिर में भी अभावग्रस्त हो करके चला गया, बीबियों से हाथ धो बैठा, बच्चों से हाथ धो बैठा, राजपाट से हाथ धो बैठा और विभीषण ! विभीषण ने क्या खोया बताइए ? विभीषण ने कुछ भी नहीं खोया। पेट भरने को रोटी बराबर मिलती रही और आखिर में जब भगवान का प्यारा हुआ तब ? तब जो कमाई रावण ने की थी, बेईमानी, अनीति, चोरी और चालाकी के पश्चात् वह सारी कमाई का हकदार हो गया। कौन ? विभीषण। तो आप विभीषण नहीं बनना चाहेंगे ? आप विभीषण बन जाइए न। विभीषण को आदर्श नहीं मानेंगे ? रावण को ही आदर्श मानेंगे ? सोने की लंका का ही ख्वाब देखेंगे ? अपने बेटे और पोते को ही, सवा लाख पूत सवा लाख नाती तक ही सीमित रहेंगे ? आप विभीषण जी का अनुकरण नहीं कर सकेंगे क्या ? ऐसा कीजिए अब आप—अब विभीषण को अपना इष्ट बनाइए और पहले जो रावण को इष्ट मानते चले आए हैं, उसका त्याग कर दीजिए। आप सुग्रीव को इष्ट बनाइए। आपने जो गँवा दिया, वह बहुत गँवा दिया; लेकिन इस गँवाने को लौट आने की फिर से उम्मीद है। सुग्रीव ने बहुत गँवा दिया था। उसने बीबी को गँवा दिया, बच्चों को गँवा दिया, राजपाट को गँवा दिया, शान्ति गँवा दी, सब कुछ गँवा दिया। शायद आप भी गँवा चुके हों। फिर उसने वरण कर लिया। किसका ? राम का वरण कर लिया। राम का मतलब ? उद्देश्यों का, सिद्धान्तों का। सिद्धान्तों और आदर्शों का वरण करने वाले आदमी को शुरू-शुरू में जरूर हैरानी होती है। इम्तहान के दिनों में किसको हैरानी नहीं होती ? रही इम्तहान में पास होने की बात, तो सभी सुख से रहते हैं। बच्चे को जन्म देते समय कौन-सी माता को हैरानी नहीं होती ? लेकिन बच्चे को जन्म देने के बाद में तो प्रत्येक माता को प्रसन्न देखा गया है। आप ऐसी समझदारी नहीं कर सकते ? आप बीज की तरह नहीं गल सकते ? आप बीज की तरह गलेंगे, तो दरख्त की तरह फलेंगे। सुग्रीव ने भी यही किया था। आपका इष्ट सुग्रीव होना चाहिए। सुग्रीव ने समझदारी दिखाई और राम का वरण कर लिया, राम के काम में लग गया। पहले राम के काम में लगना पड़ा। राम क्या पहले कृपा करेंगे ? नहीं, पहले तो कृपा की ही नहीं भगवान ने। ऐसी भगवान में खराबी और चालाकी है कि शुरुआत में ही यकायक किसी की पूजा और कीमत पर प्रसन्न हो जाएँ और रुपयों का थैला पटक दें—ऐसा तो कभी हुआ ही नहीं। सबसे पहला काम भगवान यह करता है कि सिद्धान्त और आदर्शों के लिए आदमी निष्ठावान है कि नहीं—इस बात की परीक्षा लेता है। सुग्रीव को भी इसी परीक्षा में होकर गुजरना पड़ा। उसके पहले भगवान राम का काम करना पड़ा; अपनी सारी सेना को रीछ और वानरों सहित सीता की तलाश करने के लिए भेजना पड़ा और फिर रामचन्द्र जी जब लड़ने के लिए गये, तो उनके साथ भी भेजना पड़ा। रामचन्द्र जी ने भी कुछ किया ? हाँ, बहुत कुछ किया सुग्रीव को रामचन्द्र जी की सहायता न मिली होती तब ? तब आप क्या ख्याल करते हैं, राज्य मिल गया होता ? उसकी धर्मपत्नी वापस मिल गई होती ? उसका बच्चा फिर उसको मिल गया होता ? नहीं, एक भी चीज वापस नहीं मिलती, ऐसे ही लुका-छिपा बैठा रहता।

आप ऐसा कीजिए आप यहाँ कल्प-साधना शिविर में हैं, आप अपने आपको हेर-फेर करने की कोशिश कीजिए और यह कोशिश कीजिए कि हम अपनी दिशाधारा बदल दें। आप दिशा बदल दीजिए, धारा बदल दीजिए। आपका जो रुझान जिन कामों की ओर रहा है, उन कामों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ओर से अपने रुझान में हेर-फेर करके दूसरी जगह रख दीजिए। अब तक आपका महत्त्वाकांक्षी जीवन, महत्त्वाकांक्षाओं को तो मैं मना नहीं करता; पर आपका मन वित्तेषणा, पुत्रेषणा और लोकेषणा—इन्हीं में तो रहा है, तो यह महत्त्वाकांक्षा नहीं है ?. यह महत्त्वाकांक्षा मत रखिए। आप लोक-सेवा की महत्त्वाकांक्षा रखिए, आप आत्मा को प्रसन्न करने की महत्त्वाकांक्षा रखिए, आप भगवान को प्रसन्न करने की महत्त्वाकांक्षा रखिए। लोगों को क्यों प्रसन्न रखते हैं ? लोगों की आँखों में चकाचौंध करने की बात क्यों करते हैं ? आप शरीर तक अपनी सुविधाओं को क्यों खत्म करते हैं ? आप आगे क्यों नहीं बढ़ते ? आप जब ढूँढ़ेंगे, तो आपको कुछ और चीज मिलेगी। सम्पन्नता की तुलना में विभूतियाँ आपको और ज्यादा शानदार मिलेंगी। विभूतियों का मतलब है—गुण, कर्म और स्वभाव की विशेषता और सम्पदा का मतलब होता है—पैसा, धन, खाने-पीने की चीजें, कपड़े और अहंकार बढ़ाने वाली चीजें। आप इनकी तुलना में विभूतियों को महत्त्व दीजिए। विभूतिवान व्यक्ति अपने आप में सम्मान पाते हैं, आत्मसन्तोष पाते हैं, लोकसम्मान पाते हैं, भगवान का अनुग्रह पाते हैं और अन्ततः सम्पन्नता की दृष्टि से भी वह कुछ कम नहीं रहते। गाँधी जी को क्या कमी थी ? आप ही बताइए ? जमीन पर तो जरूर सोते थे, मामूली कपड़े तो जरूर पहनते थे; पर कमी थोड़े ही थी ! नहीं पहनते थे, यह अलग बात थी। गाँधीजी जब जिन्दा थे, तब उनके लिए जनता ने क्या नहीं किया ? जनता ने उनके लिए सौ करोड़ रुपया स्मारक में दिया था; जनता ने उनके लिए कितनी बार अपार धन दिया; जनता ने उनको निहाल कर दिया। वह चाहते, तो खा भी सकते थे; पर सन्त खाते नहीं हैं, खिला देते हैं। यह हो सकता है कि आपको भगवान की कृपा से इतना मिले कि जो आपके खाने के लिए तो जरूरी न हो; लेकिन खिलाने के लिए बहुत काफी हो जाए। आप खिला सकने के लिए चाहें तो ढेरों सम्पदा पा सकते हैं। खाने के लिए तो बहुत मुश्किल है, आप खाना चाहेंगे, तब भी नहीं खा पाएँगे, प्रकृति आपका हाथ रोक लेगी। आपका पेट कितना छोटा-सा है ? चार रोटी खाते हैं आप ? छह रोटी खाकर दिखलाइए। कपड़ा, कुर्ता आप कितना पहनते हैं ? चार गज का ? अच्छा आप बाइस गज का कुर्ता पहनकर दिखाइए। आप कितनी लम्बी चारपाई पर सोते हैं ? चार फुट वाली पर ? अच्छा आप अस्सी फुट वाली चारपाई पर सोकर दिखाइए। नहीं साहब ! अस्सी फुट वाला तो मकान भी नहीं है। कहाँ रखेंगे ? तब आप बड़े आदमी कैसे बनेंगे ? ज्यादा सामान होगा, तभी तो बनेंगे न ! ज्यादा कपड़े पहनेंगे तभी तो बनेंगे न ! तब आप बीस किलो भारी कपड़े पहनिए न अरे साहब ! बीस किलो कपड़ों में तो दम घुट जाएगा। तब आप प्रकृति को नहीं समझते ? प्रकृति आपको खाने नहीं देगी। जमा तो कर लीजिए आप; लेकिन खाने नहीं देगी। तब ? तब आप उस चीज को इकट्ठा कीजिए न, जिसको खा सकते हैं—आप आत्म-सन्तोष खा सकते हैं, आप अपनी आध्यात्मिक गरिमा और महत्ता खा सकते हैं। आप इन दो में से चुनाव कीजिए। यह आपके जो दिन हैं, वह चुनाव के दिन हैं। आपके सामने दो कैण्डीडेट खड़े हुए हैं—एक का नाम है—दैत्य और एक का नाम है—देव। दैत्य वह है, जिसके साथ में आपकी पिछली जिन्दगी का हिस्सा रहा है। दैत्य यानी बड़प्पन। बड़प्पन तो आपकी जिन्दगी में छाया रहा न ? आप उसी की पार्टी में रहे, आपने उसी का कहना माना न ? आप उसी के लिए मरे-खपे न ? अब तक आपको वही प्यारा लगा न दैत्य ?

लेकिन अब ऐसा मत कीजिए। अब यहाँ से जाते-जाते आप अपने आपको देवता की बिरादरी में शामिल कर लीजिए। देवता को इष्ट मानिए। देने की बात पर विचार करते रहिए, हर जगह ऐसी नजर मत डालिए कि हमको यहाँ से मिलेगा, वहाँ से मिलेगा। आप अपनी नजर को बदल दीजिए और आप इस तरीके से बदलिए कि आप अपने यहाँ से देना शुरू करेंगे। आपके पास पैसा नहीं है, तो कोई जरूरी नहीं है कि आप पैसा दें; आप प्यार भी तो दे सकते हैं; आप सेवा भी तो दे सकते हैं; आप स्नेह भी दे सकते हैं; आप दूसरों को परामर्श भी तो दे सकते हैं; आप प्रोत्साहन भी तो दे सकते हैं; आप दूसरों को दिशा भी तो दे सकते हैं। यह कितनी चीजें हैं देने के लिए आपके पास; आप गरीब हैं कोई; आप गरीबी को मानना छोड़ दीजिए। आप अमीर बनके जाइए। आप यहाँ से यह मानकर चलिए कि आप यहाँ से अमीर बनकर जा रहे हैं। अमीर का मतलब है वह आदमी, जो अपना गुजारा कर लेता है और दूसरों की भी मदद करता है। आप सादा जीवन और उच्च विचार के सिद्धान्त को यहाँ से लेकर जाइए। सादा जीवन जिएँगे, तो आपको सारे अभाव खत्म हो जाएँगे और जब उच्च विचार लेकर के जाएँगे, तो आपके पास जो वर्तमान साधन हैं, उन्हीं साधनों की मदद से आप लोगों की मदद और सेवा करने में समर्थ हो सकेंगे। आप किसी की सेवा न भी करें, तब भी घर बैठे ऊँची श्रेणी की कल्पनाएँ करते रहें, विचार करते रहें, योजनाएँ बनाते रहें। अपने आपको ऊँचे स्तर के विचारों में डुबोए रख सकें—यह भी तो कोई कम बात नहीं ! आप ऐसा ही कीजिए। आप अपनी दुर्मति को त्याग दीजिए, आप नरक को त्याग दीजिए, आप पतन को त्याग दीजिए। आप उत्थान की ओर चलना शुरू कीजिए, आप स्वर्ग को अपना निशाना बनाइए और अपने पैर स्वर्ग और मुक्ति की तरफ उठाइए। मुक्ति का मतलब होता है—भव-बन्धनों से मुक्ति, लोभ-मोह से मुक्ति और स्वर्ग की ओर चलने का मतलब होता है—ऐसे आदर्श और ऐसे सिद्धान्तों की तरफ कदम बढ़ाना, जहाँ कि आदमी को शान्ति मिलती है, जहाँ आदमी को श्रेय मिलता है, जहाँ आदमी को सन्तोष मिलता है। आप अपने आपमें हेर-फेर कर दीजिए, रास्ता बदल दीजिए, विचार बदल दीजिए, गुण बदल दीजिए, चिन्तन बदल दीजिए। इतना आप बदल देंगे, तो सच्चे अर्थों में आपका कायाकल्प होगा और कायाकल्प के आधार पर जो आपको बुढ़ापे से जवानी में जाने की,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो सुख की आशा थी, उससे हजार गुना सुख और शान्ति आप साथ ले करके जाएँगे। आप यकीन रखिए ऐसा आप कर सकते हैं और ऐसा करना चाहिए। हमारे व्यक्तिगत जीवन का अनुभव यही है और आपको इस अनुभव से लाभ उठाना चाहिए। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

कैसे हो आध्यात्मिक कायाकल्प ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

कल कल्प-साधना के सम्बन्ध में आपको थोड़ी-सी जानकारी दी थी कि यह कल्प-साधना क्या है और आपको इसके अन्तर्गत स्वयं में क्या परिवर्तन लेना है और यह कौन करेगा ? कैसे सम्भव होगा ? आप लोग सहयोग करेंगे, हम आपकी सहायता करेंगे। कल हमने आपसे कहा था कि आपको अपने भीतर के दृष्टिकोण को बदल लेना चाहिए। क्रिया भी इसमें सहायक है। इसके लिए हम आपसे अनुष्ठान करा रहे हैं, जप करा रहे हैं, ध्यान करा रहे हैं, भोजन के बारे में आहार की भी साधना करा रहे हैं। ये क्रियाएँ हैं; लेकिन इन क्रियाओं का मतलब सिर्फ यह है कि आप अपने भीतर वाले दृष्टिकोण, चिन्तन, चरित्र, स्वभाव, रुचि और आकांक्षा को बदल दें। इन सारी क्रियाओं का मतलब अगर आपने यह लगा लिया हो कि इन क्रियाओं से जादूगरी होगी और आसमान से सिद्धियाँ टपकेंगी, तो आप इस ख्याल को निकाल दीजिए। करना आपको ही पड़ेगा। आपके किये बिना कोई रास्ता नहीं है। आप चुपचाप बैठ करके देवी के आशीर्वाद से, गायत्री माता के आशीर्वाद से या किसी चमत्कार से बदलना चाहते हैं अथवा अपनी परिस्थितियों को सुधारना चाहते हैं और स्वयं कुछ करने से इनकार करते हैं, तो आप ख्याल रखिये, फिर आपको सफलता नहीं मिल सकती; एक महीने का समय भी आपका बेकार चला जाएगा। अच्छा है आप कायाकल्प को पहले अच्छी तरह समझ लें, तब कदम बढ़ाएँ।

कल हमने आपको यह बताया था कि किस तरीके से महान लोगों ने अपने आपको बदल लिया। मनःस्थिति बदलने के बाद, परिस्थिति किस तरह बदल गई ? कायाकल्प यही है। फिर कायाकल्प में करना क्या पड़ता है ? इसके लिए एक उदाहरण मैं आपको सुनाऊँगा। यह उदाहरण महामना मालवीय जी का है। महामना मालवीय जी ने कायाकल्प किया था। कायाकल्प के बारे में उनका भी यही ख्याल था कि शरीर का कायाकल्प होगा। शरीर का कायाकल्प, हम कह चुके हैं कि सम्भव नहीं है; लेकिन मन का कायाकल्प करने के लिए भी कम से कम प्रक्रिया वही इस्तेमाल करनी पड़ती है, जो शरीर के कायाकल्प के लिए कभी की जाती रही होगी या कभी सफल होती रही होगी। महामना मालवीय जी का कायाकल्प हुआ था। कैसे हुआ था जानते हैं ? मथुरा जिले में कोसी नाम की एक जगह है। उसके पास मन्दिर में एक महात्मा रहते थे। तपसी बाबा उनका नाम था। तपसी बाबा ने मालवीय जी से सम्पर्क स्थापित किया और कहा कि आपका हम कायाकल्प करा देंगे, आपके बुढ़ापे को जवानी में बदल देंगे। वह प्रक्रिया जिस तरीके से इस्तेमाल की गई, आपके बहुत ध्यान देने लायक है। आपके मानसिक कायाकल्प में वह प्रक्रिया जरूर सहायक होगी। क्या हुआ था उनका ? उनके तीन कर्म हुए थे। मालवीय जी को सबसे पहले पंचकर्म करने पड़े थे। पंचकर्म किसे कहते हैं ? पंचकर्म कहते हैं—शरीर के संशोधन को इसमें स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन और वस्ति—यह पाँच क्रियाएँ होती हैं। पाँच कर्मों में एक आता है—टट्टियाँ जाना, दस्त करा देना। इसको 'विरेचन' कहते हैं। आमाशय में जो मैल भरा हुआ था, वह उल्टी करके निकाल देना—यह 'वमन' कहलाता है। आँतों में जो भी जहर भरा हुआ था, उन्होंने दस्त और उल्टी कराकर निकाला। दो कर्म यह कराये। तीन और रह जाते हैं। एक में पसीना निकाला जाता है, जिसको संस्कृत में 'स्वेदन' कहते हैं। भाप दे करके पसीना निकाला गया। क्यों ? इसलिए निकाला, क्योंकि उनके शरीर में जहाँ कहीं भी विषाणु भरे हुए होंगे या मल भरा होगा, उसको निकालने के लिए यह क्रिया की गई। इसमें बाद में उनको छीकें देने का कार्य किया गया। जुकाम के जो कीटाणु या मस्तिष्क में जो मल भरा था, उसको निकाला गया। इस तरीके से सारे मलों का संशोधन किया गया। कल्प का पहला अध्याय या कर्म यही है। मैं यह मालवीय जी की बात कह रहा था। उन लोगों को भी, जिनको पूरा न सही अधूरा ही कायाकल्प करना है, तो पहले मलों का निष्कासन करना पड़ेगा। दूसरा, मालवीय जी को यह करना पड़ा कि चालीस दिन तक एक झोंपड़ी के भीतर कैद रहना पड़ा। उस एकान्त कोठरी में चालीस दिन अकेले काटने पड़े। उसी में टट्टी जाते थे, नहाते भी उसी में ही थे, उसी में पूजा-पाठ करते थे, जो कुछ भी खाना खाते होंगे, वह भी बाबा ने वहीं भेजा। निकलना नहीं हो सकता था। टहलना भी उसी में होता था। इस तरीके से चालीस दिन उन्होंने काटे।

अध्याय नम्बर दो। मैं आपको यह समझाने वाला हूँ कि इन तीनों क्रियाओं का क्या उद्देश्य है और ये तीनों क्रियाएँ मनःक्षेत्र का कायाकल्प करने के लिए किस तरीके से लागू हो सकती हैं ? दो बातें हो गईं। एक तो हुआ उनका मल-संशोधन, दूसरा हुआ उनका एकान्त सेवन। तीसरा एक और पक्ष था वह यह था कि उनको विशेष पदार्थ खिलाये गये। क्या खिलाये गये ? उनको ऐसे पदार्थ खिलाए गये, जिससे उनके शरीर में नये कोषाणु बनें, नया जीवन आये। टॉनिक टाइप की कुछ ऐसी चीजें थीं, जिनको लकड़ी के एक खोखले में बन्द करके रखते थे और जब सात दिन में वह बनकर तैयार हो जातीं, तो उनको पीसकर के उन्हें खिलाते थे, जिससे कायाकल्प में पुरानी खराबियाँ निकल जाएँ और नई अच्छाइयाँ शुरू हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाएँ। बस, यही चालीस दिन तक चला। चालीस दिन बाद क्या कराया ? क्या लाभ हुए ? ज्यादा तो मुझे मालूम नहीं है; पर इतना तो मालवीय जी ने छापा था कि मेरी स्मरण शक्ति ठीक हो गयी है, मेरे सफेद बाल काले हो गये हैं। ऐसे कई लाभ उनको हुए थे और वह लाभ कब तक टिके, ऐसी बात मैं नहीं जानता; क्योंकि शारीरिक कायाकल्प कराने की बात मैंने आपसे कही भी नहीं है और हम ऐसा कुछ कराने की स्थिति में भी नहीं हैं; लेकिन मानसिक कायाकल्प में भी इन्हीं तीनों सिद्धान्तों को बराबर लागू करना पड़ेगा। एक काम आपको यह करना पड़ेगा कि आपके भीतर जो भी संचित मल, आवरण और विक्षेप हैं, जो भी विषाणु भरे पड़े हैं, उनकी ओर गौर करना पड़ेगा और गौर ही नहीं, बल्कि निकालना भी पड़ेगा, जद्दोजहद् करनी पड़ेगी, लड़ना पड़ेगा कि आपका पिछला जीवन कैसे कुसंस्कारों से भरा हुआ पड़ा है और उन कुसंस्कारों को दूर करने के लिए आपको क्या करना चाहिए और यह कैसे सम्भव है ? प्रायश्चित्त प्रणाली हमारी यही है। इसमें यह बताया जाता है कि आदमी की आध्यात्मिक उन्नति में सबसे बड़ी रुकावट उसके पुराने किये हुए कर्मों के पाप हैं। पुराने दुष्कर्म पत्थर की तरह से रास्ते में खड़े हो जाते हैं और एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने देते। बार-बार रोक देते हैं; क्योंकि उसका भविष्य बुरा होना है, उसको दण्ड मिलने हैं, इसलिए अच्छे काम भी नहीं करने देते और अच्छे कामों की ओर से मन उखाड़ देते हैं, मन हटा देते हैं। इसलिए पहला काम हर साधक को अपने आपकी धुलाई के रूप में करना पड़ता है, जैसे रँगने से पहले कपड़े की धुलाई करनी पड़ती है। धुलाई अगर नहीं होगी, तो कपड़े पर नया रंग चढ़ेगा ही नहीं। इसलिए पहला काम, कल्प-साधना के लिए यही करना पड़ता है, यह आप समझ लीजिए। आपके ऊपर दबाव डाला जाएगा और आपका उत्साह पैदा किया जाएगा कि आपके अन्दर पिछला स्वभाव और पिछली गन्दी आदतें, क्रिया-पद्धति जो भी रही है, उसे बदल दीजिए, छोड़ दीजिए, निकाल दीजिए। अगर बुरी आदतें आपको नहीं छोड़ती हों, तो उनके विरुद्ध लड़ना शुरू कर दीजिए, बगावत कीजिए, उनको अस्वीकार कर दीजिए। यह कायाकल्प का पहला काम है। यह काम आपको करना पड़ेगा। अगर आप नहीं करेंगे, तो कल्प-साधना, जिसके कि रंगीन सपने हमने आपको दिखाये हैं और ये बताया है कि आपका जीवन दिव्य जीवन होकर रहेगा और आप शानदार आदमी होकर रहेंगे, पूरा हो सकना सम्भव नहीं है। इसके लिए एक कदम तो आपको आगे लाना ही पड़ेगा। अगर आप यह नहीं करेंगे, तो पुराने ढर्रे वाले जीवन को ढोते रहेंगे। बताइये, फिर हम अकेले क्या कर पायेंगे ? जप और अनुष्ठान कोई जादुई चमत्कार कैसे दिखा पायेंगे ? नहीं, अध्यात्म जादू-चमत्कार जैसा नहीं है। अध्यात्म तो हम मानसिक पुरुषार्थ को कहते हैं, इसलिए मानसिक पुरुषार्थ तो आपको करना ही पड़ेगा। एक काम तो यह हुआ।

दूसरा काम एक और आपको यहाँ करना पड़ेगा। जिस तरह मालवीय जी को एक कोठरी में चालीस दिन तक एकान्त सेवन करना पड़ा था, आपको भी यहाँ चालीस दिन तक नहीं, कम-से-कम एक महीने तक एकान्त सेवन करना चाहिए। आपको निवास करने के लिए हमने एक कोठरी खासतौर पर इसीलिए दी है कि आप यह मानकर चलें कि आप एकाकी हैं, अकेले हैं। इस दुनिया में अकेले ही आप आये थे और अकेले ही जाना है। चलना है तो भी आपको अकेले ही चलना है। इसको कुटी प्रवेश कहते हैं, गुफा प्रवेश कहते हैं। पहले के महात्मा गुफा में घुस जाते थे, कोठरियों में रहते थे, एकान्त का सेवन करते थे; क्योंकि बाहर का जो जंजाल है, जिसमें सभी चक्रव्यूह की तरह फँसे हुए हैं, उससे दूर रह सकें, उसमें से पार हो सकें। अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए आपको एकान्त चाहिए। एकान्त नहीं मिलेगा, तो आप विचार तक नहीं कर पायेंगे कि आपको क्या करना है ? पुरानी चीजों से छुटकारा पाना है, नई चीजों का सेवन करना है। इसके लिए एकान्त बहुत आवश्यक है। यह एकान्त सेवन जो महीने भर का है, वह आपके लिए बहुत आवश्यक है। आप जगह-जगह मत जाइये, घूमिये मत, टिकट रिजर्वेशन कराने मत जाइये। तीर्थयात्रा के बहाने यहाँ घूमिये मत, चक्कर मत काटिये, ऋषिकेश मत जाइए, ऋषिकेश के लिए तो जिन्दगी पड़ी है। आपको एक महीने ऐसे नहीं रहना चाहिए, बल्कि ऐसे रहिए जैसे माता के पेट में बच्चा रहता है। कल्पना कीजिए—आपकी कोठरी अथवा गायत्री नगर—शान्तिकुंज जिसमें कि आप निवास करते हैं, इसको आप यह मानिये कि यह माताजी का गर्भ है और आप माताजी के गर्भ में पल रहे हैं, आपका नया जन्म हो रहा है; कायाकल्प करा रहे हैं अपना। आपको माताजी के पेट में चुपचाप रहना है, गड़बड़ी नहीं फैलानी है। भ्रूण को जो माता देती है, उसी से गुजारा करता है, माता जिस तरह रखती है, वैसे ही रहता है, आपको भी उसी तरह रहना चाहिए। आपको यह अनुभव करना चाहिए कि आप यहाँ शान्तिकुंज में निवास करते हैं, गायत्री नगर में रहते हैं, यह क्या है ? यह गुरुजी का बर्तन पकाने का अवा है। कुम्हार को आप जानते हैं ? कुम्हार कच्चे बर्तन बनाता है, बनाने के बाद पकाता है। अवे में से खिलौने भी निकलते हैं, तो आप यह मान सकते हैं कि गुरुजी ने अवा लगाया हुआ है। कहाँ है अवा ? इस कोठरी में जिसमें आप रहते हैं अथवा शान्तिकुंज को आप अवा मानिये। इस अवे में आपको कैद कर दिया गया है; आपको पकाया जा रहा है। अगर आप एक महीने तक पकते रहेंगे, कोई गड़बड़ नहीं करेंगे, तो मजा आयेगा ! आप गड़बड़ मत कीजिए; चित्त को इधर-उधर मत ले जाइये; घर वालों की याद मत कीजिए; बाहर वालों की समस्या पर ध्यान मत दीजिए; मन को इधर-उधर भागने मत दीजिए; शरीर को इधर-उधर भटकने मत दीजिए। आप ही बताएँ अगर कोई बच्चा माँ के पेट में दंगल मचाये और कहे मम्मी मैं तो नौ महीने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पेट में नहीं रह सकता, जरा आप छुट्टी दे दो, मैं बाजार में घूमकर आऊँगा, तो आप समझ सकते हैं, बच्चे का क्या हाल होगा और कुम्हार के बर्तन ? बर्तन अगर चुपचाप न बैठे रहें, ये कहें दिन में बाजार में घूमा करेंगे, रात को अवे में आ जाया करेंगे, तो बर्तन पक जाएँगे ? आप ही बताइये ? नहीं, सब बिगड़ जाएगा। इसलिए आप बाहर की चिन्ताओं को भूल जाइये। न शरीर को बाहर घूमने दीजिए, न मन को बाहर भ्रमण करने दीजिए। तो क्या काम करें ? बस, यही मैं बताने वाला हूँ, तीसरा वाला काम। तीसरा वाला काम भी अगर आप कर लेते हैं, तो समझिये कि आपका कल्प-साधना का उद्देश्य पूरा हो गया और आप जिस लक्ष्य तक पहुँचने की इच्छा करते थे अथवा जिस लक्ष्य तक हम पहुँचाने की कोशिश कर रहे थे, वह निश्चित रूप से सफल हो जाएगा।

मालवीय जी ने तीसरा जो काम किया था, उसका नाम था—टॉनिक-सेवन। आपको एक काम टॉनिक-सेवन का करना चाहिए। टॉनिक सेवन का क्या मतलब है ? टॉनिक-सेवन का मतलब है कि जिन विचारों का अभाव रहा हो, उन विचारों को फिर से सेवन करना शुरू कीजिए, टॉनिक की तरह। टॉनिक तो आपको मिला ही नहीं। आप तो कुपोषण के शिकार रहे हैं अथवा विकृत भोजन करते रहे हैं, इसलिए आपका सारा का सारे मानसिक स्वास्थ्य गड़बड़ा गया है। भविष्य में आपको ऐसी विचारधारा के साथ, ऐसे लोगों के साथ, ऐसी मति के साथ, ऐसी महान् सत्ता के साथ अपने आपको सम्पर्क में लाना है, जोकि आपको महान बनाने में समर्थ है, जो आपको सहारा दे सकती है, ऊँचा उठा सकती है। तो आप उससे सम्पर्क मिलाइये। किससे ? भगवान से। भगवान् से आप इसी रूप में सम्पर्क मिलाने की कोशिश कीजिए और सबसे स्वयं को पीछे हटा लीजिए। थोड़े दिन के लिए आप यह मानकर चलिये कि आप और आपका भगवान् दो ही हैं। भगवान् किसे कहते हैं ? भगवान् सद्गुणों के, सत्प्रतीकों के, आदर्शों के एक समुच्चय का नाम है। एक भगवान तो वह है, जो कि सारे विश्व को सँभालता है, जिसको आप नियमन कह सकते हैं, नियन्त्रण कह सकते हैं। एक भगवान वह है, जो विश्वव्यापी है। विश्वव्यापी भगवान के लिए तो आप उसके कायदे-कानून का पालन कीजिए और फायदा उठाइये। कायदा तोड़िये, पिटाई खाइये। विश्वव्यापी भगवान तो न्याय और नियमन के अलावा दूसरा काम करता भी नहीं है; लेकिन जो व्यक्तिगत सहायता कर सकता है, वह हमारा सुपर-कांशसनेस है, हमारा अन्तरात्मा है। अन्तरात्मा, परमात्मा उसी का नाम है। अन्तरात्मा को ही परमात्मा कहते हैं। अन्तरात्मा किसे कहते हैं ? अन्तरात्मा कहते हैं—गुण, कर्म और स्वभाव को। इसी विशेषता का नाम परमात्मा है। इसी को 'सुपर कांशसनेस' कहते हैं। आप इसके साथ में आपना सम्बन्ध जोड़ लीजिये। अभी तक आपका सम्बन्ध कुसंस्कारों के साथ रहा है, घटिया लोगों के साथ रहा है। चारों ओर का वातावरण, गिरावट के अलावा और क्या नसीहत देगा। आपने जो स्वभाव सीखा है, वह सिवाय घिनौने जीवन के और क्या दे सकता है ? पशुओं की जिन्दगी हम जी रहे हैं और चारों तरफ पशुओं से घिरे हुए हैं। आप थोड़े दिनों के लिए इस दायरे से बाहर आ जाइये। बाहर आप आ करके ऐसे लोगों के साथ रिश्ता मिलाइए, जिनके कि समुदाय में जाकर के ऊँचा उठना सम्भव है। ऋषियों के साथ सम्बन्ध मिलाइए, सन्तों के साथ सम्बन्ध मिलाइए, देवताओं के साथ सम्बन्ध मिलाइए, भगवान के साथ सम्बन्ध मिलाइए। यह समय बिल्कुल आपके साथ ही है। आप देख नहीं रहे हैं, जिस कोठरी में आप यहाँ रहते हैं, उसमें चारों ओर सन्त छाया हुआ है, चारों ओर ऋषि छाया हुआ है, चारों ओर भगवान छाया हुआ है तथा आदर्श छाये हुए हैं, उदात्त दृष्टिकोण छाये हुए हैं, प्रेरणाएँ छायी हुई हैं और आपको ऊँचा उठाने के लिए जो दिशाधारा से आवश्यक हैं, वह भी छायी हुई हैं। आप इनके साथ सम्बन्ध मिला लीजिए, पीछे की तरफ मुड़कर मत देखिए। एक ही तरफ विचार कीजिए, महानता के साथ जुड़ जाइए; आप आदर्शों के साथ जुड़ जाइए। एक महीने तक आपको यही करना है और एक महीने को साधना में लगा लेना है, स्वाध्याय में लगा लेना है, चिन्तन में लगा लेना है। आपको इस बीच में जप और अनुष्ठान करना है, योगाभ्यास करना है, आपको इस बीच में तप करना है और अपने आपका संशोधन करना है। ये आपको करना चाहिए।

फिर हम क्या अकेले कर लेंगे ? नहीं, अकेले तो नहीं कर लेंगे, हम पीठ पर तो हैं। आप सहायता करेंगे, तो हम भी आपकी सहायता करेंगे। इम्तहान में पास तो बच्चे ही होते हैं; पढ़ना तो उन्हीं को पड़ता है; स्कूल तो वही जाते हैं; पर आप समझते हैं कि बच्चे स्कूल जाते हैं, तो क्या, अपने ही बलबूते पर पास हो जाते हैं ? माता उनके खाने का इन्तजाम करती है; पिता उनकी फीस का इन्तजाम करता है; मास्टर उनको पढ़ाने में सहायता करता है; कई और की सहायता मिलती है, तब कहीं पास हो पाता है। आपके पढ़ने की मेहनत और पुरुषार्थ सफल हो जाएँ, इसलिए हम आपके लिए तीनों इन्तजाम कर रहे हैं। माता आपको खुराक देने को तैयार है। हम आपको ऊँचा उठाने के लिए, जो पिता का कर्त्तव्य था, करने को तैयार हैं। गुरु का कार्य ? गुरु चलो, हम न सही; पर हमारे जो गुरु हैं, वह भी इस वातावरण में हैं, जिसमें आप निवास करते हैं। आपकी सहायता करने के लिए हम तीनों तैयार हैं। गुरु के रूप में वह सत्ता, जिसके आधार पर हम शान्तिकुंज बना हुआ है; जिसकी आज्ञा से यह कल्प-साधना के शिविर चलाये गये हैं, ऐसी कोई परम सत्ता आपको गुरु के तरीके से मार्गदर्शन करने को तैयार है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुरु विद्वान हैं। आप उसका फायदा उठाइए; आपकी वह सहायता करेंगे। हमको तो आप अभिभावक मान सकते हैं। हमारे पास कुछ पुण्य होगा, तप होगा, ज्ञान होगा, चरित्र होगा, तो आप यकीन रखिये कि हम आप पर न केवल दबाव ही डालेंगे, न केवल सिखायेंगे ही, बल्कि उसका एक हिस्सा भी देंगे। बाप भी अपने बच्चे को केवल शिक्षा ही थोड़े देता है, बल्कि सहायता भी देता है। हमारी शिक्षा भी आपको मिलने वाली है और सहायता भी मिलने वाली है। माताजी का आपको स्नेह भी मिलने वाला है; प्यार-दुलार भी मिलने वाला है; अनुदान भी मिलने वाला है। तीन तरफ से आपको मिलने वाला है। आप कितने भाग्यवान हैं कि आप यहाँ माता का स्नेह पा रहे हैं, पिता का अनुशासन और सहयोग प्राप्त कर रहे हैं आप ऐसे एक महान् गुरु से, जो न केवल आपको, बल्कि आप जैसे लाखों आदमियों को, न केवल लाखों आदमियों को, बल्कि सारे जमाने को और जमाने की प्रवृत्तियों को मार्गदर्शन करने में समर्थ है। आपको तीनों का सुख मिलता रहता है। आपके भाग्य की सराहना किये बिना हम रह नहीं सकते। आपके लिए कल्प की सम्भावनाएँ बिल्कुल सुनिश्चित हैं। आपका भूतकाल जैसा था, वह यहाँ का यहीं रह जाए। आपका पुराना वाला केंचुल यहीं रह जाए और आप जब जाएँ, तो ऐसे नये आदमी बनकर जाएँ कि वाह-वाह हो। आप जिस पिंजड़े में रहे हैं, उस पिंजड़े की कीलें काटने का हमारा मन है। आप भी थोड़ा प्रयत्न कीजिए, थोड़ा हम करेंगे। पंखों को आप ट्रेण्ड कीजिए, ताकि जैसे ही पिंजड़े की कीलें कटें, आप इसमें से भागना शुरू कर दें। अगर आप पंखों को पैना नहीं करेंगे, तो हम कीलियाँ काट भी दें, तो भी आप वहीं बैठे रहेंगे। आप हमारे सहयोग का फायदा उठाइए; वातावरण का फायदा उठाइए; यहाँ की परिस्थितियों का फायदा उठाइए; यहाँ के मार्गदर्शन का फायदा उठाइए। जाइये और अपने भविष्य को शानदार बनाने के लिए कमर कसकर तैयार हो जाइए।

मालवीय जी के जो तीन कार्य थे, वह उन्हें शारीरिक स्वास्थ्य-संवर्द्धन के लिए कराये गये थे। मानसिक विधि से, भावात्मक विधि से, चिन्तन विधि से आपको वही तीन काम करने पड़ेंगे। संकल्प-संशोधन आपको करना ही चाहिए और करना ही पड़ेगा। इसी को प्रायश्चित कहते हैं। तपस्या भी इसी को कहते हैं और आपको एकान्त सेवन करना ही पड़ेगा। आप गुफा में रहिए, अपने हृदय की गुफा में घुस जाइए; अन्तर्मुखी रहिए; बाहर की बातों पर विचार मत कीजिए; केवल अपनी समस्या पर ही विचार कीजिए; अपने भविष्य के बारे में विचार कीजिए; अपने भूतकाल पर विचार कीजिए और भविष्य का निर्धारण करने के लिए वह काम कीजिए, जिसकी कि आपको जरूरत है। हमारे सहयोग को आप ग्रहण कीजिए, हजम कीजिए, चबा जाइए। हम आपको थाली में भोजन परोसकर देते हैं, आप खाइए इसको; इसे पचाइए। खाना आपका काम है, पचाना आपका काम है। भोजन ही तो हम दे पायेंगे, पचा थोड़े ही पायेंगे। पचाना तो आपको ही पड़ेगा, चबाना तो आपको ही पड़ेगा। चबाइए आप, थाली हम परोसते हैं। दोनों का सहयोग कितना शानदार है और आपका उज्ज्वल भविष्य करने में इस शिविर का कितना बड़ा योगदान है ? आप यह देख पायेंगे और यह सम्भव है, जैसी कि हम आशा करते थे, आशा दिलाते थे। थोड़ा-सा आप उत्साह दिखाइए और थोड़ा-सा मनोबल बढ़ाइए फिर देखिये कि आपका यह कल्प-साधना का सत्र कितना शानदार और आपके भविष्य के निर्माण में कितना सहायक सिद्ध होता है ?

ॐ शान्ति।

अनुग्रह के लिए अन्तराल का सुविकसित होना आवश्यक

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

दो दिनों से आप यह सुन रहे हैं कि कल्प क्या है और कल्प के लिए क्या करना पड़ेगा आपको ? कल्प के लिए दूसरे भी आपकी सहायता करेंगे; पर यह मानकर चलिए कि कुछ तो आपको भी करना पड़ेगा। आप केवल पूजा ही नहीं करेंगे बल्कि भीतर वाले हिस्से को भी ठीक करेंगे। केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित रह जाएँगे, तो उद्देश्य कैसे पूरा होगा ? यह कल्प कोई शारीरिक थोड़े ही है। यह क्रियाओं से कैसे पूरा हो जाएगा ? यह आन्तरिक कायाकल्प है। इसलिए आपको अपनी मनःस्थिति को, चिन्तन को, अपने विचारों को, आस्थाओं को, दृष्टिकोण को भी बदलना पड़ेगा। यह कर सके, तो आप यकीन रखिये बाहर की सहायता आपको जरूर मिलेगी।

आमतौर से लोग यह समझते हैं कि देवताओं की खुशामद करके, देवताओं से कुछ प्राप्त करके हम अपना फायदा उठा लेंगे और अध्यात्म इसी का नाम है। यह उन लोगों का गलत ख्याल है। देवताओं का अनुग्रह मिलना तो है, मैं यह नहीं कहता कि नहीं मिलता; लेकिन बिना शर्त नहीं मिलता, कुपात्रों को नहीं मिला; पात्रता पहले साबित करनी पड़ती है, इसके बाद में ही ऐसा हो सकता है कि देवता सहायता करें और किसी भक्त को या साधक को लाभ देने में मदद कर सकें। आपको भी यही विचार करके चलना चाहिए। आपको देव-अनुग्रह की कामना तो अवश्य करनी चाहिए, गुरुजी के आशीर्वाद की कामना तो अवश्य करनी चाहिए, गायत्री माता की कृपा की आशा तो अवश्य करनी चाहिए; लेकिन उस आशा के साथ-साथ में एक जो शर्त है, उसे भी भूलना नहीं चाहिए। शर्त यह है कि आप अगर अपनी पात्रता साबित करेंगे, तो देवता भी आपकी जरूर सहायता करेंगे और अगर आप अपनी पात्रता नहीं साबित कर सके, तो आप यह मानकर चलिये,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आपको निराश ही होना पड़ेगा। देवता से किसी ऐसी कृपा की आशा मत कीजिए, जो कि कुपात्रों को भी मिल सकती है। देवता बड़े होशियार हैं। इससे पहले कि आप कर्मकाण्ड करें, उससे पहले वह कर्मकाण्ड के पीछे छिपी साधक की भावना को देखते हैं। अगर भावना उसकी सही है, तो निश्चित रूप से फल देते हैं, जैसा कि आपने सुना है; लेकिन अगर आपने भावना का ध्यान नहीं रखा है, केवल चिन्ह-क्रिया को कर लिया है, तो छोटी-सी क्रिया के बदले में आपको लम्बी-चौड़ी आशा नहीं करनी चाहिए, जो देवताओं की सहायता से मिलती है या मिल सकती है। इस बात पर आप ध्यान दीजिए।

बादलों को आप देखते हैं न, बादल कितनी कृपा करते हैं ? बादलों जितना कौन देवता हो सकता है ! बिना कीमत पानी बरसाता है; चाहे कितना भी पानी बरसाता है; समुद्र से लाता है और प्यासी जमीन को पिलाने के लिए उँड़ेल देता है; लेकिन आप ध्यान दीजिए, उस पानी से कौन लाभ उठा पाता है ? हर कोई फायदा उठा लेता है ? नहीं, हर कोई लाभ या फायदा नहीं उठा पाता। हर जगह हरियाली बादलों से हो जाती है; लेकिन जो चट्टानें हैं, उन चट्टानों पर एक तिनका भी पैदा नहीं होता। आपने नदी में पड़े हुए पत्थरों को देखा है न ! नदी के पानी से किनारे गीले हो जाते हैं, जमीन गीली हो जाती है; पर जो चट्टान या पत्थर का टुकड़ा नदी के बीच में सैकड़ों वर्षों से पड़ा हुआ है, जरा तोड़कर तो देखिये। नदी का कोई अनुग्रह नहीं हो सका, क्योंकि वह पत्थर है; बादलों का कोई अनुग्रह-लाभ नहीं ले सका; क्योंकि वह चट्टान है।

छात्रवृत्ति के बारे में जानते हैं न ! जो प्रथम श्रेणी में पास होते हैं, उनको सरकार की ओर से छात्रवृत्ति दी जाती है। थर्ड डिवीजन वाले को मिलती है क्या ? फ़ेल होने वाले को मिलती है क्या ? आप हमारे साथ उदारता कीजिए, दया कीजिए—यह मत कहिए। उदारता का दुनिया में कोई खास व्यवहार नहीं है, दया का कोई खास व्यवहार नहीं है। दुनिया में पात्रता की ही परख है। आपने देखा है न, किसी की खूबसूरत कन्या को बहुत-से आवारा पड़ोसी यह माँग सकते हैं कि अपनी कन्या को हमारे हवाले कर दीजिए, हमसे शादी कर दीजिए। आपका क्या ख्याल है, कोई अपनी जवान लड़की को, जो पढ़ी-लिखी भी है, सुन्दर भी है, किसी आवारा के सुपुर्द कर देगा क्या ? नहीं करेगा; क्योंकि वह तो बेचारा प्यासा फिर रहा है कि कोई अच्छा-सा जमाई मिल जाए, तो हम पैसे भी देंगे, खुशामद भी करेंगे, कपड़े भी देंगे; कितना तलाश करता-फिरता है। क्यों तलाश करता है दामाद को, जब आपके पड़ोस में ही पचास दामाद इसके लिए तैयार हैं कि हम भी आपके जमाई बनेंगे, अपनी लड़की दे दीजिए, फिर क्यों नहीं देता है ? क्यों लड़ने-झगड़ने को तैयार हो जाता है ? क्यों अच्छे लड़के के पास जाता है और खुशामदें करता है, पैर पकड़ता है, मिन्नतें भी करता है, ऐसा क्यों होता है ? सिर्फ एक ही वजह है कि दामाद इस लायक हो, उसके अन्दर इतनी पात्रता हो कि उस लड़की का गुजारा कर सके, उस लड़की का ठीक उपयोग कर सके, उस लड़की की देखभाल कर सके, इसलिए उस लड़की का बाप ऐसे दामाद को तलाश करता है, जो कि उसके योग्य हो। ठीक इसी बात की तरह देवताओं के अनुग्रह हरेक के बाँट में नहीं आ सकते, गुरुओं के अनुग्रह हरेक की बाँट में नहीं आ सकते। रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द को अनुग्रह-लाभ दिया था। माँगने वाले तो हजारों आदमी आते थे, हजारों आदमी छोटी-मोटी अपनी जरूरतें पूरी कराके भाग खड़े होते थे; लेकिन विवेकानन्द के अन्दर उन्होंने पात्रता का अंश पाया, इसलिए उनको ही अनुदान दिया। देखते हैं न, माता के पेट में जब भ्रूण रहता है, तो वह माता की सहायता प्राप्त करता है, माता का दूध प्राप्त करता है। उसकी पात्रता को माता समझती है, इसलिए वह सहायता देती है। पेड़ अपनी चुम्बक शक्ति से बादलों को घसीट लेते हैं और उनको बरसने के लिए मजबूर कर देते हैं। बादल वहीं बरसते हैं, जहाँ घनी हरियाली होती है और वहाँ बरसने से इनकार कर देते हैं, जहाँ पेड़ नहीं होते हैं। बादल रेगिस्तान में कभी नहीं बरसते हैं। जहाँ पेड़ नहीं होंगे, वहाँ पानी नहीं बरसेगा। लीबिया में कुछ दिन पहले ऐसा ही हुआ था। पेड़ काट डाले गये। उसका परिणाम यह हुआ कि पानी ने बरसना बन्द कर दिया और बिल्कुल सूखा पड़ गया। फिर पेड़ लगाये गये तब बादल बरसे। मतलब यह है कि बादल पेड़ों के चुम्बकत्व से खिंचकर चले आते हैं।

खदानें कैसे बनती हैं आप जानते हैं ? खदानों में कहीं थोड़ा लोहा, कहीं पीतल, कहीं चाँदी होती है; अपने चुम्बकत्व से दूर-दूर तक फैले हुए छोटे कणों को घसीटती हैं और खदान बढ़ती रहती है। इस समय सौ टन लोहा है, तो अगले वर्ष में दो सौ टन लोहा हो जाएगा। उससे अगले वर्ष तीन सौ टन हो जाएगा, क्यों ? क्योंकि खदान चारों ओर से खींचती रहती है, जमा करती रहती है। देवताओं की कृपा के सम्बन्ध में भी ठीक यही बात है। उसे घसीटा जा सकता है, बढ़ाया जा सकता है। देवता अपने आप थोड़े ही देंगे। आप अपने पैसे किसी को दे देंगे क्या ? नहीं। बैंक वाले चाहे किसी को रुपये दे देंगे क्या ? नहीं; क्योंकि वे रुपया उधार देने से पहले हजार बार यह तलाश करता है कि जिस आदमी को दिया जाने वाला है वह पैसे का ठीक इस्तेमाल करेगा कि नहीं। उसको फिर पैसा वापस मिलेगा कि नहीं अगर यह न हो, तो कोई देने को तैयार नहीं हो सकता। आपने समुद्र को देखा होगा। समुद्र के पास कितनी सारी नदियाँ अपना-अपना पानी लेकर भागती-फिरती हैं; क्योंकि वह समझती हैं कि हमारे पानी को जमा करने की शक्ति इसमें है; वह समझती हैं कि हमारा पानी एक मुनासिब जगह पर एकत्रित हो जाएगा। नदियों के तरीके से दैवी-शक्तियाँ देती तो हैं; पर हरेक को नहीं। आप सोचें कि कोई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माँगेगा, उसी को दे देंगी, जो कोई नारियल चढ़ा देगा, उसी को दे देंगी, जो कोई ग्यारह रुपये का जाप कर देगा, उसी को दे देंगी, पूजा-पाठ कर देगा, उसी को दे देंगी। चापलूसी भरी क्रियाओं से आप देवताओं को प्रसन्न नहीं कर सकते। क्रियाएँ आवश्यक तो हैं, कपड़े की तरह—क्रियाएँ आवश्यक तो हैं, चाकू की तरह; लेकिन सामान तो हो आपके पास; चाकू से कैसे काटेंगे कलम को। इसलिए क्रियाएँ बहुत थोड़ा-सा काम करती हैं। कर्मकाण्ड आप कर रहे हैं, जप कर रहे हैं और काम कर रहे हैं, यह जरूरी तो हैं; लेकिन आप यह अनुमान मत कीजिए कि केवल जप करने से या अनाज कम खाने से आप लम्बे-चौड़े फायदे उठा सकेंगे। आपको मनःस्थिति को जरूर बदलना पड़ेगा। फूल जब खिलते हैं, तो आपने देखा होगा कितने सारे भँवरे उन पर आकर बैठ जाते हैं; आपने उनके ऊपर तितलियों को घूमते हुए देखा है न ? आपने उनके ऊपर शहद की मक्खियों के गुच्छे देखे हैं न ? कब आते हैं ? जब फूल खिलते हैं। फूल के तरीके से आप अपने जीवन को खिला सकते हों, अपनी पात्रता को दिखा सकते हों, अपनी मनःस्थिति में हेर-फेर कर सकते हों तो आपको हम यकीन दिला सकते हैं कि देवताओं के अनुग्रह आपको जरूर मिलेंगे, जो आप यहाँ प्राप्त करने आये हैं। आप हम दोनों के आशीर्वाद छोड़िए, कोई भी और गुरु आपके पास आयेंगे और आपकी आवश्यकता को पूरा कर देंगे। आप मन्नतें मत माँगिए, नाक मत रगड़िए, झोली को मत फैलाइए और ये उम्मीदें मत कीजिए कि कोई आदमी आपकी पात्रता को देखे बिना, केवल क्रिया-कर्मों से ही प्रभावित होकर आपका उद्धार कर जाएगा, ऐसा हो नहीं सकेगा।

आपको इतिहास मालूम है न। शिवाजी को 'भवानी' नाम की एक तलवार मिली थी। क्यों मिली थी ? इसलिए मिली थी कि उन्होंने अपनी पात्रता साबित की थी। उनके गुरु ने परीक्षा ली थी, कहा था कि आप जाइए, सिंहनी का दूध दुहकर ले आइए। देखा कि यह इतना निष्ठावान है कि अपने कर्त्तव्य के लिए अपने प्राण भी दे सकता है, तो भवानी से उन्होंने प्रार्थना की कि आप ऐसी तलवार दे दीजिए, जो अक्षय हो। अर्जुन को गाण्डीव कहाँ से मिला था ? देवताओं ने दिया था, इन्द्र देवता ने। केवल अर्जुन को ही क्यों दे दिया ? सबको क्यों नहीं दिया ? क्योंकि उन्होंने एक बार इम्तहान लिया था कि इतनी कीमती चीज को एक सख्त और प्रामाणिक आदमी को ही दी जाए। जब अर्जुन वहाँ गये, तो उन्होंने इम्तहान लेने के लिए वहाँ की सबसे खूबसूरत अप्सरा उर्वशी को भेजा, उर्वशी अर्जुन के साथ शादी की बात करने लगी, तो अर्जुन ने उससे कहा कि आप तो हमारी माँ के बराबर हैं और हम आपके चरणों की धूल अपने सिर पर रखते हैं और आप ये जानिए कि हम आपकी सन्तान हैं। इस जवाब से प्रसन्न होकर इन्द्र ने समझ लिया कि यह गाण्डीव के लायक है। इसको गाण्डीव दे देना चाहिए।

आपको बापा जलाराम की बात मालूम है ? भगवान आये थे और उनको एक झोली दे गये थे। उसमें से अक्षय अन्न के भण्डार निकलते थे। यह वरदान भगवान ने दिया था, जो अभी भी है। आप गुजरात में कभी गये हों और वीरपुर नाम के गाँव में कभी पहुँचे हों, तो आपको एक सिद्धपुरुष जलाराम बापा का स्थान मिलेगा। वहाँ एक अन्न की झोली अभी भी टँगी हुई है; यह भगवान ने दी थी। उनकी इच्छा थी कि हमारे दरवाजे पर से कोई खाली हाथ न जाने पाये। भगवान ने उनकी इच्छा पूरी की। क्यों पूरी की ? और लोग इतने इच्छा-मनौकामना करते हैं, उनकी क्यों नहीं पूरी करते ? क्योंकि जलाराम इम्तहान में पास हो गये थे। उन्होंने दो प्रतिज्ञाएँ की थीं कि जलाराम मेहनत-मजदूरी करेंगे और खेती में से अनाज उगायेंगे। उनकी स्त्री ने यह प्रतिज्ञा की थी कि पेट भरने के बाद में जो कुछ भी हमारे पास बच जाएगा, उसको दुखियारों और सन्तों को खिलाते रहेंगे। उनकी स्त्री खाना पकाती रहती थी सारे दिन और उनके बापा जलाराम खेती-बाड़ी करते रहते थे, सारे दिन। वह अनाज उगाते थे और स्त्री खिलाती रहती थी। बस, इसी में से जो पेट के लिए मिल गया, उसी से गुजारा कर लिया। सन्त की यही निशानियाँ हैं। सन्त का चरित्र ऊँचा होना चाहिए। भक्त का चरित्र ऊँचा नहीं हुआ, तो कीर्तन करते रहें, रात्रि जागरण करते रहें, पूजा करते रहें, उनसे कुछ होने वाला नहीं। आप अखण्ड कीर्तन करते हैं, तो मुबारक—आप जागरण करते हैं, तो मुबारक; लेकिन अपनी पात्रता को विकसित करते हैं कि नहीं, सिर्फ एक ही बात का जवाब दीजिए। भगवान तो सिर्फ एक ही बात को देखते रहते हैं। पूजा तो हमारे अपने मन को धोने का एक तरीका है। भगवान को इससे बहलाया-फुसलाया नहीं जा सकता, भगवान के साथ में ब्लैकमेलिंग नहीं किया जा सकता। भगवान से जुड़ने का एक ही तरीका है कि अपनी पात्रता साबित करें, भगीरथ के तरीके से।

भगीरथ गंगाजी को माँगने गये थे; पानी की जरूरत थी; फसल के लिए भी जरूरत थी; अपने बाप-दादाओं का उद्धार करने के लिए भी जरूरत थी; लेकिन साथ-साथ में इससे भी जरूरी जरूरत थी कि हमारे संसार को पानी की आवश्यकता है और पानी मिलना चाहिए। सारे संसार के पानी के लिए निःस्वार्थ आदमी भगीरथ आज भी महान हैं। भगीरथ ने तप किया और तप के कारण जल मिला। अगर यह कारण रहा होता कि भगीरथ पानी का स्टोर इकट्ठा करेंगे और हर आदमी से पैसे वसूल करेंगे एवं अपना फायदा उठायेंगे, गंगाजी को अपने पास में बुला लेंगे तथा घटिया स्वार्थ सिद्ध करेंगे। विश्वास रखिये गंगाजी कभी भी भगीरथ के स्वार्थ में नहीं रहीं। उन्हें पता था उस आदमी की नीयत। नीयत का अर्थ है—पात्रता, चिन्तन का अर्थ है—पात्रता, चरित्र का अर्थ है पात्रता। आपको पात्रता विकसित करनी चाहिए। आपको मालूम ही नहीं, देवताओं के अनुग्रह में कोई कमी है क्या ? गंगा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जब हिमालय से चलीं, तो मन में एक ही बात थी—अब हम यहाँ नहीं रुकेंगे, लोगों की प्यास बुझाएँगे, खेतों की हरियाली को पूरा करेंगे, हर जगह जाएँगे, पशु और पक्षियों की प्यास बुझाएँगे और आपकी गोदी में, हिमालय में रहने का अब हमारा जरा भी मन नहीं है। जैसे ही उन्होंने अपना संकल्प प्रकट किया, पहले तो हिमालय ने मना भी किया, आपको नहीं जाना चाहिए, क्या कष्ट है आपको यहाँ ? उन्होंने कहा—नहीं, इसका सवाल नहीं है। हमारी आत्मा नहीं मानती है और यह आत्मा कहती है कि हमको अपने जीवन को श्रेष्ठ बना देना चाहिए। लोगों ने यह भी कहा—आप सूख जाएँगी, आप खाली हो जाएँगी; लेकिन गंगा ने कहा—हम दिवालिया हो जाएँ, तो आपको कोई हर्ज है क्या ? जिन्दगी एक अच्छे काम में लग जाए, तो कोई नुकसान है क्या ? जब चल पड़ीं, तो हिमालय ने देखा—इतनी शानदार लड़की, इतने शानदार इसके कर्म, इतनी शानदार इसकी भावना कभी नहीं टूटनी चाहिए। हिमालय ने कहा, "बेटी ! तुम निरन्तर बहती रहना और तुम्हारे सूखने का कभी मौका नहीं आयेगा। हमारी कृपा बराबर बनी रहेगी और तुम्हारे पेट और तुम्हारी जरूरतों को पूरा करती रहेगी।" तब से लाखों वर्ष हो गये गंगा को बहते हुए; पर कभी कुछ कमी पड़ी क्या ? कभी कोई कमी नहीं पड़ी। यही तरीके हैं देवताओं के अनुग्रह लेने के। आप भी देवताओं का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए कल्प-साधना कर रहे होंगे और आपको विश्वास होगा कि गायत्री माता का हम जाप करेंगे, तो गायत्री माता अनुग्रह करेंगी। आप विश्वास रखिए, जरूर अनुग्रह करेंगी, गायत्री माता का स्वभाव है—वह जरूर सहायता करती हैं और गुरुजी का आशीर्वाद मिलेगा, वह अपने पुण्य का एक अंश देंगे। बिल्कुल यकीन रखिये, हमने सारी जिन्दगी अपने पुण्य के अंश बाँटे हैं। हमको बाँटने में बड़ी खुशी होती है। खाने में खुशी नहीं होती, खिलाने में होती है और एक और शक्ति है, जो हमारे ऊपर छायी हुई है, जिसकी वजह से ब्रह्मवर्चस बना है, शान्तिकुंज बना है और जिसकी कल्पना से यह कल्प-साधना के शिविर लगाये गये हैं और जिनकी इच्छा के हिसाब से आप सबको बुलाया गया है। ये आपको खाली हाथ जाने देंगे क्या ? नहीं, यह तीनों शक्तियाँ ऐसी हैं, जो बराबर आपकी सहायता करने को आमादा हैं और गाय की तरह सच्चे मन से चाहती हैं कि हम अपने बच्चे को सारे-का-सारा दूध पिला दें। जब घास खाकर के गाय आती है, तो दूध लेकर आती है और यह चाहती है कि बच्चे को पूरा दूध पिला दें; लेकिन बच्चा तो उसका होना चाहिए, बच्चा किसी और का हुआ तब ? कुत्ते का, बिल्ली का बच्चा हुआ तब ? गधे का बच्चा हुआ तब ? क्यों पिलाएगी गाय। गाय का एक ही बच्चा होना चाहिए। आपको सन्त का बच्चा होना चाहिए, ऋषियों का बच्चा होना चाहिए, अध्यात्म का बच्चा होना चाहिए, अर्थात् आपका चिन्तन, आपका चरित्र, आपका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए, जिससे कि देवता आपकी बराबर सहायता करते हुए चले जाएँ, इससे कम में बात बनेगी भी नहीं। इसलिए आपको त्याग करना ही चाहिए; आपको बुराइयाँ छोड़नी ही चाहिए; आपको उदार होना ही चाहिए; आपको अपने दृष्टिकोण में महानता साबित करनी ही चाहिए। भगवान भी क्या करें, वह देते तो बहुत हैं; पर वह परीक्षा के बिना नहीं देते।

आपको याद है न ! सुदामा जी एक बार श्रीकृष्ण भगवान के पास माँगने गये थे। तो श्रीकृष्ण भगवान ने यह देखा कि ये कुछ हमको भी दे पायेंगे कि नहीं। सुदामा जी की पोटली में कुछ चावल रखे हुए थे। वह गये तो थे माँगने की इच्छा से; पर श्रीकृष्ण जी ने कहा—पहले चावल हमारे हवाले कीजिए, बाद में करना कोई बात। आप चावल नहीं दे सकते, तो हम क्यों आपको कुछ देने लगें ? उन्होंने चावल की पोटली को उनके हाथ से छीन लिया और छीनने के बाद में बस वही चावल बढ़ते हुए चले गये और चावलों से ही सुदामा जी को वह धन मिल गया, जिसके बारे में आपने सुना होगा कि द्वारकाधीश से सारा धन सुदामा जी के पास चला गया था। वह चावल बोये गये थे। अगर चावल लेकर द्वारका जी नहीं गये होते सुदामा जी, तब उनको खाली हाथ आना पड़ता। आप देंगे नहीं, तो ले कहाँ से लेंगे ? इसलिए पहले आप देने की बात पर विचार कीजिए, परिशोधन की बात सोचिये, पवित्रता की बात सोचिये, अपने व्यक्तित्व की बात सोचिये। इतना अगर सोच सकते हैं, तो फिर आप देखिये कि क्यों नहीं भगवान की सहायता आपको मिलती ? भगवान की सहायता आपको जरूर मिलेगी। आपको देवता की सहायता भी मिलेगी, आपके मन्त्र तब कितने चमत्कारी साबित होंगे, आपको व्रत और अनुष्ठान से तब कितना ज्यादा फायदा मिलेगा इसे आप तभी जान सकेंगे।

बस, आपसे भी मुझे यही कहना था। आप यहाँ देवता का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए आये हैं और आपको वरदान पाने की इच्छा है, तो आपकी इच्छा सही और मुनासिब है, आप किसी गलतफहमी में नहीं हैं, किसी अन्धविश्वास में जकड़े हुए नहीं हैं। प्राचीनकाल के असंख्य उदाहरण ऐसे हैं, जिसमें देवताओं ने सहायता की है, याचना करने वालों की। आपको भी जरूर सहायता मिलेगी; लेकिन शर्त को मत भूलिए। शर्त को भुला देंगे, तो घाटे में रहेंगे, आप निराश होंगे, गाली देंगे, फिर आप यह सोचेंगे कि मन्त्र मिथ्या होते हैं, देवता मिथ्या होते हैं। क्या मिथ्या होते हैं ? अगर आपकी पात्रता, जिसके लिए बहुत जोर दे रहे हैं, जिसके लिए अनुष्ठान करा रहे हैं, वह यदि विकसित नहीं हुई, तो आप खाली हाथ रह जाएँगे। आपके भीतर का कायाकल्प हो जाए, तो देवता आपको बहुत सहायता देंगे। आप अपने भीतर को बदलने की कोशिश कीजिए। आप अपना चिन्तन बदलिए, अपना चरित्र बदलिए, अपने जीवन का ढर्रा-ढाँचा बदलिए, फिर देखिये आपकी बदली हुई परिस्थितियों में जो देवता आपसे पहले नाखुश थे, जो मुँह मोड़े हुए थे, किस तरीके से आपके गुलाम हो जाते हैं ! कैसी आपकी सहायता करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं ! कैसे आपको छाती से लगाते हैं ! कैसा आपको निहाल कर देते हैं ! यही हमने भी किया है और इससे आपको अवश्य लाभ होना चाहिए। आप अपने आपको खाली कीजिए और निहाल होकर के जाइए।

ॐ शान्ति।

कायाकल्प का मर्म और दर्शन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

बात कल्प-साधना की चल रही थी। आप कल्प की इच्छा के लिए आये हैं न। कल्प में आपके सारे शरीर को बदलना तो मुमकिन नहीं है; पर आपका मन बदल सकता है, आपका स्तर बदल सकता है, आपका भविष्य बदल सकता है। आपका भूतकाल जो कि घिनौना भूतकाल, खाली हाथ वाला भूतकाल, चिन्ताजनक वाला भूतकाल रहा है, वह ऐसे उज्ज्वल भविष्य में बदल सकता है, जिसकी कि आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। भूतकाल कैसा रहा है ? आपको अपनी आँख से कैसा दीखता है ? क्या कहूँ मैं आपसे ! आपने अपना मकान बना लिया, लड़कों के लिए धन इकट्ठे कर दिये, लड़के को वकील बना दिया, लड़कियों की शादी में ढेरों पैसा खर्च कर दिया। आप अगर इन्हीं बातों को अपनी सफलता की निशानी मानते हैं; तो मानते रहिए, मैं कब कहता हूँ कि यह आपकी सफलताएँ नहीं हैं; लेकिन मेरी दृष्टि में यह सफलताएँ नहीं हैं। आपकी सफलता रही होती तब, जब आप दूसरे नानक रहे होते, कबीर रहे होते, रैदास रहे होते, विवेकानन्द रहे होते, गाँधी हो गए होते, तो मैं आपके भूतकाल को शानदार मानता; लेकिन भूतकाल कैसा था ? जानवरों का जैसा होता है; पेट भरते रहते हैं, बच्चे पैदा करते रहते हैं। वह भी तो आपका इतिहास है। पिछले दिनों आपने क्या किया ? बताइए ? एक तो आपने पेट भरा और दूसरे औलाद पैदा की है। औलाद की जिम्मेदारियाँ सिर पर आयेंगी ही और आपको वहन करना ही पड़ेगा। क्यों करना पड़ेगा ? जब आपने गुनाह किया है, तो उसकी सजा तो आपको ही भुगतनी पड़ेगी। आपने बच्चे पैदा किये हैं न, तब सजा भी भुगतिए। सारी जिन्दगी भर उनके लिए कमाइये, कोल्हू के बैल की तरह चलिए, पीसिए अपने आपको, निचोड़िए अपने आपको, निचोड़ करके उनको खिलाइए; क्योंकि आपने गुनाह तो किया ही है। एक औरत को हैरान किया है न, बेचारी ने आपकी वजह से नौ महीने पेट में वजन रखा, कष्ट उठाया, छाती का दूध पिलाया, फिर आप क्यों नहीं कष्ट उठायेंगे आप भी कोल्हू में चलिए, आप भी मुसीबत उठाइए। आपको भी बीस साल की कैद होती है। बीस साल का बच्चा जब तक न हो जाए, तब तक आप कैसे पीछा छुड़ा पायेंगे। यही तो भूतकाल है आपका ! यही तो आपकी परिणति है। यही तो आपने पुरुषार्थ किया है। कोई ऊँचे स्तर से विचार करेगा, तो आपके भूतकाल को कैसे प्रोत्साहित करेगा ?

आप अपने भविष्य को ऐसा मत बनाइए। भविष्य को आप ऐसा बनाइए कि जब तक रहें, तब तक सन्तोष करते रहें और जब नहीं रहें, तब आपके पद-चिन्हों पर चलकर दूसरे आदमी भी रास्ता तलाश कर सकें। गाँधीजी ने राजकोट में राजा हरिश्चन्द्र का ड्रामा देखा और ड्रामा देखकर उस छोटे बच्चे गाँधी के मन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने उसी दिन यह फैसला कर लिया कि अगर जिऊँगा तो हरिश्चन्द्र होकर जिऊँगा। उज्ज्वल भविष्य और उज्ज्वल भविष्य के संकल्प ऐसे ही तो होते हैं, जैसे गाँधीजी के उज्ज्वल भविष्य के संकल्प थे। संकल्पों से उन्होंने क्या-से-क्या कर डाला ? आपको ऐसे संकल्पों को चरितार्थ करने के लिए, उज्ज्वल भविष्य को बनाने के लिए यहाँ पूरा सहारा भी है। आप कैसे सौभाग्यशाली हैं ? आपको तो सहारा भी मिल गया। आमतौर से लोग अकेले ही मंजिल पार करते हैं, अकेले ही चलते हैं; पर आपको तो अकेले चलने के साथ लाठी का सहारा भी है, आप उस सहारे का क्यों नहीं लाभ उठाते ? आप लोग पैदल सफर करते हैं, आपके लिए तो यहाँ सवारी भी तैयार खड़ी है, फिर आप लाभ क्यों नहीं उठाते ? शान्तिकुंज के वातावरण को केवल यह आप मत मानिये कि यहाँ दीवारें ही खड़ी हुई हैं, आप यह मत सोचिये कि यहाँ शिक्षण का कुछ क्रम ही चलता रहता है, यह मत सोचिये कि यहाँ कुछ व्यक्ति विशेष ही रहते हैं। आप यह भी मानकर चलिये कि यहाँ एक ऐसा वातावरण आपके पीछे-पीछे लगा हुआ है, जो आपकी बेहद सहायता कर सकता है। उस वातावरण से निकली प्राण की कुछ धाराओं को, जिसने खींचकर आपको यहाँ बुलाया है और आप जिसके सहारे उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं, उस वातावरण, प्रेरणा और प्रकाश को चाहें तो आप एक नाम यह भी दे सकते हैं—पारस।

पारस उस चीज का नाम है, जिसको छू करके लोहा भी सोना हो जाता है। आप लोहा रहे हों पहले से; लेकिन इस समय सोना बनने की परिस्थितियों में हैं। आपके पास एक पारस है, जिसको आप छुएँ, तो देख सकते हैं किस तरीके से काया बदलती है ? आप अभावग्रस्त दुनिया में भले ही रहे हों पहले से, आपको सारी जिन्दगी यह कहते रहना पड़ा हो कि हमारे पास कमियाँ बहुत हैं, अभाव बहुत हैं, कठिनाइयाँ बहुत हैं; लेकिन यहाँ एक ऐसा कल्पवृक्ष विद्यमान है कि जिसका आप सच्चे अर्थों में सहारा लें, तो आपकी कमियाँ, अभावों और कठिनाइयों में से एक भी जिन्दा रहने वाली नहीं हैं, उसका नाम कल्पवृक्ष है। कल्पवृक्ष कोई पेड़ होता है कि नहीं, मैं नहीं जानता। न मैंने कल्पवृक्ष देखा है और न मैं आपको कल्पवृक्ष के सपने दिखाना चाहता हूँ; लेकिन अध्यात्म के बारे में मैं यकीनन कह सकता हूँ कि वह एक कल्पवृक्ष है। अध्यात्म कर्मकाण्डों को नहीं, दर्शन को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कहते हैं, चिन्तन को कहते हैं। जीवन में हेर-फेर कर सके, ऐसी प्रेरणा और ऐसे प्रकाश का नाम अध्यात्म है। ऐसा अध्यात्म अगर आपको मिल रहा हो या यहाँ मिल जाए या मिलने की जो सम्भावनाएँ हैं, उससे आप लाभ उठा लें, तो आप यह कह सकेंगे कि हमको कल्पवृक्ष के नीचे बैठने का मौका मिल गया है। यहाँ का वातावरण कल्पवृक्ष भी है, यहाँ का वातावरण पारस भी है और यहाँ का वातावरण अमृत भी है।

आपको रोज मरने की चिन्ता होती है न, मरने वाले प्राणी जिस तरीके से अपनी हविश को पूरा करने के लिए, अपना पेट भरने के लिए लालायित रहते हैं, आपको वैसा कुछ करना ही नहीं पड़ेगा। दीर्घजीवियों के तरीके से आप हमेशा जिन्दा रहेंगे, आपकी मौत कभी नहीं होगी। जो कभी नहीं मरते, उनको कालजयी कहते हैं। आप भी कालजयियों में अपना नाम लिखा सकते हैं। कब ? जब आप अमृत पिएँ, तब। शरीर को अमर बनाने वाला अमृत कभी रहेगा, तो दुनिया में प्रकृति के कायदे खत्म हो जाएँगे। कौन दिखाई पड़ता है, बताइए ? रामचन्द्र जी कहीं दिखाई पड़ते हैं ? श्रीकृष्ण भगवान् कहीं दिखाई पड़ते हैं ? हनुमान जी की कहीं आपने शक्ल देखी है ? जब इतने बड़े-बड़े महापुरुष और भगवान के अवतार दुनिया में नहीं रहे, तो और कौन रहेगा ? अगर अमृत कहीं रहा होता तो इन लोगों ने जरूर पी लिया होता; पर अध्यात्म का एक अमृत है जो आपको यहाँ मिल सकता है, आप जिसके नीचे बैठकर अजर-अमर हो सकते हैं। यह अध्यात्म ज्ञान है और जिस दिन आपको यह बोध हो जाएगा कि हम जीवात्मा हैं, शरीर नहीं हैं, उसी दिन आपका मौत का भय निकल जाएंगा और योजनाएँ ऐसी बनेंगी, जो आपके जन्म-जन्मान्तर की समस्याओं के समाधान करने में समर्थ होती हों। आज तो आप छोटे आदमी हैं और छोटी समस्याओं में डूबे रहते हैं। पेट कैसे भरेगा ? कपड़ा कहाँ से बनेगा ? मकान का किराया कैसे चुकायेंगे ? लड़कियों की शादी कैसे होगी ? हमारी नौकरी में तरक्की कैसे होगी इत्यादि छोटी चीजों में आप लगे रहते हैं, लेकिन आप अगर कभी अमर हो गये तब ? तब आप अमर लोगों की तरह विचार करेंगे और यह सोचेंगे कि अपने उत्थान के साथ-साथ सारे विश्व का उत्थान करने के लिए क्या करना चाहिए और कैसा बनना चाहिए ?

बस, यही है यहाँ की परिस्थितियाँ, जिनसे लाभ उठाना चाहिए। यहाँ के वातावरण का आप लाभ उठाइए। साधना-क्रम जो आप करते हैं, वह भी ठीक है, वह भी अच्छी बात है; लेकिन साधना-क्रम के अलावा जो यहाँ आपको मिल रहा है, सान्निध्य मिल रहा है, आप इसकी उपेक्षा मत कीजिए। आप यहाँ ऐसे वातावरण के सान्निध्य में हैं जो आपको मानसिक दृष्टि से कायाकल्प कर सकने में पूरी तरह से समर्थ हैं। कायाकल्प शरीर का नहीं हो सकता, प्रकृति का हो सकता है। प्रकृति ही बदल सकती है आदमी की। आकृति ? आकृति नहीं बदल सकती। आकृति बदल भी कैसे सकते हैं हम ? आपकी नाक की जैसी बनावट है, अब किसी और तरह की नाक कैसे काट के लगा दें आपके ! आपकी लम्बी नाक है, आप क्या चाहते हैं, चौड़ी नाक हो जाए; यह हम कैसे कर सकते हैं ? बताइये ? आपके दाँत कैसे हैं ? बड़े-बड़े ? तो अब हम दाँतों को उखाड़ के नये दाँत कैसे लगा दें ? आपका शरीर दुबला है, तो अब हम कैसे मोटा बना दें ? इसलिए जो चीज सम्भव नहीं है, वह सम्भव कैसे हो सकती है ? आकृतियाँ नहीं बदल सकतीं आदमी की, प्रकृति बदल सकती है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसी के बारे में रामायण में कहा है। त्रिवेणी का माहात्म्य उन्होंने बताया है, तीर्थराज का माहात्म्य बताते हुए उन्होंने कहा है कि कौए कोयल हो जाते हैं, बगुले हंस हो जाते हैं। बगुले और हंस सफेद होते हैं दोनों; लेकिन प्रकृति में अन्तर होता है। आकृति में क्या फर्क होता है ! आप दूर से फोटो खींच लीजिए, आकृति में थोड़ा-सा ही फर्क दिखाई पड़ेगा। कौए और कोयल की प्रकृति नहीं मिल सकती। कौए और कोयल की आकृति तो एक जैसी ही है। आप फोटो खींच लीजिए, दोनों एक-से ही मालूम पड़ेंगे तो फिर कौआ, कोयल कैसे हो जाता है ? यहाँ आकृति बदलने की बात नहीं है, प्रकृति बदलने की ओर इशारा है।

यह कायाकल्प का वर्णन है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कायाकल्प का वर्णन ऐसे ही रूप में किया है। आपको यहाँ अपना कायाकल्प करने की तैयारी करनी चाहिए। शरीर कल्प नहीं, मनःकल्प। मनःकल्प आप किस तरह करें ? इस तरह कीजिए कि आपका, क्षुद्रता का दायरा, महानता के दायरे में बदल जाए। आपका दायरा बहुत छोटा है। कूपमण्डूक के तरीके से, कुएँ के मेढक के तरीके से पेट भरेंगे, रोटी कमाएँगे, बेटे को खिलाएँगे, बेटी को खिलाएँगे, एक छोटे-से दायरे में गूलर के भुनगे के तरीके से आप भी सारी चीजों को सीमाबद्ध किये हुए हैं। आप असीम बन जाइए। आप महान बन जाइए। आप सीमित रहने से इनकार कर दीजिए। आप पिंजड़े के पक्षी की तरह जिन्दगी मत व्यतीत कीजिए और आप उड़ने की तैयारी कीजिए। कितना बड़ा आकाश है, इसमें स्वच्छन्द विचरण करने के लिए उमंगें एकत्रित कीजिए और पिंजड़े की कारा में कैद होने से इनकार कर दीजिए। आपको मालूम पड़ता है कि पिंजड़े की कीलियों में हम सुरक्षित हैं, यहाँ हमको चारा, दाना मिल जाता है; लेकिन कभी आपने खुली हवा में साँस ली नहीं है और आपने अपने पंखों के साथ उड़ने का, आसमान में आनन्द लिया नहीं है। आप ऐसा कीजिए, आप यहाँ से अपने आपको बन्धन-मुक्त करने की कोशिश कीजिए। आप भव-बन्धनों में जकड़े हुए आदमी मत रहिए। आप मुक्त आदमी की तरह विचार कीजिए। आप नर से नारायण बनने की महत्त्वाकांक्षा तैयार कीजिए। आप उसी क्षुद्र महत्त्वाकांक्षा में उलझे रहेंगे क्या ? कौन-सी ? लोकेषणा, वित्तेषणा, पुत्रेषणा। नहीं, आप कुछ और बड़ी महत्त्वाकांक्षा को लाइए। आप पुरुष से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुरुषोत्तम बनिए, आप नर से नारायण बनने की बात विचार कीजिए, आप कामनाओं की आग में जलने की अपेक्षा भावनाओं के स्वर्ग और शान्ति में प्रवेश कीजिए। कामनाओं में ही लगे रहेंगे क्या ? आप माँगते ही रहेंगे क्या ? भिखारी ही बने रहेंगे क्या ? नहीं, आप भिखारी बनने से इनकार कर दीजिए। अब आप यहाँ से दानी बनकर जाइए। जिन्दगी भर आपने अपेक्षाएँ की हैं, इसकी अपेक्षा उसकी अपेक्षा; गणेश जी हमको ये दे देंगे, साँई बाबा ये दे देंगे, औरत हमको यह देगी, बच्चा हमको यह कमाकर देगा; आपका सारा जीवन भिखारी की तरह, अपेक्षा करने वालों की तरह व्यतीत हो गया। अब आप कृपा कीजिए और अपना ढर्रा बदल दीजिए। यह मानकर चलिए कि आप दान देने में समर्थ हैं और आप देंगे, किसी न किसी को कुछ-न-कुछ देंगे। अपनी धर्मपत्नी को कुछ-न-कुछ जरूर देंगे आप। उसकी योग्यता कम है, तो योग्यता बढ़ाइए। उसका स्वास्थ्य कमजोर है, तो स्वास्थ्य बढ़ाइए न। आप उसकी उन्नति का रास्ता नहीं खोलेंगे ? उसके सम्मान को नहीं बढ़ाएँगे ? उसके भविष्य को नहीं बनाएँगे ? आप ऐसा कीजिए फिर देखिए आप दानी हो जाते हैं कि नहीं। आप भिखारी रहेंगे, तो उससे काम-वासना की बात करते रहेंगे, मीठे वचनों की माँग करते रहेंगे, सहयोग की माँग करते रहेंगे, माँगते-ही-माँगते रहेंगे। फिर आप हैरान होंगे और दूसरों की नजरों में हेय कहलाएँगे। फिर माँगने से मिल ही जाएगा, इसकी क्या गारण्टी ? गारण्टी भी नहीं है, मिलने की सम्भावना भी नहीं है, फिर आप ऐसी निराशा में क्यों बेवजह पापड़ बेलें। आप ऐसा क्यों नहीं कर सकते कि देने की ही बात विचार करें। देने में आप पूरी तरह समर्थ हैं। आप सद्भावनाएँ दे सकते हैं, सेवा के लिए कहीं-न-कहीं से समय निकाल सकते हैं, इसी प्रकार बहुत कुछ दे सकते हैं।

आप ऐसा कीजिए, यहाँ से दानी बनकर जाइए और अपने याचक के चोले को यहीं हमारे सिर पर पटक के चले जाइए। आप अपनी मालिकी को खत्म करके सिर्फ माली होकर ही यहाँ से जाइए। अब आप मालिक होकर मत जाना। मालिक होकर चलेंगे, तब बहुत हैरान हो जाएँगे। यकीन रखिये मालिक को इतनी हैरानी, इतनी चिन्ता रहती है, जिसका कि कोई ठिकाना नहीं; लेकिन माली ? माली को सारे बगीचे में खूब मेहनत करनी पड़ती है; दिन में भी मेहनत करता है, रात में भी मेहनत करता है और हैरानी का नाम नहीं। क्यों ? क्योंकि वह समझता है कि यह बगीचा किसी और का है, मालिक का है और हमारा फर्ज, हमारी ड्यूटी यह है कि इन पेड़ों को अच्छे-से-अच्छा रखें और वह अच्छे-से-अच्छा रखता है, सिंचाई करता है, गुड़ाई करता है, निराई करता है, जो भी बेचारा कर सकता है, करता है। आप सिर्फ अपने कर्त्तव्य और फर्ज तक अपना रिश्ता रखिए, आप इस बात के परिणामों के बारे में विचार करना बन्द कर दीजिए; क्योंकि परिणाम के बारे में कोई गारण्टी नहीं हो सकती। आप जैसा चाहते हैं, वैसी परिस्थितियाँ मिल जाएँ, इस बात की कोई गारण्टी नहीं, बिल्कुल गारण्टी नहीं। नहीं, हम मेहनत करेंगे। मेहनत पर भी कोई गारण्टी नहीं। आप इम्तहान में पास हो जाएँगे, कोई जरूरी नहीं है। आप मेहनती लड़के हैं, तो भी हो सकता है फेल हो जाएँ। आप व्यापार करने में कुशल आदमी हैं, तब भी यह हो सकता है कि कुछ महँगाई सस्ते की वजह से आपको नुकसान हो जाए। आप बहुत चौकस आदमी हैं; लेकिन फिर भी हो सकता है कि आपको बीमारी दबोच ले, चोर-उठाईगीर आपका नुकसान कर दें, आप किसी जंजाल में फँस जाएँ और अपनी अमीरी गँवा बैठें। यह सब हो सकता है। परिणामों के बारे में कोई कुछ नहीं कर सकता। जो परिणाम आपके हाथ में नहीं हैं, फिर क्यों आप ऐसा करते हैं कि उनके बारे में इतना ज्यादा लालच बनाये रखें और अपनी शान्ति को खो बैठें। आप केवल कर्त्तव्य की बात सोचिए, केवल माली की बात सोचिए, मालिक की बात खत्म, अधिकार की बात खत्म। कर्त्तव्य आपके हाथ में है, अधिकार दूसरों के हाथ में हैं। दूसरे देंगे तो अधिकार मिलेगा, नहीं देंगे, तो कैसे मिलेगा ? आप अधिकार को लौंग मारिए और अपने कर्त्तव्यों को, जिम्मेदारी को उससे सुगन्धित कीजिए।

एक और बात मैं कहता हूँ, आप अपने स्वभाव में से एक और चीज को बदल सकते हैं। खीज बदल दीजिए, नाउम्मीदी की खीज, अभावों की खीज। आप खीज को छोड़कर एक नई चीज ग्रहण कर लें—मुसकराना। आप हर समय मुसकराने की कोशिश कीजिए, बनावटी ही मुसकराहट, फिर देखिए आपके स्वभाव में किस तरह परिवर्तन होता है ? मन को हल्का-फुल्का रखें, खिलाड़ी की तरह जिन्दगी जिएँ, नाटक के तरीके से अभिनय तो आप कीजिए; पर इतने ज्यादा मशगूल मत हो जाइए, जिससे आपकी स्वाभाविक प्रसन्नता ही चली जाए। आप हँसते रह सकते हैं। ताश खेलते समय में बादशाह काट दिया, बेगम काट दी, गुलाम भी काट दिया, सब काट दिये; लेकिन तब भी चेहरे पर शिकन नहीं। आप ऐसा ही कीजिए। आपको प्रसन्नता हो, खुशी के, सफलताओं के मौके आएँ, ठीक हैं, आप अच्छे रहिए; लेकिन जब मुसीबतों के मौके आएँ, तब ? तब भी आप प्रसन्न रहिए, मुसकराते रहिए। मुसीबतें जो-जो आती हैं, वह आपको मजबूत बनाने के लिए आती हैं, आपकी हिम्मत और दिलेरी जताने के लिए आती हैं, आपकी समझदारी को तीखा करने के लिए आती हैं और आपका व्यक्तित्व सोने में तपाकर खरा जैसा बना देने के लिए आती हैं। आप मुसीबतों की भी शोहबत कीजिए। यह नहीं कहता हूँ कि मुसीबतों को न्यौत बुलाइए; लेकिन मुसीबतें जब आएँ, तब घबड़ाइए मत, हिम्मत से काम लीजिए। ऐसा आप नहीं कर पायेंगे क्या ? आप ऐसा ही कीजिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आप अपना सम्मान चाहते रहें और दूसरों के लिए अपमान का व्यवहार करते रहें, तब आप ऐसा कीजिए, अब आप यहाँ से जब कायाकल्प करके जा ही रहे हैं, तो अपने आपको नम्र बनाकर जाइए और दूसरों को सम्मान देना शुरू कीजिए। अब तक आप यह अपेक्षा करते रहे कि दूसरे आदमी आपके प्रति नम्र रहें और आपका सम्मान करें, तब मैं आपसे यह प्रार्थना करता हूँ कि आप इस रवैये को बदल दीजिए। आप जो दूसरों से नम्रता की आशा करते थे, वह नम्रता आप अपने ऊपर हावी कर लें। आप स्वयं नम्र रहें, जितने ज्यादा नम्र हो सकते हों, सुशील हो सकते हों, विनयशील हो सकते हों, सज्जन हो सकते हों, बन जाइए, दूसरों पर इस सम्बन्ध में दबाव मत डालिए और सम्मान ? सम्मान आप प्राप्त करना चाहते थे न ? मेरी प्रार्थना है, आप यह नियम बदल दीजिए। दूसरों को सम्मान दीजिए। दूसरों को सम्मान देंगे, तो आप देखेंगे कि यह प्राप्त कर सकना आपके लिए सम्भव था। दूसरे आपका सम्मान करें, इसमें दबाव डालने के लिए आप क्या कर सकते हैं, बताइए ? नहीं दिया तब ? इसलिए पाने का एक ही तरीका है—देना, सम्मान दीजिए और बदले में लीजिए।

आप उज्ज्वल भविष्य की उम्मीदें कीजिए। आप भविष्य के बारे में समय-समय पर जो बुरी आशाएँ लगाये बैठे रहते हैं, कहीं ऐसा न हो जाए, वैसा न हो जाए, ऐसा हो गया फिर क्या होगा ? आप ऐसी कल्पनाएँ क्यों करते हैं ? यह कल्पनाएँ क्यों नहीं करते कि भविष्य हमारा अच्छा-ही-अच्छा है। भविष्य अच्छा-अच्छा करते रहे और न हुआ तब ? होगा कैसे नहीं ? पानी के गिलास में आधा गिलास पानी आपके पास है, आप चाहें, तो यह कहिए कि आधा गिलास कम है और चाहे आप यह कहिए कि खाली गिलास की तुलना में आधा गिलास आ गया। आधा गिलास क्या कम है ? पहले खाली गिलास था। अब आधा गिलास हो गया। आप यों प्रसन्न क्यों नहीं हो सकते कि आधा गिलास पानी हमारे पास है। आप यही सोचते रहेंगे कि पूरा गिलास नहीं है। बात तो वही हुई; लेकिन विचार करने के तरीके अलग-अलग हो गए। आप विचार करने के तरीके बदलिए। अपने भविष्य के बारे में हमेशा अच्छी आशाएँ कीजिए। लेकिन बुरे के लिए तैयार भी रहिए। अगर ऐसी मुसीबत आयेगी, तो हम लड़ेंगे, मुकाबला करेंगे और साहस का परिचय देंगे—यह हिम्मत भी रखिए और उम्मीदें भी अच्छी कीजिए, खराब उम्मीदें आप क्यों करेंगे ? क्या खराब उम्मीद की गारण्टी है कोई ? जब खराब भविष्य की गारण्टी नहीं है, फिर आप अच्छे भविष्य की कल्पना करने में क्यों संकोच करते हैं ? अच्छे भविष्य की कल्पना करने के लिए आप अपने आपको तैयार कीजिए।

आप जागरूक रहिए। आप उदार तो रहें; लेकिन भलमनसाहत को उस सीमा तक मत ले जाएँ, कि आपकी जागरूकता ही चली जाए। दुनिया में बहुत अच्छे आदमी हैं; लेकिन बुरे आदमी भी कम नहीं हैं। बुरे आदमियों के प्रति आपको जागरूक रहना चाहिए, कोई आप पर हमला न कर दे, कोई आपकी भलमनसाहत का अनुचित फायदा न उठा ले—इस दृष्टि से आपके जागरूक रहने की भी जरूरत है और उदार रहने के लिए ? दूसरों की सेवा करने के लिए मैं आपसे कब मना करता हूँ ? दूसरों की सहायता करने के लिए मैं आपसे कब मना करता हूँ ? लेकिन मैं यह कहता हूँ कि आप ऐसा मत कीजिए कि आपकी सद्भावना और उदारता का लोग अनुचित लाभ उठा जाएँ और आपको उल्लू बनाते फिरें। ऐसा मत कीजिए। जागरूक भी रहिए और उदार भी बनिए। दोनों का समन्वय कीजिए। आप सज्जन भी रहिए और शूरवीर भी रहिए। नहीं, हम तो सज्जन रहेंगे। सज्जन रहेंगे, तो क्या कायर बनेंगे ? सज्जन का मतलब क्या यह होता है कि कोई आदमी आपकी बहिन-बेटी से छेड़खानी करे और आपके प्रति बुरा सलूक करे तब भी आप सब कुछ देखते-सहते रहें ? यही सोचते रहेंगे कि हमें क्या करना है, भगवान की मर्जी है, ऐसा ही हमारे भाग्य में लिखा है, तब आप ऐसा ही करेंगे। नहीं, सज्जन तो बनिए; लेकिन उसके साथ में अपनी शूरवीरता को गँवाइए मत। सज्जन इसीलिए हारते रहे हैं कि उन्होंने शूरवीरता गँवा दी। सज्जन हो गये, तो कायर हो गये। सज्जनता का अर्थ कायरता नहीं होता। सज्जनता के साथ में शूरता की भी प्रमुखता रहनी चाहिए। आप समग्र जीवन जिएँ। सज्जन भी बनें और शूरवीर भी बनें, उदार भी बनें और जागरूक भी बनें, नम्र भी बनें और सम्मान भी दें। इसी तरीके से जीवन में दोनों को मिला करके जियेंगे, तो बहुत अच्छा रहेगा।

आप जा ही रहे हैं तो एक और नया दृष्टिकोण बना करके जाइए कि हमारे आप सघन मित्र और सहयोगी हैं। आप गुरु-चेले की बात मत कीजिए। गुरु-चेला उसे कहते हैं, जो दिया करता है और लिया करता है। आप ऐसा मत कीजिए। आप हमारे सहयोगी और मित्र बन जाइए। मित्र मुझे बहुत पसन्द रहे हैं। मित्रों को मैं बहुत प्यार करता हूँ। क्यों ? क्योंकि मित्र कीमत चुकाकर कीमत उतार देते हैं और भिखारी, गुरु-चेले ? ये ऐसे ही हैं, चावल दे दिये, माला पहना दी, बस प्रसन्न हो गये। आप ऐसा मत कीजिए। आप मित्र बन जाइए हमारे। कैसे मित्र बनें ? आप हमारा सहयोग कीजिए, हम आपका सहयोग करेंगे। अन्धे और पंगे का उदाहरण पेश कीजिए। अन्धे को आँख से दिखाई नहीं पड़ता था और पंगा चल नहीं सकता था। दोनों ने आपस में मित्रता बना ली और मित्रता बना करके एक नदी पार कर ली, आपने सुना होगा, हमारे और हमारे गुरुदेव के बारे में यही हुआ। हमारे गुरुदेव पंगे हैं; क्योंकि जिस सीमा में वह काम करते हैं, वहाँ से दौड़-धूप करना उनके लिए मुमकिन नहीं और हम अन्धे हैं। हमारे पास न ज्ञान है, न विचार है। हम दोनों ने आपस का तालमेल बिठा लिया है और तालमेल बिठा करके अन्धे और पंगे की तरह नदी पार करने का फैसला कर लिया है। आप भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसा ही कर लीजिए। आप शान्तिकुंज के साथ वही रिश्ता बना लीजिए, जो रिश्ता अन्धे और पंगे का है। आप ज्ञान के अभाव में, विचारों के अभाव में भटकने वाले हैं और हम पंगे हैं। हम सारे संसार में किस तरीके से काम करेंगे ? हम और आप दोनों ही मिलें, तो मजा आ जाए। आप पीछे के लिए क्या छोड़ जाएँगे, मुझे मालूम नहीं। दौलत नहीं छोड़ पाये, तो हर्ज नहीं है; लेकिन आप ऐसी चीज छोड़कर चले जाएँ, जिससे आपकी औलाद यह कहती रहे कि हम ऐसे शानदार आदमी की सन्तान हैं। आप शानदार के लिए पीछे वालों के लिए ऐसा रास्ता छोड़कर जाइए, जिस पर चलने वाले दूसरे लोग सराहते रहें कि हमको कोई रास्ता बता गया था, किसी ने हमको रास्ता दिखाया था, जिस पर हम चले और चलने के बाद में अपनी नाव को पार कर लिया और दूसरों की नाव को पार लगा दिया। आप ऐसा रास्ता अपनाइए। नई जिन्दगी जीइए, नया चिन्तन ग्रहण कीजिए, नया दृष्टिकोण अपनाइए, नई हिम्मत से काम लीजिए और नया जीवन जीने की तैयारी करके यहाँ से विदा होइए। बस, हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

कल्प-साधना और उसकी तात्विक विवेचना

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाईयो !!

कल्प-साधना के लिए आप सभी यहाँ शान्तिकुंज आये हैं। कल्प आखिर है क्या ? जिसके लिए हमने आपको यहाँ बुलाया है। कल्प का अर्थ होता है—परिवर्तन। आपको बदलने का हमारा मन है। आप यदि अभी तक दुःखी जीवन जीते रहे हैं, तो सुखी जीवन जिएँ। आप बीमार जीवन जीते रहे हैं, तो स्वस्थ जीवन जिएँ। आप यदि गुत्थियों से उलझा हुआ जीवन जीते रहे हैं, तो अब हँसता-हँसाता जीवन जिएँ। यदि घिनौना, कमजोर और उपेक्षित जीवन जीते रहे हैं, तो अब ऐसा शानदार जीवन जिएँ कि जिसको देखकर आपका भी जी बाग-बाग हो जाए, और जो कोई बाहर इसे देख पाये, उसकी भी खुशी का ठिकाना न रहे। ऐसा ही आपके जीवन में कायाकल्प करने का हमारा मन था। आपने हमारे विचारों को पढ़ा होगा और उसी से प्रभावित होकर यहाँ आये हैं। आइये अब विचार करें कि यह कैसे सम्भव होगा ? इसके लिए क्या करना पड़ेगा ? इन सारे प्रश्नों पर गम्भीरता से हम और आप विचार करें।

आमतौर से कल्प-साधना के बारे में यह भ्रम फैला हुआ है कि कल्प माने बूढ़े से जवान हो जाना; पर यह एक भ्रान्ति है। बूढ़े का जवान होना सम्भव नहीं है; क्योंकि यह प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है। प्रकृति के नियमों को कोई बदल नहीं सकता। सूर्य पूर्व से निकलता है और पश्चिम में डूबता है। ऐसा हो सकता है कि सूर्य पश्चिम से निकले और पूर्व में डूबा करे ! भगवान ने प्रकृति के नियमों को ऐसा बना दिया है कि वे अपने स्थान पर यथावत् रहेंगे और जब वे बने थे, तब से और जब तक सृष्टि रहेगी, तब तक बने रहेंगे। इसलिए बूढ़े आदमी का जवान होना नामुमकिन है। पुराणों में कथाएँ तो हैं; पर मालूम नहीं वे कहाँ तक ठीक हैं ? आपने च्यवन ऋषि की बात सुनी होगी जो बूढ़े थे और जवान हो गए थे। आपने राजा ययाति की कहानी भी सुनी होगी कि बेटे की जवानी लेकर वह बूढ़े से जवान हो गए थे। लोगों ने कोशिशें तो की हैं, यूरोप में भी बहुत प्रयत्न हुए हैं, वृद्धों को जवान बनाने के लिए; पर सफलता नहीं मिली। स्टालिन रूस का अधिनायक था। उसको बन्दर की ग्रन्थियाँ काट-काट कर लगाईं और यह कोशिश की गई कि वह फिर से जवान हो जाए; पर ऐसा नहीं हो सका। प्रकृति से लड़ाई लड़ना नामुमकिन है। किसी को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि हमारा बूढ़ा शरीर जवान बन जाएगा; पर हाँ, यह आशा हम आप में से हर व्यक्ति कर सकता है कि कमजोरी और बीमारी जो हमने आपने बुलाकर रखी है, उसको इनकार कर दें और यह कह दें कि हम आपको अपने यहाँ रखने की स्थिति में नहीं हैं, कृपा करके आप चली जाइए। इनको हम भगा सकते हैं; क्योंकि ये प्राकृतिक नहीं हैं।

जीवधारी पैदा होते हैं और मरते भी हैं; पर न कोई बीमार रहता है और न कोई कमजोर रहता है। जब कमजोरी आती है, तो मौत के मुँह में चले जाते हैं। भला कमजोर जिन्दगी जीना कौन पसन्द करेगा और ऐसी जिन्दगी कौन पसन्द करेगा जो बीमारियों से घिरी हुई हो ? कमजोरी से घिरा हुआ होना—यह प्रकृति के विरुद्ध है। इसको आप और हम हटा सकते हैं। शरीर के बारे में यहीं तक मुमकिन है और इससे आगे कुछ नहीं हो सकता। शरीर के कायाकल्प से अगर आपका मतलब हो और इसी ख्याल से अगर आप यहाँ आए हों, तो कृपा करके यह बात नोट कर लीजिए शरीर के बारे में कि यह जो आपकी उम्र है, वह आगे ही बढ़ेगी, पीछे की ओर घटेगी नहीं। जवान को तो बच्चा कैसे बना पायेंगे। हम ! बच्चे को माँ के पेट में तो कैसे ढकेल पाएँगे ! सम्भव नहीं है। आपकी उम्र तो जरूर बढ़ेगी और आपके शरीर पर जो प्रभाव पड़ेगा, वह सब पड़ना ही चाहिए; लेकिन आपका स्तर बदल जाएगा। आकृति तो ज्यों-की-त्यों रहेगी; पर प्रकृति बदल जाएगी। प्रकृति को बदलना मुमकिन है। यदि आपकी प्रकृति बदल जाएगी तो परिस्थितियाँ भी बदल जाएँगी। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि मनःस्थिति का नाम ही परिस्थिति है। मनःस्थिति अगर आदमी बदल ले, तो परिस्थितियों के बदलने में कोई शक नहीं है। बस, यह कायाकल्प है। इसी को हम कराना चाहते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आपके भीतर वाला माद्दा यदि बदल जाए, तो आपके बाहर वाला जरूर बदल जाएगा। मनःस्थिति में हेर-फेर कर लें, तो उसके अनुसार परिस्थितियाँ अपने आप बदल जाएँगी। इसलिए कल्प-साधना से आपको जो यहाँ अर्थ लेना चाहिए, वह यह लेना चाहिए कि यहाँ जो आपसे कराया जाने वाला है या आपको जो करना है या हम जो आपसे कराने के लिए दबाव डालेंगे, तो सिर्फ इस बात का दबाव डालेंगे कि आपका भीतर वाला हिस्सा, जिसका अर्थ होता है—मन, बुद्धि और चित्त; जिसका अर्थ होता है—जीवात्मा; जिसका अर्थ होता है—आपका दृष्टिकोण, चिन्तन और चरित्र बदल जाएँ। अगर इसे हम बदल दें, तो आप विश्वास रखिए कि आपका जीवन, पिछले दिनों जैसा भी कुछ रहा है, भविष्य में वैसा रह ही नहीं सकता। आपने इतिहास पढ़ा होगा और आपको उन भक्तों के नाम याद होंगे, जो पहले सामान्य स्थिति में गए बीते थे; लेकिन जब उन्होंने मन, स्तर और दृष्टिकोण बदल दिया, तो कितना कमाल हो गया ! उनकी जिन्दगी कैसी शानदार हो गई ? अगर उन्होंने भीतर वाले हिस्से को, अर्थात् दृष्टिकोण को बदला न होता, तो बाहर वाली परिस्थितियाँ बिल्कुल मामूली आदमी के तरीके की रही होतीं।

इस सन्दर्भ में मैं आपके सामने कुछ आदमियों के नाम रखना चाहता हूँ कि परिवर्तन कैसे होते हैं ? शंकराचार्य को आप जानते हैं न ? शंकराचार्य एक मामूली घर के लड़के थे। उनकी माता यह उम्मीद करती थी कि पढ़ाने के बाद में लड़के की शादी-ब्याह कर देंगे, बाल-बच्चे होंगे, नाती-पोते खिलाएँगे; लेकिन शंकर ने अपना दृष्टिकोण बदल लिया और माँ से इनकार कर दिया। उन्होंने अपने भावी लक्ष्य और भावी जीवन का एक स्वरूप बना लिया। यह स्वरूप उनका अपना बनाया हुआ था। यह दृष्टिकोण उन्होंने स्वयं बनाया था; कार्य-पद्धति उन्होंने स्वयं बनाई। बाद में सहायता दूसरों ने भी की। शुरुआत तो उन्होंने ही की। शंकराचार्य फिर क्या हुए ? वे शंकर भगवान के अवतार माने जाते हैं। अगर आदि शंकराचार्य ने अपने दृष्टिकोण में हेर-फेर न किया होता तो ? तब फिर वही होता, जो उनकी माँ चाहती थीं। वे एक मामूली पण्डित-पुरोहित होते, जन्मपत्रियाँ बनाते-फिरते, पूजा-पाठ कराते फिरते, बाल-बच्चे होते और गए-बीते स्तर के होते; पर जब दृष्टिकोण उन्होंने बदल दिया, तो आदि शंकराचार्य हो गये।

हर आदमी को यह अधिकार मिला हुआ है कि वह चाहे जैसा बन जाए। भगवान ने हर आदमी को इस लायक बनाया है कि वह चाहे तो, अपने आपको बदल ले। विवेकानन्द की बात आपको मालूम है न ? वे एक मामूली-से विद्यार्थी थे। खास प्रतिभावानों में उनकी शुमार नहीं होती थी। घर की परिस्थितियाँ भी ठीक नहीं थीं। पिताजी के मरने के बाद घर-गृहस्थी का वजन भी उन पर आ गया था; लेकिन यह सब होते हुए भी उन्होंने यह निश्चय किया कि अपने सोचने के तरीके, अपने दृष्टिकोण और अपने जीवन का लक्ष्य तथा उद्देश्य बदल देंगे। यही उन्होंने किया भी। जब इस बात का फैसला उन्होंने कर लिया, तो रामकृष्ण परमहंस के साथ उनकी संगति हो गई तो क्या रामकृष्ण परमहंस ने उनकी सहायता की ? नहीं, ऐसा मत करिए। रामकृष्ण परमहंस के लिए सहायता करना मुमकिन रहा होता, तो हजारों आदमी उनके पास आया करते थे और उनसे दीक्षा लेते थे; हजारों आदमी उनके शिष्य कहलाते थे; पर एक भी तो नहीं हुआ। केवल एक आदमी हुआ—विवेकानन्द तो क्या रामकृष्ण परमहंस की कृपा एक पर ही थी ? नहीं, असलियत यह नहीं है। उनकी सब पर कृपा बरसती थी; पर उन्होंने अपने को बदला नहीं, जबकि विवेकानन्द ने अपने आपको भीतर से बदल लिया। बदले हुए आदमी की कौन सहायता नहीं करेगा ? आप जिस दिशा में भी आगे बढ़ना चाहते हैं, उसमें सहायता करने वालों की दुनिया में कुछ कमी है क्या ? विवेकानन्द की भी सहायता हुई।

और किसकी सहायता हुई ? सदन का नाम सुना है आपने, कि वह कैसा आदमी था ? कसाई का धन्धा करता था, जानवर काटता था; पवित्र शालिग्राम-पत्थर के बदले माँस तौल-तौलकर बेचता था। बेचता ईमानदारी से था। हर आदमी की दृष्टि में उसकी कीमत दो कौड़ी की थी; लेकिन जब उसने अपने आपको बदल लिया, ईश्वरीय सत्ता से तादात्म्य बिठा लिया तो, भगवान के भक्तों में सदन कसाई मूर्धन्य हो गये। मनःस्थिति बदले जाने के बाद में परिस्थितियाँ क्यों नहीं बदलेंगी ? पहले जिससे लोग नफरत करते थे, उसी को सब प्रणाम करने लगे, मस्तक झुकाने लगे और न जाने क्या-क्या करने लगे ? बाल्मीकि का नाम आपने सुना है न ? पहले उनकी कैसी जिन्दगी थी ? पहले वे घटिया वाली खराब जिन्दगी जी रहे थे। आदमी उससे भयभीत रहता था। हर आदमी का उस पर धिक्कार बरसता था; लेकिन जब उन्होंने अपने आपको बदल लिया, तो वह सन्त बाल्मीकि हो गये, ऋषि बाल्मीकि हो गये। उनका जीवन इतना शानदार हो गया कि भगवान राम को अपनी धर्मपत्नी सीता की हिफाजत के लिए, उनकी गार्जियनशिप के लिए और कोई सन्त न दिखायी पड़ा। बाल्मीकि ही सीताजी द्वारा सुसंतति-संरक्षण हेतु सबसे बड़े सन्त दिखाई पड़े। उनके आश्रम में भगवान राम ने अपनी पत्नी और बच्चों को सहर्ष रहने दिया, ताकि उनका पालन-पोषण, संस्कार और शिक्षण ठीक ढंग से हो सके। वही बाल्मीकि जिनका पूर्व का जीवन दस्यु का था, उनका कायाकल्प हो गया; वे सन्त, ऋषि, देवपुरुष बन गए। वही कायाकल्प करने के लिए आप लोग यहाँ आए हैं। भीतर वाले को बदल दीजिए, फिर देखिए परिस्थितियाँ बदलती हैं कि नहीं।

हमने आपके सामने बाल्मीकि का उदाहरण पेश किया। अभी मेरा मन कुछ और उदाहरण पेश करने का है। आम्रपाली का नाम सुना होगा आपने। वह एक वेश्या थी; जिसको हर आदमी ऐसे समझता था कि हम क्या कहें आपसे ! उसने अपने आपको बदल दिया, तब फिर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आम्रपाली-आम्रपाली नहीं रही; वेश्या नहीं रही; वह भगवान बुद्ध की बेटी हो गई। सारे-के-सारे एशिया के अधिकांश देशों में वह घूमी। महिला संगठन की दृष्टि से उसने न जाने क्या-से-क्या कर डाला ? कैसे हो गया यह सब ? उसने अपने आपको बदल दिया और उसका कायाकल्प हो गया। कायाकल्प कैसे होगा ? यही मैं आपको बताने वाला हूँ; पर पहले आपको यह जान ही लेना चाहिए कि कायाकल्प भीतर से होता है। बाहरी शरीर के कायाकल्प से कोई मतलब नहीं है। आन्तरिक कायाकल्प की विधा प्राचीनकाल में भी रही है और अभी भी है तथा आगे भी रहेगी। इसी के लिए हमने आपको बुलाया है।

ध्रुव का नाम सुना होगा आपने; वह बिल्कुल एक सामान्य दर्जे के राजकुमार थे। राजाओं के ढेरों बच्चे होते हैं। एक को गोद में लिया और एक को गोद से उतार दिया। जरा-सी, परिवार की एक घटना। उससे ध्रुव ने अपने आपको बदल लिया। उन्होंने कहा—राजकुमार रहना नहीं है और यदि रहना ही होगा, तो भगवान के राजकुमार क्यों नहीं रहेंगे ? बस, भगवान का राजकुमार बनने का फैसला कर लिया उसने। दृढ़निश्चयी की सहायता करने वाले कम हैं क्या ? नारद जी आ गए और उन्होंने उसकी सहायता की। नारद जी बाकी बच्चों, ध्रुव के भाई-बहिनों के पास क्यों नहीं गये ? उन्होंने क्यों नहीं कहा ? नहीं, नारद जी उनसे कह नहीं सकते थे; क्योंकि जो आदमी अपना निश्चय स्वयं करता है, उसी की सहायता दूसरे करते हैं। आपने वह कहावत सुनी होगी—'ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं।' यह बात बिल्कुल सोलह आने सच है। प्रह्लाद का नाम जानते हैं न ? अगर वह अपने दैत्य बाप के कहने पर चला होता और पुरानी परम्परा पर चला होता, तो सिवाय दैत्य के क्या हो सकता था ? बाप-दादे जो काम करते थे, वही काम प्रह्लाद भी करता; परन्तु प्रह्लाद ने अपने आपको बदल दिया। इसी तरह गुरुनानक का नाम भी आपने सुना होगा। गुरुनानक के पिताजी मामूली-सा व्यापार करते थे। वे चाहते थे कि उनका लड़का भी व्यापार करे। व्यापार के लिए एक बार पैसा भी दिया, जिसे उन्होंने परमार्थ में खर्च कर डाला। बाप के कहने पर वे चले नहीं, उनकी बातें मानने से इनकार कर दिया। मित्रों ने, पड़ोसियों ने भी कहा होगा; पर एक का भी कहना उन्होंने नहीं माना। अपने ईमान और भगवान् का कहना मानने वाले नानक का क्या हो गया ? देखा है न आपने कि सारे संसार में कितनी इज्जत उनकी ? सिक्ख धर्म में उन्हें भगवान मानते हैं। वे महान् बन गये; पर अगर बाप की मर्जी पर चले होते तो पुराने ढर्रे पर ही गाड़ी लुढ़कती रही होती और वे बिल्कुल मामूली-से आदमी होते और एक बनिये की दुकान कर रहे होते; ढेरों बच्चे पैदा करके मामूली आदमी के तरीके से जिन्दगी बसर कर रहे होते, पर ऐसा नहीं हुआ। नानक का कायाकल्प हो गया। नानक सन्त हो गये, ऋषि हो गये, भगवान हो गये, अवतार हो गये।

शिवाजी की भी यही कहानी है। उनके पिताजी मिलिट्री में नौकरी करते थे। वे जैसे मामूली घर-गृहस्थी के बच्चे होते हैं, उसी तरह थे। यदि ढर्रे का जीवन जिया होता और उस ढर्रे से इनकार न किया होता तथा अपने लिए कोई नया निर्धारण न किया होता या निश्चय न किया होता, तो क्या आप विचार कर सकते हैं कि शिवाजी वैसे ही रहे होते, जैसे कि हम उन्हें छत्रपति शिवाजी कहते हैं। यह कैसे हुआ ? कायाकल्प हो गया। वह शिवाजी, जो माता के पेट में से पैदा हुआ था, घर-गृहस्थी में गुजारा करता था, उसकी तुलना में महापुरुष शिवाजी की रूपरेखा बिल्कुल अलग है। इसी तरह चन्द्रगुप्त का नाम आपने सुना होगा। चाणक्य ने उसके अन्दर की कसक को देखा और उसे पढ़ लिया। उसकी पात्रता को देखा और उसके भीतर हो रहे मनःस्थिति के बदलाव को देखा। चाणक्य ने उसे क्या-से-क्या बना दिया ? गाँधी जी परिस्थिति से ऐसे ही थे क्या ! उनके पिताजी एक छोटी स्टेट के दीवान थे। वह अपने लड़के को वकील बनाना चाहते थे। गाँधी जी यदि उनके अनुसार चले होते, तो एक मामूली वकील रहे होते; सफल या असफल—यह बात दूसरी है; पर सिवाय वकील के और कुछ नहीं हो सकते थे; लेकिन जब उन्होंने यह निश्चय किया कि हमको कुछ बनना है और जिन्दगी का बड़ा उद्देश्य पूरा करना है, तो वे फिर महात्मा गाँधी हो गये, अवतार हो गये, बापू हो गये और युग-प्रवर्तक हो गये; लाखों आदमियों को दिशा देने वाले हो गये। आखिर यह हुआ कैसे ? भगवान ने कर दिया क्या ? नहीं, तो फिर भाग्य ने किया क्या ? नहीं, तो फिर किसी आदमी ने किया होगा ? नहीं, किसी ने भी नहीं किया। उन्होंने स्वयं अपना कायाकल्प कर लिया था। सहायता जरूर औरों ने की। सहायता का तो दुनिया में द्वार खुला है। बुरे लोगों के लिए भी सहायता का द्वार खुला है और अच्छे लोगों के लिए खुला है। गाँधी जी के बाबत यही हुआ। बुद्ध के बारे में भी यही बात लागू होती है। बुद्ध भगवान क्या थे, एक मामूली राजा के लड़के थे। छोटी उम्र में विवाह-शादी कर दी गई थी; लेकिन जब उन्होंने यह निश्चय किया कि हमें बड़प्पन की दिशा में चलना है, कुछ महान् कार्य करने हैं, तो बुद्ध का कायाकल्प हो गया और वे भगवान बुद्ध हो गये।

उपर्युक्त पुराने उदाहरण मैंने इसलिए दिये हैं कि आप विचार कर सकें कि हमारा बदलना सम्भव है। चलिए आपका यह ख्याल हो शायद कि हम तो मामूली आदमी हैं; हमारी घिनौनी और गन्दी जिन्दगी रही है, जिसके कारण हम नहीं बदल पायेंगे और जिस ढर्रे पर हम चल रहे हैं, जिस कोल्हू में हम पिल रहे हैं, उसी में हम पिलते रहेंगे, तो यह आपकी मर्जी के ऊपर है, अन्यथा मामूली और घिनौने आदमी तो और भी आसानी से बदल सकते हैं। यह आपकी मर्जी के ऊपर है कि आप चाहें, तो इस तरीके से भी रह सकते हैं, जैसे कि अभी रह रहे हैं; लेकिन अगर आपका मन हो कि हमको बदल जाना चाहिए, तो सूरदास का उदाहरण आपके सामने है। सूरदास कैसे आदमी थे—आप जानते हैं न ? विल्वमंगल का नाम सुना है न आपने ? कैसी घिनौनी और कामुक जिन्दगी थी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसकी। पर जब कायाकल्प हुआ, तो अन्धा होने के बाद में भगवान उन्हें अपनी लाठी पकड़ाकर ले जाते थे। तुलसीदास की भी पिछली जिन्दगी ऐसी थी कि कामुकता से पीड़ित होकर उन्होंने मुर्दे पर सवार होकर नदी पार की थी। साँप की पूँछ पकड़कर छत पर चढ़ गए और अपनी धर्मपत्नी के पास पहुँचे थे। धर्मपत्नी ने यह कहा कि जितना प्यार आप हमसे करते हैं, यदि उतना प्यार आप भगवान से करें, तो क्या-से-क्या हो सकता है ? यह बात उनके मन में लग गई और लगने के बाद में उन्होंने अपने आपको बदल दिया। बदला हुआ जीवन तुलसीदास का आप जानते हैं न ? रामायण को बनाने वाले उस तुलसीदास को आप जानते हैं, जिनके बारे में प्रसिद्ध है कि **'तुलसीदास चन्दन घिसै, तिलक देत रघुवीर।'**

भगवान् राम तुलसीदास को चन्दन लगाते हैं और श्रीकृष्ण भगवान सूरदास को लाठी पकड़ाकर साथ-साथ घूमते हैं। ऐसा हो सकता है क्या ? हाँ, हो सकता है और आपके लिए भी हो सकता है, यकीन रखिये। यकीन दिलाने के लिए ही हमने आपको यहाँ बुलाया है कि आप चाहें तो जरूर कर सकते हैं। यह कैसे होगा ? इसमें दो आदमियों के सहयोग की जरूरत पड़ती है, अकेले आप नहीं कर पाएँगे; लेकिन कोई बाहर का आदमी अकेला आपकी सहायता करना चाहे, तो वह भी मुमकिन नहीं है। आप प्रयत्न कीजिए, तो फिर भाग्य ने किया क्या ? नहीं, तो फिर किसी आदमी ने किया होगा ? नहीं हम आपकी सहायता करेंगे। मरीज को दवा खानी होती है और परहेज करना होता है। चिकित्सा करने वाला दूसरा आदमी होता है। हम आपकी चिकित्सा कर सकते हैं; लेकिन परहेज तो आपको ही करना पड़ेगा; दवा तो आपको ही खानी पड़ेगी। आपने देखा होगा कि अण्डा किस तरीके से फूटता है। मुर्गी के पेट में से अण्डा निकलता है। मुर्गी की दया न हो, तो अण्डा कहाँ से आए ? जन्म लेने से पहले अण्डे के भीतर रहने वाले बच्चे को मेहनत करनी पड़ती है और अपनी ताकत के हिसाब से अण्डे को भीतर से तोड़ना पड़ता है। कोई और तोड़ने नहीं आता। आपने देखा होगा कि जब बच्चा बाहर आता है, तो अण्डे के भीतर बैठे उस चूजे को मेहनत करनी पड़ती है। अपनी ताकत से वह अण्डे में दरार डालता है और फूटकर बाहर निकल पड़ता है। यह मेहनत उसकी अपनी है। अण्डे को जन्म मुर्गी देती है, छाती से लगाकर पालती भी है, सेती भी है—यह सब काम मुर्गी का है; लेकिन उस अण्डे को तो चूजे को ही तोड़ना पड़ता है। भ्रूण तो माता ने बनाया है, पेट में रहे हुए गर्भ को खुराक माता ने दी है। दूध माता ने ही पिलाया है; लेकिन पेट में से निकलने की ताकत, मेहनत तो पेट में रहने वाले बच्चे को ही करनी पड़ती है। अगर पेट में रहने वाला बच्चा इनकार कर दे कि हम तो बाहर नहीं निकलते, धक्का-मुक्की नहीं करते, तब फिर 'डिलिवरी' नहीं हो सकती। बाहर निकलने के लिए पूरी-की-पूरी जिम्मेदारी उस बच्चे के ऊपर है, जो पेट में बैठा हुआ है। प्रसव तो माता ही करती है; दर्द तो माता को ही होता है; पर जब तक बच्चे की ताकत, हुकूमत काम नहीं करती, उसके पहले या पीछे उसे जन्म नहीं दे सकती।

आपको अण्डे के तरीके से अपना दायरा तोड़ना पड़ेगा, बच्चे के तरीके से बाहर तो निकलना ही पड़ेगा। आपको जो करना है, यही करना है कि आपके ऊपर जो केंचुली लगी हुई है, यदि आप उसे उतार देंगे, तो आप साँप के तरीके से तोड़ते हुए चले जाएँगे। केंचुली लगा हुआ साँप कहाँ भाग पाता है ? लोग पत्थर फेंकते रहते हैं; पर वह वैसे ही बैठा रहता है। केंचुली उतार दी तो, न जाने कहाँ-से-कहाँ जा पहुँचता है ? आप अपने पुराने कुसंस्कारों की केंचुली उतार दीजिए और नये रास्ते पर चलिये। पिंजरे से आप बाहर निकलें; पिंजरे से बाहर आपको ही निकलना है। हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ तोड़ने के लिए मशक्कत करेंगे, तो हम जरूर सहायता करेंगे, आप यकीन रखिये। सहायता करने के लिए ही तो हम बुलाते हैं आपको। हम आपको सहायता का यकीन दिलाते हैं; लेकिन अगर आप यह ख्याल करते हों कि केवल हमारी सहायता से आपकी समस्याएँ हल हो जाएँगी, तो यह मुमकिन नहीं है। आप और हम मिल-जुलकर कार्य करें। आप हमारा कहना मानें और हम आपके लिए मदद करें। अन्धे और पंगे के तरीके से हम लोग मिल-जुलकर नदी पार कर लें, तब परिस्थितियाँ भी ऐसी बदल जाएँगी कि मजा आ जाएगा।

कायाकल्प से हमारा मतलब यही था कि आपके लिए हम सहायता करेंगे कि आप बदल जाएँ। आप पर हम दबाव डालेंगे कि जिस तरह की जिन्दगी आप जीते रहे हैं, वह मुनासिब नहीं है। आपका जो स्वरूप अब तक का रहा है, वह आपके लिए मुनासिब स्वरूप नहीं है। हम आप पर दबाव डालने वाले हैं कि आप इस स्वरूप को आगे चलाने से इनकार कर दें और एक काम करें कि ताकत लगाएँ, कोशिश करें, जुर्रत करें, साहस इकट्ठा करें कि हमें अपनी जिन्दगी को बदलना है। फिर आप देखिए हम आपकी पूरी-पूरी मदद करेंगे। विवेकानन्द की सहायता रामकृष्ण परमहंस ने की थी। हम परमहंस तो नहीं हैं; पर आप यकीन रखिए कि आपकी सहायता हम उतनी ही कर सकते हैं और श्रेष्ठ व्यक्ति बना सकते हैं। आप तैयार हो जाइए। अगर आप तैयार हैं, तो आप यकीन रखिए कि आपका जीवन बदल जाएगा और ऐसा शानदार जीवन बन जाएगा कि आप स्वयं तो अपने आप में आश्चर्य करेंगा। तो फिर भाग्य ने किया क्या ? नहीं, तो फिर किसी आदमी ने किया होगा ? नहीं, आपको यहाँ से जाने के बाद देखेगा, वह भी आश्चर्य करेंगे ही। उसके लिए संघर्ष कीजिए और अनुशासन पालने के लिए तैयार हो जाइये, अगर आपको यह दावत स्वीकार हो, तो फिर आप तैयार हो जाइये, हिम्मत कीजिए, फिर देखिए आपका भविष्य कैसे शानदार बनता है ? कायाकल्प से हमारा उद्देश्य समझना चाहिए और अपनी तैयारी के लिए जो मुनासिब हो, वह करने के लिए कमर कसकर खड़े होना चाहिए।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रायश्चित्त क्यों ? कैसे ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

उन्नति के मार्ग पर सबसे बड़ी रुकावट वह है, जिसके कारण से हमारे पैर रुक जाते हैं। प्रायश्चित की प्रक्रिया इसीलिए है कि हमने भूतकाल में जो गलतियाँ की हैं, उनकी रोकथाम कर सकें। इस संसार का यह नियम है कि जो गलतियाँ होती हैं, भूलें होती हैं, उसका दण्ड तो मिलता-ही-मिलता है। हमारे लिए सबसे बड़ा व्यवधान यही है कि पिछली गलतियाँ, वह रास्ता रोककर खड़ी हो जाती हैं और हमको उन्नति नहीं करने देतीं। अगर हम अपने ध्यान, जप और साधना में समर्थ हो जाएँ तब ? तब फिर उन गलतियों का दण्ड कैसे मिलेगा ? पापों का प्रायश्चित्त कैसे होगा ? उज्ज्वल भविष्य तो सुख और शान्ति का हो जाएगा, फिर पापों का क्या होगा ? पाप इतनी छोटी बात नहीं हैं कि आप गंगा नहा करके या उसका प्रायश्चित्त करके, प्रार्थना करके खत्म कर सकें। वह आपके जीवन की कोई महत्त्वहीन घटना नहीं है। बुरे कामों का भी दण्ड उसी तरह निश्चित है, जैसे अच्छे कामों का। अच्छे फलों की ही क्यों आशा करते हैं ? जब आप अच्छे फलों की आशा करते हैं कि हमने यह अच्छा किया है, विद्या पढ़ी है, तो हमको उत्तीर्ण होना चाहिए, हमने मैहनत की है, तो हमको इनाम मिलना चाहिए, हमने ब्याह-शादी की है, तो हमारी घर-गृहस्थी चलनी चाहिए। जब आप श्रेष्ठ कामों के बारे में यह विश्वास करते हैं, कि हमको अपने कर्मों का अच्छा फल मिलना ही चाहिए, फिर आप एक और बात क्यों भूल जाते हैं कि हमने जो बुरे कर्म किये हैं या भूलें की हैं, उनका दण्ड मिलना चाहिए। उसके बारे में फिर क्यों उपेक्षा करते हैं ? इसकी उपेक्षा कीजिए न कि हम खेती करेंगे नहीं, पैदा हुआ तो क्या हुआ; हम विद्या पढ़ेंगे नहीं, पढ़ना आया तो क्या हुआ ? आप यह क्यों सोचते हैं कि हमारे अच्छे कर्मों का फल तो हमको मिलना चाहिए और बुरे कर्मों के बारे में इतने ज्यादा लापरवाह हैं कि आप यह ख्याल कर लें कि हम राम नाम ले लेंगे, पंचामृत पी लेंगे, गंगाजी में डुबकी मार लेंगे, फलाना कर लेंगे, तो ऐसे दिल्लगी, मजाक जैसे छोटे-छोटे कारणों से आप छुटकारा पा जाएँगे ? ऐसा कैसे हो सकता है ? यह मुमकिन नहीं है। जहर खाया है, तो आपको मरना पड़ेगा अथवा जहर को सारी नसों में से निकालना पड़ेगा। नहीं साहब, जहर खा लिया है, तो क्या हुआ, प्रार्थना कर लेंगे; फाँसी लगा ली है, तो क्या हुआ, प्रार्थना कर लेंगे; रेल की पटरी पर बैठ करके सिर कटा लिया है, तो क्या हुआ, प्रार्थना कर लेंगे। नहीं भाईसाहब, ऐसी कल्पना मत कीजिए बच्चों जैसी। आप जरा समझदारों की तरह बात कीजिए। पाप भी आपके जीवन की एक इकाई है। आपने गलतियाँ की हैं और अपने शरीर को कमजोर बना डाला है। आप पापकर्म से कैसे बचेंगे ? पढ़ने के समय में और पढ़ने के दिनों में लापरवाही बरती आपने और पढ़ने से इनकार कर दिया। अब आप बिना पढ़े हैं, दम्भ से बचिए न जरा। नहीं साहब, हम तो प्रार्थना करेंगे, भगवान की पूजा करेंगे और विद्वान हो जाएँगे। आपने विद्वान बनने के लिए जो करना चाहिए था, वह किया था क्या ? नहीं किया था। फिर क्या मतलब है ? नहीं, हम तो पूजा करने मात्र से बन जाएँगे। नहीं भाईसाहब, ऐसा नहीं हो सकता। आप वास्तविकता को समझिए तो सही। यहाँ आ करके भी वास्तविकता को नहीं समझेंगे, आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद भी वास्तविकता और सच्चाई अगर आपकी समझ में न आ सकी, तो इसमें प्रवेश करने का क्या फायदा हुआ ? आप अज्ञान में ही फँसे रहे, भ्रम में ही फँसे रहे और आप अज्ञान और भ्रमों को ही छाती से लगाए रहे, तो क्या बात बनी ? आप यहाँ अध्यात्म को सच्चाई का प्रतीक मानिये और यह मानकर चलिए कि कर्मफल एक वास्तविकता है और उसमें जो भूतकाल के कर्म हैं, वह भी ज्यों के त्यों हैं।

पिताजी ने आपके लिए कर्ज लिया था और उससे आपने डिग्री हासिल की थी; लेकिन पिताजी के मरने के बाद में वह डिक्री आपको भुगतानी पड़ेगी, चाहे आपका मकान बिके या आपकी जमीन बिके। साहब हम तो क्षमा माँगेंगे, पुरानी बात तो पुरानी हो गई। पुरानी बात कैसे हो गई ? बैंक से आप कर्जा लाए थे और बैंक का कर्जा बढ़ते-बढ़ते दुगुना हो गया है; अब आप चुकायेंगे कि नहीं, चुकायेंगे। नहीं साहब, बैंक मैनेजर से प्रार्थना करेंगे, हाथ जोड़ेंगे, पैर छूएँगे, पंचामृत पिलाएँगे और माफ करा लेंगे। आप यह बेकार की बात मत कीजिए। बेकार की बात करने से आपको भ्रमित, घृणित और अज्ञानियों की श्रेणी में गिना जाएगा। आप भ्रमग्रस्त मत रहिए और अज्ञानियों की श्रेणी में अपने आपको शामिल मत कराइए। भूतकाल के पापों से या भूतकाल की घटनाओं से आप प्रभावित हैं, तो भूतकाल को मजाक में नहीं उड़ा सकते। भूतकाल में जो आपने किया था, लड़ाई-झगड़े किए थे, किसी आदमी का कत्ल कर दिया था, तो आप पर मुकद्दमा चलेगा और आप फाँसी के लिए तैयार रहिए। नहीं साहब, भूतकाल को छोड़िए, जो मार डाला, सो मार डाला और मर गया, सो मर गया। आप यों कहेंगे कैसे ? भूतकाल ऐसे मजाक की चीज है ? मजा की चीज नहीं है। आप ऐसा मत कीजिए। आप वास्तविकता से इतनी दूर रहेंगे, तो फिर वहाँ नहीं पहुँच सकेंगे, जहाँ आपको वास्तविकता के सहारे पहुँचना है। पापों का प्रायश्चित्त एक बहुत बड़ी बात है। हिन्दू धर्म में पाप प्रायश्चित्त का ही नाम है। गंगा में स्नान के बारे में जो कहा गया है, उसका मतलब केवल यह है कि उससे हमारी पाप करने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगे, हमारा पाप करने को जो मन चलता है, वह न चले, भविष्य में हम वह सब काम न करें, जिससे हमारे अहम्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

को प्रेरणा मिल जाए, प्रोत्साहन मिल जाए, वातावरण मिल जाए, यह मतलब है। यह मतलब नहीं है कि आप भूतकाल में जो कर चुके हैं, उसके दण्डों से आपको राहत मिल जाएगी। ऐसा नहीं हो सकता। आपके ऊपर जो बुरे कामों का किया हुआ कर्ज है, उससे भी निपटिए और जिन बुरे कर्मों का वातावरण बना रखा है, जरा उसको भी ठीक कीजिए। आपने जो-जो गलतियाँ कर रखी हैं, जरा उनको भी फिर से एक बार सुधारिए। नहीं सुधार पायेंगे, तो भावी उन्नति का दरवाजा बन्द है।

मैं आपसे यह कह रहा था कि आप आध्यात्मिक उन्नति के लिए पूजा करते हैं, तो आपको मुबारक, आप उपवास रखते हैं, बहुत अच्छी बात, आप यहाँ अनुष्ठान करते हैं, इससे अच्छी बात क्या हो सकती है ? लेकिन इसके साथ-साथ यह मत भूलिए कि इनके जो मुनासिब लाभ हैं, वह आपको उस समय तक नहीं मिल सकेंगे जब तक कि पिछले वाले दबाव आप पर पड़े हुए हैं। पिछले वाले पाप एक ऐसा वातावरण बनाते हैं, जिससे न आपकी पूजा सफल हो सकती है, न उपासना सफल हो सकती है, न आपका मन लग सकता है, न ध्यान लग सकता है। क्यों ? क्योंकि आपको दण्ड मिल रहे हैं। दण्ड नहीं मिलेंगे तो आपका ध्यान लग जाएगा। ध्यान लग जाएगा फिर पाप का दण्ड कहाँ जाएगा ? इसीलिए वह आसुरी शक्तियाँ शुभ-कर्मों में बराबर विघ्न उपस्थित करती रहती हैं। आसुरी शक्तियों से क्या मतलब है ? आसुरी शक्तियों से कोई मतलब नहीं है, आपका किसी से बैर नहीं है, फिर कोई आपको बेकार ही हैरान नहीं कर सकता। आसुरी शक्तियाँ बेकार ही हैरान क्यों करेंगी ? केवल आपके पाप कर्म ही वह आसुरी शक्तियाँ हैं, जो आपको हैरान कर देती हैं और आपको अच्छे कर्म में सफलता मिलने पर अवरोध खड़ा कर देती हैं, उनसे आपको लड़ना ही पड़ेगा। भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए आप जप करते हैं, तप करते हैं, अनुष्ठान करते हैं—भगवान को प्राप्त करने के लिए, मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए तो फिर उज्ज्वल भविष्य में रुकावट डालने वाले जो पिछले वाले पाप कर्म हैं, वही हैं, आसुरी शक्तियाँ उन्हीं का नाम है। उन आसुरी शक्तियों से निपटने की भी कोशिश कीजिए। आसुरी शक्तियों से निपटने की कोशिश नहीं करेंगे, तो वह हमला करेंगी और हमला करके आपके अच्छे प्रयासों को मटियामेट करके रख देंगी। खेती आपने की है। जंगली जानवर जो हमला करते हैं, तो रातभर में सारी-की-सारी फसल को खा-पी करके बराबर कर देते हैं। आप जानवरों को रोकेंगे नहीं ? कृपा करके रोकिए, नहीं तो फिर यह हो जाएगा कि आप चाहे जितना पानी लगाते रहिए, खाद लगाते रहिए, बीज बोते रहिए, फसल के नाम पर आपको कोई भी चीज हाथ लगने वाली नहीं है। तब ? तब मैं यही कह रहा था आपसे कि आपको इस महत्त्वपूर्ण बात के ऊपर गौर करना चाहिए।

आपको एक घटना सुनाता हूँ। एक बार स्वामी माधवाचार्य जी वृन्दावन रहते थे। उन्होंने तेरह साल तक गायत्री के अनुष्ठान किए; लेकिन उन अनुष्ठानों का कोई परिणाम उनको नहीं मिला। न उनको आत्मशान्ति मिली, न भगवान का साक्षात्कार हुआ, न कोई मनोकामना पूरी हुई, न कोई सन्तोष हुआ, कुछ नहीं हुआ। तब ? तब बड़े खिन्न हुए, दुःखी हुए कि हमको सफलता के कोई चिन्ह नजर नहीं आते हैं, तो स्तुति करने का क्या फायदा ? उन्होंने गायत्री अनुष्ठान तेरह वर्षों तक करने के बाद में वृन्दावन त्याग दिया और वृन्दावन त्यागने के बाद में बनारस चले गए। वह वहाँ काशी के मणिकर्णिका घाट पर बैठे हुए थे, आँखों में आँसू भरे हुए थे, बड़े दुःखी थे। एक साधक का रूप और दुःखी देख करके एक महात्मा उधर से निकले, उन्होंने पूछा—भाई क्या बात है ? कैसे दुःखी हो रहा है ? कौन है तू ? तो वह बोले—हम साधना करने वाले एक व्यक्ति हैं और तेरह वर्ष तक गायत्री की उपासना करते रहे; लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकला, हम बहुत खिन्न हैं और यह सोचते हैं कि उपासना से कोई लाभ नहीं है, खासतौर से गायत्री का कोई फल नहीं हो सकता, ऐसे हमारे विचार हैं। महात्मा जी हँसने लगे। उन्होंने कहा—अच्छा एक काम कीजिए, गायत्री के बारे में तो हमारी कोई जानकारी नहीं है, हम तो तान्त्रिक और कापालिक विद्याओं को जानते हैं। तू तान्त्रिक और कापालिक विद्या को सीख ले। एक साल के अन्दर तुझे कुछ चमत्कार दीखने लगेंगे, अनुभव हो जाएगा तथा चमत्कार पर तेरा विश्वास बढ़ जाएगा; इसलिए चमत्कार दिखाने की दृष्टि से तुझे हम एक साल की तान्त्रिक उपासना करने की सलाह देते हैं। स्वामी माधवाचार्य जी ने मान लिया। फिर, उनको मणिकर्णिका घाट पर तन्त्र सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बताया और यह कहा—एक साल तक तुमको इसी मर्यादा में रहना पड़ेगा। इससे बाहर जाना मना है। इसी में नहाना है, इसी में टट्टी जाना है, इसी में खाना पकाना है, इसी में सोना, उठना, बैठना, किसी भी कीमत पर मरघट की सीमा से बाहर मत जाना। ऐसा ही उन्होंने किया। एक साल तक उनको जो भैरव का मन्त्र बताया गया था, उसको वह जपते रहे। भैरव कभी शेर के रूप में आते, कभी औरत के रूप में आते, कभी डराते, कभी पैसा ले करके आ जाते; लेकिन माधवाचार्य जी से उन्होंने कह दिया था कि तू अपने काम में ही लगे रहना, दुनिया की बातों से प्रभावित मत होना। साधक को दुनिया की बातों से प्रभावित नहीं होना चाहिए। अपनी साधना को ही सब कुछ मानकर चलना चाहिए। वैसा ही हुआ। माधवाचार्य अपने गुरु के कहने के मुताबिक सब कुछ करते रहे। जो कोई आते रहे, सबको फटकारते रहे—आप लोग चले जाइए, हम तो साधना कर रहे हैं। एक दिन, साल जब पूरा हो गया, तब भैरव जी ने दर्शन दिए, उन्होंने कहा—जिसका तू जप कर रहा है, वह मैं ही हूँ। हमारा नाम भैरव है और हम आ गए। अब तू हमसे वरदान माँग। उन्होंने कहा कि पहली माँग तो यह है कि आप मुझे यह यकीन करा दीजिए कि आप भैरव ही हैं। अब तक पूरे साल में यही खुराफात

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती रही है कि कोई शेर बनकर आ गया, तो कोई भूत बनकर आ गया—कोई भैंसा बनकर आ गया, तो कोई औरत बनकर आ गया। रोज यहाँ मेरे साथ में दिल्लगीबाजी होती है। अगर आप भैरव हैं, तो फिर मैं आपकी सूरत देखना चाहता हूँ और यह विश्वास करना चाहता हूँ कि आज मेरे साथ में कोई दगाबाजी तो नहीं हो रही है। आप सामने आइए और प्रगट हो जाइए। पहला वरदान यही दीजिए, फिर आपकी उपासना करूँगा, तब दूसरा वरदान माँगूँगा। आज तो बस इतना ही माँगना है। भैरव ने कहा—हम आपको दर्शन तो नहीं दे पायेंगे, आपकी पीठ पीछे खड़े होकर बात कर सकते हैं; लेकिन आपको दर्शन नहीं दे पायेंगे। माधवाचार्य ने सन्देह से पूछा कि दर्शन क्यों नहीं दे पायेंगे ? उन्होंने कहा—तेरे चेहरे पर गायत्री का तेजस् चमचमा रहा है और आँखों से निकल रहा है। हम तो तान्त्रिक देवी-देवता हैं और हम गायत्री की शक्ति और तेजस् के आगे खड़े नहीं हो सकते। इसलिए सामने आने की हमारी हिम्मत नहीं है। मीठ पीछे तू जो कुछ हमसे पूछना चाहता है, वह पूछ। बात तो कर ही रहे हैं, यकीन भी करले कि हम भैरव हैं। नहीं, महाराज जी मुझे यकीन नहीं होता, सामने आ जाइए। नहीं, सामने तो नहीं आ सकते। फिर वजह क्या है ? तुझे बता तो दिया। तेरी आँखों में गायत्री का इतना तेजस्, चेहरे में इतना ओजस् और वर्चस् छाया है कि उसके सामने रह सकना हमारे लिए मुमकिन नहीं है। उनको बहुत आश्चर्य हुआ कि हमारी आँखों में गायत्री का इतना जबर्दस्त तेज है, जिसकी वजह से भैरव हमारे सामने तक नहीं आ सकते। तो उन्होंने कहा—महाराज फिर एक वरदान और माँगता हूँ मैं आपसे। आप दर्शन नहीं देना चाहते तो मत दीजिए। आप एक इच्छा और पूरी कर दीजिए। क्या ? आप यह इच्छा पूरी कर दीजिए कि मेरा गायत्री का तेरह वर्षों का जप और अनुष्ठान क्यों बेकार चला गया ? तो भैरव ने कहा—तेरे इस सवाल का मतलब हम बता देंगे, चल आँखें बन्द कर। आँखें बन्द कर लीं, फिर उन्होंने एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, तीसरे के बाद चौथा इस तरह तेरह जन्मों का दृश्य दिखाया। उसमें उन्होंने बुरे-बुरे कर्म किये थे। किसी में हत्या, किसी में चोरी, किसी में डाका, किसी में कुछ, किसी में कुछ। उनकी तेरह जन्मों में बड़ी घिनौनी जिन्दगी थी। उन्होंने कहा—देख तेरह वर्ष का जो तेरा उपवास है, अनुष्ठान है, एक-एक वर्ष का उपवास-अनुष्ठान, एक-एक जन्म के लिए पूरे हो गवे। अब तू जा, चौदहवीं बार फिर अनुष्ठान कर। अबकी बार तेरा साक्षात्कार होगा। अबकी बार जो गायत्री का लाभ मिलना चाहिए था, मिल जाएगा। माधवाचार्य प्रसन्न हो गए, फिर वह वापस चले आये। अपनी छोड़ी हुई साधना को फिर करने लगे। गायत्री उपासना का चौदहवाँ वर्ष जो उन्होंने किया, उसका परिणाम मिला, गायत्री का साक्षात्कार हुआ; उन्होंने पूछा—क्या वरदान चाहते हो, तो माधवाचार्य ने कहा—मैं कोई अजर-अमर ऐसा काम करके दिखा दूँ, जिससे कि दुनिया मुझे याद करती रहे। उन्होंने फिर 'माधवनिदान' नाम का प्रख्यात ग्रन्थ लिखा। इसे गायत्री ने माधवाचार्य के सिर पर अदृश्य रूप में प्रकट होकर लिखवाया।

आप समझ गए न, उनकी इच्छा कब और कैसे पूरी हुई ? आप यह बात नोट कीजिए, आपको पिछले वाले पापों से निजात पाने के लिए कुछ-न-कुछ करना ही होगा। क्या करना चाहिए ? इस ओर ध्यान दीजिए। भविष्य के निर्माण की ओर ध्यान दें, यह तो बहुत अच्छी बात है; पर भूतकाल को भुला मत दीजिए। आप यह विचार कीजिए कि आपने कितनी गलतियाँ कीं; उनकी एक बार लिस्ट बना लीजिए। गलतियाँ दो तरह की होती हैं—एक गलतियाँ वह, जो आपने दूसरों को नुकसान पहुँचाने के लिए की हैं और एक गलतियाँ वह, जो आपने अपनी उन्नति में रुकावट डाल करके आलस्य और प्रमाद के रूप में की हैं। इन दोनों गलतियों को आप नोट कर लीजिए और एक फेहरिस्त बना लीजिए। आप नोट कर लेंगे और फेहरिस्त बना लेंगे, तो पता चलेगा कि कितना बड़ा जखीरा अपनी बुराइयों का, अपने ही सिर पर लाद के रखा है; इसको दूर करने की कोशिश कीजिए। क्या कोशिश करें ? यही तो एक विकल्प है। एक काम यह कीजिए कि अपना जी खोल करके अपने मन की गाँठ को हल्का कर लीजिए, जैसा कोई चीज खा जाते हैं, गन्दी चीज खा जाते हैं, तो उलटी कराई जाती है। आप मुँह के रास्ते उलटी कर दीजिए। आपने जो कुछ भी पाप-कर्म किये हैं, उन सबको एक बार जी खोल के कह दीजिए। किससे कहें ? दूसरों के सामने तो मैं आपको सलाह नहीं दे सकता कि आप हर एक के सामने कहते फिरें; क्योंकि दूसरे आदमी इसका गलत फायदा उठाते हैं, नाजायज फायदा उठाते हैं। हमको हजारों घटनाएँ याद हैं। स्त्रियों से उनके पतियों ने कसम खिलाकर उगलवा लिया कि उनसे क्या गलती हो गई, फिर जिन्दगी भर के लिए उनकी ऐसी फजीहत की कि वह बेचारी सोचती रहीं कि सच्चाई अगर हम न बताते, तो नफे में रहते। दुनिया बड़ी निकम्मी है, दुनिया बड़ी पाजी है। आप हर आदमी से अपनी कमजोरियाँ कहते फिरें, ऐसा तो मैं नहीं कहूँगा; लेकिन आपको मेरी एक सलाह है कि एक बार अपना जी खोलकर हमसे सब कुछ कह दीजिए। अपनी हर घटना को बता दीजिए, विस्तार से बता दीजिए, कहीं दुराव न हो, कहीं छुपाव न हो। आप क्या करेंगे ? अरे भाई साहब ! हमें क्या करना है ? हर आदमी गलतियों से भरा पड़ा है। आपकी गलतियों में मुझे जायका लेने का, मजा लेने का, दिल्लगीबाजी करने का और बकवास करने का हमारे पास कहाँ समय है ? हमारे यहाँ तो केवल दुःखी-ही-दुःखी आते हैं। धोबी की दुकान है। हर आदमी मैला कपड़ा ले करके आता है और हम धोते रहते हैं। हमको न किसी से व्यंग्य करने की फुर्सत है, न मजाक करने की फुर्सत है, न घृणा करने की फुर्सत है, केवल धोबी के तरीके से लोगों के कपड़े धोने की फुर्सत है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसलिए आपको अपने मन के पापों को एक बार ठीक कर लेना चाहिए।

यही ईसाई धर्म में भी होता है। ईसाई धर्म में जब आदमी मरने को होता है, तो जीवन की सारी-की-सारी बातें, बुरी-से-बुरी घटनाएँ पादरी के सामने कह देते हैं। पादरी प्रार्थना करता है—इन्होंने ज़ी खोलकर कह दिया, पाप हल्का हुआ भगवान तुम्हारे मन को शान्ति दे। आप भी जो यहाँ कल्प-साधना शिविर में आये हैं, तो अपने भीतर के संचित किये हुए पाप-कर्मों को जी खोलकर कह दें—एक तो काम यह हुआ। दूसरा, आपने जो पाप-कर्म किये थे, भविष्य में वह न करें, इसके लिए ऐसा दबाव डालिए, ताकि आपको यह ख्याल रहे कि हमने गलती की थी और अब गलती नहीं करेंगे। इसके लिए यदि मन पर दबाव नहीं डालेंगे, तो फिर आप ऐसे ही हो जाएँगे, जो पहले करते रहे हैं, फिर वैसा ही करने लगेंगे। जब आपको नफरत ही नहीं हुई, जब आपको कोई दुःख ही नहीं हुआ, जब कोई प्रायश्चित ही नहीं हुआ, तब फिर यह कैसे विश्वास करें कि भविष्य में आप ऐसा नहीं करेंगे। इसलिए भविष्य में न करने की दृष्टि से एक काम बहुत जरूरी है कि आप अपने आपको थोड़ा-सा कष्ट दें। चान्द्रायण व्रत इसी कष्ट का नाम है। आपको भी यहाँ तपश्चर्या कराई जा रही है। तपश्चर्या का मतलब यही है कि आपको जो कष्ट मिले, उससे आपको याद बना रहे, कि हमने जिस पाप के प्रायश्चित के निमित्त कष्ट उठाया था, वह पाप आइन्दा नहीं करेंगे। आइन्दा नहीं करने के लिए कष्ट उठाना पड़ता है, आइन्दा याद बनी रहे, इसलिए तपश्चर्या की जाती है। पिछला जो हो गया है, गलती हो गई है, वह स्वतः दूर हो जाएगी, यह वहम निकाल दीजिए। इसका तो एक ही उपाय है कि आपने जो गड्ढा खोदा है, उसको पूरा करना चाहिए। गड्ढे को अगर पूरा नहीं करेंगे, तो गड्ढा बना रहेगा, आप खाई में गिरेंगे, आपकी टाँग टूट जाएगी और दूसरों की टाँग टूटेगी। इसका दूसरा कोई उपाय है ही नहीं, सिवाय इसके कि आपने जो खाई खोदी है, उसको पूरा कीजिए, जो गड्ढा बना दिया है, उसमें मिट्टी डालिए, समतल बना दीजिए। यही तो प्रायश्चित है और क्या प्रायश्चित हो सकता है ? इस प्रायश्चित को हमारे यहाँ इष्टापूर्ति कहते हैं, क्षतिपूर्ति भी कहते हैं। आपने जो नुकसान किया है चुकाइए। बैंक से रुपया ले करके भाग गए हैं ? हाँ, साहब पन्द्रह हजार रुपया ले करके भाग गए थे और हमारा वारण्ट है। आप ऐसा कीजिए बैंक वालों से मिलिए और खबर भेजिए। पन्द्रह हजार में से एक हजार रुपया हमने खर्च कर डाला है और चौदह हजार बचा। चौदह हजार रुपया उसको रिफण्ड कर दीजिए, बाकी एक हजार रुपयों की किस्तें कर लीजिए, फिर आप पर जो मुकद्दमा चलने वाला है, दस साल की, आठ साल की जेल होने वाली है, उससे आप बच जाएँगे। इसलिए क्या करना चाहिए कि आप उस खामियाजे को पूरा कीजिए। खामियाजे को पूरा नहीं करेंगे, तब फिर बात कैसे बनेगी ? इष्टापूर्ति का मतलब क्षतिपूर्ति होता है, जो प्रायश्चित का बहुत महत्त्वपूर्ण अंग होता है। इसलिए कर्ज आपको चुकाना ही चाहिए। किसको चुकायें ? जिसका नुकसान किया था, उसको तो आप चुकायेंगे नहीं; लेकिन सारा समाज एक है, एक कड़ी से जुड़ा हुआ है, इसलिए आप एक कड़ी में जुड़े हुए सारे समाज को यह मानकर चलिए कि किसी भी हिस्से पर नुकसान पहुँचाया है, तो कोई बात नहीं, दूसरे तरीके से पूरा कर देंगे।

मान लीजिए आप किसी के कान पकड़ने की गुस्ताखी करें तब ? तब उसके पैर छू करके प्रणाम कर लीजिए। अरे साहब ! हमसे गलती हो गई, माफ कर दीजिए, पैर छूते हैं आपके। कान पकड़ा था तो कान को छूना जरूरी नहीं है, आप पैर को भी छू सकते हैं। सारा समाज एक है। इसके किसी हिस्से को आपने नुकसान पहुँचाया है, तो आप उस नुकसान को पूरा करने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति के साथ में भलाई का सलूक कर सकते हैं। जो आदमी मर गया, जिसका आपने बेईमानी के साथ पैसा हजम कर लिया था, अब कैसे उसका पैसा चुकायेंगे ? नहीं साहब, हम तो उसी को चुकायेंगे; लेकिन कैसे चुकायेंगे ? वह तो मर गया। किसी लड़की का चाल-चलन खराब किया था। अब आप बताइए उसके चाल-चलन को ठीक कैसे करेंगे ? नहीं साहब, हम तो क्षमा माँगेंगे। क्षमा माँगेंगे लेकिन वह लड़की अब किसी की घरवाली हो गई और जिसके बेटे भी बड़े हैं, सास-ससुर भी हैं, वहाँ उनसे कहते फिरें, साहब हमने इस लड़की का चाल-चलन खराब किया था और अब हम माफी माँगते हैं। इस तरह आप भी पिटेंगे और वह लड़की भी मरेगी। जरूरी नहीं है कि जिस आदमी का आपने नुकसान किया है, उसी को लाभ दें। सारा समाज एक है, इसलिए यह बात सही है कि सारे-के-सारे संसार के तालाब में एक बड़ा ढेला फेंका और लहरें पैदा कर दीं। बुराई पैदा करने का मतलब एक व्यक्ति को ही नुकसान पहुँचाना नहीं है, बल्कि सारे समाज को नुकसान पहुँचाना है। बुरी आदतें आपने एक को सिखा दीं, शराब पीना आपने एक को सिखा दिया, वह फिर दूसरे को सिखाएगा, दूसरा तीसरे को सिखाएगा, तीसरा चौथे को सिखाएगा; यह तो एक लहर है। बुराइयों की भी एक लहर है और अच्छाइयों की भी एक लहर है। आपने बुराइयों की एक बार लहरें पैदा की थीं, अब उसका प्रायश्चित एक ही हो सकता है कि आप अच्छाइयों की लहरें पैदा करें और उस अच्छाइयों की लहर को पैदा करके वातावरण ऐसा बनाएँ, जिससे कि उसका खामियाजा पूरा हो सके, खाई पाटी जा सके, उस छेद को बन्द किया जा सके।

आप इस प्रायश्चित की तैयारी कीजिए। आपने क्या-क्या नुकसान पहुँचाया, उसका मूल्यांकन कीजिए। आपने कितने लोगों का समय खराब किया, दिल दुखाया, कितने आदमियों को आर्थिक हानि पहुँचाई, कितने आदमियों का चाल-चलन खराब किया, इन सारी बातों को एक कागज पर नोट कर लीजिए और आप उसी के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समान लाभ ब्याज समेत दे सकते हो, तो क्या कहना ? आपने जो कर्जा लिया है, उसे ब्याज समेत चुकाइए। नुकसान पहुँचाया है, उसे ब्याज समेत चुकाइए और अगर ब्याज समेत नहीं भी चुका सकते, तो कम-से-कम उतना तो फायदा कीजिए, उतनी तो सेवाएँ कीजिए, उतना तो पुण्य कीजिए, जितना कि आपने पाप कमाया है। पाप और पुण्य को बराबर कर देना है। यदि ज्यादा हो सके तो, फिर ज्यादा कर दीजिए। फिर वह ब्याज चुकाने वाली ईमानदारी में शामिल हो जाएगा। ऐसा करने से आपके पुण्य का पलड़ा भारी हो जाएगा और अगले जन्म में काम आएगा। फिलहाल इतना न कर सके, तो आपको किसी-न-किसी रूप से यहाँ इस शिविर में आ करके यह विचार करना चाहिए कि हमने पिछले दिनों जो गलतियाँ की हैं और आज तक जो करते रहे हैं, इसका इस समय तो हम प्रायश्चित करते हैं दण्ड भुगतते हैं, थोड़ा-सा अपने आपको कठिनाई में डालते हैं, कसम खाते हैं भविष्य में ऐसा न करने की यह तो करना ही करना चाहिए; लेकिन मूल बात है नुकसान का खामियाजा चुकाना। खामियाजा अगर चुका देंगे, तब आपके पाप दूर हो जाएँगे और आपकी उपासना के मार्ग में, आत्मिक उन्नति के मार्ग में पग-पग पर जो रुकावटें आती हैं, उनके आने का सिलसिला बन्द हो जाएगा। रुकावटें आप पार कर लेंगे, तो उन्नति आपकी कोई कठिन नहीं है। भगवान बनना आपके लिए कठिन नहीं है, शर्त एक ही है कि आपने अपने पिछले पाप और गुनाहों की, जो खाई इकट्ठी कर ली है, पर्वत इकट्ठे कर लिए हैं, उसको पाटें, लेबिल एक-सा करें और फिर आप रास्ता चलते चले जाएँ। यह करना बहुत आवश्यक है। इस शिविर में आप यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखें। हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

तीर्थयात्रा बनाम प्रायश्चित्त प्रक्रिया

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आपको यह बताया गया है कि अपने पापों का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा। प्रायश्चित्त कैसे होगा ? इसके लिए आपको घटनाएँ सुनाता हूँ। आम्रपाली ने प्रायश्चित्त किया। आम्रपाली ने सैकड़ों आदमियों की जिन्दगियाँ खराब कीं, कुमार्ग पर चलाया, बहुत बड़ा धन कमाया और उस पाप से निजात पाने के लिए भगवान बुद्ध की शरण ली। भगवान बुद्ध ने शरण में तो ले लिया; लेकिन साथ-साथ यह भी कहा कि पिछले जो गुनाह हैं, उनकी भरपाई तो करनी ही पड़ेगी, आध्यात्मिक उन्नति का केवल मन्त्र लेने से या जप करने से रास्ता थोड़े ही खुलेगा। आम्रपाली ने कहा—ठीक है, मैंने जो कुछ भी गुनाह किए हैं, जो कुछ भी पैसा मैंने गुनाहों के द्वारा कमाया है, उस सारे-के-सारे पैसे को मैं दुनिया में ज्ञान के संवर्द्धन में खर्च कर दूँगी। उसके पास करोड़ों रुपए की सम्पत्ति थी, उसे ला करके वह भगवान बुद्ध के चरणों में रख गयी और यह कहा—जिन तरीके से मैंने अनेकों को गुमराह किया है, आप अनेकों को अच्छे मार्ग में लगा देने के लिए इस पैसे को खर्च कर डालिए। बस, ऐसा ही हुआ। भगवान बुद्ध ने आम्रपाली की करोड़ों रुपए की सम्पत्ति से बुद्धविहार बनवा दिया, धर्म-प्रचारकों के शिक्षण का प्रबन्ध कर दिया। इस तरीके से जो अनीति का धन था, वह सब उसमें लग गया, प्रायश्चित्त हो गया।

यही तरीका एक और व्यक्ति ने अपनाया, उसका नाम था—अंगुलिमाल। अंगुलिमाल ने अपने जीवन में बहुत हत्याएँ की थीं, न जाने कितने कत्ल किए थे और कत्ल करने के बाद में बहुत सारा धन कमा लिया। बहुत धन था उसके पास। वह भगवान बुद्ध का शिष्य बनने के लिए आया, मन्त्र माँगने के लिए आया। भगवान बुद्ध ने मजाक में ही कहा—लगता है आप मन्त्र जानकर ही बैकुण्ठ जाने की फिराक में हैं। वह बोला—हाँ, साहब ! मैंने सुना है जो कोई मन्त्र जप कर लेता है, राम-नाम लेता है, बैकुण्ठ को जाता है। भगवान बुद्ध बहुत हँसे, उन्होंने कहा—जिस आदमी ने आपको ऐसी सलाह दी है, वह बहुत बड़ा पागल आदमी मालूम पड़ता है और आपने विश्वास कर लिया; आप उससे भी ज्यादा पागल मालूम पड़ते हैं। केवल राम-नाम का जप करने से अथवा उसके शब्द का उच्चारण करने से या देवी-देवता के आगे नाक रगड़ने से अथवा किसी क्रिया-कृत्य को पूरा करने से आप आध्यात्मिकता का लक्ष्य प्राप्त करने में कभी समर्थ नहीं हो सकते। रास्ता एक ही है—आपने जो गलतियाँ की हैं, उसको बराबर कीजिए, खाइयों को पाटिए। कैसे पाटें ? जो धन आपने अनीति से कमाया है, उसे खर्च कर डालिए। बस, उन्होंने ऐसा ही किया। करोड़ों रुपए की सम्पत्ति को ऐसे ही खर्च किया। भगवान बुद्ध ने सारे संसार में, उन्हीं की भाषा में बौद्ध-धर्म के ग्रन्थों को अनुवाद कराके और उन ग्रन्थों को दूसरे देशों में नाव में रख करके भेजने का प्रयत्न किया। अंगुलिमाल का सारा धन उसमें खर्च हो गया।

इन लोगों ने धन के अलावा भी तो अनेक गुनाह किए थे—लोगों का ईमान खराब किया था, चरित्र खराब किया था, दुःख और दारिद्र्य की आग में उन्हें धकेल दिया था। इतने आदमियों का कत्ल करने के बाद में कितनी आत्माओं ने चीत्कार किया होगा उसकी भरपाई केवल पैसे से कैसे हो सकती है ? वह केवल पैसा ही तो चुका दिया और रूह का क्या हुआ ? आम्रपाली ने अपने भावी जीवन को भूतकाल की खाई पाटने के लिए समर्पित कर दिया। वह सन्त हो गई और स्वामी विवेकानन्द की तरह सारे एशिया में और सारे हिन्दुस्तान में गाँव-गाँव घूमती फिरी ज्ञान की शिक्षा देने के लिए, सत्कर्म की शिक्षा देने के लिए। इस तरह उन्होंने न केवल अपने धन को उत्सर्ग कर दिया, बल्कि अपने समय को और अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पसीने को भी उसी में खर्च कर दिया। जो उत्साह उन्होंने बुरे कर्म करने में, गन्दी जिन्दगी जीने में लगाया था, वही उत्साह उन्होंने भावी जीवन को पुनीत और पवित्र करने में भी खर्च कर दिया। जो श्रम और जो समय उन्होंने पाप कर्म कमाने में खर्च किया था, वही श्रम और समय उन्होंने पुण्य कमाने के लिए खर्च कर दिया। तब आम्रपाली सच्चे अर्थों में सन्त हो गई। अंगुलिमाल ने भी ऐसा ही किया। अंगुलिमाल के पास जो था, वह तो उन्होंने खर्च कर ही डाला। बौद्ध धर्म के ग्रन्थों को सारे विश्व की भाषाओं में अनुवाद कराने में; पर केवल धन से ही थोड़े काम चलता है। उन्होंने केवल धन थोड़े ही अपहरण किया था, कई आत्माओं को दुखाया भी तो था। न जाने कितने को कुमार्ग के रास्ते पर धकेला भी तो था। उसका प्रायश्चित यही हो सकता था कि अपने समय, श्रम एवं बचे हुए जीवन को उचित कामों में खर्च कर दिया जाए। वैसा ही हुआ। अंगुलिमाल एक सन्त हो गए। सन्त हो करके सारे संसार में काम करते रहे और बराबर प्रायश्चित के लिए चलते रहे। इससे बढ़िया प्रायश्चित का कोई तरीका नहीं हो सकता, इसलिए आप अपना समय दान दे दें। समय न दें, क्षतिपूर्ति न करें, फिर क्या हुआ ! यह तो प्रायश्चित का मखौल हुआ, दिल्लगीबाजी हुई और विधि की व्यवस्था के साथ में उपहास हुआ। भगवान के यहाँ कोई अंधेर नहीं है। पाप करने वाले हाथ-पाँव जोड़ेंगे, नाक रगड़ेंगे, पूजा करेंगे, पंचामृत पीयेंगे, तो पाप-मुक्त हो जाएँगे, फिर भगवान की दुनिया में नियम कहाँ रहा, व्यवस्था कहाँ रही ? फिर तो ऐसे ही लोग कर लिया करेंगे। पाप कर लिया करेंगे और बस, प्रार्थना कर लिया करेंगे, पंचकर्म कर लिया करेंगे, डुबकी मार लिया करेंगे। फिर पापों का डर तो कुछ है ही नहीं। तब संसार की व्यवस्थाओं को कौन कायम रखेगा ? आप ऐसा मत सोचिए। आपको केवल यह सोचना चाहिए कि यह चित्तभ्रम का एक ढंग है और कुछ नहीं।

यहाँ जो कल्पसाधना आपको कराई जा रही है, इसमें भी अन्न को कम करना पड़ता है, आहार को कम करना पड़ता है, भोजन पर नियन्त्रण करना पड़ता है, स्वाद की रोकथाम करनी पड़ती है, वही आपको करनी पड़ी है। दोनों में एक ही बात है, इसलिए आपको यह प्रायश्चित करने के साथ में, तितीक्षा करने के साथ-साथ में अब एक नया काम शुरू कर देना चाहिए—पापों का प्रायश्चित समयदान देकर। समयदान के लिए क्या करना चाहिए ? इस विषय में एक पुरानी परम्परा है, तीर्थयात्रा करनी चाहिए। पापों के लिए तीर्थयात्रा, तीर्थयात्रा, तीर्थयात्रा। आप कहीं भी पता कर लीजिए प्रायश्चितों में तीर्थयात्रा करनी चाहिए, लोग यही कहेंगे। यह तीर्थयात्रा क्या होती है ? तीर्थयात्रा कहते हैं—धर्मप्रचार की पदयात्रा को। तीर्थयात्रा का अर्थ है—गाँव-गाँव घूमना, जगह-जगह जाना, लोगों को अच्छे-अच्छे उपदेश करना। प्राचीनकाल में जो गौ हत्याएँ हो जाती थीं, तो लोग गायों की पूँछ लाठी से बाँधकर गाँव-गाँव घूमते थे मुँह ढक करके, फिर कहते थे हमसे गाय की हत्या हो गई और हम कलंकी हैं, हमको कलंक लग गया है। इस पर अपने पापों को गाँव-गाँव बताते थे; लेकिन इसके साथ-साथ लोगों को यह भी कहते थे कि हमने गलती की है; लेकिन आप में से कोई मत करना। हमने गलती में, गुस्से में आ करके गाय पर हमला किया और उसे मार डाला। आप ऐसा मत करना—यह उपदेश भी कहता था और अपनी गलती को बताता भी था।

आपको यही करना चाहिए। आपको हर जगह जा करके तीर्थयात्रा के रूप में पदयात्रा करनी चाहिए। पदयात्रा के रूप में गाँव-गाँव घूमना चाहिए। पदयात्रा का एक रूप—तीर्थयात्रा का एक रूप अभी भी विद्यमान है। आपने कभी वैद्यनाथ धाम जाने के बारे में सुना है ? अपने यहाँ यू. पी. (उत्तर प्रदेश) में भी ऐसा रिवाज है कि शिवरात्रि के समय लोग गंगाजी से गंगाजल चढ़ाने के लिए लाते हैं और अपने यहाँ किसी देवालय पर चढ़ाते हैं। कन्धे पर काँवर रख करके लाते हैं। काँवर लेकर चलने वाले रास्ते भर अच्छे-अच्छे गीत सुनाते जाते हैं। रास्तागीरों को हर वक्त अच्छी शिक्षा देते जाते हैं। जहाँ भी रास्तागीर मिलते हैं, जिस किसी भी गाँव में प्रवेश करते हैं, वहाँ अच्छे दोहे, ज्ञान के दोहे, भक्ति के दोहे, वैराग्य के दोहे और कर्त्तव्यपालन के दोहे सुनाते चलते हैं। यह उनका धर्मोपदेश भी साथ-साथ चलता रहता है, पदयात्रा भी चलती रहती है और जनसम्पर्क का कार्य भी होता रहता है। जनसम्पर्क एक, पदयात्रा दो, धर्मप्रचार तीन—इन तीन बातों को मिला दें, तो आपकी सच्चे अर्थों में पदयात्रा हो जाएगी। जो इस समय चल रहा है, वह तो केवल भगदड़ है, पर्यटन है। पर्यटन के लिए तो घुमक्कड़ लोग देश-विदेश में घूमने के लिए जाते हैं; इसको देखते हैं, उसको देखते हैं। वे केवल देखने के लिए जाते हैं, दर्शन करना उन्हें कहाँ आता है ! दर्शन करने की बुद्धि कहाँ है ? उनमें केवल देखने के लिए जाते हैं कि बद्रीनाथ कहाँ है, केदारनाथ कहाँ है ? मन्दिरों में रखे हुए खिलौनों को देखने के लिए जाते हैं। देखने की दृष्टि उनमें कहाँ ! दर्शन के लिए दृष्टि चाहिए। श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को देखने की दृष्टि दी थी। अर्जुन ने कहा था—हमको भगवान का रूप दिखा दीजिए, तो उन्होंने कहा—पहले दृष्टि तो ला, देख काहे से लेगा। देखने को हम हैं तो सही ! नहीं, साहब ! आप भगवान नहीं हैं। हम तो भगवान को देखना चाहते हैं। तो फिर दृष्टि विकसित कर दृष्टि से दर्शन होता है। जिनके पास दृष्टि नहीं है, उनको खुलकर कह सकते हैं—यह तो घुमक्कड़ है। घुमक्कड़ी से क्या फायदा ? यह तो केवल मनोरंजन है। यह मान लीजिए कि कलकत्ता, बम्बई नहीं गए, बद्रीनाथ हो आए। इसमें बिल्कुल भी फर्क नहीं। दोनों से घूमने की ही आवश्यकता पूरी होती है, फिर तीर्थयात्रा का पुण्य कैसे मिल सकता ? तीर्थयात्रा के पीछे तो उद्देश्य जुड़ा हुआ है, क्रियाएँ जुड़ी हुई हैं। क्रियाओं का अर्थ यह है कि आपको धर्म-प्रचार की पदयात्राओं में संलग्न होना चाहिए। धर्म-प्रचार की पदयात्रा में अगर आप संलग्न हैं, तो आपकी तीर्थयात्रा फलदायी मानी जाएगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीनकाल के ऋषि भी यही करते थे। घर-घर अलख जगाते थे। अलख क्या ? अलख ऐसे करते थे, घर-घर दरवाजे पर खड़े हो करके गीत गाते थे। एक हो, तो अकेले—अगर दो आदमी हों, तो दोनों साथ-साथ। इसे अलख जगाना कहते हैं। हर आदमी, जो घर के निवासी थे, घर से निकलकर बाहर आते थे, महात्मा जी की बात सुनते थे, गाना सुनते थे, उपदेश सुनते थे। इसे अलख जगाना कहते हैं, घर-घर जाकर सम्पर्क बनाना कहते हैं। वे आपके पास आयेंगे ? नहीं, आपके पास नहीं आयेंगे। बादलों के पास खेत कैसे आ पायेंगे, बताइए ? खेतों के पास इतनी सामर्थ्य होती, तो फिर क्यों किसी का इन्तजार करते ! मित्रो ! बादलों को ही आना पड़ेगा। घर-घर आपको ही जाना पड़ेगा। वे आपके पास नहीं आयेंगे। दुर्घटना से घिरे हुए आदमी किस तरह आपके पास आ पायेंगे ! टाँग टूट गई है, एक्सीडेण्ट हो गया है और आप कह रहे हैं—आइए साहब ! हमारे यहाँ आइए, प्रार्थना-पत्र लिखिए, पैसे दीजिए, तब हम आपकी सहायता करेंगे। इतनी ही हैसियत होती, तो बेचारा टाँग टूटा हुआ क्यों आता ! तो फिर घुड़सवार न होता। घुड़सवार नहीं है, टाँग टूटा हुआ आदमी है, इसलिए चल नहीं सकता। जाना आपको ही पड़ेगा। बाढ़ें आती हैं, दुर्घटनाएँ होती हैं और भी मुसीबतें आती हैं, भूकम्प आते हैं, महामारी फैल जाती है, उसमें अधिकारी लोग यह इन्तजार नहीं करते कि जो दुःखी हैं, हमारे पास आएँ, अर्जी दें और हमसे प्रार्थना करें। नहीं, आपको ही भागकर जाना पड़ेगा। हवा हर आदमी के पास भागकर जा पहुँचती है, नाक में घुस जाने के लिए। सूरज की रोशनी हर आदमी के पास अपने आप चली जाती है। अपने आप चली जाने के बाद उसे गर्मी दे करके आती है, रोशनी दे करके आती है। आपको सूरज की तरह, हवा की तरह और बादलों की तरह उन सभी जगहों पर जाना चाहिए, जहाँ ज्ञान की आवश्यकता है।

यह आवश्यकता पिछड़े हुए आदमियों को भी है और पढ़े-लिखों को तो उससे भी ज्यादा है। पिछड़े हुए आदमी एक ढंग के बेहूदे हैं और पढ़े हुए आदमी दूसरे ढंग के बेहूदे हैं। उनमें कोई खास फर्क नहीं है। चरित्र की दृष्टि से, चिन्तन की दृष्टि से, आदर्शों की दृष्टि से सारा समाज लगभग एक ही स्तर पर जा पहुँचा है। इसमें धनी और निर्धन का भेद करना बड़ा मुश्किल है, पढ़े और बिना पढ़े का भेद करना बड़ा मुश्किल है। जहाँ तक गफलत का सम्बन्ध है, दुर्भावनाओं का सम्बन्ध है, दोनों ही क्षेत्र एक-दूसरे से बाजी मारने पर तुले हुए हैं। पढ़े-लिखे ज्यादा कमा लेते हैं, बिना पढ़े-लिखे कम कमा पाते हैं—यह बात अलग है। पढ़े आदमी ज्यादा चालाक होते हैं—बिना पढ़-लिखे कम चालाक होते हैं—यह बात और है। पढ़े हुए आदमियों के पास अच्छे महल, मकान और पैसे होते हैं—गाँव वालों के पास फटे-पुराने कपड़े होते हैं—जीर्ण-शीर्ण झोंपड़ियाँ होती हैं; लेकिन जहाँ तक चरित्र का सम्बन्ध है, वहाँ तक दोनों एक ही स्तर के हैं, इसलिए हम और आपमें से हर आदमी जिसको प्रायश्चित करना हो, उसे तीर्थयात्रा की तैयारी करनी चाहिए, घर-घर जाना चाहिए और जनसम्पर्क करना चाहिए। जनसम्पर्क किसके लिए ? धर्मधारणा जाग्रत करने के लिए, विचार-क्रान्ति के लिए, जनमानस का परिष्कार करने के लिए, लोकमानस में आदर्शवादिता की प्रतिष्ठापना करने के लिए। यही उद्देश्य होना चाहिए। घर-घर आप जाएँगे, किसके लिए जाएँगे ? भीख माँगने के लिए ? नहीं, साहब ! भीख तो नहीं, ऐसे ही जायेंगे। आप घर-घर एक उद्देश्य के लिए जाइए, गाँव-गाँव एक उद्देश्य के लिए जाइए कि हमको जन-जागरण की हवा पैदा करनी है। तीर्थयात्रा का यही उद्देश्य है। इसमें पैदल चलना पड़ता था, जिससे कि ज्यादा-से-ज्यादा लोग रास्ते में मिलें और उनसे सम्पर्क सधे।

आपको भी ऐसी ही तीर्थयात्रा की तैयारी करनी चाहिए। आप यहाँ से जाएँ, तब एक योजना बना करके जाइए कि किस तरीके से एक लम्बा सफर तय करेंगे और उसमें किस तरह अधिक-से-अधिक लोगों से मिलेंगे, उनको अच्छे उपदेश देंगे। इसका एक ही तरीका है—आप साइकिल यात्रा करें। साइकिल चलाने को तो मैं पदयात्रा ही मानता हूँ। यह मानता हूँ कि इस यात्रा में आपको बिस्तर लेकर चलना पड़ेगा, कपड़े लेकर चलना पड़ेगा। उन्हें साइकिल पर लादकर चलिए, तो ज्यादा सुविधा रहेगी और क्या करें ? और आप यह कीजिए, जगह-जगह शिक्षण देने के लिए, अलख जगाने के लिए एक योजना बनाकर ले जाइए। दीवालों पर आदर्श वाक्य खड़िया-मिट्टी से लिखने की आप आदत डालिए। उससे आप असंख्यों आदमियों को, रास्तागीरों को प्रेरणा देने में समर्थ हो सकेंगे।

प्रायश्चित का यह भी एक तरीका है और क्या काम करें ? यहाँ के शिविरों में ढपली बजाना सिखाया जाता है। सड़क पर खड़े होकर गाने वालों, स्टेज सिंगरों की एक नई पीढ़ी और नई पौध हमने लगाई है। आप भी उसमें शामिल हों, तो एक-दो आदमियों के साथ ढपली और खंजड़ी लेकर चले जाएँ। किसी भी गाँव के लोगों को कहीं इकट्ठा कर लें, जहाँ प्याऊ है, वहाँ पानी पीने के लिए जा बैठें, ढपली बजाने लगें। बस में सफर करना है, तो आप बस में भी ऐसा कर सकते हैं। रास्ते में बैठे हुए हैं, तो कोई अच्छा भजन गाना शुरू कर दीजिए। इससे लोगों के दिलों में एक नई जाग्रति पैदा होगी। यह छोटी-छोटी बातें हैं। आप कहीं जा करके प्रज्ञा-पुराण की कथाएँ भी कह सकते हैं, रात को सत्संग कर सकते हैं। इस तरह आप में से हर एक आदमी को, जहाँ भी जिस भी क्षेत्र में ज्ञान की दृष्टि से अभावग्रस्त आदमी दीखें वहाँ ही जनजागरण का काम आरम्भ कर दें। पढ़े और बिना पढ़े का फर्क मत कीजिए। इसलिए आपको शिक्षण करने में फर्क करने की जरूरत नहीं है कि आप किसको कहें, किसको न कहें ? आप सभी से कहिए। हर आदमी इन मामलों में दरिद्र है। हर आदमी को आपके ज्ञान की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता है। इसलिए आपको तीर्थयात्रा की योजना बना लेनी चाहिए। सम्भव हो सके, तो अपने घर से हरिद्वार के लिए चलिए, मथुरा के लिए चलिए। यह भी दो गायत्री के बड़े तीर्थ हैं। दर्शन करने के लिए तो तीर्थ बहुत सारे हैं; लेकिन ऐसे तीर्थ जिनमें प्रेरणा मिलती हो, कहीं नहीं है या तीर्थों में जा करके तप करते हैं, तीर्थों में जा करके प्रायश्चित करते हैं। लाखों आदमी अभी भी जाते हैं और प्रायश्चित की विधि पूरी करते हैं, मुंडन-संस्कार कराते हैं, तीर्थ में नहाते हैं, वहाँ जा करके गऊदान करते हैं, ब्राह्मण भोजन कराते हैं—यह सब बातें यह बताती हैं कि तीर्थयात्रा का स्वरूप क्या होना चाहिए था ? तीर्थयात्रा से पाप कटते हैं, अर्थात् पापों का खामियाजा पूरा होता है। कैसे ? मैंने बताया न आपको कि जनसम्पर्क साधना चाहिए और अलख जगाना चाहिए। इसके अलावा तीर्थयात्रा में और भी कई बातें बतायी गई हैं। आप उस समय एकान्त में रहकर अपने प्रायश्चित की साधनाएँ कीजिए, उपासनाएँ कीजिए, आत्म-परिष्कार के लिए पृष्ठभूमि बनाइए।

प्राचीनकाल में तीर्थों में दो तरह के लोगों के शिक्षण का प्रबन्ध था। एक बच्चों का शिक्षण, जिनको गुरुकुल कहते थे। गुरुकुलों में, जितने भी गुरुकुल थे, सब तीर्थ-स्थानों में बने हुए थे। तीर्थस्थानों की वजह से गुरुकुल बनाए गए अथवा गुरुकुलों की वजह से तीर्थस्थान बन गए—यह समय इस तरह की बहस करने का नहीं है। दोनों एक ही बात हुई। प्राचीनकाल में जहाँ गुरुकुल थे, वहाँ स्कूल खुलवा दिए गये, उनको तीर्थ बना दिये गए। राजस्थान का वनस्थली विद्यालय को हम तीर्थ कहते रहे हैं। बाबा साहब आमटे के अपंग चिकित्सालय को हम तीर्थ कहते रहे हैं। तीर्थ पहले थे ? पहले तो नहीं थे, अब अच्छे व्यक्तियों से तैयार हो गए अथवा प्राचीनकाल में वे तीर्थ बने थे, तो किसी श्रेष्ठ कार्य से बने थे। आप हरिद्वार की तैयारी कर सकते हैं, आप मथुरा की गायत्री तपोभूमि जाने की तैयारी कर सकते हैं। साइकिल से आप चलें, गाँव-गाँव जाएँ, घर-घर रुकें, दीवालों पर आदर्श-वाक्य लिखें, ढपली से गीत और संगीत सुनाएँ, रात को प्रवचन की व्यवस्था करें, यज्ञ आदि की बात सोचें, अच्छे साहित्य को लोगों तक पहुँचाने का प्रयत्न करें। अगर आप ऐसे कार्य करते हो, जिससे जन-जीवन में नवचेतना भरने का मौका मिलता हो और आपको सेवा करने का, श्रम करने का, त्याग करने का एवं रास्ता दिखाने का मौका मिलता हो, तो समझना कि तीर्थयात्रा के पीछे का उद्देश्य सफल हुआ। मुंडन कराते थे तीर्थों में लोग इसका यही मतलब था कि हमने पुराने विचारों को, बुरे विचारों को बदल दिया है। मस्तिष्क के ऊपर उगे हुए बालों को अपने कुविचारों का प्रतीक मानते थे और प्रतीक मानकर ऐसा करते थे। यही था जिसके लिए लोगों को अभी तक प्रोत्साहन मिलता है। शास्त्रों में तीर्थों का इतना ज्यादा माहात्म्य बताया है कि शायद और किसी चीज तथा और किसी पुण्यफल का न बताया हो। तीर्थ अवश्य जाना चाहिए—मुसलमान धर्म में भी ऐसी मान्यता है। मक्का एक बार जिन्दगी में वे अवश्य जाना पसन्द करते हैं। हिन्दू धर्म में भी ऐसा ही मत है कि तीर्थयात्रा जरूर करनी चाहिए लेकिन तीर्थयात्रा उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए तभी उसका लाभ है; अन्यथा नहीं। आप जिस तीर्थ में जाएँ, वहाँ कुछ दिन निवास कीजिए, साधना कीजिए, तपस्या कीजिए, उपासना कीजिए और ऐसे वातावरण और सत्संग में रहिए, जिससे कि आप पिछले वाले घिनौने भूतकाल को छोड़ करके उज्ज्वल भविष्य में प्रवेश करने में समर्थ हो सकें। यह कार्य वातावरण से ताल्लुक रखता है, यह कार्य उसकी सामग्री से ताल्लुक रखता है, यहाँ यह कार्य प्राणदायक प्रक्रिया से ताल्लुक रखता है। तीर्थों में पहले सारी बातों की सुविधाएँ होती थीं, इसलिए लोग तीर्थों में जाते थे और वहीं निवास करते थे। अनुष्ठान तो अपने घर रहकर भी किया जा सकता है; पर अच्छे वातावरण में रह करके अनुष्ठान करना एक बात है और घिनौने वातावरण में, घिसे-पिटे वातावरण में, काम-वासना के वातावरण में, लोभ और मोह के वातावरण में रहकर करलें, तो वह एक चिन्ह-पूजा जैसी प्रक्रिया होगी। वातावरण का भी बड़ा महत्त्व था, इसलिए प्राचीनकाल में तीर्थयात्रा के लिए वातावरण को भी देखा जाता था। ऋषियों का सान्निध्य, तपश्चर्या का उपक्रम, यह सारी बातें होती थीं। आप यह मानकर चल सकते हैं कि आप यहाँ जो कल्प-साधना शिविर में आये हैं, वह वास्तव में एक महीने के तीर्थ-सेवन सत्र जैसा है। इसे तीर्थसत्र भी कह सकते हैं। तीर्थों में ऐसी ही परम्परा होती थी। अभी भी ऐसा होता है। प्रयाग में माघ के महीने में इससे ही मिलते-जुलते शिविर होते हैं, सत्र होते हैं, जैसे कि आप यहाँ रहकर कर रहे हैं। एक महीने तक त्रिवेणी में, बालू में झोंपड़ी डालकर रहते हैं—न कहीं बाहर जाते हैं, न बाहर आते हैं—न किसी के घर-गृहस्थी की चिन्ता करते हैं, न अपनी चिन्ता में डूबे रहते हैं, सिर्फ आत्मकल्याण की चिन्ता करते हैं। आत्म-कल्याण, लोक-कल्याण की चिन्ता में डूबे रहने के कारण घर-गृहस्थी से जुड़े हुए सम्बन्धों के बारे में एक महीने के लिए वैरागी हो जाते हैं। घर वालों से कह देते हैं कि घर-गृहस्थी के समाचारों की चिट्ठी-पत्री मत डालना, हमें किसी लेन-देन की खबर मत देना, कोई विकट परेशानी आती हो, तो अपने ढंग से हल करना, हम तक मत आना और हमारे सपने में विघ्न मत डालना। घर वाले भी इन बातों का ध्यान रखते हैं। जरूरत पड़ने पर सिर्फ इतना ही पूछते हैं कि किसी सामान की आवश्यकता तो नहीं है, कोई चीज तो नहीं चाहिए ? बस, जिस सामान की जरूरत होती है, लाकर दे देते हैं, बाकी सारे-का-सारा समय तीर्थयात्री या कल्प-साधक त्रिवेणी-तट पर गुजारा करते हैं।

आप भी इसी तरह मानकर चलिए कि आपको अपने गुनाहों को ठीक करना है, अपने भावी कुसंस्कारों को धो करके साफ करना है तथा भावी जीवन के लिए कोई ऐसी रूपरेखा निर्धारित करनी है, जिसको इष्टापूर्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा जा सके, क्षतिपूर्ति कहा जा सके। इस कल्प-साधना में आत्मपरिष्कार और आत्म-परिशोधन की प्रक्रिया उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, जैसा कि आपको पूजा-उपासना, जप और योग करने के लिए बताया गया है। यह बहुत ही मूल्यवान है, इसलिए आप इस ओर भी ध्यान रखें और ऐसी जिन्दगी प्राप्त करें, जिस पर सन्तोष ही नहीं, गर्व और गौरव भी अनुभव किया जा सके। बस, आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

तीर्थसेवन का महत्त्व और प्रयोजन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

'तीर्थ' शब्द याद करके कितना आनन्द आता है, कितनी प्रसन्नता होती है ? प्राचीनकाल में तीर्थ जब अपने वास्तविक स्वरूप में रहे होंगे, तब कितना आनन्द आता होगा ? वहाँ जाने के बाद लोग अपने कलुष और कषायों को धो करके, पुनीत और पवित्र होकर कैसे निकलते होंगे ? गंगा के बार में तो मुझे ज्यादा मालूम नहीं है कि उसके पानी में नहाने के बाद में आप पुनीत और पवित्र हो जाते हैं कि नहीं; पर एक और ज्ञान-गंगा के बावत में आपको यकीन दिला सकता हूँ। उस ज्ञान-गंगा में, वास्तविक तीर्थ में अगर आपको रहने का मौका मिल जाए, तो यकीन रखिए आप अपने आपको धोकर तो जाएँगे ही, भविष्य में आपका कपड़ा धुला हुआ रहेगा। क्यों ? इसलिए कि आपने वहाँ रहकर के उपासना की है, साधना की है और उपासना-साधना करने के साथ-साथ में अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए वहाँ के वातावरण का लाभ उठाया है, वहाँ जो ऋषि रहते हैं, उनके परामर्श से रास्ता भी आप तलाश करते हैं और उस रास्ता तलाश करने में एक रास्ता यह भी है कि आपने अब तक जो गलतियाँ की हैं उनका प्रायश्चित कैसे हो ? भरपाई कैसे हो ? आप उसके लिए उदार, सहयोग क्या करें ? आप उसके जन-सेवा के लिए क्या कदम उठाएँ ? इसके लिए आप अपने गुण, कर्म और स्वभाव में शालीनता का समावेश करने के लिए ऐसी गतिविधियाँ क्या अपनायेंगे, जो आपके संस्कारों के रूप में परिणत बन सकें ? जप ? नहीं, जप से संस्कार नहीं बनते, रामायण पाठ से भी संस्कार थोड़े ही बन जाएँगे। पूजा के साथ-साथ में आपको कुछ-न-कुछ कृत्य भी करने पड़ेंगे। विचार और कृत्य दोनों का समावेश करने के बाद ही यह सम्भव है कि समग्र प्रक्रिया पूर्ण हो जाए। वास्तव में अध्यात्म का मतलब संस्कार पैदा करना है और संस्कार ज्ञान और कर्म दोनों के समन्वय से ही होते हैं। ज्ञान में पूजा आती है, पाठ में रामायण पाठ आता है, सत्संग आता है, स्वाध्याय आता है—यह ज्ञान-पक्ष है और कर्म-पक्ष ? कर्म-पक्ष उसे कहते हैं, जिसमें सेवा का समावेश होता है, परोपकार का समावेश होता है, पुण्य-कर्मों का समावेश होता है, जन-कल्याण का समावेश होता है। इन दोनों को अगर आप मिला देंगे तो आपकी प्रक्रिया पूर्ण हो जाएगी। बिजली के दो तार मिल जाने से करण्ट चालू हो जाता है। आप ज्ञान और कर्म का समावेश अगर कर पाएँ, तो आपकी उपासना पूर्ण हो जाएगी और आप उस अध्यात्म के चमत्कार को देख पाएँगे जिसकी चर्चा शास्त्रों में की गई है।

आपको तीर्थों का महत्त्व बताते हुए प्राचीनकाल के तरीके से यह बताया था कि अगर कहीं तीर्थ मिल जाए और आपको उस तीर्थ में रहने का सौभाग्य मिल जाए, तो आप वहाँ उसी प्रक्रिया को ग्रहण करना, जो करनी चाहिए। अगर आप शान्तिकुंज को गायत्रीतीर्थ मानते हैं, तो यहाँ रह करके अपना समय सुव्यवस्थित रूप से व्यय कीजिए, यहाँ सुव्यवस्थित रूप से व्यय करने का एक क्रम बैठा हुआ है। सुबह उठने से लेकर सायंकाल सोने तक का एक टाइम-टेबुल बना हुआ है। यह पूरे-का-पूरा टाइम-टेबुल इस बात पर निर्भर रहता है कि आपकी गतिविधियाँ क्या होनी चाहिए ? आपको अनुशासित कैसे होना चाहिए ? आपको संयमी कैसे रहना चाहिए ? आपको तपस्वी की तरह जीवन-यापन कैसे करना चाहिए ? यह जीवन-यापन करने की पद्धति, दिनचर्या का प्रावधान ऐसा है—इसको आप ग्रहण कर लेते हैं तो भी आप अपने आपको प्रशिक्षित करने में बहुत कुछ सफल होते हैं। यहाँ का एक वातावरण भी है, सेनिटोरियमों का एक वातावरण भी होता है। इलाज तो कहीं भी कराये जा सकते हैं; पर सेनिटोरियम, जिसमें डॉक्टर भी रहते हैं, वातावरण भी अनुकूल है, क्लाइमेट भी उपयुक्त है, वहाँ रहने से आदमी जल्दी अच्छे हो जाते हैं। सेनिटोरियम में रह करके जो फायदा उठाया जा सकता है, वही प्राचीनकाल के बच्चे गुरुकुलों में रहकर उठाते थे। बड़ी उम्र के आदमी आरण्यकों में रहते थे। आरण्यक बड़े आदमियों के लिए सेवा-साधना के विद्यालयों को कहते हैं। बुद्ध ने बहुत सारे संघाराम बनाये थे, विहार बनाये थे। उसमें लोकसेवा के लिए इच्छुक लोगों की शिक्षाओं का, निवास करने का प्रबन्ध था। यह आरण्यक कहलाते थे। इनको बुद्ध-विहार कहिये, आप आरण्यक कह लीजिए—नाम और शब्दों से क्या फर्क पड़ता है ? ऐसे स्थान जहाँ कहीं भी हों, वहाँ आदमी को अपनी आत्मसाधना करनी पड़ती है। तीर्थ वे थोड़े ही हैं कि जहाँ खिलौना देखा, पैसा फेंक दिया। बस, यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ धक्के खाते फिरे और जहाँ-तहाँ दान-पुण्य के बहाने जेब कटाते फिरे। यह सब तो भाई साहब अज्ञानियों का जंजाल है। आप इन अज्ञानियों के जंजाल से दूर रह करके तीर्थयात्रा की गहराई तक जानने की कोशिश कीजिए। तीर्थयात्रा की गहराई यह है कि आप उतने समय, जितने समय तीर्थ-सेवन करें, उतने समय के लिए अपने आपका परिशोधन करें, भूतकाल के गड्ढे भरने की कोशिश करें और भावी योजनाओं को बनाने की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कोशिश करें। भविष्य में हम क्या बनेंगे, इसके लिए आज के वर्तमान में हमको तपश्चर्या करनी चाहिए। आज के वर्तमान की तपश्चर्या का मतलब है—भावी जीवन के लिए नीति-निर्धारित करने का संकल्प। ऐसे करेंगे, तो आपका तीर्थ-सेवन सशक्त हो जाएगा।

आप यहाँ आये हैं, तो यह मानकर चलिए कि यहाँ कल्प-साधना शिविर में बुड्ढे से जवान बनने के लिए नहीं, बल्कि अपना अन्तरंग-परिष्कार के लिए आये हैं। इसलिए जितना भी समय है, आप इसको स्वाध्याय में लगाइये, आत्म-चिन्तन में लगाइये, चिन्तन में लगाइये, मनन में लगाइये, पूजा में लगाइये, उपासना में लगाइये और अच्छे लोगों के सम्पर्क में लगाइये, अच्छे वातावरण में लगाइये, गंगा के किनारे जा करके रहिए। पूरे-का-पूरा समय आपका ऐसा हो, जिसमें कहीं अवांछनीयता के लिए कहीं गुंजायश न हो। आपका चिन्तन ऐसा हो, जिसमें अवांछनीयता के लिए कोई गुंजाइश न हो। ऐसे हैं ये तीर्थ। ये हमने बनाये हैं। मान्धाता की सहायता से जगद्गुरु शंकराचार्य ने चार धाम बनाये थे, चार तीर्थ बनाये थे। वह शानदार तीर्थ बनाने के इच्छुक थे, इसलिए उन्होंने शानदार ही बना डाले। भगवान बुद्ध ने बहुत सारे तीर्थ बनाये थे। कहाँ बनाये थे ? सारे भारतवर्ष में बुद्धों के विहार, संघाराम, बुद्धों के विहार ..... । उन विहारों में शिक्षण-साधना चलती थी। ये बुद्ध-विहार थे। तीर्थ कहेंगे ? बिल्कुल मैं कहूँगा। भगवान महावीर ने भी ऐसा ही किया था। समर्थ गुरु रामदास ने भी ऐसा ही किया था। समर्थ गुरु रामदास ने महाराष्ट्र के हर गाँव में दौरा किया था और वहाँ की, उस समय की परिस्थिति के हिसाब से हनुमान जी के मन्दिर बनवा दिये थे—महावीर मन्दिर बनवा दिये थे। पैसे का प्रबन्ध कहाँ हो सकता था ? विचारशील बातों में कोई आदमी कहाँ पैसा खर्च करता है ? गरीबों को चाहें तो आप बहका दीजिए, मालदार को बहकाने के तरीके अलग हैं। उन तरीकों को अख्तियार कर लीजिए; मालदार भी खूब बहकते हैं, कम बहकते हैं क्या ? गरीबों की जेब कटती है, तो उनकी भी जेब कटती है और गरीबों को उल्लू बनाया जाता है, तो मालदार और भी ज्यादा उल्लू बनते हैं। इसलिए मैं उसकी बात नहीं कहता। किसकी ? कि बड़े शानदार मन्दिर बनाना जरूरी है या बना सकते हैं क्या ? समर्थ गुरु रामदास ने महावीर मन्दिर बनवाये थे। कैसे बनवाये ? मिट्टी की दीवारों से फूँस के झोंपड़ों के बने हुए थे। हनुमान जी की मूर्तियाँ कैसे बनायीं ? हनुमान जी की मूर्तियाँ उन्होंने गाँव में पड़े हुए पत्थरों के टुकड़ों से स्थानीय कारीगरों के माध्यम से जैसे-तैसे बना लिए। कहीं उलटे, कहीं पुलटे। उसमें क्या किया ? उनके लिबास कहाँ से आए ? पोशाक कहाँ से आये ? शृंगार कहाँ से आये ? उन्होंने सिन्दूर से उनको लपेट दिया और सिन्दूर से उन पत्थरों को लपेट देने के बाद में, हनुमान जी की मूर्ति बना दी, बालाजी की मूर्ति बना दी। फिर क्या हुआ उनका ? वहाँ लोग पूजा करते थे ? पूजा 'भी' करते थे, पूजा ही नहीं करते थे। आज की खराबी यह है कि हमारे मन्दिरों में अब केवल पूजा ही होती है। होना यह चाहिए कि पूजा भी हो, बाकी समय में कुछ और भी हो। समर्थ गुरु रामदास ने जगह-जगह इस तरह का प्रबन्ध किया कि उन्होंने हर महावीर मन्दिर के साथ में व्यायामशालाओं को अविच्छिन्न अंग के रूप में जोड़े रखा। स्वास्थ्य संवर्द्धन, साहस संवर्द्धन, सन्तुलन का संवर्द्धन और अनुशासन का परिपालन—इसके लिए उन्होंने हर जगह ऐसी व्यायामशालाएँ बनवायीं। व्यायामशाला एक तरह के विद्यालय थी, जिसमें गाँव के बच्चे, बड़े आदमी, छोटे आदमी, औरतें, जिसको भी विद्या का शौक था, वह जाए और वहाँ के पुजारी से विद्या प्राप्त करे। इसके अलावा रात्रि को कथाएँ होती थीं। कथाओं का अर्थ है—प्राचीनकाल के ऐतिहासिक घटनाक्रमों को सुना करके आज की समस्याओं का समाधान। कथा का मतलब यह नहीं है कि आप इधर की गप्पबाजी, उधर की गप्पबाजी करें कि श्रीकृष्ण भगवान ने सोलह हजार एक सौ आठ रानियों से शादी की; एक-एक से आठ-आठ बच्चे पैदा हुए। यह सब बेकार की बातें, बे-सिलसिले की बातें हैं, जिनका कि न कुछ माइने है, न कोई मतलब है, न इन शिक्षाओं की आज कोई उपयोगिता है, न प्राचीनकाल में उपयोगिता थी। आप कथाएँ इन्हीं को कहते हैं कि शंकर जी ने गणेश जी का सिर काट दिया और हाथी का चिपका दिया ! इन बातों का क्या मतलब है ? न यह पुराण है और न सत्संग है। कथा के पीछे उद्देश्य और लक्ष्य होना चाहिए। प्राचीनकाल में समर्थ गुरु रामदास की लिखी 'दासबोध' की कथाएँ हर महावीर मन्दिर में होती थीं। उन्हें एक नया ही शास्त्र बनाना पड़ा, नया ही पुराण बनाना पड़ा, नया ही वेद बनाना पड़ा। क्या करते बेचारे ! उस कूड़े-कचरे में से क्या चीज पल्ले पड़ती ? आज आपको इस कूड़े-कचरे में से क्या चीज पल्ले पड़ने वाली है ? कुछ भी तो नहीं है, सिवाय आफत पैदा करने के और दिमाग खराब करने के, पुरानी गप्पबाजियाँ खड़ी करने के, अपना समय और दूसरों का समय बर्बाद करने के अलावा क्या है कथा ? इसलिए कथा भी उन्होंने बनाई और कथा की परम्परा को जिन्दा रखा और ऐसे शानदार ढंग से जिन्दा रखा कि मजा आ गया। शिवाजी की सारी सेना को समर्थन वहीं से मिला, हथियार वहीं से मिले, अनाज वहीं से मिला और आजादी की लड़ाई उन महावीर मन्दिरों से भी लड़ी गई।

उसी तरीके की पुनरावृत्ति आज भी हुई है। हमने दो धाम पहले बनवाये थे। मथुरा का धाम बनवाया और एक यहाँ का बनवाया। एक संगठन के लिए बनाया, एक शिक्षण के लिए बनाया। फिर क्या किया ? जगत् गुरु शंकराचार्य ने चार तीर्थ बनाये थे, महावीर भगवान के समर्थ गुरु रामदास ने सारे महाराष्ट्र में दो हजार के करीब मन्दिर बनाये थे। आज हमारे भी मन्दिरों की बहुत बड़ी संख्या है और बनती हुई चली जा रही है। गायत्री शक्तिपीठ के नाम से चौबीस सौ मन्दिर बना दिए। अभी और भी बहुत सारे मन्दिर बनने जा रहे हैं। इनके लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोशिश हमारी यही थी कि इनको गायत्रीतीर्थ का रूप दिया जाए और तीर्थों में मन्दिर नहीं, बल्कि वहाँ इनको शिक्षण-संस्था के रूप में विकसित किया जाए। वहाँ शिक्षण चले, ज्ञान-वृद्धि के उपदेश चलें, रचनात्मक कार्यक्रमों का प्रयोग चले। ठीक उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमारा यह स्थानीय गायत्रीतीर्थ है। आप ऐसे तीर्थों को मजबूत बनाने के लिए कोशिश कीजिए। तीर्थयात्रा करें, यह तो बहुत अच्छी बात है। तीर्थयात्रा में आपको समय लगाना चाहिए—यह बहुत अच्छी बात है; पर मैं यह पूछता हूँ कि जब तीर्थ नहीं हैं तो कहाँ जाएँगे ? कहाँ हैं तीर्थ ? आपको कहीं दिखाई पड़ते हैं क्या ? मुझे तो कहीं दिखाई नहीं पड़ते। सैरगाह-सैरगाह दिखाई पड़ते हैं। पुरानी ऐतिहासिक घटनाएँ जरूर उनसे जुड़ी हुई हैं; लेकिन वे जीवन्त तो दिखाई ही नहीं पड़ते। लोगों को साधना कराने वाले, मार्गदर्शन करने वाले, परामर्श देने वाले ऋषि, तीर्थ और आरण्यक कहीं भी दिखाई नहीं पड़ते। इसलिए आपको एक काम और भी करना है, जहाँ तीर्थयात्रा करनी हो, वहाँ तीर्थों की स्थापना करने में भी योगदान देना चाहिए, तीर्थों की मरी हुई परम्परा को पुनर्जीवित भी करना चाहिए। कोई आदमी आये और यह तलाश करे कि कैसे होते हैं तीर्थ ! तो आप दिखा तो सकें। आज तीर्थों के स्थान पर सब जगह बड़े-बड़े विशालकाय मन्दिर बने हुए हैं और लोग उनके माध्यम से अपना पेट भरते रहते हैं, झगड़ा करते रहते हैं। तीर्थों के वातावरण, तीर्थों के गुण, तीर्थों के कर्म, तीर्थों के उद्देश्य और तीर्थों के लक्षण सब ऐसे ही गायब हो गए। डुबकी लगाइये, खिलौना देखिये, पैसा चढ़ाइये, मन्दिर देखिये। इसके अलावा भी कुछ होता है तीर्थ ? नहीं भाईसाहब ! यह तो बिल्कुल उपक्रम है। असली बात तो तीर्थ की अलग होती है। उसमें ज्ञानगंगा बहती है, जहाँ प्रेरणा मिलती है, जहाँ दिशा मिलती है, जहाँ भावनाओं को उभारा जाता है, आदमी को समुन्नत स्तर का बनाया जाता है—ऐसे तीर्थों की स्थापना और पुनर्जीवन आवश्यक पड़ गया, इसीलिए हमने तीर्थों की स्थापना की है। आप भी इन तीर्थों की स्थापना में योगदान दीजिए। जहाँ तीर्थ बन चुके हैं, उनको मजबूत बनाने की कोशिश कीजिए। जहाँ नहीं बने हैं, वहाँ बनाने की कोशिश कीजिए।

यहाँ के सारे गायत्री-तीर्थों में हमने शिक्षण का प्रबन्ध करने के लिए प्रावधान है। यहाँ बच्चों की पाठशाला, बुड्ढों की पाठशाला, बड़ों की पाठशाला, महिलाओं की पाठशाला चलनी चाहिए। यहाँ आसनों और प्राणायामों के केन्द्र होने चाहिए। यहाँ जड़ी-बूटियों के सहारे चिकित्सालय चलने चाहिए। यहाँ रात्रि को कथाएँ होनी चाहिए। यह सारे काम होने चाहिए, तभी तो हम यह कह सकेंगे कि इन तीर्थों को गायत्री मन्दिर कहिये या तीर्थ कहिये बात एक ही है। आप अपने ही लिए केवल तीर्थयात्रा पर न निकलें, बल्कि नए आदमियों के लिए रास्ता भी बनाएँ। तीर्थयात्रा के लिए कोई आदमी जाने वाला हो, तो उसको यह मालूम तो हो कि तीर्थ कहाँ हैं ? किस जगह जाएँ ? किसके पास जाएँ ? क्या करें वहाँ जा करके ? सैरगाहों में क्या करेंगे जा करके ? सैरगाहों में कितने आदमी आते हैं ! आपने देखे होंगे ? विदेशों में भी घुमक्कड़ लोग जाते हैं। कोई नैनीताल जाता है, कोई कहीं जाता है, कोई दार्जिलिंग जाता है, कोई आगरे का किला देखने जाता है, कोई दिल्ली की सैर करने जाता है, कोई बम्बई जाता है। आप भी चले जाइये, धामों में चले जाइये, कोई फर्क नहीं है। इसलिए फर्क करने वाले तीर्थ तो बनाने ही पड़ेंगे, उनको नव-जीवन देना पड़ेगा, उसमें नए प्राण-संचार करने पड़ेंगे। हमने इस दिशा में कदम बढ़ाया है। आप हमसे कन्धा मिलाइये, हमारे हाथ-से-हाथ मिलाइये, हमारे कदम-से-कदम मिलाइये। थोड़ा-सा हमने प्रयत्न किया है, थोड़ा आप इसमें सहयोग कीजिए। कर सकते हैं ? जरूर कर सकते हैं। आप मान्धाता तो नहीं हैं; लेकिन उसके बनाने में कुछ तो कर ही सकते हैं, इसके निर्माण में किसी तरह तो योगदान दे ही सकते हैं। अपने पास धन न हो, तो पड़ोसी से माँग सकते हैं, मित्रों-रिश्तेदारों से लेकर भी इसमें लगा सकते हैं। आप दूसरे लोगों को तीर्थयात्रा करने के लिए ऐसे मौके दें, स्थान बनाएँ, वातावरण बनाएँ—यह आपको एक बहुत बड़ा काम करना है। आप मान्धाता की तरह तीर्थों की स्थापना करने के लिए कुछ कर सकें, तो जरूर करें। आप अहिल्याबाई की तरह तीर्थों का उद्धार करने के लिए फिर से कुछ कर सकते हों, तो अपने ढंग से अवश्य करें। अहिल्याबाई ने मन्दिरों के जीर्णोद्धार कराये थे। अब उनके फिर से जीर्णोद्धार कराने हैं और जीर्णोद्धार ही क्या ! मैं तो यह कहता हूँ कि इन मरे हुओं को जिन्दा करना है। उनके लिए कम-से-कम जीर्ण तो था, यहाँ तो जीर्ण भी नहीं है, खण्डहर पड़े हैं। खण्डहरों की तरह थोड़े-से नाम-निशान पड़े हैं, जहाँ कभी तीर्थ रहे होंगे। उनको जीवन्त करने के लिए मित्रो ! क्या करना चाहिए ? उनको अपने प्रायश्चित में सम्मिलित कर लीजिए। प्रायश्चित प्रक्रिया पूरी करने का एक तरीका और भी है। जहाँ अब तक गायत्री शक्तिपीठें बन गई हैं, उनमें एक काम की बहुत कमी है कि वहाँ ऐसे प्राणवान् परिव्राजक नहीं हैं, जो वहाँ रहें और वातावरण को हिला दें, वातावरण को जगा दें। बड़ी मुश्किल से कहीं पण्डा मिल गया, कहीं पुजारी मिल गया, कहीं आरती करने वाला मिल गया, कहीं नौकर मिल गया, कहीं कर्मचारी मिल गया, कहीं झाड़ू लगाने वाला मिल गया। बस, इसी तरह बेचारे जैसे-तैसे काम चला रहे हैं। ऐसे प्राणवान परिव्राजकों का घोर अभाव है, जो वहाँ रहें और अपनी निष्ठा से, अपनी सेवा-भावना के आधार पर उस सारे क्षेत्र को जगा दें और सारे क्षेत्र का वातावरण ऐसा बना दें, जैसाकि तीर्थों का होना चाहिए। तीर्थों का एक विशेष वातावरण होता है। वहाँ जो कोई भी जाता है, वह उस ढाँचे में ढलने लगता है। वातावरण बनाना नौकरों का काम नहीं है, कर्मचारियों का काम नहीं है, पुजारियों का काम नहीं है, प्राणवानों का काम है। आप प्राणवान मालूम पड़ते हैं। इस कायाकल्प

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चिकित्सा की कल्प-साधना में आये हुए हैं। प्राणवान न होते तब, आप क्यों आ पाते ? कष्ट कैसे उठा पाते ? हर आदमी तो माल मारने के लिए, भगवान् जी के मन्दिरों में फोकट का प्रसाद पाने के लिए घूमता रहता है। त्याग कौन करता है ? भूखा कौन रहता है ? अपने घर का काम कौन छोड़ता है ? आपके अन्दर वह शराफत मालूम पड़ती है और जिन्दगी मालूम पड़ती रहेगी। आध्यात्मिकता का परिचय मालूम पड़ता है तथा और भी कई चीजें मालूम पड़ती हैं। अगर यह बात सही है, तो आपको अगला वाला समयदान देने के लिए एक ही स्थान चुनना चाहिए वह है—शक्तिपीठ। परिव्राजक के अलावा, घूम-घूमकर प्रचार करने के अतिरिक्त एक तरीका यह भी है कि आप किसी समीपवर्ती शक्तिपीठ में चले जाएँ, वहाँ कुछ समय तक निवास करें और निवास करने के बाद में अपने जीवन को न केवल परिष्कृत करें, बल्कि उस क्षेत्र को जगा देने की सेवा-साधना में भी संलग्न हो जाएँ। यह भी आपका बढ़िया वाला प्रायश्चित है। यदि ऐसा आप कर सकें, तब मैं बराबर यह कहूँगा कि आपने तीर्थयात्रा का मर्म समझ लिया और उसे करने के लिए कदम बढ़ा लिया। दो काम तो यह कीजिए।

और क्या करें ? और यह कीजिए कि इन तीर्थों की देश और विदेशों में स्थापना करने का हमारा बड़ा मन है। आप हमारा हाथ बँटाइए। हाथ बँटा देंगे, तो आपके सहयोग से हम इतना बड़ा काम कर सकेंगे कि तीर्थों का पुण्य, जैसा कि धर्म-ग्रन्थों में लिखा हुआ है, वास्तव में सही हो जाए। आप उसमें सहयोग दोनों ही तरीके से कर सकते हैं। तीर्थों में दान-पुण्य की भी परम्परा है, क्षतिपूर्ति के लिए आर्थिक सहयोग की भी परम्परा है, ब्राह्मण भोजन की परम्परा है। पहले लोग जब तीर्थयात्रा जाते थे तो घर लौटने पर जप कराते थे, कथा कराते थे, भागवत् कराते थे, दान भी करते थे। तीर्थों में भी दान कर देते हैं, घर आकर भी दान कर सकते हैं। आखिर यह दान है क्या ? वास्तव में यह समयदान का ही दूसरा रूप है। समय दान जो आदमी नहीं कर सकते, वह अर्थदान कर सकते हैं। समयदान और अर्थदान दोनों सम्भव हो सके, तो और अच्छा; लेकिन नहीं हो सके, तो आप समय के बदले में दूसरे आदमियों का समय खरीदकर भी ऐसा कर सकते हैं। आप नहीं करना चाहते ऐसा, तो मत कीजिए। आपके स्थान पर कोई और आदमी काम कर देगा। आप उसके गुजारे का प्रबन्ध कर दीजिए। गुजारे का प्रबन्ध कर देते हैं, तो अपने काम करने के बराबर बात बन गई। अपने यहाँ गायत्री परिवार में हजारों-लाखों लोग ऐसे हैं, जो सेवा करने के बड़े इच्छुक हैं; पर क्या करें ? घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियाँ ऐसी हैं कि इनको कुछ दिये बिना, अपने शरीर का निर्वाह किये बिना, कपड़ा दिये बिना इनका काम नहीं चलता। कपड़ा हम अपने घर से ले आये हैं, खाना अपने घर से ले आये हैं, बच्चों का प्रबन्ध अपने घर से कर आये हैं—ऐसे आदमी हो तो सकते हैं; लेकिन बहुत कम हैं। अधिकांश लोग ऐसे हैं, जिनको खर्च चाहिए, पेट भरने को अन्न चाहिए। इस तरह समाजसेवी, लोकसेवियों की कितनी बड़ी संख्या रुकी पड़ी है; उनका हम गुजारे का प्रबन्ध नहीं कर सके, रोटी का प्रबन्ध न कर सके, कपड़े पहनाने का साधन हमारे पास नहीं है और जिनकी बहुत जरूरत पड़ रही है, उनके बच्चों के लिए नमक-रोटी का इन्तजाम करने में हम समर्थ नहीं हो सके। इसलिए हजारों-लाखों कार्यकर्त्ता, जो आज समाज के नये उत्थान, नये निर्माण करने के लिए आवश्यक थे, हमको नहीं मिल पा रहे हैं; क्योंकि उन ब्राह्मणों के लिए रोटी हमारे पास नहीं है। आप अपने खर्चे में कटौती करके दान भी दे सकते हैं, यह प्रायश्चित के तरीके हैं।

तीर्थयात्रा में डुबकी मारना ही जरूरी नहीं है, जप करना ही जरूरी नहीं है, पंचामृत पीना, मन्दिरों के दर्शन करना—यह सब आवश्यक नहीं है। असली बात भी तो सोचिये, बिल्ली के गले में घण्टी भी तो बाँधिये, वास्तविकता के नजदीक तो आइये, आप कुछ त्याग भी तो कीजिये, सेवा की बात भी तो सोचिये, मन से उदार तो बनिये, कुछ कष्ट भी तो उठाइये, कुछ मेहनत भी कीजिये। कुछ करके भी तो दिखाइये। नहीं, साहब ! हम तो पंचामृत पियेंगे, बेकार की बात करेंगे, गंगाजी में डुबकी मारेंगे, प्रायश्चित करेंगे। ऐसे कहीं प्रायश्चित होते हैं। खामियाजा चुकाने के लिए तीर्थ सबसे अच्छे माने गए हैं, इसीलिए तीर्थयात्रा के लिए मैंने आपसे निवेदन किया। बस, आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

साधना में श्रद्धा की महत्ता और वातावरण की उपयोगिता

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

कुछ काम ऐसे होते हैं जिसे बाहर के लोग कर सकते हैं, किन्तु कुछ काम ऐसे हैं, जो स्वयं करने चाहिए। दोनों मिलकर एक पूर्णता बनाते हैं। अकेले बाहर के आधारों से आज तक किसी का काम नहीं चला और न ही अकेले के प्रयास से ही कोई आदमी आज तक सम्पन्न बना है। जब दोनों का सहयोग होता है अर्थात् बाहर का अनुदान और अपना पुरुषार्थ दोनों को मिलाकर के फिर एक बात बन जाती है। खाना पकाकर किसी ने दिया, भोजन बहुत सुन्दर और पौष्टिक भी है, लेकिन उसे हजम तो आपको ही करना पड़ेगा। मुँह से तो उसे आप ही चबायेंगे। ऐसा नहीं हो सकता कि बाहर वाला ही चबाकर उसे आपके मुँह में डाल जाय और फिर आपके पेट में बैठकर उसे हजम करके खून में शामिल कर दे। यह काम मुश्किल ही नहीं असम्भव भी है। यह काम तो हर हालात में आपको ही करना चाहिए। बाहर का आदमी अधिक से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिक यह कर सकता है कि आपको बहुमूल्य भोजन बिना कीमत के भी पकाकर दे दे और आपको सम्मान-पूर्वक खिलाए। इतने से ही उसका काम पूरा हो जाता है, अब आपका काम है कि उसको आप सँभालें। आपकी जब शादी हुई थी, तब आपको एक अच्छी-खासी धर्मपत्नी मिली थी, वह किसने दी थी ? उस लड़की के माता-पिता ने बड़ी मेहनत से अच्छी सुयोग्य लड़की बना करके पाल-पोष कर सुशिक्षित बनाकर उसे आपके हवाले किया था। उनका काम पूरा हो गया, लेकिन आपका काम बाकी रह गया है कि घर में धर्मपत्नी के आने के बाद उसकी देखभाल करें, उसकी जिम्मेदारियों को वहन करें। अगर आप उसकी जिम्मेदारियाँ वहन नहीं कर सकते, उसके रहन-सहन एवं खान-पान का प्रबन्ध नहीं कर सकते और आप उसको पूरी इज्जत देकर सहयोग प्राप्त नहीं कर सकते तो उसके माता-पिता का दिया हुआ अनुदान आपके लिए निरर्थक चला जाएगा और वह जो धर्मपत्नी आपको मिली है, आपके कोई खास काम न आ सकेगी। आपके लिए भार बनकर रहेगी।

मित्रो ! हमने यहाँ जो कुछ भी बनाया है—आपके लिए बहुत कुछ बनाकर रखा है, वह बहुत सुन्दर और शानदार है, लेकिन उसे महसूस तो आपको ही करना है हजम तो आपको ही करना है। हमारी करने की जो सीमा थी वह हमने पूरे तरीके से कर दिया। क्या कर दिया ? आपके लिए एक वातावरण बनाकर के हमने रख दिया यहाँ शान्तिकुंज में। यहाँ क्यों बुलाया है आपको ? वातावरण का लाभ उठाने के लिए बुलाया है। यहाँ जो भी क्रिया-कृत्य आपसे कराये जा रहे हैं, वह तो आप अपने घर पर भी कर सकते हैं। कौन-सी ऐसी चीज है जो आप घर पर नहीं कर सकते थे ? खान-पान सम्बन्धी जो नियम-बन्धन आपको बताये गये हैं, क्या आप उसे घर पर नहीं कर सकते थे ? क्यों नहीं कर सकते थे। कौन-सी ऐसी वजह है जो आप नहीं कर सकते हैं ? यहाँ जो जप और अनुष्ठान कराया जाता है, क्या आप घर पर नहीं कर सकते थे ? जरूर कर सकते थे। जो नियम और मर्यादा पालन करने के लिए यहाँ कहा गया है, वह हमारी पुस्तकें पढ़कर आप घर पर भी कर सकते थे, लेकिन यहाँ क्यों करना पड़ा ? यहाँ का वातावरण ही ऐसा है। इस वातावरण को बनाने के लिए हमने बहुत मेहनत की है। आप वातावरण की कीमत समझिये। वातावरण की कीमत यदि आप नहीं समझते तो बहुत बड़ी भूल करते हैं।

एक बार गुरु वशिष्ठ ने रामचन्द्र जी से कहा—हे राम ! अब बुढ़ापे का समय आ गया है, अतः अब भगवान की भक्ति और जीवन को ऊँचा उठाने के लिए कुछ प्रयत्न करना चाहिए। रामचन्द्र जी ने कहा—तो फिर बताइये इसके लिए क्या किया जाए ? उन्होंने कहा—यहाँ कैसे बताऊँ, इसके लिए तो उपयुक्त वातावरण में चलना पड़ेगा यहाँ ऐसा वातावरण कहाँ है ? यहाँ अयोध्या के जिस वातावरण में आप रहते हैं, वहाँ ऐसी कोई गुंजायश नहीं है, जो बताया जा सके, क्योंकि यहाँ आपके कुटुम्बी रहते हैं, सम्बन्धी रहते हैं, राजपाट के लोग आते रहते हैं। कितने ही आप से विचार-विमर्श करते रहते हैं। कितनों से आपको खीझ पैदा होती है ? कितनों से आपको सहयोग-समर्थन मिलता रहता है। कितनों से आपका लगाव है तो कितनों से आपको नाखुशी है। यहाँ के वातावरण में आध्यात्मिकता को पनप पाने की कोई सम्भावना नहीं है। अतः आपको अयोध्या छोड़नी चाहिए। अयोध्या के साथ जुड़े हुए जो बन्धन आपके साथ हैं, वह जब तक आपको जकड़े हुए रहेंगे, मन भगवान की तरफ चलेगा ही नहीं। भक्ति आप कर नहीं सकेंगे और न अध्यात्म की तरफ का रास्ता ही खुल सकेगा। इसलिए आपको यहाँ से चलना पड़ेगा। रामचन्द्र जी ने कहा—तो फिर कहाँ चलना पड़ेगा ? गुरु वशिष्ठ ने कहा—हमारे नजदीक ही, जहाँ हम रहते हैं। गुरु वशिष्ठ की गुफा हिमालय पर थी। वहीं उन्होंने चारों भाइयों को बुला लिया। रामचन्द्र जी देव प्रयाग में रहने लगे, लक्ष्मण जी वहाँ रहने लगे, जहाँ आज लक्ष्मण झूला है। भरत जी ऋषिकेश में जाकर जम गये और शत्रुघ्न ने मुनि की रेती पर अपना स्थान बना लिया। चारों भाई अलग-अलग रहकर गुरु वशिष्ठ के मार्गदर्शन में शिक्षण प्राप्त करने लगे तो अयोध्या में क्या कमी थी ? अयोध्या में वह वातावरण नहीं था, जो हिमालय का वातावरण है—संस्कारी वातावरण, जिसमें कि हजारों वर्षों से लोगों ने तप किये हैं, साधनाएँ की हैं। वह वातावरण अयोध्या में कहाँ था ? वहाँ तो राजपाट होता था, लड़ाई-झगड़े होते थे, मुकदमे होते थे, दूसरी बातें होती थीं, पर वहाँ तप का वातावरण नहीं था। हजारों वर्षों से विश्वामित्र सहित अन्यान्य ऋषि-मुनियों ने जो तप किया है उससे हिमालय का वातावरण उच्चस्तरीय बन गया। अतः श्री रामचन्द्र जी को भी गुरु वशिष्ठ की आज्ञा मानकर देव प्रयाग में रहना पड़ा। अयोध्या में रहकर गुरु वशिष्ठ भी रामचन्द्रजी को योग वाशिष्ठ नहीं पढ़ा सकते थे। वहाँ वे केवल सलाह दे सकते थे कि राजपाट इस तरह से चलाइये, लेकिन आध्यात्मिक विषयों के लिए उन्होंने भी देव प्रयाग को मुनासिब समझा और हिमालय के उसी वातावरण में साधना करायी। चारों भाइयों समेत भगवान वहीं रहे।

आध्यात्मिक जीवन में उच्चस्तरीय वातावरण की अपेक्षा होती है। केवल आध्यात्मिक जीवन में ही नहीं, सांसारिक जीवन में भी वातावरण की जरूरत होती है। आप सांसारिक जीवन की बात जानते हैं न ? सांसारिक जीवन में भी अगर वातावरण न मिले तो बहुत मुश्किलें पैदा हो जाती हैं। खुशबूदार चन्दन मैसूर और केरल में पाया जाता है। इसी चन्दन के पेड़ अगर आप वहाँ से ले आएँ और दूसरी जगह लगा दें तो चन्दन तो पैदा हो जायेगा, पर उसमें से वह सुगन्धि नहीं आयेगी जो पहले वाले पेड़ में थी। ऐसी क्या बात है जो सुगन्ध को भी बदल देती है ? वह है वातावरण, जो जलवायु पर टिका हुआ है। नागपुर के सन्तरे और बम्बई के केले के बारे में आप जानते हैं न। क्यों साहब वही सन्तरे और केले आप यहाँ ले आइये और लगाकर देखिये कि वैसे मीठे वे नागपुर में और बम्बई में होते हैं, यहाँ भी हैं क्या ? नहीं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वैसे मीठे वे आपके यहाँ नहीं हो सकते। कारण एक ही है कि वहाँ के वातावरण की अपनी विशेषता है। बंगाल निवासियों के स्वास्थ्य आपने देखे होंगे वे दुबले-पतले और कद में छोटे होते हैं और सीमा प्रान्त के लोग लम्बे और मोटे होते हैं। क्या खाते हैं वे लोग ? वही दाल-रोटी खाते हैं। फिर क्या बात है कि वे इतने मोटे हो जाते हैं ? वे इतने मजबूत कैसे हो जाते हैं और बंगाल वाले कैसे कमजोर रह जाते हैं ? यह सब वातावरण का कमाल है।

इस सन्दर्भ में एक और भी पुरानी बात याद है। श्रवण कुमार अपने माता-पिता को कन्धे पर बिठाकर उन्हें तीर्थयात्रा कराने के लिए ले जा रहे थे। यू. पी. मेरठ के पास एक जगह है, जहाँ आकर वह रुक गये और अपने माता-पिता से कहा—क्यों जी ! आपकी आँखें ही तो खराब हैं, टाँगें तो खराब नहीं हैं। हम आपकी लकड़ी पकड़ लेंगे और आप लोग हमारे पीछे-पीछे चलिये न, क्यों हमारे कन्धे पर सवार होते हैं श्रवण के माता-पिता अचम्भे में रह गये। कन्धे पर बैठकर चलने से उनका तो मतलब यह था कि हमारा लड़का सारे संसार भर में अजर और अमर होकर रहे, सारी दुनिया उसका नाम लिया करे, अपने बच्चों को प्यार देने के लिए उसका जीवन एक गाथा बन जाए, उदाहरण बन जाए। उनका मतलब सवारी गाँठने से थोड़े ही था। उन्होंने कहा—अच्छा बेटे जैसे तुम कहोगे हम वैसा ही करेंगे। पर काम करो आज रात को हम ठहरेंगे नहीं। यहाँ से हमको बहुत दूर चलना चाहिए और इस क्षेत्र को पार कर लेना चाहिए। श्रवण कुमार ने अपने माता-पिता का कहना माना और उस इलाके से बहुत दूर चला गया। जैसे ही वह इलाका खत्म हुआ, वैसे ही श्रवण कुमार को बहुत आश्चर्य हुआ अपने ऊपर और वह फूट-फूट कर रोने लगा। उसने कहा—पिताजी मैंने कैसे कह दिया था कि आप अपने पैरों पर चलिये। मुझे यह कितना बड़ा सौभाग्य मिला था जिसे मैं छोड़ना चाहता था। पिता ने कहा—बेटे डरने की कोई बात नहीं है। वस्तुतः जहाँ तुम्हारे मन में वह विचार आया था वह स्थान ऐसा था जहाँ एक 'मय' नाम का दानव था। वहाँ उसने अपने माता-पिता को मार डाला था। बस उसी स्थान से होकर हम चल रहे थे और उसके संस्कार भूमि में पड़े हुए थे। भूमि के संस्कारों की वजह से तुम्हारे मन में वह विचार आये थे। अब हम उस क्षेत्र से निकल आये हैं अतः सब कुछ सामान्य हो गया है।

अब आप समझ गये होंगे कि वातावरण का कितना भारी असर होता है ? आपको हमने इसलिए यहाँ के वातावरण में बुलाया है, हिमालय के नजदीक बुलाया है। हिमालय यहीं से शुरू होता है। यहीं शिव और सप्तर्षियों का स्थान था। स्वर्ग कहाँ था ? स्वर्ग हिमालय के उस इलाके में था जिसको 'नन्दनवन' कहते हैं, गोमुख से आगे। स्वर्ग जमीन पर था। सुमेर पर्वत भी वहीं है। देवता भी इसी इलाके में रहते थे हिमालय वाले क्षेत्र में। सारे के सारे महत्त्वपूर्ण ऋषि व सप्तर्षियों से लेकर सनक-सनन्दन तक एवं नारद से लेकर आदिगुरु शंकराचार्य तक जितने भी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हुए हैं, उनकी साधना इसी स्थान में हुई है। इसलिए हिमालय का अपना वातावरण है। गंगा की महत्ता तो आप जानते हैं न ? गंगा की कितनी बड़ी महत्ता है। गंगा को सारा संसार जाने क्या-क्या मानता है ? भौतिक दृष्टि और आध्यात्मिक दृष्टि से भी। यहाँ गंगा जी प्रवाहित होती हैं। जिस स्थान पर हमने यह शान्तिकुंज बनाया है। हमारे गुरुदेव ने इस स्थान का महत्त्व बताया था कि यहाँ सात ऋषियों का तप हुआ था। यहाँ सात ऋषियों की सात गंगाएँ थीं। दो गंगाएँ गायब हो गयीं हैं, परन्तु पाँच गंगाएँ अभी भी दिखायी देती हैं। दो गंगाएँ जो गायब हो गयी हैं, वह कहाँ गयीं ? वह इसी स्थान पर थीं, जहाँ आज शान्तिकुंज बना हुआ है। एक धारा यहाँ बाहर बहती थी, जिसे बाँध बनाकर रोक दिया गया था तब भी गंगा का पानी जमीन में से उछलता रहता है। शान्तिकुंज के पीछे एक नाला बहता है, वह जमीन में उछलता रहता है। आप कहीं भी जरा-सा गड्ढा खोदिये, गंगा जल तैयार है। यह गंगाजी की विशेषता है। शान्तिकुंज हिमालय के द्वार पर बना है। यहाँ ऐसा प्राणवान सान्निध्य है, जहाँ शेर और गाय प्राचीनकाल की भाँति एक साथ पानी पीते हैं। ऐसा ही वातावरण है यहाँ शान्तिकुंज में। यहाँ ऐसे लोगों का सान्निध्य आपको मिला है जिसके लिए अगर आप सारे हिन्दुस्तान में घूमें और यह तलाश करें कि ऐसे प्राणवान सान्निध्य कहीं मिलेंगे क्या ? ऐसे प्राणवान सान्निध्य प्राचीनकाल में तो शायद हुए हों, पर आज आपको ऐसा आध्यात्मिकता का सही वातावरण अन्यत्र मिलेगा नहीं, जैसा कि शान्तिकुंज में हमने बनाकर रखा है और आपको यहाँ साधना करने के लिए बुलाया है।

तो गुरुजी क्या इतने भर से बात पूरी हो जाएगी ? नहीं बेटे, इतना ही पर्याप्त नहीं। आपको इसके साथ में अपनी श्रद्धा सँजो करके रखनी पड़ेगी। श्रद्धा को आप सँजोकर अगर नहीं रखेंगे, तब फिर यह जमीन भी वैसी ही है जैसे कि मछली पकड़ने वाले गंगाजी में घूमते रहते हैं, पर श्रद्धा उनमें नहीं है तो उससे कोई फायदा नहीं। अगर श्रद्धा और भक्ति का अभाव तो अच्छे वातावरण से भी कोई फायदा नहीं। अगर श्रद्धा के भाव हैं तो यही गंगा तरण-तारिणी बन जाती है और अपने बच्चों का उद्धार कर देती हैं और श्रद्धा के अभाव में यही केवल नहर रह जाती है, सामान्य-सा पानी रह जाता है। आपको अपनी श्रद्धा समुन्नत करनी पड़ेगी। अगर आप यहाँ निवास करते हैं तो कृपा करके अपनी श्रद्धा को जीवन्त कीजिये और यह अनुभव करना शुरू कीजिये कि आप किसी ऐसे स्थान पर निवास करते हैं, जहाँ का वातावरण आपकी साधना को सफल बनाने में समर्थ है। यह सप्तर्षियों की तपस्थली, गायत्री के ऋषि विश्वामित्र, जिन्होंने गायत्री महामन्त्र का साक्षात्कार किया था, ठीक इसी स्थान पर तप करते थे। सात ऋषि हैं, उनमें से एक विश्वामित्र भी हैं। विश्वामित्र कहाँ रहते थे ? उनकी कुटिया कहाँ थी ? यहीं थी, जहाँ आज शान्तिकुंज है। यह विश्वामित्र का स्थान है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वातावरण का कितना असर पड़ता है, देखा है न आपने। टिड्डा, बरसात के दिनों में हरे रंग का होता है और गर्मी के दिनों में पीले रंग का हो जाता है। क्यों पीला हो जाता है ? इसलिए हो जाता है कि चारों ओर सूखी हुई घास, फैला हुआ रेत दिखाई पड़ता है। उसको देखते-देखते वह पीले रंग का हो जाता है, जबकि बरसात में चारों ओर हरा रंग छाया रहता है, अतः वह हरा हो जाता है। भट्टी के नजदीक बैठे हैं न आप। भट्टी गरम होती है तो उसके नजदीक बैठने वाले भी गरम हो जाते हैं। बरफ की छतरी में आप कभी घुसें तो उसमें ठण्डक पड़ती रहती है और जो भी घुसता है, वह भी ठण्डा हो जाता है। आपको भी यही अनुभव होगा यहाँ। यह आपको तो अनुभव करना ही है, लेकिन एक बात और रह जाती है, जिसके बिना यदि आप चाहें कि यहाँ के वातावरण का पूरा लाभ मिल जाए तो वह मिल नहीं सकेगा। इसके लिए श्रद्धा बहुत जरूरी है। श्रद्धा अगर आपके अन्दर न हो और आप केवल इसकी इमारत देखते हों, आश्रम देखते हों, कोई क्वार्टर देखते हों, कोई होटल या धर्मशाला देखते हों तो फिर आपके लिए ठीक वही है, जो आप देखते हैं। आपकी श्रद्धा अगर जमी तो वह तीर्थ है। गायत्री का हमने इसे तीर्थ बनाया है। इसमें तीर्थों की जो भी विशेषताएँ होती हैं, वह सब विशेषताएँ पैदा की हैं। हमने इसमें कोई कमी नहीं छोड़ी है कि जो एक शानदार, श्रेष्ठ, समर्थ तीर्थ बनाने के लिए किसी स्थान के लिए जो प्रयत्न किये जाने चाहिए, वह सारे प्रयत्न किये गये हैं।

रामचन्द्र जी ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे, इसलिए दशाश्वमेध घाट तीर्थ हो गया। दुनिया में और भी बड़ी-बड़ी बातें होंगी, बड़े-बड़े स्थान होंगे, पर सब तीर्थ थोड़े ही हो जाएँगे। प्रकृति के सभी स्थान ऐसे ही थे, लेकिन जब कोई महान घटना घटित हो गयी और कोई महान कार्य सम्पन्न हो गया तो वही स्थान तीर्थ बन गये तीर्थ के लिए भूमि को संस्कारवान बनाना पड़ता है। प्राचीनकाल में ऋषियों ने गुरुकुल बनाये थे, आश्रम एवं आरण्यक बनाये थे, जहाँ साधना के बड़े-बड़े अनुष्ठान सम्पन्न होते थे। हम भी यही कर रहे हैं। यहाँ चौबीस-चौबीस लक्ष्य के कितने अनुष्ठान हो चुके हैं, आप जानते हैं न। हर साल यहाँ नवरात्रि में चौबीस करोड़ का पुरश्चरण हो जाता है। हर दिन वहाँ नौ कुण्डीय यज्ञ में हजारों आहुतियाँ दी जाती हैं। यहाँ अखण्ड दीपक जलता रहता है। यहाँ हमारी और माताजी की नियमित रूप से कठोर तपश्चर्या अभी भी चलती रहती है। इससे वातावरण बनता है तो हमारे गुरुदेव परोक्ष रूप से आते ही रहते हैं। आपके अन्दर श्रद्धा हो तो यहाँ गायत्री माता का प्रकाश और आलोक आप चाहे जिधर अनुभव कर सकते हैं। हमारे गुरुदेव की और हमारी प्राणचेतना यहाँ के कण-कण में छायी रहती है। हमने आपसे कहा है कि यह अनुभव कीजिये कि आप यहाँ माताजी के गर्भ में निवास करते हैं। मुर्गी अपने अण्डे को छाती से लगाकर जिस तरह बैठी रहती है और अण्डे पकते रहते हैं, हम लोग भी उसी तरह से आपको अपनी छाती से लगाये बैठे रहते हैं और आपको पकाते रहते हैं। इतना होते हुए भी इस बात के लिए विशेष रूप से निवेदन किया जा रहा है कि आपकी स्वयं की श्रद्धा जीवन्त रहनी चाहिए। अगर आपने अपनी श्रद्धा का परित्याग कर दिया तो इस वातावरण से आपको कतई कोई लाभ नहीं मिलेगा। जैसे दूसरे लोग भी यहाँ आते हैं, कोई चोर, उचक्के-उठाईगीर भी आते होंगे, कोई मेहनत-मजदूरी करने वाले भी आते होंगे। स्कूटर वाले, मोटर ड्राइवर भी आते हैं, बीड़ी पीते रहते हैं और खाली हाथ चले जाते हैं। कारण उनके लिए शास्त्र का, श्रद्धा का कोई महत्त्व नहीं। श्रद्धा के अभाव में बाहरी चीजें कोई ज्यादा लाभ नहीं दे सकतीं।

आपको आज मैं भावश्रद्धा के ऊपर बहुत जोर देना चाहता हूँ। अगर आप यहाँ से लाभ उठाना चाहते हों तो आप श्रद्धा मत छोड़ना, श्रद्धा को जाग्रत-जीवन्त कर लिया तो आप यहाँ के कण-कण में से अमृत बरसता हुआ और आलोक उछलता हुआ, उभरता हुआ देखेंगे। अगर श्रद्धा है तो, नहीं है तो फिर सब कुछ मिट्टी है और दूसरी इमारतें जैसी होती हैं, वैसी ही यह भी दिखेगी। मीरा को एक पत्थर का टुकड़ा दे दिया गया था। उस पत्थर के टुकड़े को लेकर के मीरा ने यह मान लिया था कि ये हमारे पति हैं और ये भगवान हैं। उनकी श्रद्धा ने उस पत्थर को साक्षात् भगवान बना दिया। उस गिरधर गोपाल ने मीरा को भेजा गया जहर का प्याला पी लिया था और मीरा बचे हुए पानी को पीकर के ज्यों की त्यों बनी रही। साँप का पिटारा आया था तो गिरधर गोपाल साँपों से खेलते रहे। मीरा ने आखिर में पिटारे को बन्द कर दिया। मीरा को किसी ने नहीं काटा और न ही कोई नुकसान हुआ। यह कैसे हो गया ? गिरधर गोपाल के कारण। गिरधर गोपाल कौन ? पत्थर का एक टुकड़ा। नहीं, मीरा की श्रद्धासिक्त प्रगाढ़ भावना के मिल जाने से ही पत्थर गिरधर गोपाल बन सका। अब वही पत्थर जहाँ का तहाँ पड़ा हुआ है। आप जाकर देख सकते हैं, उसमें कोई चमत्कार नहीं है। पत्थरों में क्या चमत्कार हो सकता था और क्या होगा ? श्रद्धा ही है जो पत्थर को भी भगवान बना सकती है। एकलव्य की बात सुनी है न आपने। वह भील का एक लड़का था जिसने मिट्टी के द्रोणाचार्य बना दिये थे और मिट्टी के वह द्रोणाचार्य इतने समर्थ हुए कि जो कौरवों और पाण्डवों को बाण विद्या असली द्रोणाचार्य ने सिखायी थी, उससे कहीं ज्यादा उस एकलव्य को आ गयी।

रामकृष्ण परमहंस काली के अनन्य उपासक थे। लोगों ने रानी से शिकायत कर दी कि जो भोग है, वह स्वयं खा जाते हैं और जूठन फैला देते हैं। रानी रासमणि एक दिन छत पर गयीं और वहाँ से छिप करके देखती रहीं सारा नजारा। सही बात यह हुई कि रामकृष्ण काली से कहने लगे—माँ आप भोजन कीजिए। वह चुप रहीं क्या कहतीं ? रामकृष्ण ने कहा—अच्छा पहले बेटा खालेगा तब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माँ खायेगी। उन्होंने ऐसा ही किया। आधा भोजन स्वयं कर लिया और जब काली से कहा—माता अब आपको करना पड़ेगा। तभी रानी रासमणि ने देखा कि पत्थर की मूर्ति के हाथ हिलने लगे और उन्होंने थाली में जो भोजन था वह उठाया और निगल लिया। सारा भोजन वे खा गयीं। खाली थाली धोने के लिए रामकृष्ण परमहंस बाहर निकल रहे थे, तब रानी रासमणि आयीं और उनके चरणों पर गिर पड़ीं। उन्होंने कहा—देव आप साक्षात् काली हैं। यह बात सही है, कि रामकृष्ण परमहंस साक्षात् काली थे, क्योंकि अपनी श्रद्धा से उन्होंने पत्थर की मूर्ति को साक्षात् काली बना दिया था। रामकृष्ण ने जब विवेकानन्द से कहा कि काली माँ के पास जा और नौकरी माँग ले तो विवेकानन्द ने वहाँ जाकर देखा कि विशालकाय काली जमीन से लेकर आकाश तक को छू रही थी। वह कहाँ से पैदा हुई थीं—उसी पत्थर में से पैदा कर दी थी रामकृष्ण परमहंस ने। वह उनकी श्रद्धा से बनी थीं। अब भी वही मूर्ति है वहाँ, पर अब उसमें कोई दम नहीं है। चोर एक बार उस मूर्ति की सोने की जीभ चुरा ले गये थे। तब वह पत्थर ही रह गयी थीं। पत्थर को साक्षात् काली बना देने का श्रेय रामकृष्ण परमहंस को है।

कबीर को दीक्षा देने के लिए स्वामी रामानन्द तैयार नहीं थे। कबीर सीढ़ी पर जाकर सो गये। रामानन्द उधर से निकले तो उनका पैर अँधेरे में कबीर के ऊपर पड़ गया। राम-राम कहकर वे पीछे हट गये। कबीर ने कहना शुरू कर दिया कि मेरे गुरु स्वामी रामानन्द हैं। उन्होंने मुझे मन्त्र दे दिया है दीक्षा दे दी है। स्वामी जी ने पूछा—तू गलत-सलत बात क्यों कहता है ? कबीर ने कहा—नहीं आपने मेरे सीने पर पैर रख दिया था और सीढ़ियों पर चढ़ते हुए राम-राम कह दिया था। बस मेरे लिए तो आप ही गुरु हो गये। आप लोग भी इस श्रद्धा के महत्त्व को समझें। अगर श्रद्धा का अभाव रह गया तो आप बिल्कुल खाली हाथ चले जाएँगे और हमारा परिश्रम बेकार चला जाएगा और आपका सौहार्द भी बेकार चला जाएगा। आप कृपा करके अपनी श्रद्धा जगाइये। आपको अन्धश्रद्धा के लिए यहाँ कुछ नहीं कहा जा रहा है। यहाँ का परिपूर्ण वातावरण है। आप चाहें तो सच्चाई के साथ इसको परख भी सकते हैं। परखने लायक स्थान यदि न हो तो भी इसको श्रद्धा से अपने लायक बना सकते हैं। श्रद्धा उत्पन्न कीजिए, अभी आपके हिस्से का काम बाकी पड़ा है। हमने अपने हिस्से का काम पूरा कर दिया। आप और हम दोनों अपने-अपने हिस्से का काम पूरा कर लें तो हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि यह कल्प-साधना आपके लिए सौभाग्य से भरा-पूरा होगा और हमारे लिए सन्तोष का। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

पारस को छूकर सोना बनने का तरीका

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरिर्ण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आप लोग जिस कल्प-साधना-सत्र में आये हुए हैं, उसमें महत्त्वपूर्ण काम आपको यह करना है कि किसी ऐसी सत्ता के साथ में अपने आपको जोड़ दें, जो बड़ी सामर्थ्यवान है। अकेले आप सीमित हैं, अकेले आप जो काम करते हैं, उससे गुजारा तो हो सकता है; लेकिन और ज्यादा ऊँचा उठना अकेले के बलबूते पर सम्भव नहीं है। अकेले प्राणियों को भगवान ने इतना दिया है, जिससे कि अपना गुजारा कर पाएँ। हर आदमी को इतनी अक्ल दी है, हाथ-पैर भी दिए हैं, शरीर दिया है, जिससे अपने शरीर का गुजारा कर लें और अपने बीबी-बच्चों का गुजारा कर लें और इससे अधिक किसी के पास नहीं है। मनुष्य के पास, इतना तो हर किसी के पास है, प्राणी के पास है; लेकिन इससे ज्यादा की जरूरत पड़े तो, फिर आपको भगवान का सहारा लेना पड़ेगा—ऐसे शक्तिपुंज का सहारा लेना पड़ेगा, जिसके पास शक्तियों के भण्डार भरे पड़े हैं। भगवान कौन ? भगवान, आप यह मानकर चल सकते हैं कि एक बहुत बड़ा बिजलीघर है, जिसके साथ-साथ में बल्ब लगे रहते हैं, पंखे लगे रहते हैं, छोटी-छोटी मशीनें लगी होती हैं और जेनरेटर के साथ में जुड़ जाने की वजह से यह काम करते रहते हैं। अगर वह जुड़ें नहीं तब ? तब पंखा कैसे चले ? बल्ब कैसे जले ? दूसरे काम कैसे बनें ? इसलिए इनका जुड़ जाना आवश्यक है। जुड़े बिना बड़ी शक्ति प्राप्त नहीं हो सकती, बड़े काम सम्भव नहीं हो सकते। मनुष्य बड़े काम करने के लिए किसी बड़ी शक्ति के साथ में जुड़ा रहे यह बहुत जरूरी है। इस जुड़े रहने की प्रक्रिया का नाम है—उपासना। उपासना माने—नजदीक बैठना, पास बैठना। अगर आप पास बैठ जाएँ किसी के, तो उसके गुण, उसके कर्म, उसका स्वभाव व उसकी विशेषताएँ आपके भीतर आना शुरू हो जाएँगी। आग की भट्टी के नजदीक अगर आप बैठने लगें तो, आपका शरीर गर्म हो जाएगा। बर्फ की फैक्ट्री के भीतर अगर आप घुस जाएँ, तो आपका शरीर ठण्डा होने लगेगा। ऐसी दृष्टि से आपको किसी के साथ में जुड़ना चाहिए। उपासना का अर्थ है—पास बैठना। आगे चलकर इसी को जुड़ जाना भी कहते हैं। पास बैठने का उदाहरण आप समझिए। चन्दन के पेड़ के नजदीक जब उगते हैं, बहुत सारे झाड़-झंखाड़, तो उन झाड़ियों में भी चन्दन की विशेषताएँ पैदा हो जाती हैं। यह उपासना हो गई—नजदीक बैठना हो गया। पारस के नजदीक बैठते ही, स्पर्श करते ही लोहा सोना बन जाता है। महान शक्ति का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ छू करके कौन नहीं बन जाएगा महान ! आप स्वाति की बूँद के बारे में जानते हैं ? स्वाति की बूँद कितनी महान होती है ? वह सीप के मुँह में जा पड़ती है, तो मोती पैदा हो जाते हैं। नजदीक न हों तब ? आपस में न मिलें तब ? तब सीप के लिए सम्भव नहीं है कि वह मोती पैदा कर सके। यही बात भगवान के सम्बन्ध में भी है। भगवान को कल्पवृक्ष बताया गया है, भगवान् को पारस बताया गया है, भगवान को अमृत बताया गया है। अमृत को पी करके आदमी अजर-अमर हो जाते हैं; कल्पवृक्ष के नीचे बैठ करके आदमी अपनी कामनाओं को पूरा कर लेते हैं और पारस को छू करके लोहा सोना हो जाता है। मनुष्य के बारे में भी यही बात है। भगवान को छुए आदमी तब ? तब फिर सोने का हो जाएगा, लोहे का नहीं रहेगा, घटिया नहीं रहेगा, बल्कि महान बन जाएगा। ठीक इसी प्रकार से कल्पवृक्ष यानी भगवान के नीचे आदमी बैठ जाए तब ? तब उसकी वह कामनाएँ, जिनकी वजह से वह हमेशा हैरान बना रहता है, उन हैरानियों से छुट्टी पा सकता है और आदमी की कामनाएँ तृप्त हो सकती हैं। मरते तो वह आदमी हैं, जो शरीर में जिन्दा रहते हैं, जो अपने आपको आत्मा समझते हैं, उनके मरने का सवाल कहाँ ? क्यों ? फिर मरने की कोई बात ही नहीं हो सकती, मरना कभी सम्भव नहीं है। मरना केवल उन्हीं के लिए सम्भव है, जो यह विचार करते हैं। कौन-सा ? कि हमारा शरीर दूर है उनसे और जिस दिन भगवान के नजदीक जा करके आदमी यह अनुभव कर ले कि हमारा जीवात्मा भगवान का एक अंश है, फिर क्यों मरेगा आदमी ? जीवात्मा कहीं मरता है क्या ? शरीर तो कपड़ों की तरह है। रोज बदलते रहते हैं कपड़ों को, इससे कई लाभ हैं—भय से आदमी की निवृत्ति होती है; कामनाओं की पूर्ति के अभाव में जो विक्षोभ उत्पन्न होते हैं, उनसे निवृत्ति होती है। आदमी को अपनी कुरूपता और कमजोरियों से जो हैरानी होती रहती हैं, पारस से छू करके उसे निवृत्ति मिलती है। यह अनेक निवृत्तियाँ हो जाती हैं भगवान के नजदीक जाने से। इसलिए उपासना का बहुत महत्त्व बताया गया है।

आप पतंग को देखते हैं न ! बच्चे के हाथ में जब पतंग होती है तो, बच्चा झटके से उड़ाता रहता है और पतंग ऊपर चढ़ जाती है। अगर कोई उड़ाने वाला न हो तब ? तब पतंग जमीन पर गिरेगी और मटियामेट हो जाएगी। मनुष्य अपने जीवन की पतंग अगर भगवान के हाथों में सुपुर्द कर दे, तब फिर जाने कहाँ-से-कहाँ उठता हुआ चला जाता है। अगर यह पतंग सुपुर्द न करे तब ? तब फिर जैसा छोटा, घिनौना मनुष्य है, वैसा ही तो रह जाएगा आगे कहाँ बढ़ेगा ? आगे उसकी उन्नति की सम्भावना कहाँ है ? आगे उसकी उन्नति के लिए कोई सम्भावना नहीं है और न कोई गुंजाइश है। ठीक इसी प्रकार से कठपुतली के बारे में आप जानते हैं न ! कठपुतली नाचती है, कितना सुन्दर तमाशा दिखाती है ! बच्चे देखकर कितने खुश होते हैं देखने वालों को कितना अचम्भा होता है ? लेकिन क्या कठपुतली अपने आप नाचती है, नहीं, कठपुतली अपने आप नहीं नाचती; बाजीगर के हाथ में उसके धागे जुड़े हुए होते हैं और अपनी उँगलियों से घुमाता रहता है, जिसका परिणाम यह होता है कि कठपुतली सुन्दर तमाशा दिखा पाती है। अगर यह धागा न बाँधे कठपुतली तब ? यह कहे-हम तो समर्पित नहीं होते, हम तो इनके अनुशासन को नहीं मानेंगे फिर ? फिर कठपुतली का तमाशा देखा जाना कैसे सम्भव है ? भगवान का उद्यान, भगवान के उद्यान में अगर हम रहें, तब फिर उसी के साथ में लिपट कर चलिए, लिपटकर चलेंगे, तो बेल की तरह चढ़ते चले जाएँगे। पेड़ होता है और पेड़ के ऊपर बेल लिपटती चली जाती है, उतनी ही ऊँची हो जाती है, जितना कि पेड़। पेड़ न मिले तब ? तब फिर मुश्किल है। अगर आप उतने लम्बे न हों, जितनी कि बेल, बेल फैल तो सकती है जमीन पर; लेकिन ऊँची नहीं उठ सकती; ऊँचा उठने के लिए जरूरी है कि किसी पेड़ के साथ में बेल को लिपटने का सौभाग्य मिल जाए। भगवान एक पेड़ की तरह हैं, जिसके साथ में अगर आप अपने को लपेट देते हैं तो न जाने कहाँ-से-कहाँ चले जाते हैं ! ऐसा है यह भगवान।

इसके साथ-साथ क्या करना चाहिए ? उपासना में क्या करना होता है ? उपासना में नजदीक आते हैं और नजदीक आने के साथ-साथ सबसे पहला काम करना पड़ता है—अपनी सफाई। अपनी सफाई हम कर लें, तब फिर सारी गुंजाइश मिलेगी। अगर सफाई न करें, तब फिर कुछ नहीं। शीशा है, शीशे को अगर आप मैला-कुचैला रख दें, उसमें फिर अपना चेहरा देखना चाहें तो दिखेगा क्या ? नहीं दिखेगा। पानी के भीतर आप चेहरा देखना चाहें, बिम्ब देखना चाहें, तो पानी को साफ होना चाहिए। इसलिए भगवान के नजदीक जाने के लिए सबसे पहला काम जो करना पड़ता है, वह अपनी सफाई करनी पड़ती है। अपनी सफाई के लिए जितने भी कृत्य हैं, जो प्रारम्भिक और धार्मिक कृत्य हैं। आध्यात्मिक कृत्य हैं, इन सबमें अपने आप की सफाई, अपना परिष्कार करने की जरूरत पड़ती है। जैसे—आप सुबह पूजा करने बैठते हैं तो क्या करते हैं ? पहले आप पंचकर्म करते हैं, पवित्रीकरण एक, आचमन दो, प्राणायाम तीन, न्यास चार, शिखावंदन पाँच। यही करते हैं न, सपवित्रीकरण में जल हथेली पर लेकर शरीर पर छिड़कते हैं न और यह भावना करते हैं कि हमारी मलीनताएँ जो बाहर की मलीनताएँ हैं, वह दूर हो जाएँ। आचमन तीन बार करते हैं, उसके पीछे क्या संकल्प होता है ? उसके पीछे यह संकल्प होता है कि हमारा मन, वाणी या वचन और कर्म—इन तीनों की शुद्धता के लिए जल पीते हैं और जीभ पर ही पीते हैं; जीभ पर इसकी स्वाद-इन्द्रिय है। इसके अन्दर से कटुवचन अगर इसके साथ में चलते हैं तो दूर हो जाएँ यह आचमन का उद्देश्य है। प्राणायाम—जो साँस हम ग्रहण करते हैं, साँस हमारे अंग-प्रत्यंगों में चली जाती है, तो प्राणायाम में भी हम यह भावना करते हैं कि भगवान का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्राण लेकर के, भगवान की शक्ति लेकर के यह हवा हमारे भीतर आए और धोकर के साफ कर दे। इसी प्रकार से न्यास है। न्यास में पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, कर्मेन्द्रियाँ हैं—इनको हमेशा शुद्ध रहना चाहिए अर्थात् इनके द्वारा किए हुए कृत्य शुद्ध और पवित्र होने चाहिए। न्यास—यही उद्देश्य है। शिखावंदन, शिखा का वंदन अर्थात् संस्कृति का वंदन। सिर के ऊपर जो ध्वजा फहरा रखी है ज्ञान की देवी गायत्री माता की, उसके प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करना—यही शिखावदन है। यह संसार के सारे कृत्य जो कि पंचकर्म कहलाते हैं यह सब इस उद्देश्य के लिए हैं कि साधक को यह मानकर चलना चाहिए कि अपने आपको जितना पुनीत और जितना पवित्र बना सकेगा, उतना ही भगवान की किरणें उसके भीतर प्रवेश करेंगी; जितना अपने आपको जलील और गंदा बनाकर रखेगा, उसी हिसाब से व्यवधान उत्पन्न होते चले जाएँगे और जो चीज वह चाहता है उससे वंचित रह जाएगा। आप सामान्य जीवन में देखते होंगे, स्नान किये बिना कहाँ काम चलता है, स्नान न करें तब ! स्नान शरीर को नहीं कराएँ, तब मैला-कुचैला जम जाएगा और मैल जम जाने से पसीने के छेद बन्द हो जाएँगे, आप बीमार पड़ जाएँगे, खाज हो जाएगी, पीलिया हो जाएगा, जुएँ हो जाएँगे। इसलिए स्नान करना बहुत जरूरी है और जीवन को स्नान करना भी। शरीर का ही नहीं, आत्मा का भी। आत्मा का स्नान कराना अर्थात् आत्मा के ऊपर चढ़े हुए कषाय और कल्मषों को हमको दूर करना चाहिए। यही भजन का भी उद्देश्य है। बुहारी से आप देखते हैं न, बार-बार झाड़ू लगाते हैं। बर्तन माँजते हैं न, रिपिटीशन करते हैं, रिपिटीशन करना जप करने का उद्देश्य है, एक तरह का साबुन लगाना है। कपड़ा धोते हैं, तो बार-बार साबुन घिसते हैं अथवा बार-बार कपड़े को नीचे से ऊपर तक पीटते हैं, दबोचते हैं। इसका अर्थ यह हो गया कि जिस तरीके से राम के नाम से मन के ऊपर साबुन की तरह धोना शुरू करते हैं, तो यही जप का उद्देश्य है। पत्थर पर घिसते हैं, बार-बार रिपीट करते हैं, तो निशान हो जाता है। अगर नहीं करें, तब फिर नहीं होगा। बार-बार करने का मतलब यही है। बहुत-सी चीजें ऐसी होती हैं, जिनको कि रगड़कर चमका दिया जाता है, जैसे मार्बल, सीमेण्ट को बार-बार घिसते रहते हैं और बार-बार घिसने से वह चमक जाता है। किसी भी चीज को साफ करने के लिए उसको घिसाव देना पड़ता है। अपने आप को भी किसी से रगड़कर घिसाव देना पड़ेगा। घिसाव देने से हममें जो खुरदरापन है, रूखापन है, वह सब चिकनाई में, स्नेह में, सद्भावना में बदल जाता है—यह है रिहर्सल जप की।

जप को आप यह मानकर मत चलिए कि भगवान को अपनी खुशामद की जरूरत है और खुशामद जो कोई करता है, उससे भगवान प्रसन्न हो जाता है आप ऐसा ख्याल कभी मत करना। भगवान को न खुशामद करने की दरकार है और न कोई शानदार शक्ति खुशामद पसन्द करती है। भगवान की चोर खुशामद नहीं करते, तो क्या देखभाल नहीं करता ! चिड़ियाँ कहाँ खुशामद करती हैं ? जानवर कहाँ उनकी पूजा और प्रार्थना करते हैं ? इतने पृथ्वी के जीव-जन्तु हैं, इनमें से कौन पूजा-प्रार्थना करता है, तो क्या भगवान ध्यान नहीं रखते ? तब क्या भगवान नाराज हो जाते हैं क्या ? जो आदमी जप करेगा, उसी से प्रसन्न होंगे। जो जप नहीं करेगा, उससे प्रसन्न नहीं होंगे। नहीं, जप करने का मतलब अगर आपने खुशामद समझा है, तो आप गलती करते हैं। भगवान को न किसी खुशामद की जरूरत है, न किसी के इनाम और उपहार की जरूरत है। भेंट देंगे, पूजा देंगे, प्रसाद बाँटेंगे। आप क्या बच्चों की-सी बात करते हैं। फूल भगवान को रिश्वत के रूप में देंगे। आप रिश्वत क्या देंगे ? फूल की जरूरत पड़ेगी, तो भगवान कहीं भी किसी के बगीचे में घुस जाएँगे और वहाँ से फूल चुनते रहेंगे। सारी दुनिया तो उन्हीं की है, जहाँ जरूरत पड़ेगी, वहीं सुगन्ध ले सकते हैं। आपके फूलों से क्या बनता-बिगड़ता है उनका। इसलिए उपहार, इनाम, रिश्वत आदि की दृष्टि से न कोई वस्तु दी जा सकती है उसको और न उसके ऊपर किसी वाणी का असर पड़ता है। प्रार्थना करने का, पूजा करने का इनका कोई असर नहीं पड़ता। तब यह पूजा-उपासना, इतना कृत्य जो आप रोज करते हैं, किसलिए किया जाता है ? यह वास्तव में अपने मन की धुलाई है, अपने मन की रँगाई है। पहले आप अपने आपको धोकर रखेंगे, तो रँगना सम्भव हो जाएगा, फिर आप उपासना जो करेंगे, सफल हो सकती है, साधनाएँ सार्थक हो सकती हैं। अगर आपने अपनी धुलाई नहीं की, अपने कषाय-कल्मषों को धोया नहीं, तो फिर बहुत मुश्किल है, फिर आपके लिए बहुत कठिन हो जाएगा। खेत को अगर आप जोतेंगे नहीं तो फिर बीज बोएँगे कैसे ? फसल पैदा हो जाएगी ? यह खेत की जुताई, राम का नाम का जप करना अथवा अन्य किसी तरीके से अपने आपका परिष्कार करना सब एक ही है। जोत करके अगर आपने खेत ठीक तरीके से तैयार कर लिया है, तो बुआई में आपको कोई दिक्कत नहीं पड़ेगी, बुआई सरल हो जाएगी, खेत तो जोता हुआ है और अगर जोता हुआ न हो तब ? कंकड़, पत्थर वाला खेत हो तब ? सूखा और पत्थर वाला खेत हो तब ? तब आप जो कुछ भी बोएँगे जमीन में, सब आपका बीज भी मारा जाएगा और आप फिर निराश होते फिरेंगे। दीवार को चिनने से पहले, खड़ी करने से पहले, जमीन खोदनी पड़ती है, तब खोद करके उसमें नींव भरनी पड़ती है। जप करना, पूजा करना, ध्यान करना यह अपने आपकी खुदाई करने के बराबर है, ताकि वहाँ राम के नाम की नींव चिनी जा सके। यह जुताई और बुवाई, रँगाई और धुलाई की तरह है, यह बात समझ में आ जाए, तब फिर आपको उपासना-कृत्यों का रहस्य मालूम हो गया—यह समझना चाहिए।

नमन हम करते हैं, वन्दन करते हैं, सूर्य नारायण को जल चढ़ाते हैं—इनका क्या मतलब है ? हम अपने आपको समर्पित करते हैं। अपने छोटे-से बर्तन में भरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुआ जल हम सूर्य भगवान के सामने चढ़ा देते हैं, इसका अर्थ यह होता है प्रकारान्तर से कि हमारे शरीर में जो भी जल भरा हुआ है, जीवन-रस भरा हुआ है, इसको हम विराट् सत्ता को, भगवान को समर्पित करते हैं और यह आशा करते हैं कि हमारे जल को केन्द्रित न रखा जाए; बल्कि इसको हवा में बिखेर दिया जाए, ओस के रूप में ठण्डक के रूप में, नमी के रूप में। यह हमारा थोड़ा-सा जल जो अर्घ्य के रूप में चढ़ाया गया है, सारे समाज के काम आए, देश के काम आ जाए—इस उद्देश्य को लेकर सूर्य अर्घ्य चढ़ाया जाता है। सूर्य अर्घ्य में आप पानी तो चढ़ा देते हैं; लेकिन उसका भावार्थ नहीं समझे, तब फिर केवल क्रीड़ा-कृत्य हो जाएगा, फिर एक विडम्बना हो जाएगी, उससे कुछ बनेगा नहीं। वह सिर्फ जल को विसर्जन करना होगा। जैसे जल को सूर्य नारायण के सामने विसर्जित कर देते हैं, आपको भी वैसे ही विसर्जित करना पड़ेगा अपने आपको। इसका अर्थ है कि उनका अनुशासन अपने ऊपर धारण करना पड़ेगा। इष्ट-भगवान को स्थापित करते हैं न। इष्ट माने—लक्ष्य, हमारा लक्ष्य क्या है ? लक्ष्य का मतलब है—इष्ट। इष्ट आपने कोई तय कर लिया अर्थात् आपका शिव इष्ट है, इसका मतलब हो गया—कल्याण आपका इष्ट है। गायत्री अगर आपका इष्ट है, तो इसका अर्थ हो गया कि आपने शालीनता की देवी का, पुनीत और पवित्रता की देवी का वरण कर लिया, उसके सामने अपने आपको चढ़ाने का निश्चय कर लिया। इसी प्रकार से यह जो है गायत्री—यह प्रज्ञा की देवी, सदाशयता की देवी, शालीनता की देवी—इसके प्रति अगर अपने आपको समर्पित करते हैं—तो आप मान लीजिए आपने इष्ट निर्धारित कर लिया। यह प्रतीक हैं। सारे आध्यात्मिक क्रियाकलापों का अर्थ केवल एक होता है कि हम भगवान में रम जाएँ, भगवान में तन्मय हो जाएँ, भगवान को साथ लेकर के चलें। इन्हीं को हम पूजा के प्रतीकों के माध्यम से चरितार्थ करते हैं। जल चढ़ाते हैं, भगवान को कोई पानी की जरूरत थोड़े ही है, बल्कि उसका यह अर्थ है कि हम अपने आपको जल जैसा पुनीत, जल जैसा बहने वाला, जल जैसा नम्र बनाते हैं। पुष्प हम भगवान के ऊपर चढ़ाते हैं, तो इसका अर्थ यह होता है कि फूल जैसा जीवन जिएँगे, सुरभित जीवन जिएँगे। समन्वित जीवन जिएँगे, हँसता और हँसाता हुआ जीवन जिएँगे। फूल चढ़ाना भगवान को रिश्वत नहीं है, अपने आपका शिक्षण है। आत्मशिक्षण के लिए हम फूल चढ़ाते हैं। हमारा फूल जैसा जीवन ही भगवान के चरणों पर चढ़ने का अधिकारी बन सकता है। फूल न हो तब ? तब क्या चढ़ेगा भगवान के चरणों पर ? पत्ते को कोई चढ़ाता है ? जड़ को कोई चढ़ाता है ? नहीं। फूल को ही चढ़ाते हैं—इसका अर्थ है भगवान के सिर पर अगर आपको विराजना है, भगवान के हृदय से अगर आपको लगना है, भगवान् के चरणों पर स्थान प्राप्त करना है, तो फिर इसका एक ही तरीका रह गया—कौन-सा ? कि आप फूल की तरह खिलें। भगवान के लिए और क्या-क्या करना पड़ता है ? धूप देते हैं, नैवेद्य देते हैं, दीपक जलाते हैं। दीपक से क्या अर्थ होता है ? दीपक से आप यह मत सोचिए कि भगवान को कम दिखाई पड़ता है, इसलिए आप रोशनी कर देंगे, तो उनको रास्ता चलने में सुगमता रहेगी। नहीं, ऐसा नहीं है। भगवान के तो कितने ही दीपक जलते हैं, उनका सूरज दिन में देखा है न आपने ? रात को चाँद का दीपक देखा है न ? भगवान के यहाँ कोई दीपक की कमी नहीं है। हम भगवान को दीपक नहीं दिखाते हैं। दीपक दिखाने का अर्थ केवल अपने आपको यह सिखाने का है, यह आत्मशिक्षण है कि हमको दीपक की तरह जिन्दगी जीनी चाहिए, हमको प्रकाशवान् जिन्दगी जीनी चाहिए, हमको शानदार जिन्दगी जीनी चाहिए, हमको अच्छी वाली जिन्दगी जीनी चाहिए। बस, यही तो उद्देश्य है और कोई उद्देश्य नहीं है। इसलिए आप जो पूजा कृत्य में वस्तु समर्पित करते हैं, उसके पीछे आत्मशिक्षण की, जिसका मूल उद्देश्य है—आत्मपरिष्कार की प्रेरणा ग्रहण करें। नैवेद्य ग्रहण करते हैं, नैवेद्य को मिठास कहते हैं। भगवान कोई चींटी थोड़े ही हैं, जो शक्कर तलाश करते फिरें और शक्कर खा लेने से प्रसन्न हो जाएँ, शक्कर के लिए भागते फिरें, ऐसा नहीं है। नैवेद्य का अर्थ होता है—मिठास। हम मिठास जैसा जीवन जिएँ, हमारे व्यवहार में मिठास हो, हमारे में विनम्रता हो, सज्जनता हो, दूसरों का सम्मान करना सीखें। यह क्या है ? यही नैवेद्य है। पूजा में आप चावल चढ़ाते हैं भगवान के ऊपर, जिसका अर्थ होता है—अपनी कमाई का एक हिस्सा भगवान के लिए अर्थात् श्रेष्ठ कार्यों के तईं हम नियमित रूप से लगाते चलें, तो इसका अर्थ यह हो गया कि आपने भगवान् को नैवेद्य चढ़ा दिया, अक्षत चढ़ा दिये, धूप चढ़ा दिया। बस, इन सबका चढ़ाने का मतलब आप भूलना मत। इसमें रिश्वत का कोई भाव नहीं है, उपहार और इनाम बाँटने का कोई भाव नहीं है। ऐसा करके हम भगवान का और अपमान कर देंगे। हमारी हैसियत ही कहाँ हैं, जो हम भगवान को खिला पाएँ। हमारी हैसियत ही कहाँ है, जो हम भगवान को अँधेरे में से बचाकर रोशनी में ला पाएँ। यह तो हम अपना शिक्षण करते हैं—**'तमसो मा ज्योतिर्गमय'**। हम प्रकाश की ओर चलेंगे, अँधेरे की ओर नहीं। यह शिक्षण करने के लिए हम दीपक जलाते हैं।

इन प्रतीकों के बारे में आप ध्यान रखिए। अगर प्रतीकों के बारे में ध्यान नहीं रखेंगे, तब फिर मुश्किल है। अपने आपका तो शोधन करना ही पड़ेगा। नहीं करेंगे तो, मुश्किल पड़ी रहेगी। आपको उस साधु की कथा याद है ? जो एक चोर को यह जवाब देता था—भगवान को देखना कोई कठिन नहीं है, तो एक दिन चोर ने पूछा—स्वामीजी हमें भी दिखा दीजिए। स्वामी ने कहा—अच्छा, दिखा देंगे। उसने पूछा—कब दिखा देंगे ? उन्होंने कहा—जब कहो, तभी दिखा देंगे। चोर दूसरे दिन तैयार होकर आ गया सवेरे ही। उसने कहा—हमको दिखाइए भगवान। सन्त ने कहा—अच्छा तो चलो, साथ-साथ चलते हैं और इस पहाड़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

के ऊपर टीले पर से दिखा पाएँगे। उसने कहा अच्छा तो चलिए। तो उन्होंने कहा—देखो भई, वहाँ कुछ पूजा-पाठ करना पड़ता है। चार पत्थर लेकर चलना पड़ेगा। चार पत्थर लेकर चलने से ही बात बनेगी। चोर तैयार हो गया। उसने चार पत्थर सिर पर रख लिये और जब चलने लगा, तो रास्ते में थोड़ी दूर ही चढ़ा होगा कि थक गया, तो उसने कहा—स्वामीजी, यह तो बहुत भारी पत्थर हैं। हमको तो बहुत कष्ट होता है। उन्होंने कहा—बेटा ! एक पत्थर फेंक दो। उसने एक पत्थर फेंक दिया। थोड़ा और आगे चला, फिर थक गया। स्वामीजी ने कहा—स्वामीजी यह तो तीन पत्थर हैं थोड़ा और कम कराइए। फिर एक और फेंक दिया। दो पत्थर रह गये। उनको लेकर ऊपर चढ़ने लगा। फिर कहने लगा यह तो बहुत भारी हैं। एक पत्थर और फेंक दिया। एक पत्थर और रह गया। उसको लेकर जब ऊपर पहाड़ पर चढ़ता चला जा रहा था, तब फिर वह बहुत थक गया। उसने कहा—स्वामीजी आप ऐसी कृपा करें, आप इस पत्थर को भी फिंकवा दीजिए तब बात बनेगी। अब तो मुझसे चला नहीं जाता। पहले चार पत्थर लाया, फिर तीन लिये, दो लिये, अब मैं चलते-चलते थक गया हूँ कि मेरी गर्दन में भी दर्द होता है; आप इसको भी फिंकवा दीजिए तो बाबा जी ने कहा—अच्छा, तो उसे भी फेंक दो। चारों पत्थरों को फेंक देने के बाद में जब वहाँ ऊपर टीले पर पहुँचा, तब महात्मा ने भगवान को दिखाने के बजाय चोर से यह पूछा—जब चार पत्थर लेकर आप टीले पर चढ़ रहे थे तब चढ़ना मुश्किल था न ? अरे साहब ! बहुत मुश्किल था, हम चढ़ ही नहीं सकते थे। तब उन्होंने कहा—हमारे सिर के ऊपर पत्थर रखे हुए हैं, हम उन पत्थरों को एक-एक करके फेंक दें, तब फिर हमारे लिए इस टीले पर चढ़ना, भगवान को देख सकना कोई भी चीज कठिन नहीं रहेगी। काम का पत्थर, क्रोध का पत्थर, लोभ का पत्थर, मोह का पत्थर, मद और मत्सर का पत्थर—यह सारे-के-सारे पत्थर ऐसे घिनौने पत्थर हैं, जो हमारी नाक में दम करते रहते हैं, हमको हैरान करते रहते हैं। अगर इस हैरानी को और इन पत्थरों को दूर न करें, तो बहुत मुश्किल हो जाएगी, बस यही तो शिक्षण है। आप सारी उपासना का उद्देश्य बार-बार ध्यान रखिए, इसका एक ही उद्देश्य है कि हम अपने आपको पुनीत बनाएँ, धो करके साफ करें, स्वच्छ करें। दिवाली के दिन घर को साफ करते हैं, ताकि लक्ष्मी जी आएँ जब दूल्हा घर में आता है, बारात घर में आती है, तो धो-पोंछ करके साफ करते हैं ताकि जो मेहमान आने वाले हैं, साफ-सुथरे घर में प्रवेश करना पसन्द करें। आपको यही करना पड़ेगा। उपासना का मतलब नजदीक आना है। नजदीक आने का मतलब अपने आपको पहले धुलाई और सफाई कर देना है। बस, आप यह कर पाएँगे, तो समझिए आपकी बहुत सारी मंजिल पार हो गई। मुझे उम्मीद है, आप ऐसा ही करेंगे। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति ।

जीवन-साधना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

कल आपको उपासना की महत्ता के बारे में बताया जा रहा था। भगवान के नजदीक आप बैठें, उपासना करें, तो देखेंगे कि उनके सारे गुण आप में आते चले जाते हैं। बिजली को जो छूता है, तो उसके अन्दर करेण्ट आ जाता है। भगवान् को जो छुएगा, भगवान से उसमें करेण्ट आ जाएगा। दो तालाबों को आपस में जोड़ दें, तो नीचे वाले तालाब का लेवल बढ़ता हुआ चला जाता है और दोनों का तल एक हो जाता है। भगवान और भक्त एक हो जाते हैं। सच तो ये है कि भक्त भगवान से भी बड़े हो जाते हैं; क्योंकि भगवान भक्त का उत्साह बढ़ाना चाहते हैं और दूसरे कामों में उपयोग करना चाहते हैं। शबरी के जूठे बेर भगवान ने खाये थे न ! गोपियों के यहाँ भगवान छाछ माँगने गए थे न ! बलि के दरवाजे पर बावन अंगुल के बन करके भगवान गए थे न ! कर्ण के दरवाजे पर सोना माँगने के लिए साधु और भिखारी का रूप बनाकर गए थे न ! ये बड़प्पन है, भक्त का बड़प्पन। भृगु ने भगवान के सीने में लात मारी थी, कहाँ कैसे भगवान हैं ! जो अपने कर्त्तव्य का ध्यान नहीं रखते और भगवान ने महर्षि भृगु की लात के निशान को अपनी छाती पर अभी तक सुरक्षित रखा हुआ है। विष्णु की मूर्तियों में महर्षि भृगु की लात का निशान बना रहता है। महर्षि भृगु बड़े थे भगवान से। भक्त बड़ा होता है भगवान से; पर सही भक्त होना चाहिए। सही भक्त की कल हम आपको पहचान बता चुके हैं और ये बता चुके हैं कि भक्त को भगवान के अनुशासन पर निर्भर रहना चाहिए; भगवान को अपनी मर्जी पर चलाने की बात नहीं सोचनी चाहिए; अपनी मनोकामना की बाबत ध्यान नहीं रखना चाहिए कि हमारी मनोकामना खत्म कर दी गई। भक्त अपनी मनोकामना खत्म कर देते हैं और भगवान की मनोकामना को अपने ऊपर बनाए रहते हैं।

नारद एक बार मनोकामना माँगने के लिए भगवान के पास गए और ये कहने लगे—एक युवती का स्वयंवर होने वाला है और मुझे आप राजकुमार बना दीजिये, सुन्दर बना दीजिए, ताकि मेरी अच्छी लड़की से शादी भी हो जाए और मैं सम्पन्न भी हो जाऊँ; दहेज जो मिलेगा, उससे मालदार भी हो जाऊँगा। मालदार बनने की और सम्पन्न बनने की दो ही तो मनोकामनाएँ हैं और क्या मनोकामना है ? एक लोभ की मनोकामना है, एक मोह की मनोकामना है। दोनों के अलावा और कोई तीसरी मनोकामना दुनिया में है ही नहीं। इन दोनों मनोकामनाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को लेकर जब नारद भगवान के यहाँ गए, तो भगवान के अचम्भे का ठिकाना नहीं रहा। भक्त कैसा ? जिसकी मनोकामना हो। मनोकामना होगी तो भक्त नहीं होगा—भक्त होगा तो मनोकामना नहीं होगी। दोनों का निर्वाह एक साथ नहीं हो सकता। जहाँ अँधेरा होगा, वहाँ उजाला नहीं रहेगा; जहाँ उजाला रहेगा, वहाँ अँधेरा नहीं होगा। दोनों का एक साथ जोड़ कैसे होगा ? इसलिए भगवान सिर पर हाथ रख करके जा बैठे। अरे ! तुम क्या कहते हो नारद ? लेकिन नारद ने अपना आग्रह जारी रखा—नहीं, मेरी मनोकामना पूरी कीजिए, मुझे मालदार बनाइये, मेरी विषय-वासना पूरी कीजिए। भगवान् चुप हो गए। नारद ने सोचा—भगवान ने चुप्पी साध ली है, शायद मेरी बात को मान लिया होगा। भगवान को माननी चाहिए भक्त की बात ऐसा ख्याल था। बस वो चले गए स्वयंवर में। स्वयंवर में जाकर के बैठे। राजकुमारी ने देखा—कौन बैठा है ? नारद जी का और भी बुरा रूप बना दिया—बन्दर जैसा। राजकुमारी देखकर मजाक करने लगी, हँसने लगी; ये बन्दर जैसा कौन आ करके बैठा है ? बस, उसको माला तो नहीं पहनाई और दूसरे राजकुमार को माला पहना दी। नारद जी दुःखी हुए, फिर विष्णु भगवान के पास गए; गालियाँ बकने लगे। विष्णु ने कहा—अरे नारद ! एक बात तो सुन। हमने किसी भक्त की मनोकामना पूरी की है क्या आज तक ! इतिहास तो ला भक्तों का उठा करके। जब से सृष्टि बनी है और जब से भक्ति का विधान बना है, तब से भगवान् ने एक भी भक्त की मनोकामना पूरी नहीं की है। हर भक्त को मनोकामना का त्याग करना पड़ा है और भगवान की मनोकामना को अपनी मनोकामना बनाना पड़ा है। बस, कल हम ये बता रहे थे कि आप अगर उपासना कर सकते हों, तो भगवान भी आपके के बराबर हो सकते हैं और उनसे बड़े भी हो सकते हैं और भगवान के गुण और आपके गुण एक बन सकते हैं; आप महापुरुष हो सकते हैं, महामानव हो सकते हैं, ऋषि हो सकते हैं, देवात्मा हो सकते हैं और अवतार हो सकते हैं, अगर आप उपासना का ठीक तरीके से अवलम्बन लें तो। कल का ये विषय था।

आज दूसरी बात बताते हैं आपको। अपनी पात्रता का विकास करना पड़ेगा, पात्र इसके लिए बनना पड़ेगा। पात्र अगर न होंगे तब ? शादी कोई लड़की करना चाहे किसी अच्छे लड़के से और वह बुड्ढी हो तब ? गूँगी, बहरी, अन्धी हो तब ? तो कौन शादी करेगा ? इसीलिए पात्रता बहुत जरूरी है। कल हमने कहा था न—उस दिन आपसे कहा था, पानी का गड्ढा होना जरूरी है, बादलों की कृपा प्राप्त करने के लिए। बादल तो बरसते ही रहते हैं। उनकी कृपा तो सबके ऊपर है। गड्ढा जहाँ होगा, वहीं तो पानी जमा होगा न। गड्ढा न होगा तब ? सूरज की कृपा तो हरेक के ऊपर है; लेकिन जिसकी आँखें खराब हो गई हों, उसके लिए क्या कर सकता है सूरज ! दुनिया में एक से एक सुहावने दृश्य दिखाई पड़ते हैं; पर एक-से-एक सुहावने दृश्य को देख कौन सकेगा ? जिसकी आँखों का तिल साबुत होगा, वही तो देखेगा ? जिसकी आँखों का तिल साबुत नहीं है, तो कैसे देखेगा ! जरा आप ही बताइये। जिसके कानों की झिल्ली खराब हो गई है, दुनिया में एक-से-एक बढ़िया संगीत और आवाज निकलती है, पर कानों की झिल्ली खराब हो जाए, तब दुनिया के संगीत सुनने के लिए आदमी की कोई सहायता-सेवा नहीं कर सकता। आदमी का दिमाग खराब हो जाए तब ? तब एक से एक बढ़िया परामर्श देने वाले, एक-से-एक सहायता देने वाले क्या कर सकते हैं ? कोई सहायता नहीं कर सकता। किसकी ? जिसका दिमाग खराब हो गया है। क्या करेंगे ? अपना दिमाग तो सही हो, अपनी झिल्ली तो सही हो, अपनी आँखों का तिल तो सही हो। ये सही होंगे, तो फिर सूरज भी सहायता करेगा, वायु भी सहायता करेगी। पाँच तत्त्व दुनिया में हैं, जिसमें से हवा भी है, रोशनी भी है, सूरज भी है—ये सब आदमी की सहायता करते हैं। इन्हीं की सहायता से तो आदमी जिन्दा है; लेकिन आदमी जिन्दा तो होना चाहिए। मर गया होगा तब, साँस क्या करेगी ? बहुत अच्छी प्रातःकाल की हवा है; हवा फेफड़ों को मिलनी चाहिए; पर लेगा तो तभी, जब वह जिन्दा हो। जिन्दा नहीं हो, तो क्या करेगी हवा। एक से एक बढ़िया आहार है और भोजन है; लेकिन आहार और भोजन के होते हुए अगर किसी आदमी का पेट खराब हो जाए तब ? आप क्या खिला करके करेंगे ? और उल्टा पेट में दर्द हो जाएगा। आप पौष्टिक पदार्थ दीजिए, मलाई-मिठाई दीजिए। अगर पेट खराब है, पचता नहीं है, तो मलाई-मिठाई क्या करेगी ? और जहर पैदा कर देगी। मेरा मतलब पात्रता से है।

आप ध्यान दीजिए और गौर कीजिए। पात्रता का विकास किये बिना न संसार में रास्ता है और न पात्रता का विकास किए बिना आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई रास्ता है। आपको अफसर बनना है ? पब्लिक सर्विस कमीशन के सामने जाइये और अपनी पात्रता साबित कीजिये; अच्छा डिवीजन लाइये और अच्छे नम्बर लीजिये। आपको अच्छा स्थान मिल सकता है। नहीं साहब ! हम तो परीक्षा से दूर रहेंगे; हम तो भगवान जी की आरती गाएँगे; हम तो पब्लिक सर्विस कमीशन की आरती गाएँगे; हमको अफसर बना दीजिए। नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। पात्रता विकसित करना बहुत जरूरी है। पात्रता का इससे क्या मतलब है ? पात्रता का अर्थ होता है—जीवन को परिष्कृत करना। जीवन को परिष्कृत करने के लिए साधना करनी पड़ती है। भगवान को प्राप्त करने के लिए उपासना और अपने आपको पात्र बनाने के लिए साधना। साधना किसकी ? अपनी। अपनी से क्या मतलब ? अपनी से मतलब यह है कि जो हमारे भीतर जन्म-जन्मांतरों के कुसंस्कार जमे पड़े हैं, उनका परिशोधन करना पड़ेगा, बचकानापन दूर करना पड़ेगा। बच्चे को तो कोई कह नहीं सकता। बच्चा कहीं भी पेशाब कर देता है, कहीं भी खड़ा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो जाता है, कुछ भी करने लगता है, कुछ भी चीज फैला देता है; लेकिन बड़ा आदमी तो न केवल स्वयं सँभल के रहता है, वरन् दूसरों की चीजों को भी सँभालकर रखता है। ये बड़प्पन की निशानियाँ हैं। पात्रता से मेरा मतलब उसी से है। चिन्तन की दृष्टि से सुसंस्कृत और व्यवहार की दृष्टि से सज्जन और सभ्य—इन दो विशेषताओं को अपने भीतर पैदा करे आदमी, तो ये माना जाएगा कि उसने पात्रता का विकास कर लिया। पात्रता का विकास अगर कर लिया है, तो संसार में भी इज्जत और भगवान के यहाँ भी इज्जत। पात्रता का अगर आपने विकास नहीं किया तो संसार में भी उपहास और तिरस्कार और भगवान के यहाँ भी नाराजगी। आप कहीं भी, कुछ भी नहीं पा सकते। पात्रता की ओर ध्यान एकाग्र कीजिए। पात्रता आपके हाथ की बात है। उपासना भगवान का अनुग्रह, भगवान के हाथ की बात है; पर साधना तो आपके हाथ की बात है। अपने आपको सुसंस्कारी बनाने के लिए जो भी मुमकिन हो, आप पूरी शक्ति से और पूरी ईमानदारी से मेहनत कीजिए। आपको अनगढ़ और सुगढ़ बनाना है। हमारा जीवन अनगढ़ है; चौरासी लाख योनियाँ घूमने के बाद में न जाने कितने कुसंस्कार हमारे पास जमा हैं और वे कुसंस्कार अगर इसी तरीके से जमा रहे, तो दीवार के तरीके से खड़े रहेंगे और फिर हमको आगे नहीं बढ़ने देंगे और ये हथकड़ियों और बेड़ियों के तरीके से रास्ता रोक लेंगे; न हमको ऊँचा उठने देंगे, न आगे बढ़ने देंगे। इसलिए कुसंस्कारों के विरुद्ध जद्दोजहद करना—ये हमारा काम है। साधना इसी का नाम है। साधना करने से आपने देखा है न, कितनी घटिया-घटिया चीजें, मामूली चीजें, क्या-से-क्या बन जाती हैं ! आदमी पेड़ों को काटता है, छाँटता है, कलम लगाता है। जंगली पेड़ और माली के बगीचे के लगाये हुए पेड़ उनको आपने देखा नहीं है क्या ? कैसे बढ़िया-बढ़िया गुलाब के फूल आते हैं ! रंग-बिरंगे फूल आते हैं। ये माली के हाथ की करामात है। क्यों ? उन्हीं गुलाबों को जो जंगल में रहते हैं, खुशबू भी नहीं आती, बहुत छोटे-छोटे फूल होते हैं, उन्हीं गुलाबों को ऐसा बना देता है। इसका नाम क्या है ? इसका नाम कलम लगाना कहिये, सुसंस्कारिता कहिये अथवा माली की साधना पौधे के साथ और आपकी जीवात्मा की साधना अपने जीवन के साथ। जीवन को अगर परिष्कृत बना लें, व्यक्तित्व को अगर ऊँचा आप उठा लें, फिर मजा आ जाएगा। फिर देखिये आपकी हैसियत कितनी बड़ी हो जाती है और आपकी जितनी हैसियत है, उसी हिसाब से आपको कीमत मिलनी शुरू हो जाएगी। आप एम. ए. तक पढ़े हैं, तो ज्यादा पैसा मिलेगा—मैट्रिक तक पढ़े हैं, तो कम पैसा मिलेगा और बिना पढ़े आदमी हैं, तो उससे भी कम पैसा मिलेगा। पात्रता बढ़ाइये न, कीमत बढ़ाइये न अपनी और जो चाहते हैं पाइये। कीमत आप बढ़ाना नहीं चाहते, माँग करके लेना चाहते हैं। प्रार्थना करेंगे—माँगेंगे, माँगेंगे, माँगेंगे। अरे बाबा ! माँगने से तो पाँच पैसे भी नहीं मिलते; उसमें भी पात्रता की जरूरत होती है। अन्धा, कोढ़ी होगा, तो शाम तक उसकी भीख में दो रुपये आ जाएँगे; हट्टा-कट्टा होगा, तो देगा नहीं, गालियाँ और सुनाएगा तुझे शर्म नहीं आती बेशर्म ! भीख माँगने चला आया। काम, मेहनत, मजदूरी क्यों नहीं करता ? पात्रता तो भिखारी को भी चाहिए, फिर सामान्य लोगों का तो पात्रता के बिना दुनिया में कुछ नहीं चलता। इसलिए पात्रता के लिए अपने गुण, अपने कर्म, अपने स्वभाव इन तीनों चीजों को परिष्कृत करना हर आदमी के लिए बेहद् जरूरी है।

आध्यात्मिकता के रास्ते पर, जहाँ भगवान् का पल्ला पकड़ना पड़ता है, वहाँ दूसरा वाला कदम ये उठाना पड़ता है कि हमारी जीवन की साधना क्रमबद्ध है कि नहीं, हमने अपने को साध लिया है कि नहीं। साध लेने से आदमी का मूल्य बढ़ जाता है। आप जानते हैं न ! साँप को मदारी लोग पाल लेते हैं और सिखा लेते हैं। वो साँप जो आमतौर से हर आदमी को काट खाता है, वही साँप मदारी के बाल-बच्चों के गुजारे का माध्यम बन जाता है। बन्दर के बारे में आप जानते हैं न। बन्दर कितना वाहियात ! किसी के कपड़े उठा के भाग जाता है, किसी को काट खाता है, किसी को क्या करता है; लेकिन वही बन्दर पाल लिया जाता है, सिखा लिया जाता है, साध लिया जाता है, तो मदारी के बाल-बच्चों का गुजारा करने के लिए वही सबसे बड़ा स्रोत हो जाता है। रीछ जानते हैं, कैसा खौफनाक होता है। लेकिन रीछ जब पाल लिये जाते हैं, साध लिये जाते हैं, तब रीछ ही अपने पालने वाले का गुजारा कर देता है। सर्कस के बारे में आप जानते हैं न। शेर कितना भयंकर और दूसरे जानवर कितने भयंकर ! लेकिन रिंगमास्टर के द्वारा जब साध लिए जाते हैं, तो सर्कस के मालिक को एक-एक दिन में हजारों रुपये कमा करके देते हैं। शेर, जो किसी को भी मार डाल सकते हैं, मालिक को दो-दो हजार रुपया रोज कमा करके देते हैं। ये कैसे हो सका ? साधना के द्वारा। साधना जैसे जंगली जानवरों की, की जा सकती है, उसी के तरीके से जीवन की भी की जा सकती है। साधना अगर न की जाए तब ? आदमी प्राकृतिक रूप से बड़ा वाहियात है, वनमानुष है। डारविन ने कहा था कि इनसान बन्दर की औलाद है; बन्दर नहीं है, वह बन्दर का भाई-बन्धु है। वनमानुष होते हैं, जंगलों में रहते हैं, देखे हैं न आपने ? न इनको कपड़ा पहनना आता है, न इनकी कोई सभ्यता है, न इनकी कोई बातचीत है। ऐसे किसी तरीके से जैसे बन्दर पाल लिये जाते हैं, ऐसे एक वनमानुष के तरीके से वे लोग भी गुजारा कर लेते हैं, जिनको लोग जंगली कहते हैं। जंगली लोग को नर-पशुओं में गिना जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रामू के बारे में सुना है न आपने ! रामू नाम का एक लड़का था। आगरा जिले के भेड़ियों की माँद में पाया गया इनसान का बच्चा था। भेड़िये उठा के ले गए; पर खाया नहीं, पाल लिया उन्होंने। शिकारियों ने भेड़ियों को मार करके उस रामू मनुष्य के बच्चे को पकड़ लिया। फिर क्या हुआ ? वह जंगली जानवरों के तरीके से रहता था। बोलता भी वैसे ही था, चलता भी वैसे ही था। कच्चा माँस खाता था। कुछ भी नहीं आया। उसको लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में भर्ती कर दिया गया। चौदह वर्ष की उम्र तक जिया; लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी कुछ नहीं आया, कुछ बन नहीं सका। क्यों ? क्योंकि छोटी उम्र में संस्कार नहीं डाले गये थे। संस्कार डालना आदमी के लिए बेहद जरूरी है। संस्कार के बिना आदमी स्वभाव का कैसा हो सकता है ? फूहड़ है, अनगढ़ है, बेहूदा है। इसलिए आपको, अपने आपको संस्कारवान स्वयं बनाना चाहिए। कौन बनाएगा ? दूसरा कहाँ तक बनाएगा ? बचपन में तो होता भी है। गुरुकुलों में ऋषि लोग छोटे बच्चों को महापुरुष बनाने की शिक्षा देते थे। आरण्यकों में वानप्रस्थों को भर्ती करने के बाद में शिक्षण देने की बात भी चलती है; पर सामान्य जीवन कैसे चले ? बताइए आप। सामान्य जीवन में कौन पीछे लगेगा आपके ? एक-एक गलती, एक-एक विचारधारा, एक-एक भूल के बारे में कौन सुधार करे ? इसलिए ये काम आपको स्वयं ही करना पड़ेगा। आप ही अपने गुरु हैं, आप ही अपने शिक्षक हैं और आप ही अपने साधक हैं, आप ही अपने मार्गदर्शक हैं। अगर आप यह समझ लें, तो आपके जिम्मे एक ही काम रह जाता है कि आप अपने आपको सुधारिये, आप अपने आप को सँभालिए, आप अपने आप को ठीक कीजिए और अपने भगवान के नजदीक जाइए।

भगवान क्या है ? बताइए आप। एक भगवान तो वह है, जो सारे विश्व में छाया हुआ है, सारे नियमों की व्यवस्था बनाता है। वे एक तरह के नियम हैं, कायदा और कानून हैं, जिसको हम परब्रह्म कहते हैं। एक और भी ब्रह्म है, जिसको आपको अपने ढंग से बनाना है; वह कौन-सा परब्रह्म है ? अँग्रेजी में इसको सुपरकान्शस (सुपर चेतन) कहते हैं। वेदान्त की भाषा में इसको 'स्व' कहा गया है, आत्मा कहा गया है। **आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः मन्तव्यः निदिध्यासितव्यः।** अरे लोगो ! अपने आप को जानो, अपने आपको समझो, अपने आपको सुधारो, अपने आपको ठीक करो। यह कैसे हो सकता है ? अपने आप। अपने आपसे क्या मतलब ? अपने आपसे मतलब है—सुपर चेतना से, जो हमारे भीतर है, जिसके बारे में शुरू में बताया गया है। भीतर के अन्तःकरण में व्यक्तित्व है, जिसमें कि गुण, कर्म और स्वभाव भरे पड़े हैं, जिसमें विश्वास और मान्यताएँ भरी पड़ी हैं; जिसमें आदतें भरी पड़ी हैं। आदतों को आपको ठीक करना है। अपनी मान्यताओं में, जिसमें घिनौनेपन घुसे बैठे हैं, उनमें आपको सुधार करना है, शुरू से लेकर अन्त तक देखभाल करनी है, उनको ठीक करना है। आपको आत्मदेव की उपासना करनी है। उपासना के बारे में जो हम कल कह रहे थे, वास्तव में वह आपका आत्मदेव है। अपने आपकी उपासना किया कीजिए। अपने आपकी उपासना जो कर लेते हैं, वह अपने आप ही, अपनी साधना से ही, अपने ही दबाव से भगवान बना लेते हैं। मीरा ने अपने ही दबाव से पत्थर को गिरिधर गोपाल बना लिया और एकलव्य ने अपने दबाव से ही मिट्टी के पुतले को द्रोणाचार्य बना दिया था और रामकृष्ण परमहंस ने अपने ही व्यक्तित्व के दबाव से पत्थर को काली बना दिया था। अपने आपका, व्यक्तित्व का उजागर होना और स्वच्छ, निर्मल होना—ये बहुत बड़ी बात है। इसके लिए आपको क्या करना चाहिए ? चौबीसों घण्टे आपको ध्यान रखना चाहिए। क्या ध्यान रखना चाहिए ? कि हमारा जीवन किस तरीके से ठीक बन सकता है ? आपको अपने कर्त्तव्यों पर ध्यान देना चाहिए। आपको अपने ज्ञान को परिष्कृत करना चाहिए और अपनी भक्ति-भावना का विकास करना चाहिए। तीन योग हैं न ! एक योग का नाम है—ज्ञानयोग। इसका अर्थ है—आप वास्तविकता को समझें। आपने बाहर को समझा है, चीजों को समझा है, खेती-बाड़ी को समझा है, पैसे को समझा है, दुकान को समझा है, मुहल्ले वालों को समझा है, सन्तान को समझा है, फिर अपने आपको क्यों नहीं समझा ? अगर आप जीवन को और अपने आपको समझ सकते हों, तो इसका नाम 'ज्ञान योग' होगा। अगर आपने अपने फर्ज और कर्त्तव्यों को समझ रखा हो तब ? फर्ज का ज्ञान नहीं, कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं, कोल्हू के बैल के तरीके से सारे दिन मरते रहते हैं, दूसरों की देखा-देखी वासनाओं के दबाव में। मेहनत कम नहीं करते। बहुत मेहनत करते हैं; पर कर्त्तव्यपालन ? कर्त्तव्यपालन अलग चीज है। हमारे फर्ज और हमारी ड्यूटियाँ कहाँ हैं ? ड्यूटियाँ और हमारे फर्ज जहाँ कहीं भी हमको बुलाते हैं, वहाँ हमको जाना चाहिए। इसका नाम कर्मयोग है और भक्ति-भावना ? भक्ति-भावना मुहब्बत को कहते हैं, प्यार भगवान को किया जाता है। उपासना भगवान की, की जाती है। प्रेम भगवान को किया जाता है; पर भगवान तक सीमित नहीं रखा जाता। अखाड़े में कसरत करते तो हैं; पर अखाड़े तक, उस कसरत की जो शक्ति-संचय है, उसको खर्च थोड़े कर देते हैं। वह तो बाजार में करना पड़ता है, कहीं और करना पड़ता है। भगवान की भक्ति का अभ्यास करते हैं, भगवान से हम प्रेम करते हैं, उपासना करते हैं। अगर उपासना के बाद में हमारी भक्ति का विकास हुआ हो, तब प्राणियों में इसका उपयोग करना पड़ेगा, मनुष्यों में उपयोग करना पड़ेगा, सबमें उपयोग करना पड़ेगा। प्यार से अपने आप को, हरेक को सराबोर कर देना पड़ेगा। प्यार अपने शरीर से कीजिए, ताकि इसको अच्छे तरीके से सुरक्षित रख सकें। प्यार अपनी अन्तरात्मा से कीजिए, ताकि इसका कल्याण करने में आप समर्थ हो सकें। प्यार अपने मस्तिष्क के चिन्तन की मशीन से कीजिए, ताकि प्यार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

द्वारा सही विचार करें और अपने आप को तहस-नहस न होने दें। प्यार अपनी बीबी को कीजिए, ताकि उसका व्यक्तित्व आप निखार सकें। प्यार आप बच्चों से कीजिए, ताकि उनको संस्कारवान बना सकें। प्यार अपने मुल्क को कीजिए, देश को कीजिए, धर्म और संस्कृति को कीजिए, ताकि उनको इस लायक बना सकें कि वह सम्मानास्पद हों, उनका मजाक नहीं उड़ाया जाए। हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति के बारे में लोग तरह-तरह के लांछन न लगा सकें, ऐसा कीजिये न ! भक्ति का अर्थ प्यार होता है। प्यार का अर्थ सेवा होता है। सेवा कीजिए, सेवा ! अगर भक्ति को समझ सकते हों, तब फिर ये क्या हो जाएगा ? फिर ये भक्तियोग हो जाएगा। अपने जीवन की वास्तविकता को समझ सकें, तो ये ज्ञानयोग हो जाएगा। जब अपने फर्ज और ड्यूटी को सब कुछ मान लें, इस बात पर ध्यान नहीं दें कि दूसरा आदमी क्या कहता है और क्या सलाह देता है, तब इसको कर्मयोग कहेंगे। ये तीन बातों का ध्यान रखेंगे, तब आपका व्यक्तित्व निखरता हुआ चला जाएगा। जीवन की साधना के लिए इन बातों पर ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

हमारा जीवन पारस है, हमारा जीवन कल्पवृक्ष है, हमारा जीवन अमृत है, हमारा जीवन कामधेनु है। आप जो भी चाहें, इस जीवन को बना सकते हैं; लेकिन बनाना तो आपको ही पड़ेगा ! आप ही बनाएँगे, तभी बनेगा। अपनी साधना आप कीजिए। अपने आपके विरुद्ध बगावत खड़ी कर दीजिए। अपने जन्म-जन्मान्तरों को तोड़-मरोड़ के फेंक दीजिए और जो अच्छाई आपके भीतर नहीं हैं, जो विशेषताएँ अभी तक पैदा नहीं कर सके हैं, उन गुण, कर्म और स्वभाव के बारे में आप अभी तक अभावग्रस्त हैं, कृपा करके वे ठीक कीजिए, उनको सुधारिये। ये पुरुषार्थ कीजिए। बुराइयों को छोड़ने का पुरुषार्थ, अच्छाइयों को बढ़ाने का पुरुषार्थ। पराक्रम अगर आप करेंगे, तो किस तरीके से ? आगे बढ़ने के लिए दो कदम बढ़ाने पड़ते हैं। एक कदम के बाद दूसरा, दूसरे के बाद पहला। ऐसे ही आपको अपनी कमजोरियों और बुराइयों को दूर करने की जद्दोजहद करनी पड़ेगी और अपनी अच्छाइयों को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा। यह दो काम करते हुए चले जाएँगे, तो आपकी जीवन-साधना पूर्ण हो जाएगी। जीवन-साधना जिस हिसाब से आपकी पूर्ण होगी, आप देखेंगे सारा समाज आपका सहयोग करता है, अन्तरात्मा आपका सहयोग करता है; भगवान आपका सहयोग करते हैं, पात्रता जैसी ही विकसित होती चलेगी। इसलिए मैंने कल कहा था—आपके भीतर फूल जैसे खिलना शुरू हो जाएगा, वैसे ही आपके ऊपर भौंरे आने शुरू हो जाएँगे, तितलियाँ आनी शुरू हो जाएँगी; बच्चे आपको ललचाई आँखों से देखने लगेंगे। भगवान अपेक्षा करेंगे कि ये फूल हमारे गले में हैं, सिर पर होता, तो कैसा अच्छा होता ? कृपा करके कीजिए, साधना कीजिए। साधना के चमत्कार देखिए। साधना से सिद्धि मिलती है—इस सिद्धान्त को आपको जीवन में प्रयोग करके दिखाना है, तभी फायदा उठा सकेंगे, जिसके लिए कल्प-साधना में आप आए हैं। हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

शक्तिपात एवं कुण्डलिनी जागरण का तत्त्वदर्शन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आज से पचपन वर्ष पूर्व हमारे जीवन में एक बहुत बड़ी घटना घटी। अपने गुरुदेव ने पूजा की कोठरी में प्रकाश के रूप में दर्शन दिये। मैंने उनका प्रकाश के रूप में दर्शन किया। शक्ल भी दिखायी पड़ी। उसी स्मृति में हमने अखण्ड दीपक जलाये, इसलिए कि वह प्रकाश मेरे जीवन में बना रहे जो पहले दिन गुरुदेव ने अपनी शक्ल और सूरत के रूप में मुझे दिखाया। कहीं भूल न जाए—कहीं पथ से दूर न हो जाए, इसलिए अखण्ड दीपक के रूप में उनकी स्थापना कर दी गयी। उस प्रकाश के साथ अपना जीवन भर सम्पर्क और सम्बन्ध बनाये रखने के लिए। गुरुदेव जब मिले तो घटना थोड़ी-सी है—एक-आधे घण्टे की। आधा घण्टे में वह घटना समाप्त हो गयी।

तब मैं पन्द्रह वर्ष का बालक था, पूजा की कोठरी में बैठा हुआ जप और ध्यान के कार्य में लगा था। यकायक एक प्रकाश कोठरी में घूमता हुआ दिखाई पड़ा। उस प्रकाश के भीतर एक मनुष्य की आकृति दिखायी पड़ी। मैं तो डर गया कि क्या बात है ? भूत-प्रेत है क्या कोई ? काँपते देखकर उस प्रकाश में बैठे हुए मनुष्य ने आवाज दी—बच्चे डरने की जरूरत नहीं है। तुम किसी विशेष काम के लिए आये हो। आँखें बन्द करो, आँखें बन्द की मैंने और तीन जन्मों का दृश्य फिल्म के तरीके से दिखायी पड़ा। मैं कौन हूँ ? और कब-कब जन्म लिया और यह शक्ल जो मुझे गुरुदेव के रूप में दिखायी पड़ती है, कब-कब मेरे साथ नृत्य करती रही ? बस, इतनी घटना घटित हुई और मेरे जीवन का कायाकल्प हो गया। मैंने उनके चरणों पर मस्तक झुकाया और कहा—"आप मुझे लम्बे समय से राह बताते रहे हैं, अब इस जीवन की भी राह बताइये।" उन्होंने एक राह बतायी—चौबीस साल तक चौबीस गायत्री के महापुरश्चरण करने की आज्ञा दी और कहा—"तुझे लोहे का, स्टील का बनना पड़ेगा। बड़े काम करने के लिए मजबूती की जरूरत है। मजबूत व्यक्तित्व न होगा तो बड़े काम नहीं कर सकते। हम चाहते हैं कि भगवान की धाराएँ तेरे पास आएँ। भगवान की धाराओं को अपने भीतर धारण करने के लिए कमजोर आदमी समर्थ नहीं हो सकते। कमजोर आदमी फट जाएगा—मर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जाएगा। देवता की शक्ति जब आती है तो आदमी को पागल बना देती है। उसकी सामर्थ्य को धारण करने के लिए समर्थता होनी चाहिए। भगवान की शक्ति-धाराएँ हम तेरे ऊपर डालना चाहते हैं, तेरे माध्यम से कुछ बड़े काम कराना चाहते हैं।" तो मैंने कहा—"कराइये।" उन्होंने कहा—'ऐसे नहीं हो सकता। कच्चे आदमी-कमजोर आदमी जरा-सा नाम लेते ही पागल हो जाते हैं। जरा-सी सम्पदा मिलते ही विक्षिप्त और उन्मत्त हो जाते हैं। जाने क्या से क्या करने लगते हैं ?"

मजबूत चीजों को ग्रहण करने के लिए मजबूत चीजें चाहिए। एटामिक भट्टी बनायी जाती है तो उसके चारों ओर घेरे इतने मजबूत बनाये जाते हैं कि उसके भीतर से रेडिएशन निकलकर कहीं आस-पास के इलाके में न फैल जाएँ। ये घेरे बहुत मजबूत बनाये जाते हैं। इसी तरह आध्यात्मिक शक्तियों को भीतर से जिस किसी आदमी को अवतरित करने की इच्छा हो, हनुमान जी को—शंकर जी को भीतर अवतरित करने की इच्छा हो तो उसे अपने को इस लायक बनाना पड़ेगा कि शंकरजी आएँ तो वहाँ निवास कर सकें। कमजोर आदमी—स्वार्थी, चालाक, विलासी आदमी उसको धारण नहीं कर सकते। यदि आती भी हैं तो या तो टक्कर मारकर वापस चली जाती हैं या फट जाती हैं। फट जाने से मतलब पागल हो जाते हैं। दिमाग खराब हो जाता है, जैसे रावण का हो गया था, कंस का हो गया था, भस्मासुर का हो गया था। दैवी शक्तियों को प्राप्त कर लेना सुगम है, पर उनको पचा डालना बड़ा मुश्किल है। वे हजम नहीं होतीं। पारा हजम नहीं होता। आध्यात्मिक शक्तियाँ हजम नहीं होतीं। हजम करने का वक्त आता है तो आदमी पागल हो जाता है—लोकेषणा, पुत्रेषणा और वित्तेषणा के आधार पर।

आध्यात्मिकता जब आती है तो भीतर जो कुछ भी है, उसको पहले बाहर निकालती है। दुर्वासा ऋषि के भीतर आध्यात्मिकता आयी थी तो क्रोध काबू से बाहर हो गया था। जो कुछ भी हमारे भीतर चीजें हैं, वे बढ़ेंगी। हमारे अन्दर कामुकता है तो कामुकता बढ़ जाएगी। आप नवरात्रि का अनुष्ठान कीजिए, यदि आपके पास संयम के विचार नहीं हैं, तो निश्चित रूप से कामुकता बढ़ेगी। क्रोध आपके भीतर भरा है और उसका परिशोधन नहीं किया गया है और आध्यात्मिक शक्तियों का अनुष्ठान आपने किया है तो मैं बताता हूँ कि क्रोध आपके भीतर बढ़ जाएगा। जो भी चीज आपके भीतर है—ज्ञान आपके भीतर है तो ज्ञान बढ़ जाएगा। भक्ति है तो भक्ति बढ़ जाएगी। अनुष्ठान का काम शक्ति उत्पन्न करना है। यह शक्ति किसमें खर्च होगी ? जो कुछ भी है, उसी में खर्च होगी। प्राप्त करना कोई मुश्किल नहीं है, तप करना कठिन है। गुरुदेव ने मुझे सामर्थ्यवान और शक्तिशाली बनने के लिए तपस्वी होने के लिए आज्ञा दी और मैं चौबीस साल तक तप करता रहा। जिव्हा के तप के बारे में आपको मालूम है न कि चौबीस साल तक जौ की रोटी और छाछ के ऊपर निकाले हैं और बाकी तप की बातें कैसे बताएँ कि कैसे कहें, किसी ने देखा नहीं ? हम बराबर तप करते रहे और अपने आपको मजबूत बनाते रहे, चौबीस साल तक। गुरुदेव की कृपा रही और लोहा, पारस को छूकर सोना हो गया।

मेरे गुरुदेव ने मुझे दो चीजें दीं पहले दिन, जिनको पाकर मैं धन्य हो गया। उन दो चीजों से मेरी जिन्दगी पार हो गयी, जो पहले दिन उन्होंने दीं। तीसरी चीज की फिर मुझे कोई जरूरत ही नहीं पड़ी, वही वरदान काफी था। क्या थीं वे दो चीजें ? एक तो उन्होंने मेरी कुण्डलिनी शक्ति जगा दी पहले दिन और दूसरा उन्होंने मेरे ऊपर शक्तिपात कर दिया। गुरुकृपा का यह अनुग्रह रहा मेरे ऊपर। इसी तरह का कहीं आपको भी लाभ मिल सके तो आप भी सौभाग्यवान हो जाएँ। मैं भी सौभाग्यवान हूँ। मैं अपने गुरु को पाकर धन्य हो गया। हम दोनों एक-दूसरे को पाकर धन्य हो गये। उन्होंने मेरी शक्ति जगा दी, मेरे ऊपर शक्तिपात कर दिया।

शक्तिपात क्या होता है ? कुण्डलिनी क्या होती है ? आपको मुझसे यह बातें पूछनी चाहिए। आपकी जानकारियाँ बच्चों जैसी हैं। बच्चों की जानकारियाँ बहुत छोटी होती हैं, बहुत कमजोर होती हैं। कुण्डलिनी के बारे में आप लोगों का ख्याल है कि कोई मूलाधार चक्र है, जहाँ कोई साँप टाइप की चीज सोती-सी रहती है और जब जगती है तो पीठ में से रीढ़ की हड्डी में से निकलकर सिर पर जा बैठती है और आदमी को चमत्कार दिखाती है—तमाशे दिखाती है। आपके हिसाब से ये कोई शारीरिक रियाज है, फिजिकल एक्शन है। इसी तरह शक्तिपात के बारे में आप यह समझते हैं न कि शक्तिपात जब होता है, जब गुरु सिर पर हाथ रखता है तो आदमी के भीतर करण्ट मारता है, झटका मारता है, बिजली जैसी कोई चीज बढ़ जाती है। ताकत बढ़ जाती है। बेटे, ये तो मैस्मेरिज्म है—हिप्नोटिज्म है और इस तरह से मैं सैकड़ों ख्वाब आपको दिखा सकता हूँ, पर इससे कुछ होने वाला नहीं है। मैं आपको ऊँचे स्तर की कुण्डलिनी बताना चाहता हूँ, जिसका सम्बन्ध चेतना से है। चेतना में कोई हलचल नहीं होती और चेतना कोई करण्ट नहीं मारता। चेतना जो हमारा प्राण है, जीवात्मा है—इसमें से न कोई साँप निकलता है, न कोई बिच्छू निकलता है। ये सारी बातें 'मैटर' से सम्बन्धित हैं, 'फिजिकल' है और शरीर से सम्बन्ध रखती हैं। आत्मा से इन बातों का कोई ताल्लुक नहीं है।

बेटे जो लोग कुण्डलिनी जगा देने और दिखा देने की बात कहते हैं, मैं उन्हें 'बाजीगर' कहता हूँ और देखने वाले को 'बच्चा' कहता हूँ—बचकाना कहता हूँ। प्रकाश दिखा दीजिये और हनुमान दिखा दीजिए, बेटे, आत्मा में आँखें नहीं होतीं। आँखें हमारे स्थूल शरीर में हैं, लेकिन हमारी आत्मा में कोई आँख नहीं है। आत्मा में केवल संवेदना है। तो दो तरीके से मेरी कुण्डलिनी जगी। 'कुण्डलिनी' किसे कहते हैं ? कुण्डलिनी-विवेकशीलता को कहते हैं—दूरदर्शिता को कहते हैं। विवेकशीलता मेरी उसी दिन जग गयी और मैंने देखा कि मेरी समझ और दुनिया

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की समझ में जमीन-आसमान का अन्तर है। दुनिया की अपनी समझ और अक्ल है और वह उसी के हिसाब से हमको प्रभावित करती तथा अपने रास्ते पर चलाना चाहती है। संस्कारों का, कुटुम्ब का दबाव और सारे समाज का दबाव एक ओर और मेरी कुण्डलिनी शक्ति एक ओर अर्थात् विवेकशीलता एक ओर मेरी विवेकशीलता जगी और उसने कहा 'हम और हमारा भगवान—हमारी आत्मा और परमात्मा एक ओर—ये दोनों मिलकर जो फैसला करेंगे, वह सबसे बड़ा है। यह दुनिया तो पागलों की है, जाहिलों की है, दुष्टों की है, इनमें से एक का भी कहना नहीं मानेंगे। हम अपनी मर्जी से चलेंगे जो बात हमको ठीक मालूम पड़ेगी, हमारा भगवान जो कहेगा, हम वही करेंगे और किसी का नहीं मानेंगे। हम अकेले फैसला करेंगे, हम अकेले चलेंगे।

कुण्डलिनी शक्ति का थोड़ा-सा परिचय रवीन्द्रनाथ टैगोर ने दिया है। उन्होंने कहा—"एकला चलो रे" अकेला चलो, फैसला जो करना है, अकेले करो। सूर्य अकेला चलता है, चन्द्रमा अकेला चलता है, पृथ्वी अकेली चलती है। जब से यह कुण्डलिनी शक्ति हमारे भीतर जगी, लोगों की सलाह-मशविरा को उठाकर एक ओर फेंक दिया और कहा—आपकी राय आपको मुबारक हो। इस तरह की कुण्डलिनी शक्ति जिनकी जगी है, उसको, मरने के बाद में नहीं कहता, उसे इसी जीवन में महानताएँ मिली हैं। समर्थ गुरु रामदास के ब्याह की तैयारी हो चुकी थी, दूल्हा मण्डप में बैठा था। पण्डित चिल्लाया—लड़की-लड़का सावधान ! समर्थ गुरु रामदास ने सोचा—जरूर कोई चक्कर है। दाल में कुछ न कुछ काला है अन्यथा पण्डित क्यों कहता सावधान ? उन्होंने आँखें बन्द कीं तो सारा माजरा समझ में आ गया। उनके भगवान ने कहा—यह जिन्दगी का मोड़ है—इधर चल या उधर चल। समर्थ ने कहा—मैं तो आपके साथ चलूँगा। बस, एक ही क्षण में उनकी कुण्डलिनी जग उठी और मुकुट उतार फेंका—कंगन तोड़कर फेंक दिया और मण्डप से भाग खड़े हुए। समर्थ गुरु रामदास ने वहाँ से निकलने के बाद क्या किया ? आप कभी भी महाराष्ट्र जाएँ तो वहाँ एक ही सन्त का नाम सर्वत्र पायेंगे—जिसका नाम है—समर्थ गुरु रामदास, उन्होंने शिवाजी को बनाया और हिन्दुस्तान को आजादी दिलाई।

ऐसी शानदार जिन्दगी और किसी की हो सकती है क्या ? हाँ एक और है और वह है शंकराचार्य। उनकी माँ रोज कहती थी कि बेटे तेरा ब्याह करूँगी। शंकराचार्य को एक सपना दिखाई पड़ा कि मैं शंकर का दूसरा रूप हूँ। मैं चाहूँ तो दुनिया का क्या-क्या कर सकता हूँ ? मेरे पास ज्ञान की अगाध शक्तियाँ हैं। बस उन्होंने अपने भगवान से पूछा—मुझे क्या करना चाहिए ? आपका कहना मानना चाहिए या माँ का ? भगवान ने कहा—हमारा। शंकराचार्य ने निश्चय कर लिया और क्या से क्या बन गये ? कितनी शानदार जिन्दगी उनकी व्यतीत हुई। बेटे, यह उनकी कुण्डलिनी शक्ति थी, जिसने उनके विवेक को जगा दिया।

सारा समाज हमारा खानदान ही है और हमारे भीतर वाले ? चोर ? इनका वर्णन करते हुए तुलसीदास ने कहा है कि हमारे मित्र—हमारे सहायक—हमारे सम्बन्धी जो हमारे भीतर कामना के रूप में, लोभ के रूप में, इसके रूप में, उसके रूप में विद्यमान हैं—बड़े-बड़े प्रलोभन दिखाते हैं और हमको पकड़े रखते हैं। ये भी हमारे भीतर के हैं। समाज के बाहर के भी हैं। सारे के सारे लोगों की समझ एक ओर, मेरी एक ओर। बस यही मेरी कुण्डलिनी है। छोटी-सी मछली पानी के बहाव को चीरती हुई उल्टी दिशा में चली जाती है, पर सीधी दिशा में हाथी तक बह जाते हैं। बड़े-बड़े समझदार-अक्लमन्द तक बह जाते हैं, लेकिन जिनके भीतर का विवेक जाग्रत होता है, वे अपने रास्ते पर—भगवान के रास्ते पर—हम और हमारा भगवान—दो के हिसाब से निश्चयपूर्वक आगे बढ़ते चले जाते हैं। मेरी कुण्डलिनी जगी थी और उसने मुझे वहाँ से—छोटे-से देहात में जहाँ घर में खेती-बाड़ी का धन्धा होता था—बाप-दादे पण्डिताई का धन्धा करते थे, बढ़ते हुए मैं कहाँ से कहाँ चला आया ? कुण्डलिनी ने मुझे कहाँ से कहाँ लाकर बिठा दिया। अब मैं उस गाँव का आदमी नहीं हूँ, सारे विश्व का आदमी हूँ। केवल हिन्दुस्तान का नहीं, सारे विश्व का आदमी हूँ और अभी बहुत बढ़ रहा हूँ। अभी दस-पाँच वर्ष मेरी जिन्दगी के हैं और मैं बढ़ता ही चला जाऊँगा। कुण्डलिनी ने मेरा दायरा कितना अधिक बढ़ा दिया, मेरा व्यक्तित्व बढ़ा दिया, चिन्तन बढ़ा दिया, मेरी आत्मा बढ़ा दी, आस्थाएँ बढ़ा दीं, आत्मज्ञान बढ़ा दिया, मेरी सामर्थ्य बढ़ा दी। हमारा मन था कि आप लोगों को बुलाकर आपकी भी ऐसी ही कुण्डलिनी जगा पाऊँ तो कितना अच्छा ? मालूम नहीं मेरे सौभाग्य में वैसा कुछ सुयोग है कि नहीं जैसा कि मेरे गुरु में था।

मेरे गुरु ने एक और चीज दी थी। क्या दी थी ? शक्तिपात किया था। शक्तिपात किसे कहते हैं ? शक्तिपात—बेटे, उसे कहते हैं जिसमें उच्चकोटि के विचारों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए जिस ताकत की जरूरत पड़ती है, जिस बहादुरी और हिम्मत की जरूरत पड़ती है, उसका नाम है शक्तिपात। हर चीज के लिए—हर विचार को आगे बढ़ाने के लिए शक्ति चाहिए। मोटरकार आपके पास है, लेकिन उसे चलाने के लिए पेट्रोल चाहिए। पेट्रोल नहीं होगा तो कार चलेगी किससे ? कुण्डलिनी से विवेक आ गया, विचार आ गया, निश्चय करने का हौसला आ गया कि कौन-सी बात उचित है और कौन-सी अनुचित है। लेकिन जो बात उचित है, उसको करने के लिए ताकत चाहिए और जो अनुचित है, उसको छोड़ने के लिए भी ताकत चाहिए। जो अनुचित है वह छूटता नहीं। नशे की आदत छूटती नहीं, शराब की आदत छूटती नहीं, दुराचार की आदत छूटती नहीं, कुसंस्कार छूटते नहीं। प्राण शक्ति है नहीं, जिससे कि हम अपने कुसंस्कारों को चैलेंज कर सकें कि आप हटिये और आप हमें छू नहीं सकते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमें अपनी विकृतियों से लोहा लेने के लिए ताकत चाहिए और किसके लिए शक्ति चाहिए ? श्रेष्ठ काम करने के लिए शक्ति चाहिए। किसी भी श्रेष्ठ काम के लिए फैसला कर लेना ही काफी नहीं है। किताब पढ़ लेना, विचार सुन लेना काफी नहीं है। जरूरत इस बात की है कि हमारे भीतर से एक साहस—एक हिम्मत उभरे, जो श्रेष्ठ कामों के लिए चल पड़े और दुष्प्रवृत्तियों से लड़ पड़े। श्रेष्ठता के मार्ग पर चलने के लिए इतनी बहादुरी की जरूरत है जितनी कि सिपाहियों को भी नहीं पड़ती। सिपाहियों को कम ताकत की जरूरत है, लेकिन अपने मानसिक चोरों के विरुद्ध लड़ने के लिए बहुत बड़ी ताकत चाहिए। हम जिस चक्रव्यूह में फँसे हुए हैं, उसमें से निकलने के लिए बड़ी बहादुरी की जरूरत है—हिम्मत की जरूरत है।

मेरे गुरुदेव ने मुझे यही हिम्मत दी और मेरा शक्तिपात हो गया। शक्तिपात होने के पश्चात् मैं बढ़ता हुआ चला आया। उन दो चीजों के आधार पर मैं आगे बढ़ा। हमें हमेशा भगवान ने ही आगे बढ़ाया। श्रद्धा और विश्वास के रूप में भगवान होते हैं। भगवान ने मुझे कन्धे पर बिठाकर और अँगुली पकड़कर चलाया है। भगवान क्या है ? वह एक कायदा है, कानून है—एक नियम है। खुशामद से वह बिल्कुल दूर है। उसके यहाँ न पूजा करने वालों के लिए रियायत है और पूजा न करने वालों के लिए शिकायत भी नहीं है। भगवान तो कायदे को देखता है। बिजली का उपयोग आप कायदे से करेंगे तो वह बड़ी दयालु है और यदि बेकायदे करेंगे तब बड़ी दुष्ट भी है, जान भी ले सकती है। जिन चीजों ने हमको उठाया, उसे हम कुण्डलिनी जागरण कहते हैं, शक्तिपात कहते हैं। हमारे गुरु का एहसान है हमारे ऊपर, जो उन्होंने हमारी दबी हुई क्षमता को जगा दिया। बीज के भीतर वृक्ष का छोटा-सा हिस्सा बैठा रहता है। खाद, पानी और जमीन-तीनों मिलकर उस बीज की क्षमता को जगाते हैं, उभारते हैं। हमारे भीतर जो महानताएँ हैं—उनको उठा देना—यही है सन्तों का काम, यही है भगवान का काम, यही है देवी-देक्ताओं का काम। जब वे किसी पर दया करते हैं तो उसके भीतर की सोयी हुई क्षमता को उभार देते हैं। देखिये मेरे जीवन में यही हुआ। मैं भी यही चाहता था कि आपको बुलाकर इसी तरीके से आपकी सेवा करूँ जैसे मेरे गुरु ने की।

तो गुरुजी आप करिये न सेवा। नहीं बेटे, मैं अकेले नहीं कर सकता। अगर सीप अपना मुँह बन्द करके रखे तो दुनिया में ऐसी कोई स्वाति की बूँद नहीं जो उसके भीतर मोती पैदा कर सके। स्वाति-बूँदों के अन्दर बड़ी ताकत होती है, लेकिन वह ताकत वहाँ खत्म हो जाती है, जहाँ सीपी ने अपना मुँह बन्द करके रखा है। यदि हम अपने कमरे के किवाड़ों को, खिड़कियों को बन्द कर दें तो दुनिया का कोई सूरज हमारे कमरे में प्रकाश नहीं फैला सकता। इसी तरह हमारी मर्जी के बिना हमारे जीवन में कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता। इसमें भगवान भी शामिल हैं, सन्त भी शामिल हैं। भगवान अपना तो है, पर हमारी मर्जी के बिना वह हमारी जिन्दगी में प्रवेश नहीं कर सकता। इस सम्बन्ध में हम अपने गुरु से बहस करते रहते हैं। हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उनसे कहते हैं कि आपका अनुग्रह है—आपकी कृपा है, जो आपने हमें धन्य कर दिया। वे भी कभी-कभी ठीक इन्हीं शब्दों को दोहराते हैं। वे कहते हैं कि अगर तेरे अन्दर पकड़ने का—ग्रहण करने का माद्दा न रहा होता, प्रकट करने का माद्दा न रहा होता तो इतने लाखों लोग दुनिया में हैं, उनमें से हर किसी को हम बना सकते थे, पर किसी को नहीं बना सके। तेरे अन्दर वह चीज थी जो तुमने पकड़ ली और हमारी कृपा को सार्थक बना दिया। हम दोनों अपनी नम्रता प्रकट करते रहते हैं, अगर भगवान किसी पर अनुग्रह करेंगे, सन्त कृपा करेंगे, तो उस पर कृपा करेंगे, जिसने अपने आपको इस लायक बना रखा है।

मैंने यह कोशिश की कि आप किसी तरह अपने आपको इस लायक बना सकें तो मजा आ जाए। भगवान से माँगने की अपेक्षा आप आपने आप से माँगना शुरू करें तो बहुत अच्छा। आप मेरी बात मानें तो देने वालों की तलाश न करें। देने वाले बहुत हैं, पर असल में लेने वाले नहीं हैं। पात्रता का अभाव है। महाराज जी कोई ऐसा सन्त दिखा दीजिए जो हमको वरदान दे सके। बेटे, महात्मा के कितने वरदान दिला दूँ ? मैं तो तेरे हाथ में मिट्टी का ढेला दे दूँगा, वही तेरे लिए वरदान बन जाएगा। मीरा को गिरिधर गोपाल का एक मिट्टी का ढेला वरदान दे गया था और एकलव्य को मिट्टी का एक ढेला द्रोणाचार्य बनकर आ गया था। तेरे भीतर जो क्षमता है, जहाँ कहीं भी भीतर की वह रोशनी 'रिफ्लेक्ट' होगी वही चीज चमत्कारी हो जाएगी। अपने आपको देख। यदि आप अपने आपको सुधार सकें तो देने वाली शक्तियाँ आपको असीम देने के लिए तैयार हैं। आप यह ख्याल मत कीजिये कि हम छोटे हैं, हमारी कोई और सहायता करेगा। आप छोटी हैसियत के हैं, तो हम आपको मदद दिलायेंगे, लेकिन आप कायदे पर चलिए, कानून पर चलिए, आप किस काम के लिए माँगना चाहते हैं, बताइये हम गवाह पेश करेंगे कि कम हैसियत के—कम योग्यता के होते हुए भी दैवी-शक्तियाँ आपको मदद करने के लिए तैयार हैं। दैवी-शक्तियों ने किन-किनकी सहायता की, चलिए गवाही पेश करता हूँ ?

छह फुट-लम्बे चौड़े सुराख से मैंने गंगाजी को गोमुख से निकलते देखा है। गोमुख में जो धारा पतली दिखाई पड़ती है, वही आगे चलकर बंगाल में मीलों चौड़ी हो जाती है। गंगा माता घर में छोटी थी, व्यक्तित्व छोटा था, लेकिन रास्ते में हजारों नद-नदियों ने मदद की और उनका विस्तार होता गया। यह मदद क्यों दी, क्योंकि नीयत साफ थी। यही स्थिति नर्मदा और यमुना की है। नर्मदा अमरकंटक में एक छोटे-से गड्ढे से निकलती है। सभी तालाब सूख गये, क्योंकि उन्होंने अपने दायरे को सीमित करके रखा, लेकिन नर्मदा ने कहा था कि हम बहेंगे, कष्ट उठाएँगे, निरन्तर श्रम करेंगे, लोकहित के लिए। चलिए अब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मैं मनुष्य का उदाहरण देता हूँ। राजस्थान के एक स्वामीजी हुए हैं। नाम था केशवानन्द, जिसने वास्तव में सन्त की अभिव्यक्ति पेश की। उन्होंने गाँव-गाँव में स्कूल खुलवाए। बाद में वे हिन्दुस्तान की पार्लियामेण्ट में भी कई साल तक मेम्बर रहे। इसी तरह छोटी-सी हैसियत से पैदा हुआ राजस्थान का एक छोटा-सा प्राइमरी स्कूल का मास्टर नौकरी छोड़कर चला गया और गाँव में छप्पर के नीचे कन्या पाठशाला प्रारम्भ कर दी। उसके पश्चात् क्या हुआ ? देखिये उसकी नीयत भगवान भी एक ही चीज देखता है और वह है नीयत। भगवान ने उस मास्टर की नीयत को देखा और उसके हाथ का चलाया हुआ विद्यालय आज हिन्दुस्तान के कन्या महाविद्यालयों में अग्रणी माना जाता है। बाबा साहब आमटे, नागपुर के एक बहुत छोटे वकील जो गुजारे लायक पैसा कमा लेते थे, वकालत छोड़ दी और कोढ़ियों को लेकर एक आश्रम स्थापित किया उनका आश्रम अब एक विश्वविद्यालय बन गया है, जहाँ अन्धों के लिए कोढ़ियों के लिए काम करने का प्रशिक्षण मिलता है। जार्ज वाशिंगटन, जिसका बाप एक लकड़हारा था। उसकी माँ उसे एक झोंपड़ी में बन्द कर जाती थी और कहती थी कि यदि मैं तुझे खुला हुआ छोड़ जाऊँगी तो भेड़िये खा जाएँगे। जब तू बड़ा हो जाएगा, तब तू लकड़ियाँ काटना, भेड़ियों का मुकाबला करना।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब आदमी की परिस्थितियाँ, आदमी की अक्ल कमजोर हो तो भी क्या उसकी उन्नति के लिए गुंजाइश है। जार्ज वाशिंगटन आपको गवाही देंगे और कहेंगे—"हमारे पास योग्यता, साधन, बुद्धि-कौशल कुछ भी नहीं था, सिर्फ एक ही साधन था—वह था हमारा लक्ष्य।" लक्ष्य ऊँचा था, आदर्श ऊँचे थे, इसलिए सारी दुनिया ने हमारी सहायता की। सहायता इस तरीके से बरसी जैसे अमृत-वर्षा, स्नेह-वर्षा, शक्ति-वर्षा ! ईमान साफ होना चाहिए।" यदि आप अपना व्यक्तित्व, अपना अन्तरंग इतना ऊँचा उठा सकते हैं, जितना उस बालक का हो सकता है तो बाकी कमी आप हमारे ऊपर छोड़ सकते हैं। किसी देवता की कृपा हमको मिलेगी बेटे, मैं यह जिम्मेदारी उठा सकता हूँ। देवताओं से मेरी बड़ी जान-पहचान है। मेरा गुरु भी बड़ा समर्थ है। मैं गुरु की हिमायत कर लूँगा, गुरु का पल्ला पकड़ लूँगा। उनसे कहूँगा कि जो आपने मुझे दिया है, उसे छीन लीजिए और इसको दे दीजिए। आप सन्तों की तलाश मत कीजिए। देवताओं का मन्त्र भी आपको सिद्ध नहीं करना पड़ेगा। मैं देवता के हाथ जोड़ूँगा और कहूँगा कि मेरे पास कोई पुण्य हो तो मेरी शक्ति इसे दे दीजिए।

आपको इसके लिए जप भी नहीं करना पड़ेगा। आपके बदले मैं जप कर लूँगा। आप तो एक ही काम करें कि अपना कायाकल्प करके यहाँ से जाएँ। कायाकल्प वैसे तो शरीर के कायाकल्प को कहते हैं, बुड्ढे से जवान बनने को कायाकल्प कहते हैं, लेकिन मैं आपके अन्तरंग को बदल देना चाहता हूँ। हम चाहते हैं कि आपकी नीयत, आपका ईमान, आपका व्यक्तित्व, चिन्तन और चरित्र जिस स्तर का था, उसे बदल दें। अगर आपके अन्तरंग वाला हिस्सा बदल जाए तो मजा आ जाए। अभी तो आपके मन के ऊपर एक ऐसी छाप जम गई है, एक ऐसा संस्कार जम गया है कि आप अपने को शरीर मानते हैं। छोटा आदमी, बीमार आदमी, कंगाल या अमीर आदमी मानते हैं। अभी तो आप शरीर को मान्यता देते हैं। यदि सम्भव हो सके तो आप यह कोशिश करना कि हम शरीर नहीं, शरीर हमारा औजार है—हथियार है और हम आत्मा हैं। आप कोई न कोई समय ऐसा जरूर निकालें जब आत्मचिन्तन कर सकें। सोचें जब हम शरीर से बाहर निकल जाते हैं और ऊँचाई पर, मीनार पर, पहाड़ पर जाकर बैठ जाते हैं। वहीं से आप देखते रहें कि हमारा वह मरा हुआ शरीर पड़ा हुआ है और हम उससे अलग बैठे हैं। हमारे हित अलग हैं और उसके हित अलग। शरीर की अपनी उपयोगिता है और आत्मा की अपनी। अभी तो सब गुड़-गोबर कर रखा है आपने, जो किसी काम का नहीं है।

अभी तो हमने अपनी चेतना को शरीर में इस कदर घुला रखा है कि शरीर के अलावा अपने बारे में कुछ विचार ही नहीं कर पाते कि हमारी आत्मा भी है या नहीं। आत्मा का भी कुछ लाभ होता है, हमें मालूम ही नहीं। आत्मा का भी कुछ स्वार्थ होता है, उसकी भी कुछ आवश्यकताएँ होती हैं, हमें मालूम ही नहीं। सिवाय शरीर की आवश्यकताओं के हम कुछ सोच ही नहीं पाते। यदि सम्भव हो सके तो यह कोशिश करना कि आप शरीर से अलग हो सकें। अगर आप अलग होने की कोशिश करेंगे तो आपके सामने नये विचार आयेंगे, नयी समस्याएँ आएँगी, नये दृष्टिकोण आएँगे, नये कार्यक्रम आएँगे कि हमको क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए ? शरीर और आत्मा दोनों को अलग-अलग करने की कोशिश करना। दोनों के हित अलग-अलग करने की कोशिश करना। दोनों के हितों के लिए क्या करना चाहिए ? ऐसा जब आप विचार करेंगे तो आपको दिशा मिलेगी।

जब आप यहाँ से जाएँ तो माली होकर जाएँ। मालिकी को यहीं छोड़ जाएँ। दुनिया में मालिक होना बन्द कर दें। जहाँ कहीं भी जाएँ माली होकर जाएँ, मालिक मत होना। जब तू मालिक हो जाएगा तो दुनिया इतनी भारी हो जाएगी तेरे लिए कि तेरे प्राण ले जाएगी। जब तू माली हो जाएगा तब दुनिया हँसती भी रहेगी और तेरे साथ रहेगी। जब मक्खी चासनी में घुसती है तो पंखों को लपेट लेती है और मर जाती है और जब किनारे बैठी रहती है तो उसका जायका चखती रहती है। जुड़ो मत उससे। मालिकी को छोड़। अपना कर्त्तव्य पूरा कर बस, अपनी जिम्मेदारियों को पूरा कर। अपनी स्त्री के लिए, बेटे के लिए, बाप के लिए, बहिन के लिए, समाज के लिए हर एक के प्रति अपने कर्त्तव्य को पूरा करना है। मालिकी मत जताना, मुनीम के तरीके से रहना, सो जो तेरे पास पैसा है उसका ठीक उपयोग कर सकेगा। मालिक बनेंगे तो आपको दुनिया में पाप कमाने पड़ेंगे। न्याय पर आप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चल नहीं सकेंगे। जो वस्तु आपको मिली है, उसका कोई उपयोग नहीं कर सकेंगे। आपके पास समय की सम्पदा है, श्रम की सम्पदा है, बुद्धि की सम्पदा है, उसका उपयोग करें। यही कायाकल्प करना है। यदि सन्तों का अनुग्रह प्राप्त करना है, देवताओं की कृपा प्राप्त करनी हो तो भगवान जितना उदार है, उतनी उदारता सीखें।

शरीर की अपेक्षा अपनी जीवात्मा पर विचार करें जो सम्पदाएँ आपके पास हैं, उनका उपयोग कीजिए और जो नहीं हैं उनका रोना-धोना बन्द कीजिए। जो हैं, उसका उपयोग यदि करेंगे तो सहायता अपने आप मिल जाएगी। आप पहले उदार बनिये, अपनी योग्यता और पात्रता के सम्बन्ध में विचार कीजिए। आप अपनी नीयत को ईमान—को इस तरह बनाएँ कि भगवान को, समाज को, पड़ोसियों को पता चल जाए कि आप इस लायक हैं तो आपके पास उनका स्नेह-सहयोग और आशीर्वाद बरसेगा। आपके पास हर चीज बरसेगी जिसकी आपको आवश्यकता है। माँगने की अपेक्षा देने की परम्परा, जो ऋषियों की परम्परा है, बनाएँ। अपनी स्त्री को देंगे प्यार, बच्चों को देंगे संस्कार, अपने बहिन-भाई को देंगे स्नेह, समाज को देंगे ज्ञान और सारे विश्व को देंगे श्रेष्ठ परम्पराएँ। यदि हम कुछ नहीं दे सकते तो रास्ता तो दिखा सकते हैं अपनी शानदार जिन्दगी जीकर के ताकि दूसरे आदमी हमारे चले हुए रास्ते पर चलें। अपने आपको तो श्रेष्ठ और शालीन बना ही सकते हैं। हम निर्धन हैं, गरीब हैं तो भी ऐसा कर सकते हैं। चारों ओर जो गहरा अन्धकार छाया हुआ है, लोगों को रास्ता चलने के लिए अपने चरण-चिन्ह छोड़ते हुए चले जाएँ। हम विश्वास लेकर चले थे, आप भी विश्वास लेकर चलें तो भी आप धन्य हो जाएँगे।

मैं कहता हूँ कि आप तकलीफ का, कष्टों का रास्ता नहीं चलेंगे तो आप नहीं फलेंगे। आप बीज की तरह से गलें तो वृक्ष की तरह से फलेंगे। वृक्ष की तरीके से फलने के लिए बीज की तरह गलना आवश्यक है। इसके लिए बड़ा कलेजा चाहिए। वे तपस्वी होंगे, महापुरुष होंगे जिन्होंने अपने कलेजे चौड़े किये। कृपणता पर अंकुश रखा। लोकहित के लिए, समाज के लिए, देश के लिए त्याग और बलिदान किया। ये ऐतिहासिक लोग हैं। वे समाज का सम्मान पाने के अधिकारी हुए हैं, ऊँचे पदों पर पहुँचे हैं। नेता हुए हैं, जो कुछ भी वैभव और वर्चस्व मिला है, गलने की वजह से मिला है। आप भी बीज की तरह से गलें ताकि वृक्ष की तरह से फलने की सम्भावना हो सके। अपने अन्दर विवेकशीलता को जगाएँ। यदि आपके अन्दर इतनी हिम्मत हो जाए तो आपके अन्दर शक्तिपात कर सकने में हम समर्थ हो सकते हैं। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

आत्मावलोकन का सरल उपाय—एकान्तवास

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आप जिस कल्प-साधना सत्र में आए हुए हैं, उसका उद्देश्य समझने की कोशिश करें। अनगढ़ और अस्त-व्यस्त जीवन को सुव्यवस्थित जीवन में बदल देने की बात इस कल्प-साधना में विशेष रूप से ध्यान रखी गई है। जीवनभर हम अनगढ़ रहे हैं, बन्दरों की तरह उचक-मचक करने वाले, लक्ष्यहीन बच्चों की तरह इधर-उधर भागने वाले और तरह-तरह की चीजों पर मन चलाने वाले हम रहे हैं; न कोई अनुशासन मन के ऊपर रहा, न कोई लक्ष्य रहा और न कोई दिशा रही। बस, यही है हमारे जीवन की संक्षिप्त कहानी और इस कहानी में अब नया अध्याय जुड़ना चाहिए। फिर आपकी अस्त-व्यस्तता को अनुशासन में बदल जाना चाहिए और आपकी लक्ष्यहीनता को अब एक दिशा पकड़ लेनी चाहिए कि अब हमारा जीवन किधर जाएगा ? इसी का प्राथमिक अभ्यास कराने के लिए आपको कल्प-साधना शिविर में बुलाया गया है। आप अपनी मनःस्थिति को उसी के अनुरूप बनाइए। क्रियाएँ जो आपसे कराई जा रही हैं, ये क्रियाएँ अपने आप में भी महत्त्वपूर्ण हैं। उपवास अपने आप में भी लाभदायक होता है। पेट पर इसका असर पड़ता है; पर आप यहाँ तक सीमित मत रहिए। उपवास के लिए हम क्यों बुलाते हैं आपको ? उपवास तो आप घर पर भी कर सकते हैं, बहुत-से आदमी करते भी हैं; नवरात्रि पर उपवास करते हैं, दूसरे उपवास करते हैं; पर यहाँ हमने केवल उपवास के ही लिए नहीं बुलाया आपको। यहाँ हमने आपको अनुशासन पालने करने के लिए बुलाया है—तरह-तरह के अनुशासन। शुरुआत तो आपकी जीभ से कराई है। जीभ का अनुशासन अगर आप निभा लेंगे, तो और दूसरे अनुशासन, जो जीवन के लिए और अत्यधिक उपयोगी हैं, उनको भी आप पालने में सफल हो जाएँगे। गाँधीजी ने अपनी 'सप्त महाव्रत' नाम की पुस्तक में पहला अध्याय अस्वाद का लिखा है। उन्होंने कहा है कि जो आदमी अपनी जीभ पर काबू कर लेगा, वह अपनी ज्ञानेन्द्रियों पर और मन पर भी काबू प्राप्त कर लेगा। उन्होंने यह भी लिखा है कि कोई आदमी ब्रह्मचर्य की बात विचार करता हो, तो उसको पहले अपनी जीभ पर काबू पाने की कोशिश करनी चाहिए। जिस आदमी की जीभ पर लगाम नहीं है, वह ब्रह्मचर्य का कभी पालन नहीं कर पायेगा। उच्छृंखल जीभ न केवल आहार को उच्छृंखल बनाती है, न केवल मस्तिष्क को उच्छृंखल बनाती है, बल्कि हमारी विकृतियों को भड़काने में भी काम आती है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इसलिए जीभ का अनुशासन आवश्यक माना गया है। आप इस उद्देश्य को समझिये। आप खाली दलिया खायेंगे, जौ, चावल खाएँगे, वह तो ठीक है; खाएँगे, तो अच्छी बात है; खाएँगे, तो सात्विक है। अनावश्यक वस्तुएँ न खाएँगे, तो कौन-सी हर्ज की बात है ? आवश्यक वस्तुओं को एक महीने रहकर खाएँगे, यह तो बहुत अच्छी बात है। पिछला शिविर, जो आपसे पहले का गया है, उसमें ढेरों आदमी ऐसे थे, जो अपना वजन छह-छह पौण्ड बढ़ाकर ले गए; क्योंकि जो उन्होंने हल्का-सात्विक भोजन किया, वह ठीक तरीके से हजम हुआ, कम मात्रा में खाया, पेट पर दबाव कम पड़ा, हर तरह हजम होता चला गया और रक्त बढ़ता गया तथा उनकी सेहत में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। आप भी ऐसे ही कर लेंगे, जो जायकेदार चीजें हैं, जो न केवल महँगी होती हैं, बल्कि हानिकारक भी होती हैं, उनसे आप अपना पिण्ड छुड़ा लें, तो समझना चाहिए आपने एक ऐसे भूत-प्रेत से पिण्ड छुड़ा लिया, जो देखने में तो बड़ा आकर्षक मालूम पड़ता था; पर आपको पटक-पटक के मारता था। इस दृष्टि से उपवास का भी महत्त्व तो है; लेकिन उपवास के महत्त्व से भी बढ़कर है अनुशासन का महत्त्व। अब आपको एक नई दिशा पकड़नी है, अब आपको एक नया जन्म लेना है। आप एक नया जन्म लेने की कोशिश कीजिए और यह कोशिश कीजिए कि पिछला समय हमारा जीवन सामान्य स्तर का था।

घिनौना तो मैं क्यों कहूँ ? पर आप यह मान सकते हैं कि घटिया स्तर का जीवन था। घटिया ही कहना पड़ेगा, घटिया क्यों न कहें ? घटिया मुझे इसलिए कहना चाहिए कि आपके अन्दर भगवान् ने जो क्षमताएँ दी हैं, अगर आपने सही तरीके से उनका विकास किया होता, तो यकीन रखें, आप दूसरे कबीर हो गए होते; आप यकीन रखें, आप दूसरे रविदास और गुरुनानक हो गए होते; आप यकीन रखें, आप दूसरे विवेकानन्द रहे होते और दयानन्द रहे होते; गाँधी हो गए होते; अब्राहम लिंकन हो गए होते। यह भी तो सब घटिया और छोटे स्तर के लोग थे; लेकिन जब उन्होंने अपने आप को समझ लिया और अपने आपकी सही दिशाधारा को ठीक पकड़ लिया और उसी रास्ते पर क्रमबद्ध रूप से चलते चले, तो कहाँ-से-कहाँ पहुँच गये ! आपके लिए भी यह पूरे तरीके से मुमकिन था; पर आप कर नहीं पाये, क्यों ? दिक्कत क्या थी ? पैसा नहीं था ? साधन नहीं थे ? बेकार बात मत करिए ! न पैसे से कोई ताल्लुक है, न साधनों से कोई ताल्लुक है, न कठिनाइयों से कोई ताल्लुक है; केवल एक ही बात से ताल्लुक है कि आपका मनःसंस्थान बहुत गया-बीता बना रहा और उसमें से यह विचार न आया कि हमको महान मानव जीवन के अनुरूप अपनी विचारधारा बना लेनी चाहिए। बस, यही एक कारण था। अब आप उस कमी को यहाँ पूरी कर ले जाइए। यह बीच का समय मिला है आपको। बीच का समय नया जन्म लेने का समय है। आप पिछले जीवन को भूलने की कोशिश कीजिए। क्या भूलने की कोशिश करें ? एक तो आप यह भूलने की कोशिश कीजिए कि आप सब लोगों के साथ में गुँथे हुए हैं। कर्त्तव्यों के साथ तो गुँथे हुए हैं; पर मोह के साथ गुँथे हुए की बात मत सोचिए। आप मोह के साथ गुँथे हुए हैं। कर्त्तव्यों के साथ गुँथे हुए होते तो, मैं आपको महान् आत्मा कहता; पर आप तो थोड़े-से चन्द लोगों के साथ में बुरी तरह गुँथ गये हैं, उन्हीं को सब कुछ मान गये हैं, मसलन आप शरीर को सब कुछ मान बैठे हैं, मसलन आप दो-चार कुटुम्बी, जो कि आपके आगे-पीछे लगे रहते हैं, आप उन्हीं तक अपनी जिम्मेदारी समझते हैं और उनको खुश रखने के लिए जो भी आपसे बन पड़ता है, करते रहते हैं। बन न पड़े, उसकी बात अलग; पर अगर आपके हाथ में रहा होता, तो हीरों का हार आपने अपनी औरत को दिला दिया होता और आपने हवाई जहाज अपने बेटे को सफर करने को दिलाया होता। आपकी योग्यता नहीं है इतनी, परिस्थिति नहीं है, दे कहाँ से पायेंगे ! पर मनःस्थिति तो यही है न ! कर्त्तव्यों के साथ में बँधे कहाँ हैं आप ?

आप यहाँ एक महीने रह करके पुनः विचार कीजिए और अपनी स्थिति को साफ़ कीजिए। संसार के साथ जो आपके ताल्लुकात हैं, उसके बारे में फिर नये ढंग से विचार कीजिए। आप यह मानकर चलिये, आप एकाकी हैं, आप अकेले हैं, आपको एक गुफा में प्रवेश करा दिया गया है, आप गुफा में अकेले रहते हैं। पहले अकेले गुफा में सन्त इसलिए रहते थे कि एकाकीपन का उनको आभास हो सके। हम अकेले आए हैं भगवान के यहाँ से और अकेले ही हम जाएँगे भगवान के यहाँ। अकेले ही हम सोया करते हैं, अकेले ही हम टट्टी जाते हैं, अकेले ही में स्नान करना पड़ता है, अकेला ही तो जीवन है ! अकेले के बिना कैसे बन पाएँगे कुछ ! इसलिए आप अकेले को ही ठीक कर लीजिए और अकेले को ठीक करने के बाद आप समूह में बिल्कुल फिट हो जाएँगे। इसलिए एकाकीपन का यहाँ अभ्यास करना चाहिए। जिस कोठरी में आपको रखा गया है, आप यह अनुभव करके चलिए कि आपके लिए गुफा निर्धारित की गई है और आपको इसी में कैद कर दिया गया है, आप दुनिया में अकेले हैं। अपने आपको आप अकेला कहेंगे, तो फिर आपको नये ढंग से विचार करने का मौका मिलेगा कि आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए ? दुनिया के दबाव जो अनावश्यक रूप से आपको हैरान करते हैं, उन दबावों को हटाने के लिए यह जरूरी है कि आप एकाकी अनुभव करें, एकान्तवास करें, गुफा प्रवेश करें। यह गुफा प्रवेश है आपको। हमको ऐसा ही करना पड़ा है, जब कभी भी हमारा मन अस्त-व्यस्त हुआ है; तो गुरुदेव ने बुलाया और एक ऐसे स्थान पर रखा, जहाँ हमारे अलावा कोई नहीं था। इससे हमको अपने बारे में विचार करने का मौका मिलता है। आदमी आमतौर से तो दूसरों पर ही विचार करता रहता है। दुकान में क्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुआ ? बेटे का क्या हुआ ? बेटी का क्या हुआ ? भतीजी का क्या हुआ ? दुनिया के जंजाल को तो आदमी बुनता रहता है; पर अपने बारे में कभी विचार नहीं करता। हमको उस एकान्त स्थान में रह करके कई बार हिमालय जाना पड़ा, तब हमें कई बार अपने आप में विचार करने का मौका मिला। गुरुदेव का आदेश था कि बाहर की बात पर मत विचार करना, सिर्फ अपनी बात विचार करना और कोई बात मत विचार करना। हमने भी वैसा ही किया। आपको भी ऐसा ही करना पड़ेगा। जब आप यहाँ आए हैं, सिर्फ अपने बारे में विचार करना चाहिए और सब बातों को भूल जाना चाहिए। खासतौर से आप घर की बातों को भूल ही जाएँ।

घर की बातों को आप जरा भी स्मरण न करें। घर में क्या हो रहा होगा ? फायदा हो रहा होगा कि नुकसान हो रहा होगा, बेटी का ब्याह हो रहा होगा, बेटे का ब्याह हो रहा होगा, अमुक बात हो रही होगी, अमुक बीमार पड़ा होगा, इन बातों से आप क्या कर सकते हैं ? या तो आप वहाँ जाइये, विवाह-शादी कीजिए; नहीं जा सकते, तो चिन्ता को छोड़िए। आप एकान्त में भी रह रहे हों और एकान्त के फायदे को भी खत्म कर रहे हों—यह सब मत कीजिए। आप सबसे पहले अपने मन को अलग कर लीजिए और यह मानकर चलिए कि हम एक महीने के लिए कहीं अलग, विदेश चले गए हैं, बीमार हो गए हैं या कुछ और हो गए हैं। एक महीने अगर आप चिन्ता नहीं करेंगे, तो आपका मन उस दिशा में चलेगा, जहाँ आपको विचार करना चाहिए और आप अगर अपने मन को खाली नहीं करेंगे, जंजाल में ही बनाए रखेंगे, तो आप इस एकान्त साधना में, जिस उद्देश्य के लिए बुलाए गए हैं, आपके लिए पूरा कर सकना सम्भव नहीं होगा। फिर क्या करें ? जैसा आपने सुना होगा कि इलाहाबाद में कल्प-साधना के शिविर चलते हैं और वह त्रिवेणी के तट पर माघ के महीने में महीने भर के होते हैं। माघ के महीने में लोग झोंपड़े लगा लेते हैं, उसी में रहते हैं, बाहर- निकलते ही नहीं, बाहर जाते ही नहीं, घर वालों को बुलाते ही नहीं। घरवाला अगर कोई आता है, तो सिर्फ खुशी के समाचार ही सुनाता है। कोई जरूरत की बात कहने आता है; पर यह नहीं कहने आता कि घर में यह आफत आ रही है कि वह आफत आ रही है। उनके चित्त में चंचलता उत्पन्न न हो, इसलिए वह लोग चिट्ठी-पत्री पर भी रोकथाम रखते हैं। हमारे पास चिट्ठी-पत्री मत भेजना, हमको एक महीने भगवान का नाम लेने देना, चिट्ठी-पत्री भेजकर, हम जो काम नहीं कर सकते हैं, उस काम के लिए हम पर दबाव मत डालना, न हम इधर के रहेंगे, न हम उधर के रहेंगे—न हम भगवान में ध्यान लगा सकेंगे, न घर की कोई सहायता कर सकेंगे। आप डावाँडोल स्थिति को मत रहने दीजिए। कल्प-साधना वालों का यह नियम है। आप भी इन नियमों का पालन कीजिए और अनुभव कीजिए कि हम एकान्तवास में हैं।

एक दिन मैंने आपसे पिछले समय में कहा भी है कि एक महीने आप यहाँ सिर्फ दो बातों का अनुभव किया कीजिए कि हम यहाँ न सिर्फ एकान्त में रहते हैं, बल्कि माताजी के पेट में निवास करते हैं। आप शान्तिकुंज को यह मानकर चलिए कि यह माताजी का पेट है और पेट में जैसे बच्चा रहता है, भ्रूण रहता है, उसी तरह, भ्रूण की तरह, बच्चे की तरह आप निवास करिये। यह माताजी का आध्यात्मिक पेट है, जिसमें आप बच्चे की तरह निवास कर सकते हैं और यहाँ से जाने के बाद में आप अपने आपके एक नये जन्म का अनुभव कर सकते हैं। माताजी का बेटा—माताजी का बेटा आप नहीं बन सकते ? क्या हर्ज है आपको, बताइए ? मदालसा के बेटे आप नहीं बन सकते ? कुन्ती के बेटे बनने में आपको शर्म आती है, बताइए ? सीता के बेटे अगर आप बन जाएँ, तो क्या हर्ज है आपको ? नहीं, कुछ हर्ज नहीं होगा ,आपका। आप अगर ऐसी मनःस्थिति बना लें, तो आपको अपनी गौरव-गरिमा का भान होगा और गौरव-गरिमा का आपको कदाचित् भान हो जाए, तो आप यकीन रखिए, आपका कल्प-साधना में आना सार्थक हो जाएगा। फिर आप ऐसी दिशा, ऐसी प्रेरणा और ऐसा चिन्तन लेकर जाएँगे कि मजा आ जाएगा ! इसलिए आप यह अनुभव करते रहिए कि एक महीने तक हम माताजी के पेट में बैठे हुए हैं।

आप एक और अनुभव कर लीजिए कि आप गुरुजी के अवे में बैठे हुए हैं। अवा क्या ? कुम्हार अपने बर्तन बनाता है और बर्तन बना करके उन बर्तनों को अवे के भीतर कैद कर देता है। बस, सब बर्तन चुपचाप बैठे रहते हैं और पकते रहते हैं। आप भी चुपचाप बैठे रहिए और पकते रहिए। हम आपको प्रेरणा भेजेंगे, हम आपको विचार भेजेंगे, उसको भी तो सुनिये ! बस, अपनी-अपनी ही बकते रहते हैं, हमारी नहीं सुनेंगे क्या ? हमारी प्रेरणा पर आप ध्यान नहीं देंगे ? हम क्या कहना चाहते हैं, उस पर गौर नहीं करेंगे ? उसकी कोई उपयोगिता नहीं है ? अपने आपको ही हमारे ऊपर हावी रखेंगे ? हमारी मनोकामना पूरी कर दीजिए। ऐसे कौन आपकी मनोकामना पूरी कर देगा, बताइए ? रावण की मनोकामना पूरी करने में कौन समर्थ हो गया ? सिकन्दर की मनोकामना कहीं पूरी हुई ? नेपोलियन बोनापार्ट की कहीं पूरी हुई ? हिरण्यकश्यप ने अपनी मनोकामना पूरी कर पाई ? न कर पाई। आप तो बेकार आदमी हो, बार-बार बच्चों की तरह मनोकामना, मनोकामना माँगते रहते हैं। यहाँ तो आप बड़ों की तरह रवैया अख्तियार कीजिए। बच्चे ही बने रहेंगे जिन्दगी भर बड़े भी होंगे ! अगर यहाँ आप बड़े हो गए हैं, तो मनोकामना वाले जंजाल को छोड़ दीजिए। मनोकामना तो भगवान ने आपकी पूरी कर दी है। हाथ-पाँव दिए हैं, आप पेट भर के रोटी कमा सकते हैं। अक्ल भगवान ने दी है आपको, आप तन ढकने के लिए कपड़े या पारिवारिक जो छोटी-मोटी जिम्मेदारियाँ हैं, भली प्रकार पूरी कर सकते हैं। यह कौन-सी मनोकामना है सिवाय हविश के ! बताइए ? हविश के अलावा कोई मनोकामना नहीं है। हविश को आप हल्की नहीं कर सकते। हविश को जिस दिन आप हल्की कर लेंगे, आपकी कोई भी मनोकामना बाकी नहीं रह जाएगी, यह आप देखेंगे कि आप कितने खुश और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रसन्न रह सकते हैं। इसलिए आप इस डायन को मार भगाइये न ! दुनिया भर का माँगते फिरते हैं—नाक रगड़ते-फिरते हैं—वासनाओं के लिए, तृष्णाओं के लिए, अहंकार के लिए। इसके आगे पल्ला पसारना, उसके आगे पल्ला पसारना, इसके आगे नाक रगड़ना, उसके आगे नाक रगड़ना। आप अपने आप में हेर-फेर कीजिए, अपने आप में हेर-फेर करेंगे, तो आपको इस कायाकल्प-शिविर में आने का मानसिक लाभ मिल जाएगा।

आप यहाँ रहिए, हम आपको पका देते हैं। आप आये थे, तब कच्चे बर्तन के रूप में थे और आप जब जाना तब हमारे अवे में पके हुए होकर जाना। मुर्गी अपने बच्चे को छाती से लगाये हुए बैठी रहती है, कछुवी अपने अण्डे को बालू में रख देती है; लेकिन देखभाल करती रहती है। हम आपको कछुए के अण्डे की तरह कोठरी में बिठा तो गये हैं; पर आप यह मत सोचिये कि हम आपकी तरफ गौर नहीं करते और ध्यान नहीं देते। हम बराबर आपकी तरफ ध्यान दे रहे हैं। किस बात पर ध्यान दे रहे हैं ? कि आपका मनःसंस्थान ऊँचा हो जाए, आपकी भावनाओं का स्तर ऊँचा हो जाए, आपके जीवन का लक्ष्य ऊँचा हो जाए, जिससे आपके व्यक्तित्व की गरिमा आगे बढ़ती हुई चली जाए। हम केवल यही विचार करते हैं और कुछ विचार नहीं करते—आप सुन सकते हो, तो सुन लेना; नहीं सुन सकते, तो आप फिर हैं ही चिकने घड़ों की तरह; वैसे ही बने रहना, जैसे आए थे, वैसे ही चले जाना। मुर्गी अपने अण्डे को पकाने के लिए छाती से लगाये बैठी रहती है और आपको भी हम मुर्गी की तरह छाती से लगाये हुए हैं कि जब आप पकें, जब आप फूटें और जब आप फुदकना शुरू करें, चूजे की तरह, तो आपका बहुत शानदार जीवन होगा—हमारी भी महत्त्वाकांक्षा यही है। आप भी अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को हमारी तरह गला पाएँ, तो मजा आ जाए ! यहाँ क्या-क्या काम कराये जाते हैं ? कई चीजें कराई जाती हैं—संयम करा रहे हैं, वास्तविक बात यह है। आपको हमने कितनी बार कहा है कि आप आहार के बारे में संयम कीजिए और न सिर्फ आहार के बारे में, बल्कि विचारों के भी बारे में और न सिर्फ विचारों के बारे में, बल्कि उनके व्यवहार के बारे में भी। आपसे चार तपों का जिक्र किया था न; आपको चार तप यहाँ बराबर करते रहने चाहिए। धन के बारे में रोक है—आपको बाजार जाने की, इधर-उधर घूमने की, सैर-सपाटे करने की, मनसादेवी के पहाड़ पर चढ़ने की। पैसा खराब करने पर हमने रोक लगा दी है। जो पैसा आपको, निरन्तर जीवन के लिए नितान्त आवश्यक नहीं है, उसको खर्च मत कीजिए। कंजूसी करें, जमा करें। ना बाबा ! कंजूसी के लिए कौन कहता है आपसे ? अच्छे काम के लिए कोई खर्च नहीं है क्या ? आप फिजूलखर्च जरा भी मत कीजिए और जो कुछ भी आपके पास धन है, उसको लगा दीजिए अच्छे कामों में।

हमारा उदाहरण है आपके सामने। फिजूलखर्ची हमने कानी कौड़ी की भी नहीं की है। जो भी हमारे पास था, उसको बेहतरीन कामों में लगा दिया है, जिसका परिणाम आपने देखा न ! देखा होगा। हमारे गाँव में स्कूल बना हुआ है, गायत्री तपोभूमि बनी हुई है, आप देख लीजिए। हमारे पास जिमीदारियों के बाण्ड आए थे; सब खत्म हो गए, सब लगा दिए। आप ऐसा नहीं कर सकते ? पैसे को फिजूलखर्चियों में लगाएँगे, औलाद के लिए जमा करेंगे—आप ऐसी योजना नहीं बना सकते। आप यहाँ से जाने के बाद में जो साधन हैं, उन्हीं को बढ़ाते रहेंगे—ऐसा ही सोचते रहेंगे। बढ़ाने की बात मत सोचिए। पहली बात वहाँ से सोचिए कि हम ठीक तरह इनका कैसे इस्तेमाल कर पाएँ। जब ठीक तरीके से इस्तेमाल करेंगे, तब आप यकीन रखिए भगवान आपको दो हाथ से नहीं, चार हाथ से देगा। भगवान के चार हाथ भी हैं, इनसान के दो हाथ ही हैं। विष्णु भगवान के देखे हैं न ? चार हाथ हैं। **सहस्रशीर्षा पुरुषः**—उसके हजारों हाथ हैं और आपको हजारों हाथों से इतना देगा, जिसे आप सँभाल भी नहीं पायेंगे। हमारा उदाहरण आप देख लीजिए, हमने अपने आपको खाली कर दिया; भगवान की चीज भगवान् को सौंप दी है और भगवान ने अपनी चीजें हमको सौंप दी हैं। क्या आप ऐसी हिम्मत नहीं कर सकते ? आप ऐसी दूरदर्शिता नहीं दिखा सकते ? आपको ऐसी बुद्धिमानी नहीं आती ? आप ऐसी अक्ल से रिश्ता नहीं जोड़ना चाहते ? अगर जोड़ना चाहते हो, तो कृपा कीजिये और आप यहाँ संयमशील बनिये। पैसे के बारे में संयमशील, समय के बारे में संयमशील। आपको समय के बारे में अनुशासित किया गया है न ? जब घण्टी बजती है, तब आपको आने के बारे में कहा गया है न ? सुबह जब आपको प्रज्ञापेय मिलता है, तब घण्टी बजती है और आपसे यह आशा की जाती है कि आप समय पर पहुँच जाइये। जब खाने-पीने के लिए घण्टी बजती है, तब आपसे यह आशा की जाती है कि आप बिना समय गँवाये जल्दी पहुँचेंगे। इसी तरह आपको हर टाइम-टेबिल के शिकंजे में कस दिया है। यह अभ्यास है आपका। भावी जीवन में आपको जिस शिकंजे में कसा जा रहा है, उसको आगे भी जारी रखें। केवल यहीं तक यह बातें सीमित नहीं हैं। जीभ को, आपसे संयम के लिए कहा गया है, केवल यहाँ के लिए ही नहीं, बल्कि सारे जीवन के लिए कहा गया है। आप बाहर भी जा करके रहिए। यहाँ एक कमरे में दो आदमियों को रहने की इजाजत नहीं है। अगर स्त्री-पुरुष हैं, तो भी दो कमरों में अलग-अलग रहेंगे; क्योंकि हर आदमी एकाकी बनकर रहे और दूसरी बात यह कि कभी वासनात्मक दृष्टि से एक-दूसरे को न देखें। आप वासनात्मक दृष्टि से मत देखिये। लड़कियाँ कहाँ चली जाएँगी दुनिया से ? औरतें क्या मिट जाएँगी और औरतों के लिए मर्द नहीं रहेंगे क्या ? मर्द रहेंगे; लेकिन उनके बीच जो जहर है, उस जहर को निकाल दीजिए। जहर निकल जाता है, तो साँप कितना सुन्दर मालूम पड़ता है ! देखने में कितना अच्छा लगता है ? और जहरीला होता है, तो काट खाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अगर आपने नारी के बारे में विकृत विचार बना रखे हैं, तो नारी आपको काट खायेगी डाकिन की तरह और साँपिन की तरह डस लेगी; आपका स्वास्थ्य खराब कर देगी, आपकी अक्ल को खराब कर देगी, आपके चिन्तन को भ्रष्ट कर देगी और आपको लम्पट बना देगी, अगर आपका दृष्टिकोण गलत है तब। अगर आपने दृष्टिकोण सही कर लिया तब ? तब वही नारी आपको देवता की तरह वरदान देगी। शिवाजी को एक नारी ने ही देवता जैसा वरदान दिया था और अर्जुन को एक नारी ने ही देवता जैसा वरदान दिया था, आपको याद होगा। आप ऐसा नहीं कर सकते ? आप चिन्तन को बदलिये, नहीं तो आप यहाँ किसलिए आए हैं ? यहाँ यह भी नहीं करेंगे, तो क्या करेंगे ? केवल मात्र चिन्ह-पूजा करते रहेंगे ? टाइमपास करते रहेंगे ? नहीं, टाइमपास मत कीजिए, चिन्ह-पूजा मत कीजिए। अपने सारे-के-सारे चिन्तन को आमूल-चूल परिवर्तन करने की कोशिश कीजिए। ब्रह्मचर्य के बारे में विचार और चिन्तन करते रहिए। बीच में जब कभी भी आपकी आँखें खुलें, फालतू समय हो और नारी का विचार आये, तो केवल बेटी की दृष्टि से विचार कीजिए, बहिन की दृष्टि से विचार कीजिए, माता की दृष्टि से विचार कीजिए, यहाँ तक कि अपनी धर्मपत्नी का भी सहकर्मी की दृष्टि से विचार कीजिए। सीताजी और राम वनवास में रहते थे—वह उनकी सहकर्मी थीं और गाँधीजी, कस्तूरबा रहते थे—वह भी सहकर्मी थीं, तो आप ऐसा क्यों नहीं कर सकेंगे ? रामकृष्ण परमहंस और उनकी धर्मपत्नी शारदामणि जी साथ-साथ रहे, सारे जीवनभर रहे; लेकिन कभी उन्होंने एक-दूसरे को कामवासना की दृष्टि से नहीं देखा। आप उतना न कर पाएँ, तो कम-से-कम इतना तो कीजिए कि नारियों के प्रति जो आपकी कुदृष्टि जीवनभर रही है, जिससे आपकी आँखों का तेजस् खत्म हो गया है, आप उस तेजस् को फिर से प्राप्त करने की कोशिश कीजिए और अपना चिन्तन बदल दीजिए। आपको यही सब बातें याद करनी हैं।

आपको यहाँ स्वाध्याय नियमित करने के लिए बताया गया है। आपको यहाँ सत्संग से जोड़कर रखा गया है। आपको कुछ सीखने के लिए और भावी योजनाओं को बनाने के लिए बताया गया है तथा उसके लिए मार्गदर्शन भी किया गया है; उसके लिए आपको तरह-तरह के कार्यक्रम भी दिए गए हैं। आपका यहाँ जो शिक्षण होता है, वह इसी दृष्टि से होता है। आपको रोटी कमाना आता है, नहाना-धोना भी आता है, व्यापार भी आता है, लेन-देन भी आता है, नौकरी करना भी आता है और जो काम नहीं आता, वह हम यहाँ सिखाते हैं। भावी जीवन की आपकी रूपरेखा क्या हो, आप केवल अपने ही लिए नहीं जिएँ, उसमें समाज की भी हिस्सेदारी है, लोगों की भी हिस्सेदारी है, भगवान की भी हिस्सेदारी है, आदर्शों की भी हिस्सेदारी है, धर्म और संस्कृति की भी हिस्सेदारी है—उस हिस्सेदारी को आप कैसे निभा पायेंगे ? उसके बारे में शिक्षण, आपका सायंकाल का शिक्षण इस उद्देश्य के लिए है, आप इस उद्देश्य को समझिये। आप घटना को देखेंगे और यहाँ के क्रम को देखेंगे, तो ऊपर ही दृष्टि रह जाएगी। दृष्टि को भीतर ले जाइये, दर्शन समझिये यहाँ के कल्प का और यह मानकर चलिए कि यहाँ कल्प का मतलब है—बदल डालना। अब आपको यहाँ से बदलते हुए जाना है। घर जाकर आपको अपना बदला हुआ रूप दिखाना है। घर जाकर के आपके भावी जीवन में आपका क्रिया-कलाप और आपका उपक्रम ऐसा होना चाहिए, जिसमें पिछले जीवन से कोई संगति न हो। आप एक, आपका ईमान दो, आपका भगवान तीन, तीन तो आप ही के हैं सहपाठी। इन तीनों के साथ में तो आप सारे जीवन की मंजिल पूरी कर सकते हैं। जरूरी क्या है कि आप दूसरों का दबाव मानें ? जरूरी क्या है कि आप दूसरों के बहकावे में आएँ ? जरूरी क्या है कि आप दूसरों को प्रसन्न करने की कोशिश करें ? अपने ईमान को प्रसन्न कर लीजिए, बहुत है—भगवान को प्रसन्न कर लीजिए बहुत है। आत्मा और परमात्मा को जो आदमी प्रसन्न कर सकते हैं, सारी दुनिया उनसे प्रसन्न रहती है अथवा चलिए यह मान लें—सारी दुनिया प्रसन्न न भी है, नाराज बनी है, तो उस नाराजगी से कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। आपकी आत्मा नाराज हो, आपका परमात्मा नाराज और सारी दुनिया आपसे प्रसन्न बनी रहे और आरती उतारती रहे, तो उससे कुछ बनने वाला भी नहीं है। यही चिन्तन है, जो आपको एक महीने लगातार अपने मनःक्षेत्र में घुमाते रहना चाहिए। मन को बदलिए, सोचने के तरीके बदलिए, जीवन की कार्य-पद्धति बदलिये। बहुत कुछ बदलना है आपको। अगर बदल डालेंगे, तो मजा आ जाएगा ! बस, आज तो मुझे इतना ही कहना था आपसे।

ॐ शान्ति।

तपस्वी जीवन और उसके मूलभूत सिद्धान्त

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आप इस कल्प-साधना के शिविर में जो कार्य कर रहे हैं, उसमें से तपश्चर्या मुख्य है। आप देखते हैं न, जो कुछ भी आप क्रिया करते हैं; ये सारे-के-सारे तपश्चर्या से सम्बन्धित हैं। आपको खान-पान के बारे में तपश्चर्या, सबेरे उठने के बारे में तपश्चर्या, घर से कहीं बाहर जाने में तपश्चर्या—पूरे-के-पूरे बन्धन। आप पर यहाँ ऐसा अनुशासन लगाया जाता है, जिसको आप सोच सकते हैं कि आपको तपश्चर्या कराई जा रही है। तप का बड़ा महत्त्व है। आपको इसीलिए यह नहीं कराया जा रहा है कि आपको हैरान किया जाए, बल्कि इसलिए कराया जा रहा है कि आपको मजबूत बना दिया जाए। तपश्चर्या की आग में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तपे बिना आप मजबूत नहीं हो सकते। कोई भी आदमी, जिसने कठिनाइयों का सामना नहीं किया हैं, सिद्धान्तों के लिए—आदर्शों के लिए कष्ट नहीं सहा है, वह आदमी मजबूत कैसे हो जाएगा ? बिल्कुल कच्चा रहेगा। जब कभी मुसीबत आएगी, तभी भाग खड़ा होगा और अपने संकल्पों-सिद्धान्तों को छोड़ देगा। आपको तपश्चर्या में यही कराया जा रहा है। आप जानते हैं न, कच्ची धातुओं को परिशोधित करने के लिए भट्टी में तपाते हैं। भट्टी में नहीं तपाएँ तब ? तब कच्ची धातुएँ पक्की धातु नहीं बन सकतीं। जमीन में से जो लोहा निकलता है, वह मिट्टी मिला हुआ होता है। आप जैसा लोहा देखते हैं, वैसा थोड़े ही निकलता है। इसको भट्टी में डालना पड़ता है। तपाना पड़ता है, मिट्टी जल जाती है और साफ-सुथरा लोहा निकल के बाहर आ जाता है, तब उसमें से काम की और चीजें बनती हैं। अगर न तपाएँ तब ? तब फिर लोहा कच्चा रहेगा, कोई चीज नहीं बन सकेगी। ईंटें आप देखते हैं न ! ये ईंटें क्या हैं ? मामूली मिट्टी है, जो पानी में बरसते ही बह जाती है; लेकिन जब उसको तपा देते हैं आग में, तो ईंट कैसी मजबूत बन जाती है ! मुद्दतों तक टिकी रहती है। पानी यही होता है न, जो आप लोग पीते हैं; लेकिन उसको आग के ऊपर तपा दें तब ? तब फिर स्टीम बन जाती है, भाप बन जाती है। भाप से प्रेशर कुकर चल जाते हैं; भाप से रेलगाड़ियाँ चल जाती हैं; भाप से क्या नहीं हो जाता ! यह क्या है ? ये तपाने का परिणाम। आयुर्वेद में भस्में बनती हैं। उसमें क्या करना पड़ता है ? अभ्रक भस्म, लोहा भस्म, सोना भस्म, चाँदी भस्म, मकरध्वज—ये सब क्या चीज हैं ? ये ऐसे भस्म और रसायन हैं कि जिसमें पदार्थों को जलाकर के, गरम करके तपाने के बाद में उनकी शक्ति को उछाला जाता है और उभारा जाता है। ये तपाने की बात हुई। सोने को तपाएँ नहीं, तब सोना कच्चा रहेगा, कोई कीमत ही नहीं मिलेगी। कोई मना करे, साहब ! तपाने नहीं देंगे, तो बाजार में आप जाइये कोई लेगा ही नहीं। सोने को तपा देने के बाद में न केवल उसकी चमक बढ़ जाती है, बल्कि उसकी मलीनताएँ दूर भी हो जाती हैं; न केवल दूर हो जाती हैं, साख भी बढ़ जाती है और तपाये हुए सोने का नकद पैसा मिल जाता है। तपाये बिना यह सम्भव नहीं है।

आपका व्यक्तित्व भी ऐसा है, जो तपाने की अपेक्षा करता है। आपको तपना चाहिए और आपको तपाया जाना चाहिए। यही तप जो आपको इस कल्प-साधना शिविर में कराया जा रहा है, आगे भी कराया जाएगा। आपको संचित कुसंस्कारों के विरुद्ध बराबर लड़ाई लड़नी चाहिए। यही तो है गीता का महाभारत। महाभारत में भाई-भाई की लड़ाइयों का किस्सा नहीं है। असल में ये भीतर हमारे जो अन्तर्द्वन्द्व हैं, हमारे जो कषाय-कल्मष हैं, यही वास्तव में दुर्योधन और कौरव हैं। अपने पंचप्राणों की सहायता से इनसे लड़ाई लड़नी चाहिए और इनके सामने झुकना नहीं चाहिए; इनको भगा देना चाहिए। चाकू पर धार रखने से चाकू तेज हो जाता है न ! आदमी के ऊपर तपश्चर्या की धार रखने से चाकू के तरीके से पैना और तीखा हो जाता है। धुलाई-धुनाई की बात कल कही थी। आपकी धुलाई नहीं करेंगे, कपड़े की पिटाई नहीं करेंगे, तो रँगा कहाँ से जाएगा ? बुआई-जुताई की बात कही थी न ! ये सब आत्मशोधन हैं। अपने आपको तपस्वी अगर बना सकते हों, तो आपको फिर ढेरों-की-ढेरों शक्तियाँ मिल सकती हैं। सिद्धियाँ जिनको कहते हैं, वो तपश्चर्या के बिना नहीं मिल सकतीं। साधना से सिद्धि मिलती है। साधना का मतलब आत्मसंयम होता है, अपने आप का परिष्कार करना होता है। संसार में कितने-कितने बड़े काम हुए हैं ! ये सब काम बड़ी-बड़ी विजय जिन्होंने प्राप्त की हैं वास्तव में आत्मविजय का परिणाम है। जो अपने ऊपर जीत प्राप्त कर सकता है, आध्यात्मिक क्षेत्र में वही विश्वविजयी माना जाता है। संसार में तो चोर-डाकू भी अपने-अपने ढंग से तुक बिठा लेते हैं; पर आध्यात्मिक जीवन, महानता का जीवन, शालीनता का जीवन उन्हीं के लिए सम्भव है, जो आत्मविजय प्राप्त कर लें अर्थात् अपने दोष और दुर्गुणों पर नियंत्रण प्राप्त कर लें। जो इसको नहीं कर सकेंगे, उनके लिए बहुत मुश्किल हो जाएगी।

आप भगीरथ का नाम जानते हैं ? भगीरथ एक सामान्य से राजकुमार थे; लेकिन जब उन्होंने तपस्वी जीवन जिया; तब उसके चमत्कारों को देखो ! गंगा जी को स्वर्ग से उतारकर जमीन पर ले आए। गंगा का नाम भगीरथी कहलाया। महान् भगीरथ ! महान् भगीरथ का अर्थ है—राजकुमार भगीरथ नहीं, तपस्वी भगीरथ। तपस्वी भगीरथ बहुत शानदार था। राजकुमार भगीरथ बिल्कुल मामूली आदमी था। आपने दधीचि का नाम सुना है ? मामूली संत बाबा जी थे; लेकिन जब उन्होंने अपनी तपश्चर्या से स्वयं को तपा लिया, तो उनकी हड्डियाँ इतनी मजबूत हो गईं कि उनसे इन्द्र का वज्र बनाया जा सका। वृत्तासुर किसी भी हथियार से मरने वाला नहीं था। वो उससे मरा। किससे ? दधीचि की हड्डियों से। ये कैसे बात बनी ? ये तपस्वी की बात कह रहा हूँ मैं। आपने शृंगी ऋषि का नाम सुना है ? शृंगी ऋषि उन महात्मा का नाम है, जिनके आशीर्वाद से, राजा दशरथ संतानहीन थे और उन्होंने वेदमंत्र पढ़े और यज्ञ कराया था और चार बच्चे पैदा हो गए थे। चार बच्चे किसने पैदा किये थे ? यज्ञ ने ? नहीं, यज्ञ ने नहीं। यज्ञ ने नहीं किये थे। मनःशक्ति ने ? अरे भाई ! मनःशक्ति से भी नहीं। वो ऋषि ने शृंगी ऋषि की बन्दूक के ऊपर जो वेदमंत्रों की कारतूस रख के चलाए गए, तो ही चले। बन्दूक न हो, तब क्या कारतूस चलेगी ? तपस्वी न हो, तब क्या मंत्र सिद्ध हो जाएगा ? मंत्र सिद्ध होने के लिए, भगवान् की उपासना करने के लिए आदमी का तपस्वी जीवन आवश्यक है। शृंगी तपस्वी थे। उन्होंने जिन्दगी भर में ये नहीं जाना कि जायकेदार पदार्थ क्या होते हैं। आश्रम में जो कंद-मूल बन जाते थे, उसी को खाते थे। ऐसे शृंगी ऋषि, उनकी वाणी, उनकी इन्द्रियाँ जिसका मन सबों से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निगृहीत था, उनमें अद्भुत शक्ति थी। यज्ञ कराएँ और उनके बच्चे पैदा हो जाएँ ! महर्षि वशिष्ठ वो काम नहीं कर सकते थे; क्योंकि उनकी शादी हो गई थी और बहुत सारे बच्चे भी हो गए थे; राजा का अन्न खाते थे। जिसने राजा का अन्न खाया और उनके ढेरों-के-ढेरों बच्चे पैदा हो गए, उससे क्या आशा की जाए कि उसके श्राप और वरदान सफल होंगे ! श्राप और वरदान सफल होने के लिए आदमी का तपस्वी जीवन होना बहुत जरूरी है। पार्वती जी को आप जानते हैं ? पार्वती जी एक साधारण-से राजा की बेटी थीं, हिमाचल राजा की; लेकिन जब उनको तीनों लोकों के स्वामी भगवान शंकर जी से ब्याह करने का मन हुआ, एक ही तरीका था—तपस्या ! तपस्या से आदमी को ये सिद्ध करना होता है कि हम इस लायक हैं। लायकी आप किस तरीके से पहचानोगे ? किसी आदमी को हम कैसे जान पाएँ कि अच्छा आदमी है कि नहीं, प्रामाणिक है कि नहीं। एक ही सबूत है कि उसने ऊँचे सिद्धान्तों के लिए मुसीबत उठाई है, तो हम ये कह सकते हैं कि तपस्वी है। ऊँचे सिद्धान्तों के लिए जिसने मुसीबत नहीं उठाई हैं, उसके बारे में ये नहीं कहा जा सकता कि ये प्रामाणिक हैं। इस तरीके से पार्वती जी ने अपनी तपश्चर्या के द्वारा शंकर भगवान के सामने ये साबित कर दिया कि वो इस लायक हैं कि उनकी अर्द्धांगिनी बनें। ये तपश्चर्या से सफल हुआ और आपने कितनों के नाम सुने ? ध्रुव का नाम सुना है न ? ध्रुव क्या हो गए थे ? वो बहुत बड़े भक्त हो गये थे; तीनों लोकों के स्वामी हो गए थे; आकाश में रहते थे; भगवान् के प्यारे हो गए थे। कैसे सम्भव हुआ ? तपश्चर्या के द्वारा। आपने परशुराम जी की बावत सुना है ? उनके पास एक ऐसा कुल्हाड़ा था .... कुल्हाड़े को लेकर उन्होंने इक्कीस बार अन्यायी लोगों का सिर काट डाला और फिर सारे संसार में नई स्थापना करने के लिए संसार को हरा-भरा बना दिया। यह कैसे बना सकता था एक छोटा-सा आदमी ! इसमें तपश्चर्या की शक्ति थी।

भगवान् परशुराम तपस्वी नहीं रहे होते तब ? तब तो बिल्कुल मामूली जैसे बाबाजी या ब्राह्मण पंडित रहते। और यहाँ-वहाँ कथावार्ता करते रहते। परशुराम जी का ऐसा कुल्हाड़ा लुहार के यहाँ से नहीं खरीदा गया था। ये तपश्चर्या की शक्ति से उनको प्राप्त हुआ था और भी कितने ऋषि हैं ! आप को कहाँ-कहाँ तक बताएँ। अच्छा, अगस्त्य ऋषि को आप जानते हैं ? अगस्त्य ऋषि ने तीन चुल्लू में समुद्र का पानी पी लिया था। अगस्त्य ऋषि में शक्ति कहाँ से आ गई थी ? ये अगस्त्य ऋषि की शक्ति तपश्चर्या की शक्ति है। तपश्चर्या आदमी न करे तब ? शक्तिवान हो जाएगा ? नहीं, तपश्चर्या जो नहीं कर सकता, वो सामर्थ्यवान नहीं हो सकता, शक्तिशाली नहीं हो सकता। आपको यहाँ इस कल्प-साधना शिविर में इसीलिए बुलाया गया है कि आप अपने आप को मजबूत बनाएँ और तपाएँ। तपाना न केवल शक्ति प्राप्त करने के लिए, बल्कि इसलिए भी जरूरी है कि चारों ओर से आपके ऊपर जो हमले होते हैं, उनके विरुद्ध आप लड़ाई लड़ें और अपनी बहादुरी का सबूत दें। आप देखिये, चारों ओर वातावरण कैसा बना हुआ ? जब आप लड़ाई न लड़ें और हिम्मत नहीं दिखाएँ और संघर्ष न करें ? तपस्वी न हों तब ? तब आप कदम-कदम पर असफल होते रहेंगे।

तपस्वी का एक अर्थ लड़ने वाला भी होता है, संघर्षशील भी होता है। आपको जिन्दगी में पग-पग पर लड़ना पड़ेगा। मक्खियों से अगर आप नहीं लड़े तब ? तो मक्खियाँ आपकी सब चीज को जहरीली कर देंगी और मुसीबत पैदा कर देंगी। मच्छरों को आप भगाने का इन्तजाम न करें तब ? तब मच्छर आपको काट खाएँगे और सारे शरीर को मलेरिया से ग्रसित कर देंगे। खटमल देखते हैं न ! पिस्सुओं को आप जानते हैं न ! दीमक आप जानते हैं, घर में कितना नुकसान करती हैं ? अनाज को खाने वाले घुन, शरीर को खाने वाले विषाणु, फसल को खाने वाले कीड़े, जंगली जानवर, बिच्छू, साँप, बर ..। आप इनका मुकाबला न करें, इनको भगाने की कोशिश न करें और इनके साथ चुप बैठे रहें तब ? तब ये सब मिल करके आपका जिन्दा रहना मुश्किल कर देंगे और आप जी नहीं पाएँगे। लड़ना तो पड़ता ही है आपको। तपस्वी का एक अर्थ अपने आपको लड़ाकू बना देना भी है। चोर और उचक्के, दुराचारी और व्यभिचारी का अगर आप सामना न करें, उनका मुकाबला न करें और उनको रौंदते हुए नहीं आगे चलें, तो ये आप समझ लीजिये, ये सब मिलकर के आप के ऊपर हमला बोल देंगे और आपको जिन्दा नहीं रहने देंगे। इस दुनिया में जिन्दा रहने के लिए बहुत-सी चीजें ऐसी हैं, जिनसे हमको लड़ाई करनी पड़ती है। आलस्य और प्रमाद को ले लीजिये। आलस्य और प्रमाद से आप लड़ाई नहीं लड़ेंगे, तब ? तब आपको फिर बहुत मुश्किल हो जाएगी। आलस्य और प्रमाद आपको खा जाएँगे। जिन्दगी से आप नहीं लड़ेंगे तब ? जिन्दगी को बुहारेंगे नहीं तब ? तब आपका शरीर, मन, कपड़ा, घर, ईमान सब गन्दगी से भर जाएँगे। ये क्या है ? ये तपश्चर्या है। बुराइयों के विरुद्ध लड़ाई लड़ना तपश्चर्या है, अपने भीतर की बुराइयों से लड़ने की तपश्चर्या। इसके अलावा एक और बात भी है। क्या चीज ? आपको उन्नति के लिए, आपको तरक्की करने के लिए अपनी योग्यता बढ़ानी पड़ेगी और सामर्थ्य संग्रह करनी पड़ेगी। ये कैसे हो सकता है ? ये भी तपश्चर्या से होगा। अगर आप तपश्चर्या नहीं कर सकते अर्थात् अपने आप पर संयम नहीं लगा सकते, आप अपने आप को पुरुषार्थी नहीं बना सकते, अपने आप को संघर्षशील नहीं बना सकते, तो फिर आपके लिए सफलताएँ कहाँ से आएँगी ? धन, बल, विद्या, कला वगैरह सम्पदाएँ क्या किसी ने बिना परिश्रम के कमा लीं ? बिना पुरुषार्थ के कमाई जा सकीं ? ना, कमाये नहीं जा सकेंगी ! कठिन पुरुषार्थ करना पड़ता है उन्नति के लिए। उस उन्नति के लिए किये हुए पुरुषार्थ का नाम भी 'तप' है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तप कई तरह के होते हैं। आपको अपनी उपेक्षावृत्ति से लड़ना पड़ेगा; अपने भीतर निराशा, जो बार-बार आपको दबोच लेती है, उसके विरुद्ध आपको लड़ना पड़ेगा; चिन्तन में जो चिन्ताएँ तरह-तरह की और आशंकाएँ, भय छाये रहते हैं, उनसे आपको अपने मन को सुधारना पड़ेगा; इन चीजों को खत्म करना पड़ेगा। अभ्यस्त ढर्रा ! कैसा अभ्यस्त ढर्रा ? जो जिन्दगी हम जीते हैं, वो ऐसी जिन्दगी है, हम क्या कहें आपसे ! ऐसी जिन्दगी, ढर्रे की जिन्दगी, जिसमें न बुराइयों से नाराजगी है, न अच्छाइयों से मोहब्बत है—ऐसी घिसी-पिटी जिन्दगी, वाहियात-सी जिन्दगी, फूहड़-सी जिन्दगी हम जी रहे हैं। ये जिन्दगी की जो वर्तमान परिस्थितियाँ हैं, इनसे आपको लड़ना पड़ेगा; उनको तोड़-मरोड़ के एक ओर फेंकना पड़ेगा; इनके स्थान पर नई विचारधाराएँ, नई योजनाएँ कार्यान्वित करनी पड़ेंगी। अगर आप नहीं करेंगे ? तो ढर्रे पर घूमते रहेंगे और ढर्रे पर घूमते हुए कोल्हू के बैल के तरीके से पिलते-पिसते रहेंगे। संघर्ष नहीं करेंगे, तो कैसे काम बनेगा ! अनीति से लड़ने के लिए आपको प्रत्याक्रमण करना ही चाहिए। काँटे को काँटे से ही निकाला जाता है। विष को विष से ही मारा जाता है। घूँसे का जवाब घूँसा हो सकता है। इसीलिए क्या करना चाहिए ? अनीति के विरुद्ध आप अगर तन के नहीं खड़े होंगे, तो अनीति दिनोंदिन बढ़ती चली जाएगी और आपको ही नहीं, बल्कि आपके सारे समाज को धीरे-धीरे करके निगलती चली जाएगी। फिर आप ऐसी परिस्थिति में आ जाएँगे कि अपने समाज को, सबको हैरानी में डाल दें। इसलिए तपश्चर्या, जिसका अर्थ होता है—अपने आप को तपाना, तपा डालना, मजबूत बना देना, लड़ाकू बना देना, संघर्षशील बना देना, साहसी बना देना—ये गुण आप अपने भीतर पैदा कीजिये।

प्राचीनकाल में तपश्चर्या को बहुत महत्त्व दिया जाता है। विद्यार्थियों के लिए गुरुकुल खुले हुए थे। गुरुकुलों में केवल पढ़ाई नहीं होती थी। आप ये सोचते हैं—केवल विद्यार्थी पढ़ते रहते थे। नहीं, वहाँ तपस्वी जीवन का आरम्भ में अभ्यास कराया जाता था; श्रमशील जीवन का, कठोर जीवन का। बच्चे गौएँ चराते थे; बच्चे लकड़ी लाद के लाते थे। बच्चे सब मिल-जुलकर के अपने गुरु के आश्रम के बगीचे और खेतों की रखवाली करते थे; अन्न-फल उगाते थे। ये क्या है ? ये तपश्चर्या है। प्राचीनकाल में प्रत्येक बच्चे के लिए यही था और आध्यात्मिक जीवन में ? आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने वाले को भी यही करना पड़ता था। आरण्यक जितने बने हुए थे, वो ढलती अवस्था में अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए निवास करने के लिए आरण्यक बने हुए थे और उन आरण्यकों में क्या होता था ? आरण्यकों में तपस्वी जीवन जीना पड़ता था; निग्रही जीवन, अनुशासित जीवन। अनुशासित जीवन अगर आप न जिएँ तब ? आरण्यक की तप-साधना आपके लिए राम नाम, मंत्र, जैप, तप सबमें काम आ सकती है; लेकिन अगर आपने तपस्वी जीवन नहीं जिया, विलासिता का जीवन जिया और ऐसा जीवन जिया, जिसमें कि बड़े आदमी और सम्पन्न और स्वार्थी और निष्ठुर जीते रहते हैं, तो फिर आप एक बात यकीन रखिये; फिर आप ये ख्याल निकाल दीजिये कि हमको पूजा करने से ये लाभ मिल जाएगा और भजन करने से ये लाभ मिल जाएगा और ध्यान करने से ये लाभ मिल जाएगा और हमारी कुंडलिनी जग जाएगी। आपको कुछ नहीं मिलेगा। आप जिन्दगी को ठीक नहीं रखते हैं, आप समझते नहीं हैं ! सारे-का-सारा अध्यात्म सिर्फ इस बात पर टिका हुआ है कि साधक का पुनीत जीवन और पवित्र जीवन और साधक को जैसा जीवन आप जीना चाहते हैं कि नहीं। पुनीत जीवन जीना नहीं चाहते, पवित्र जीवन जीना नहीं चाहते और जादूगरों के तरीके-से थोड़े खेल-खिलवाड़ करने के बाद में तरह-तरह की आप चीजों को माँगने की कोशिश करते हैं। ऐसी गलत बात क्यों करते हैं ? थोड़ी-सी पूजा से अगर ये सब चीजें मिल गई होतीं, फिर किसी आदमी को अपने जीवन को परिष्कृत करने की जरूरत क्या पड़ती ? कोई संयमी बनता क्यों ? कोई तपस्वी बनता क्यों ? कोई निग्रही अपने आप को करता क्यों ? अपनी इन्द्रियों को मारता क्यों ? फिर तो सब अपना मनमौजी जीवन जिया करते, विलासिता का जीवन जिया करते और साथ-साथ में जप-तप करके, थोड़ा-बहुत पूजा-पाठ करके और तरह-तरह की चीजें पा लेते; भगवान को प्रसन्न कर लेते और योगी बन जाते और कुछ-न-कुछ बन जाते। ये सम्भव है ? नहीं भाईसाहब ! सम्भव नहीं है आप क्यों नहीं मानते ? आप मानने की कोशिश कीजिये। आदमी के भीतर से ये शक्ति का उदय होता है; ये केवल आदमी की तपश्चर्या की वजह से होता है। तपस्वी अगर आप हैं, फिर चाहे जो आप कीजिये। भगवान राम को तपश्चर्या करनी पड़ी थी। विश्वामित्र जी के आश्रम में गए थे, वहाँ तपस्वी जीवन जिया। इसके बाद में फिर चौदह वर्ष वनवास गए। वहाँ फिर तपस्वी जीवन जिया। इसके बाद में भगवान राम को गुरु वशिष्ठ जी ने देवप्रयाग बुला लिया था। जब तक जिए, तब तक वहीं देवप्रयाग में, हिमालय में रहे। ये भी तपस्वी जीवन हुआ। रामचन्द्र जी का सारा जीवन तपस्वी जीवन, श्रीकृष्ण भगवान का जीवन तपस्वी जीवन, भगवान बुद्ध का तपस्वी जीवन, भगवान महावीर का तपस्वी जीवन। जितने भी भगवान हुए हैं, आप समझिये। जो इतने महामानव हुए थे, यों कहिये; भगवान न सही, महामानव कहिये। भगवान और महामानव में कोई फर्क पड़ता है ? नहीं, कोई फर्क नहीं पड़ता; दोनों एक ही चीज के दो नाम हैं। इसलिए ये सब जो बने हैं, सब तपश्चर्या से बने हैं। इन्द्र से लेकर के जितने भी ऊँचे पदाधिकारी हुए हैं, अपनी तपश्चर्या के बल पर ही इतना ऊँचा उठा सकने में समर्थ हुए हैं। तितीक्षा इसीलिए कराई जाती है। उपवास करने से लेकर धूप में खड़े होने और पानी में चलने से लेकर कई तरह की आदमी तितीक्षाएँ करता रहता है। ये अभ्यास हैं कि सिद्धान्तों के लिए कठिनाई का सामना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करेंगे। सिद्धान्तों के लिए आपको अनीति के सामने झुकने से इनकार कर देना चाहिए। आपको अपने आपको तपाने में जो व्यवधान अपने मन को कच्चेपन के रूप में आता है, उसको मानने से इनकार कर देना चाहिए और क्या करना चाहिए ? और ये करना चाहिए कि आपको पीड़ित और पददलित मानवता के लिए, उसके उद्धार का हिमायत करने के लिए कमर कसकर आगे आना चाहिए।

आपको मानसिक तप करना चाहिए। असल में मन कभी इधर घूमता है, कभी उधर घूमता है, कभी किधर घूमता है ? इन सबको रोककर के क्या करेंगे ? आप मन को रोकिये। रोकने के बाद में उसको भगवान में लगा दीजिये। यही तो योगाभ्यास है। तपश्चर्या और योगाभ्यास दोनों की एक जोड़ी है। तपश्चर्या का अर्थ है—निखार देना और योग का अर्थ ? योग का अर्थ है—किसी के साथ में जोड़ देना, भगवान के साथ जोड़ देना। उपासना इसी का नाम है। हम किसी के साथ में जोड़ देते हैं, अपने मन को। टंकी के साथ में जोड़ देते हैं नल को। अपने बल्ब को बिजलीघर के साथ में जोड़ देते हैं। जोड़ देना—इसी का नाम 'योग' है। अपने आपको, अपने असंयम को तपा देने का नाम, गला देने, झुका देने और मिटा देने का नाम 'तप' है। तप और योग—इन दोनों की जोड़ी है। आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर दोनों कदम साथ-साथ बढ़ाने पड़ते हैं, लैफ्ट-राइट के तरीके से। एक पैर से आप चलें तब ? तब लम्बा सफर पूरा नहीं कर सकेंगे। एक पहिये की गाड़ी पर चलें तब ? तब आप सर्कस में एक चक्कर तो काट भी सकते हैं; लेकिन आप लम्बा सफर नहीं कर पाएँगे। एक पहिये की गाड़ी किस तरीके से चलेगी ! एक पहिये की गाड़ी नहीं चलती। एक हाथ से ताली भी बजती नहीं है, दोनों की जरूरत पड़ती है। आदमी की, आध्यात्मिक जीवन में उन्नति के लिए, पूजा-पाठ तो प्रारम्भिक है, बच्चों का है; लेकिन असल में योग और तप का रास्ता अंगीकार करना पड़ता है। योग को फिर आप एक बार समझिये। अपने आपको भगवान के साथ में जोड़ दीजिये। भगवान के साथ में जोड़ने का मतलब है—सिद्धान्तों के साथ जोड़ देना, आदर्शों के साथ जोड़ देना और इसके अलावा एक और काम भी करना पड़ता है आध्यात्मिक जीवन के लिए, उसका नाम है—तप। अपने आपको तपाइये, अपने आपको गलाइये, अपने आपको सोने जैसा बनाइये, अपने आपको ठीक करिये, अपने आप में मुसीबतों को सहने की आदत डालिये, सिद्धान्तों के लिए मुसीबत सहिये, अनीति के विरुद्ध लड़ने के लिए आप मुसीबत सहिये। अपनी योग्यताओं को ऊपर उभारने और अपनी क्षमताओं को उछालने के लिए व्यायाम जैसे बहुत सारे काम करने को तैयार रहिये। इसका, सिवाय कठिनाइयों का मुकाबला किये बिना और कोई तरीका नहीं है। आप कठिनाइयों से मुकाबला कीजिये। लड़िये कठिनाइयों से; बुलाइये, आमंत्रित कीजिये; आप तपस्वी हैं। आप अपने आपको घुला दीजिये, जोड़ दीजिये। स्त्री अपने आपको पति के साथ में मिला देती है, जोड़ देती है। बस, इसी तरीके से आप अपने आपको महान सत्ता के साथ में, समष्टि के साथ में, भगवान के साथ में, विराट् ब्रह्म के साथ में या जो कुछ भी इस दुनिया में महान है, उसके साथ में अपने आपको जोड़ दीजिये, अपने को घुला दीजिये। फिर देखिये आप योगी होते हैं कि नहीं ! और आप तपस्वी होते हैं कि नहीं ! तपस्या कोई बाजीगरी नहीं है। नाक में से रस्सी निकालेंगे और एक टाँग से खड़े हो जाएँगे। भाईसाहब ! ये टैक्निक नहीं है। अपने मन को और जीवन को एक ढर्रे में, एक खासतौर के ढर्रे में ढाल लेने का नाम योग भी है और तप भी है। आप योगी बनिये, तपस्वी बनिये। आप सिद्धान्तों के साथ में अपने आपका तालमेल बिठाइये। आप अनीति के विरुद्ध लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहिये। कठिनाई उठाइये, गरीबी में रहिये, मुसीबत सहिये; लेकिन ऐसे काम मत कीजिये, जो इनसान को शोभा नहीं देते। तपस्वी जीवन के यही मौलिक और मूलभूत सिद्धान्त हैं। आप इन सिद्धान्तों को समझें; तपस्वी बनें और जिस कल्प-साधना में आपको तपश्चर्या की ओर प्रेरित और उन्मुख किया जा रहा है, उसे सच्चे अर्थों में सार्थक करने की कोशिश करें। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

तपकर कुंदन बनने की प्रक्रिया

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

भगवान बुद्ध से उनके शिष्यों ने यह पूछा—मनुष्य इतना सशक्त और समर्थ होते हुए भी आखिर गिर क्यों पड़ता है ? अधःपतित क्यों हो जाता है ? भगवान बुद्ध ने एक तो घटना दिखाई और एक उदाहरण दिया। उन्होंने घटना ये दिखाई कि अपने कमण्डलु को पानी में फेंक दिया। कमण्डलु तैरने लगा। शिष्यों से पूछा—यह कमंडलु डूबेगा कि नहीं ? उन्होंने कहा—यह क्यों डूबेगा ? यह डूबता थोड़े ही है। कमण्डलु डूबने वाला नहीं है। यह तो तैरता रहेगा। भगवान बुद्ध ने दुबारा उसको उठाकर उसमें एक सुराख कर दिया पैंदे में, फिर उसको पानी में फेंक दिया। धीरे-धीरे पानी उस कमण्डलु में भीतर भरने लगा और वह डूब गया। शिष्यों से पूछा—भाई ! अभी तुम कह रहे थे कि कमण्डलु डूबता नहीं है; यह तो डूब गया। तो शिष्य कहने लगे महाराज जी ! आपने सुराख कर दिया इसके भीतर। सुराख कर देंगे, तो डूबेगा नहीं ? ठीक बात है—भगवान बुद्ध ने जवाब देते हुए शिष्यों से कहा—इनसान के भीतर सुराख हो जाए, उसमें पानी भरने लगेगा और वो डूब जाएगा और सुराख न हो, तब ? तब न पानी भरेगा और न वह डूबेगा। एक ये उदाहरण भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को दिया। एक और भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिया उन्होंने। उन्होंने कहा—अगर तुम्हारे पास गाय हो और गाय बहुत दूध देने वाली हो; बहुत दूध देने वाली गाय का दूध आप दुहें; लेकिन जिस बर्तन में आप दुहें, उसमें सुराख हों और छेद हों तब ? तब फिर क्या होगा बताओ ? शिष्यों ने कहा—महाराज जी ! फिर वो दूध चलनी में रुकेगा थोड़े ही। चलनी में जो सुराख हैं, उससे तो नीचे जमीन पर टपक जाएगा, कपड़े भी मैले हो जाएँगे और ग्वाले के हाथ कुछ भी नहीं लगेगा, सिवाय थकान के। उँगलियों को बेचारा दबोचता रहा; थनों को दबाता रहा; गाय भी परेशान ! ये भी परेशान ! लेकिन दूध पीने का वक्त जब आया, तब ये मालूम पड़ा-इसमें कुछ भी नहीं है। नीचे से बर्तन का दूध टपक गया।

यह उदाहरण ये बताता है कि आदमी के जीवन में अगर बहुत सारे सुराख हों, तो उसकी सम्पदाएँ और उसकी विभूतियाँ और उसकी विशेषताएँ—सब खत्म हो जाएँगी। फिर कुछ बचेगा ही नहीं। इसलिए उन्नति की बात करना तो ठीक है, आदमी का वैभव उपार्जित करना तो ठीक है; लेकिन उनके साथ-साथ में ये भुला मत दीजिये। क्या न भुलाएँ ? ये मत भुलाइये कि आपको अपने सुराखों को बन्द करना है, अपने छिद्रों की रोकथाम करनी है, अपनी मलीनताओं और अपनी असंयमितताओं के ऊपर हावी होना है तो क्या करें ? मैंने बताया न आपको। चार बात करनी पड़ेंगी आपको। तप, जिसका कल जिक्र किया गया था, चार प्रकार के होते हैं। एक तप इन्द्रिय तप कहलाता था, दूसरा जो है, ब्रह्मचर्य को भी तप कहते हैं। तीसरा-समय के संयम को तप कहा जाता है। चौथा धन के संयम को तप कहा जाता है और विचारों के संयम को तप कहा जाता है। विचारों का संयम-एक। पैसों का संयम-दो। समय का संयम-तीन और इन्द्रियों का संयम-चार। तपश्चर्या की चार धाराएँ हैं। आपको इन चार धाराओं में से सबसे पहली धारा का यहाँ बुला करके अभ्यास कराया गया और जिह्वा इन्द्रिय का अभ्यास कराया गया। आपकी जिह्वा को तपस्वी बनाया जा रहा है। स्वाद के लिए भटकने वाली जिह्वा इसने आपके स्वास्थ्य को खराब कर दिया, आपके मन को खराब कर दिया। आप काबू में रख सकें और लगाम को लगा सकें ..... अगर आप घोड़े को लगाम नहीं लगाएँ तब ? ऊँट को नकेल नहीं लगाएँ तब ? आप बैल के नाक में रस्सी नहीं डालें तब ? हाथी के ऊपर अंकुश नहीं लगाएँ तब ? तब फिर आप समझ लेना, ये जानवर आपके लिए बड़े खौफनाक साबित होंगे और आपको तहस-नहस करेंगे। इसलिए इनको नियंत्रण में करने के लिए ये सब जरूरी हैं। इन्द्रियाँ हमारी हैं तो बहुत अच्छी इनसे ही सब काम चलता है; लेकिन इनको उच्छृंखल बनने दें, रोकथाम न करें, तपस्वी न बनाएँ, संयमी न बनाएँ, तो इन्द्रियाँ आपके लिए मुसीबत खड़ी कर देंगी, जैसे आप खान-पान के बारे में असंयम बरतते रहे हैं, उसका परिणाम ये हुआ है कि पेट खराब हो गया। पेट खराब होने का परिणाम ये हुआ कि, स्वास्थ्य खराब हो गया है। स्वास्थ्य खराब होने का दोष किसी को मत दीजिये। इस सृष्टि में जितने जानवर हैं; इनमें से कोई बीमार नहीं पड़ता। मरते तो सब हैं; पर बीमार कहाँ पड़ते हैं ? कबूतर बीमार पड़ते हैं ? लोमड़ी, खरगोश जो जंगल में उछलते हैं, कभी बीमार पड़ते देखे हैं आपने ? कोई नहीं पड़ता। एक ही बेवकूफ जानवर है, जिसका नाम है—मनुष्य। यही बीमार पड़ता है। क्यों पड़ता है ? सिर्फ एक वजह है उसकी, बीमार पड़ने की, कि अपनी जीभ को इतना छुट्टल बना देता है कि वह अभक्ष्य खाती रहती है; जरूरत से ज्यादा खाती रहती है; जो चीजें नहीं खानी चाहिए, वह खांती रहती है। पेट काम नहीं करता, पेट हजम नहीं करता, मशीन खराब हो जाती है और शरीर कमजोर और बीमार पड़ जाता है। अगर आप जीभ पर काबू कर लें तब ! तो आप विश्वास रखिये, आपका खोया हुआ स्वास्थ्य मिल जाएगा। अगर आप जीभ पर काबू कर लें, तो आप दिन-दिन कमजोर होते गए हैं या होते जाएँगे, उससे आप निजात पा सकते हैं।

इसी प्रकार से ये जो अपना मन है, मन भी इसी का है। अन्न से विकसित होते हुए, अन्न से मांस बनता है, रक्त बनता है, हड्डियाँ बनती हैं; पर अन्ततः अन्न से मन बनता है। अन्तिम चरण जो अन्न का है, वह मन है। 'जैसा खाएँ अन्न, वैसा बने मन'—ये सौ फीसदी सही है। आप अभक्ष्य खाते रहिये, तमोगुणी चीजें खाते रहिये, मांस खाते रहिये, दूसरी घिनौनी चीजें खाते रहिये, फिर आप देखिये आपका मन कैसा चंचल हो जाता है ? आप नशेबाज होइये, फिर आप देखिये आप का मन कैसा चंचल हो जाता है ? आपको मन स्थिर करना कैसा कठिन पड़ जाएगा ! मन अपने आपे में नहीं है। ईंधन नीचे डालते हैं, तब भगोने के पानी में उबाल आता है। मन तो ऊपर भगोने में पानी जैसा है। नीचे आप जैसी लकड़ी डालेंगे, वैसा ही तो उबाल आएगा। अगर आपने बराबर अभक्ष्य खाने का क्रम जारी रखा है, तो आपका मन बराबर चंचल बना रहेगा। आपको कभी ऐसा मौका नहीं देगा कि आप मन की स्थिरता को रख पाएँ। इसलिये जीभ पर काबू पाइये, स्वादेन्द्रिय पर काबू पाइये। स्वाद पर आपने काबू पा लिया, तो मन को सँभालने और शरीर की बीमारियों से मुकाबला करने में आप सफल हो जाएँगे। जीभ की बात चल पड़ी, तो जीभ का एक और हिस्सा है। जीभ को दो इन्द्रियों में बाँटा गया है—एक इसको स्वादेन्द्रिय भी कहते हैं और एक इसको वाक्इन्द्रिय भी कहते हैं। वाणी पर संयम, वाणी पर अगर आपका संयम नहीं है, चाहे जिससे, चाहे जैसे शब्द बोलते हैं, कड़ुए बोलते हैं—इसका परिणाम क्या हुआ ? इसका परिणाम कभी अच्छा नहीं हो सकता। **"वशीकरण इक मंत्र है, तज दे वचन कठोर।"** कौआ अपने कड़ुवे वचन से सबको नाखुश करता रहता है और कोयल अपने मीठे वचनों से सबकी प्यारी बनती रहती है। जीभ से हमको दूसरों को सम्मान देना चाहिए; दूसरों की इज्जत और अपनी नम्रता का ध्यान रखना चाहिए। क्रोध और आवेश में कई आदमी ऐसे शब्द बोलते रहते हैं, जो मुनासिब नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होते। उसका परिणाम ये होता है, कितने आदमी वैरी-विरोधी हो जाते हैं। आपको मालूम है न ! द्रोपदी ने व्यंग्य और उपहास में ऐसे शब्द कह दिये थे, कि, जिसकी वजह से कौरवों को बहुत बुरा लगा। उसका अंतिम परिणाम महाभारत के रूप में आया। जीभ कटारी के तरीके से है। जीभ में बिच्छू का डंक बताया गया है। जीभ में साँप का जहर बताया गया है। जब आप कड़ुवा बोलते हैं तब ! नहीं बोलते हैं तब ! मीठा बोलते हैं तब ! ये जीभ न जाने आपके लिए कितने काम की हो सकती है। इससे मोहब्बत कीजिए, दूसरों की इज्जत कीजिए, अच्छे परामर्श दीजिए, लोगों का उत्साह बढ़ाइये। लोगों की हिम्मत को तोड़िये मत। लोगों की हिम्मत बढ़ाने वाली बात कहिए। अगर आप ऐसा कर लेते हैं, फिर मैं आपको तपस्वी कहूँगा।

ये वाणी का तप हुआ, जिह्वा का तप हुआ। अब चलिये, इसमें एक और आती है। इन्द्रियों में एक और बात आ जाती है। इन्द्रियों के तप में ब्रह्मचर्य का तप भी आता है। वैसे तो इन्द्रियाँ दस हैं; पर आप झंझट में मत पड़िये, दो को ही मान लीजिए। एक जीभ मुख्य है और दूसरी वाली कामेन्द्रिय मुख्य है। कामेन्द्रिय का मतलब केवल यौनकर्म ही नहीं होता, यौनकर्म के अलावा है। ये इन्द्रियाँ सब मस्तिष्क से सम्बन्ध रखती हैं। कामवासना के बारे में आपको विचार आते रहते हैं। उनको देख करके आपके दिमाग खराब होते रहते हैं। अमुक अंग को और अमुक अंग की खूबसूरती और बदसूरती को ढूँढ़ते रहते हैं। इसका परिणाम क्या होता है कि ये मानसिक दुराचार हैं। किसी भी औरत के बारे में आपके मन में कोई संस्कार या विचार आते हैं, तो इसका मतलब है कि प्रकारान्तर से पवित्रता का नुकसान हो गया है। आँख से भी ब्रह्मचर्य का क्षय होता है। आँख से आप कुदृष्टि से देखते रहिए; स्त्रियों को देखते रहिए; बहिन, बेटी और माँ की इज्जत मत कीजिए, अपनी धर्मपत्नी को भी रमणी और कामिनी की दृष्टि से देखिए, तो देखिए प्रत्येक औरत आपके लिए डाकिन और नागिन का काम करती है या नहीं और इन्हीं को आप बेटी मान पाएँ तब ? बहिन मान पाएँ तब ? माता मान पाएँ तब ? सहधर्मिणी मान पाएँ तब ? तब ! यही महिलाएँ आपके लिए देवी की तरह से सहायक होंगी। आप चाहें स्त्रियों को देवी बना लीजिए, चाहे डाकिन बना लीजिए—आपकी मर्जी की बात है। स्त्रियाँ भी आपके तरीके से साधारण मनुष्य हैं। आप अपना दृष्टिकोण अगर पवित्र नहीं रखेंगे तो कुदृष्टि का परिणाम यह हुआ कि स्त्रियाँ आपके लिए कितनी हानिकारक हो गई हैं और आपके ब्रह्मचर्य को खण्डित करती हैं और आपको पतनोन्मुख बनाती हैं और आपकी मनःस्थिति को नष्ट-भ्रष्ट करती हैं। अगर आप ये अपने मन के ऊपर देख पाएँ, फिर आप कैसे अच्छे अच्छे हो सकते हैं। आपने गांधारी का नाम सुना है न ! आँख पर पट्टी बाँध ली थी और इन्द्रियों का संयम करना शुरू कर दिया था और अपने बेटे को लोहे का बना दिया था। आपने दमयन्ती का नाम सुना है ? राजा नल की पत्नी का नाम दमयन्ती था। जंगल में अकेली रह रही थी और बहेलिया उससे छेड़खानी करने लगा। बस, छेड़खानी के समय दमयन्ती ने आँख उठाकर देखा, तो बहेलिया जलने लगा और खत्म हो गया। आपको गाँधी जी के बाबत मालूम है ? बत्तीस वर्ष की उम्र में उन्होंने ब्रह्मचर्य लिया था और अपनी धर्मपत्नी को माता कहने लगे थे। ये ब्रह्मचर्य का प्रताप था कि दुबले-पतले और कमजोर होते हुए भी मनःशक्ति के हिसाब से ऐसे थे, जैसे कि कोई बड़ा पहलवान भी नहीं हो सकता था। आपको भीष्म पितामह की बाबत मालूम है ? भीष्म पितामह शय्या पर पड़े रहे, छह महीने बाद तक पड़े रहे और कहा मुझे फुरसत नहीं है। कितने तीरों से घायल थे ! ये कैसे हो पाया ? वे ब्रह्मचारी थे। ये इन्द्रिय-निग्रह की बात है। स्वामी दयानन्द के विषय में सुना है आपने ? एक बार दो साँड लड़ रहे थे। स्वामी जी ने उन खूनी साँड़ों को दोनों के सींग पकड़कर इस तरीके से दबोचा और फेंका कि एक इधर गिरा और एक उधर गिरा। ये सामर्थ्य किसकी होती है ? ब्रह्मचर्य की। हनुमान को आप नहीं जानते ? हनुमान जी का ब्रह्मचर्य था, जिससे कि वे सामान्य बन्दर से हनुमान बन सके। शंकराचार्य के बारे में यही कहा जाता है, शंकराचार्य ब्रह्मचारी न होते तब ? शादी-विवाह करके बहुत सारे बच्चे पैदा करते तब ? काम-वासनाओं में अपने आपको उलझाये रहते तब ? भगवान शंकर का अवतार बनने का मौका नहीं मिलता तब ? लक्ष्मण जी ने मेघनाद को मारा था। मेघनाद को यह वरदान मिला था कि उसे वही आदमी मार सकता है, जिसने चौदह वर्ष का ब्रह्मचर्य पालन किया हो। लक्ष्मण जी ने चौदह वर्ष का ब्रह्मचर्य पालन किया था। अपनी पत्नी से भी दूर रहे और सीताजी को माता के समान मानते रहे। उनके बिछुए जमीन पर पड़े हुए मिले। रामचन्द्रजी ने पूछा कि इन जेवरों में से सीताजी का कौन-सा है ? उन्होंने बिछुए को तो पहचान लिया, ये सीताजी का बिछुआ है; लेकिन गले के हार को नहीं पहचान सके, कानों के कुण्डलों को नहीं पहचान सके। उन्होंने कहा कि हमने कान तो कभी देखे नहीं हैं उनके, यद्यपि घूँघट नहीं मारती थीं। ये लक्ष्मण जी के ब्रह्मचारी होने का सबूत है, जिसकी वजह से वे इतना बड़ा काम करने में समर्थ हो सके। ये संयम है, कौन-सा वाला ? ये इन्द्रिय संयम की बात मैं कह रहा था।

अभी मुझे आपसे और कहना है। समय का संयम—समय आपकी सम्पत्ति है। जीवन जो बँधा है, ये समय से गुँथा हुआ है। समय का अर्थ होता है—जीवन। जीवन का अर्थ होता है—समय। आप समय के एक-एक लमहे को, एक-एक मिनट को इस तरह से खर्च कीजिए, जिसमें, आपका एक भी लमहा व्यर्थ और बेकार खर्च न होने पाए। ये कैसे सम्भव है ? ये इसी तरह सम्भव है। कैसे ? जैसे कि संसार के प्रत्येक महापुरुष ने अपने-अपने समय का ठीक से नियमन किया है। विनोबा २३ भाषाओं के विद्वान थे, कैसे ? कैसे उन्होंने भूदान की यात्राएँ कर लीं—कन्याकुमारी से लेकर रामेश्वरम् तक ! ये कैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हुआ ? वे बराबर समय का विभाजन करते रहे, अन्य भाषाओं को सीखते-पढ़ते रहे। अब्राहम लिंकन जब सड़क से निकलते थे, तब लोग अपनी घड़ियों को सही करते थे। उनके उठने और टहलने का जो समय था, उसे उनकी लम्बी टाँगों की आवाज से लोग समझ लेते थे कि लिंकन जा रहे हैं। बिल्कुल समय पर जाते थे; क्या मजाल समय का एक लमहा भी खराब करते ! ये क्या है ? श्रम की शक्ति को. समय की शक्ति को आप समझते हैं, मूल्य समझते हों, तो न जाने आप क्या-से-क्या कर सकते हैं ? मनोयोग बगैरह आप लगाएँ तब ? मनोयोग लगाएँ, तो आपने देखा है न ! मन लगा के परिश्रम करें तब ? मन लगा के परिश्रम करने और बिना मन के परिश्रम करने में जमीन-आसमान का फर्क है। बिना मन के परिश्रम करने वाले का हर काम खराब, हर काम बेकार, हर काम घटिया और मन लगा के काम करने वाले का काम कैसा होता है, आप देख सकते हैं।

बया पक्षी होता है; एक-एक तिनके को ढूँढ़कर लाता है, उसकी लम्बाई-चौड़ाई नाप के लाता है, हिसाब से लाता है; मोटाई को देख के लाता है और जहाँ लगाता है घोंसले में, बड़ी सावधानी से और मनोयोग से लगाता है। दूसरी ओर घोंसला बनाने वाला है—कबूतर। उलटी-पुलटी, टेढ़ी-तिरछी लकड़ी ले आता है, जहाँ-के-तहाँ रख लेता है और अपना घोंसला बना लेता है। हवा चलते ही आमतौर से घोंसले उसके, क़िसके ? कबूतर के, जमीन पर गिरते हैं और बच्चे सब तबाह हो जाते हैं। इसलिए अक्सर देखा गया है, कबूतर किसी पुराने मकान में या खंडहर में कुएँ में घोंसला बनाते हैं, ताकि हवा का झोंका उनके घोंसले को बरबाद न कर सके; लेकिन बया को ये परेशानी नहीं है। बया के बच्चे अपने घोंसले में बैठे रहते हैं और बड़ा मजा उड़ाते रहते हैं। क्या मजाल कि एक बूँद पानी भी चला जाए ! क्यों ? उसने मन लगा करके घोंसला बनाया है। यही बात आप हर किसी के बारे में देख सकते हैं। मन लगाकर काम करना—ये आदमी के सम्मान का प्रश्न होना चाहिए। ये प्रतिष्ठा का प्रश्न है। आदमी के बारे में उसे कोई कामचोर कहे, हरामखोर कहे, तो समझिए ये बहुत बड़ी बेइज्जती है। वह विश्राम भले ही करे इसमें, हर्ज नहीं है; लेकिन विश्राम टाइम पर होना चाहिए। आलसियों के तरीके से काम को इधर छोड़ दिया, उधर छोड़ दिया, आधा छोड़ दिया, अधूरा छोड़ दिया—आप ऐसा मत कीजिए। समय का संयम पालिये।

तीसरा हमारा संयम है—धन का संयम। पैसा भगवान् ने आपको दिया है। इसलिए आपको नहीं दिया है कि आप बेसिलसिले से खर्च करें। आप कमाएँ तो चाहे जितना, कमाने के ऊपर रोक नहीं है; लेकिन ईमानदारी से कमाएँ और शराफत के तरीके से खर्च करें। बेसिलसिले का खर्च मत कीजिए। 'सादा जीवन, उच्च विचार' का सिद्धान्त आपने सुना है न ! जो सादा जीवन जिएगा, उच्च विचार उसी के हिस्से में आयेंगे। उसका विलासी जीवन, खर्चीला जीवन, ठाठ-बाट का जीवन, दिखावे का जीवन जितना ज्यादा होगा, उसका खर्च, पैसे का खर्च और समय के खर्चे इतने ज्यादा हो जाएँगे कि उससे ही बेचारे के पास न कुछ समय बच सकता है, न पैसा बच सकता है। खर्चीली जिन्दगी, विलासी जिन्दगी, ऐश की जिन्दगी, अकर्मण्यता से भरी हुई जिन्दगी, ठाठ-बाट से भरी हुई जिन्दगी ना ये नहीं। आप अपने पैसे को इसमें मत खर्च कीजिए। समय को भी खर्च मत कीजिए। आप किफायतसारी का जीवन जिएँ। संत जीवन वह है, जिसमें औसत भारतीय स्तर को अंगीकार किया है। औसत भारतीयों का जो स्तर है, आप अपने खर्चे का स्तर उसी हिसाब से रखिये। आप भी इसी मुल्क के निवासी हैं न ! जो बाकी तीन-चौथाई आदमी जिस ढंग से गुजारा करते हैं, आप क्यों नहीं कर सकते ? ईश्वरचन्द्र विद्यासागर यही करते थे। उनकी पाँच सौ रुपये की आमदनी थी। पचास रुपये में अपना गुजारा चलाते थे और साढ़े चार सौ रुपये बच्चों के लिए, विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति और दूसरे कामों के लिए खर्च कर देते थे। आप क्यों नहीं कर सकेंगे ? किफायत से रहिए, कम खर्च में रहिए। ये मत कहिए, जो आदमी खर्चीली जिन्दगी जीते हैं, वह शक्तिशाली हो जाते हैं, बुद्धिमान हो जाते हैं, मजबूत हो जाते हैं। आप बेकार की बात मत कहिए। सही बात ये है, जो आदमी जितना खर्चीला होता है, उतना ही दुर्व्यसनों में उसका धन खर्च होता है। दुर्व्यसनों की कीमत पर क्या-क्या खरीदा जाता है ? ईर्ष्या खरीदी जाती है, बीमारियाँ खरीदी जाती हैं, बेअक्ली खरीदी जाती है, आक्रोश खरीदा जाता है। सब चीजें तो खरीदी जाती हैं। आपके पास पैसा फालतू है ? खर्च करेंगे, तो नशे जैसी चीजों पर खर्च करेंगे ? नशे जैसी चीजों पर खर्च करेंगे, तब सेहत गँवा देंगे, तब अपनी अकल गँवा देंगे, तब अपनी औलाद गँवा देंगे, तब अपनी इज्जत गँवा देंगे, तब आप सब कुछ गँवा देंगे। ये कैसे कहो सकता है ? ये फिजूलखर्ची की बात है। पैसा फिजूलखर्ची में खर्च होगा, तो यह सब आफत क्यों न आएँगी, बताइये, इसलिए पैसे के बारे में आप हमेशा किफायत से काम लीजिये। आदमी होशियार है, समझदार है कि बेअकल है—इसकी पहचान सिर्फ एक है कि वो खर्च कैसे कर सकता है ? कमाने में तो आप कुछ भी कमा लेते हैं; सट्टा मिल जाए तब लाटरी खुल जाए तब जमीन में गड़ा हुआ धन मिल जाए तब, कोई बाप बहुत ज्यादा धन देकर मर जाए तब, तो बेवकूफ आदमी भी धनवान बन सकता है; लेकिन समझदारी की परख एक है उसने खर्च कैसे किया ? खर्च करना, बहुत समझदारी का काम है। आप फिजूलखर्ची करेंगे, तो अपने घर और औलाद के लिए ऐसी परम्परा छोड़ जाएँगे, जिससे कि वह तबाह हो जाए। इसलिए आप खर्चीली जिन्दगी मत जिएँ। ईमानदार आदमी मितव्ययी हो सकता है। जो फिजूलखर्च हो, उसको बेईमानी करनी पड़ेगी, फालतू पैसा लाएगा कहाँ से ? रिश्वत लेनी पड़ेगी, चोरी करनी पड़ेगी, अमुक काम करना पड़ेगा; लेकिन जो आदमी किफायतशार है, वह आसानी से ईमानदारी की जिन्दगी जी पाएगा। ये तीसरा वाला तप था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चौथा वाला एक और भी तप है, उसको अगर आप करने लगें, तो आपका यहाँ कल्प-साधना सत्र में आ करके उपासना करना सार्थक हो जाएगा। यह तप विचार-संयम है। विचारों को भटकने मत दें। विचारों की शक्ति आप समझते नहीं हैं ! पैसे की शक्ति समझते हैं, विचारों को क्यों नहीं समझते ? विचार असल में सबसे बड़ी शक्ति है। विचारों का अपव्यय मत होने दीजिए। विचारों को आवारा कुत्ते के तरीके से मत घूमने दीजिए। विचारों को एक दिशा में लगाइये। विचारों को ऐसे लगाइये, जैसे बन्दूक की नली में कारतूस लगा करके एक दिशा में छोड़ते हैं, तो किसी निशाने पर लगता है। बारूद को फैला दें तब ? तब कैसा अस्त-व्यस्त हो जाएगा। अर्जुन के बारे में आपने सुना नहीं ? अर्जुन एक तरीके से मछली का कोई हिस्सा देखता था, इसलिए उसका निशाना लगाना सम्भव हो सका। जो दूसरे राजकुमार थे, जो मछली का सम्पूर्ण सिर-पैर देखते थे, उनका कोई निशाना नहीं लगा। आपको अपने विचारों को अर्जुन के तरीके से एकाग्र रखना चाहिए। एकाग्रता का मतलब केवल ये नहीं है कि आप इनको रोक लें। एकाग्रता का मतलब ये है कि एक दिशा में, अच्छी दिशा में, वैज्ञानिकों के तरीके से इन्हें नियोजित कर देना। वैज्ञानिक विचार करते रहते हैं; पर एक दिशा में विचार करते हैं, फालतू विचार ही नहीं हैं। साहित्यिक हैं, ज्ञानी हैं, तपस्वी हैं और विचारशील लोग हैं—सब एक दिशा में अपने विचारों को लगाये रखते हैं और एक दिशा में विचार रखने का परिणाम ये होता है कि इसके कई अच्छे नतीजे निकलते हैं। सूरज की किरणें चारों ओर फैलती रहती हैं। आतिशी शीशे के ऊपर इकट्ठा करके उनको एक जगह पर केन्द्रित कर दें, तब आप देखते हैं न ! आग जल जाती है। इसी तरीके से आदमी के फैले हुए विचार, आवारागर्दी के विचार, अनावश्यक विचार, बेसिलसिले के विचार। आदमी की मनःशक्ति कितनी मूल्यवान है, सबको बर्बाद कर देती है। आप ऐसा मत होने दीजिए। विचारों को जहाँ-तहाँ मत घूमने दीजिए। आप अभ्यास डालिये। आप सिद्धान्तों पर विचार करें। सृजनात्मक विचार करें। आप ऐसे विचार करें, जिससे कि आपका भविष्य बनता हो अथवा कोई योजना बनती हो। आप ऐसे क्रमबद्ध विचारों का अभ्यास डालिए। बिना क्रम के विचारों को, जो भी आएँ, उनको हटा दीजिए। विचारों से विचारों की लड़ाई कराइये। कुविचार जब आपके मन में आते हों, तो सदाचार के विचारों की सेना बनाके रखिये और उन्हें गुत्थम-गुत्था करा दीजिए। दुराचार के विचार जब आएँ, तो आप सदाचार और संयम के विचारों को आगे बढ़ा दीजिए, गुत्थम-गुत्था करा दीजिए तो वे विचार भाग जाएँगे। विचारों से विचारों को काटिये, विचारों को विचारों से सँभालिये। विचारों को सम्पत्ति समझिये। विचारों का संयम कीजिए। विचारों को ऊपर उठने दीजिए। विचारों को उथल-पुथल में गिरने से रोक दीजिए। अगर आप ऐसा करेंगे, तो मैं समझूँगा कि आप विचारों के क्षेत्र में तपस्वी हैं।

आपको चारों तप करने चाहिए। इन्द्रिय-निग्रह का तप—एक, समय संयम का तप—दो, धन के संयम और धन के बजट बना के खर्च करने का तप—तीन। अपने विचारों को एक विषय विशेष में रोके रहने का उपक्रम करना चाहिए—यह चौथा तप है। इसका नाम विचार-संयम है, विचार तप है। आप तपस्वी जीवन जिएँ। जरूरी नहीं है कि आप धूप में खड़े हों, खाना खाना बन्द कर दें और अमुक काम करें। ये जरूरी है कि अपने जीवन के जो सुराख हैं, जो आपकी गलतियाँ और कमजोरियाँ हैं, उनको रोकें और जो अच्छाइयाँ आपके भीतर नहीं हैं, उनको बढ़ाने की कोशिश करें। अगर आप ऐसे काम में लगातार लगे रहेंगे, तब मैं आपको तपस्वी कहूँगा। यहाँ कल्प-साधना शिविर में बुलाने का उद्देश्य था—आपको तपस्वी बनाना। आप यहाँ से जाएँ, तो तपस्वी होके जाएँ। यहाँ हैं, तो तपस्वी होने का अभ्यास करें। तपश्चर्या में कितनी शक्ति भरी पड़ी है ? इसका वर्णन मैंने अभी आपसे किया। आप चाहें तो इसका अनुभव करके स्वयं भी देख सकते हैं कि तपस्वी कितने समर्थ होते हैं, कितने शानदार होते हैं ? आपको वैसा ही बनना चाहिए। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

दृष्टिकोण-परिवर्तन ही वास्तविक कायाकल्प

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

कल्प-साधना सत्र अब आपका एक-दो दिन में समाप्त होने को है। आपको यहाँ से जाने की तैयारी करनी चाहिए और तैयारी के साथ में एक बात-प्रत्यक्ष रहनी चाहिए कि आप यहाँ से बदलते हुए जाएँगे। कल्प, कल्प का अर्थ होता है—'बदल जाना'। किसको बदल जाना ? जमाने को ? समय को ? परिस्थितियों को ? नहीं। न जमाना बदल सकता है, न परिस्थितियाँ बदल सकती हैं। सिर्फ आप बदल सकते हैं। अपने आपको बदल देना आपके हाथ की बात है। परिस्थितियों को बदलना आपके हाथ की बात नहीं। लोगों की मर्जी को बदलना आपके हाथ की बात नहीं। जो आपके हाथ की बात नहीं है, उसके लिए आप प्रयत्न करेंगे, तो बेकार हैरान होते रहेंगे। आपके घर वालों को—अच्छा करना चाहिए, अच्छा बनना चाहिए—ये मत सोचिये। आप ये देखिये कि आप उन घर वालों के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन कर सकते हैं कि नहीं। बस, इतना ही काफी है और आगे बढ़िये मत। परिस्थितियाँ आपके अनुकूल बन जाएँगी। यह मत सोचिये। परिस्थितियाँ कहाँ बन पाती हैं ? आदमी की स्थिति के अनुरूप। श्रीकृष्ण भगवान सारे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन भर पुरुषार्थ करते रहे, पर परिस्थितियाँ कहाँ बनी उनके हाथ से, आप बताइये। राधा जी का गोपियों से साथ छूट गया, पाण्डव कैसे परेशान हुए ? आप जानते नहीं हैं ? श्रीकृष्ण भगवान भी इन परेशानियों से जूझते रहे। उनका भांजा अभिमन्यु मारा गया और क्या-क्या नहीं हुआ ? मथुरा छोड़कर भाग खड़े हुए और वे द्वारिका चले गये। द्वारिका में भी गृह-कलह और सारे परिवार के लोग मारे गए। अन्ततः उनको, जो अपना राज-पाट बड़ी मेहनत से जमाया था, सुदामा जी के हवाले करना पड़ा। इतना ही नहीं, जंगल में जब जा रहे थे, तब बहेलिये ने इनको मार गिराया। फिर बताइये आपकी परिस्थितियाँ अनुकूल कैसे हो सकती हैं ? भगवान की परिस्थितियाँ जब अनुकूल नहीं हुईं, तो अगर आप ये सपना देखते हैं कि हमारी मनोकामनाएँ पूरी हो जाएँगी और हमारी इच्छानुकूल परिस्थितियाँ बदल जाएँगी, तो आप ऐसा सोचना बन्द कीजिये। ये दुनिया आपके लिए बनी हुई नहीं है। आप की इच्छा के लिए सुपात्रता की और पूर्व संचित कृत्यों की जरूरत है। वे अगर न हों, तो आप क्यों सोचते हैं सब कुछ आपके इच्छानुकूल हो जाएगा ? आप बदल दीजिये। क्या बदल दें ? बुढ़े से जवान हो जाएँगे। आपके हाथ की यह बात नहीं है। ये शरीर प्रकृति का बनाया हुआ है और प्रकृति इसकी मालिक है। वह जब चाहती है, पैदा करती है और जब चाहे समेट लेती है। आप प्रकृति के मालिक हैं क्या ? बुढ़ापे को जवानी में बदल सकते हैं क्या ? ना। मौत को जिन्दगी में बदल सकते हैं क्या ? ना ! आदमी की सीमा है और जिस सीमा से आप बँधे हुए हों, उसी सीमा की बात कीजिये; उसी सीमा का विचार कीजिये, तो पूरा होना भी सम्भव है। असीम बातों को सोचेंगे, असम्भव बातों की कल्पनाएँ-मान्यताएँ बनाकर बैठेंगे, तो सिवाय हैरानी के आपके पल्ले कुछ पड़ने वाला नहीं है। आप हैरानी में न पड़ें। जो उचित है, उसी को विचार करें; जो सम्भव है, उसी में हाथ डालें। आपके हाथ में ये सम्भव है कि अपने मन को बदल लें, अपने ढर्रे को बदल दें, अपने रवैये को बदल दें, अपने सोचने के तरीके को बदल दें, अपने स्वभाव को बदल दें। ये बदल देना आपके लिये बिल्कुल सम्भव है। आप यहाँ से जाएँ, तो आप एक ऐसी जिन्दगी लेकर के जाएँ, जो हर किसी को बदली हुई मालूम पड़े। आकृति तो नहीं बदल सकती आपकी; पर प्रकृति बदल जाएगी। आकृति कैसे बदल सकती है ? आकृति नहीं बदली जा सकती, आपके शरीर की बनावट नहीं बदली जा सकती। आपका स्वभाव बदला जा सकता है। जो बदल सकता है, कल्प तो उसी का होगा न। आप उस कल्प को कर डालिये।

कल्प को कर जाएँ, तब ? तब, मजा आ जाएगा। क्या काम करें ? आप यहाँ से जाने के बाद में तीन काम और जीवन में शामिल कर लीजिये। अब तक तो आपकी जिन्दगी में दो काम शामिल रहे। एक का नाम है—पेट का भरना। दूसरा काम आपके जिम्मे रहा है—प्रजनन। शादी कर लेना, ढेरों-के-ढेरों बच्चे पैदा करना, ढेरों-के-ढेरों बच्चों के खर्चे के वजन को कन्धे पर उठाना। उस भारी वजन को उठाने के लिए उचित और अनुचित काम करते रहना, दिन और रात चिन्ता में डूबे रहना। पेट और प्रजनन के लिये यही तो काम रहा न ? और बताइये और कौन-सा काम किया आपने ? इन दो कामों के अलावा आपने क्या काम कर लिया ? चलिये तीसरा एक और काम भी किया होगा आपने। अपने अहंकार की पूर्ति के लिये, ठाठ-बाट बनाने के लिये, लोगों की आँखों में चकाचौंध पैदा करने के लिये हो सकता है आपने कुछ ऐसे काम किये हों, जिससे आपको बड़प्पन का अभ्यास होता हो। दूसरों की आँखों में चकाचौंध पैदा करके आप किस तरीके से बड़े बन पाएँगे ? बड़ा बनना तो अपने व्यक्तित्व की कीमत और व्यक्तित्व के मूल्य बढ़ा देने के ऊपर निर्भर है। आँखों में चमक तो अनेक लोग पैदा कर सकते हैं। आँखों में चमक से क्या है ? आँखों में चमक तो तस्वीरें भी पैदा कर लेती हैं, मूर्तियाँ भी पैदा कर लेती हैं, बीमार आदमी को सजाकर बिठा दिया जाए, तो भी चमक पैदा कर लेता है। चमक पैदा करना भी कोई काम है ! वह अहंकार की पूर्ति के अतिरिक्त दूसरा कुछ है नहीं। हम बड़े हैं, हम बड़े हैं। अरे ! आप क्या बड़े आदमी हैं ! मन आपका बड़ा नहीं है, व्यक्तित्व आपका बड़ा नहीं है, संस्कार आपके बड़े नहीं हैं, तो बड़प्पन कैसे आ जाएगा ? सारी जिन्दगी आपकी इन तीनों कामों में खत्म हो गई है। अब कृपा कीजिये, अपनी जिन्दगी में कुछ नये काम शामिल कीजिये। क्या काम शामिल करें ? एक काम आपका है—व्यक्ति निर्माण। अपने आपको निर्माण करने की कसम खाकर जाइये—हम अपने स्वभाव को बदल दें, हम अपने चिन्तन को बदल दें, हम अपने आचरण को बदल दें, नम्बर एक। दूसरा परिवर्तन जो आपको यहाँ से लेकर जाना चाहिए, वह ये परिवर्तन लेके जाना चाहिए कि आपके, परिवार के सम्बन्ध में जो मान्यताएँ हैं, जो आधार हैं, उनको बदल देंगे। परिवार के व्यक्ति तो नहीं बदले जा सकते, उन पुराने परिवार के व्यक्तियों को आप बर्खास्त कर दें और नये व्यक्तियों को कुटुम्ब में शामिल कर लें या उनका रवैया बदल दें या मकान बदल दें, उनकी शिक्षा बदल दें, उनका स्वरूप बदल दें—ये तो नहीं हो सकता; पर आपका अपने कुटुम्ब के प्रति जो रवैया है, जो आपका सोचने का तरीका है, उसको आप आसानी से बदल सकते हैं और आपको बदल ही देना चाहिए। व्यक्ति-निर्माण, परिवार-निर्माण और समाज-निर्माण समाज के प्रति आपके कुछ कर्त्तव्य हैं, दायित्व हैं। समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों और दायित्वों से आप छुटकारा पा नहीं सकेंगे। समाज की उपेक्षा करते रहेंगे, फिर आप विश्वास रखिये, समाज आपकी उपेक्षा करेगा; फिर आपका कोई वजन नहीं बनेगा; आप सम्मान नहीं पा सकेंगे और सहयोग नहीं पा सकेंगे। उपेक्षा करते रहिये, अपने आप में सीमाबद्ध हो जाइये, इक्कड़ हो जाइये, अकेले रहिये, खुद ही खाइये, खुद ही मजा उड़ाइये। फिर ? फिर आप ये भूल जाइये कि हमको

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

समाज में सहयोग मिल सकेगा और सम्मान मिल सकेगा। सम्मान और सहयोग भी मनुष्य की जीवात्मा की भूख और प्यास हैं। उनको आपको खरीदना है। उनको अगर आप खरीदना ही चाहते हों, तो कृपा करके ये विश्वास कीजिये कि समाज के प्रति आपके जो दायित्व हैं और जो कर्त्तव्य हैं, वह आपको निभाने चाहिए। आप उन कर्त्तव्यों और दायित्वों को निभा लेंगे, तो बदले में सम्मान और सहयोग खरीद लेंगे, जिससे आपकी खुशी और आपकी प्रसन्नता और तरक्की में चार चाँद लग जाएँगे। तीन काम हुए न ? आत्मा को, अपने आप का निर्माण कर लेना—नम्बर एक। अपने परिवार का निर्माण कर लेना—नम्बर दो। अपने समाज को प्रगतिशील बनाने के लिये, उन्नतिशील बनाने के लिए कुछ-न-कुछ योगदान देना—नम्बर तीन। तीन काम अगर आप कर पाएँगे, तो आपको समझना चाहिए कि आपने आत्मा की भूख को बुझाने के लिए और आत्मिक जीवन को समुन्नत बनाने के लिए कुछ कदम बढ़ाना शुरू कर दिया, अन्यथा यही कहा जाएगा कि आप शरीर के लिए ही मरे हैं और शरीर के लिए ही जिए हैं। शरीर ही आप का इष्टदेव है। इन्द्रियों के सुख ही तो आपकी आकांक्षा है। वासना और तृष्णा ही तो आपको सबसे प्यारे मालूम पड़ते हैं। इन्हीं में तो आपका जीवन खर्च हो गया और किस काम में खर्च हुआ ? आप कृपा कीजिये, आत्मा को भी मान्यता दीजिये। शरीर ही सब कुछ नहीं है, शरीर की आकांक्षाएँ ही सब कुछ नहीं हैं, इन्द्रियाँ ही सब कुछ नहीं हैं, मन की लिप्सा और लालसा ही सब कुछ नहीं हैं। कहीं आत्मा भी आपके भीतर है और आत्मा अगर आपके भीतर है, तो आप ये भी विश्वास रखिये कि उसके भूख और प्यास भी हैं। आत्मा के अनुदान भी असीम और असंख्य हैं; लेकिन उसके भूख और प्यास भी हैं। पौधों के द्वारा, पेड़ों के द्वारा हरियाली भी मिलती है, छाया भी मिलती है, फल-फूल भी मिलते हैं, प्राणवायु भी मिलती है; पर उनकी अपनी जरूरतें भी तो हैं। आप जरूरत को क्यों भूल जाते हैं ? खाद की जरूरत नहीं है ? पानी की जरूरत नहीं है ? उनकी रखवाली की जरूरत नहीं है ? उनकी रखवाली न करेंगे, खाद-पानी नहीं देंगे, तो पेड़ों से और पौधों से क्या आशा करेंगे ? इसी तरीके से जीवात्मा का पेड़ और वृक्ष भी अपनी खुराक माँगता है। खुराक क्यों माँगता है ? मैंने निवेदन किया आपसे। व्यक्ति-निर्माण, परिवार-निर्माण और समाज-निर्माण के लिए आपकी गतिविधियाँ चलनी चाहिए और आपके प्रयत्नों को अग्रगामी होना चाहिए।

व्यक्ति-निर्माण के लिए आप एक काम करें, एक निश्चय कर लें कि हमको एक औसत भारतीय के तरीके से जिन्दा रहना है। औसत भारतीय स्तर पर अपने मुल्क में कितने आदमी रहते हैं ? सत्तर करोड़ आदमी रहते हैं। अतः मुट्ठी भर आदमियों की ओर गौर मत कीजिये। थोड़े-से आदमी मालदार हैं, थोड़े-से आदमी सम्पन्न हैं, थोड़े-से आदमी मजा उड़ाते हैं, थोड़े-से आदमी फिजूलखर्च करते हैं, थोड़े-से आदमी ठाठ-बाट से रहते हैं, तो आप उनको क्यों महत्त्व देते हैं ? उनकी नकल क्यों करना चाहते हैं ? उनके साथ में अपनी समृद्धि क्यों मिलाना चाहते हैं ? आप उनके साथ में समृद्धि मिलाइये न, जो आपसे कहीं गये-बीते हैं; कितने किफायत से गुजारा करते हैं, कितने मामूली से काम चला लेते हैं ? आप ऐसा कीजिये 'सादा जीवन उच्च विचार' के सिद्धान्तों का परिपालन कीजिये। सादगी, सादगी, सादगी । अगर आपने ये अपना सिद्धान्त बना लिया, तो आप विश्वास रखिये आपका बहुत कुछ काम हो जाएगा; बहुत समय बच जाएगा आपके पास और उन तीनों कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए आप विचार भी निकाल सकेंगे, श्रम भी निकाल सकेंगे, पसीना भी निकाल सकेंगे, पैसा भी निकाल सकेंगे। अगर आपने व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा को जमीन-आसमान के तरीके से ऊँचा उठाकर के रखा, फिर आपको स्वयं के लिए ही पूरा नहीं पड़ेगा; उसके लिए आपको, अपनी कमाई से गुजारा नहीं हो सकेगा। फिर आपको बेईमानी करनी पड़ेगी, रिश्वत लेनी ही चाहिए, कम तोलना ही चाहिए और दूसरों के साथ में दगाबाजी करनी ही चाहिए, फिर आपको कर्ज लेना ही चाहिए और जो भी आप बुरे-से-बुरे कृत्य कर सकते हैं, करने ही चाहिए ऐसा सोचेंगे। अगर आप अपनी हविश को कम नहीं कर सकते, अगर अपनी भौतिक खर्च की महत्त्वाकांक्षा और बड़प्पन की महत्त्वाकांक्षा को काबू में नहीं कर सकते, तो फिर यह मानकर चलिये कि आत्मोन्नति की बात धोखा है। आपको यह करना ही पड़ेगा। नहीं करेंगे, तो फिर आत्मा की बात कहाँ रही ? आत्मा की उन्नति का सवाल कहाँ रहा ? आत्मा की उन्नति कोई खेल-खिलौने थोड़े ही हैं कि आप रामायण पढ़ लेंगे, गीता पढ़ लेंगे, माला घुमा देंगे, गंगा जी में डुबकी लगा देंगे, तो उसका उद्धार हो जाएगा। ये तो केवल शृंगार हैं, सज्जा हैं, उपकरण हैं। ये कोई आधार थोड़े ही हैं, जिनके आधार पर आप न जाने क्या-क्या सपने देखते रहते हैं ? ये तो वास्तव में माध्यम हैं कि आपके व्यक्तित्व का कैसे विकास हो ? व्यक्तित्व का विकास न हुआ इनके माध्यम से, तो इनको फिर सिवाय ढकोसले के और क्या कहेंगे ? ये ढकोसले हैं इनके द्वारा आप अपने व्यक्तित्व को विकसित कैसे कर सकेंगे ? फिर क्या करना चाहिए ? किफायतसार बनिये। किफायतसार अगर बनते हैं, तो आपको नौ सौ निन्यानवे बुराइयों से छुटकारा मिल जाएगा। जितनी भी बुराइयाँ हैं, जितने भी पाप हैं, या तो पैसे के लिए होते हैं या पैसे मिलने पर होते हैं। पैसा पाने के लालची बुरे-बुरे कर्म करते हैं। पैसा होने के बाद में जो अहंकार उत्पन्न होता है, मद उत्पन्न होता है, उसी के प्रदर्शन में वह खर्च होता है। अतः अगर आपने इतना मान लिया है कि आपको गुजारे तक ही सीमित रहना है, गुजारा ही आपके लिए संतोषजनक है, फिर आपके पास फालतू बचेगा ही नहीं; फिर आप फालतू कमाएँगे ही नहीं; फिर बेईमानी का सवाल कहाँ रहा ? फिर पापों का सवाल कहाँ रहा ? धृष्टता का सवाल कहाँ रहा ? इतना करने के बाद में एक और बड़प्पन की बात हो जाती है। फिर आप किफायतसार हो जाते हैं; आप

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

का ढेरों-का-ढेरों समय बच जाता है, श्रम बच जाता है, अक्ल बच जाती है, पैसा बच जाता है। आप उनको लगाइये। आत्मा की उन्नति के लिए कुछ तो लगाना पड़ेगा न, पूँजी लगानी पड़ेगी। आप पूँजी कहाँ से लाएँगे, बताइये ? श्रम की पूँजी आप कहाँ से लाएँगे ? समय की पूँजी आप कहाँ से लाएँगे ? साधनों की पूँजी आप आत्मा की उन्नति के लिए लगा सकते थे, उसको कहाँ से लाएँगे ? 'सादा जीवन उच्च विचार' का मतलब ये है कि ऊँचे विचार की जिन्दगी अगर आपको जीनी है, उत्कृष्ट जीवन आपको जीना है, तो सादगी का जीवन जिएँ। ये आत्मा की उन्नति के लिए सबसे पहला, सबसे आधारभूत सिद्धान्त है।

दूसरा सिद्धान्त ये है कि आप अपने समय को, दिनचर्या को नियमित बना लीजिये, बाँट लीजिये; श्रम को बाँट लीजिये, समय को बाँट लीजिये। आपको शरीर और जीवात्मा के लिए, दोनों के लिए अपना समय, श्रम को बाँट देना चाहिए। दोनों के हिस्से का बँटवारा कर लीजिये। कैसे करें ? आप शरीर के लिए और भौतिक जीवन के लिए कितना समय रखेंगे ? चौबीस घण्टे का समय होता है। सात घण्टे आप सोया करें। सात घण्टे एक जवान आदमी के लिए, स्वस्थ आदमी के लिए बिल्कुल पर्याप्त हैं और तीन घण्टे आप अपने नहाने-धोने और खाने-पीने में खर्च कर सकते हैं। शरीर के लिए दस घण्टे से ज्यादा की जरूरत नहीं है। चौबीस घण्टे में से दस घण्टे आपके सोने और खाने में खर्च हो गए। आठ घण्टे आप शरीर को, कुटुम्ब को जिन्दा रखने के लिए कमाई में लगा दीजिये। अगर आप रोज कुआँ खोदते हैं, रोज पानी पीते हैं, तो आठ घण्टे आपको मेहनत करना काफी होना चाहिए, तमाम दिन मत कीजिये। तमाम दिन दुकान खोल के बैठते हैं, तो ग्राहक तो उतने ही आएँगे। आप चौबीस घण्टे खोल के बैठेंगे, तो भी उतनी ही बिक्री होगी। आप आठ घण्टे से ज्यादा श्रम नहीं कर सकते। धन के उपार्जन के लिए आठ घण्टे मेहनत किया कीजिये और दस घण्टे शरीर के लिए खर्च कीजिये। अठारह घण्टे हो गये न ? अठारह घण्टे से ज्यादा आप भौतिक जीवन के लिये खर्च मत कीजिये। छह घण्टे नियमित रूप से आप आध्यात्मिक उन्नति के लिए खर्च किया कीजिये। आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपनी दिनचर्या को दो हिस्सों में बाँट सकते हैं। आप उसको उपासना में बाँट सकते हैं। उपासना-एक और उपासना के अलावा स्वाध्याय—दो; मनन-चिन्तन—ये भी उसी में आता है, आध्यात्मिक उन्नति के दैनिक कृत्यों में आता है। इसके अलावा आप परिवार-निर्माण और समाज-निर्माण के लिए अलग से समय निकाल के रखिये। अलग से समय निकाल के रखेंगे, तो आपके सामाजिक कर्त्तव्य, जो आजकल उपेक्षित रहने की वजह से एकदम समाप्त हो गए हैं, निभते रहेंगे। कोई जमाना था, जब वानप्रस्थों की परम्परा थी, तब हर आदमी अपने समय का एक अंश समाज के लिए निकालता था, समाज की सेवा होती थी, समाज समुन्नत होता था। कोई समय नहीं निकालेगा, श्रम नहीं करेगा और समाज को उन्नतिशील बनाने के नाम पर ढकोसला-ढिंढोरा पीटते रहेंगे, पैसे खर्च करते रहेंगे, आडम्बर बना लेंगे, तो कैसे बनेगा ? निर्माण के लिए तो समय चाहिए न ? श्रम चाहिए ? आप समय और श्रम का एक हिस्सा उसके लिए लगा दीजिए। बस, ये आप दो काम कर लें। एक तो आप मितव्ययिता की जिन्दगी जिएँ और जो आपके पास समय है, बुद्धि है, साधन हैं, उनको दो हिस्सों में बाँट दें—शरीर के लिए और आत्मा के लिए। फिर आप देखें किस तरीके से आपके जीवन की प्रगति का आधार बनकर खड़ा हो जाता है।

आप दृष्टिकोण को बदल ले जाइये यहाँ से। जिसका परिवर्तन होता है, असल में वह दृष्टिकोण होता है। आप शरीर के लिए नहीं, आत्मा के लिए जिएँ। आत्मा हैं आप, शरीर नहीं हैं। आत्मा के ही रूप में आप करोड़ों-लाखों वर्षों से जिन्दा हैं और करोड़ों-लाखों वर्ष तक जिन्दा रहेंगे। शरीर तो आपके पहिनने-ओढ़ने के कपड़े के तरीके से हैं। आप अपने आपको शरीर प्रधान न मानें, अपने आपको आत्मा प्रधान मानें और आत्मा के कल्याण को मुख्य स्थान दीजिये। शरीर का उपयोग तो करना है, इसलिए जिन्दा तो रखना चाहिए; शरीर की जरूरतों को तो पूरा कीजिये; पर शरीर के लिए ही मत कीजिये। रोटी खाइये तो सही; पर रोटी के लिए ही जिन्दा मत रहिये। जिन्दगी के लिए रोटी खाइये। यदि दृष्टिकोण आप बदल देंगे, तो आत्मा का उत्कर्ष, आत्मा के कल्याण की अनेकों बातें आपको सूझ पड़ेंगी। अगर अनेकों बातें आपको सूझ पड़ेंगी। अगर ये बातें सूझती नहीं हैं, दृष्टिकोण आप बदलते नहीं हैं, तो मुश्किल हो जाएगी। परिवार में आप माली के तरीके से रहें। माली के जिम्मे पेड़-पौधे होते हैं; माली उनको बड़ी होशियारी के साथ लगाता है, काटता-छाँटता है और उसमें अपना गर्व अनुभव करता है कि बगीचे को कैसा अच्छा बना दिया ! पर माली मालिक नहीं होता आमतौर से। किसी राजा का, सेठ का या बड़े आदमी का बाग होता है, तो माली को श्रेय मिलता है। देखिये ये माली है, इसने ऐसा बगीचा लगा दिया ! श्रेय बहुत है माली के लिए। आप अपने कुटुम्बियों के मालिक मत बनो। मालिक आप बनेंगे, तो आप हैरान हो जाएँगे और आपकी नाक में दम हो जाएगा। औरत के आप मालिक हैं। औरत को आपके कहने पर ही चलना चाहिए। कैसे हो सकेगा ? जाने कितने जन्मों के संस्कार बेचारी लेकर आई है ! ठीक है, आप उसकी सेवा कर सकते हैं। बच्चे हैं, न जाने कितने जन्मों के संस्कार लेकर के आए हैं ! क्या बनाएँगे आप ? हम अपने लड़के को पी. सी. एस., आई. सी. एस. बनाएँगे। आपके क्या हाथ की बात है ? आप अपने कर्त्तव्य का पालन कीजिये। हर कुटुम्बी के लिए कर्त्तव्य का पालन कीजिये। उनको स्वावलम्बी बनाइये। कोई कुटुम्बी आपका ऐसा न हो, जो स्वावलम्बी न हो, शिक्षित न हो, सुसंस्कारी न हो। ये आप कर सकते हैं। आप अपने बच्चों को पी. सी. एस.,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आई. सी. एस. कैसे बना पाएँगे ? आप अपने बच्चे के लिए इतना खर्च कहाँ से दे पाएँगे ? आप अपनी लड़की को लाख-करोड़ रुपये दहेज में कैसे दे पाएँगे ? जो बात आप नहीं कर सकते, उसके लिए आप बेचैन रहते हैं !

हमको अपने कुटुम्बियों के लिए ये करना चाहिए। कुटुम्बियों की प्रसन्नता मत देखिये। कुटुम्बियों के साथ में ऐसा व्यवहार कीजिये, जिससे उनका कल्याण हो जाए। उनकी प्रसन्नता न जाने किन चीजों पर टिकी हुई है ? ये न जाने क्या माँग बैठेंगे ? न जाने क्या-क्या फरमाइशें उनकी चालू हो जाएँगी ? आप उनकी फरमाइशों को पूरा करके उनको प्रसन्न रखने की कोशिश करेंगे, तो निराश रहेंगे। फिर न आपको प्रसन्नता मिलेगी, न आपके घर वाले आपके साथी बन सकेंगे और न आप उनके प्रति जो स्वावलम्बन का, शिक्षा का, सुसंस्कारिता का उद्देश्य है, वह पूरा कर सकेंगे। उनकी खुशामद करेंगे, उनकी हाँ-में-हाँ मिलाएँगे ! हाँ-में-हाँ मिलाने से कहीं कुटुम्ब बनते हैं क्या ? एक आँख प्यार की और एक आँख सुधार की अगर आप रखते हैं, तो आप अपने कुटुम्बियों के प्रति कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों का ठीक तरह से निर्वाह करने में समर्थ होते हैं। अगर आप ऐसा नहीं करते तब ? तब उनके साथ जो उनकी ओर से न्याय मिलना चाहिए था, नहीं मिलता। आप हरेक की खुशामद करेंगे ? हरेक की मर्जी को पूरा करेंगे ? अपनी मर्जी पूरी करेंगे ? मर्जियों की ओर ध्यान मत दीजिये। औचित्य पर ध्यान दीजिये। उनकी क्या माँग उचित है, उस पर ध्यान दीजिये। क्या माँग पूरी करना चाहते हैं और किसमें खुश रहना चाहते हैं—इसकी ओर से आँखें बन्द कर लीजिये।

ये दृष्टिकोण अगर आपका बदल जाए तब ? तब फिर मजा आ जाए ! तो आपकी बहुत-सी समस्याओं का हल हो जाए। व्यक्तिगत जीवन में जीवन के दृष्टिकोण को बदलिये और पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध में दृष्टिकोण को बदलिये, सामाजिक जीवन के बारे में अपने व्यवहार को बदलिये। अपना व्यवहार यदि नहीं बदल सकते, तो समाज के लोगों को आप कैसे बदल सकेंगे ? समाज के लोगों का स्वभाव कैसे बदल जाएगा ? आप अपना व्यवहार इस तरीके से करें, जिससे कि उन लोगों के हमले आपके ऊपर कामयाब न हों। आप उनकी सलाह मानिये मत। किसी की सलाह मत मानिये। आप अपने ईमान की सलाह मानिये और भगवान की सलाह मानिये। दो के अलावा न कोई आपका साथी हो सकता है, न आपका सलाहकार। आप इन दो के साथ-साथ और इनकी सलाह को मानकर के इन्हीं के ऊपर निर्भर होना शुरू कर दें। फिर आपको किसी की सहायता की जरूरत नहीं है, किसी के सहयोग की जरूरत नहीं है। सहयोग और सहायता की जरूरत नहीं पड़ेगी और आपकी अनायास ही सेवा बनती चली जाएगी, अगर कृत्य और आपका क्रियाकलाप, भले ही वह आत्मकल्याण के लिए क्यों न किया गया हो, उससे अनायास ही समाज-कल्याण की बात बन जाएगी। आप अपना व्यक्तित्व अच्छा बनाते हैं, तो उससे असंख्य आदमियों पर असर पड़ने ही वाला है। अगर आप स्वयं सादगी का जीवन जीते हैं, तो आपके पास बची हुई चीजें समाज सेवा के लिए अनायास ही मिलने वाली हैं। फिर आप कहाँ खर्च करेंगे ? किस काम में खर्च करेंगे ? बचा हुआ समय जाएगा कहाँ ? आत्मा का कल्याण लोकसेवा के ऊपर टिका हुआ है। भगवान का भजन ही वास्तव में लोकसेवा के साथ जुड़ा हुआ है। सेवा को ही भजन कहते हैं। सेवा के साथ में अगर आपका मन जुड़ा हुआ है, तो आप वास्तव में भजन करते हैं। अगर आप केवल माला घुमाते रहते हैं, लकड़ी की माला घुमाते रहते हैं, जीभ से तरह-तरह के मन्त्रों का, शब्दों का उच्चारण करते रहते हैं; लेकिन अगर आपका सेवाविहीन जीवन है, तो आपका भजन नहीं हुआ, आप विश्वास रखिये। 'भज' शब्द जो संस्कृत में बना है, सेवा से बना है—**'भजसेवायाम'** आपको सेवामय जीवन जीना ही चाहिए समाज के प्रति। परिवार को माली के तरीके से रखना चाहिए और शरीर को ? आत्मा और शरीर दो हिस्सों में बाँट करके अपने कर्त्तव्यों का निर्धारण करना चाहिए। ऐसा निर्धारण करके अगर आप ले जाएँ, ऐसा कार्यक्रम यहाँ से बनाकर ले जाएँ, ऐसी तैयारी में जाते ही आप जुट जाएँ, तो मैं ये कहूँगा कि आपका कायाकल्प बिल्कुल सार्थक हो गया और आपका भविष्य इतना शानदार होगा कि आप देखकर के स्वयं दंग रह जाएँगे और जो भी आपके सम्पर्क में आएँगे, वह सब ये कहते रहेंगे—इस आदमी का कायाकल्प हो गया। शान्तिकुंज धन्य हो जाएगा। अपना कायाकल्प देखकर के आप धन्य हो जाएँगे। यहाँ एक महीने का समय लगाकर के आप धन्य हो जाएँगे ! जिन्होंने ये प्रयत्न किया है कि आदमी में देवत्व का उदय किया जाए और आदमी में देवत्व का उदय करके धरती पर स्वर्ग का अवतरण किया जाए, हमारी आकांक्षाएँ पूरी हो जाएँगी, अगर आप यहाँ से कायाकल्प करके जा सकें तो, वह और नहीं कोई करेगा, आप ही करेंगे अपना कायाकल्प। अपना दृष्टिकोण आप बदल दीजिये। अपनी गतिविधियों में क्रांतिकारी परिवर्तन कीजिये। हम आपकी सहायता करेंगे, हम आपको हिम्मत देंगे, हम आपको बल देंगे। हम आपके सहयोगी हैं, मित्र हैं; पर करना तो आप को ही पड़ेगा। आप ऐसा कर पाएँ, तो आपका सार्थक हो जाए ये शिविर। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

आध्यात्मिक सिद्धान्तों को आत्मसात करना ही जीवन का लक्ष्य हो

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आज हमारा शिविर समाप्त हुआ। ये शिविर एक बहुत महत्त्वपूर्ण उद्देश्य के लिए लगे थे और वो उद्देश्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पूरा करके हम अपनी बात समाप्त करते हैं। इसमें एक आपका उद्देश्य था और एक हमारा उद्देश्य था। अधिकांश के मन में यह बात थी कि गुरुजी के पास जाएँगे, एक सप्ताह का समय मिलेगा, छुट्टी लेकर के चलेंगे, काम का हर्ज तो होगा; पर एक सप्ताह बैठ करके वहाँ बातें करेंगे, बहुत-सी समस्याओं का समाधान करेंगे, पूछताछ करेंगे, पूजा के सम्बन्ध में पूछेंगे, प्रार्थना के सम्बन्ध में पूछेंगे, घर-गृहस्थी के बारे में पूछेंगे, हारी-बीमारी के बारे में पूछेंगे, चिन्ता-दुःख के बारे में सहायता के लिये प्रार्थना करेंगे और अपने मन की बहुत-सी बातें कहेंगे यही किया न !

भजन करने के लिए, हवन करने के लिए तो बहुत आदमी वक्त पर आये। वक्त पर आने का मकसद ये था कि हम अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में चाहे भौतिक हों, चाहे आध्यात्मिक हों, उनके बारे में आपसे विचार-विमर्श करेंगे। मित्रो ! आपकी बात तो हम समझ गये। हमने पूरी-पूरी कोशिश की आपके साथ बात करने की; पर इसमें एक भारी अड़चन है।

स्थूल-प्रक्रिया के आधार पर यह सम्भव नहीं था, कारण कि एक आदमी भी एक हजार आदमी से कैसे मिल सकता है ! कितना समय लगेगा ! यह सम्भव नहीं है। स्थूल शरीर से बातचीत करना सम्भव नहीं है; लेकिन एक और तरीका है, जो हमारे लिये उससे भी ज्यादा कारगर है, उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, वह है—सूक्ष्म विचार। आदमी, पैरों के सहारे तीन दिन पैदल चल सकता है; लेकिन प्राणों की शक्ति से हजारों मील चल सकता है। अभी हम यहाँ हैं, तो दूसरे ही पल हमारा मन कहीं अन्यत्र पहुँच सकता है और किसी आदमी को हम प्रभावित करके एक क्षण भर के अन्दर फिर यहाँ आ सकते हैं, बातें कर सकते हैं। मन की शक्तियाँ बड़ी असीम हैं। मन की शक्तियाँ, अंतरंग की शक्तियाँ असीम हैं। अंतरंग की शक्तियों से असीम व्यक्तियों के साथ में एक साथ बातचीत करना सम्भव है। यह शक्ति है—मौन की शक्ति। रोमांरोला संसार के, फ्रांस के बड़े साहित्यकार थे। अल्बर्ट आइन्सटाइन दुनिया के सबसे बड़े वैज्ञानिक थे। साहित्य और विज्ञान का कैसे समन्वय हो ? दोनों में बहुत मित्रता थी। दोनों ने यह निश्चय किया कि इस विषय के ऊपर वे खूब खुलकर बातचीत करेंगे, बहुत वार्ता करेंगे, वार्ता करने के लिये समय निकाला और तैयारी की। आइन्सटाइन रोमांरोला के घर पर मिलने के लिए गए। बातें बहुत थीं, समस्याएँ बहुत थीं, असंख्य विचार थे। उनको साल भर में ही हल नहीं किया जा सकता था। दोनों बैठे। पैंतालीस मिनट बातचीत करने का समय मिल सका। दोनों चुप बैठे रहे। ठंड का मौसम था। बिजली की अँगीठी (हीटर) जला ली एक कमरे में और दोनों चुपचाप बैठे रहे, अँगीठी में हाथ सेंकते रहे। बस, पैंतालीस मिनट बीत गये। सेक्रेटरी आया, उसने घड़ी दिखाई, कहा—चलिये सर ! आइन्सटाइन जाने के लिए उठ खड़े हुए। दोनों ने हाथ मिलाया। दरवाजे तक दोनों साथ-साथ आये। पत्रकारों ने पूछा—आप लोगों में क्या बातचीत हुई ? उन्होंने कहा—पैंतालीस मिनट में हमने इतनी ज्यादा बातचीत की, जो कि पैंतालीस महीनों में भी सम्भव नहीं थी। जबान का हमने इस्तेमाल नहीं किया। हमने बिना जबान के ढेरों-की-ढेरों बातें कर लीं। बिना बातचीत के, जबान के भी बातचीत होना सम्भव है।

महर्षि रमण के आश्रम में मैं रहा हूँ बहुत समय तक। पांडिचेरी के अरविन्द घोष के आश्रम में भी रहा हूँ। अरविंद जी भी बात नहीं करते थे। माताजी भी केवल दर्शन देने आती थीं, ऊपर से सीढ़ियों में खड़े होकर। अरविंद जी दर्शन भी नहीं देते थे। अरविंद जी का दर्शन भी कठिन था। एक कमरा था, जिसमें वे अकेले रहते थे। कोई मिलने नहीं जा सकता था। केवल माताजी ही जाती थीं। माताजी सीढ़ियों पर खड़े होकर केवल पाँच मिनट तक दर्शन देती थीं; दर्शन देकर चली जाती थीं। कोई बात नहीं होती थी। बात माने बकवास।

आजकल मैं जिन महत्त्वपूर्ण कार्यों में लगा हुआ हूँ, उसमें बकवास के लिये मैंने प्रायः किसी को समय नहीं दिया, आगे भी नहीं दूँगा। बकवास करने के लिए आते हैं, तो मैं भगा देता हूँ। अपने मन के गुबार निकालने के लिए, न जाने क्या-क्या कहने के लिए, यहाँ की भूमिका, वहाँ की भूमिका सुनाने के लिए आते रहते हैं। बेटे ! मैं बहुत व्यस्त आदमी हूँ, तू समझता नहीं ! समय की बात समझ और मैं जो महान कार्य का उद्देश्य लेकर के चला हूँ, उसमें एक-एक सेकण्ड किस तरीके से लगाता हूँ, उसको समझ। तू बकवास के लिये समय चाहता है ! तेरे तरीके से मैं फालतू आदमी नहीं हूँ, बहुत व्यस्त आदमी हूँ। जबान की नोंक से बेसिर-पैर की बातें, बेतुकी बातें, बेसिलसिले की बातें, बेबुनियाद की बातें—ये सब बन्द कर दिया है। आपके मन में क्या था, मैंने पूरे तरीके से समझ लिया और निकाल दिया। समझकर के मैंने ये कोशिश की कि आपकी बातों का समाधान कर दूँ और जब आप जाएँगे यहाँ से, तो ये अनुभव करेंगे कि आपकी बातों का समाधान कर दिया गया। दो तरह की आपकी बातें थीं—एक तरह की थी आध्यात्मिक बात, जो, हमारे और आपसे, दोनों से मेल खाती है। दूसरी बात ऐसी थी, जो आपके भौतिक जीवन से सम्बन्ध रखती थी, वह भी संगति खाती है; क्योंकि हम और आप एक साथ जुड़ गये हैं; जुड़ जाने की वजह से जहाँ आध्यात्मिक समस्याएँ भी हमारे और आपके साथ-साथ हैं, वहाँ आप की भौतिक समस्याओं के बारे में भी हमारी दिलचस्पी है। उससे कोई दिलचस्पी न हो, ऐसी कोई बात नहीं। आपको क्या कठिनाई है, क्या आवश्यकताएँ हैं, क्या महत्त्वाकांक्षाएँ हैं—मैंने तीनों का वर्गीकरण कर लिया है, तीनों को अलग-अलग से समझ लिया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कठिनाइयाँ—कठिनाइयाँ बेटे ! उसे कहते हैं, जबकि आदमी मुसीबत में हो; मुसीबत में आदमी की सेवा करना आवश्यक है। आपने अस्पतालों में देखा होगा, रात के वक्त कोई मरीज यकायक बीमार हो जाए, डॉक्टर एक घण्टे पहले सोया हो तो भी इमरजेंसी में सिविल सर्जन को बुलाया जाएगा। वह फौरन आकर देखेगा। बारह घण्टे काम करता है और एक घण्टे भी नींद नहीं कर पाया है। यह क्या है ? इमरजेंसी। साँप काट खाये किसी को, मौत सामने खड़ी है; किसी को बन्दूक की गोली लग गई है, आधा घण्टे में उस आदमी के प्राण निकल जाएँगे। डॉक्टर बारह घण्टे से लगातार ऑपरेशन में लगा हुआ हो, आधा घण्टा ही बेचारा सो पाया हो; लेकिन जब कॉल आता है कि साँप ने काट खाया है, तो वह फौरन उठेगा। उसका ये कर्त्तव्य है, ये फर्ज है कि एक दिन की अपनी नींद गँवा दे और जिस आदमी की जान के ऊपर बीत रही हो, उसकी मदद करे। आदमी का सोना जरूरी नहीं है, आदमी की जिन्दगी जरूरी है। हम वर्गीकरण करते हैं, आप की समस्त भौतिक समस्याओं का। आप में से जो आदमी मुसीबत में है, हम उनको प्रायरिटी देते हैं। हमारा तप उनके लिये पहले नम्बर पर है; हमारी मदद उनके लिये पहली प्राथमिकता है और दूसरे ? दूसरे हैं—जरूरतमन्द। जरूरतमंद किसे कहते हैं ? जरूरतमंद उसे कहते हैं, जिसका किसी वजह से काम रुका हुआ हो। बेचारे की गाड़ी रुक गई है, गाड़ी चल नहीं सकती, कीचड़ में फँस गई है। फँस गई है, तो धक्के का इन्तजार है। कोई धक्का मार दे, तो उसकी गाड़ी, जो कीचड़ में फँस गई है, आगे निकल जाए। लम्बा सफर तय करना है, वह पूरा हो जाए। इन्हें कहते हैं जरूरतमन्द और तीसरी ? तीसरी एक और चीज है, जिसका नाम है—तृष्णा। तृष्णाओं को भी हम जानते हैं; पर सबको हम समान महत्त्व नहीं देते। आप देते हों, तो दें। हमारे पास तप की जो सम्पत्ति है, किसको कितनी देनी चाहिए और क्यों देनी चाहिए—यह विवेक भी भगवान ने हमको दिया है। जो माँगे, उसी को दे दीजिये—यह विवेक नहीं, संकल्प है। ऐसा संकल्प शंकर भगवान करते हैं। जो कोई मनोकामना लेकर जाए, सबकी पूरी कर देते हैं। हम शंकर भगवान नहीं हैं, हम इनसान हैं। इनसान के साथ विवेक का अंश मिला हुआ है। तप हमको भगवान ने दिया है। हमको उदार हृदय भी दिया है। उदार हृदय के साथ-साथ में विवेक भी दिया है। विवेक के हिसाब से हम हर चीज का वर्गीकरण करते हैं और ये देखते हैं कि आप में से कौन आदमी मुसीबत में फँसा हुआ है ? मुसीबत में कराह रहा है, किसकी आँखों में से आँसू आते हैं, कौन आदमी हैरान हो रहा है, उस आदमी को हम प्रायरिटी देते हैं। आप कहें, चाहे न कहें; खुशामद करें, चाहे न करें; हाथ-पाँव जोड़ें, चाहे न जोड़ें; बेटे ! उससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। न हमारे ऊपर असर पड़ता है हाथ-पाँव जोड़ने का, न भगवान पर असर पड़ता है हाथ-पाँव जोड़ने का। फूल-माला पहनाने का न हमारे ऊपर असर पड़ता है, न भगवान के ऊपर असर पड़ता है। हम देखते हैं कि आपकी जरूरत क्या है ? आप जो बात कहने आये थे, मैं समझ गया और समझ करके वर्गीकरण कर लिया; वर्गीकरण करके अपने तप के हिसाब से आपकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, आपकी सहायता करने के लिए निश्चय किया है। आपकी हम गाड़ी के कब्जे हैं और हम निभायेंगे। क्यों निभायेंगे आप ? इसका एक ही कारण है कि हमको संत व्यक्तित्व मिला है। संत व्यक्तित्व केवल तब तक कायम रहेगा, जब तक कि आदमी अपने चरित्र को कायम रखने में समर्थ हो और दूसरों के प्रति उदार व दयालु बना रहे। आदमी निष्ठुर जिस दिन हो जाएगा, उस दिन उसका संतपन खत्म हो जाएगा। जिस दिन आदमी दुष्ट हो जाएगा। दुश्चरित्र हो जाएगा, उस दिन उसकी संत-परम्परा नष्ट हो जाएगी; उस दिन उसका भजन चला जायेगा, पूजा चली जाएगी, उपासना चली जाएगी; उसका योगाभ्यास चला जाएगा, प्राणायाम मिट्टी में मिल जाएगा, उसको ध्यान से कोई फायदा नहीं होगा, जिस दिन यह चीजें उसने गँवा दी।

हमको बेटे ! बड़ा प्यार है, किससे ? अपने ब्राह्मणत्व से। अपने ब्राह्मणत्व की रक्षा करना चाहते हैं। हम अपने ब्राह्मणत्व को गँवाना नहीं चाहते। हम नहीं चाहते कि हमारी जिन्दगी भर की कमाई, जन्म-जन्मान्तरों की कमाई ऐसे ही गायब हो जाए। इसलिये हम इसकी रखवाली करने के लिये दो चीजों पर बहुत ध्यान देते हैं—एक तो ये देखते हैं कि हमसे ऐसी गलतियाँ न हों, जिसके लिए हमकी आँखें नीची करनी पड़ें और शर्मिन्दा होना पड़े किसी के सामने। दूसरे, हम ये ध्यान रखते हैं कि कोई आदमी हम पर यह लांछन नहीं लगाए कि ये आदमी पत्थरदिल वाला था, कठोर था, दया नहीं थी। दूसरों की मुसीबतों को देखकर इसकी आँखों में आँसू नहीं आये या इसके मन में दर्द पैदा नहीं हुआ। ये लांछन हमारी जिन्दगी पर कोई नहीं लगा सकता। ठीक है, हमें कभी-कभी गुस्सा आ गया होगा आप पर, नाराज हो गये हों—यह सम्भव है। आजकल दिमाग चिड़चिड़ा जाता है, काम करने की वजह से थकान ज्यादा हो जाती है। थकान की वजह से दिमाग की जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं, तो कभी-कभी गुस्सा भी हो जाते हैं हम। गुस्से की आदत तो हम पर बढ़ी चली जाती है—ये बुराई तो हो गई है; लेकिन और बुराई तो हम पैदा नहीं कर सकते, अपने आप पर कोई एहसान करने के लिए नहीं, अपनी ब्राह्मण-परम्परा की रक्षा करने के लिये। इसके लिए बस एक दबाव है हमारे ऊपर और कोई दबाव नहीं। आप हाथ-पाँव जोड़ते हैं कि नहीं ? हमें क्या मतलब है इससे। जोड़ेंगे तो हम क्या करेंगे ? वह तो इसलिये कि हमारी उदारता में कमी न आने पाये, इस कारण हम आपकी सहायता करते हैं। हमारे जीवन का यह संकल्प रहा है, व्रत रहा है कि किसी आदमी को अपने दरवाजे पर से कभी भी खाली नहीं जाने देंगे।

राजा कर्ण की जिन्दगी में आखिरी वक्त जबकि वे घायल पड़े हुए थे, श्रीकृष्ण भगवान आये एक संत के रूप

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

में और कुछ माँगने लगे। उन्होंने कहा—कर्ण ! तेरे पास कुछ हो, तो दे दे। कर्ण सोचने लगे—मेरे दरवाजे पर से कोई आदमी अब तक खाली नहीं गया और ये अन्तिम समय कोई आया है, तो इसे लौटा कैसे दूँ ? मेरी शरण बिगड़ती है। अन्तिम समय पर एक साधु आया हुआ है, उसको मना कैसे कर दूँ कि हमारे पास कुछ नहीं है और भगवान ने हमको कुछ भी नहीं दिया है। ये हमारे लिए बड़े दुःख की और बड़े शर्म की बात हो जायेगी, तो कर्ण ने अपने दाँत, सोने की पर्त लगी, उखाड़ करके उनके हाथ पर रख दिये। राजा कर्ण तो हम हैं नहीं। राजा कर्ण के बराबर सोना तो हमको नहीं मिला है; पर हमारा दिल, हमारा हृदय कर्ण के बराबर है। अपने दिल और हृदय को हम कीमती समझते हैं, इसलिये उसकी रखवाली करने के लिये, अपना नाम और इज्जत बचाने के लिए आपकी सहायता करते हैं। कितनी सहायता करेंगे ? ये नहीं कह सकते। आपका प्रारब्ध और हमारा पुण्य—दोनों का समन्वय होकर के जितना सम्भव होगा, उतनी मदद करेंगे। हमने ये कभी किसी से नहीं कहा कि हम आपकी मनोकामना पूरी कर सक्ते हैं। जो आदमी ये दावा करे कि हम मनोकामना पूरी कर देते हैं, आप समझना ये आदमी धूर्त है। क्यों ? क्योंकि इनसान के हाथ में इतनी ताकत नहीं कि आदमी के कर्म और आदमी के प्रारब्ध को पूरी तरह से साफ कर सके। ये काम भगवान कर सकते हैं ? मैं सोचता हूँ भगवान भी नहीं कर सकते; क्योंकि भगवान ने कर्म की व्यवस्था ऐसी बना दी कि वह अपने बाप की भी मुसीबत को दूर न कर सके।

भगवान रामचन्द्र जी के पिता दशरथ जी को शाप लगा था; उस शाप से विलख-विलख करके उनके प्राण छूटे। श्रीकृष्ण भगवान अपने भांजे को मौत से बचा न सके। श्रीकृष्ण भगवान ने पहले जन्म में बालि को तीर मारा था, उसका कर्म आकर के उनके पैर में लगा और पैर उनका फट गया। बहेलिया आकर के रोया—महाराजजी ! गलती हो गई। उन्होंने कहा—गलती नहीं है। आप पहले जन्म में बालि थे और हम पहले जन्म में राम। हमने आपको छिप करके तीर मारा, उसका प्रारब्ध-भोग आज हमें इस रूप में मिला है। हमने जो गलती की, उसी का यह फल है। चाहे रामचन्द्र जी ही क्यों न हों, छिपकर के भी खराब काम करेंगे तो उनको भी, भगवान जी को भी छुट्टी नहीं मिल सकती। भगवान बड़े हैं; लेकिन कर्म भगवान से बड़ा है—ये आप ध्यान रखना। भगवान ने कर्म को बनाया। लेकिन कर्म की जंजीरों से अपने आपको बाँध लिया, जकड़ लिया। भगवान अपने लिए कर्म के बन्धनों को तोड़ डालेगा, उच्छृंखल हो जाएगा, उद्दंड हो जाएगा, नियम-व्यवस्था को बिगाड़ देगा; 'अँधेर नगरी चौपट राजा' पग-पग पर फैला देगा; जो हाथ जोड़ेगा, उसको चाहे जो दे देगा और जो गालियाँ देगा, उससे सब कुछ छीन लेगा—ऐसा अँधेर जिस दिन भगवान् फैलाएगा, उस दिन भगवान, भगवान कहलाने लायक नहीं रहेगा; उसकी शक्ति में घोर परिवर्तन हो जाएगा। जहाँ तक मैं समझता हूँ, कर्म भगवान से बड़ा है। मेरी मान्यता है, भगवान कर्म की मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर सकता। जिस दिन वह इसका उल्लंघन करेगा, उस दिन उसका नाम भगवान नहीं रहेगा, 'अँधेर नगरी चौपट राजा' की उक्ति को चरितार्थ करने वाला भ्रष्टाचारी आदमी कहलाएगा।

मैं ये तो दावा नहीं कर सकता कि आपके प्रारब्ध और आपके कर्मों को दूर कर सकता हूँ; लेकिन मैं ये दावा करता हूँ कि आपकी सहायता करूँगा, एक इनसान के नाते। इनसान का क्राम है, दूसरे इन्सान की वह मदद करे। डॉक्टर का काम है, बीमार की मदद करे। रोग से चिल्ला रहा है, घायल हो गया है, चाकू लग गया है, छुरा लग गया है, नींद नहीं आती। डॉक्टर का काम है, उसको नींद की गोली दे, मॉर्फिया का इन्जेक्शन लगा दे, सुला दे, आपरेशन करे, अच्छा करने की कोशिश करे जी जान से। यह न सोचे कि पता नहीं बचेगा कि मरेगा ! उसकी उम्र खत्म हो गई है, तो वह मरेगा। उम्र बाकी है, तो जीयेगा। डॉक्टर का काम सिर्फ ये है कि मरीज की सेवा करे।

नहीं, डॉक्टर साहब ये वादा करिये कि आप अच्छा कर देंगे। नहीं, हम नहीं कर सकते। हमारी सामर्थ्य ही नहीं है। हम कैसे कर देंगे ? डॉक्टर हैं हम।

हम आपकी मदद करेंगे, इलाज करेंगे; हम आपकी भौतिक सेवा करेंगे, सहायता करेंगे। नहीं साहब, हमको कहने का मौका नहीं मिला। कोई हर्ज नहीं बेटे ! कहने का मौका नहीं मिला, तो इससे आपका समय बचा और हमारा बचा। मैं तो लोगों को कहने का मौका केवल इसलिए दिया करता हूँ कि उनका मन हलका हो जाए, बस और कोई मकसद नहीं है तो क्या आपको मालूम होता है कहने वालों का मन्तव्य ? हाँ, पूरे तरीके से मालूम होता है कि आप क्या कहना चाहते हैं और जो आप कहना चाहते हैं, उसके हिसाब से हम समझते हैं। आपको शक हो कि आप जो कहने आये थे, उसे कह न सके। गुरु जी ! हमने तो चिट्ठी नहीं लिखी, तो ला, मैं चिट्ठी लिख दूँ तेरे बदले और पढ़ ले—यही कहना चाहता-था न। बेटे ! मालूम है सब बातें। हम आपकी सेवा करेंगे, सहायता करेंगे, इतना निश्चित है। एक बात खत्म हो गई।

दूसरी बात आध्यात्मिक जीवन के सम्बन्ध में है। आध्यात्मिक जीवन के सम्बन्ध में आपकी कल्पना शायद ये रही हो कि आपकी आत्मिक प्रगति होनी चाहिए, भगवान की तरफ आपके कदम बढ़ने चाहिए। भगवान की तरफ कदम बढ़ाने के बारे में एक चीज तो मैंने बहुत पहले साफ कर दी थी और कह दिया था कि यदि आपके दिमाग में भगवान नाम के किसी व्यक्ति की कल्पना हो, तो कृपा करके छोड़ दीजिए। भगवान एक व्यक्ति है। व्यक्ति को कपड़ा पहनायेंगे, रोटी खिलायेंगे, खुशामद करेंगे, चावल चढ़ायेंगे, धूपबत्ती दिखायेंगे, आरती उतारेंगे, उनसे अपना काम बना लेंगे। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मान्यता बालकों की है, समझदारों की नहीं। ये प्रौढ़ व्यक्तियों की मान्यता नहीं है। भगवान कोई व्यक्ति नहीं—ये ध्यान रखना। सपने में जो दिखाई पड़ता है, भगवान व्यक्ति नहीं है। आप ध्यान रखिए। निकाल दीजिए इस कल्पना को। ये बच्चों के बहकाने की चीज़ है। बड़े आदमियों की मान्यता की चीज नहीं। भगवान कोई व्यक्ति नहीं, भगवान एक शक्ति हैं। व्यक्ति की तो आप खुशामद कर सकते हैं, चापलूसी कर सकते हैं, रोटी खिला सकते हैं, कपड़े पहना सकते हैं। ये चीजें व्यक्तियों पर लागू होती हैं, शक्तियों पर नहीं। शक्तियों के अपने अलग कायदे-कानून हैं। भगवान को प्रसन्न करने के लिये, भगवान को अपने वश में करने के लिये, भगवान का अनुग्रह प्राप्त करने के लिये आपको व्यक्ति के तरीके से डील नहीं करना चाहिए। ये तो प्रारम्भिक ज्ञान-कर्म है, बचपन की शिक्षाएँ हैं। बच्चों को जिस तरीके से हम 'क' माने कबूतर, 'ख' माने खरगोश, 'ग' माने गधा सिखा देते हैं, उसी तरीके से आपको भगवान, व्यक्ति बनाकर के हमने समझा दिया है। भगवान् व्यक्ति भी हो सकते हैं, अगर मनुष्य अपने महानता के लक्ष्य पर बढ़ता हुआ चला जाए, तो व्यक्ति रहते हुए भी मनुष्य भगवान् बन सकता है—ये बात हमने बतायी आपको; पर इसमें केवल शिक्षण है। असल में भगवान व्यक्ति नहीं है, हमने आपको ये निवेदन किया है और कहा है—आप उनके प्रति व्यक्ति के तरीके से डीलिंग करना बन्द करें और शक्ति के तरीके से व्यवहार करना शुरू करें। शक्ति के तरीके से शुरू करेंगे, तो आप भगवान जैसे महान् बन सकते हैं। भगवान की गरिमा आपके जीवन में प्रवेश कर सकती है और भगवान की विशेषताएँ अगर आपके भीतर पैदा हो जाएँ, तो आप उसी तरीके से बन सकते हैं, जैसे कि भगवान हैं। लकड़ी आग में डाल दी जाती है, तो लकड़ी भी आग जैसी हो जाती है। आप भगवान में अपने आपको गिरा दें। आप लकड़ी से आग हो जाएँगे। आपके अन्दर वह सारी विशेषताएँ, जो आग के भीतर होती हैं, आ जाएँगी। भगवान के समीप आने का, सम्पर्क में आने के बावत ये कहा कि वास्तव में आपको आध्यात्मिक जीवन से कोई लगाव हो, वास्तव में ही आपको भगवान की कृपा के सम्बन्ध में कोई जानकारी हो, वास्तव में ही भगवान के साथ मिलने के लिए कोई शौक और इच्छा हो, तो आप कृपा करके वो काम करना जिसमें भगवान के साथ मिलन का सुयोग-संयोग बन सके। अपने आपको भगवान के साथ जोड़ देने की कोशिश करना। भगवान को अपने साथ जोड़ना मत, भगवान के साथ स्वयं जुड़ने की कोशिश करना। गंगा को नाले में मिलाना मत, नहीं तो गंगा जल भी नाला हो जाएगा। आपने गंगा जल को नाले में डालने की कोशिश की, तो गंगा जल अपनी महत्ता खो बैठेगा और नाला हो जाएगा। भगवान को हमारी मर्जी पर चलना चाहिए—ये हिमाकत अगर आपने की, तो आपकी इच्छा चाहे पूरी हो या न हो भगवान की हैसियत दो कौड़ी की हो जाएगी। हमारा कहना मानिये। क्या कहना मानें आपका ? हमारी पड़ोसी से लड़ाई हो जाती है, आँख से वो अंधा हो जाये। अच्छा ! आपके कहने से देवी जी, पड़ोसी को अंधा कर दें। हाँ साहब, हम यही चाहते हैं। इन्होंने हमारे ऊपर मुकदमा चला दिया है, इसलिये हे देवी ! रात को इन्हें अन्धा कर दीजिये। आपका कहना माने देवी। आपका कहना जिस दिन देवी मानेगी, उस दिन आप से भी गई-बीती, आप से भी घिनौनी, आपसे भी निकम्मी, आपसे भी नीच, आप से भी पाजी, आप से भी पापी हो जाएगी वो देवी। कौन-सी वाली ? जिसको आप अपनी मर्जी पर चलाना चाहते हैं। तो मैंने ये कहा कि ये हिमाकत मत करना आइन्दा से। भगवान के साथ में ये मखौल मत कीजिए, भगवान के साथ में दिल्लगीबाजी मत कीजिए, देवी-देवताओं के साथ में ऐसी दिल्लगीबाजी मत कीजिए। संतों के साथ में ऐसी दिल्लगीबाजी मत कीजिए कि आपकी मर्जी पर वे चलें। आपकी मर्जी पर हम चलें। आपका हम कहना मानें ! आप हम पर हुक्म चलाने आये हैं ! आप हमको नसीहत देने आये हैं ! आप भगवान को नसीहत देना चाहते हैं ! अपनी मर्जी पर चलाना चाहते हैं। खबरदार ! आइन्दा ये हिमाकत की तो। ये हिमाकत बन्द करिये। ये कोई भक्ति नहीं है। ये क्या भक्ति है। हम जो चाहते हैं, हमारी मर्जी पूरी हो जाए। नहीं, आपकी कोई मर्जी नहीं, कोई भक्ति नहीं। भक्ति अगर हो, तो वहाँ से शुरू कीजिए, जहाँ अपनी मर्जी खत्म होती हो। अपनी मर्जी आप खत्म कीजिए। भगवान की मर्जी अपने ऊपर आने दीजिये। इससे कम में न भगवान की भक्ति शुरू हो सकती है, न आप भगवान के प्यारे बन सकते हैं, न भगवान के चमत्कार आप तक आ सकते हैं, न भगवान की सिद्धि का ख्वाब देख सकते हैं, न भगवान के द्वारा मिलने वाली शांति आप तक आ सकती है। भगवान कृपा करके आदमी को मुक्ति देते हैं, स्वर्ग देते हैं, सिद्धियाँ देते हैं, चमत्कार देते हैं; जो कुछ भी देते हैं, उसमें से एक के भी पाने के हकदार तब तक आप नहीं हो सकते, जब तक आप ये कोशिश न करें। गंगा जल को नाले में मिलाइये मत। गंगा जल को शराब की बोतल में डालिये मत। ये शराब हो जाएगी। नहीं, महाराज जी ! गंगा जल तो गंगा जल रहेगा। नहीं बेटे ! ये शराब हो जायेगी। शराब को डाल दें गंगा जल में। शराब को गंगा जल में बहा दें। नाले के पानी को गंगा जल में डाल दें; नाले का पानी गंगा जल हो जाएगा। गंगा जल को नाले में डालेगा, तो ये नहीं हो सकता। अपनी मर्जी भगवान पर थोपेगा ! अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ, तृष्णाएँ, आवश्यकताएँ—इनको पूरा करने की कोशिश करायेगा भगवान से, तो तेरी मर्जी पूरी नहीं हो सकती।

मैंने आपसे ये कहा है कि ये आपकी चाबी है। चाबी को अगर आप गाँठ बाँध लें, तो आपकी आध्यात्मिक प्रगति आज से ही प्रारम्भ हो जाएगी। इतनी तेजी से आपकी आध्यात्मिक प्रगति होगी कि आप हजारों वर्ष तक जप करने के बाद भी जो प्रगति नहीं पा सकते, उसे अगले ही सेकेण्ड से प्राप्त करना शुरू करेंगे; पर जब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह सिद्धान्त समझ में आ जाए, तभी ऐसा सम्भव है। ये सिद्धान्त समझ में न आए, तब आप चाहे जितने जप कर लो, चाहे जितने अनुष्ठान कर लो, चाहे जितने प्राणायाम करना, आपकी, राई की नोंक के बराबर भी आध्यात्मिक प्रगति नहीं हो सकती। ठीक है, अपना मन बहलाने के लिये, समय काटने के लिये लाभ मिलता हो, तो मिले। अगर कोई आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षा आपकी रही हो और आप वास्तव में ही भगवान से जुड़ने की कोई इच्छा रखते हों, तो ये एक उत्तर आपको दे दिया आत्मिक उन्नति के सम्बन्ध में। आप अपने आपको भगवान के सुपुर्द कर दें और उनसे पूछें आपको क्या करना चाहिए ? भगवान जो आपको आज्ञा दें, आपकी जीवात्मा आपको जो आज्ञा दे, उसी के हिसाब से चलें और करें। सुपरमैन आपके भीतर बैठा हुआ है; वही आपका भगवान है; वही आपका गुरु है। उसी को सद्गुरु कहते हैं। वह कभी-कभी पुकारता है, कभी-कभी सत्प्रेरणा देता है कि अच्छे मार्ग पर चलना चाहिए, ऊँचे कार्य करने चाहिए; पर उसकी आवाज को रोज ठुकराते रहते हैं, रोज किसी-न-किसी तरीके से कुचलते रहते हैं। उस भगवान की आवाज को सुनने की कोशिश कीजिए; उसको ग्रहण करने की कोशिश कीजिए; उस पर चलने की कोशिश कीजिए और देखिए आपका गुरु, आपको कंधे पर बैठाकर के किस तरीके से बाहर ले जाता है; आपका भगवान किस तरीके से आपको ऊँचा उठाता है, उछाल देता है। बस, आपकी आध्यात्मिक उन्नति की बात खत्म। आपकी भौतिक उन्नति की बात खत्म। हम आपकी सहायता करेंगे और आप कोशिश करना, अपनी सहायता करने की, अपनी मुसीबतों को टक्कर मारने की। अपनी हिम्मत को बढ़ाना। हिम्मत अपनी नहीं बढ़ाएँगे, पुरुषार्थ अपना नहीं बढ़ाएँगे और इसी उम्मीद पर बैठे रहेंगे कि पराई सहायता से काम चल जाएगा, तो बेटे ! चलेगा नहीं। बाहर वाले का खून जो लगा देते हैं किसी को, तब क्या होता है ? वह खून केवल तीन दिन तक रहता है, चौथे दिन वह खत्म हो जाता है तो फिर महाराजजी ! क्यों लगाते हैं खून ? इसलिये लगाते हैं कि हमारा खून पैदा करने का सिस्टम कमजोर हो जाता है। कमजोर हो जाने से खून पैदा नहीं होता। बाहर वाला खून शरीर में जाने के पश्चात् में सिस्टम में थोड़ी-सी ताकत आ जाती है, इसलिये खून पैदा करना शुरू कर देता है। बस, जब तक दो या तीन दिन में अपना शरीर अपना खून बनाना शुरू करे, तब तक बाहर का खून मदद करता है, फिर वह खत्म हो जाता है। शरीर अपने खून पर जिन्दा रहता है।

बाहर की मदद से आपके जीवन की कोई समस्या हल नहीं हो सकती तो क्या आप मदद नहीं करेंगे ? बेटे ! करेंगे जरूर। ये हमारा कर्त्तव्य है और हमारा फर्ज है। हमारे यहाँ आप मुफ्त में रोटी खायेंगे, तो आपकी जिन्दगी पार नहीं हो सकती। आप रोटी नहीं खिला देंगे ? खिला देंगे बेटे ! हम तुझे। आज खिला देंगे ? आज भी खिला देंगे। कल खिला देंगे ? कल भी खिला देंगे। महीने

भर खिला देंगे ? महीने भर भी खिला देंगे; पर तेरी जिन्दगी इससे नहीं कटेगी—ये ध्यान रखना। तेरी जिन्दगी कटेगी तब, जब अपने हाथ-पाँव की मशक्कत से रोटी कमाने लगेगा। तेरी जिन्दगी पराये दिये से नहीं कटेगी। गुरुजी ! आप वरदान दीजिये, आशीर्वाद दीजिये। बेटे ! हमारे से तुम्हारा गुजारा हमेशा नहीं हो सकता। थोड़े दिन तो हो जाएगा। उसके बाद फिर वही समस्या शुरू होगी। इसलिए अपना पुरुषार्थ जगा, हिम्मत कर सहन-शक्ति पैदा कर और अपनी महत्त्वाकांक्षा कम कर। इन चार चीजों से तेरी समस्या का समाधान होगा। आप मदद करेंगे ? बेशक हम करेंगे; लेकिन उसकी कुछ शर्तें हैं। नम्बर एक अपने भीतर से साहस जगा, उत्साह जगा। अपनी मुसीबतों को हटाने के लिये अपनी कलाइयों के बल पर, भुजाओं के बल पर हिम्मत करने के लिये पूरी-पूरी कोशिश कर, नम्बर दो और नम्बर तीन—नम्बर तीन बेटे ! यह है कि उसको सहन कर, बर्दाश्त कर। सारी इच्छाएँ पूरी नहीं हो सकतीं। थोड़ा बर्दाश्त भी करना पड़ता है, ये भी हिम्मत ले के चल। गुरु जी, मेरे जीवन में कोई कठिनाई न आए। जरूर आयेगी। रामचन्द्र जी के जीवन में आई, हनुमान जी के जीवन में आई, लक्ष्मण जी के जीवन में आई, पाण्डवों के जीवन में आई। नहीं, गुरुजी ! हमारा जीवन ऐसा बना दीजिए कि कोई कठिनाई न आये। नहीं बेटे ! ऐसा नहीं हो सकता। कठिनाइयाँ तेरे पर जरूर आयेंगी। इसलिये तैयार रहें कि तुम्हारे जीवन में असफलताएँ आएँ, तुमको कठिनाइयाँ मिलें और उनको तुम बर्दाश्त कर सको बहादुरों के तरीके से। हर आदमी के जीवन में समता भी आती है, असमता भी आती है; कठिनाइयाँ भी आती हैं, असुविधाएँ भी आती हैं। नहीं, महाराज जी ! कठिनाईयाँ हम जरा भी बर्दाश्त नहीं कर सकते। तेरे को करनी पड़ेगी। गुरुजी ! हम नहीं कर सकेंगे, हम तो सुविधा ही चाहते हैं। गायत्री माता नाराज हो गई हैं। पूजा में कोई कमी रह गई है, कठिनाई आ गई है। कठिनाई भी जीवन के लिये आवश्यक है। सुविधा भी आवश्यक है। हर आदमी की जिन्दगी में कठिनाई रहनी चाहिए। कठिनाई नहीं आयेगी, तो उसका पौरुष और पुरुषार्थ जीवन में खत्म हो जाएगा। एक और बात भी है। तूने जो ये जाल-जंजाल बुन रखा है, महत्त्वाकांक्षाओं का, उसे घटा, उसको गिरा। महत्त्वाकांक्षा गिराइये, ताकि चैन की नींद आ जाए। मुसीबतें सहन करने के लिये अपनी हिम्मत, ताकत पैदा कीजिए। भरपूर मेहनत कीजिये और हमारी सहायता की उम्मीद कीजिये, अपेक्षा कीजिए। आपकी व्यक्तिगत समस्याओं के इतने समाधान थे।

कुछ हमको भी कहना था। क्या कहना था ? हमारे गुरु ने एक काम हमसे करा लिया और मजा आ गया। वे भी धन्य हो गये और हम भी धन्य हुए। हम चाहते थे, वह काम आप कर दें; आप भी धन्य हो जाएँ, हम भी धन्य हो जाएँ। क्या करा लिया ? गुरु ने हम पर शक्तिपात किया। शक्तिपात करने का मतलब ये होता है कि उनने हमें एक ऐसी ताकत दी कि अब तक जो हमारा पुराना रवैया और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ढर्रा चला आ रहा था, उसको हम बदल सकें। हमने अपना रवैया बदल दिया। जन्म-जन्मान्तरों से जो ढर्रा चला आ रहा था, उसको परिवर्तित कर लिया। उसने ऐसी ताकत दी, जैसी मछली को मिलती है। मछली टक्कर मारती है, पानी में और उलटी धारा में चलना शुरू कर देती है। यह क्या है ? यह क्या है ? शक्तिपात है। ये हमारे गुरु का वरदान है और ये हमारी हिम्मत है और ये हमारी बहादुरी है। इसे हमारे गुरु की कृपा भी कह सकते हैं। उन्होंने हमारे वर्तमान ढर्रे को पलट देने की ताकत दी और हमने पलट दिया। सामान्य लोग जिस तरह की जिन्दगी जिया करते थे, हमने वैसी जीने से इनकार कर दिया। दूसरे आदमी जिस तरह से विचार करते थे, हमने वैसा करने से अस्वीकार कर दिया। हमने अपने दिमाग से कहा—भाईसाहब ! अब हम उस तरह के विचार नहीं करेंगे, जैसे कि सारी दुनिया वाले लोग कहते हैं। हमको अपने सिद्धान्तों के हिसाब से, आदर्शों के हिसाब से नये तरह की विचारधाराओं का गठन करना पड़ेगा। क्या विचार हमारे लिये उचित है ? क्या विचार अनुचित हैं ? क्या क्रिया हमारे लिये उचित है ? क्या अनुचित है ? लोग क्या कहते हैं ? लोगों की बातें हमने सुनना बन्द कर दिया। लोगों की बातें हम नहीं सुन सकते। लोगों के साथ में हम भलमनसाहत से पेश आएँगे। लोगों के साथ में हम बुरा व्यवहार न करेंगे। लोगों की हम सहायता करेंगे। लेकिन हम इस बात से बँधे हुए नहीं हैं कि लोगों की सलाह मानेंगे। लोगों की हम सलाह नहीं मानेंगे। बाप का कहना मानिये; कतई नहीं मानेंगे। प्रह्लाद ने बाप का कहना एकदम नहीं माना। माता जी का कहना मानिये। माता जी का कहना ! माता जी का कहना हम बिल्कुल नहीं मानेंगे। भरत जी ने अपनी माँ का कहना मानने से बिल्कुल इनकार कर दिया था, जिसका वर्णन तुलसीदास ने निम्न प्रकार किया है—

जाके प्रिय न राम वैदेही,
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही।
पिता तज्यो प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज बनितनि, भये मुद मंगलकारी।

बेटा ! शक्तिपात हमारा उस दिन हो गया और हमारा भाग्य उस दिन से खुला जिस दिन इन लोगों की बातों से इनकार कर दिया, कह दिया—भाईसाहब ! हम आपके साथ भलमनसाहत का व्यवहार करेंगे बस। खबरदार ! आपने सलाह देने की कोशिश की; सलाह मत दीजिये। आपकी सलाह कमीनों जैसी, दुष्टों जैसी, भ्रष्टों जैसी, पतितों जैसी, पाजियों जैसी है। हम आपकी सलाह नहीं मानेंगे। अपने भगवान की सलाह, अपने अन्तरात्मा की सलाह मान करके हम चलते चले आये। बस, ये हमारे सौभाग्य का उदय। चाबी लगा दी, फिर ये अपने आप चलने लगी। ये चाबी अगर आप लगाना स्वीकार करें, तो यहाँ आज का दिन हमारे और आपके सौभाग्य का दिन होगा। वसंत पंचमी हमारे सौभाग्य का दिन है। वसंत पंचमी ने हमारे जीवन में कायाकल्प कर दिया। वसंत पंचमी ने जानवर से इनसान बना दिया और इनसान से हमको भगवान बना दिया। वसंत पंचमी क्या चीज लाई थी ? एक चीज लाई थी बस—हमको अपने आप को बदल डालने की हिम्मत ! आप बदल डालने की हिम्मत इकट्ठी कर सकें, तो हमारा उद्देश्य पूरा हो जाए। क्या बदल दें ? बेटे ! बहुत-सी चीजें बदलने को हैं; पर मैं तो एक ही चीज बदलने के लिये कहता हूँ। क्या बदलने के लिये कहता हूँ। अपनी मालिकी खत्म कर दे और तू माली बन के चला जा और भी ज्यादा साफ करवाना चाहें, तो मैं चाहता ये हूँ कि आप अपने आपको इस तरीके से कायाकल्प करके जाएँ कि आपको घर वालों का पहचानना मुश्किल पड़ जाए। घर वालों में जाएँ तो सही और यों कहें आप कि हमारा तो कायाकल्प हो गया। गुरुजी ने हमारा कायाकल्प कर दिया। मुहल्ले वाले इकट्ठे हो जाएँगे, कहेंगे—देखना भाई ! ये गया था, कायाकल्प होकर के आया है। बुड्ढा गया था, जवान होकर आया। गया तो था अठासी वर्ष का और अठारह वर्ष का होके आ गया। देखना भाई ! इसकी शक्ल। सारा मुहल्ला तमाशा देखने आ जाएगा, कायाकल्प देखने इकट्ठा हो जाएगा। कायाकल्प किसे कहते हैं ? कायाकल्प उसे कहते हैं जिसमें बुड्ढा जवान हो जाता है !

मैं ऐसा कायाकल्प करना चाहता हूँ कि आपकी तबियत बदल जाए और मन बदल जाए। कैसे बदल जाये मन ? आप एक काम कर दें मेरा, तो मैं आपकी सारी जिम्मेदारियाँ उठाने को तैयार हूँ। सब जिम्मेदारियाँ, जो कुछ भी हैं। आप मेरी एक जिम्मेदारी उठा लें। क्या ? जब आप यहाँ से जाएँ, तब आप अपनी मालिकी को यहीं छोड़ जाएँ। मालिक मत बनिये। सारे-का-सारा जो प्राण खाती है, वह ये मालिकी है। आपकी मालिकी प्राण खाती है। मैं ..... मैं ..... मैं। बकरे मैं ..... मैं चिल्लाता रहता है। किसी दिन कसाई के यहाँ छुरा फिर गया, उस दिन सारी मैं ..... मैं निकल जाएगी, मेरा ..... मेरा ..... मेरा ..... निकल जाएगा। इसलिए क्या करना चाहिए ? हमारा मुनीम होके चला जा और ये कहना अपने घर वालों से कि हम गुरुजी के नौकर हैं। हैं तो हम वही; लेकिन वहाँ जाकर के मर गये। गुरुजी ने मार करके गंगा जी में बहा दिया। पहला आदमी जो गया था, वो तो मर गया। अब गुरुजी का बेटा, गुरुजी का चेला, उसी खाल में आया है, जैसे शंकराचार्य किसी और के यहाँ, राजा के खाल में बंद हो गये थे, ऐसे ही हम भी आ गए थे, ऐसे ही हम भी आ गए हैं। गुरुजी के बेटे हैं, गुरुजी के चेले हैं। अब हमारे विचार करने का तरीका, हमारे सोचने का ढंग, बिल्कुल ऐसा है, जैसे गुरुजी के बेटे का, गुरुजी के चेले का होना चाहिए। फिर आप ऐसा व्यवहार करना, जैसा हमारा व्यवहार हो सकता है, हमारे बेटे का व्यवहार हो सकता है। हर एक के साथ शराफत का व्यवहार करना। आप अपनी शरीर से कहना—भाई साहब ! वो जो पहले भरा था आपके अन्दर, कौन रहता था ? चांडाल रहता था पहले। अब उसे तो गुरुजी ने मार डाला। अब आपके शरीर में हम कोई और आ गये हैं। हम भले आदमी के घर से आए हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अब हम आपकी सेवा करेंगे। जुबान से कहना जो जीभ आपको गुमराह करती थी, वह चली गयी। अब हम आपको सरस्वती की वाणी मानेंगे। खाने-पीने के लिये पेट से कहना कि अब आपको भय करने की जरूरत नहीं। अब पेट में हम इतनी खुराक डालेंगे, जितनी कि आपको आवश्यकता है; एक रत्ती भी ज्यादा खुराक नहीं डालेंगे। जुबान से कहना—देखिये ! अब आपको हमारी हुकूमत पर चलना होगा। जो चीजें शरीर के लिये आवश्यक हैं; दवा के रूप में आप खाइये, जायके के लिये नहीं खायेंगी। जायके वाला चांडाल मर गया और एक वैद्य-चिकित्सक इसके अन्दर आ गया है; यह वही चीजें खायेगा, जो आपके लिये आवश्यक हैं। इस प्रकार सारी-की-सारी दिनचर्या शरीर के अनुकूल हो। शरीर भी एक इनसान है। शरीर को भी छुट्टी चाहिए; शरीर को भी श्रम चाहिए; शरीर को भी सफाई चाहिए। उसको ऐसे मानकर चलना कि ये हमारा गेस्ट है, किराये का मकान है। शरीर आपसे कहेगा, भाईसाहब ! वो चांडाल तो मर गया, इससे तो अच्छा हुआ। आप आ गये हैं; आइये, आप हमारे मित्र हैं। हम और आप अब मित्र हैं। आप हमारा ख्याल करेंगे, हम आपका ख्याल करेंगे।

अब हम आपको कोई कष्ट नहीं देंगे। पहले जो प्राणी था, उसको हमने शाप दिया था कि तू पचास वर्ष का होकर के मरेगा, रो-रो के मरेगा, बिलख-बिलख कर मरेगा। जितना तू हमको कष्ट दे रहा है, अभागे ! तुझे हम भी कष्ट देकर के मारेंगे। शरीर उससे कहता था—तेरे हम प्राण लेंगे, दुःख दे-दे कर मारेंगे तुझे। अब वो चांडाल मर गया। संत अब उसके भीतर बैठ के आया है। हम आपको अब कष्ट नहीं देंगे। अब हम आपको लम्बी जिन्दगी देंगे। आप दीर्घजीवी होंगे। अब आपकी इन्द्रियों की शक्ति बढ़ेगी। अब आपकी आँखों की रोशनी कम नहीं होने देंगे; क्योंकि वह पहले जो था चाण्डाल, वह हमसे हमारी इन्द्रियों की शक्ति क्षय कराता था, हमारे ब्रह्मचर्य को नष्ट कराता था।

पचास साल के हो गये, सफेद बाल हो गए। अब ये कोई समय है क्या ! ब्रह्मचर्य से रहेंगे, तो हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपकी उम्र को पच्चीस साल बढ़ा देंगे। आप जानो और अपना मन कड़ा करके रहना। आपका शरीर आपसे कहेगा—हमारा कायाकल्प हो गया, आपका भी कायाकल्प हो गया। शरीर के साथ-साथ इस मजे में जिन्दगी काटेंगे, जैसे राम और हनुमान ने काटी है, जैसे पाण्डवों में से अर्जुन ने और श्रीकृष्ण ने काटी। आपका अर्जुन और आपका कृष्ण। शरीर के हिसाब से आप बहुत खुश रहेंगे। सारी जिन्दगी भर, अगर आप मेरा कहना मान जाएँ तब। फिर आप ये कहना—हम मालिक नहीं हैं। ये शरीर गुरुजी का है, हम इसके नौकर हैं। इसलिये गुरुजी के शरीर को कष्ट नहीं दे सकते, क्योंकि हम केवल नौकर हैं। शरीर के तईं दिमाग के तईं, आप अपनी मालिकी बन्द कीजिये। दिमाग की सोच से विचार जाने दें और आप चौकीदार के तरीके से खड़े रहना जैसे सिनेमा का गेटकीपर खड़ा रहता है। टिकिट है कि नहीं ? टिकिट तो नहीं है। फिर तो जाइये। अरे ! घुस जाने दो। घुस जाने दें ! मालिक को पता पड़ गया, तो नौकरी से निकाल देगा। नौकरी से निकलवा देगा ! चुपचाप चला जा।

हिंसा के विचार, कामुकता के विचार—ये बिना टिकिट के विचार हैं। भाईसाहब टिकिट नहीं है आपके पास ? तब ये हॉल आपके लिये नहीं है। ये असेम्बली हॉल है। टिकिट दिखाइये, तब हम आपको जाने देंगे। नहीं साहब ! हम तो ऐसे ही चाकू लेके चलते हैं। तब तो असेम्बली हॉल में आप नहीं जा सकते। नहीं साहब ! हम जाना चाहते हैं। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

कुविचारों को मस्तिष्क में जाने से आप मना कर दें, कहना—ये गुरुजी का मंदिर है। इसमें हर आदमी नहीं जा सकता। बिना नहाये, बिना हाथ-पैर धोए, इसमें प्रवेश वर्जित है। आप यहाँ से जाने के पश्चात् घर वालों से ये कहना कि शक्ल तो हमारी वही है; लेकिन पहले जो इसमें चाण्डाल रहता था, वो अब मर गया। अब इसके अन्दर देवता रहता है। अपनी धर्म-पत्नी से कहना—आप निश्चिन्त रहें। आपका सम्मान हमारे हाथ में सुरक्षित है। हम आपके प्रहरी हैं; हम आपके सेवक हैं; हम आपके सहायक हैं। आपके पिता ने हमारे हाथ में आपका हाथ थमाया था और ये कहा था कि हमारी लड़की की इज्जत, हमारी लड़की का सम्मान, हमारी लड़की का सुख आपके हाथ में है। चाण्डाल ने आपके स्वास्थ्य को कैसा खराब कर दिया ! आप आई थीं, तो कमजोर थीं। हम जानते थे कि आप इस लायक नहीं हैं कि आपके बच्चे पैदा हों। हमने हर साल बच्चे पैदा किये और आपकी जान हमने निकाल ली। आप कमजोर हैं। कमर में दर्द होता है, सिर में दर्द होता है, पेट में दर्द होता है। सारी बीमारियों के लिये वो डाकू जिम्मेदार था, जो छुरे के तरीके से आप पर हमला करता था बराबर। हमले करता था, कहता था—बच्चे पैदा करेंगे। तू कहती रही—हम इस लायक नहीं हैं, हमारे शरीर में खून नहीं है। हमने कहा—हमको चाहिए बेटा। बेटा क्या करेंगे ? दो-दो बेटियाँ पैदा कर लीं। आप मरिये, आप कटिये, आप बर्बाद होइये और हमारा वंश चलाने के लिये बेटा दीजिये। वो चाण्डाल, पिशाच, हत्यारा, कसाई, डाकू को मार डाला गुरुजी ने। अब हम आपके सेवक हैं, आपके सहायक हैं। आप बच्चा पैदा करती हैं, तो ठीक है, नहीं तो कोई बात नहीं। आप के बाप ने अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह पूरी की और कन्यादान किया। कन्यादान का मतलब ये था कि जिस तरीके से बाप अपनी बेटी को दुलार देते हैं, प्यार देते हैं, आप भी हमारी जगह पर इस लड़की को दुलार देंगे, प्यार देंगे। हमने जिस तरीके से इस लड़की को नवें दर्जे तक पढ़ा दिया है, आप ज्यादा समर्थ हैं, हम पढ़े नहीं थे, तो भी हमने इसको नवें दर्जे तक पढ़ा दिया है। आप इसको अठारहवें दर्जे तक पढ़ाना; क्योंकि आप अठारह दर्जे तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पढ़े हैं। पर जो चाण्डाल था, कुछ और ही विचारता रहा। यह सोचता रहा कि तब इसके पंख निकल आयेंगे, ये काट खायेगी, घर से निकल भागेगी, नौकरी कर लेगी, घर वालों का कहना नहीं मानेगी, घर वालों की गाली नहीं खायेगी, घर वालों के जूतों के तले नहीं रहेगी, किसी और से बात करना सीख जाएगी, घूँघट में नहीं रहेगी। इसलिये चाण्डाल ने आपको बहुत परेशान किया। अब वो चाण्डाल मर गया और एक संत इस शरीर में बैठ करके आया है। अब वह आपके साथ भलमनसाहत का व्यवहार करेगा। आप अपने कर्त्तव्यों को भूलती हों, तो भूल जाएँ भले ही हम अपने कर्त्तव्यों को जारी रखेंगे। गुरुजी ने कहा था कि अपने कर्त्तव्यों का एकांगी पालन किया जा सकता है। अब तक के तईं हम आपको एकांगी पालन करना सिखाते रहे। देवता को हम प्रणाम करते हैं, देवता को हम नमस्कार करते हैं, देवता को हम अक्षत चढ़ाते हैं, देवता के लिये हम वस्त्र चढ़ाते हैं। हम आपको सिखाते हैं कि एकांगी पालन किया जा सकता है। देवता ने कभी हमको नहीं कहा। सौ बार हमने रोज हाथ जोड़े, कभी हाथ उसने नहीं जोड़े। आपकी बात आपके जिम्मे, हमारी बात हमारे जिम्मे। हमने हमेशा मस्तक झुकाया; पर हमारे देवता ने कभी मस्तक नहीं झुकाया। हमने सीख लिया। आपकी मर्जी, जो कुछ भी आप करें। हम अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे।

आपकी स्त्री क्या करती है, क्या नहीं करती—आपको यह देखने की जरूरत नहीं है। कोशिश कीजिये, समझाइये; सम्भव है आपका कहना मान जाए। जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार न जाने आपके कैसे हैं ? आप अपना फर्ज पूरा कीजिये, कर्त्तव्य पूरा कीजिये। अपना कर्त्तव्य पूरा करते चले जाएँगे, तो मैं ये कहता हूँ देखना आपके घर में चैन की गंगा-यमुना बहती है कि नहीं बहती। आपकी यही शिकायत है ? हमारी औरत कहना नहीं मानती। आप बदलते जाइये अपने आपको, फिर मैं देखूँगा कि आपकी औरत बदलती है कि नहीं। आपकी औरत बदल जाएगी। आप मीठे वचन बोलना, सम्मान से भरे हुए शब्द बोलना, प्रेम से भरे हुए वचन बोलना। गलती करती है, समझाना जरूर; लेकिन प्यार भरे हुए शब्दों में समझाना, हँसते हुए समझाना, मजाक में समझाना और अगर नहीं सुधर सकती, तो आप उसकी सहायता करना। आपको झाड़ू-बर्तन करना अच्छा नहीं लगता ? आइये, हम और आप दोनों लगायेंगे आज। आपको कपड़े धोना अच्छा नहीं लगता ? आइये, हम साथ-साथ धोयेंगे। अच्छा, तुम साबुन लगाती जाओ, मैं धोकर के साफ करता हूँ।

हमारी उपासनाएँ जमीन पर चलने वालों की होनी चाहिए, ख्वाब देखने वालों की नहीं। बैकुंठ में जाएँगे। हाँ-हाँ जरूर बैकुंठ में जाएँगे आप। आप मरेंगे और मरने के पन्द्रह मिनट बाद परलोक में चले जाएँगे। आपके ये जिन्दगी भर के संस्कार हैं, यही तो पन्द्रह मिनट बाद रहेंगे। पन्द्रह मिनट में क्या हो जाएगा ? इस जन्म में तो आप नर्क की जिन्दगी जी रहे हैं। मरने के बाद स्वर्ग में जाएँगे आप ! बिल्कुल नहीं। जैसे अब हैं, बिल्कुल आप की स्थिति यही रहेगी। कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। शरीर चला जाए, तो क्या हुआ ? आपका ईमान तो वही है ? संस्कार तो वही है ?

तो ये कह रहा था मैं आपसे, स्वर्गलोक जाने की अपेक्षा अच्छा होता इसी जन्म में आप स्वर्ग बनाने की कोशिश करते। कैसे स्वर्ग बनेगा ? हम और आप दो मिलकर के बना सकते हैं। हमारे यहाँ बन रहा है पार्क, दो आदमी बना रहे हैं। एक तो मिस्त्री काम करता है और एक मजदूर काम करता है। अकेले में एक बार मिस्त्री से कहा—तू ही बना ले। वाह ! हम तो नहीं बना सकते। एक आदमी और दीजिए तो बनाएँगे, अकेले तो नहीं बना सकते। दो मिल करके बना सकते हैं। आप और हम दो मिल करके आपकी बेहतरीन जिन्दगी बना सकते हैं, दोनों के सहयोग से। कैसे बन सकती है ? एक ही तरीका है बेटे आप हमारे जिम्मे अपना अहं छोड़ दो, बस ! सामान हम आपको सब दे देंगे। आपकी औरत को हम नहीं छुयेंगे, आपके पैसे को, आपके शरीर को हम नहीं छुयेंगे। किसी चीज को नहीं छुयेंगे; लेकिन हर चीज को आप ये कह दीजिए कि वह हमारी नहीं है। बेटे ! हम तुझे सिखायेंगे कि अच्छा इस्तेमाल कैसे हो सकता है ? मालिकी की वजह से हर चीज का गलत इस्तेमाल करता है। शरीर का तू गलत इस्तेमाल करता है; दिमाग का तू गलत इस्तेमाल करता है; पैसे का तू गलत इस्तेमाल करता है; औरत का तू गलत इस्तेमाल करता है; बच्चों का तू गलत इस्तेमाल करता है। गलत इस्तेमाल करने से तू बाज आ। आपको हम कर देंगे दान तो हमारा छीन लेंगे। बेटे ! हम क्या छीनेंगे ! अपना था, तो हम दूसरे को दे आये। तेरे और छीन के ले जाएँगे ! क्या करेंगे उसका ? नहीं, महाराज जी ! फिर हम आपको दान कर देंगे। नहीं, बेटे ! तू हमको मत कर दान। दान से क्या मतलब है ? दान से मतलब ये है कि हमारा कारिन्दा होके काम कर, जैसे बताएँ, वैसे कर। अपनी रीति-नीति, गतिविधियाँ बदल दे। ये तेरी अक्ल जो है, बड़ी खराब है। इतनी खराब अक्ल है कि अगर इस अक्ल को बदल दिया जाए, तो जो जिन्दगी चली गई है, सो चली गई, बची हुई जिन्दगी जो कुछ भी शेष है तेरी, अगर अक्ल को भलेमानसों के तरीके से खर्च कर सके, तो परलोक का तो वायदा मैं नहीं कर सकता, मैं तो इसी जन्म का वायदा कर सकता हूँ; इसी जन्म में मैं तेरा कायाकल्प करके दिखा दूँगा। तेरे असहयोगी, तेरी निन्दा करने वाले, तेरी बुराई करने वाले तेरे चरणों को चूमते दिखाई पड़ेंगे। तेरे घर में कलह और शोर पड़ा हुआ है—ये अलग तरीके से जाते हुए दिखाई पड़ेंगे। तेरे जीवन पर पाप के और अनाचार के जो कलंक लगे हुए हैं, तेरे चेहरे पर जो खीझ—हर समय खीझा हुआ चेहरा, मैं कहता हूँ खीझ को छुड़ाकर मुसकान दे सकता हूँ। हर समय तेरे चेहरे पर गुलाब के फूल के तरीके से

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुसकान खिलती हुई दिखाई पड़ सकती है। मैं चाहता था, आप कायाकल्प करके चले जाएँ। मैं चाहता था, आपका मन आपको जो जीवन, व्यक्तित्व, चारों ओर बन्धनों में जकड़ा हुआ है—लोभ, मोह, काम, क्रोध में उलझा हुआ है, उससे मुक्त हो। सबेरे जो आपको ध्यान कराता हूँ, उसको समाधि के अर्थ में कहता हूँ। वासना, तृष्णा, अहंता, लिप्सा—चार बन्धन हैं आदमियों के। इन्हीं ने जकड़ रखा है। मुक्ति पाने के लिये कुछ नहीं करना पड़ता। मुक्ति काहे से मिलेगी ? मुक्ति तो बेटे ! मिली-मिलाई है। इन चारों को तू काट दे, मुक्ति मिल जाएगी, शीघ्र मिल जाएगी। मरने के बाद ! मरने के बाद की मैं नहीं कहता हूँ अब। मरने के बाद न हुआ हो तो मरने के बाद बैकुण्ठ मिलेगा। न मिला तो ! मरने के बाद बैकुंठ होता है और न हुआ तो ! जैसे मुसलमान कहते हैं सात आसमान होते हैं और खुदावन्द करीम बैठा है। खुदावन्द करीम न मिला तो ! तेरा जो स्वर्ग है, न मिला तो !

मैं कहता हूँ अपना वर्तमान जीवन, वर्तमान व्यक्तित्व क्या विकसित किया जा सकता है ? हाँ हो सकता है। हमारे गुरु ने शक्तिपात के नाम पर यही शिक्षण हम को दिया था और इसी आधार पर अपने आपको बदल देने की हिम्मत के आधार पर अपना हेर-फेर करते चले आए और इसी शरीर में—इसी चमड़े के शरीर में जिसमें कि आप रहते हैं, उसी में, हम भी इसी चमड़े के शरीर में रहते हैं; लेकिन हम इसी चमड़े के शरीर में देवता के तरीके से रहते हैं, सन्त के तरीके से रहते हैं, ऋषि के तरीके से रहते हैं। और आप ? भ्रष्ट के तरीके से रहते हैं, घिनौने के तरीके से रहते हैं, अशान्त के तरीके से रहते हैं। आइये बदल दें अपने आपको। आप अपने आपको बदल सकते हैं। आप अपने आपको बदल सकते हों, तो समझना चाहिए गुरु जी ने हमको कोई शक्ति दे दी, सामर्थ्य दे दी। अगर आपके भीतर बदलाव सम्भव न हुआ, तो समझना आप और हम—दो में से कोई एक निकम्मा जरूर था। दरवाजे का किवाड़ अगर आप न खोलेंगे, तो सूरज आप के कमरे में नहीं आ सकेगा। आप दरवाजे न खोलेंगे, तो हवा आप के कमरे में न आ सकेगी। मैं चाहता था कि आप दरवाजा खोल देते, जैसा कि मैंने अपने गुरु के लिये खोल दिया। आप अपना दरवाजा खोल देते, जैसा कि विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस के लिये खोल दिया। मैं चाहता था कि आप अपना मन खोल देते शिवाजी के तरीके से; उन्होंने समर्थ गुरु रामदास को अपने जीवन में काम करने के लिये, प्रवेश करने के लिये मौका दे दिया। दीजिये न मौका उनको। आप मौका नहीं दे सकते ? कृपा कीजिये। उनको मौका दीजिये। हम आपके भीतर प्रवेश कर सकें। कान तक मत सुनिये हमारी आवाज। कान से हम गुरुजी की आवाज सुनते हैं। कान पर लानत ! कान सुनते-सुनते पक गए आपके। अखण्ड कीर्तन सुनते-सुनते, रामायण सुनते-सुनते, भागवत् सुनते-सुनते, कथा सुनते-सुनते। इनका कोई फायदा नहीं हुआ। कभी कोई फायदा नहीं हुआ। कभी कोई फायदा नहीं हो सकता। भीतर घुसने दीजिए। कान तक घुसने देंगे ! कान तक मत घुसने दीजिये। उनको भीतर तक प्रवेश करने दीजिए। हमने अपने गुरु को भीतर तक प्रवेश करने दिया। नेहरू ने गाँधी को अपने जीवन में प्रवेश करने दिया, सेंट पाल ने ईसा को अपने जीवन में प्रवेश करने दिया। आप प्रवेश करने दीजिये। आप मौका दीजिए कि हम आपके अन्तःकरण में प्रवेश कर सकें; आपके जीवन की गतिविधियों को निर्धारण करने में आपकी मदद कर सकें; आपकी भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं के स्थान पर आपकी आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाएँ जगा सकें। आपकी भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ इस कदर बढ़ी-चढ़ी हैं कि आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के लिये न आपके पास विचार बचता है, न आपके पास समय बचता है, न आपके पास मन बचता है, न आपके पास पैसा बचता है। कुछ नहीं बचता। ये आपकी सौ फीसदी क्षमताएँ खा जाती हैं। ये भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ हैं। मौका दीजिए। आप अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को कहें—बहिन जी ! आप जरा-सा अपना मुँह उधर कर लीजिये। आप थोड़ा मौका दीजिए—सिद्धान्तों को मौका दीजिए, भगवान् को मौका दीजिए। इनको घुसने दीजिए जीवन में। आप भगवान को घुसने के लिये एक सेकेण्ड का समय नहीं देना चाहते ! आपके मन में तो एक रत्ती की नोंक की गुंजायश नहीं है। नहीं, हम भजन करते हैं। कहाँ करता है तू भजन ? एक घण्टा भजन करता हूँ। अभागे ! तू एक सेकेण्ड भी भजन नहीं करता।

भजन उसको कहते हैं जो सिद्धान्तों को जीवन में उतारने के लिये किया जाता है। जो भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं के लिये किया जाता है। भजन, वह भजन नहीं है। पैसा कमाने के लिये, चोरी-चालाकी करने के लिये हजार तरीके हैं, जैसे—हम तिकड़में भिड़ाते हैं। तिकड़म है ये भी। चौबीस हजार जप कर रहा था। काहे के लिये कर रहा था, पहले ये बता। मेरी नौकरी में तरक्की हो जाए, इसलिये कर रहा था। बेटे ! ये जितना देर का भजन है, वह और चाहे अपने हेड क्लर्क को खुशामद करने में लगा दे—दोनों एक ही हैं। इसका भगवान से कोई ताल्लुक नहीं है। भगवान के लिये ताल्लुक होता तब, जब अपने सिद्धान्तों के लिये, आदर्शों के लिये, जीवन में पवित्रता का समावेश करने के लिये, जीवन में सज्जनता का विकास करने के लिये भजन किया जाता है। अगर उस उद्देश्य से करते तो, मैं तो भी मानता कि आपने भजन किया है। मेरा कहना है आपने अब तक एक सेकेण्ड भी भजन नहीं किया। अब कृपा करके भजन शुरू कीजिए सिद्धान्तों के लिये, आदर्शों के लिये, जीवन को महान बनाने के लिये, जीवन के अन्दर उत्कृष्ट तत्त्वों का समावेश करने के लिये आप भजन करना। आप देखेंगे आपके भजन में मस्ती आएगी, आपके भजन में खुशी आएगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आपके भजन में जो आपको ये शिकायत थी, मन नहीं लगता, आपका मन लगेगा। आप प्रत्येक क्रिया-कृत्य के बारे में हेर-फेर करें। खान-पान के सम्बन्ध में, टाइम-टेबल के सम्बन्ध में, रहन-सहन के सम्बन्ध में, महत्त्वाकांक्षाओं के सम्बन्ध में, बाहरी जीवन की स्कीमों के सम्बन्ध में, मालिकी और गुलामी के सम्बन्ध में आप निश्चय करके जाइये। अगर आपने इतनी हिम्मत पैदा कर ली, तो मैं समझूँगा ये शिविर सार्थक हो गया, आपका आना सार्थक हो गया और मेरा बुलाना सार्थक हो गया। मौका दीजिये, ताकि हम और आप मिलजुल कर मित्र के तरीके से निश्चित काम कर सकें। अब तक अगर आपका और हमारा गुरु-शिष्य का रिश्ता रहा हो, तो मैं चाहता हूँ अब उसको बदल दूँ। इसमें मुझे बड़ी गन्ध आती है, गुरु-शिष्य की परम्परा में गुरु-शिष्य की परम्परा भी होती थी; पर आज वो रही नहीं। हम और हमारे गुरु, वो गुरु और हम शिष्य हैं। गुरु को घमण्ड है कि हमको ऐसा शिष्य मिला और हमको घमण्ड है ऐसा गुरु मिला। रामकृष्ण परमहंस को घमण्ड था कि विवेकानन्द हमको शिष्य मिला। विवेकानन्द को घमण्ड था, ऐसा गुरु मिला। न आपको हमारे ऊपर घमण्ड है, न हमको आपके ऊपर घमण्ड है। आपको हमसे शिकायत है। पहली बार भी गुरुजी हम आए थे और आपको चिट्ठी लिखकर दे गए थे और आप को तीन कामना बता गए थे। देखिये एक पूरी हो गई, दो नहीं हुई हैं। आप तो ध्यान नहीं देते, आप तो बहका देते हैं, आप तो झूठ बोलते हैं। आपको शिकायत है कि नहीं ? आपको बराबर शिकायत है और हमको हजार गुनी शिकायत है। हमको तुझसे हजार गुनी शिकायत है। तैंने अपने समय का एक हिस्सा दिया ? तैंने अपने मन का एक हिस्सा दिया ? बहकाता है हमको ! शाखा ठण्डी हो गई है और वहाँ कोई आता नहीं है . . . . . । बेकार की बातें बकता है और उल्लू हमको बनाता है। तू करता है कि नहीं करता ? ये बता ! नहीं, महाराज जी, हम तो नहीं करते, तो शाखा वाले ठण्डे हो गए और शाखा वाले गरम हो गए। बेकार की जानकारी छोड़ता है, अपनी नहीं कहता।

मित्रो ! हमको विश्वास है, हमारे गुरु ने हमको दिया है, किसी उद्देश्य विशेष के लिये दिया है। हम आपको देना चाहते हैं और उद्देश्य विशेष के लिये देना चाहते हैं, आपकी लक्जरी के लिये नहीं, आपकी तृष्णाओं की आग में अपना तप, भट्टी के तरीके से जलाने के लिये तैयार नहीं। नहीं, हमारी तृष्णाओं की आग में अपने तप की आहुति दीजिए। नहीं बेटे ! हमको अच्छे काम के लिये देने दीजिए। दुनिया में अच्छाइयाँ हमको पुकारती हैं, सहिष्णुताएँ हमको पुकारती हैं, शालीनताएँ हमको पुकारती हैं। सहिष्णुता और शालीनता के लिये हमको अपने तप की आहुति देनी चाहिए। आप अपनी तृष्णाओं के लिये आहुति माँगते हैं हमारी। गलती मत कीजिये। ब्राह्मण का तप आप अपनी वासनाओं के लिये मत माँगिये, अच्छे उद्देश्य के लिये माँगिये। हम जी खोल के देंगे। हमारे गुरु ने जी खोल के हमको दिया है और हम आपको जी खोल के देने को तैयार हैं।

मित्रो ! अन्धे और पंगे का हिसाब बना लीजिये। मित्र उसे कहते हैं, जैसे कि राम और हनुमान—दोनों मित्र थे। हनुमान ने राम को निहालकर दिया, राम ने हनुमान को निहाल कर दिया। अर्जुन को कृष्ण ने निहाल कर दिया और कृष्ण को अर्जुन ने निहाल कर दिया। आइये, हम और आप मित्र के तरीके से चलें। अन्धे और पंगे के तरीके से चलें। अन्धा और पंगा . . . । हमारा गुरु पंगा है, चल नहीं सकता। क्यों नहीं चल सकता ? उसने अपने आपको सीमाबद्ध कर दिया है। एक लेबोरेटरी—प्रयोगशाला में बैठा प्रयोग करता है। और हम ! हम अन्धे हैं। हमारे पास ज्ञान नहीं है। उसका ज्ञान और हमारा बल—दोनों को मिलाकर के हम काम करते हैं। आइये, हम और आप मिलें, दो मित्रों के तरीके से काम करें। गुरु-शिष्य के तरीके से नहीं। गुरु-शिष्य की बातें बहुत बड़ी हैं, बहुत ऊँची हैं। पहले हम और आप मित्र बनना सीखें। मित्र बनना सीखें और मित्रता के जो आधार होते हैं—'गिव एण्ड टेक', औरत मर्द को दिया करती है और मर्द औरत को देता है—'गिव एण्ड टेक'। आइये, हम और आप मिलें। 'गिव एण्ड टेक' के आधार पर हम मित्रता कायम करें। अभी तो हम आदान-प्रदान का रास्ता चलाएँ, बाद में समर्पण का रास्ता चलाएँगे। आइये, हम और आप मिलकर काम करें—दो प्राणों के तरीके से आप समाज को ऊँचा उठाने के लिये श्रम कीजिये, हम आपको ऊँचा उठाने के लिये श्रम करेंगे। हमने देश, धर्म और संस्कृति को ऊँचा उठाने के लिये श्रम किया है और हमारे गुरु ने हमारा व्यक्तित्व, हमारा ज्ञान, हमारी बुद्धि, हमारा प्रभाव, हमारी सम्प्रभता बढ़ाने में हमारी मदद की। हमने गुरु का उद्देश्य पूरा करने के लिये मदद की है। बादलों ने जमीन को ठण्डा किया है। समुद्र ने बादलों को पूरा किया है। आइये, बरसिये जमीन पर। हम आपके पानी में कमी नहीं पड़ने देंगे। हम समुद्र के तरीके से आपको पानी फेंकेंगे। आप अपने पानी को जमीन पर बरसाने की कोशिश कीजिये।

इन शब्दों के साथ मैं बात समाप्त करता हूँ। मैं चाहता हूँ आप यहाँ से खाली हाथ न जाएँ। जो मैंने आपके लिये जीवात्मा के भीतर कहने की कोशिश की है, उसको आप समझें, उसको आप मनन करें, चिंतन करें, विचार करें और अगर आपके लिये सम्भव हो सके, तो यहाँ से जाने के पश्चात् जीवन की नई गति और जीवन की नई गतिविधियों को क्रियान्वित करने के लिये अपने भीतर साहस और हिम्मत तैयार करें। इसी साहस का नाम है—प्राण; इसी का नाम है—संकल्प शक्ति; इसी का नाम है—हिम्मत; इसी का नाम है—बहादुरी; इसी का नाम है—अध्यात्म। हम ऊँचे सिद्धान्तों को अपने व्यावहारिक जीवन में क्रियान्वित करने के लिये साहस इकट्ठा कर सकें। तभी सही अर्थों में अध्यात्मवादी कहला सकेंगे। बस, हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आन्तरिक अमीरी ही वास्तविक सम्पन्नता है

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

कल्प-साधना सत्र समाप्त होते-होते आज आप विदा होने जा रहे हैं। आप विदा होके जाइये और हमारी शुभकामना लेते जाइये, हमारा वरदान लेते जाइये, हमारा आशीर्वाद लेते जाइये; इसको ठुकराइये मत। देवताओं के वरदान हमेशा सत्प्रवृत्तियों के रूप में, सत्प्रेरणा के रूप में मिलेंगे। देवताओं ने कभी किसी आदमी को पोटले बाँध के रुपयों के बण्डल नहीं दिये; न किसी को बेटी-बेटे दिये हैं; न मुकदमे में जीत कराई है; न किसी को नौकरी में उन्नति कराई है। ये काम अपने पुरुषार्थ का है; देवताओं का नहीं है, संतों-ऋषियों का नहीं है। संत और ऋषि जो अनुदान और वरदान देते हैं, उनसे आदमी के अन्तराल में उच्चस्तरीय प्रेरणा उत्पन्न होती है बस, और कुछ नहीं होता।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द के अन्तराल में प्रेरणा भर दी थी। प्रेरणाएँ भर दीं, तो फिर उन्होंने अपने जीवन का स्वरूप बदल दिया और क्या-से-क्या हो गए। अस्पताल बनाने के लिए और बेलूर मठ बनाने के लिए एक करोड़ रुपया दिया था—ये बेकार बातें कहते रहते हैं। ये कोई सन्तों से माँगने की चीजें हैं। संत कहीं दिया करते हैं क्या ? हमारे गुरु ने क्या दिया हमको बताइये ? कोई रुपयों का बण्डल दिया है क्या ? हमको पोटले भर के दिये हैं क्या ? हमको औलादें दी हैं क्या ? नहीं, कभी किसी ने नहीं दिया। संत, ऋषि और देवता जो किसी आदमी को कुछ दे सकते हैं और देना चाहिए, वह केवल प्रेरणा होती है, दृष्टिकोण होता है, सोचने के तरीके होते हैं। हमारा महान् गुरु जब हमसे मिला, उसने हमारा चिन्तन बदल दिया, हमारी प्रेरणाएँ बदल दीं, हमारी दिशा धाराएँ बदल दीं और सोचने के तरीके बदल दिये तथा बदलने के लिये प्रेरणाएँ दीं। बदला तो हमने ही है, मेहनत तो हमने की है और हम मेहनत न किए होते, तो उसकी प्रेरणा की क्या कीमत थी ! अगर हम उसका सहयोग न करते तब ? रामकृष्ण परमहंस की आज्ञा न मानते विवेकानन्द, तो क्या वे विवेकानन्द बनते ? आशीर्वाद लेकर घर बैठ जाते। आपको यहाँ से जाने के बाद में बदलना है। हम आपको प्रेरणा देंगे। हमारा आशीर्वाद केवल प्रेरणा के रूप में हो सकता है। इसी तरीके से हमारे गुरु का आशीर्वाद भी प्रेरणा के रूप में था। मालदारी के रूप में किसी का आशीर्वाद न कभी मिला है और न कभी मिलने की आप उम्मीद कीजिये हमसे। हम आपको मालदार बनाएँगे, सेठ बनाएँगे—आप बेकार की बातें क्यों कहते हैं ? जो हम नहीं कर सकते, उसके लिये क्यों दबाव डालते हैं ? भगवान मालदार नहीं बनाते; मालदारों को गरीब बना देते हैं। आपने देखे हैं हरिश्चन्द्र से लेकर के जितने भी आदमी भगवान की भक्ति में आए, कोई मालदार बना है क्या ? मनोकामना पूरी कराई—ऐसा लगा है क्या ? आप उलटी-उलटी बातें मत विचार कीजिये, आप उल्टे को उलट दीजिये और सीधे उठ जाइये। सीधे होके जाइये। यहाँ से जब जाएँ, तो क्या होते हुए जाएँ ? आपका अन्तराल बदला हुआ हरेक को दिखाई पड़े। जो भी आये, हरेक को बदला दिखाई पड़े। आपकी पत्नी कहे—ये वह आदमी नहीं है। शक्ल हमारे पति जैसी अवश्य मालूम पड़ती है; पर आदमी वह नहीं है। पहले ये कड़वे वचन बोलते थे, पहले ये हर वक्त रौब गालिब करते थे, हर वक्त दबाव डालते थे। अब ये दबाव नहीं डालते, बल्कि ये मान के चलते हैं कि भगवान की ये बेटी हमारे घर में लाकर के रखी गई है और उसकी हिफाजत करना, उसको उन्नतिशील बनाना, उसको सम्मान प्रदान करना हमारा काम है।

आप अधिकार को त्याग दीजिये, आप कर्त्तव्यों को ग्रहण कर लीजिये। आप हरेक के प्रति कर्त्तव्यों को ग्रहण कीजिये। आपका धर्मपत्नी के प्रति क्या कर्त्तव्य है ? आपका शरीर के प्रति क्या कर्त्तव्य है ? आपका अपनी मनःसम्पदा के प्रति क्या कर्त्तव्य है ? आपका अपने बच्चों के प्रति क्या कर्त्तव्य है ? आपको जो धन मिला हुआ है, साधन मिले हुए हैं, उसके प्रति क्या कर्त्तव्य है ? आपका अपने समाज के प्रति क्या कर्त्तव्य है ? आप केवल कर्त्तव्यों पर विचार करें और अधिकारों की उपेक्षा करने लगें, तो मैं ये कहूँगा कि सच्चे अर्थों में आप कायाकल्प के अधिकारी हुए और हमेशा कर्त्तव्यों को भुलाते रहेंगे और अधिकारों की माँग करते रहोगे, तो क्या कहा जाएगा ? आपसे ये कहा जाएगा, आप घिनौनी, नारकीय मनःस्थिति में पड़े हुए हैं, जिसके फलस्वरूप आदमी को अनेक विपन्नताओं का शिकार होना पड़ता है और परिस्थितियाँ जिसकी हमेशा उल्टी बनी रहती हैं। आप उसी में बने रहें, तब तो बेकार हो गया न ! आप इसे बदलिये, कृपा करके बदलिये। अपनी मनःस्थिति को बदलिये। आप कर्त्तव्यों को ईमानदारों की तरह पालन कीजिये और अपने अधिकारों से पीछे हट जाइये। आप अब तक भिखारी के रूप में रहे हैं, अभावग्रस्त के रूप में रहे हैं; हम अभावग्रस्त हैं, हमारे पास कमियाँ हैं, कमियाँ हैं, कमियाँ हैं · · · । आप ने कमियों की लिस्ट बनाई है और यहाँ-वहाँ पल्ला पसारा है। कमियों का अनुभव करना और जहाँ-तहाँ जिस किसी के सामने पल्ला पसारना—यही तो नीति रही है। कृपा करके नीति बदल दीजिये।

तब क्या काम करें ? आप ये विचार कीजिये कि आपको जो कुछ मिला हुआ है, वह कितना ज्यादा है ? भगवान ने कितना ज्यादा आपको दिया है। जो किसी प्राणी को नहीं मिला है, वह सिर्फ आप को मिला हुआ है। आप इनसानी जिन्दगी की कीमत समझते हैं क्या ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं समझते ? समझिये जरा। जो सृष्टि के किसी प्राणी को नहीं मिला है, वह आपको मिला है। आपकी जैसी वाणी, आपके जैसा मस्तिष्क, आपकी जैसी जीवन की सुनिश्चितता, आपके जैसा गृहस्थ क्या सारे विश्व भर के किसी और प्राणी को मिला हुआ है ? आप क्यों प्रसन्न नहीं हो सकते ? आप क्यों अपने आप को मालदार अनुभव नहीं कर सकते ? क्यों आप सम्पन्न अनुभव नहीं कर सकते ? आप गरीबी को छोड़ दीजिये और अमीरी यहाँ से लेकर जाइये, बदल जाइये। आप गरीबी की बात छोड़ दीजिये। उस लिस्ट को फाड़ के फेंक दीजिये, जिसमें आपने ऐसी बातों की सूची बना रखी है, जो हमारे पास नहीं है, नहीं है, नहीं है ..... । आप 'नहीं वाली' लिस्ट को फेंक दीजिये। आप ये सोच के चलिये—आपके पास है क्या ? आपके पास श्रम है, आपके पास जीवन है, आपके पास मनुष्य की काया है, आपके पास गृहस्थ है, आपके पास परिस्थितियाँ हैं। आपके पास जीविका के माध्यम हैं। आपके पास क्या कमी है ? जो है, उस पर संतोष व्यक्त कीजिये। आप उनसे प्रसन्न रहिये। आप उन पर गर्व कीजिये और याचना के स्थान पर देने की बात विचार कीजिये; याचक मत बनिये। भिखारी से बुरा आदमी दुनिया में क्या हो सकता है ! आप बीबी से मुसकान माँगते हैं ? आप अपनी मुसकान बीबी को क्यों नहीं दे सकते ? आप बच्चों से वंश चलाने की आशा करते हैं ? आप बच्चों को वंश चलाने योग्य क्यों नहीं बना देते ? आप कीजिये। आप याचक मत बनिये। देने के लिये बहुत है, आपके पास। ऋषियों के पास बहुत था; पैसा नहीं था; पैसे में आग लगा दीजिये। पैसा तो मरने ही वाला है। पैसा तो मरेगा ही। पैसे को तो मरना ही चाहिए। पहले भी पैसा नहीं था और अभी भी पैसा नहीं रहेगा। आदमी की असली दौलत उसका श्रम है, समय है। हजारी किसान का नाम सुना है न आपने ? आपने उस पिसनहारी का नाम सुना है न ? जिसने पिसाई में से दो पैसे रोज बचा कर के एक ऐसा पक्का कुआँ बनवा दिया था, जिसमें कि पानी अमृत के बराबर है और लोग अभी भी उसका पानी पीकर के ये अनुभव करते हैं कि हमारे मर्ज अच्छे हो जाएँगे, हमको शान्ति मिलेगी। आप ऐसा नहीं कर सकते ? दे नहीं सकते ? आप मीठे वचन नहीं बोल सकते ? आप दूसरों को प्रोत्साहन नहीं दे सकते ? आप क्या अच्छे परामर्श देने की स्थिति में नहीं हैं ? क्या आप मुसकान नहीं बाँट सकते ? क्या आप मुहब्बत नहीं बाँट सकते ? ये चीजें कम हैं क्या ? आप देने वाले बन जाइये। आप सेवा दीजिये, सहानुभूति दीजिये, स्नेह दीजिये, फिर देखिये आप जो चीज बाँटते हैं, वह ब्याज समेत कितनी ज्यादा उठ करके ऊँची हो जाती है।

आप यहाँ से जाइये और यहीं अपनी गरीबी को छोड़ जाइये; जिस कमरे में आये हैं, उसी में गरीबी छोड़ दीजिये; अभाव की सूची वहीं फाड़ के फेंक दें। आपके पास क्या है—इस पर खुशी मनाना सीख के जाइये और आप एक नई लिस्ट ये बना के जाइये कि माँगना क्या ! देना—माँगना क्या ! देना। किसको आप क्या देंगे ? मित्रो को क्या देंगे ? दोस्तों को क्या देंगे ? धन ? नहीं। अपनी भावनाएँ, विचारणाएँ और ऊँचा उछाल देने वाली सलाहें। सलाहें क्या कम होती हैं ? प्रोत्साहन की कीमत नहीं समझते आप ? परामर्शों की कीमत नहीं समझते ? सलाह-मशवरे की कीमत नहीं समझते ? आप बहुत कुछ दे सकते हैं, वही दीजिये।

यहाँ से जाने के बाद में आप अपनी खीझ को प्रसन्नता में बदल दीजिये। क्यों ? कल कहा था न हमने—आप अपने कर्त्तव्य को जब पर्याप्त मान लें, आप ये सोच लेंगे हमने अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया और फर्ज पूरे कर लिये, तो आपको खुश रहने का पूरा हक है। आपने कर्त्तव्य पूरा कर दिया और क्या कर सकते थे आप ? जो कर सकते थे, आपने पूरा कर लिया। आपको सफलता मिल गई। आप पूरे तरीके से सफल अनुभव कीजिये। अगर आप अपने फर्ज और ड्यूटी अंजाम देते रहते हैं, तब आप मुसकरा सकते हैं और फर्जों (कामों) पर केन्द्रित रहेंगे, तब और परिस्थितियों पर केन्द्रित रहेंगे। ये प्रतिक्रिया हुई—उसने हमारे साथ ये नहीं किया, हमारी ऐसी परिस्थिति नहीं बनी, तो आप खीझते रहेंगे, खीझते रहेंगे और आप भूत की जिन्दगी जियेंगे। भूत जलते रहते हैं। और जलाते रहते हैं—मैंने सुना है। भूत डरते रहते हैं और डराते रहते हैं—मैंने सुना है। भूत रोते रहते हैं और रुलाते रहते हैं—मैंने सुना है। मालूम नहीं, भूत की क्या स्थिति है; पर मैं आप से कहता हूँ आप भूत के तरीके से क्यों जिन्दगी जिएँ ? देवता के तरीके से क्यों नहीं जिएँ ? देवता के तरीके से जिएँ। आप का पुराना ढर्रा बेहूदगियों से भरा पड़ा है। आप ऐसा करें, यहाँ से जाने के बाद में अपनी नम्रता ! अपनी नम्रता को प्रदर्शन करने का स्वभाव डालिये और दूसरों को सम्मान देना सीखिये। अब तक ये होता रहता है, हम अपना अहंकार प्रदर्शित करते रहते हैं और दूसरों का तिरस्कार। अपना अहंकार और दूसरों का तिरस्कार—बस उसी का परिणाम है आप को कभी गुस्सा आता है, कभी आप ढीठ कहलाते हैं, कभी उद्दण्ड कहलाते हैं, कभी क्या कहलाते हैं, कभी आपके असंख्य विरोधी हो जाते हैं, लेकिन अगर आप अपना रवैया बदल सकते हों, तो अपनी नम्रता, हर चीज में अपनी नम्रता प्रदर्शित करें। शिष्टाचार इसे ही कहते हैं। शालीनता इसे ही कहते हैं, सज्जनता इसे ही कहते हैं, शराफत इसे ही कहते हैं।

आप चाहे जो शब्द रखें; लेकिन आप यहाँ से जाने के बाद में एक शरीफ आदमी के तरीके से, सज्जन आदमी के तरीके से, जिम्मेदार आदमी के तरीके से, विनयशील आदमी के तरीके से, विनम्र आदमी के तरीके से, एक श्रेष्ठ नागरिक होने के नाते, अपने आप के बोलचाल से लेकर के व्यवहार तक में सज्जनता को घोल दीजिये, मिठास को घोल दीजिये, सेवा को घोल दीजिये, आत्मीयता को घोल दीजिये। और क्या करें ? दूसरों को सम्मान देना सीखिये, हरेक की इज्जत कीजिये, छोटे बच्चों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

की इज्जत कीजिये, धर्मपत्नी की इज्जत कीजिये, माता जी की इज्जत कीजिये, छोटी बहिन की इज्जत कीजिये, भाइयों की इज्जत कीजिये, पड़ोसी की इज्जत कीजिये, मित्रों की इज्जत कीजिये, समाज की इज्जत कीजिये आप दूसरों की सम्मान करना सीखेंगे, तो आपका अहंकार जल जाएगा। अगर आपका अहंकार जल गया, दूसरों को सम्मान देना शुरू कर दिया, तो आप देखना उस सम्मान की प्रतिक्रिया क्या होती है ? आप जितना सम्मान दूसरों को देंगे, उससे असंख्य गुना सम्मान आपके हिस्से में आएगा और फिर आप सम्मान की कमी अनुभव नहीं करेंगे। फिर क्या आप यहाँ से ऐसा नहीं बदल सकते ? आप बदलिये। आप उज्ज्वल भविष्य की उम्मीदें कीजिये। आप एक अक्सर कल्पना करते रहते हैं, हमारा भविष्य ऐसा खराब हो जाएगा, अमुक आदमी ये नुकसान पहुँचा देगा, ऐसी मुसीबत आ जाएगी, हमारा बच्चा कुपात्र निकल जाएगा। आप क्यों ऐसी कल्पना करते हैं ? वास्तविकता यह थोड़े ही है। आपने कोई सिर्फ कल्पना कर रखी है। भय की कल्पनाएँ, आशंका की कल्पनाएँ, चिन्ता की कल्पनाएँ, हैरानी की कल्पनाएँ, बुढ़ापे की कल्पनाएँ, मौत की कल्पनाएँ आप क्यों करते रहते हैं ? उज्ज्वल कल्पनाएँ आपको करना नहीं आता ? आप विधेयात्मक विचार नहीं कर सकते ? आपको निषेधात्मक विचारों को कटाना नहीं आता ? आप विधेयात्मक विचार शुरू कीजिये और खुशी से रहना सीखिये।

यहाँ से आप जाएँ और कभी आपके मन में ये विचार आये कि हमारी मौत हो जाएगी और हमारा शरीर चला जाएगा—आप ऐसे निषेधात्मक विचार मत कीजिये। आप दूसरे ढंग से विचार कीजिए। हमें नया जन्म मिलेगा और हम दूसरी माँ की गोदी में खेलेंगे और माँ का दूध पियेंगे और उछलते-कूदते फिरेंगे और फिर हम बड़े हो जाएँगे, स्कूल जाएँगे, हमारी फिर नई शादी होगी। ये कल्पना क्यों नहीं करते ? सुनहरे ख्वाब देखना नहीं आता ? सुनहरे सपने सजाना नहीं आता ? आप सुनहरे सपनों से सजा कीजिये। निराशा के विचारों, खीझ के विचारों और चिन्ता के विचारों से अपने आप को छुड़ा लीजिये। आप अच्छी-से-अच्छी उम्मीदें कीजिये; लेकिन साथ में आप बुरी-से-बुरी परिस्थिति के लिये तैयार रहिए। दोनों बातों के लिये समान रूप से आपको पैर बढ़ाने हैं। जहाँ उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना है, वहाँ यह भी सम्भावना है कि आपकी परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो जाएँ और आपको मुसीबतों में पड़ना पड़े और आपने जो सपने सँजो करके रखे हैं, वे मटियामेट हो जाएँ।

आप उसके लिये भी तैयार रहिये। दोनों तरीके से तैयार रहिये। अगर आप बुरे भविष्य के लिये तैयार नहीं रहेंगे, तो आपकी हिम्मत टूट जाएगी। यकायक कोई मुसीबत का दिन आ गया, तो आपके सब धज्जे बिखर जाएँगे। आप बुरी-से-बुरी मुसीबतों के लिए तैयार रहिये और अपने आप को इतना सबल और स्वावलम्बी बनाए रखिये कि किसी भी खतरे के समय पर आप अपने पैरों पर खड़े रह सकें—इतने आप शूरवीर बनिये, इतने आप बहादुर बनिये। आप उदार तो बनिये; पर जागरूक होइये। दूसरों के साथ-साथ में उदारता बरतने के लिये तो मैं कहता रहा हूँ; पर मैंने कहा है हरेक की सेवा-शराफत कीजिये; लेकिन आप भूलना मत, आपको जागरूक भी रहना है। जागरूक नहीं रहे और आप उदार ही बनते चले गए, सेवाभावी ही बनते चले गए, तो आपकी भलमनसाहत का बुरी तरीके से लोग नाजायज फायदा उठाएँगे और आप उनके शिकार बन जाएँगे, दुष्टों के शिकार बन जाएँगे। उदारता तो कीजिये, सहायता तो कीजिये; पर इस विचार को मत भूलिये—कहाँ उदारता करनी है, कहाँ नहीं करनी है। जहाँ जरूरत हो, वहीं उदारता कीजिये। जहाँ जरूरत न हो, आप हाथ सिकोड़ सकते हैं और निष्ठुर भी बन सकते हैं। हरेक के साथ उदारता नहीं—ये कोई जरूरी नहीं है। हरेक को देखिये, हर व्यक्ति को देखिये, हर परिस्थिति को देखिये। हर काम में सहयोग देना कोई जरूरी नहीं। हर आदमी की सेवा करना कतई जरूरी नहीं ? जो श्रेष्ठ है, उसी की सेवा कीजिये। जो सद्प्रवृत्तियाँ हैं, उन्हीं में सहयोग दीजिये। कोई भी चन्दा माँगने आएगा, हम दे देंगे। नहीं, ऐसे नहीं, ऐसा मत कीजिये। कोई भी भिखारी आएगा, हम हरेक को देंगे। ऐसा मत कीजिये। आप की उस रोटी को पाकर के उनकी हरामखोरी और दूसरी बुराइयाँ बढ़ेंगी, इसलिये आपको जागरूक भी रहना चाहिए। आपको उदार जहाँ बनना है, सेवाभावी बनना है, वहाँ संघर्षशील भी बनना है। आप लड़ाई से इनकार मत कीजिये। आप लड़ाई से इनकार कर देंगे, तो मच्छर आपको खा जाएँगे। फिर आपको मक्खियाँ निगल जाएँगी; फिर आपको पिस्सू जिन्दा नहीं रहने देंगे; फिर आपको खटमल किस तरीके से चैन लेने देंगे ? सिर में घुसे हुए जुएँ आपको किस तरीके से हैरान नहीं करेंगे ? चूहे आपका सारा अनाज खा के खत्म कर देंगे; फिर पिस्सू और कीटाणु, जो आपके शरीर में घुस जाते हैं और तपेदिक जैसी बीमारियाँ कर देते हैं—इनसे लोहा नहीं लेंगे, तो कैसे बात बनेगी ?

फिर आप यहाँ से जब जा ही रहे हैं, फिर आप संघर्षशील भी होकर जाइये, शूरवीर भी होकर जाइये; उदार बनिये, संयमी बनिये, सज्जन बनिये, भगवान का नाम लीजिये, अच्छे काम कीजिये; लेकिन इतना काफी नहीं है। आपकी सज्जनता काफी नहीं है। सज्जनता के साथ में शूरवीरता का भी होना जरूरी है, आपको संघर्षशील भी होना चाहिए, आपको प्यार करना आना चाहिए और लड़ना भी आना चाहिए जो आदमी लड़ नहीं सकता, वह प्यार भी नहीं कर सकता। जो प्यार कर सकता है, वो लड़ भी नहीं सकता है क्यों ? वह प्यार में हित-साधन जुड़ा होता है। हित-साधन जिसमें जुड़ा हुआ नहीं है, वह कैसे प्यार हुआ ? ये प्यार तो हो नहीं सकता। इसमें हित-साधन जुड़ा हुआ नहीं है। हित-साधन के लिये जरूरी नहीं है कि किसी की हाँ-में-हाँ ही मिलायी जाए या दूसरे आदमी जो चाहते हैं, वही किया जाए। ये हो सकता है कि हित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाहनें के लिये किसी आदमी को ठीक उल्टा करना पड़े, मसलन बच्चे के हाथ में फोड़ा हो गया है और माँ के लिये सम्भव है कि इसकी डॉक्टर के यहाँ आपरेशन कराने के लिये ले जाए और बच्चा मना करता रहे—नहीं हमारा आपरेशन मत कराइये, तो भी माता उसको बहका-फुसला करके और थोड़ा दबाव देकर के फोड़े का आपरेशन करा देती है, तो ये अच्छी बात है; इससे इसका हाथ गलने से बच जाएगा। फोड़े का आपरेशन नहीं कराया होता, फिर हाथ सड़ता और सारे ही हाथ को खराब कर सकता था। इसलिये दूरदर्शिता का तकाजा ये है—आप केवल न्याय को समर्थन दीजिये, अनौचित्य को समर्थन मत दीजिये; लोगों की खुशामदें मत कीजिये; लोगों की इच्छाओं पर ध्यान मत दीजिये; लोग क्या सलाह देते हैं, आप बिल्कुल ध्यान मत दीजिये। आप यहाँ से जाने के बाद में अपने आप का एक और रवैया बदल सकते हैं। आप पास की बात मत सोचिये, दूर की बात सोचिये। आमतौर से हर आदमी की समझ में पास की बात आती है। आज क्या फायदा, आज कितना फायदा है, कल को नुकसान हो, तो ? ऐसी ही आमतौर से अदूरदर्शिता हर जगह फैली हुई है। आप विवेकशील बनिये और दूरदर्शी बनिये हर मामले में ये सोचिये, इसके परिणाम क्या होंगे ? आप परिणामों पर विचार करेंगे, तो बहुत-सी बुराइयों से बच जाएँगे और आप परिणामों पर विचार करेंगे, तो वह काम, जो आज छोटे मालूम पड़ते हैं, बेकार मालूम पड़ते हैं, आप उन कामों को खुशी से करने के लिये तैयार हो जाएँगे जो आपके, आपके समाज के हित में नितान्त आवश्यक हैं। दूरदर्शी आदमी नहीं बन सकते, तो बुढ़ापे को खराब कर देंगे, जवानी को बुरी तरीके से निचोड़ते रहेंगे, बुढ़ापे में इतनी शिकायतें पैदा करेंगे, कि हैरान हो जाएँगे। बच्चे स्कूल जाते हैं। इस समय का खेलना दिखाई पड़ता है, भविष्य दिखाई नहीं पड़ता। फीस के पैसे ले जाते हैं, सिनेमा में खर्च कर देते हैं, यार-दोस्तों के साथ मटरगस्ती करते हैं और सारी जिन्दगी तबाह हो जाती है।

दूरदर्शी हैं बच्चे ? नहीं, दूरदर्शी नहीं हैं। जो आदमी दूरदर्शी नहीं है, वह न्यायोचित बात को विचार नहीं कर सकता; अपने सुन्दर भविष्य की, उज्ज्वल भविष्य की संरचना नहीं कर सकता। आज की परिस्थितियों में आपको कुछ हैरानी पड़ती है, कुछ दबाव डालना पड़ता है, परिवर्तन करना पड़ता है, अपनी सुविधा में कमी करनी पड़ती है। आप कर लीजिये, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। आपको जो करना है, केवल यही करना है कि दूरगामी परिणाम क्या हो ? तब बात बनेगी। इससे कम में बनेगी नहीं। आप यहाँ से जा रहे हैं, तो पारस को छूकर के लोहा सोना हो जाता है; आप सोना बन जाइये। कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर के आदमी अपनी कामनाओं का समापन कर लेता है। आप में कल्पवृक्ष है। आप अपनी कामनाओं को पूरा तो नहीं करा पाएँगे; लेकिन अनावश्यक कामना को खत्म कर दें, तो आप कल्पवृक्ष का आनन्द ले पाएँगे। आपका शरीर चमड़े का है; आप को सोना तो नहीं बना सकते; लेकिन अगर आप अपने मन को बदल दें, ऊँचे आदर्शों के साथ, अर्थात् पारस के साथ जोड़ लें, तो आप सोना बन सकते हैं। ऊँचे आदर्श, ऊँचे विचारों के साथ में जिन आदमियों ने भी अपने व्यक्तिगत जीवन को जोड़ा है, वे पारस से बढ़कर रहे हैं। आप यहाँ से अमृत पीकर के जाइये। अमृत किसे कहते हैं ? आत्मज्ञान को कहते हैं, आदर्शवाद को कहते हैं, उत्कृष्टता को कहते हैं, ईश्वर-विश्वास को कहते हैं। अगर आप ये कर पाएँ, तो आपको अमृत पीने वाला कहेंगे। आप यहाँ से कामधेनु लेकर जाइये। आपने यहाँ क्या दिया ? मालूम नहीं। वैसे तो ये भी थी, पुराने जमाने की मान्यता, जब लोग धार्मिक अनुष्ठान करते थे, कल्प-साधना के अनुष्ठान करते थे, तो जहाँ, जिस आश्रम में रहते थे या जिसके द्वारा करते थे, उनको दान देते थे। गौ दानों का बहुत महत्त्व है। गौ दान देते ये आश्रमों को, गौ का पैसा देते थे। अब क्या गौ दान देंगे ? लेकिन आप ऐसा कीजिये, हमसे गौ दान ले जाइये, एक कामधेनु ले जाइये। कामधेनु क्या है ? कामधेनु आध्यात्मिकता है। आप आध्यात्मिक चिंतन लेके जाइये, आध्यात्मिक दृष्टिकोण लेके जाइये। अगर आप आध्यात्मिक दृष्टिकोण लेकर के जाएँगे, तो फिर आपको बहुत कुछ करना पड़ेगा। फिर आपको अपने व्यक्तित्व के खेत में पौधा और पानी लगाने के लिये उपासना करनी पड़ेगी, साधना करनी पड़ेगी, आराधना करनी पड़ेगी। उपासना भगवान् की करना और यहाँ का प्रज्ञायोग का जो प्रकरण है, उसको आप सीख लेना। प्रज्ञायोग १५ मिनट रोज की आराधना है; बड़ी उपयोगी है, बड़ी महत्त्वपूर्ण है। आप के दैनिक जीवन में प्रज्ञायोग का एक नियमित स्थान रहना चाहिए। आपको यहाँ से जाने के बाद में समय का निर्धारण करने की रीति बनानी चाहिए। आप समय का टाइम-टेबल बनाना और समय का एक मिनट भी बेकार मत गँवाना।

यहाँ से जाने के बाद में आप अपने परिवार में श्रमशीलता पैदा करना, सुव्यवस्था पैदा करना, शालीनता पैदा करना, मितव्ययिता करना, उदात्त सहकार पैदा करना, ये पंचशील हैं; आपको बता दिया था न। ये बार-बार लिखा है और छपा है। आप अपने घर और परिवार में पंचशील बनाइये और उन्हें पैदा करने के लिये स्वयं में ये गुण पैदा कीजिये। आप बनेंगे, तो दूसरे आदमी ढलेंगे और आप नहीं बनेंगे, तो कोई क्यों ढलेगा ! इन विशेषताओं को आप जीवन में शामिल कर लेंगे, तो मजा आ जाएगा। आप यहाँ से जाइये और यहाँ के विचारों का विस्तार करते रहिये। जो आपने सीखा है, वह दूसरों को सिखाते रहिये। यहाँ के साहित्य का विस्तार कीजिये और छोटे-छोटे काम हमने बताये थे आपको, उनको आप भूलना मत। यहाँ से आप जा ही रहे हैं, तो आप ने समयदान में कुछ-न-कुछ जरूर दिया होगा और आपने अंशदान में कुछ-न-कुछ जरूर दिया होगा। आज बेहद् जरूरत है। इनकी आपके समय की आपके बच्चों को ही जरूरत नहीं है, हमको भी जरूरत है, भगवान को भी जरूरत है। इसमें से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सारी कटौती करके अपने खानदान वालों को ही मत दे दीजिये। अरे बाबा ! हमको बहुत जरूरत है, आप समझते नहीं हैं ! युग को बहुत जरूरत है, भगवान को बहुत जरूरत है, पीड़ित मानवता को बहुत जरूरत है। आप अपने समयदान और अंशदान में कंजूसी मत कीजिये। आप उदार बन के जाइये, कलेजे को चौड़ा करके ले जाइये, कृपण होकर के मत जाइये, माँगते मत रहिये, याचक और दानी का रिश्ता हमारे आप के बीच में मत बनने दीजिये। आप और हम अन्धे और पंगे के तरीके से दोस्त बनना चाहते हैं।

हमारे पास कुछ चीज है, हम आपको देंगे। आपके पास कुछ है, हमको दीजिये। आदान-प्रदान का सिलसिला बनाइये। अन्धे और पंगे की नसीहत ग्रहण कीजिये, नाव पार कर लेंगे। हमारे गुरु और हमारे बीच में यही रिश्ता चला था। हमारे गुरु ने हमको असीम दिया और हमने अपने गुरु को असीम दिया। वे कहते हैं—हम आपको ज्यादा देंगे, हम कहते रहे हैं—हम आपको ज्यादा देंगे। आप हमको दीजिये; हमको बहुत जरूरत है। आपका समय हमको बहुत चाहिए, हमको धन आपका बहुत चाहिए, आपका सहयोग हमको बहुत चाहिए। आप अपना घर शान्तिकुंज में बनाके जाइये और यहाँ के कर्मचारी के रूप में या कि यहाँ के परिवार के रूप में अपना घर सँभालिये, छत सँभालिये, दुकान सँभालिये। आप हमारे होकर रहिये, हम आपके होकर रहेंगे। कदाचित् ऐसा हो गया, तो सच्चे अर्थों में आप कायाकल्प के अधिकारी हो जाएँगे और आप धन्य हो जाएँगे। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधना से सिद्धि

उपासना, साधना, आराधना का त्रिवेणी संगम

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

त्रिवेणी, जिसमें नहा करके कौए कोयल हो जाते हैं और बगुले हंस हो जाते हैं, आपने सुना होगा। रामायण में त्रिवेणी का माहात्म्य बताते हुए येह लिखा गया है—

मज्जन फल पेखिअ तत्काला ।
काक होहिं पिक बकउ मराला ।।

कौए कोयल बन जाते हैं और बगुले हंस बन जाते हैं, ये हो सकता है; मगर ऐसे नहीं हो सकता। आकृतियाँ बदल सकती हैं ? आकृतियाँ तो भगवान् ने जैसी बना दी हैं, माँ के पेट में से जिस दिन से आदमी बना है, बनावट तो वैसी ही रहेगी। कैसे बदल पायेंगे बनावट को ? पर प्रकृति बदल सकती है। जिस पानी के स्नान करने का गोस्वामीजी ने माहात्म्य बताया है, वास्तव में वह पानी की तीन धाराओं का संगम नहीं है, वह तो उसके प्रतीक हैं। वास्तव में त्रिवेणी माहात्म्य वह है, जिसको आप त्रिपदा गायत्री कहते हैं। यह तीन धारा वाली गायत्री है। इसको 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' भी कहते हैं। इसको सत्-चित्-आनन्द भी कहते हैं, फिर मैं आपको इसके व्यावहारिक अर्थ करके बताता हूँ। इसको उपासना, साधना और आराधना कहते हैं। तीन का संगम है यह। आपको तीन काम करने पड़ते हैं। तीन काम आप जब करते हैं, फिर आप पूर्णतया सिद्धपुरुष बन जाते हैं और आध्यात्मिक उन्नति के सारे लाभ उठा लेते हैं। उपासना के बारे में कहा था न ? भगवान के साथ सम्बन्ध जोड़िए; भगवान का अनुशासन स्वीकार कीजिए; भगवान की सत्ता पर विश्वास कीजिए; कर्मफल और न्यायकारी होने की बात को मान्यता दीजिए; फिर आप उसी के साथ-साथ मिल जाइए, धुल जाइए; उसी के सिद्धान्त और उसी की इच्छा पर चलना शुरू कीजिए। यह धारा नम्बर एक हो गई त्रिवेणी की और दूसरी धारा यमुना। यमुना के बारे में कल हम बता चुके हैं। यह साधना की धारा है । साधिए अपने आप को; अपने आप को गलाइए; अपने आपको ढालिए; अपने आप को कुसंस्कारों से मुक्ति दिलाइए; अपने आप को सज्जन और सभ्य बनाने के लिए भरपूर कोशिश कीजिए।

आज आपको एक नई बात और बतानी है। एक और चीज इसी त्रिवेणी के साथ में जोड़ दीजिए, जिसका नाम है 'आराधना'। आराधना किसकी ? उपासना भगवान की, साधना आत्मदेव की और आराधना ? आराधना समाज की। आपका समाज के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसकी उन्नति अक्ल से नहीं हुई है। अक्ल तो बहुतों में ज्यादा है। आदमी की अपेक्षा बहुत से अतीन्द्रिय क्षमता वाले जानवर हैं, जिनकी अक्ल मनुष्य से बहुत ज्यादा है। आदमी का पुरुषार्थ, उसकी सहयोग-वृत्ति है, शरीर का वृहदाकार नहीं। विशाल कलेवर वाले प्राणी तो कितने ही हैं। हाथी, व्हेल, घोड़े, गैंडे जैसे प्राणियों का आकार तो मनुष्य से भी बड़ा है; लेकिन आदमी की जो उन्नति हुई है, वह वास्तव में सहकारी समाज की वजह से हुई है। एक ने दूसरे को सहायता दी है; दूसरे ने तीसरे को सहायता दी है। अगर यह सहायता का क्रम न चला होता, तो आदमी की उन्नति किसी भी प्रकार सम्भव न हुई होती। यहाँ तक कि जिस वृद्धि के बारे में आदमी बड़ी-बड़ी डींगें हाँकता है, वह वृद्धि भी उसके पल्ले न पड़ी होती। इसी सहकारिता को हमको कायम रखना है। आदमी को और हमको जो कुछ मिला है, यह दूसरों की कृपा से मिला है। माँ ने हमको दूध पिलाकर बड़ा किया। जानवर का बच्चा पैदा होने के बाद में, खरगोश का बच्चा पैदा होते ही घास खाने लगता है और भाग जाता है; लेकिन मनुष्य का बच्चा ? मनुष्य का बच्चा तो कितना बड़ा हो जाता है, फिर भी माँ की देखभाल के बिना, संरक्षण के बिना, उसका दूध पिये बिना, उसकी सहायता पाये बिना करवट तक नहीं बदल सकता ! अहसान हुआ न ? बाप का अहसान न हो तब ? कपड़ा बाप नहीं पहनाये तब ? स्कूल के लिए फीस न दे तब ? तब बताइये बच्चा कैसे आगे बढ़ेगा ? शादी हुई हो आपकी, यह शादी की बीबी कहाँ से आई आपकी ? किसी और ने दी न ? किसी और ने उसे पाला-पोषा, पढ़ाया तब आपको दी न ? आदमी अहसानों से दबा हुआ है। कपड़ा जो आप पहनते हैं, दवाएँ जो इस्तेमाल करते हैं, किताबें जो आप पढ़ते हैं या जो उद्योग-धन्धा आप करते हैं, अकेले आप कैसे कर सकते हैं ? यह समाज का ऋण है, जिसकी वजह से आप इतनी ऊँची श्रेणी में हैं। इस ऋण को चुकाना आपका काम है अर्थात् समाज-सेवा करना आपका काम है। आपने असंख्यों की सहायता से जीवन का वर्तमान स्वरूप प्राप्त किया है, तो आपका यह फर्ज हो जाता है कि उसी समाज का, जिसने कि भिन्न-भिन्न प्रकार से सहयोग देकर के आपको पढ़ा-लिखा बनाया है, शिक्षक बनाया है, सभ्य बनाया है, उद्योग-धन्धों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

को चलाने लायक बनाया है, अफसर बनाया है, गृहस्थ बनाया है, उस समाज के ऋण को चुकाने के लिए आपको उसकी सेवा करनी चाहिए। सेवा अगर इनसान न करे तब, तब वह कर्जदार होकर मरेगा और कर्जदार होकर मरेगा तब ? तब जीवन में आपने जो भी पा लिया हो, वह अलग बात है; लेकिन यह सारे-के-सारे कर्जे जो आपको इस जीवन में भिन्न-भिन्न पक्षों के द्वारा मिले हैं, उनको चुकाने पड़ेंगे और चौरासी लाख योनियों में रह-रह करके, घूम-घूम करके, जिन-जिन लोगों के अहसान आपने इनसान की जिन्दगी में जमा कर लिये हैं, वह सब चुकाने पड़ेंगे। इसलिए ऋण-मुक्ति के हिसाब से आपको समाज की सेवा करनी चाहिए। ऋण-मुक्ति के अलावा एक और पक्ष है। आपको उन्नतिशील बनने के लिए, समर्थ बनने के लिए, आपको सेवा-धर्म ग्रहण करना चाहिए।

अगर आप सेवा-धर्म ग्रहण नहीं करेंगे, तो आप विश्वास रखिए, आपकी उन्नति के सारे-के-सारे रास्ते बन्द हो जाएँगे। देखा होगा आप खाते हैं; लेकिन खाते तब हैं, जब आप टट्टी हो आते हैं और पेट को खाली कर लेते हैं। पेट खाली न करें तब ? तब आप खा नहीं सकेंगे। साँस को पहले बाहर निकाल लेते हैं, तब आपको प्राणवायु का नया सिलसिला मिलता है। अगर आप न निकालें तब ? न छोड़ें तब ? जो कुछ भी पल्ले पड़ा है, उसको कृपण के तरीके से, कंजूस के तरीके से दाब के बैठ जाएँ, अपने ही खर्चे के लिए रखें, दूसरों को न बाँटें तब ? तब मुश्किल हो जाएगी, आप ध्यान रखना। भेड़ ने अपनी ऊन दूसरों को देने का निश्चय कर लिया कि ऊन है तो हमारे ही, उगी तो हमारे ही शरीर पर है; पर इस ऊन की दूसरों को भी तो जरूरत है। उसने खुशी से यह मंजूर कर लिया कि हमारी ऊन को जो लोग चाहें खुशी से काट लें; उससे कपड़े बनाना चाहें, खुशी से बना लें। क्या भेड़ नुकसान में रही ? आपकी दृष्टि से तो नुकसान में रहनी चाहिए; क्योंकि उसने बिना कीमत के अपनी ऊन दे दी; लेकिन भगवान् की तरफ देखा क्या ? भगवान् उसे बराबर नई ऊन देते चले आते हैं। उसको हर साल तीन इंच ऊन मिल जाती है और अगर मान लीजिए भेड़ बारह वर्ष तक जिएँ, तो छत्तीस इंच अर्थात् तीन मीटर ऊन मिल जाती है उसको भगवान् के दरबार से। अगर भेड़ देना बन्द कर दे तब ? भेड़ की ऊन कटना बन्द हो जाए तब ? तब फिर जितनी ऊन भेड़ जन्म के समय पर लाई थी, बस उतनी रहेगी। भगवान देगा ही नहीं। जब भेड़ त्याग करने को तैयार नहीं है, तो प्रकृति क्यों त्याग करेगी ? आप इस सिद्धान्त को समझते नहीं हैं ? न समझने की वजह से ही आदमी कंजूस बनता जाता है, कृपण बनता जाता है, लोभी बनता जाता है, संकीर्ण बनता जाता है, स्वार्थी बनता जाता है। इस बात को हटाना चाहिए। आराधना इससे कम में नहीं बन सकती है। पेड़ों ने अपने फल जमीन को दिये, प्रकृति ने उनको हर साल फिर नये फल दिये। अगर पेड़ ने फल देना बन्द कर दिया होता तब ? तब फिर नये फल नहीं आते। बीज गलता है, गलने के बाद में फलता है। अगर बीज गलना बन्द कर दे तब ? तब फिर फलेगा नहीं; जितना है, उतना ही रह जाएगा। उन्नति के लिए, विकास करने के लिए और अपने आपको महत्त्वपूर्ण और बड़ा बनाने के लिए बीज के तरीके से हर आदमी को गलना चाहिए। गलने का यह मतलब नहीं है कि अपनी आत्महत्या कर डालें, स्वयं को तबाह कर डालें। गलने का मतलब यह है कि समाज की सेवा के लिए अपने आप को गलाते जाइए, अपने आपको खत्म करते जाइए, अपने आपको त्याग करते जाइए, फिर आप देखेंगे; आपकी आराधना कैसा चमत्कार लाती है ! प्राचीनकाल के ऋषियों में से हर आदमी ने, भक्तों ने, सबने समाज-सेवा की है। यह ख्याल ठीक नहीं है कि केवल भजन करने से भगवान प्रसन्न हो जाते हैं।

भगवान को प्राप्त करने के लिए अपना मन और अपना जीवन सुधार करने के लिए, साबुन के तरीके से अपने आपको धोना तो चाहिए राम के नाम से; लेकिन राम का नाम लेने भर से भगवान प्रसन्न क्यों होने लगें ? भगवान को क्या चापलूसी पसन्द है ? भगवान् कोई रिश्वतखोर है कि आपकी चापलूसी सुनते रहें और आप पर अनुग्रह कर दें ? नहीं, भगवान के यहाँ कसौटी एक ही है, वह यह कि आप कितने उदार हैं ? अगर आप उदार हैं, तो भगवान का दरवाजा आपके लिए उदारतापूर्वक खुला हुआ है और अगर आपने अपना दरवाजा बन्द करके रख लिया है तब ? तब भगवान का दरवाजा भी आपके लिये बन्द हो जाएगा। सन्तो में से प्रत्येक को, भक्तों में से प्रत्येक को अपना जीवन सेवाभावी बनाना पड़ा है। जिन ऋषियों के बारे में आपकी यह मान्यता है कि ऋषि जंगलों में रहते थे, भजन करते थे ऐसी बात नहीं है। भजन भी करते थे, तीर्थ-संचालन करते थे, गुरुकुल चलाते थे, आरण्यक चलाते थे, प्रव्रज्या करते थे, परिभ्रमण करते थे और गाँव-गाँव जाकर के संदेश सुनाते थे।

नारद जी को आप नहीं जानते हैं ? उनका जीवन सेवामय था। जहाँ-तहाँ, जहाँ-तहाँ चले गए। चरक का जीवन पढ़ा है न ? चरक ने सारी जिन्दगी जड़ी-बूटियों की खोज की और सुश्रुत ने शल्य-क्रिया का आविष्कार किया। नागार्जुन ने क्या नहीं किया ? व्यास जी ने अठारह पुराण लिखे थे। आप प्रत्येक ऋषि के बारे में देख लीजिए; सब सेवा में थे। एक भी ऋषि ऐसा नहीं हुआ है, जो सेवा-भावना से रहित रहा हो। सेवा-भावना से रहित रहेगा, तो भगवान उसकी सेवा करना बन्द कर देंगे। भजन आवश्यक तो है; यह कोई नहीं कहता कि आप भजन मत कीजिए; जरूर कीजिए; लेकिन भजन के साथ में सेवा को मिला लीजिए; क्योंकि **'भज सेवायाम्'** संस्कृत में एक धातु है, जिससे कि 'भजन' शब्द बना है। 'भज' का अर्थ होता है सेवा। सेवा जिस जीवन में न हो, उसका भजन कैसा ! जो भजन न करता हो, वह भक्त कैसा ! इसलिए सेवा को आप हटाइए मत। आप सेवाविहीन जीवन कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देंगे, तो आपकी उपासना बिल्कुल एकांगी हो जाएगी और आप उस सुख से वंचित रह जाएँगे, जो आपको मिलना चाहिए। हर भगवान् के भक्त को प्राचीनकाल में यही करना पड़ा है।

आपने उस नेवले की कथा सुनी है न ? जो सोने का हो गया था। उसका आधा हिस्सा सोने का हो गया था। पाण्डवों के यज्ञ में गया था, वहाँ रोने लगा था कि आधा हिस्सा हमारा एक यज्ञ में सोने का हुआ और दूसरा नहीं हुआ। लोगों ने पूछा भाई ! वह कौन-सा यज्ञ था, जो पाण्डवों के यज्ञ से भी बड़ा था ? उन्होंने कहा—एक ब्राह्मण ने एक सप्ताह के बाद में चार रोटियों का अनाज पाया। उससे चार रोटियाँ बनाईं। एक खुद, एक औरत की, एक कन्या की, एक बच्चे की थाली में रखी, तो उसको ध्यान आया कि अगर हमसे भी बड़ा दुःखी, कोई भूखा इस संसार में है, तो पहला हक उसका है। उसको देना चाहिए; क्योंकि सारा समाज एक है; सारी मानवता एक है; सारा विश्व एक है। हमसे भी कोई अभावग्रस्त है, तो पहला हक उसका है। वह छत पर चढ़कर चिल्लाने लगा। उसको एक सप्ताह से अन्न नहीं मिला था; लेकिन चिल्लाने लगा कि हमसे भी ज्यादा भूखा अगर कोई यहाँ हो, तो उसका पहला हक है। हम उसको बुलाते हैं कि वह आए और हमारी रोटी में से हिस्सा बँटाये।

महाभारत की कथा के अनुसार कहते हैं, एक चाण्डाल आ गया, कहने लगा—एक महीने से हमको अन्न नहीं मिला है, तो उन्होंने कहा—ठीक है, अगर आपको एक महीने से अन्न नहीं मिला है, तो आप पहले भोजन कर लीजिए। हम बाद में देख लेंगे। जब आप जी सकते हैं, तो हम भी जिन्दा रह सकते हैं। ब्राह्मण ने अपनी रोटी दे दी। उसकी पत्नी ने भी एक रोटी दे दी। बच्चे ने भी अपनी रोटी दे दी और कन्या ने भी अपनी रोटी दे दी। चारों रोटियाँ को खाकर के जहाँ चाण्डाल ने कुल्ला किया था, उस स्थान पर पानी में नेवला बैठ गया; नेवले का उतना अंग सोने का हो गया। नेवले से लोगों ने पूछा—वह क्या था ? उसने कहा—वह धर्म था, जो करुणा के रूप में आदमी की परीक्षा करने आता है। जिस आदमी के भीतर कोई करुणा न हो, वह कोई परमात्मा है ? वह कोई भक्त है ! नहीं, जिसके हृदय में कोई करुणा नहीं, दया नहीं, सेवा की बुद्धि नहीं; जो उदार नहीं हो सकता; जिसका मन कोमल नहीं; जो अपने सुख को बाँट के नहीं खा सकता; जो दूसरों के दुःखों को घटा नहीं सकता, वह भक्त कैसे हो जाएगा ? अगर आप दूसरों के दुःखों को घटाएँगे और अपने सुखों को बाँटेंगे, तो उसका तरीका एक ही हो सकता है कि आप जीवन में सेवा को स्थान दें। कहीं-न-कहीं, कोई-न-कोई तरीका ऐसा निकालते रहें, जिससे कि आपके समय का एक बड़ा अंश और आपके साधनों का बड़ा अंश परोपकार के लिए और परमार्थ के लिए खर्च होता रहे। परोपकार और परमार्थ में दो बातें आती हैं। एक बात आती है—'यज्ञार्थाय' और एक आती है—'विपदवारणाय'। विपदवारणाय का अर्थ है—दुखियारों की सेवा करना। जो भूखे हैं, गरीब हैं, कंगाल हैं, कोढ़ी हैं, उनकी आप सहायता कर देते हैं, तो यह पुण्य का, परमार्थ का एक अंश कहलाता है। इसका नाम है—विपदवारणाय'। भूकम्प आते हैं, बाढ़ आती है, बीमारी फैल जाती है, ऐसे अनेक अवसरों पर अनेक आदमी दानी और सेवाभावी बन जाते हैं और सेवा करते हैं। यह परमार्थ का अंश है—समय नहीं है।

दूरदर्शियों की सेवा इससे भिन्न प्रकार की है। दूरदर्शी इस प्रकार से समाज की सेवा नहीं करते क्योंकि इसको तो कोई भी कर सकता है। इसमें प्रकृति की प्रेरणा भी है, आत्म-संतोष भी है, समाज का सम्मान भी है। इसमें तो कई तरह की चीजें मिल जाती हैं, इसलिए आमतौर से आदमी मुसीबतों को दूर करने वाले कामों को करने के लिए कई काम कर लेते हैं, जैसे—प्याऊ लगा देते हैं, धर्मशाला खोल देते हैं, शर्बत बाँट देते हैं, कम्बल बाँट देते हैं; लेकिन ये लाभ तो, जो भौतिकरूप से अभावग्रस्त हैं, उनके काम आते हैं। आत्मिकरूप से विपन्नों का काम इनसे नहीं चलता। अन्तरात्मा को ऊँचा उठाने के लिए, जीवंन को विकसित करने के लिए, आदमी को सुसंस्कारी बनाने के लिए परामर्श और शिक्षण दिये जाते हैं। इस निमित्त जो साधन दिये जाते हैं वह वास्तव में यज्ञार्थ हैं। यज्ञार्थ का पुण्य विपदवारणाय की तुलना में हजार गुना ज्यादा माना गया है, क्योंकि विपदवारणाय से मनुष्य की शारीरिक मुसीबतें दूर होती हैं, बस। आदमी भूखा रहता है, तो आप खाना खिला देंगे। शरीर को ही तो खिला देंगे ? आत्मा को क्या खिलाएँगे ? आत्मा को रोटी थोड़े ही खिला सकते हैं आप ? तब आत्मा को, अन्तःकरण को, जिसके आधार पर हम खुराक देते हैं, साधन देते हैं, असल में उसी के आधार पर कल्याण है; उसी से आदमी की वास्तविक भलाई होती है। इसलिए सबसे बड़ा पुण्य, सबसे बड़ा परोपकार आराधना है। आराधना यह मानी गई है कि हम दूसरों को प्रकाश दें, रोशनी दें, रास्ता बताएँ; ऐसे परामर्श बताएँ; जिससे कि लोग ऊपर उठें और अपने जीवन का स्वरूप ऐसा बनाएँ, जिसकी नकल करने की बहुत-से आदमियों की इच्छा होने लगे। यह वास्तव में परोपकार का काम है। आप दुःखी की सहायता नहीं कर सकते, तो न सही; लेकिन आप वातावरण तो बनाइए न, प्रवृत्तियाँ पैदा कीजिए न।

हजारी किसान का नाम आपने सुना है ? हजारी-किसान ने किसी भूखे को रोटी तो नहीं खिलाई, प्याऊ तो नहीं खोली; लेकिन वह जानते थे कि प्रेरणा से सारा वातावरण बनता है, हरियाली बनती है, स्वास्थ्य बनता है। इसलिए वह गाँव-गाँव घूमता रहा और अपनी जिन्दगी में हजारों आम के बगीचे लगा दिये। हजार आम के बगीचे लगा देने से सारे-का-सारा इलाका समृद्ध हो गया। वहाँ के लोगों का स्वास्थ्य इतना बढ़िया हो गया, वहाँ के लोगों की तबीयतें इतनी अच्छी हो गईं, वहाँ हरियाली ऐसी पैदा हो गई कि लोगों ने अहसान माना और उसका नाम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हजारी प्रसाद के नाम पर हजारी बाग जिला रख दिया गया। आप ऐसा नहीं कर सकते क्या ? कीजिए। परोपकार के लिए आगे बढ़िये। नकल कीजिए। किसकी ? जिससे हजारों का भला होता हो। एक आदमी के दुःख को आप दूर कर दें, वह भी है तो अच्छी बात, खराब बात तो वह भी नहीं है; पर उससे हजार गुनी और लाख गुनी अच्छी बात यह है कि लोगों के विचारों को, लोगों की भावनाओं को आप ठीक कर दें। जिन-जिन लोगों ने ऐसा किया है, असल में वह पुण्य-आत्मा कहलाएँगे। नारदजी ने लोगों को दिशाएँ दीं और दिशा देने के बाद में लोगों को क्या-से-क्या कर दिया ! अब आप उसी तरह से विचार कीजिए। यह पुण्य-परम्पराएँ आपको समाज में फैलानी हैं; उसके लिए आप परिश्रम कीजिए। जिन कुरीतियों की वजह से समाज का सत्यानाश हुआ जाता है, उन कुरीतियों से संघर्ष करने के लिए आप सीना तानकर खड़े हो जाइये।

आप यह मत सोचिए कि लड़ाई-झगड़े की बात कही जा रही है। लड़ाई-झगड़े की बात तो भगवान भी कह रहे थे और अर्जुन को बार-बार कहा था कि आप लड़िए—**"ततो युद्धाय युज्यस्व"** लड़ने के लिए दबाव डाला था तो क्या लड़ना भी पुण्य है ? हाँ लड़ना भी पुण्य है। पुण्य को आप सीमाबद्ध मत कीजिए। केवल पानी पिलाने को ही पुण्य मत मानिये; रोटी खिलाने को पुण्य मत मानिये। व्यक्तियों को उछाल देने का नाम पुण्य है। ज्ञान देने का नाम, सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन का नाम—यह भी पुण्य और परोपकार है। जैसे कि आप लोग, जो इस मिशन को आगे बढ़ा रहे हैं, जिसमें कि असंख्य मनुष्यों को उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना है और महाविनाश से रोकथाम करने के लिए जिसमें बहुत गुंजाइश है; आप ऐसे पुनीत काम में संलग्न होते हैं; अपना श्रम देते हैं, अपना समय देते हैं, अपने प्रभाव का उपयोग करते हैं, तो आप निश्चित रूप से समझिये कि यह किसी सोना दान करने वाले राजा कर्ण से कम महत्त्व का काम नहीं है। आपको सेवा तो कभी करनी ही चाहिए। सेवा आप नहीं करेंगे तब ? तब आपकी अन्तरात्मा प्यासी रह जाएगी, भूखी रह जाएगी। आपकी आत्मा को आनन्द मिलेगा ही नहीं, जो कि एक देने वाले को मिलता है। देवता उन्हें कहते हैं जो कि दिया करते हैं। आप तो देवयोनि में जा रहे हैं। पशु की योनि छोड़कर मनुष्य की योनि में आ गये हैं न। अब एक और कदम बढ़ाइये। अब आपको देवता बनना है। देवता किसे कहते हैं ? जो दिया करते हैं। देने वाले का नाम—सेवाभावी। तो आप देने वाले बन जाइये। आप देने वाले बन गए, तो आपका स्वर्ग आपके चरणों में आ गया। स्वर्ग से आप ज्यादा बेहतरीन बन सकेंगे; स्वर्ग में जाने वालों की तुलना में ज्यादा सुखी होंगे। सेवा करने से और परोपकार करने से जो आनन्द आता है, उसकी अनुभूति आपको है नहीं। जिस दिन आपको अनुभूति आयेगी, उस दिन आप ऋषि के सुर में सुर मिला करके एक शब्द कह रहे होंगे। क्या कह रहे होंगे ?

"न त्वहं कामये राज्यं न सौख्यं, न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनां आर्तनाशनम्।।

प्राणियों के दुःख अभाव के कारण भी होते हैं अज्ञान के कारण भी होते हैं। अभाव के कारण, अशक्ति के कारण, अज्ञान के कारण सारे-के-सारे संसार में यह दुःख फैले हुए हैं। आप अभावों को दूर कीजिये; दान दीजिये, उपकार कीजिये। अपने हिस्से में से एक अंश दुखियारों की सेवा के लिए रखिये। इन अभावों को दूर करना है। अशक्ति के लिए, लोगों की हिम्मतें बढ़ा दीजिए। ऐसी प्रवृत्तियों को उभरने दीजिए, जिससे कि आदमी शक्तिमान बनते हैं। आप गृह उद्योगों से लेकर के हरितक्रान्ति तक के अनेक कार्य ऐसे कर सकते हैं, जिससे कि आदमी भावनात्मक दृष्टि से सुखी, समृद्ध बनते हैं और आप ऐसे भी काम कर सकते हैं, जिससे कि अज्ञान दूर होता है। आजकल ज्ञानयज्ञ को आगे बढ़ाने के लिए, विचारक्रान्ति के लिए आपको संसार में से अज्ञान को मिटाना है। अज्ञान के कारण ही अनास्था उत्पन्न हुई है। अनास्था के कारण ही आदमी भटक गया है और भटका हुआ आदमी जगह-जगह ठोकर खा रहा है, जगह-जगह दुःख पा रहा है। जगह-जगह ठोकर खाने वाले और दुःख पाने वाले आदमी को रास्ता बताना चाहिए। आदमी न जाने क्या-से-क्या चीजें चाहता है और उसको यह मालूम भी नहीं है कि वह चीज हमारी नाभि में रखी हुई है। कस्तूरी के लिए हिरन की तरह मारा-मारा फिरता है; मृगतृष्णा की तरह मारा-मारा फिरता है; थकान और निराशा में डूबा-डूबा फिरता है। आपको रास्ता बताना है। रास्ता अगर बताने लगे, तो आप मार्गदर्शक हो जाएँगे; आप ऋषि हो जाएँगे और आपकी सेवा बहुत उच्चकोटि की मानी जाएगी। ऋषियों ने वही उच्चकोटि की सेवा की थी। आदमियों को रास्ता बताया था, आदमियों को दिशा दी थी, आदमियों की धाराओं को बदल दिया था। आप इस काम को भी कीजिए। सेवा के लिए मैं मना थोड़े ही कर रहा हूँ कि आपको दुःखियों की सेवा नहीं करनी चाहिए, प्याऊ नहीं लगानी चाहिए, भूखों को रोटी नहीं बाँटनी चाहिए। वह तो करनी ही चाहिए; लेकिन इसको आप भूलिये मत। असली सेवा तो यही है। असली परोपकार यही है। आराधना भी यही है। राजा कर्ण सवा मन सोना रोज बाँटते थे और सन्त सवा मन ज्ञान रोज बाँटता है। हम सवा मन ज्ञान रोज बाँटते हैं। आपको भी सवा मन ज्ञान रोज बाँटने की अपनी भावी योजना बनानी चाहिए और जीवन को आराधना से भरा-पूरा करना चाहिए। हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपासना फलदायी कैसे बने ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

मैंने आपको उपासना का मर्म बतलाने के लिए बुलाया है। मेरे जीवन के अनुभव से आपको लाभ होगा। हमने इस क्षेत्र में काफी लम्बी मंजिल तय की है। अगर कोई भी इस रास्ते पर चलने के लिए, उपासना की वास्तविकता को समझाने के लिये प्रयास करेगा, उसे अवश्य लाभ होगा तथा वह मंजिल तक पहुँचने में समर्थ हो सकेगा। उपासना करने से लाभ नहीं मिलता है—यह कहना गलत है। उपासना फल देने में गड़बड़ पैदा कर करती है—ऐसी बात भी नहीं है। वास्तव में यदि हमको सही रास्ता मिल जाए तथा भगवान को हम समझ जाएँ, तो हमारी उपासना सार्थक हो सकती है। अगर वास्तव में हम मंजिल समझ गयें होते, तो हम उस स्थान तक आसानी से पहुँच जाते; परन्तु दुर्भाग्य है हमारा, जो हमें न तो मंजिल बताई गई, न हमें राहें बतलाई गईं। चलने का रास्ता भी नहीं बतलाया गया।

आज उपासना के सन्दर्भ में सभी ने अधूरा-अधूरा सीखा है। किसी को वास्तविकता का ज्ञान नहीं है। गणित पढ़ना हो तो प्रारम्भ से अन्त तक पढ़ना चाहिए। अगर मनुष्य को प्रारम्भ का, अन्त का, बीच का बारी-बारी से सिखा दिया जाए, तो बात बनने वाली कदापि नहीं है ? हम सबको उसी तरह सिखाया गया। हमें केवल पूजा-विधि बतलाई गई। इसके अन्तर्गत यह कहा गया कि अमुक पूजा कर लीजिये, आपको अमुक लाभ मिल जाएगा। यह गलत है। विधियों को न जाने हमने क्या-क्या समझा; परन्तु उनकी जड़ों के बारे में हम बेखबर बने रहे। उपासना की इस ढुल-मुल नीति के कारण वह असफल हो रही है। साधक का मन, लगाव इस उपासना-पद्धति से हटता जा रहा है। मंत्रों से जो चमत्कार हमें बतलाया गया था, वह हमें मिला कहाँ ? मैं यह चाहता हूँ कि आपको इतने साल उपासना करते हो गये, आपने लाभ क्यों नहीं प्राप्त किया ? लोग कहते हैं कि मरने के बाद स्वर्ग मिलता है, मुक्ति मिलती है—यह हम नहीं जानते हैं। आपको इस जन्म में मिलनी चाहिए। मरने के बाद क्या होता है ? यह हमें पता नहीं है। यह हमारे दिमाग में नहीं आता है कि आप अभी नरक में पड़े हैं और आधे घण्टे, पन्द्रह मिनट के बाद आपकी मृत्यु हो जाए तो आप स्वर्ग को चले जाएँगे। यह हो नहीं सकता है। अगर आप पन्द्रह मिनट बाद स्वर्ग जाते हैं, तो पन्द्रह मिनट पहले भी आपको स्वर्ग में ही होना चाहिए। हमारा ख्याल है कि आप जिस स्थिति में जहाँ हैं, मरने के बाद भी वहीं रहेंगे, यानी नरक में जाना पड़ेगा। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि मरने के बाद कोई स्वर्ग या बैकुण्ठ नहीं है। जीवन में भगवान् नहीं, स्वर्ग नहीं, तो मरने के बाद भगवान् तथा स्वर्ग कहाँ मिलेंगे ! इस जीवन में हमें शान्ति नहीं तो मरने के बाद हमें शान्ति कहाँ मिल सकती है ? अतः हम आज अध्यात्म की वह फिलॉसफी बतलाएँगे, जो हमारे ऋषियों-मुनियों की है। ऋषियों की साधना महान् थी। हर आदमी का व्यक्तित्व वजनदार था। गुरु वशिष्ठ ने अपने को निखारा तथा उनका व्यक्तित्व महान् बन गया। इसके फलस्वरूप उन्होंने राम का, लक्ष्मण का, भरत का, शत्रुघ्न का ऐसा शानदार व्यक्तित्व बनाया कि उसका क्या कहना ! उर्मिला, सीता, कौशल्या का व्यक्तित्व कितना महान है ?

आज लोग चमत्कार की बात करते रहते हैं। मित्रो ! चमत्कार जादू हो सकते हैं। अगर चमत्कार को देखकर आप उसे व्यक्ति को प्रभावशाली मानें, अध्यात्मवादी मानें तो आपका यह दृष्टिकोण गलत है। बुद्ध भगवान् का एक शिष्य, एक राजा ने एक घोषणा कर रखी थी कि उसने एक बड़ा-सा बाँस गाड़ रखा था। उसके ऊपर एक सोने का कमण्डलु बाँध रखा था। उसने यह घोषणा कर दी कि अगर कोई व्यक्ति इस बाँस पर चढ़कर ऊपर के कमण्डलु को उतार लायेगा, उसे यह कमण्डलु दे दिया जाएगा तथा उसे सिद्धपुरुष मान लिया जाएगा। हम तथा हमारी पूरी प्रजा उसके शिष्य हो जाएँगे। वह पचास फुट ऊँचा था। कौन चढ़ेगा ? अनेक लोग गए। उन्होंने कहा—इस पर कौन चढ़ेगा ? अपने हाथ-पैर को जख्मी कौन करेगा ? सब वापस आ गये। उन्होंने कहा कि इस राजा को शिष्य बना पाना सम्भव नहीं। तभी भगवान् बुद्ध का एक शिष्य आया और वह उस पर चढ़ता चला गया तथा कमण्डलु उतार लाया। वह राजा एवं प्रजा का गुरु बन गया। यह कार्य पूरा करने के बाद गर्व से फूला हुआ वह बुद्ध भगवान के पास आया और यह कहा कि प्रभु ! हम आज एक महान् काम पूरा करके आये हैं। आपका नाम ऊँचा करके आये हैं। आपका चमत्कार दिखाकर आये हैं। उसने कहा—एक बड़ा-सा बाँस था, उसके ऊपर सोने का कमण्डलु था। हम उस पर चढ़ गये तथा ऊपर जाकर कमण्डलु ले आए। राजा की शर्त के अनुसार राजा तथा पूरी प्रजा हमारी शिष्य हो गई।

इस पूरी कथा को सुनकर भगवान बुद्ध बहुत ही गम्भीर हो गये तथा उन्होंने सारे-के-सारे शिष्यों की एक सभा बुलाई। उन्होंने सबको बिठाया तथा उस सोने के कमण्डलु को एक ऊँचे स्थान पर रख दिया। भगवान् बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा—हे शिष्यगण ! अगर अध्यात्म की यही परिभाषा रही, तो दुनिया का नाश हो जाएगा। कोई भी चालाक, बेईमान व्यक्ति इस प्रकार का चमत्कार दिखा सकता है और अध्यात्म का सर्वनाश कर सकता है। जिसे आप चमत्कार समझ रहे हैं, वास्तव में वह अभ्यास मात्र है। यह हमारा शिष्य होने के पहले एक नट था, जो बाँस पर चढ़ने-उतरने का खेल-तमाशा दिखाया करता था। गाँव में सर्कस दिखाता था। मित्रो ! अगर दुनिया का यही सिद्धान्त रहा कि जो कोई भी बाँस पर चढ़ जाएगा, तो वह सिद्धपुरुष हो जाएगा, तो उस परिस्थिति में संतों का,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

महात्माओं का, त्यागी पुरुषों का क्या होगा ? उस समय ज्ञानी का, विद्वानों का, बड़ा आदमियों का दुनिया में पता नहीं चलेगा। उस जमाने में नट जैसा आदमी, जो इस प्रकार के काम कर लेगा वह तो सिद्धपुरुष बन जाएगा ! उपर्युक्त कारणों से, हमारे कुछ ग्रंथों में जो कहानियाँ वर्णित हैं, उनको मैं महत्त्व नहीं देता हूँ। हनुमान जी के बारे में लोग जाने क्या-क्या कहते हैं ! हम उन्हें एक ब्रह्मचारी युवक मानते हैं, जिसमें भगवान् के कामों के लिए अपने जीवन को अर्पित कर दिया; अपनी पूँछ यानी लोकेषणा को तिलांजलि दे दी, समुद्र लाँघने जैसा कठिन कार्य सम्पन्न किया।

इन दिनों चमत्कार के नाम पर जो अध्यात्म को जकड़ दिया गया है, वह गलत है। अध्यात्म वास्तव में मनुष्य के अन्दर का अनुशासन है, मनुष्य की सेवा, मनुष्य की महानता, उदारता तथा उसकी, परोपकार वृत्ति है। यह कैसा अध्यात्म है ! आज तक ऐसा अध्यात्म कभी नहीं हुआ। अध्यात्म के अन्तर्गत महात्मा गाँधी, ईसा तथा भगवान् बुद्ध ने अपना-अपना स्थान बनाकर रखा है। उपर्युक्त गुणों को विकसित करके ही सच्चा अध्यात्मवादी बना जा सकता है। इसी पर व्यक्ति की उन्नति तथा समाज की प्रगति निर्भर है। ये सारे ऐसे आधार हैं, जो मनुष्य को बढ़ा सकते हैं; परन्तु इन चमत्कारों ने सत्यानाश कर डाला है। हमने आपको इस शिविर में मस्तिष्क साफ करने को बुलाया है। हम चाहते हैं कि आप यहाँ से आध्यात्मिकता के सही सिद्धान्त को समझकर जाएँ। हमने अगर अपने कपड़े को साफ नहीं किया, तो उस कपड़े पर कैसे गुलाबी, पीला रंग चढ़ाएँगे ? आपके भीतर की कीचड़ साफ करनी पड़ेगी। आप सड़ा हुआ दिमाग, कूड़ा भरा हुआ दिमाग लेकर आये थे। हमने यह कोशिश की है कि आप साफ हो जाएँ। आप मंत्र का चमत्कार देखने तथा अनेक कामना लेकर आए होंगे। आप जब हमारे पास आए हैं, तो आप जब यहाँ से जाएँगे तो हम एक गिलास दुःखहारी अवश्य देंगे, ताकि आपका दुःख, मुसीबत यहाँ से जाने पर दूर हो जाए। आपकी कठिनाई दूर हो जाएगी। एक आदमी एक बार डूब गया था, तो वह चिल्ला रहा था। एक दूसरा आदमी उसको बचाने पहुँचा। वह उसको बराबर कोहनी मारता रहता, ताकि सारा भार उस पर न आ जाए। इस प्रकार हम भी कोहनी मारते हैं कि आप आधा भार उठाएँ तथा आधा हम उठाएँगे। आपके पूर्व जन्म के जो कुसंस्कार हैं, कर्म हैं, उसका फल आपको भी उठाना होगा। आप एक काम करें। अगर आपको विश्वास नहीं है, तो आप में से हर एक, एक-एक करके हमारे पास आते जाएँ; हम आपको बतलाते जाएँगे कि आपकी क्या समस्या है; आपके ऊपर क्या विपत्ति आ गई है। इस प्रकार आप से बातें कर लूँगा, तो आप हलके हो जाएँगे। हमारे लिए एकान्त में मिलना सम्भव नहीं है। आप एक कागज में लिखकर हमें दे देंगे। हम वादा करते हैं कि आप पाँच कि. ग्रा. मुसीबतें लेकर आये थे, तो हम ढाई कि. ग्रा. दूर कर देंगे। अगर पूरा ठीक करूँगा, तो आप हमारी दुकान में नहीं आयेंगे। डॉक्टर के पास बुखार ठीक हो जाने पर कोई नहीं जाता है। अतः हम बुखार ठीक कर देते हैं तथा आपकी खाँसी बनाये रखते हैं, ताकि आप फिर आ सकें।

हमने प्रारम्भ से ही उपासना, साधना, आराधना की विधि सही ढंग से अपनाई है तथा आज हम आपको पूजा करने की विधि बतलाना चाहते हैं। पूजा में बहुत लाभ है। पूजा हमारी आध्यात्मिकता के विकास में एक सफल माध्यम है। हमने रोज पूजा की है। उपासना की है। मैं उस काम का मजाक उड़ाऊँगा—यह नहीं हो सकता है। मैं उपासना को और बढ़ाना चाहूँगा। जिसकी एक माला जप चल रहा है, उसे दो माला जपने को कहूँगा। अगर दो माला कर रहा है, तो पाँच माला के लिए कहूँगा। जो पाँच माला जप कर रहे हैं, उनसे यह निवेदन करूँगा कि तुम उत्कृष्ट भक्ति-भावना पैदा कर ऊँचा उठो। हमारे गुरुदेव ने एक उपासना हमें बतलाई—हर दिन नया जन्म, हर रात नई मौत—इसको जो आदमी याद करता रहता है, वह नेक, शरीफ, ईमानदार, उदार बना रहता है। यह मंत्र बहुत वजनदार है। आप गायत्री मंत्र को भूल जाना; परन्तु इसे मत भूलना। यह मंत्र आदमी के दृष्टिकोण को परिष्कृत करता है।

आदमी इस मंत्र को याद करने के बाद यह सोचता है कि हमारा जन्म बड़ा महान् है। आज हम ऐसा काम न करें, जिससे किसी को दुःख हो। आज हम दुःखियों की सेवा करें, ताकि प्रसन्नता हो। इस प्रकार की विचारधारा से आदमी संत हो जाता है। संत कपड़े रँगे हुए व्यक्ति को नहीं कहते हैं। संत उन्हें कहते हैं, जिनका हृदय निर्मल होता है, जिनके विचार ऊँचे होते हैं। वह कपड़े चाहे धोती या फुल पैण्ट पहनता हो; वह बाल रखता हो या न रखता हो, वह संत है। वेश बनाने से कोई संत नहीं हो सकता। हमने आपको पहला मंत्र यह संत बनाने हेतु बतलाया था। यह मंत्र जपने से आगे की उपासना-प्रक्रिया सरल हो जाती है।

आप यहाँ आये हैं, तो यह जानना चाहते हैं कि लक्ष्मी पाने का क्या मंत्र होता है या मुकदमा जीतने का क्या मंत्र है ? इस मंत्र को कैसे जपा जाए ? तुलसी माला से या रुद्राक्ष की माला से ? मित्रो ! यह सब चीजें मंत्रों से प्राप्त की जा सकती हैं, अगर व्यक्ति का उच्च व्यक्तित्व हो। सारे मंत्र इसके आधार पर ही फल देते हैं। हमें गायत्री मंत्र सिखाया गया। अगर सही ढंग से कोई भी मंत्र जपा जाए, उसके सिद्धान्तों को समझा जाए, तो वह बहुत फल देगी।

(१) निश्चित समय (२) निश्चित संख्या (३) निश्चित स्थान।

ये तीन चीजें अगर आपने उपासना में सम्मिलित कर ली हैं, तो आप देखेंगे कि उसके द्वारा कैसा लाभ एवं चमत्कार आपको मिलता है ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आपको प्रातःकाल टट्टी जाने, चाय पीने की आदत होती है। यह हो जाने पर आपका जकड़ा हुआ शरीर क्रियाशील हो जाता है। इसी प्रकार उपासना-पूजा करने से भी जो आपकी आत्मा जकड़ी हुई है, वह सक्रिय हो जाती है। यह एक प्रकार का क्रम है, जिसे शरीर-तंत्र आत्मसात् कर लेता है। लोग कहते हैं कि खाना खाने के बाद पान खाना चाहिए, बीड़ी-सिगरेट पीनी चाहिए। यह क्या है ? यह इनसान का अभ्यास क्रम है, जिसे शरीर-तंत्र पूरी तरह ग्रहण कर लेता है। हमें आप एक बजे सुला दीजिये, हम दो बजे उठकर बैठ जाएँगे। हमारे मस्तिष्क के कण ऐसे बन गए हैं। हमारा सिस्टम ऐसा बन गया है कि हम दो बजे रात में उठकर बैठ जाते हैं। यह बातें हर आदमी के लिए लागू नहीं होती हैं। आप जो भी पूजा-उपासना करते हैं, उसके लिए निश्चित समय का निर्धारण कर लेना चाहिए। यह ठीक है कि प्रारम्भ में पाँच बजे आँखें खुलने में दिक्कत होगी; परन्तु जब आपको आदत पड़ जाएगी और आप उपासना नहीं करेंगे तो आपको ऐसा महसूस होगा कि आपने खाना नहीं खाया है। यह निश्चित समय का महत्त्व है। अभ्यास करने पर यह कार्य ठीक चलने लगेगा। आदमी अगर नियत समय पर उपासना करने लगे, तो उसका मन जो भागता है, वह भी भागना बन्द हो जाएगा। रेलवे में जो गार्ड हैं, ड्राइवर हैं, उन्हें हम पाँच बजे उपासना के लिये कैसे कहें ? उनके लिये जो समय में हो जाए, वही ठीक है। न होने से तो कुछ करना अच्छा है। एक आदमी चारपाई पर भजन कर रहा था। किसी दूसरे आदमी ने पूछा कि तुम क्या करते हो ? उसने कहा कि हम तो कुछ भी नहीं करते हैं। वास्तव में वह आदमी ठीक है, जो कम-से-कम चारपाई पर बैठकर तो कर लेते हैं। उपासना न करने से थोड़ा भी करना श्रेयस्कर है। उपासना जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है—यह मानकर हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम उपासना समय पर करेंगे।

दूसरी बात है निश्चित संख्या। मित्रो ! मात्रा बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। खान-पान के सन्दर्भ में भी हमारी मान्यता है कि हमें मात्रा के अनुसार खाना-पीना चाहिए। अगर आप किसी दिन एक पाव दूध पियेंगे, दूसरे दिन आधा किलो, तीसरे दिन दो किलो, तो इससे क्या होगा ? आपका पेट गड़बड़ हो जाएगा। इसलिए निश्चित संख्या माला की भी बनाई गई है। इसका मतलब कम से भगवान नाखुश होते हैं तथा ज्यादा करने से खुश होते हैं—ऐसी बात नहीं है। उपासना के लिये नित्य की संख्या नियत होनी चाहिए, वैसे ही जिस प्रकार पेट को देखकर हम रोटी खाते हैं। व्यायाम का भी नियम होता है। अखाड़े में पहलवान दण्ड-बैठक लगाते हैं, तो उसकी भी संख्या नियत होती है। किसी दिन कम तथा किसी दिन ज्यादा, तो उसका लाभ नहीं मिलता है, उसका शरीर बीमार हो जाएगा। नियमितता का बड़ा महत्त्व है। पुराने जमाने में हाथ से चलाने वाली चीज माला थी। पुराने जमाने में यही घड़ी का काम करता थी। प्राचीनकाल में धूप घड़ी होती थी। एक पानी की घड़ी होती थी। उसी प्रकार माला का जप करके हम समय का मूल्यांकन करते थे। आप तीन माला, पाँच माला जप करते हैं। इसका अर्थ है—आप १५ मिनट जप करते हैं, आप आधा घण्टा जप करते हैं। यह माला का मूल्यांकन था, आप अँगुली से भी निश्चित जप कर सकते हैं; परन्तु निश्चित संख्या आप अवश्य रखें। हमारा ख्याल है कि आप १५ मिनट जप करेंगे, तो आपका तीन माला का जप अवश्य हो जाएगा। कोई कहता है कि महाराज जी हमने २५ माला एक घण्टे में कर डाली। मित्रो ! एक घण्टे में १० या ११ माला तो हो सकती हैं, २५ माला नहीं। इसका मतलब है कि वह उस रेलगाड़ी के समान है, जो दिल्ली से चली इलाहाबाद, पटना, हावड़ा रुकी। इस प्रकार माला का जप उनका ही रहा है। उसमें वाक्य की अशुद्धि होने की ज्यादा सम्भावना है।

हमारा विचार है कि औसतन हर आदमी को कम-से-कम १५ मिनट की उपासना अवश्य करनी चाहिए। अगर आधा घण्टा या एक घण्टा कर सकते हों, तो और भी ठीक है; परनतु १५ मिनट तो जप अवश्य ही करना चाहिए। यानी तीन माला का जप अवश्य करना चाहिए। अगर इतना आप करेंगे, तो आपको अवश्य कुछ लाभ मालूम पड़ेगा तथा आप लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

तीसरी बात एक और है उपासना के सन्दर्भ में। एक नियत स्थान अवश्य होनी चाहिए। हमारे स्थान थोड़े परिवर्तित हुए हैं। एक स्थान हमारा जन्म-स्थान, जहाँ हमने अपने गुरुवर का आत्म-साक्षात्कार किया था; जहाँ हमने अखण्ड दीपक जलाया। दूसरा स्थान हमारी उपासना का आगरा शहर रहा। दैनिक पत्रिका का हम सम्पादन करते थे। वहाँ पर हमने किराये पर एक मकान लिया और उसके बाद अपना दीपक आँवलखेड़ा, अपने जन्मस्थान से उठा लाए और आगरा शहर में उपासना की। वहाँ मथुरा अंतिम स्थान रहा। वहाँ ८ × ८ हमारी कोठरी है। अखण्ड ज्योति वहीं पर लिखता रहा हूँ। एक घण्टे में एक लेख लिखकर रख देता था। हम तख्त पर बैठकर जो लेख लिखते थे, वह चमत्कारिक होता था। आपने सिंहासन बत्तीसी की बात सुनी होगी। हमारा यह तख्त उसी प्रकार का था, जैसा राजा भोज का वह सिंहासन। वह हमारे जीवन में चमत्कार उत्पन्न कर देता था। उस कोठरी में दो चारपाई नहीं बिछ सकती हैं। हम जब बाहर शाखाओं में चले जाते, तो हमारा मन पूजा में नहीं लगता था। हम जब वह कोठरी में रहते, तो हमारा मन लग जाता था। यह मैं स्थान की बात बतला रहा हूँ, जो पूजा-उपासना के लिए आवश्यक है। बहुत-से लोग ऐसे हैं, जिनके छोटे-छोटे मकान हैं। वे बेचारे अपने कमरे के एक कोने में बैठकर भगवान् का भजन कर लेते हैं, तो वह क्या कम है !

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मित्रो ! हमारा यह कहना है कि आपकी पूजा की चौकी एक स्थान पर हो तथा आपका पूजा करने का आसन हो, तो वह ठीक हो जाता है। आप उस स्थान पर एक सीमेण्ट की लकीर खींच सकते हैं तथा अपनी मुन्नी से कह सकते हैं—बेटी ! तुम इधर को मत आना। आप जब वहाँ जाएँ, तो उसी समय जाएँ, जब आपकी उपासना का समय हो। इस प्रकार निश्चित संख्या, निश्चित समय, निश्चित स्थान हो जाएँगे, तो आपकी उपासना सुव्यवस्थित कहलाएगी तथा आप प्रगति की ओर बढ़ सकेंगे।

आपने प्राचीनकाल की यह बात सुनी होगी कि ऋषियों के आश्रम में शेर एवं गाय एक साथ रहते थे और वही शेर जब जंगल में चला जाता था, तो वह उसी गाय को जो जंगल में चर रही होती थी, उसको मारकर खा जाता था। मित्रो ! यह है स्थान का प्रभाव, जो मैं आपको बतलाना चाह रहा था। मैं यह कहना चाहता था कि एक तरह की उपासना जब एक जगह होती है, तो वह स्थान संस्कारवान बन जाता है तथा उस स्थान का प्रभाव मनुष्य पर पड़ने लगता है। ये तीर्थ जो प्राचीनकाल में बनाये गये थे, वे इसी आधार पर बनाये गये थे। वहाँ हमारे पूर्वज ऋषि एवं मुनियों ने उपासना सम्पन्न की थी। दस अश्वमेध यज्ञ जहाँ पिछले दिन हुए, उस स्थान का नाम दशाश्वमेध घाट पड़ गया। यह स्थान काशी में है। एक स्थान जंगलों में है। गंगा के तट पर, जिसका नाम है—देवप्रयाग। उस स्थान पर भगवान राम ने तप किया था। अपना राज-पाट लव-कुश को सौंपकर तपस्या करने योगी उपासना करने चले गये। आज भी हिमालय, बद्रीनाथ जाने में देवप्रयाग पड़ता है, जहाँ अलकनन्दा बहती है। लक्ष्मण-झूला एक स्थान ऋषिकेश में काली कमली वालों के आश्रम के पास है। वह लक्ष्मण जी का तपस्थान है, जहाँ पर लक्ष्मण जी ने उपासना की थी। भरत जी की उपासना का स्थान मुनि की रेती को बतलाया जाता है। शत्रुघ्न जी का स्थान ऋषिकेश बतलाया जाता है। गंगाजी का यह तटवर्ती स्थान पहले बिल्कुल जंगलों से भरा हुआ था; परन्तु उच्चकोटि के महामानवों ने वहाँ तप किया था, उपासना सम्पन्न की थी, इसी कारण से अब वे तीर्थस्थान बन गये हैं। इस स्थान पर आदमी के जाने के बाद वहाँ वह शान्ति अनुभव करता है। उस स्थान पर उसे उल्लास आता है। महर्षि रमण के आश्रम में हमें काफी समय रहने का मौका मिला है। हमने वहाँ देखा है कि एक बन्दर वहाँ प्रवचनों के समय पर आ जाता था तथा चुपचाप बैठा रहता था। महर्षि रमण आ जाते थे तथा अपने आसन पर बैठ जाते थे। वे अपनी जुबान से नहीं परावाणी से बोलते थे। उनके आते ही सब लोग चुपचाप बैठ जाते थे। उस समय हर आदमी एक ही बात सुना करता था, जो भी वहाँ पर मौजूद रहते थे। इतना ही नहीं, जब महर्षि के व्याख्यान का समय होता था तो आश्रम के सभी पशु-पक्षी, गिलहरी आदि आकर उस स्थान पर एकत्रित हो जाते थे तथा बैठकर उनकी बातें सुनते थे। जब तक उनका व्याख्यान होता था, सब शान्त रहते थे। वातावरण मित्रो ! बनाया जाता है बड़े श्रम से।

पूजा का स्थान जहाँ हमारा है, वहाँ का एक विशेष वातावरण है। हमारे पूजा के कमरे में कोई आता है, उसे हम घुसने नहीं देते हैं। वे केवल बाहर से दर्शन करके वापस जाते हैं। आप नहीं जानते हैं, अनेक लोगों में अनेक प्रकार के संस्कार होते हैं, जो वातावरण को बना भी सकते हैं तथा वातावरण को बिगाड़ भी सकते हैं। इसलिये हम कमरे में किसी को नहीं जाने देते हैं। केवल हम तथा हमारी धर्मपत्नी ही उस कमरे में जाते हैं। हमारी माताजी भी कभी-कभी जाती हैं। वे जाकर कभी-कभी अखण्ड दीप में घी बगैरह डालकर आती हैं। अब हमारी माताजी लगभग ८० वर्ष की हो गई हैं। शरीर भी कमजोर हो गया है, अतः अब हम लोगों ने उन्हें छुट्टी भी दे दी है। अब हम तथा हमारी धर्मपत्नी ही दीपक की देख-रेख करते हैं। उस कमरे में बैठने से हमारे अन्दर कैसे-कैसे उल्लास एवं उमंगें आते रहते हैं, उसका वर्णन हम आपसे नहीं कर सकते हैं। सिंहासन पर बैठकर जो हालत लकड़हारे, गड़रिये की हो जाती है, वही हालत हमारी भी हो जाती है। पूजा की कोठरी में बैठकर उसके बाद तो हम सामान्य आदमी हो जाते हैं। यह हम आपको उपासना की बाबत बतला रहे हैं। जो हमें नियम-कानून बतलाये गये हैं, सिखलाये गये हैं, वही मैं आपको सिखलाना चाहता हूँ तथा उसी रास्ते पर चलाना चाहता हूँ। हमने इससे लाभ प्राप्त किया है। हम चाहते हैं कि आप भी इसी प्रकार उपासना करके लाभ प्राप्त करें। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

उपासना की सफलता साधना पर निर्भर

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

उपासना के बारे में आज हम आप लोगों को बताएँगे। नजदीक बैठने से सुगन्धि भर जाती है। फूल के नजदीक आप बैठेंगे सुगन्धि आयेगी। गन्दगी के पास आप बैठेंगे, गन्दगी की गन्ध आयेगी। आप जैसे लोगों के साथ बैठेंगे, वैसा असर पड़े बिना रह नहीं सकता। इसलिये भगवान् के साथ हमको बैठना चाहिए। उससे अच्छा शानदार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति, उससे अच्छा मालदार व्यक्ति, ज्यादा बुद्धिमान और सामर्थ्यों से भरा हुआ और कोई नहीं हो सकता। इसलिए उसके साथ बैठना हमारे लिए बुद्धिमानी भी है और हमारे लिए फायदेमन्द भी है। मैं अपने जीवन में उन्हीं के साथ बैठता रहा हूँ। भगवान के साथ बैठने में हमने जिन्दगी निकाल दी। कैसे ? भगवान की पूजा करने में ? नहीं, पूजा करने में नहीं। हनुमान के तरीके से सारी जिन्दगी निकाल दी। जिस दिन से हनुमान जी की रामचन्द्रजी से मुलाकात हुई, उस दिन से लेकर लंका-दहन की मुसीबत के वक्त और रामराज्य स्थापना के अच्छे वक्त तक। फिर उन्होंने पीछे मुड़कर ही नहीं देखा कि हमारा भी कुछ है क्या ? जिसको सौंप दिया, उसको सौंप दिया। बेटी जिसकी हो गई, उसकी हो गई। ऐसा थोड़े ही होता है कि सौंपे ही नहीं। नहीं, ऐसा नहीं होता है। वह तो सौंपना ही पड़ता है। हमने अपनी जिन्दगी को सौंप दिया है।

अब इसके बाद दूसरी धारा—साधना। साधना के माने ? साधना के माने यह है कि अपने आप को साध लेना। अपने आप को साध लेने के माने क्या है ? इसका माने यह है कि अपनी पात्रता को इस लायक बना लेना कि कोई हमको देने के योग्य समझे और हमको दे। पात्रता हमारी विकसित न हुई, तो कोई हमको देगा ही नहीं। आप पढ़े नहीं हैं, लिखे नहीं हैं, एक आँख खराब है, चला नहीं जाता है, लँगड़े-लूले हैं, शादी के लिए इच्छुक हैं। फलानी लड़की भी थी पास में, फलानी बी. ए. पास है, फलानी एम. ए. पास है, फलानी को संगीत आता है, फलानी बहुत खूबसूरत है। इसका क्या मतलब है ? यही कि साहब उसके साथ शादी हो जाती, तो हमारा जीवन अच्छा होता। नहीं, उसके साथ आपकी शादी नहीं हो सकती, क्योंकि आप उसके पात्र नहीं हैं। पात्रता इस संसार में सबसे बड़ी चीज है। चाहे संसार में देख लें, चाहे भगवान के यहाँ देख लें, नियम एक-से ही लागू होते हैं। चुनाव कमीशन बैठता है, तो उसमें इण्टरव्यू होता है। जो उसमें से अच्छी डिवीजन लेकर आते हैं, उनको अफसर की पदवी दी जाती है। सरकार वजीफा केवल उनको दिया करती है, जिनकी कि डिवीजन अच्छी आती है। फोर्थ डिवीजन आती है, हम गरीब हैं, तो हम क्या करें ? गरीब हैं, तो डिग्री नहीं लीजिए। कमाइये, खाइये, सरकार से क्या मतलब ? आपके अन्दर योग्यता है, क्षमता है, तो आपको वजीफा मिलेगा और वजीफा के द्वारा आप ज्यादा उन्नतिशील बन सकें, इसीलिए आपको सहायता दी जाएगी। यही कायदा भगवान के यहाँ है। आप पात्र हैं, तो आपको सब मिलेगा। आप अगर कुपात्र हैं, तो कुपात्र के लिए बाप भी वसीयत कर जाते हैं कि हमारा बेटा बड़ा कुपात्र है। नाती जब हो जाए, तब उसको सम्पत्ति में हक मिलेगा, बेटे को नहीं। यह शराब पीता है, जुआ खेलता है। इसको हमारी जायदाद में से कोई हक नहीं मिले। संसार में पात्रता का रिवाज है, तो भगवान् के यहाँ क्यों नहीं होगा ? वर्षा हुआ करती है, तो वर्षा में पानी सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कि हमारे पास पात्र हो। आपके पास थाली है, तो रखिए आप खुले में। थाली आपको भरी हुई मिलेगी। रात को वर्षा हो रही है। तालाब इतना बड़ा है, तो तालाब भरा हुआ मिलेगा। आपके पास छोटी कटोरी है, तो छोटी कटोरी भरी हुई मिलेगी। आप यह नहीं कह सकते कि आपकी पात्रता से कम है और पात्रता से ज्यादा पानी की अगर आप आशा करते हैं, तो आप गलती करते हैं और गलती आपकी ऐसी है कि आपको पश्चाताप करना पड़ेगा और दूसरों से शिकायत करनी पड़ेगी कि उन लोगों ने हमारा साथ नहीं दिया; भगवान् ने भी हमारी सहायता नहीं की; राम और गुरुजी ने भी सहायता नहीं की; हनुमानजी ने भी सहायता नहीं की। कोई नहीं करेगा। आप सुपात्र हैं, तो ठीक है और अगर आप सुपात्र नहीं हैं, तो आपकी कोई सहायता नहीं कर सकता है।

आपको मालूम है कि खेत में बुआई से पहले जुताई करनी पड़ती है। आपको मालूम है कि कपड़े की रँगाई से पहले धुलाई करनी पड़ती है। साधना उसी का नाम है। अपने आपको हम इस तरह का बना लें, जिसमें हमको इस लायक समझा जाए कि हमको कोई कीमती वस्तुएँ दी जा सकें। अगर हम इस लायक हैं कि हमको कोई कीमती वस्तु नहीं दी जा सके, तो कोई नहीं देगा आपको। बहुत छोटा बच्चा है कहे—साहब ! बैंक की और तिजोरी की चाबी हमको दीजिए। नहीं, आप चाबी को सँभाल नहीं सकते। इसलिए अभी नहीं। कहे—साहब ! ब्याह कर दीजिए। अरे भाई ! पाँच वर्ष के बच्चों के कहीं ब्याह होते हैं ! इतना बड़ा हो जाएगा, बहू को कमाकर खिलाएगा तब तो शादी होगी, कि अभी कर दीजिये। साहब ! मोहल्ले में सब बड़े लड़कों की शादियाँ हो गईं; पर आप तो अभी नहीं करेंगे। जब इसका पात्र हो जाएगा, उस समय हम जरूर करेंगे, लेकिन अभी करेगा, तो बेकार की मुसीबत आ पड़ेगी। अभी शादी का कोई प्रश्न नहीं है। आपको ध्यान भगवान के ऊपर नहीं देना चाहिए। भगवान जी सहायता करेंगे कि नहीं करेंगे। जब आप जिस लायक पात्र होते चले जाएँगे, उस-लायक आपको बराबर सुविधाएँ मिलती चली जाएँगी। कन्या बड़ी होती जाती है, बाप को उसी हिसाब से चिन्ता बढ़ती चली जाती है। उसके कपड़े लेने का, उसके ब्याह-शादी का सब इन्तजाम करता है। जब वो उसकी पात्र नहीं हुई है, तब न उसकी शादी होती है, न उसको बड़ी कीमती चीज दी जाती है, न कोई सोने की अँगूठी उसको दी जाती है। कोई छीन लेगा। इससे दूसरा भगवान से कुछ प्राप्त करने का या भगवान् के नजदीक, भगवान के भक्त होने का सबूत है ? नहीं। अपने आपको सही कर लेना, अपने आप को सँभाल लेना, अपने आप की गलतियों को देख लेना, अपने आपकी गलतियों को ठीक करना। इतना करते ही हमें पात्रता के अनुरूप सब कुछ मिल जाता है। भगवद् सहायता का यह सबसे बड़ा सबूत है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक थी माँ। उसका छोटा-सा बच्चा था। वह कहीं गई थी। आयी तो बच्चा रोया, दूध पीने के लिए और मम्मी की गोदी में जाने के लिए। वह बोली—ठहर, ठहर। क्यों ? उस कम्बख्त ने टट्टी कर ली थी और टट्टी में अपने कपड़े भी सान लिये थे और हाथ भी सान लिये थे। उन्होंने कहा—तेरे कपड़े बदल दें, तुझे स्नान करवा दें, हाथ धो लें, तौलिए से पोंछकर साफ कर दें। जब साफ हो जाएगा, तब गोदी में उठाएँगे। नहीं, हम तो अभी आयेंगे। अभी गोदी में नहीं। चाहे रोओ, चाहे जो भी करो। जब तक तुम साफ-सुथरे नहीं हो जाते, तब तक गोदी में लेने का कोई योग नहीं है। बस, माँ ने उसको पकड़ लिया जबरदस्ती और उसको नहलाया। नहलाने के बाद उसके कपड़े बदले। उसे तौलिए से पोंछा, सुखाया, फिर छाती से लगाया, दूध पिलाया। यह बात आपकी हर जगह लागू होती है और भगवान के यहाँ तो यह खासतौर से लागू होती है। संसार में भी रिवाज यही है।

आपने देखा है सर्कस के जानवरों को ? उनको सिखाने वाले मास्टर जब सिखा लेते हैं, तो एक-एक जानवर ढेरों पैसे कमाकर लाता है। सपेरे साँप को सिखा लेते हैं। मदारी, रीछ और बन्दरों को सिखा लेते हैं। सर्कस वाले शेरों को, बाघों को और हाथियों को सिखा लेते हैं। ये शेर और बाघ कैसे भयंकर और खूँख्वार होते हैं ! फिर भी सर्कस वालों के लिए रोजाना ढेरों आमदनी के स्रोत साबित होते हैं। ये ही शेर, ये ही चीते, ये ही हाथी और ये ही कुत्ते, सर्कस वाली कम्पनी के जो सौ आदमी काम करते हैं, सभी को खुराक देते हैं, कपड़ा देते हैं, रोटी देते हैं, पेन्शन देते हैं, प्रोवीडेण्ट फण्ड देते हैं। सबके लिए इन्तजाम करते हैं—ये ही जानवर। क्यों ? क्योंकि इनको सिखा लिया गया है और सिखाये न गये होते तब ? तब, ये खूँख्वार रहते और इनको देखते ही आदमी भाग खड़ा होता अथवा ये आदमी का नुकसान कर देते अथवा ये अपना नुकसान कर लेते या मारे जाते। कहीं कोई आदमी चीते को देख करके, भेड़िये को देखकर के उसको जिन्दा रहने देगा ? या तो अपनी जान गँवाएगा या उसकी जान ले लेगा, लेकिन सिखा लेने के बाद में वे जान लेने वाले जो जानवर हैं, ये भी उपयोगी और काम के बन जाते हैं।

ऊसर जमीन में आप बोएँ तो खाक भी पैदा नहीं होगा; लेकिन उस पर से एक-एक फुट मिट्टी उठा ली जाए। मिट्टी उठाने के बाद में कहीं दूसरी जगह से अच्छी मिट्टी उठा करके उपजाऊ बना ली जाए, तो आप उसमें खेती कीजिए, बगीचा लगाइये, चाहे जो कुछ काम कीजिए, आपको लाभ होगा; लेकिन पहले जमीन को तो अच्छी बनाइये। नहीं साहब ! उसमें कोई पैदावार नहीं है। हम क्या करें ? पैदावार नहीं है ? जमीन तो साफ की नहीं आपने। जमीन को साफ किये बिना इसमें कोई चीज पैदा नहीं हो सकती। माली है, कलम लगा-लगा करके कैसे बढ़िया बगीचे लगा लेता है ? एक-एक पेड़ के ऊपर दस-दस तरीके के फूल आते हैं। एक-एक पेड़ के ऊपर चार-चार तरीके के फल आते हैं। उसकी टहनियों को काट करके माली यही किया करता है कि लोगों को तमाशा दिखाने के लिए और लोगों को अपनी होशियारी दिखाने के लिए एक ही कलम में, एक ही पेड़ में कई तरह की कलमें लगा देता है। उसमें से कई तरह के फूल आते हैं, कई तरह की खुशबू आती है। ये माली का किस्सा है। चलिये माली की एक बात याद आ गई मुझे। एक राजा ने दो माली रखे थे। दोनों मालियों के सुपुर्द एक-एक बगीचा किया गया। एक माली दिन और रात राजा के बगीचे में लगा रहा और एक बरस के भीतर उसे स्वर्ग जैसा बना दिया। इतना फूलों और फलों से लदा हुआ बना दिया ! इतना खूबसूरत बना दिया ! नये पौधे लगा दिये। देखते ही उसमें घुसने को हरेक का मन चलने लगा। एक और माली था। उस माली ने राजासाहब की भक्ति दिखाने के लिए राजासाहब का फोटो लगाया। उस पर चन्दन रोज चढ़ाया, उसकी आरती उतारी, एक सौ आठ परिक्रमा रोज की; लेकिन जो उसकी जिम्मेदारी थी, उस पर ध्यान नहीं दिया। बगीचे की ओर ध्यान नहीं दिया। बगीचा सूख गया। जिस हैसियत में बगीचा दिया गया था वह बिल्कुल भी नहीं रही। जब सारा वक्त दूसरे काम में लगा देगा, तो यह कैसे होगा ?

आप माली हैं और आपको भगवान के बगीचे के लिए, सेवा करने के लिए भेजा गया है। आप हमेशा ध्यान रखिये कि माली हैं। हमने हमेशा ध्यान रखा कि हम केवल माली हैं और माली होने की वजह से अपना देश, अपना धर्म, अपनी संस्कृति और अपना समाज, अपने पड़ोसी और अपना घर, अपनी गृहस्थी और अपनी बीबी और अपने बच्चे जिन लोगों से हमारा ताल्लुक था, उन सबके तईं अपने कर्त्तव्य निभाने के लिए चौबीसों घण्टे हमारा ध्यान बना रहा। साधना है ये भगवान की। सब भगवान के ही तो हैं। जो कोई भी प्राणी है, सब भगवान के हैं। जो कुछ भी इस संसार में है, भगवान का है। विराट् रूप की बात आपको नहीं मालूम है ? भगवान का विराट् रूप। अर्जुन कह रहा था—भगवान का हमको आँखों से दर्शन करना है, तो भगवान बार-बार कहते थे—बाबा ! कहीं आँखों से दर्शन होते हैं क्या ? हमें देख लो। नहीं साहब ! आपको नहीं। हम तो भगवान को देखना चाहते हैं। तो उन्होंने ज्ञान की आँखें दीं और ये कहा कि यह विराट्, जो सारा संसार है, यही भगवान है। ठीक इसी तरह से कृष्ण की माँ कह रही थी कि तू तो हमारा लड़का मालूम पड़ता है और हमने तो पिछले जन्म में तपस्या की थी कि हमारे यहाँ भगवान पैदा होगा। तू तो भगवान नहीं मालूम पड़ता, बच्चा मालूम पड़ता है। उन्होंने कहा—माताजी ! मैं तो बच्चा हूँ, पर हूँ भगवान ही अगर देखने का आपका वास्तविक मन हो तो ..... । उन्होंने मिट्टी खाने के बहाने अपना मुँह खोल दिया, तो माँ ने सारा विराट् ब्रह्माण्ड देखा। कौशल्या के सामने भी यही बात हुई। कौशल्या को भी यही शक था कि यह तो लड़का मालूम पड़ता है। यह तो भगवान श्री नारद जी ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा था—तेरे भगवान पैदा होगा, तो यह कहाँ भगवान है ? तो उन्होंने कहा—ले देख ! विश्वास कर बचपन में हँसते हुए अपना मुँह खोल के दिखाया—मैं नहीं हूँ भगवान। यह विराट् स्वरूप देख। विराट् माने यह सारा विश्व है। यह ब्रह्माण्ड जो फैला हुआ है, यह वास्तव में भगवान का विराट् रूप है। कहीं आँखें हैं इसकी, कहीं कान हैं, कहीं क्या है, कहीं क्या है ? विराट् रूप की तस्वीर कभी आपने कहीं देखी होगी। यह सारा संसार विराट् है। विराट् की सेवा करने के लिए त्याग और बलिदान करने के लिए, इसको अच्छा, समुन्नत और सभ्य बनाने के लिए जो भी हम प्रयत्न करते हैं, आप यह मानकर चलिए कि भगवान के लिए किया जा रहा है और सिर्फ भगवान की पूजा और सेवा की जाती है तो ? तो क्या सेवा और पूजा नहीं करनी चाहिए ? वो भी बता देंगे बाबा ! उसमें क्या ऐसी बड़ी-सी बात है ? वो कोई बड़ी-सी बात नहीं है। माँगना हो, तो हाथ जोड़कर माँगिए या झोली में माँगिए या टोपी में माँगिए अथवा कपड़े में माँगिए। अरे बाबा ! इसमें क्या रखा है ? असली बात देख। असलियत देख, जिसमें भगवान प्रसन्न होते हैं। भगवान का नाम एक घण्टे में कितनी बार ले लिया, माला कितनी बार घुमा ली ? ये भी बता देंगे। आप जाइये, आप घबराइये नहीं। आपके ऊपर ये जल्दी पड़ी हो कि चिड़िया को पकड़ने के लिए बाजरे का दाना चाहिए कि मक्के का दाना चाहिए कि चावल का दाना चाहिए कि इधर पूरब को मुँह करके बैठें कि इधर पश्चिम को मुँह करके बैठें। ये बेकार की बातें हैं। सारे जीवन को भगवान के लिए सुपुर्द करना पड़ता है। भगवान की भक्ति घण्टे भर में नहीं होती, आधे घण्टे में नहीं होती। चौबीसों घण्टे सोते और जागते प्रत्येक समय ये करना पड़ता है और बराबर यह ध्यान रखना पड़ता है कि हम भगवान् के प्रति, उसके संसार के प्रति अपने कर्त्तव्यों को निभा रहे हैं कि नहीं; हमारे अन्दर गलतियों में कमी हो रही है कि नहीं।

आपने सुना है ? आपने देखा है कि नहीं ? मिट्टियों से धातुएँ जब निकलती हैं, तो कच्ची निकलती हैं। लोहा जब निकलता है, तो जमीन में से खोदने के बाद बिल्कुल कच्चा होता है; लेकिन आग में उसको तपाते हैं; तो तपाने के बाद में उसके अन्दर जो मिट्टी मिली हुई होती है, वह जल करके खत्म हो जाती है और जो केवल लोहा होता है, बाहर आ जाता है। तपाना पड़ता है। तपाना माने साधना करना। यह है जीवन की साधना। जो हमारे जीवन में अस्त-व्यस्तता है वो सारी अस्त-व्यस्तताओं को जब तक आप दूर नहीं करेंगे, तब तक आप साधक नहीं कहलायेंगे। साधना भगवान् की नहीं करनी पड़ती है। भगवान को कहाँ से इतना टाइम है ! कहाँ से इतनी फुर्सत आयी कि आपकी साधना का हिसाब लगाता फिरे और यह देखता फिरे कि आप भगवान की साधना कर रहे हैं। अपनी कीजिए। अपनी साधना करनी पड़ती है लोहे की तरह। सोने में कुछ मिला हुआ होता है; लेकिन सुनार इसको आग पर तपाने के बाद में, उसमें से जो खराब चीजें हैं; निकाल देता है। सोने के बढ़िया-बढ़िया जेवर बनाता है। नहीं साहब ! हम सोने को तपाने नहीं देंगे, तो बाबा ! इसमें से जेवर नहीं बनेंगे। जेवर बनाने के लिए तपाया जाता है, सोने को और महान् बनने के लिए इनसान को तपना पड़ता है; साधक बनना पड़ता है; अपनी साधना करनी पड़ती है; अपने गुण, कर्म और स्वभाव—इन सबको ठीक करना पड़ता है। जब तक इनको ठीक नहीं करेंगे, तब तक किस तरीके से भगवान को प्राप्त करेंगे ? तलवार को जब तक घिसा नहीं जाएगा, तब तक उस पर धार नहीं आयेगी तो बताइये, फिर कैसे चलेगी ? बिल्कुल खपच्ची जैसी होगी। किसी को उससे मार देंगे तो उसको जरा-सी चोट कहीं लग जायेगी, दर्द हो जाएगा, खून निकलने लगेगा। किसी का सिर उससे नहीं काट सकते आप, जब तक धार नहीं है। इनसान के ऊपर धार चढ़ाना अथवा साधना करना—दोनों एक ही बात हैं। हीरा जब खदान से निकाला जाता है, तब इसी तरह का टेढ़ा-मेढ़ा पत्थर का टुकड़ा होता है; लेकिन जब मशीनों के द्वारा जौहरी उसके ऊपर का मैल काट देता है, उसका टेढ़ापन सीधा कर देता है, तो हीरे की कीमत बढ़ जाती है। अनगढ़ हीरे की कीमत नहीं आँकी जाती है। तराशे हुए हीरे की कीमत आँकी जाती है। गन्दा पानी किसी की आँख में डाल दें तो आँखें खराब हो जाएँगी। डिस्टिल्ड वाटर—हवा में उड़ाया हुआ वाटर—जब साफ हो जाता है, तब आँख में डाला जाता है; पीने की दवाओं में मिलाया जाता है; खराब पानी उसमें नहीं मिलाया जाता है। आप खराब पानी हैं। अपने पानी को ठीक कीजिए। ठीक नहीं करेंगे, तो फिर बात कैसे बनेगी ? भगवान को अपने घर में बुलाने का मन है, तो आप सफाई नहीं करेंगे क्या ? शादी जब घर में होती है, तो घर की सफाई आप करते हैं कि नहीं ? या घर को ऐसे ही गन्दा पड़ा रहने देते हैं मेहमान आयेंगे, रिश्तेदार आयेंगे, मिलने-जुलने वाले आयेंगे, बैठेंगे, तो अपने मकान को तो साफ करके रखें। दिवाली आती है, तो लक्ष्मी जी आती हैं। दिवाली पर घर की पुताई होती है कि नहीं, होती है ? नहीं पोतेंगे, तो लक्ष्मीजी क्या करेंगी गन्दे घर में आकर ? वे गन्दे घर में नहीं आतीं। भगवान जो हैं, गन्दे घर में नहीं आते। आपने अपने मन में, अपने स्वभाव में, अपने कर्म में गन्दगियाँ भर रखी हैं तो ऐसे में भगवान क्या करेंगे ? कहाँ जाएँगे ? कैसे रहेंगे ? भगवान के लिए जगह तो बनाइये न साफ। भगवान के लिए जगह साफ करें। जगह से मतलब कमरे से नहीं है मेरा। कुर्सी को साफ करें, सिंहासन को साफ करें, बर्तनों को साफ करें। ठीक है, मर्जी हो, तो करना चाहिए आपको; लेकिन आपने जीवन-साधना की है कि नहीं ? महत्त्वपूर्ण बात यह है। उपासना तभी फलती है। आपने उपासना जीवनभर की है; पर साधना के बिना वह बेकार है। आप आधे घण्टे उपासना करते हैं, यह अच्छी बात है। कर लेते हैं, तो ठीक है और नहीं करते हैं, तो भी ठीक है; लेकिन जीवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

साधना आपके लिए नितान्त आवश्यक है। इससे कम में भगवद्प्राप्ति सम्भव नहीं।

मनुष्य का जीवन एक कमण्डलु के तरीके से है। आप उसमें सुराख कर देंगे तो डूबेगा। यह नाव के तरीके से है। उसमें सुराख जहाँ कहीं भी होंगे, नाव डूबेगी। आप वासना के सुराख, तृष्णा के सुराख, अहन्ता के सुराख, इसी प्रकार सवारी करेंगे, तो यह नाव डूबेगी कि नहीं, बताइये आप ? यही है भवसागर, जिसमें हम कहते हैं—हे भगवान ! भवसागर से निकालिये। हमको बन्धन से मुक्त करिये। मुक्तियाँ आप चाहते हैं, तो मुक्ति किससे चाहते हैं, बताइये ? ये ही हैं तीन। इन तीन से छुटकारा पाना आपके हाथ में है। भगवान के हाथ में मुक्ति नहीं है। आप प्राप्त कर लीजिए मुक्ति। वासना से मुक्ति प्राप्त कर लीजिए, तृष्णा से मुक्ति प्राप्त कर लीजिए, अहन्ता से मुक्ति प्राप्त कर लीजिए। इन तीन से मुक्ति प्राप्त कर लीजिए और फिर देखिए कि आपके इसी जीवन में मुक्ति है कि नहीं। 'जीवन-मुक्त' यह भी एक शब्द आता है। मुक्ति उसी को नहीं कहते हैं, जो कि यहाँ से मरने के बाद में जब भगवान् के यहाँ जाएँगे, तो वहाँ आपको मुक्ति वाले कमरे में बिठा दिया जाएगा। ऐसा नहीं है। जीवन-मुक्त इसे नहीं कहते। जीवन-मुक्त वो ही है, जिन्होंने अपने आपको भव-बन्धनों से मुक्त कर लिया है और मुक्त वे हैं, जिन्होंने हथकड़ी-बेड़ी अपनी खोल दी है। लोहे की हथकड़ी खुलने की बात नहीं है, लोभ और मोह की बात है। लोभ की हथकड़ी, मोह की बेड़ी। लोभ आप किस काम में करते हैं ? आदमी को कितना चाहिए ? आदमी को जरा-सा चाहिए। भगवान ने उसे इस लायक बनाया है जितना कि ढेरों-के-ढेरों कमा सकता है, सोने के पहाड़ कमा सकता है और उसका खर्च इतना कम है कि किसी भी जानवर का नहीं है। गधा आपसे ज्यादा घास खा जाता है और घोड़ा ज्यादा खा जाता है, भैंसा ज्यादा खा जाता है, बैल ज्यादा खा जाता है। प्रत्येक जानवर आपकी बनिस्पत ज्यादा खाने वाला है; लेकिन आपका तो दो मुट्ठी में पेट भर जाता है। अन्धाधुन्ध भरें, तो दो के बजाय चार मुट्ठी भर लीजिए। आमाशय को नाप लीजिए। आपको कोई एनाटॉमी की किताब मिल जाएगी। देखिए, आमाशय की कितनी लम्बाई-चौड़ाई है। उसमें भी यह लिखा हुआ है कि आधा अनाज से भरो, थोड़ा हवा के लिए छोड़ो और थोड़ा पानी के लिए छोड़ो, तो मुश्किल से दो मुट्ठी का अनाज आता है। आदमी की खुराक कितनी है ! जरा-सी है और आदमी का खर्चा ? खर्चा भी कम और कुटुम्ब का ? कुटुम्ब पालने में हमको बाहरी शक्ति लगानी पड़ती है ? कुटुम्ब तो खिलौने हैं। बच्चे हैं ये आपके। इनसे खेलिये। ये खिलाने के लिए हैं कि आपको पालन करना पड़ता है ? पालन नहीं करना पड़ता। आप थके हुए आते हैं, चाबीदार खिलौनों से जैसे बच्चे खेलते हैं, आप इन बच्चों से वैसे ही खेलिये। ये आपके लिए क्या उपद्रव पैदा कर सकते हैं ? हरेक को स्वावलम्बी बनाइये, आप उन्हें संस्कारवान् बनाइये। जो भी आपके कुटुम्ब में है, अंगर आप स्वावलम्बी बनाते हैं, संस्कारवान बनाते हैं, तो आपको जरा भी कोई दिक्कत नहीं आने वाली है। दिक्कत तब आयेगी, जब आप सात पीढ़ी के लिए खाने का इन्तजाम करेंगे। जो कुछ कमाया है, इस बेटे को दे जाएँ, नाती को दे जाएँ और पोते को दे जाएँ और पड़ोसी को ? पड़ोसी को डलिया से दाब दीजिए। आग लगा दीजिए। क्यों ? पड़ोसी ने क्या बिगाड़ा है ? बेटे को क्यों दे दें ? बेटा क्या है आपका ? आँखों से अन्धा है ? गूँगा है ? लूला है ? लँगड़ा है ? क्या बात है ? अपाहिज है ? अपंग है ? तो आप बच्चे को देंगे ? नहीं, हमने अपनी जिन्दगी में दिया ही नहीं। हमारा बाप ढेरों-की-ढेरों सम्पत्ति छोड़ कर मरा था। हमने सब बाँट दी। सब भगवान को दे दी। उससे हम नफे में रहे, कुछ नुकसान में नहीं। हथकड़ी और बेड़ी अगर आप चाहें, तो बड़े मजे से काट सकते हैं और जरा भी इसमें कोई दिक्कत नहीं आयेगी। आप भूलिए नहीं, आपको अपनी सफाई करनी पड़ेगी। सफाई किए बिना भगवान की भक्ति से, नाम से आपका कोई उद्धार नहीं हो सकता है किसका हुआ है ? बताइये जरा साहब उनका हुआ है ? बहुत-से पापी लोग थे और वे राम-नाम जपते रहे और राम-नाम जप करके उन सबकी मुक्ति हो गई। जरा उनका नाम बताइये ? दो-एक का नाम बताइये मुझे ? बाल्मीकि, अजामिल, सदन कसाई। अच्छा ! तो इसी चक्कर में हैं आप। कसाई की दुकान भी खोले रहेंगे और बैठे-ठाले जब कभी फुर्सत का वक्त हो गया, तो कभी राम कह दिया, कभी क्या कह दिया, कभी क्या कह दिया ? और सीधे मुक्ति मिलती चली जाएगी ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। आपने जितनों के नाम गिनाये हैं, जरा उनकी जिन्दगी के पन्ने उलटकर देखिए। आपका यह ख्याल है कि बाल्मीकि इतने बड़े सन्त हो गये, जिनके यहाँ राम ने अपनी धर्मपत्नी को भेज दिया और बच्चों का गार्जियन बना दिया। आपका भी बनने का मन है क्या ? तो लीजिए डाकूपन बन्द कीजिए आज से और आज से सन्त की जिन्दगी व्यतीत कीजिए। डाकू था, तब डाकू था; लेकिन जिस दिन से राम का नाम लेना शुरू कर दिया, जिस दिन से भगवान का हो गया, भगवान को अपना लिया, फिर उस दिन के बाद में न उसने डाका डाला, न उसने चोरी की, न उठाईगीरी की। सीताजी जवान थीं और उनके घर में भगवान ने भेज दिया, और अकेले ही रहती थीं। क्या मजाल है, आँख उठाकर देखा हो उन्होंने ! बच्चों को कितना शानदार बना दिया ? क्यों ? क्योंकि उन्होंने अपने आप को अच्छा बना लिया ? और उन्होंने माला घुमाना सीखा होता और तरह-तरह के मंत्र-तंत्र और यंत्र—ये बनाये होते और अपनी जिन्दगी को अच्छा न किया होता, तो आपका ख्याल है, उनका उद्धार हो गया होता ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अंगुलिमाल था। जब तक डाकू था, तब तक डाकू था और जब भगवान बुद्ध की शरण में आया, तब उसने डाका डालना बन्द कर दिया; चोरी करना बन्द कर दिया। जो कुछ भी कमाया था, जो कुछ भी कर सकता था, बेचारे ने पाप का प्रायश्चित करने के लिए किया। जो कुछ भी कमा करके जमा कर रखा था, सारा भगवान को दे दिया। उसको ये तो मालूम नहीं था कि जाने, मैंने किससे लिया था, किसका है, किसको तलाश करूँगा ? आप ही जिसका हो, उसको पहुँचा देना, कह दिया और अपनी जिन्दगी, अपनी जिन्दगी भगवान बुद्ध के सुपुर्द कर दी और ये कहा—मुझको आज्ञा दीजिए, हुक्म दीजिए। भगवान बुद्ध ने उसे इण्डोनेशिया भेजा था। अंगुलिमाल सारी जिन्दगीभर जब तक जिया तब तक हिन्दुस्तान से बाहर रहा और वही अंगुलिमाल सन्त बन करके और भगवान के काम में अपनी जिन्दगी न्यौछावर कर दी। सूरदास का तो नाम सुना है आपने ? कैसी गन्दी जिन्दगी थी ! उनके पिताजी मरे हुए रखे थे और वो वेश्या के घर में पड़े हुए थे। सुना है न आपने ? सुना नहीं है ? सुना होगा; लेकिन जब-जब उन्होंने अपने चाल-चलन को बदल लिया, काम करने के ढंग और तरीके को बदल लिया, तो सूरदास हो गये। फिर वे सूरदास हो गए, जिन्होंने कि आँखें अपनी खराब कर ली थीं, तो भी भगवान जी आते थे और बच्चे के रूप में उनकी लाठी पकड़कर लेके चलते थे। ऐसे सूरदास हो गए। लाठी लेकर चलते थे ? हाँ, लाठी लेकर चलते थे। सूरदास धुले हुए थे, साफ थे। गन्दे जब थे, तब थे। तब, तक भगवान उनके नजदीक आए नहीं। उनकी गन्ध को सूँघ करके, दुर्गन्ध को सूँघ करके दूर भाग गये; लेकिन जब-जब उन्होंने अपना रवैया बदल दिया तब ? तब भगवान ने भी अपना रवैया बदल दिया।

तुलसीदास का नाम सुना है ? जब कामुक थे, कैसे थे ? स्त्री जब वहाँ चली गई, पिता के घर, तो वहाँ जा पहुँचे। वह सुना है न किस्सा आपने ? मैं क्या सुनाऊँगा आपको ?

इसी तरीके से आम्रपाली का नाम सुना है न आपने ? आम्रपाली एक वेश्या थी। वेश्या को तो सब हिकारत की निगाह से देखते हैं, उसका अपमान करते हैं, उसको बुरी मानते हैं। सब उसके लिए यही कहते हैं। नरक को जाएगी, लेकिन आम्रपाली नरक को गई थी ? नहीं, नरक को नहीं गई थी। भगवान बुद्ध की शरण में आई, तो उसके पास जो कुछ भी था, पैसा था, वह सब उनके सुपुर्द कर दिया और अपने शरीर को भी सुपुर्द कर दिया। तन और मन दोनों को ही करना पड़ता है सुपुर्द। आप ध्यान रखिए। चावल नहीं करने पड़ते सुपुर्द। चावल सुपुर्द कर देंगे, फूल गेंदा का चढ़ा देंगे, फूल गुलाब का चढ़ा देंगे। आप किसी का चढ़ाएँ अथवा किसी का न चढ़ाएँ भगवान् को। भगवान इस सारी सृष्टि का स्वामी है। उसको फूलों की जरूरत पड़ेगी, तो कहीं भी चला जाएगा और जहाँ कहीं ऐसे फूल पैदा होते हैं, वहीं सूँघ लेगा और उनको वहीं छोड़ देगा। भगवान की हम फूलों की जरूरत पूरी कर रहे हैं ? भगवान का पेट कितना बड़ा है, आप जानते हैं ? भगवान का पेट बहुत बड़ा है। उसमें समुद्र समा गया है, उसमें जमीन समा गई है, उसमें आसमान समा गया है, उसमें आप, हम और सारी सृष्टि समा गई है। उसे आप पूरा कर देंगे ? कैसे कर पायेंगे ? ना, सम्भव नहीं है; लेकिन ये ही करना पड़ेगा आपको। आपके पास आपका अपनापन अगर सही है, तो आप विश्वास रखिये सारी दुनिया सही हो जाएगी। आपकी आँखें सही हैं, तो आपको दुनिया में सब कुछ दिखेगा और आँखें आपने खराब कर ली हैं; तब दुनिया में घोर अन्धकार छाया हुआ प्रतीत होगा। कारण कि आपकी आँखें तो खराब हैं। आँखों का इलाज करा लीजिए, आँखें ठीक कर लीजिए, आपको अच्छा-भला दिखाई पड़ेगा। चश्मा पहन लीजिए पीले रंग का, सारी दुनिया आपको पीले रंग की दिखाई पड़ेगी। अपनी ओर गौर कीजिए, बाहर की ओर मत कीजिए गौर। ये बुरा है, वो बुरा है। हाँ, सब बुरे हैं। आप ही अच्छे हैं। जरा अपने आपको अच्छा बनाकर देखिए। फिर ये देखिए सारे लोग आपके प्रति अच्छे बनते हैं कि नहीं बनते। चाहे न भी बनें वे, तो कम-से-कम आपको जितने समय तक उनसे सम्पर्क बनेगा, आप जितने समय तक विचार करेंगे, उतने समय तक आपके लिये वो अच्छे ही रहेंगे, चाहे वो बुरा करते हैं, तो करने दीजिए; लेकिन आप क्यों ऐसा सोचते हैं ?

कान अगर आपके सही हैं, तो आपको दूसरों के सलाह-मशविरा सुनने का मौका मिलेगा; परामर्श का मौका मिलेगा; आप अच्छी बातें सुन सकेंगे; गाना सुन सकेंगे; संगीत सुन सकेंगे; लेकिन आपने अपने आँखें—कान खराब कर लिये हैं; तब सुन लीजिए ! क्या सुनेंगे ? सब जगह सन्नाटा ! दिखाई पड़ेगा आपको ? साँय-साँय सब जगह से कुछ सुनाई नहीं पड़ेगा आपको। आपके कान तो खराब हो गये हैं। दुनिया तो जहाँ-की-तहाँ है। आपका दिमाग खराब हो जाए, तो पागल आप हो गए। आपको दुनिया पागल दिखाई पड़ेगी। ये भी पागल, वो भी पागल ! ये सब जो दुनिया में घूम रहे हैं, सब पागल आदमी घूम रहे हैं। नहीं, ये तो ठीक हैं। आपका ही दिमाग खराब हो गया है। आप अपने आपको ठीक कीजिए। बस, मजा आ जाएगा। साहस पैदा कीजिए। बचत कीजिए। अपने लिए कम-से-कम औसत भारतीय के बराबर, जितना जरूरत है, उसी में अपना गुजारा कीजिए। उससे बचा हुआ वक्त, बचा हुआ समय, बचा हुआ पैसा भगवान के लिए लगा दीजिए, सबके लिए लगा दीजिए। बस, साधना हो गई। इससे ज्यादा कोई आवश्यकता नहीं है। इससे कम में कोई साधना नहीं हो सकती। भाई ! हम भजन करेंगे, तो हम क्या करें ? बाबा भजन करेंगे, तो आप करते रहिए भजन। भजन करने वाले ढेरों-के-ढेरों बैठे हैं। चप्पल चुरा ले जाते हैं और दिन-भर भीख माँगते हैं और एक-से-एक गुण्डागर्दी करते हैं। हम राम का नाम लेंगे और पार हो जाएँगे। हाँ, जरूर होंगे आप पार। बेकार की बातें करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हैं। उन लोगों ने, जिन लोगों ने आपको ये सब समझा दिया है कि राम का नाम लेने से हर आदमी का उद्धार हो जाता है, वे सौफीसदी गलत आदमी हैं, झूठे आदमी हैं, बेईमान आदमी हैं और आपको गलत रास्ते पर चलाना चाहते हैं। हमने तो ये ही रास्ता अख्तियार किया है। अपने आपको धोया है और साफ किया है। धोकर के साफ हो गए हैं। साफ होने के बाद में हमारा भगवान हमारे घर आता है, बैठता है, पास आता है। साधना आपको भी करनी पड़ेगी। इससे कम में कोई गुजारा नहीं है। बस, इतना ही आपसे निवेदन करना था। जो हमने किया है, वही आप भी कीजिए। हमने जो पाया है, आप भी पाइये। क्या कहें और ? बस।

ॐ शान्ति।

विधा को समझें, विधि में न उलझें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !

एकलव्य नाम के भील को ये इच्छा उत्पन्न हुई कि हमको ऐसी बाण-विद्या सीखनी चाहिए कि संसार में किसी को भी न आती हो। ऐसी बाण-विद्या कौन सिखाएगा, जो मनुष्यों को न आती हो। वो भगवान् सिखाएगा, तो भगवान से किस तरह से सीखा जा सकता है ? भगवान की कोई शक्ल भी नहीं है, भगवान् का कोई स्वरूप भी नहीं है, भगवान का कोई गाँव भी नहीं है, भगवान् का कोई पता भी नहीं है। भगवान किस तरीके से खुश होते हैं, किस तरह से नाखुश होते हैं ? इसकी जानकारी भी नहीं है। भगवान से कैसे प्रार्थना की जाए कि हमको बाण-विद्या सिखा दी जाए। एकलव्य ने एक तरीका निकाला। उसने उस जमाने के बेहतरीन विद्वान द्रोणाचार्य के बारे में सुन रखा था, सबसे पहले उन्होंने वहाँ कोशिश की कि उनसे सहायता ली जाए, लेकिन वह मिल न सकी; क्योंकि वह अछूत था। उसने फिर एक नया तरीका निकाला। क्या तरीका निकाला कि मिट्टी का खिलौना बना लिया। मिट्टी कैसी होती है ? बेजान होती है, जान नहीं होती कुछ भी। अक्ल-बक्ल भी नहीं कुछ। उस मिट्टी को उन्होंने जीवन्त बना लिया। मिट्टी को जीवन्त ? हाँ, मिट्टी को जीवन्त बनाया जा सकता है और वे असली द्रोणाचार्य से भी ज्यादा कारगर साबित हो सकती है। कौन-सी चीज बन सकती है ? मिट्टी। क्यों साहब ! मिट्टी कैसे बन सकती है ? मिट्टी बन सकती है तब, जब उसमें श्रद्धा का समावेश कर दिया जाए। श्रद्धा किसी चीज में समाविष्ट कर दी जाए, तो वह जीवन्त हो सकती है। इतनी जीवन्त हो सकती है कि मनुष्यों में किसी के पास भी वह सामर्थ्य नहीं। उससे ज्यादा सामर्थ्यवान, यहाँ तक कि भगवान् के बराबर भी सामर्थ्यवान बन सकती है। यही हो गया। द्रोणाचार्य का खिलौना मिट्टी का उसने बनाया और उसके माध्यम से उसने सीखना शुरू किया और उस खिलौने ने कमाल कर दिया, कमाल ! क्या कर दिया ? इतनी जबरदस्त शिक्षा दी कि पाण्डवों के कुत्ते का जब उसने मुँह बन्द कर दिया, तो पाण्डवों ने कहा—ऐसी बाण-विद्या तो पृथ्वी के, दुनिया के इतिहास में अभी तक नहीं देखी। सामने से तीर चलाए जाते हैं, पार निकल जाते हैं, ये तो होता रहा है, तिकोने तीर नीचे से चलते हों, सिर्फ ओंठ को सीते हों, गले में भी नहीं जाते हों, कहीं इधर-उधर नहीं लगते हों, सिर्फ मुँह को बन्द कर दें, कमाल है ! ऐसी बाण-विद्या किसी ने भी नहीं सीखी ? कुत्ते का नुकसान तो भूल गए ये पता लगाने गए कि ऐसा विद्वान कौन आ गया है ? तलाश करने गए तो मालूम पड़ा—एकलव्य नाम का एक लड़का, ये बाण-विद्या सीख रहा था। हम भी इससे सीखेंगे। उससे पूछा—भाई साहब ! ये कुत्ता मारा गया, मर जाने दीजिए, कोई बात नहीं, कुत्ता नया पाल लेंगे; लेकिन एक बात बताइये—आपने ये बाण विद्या किससे सीखी है ? उसी से हम भी सीखने के इच्छुक हैं, सो उसने मिट्टी के खिलौने की तरफ इशारा किया। ये है हमारा गुरु, इन्होंने हमें सिखा दी। मिट्टी का खिलौना ? हाँ, मिट्टी के खिलौने को आप समझते क्या हैं ! क्यों ? साहब ! मिट्टी का खिलौना हम भी बना लें। नहीं, आप मिट्टी का खिलौना द्रोणाचार्य का बना लें, चाहे किसी का भी बना लें, आपके लिए वह कतई कारगर नहीं हो सकता। क्यों ? कैसे ? आपका क्यों कारगर हो गया ? पाण्डव पूछने लगे एकलव्य से। उसने कहा—मिट्टी के साथ में हमारी जुड़ गई है श्रद्धा। सुनते हो कि नहीं श्रद्धा ? श्रद्धा भी सुनी है कि नहीं ? कभी श्रद्धा भी देखी है ? श्रद्धा को भी जानते हो ? श्रद्धा को भी पूछते हो ? श्रद्धा का भी कुछ मालूम है ?

खिलौने लिए फिरते हो। बेवकूफो ! केवल खिलौने से कोई बात नहीं बनेगी। शालिग्राम लाए हैं, फलानी चीज लाए हैं, गणेशजी लाए हैं, रुद्राक्ष की माला लाए हैं। इन पदार्थों को लिए फिरते हों; वस्तुओं को लिए फिरते हो। जिसकी वजह से प्राण पैदा होता है, उसको भी जानते हो कि नहीं ? वस्तुओं की जरूरत है ? वस्तुओं की भी जरूरत है। कर्मकाण्ड उपयोगी है ? कर्मकाण्ड की भी जरूरत है। प्रतीकों की जरूरत है ? प्रतीकों की भी जरूरत है; लेकिन प्रतीक मूल्यवान तब हो सकते हैं; प्रतीक सामर्थ्यवान तब हो सकते हैं, जब साधक की श्रद्धा का समन्वय हो जाए। अध्यात्म का प्राण है—श्रद्धा ! श्रद्धा !! अध्यात्म के कलेवर हैं—कर्मकाण्ड, प्रतीक, खिलौने, मूर्तियाँ—ये सब प्रतीक हैं। कर्मकाण्ड—यह प्रतीक हैं। कर्मकाण्ड प्रतीक हैं, जिसको आप करते रहते हैं और जिसके बारे में न जाने क्या-से-क्या कल्पना लगाए बैठे हैं कि ये कर्मकाण्ड करेंगे, तो ये मिल जाएगा और ये कर्मकाण्ड करेंगे, तो वो मिल जाएगा, ये प्रतीक ले आएँगे, तो ये मिल जाएगा। प्राण भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मालूम है ? उन्हें प्राण का आशय क्या है ? प्राण को समझते हैं ? प्राण किसे कहते हैं ?

मीरा को इच्छा थी कि भगवान को पाएँगे और भगवान का साक्षात्कार करेंगे; भगवान को साथ-साथ खिलाएँगे और इस तरह से खिलाएँगे कि जिस तरीके से आदमी-आदमी को खिलाता है। ये कैसे किया जा सकता है ? भगवान कहाँ रहते हैं ? विष्णु भगवान कहाँ रहते हैं ? कृष्ण को मरे हुए मुद्दतें हो गईं, तो अब किस तरीके से पाएँ कृष्ण को ? कृष्ण जी ने न जाने कहाँ जन्म ले लिया होगा ! कहाँ रहते हैं ? कृष्ण, मालूम नहीं है, तो उन्होंने कहा—कृष्ण चन्द्र जी नहीं मिलते, तो कोई बात नहीं। हम नया कृष्ण गढ़ सकते हैं। गढ़ लिया मीरा ने। कैसे गढ़ लिया ? प्रतीक की जरूरत पड़ गई उसको, प्रतीक की। प्रतीक क्या है ? प्रतीक बेटे ! एक स्वामी जी आए थे, बाबाजी आए थे। मीरा ने कहा—श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति करना चाहती हूँ। आप श्रीकृष्ण भगवान से मिला दीजिए तो उन्होंने पत्थर का एक टुकड़ा उनके हवाले कर दिया और कहा—यही है गिरधर गोपाल। गिरधर गोपाल को, उन्होंने एक पत्थर को क्या मान लिया ? पत्थर को देवता मान लिया; पत्थर को भगवान् मान लिया; पत्थर को न जाने क्या मान लिया ? पत्थर को प्रतीक, प्रतीक पत्थर को पति मान लिया। पत्थर को माना जा सकता है ? पत्थर का पति नहीं हो सकता। पत्थर का क्या पति होगा ? बेचारा ! अपने आप पड़ा हुआ है एक कोने में। पति तो रोटी भी खिलाता है, प्यार भी करता है और काम करता है। पत्थर क्या कर सकता है ? कुछ भी नहीं कर सकता है।

तो साहब ! प्रतीकों में कोई सामर्थ्य न हो तो ? तो भी प्रतीकों को जिन्दा किया जा सकता है। किस तरीके से ? जैसे मीरा ने कर लिया था। मीरा के पास क्या था कमाल ? मीरा के पास थी—श्रद्धा ! श्रद्धा !! श्रद्धा !!! जो उसका प्राण है, अध्यात्म का प्राण है। कर्मकाण्डों के पीछे भटकने वालो ! प्रतीकों के पीछे समय गँवाने वालो ! उसके प्राण को समझो। लाश के ऊपर सिर फोड़ने वालो ! लाश को कन्धे पर उठाये फिरने वालो ! उसके प्राण को तलाश कर। प्राण कहाँ से आता है ? शक्ति कहाँ से आती है ? सामर्थ्य कहाँ से आती है ? सामर्थ्य आदमी के भीतर से निकलती है। आदमी की जो उच्चस्तरीय वस्तु है, उसका नाम है—श्रद्धा। मीरा को क्या होने लगा ? मीरा के लिए पत्थर का टुकड़ा कमाल करने लगा ! असली भगवान् के बराबर। असली नहीं, साहब ! नकली था, कल्पना थी। अरे बेटे ! असली में और कल्पना में क्या फर्क होता है, समझता नहीं है। जब तक कल्पना तब तक कल्पना है, बाद में है वही असली बन जाती है। कल्पना की सामर्थ्य को नहीं समझता ! देवताओं की सामर्थ्य समझता है और भावनाओं की सामर्थ्य को नहीं समझता ? देवताओं की क्या सामर्थ्य है ? कोई सामर्थ्य नहीं है। सामर्थ्य भावना की है। भावना देवता को गढ़ती है। भावना कौन है ? भावना है—देवताओं की माता। समझता नहीं है कुछ ! देवता ! देवता !! देवता !!! लिए फिरता है देवताओं को। पूजा-पूजा लिए फिरता है। इसका प्राण कहाँ है ? ये भी कुछ मालूम है। इसका रक्त कहाँ से आता है ? इसका जीवन कहाँ से आता है ? सामर्थ्य कहाँ से आती है ? मीरा ने वो सामर्थ्य पैदा कर ली। पत्थर के माध्यम से। पत्थर को माध्यम बना लिया। माध्यम न बनता तो ? तो मुश्किल थी बेटे ! पत्थर न मिलता तो ? तो मुश्किल थी। क्यों ? क्योंकि आदमी की श्रद्धा को परिपक्व करने के लिए, श्रद्धा का संवर्द्धन करने के लिए, श्रद्धा को समुन्नत बनाने के लिए किसी-न-किसी साधन की जरूरत पड़ती है; प्रतीक की जरूरत पड़ती है। प्रतीक मीरा को मिल गया। क्यों साहब ! प्रतीक मीरा को नहीं मिलता, पत्थर न मिलता तो ? तो मुश्किल थी। एकलव्य को मिट्टी का खिलौना न मिलता तो ? तो बेटे मुश्किल थी; क्योंकि भावना का संवर्द्धन और श्रद्धा का एकत्रीकरण किसी प्रतीक की अपेक्षा करता है। प्रतीक नहीं होगा, तो मुश्किल पड़ जाएगी। नहीं, ऐसे ही में कर लेंगे। नहीं, बेटे ! बनेगा नहीं। मन को एकाग्र करने के लिए, चित्त को एकाग्र करने के लिए, चित्त को केन्द्रीभूत करने के लिए हमको प्रतीकों की जरूरत पड़ती है। ये आप ध्यान रखिए। प्रतीक साधन हैं, साध्य नहीं हैं। साध्य क्या है ? साध्य है—श्रद्धा और प्रतीक ? प्रतीक को बेटे ! साधन कहते हैं। आप समझते क्यों नहीं है ? मीरा ने यही कर लिया और किस-किस ने किया ? बेटे ! अब कहाँ तक नाम गिनाऊँगा आपको। किस-किस के नाम गिनाऊँगा ?

रामकृष्ण परमहंस के पास भी एक खिलौना था। खिलौना ? हाँ, खिलौना। खिलौना कहाँ रखा हुआ है ? दक्षिणेश्वर के मन्दिर में। क्या रखा हुआ है ? खिलौना और देवी ! देवी नहीं है, खिलौना है। अभी यहीं पड़ी हुई है वह पत्थर की मूर्ति एक कोने में—दक्षिणेश्वर के मन्दिर में। क्या हुआ काली के भीतर ? काली के भीतर प्राण फूँक दिया। किसने प्राण फूँका ? रामकृष्ण परमहंस ने। वो सिद्ध देवी थी ? हाँ, वो सिद्ध देवी थी। काली किसकी थी ? रामकृष्ण परमहंस की काली थी। फिर क्या हुआ उस काली का ? क्या हुआ ! जब रामकृष्ण परमहंस मरे, तो उनके साथ में काली भी मर गई। अब जिन्दा है ? बेटे ! अब तो मर गई। अब कहाँ है ! मर गई वो काली। स्वामी विवेकानन्द को बहुत कमाल दिखाया था ! विवेकानन्द को क्या दिखाया था ? जमीन से लेकर आसमान तक विराट् स्वरूप उसने ये प्रत्यक्ष पूछा था विवेकानन्द से—क्यों भाई ! क्या बात है ? क्या माँगता है ? उसने कहा—माँ ! मैं जरा नौकरी माँगने आया, तो क्या माँगता है ? माँ मैं भक्ति माँगता हूँ, शक्ति माँगता हूँ, ज्ञान माँगता हूँ, तो कालीजी ने हँसकर कहा—अच्छा, अच्छा, हमने तीनों चीजें दे दीं। उन तीनों चीजों को लेकर के, वे असली थीं कि नकली ? वहम तो नहीं था ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शायद वहम था कहीं। दो कौड़ी का शक्की स्टूडेण्ट, जो एल. डी. सी. की नौकरी तलाशने आया था उसे रामकृष्ण परमहंस ने क्या बना दिया ? विवेकानन्द बना दिया।

विवेकानन्द कौन थे ? मैं क्या बताऊँ आपको कौन थे ? विवेकानन्द किसने बना दिया ? काली ने बना दिया। क्यों साहब ! काली थी क्या ? काली पत्थर थी। पत्थर नहीं थी। वो क्या थी ? काली थी रामकृष्ण परमहंस की श्रद्धा, जो पत्थर में पूँजीभूत होकर के, पत्थर से टकरा करके, गूँज करके इतनी शानदार बन गई थी। ये कौन दे रही थी ? वरदान, काली दे रही थी ? काली नहीं दे रही थी बेटे ! रामकृष्ण परमहंस की श्रद्धा दे रही थी, जो पत्थर से टकराती थी और टकराकर के फिर करती थी चमत्कार। यही है ? हाँ, बेटे ! यही है और कौन-सी बताऊँ ? एक बार मैंने एक अन्य कहानी आपको सुनाई थी। एक शिष्य की कहानी आपको सुनाई थी, जो अपने गुरु के पैर धोकर के ले आता था और उस पानी से बीमारों को अच्छा कर देता था। एक बूँद डालता था। और रोगी अच्छे हो जाते थे। मैंने ये कथा एक बार सुनाई थी आप लोगों को। मैंने ये भी कहा था उसी दवा से उन्होंने अपने गुरु को अच्छा कर दिया था; उसकी बीमारियों को दूर कर दिया था। फिर मैंने ये भी कहा था आपसे कि बाद में उन्होंने अपने पैर धोये थे; अपने पैर धोकर के स्वयं पिया औरों को पिलाया। कोई फायदा नहीं हुआ था। पानी की जरूरत है ? नहीं बेटे ! पानी में कोई दम नहीं होता। पैर धोकर पानी पी जाएँ आप। पी आइए। किसका पानी पीना चाहते हैं ? गाय का पी लेंगे। गाय का पैर धोकर पिला देंगे। किसका महात्मा जी का पिएँगे ? महात्मा जी का पिला देंगे। किसका पीना चाहते हैं ? अमुक का पीना चाहते हैं। अच्छा, हम पानी पिला देंगे कुछ भी नहीं होगा। सब पानी एक-सा। एक-से पानी से क्या होता है ? कुछ भी नहीं होता। तो साहब ! पानी में कमाल कहाँ से आ गया ? कमाल की जरूरत थी। आदमी की श्रद्धा। क्यों साहब ! श्रद्धा को अकेला बना दें। नहीं, उसके साथ प्रतीकों की भी जरूरत है बेटे ! पानी नहीं लिया होता, गुरु कोई नहीं बनाया होता, पैर नहीं धोया होता, पैरों को धो करके नहीं पिया होता, शीशी में बन्द नहीं किया होता, गुरु का नाम लेकर के मन्त्र जप करके नहीं दिया होता, तो शायद मुश्किल हो जाती। प्रतीकों की जरूरत है। आप प्रतीकों का खण्डन करते हैं। कहाँ खण्डन करता हूँ ? आप तो समझते नहीं हैं। आप जप करेंगे, तो ये तो है नहीं कि उसमें से श्रद्धा को निकाल देंगे और केवल कर्मकाण्डों को, प्रतीकों को सब कुछ मान लेंगे और जब मैं यह कहता हूँ श्रद्धा को और प्रतीकों को जोड़ने की जरूरत है, तो आप ये कहने लगते हैं—श्रद्धा तो आपने बेकार बता दी। न तो आप इधर करेंगे न उधर करेंगे; न तो आप दोनों का समन्वय कर सकते। समन्वय अगर नहीं कर सकते, तो आपके पास अध्यात्म में से, आध्यात्मिकता के क्षेत्र में से कुछ नहीं निकलेगा। अगर आपने श्रद्धा का महत्त्व नहीं समझा और कर्मकाण्डों का महत्त्व समझा है, तो आप रीते रह जाएँगे।

अरे ! आने वाला है ये चमत्कार इक्कीस माला में ! उन्तीस माला में ! अट्ठावन माला में ! मालाओं की क्रियाशीलता में, हलचलों में अगर आपने चमत्कार मान लिया, तो आप भूल कर रहे हैं। ऐसी भूल कर रहे हैं कि जिसमें प्राण नहीं हैं। फिर क्या है ? इसमें कलेवर है। कलेवर कमाल करता है ? हाँ, कलेवर की जरूरत है बेटे ! कलेवर की तो आप निन्दा करते हैं। बेटे ! मैं कहाँ निन्दा करता हूँ कलेवर की ? मैं पहने बैठा हूँ कलेवर। क्या पहने बैठे हैं। देख ! मैं कलेवर पहने बैठा हूँ। काहे का है ? ये माँस का है, रक्त का है, हड्डी का है। ये कलेवर है, लिफाफा है। अच्छा, आप सारा काम इसी से करते हैं ? हाँ, भजन हमने इसी से किया है, अनुष्ठान इसी से किया है, जप-तप हमने इसी से किए हैं। आपके सामने व्याख्यान इसी से दे रहे हैं। हमारी जीभ बोल रही है और हमारी अक्ल काम कर रही है। असल में जीभ का आप चमत्कार देख रहे हैं। हमारी आँखों का चमत्कार देख रहे हैं। क्यों साहब ! ये बात है। हाँ, यही बात है। भजन में बहुत ताकत है। कलेवर में बहुत ताकत है। अच्छा, तो हम आपके कलेवर से काम चला लें ? नहीं, केवल कलेवर से काम नहीं चलेगा। हमारे भीतर एक और चीज काम करती है, जो जीवन्त है, जीवन्त; जो दिखाई नहीं पड़ती। उस दिखाई न पड़ने वाली सत्ता ने इस कलेवर को पकड़ रखा है और कलेवर ने उस सत्ता को पकड़ रखा है ? दोनों के एक-दूसरे को पकड़ लेने से वो चीज देख रहे हैं, जो कि हमारी हलचलों के रूप में दिखाई पड़ती है। गुरु जी दोनों को अलग कर दें तब ? अकेले कलेवर में ताकत है ? अकेले कलेवर में, हम जब मरें, तो उसको आप उठा ले जाना। गुरु जी ! व्याख्यान कहिए—आप कहना उस कलेवर से। यही तो बोल रहा है ना। जीभ तो यही है ना। जीभ को निकाल लेना, शीशी में बन्द कर लेना। जीभ से आप कहना—बोलिए न ! भाषण दीजिए न ! बोले तो हमको बताना फिर। नहीं साहब ! वह तो नहीं बोलेगी। बोलेगी कहाँ से ! उसमें प्राण तो है ही नहीं। प्राण के बिना भी कहीं बोलती है जीभें ! नहीं साहब ! जीभ प्राण से बोलती है। भाई साहब ! हमने मान लिया जीभ बोलती है। आँखें देखती हैं—ये भी सही है। हम कब मना करते हैं जीभ नहीं बोलती, आँख नहीं देखती। फिर आपको मालूम है कि नहीं कि आँखों के आगे जिन्दगी होनी चाहिए; आँखों के पीछे लाइफ होनी चाहिए; रोशनी होनी चाहिए। रोशनी यदि नहीं है, तो ? जिन्दगी नहीं है तो ? लाइफ नहीं है तब ? आँखें रखी हैं। आप घर ले जाना इसमें से निकाल के। आँखें देखेंगी ? आप देख लेना मिट्टी है। फिर क्या रखा जाएगा। आप क्या कहना चाहते हैं ? मैं यह कहना चाहूँगा, कहना चाहता हूँ कि जो भी कर्मकाण्ड हैं, जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आपने सीखे हैं, जो हमने सिखाए हैं, अभी और सिखाएँगे—कर्मकाण्डों का लाभ कब मिलेगा ?

इससे कम में नहीं मिलेगा, जब तक आप उसमें प्राण समन्वित नहीं करेंगे, श्रद्धा का समन्वय न करेंगे, तो बेटे बात बनेगी नहीं। कर्मकाण्ड मामूली भी हो सकते हैं, छोटे भी हो सकते हैं; नगण्य भी हो सकते हैं; नाचीज भी हो सकते हैं। अगर आप कर्मकाण्डों में कोई भूल करते हैं, तो वह क्षमा भी हो सकती है। अगर आप कर्मकाण्डों को पूरी मुस्तैदी से करते हों, पूरी जानकारी रखते हों, सही तरीके से करते हों, तो भी बिल्कुल वृथा जा सकते हैं। कैसे ? आपको कर्मकाण्ड करना नहीं आता। किनको आता है कर्मकाण्ड करना। कर्मकाण्ड करना संस्कृत के पंडितों को आता है। संस्कृत के पंडितों ने संस्कृत की किताबें पढ़ी हैं और उनका प्रोननसिएशन (उच्चारण) सही है। वे ठीक तरह से बोल सकते हैं। कौन-सा मन्त्र कैसे बोलना चाहिए ? किस विधि से क्या करना चाहिए ? उनको आता है और कर्मकाण्डों की बात सही न रही होती, तो अब तक प्रत्येक पंडित करोड़पति हो गया होता। प्रत्येक पंडित ने लक्ष्मीजी को सिद्ध कर लिया होता। लक्ष्मीजी को सिद्ध करने की वजह से प्रत्येक पंडित करोड़पति बन गया होता और प्रत्येक पंडित की अक्ल गणेश जी के बराबर होती; क्योंकि गणेश जी का पाठ करने के बाद में ये हो जाता और प्रत्येक पंडित ने महादेव जी को अपने चंगुल में फँसा लिया होता और महादेवजी से वो काम निकाल लिए होते, जो रावण ने निकाल लिए थे, कुम्भकर्ण ने निकाल लिए थे, मेघनाद ने निकाल लिए थे, विभीषण ने निकाल लिए थे; सबने निकाल लिए थे। उनको क्या आता है ? उनको विधियाँ आती हैं, कर्मकाण्ड आते हैं। कर्मकाण्ड इन पंडितों को आते, तो महादेव जी का कचूमर निकाल लेते और महादेव जी का सारा माल अपने घर में जमा कर लेते और कर्मकाण्डों की विधियाँ अगर सही रही होतीं, तो गणेशजी की ऋद्धि और सिद्धि दोनों बीबियों को गिरफ्तार कर लेते और गणेशजी से कहते—इन बीबियों को हमारे हवाले करिए और आप चले जाइए। गणेश जी को मारकर भगा देते। उनकी ऋद्धियों और सिद्धियों से काम लेते, अगर पंडितों का बस चल जाता तब। पंडितों का जप चल जाता, तो महामृत्युंजय जप उन्होंने सिद्ध कर लिया होता। फिर क्या हो जाता ? फिर कोई और मरता तो भले ही मरता, पंडित जी के खानदान वाला कोई नहीं मरता, पंडित जी के रिश्तेदार में एक भी न मरता। महामृत्युंजय जप आता है न उनको ? हाँ साहब ! पिताजी आपके मर गए ? नहीं साहब ! पिताजी तो मर रहे हैं, हकीम को बुलाकर ला रहे हैं। पंडित जी आप महामृत्युंजय का जप कर दीजिए न। उनको, पिताजी को हकीम जी की क्या जरूरत पड़ रही है जी, ये बस ऐसे ही हैं। लोगों को बहकाने का हमारा धन्धा है ये तो। इसीलिए हम जप करते रहते हैं तो बाप नहीं मरेगा ? बाप तो मरेगा; क्योंकि ये मरीज हैं। कब तक रह सकते हैं ? महामृत्युंजय मंत्र से आप कहते हैं, अवश्य अच्छा कर देंगे, तो फिर आप अपने बाप को अच्छा क्यों नहीं कर पाते ? नहीं साहब ! हमारा तो बाप अच्छा नहीं हो सकता। हम तो हकीमजी से इलाज करायेंगे। फिर आपका मृत्युंजय मंत्र ? हकीम जी कहते हैं पंडित जी से मृत्युंजय मंत्र करायेंगे और पंडित जी कहते हैं हकीम जी से इलाज करायेंगे। ये क्या मतलब ? या तो पंडित जी की बात सही है या हकीम जी की बात सही है। नहीं साहब ! दोनों की बात सही है। दोनों अँधेरे में हैं। फिर क्या करना चाहिए ? मैं आपसे ये कह रहा हूँ, मैं आपकी श्रद्धा कमजोर नहीं करना चाहता हूँ। कर्मकाण्डों के प्रति उपेक्षा, अवज्ञा नहीं पैदा करना चाहता हूँ; पर मैं यह कहता हूँ कि कर्मकाण्डों के पीछे, प्रतीकों के पीछे, जिसको आपने बहुत कुछ पकड़कर रखा है; जिसके लिए आपने बहुत कुछ मेहनत की है; जिसके लिए आपका बहुत सारा समय लिया है इन प्रतीकों के लिए, इन कर्मकाण्डों के लिए इसके साथ-साथ में एक चीज और शामिल कर दीजिए उसका नाम है—श्रद्धा। श्रद्धा शामिल कर दें, फिर आप देखिये किस तरह से कमाल होता है ? श्रद्धा को शामिल करने के बाद में अगर आपके कर्मकाण्डों में गलती रह जाती है, तो फिर कोई हर्ज की बात नहीं। कर्मकाण्ड करने में गलती हो जाए तो मैं आपसे वादा करता हूँ कि आपको कोई परेशानी नहीं होगी।

कर्मकाण्डों में गलतियाँ किससे नहीं होतीं ? कर्मकाण्डों में गलतियाँ तांत्रिक से होती हैं, क्योंकि उसका सारा-सा-सारा आधार जड़ है। उसका आधार चेतना नहीं है। उसका आधार, तन्त्र का आधार क्या है ? मनुष्य के शरीर की इलेक्ट्रिसिटी को पैदा करना, इलेक्ट्रिसिटी का इस्तेमाल करना, इलेक्ट्रिसिटी से हमला करना। ये विधि साइन्स है। इसमें गलती करेंगे तो हम शॉट (झटका) पाएँगे। गलती करेंगे, तो नुकसान उठाएँगे और यदि पानी पीने में गलती करें ? नहीं बेटे ! पानी पीने में गलती कोई नुकसान नहीं है। गिलास से पी लें ? गिलास से पी लो। कटोरी से पी लें ? कटोरी से पी लो। हाथ से पी लें ? हाथ से पी लो। सोके पी लें ? सोकर पी लो। लेटकर पानी पी लें ? हाँ, बीमार हो, तो लेटकर पानी पी लो। खड़े हुए पानी पी लें ? हाँ खड़े हुए पानी पी लो। नहीं, महाराज जी। मैं तो पालती मारकर बैठूँगा और पानी पीऊँगा। कोई नुकसान नहीं। आध्यात्मिक चर्या के उपक्रमों में, कर्मकाण्डों से कोई फर्क नहीं पड़ता। तांत्रिक में वो इलेक्ट्रिसिटी है, शरीर की पावर है, कुण्डलिनी है। कुण्डलिनी क्या है ? कुण्डलिनी हमारे नर्वस सिस्टम की इलेक्ट्रिसिटी है। इसको इस्तेमाल करते हैं और जरूरत के वक्त इससे फायदा भी उठाते हैं। जरूरत के वक्त यदि किसी पर हमला करना चाहें, तो हमला भी कर देते हैं। ये जो होते हैं रिंगमास्टर सर्कस वाले, उनके हाथ में चाबुक रहता है। चाबुक में इलेक्ट्रिक रहती है। क्या करते हैं ? जब कोई शेर या हाथी तंग करता है, तो एक हंटर घुमाते हैं, तो क्या होता है ? सन्नाटा खिंच जाता है इलेक्ट्रिसिटी के कारण। हंटर तो, हंटर तो बेटे वही हैं जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बाजार में बिकते हैं। उसमें चाबुक क्यों मारता है ? उसमें इलेक्ट्रिसिटी होती है। फिर शरीर की इलेक्ट्रिसिटी का विज्ञान क्या है ? ये शरीर की इलेक्ट्रिसिटी भौतिक, पदार्थपरक शक्ति है, अतः केवल पदार्थपरक कामों में ही काम आती है और किसी काम नहीं आती है। इससे रूहानी कामों में उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। इससे केवल भौतिक उद्देश्य पूरे हो सकते हैं।

ये तो शारीरिक है, इसलिए हमको अमुक करना पड़ता है, ये खाना पड़ता है और वहाँ जाना पड़ता है, अमुक व्यायाम करना पड़ता है, इसलिए कि शरीर की इलेक्ट्रिसिटी को डेवलप (विकसित) कर लेते हैं; तो काम आ जाती है। अध्यात्म में अगर आपसे कोई गलती होती हो, तो यकीन रखिए आपको कोई नुकसान नहीं होने वाला है, आप चाहे जैसे कर लीजिए। बाल्मीकि को राम-नाम लेना नहीं आया था। उन्होंने गलत तरीके से लिया था, 'मरा-मरा' का उच्चारण किया था और मरा-मरा का उच्चारण करने पर भी उनको सिद्धि मिल गई थी और चमत्कार मिल गया था। नहीं साहब ! मन्त्र का गलत उच्चारण कर लें। कर लीजिए मन्त्र का गलत उच्चारण। क्या हर्ज है ? मैं अफ्रीका गया। वहाँ कितने ही नीग्रो को गायत्री मन्त्र सिखाना पड़ा, कई दिन सिखाया। एक और सज्जन, जिनके यहाँ हम ठहरे हुए थे, उन्होंने भी सिखाया। उन्होंने क्या सिखाया कि प्रोननसिएशन (उच्चारण) में गायत्री मन्त्र का जो पहला भाग है 'तत्सवितुर्वरेण्यं' 'तत्' बस यहीं गाड़ी रुक गई उनकी। जो रोमन लिपि में लिखते हैं, उसमें 'त' नहीं है, फिर क्या है ? 'ट' है। उसको 'टट्'-'टट्' कह रहे थे। 'प्रचोदयात्' का 'त्' हमने हरचन्द कोशिश कर ली; पर 'त्' आया ही नहीं। 'सवितुर्वरेण्यं' का उच्चारण कराया। किसी तरीके से नहीं आया। इसमें कई शब्द ऐसे हैं, जिसमें 'त' है जबकि रोमन और अरबी में 'त' ही नहीं है। इसके अतिरिक्त अरबी और रोमन में 'द' नहीं है। क्या है बेटे ! 'ट'-'ट' है। 'प्रचोदयात्' 'द' का उच्चारण कराइये किसी से ? जो आदमी रोमन जानते हैं, उनसे आप कहिए बोलिए—'त'। 'त्' नहीं बोलेंगे 'ट' ही बोलेंगे। सारे-के-सारे प्रोननसिएशन गलत। तो क्यों साहब ! वहाँ तो गायत्री काम नहीं कर सकती ? गायत्री कमाल करती हैं और वहाँ भी उतना ही काम करती हैं, जितना यहाँ और जो प्रोननसिएशन गलत था, सो। हाँ, ग़लत था। प्रतीकों में कोई कमाल है क्या ? बेटे ! प्रतीकों में कमाल नहीं है। उनकी श्रद्धा में कमाल है।

एक स्वामी जी थे, वहाँ पर गंगाजी में पानी बहुत बहता है। लोग कहते गंगाजी में से पार निकाल दीजिए, नाव नहीं है तो हमने स्वामीजी से कहा। उन्होंने कहा—हम एक मन्त्र बताते हैं कान में आपके। कान में मन्त्र बताएँगे, उसको कहते हुए चले जाना। उससे आप पार निकल जाएँगे। डूब गए तो आप हमको डुबो देना। घर वालों से कह जाइए, डूब गए, तो हमको डुबो दें। आपको पार निकाल देंगे। कान में दिया हुआ मन्त्र जपते रहते और पार निकल जाते। कहना मत किसी से। किसी से नहीं कहेंगे साहब ! बस, पार निकल जाते हैं। एक आदमी था, उसने सोचा देखना चाहिए, इंक्वारी (निरीक्षण) करना चाहिए, वो कौन-सा मन्त्र है ? इसकी विधि और कर्मकाण्ड में क्या फर्क है ? क्या कमाल है ? उन्होंने विधि और कर्मकाण्ड के बारे में पूछा—स्वामीजी क्या मंत्र है ? कान में कह दिया उन्होंने—राम नाम है। लोगों ने कहा—आप कान में क्यों कहते हैं ? उन्होंने कहा—कान में इसलिए कहते हैं कि सबको मालूम पड़ेगा, तो विश्वास कम हो जाएगा। अरे ! ये तो राम नाम बताता है। आप गुरु का मन्त्र कहेंगे तो आप विश्वास बढ़ा देंगे, इसीलिए कान में कहते हैं ? राम नाम कहते हैं। राम नाम से पार निकल जाते हैं। एक मौलवी साहब थे। कहीं और रहते थे। मुसलमानों ने कहा—देखिये हिन्दुओं के मन्त्रों में बड़ा कमाल है। क्या कमाल है ? राम-नाम का मन्त्र बताते हैं और पार निकल जाते हैं और हमारे इस्लाम धर्म में तो कोई मन्त्र नहीं है। वाह ! इस्लाम धर्म में कैसे नहीं है ! हमारे पास भी वैसे ही जबरदस्त मन्त्र हैं। आप बताइए फिर हमको। वह, पंडित ये दावा करता है कि हम डूब जाएँगे, तो हमको डुबो देना, फाँसी पर चढ़ा देना। आप ये दावा कर सकते हैं ? हम भी दावा करेंगे। आप जाइए गंगाजी में से पार निकल जाइये और ये मन्त्र बोलते जाइए। आप भी पार हो जाएँगे और डूब जाएँ, तो हमको डुबो देना। उन्होंने कहा—हाथ-पाँव बाँध दीजिए हमारे, अगर ये लड़का डूब जाए, तो बहती गंगा में हमको डुबो देना। उसको मौलवी ने मन्त्र बता दिया। उनका भी कमाल है ! इनका भी कमाल है ! दोनों का कमाल है ! काहे का ? मन्त्रों का। उन्होंने कहा—क्या करना चाहिए ? मन्त्रों का फायदा उठाना चाहिए। वो एक दिन स्वामीजी के पास गया, उनका राम-नाम का मन्त्र लेकर आया, पार चला गया। दूसरे दिन मौलवी साहब के पास आया। मौलवी साहब आप ही बताइये। मौलवी साहब ने मन्त्र बता दिया और हो गया पार।

दोनों मन्त्रों ने कमाल कर दिया ! वह कहने लगा देखो भाई ! क्या बात है ? ये मन्त्र तो ऐसे ही काम करते हैं, चाहे जिसका मन्त्र हो। उसने फिर ये कहा—अच्छा तो उसको पार होने में आधा घण्टा लगा था। राम-राम कहने से और खुदा-खुदा कहने से आधा घण्टा लगा था। राम और खुदा को मिलाकर कहने से बनाते हैं मिक्सचर (मिश्रण) तो पन्द्रह मिनट में पार हो सकते हैं। राम + खुदा दोनों मिल गए और दोनों का इस्तेमाल करेंगे। डबल इस्तेमाल होगा न। एक साइकिल एक घण्टे में पाँच मील चलती है और एक साइकिल एक घण्टे में दस मील चलती है। हो गई न डबल स्पीड। डबल स्पीड होने से वह आधा घण्टे में पहुँच जाएगी और वह एक घण्टे में पहुँचायेगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसने हिसाब लगा लिया। ज्योमेट्री (रेखागणित) का और अंकगणित का। बस, वह क्या करने लगा ? वह गंगाजी में चला, उसने राम नाम की जगह राम-खुदा, राम-खुदा कहने लगा। राम-खुदा कहते वह थोड़ा आगे चला और डूब गया उसमें बेचारा ! किसी और की कहता हूँ ? आपकी कहता हूँ। आपकी, राम-खुदा वालों की। राम-खुदा वालों की तरह ये गायत्री का मन्त्र है, ये महादेव जी का मन्त्र है, ६६ की संख्या रखी है चौकी पर। महादेव बाबा, साँई बाबा, संतोषी माता, लक्ष्मी माता। सब दुनिया भर के कबाड़े इकट्ठे कर रखे हैं। बेशर्म ? वेश्या ! बेशर्म ! एक से काम ही नहीं चलता। ६६ खसम चाहिए इनको। कुछ इनसे काम चलाएगा, कुछ साँई बाबा दे देगा, कुछ आचार्य जी दे देंगे। कुछ महादेव जी दे देंगे, कुछ संतोषी माता दे देंगी, कुछ लक्ष्मी जी पैसे दे जाएँगी, कुछ गणेश जी से मिल जाएँगे। ६६ चाहिए इनको खसम। ६६ में से कोई अँगूठी दे जाएगा, कोई मिठाई दे जाएगा, कोई रूमाल दे जाएगा। कोई शंख दे जाएगा। चुप रंडी ! मैं क्या कह रहा था ? मैं यह कह रहा था आपसे इसमें कर्मकाण्डों का बराबर का समन्वय रखा है। आप ये ख्याल रखेंगे, जब हम विदा होंगे, तो गुरु जी हमें कर्मकाण्ड बतायेंगे। तो आप भूलकर रहे हैं। मैं कोई कर्मकाण्ड नहीं बताने वाला आपको। गुरु जी ! विदाई का समय आ गया, कोई अच्छी विधि सिखा दीजिए ? क्या विधि सिखा दें ? आचार्य जी ! ऐसी कोई विधि आप सिखा दीजिए। इस विधि की कोई वजह ? आपने जो फायदा उठाया, व दूसरों से जो फायदा उठाया, वह विधि सिखा दीजिए। विधि, विधि पूछता है ? पागल ! विधि नहीं है। फिर क्या चीज है, जिससे कमाल होते हैं और चमत्कार दिखाई पड़ते हैं। उसका नाम है—विधा। विधि नहीं, विधा है, जो कमाल दिखाती है। विधा माने कायदा, कानून, नियम, बढ़िया वाली फिलॉसफी। ये विधा है। इसको हम समझा देंगे। आपकी समझ में नहीं आया ? आपकी समझ में नहीं आता फिर उससे आगे बात मत पूछिये। अक्षरों के उच्चारण सिखाइये, फायदा कराइये, बेटे ! अक्षरों के उच्चारण से कोई फायदा नहीं हो सकता। ये मन्त्र बताइये ? क्या मन्त्र बताएँ ? बता तो दिया आपको गायत्री मन्त्र। फिर भी नहीं भरा पेट। नहीं साहब ! फिर कुछ और कमाल बताइये ? इसके बीजमन्त्र बताइये, इसके नौ ओंकार लगाइये। लगाइये, हम कब मना करते हैं ? एक पीछे ओंकार लगाइये, एक बीच में ओंकार लगाइये। नहीं साहब ! कुछ और ऐसा बताइये, जिसमें कमाल हो जाए। कमाल इसमें नहीं आता, चाहे तू इसमें ६६ मन्त्र लगा ले, चाहे कुछ भी लगा ले। इसमें कमाल नहीं आ सकता। कमाल कहाँ से आएगा ? आपको समझना चाहिए। कमाल कहाँ से आते हैं ? कमालों की जड़ कहाँ है ? कमालों की जड़ है—मनुष्य की निष्ठा, श्रद्धा और विश्वास। यहाँ से गाड़ी चलती है। इसके बिना आध्यात्मिकता की राह पर प्रगति होना मुश्किल है। फिर क्या करना चाहिए ? बेटे ! मैं यही कह रहा था आपसे। आप बताइये उपासना। अब मैं आपको उपासना बताता हूँ। उपासना आप उस तरह से करना, जैसे मैं कहना चाहता हूँ। प्रतीकों को क्या मानें ? प्रतीकों को मानें आप भगवान की मूर्ति। आप यहाँ से समझें। प्रतीक का देव-पूजन। पूजन हमारे कर्मकाण्डों में और गायत्री उपासना में आवश्यक है। यहाँ हमने प्रतीक रखा हुआ है। कौन-सा प्रतीक रखा हुआ है ? गायत्री माता का प्रतीक रखा हुआ है। यज्ञ, हमने भगवान् का प्रतीक रखा हुआ है। ये प्रतीक हैं। प्रतीकों के नियम होते हैं। प्रतीकों को आप क्या मानेंगे ? प्रतीकों के बारे में ये मान्यता लेकर जाना ये भगवान् के नुमाइन्दे हैं। ये भगवान् हैं। कौन-से ? देवता ! ये भगवान हैं। भगवान किसे कहते हैं ? भगवान कहते हैं—सिद्धान्तों को, आदर्शों को। भगवान व्यक्तियों को नहीं कहते। सबसे बड़ी भूल यहाँ कर डाली है। भगवान कोई व्यक्ति नहीं है। भगवान सिद्धान्तों का नाम है और भगवान् को हम उच्चस्तरीय सिद्धान्तों के प्रतीक और प्रतिमा मान लेते हैं। आपकी यहाँ से गाड़ी चले तो आगे बढ़े और आपने यही बनाकर रखा हुआ कि ये देवी का खिलौना, ये चामुण्डा का खिलौना, ये माता का खिलौना, ये फलाने का खिलौना है। इन खिलौनों में कमाल देखा है, तो आपने प्रारम्भिक भूल कर दी। प्रारम्भिक उन्नति नहीं हुई। ये मानिये कि ये शक्ति जगाने वाली, सामर्थ्य जगाने वाली, ये भगवान से आने वाली है। भगवान से सामर्थ्य को पाने के लिए ये मीडियम हैं, ये माध्यम हैं। ये कौन बोल रहा है ? ये माइक बोल रहा है। माइक नहीं बोल रहा, हम बोल रहे हैं। हमारा हलक नहीं बोल रहा, हमारे विचार बोल रहे हैं, हमारी वाणी बोल रही है। कौन बोल रहा है ? माइक बोल रहा है ? नहीं, भाईसाहब ! माइक नहीं बोल सकता। कौन बोलता है ? हम बोलते हैं, आप बोलते हैं, हमारी अक्ल बोलती है, हमारी भावना बोलती है, हमारी विचारणाएँ बोलती हैं। ये वो बोलती है, जो आप माइक से कान से सुन रहे हैं। ये माइक बोल रहा है, गलत कहते हैं आप। इसलिए क्या करना चाहिए आपको ?

अपनी उपासना का उपक्रम यहाँ से जाते-जाते आप सीखते जाइए। क्या सीखकर जाएँ कि मूर्ति के बिना गाड़ी नहीं चलती। मूर्ति आवश्यक है; मूर्ति बहुत जरूरी है। मूर्ति के बिना, प्रतीकों के बिना उपासना नहीं हो सकती। हो ही नहीं सकती। नहीं साहब ! बहुत-से मजहब वाले कहते हैं, नाम बताइये हमको। साहब ! वो कहते हैं मुसलमान। मुसलमान बिना मूर्ति के करते हैं उपासना। जब काबा में जाते हैं, हज पर जाते हैं, वहाँ एक पत्थर रखा हुआ है, जिसका नाम है संगेअसवद' मोहम्मद साहब के काम आता था और उस 'संगेअसवद' का हर मुसलमान को चुम्बन लेना पड़ता है, बोसा लेना पड़ता है। इसके बिना हो ही नहीं सकता। ये पत्थर क्या हैं ? अरे पत्थर है ? नहीं साहब ! ये वो है संगेअसवद। संगेअसवद क्या होता है ? पत्थर है। साहब तरासा हुआ पत्थर है। नहीं साहब ! ये तो पत्थर को बोसा लेना पड़ता है। हम शालिग्राम को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बोसा ले लें या पानी चढ़ा दें, तो क्या आफत आ गई ? प्रतीकों के बिना कुछ नहीं चल सकता। नहीं साहब ! ये जो होते हैं कम्युनिस्ट, ये तो मूर्ति नहीं मानते। उन्होंने एक लेनिन की मूर्ति ज्यों-की-त्यों बना रखी है। लेनिन जब मरे, तो उनके शरीर में से मलवा निकाल दिया और मलवा निकाल देने के बाद में ऐसे केमिकल उनमें भर दिया है कि लेनिन ज्यों-के-त्यों जिन्दा खड़े प्रतीत होते हैं। वही कोट, वही कपड़े, उनको बदल देते हैं, थोड़े दिन के पीछे। पुरानापन वैसे ही बना लेते हैं। लेनिन जो कोट पहनते थे, उसी टाइप का कोट हूबहू मिल जाए। लेनिन ज्यों-के-त्यों खड़े हुए दीखते हैं। कोई शरीर समेत यों ही खड़े रह सकता है ? नहीं साहब ! पत्थर के थोड़े ही हैं। अरे ! पत्थर के नहीं बाबा ! वही चमड़ा है, वही आँखें, वही इनके दाँत हैं और वही नाखून हैं, ज्यों के त्यों केमिकल्स जब खराब होने लगते हैं, घटने लगते हैं, तो और चीजों से इसकी मरम्मत कर देते हैं। ज्यों-का-त्यों बना करके रखा है; लेनिन वहाँ खड़े हैं। उनको क्या करते हैं ? दुनिया के सारे-के-सारे कम्युनिस्ट आते हैं, जो भी उनका तरीका है, पूजा का क्या तरीका होता है ? अभिवादन भी हो सकता है, माला चढ़ाना भी हो सकता है, जो भी हो सकता है—मैं नहीं जानता; पर हर आदमी उनके सामने मस्तक झुकाता है, हर आदमी अभिवादन करता है।

ये भला मूर्तिपूजा नहीं हुई ? तो क्या हुई ? नहीं साहब ! ये तो वो हैं। ये लोग नहीं हो सकते। ये समाजवादी हैं, ये फलानेवादी हैं, ढिमाकेवादी हैं। इनके यहाँ मूर्तिपूजा नहीं होती है। सरकार तो धर्म निरपेक्ष है, मूर्ति-पूजा नहीं हो सकती। मूर्ति नहीं है। नहीं साहब ! तो ये तिरंगा झण्डा क्या है ? मूर्ति किस चीज की बनाई है ? एक कपड़े की बना ली हमने। हमने प्लास्टिक की बना ली या कागज की बना ली हमने। हमने कपड़े की बना ली, तो दूससे क्या अन्तर पड़ता है। नहीं साहब ! हम तो झण्डे का अपमान करेंगे, झण्डे को फेंक देंगे और झण्डे को फाड़ेंगे और झण्डे को इधर कर देंगे, झण्डे को उधर कर देंगे। करके दिखाइये न आप जरा ? झण्डा तो हमारा है, हम चाहे जो करेंगे ? आपका है, तो करके दिखाइये ? पुलिस आ जाएगी और आपकी रिपोर्ट कर देंगे। ये हमारा झण्डा है, राष्ट्रीय झण्डा है। अपने घर पर लगा रखा है और अपमान करते हैं ? तिरस्कार करते हैं ? पुलिस पकड़कर ले जाएगी, जेल में डाल देगी। नहीं साहब ! हम जलाएँगे। जलाकर दिखाइये जरा ! हम तो कम्युनिस्टों का झंडा जला देंगे। किसी कम्युनिस्ट के सामने न कह देना, जान ले लेगा। नहीं साहब ! ये कम्युनिस्ट तो मूर्तिपूजा नहीं मानते। कौन कहता है नहीं मानते मूर्तिपूजा ! मूर्तिपूजा प्रतीक हैं। किसके प्रतीक हैं ? हमारी भावना के प्रतीक हैं। भगवान के प्रतीक हैं। अगर मूर्ति को आपने समर्थ समझ लिया, मूर्ति को ही करामाती मान लिया, मूर्ति में ही चमत्कार मान लिया, मूर्ति को ही सब कुछ मान लिया, तो आप गलती कर रहे हैं। मूर्ति प्रतीक है। किसी की भी हो चाहे वो छोटी हो, चाहे बड़ी हो; अमुक स्थान पर हों, चाहे किसी अन्य स्थान पर हों। प्रायः लोग कहा करते हैं कि श्रीकृष्ण भगवान वृन्दावन में कमाल दिखाते हैं और मथुरा में नहीं दिखाते हैं। मथुरा की मूर्ति में, रंग जी की मूर्ति में भगवान बड़े जबरदस्त और फलाने मन्दिर में कमजोर हैं। बेटे ! ऐसा मत कह। श्रीकृष्ण भगवान कहीं भी हो सकते हैं। जहाँ कहीं भी होंगे, वहाँ बराबर उनकी सामर्थ्य होगी। नहीं साहब ! वहाँ वाले में चमत्कार है। कहाँ वाले में चमत्कार है साहब ! बद्रीनाथ के कृष्ण भगवान बहुत जोरदार हैं। महाकालेश्वर के महादेव बड़े जबरदस्त हैं। चुप रह ! पागल कहीं के ! महादेव की शक्ति इसको हम कहीं भी बुला सकते हैं। बच्चे के मन में भी बुला सकते हैं और अपने घर में जो हमारा पत्थर रखा है, उसमें भी बुला सकते हैं। उतना ही कमाल हो सकता है हमारे दीपक में। क्यों साहब ! आपके दीपक में कमाल है ? हाँ, बेटे ! है।

अलादीन का चिराग आपने सुना होगा ? अलादीन के चिराग में बड़ा कमाल था। क्यों साहब ! ये बात सही हो सकती है ? हाँ, मेरे ख्याल से तो सही होगी। अलादीन का चिराग आपके पास भी है ? मेरे पास भी है। अलादीन का चिराग हमारे घर में, जिसको हमने पचपन साल से प्राणों की बाती की तरह रखा है। क्यों साहब ! हम भी दीपक जला लेंगे। तब ? आप जला लीजिए। कौन मना करता है ? हम भी दीपक जलाएँगे आपके तरीके से तो करामात आ जाएगी ? करामात आ जाएगी ? काहे का जलाते हैं ? हम तो घी का जलाते हैं। जला लीजिए। तेल का जलाते हैं, तो आप जला लीजिए। कौन मना करता है ? फिर तो आप कोई ऐसी बात बता दीजिए, घी का भाव तो बहुत महँगा है, घी का मूल्य बहुत महँगा है। हाँ बेटा ! घी का भाव बहुत महँगा है। कोई बात नहीं, तेल का जला लीजिए। पंडित जी ! तेल भी बहुत महँगा हो गया है तो किसका जलाएगा ? मुझे ऐसी तरकीब बता दीजिए, जिससे पचास पैसे में मेरा अखण्ड दीपक जलता रहे। बताइये किसी बिजली कम्पनी ने ऐसा दीपक बनाया है जिसकी लौ हर वक्त जलती है, लप-लप जलती रहती है, उसको आप जला दीजिए और दूर रख दीजिए। कोई नहीं पकड़ सकता और न पहचान सकता है कि बिजली का है कि तेल का है। आप उसमें लगा दिया कीजिए। फिर अखण्ड दीपक में रात को जगना पड़ता है, रात को बत्ती जलानी पड़ती है। उसमें तो कुछ भी नहीं करना पड़ता। तू बस करेण्ट उसमें लगा दिया कर। रेफ्रिजरेटर में करेण्ट चालू कर देते हैं और रेफ्रिजरेटर बराबर ठण्डक करता रहता है। तू इसमें करेण्ट चालू कर दे, दीपक अखण्ड रूप से बराबर जलता रहेगा। फिर क्या हो जाएगा ? महात्मा हो जाएगा, सत्पुरुष हो जाएगा, ज्ञानी हो जाएगा, तपस्वी हो जाएगा। अरे ! तो तुम्हारी बत्ती जल तो रही है। किस चीज की बत्ती है ? तेल की जला दी तो क्या ! मिट्टी के तेल की जला दी तो क्या ! और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घी की जला दी तो क्या ! और मोमबत्ती जला दी तो क्या ! बिजली की जला दी तो क्या ! रोशनी तो जल रही है। क्या करेगा ? आग तो जल रही है। आग जल रही है। कमाल दिखाया आग ने। क्या कमाल हो सकता है ? आग में कमाल है जरूर। आग में क्या कमाल है ? रेलगाड़ी में, इंजन में जलता है कि नहीं जलता। हाँ साहब ! जलता रहता है। लोहा गलाने की भट्टियों में जलती रहती है कि नहीं ? उनमें तो और भी ज्यादा कमाल होगा। रेल के इन्जन में तो और भी ज्यादा कमाल होगा। आग में शक्ति नहीं होती। किसमें होती है ? शक्ति उसमें होती है, जिसको हम कहते हैं—श्रद्धा। हमने श्रद्धा का आरोपण किया है। किसके ऊपर ? अखण्ड दीपक के ऊपर। जब हम उसके नीचे बैठते हैं, तो हमें रोशनी दिखाई पड़ती है, जो औरों को दिखाई नहीं पड़ती। फिर उन्हें क्या दिखाई पड़ता है ? अप्रनापन दिखाई पड़ता है, आपकापन दिखाई पड़ता है, दुनिया दिखाई पड़ती है और उस रात-दिन के चिराग के नीचे न जाने हम क्या-क्या देखते हैं और क्या-क्या बनाते-बुनते रहते हैं। जाने क्या-क्या ख्वाब आते रहते हैं ! हमको दीपक का रहस्य बता दीजिए ? हम भी दीपक जलाना चाहते हैं। अरे बेटे ! हम आपको कैसे बताएँगे ? दीपक को पचासों आदमी जलाते रहते हैं, उसके मुखाग्नि से मालूम कीजिए, क्या है दीपक ? दीपक में तो कुछ भी नहीं। फिर कहाँ से आता है प्रकाश ? बेटे ! वहाँ से आता है, जहाँ पर हम श्रद्धा का समन्वय करते हैं। मैं आपको यही सिखा रहा था। आप ऐसे करना। क्या काम करें ? आप उपासना के कर्मकाण्डों को उसके साथ जोड़ दें। किसके साथ ? प्राण के साथ।

प्राण क्या होता है ? चिन्तन। चिन्तन क्या होता है ? श्रद्धा। श्रद्धा क्या होती है ? भावना। इन तीनों को आप जोड़कर चलें, तो छोटे-से-छोटा कर्मकाण्ड भी आपके लिए कमाल दे सकता है और ये आपको प्रेरणा दे सकता है। जैसे आप छोटी-सी उपासना करें। क्या उपासना करें ? छोटी-सी करें। गायत्री माता की छवि मूर्ति के रूप में चौकी पर रख लें। फिर आप क्या करेंगे चौकी पर ? गायत्री मन्त्र का उच्चारण धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन। हो गया न आपका पूजन। हाँ साहब ! हो गया। चावल चढ़ा देते हैं, धूप-बत्ती चढ़ा देते हैं, नैवेद्य चढ़ाने में कोई विचार तो नहीं। नहीं, कोई विचार नहीं। हम चावल चढ़ा देते हैं—**अक्षतान् समर्पयामि, नैवेद्यं समर्पयामि।** कोई विचार तो नहीं आता ? नहीं साहब, विचार तो नहीं आता। हमने ये समझाया कि आपने पदार्थ के द्वारा पूजन कर लिया और हाथ-पाँव की चेष्टाओं के द्वारा पूजा कर ली। ये कौन-सी पूजा है ? ये जड़ पूजा है। जड़ कैसे ? जड़ वो है, जिसमें चावल है, फूल है, अक्षत है, नैवेद्य है। ये सब क्या चीज है ? ये सब पदार्थ हैं—मैटर हैं, सब जड़ हैं और क्या कर रहा था ? काहे से पूजा कर रहा था। गायत्री माता के सामने ? हाथ से कर रहा था। काहे के हाथ, देखें। ये तो मिट्टी के हाथ हैं और माँस के हैं। माँस के नहीं, मिट्टी के। माँस-मिट्टी एक ही बात है। माँस से जप कर रहा था और क्या कर रहा था ? शीश नवा रहा था। सिर और हाथ क्या है ? मिट्टी के हैं और क्या कर रहा था ? मुँह में पानी डाल रहा था और आरती उतार रहा था और ये दिखाना जरा ! आरती काहे की है ? पीतल की है ? हाँ महाराज जी ! पीतल की है। इसमें क्या रखा है ? इसमें रखा है घी और कपूर। इसको काहे से जलाते हैं—दियासलाई से। ये भी मिट्टी है तो आप मिट्टी से कर रहे थे ? हाँ बेटे ! मिट्टी से आप लोग कर रहे थे ये कर्मकाण्ड। ये सारे कर्मकाण्ड जो आपकी क्रिया है। क्रिया क्या होती है ? हलचल। जो भी पदार्थ हैं—जड़ हैं। जड़ में एक चीज पाई जाती है, दो है हलचल। एटम में हलचल पाई जाती है, हवा में हलचल पाई जाती है, पत्ते हिलते पाये जाते हैं। हर चीज में ? जल जो जड़ है, उसमें भी हलचल पाई जाती है। समुद्र में ज्वार-भाटे पाये जाते हैं। हलचल तो प्राण में भी पाई जाती है। हलचल अगर आप करते हैं, तो चावल को इधर-उधर कर देते हैं, नैवेद्य को इधर कर देते हैं, अक्षत को उधर कर देते हैं। हाथ से नमस्कार कर देते हैं। जीभ की नोंक से तरह-तरह के उच्चारण कर लेते हैं। ये क्या हो गया ? ये बेटे ! उपासना का तन्त्र हो गया। ये अधूरा है, ये जड़ है। ये केवल पदार्थजन्य है। ये काफी नहीं है। इसके द्वारा लाभ नहीं मिल सकता। इसके साथ-साथ में दो और चीजें शामिल करनी पड़ेंगी, वह हैं आपके तीन शरीर। तीनों शरीरों को आप शामिल कर दें।

जो भी उपासना चाहें वो छोटी हो या बड़ी हो, आपको चमत्कार दिखा देगी, आपको लाभ दिखायेगी और आपको असर दिखायेगी। आपको प्रत्यक्ष उसका परिचय तुरन्त मिलने लगेगा। कैसे मिलता है ? ये मशीनें काम कर रही हैं। क्या पहचाना ? देखिये, इसमें ये लाल बत्ती लप-लप कर रही है। ये कहती है लाल रंग की बत्ती कि हमारे भीतर करेंट चल रहा है। ये बता दीजिए कौन-सी बत्ती लाल रंग की है ? आपको तुरन्त मालूम पड़ेगा। आपके भविष्य में कोई सम्भावना है कि नहीं, सिद्धियाँ मिलनी हैं कि नहीं, चमत्कार मिलने वाले हैं कि नहीं और आपका भविष्य उज्ज्वल होने वाला है कि नहीं। ये देवता आपसे प्रसन्न हैं कि नहीं, करामात होगी कि नहीं। सब मालूम पड़ जाएगा। ये बल्ब तुरन्त बतायेगा। साहब ! ये तो कैसा है ? ये बत्ती आपको बताती है जब भी आप टेप को दुबारा सुनेंगे, तो गुरु जी का भाषण ठीक आ जाएगा और लड़कियों का संगीत ठीक आ जाएगा। ये कह रहा था टेप रिकार्डर। हाँ भाईसाहब ! कह रहा था। इसके जुबान नहीं है। जुबान नहीं; पर ये सब कह रहा है कि हम ठीक काम कर रहे हैं। आपको भविष्य की सम्भावना है ? आपकी कोई भी उपासना, चाहे गायत्री मन्त्र हो, चाहे कोई भी हो, मैं तो एक जनरल बात कहता हूँ। गायत्री मन्त्र की भी नहीं कहता। आप सभी तो गायत्री की उपासक हैं, इसलिए अभी तो मुझे गायत्री उपासना की बात कहनी चाहिए। कहीं और जाने लगें, तो गायत्री उपासना की बात नहीं कहूँगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुसलमान देश में जाना पड़े। सम्भव है मेरा ट्रांसफर मुसलमान देश में होने वाला हो। फिर आप ईसाइयों में भी जा सकते हैं ? हाँ बेटे। मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि मेरा ट्रांसफर और मेरी तरक्की कहीं ईसाई देशों में न हो जाए। हिन्दू तो ३२ करोड़ हैं और मुसलमान ८० करोड़ हैं। साहब ! हिन्दू कितने रह गये ३० करोड़ हिन्दुस्तान में हैं और २ करोड़ बाहर हैं। इसमें नेपाल भी शामिल है, भूटान भी शामिल है। बाहरी दुनिया में भी फैले हुए हैं थोड़े-थोड़े। कुल ३० और २ यानी ३२ करोड़ हिन्दू। मुसलमान ८० करोड़ और ईसाई १२० करोड़ हैं इसके अतिरिक्त चीनी एवं कितनी ही अन्य जातियाँ हैं ? इस तरह से दुनिया में कुल ४०० करोड़ की आबादी है। इस प्रकार सारा-का-सारा ब्यौरा मैंने आपको बताया तो इनमें आपका ट्रान्सफर हो सकता है ? हाँ हो सकता है। तो आप क्या करेंगे ? गायत्री माता को ले जाएँगे ? नहीं बेटे ! मुश्किल है। गायत्री माता को साथ में कहीं ले जाना बहुत कठिन पड़ जाएगा और उनमें मुसलमानों में ? मुसलमानों में गायत्री माता आप ले जाएँगे क्या ? बेटे ! ये भी बड़ा कठिन पड़ेगा। बड़ा मुश्किल है। आज से सौ वर्ष बाद शायद बात बन जाए, पर आज तो उन्हीं के सिक्के से काम चलाना पड़ेगा। उनकी चीज से चमत्कार दिखा देंगे। मगर कैसे दिखाएँगे ? ये प्रतीकों के पीछे पागल हो गए हैं। प्राण भरना पड़ेगा। श्रद्धा भरनी पड़ेगी। आप तो प्रतीकों के पीछे पागल हो गए हैं और आप तो कर्मकाण्ड को न जाने क्या समझ बैठे हैं ? और श्रद्धा, जो प्राण थी, उसको आपने ध्यान भी नहीं दिया; उसको आप समझना भी नहीं चाहते; उसको आप सुनना भी नहीं चाहते; उसको आपने छुआ भी नहीं है; उसको आपने देखा भी नहीं है; उसको आपने सँजोया भी नहीं है; उसको अपनी उपासना के साथ मिलाया भी नहीं है। क्या आपके हाथ में चमत्कार इस तरीके से आएँगे ?

बेटे ! मैं ये कह रहा था आपसे, आप गायत्री माता की उपासना का छोटा-सा स्वरूप अपना लें, छोटी-सी उपासना किया करें। मैंने तो आपको कितना बता दिया है ! अनुष्ठान बता दिए हैं। क्या-क्या बता दिए हैं। मैंने तो आपको बी. ए., एम. ए. तक की पढ़ाई बता दी है; पर मान लीजिए बी. ए. एम. ए. तक की न आती हो, पहले दर्जे की पढ़ाई पढ़ना चाहते हों। मान लीजिए आप पहले दर्जे के विद्यार्थी हों तो पहले दर्जे की पढ़ाई को आप ठीक तरह से पढ़ लें, तो काम चल सकता है। कैसे पढ़ें ? आप ऐसे कीजिए कि मन्त्र के साथ-साथ में आपने पढ़ा होगा—योगशास्त्र में लिखा है—क्या लिखा है ? मन्त्र को अर्थ समेत जपना चाहिए। अर्थ समेत आप कहाँ जपते हैं ? ये गलत बात है। गायत्री मन्त्र की जिस प्रकार से बोलने की स्पीड है, उस तरह से विचार की स्पीड नहीं हो सकती। 'भूः' का अर्थ ये है, 'भुवः' का अर्थ ये है, तत् का अर्थ ये है। इस प्रकार से अर्थचिन्तन के साथ जप का समन्वय सम्भव नहीं और देखें जुबान कितनी तेजी से चलती है। अर्थ का चिंतन कितने धीमे से होता है ? जप के साथ चिंतन नहीं हो सकता। गलत कहा है—गलत या तो गलत लिखा है या आपने गलत समझा है। गलत क्या बात है ? इसका अर्थ ये है—कोई आप कृत्य करते हैं। प्रत्येक कृत्य को पीछे ये पता चलाना पड़ेगा। क्या पता चलाना पड़ेगा कि इसके पीछे प्रेरणा क्या है ? शिक्षा क्या है ? स्थूल शरीर से आप प्रतीकों का पूजन करेंगे, चावल चढ़ाएँ, हाथ जोड़ें, नमस्कार करें, माला घुमाएँ, मन्त्र का उच्चारण करें। ये स्थूल शरीर की क्रियाएँ हैं। इतने से काम बनने वाला नहीं। फिर क्या करना चाहिए ? आदमी को ये करना चाहिए कि प्रत्येक कर्मकाण्ड के पीछे की विचारणाएँ, प्रेरणाएँ समझें। विचारणाएँ क्या हैं ? प्रत्येक कर्मकाण्ड हमको कुछ शिक्षा देता है, कुछ नसीहत देता है, कुछ उम्मीदें कराता है। आपने उपासना की है, कर्मकाण्ड किया है, तो इस कर्मकाण्ड के माध्यम से जो आपको अपने जीवन में हेर-फेर करने चाहिए, विचारों में परिवर्तन करने चाहिए, उस परिवर्तन के लिए आप विचारमग्न हों और विचार करें कि आखिर ये क्यों किया जाए ? आप तो कर्मकाण्ड करते रहते हैं और ये विचार तक नहीं करते कि क्यों करते रहते हैं ? वेदान्त का, फिलॉसफी का पहला वाला सूत्र है, क्या सूत्र है ? ब्रह्म-जिज्ञासा। पहला काम ये है कि आप जानिए। ये क्या चक्कर है ? गायत्री माता की मूर्ति हो, तो आप ये पूछिए कि क्या बात है साहब ! हमने तो मूर्ति रख दी और दंड पेल रहे हैं। दण्ड पेलिये मत। पहला काम ये है कि समझो।

क्यों और क्या ? पहले यहाँ से चल। भजन पीछे करना। ये क्या चक्कर है ? पहले ये पूछना, फिर इसके बाद शुरू करना। ये आपकी क्या है ? जिज्ञासा है। प्रत्येक कर्मकाण्ड देखने से खिलवाड़ मालूम पड़ते हैं—बच्चों जैसे। खिलवाड़ मालूम पड़ते हैं। चावल चढ़ा दिया गणेश जी पर। काहे के लिए चढ़ा दिया गणेश जी पर। काटे के लिए चढ़ा दिया गणेश जी पर। गणेश जी चावल खाएँगे और ऐसा चावल खाएँगे, कच्चा चावल खाएँगे गणेश जी। आप भी खाइए कच्चा चावल। गणेश जी मरेंगे कि जिएँगे कच्चा चावल खाने से ? कच्चा चावल खाएँगे। कच्चा चावल नहीं खा सकते गणेश जी। गणेश जी को चावल खिलाना है, तो पकाकर लाइए। पका कर लाए हैं ? हाँ साहब ! और कितना चावल लाए हैं ? गणेश जी पर चढ़ा रहे थे—**अक्षतान् समर्पयामि**। दिखाइये चावल जरा। ये रहे छह दाने। छह दानों से क्या होगा ? गणेश जी का पेट तो इतना बड़ा है ? थैली भर चावल पकाकर लाइये। अगर आप यही मानते हैं कि चावल चढ़ाना है, तो मखौल मत कीजिए। मक्खनबाजी मत कीजिए। जो बात मुनासिब है, वो कीजिए। अगर हम आपके घर जाएँ और आप कहें—गुरु जी ! लीजिए खाना खाइये। हाँ बेटे ! हमने तो आज खाया भी नहीं है। ये लीजिए चावल खा लीजिए छह दाने। छह दाने चावल बेटे ! कैसे खा लूँ ? पकाए हैं ना ? नहीं साहब ! पकाने की क्या जरूरत है इसमें ? थाली में रखकर ला। नहीं साहब ! थाली में भी क्या करेंगे आप ? क्या करेंगे ? यहीं पटक देंगे, ये छह चावल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के दाने। बेटे ! इसको हम क्या करें ? खा लीजिए। ये तो मुश्किल है, छह चावल तो हमारी दाढ़ी में चिपके रह जाएँगे। पेट कैसे भरेगा ? और गणेश जी का ? गणेश जी को **'अक्षतं समर्पयामि'**, गणेश जी को अक्षत चढ़ाता ही जा रहा है। समझता नहीं कि क्या चक्कर है ? समझता है कि नहीं ? नहीं साहब ! मुझे क्या समझना है। अक्षत चढ़ाऊँगा। भाड़ चढ़ाएगा अक्षत। मित्रो ! क्या करना पड़ेगा ? आपको ये करना पड़ेगा कि क्रिया के साथ-साथ में शिक्षाएँ और प्रेरणाएँ आपको समझनी चाहिए और समझनी ही नहीं वरन् हृदयंगम भी करनी चाहिए।

पुराने जमाने में ऋषियों ने एक परम्परा बनाई थी। प्रत्येक कर्मकाण्ड को एक शिक्षण बना दिया था। शिक्षण, चीनी भाषा में आपको मालूम नहीं ? चीनी भाषा में जो अक्षर है, खिलौने के रूप में है। जैसे चिड़िया है—'च', तो 'च' को चिड़िया के रूप में व्यक्त करेंगे। जैसे 'क' माने कबूतर हमारे यहाँ बनता है, तो 'च' माने चिड़िया अगर बनेगी, तो चीनी भाषा में चिड़िया की शक्ल बना देंगे, तो वो 'च' हो जाएगा। हमारे यहाँ कैसा है ? हमारे यहाँ सिद्धान्तों को, जीवन की प्रेरणा को, जीवन की शिक्षाओं को जीवन-निर्माण की दिशाधाराओं को इन कर्मकाण्डों के साथ-साथ में गूँथ दिया है। गूँथ दिया है, ताकि जब ये कर्मकाण्ड सामने आएँ, तो आदमी कुछ शिक्षा ग्रहण करे, प्रेरणा ग्रहण करे। किसके लिए ? जीवन-निर्माण के लिए। ये जीवन-निर्माण क्या है ? बेटे ! समझता क्यों नहीं है तू ? ये जीवन-निर्माण का खेल है सारा। देवताओं को पकड़ने की विद्या नहीं है, देवताओं को गिरफ्तार करने की विद्या नहीं है। देवता किसी की गिरफ्त में नहीं आ सकते और देवता किसी के साथ पक्षपात नहीं कर सकते और देवता किसी के ऊपर फूल नहीं बरसा सकते। देवता, आपके ऊपर जो फूल बरसाते हैं, वो है आपका अन्तर्मन। अन्तर्मन को प्रशिक्षित करना—यही देवता की पूजा है। आप संक्षेप में यही मानो। अपने आपको सही कर लेना—देवता की यही पूजा है। भगवान को प्रसन्न करने का दुनिया में एक ही तरीका है। अपना व्यक्तित्व ऊँचा बना लेना, परिष्कृत कर लेना। फूल के तरीके से आप खिलें, तो आपके ऊपर भौंरें आएँ, तितली आएँ, शहद की मक्खी आएँ। अपने व्यक्तित्व को खिलाएँ, अपने व्यक्तित्व को आप परिमार्जित कर लें, ताकि देवता आपके पास झक मारें; देवता जय बोलें; देवता आपके पैर धोएँ; देवता आपकी आरती उतारें; देवता आपकी जूठन खाएँ और देवता आपके साथ-साथ फिरें। नहीं साहब ! ये कैसे हो सकता है ? आप देवताओं की शान में ऐसी बात कह रहे हैं। देवताओं की शान में हम सही बात कह रहे हैं। देवताओं ने मनुष्यों की जूठन खाई। कब खाई है जूठन ? शबरी की जूठन खाई है देवता ने। क्यों साहब ! क्यों खाने गया था जूठन ? इसलिए जूठन खाने गया था कि वो दुनिया को साबित करना चाहता था कि भक्त बड़ा होता है और भगवान छोटा होता है। आप समझते क्यों नहीं हैं ? अगर आप भक्त हैं, तो भगवान आपका जूठा खाने आएगा। आपको भगवान का जूठा खाने की जरूरत नहीं है, अगर आप भक्त हैं तो। भक्त ही बन जाने का सारा खेल है, आपको कैसे कहूँ ? आपको कैसे समझाऊँ ? आपने उसे क्या मान लिया, मुझे पता नहीं। ऋषि क्या कहना चाहते थे और न जाने आपकी अक्ल में क्या बवाल आ गया है। आपकी अक्ल में ये बवाल आ गया है कि देवता हैं बेवकूफ। सबसे बेवकूफ कौन होता है ? देवता। बन्दर नहीं। बन्दर तो बहुत चालाक होता है। टोपी लेकर भाग जाता है। कौन होता है दुनिया में सबसे ज्यादा बेवकूफ ? कौन होता है—देवता। अच्छा, देवता को पकड़ने का तरीका क्या है ? देवता को पकड़ने का तरीका बहुत सरल है और सबका कठिन है। क्यों साहब ! हम तुमको पकड़ना चाहें तब ? क्या पकड़ना चाहते थे ? जंगल में से हाथी पकड़ना चाहते थे, बेचेंगे तो हाथी पकड़कर लाइए न ? हाथी पकड़ने में तो बड़ा भारी पसीना आता है, बहुत मुश्किल पड़ती है। बेटा ! हाथी पकड़ना क्या समझते हो सरल है नहीं ? मछली पकड़ने वाले भी दिन भर बैठे रहते हैं। हाथी पकड़ने वाले भी सारे दिन बैठे रहते हैं। दो-चार मछलियाँ आती हैं और बाकी मछलियाँ भाग जाती हैं। मछलियाँ भी नहीं आतीं। और हाथी भी पकड़ में नहीं आते, मुर्गा ? मुर्गा भी नहीं आता। हिरन ? हिरन पकड़ लिया कर। बकरा बिकता है आजकल। एक-एक बकरा ८०-८० रुपये में बिकता है। माँस का भाव क्या हो गया है ? तू क्या किया कर, जंगल में चला जाया कर और हिरन पकड़ लाया कर। इसका क्या करूँगा ? बकरा तो ८० रुपये में बिकता है, हिरन १०० रुपये में बिकेगा, १२५ रुपये में बिकेगा। इसके सींग भी होते हैं, चमड़ी भी होती है, माँस बहुत ज्यादा बिकता है, जायकेदार होता है। तू हिरन पकड़ लाया कर। कैसे पकड़ लाया करूँ ? ऐसे ही चला जाया कर। सब पकड़ में आ जाएँगे हिरन। कैसे पकड़े जाएँगे ? गुरु जी बताइये ऐसा कर। एक माला ले आना। माला लेकर के पेड़ के नीचे बैठ जा और चाहे तो घूमते रह। क्या करूँ फिर ? माला बैठकर किया कर। ॐ हिरनाय नमः, ॐ हिरनाय नमः तो क्या हो जाएगा ? सारे-के-सारे हिरन इकट्ठे होकर हाथ जोड़कर सामने खड़े हो जाएँगे। कहिए बाबूजी ! क्या कहना है ? आइये, आइये अब आपकी सवारी होनी है और आपको ऊपर सामान ढोना है और आपको गाड़ी में चलाया जाना है। ये कौन कहेंगे ? हिरन ! आपको हिरन पकड़ने हों, तो आप यही करना और क्या काम करें ? जंगल में आप चले जाइए। जंगल में आप जाइए और जो भी जानवर पकड़ना हो, आप इसी तरह से पकड़िए। हाथी पकड़ने हों, शेर पकड़ने हों, जो भी जानवर हों, पकड़ लाइए इस तरीके से। माला ले जाइए, लोमड़ी पकड़ लाइए। कितनी महँगी है ? बेटे ! बहुत महँगी होगी लोमड़ी की खाल। लोमड़ी की खाल की माँग आती है। लोमड़ी पकड़ लें और लोमड़ी की खाल बेचता रह तू। मालामाल हो जाएगा। लखपति हो जाएगा। लोमड़ी को पकड़ने का तरीका बताइये ? वही तरीका दुनिया में। आपने तो एक ही तरीका सीखा है न ? कौन-सा बस वो एक तो ॐ लोमड़िआय नमः। लोमड़ी ले जाइए और घर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पर बैठ जाइए। चंदन चढ़ाइए, अक्षत चढ़ाइए, रोली चढ़ाइए और लोमड़ी पकड़ लाइये। नहीं साहब ! आपने कहा था और हम गए, तो लोमड़ी पकड़ में नहीं आई। नहीं आई ? तो क्या पकड़ लाया। शहद की मक्खी पकड़ लाया। क्या पकड़ लाया ? ॐ नमः शहदाय् नमः' शहद आ गया। नहीं महाराज जी ! शहद नहीं आया और मक्खी काटने आई और हिरन मारने आए। नहीं, कुछ भी नहीं आया। तो बेटे ! दुनिया में एक ही बेवकूफ रहता है, उसे पकड़ ला। इसके बराबर उल्लू, इसके बराबर अहमक और बेवकूफ और इसके बराबर बेहूदा, जाहिल, इसके बराबर जलील इस दुनिया में कोई नहीं। पकड़ला तू। फिर इसका कचमूर बना और मलीदा बना। चल, बेवकूफ कहीं के ! बात को समझता तक नहीं है। जाहिल कहीं के ! बात को समझिए और अन्यथा वृथा खेल बन्द कीजिए। खिलवाड़ करना बन्द कीजिए। करना है, तो ढंग से कीजिए। समय मत खराब कीजिए। देवता इतने कमजोर नहीं हैं कि माला से गिरफ्त में आ जाएँ। आप किसकी बाबत सिखा देते हैं और क्या सिखाते हैं ? देवता हमारे लिए सत्प्रवृत्तियों का नाम है। जब ये विकसित होती हैं, तो कमाल करती हैं। जमीन को फाड़ डालती हैं, आसमान को तोड़ देती हैं। जब कृतियाँ विकसित होती हैं, तो सिद्धियों का ठिकाना, न चमत्कारों का ठिकाना, एक छोटे-से लकड़हारे का बेटा अब्राहम लिंकन बन जाता है, जॉर्ज वाशिंगटन बन जाता है, आप समझते तो हैं नहीं। अपने आपको तो समझा नहीं, अपने को तो देखा नहीं है, अपनी तो मिट्टी पलीद की है। अपने को तो मार-मार कर भुर्त्ता बना दिया है। दुनिया से इसका लाएँगे, उसका मारेंगे, इसकी काटेंगे, उसकी मारेंगे जेब। जेब काटना बन्द कीजिए।

अध्यात्म एक ही चीज का नाम है—अपने आप को परिष्कृत करने की शैली का नाम। परिष्कृत करने की शैली के लिए क्या करना पड़ता था ? यही तो मैं आपको बता रहा था। देवता के माध्यम से आप यह देखिए कि जीवन को परिष्कृत करने का ढंग क्या है ? गायत्री माता क्या है ? एक किताब है । गायत्री माता क्या है ? गायत्री माता भगवान का एक टेप रिकार्डर है। ये आपके लिए शिक्षण है—मौन शिक्षण। आपके लिए व्याख्यान तो नहीं है, पर मौन शिक्षण है। क्या मौन शिक्षण है ? देवताओं की शक्ति को विकसित करने के लिए, गायत्री माता का चमत्कार देखने के लिए आप ये सारे-के-सारे शिक्षण की ग्रहण कर लीजिए। ये क्या हैं ? ये आपका मस्तिष्क। मस्तिष्क का शिक्षण कीजिए। किससे ? पूजा की चौकी से। क्या शिक्षण ग्रहण करें ? बेटे क्या करना पड़ता है ? सफाई करनी पड़ती है। बिना सफाई के पूजा नहीं हो सकती है। शरीर को साफ कर पूजा के निमित्त। नहा कर जाना उपासना कि निमित्त और क्या करें ? मैला कपड़ा, नहीं बेटे ! मैला कपड़ा मत पहनना, देख, धुला हुआ कपड़ा पहनकर जाना और क्या करूँ ? देख जहाँ जमीन पर पूजा करना हो, वहाँ पर झाड़ू लगा लेना। नहीं महाराज जी ! मैं क्या झाड़ू लगाऊँगा, ऐसे ही बैठ जाऊँगा। ऐसे नहीं बैठना, गायत्री माता नाराज हो जाएँगी। और क्या करूँ ? जो कुछ भी बरतन हैं तेरे पास, पंचपात्र आदि। पंचपात्र तो महीने भर से रखा है। नहीं भाई ! ऐसे मत किया कर। हर जगह की सफाई अनिवार्य है। आचरण की सफाई, व्यवहार की सफाई, पानी की सफाई, विचारों की सफाई—सब चीजों की सफाई, हर जगह की सफाई। सफाई से अपनी मलीनता का परिष्कार करने से गायत्री माता के दरवाजे में प्रवेश करने का मौका मिलता है, नहीं तो दरवाजा बन्द। गन्दे आदमी के लिए दरवाजा बन्द। गन्दे कपड़े पर रंग चढ़ाने की मत सोचिए। आप गन्दगी धोइए। वहाँ से शुरू कीजिए। देवता के पीछे गिरफ्तार कीजिए, देवता के दरवाजे पर पीछे जाना। पहले वहाँ से चलिये, देवता के दरवाजे के लिए जहाँ से प्रवेश-पत्र मिलता है। यह उन्हीं को मिलता है। किनको ? जो अन्तरंग की और बहिरंग की दृष्टि से सफाई पर विश्वास करते हैं। उनको स्वच्छ होना चाहिए, उनको निर्मल होना चाहिए, उनको शरीफ होना चाहिए, उनको ईमानदार होना चाहिए। उनको निष्पाप होना चाहिए और उनको निष्कलंक होना चाहिए। ये वृत्तियाँ अगर आपने स्वीकर कर लीं तो आपने दरवाजा खोल दिया। किसके लिए ? भगवान् के दरवाजे पर जाने के लिए। अब क्या करें ? अब अगली कक्षा की तैयारी यह सब शिक्षण है, बाबा शिक्षण ! शिक्षण है जादूगरी नहीं है, ये बाजीगरी नहीं है। सारी-की-सारी उपासना को लोगों ने जादूगरी बना रखी है, बाजीगरी बना रखी है जिसको देखो बाजीगरी और जादूगरी से कम में बात नहीं करता। बाजीगरी और जादूगरी है ? है बेटे ! लेकिन ये प्रॉपर चैनल (उचित माध्यम) से जादूगरी है। इससे कम में जादूगरी नहीं है। फिर क्या करना चाहिए ? गायत्री माता की उपासना प्रारम्भ कर चमत्कार हो जाएँगे ? हाँ बेटे ! चमत्कार हो जाएँगे। कैसे चमत्कार हो जाएँगे ? गायत्री माता की छवि क्या है ? जरा उसको दिखाओ, तो देखें। महाराज जी ! गायत्री माता हंस पर बैठी हैं। ये बैठी हैं। ठीक है बेटे ! उसको जरूरत होगी, तो बैठ लेंगी, हंस की सवारी लेनी होगी, तो ले लेंगी। तू भी सवारी ले ले। नहीं साहब ! वो सवारी की बात बड़ी भारी है। क्या चीज है ? इसको समझ। क्या समझ ? नारी की प्रतिमा हमने ली हुई है। नारी कैसी ? जवान औरत। जवान औरत को हमने गायत्री माता बनाया हुआ है। ये क्या हैं ? ये हमारे दृष्टिकोण का परिवर्तन है, ये हमारी मानसिक धरातल की क्रान्ति है। हमारे सारे जीवन ने नारी को क्या समझा है ? नारी को एक दृष्टि से देखा है, जिसका नाम है—वेश्या। नारी के बारे में हमारा क्या ख्याल है ? हमारा ख्याल है नारी होती है वेश्या। नारी किसे कहते हैं ? नारी वेश्या को कहते हैं। नारी का दूसरा नाम क्या है—वेश्या। रमणी इसका नाम है, कामिनी इसका नाम है। आपने जब भी इन आँखों से, गन्दी और जलील आँखों से नारी को देखा है तो कामिनी के रूप में देखा है, रमणी के रूप में देखा है। आप आँखें बदल दीजिए, दृष्टिकोण बदल दीजिए। अरे ! नारी दृष्टिकोण होता है। नारी आकर्षण है। नारी के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए नर आकर्षण है। नर के लिए नारियाँ आकर्षण हैं। इसलिए ये आकर्षण गिरावट वाले आकर्षण हैं, इसको आप बदल दीजिए और सच्चाई की तरफ लाइए। ये क्या है ? ये मौलिक जीवन की क्रान्ति है। गायत्री माता को नारी के रूप में प्रतिष्ठित करना, ज्योति के रूप में प्रतिष्ठापित करना—ये आपकी मानसिक और भावनात्मक क्रान्ति है। आप क्या कहें ? गायत्री माता को क्या कहूँ बेटे ! इसको माँ कहना। माँ से क्या मतलब है ? माँ से ये मतलब है कि ये पूज्य और पवित्र हैं। पवित्रतम् और पूज्यतम्। कौन हैं ? ये नारी। नारी कौन ? ये देवी। कौन देवी ? ये गायत्री माता, जो चौकी पर बैठी हुई हैं। इसके बारे में, इसके माध्यम से आप अपनी दृष्टि का विकास कीजिए। ये जवान औरत की छवि है। ये चौकी पर बैठी हुई हैं। आप जवान औरत को कहिए माँ। माँ कहिए इससे क्या करें ? अभ्यास। ये प्राथमिक अभ्यास है। इस प्राथमिक अभ्यास को विकसित करते हैं, फिर सारे-के-सारे दृष्टिकोण में इसे आप ले आइए। क्या लाएँ ? कि हमको अपने अन्दर श्रेष्ठता को धारण करना है।

हर व्यक्ति के भीतर एक पक्ष रहता है शैतान, एक पक्ष रहता है भगवान्। नारी के अन्दर शैतान रहता है ? नारी के अन्दर शैतान भी रहता है। रहता है ? बिल्कुल रहता है। क्यों साहब ! नारी के अन्दर वो वाहियात बातें, जो अखबारों में और किताबों में पढ़ते हैं वो ? ये बेटे ! सब होती हैं। आपको क्या करना है ? आपको उधर ध्यान ही नहीं देना है। आपको नारी के अन्दर जो महान है, बस उसको देखना है। उपासना यहाँ से प्रारम्भ होती है—महान को देखना। गायत्री माता की आप उपासना शुरू करें, लम्बे कर्मकाण्ड बाद में बताऊँगा। शुरुआत कीजिए। इसके बिना हमारी उपासना नहीं हो सकती। गायत्री माता की सवारियाँ, गायत्री माता के वाहन। हाँ बेटे ! क्या करना चाहिए ? गायत्री माता की शक्ति प्राप्त करने के लिए गायत्री माता को अपने कंधे पर बैठाकर रखना चाहिए। गायत्री माता का वाहन बनने के लिए, गायत्री माता के समीप रहने के लिए आपको हंस बनाना चाहिए। हंस कैसा होता है ? राजहंस। राजहंस और परमहंस। परमहंस और राजहंस में परमहंस ज्यादा ऊँचे स्तर के हैं और सामान्य मनुष्य, जिसको हम शालीन कहते हैं, सज्जन कहते हैं, शरीफ कहते हैं, श्रेष्ठ कहते हैं, वो क्या होता है ? उसको हम राजहंस कहते हैं। हंस तो महाराज जी ! ये रहते हैं तालाब में। तालाबों की बात कौन कह रहा है ? साहब ! गायत्री माता शायद रहती हों उस तालाब में। तालाब में रहने वाले हंस पर बैठती हों। चल ! तालाब में बैठती हैं। तुझे बैठना है, तो तू भी बैठ। गायत्री माता मुझसे भारी हैं क्या या हल्की हैं ? मुझसे तो भारी हैं। तेरा वजन कितना है ? सौ मन है। अच्छा ! गायत्री माता कितनी भारी हो सकती हैं ? गायत्री माता का भार भी ढाई मन हो सकता है। तीन मन क्यों नहीं ? तीन मन से तो कम नहीं होंगी। नहीं महाराज जी ! तीन मन से कम क्या होंगी ? तीन मन की गायत्री को भला बुला और एक हंस को, फिर ट्राई (कोशिश) करते हैं। एक हंस हम रख देते हैं और तीन मन की बोरी, जिसमें आलू भरकर आता है, इसके सिर पर धर दे, फिर देख बेटा ! हंस का क्या होता है ? अरे महाराज जी ! हंस का तो कचूमर निकल जाएगा। गायत्री माता हंस पर बैठेंगी, तो क्या हो जाएगा ? हंस पर बैठती हैं। तेरे सिर पर बैठती हैं। ये अलंकार हैं, शिक्षण हैं। अलंकारों को समझता नहीं है ? शिक्षण को समझता नहीं है ? भावना को समझता नहीं है ? प्रेरणा को समझता नहीं है ? हिसाब को समझता नहीं है ? बस, वही 'राम नाम जपना पराया माल अपना'। यही भजन सुन रखा है बाजीगरों से। बाजीगरों की बात छोड़िए। फिर क्या करना चाहिए ? मित्रो ! आपको वहाँ से राजहंस की तरह से विकसित होना चाहिए, जो उचित है और मुन्नासिब भी। जो मुनासिब उसका नाम है—राजहंस। जो आदमी मोती खाते हैं वे नहीं मिलने पर भूखे रह जाते हैं। नहीं साहब ! मर जाएगा, तो मर जाना। वैसे भी तो मरेगा न आदमी। बुखार से मर जाते हैं, खाँसी से मर जाते हैं, टी. बी. से मर जाते हैं, आप भी मर जाइए। भूखे मर जाइए। नहीं साहब ! इसके बिना गुजारा नहीं चलता। गुजारा नहीं चलता, तो मर तो सकते हैं। भूखे हैं, मरिए फिर। नहीं साहब ! मर तो हम नहीं सकते तो फिर आप शिक्षण ग्रहण कीजिए। आपको जो ग्रहण करना है, आपको जो खाना है, जो उपयोग करना है, जिसका उपभोग करना है, वो क्या होना चाहिए ? वो मोती के तरीके से होना चाहिए और जो आपको स्वीकार करना है, वो दूध के तरीके से होना चाहिए। सीप हटाइये और कीड़े हटाइए। सीप हटाइये और मोती ग्रहण कीजिए। ये किसकी आदत है ? ये राजहंस की आदत है। राजहंस की आदत अगर आपको स्वीकार हो, तो फिर आप आगे बढ़िए। अब आपकी गायत्री माता पूरी हो गई।

आगे क्या करना पड़ेगा ? उनका पंचोपचार पूजन। पंचोपचार क्यों करने पड़ते हैं ? पंचोपचार में क्या करना पड़ता है ? पंचोपचार में क्या होता है ? रोली होती है, जल होता है, अक्षत होते हैं, नैवेद्य होता है और पुष्प होते हैं। ये सब होते हैं ? हाँ बेटे। पाँच चीजें होती हैं। बस, कम-से-कम इतना तो कर ले। इतने से ही चमत्कार दिखाई देगा। बस, इन्हीं की प्रेरणा ग्रहण कर। प्रेरणा क्या है ? हमने कई बार आपको बता दिया है। चन्दन क्या सिखाता है ? हमने कितनी बार सिखा दिया आपको। फूल क्या सिखाता है ? हमने कितनी बार सिखा दिया आपको। दीपक क्या सिखाता है ? हमने कितनी बार आपको बताया। मिठास क्या सिखाती है ? और शक्कर क्या सिखाती है ? वो हमने कितनी बार बताया और अक्षत क्या सिखाता है ? कितनी बार बताया। जल क्या सिखाता है ? जल सिखाता है हमारा श्रम और हमारा पसीना श्रेष्ठ कार्यों के लिए और श्रेष्ठ वृत्तियों के लिए नियोजित हो। सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन के लिए हमारा पसीना बहना चाहिए। इससे हमारा प्रशिक्षण किया जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अक्षत क्या होता है ? एक अंश, अपनी आजीविका का एक अंश, समय का एक अंश, साधन का एक अंश नियमित रूप से निकालना अंशदान है, हिस्सा बाँट है। हिस्सा साहब ! हमने समाज को दे दिया था पिछले साल। समाज में बाँटने से बात नहीं चलती है। हिस्सा बाँट निकाल इसमें। नहीं साहब ! हिस्सा क्यों बाँटूँ ? साहब ! हम तो कभी-कभी देते हैं। कभी-कभी नहीं देते। अक्षत धन हमने कमाया था और हम कमाते हैं और इसमें से नियमित रूप से निःस्वार्थवश लोकहित के लिए और सत् प्रयोजन के लिए निकालते हैं। ये क्या है ? ये भगवान के लिए। भगवान क्या होता है ? मनुष्य होता है ? कोई मनुष्य नहीं है भगवान। ये क्या है ? श्रेष्ठ वृत्तियों के लिए, सत्कर्मों के लिए, सत् प्रयोजनों के लिए। नियमित रूप से अंशदान निकालते रहना। **अक्षतं समर्पयामि**। अक्षत से क्या मतलब है आपका ? आप पसीना बहाते हैं, समय देते हैं, श्रम करते हैं, संसार में श्रेष्ठ वृत्तियों के संवर्द्धन के लिए। नहीं साहब ! चौबीसों घण्टे अपने मतलब में लगे रहते हैं। क्या मतलब है आपका ? हमारा मतलब है—**पाद्यं समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि**। किसको स्नान करा रहे थे। भगवान को ? अच्छा ! तो भगवान को आप स्नान कराते हैं। भगवान आपसे बड़े हैं या छोटे। भगवान हमसे तो बड़े हैं। आपको नहाने में कितना पानी चाहिए ? कितना पानी चाहिए बताइए ? हमारे नहाने में दो बाल्टी लग जाता है। आपको मालूम है आप कितने में नहाते हैं ? हमारे में तो दो बाल्टी लग जाता है। गुरु जी ! आपसे तो बहुत बड़े हैं। तो कितनी बाल्टी चाहिए ? भगवान जी तो बड़े हैं। हाथी नहाते हैं तो सौ बाल्टी लग जाता है। थोड़ा नहलाते हैं, तो १५-२० बाल्टी लग जाता है। भगवान जी घोड़े की तरह हैं ? घोड़े के बराबर नहीं हैं। घोड़े से कम है। घोड़े को कितना बाल्टी में नहलाएँगे ? घोड़े को तो बेटे ! दस बाल्टी में नहलाएँगे। तो भगवान जी को दस बाल्टी से नहला। ये क्या कर रहा था ? स्नानं समर्पयामि। किससे स्नान कराया। चम्मच से। बस ! बहका रहा है भगवान् को। बहकावे का नाम भजन रखा है आपने ? किसने कहा था आपको भगवान को बहका ? स्नान कराएँगे ! बहुत स्नान कराएँगे ! स्नान कराने के लिए आपको अपना श्रम, पसीना बहाना चाहिए अथवा आपको अपना अंशदान करना चाहिए। चंदन के तरीके से सुगन्धित जीवन पुष्प के तरीके से हँसता-हँसाता जीवन और दीपक के तरीके से प्रकाश पैदा कीजिए, अपने आपको जलाइए, रोशनी दीजिए नई पीढ़ियों को, ताकि आप जलें और दुनिया में प्रकाश पैदा हो।

ये क्या है ? आध्यात्मिक जीवन है। आध्यात्मिक जीवनयापन करने के शिक्षण, चरित्रवान बनने के शिक्षण, सारे-के-सारे बेटे ! आध्यात्मिक जीवन के रहस्य हैं और क्या हैं ? नहीं, मैं तो जैसा हूँ वैसा ही रहूँगा। क्यों ? वैसा क्यों रहेगा ? नहीं महाराज जी ! भगवान पापियों का भी उद्धार करते हैं। पापियों का उद्धार कर देते हैं ? हाँ, सैकड़ों आदमी थे पापी, उन्होंने राम-नाम लिया और स्वर्ग मिल गया था। पापियों का उद्धार हो गया था। अच्छा बता एकाध के नाम बता। लीजिए गुरुजी बताता हूँ आपको। तो आपको चुप कर दूँगा। चुप कर देगा ! अच्छा, बता तो सही चुप हो जाएँगे। गणिका, अजामिल, सदन कसाई। अहा ! ये मामला है। ये कहना चाह रहा था तू। गणिका जो थी वेश्या, राम के नाम लेने से पहले, जो दुराचार-व्यभिचार करती थी, वो राम का नाम लेने के बाद भी करती थी कि नहीं करती थी। बाद में नहीं, पहले करती थी। अब हम तेरी बात मानते हैं, तू हमारी बात मान। राम नाम लेने के पहले वेश्या थी, बाद में नहीं। सूरदास, विल्वमंगल राम नाम से पहले थे कि बाद में। नहीं महाराज जी ! बाद में नहीं थे। बाद में तो, वो जब से सन्त हो गए थे तो उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं किया था। डाकू अंगुलिमाल राम नाम लेता था, बुद्ध का शिष्य हुआ था। पहले डकैत था या बाद में। नहीं साहब ! बाद में नहीं। बाद में तो असली सन्त हो गया था। बाल्मीकि ? बाल्मीकि भी बेटे ! डाकू था। लेकिन ये बता डाकू तो था; लेकिन राम नाम लेने के बाद डाकू रहा कि नहीं। नहीं महाराज जी ! नहीं था। नहीं, कुछ ऐसा चलता रहता हो, दिन में माला जपता हो और रात में डकैती डालता हो। नहीं, फिर नहीं किया था। आप क्या कह रहे थे ? आप क्या चाहते हैं ? वेश्यावृत्ति भी जारी रखी जाए, चोरी भी जारी रखी जाए और काम भी जारी रखे जाएँ, भजन भी जारी रखा जाए ? जारी रखा जा सकता है; पर उसकी शर्त ये है—राम नाम को लेने के पश्चात् में, फिर आपको वो काम नहीं करने चाहिए, जो आपके लिए शोभा नहीं देते, जो भगवान् को नापसन्द हैं। ये क्या ? जीवन को ढालना है बेटे ! जीवन को ढालने में करामात ही करामात है। आपके सारे जीवन में करामात ही भरी पड़ी है। आपकी जीभ है, आप इसको विपरीत कर लीजिए। आप दूसरों को मत दिखाइये, दिल में छुपाइये। दूसरों को बुरी सलाह मत दीजिए, दूसरों को पतन के गड्ढे में मत ढकेलिए। आप अपनी जीभ को काबू में करिए। फिर देखिए, आप अपनी जीभ की करामात। जिस जीभ में आपने चरणामृत और भोग ग्रहण किया है, वह जब बोलती है, तो आशीर्वाद बोलती है, उसमें से मन्त्र निकलते हैं। ऋषियों की वाणी में से सत्य निकलता है। ऋषियों की वाणी में से आग निकलती है। ऋषियों की वाणी में से शक्ति निकलती है। ऋषियों की वाणी में से बिजली निकलती है। ऊर्जा भी निकल सकती है ? हाँ, निकल सकती है। शर्त ये है कि आप उसको धोएँ।

साधना किसकी ? अरे ! साधना आपकी अपनी-अपनी। देवता की ? देवता की नहीं बेटे ! अपने भीतर की। आपके भीतर देवत्व भरा पड़ा है; उसके संवर्द्धन की साधनाएँ। साधना जीभ की। जीभ की आपने करामात देखी है न ? जीभ को विपरीत कीजिए। स्वाद के सम्बन्ध में साधिये, देखिये आपकी दूसरे दिन से सेहत अच्छी होती है कि नहीं। हम गारण्टी देते हैं। आप अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीभ हमारे हवाले कीजिए। हम सेहत आपके हवाले करते हैं। आपको ये इकरारनामा और ये एग्रीमेण्ट स्वीकार हो, तो मानिए। आप जीभ हमारे हवाले कर दीजिए। आप जीभ पर अपना हक छोड़ दीजिए। जीभ को आपकी मर्जी पर नहीं चलने देंगे। हम आपसे वायदा करते हैं कि हम आपकी खोई हुई सेहत को फिर मँगा देंगे और आपकी खोयी हुई जवानी फिर आ जाएगी वापस। ये सारा-का-सारा खेल क्या है ? ये आत्मनियन्त्रण है। सारे-का-सारा शिक्षण देवता को गिरफ्तार करने का नहीं है, देवता को फुसलाने का नहीं है। देवता बरगलाए नहीं जा सकते, देवता फुसलाए नहीं जा सकते। बरगलाना है अपने आपको। फुसलाना है अपने आप को। हाथ इसी के जोड़िए, नमस्कार इसी को करिए। अपने देवत्व को नमस्कार करिए और कहिए—शरण में आए हैं हम हमारी, दया करो हे दयालु ! भगवन् ! किससे कहें बेटे ! भगवान बहुत विशाल हैं। वहाँ कौन सुनेगा तेरी ? वहाँ तो इतना हल्ला मच रहा है कि नक्कारखाने में तेरी तूती की आवाज कोई नहीं सुनेगा। तो हम किससे प्रार्थना करें ? अपने आप से कीजिए। हमारे भीतर जो सुपरमैन बैठा हुआ है, देवता बैठा हुआ है, हमारे भीतर जो हमारा सुपर ईगो बैठा हुआ है, इसको हम गायत्री कहते हैं, अति-मानव कहते हैं। यही हमारा भगवान का प्रतीक है। इसी से कहिए आप —हे हमारे देव ! प्रसन्न हो जाइए। देव ! हमारे ऊपर करुणा कीजिए। देव ! आप हमारा उद्धार कीजिए। आप हमको शरण में ले लीजिए। अभी हम किसकी शरण में रह रहे हैं ? अपने देवत्व की शरण में नहीं, अनाचार की शरण में, वासनाओं की शरण में, तृष्णाओं की शरण में, अहंकार की शरण में, लोभ की शरण में, मोह की शरण में, इन सबकी शरण में भटक रहे हैं। कृपा करके स्वीकार कर लीजिए और अगर अपनी शरण में ले लें, तो कौन-सा वाला भगवान ? जो परमात्मा के रूप में संव्याप्त है। आत्मा छोटी होती है। परमात्मा बड़ा होता है। पुरुष 'जीव' को कहते हैं और पुरुषोत्तम उस स्यूपीरिअरिटी (श्रेष्ठता) को कहते हैं, जो हमारे भीतर रहता है। नर इनसान को कहते हैं, नारायण उसे कहते हैं; जो आदमी के भीतर महान रहता है। परब्रह्म की बात नहीं कहते बेटे ! वो तो उसके बारे में हम चिंतन भी नहीं कर सकते। फिर भजन-पूजन कैसे कर सकते हैं ? परब्रह्म की कौन पूजा करेगा ? परब्रह्म की ओर ध्यान भी नहीं हो सकता। परब्रह्म के तो कायदों का पालन हो सकता है। बस, और क्या हो सकता है ? परब्रह्म को कुछ नहीं हो सकता है केवल कायदे का पालन हो सकता है और भय रखना पड़ता है कि परब्रह्म की सत्ता हमारे ऊपर है। उसका अंकुश हमारे ऊपर है। अंकुश को स्वीकार कर लेना, उसको स्वीकार कर लेना, उसके नियमों का पालन कर लेना परब्रह्म की पूजा के लिए काफी है। फिर और कोई जरूरत नहीं। फिर किसका भजन करें ? उसका करें, जो हमारे भीतर परमात्मा के रूप में, पुरुषोत्तम के रूप में, नारायण के रूप में, सुपर ईगो के रूप में बैठा हुआ है। ये उसी का खेल है।

आप इतनी बात समझ जाएँ, तो सारा-का-सारा आध्यात्मिकता का सार समझ में आ जाएगा, रहस्य समझ में आ जाएगा और आपकी सिद्धियों के चमत्कार का द्वार खुल जाएगा। ऐसी सिद्धियाँ, जो आपको निहाल कर सकती हैं; ऐसी सिद्धियाँ, जो निहाल होने के बाद में दूसरों के लिए बाँट सकते हैं, दूसरों के लिए आप बिखेर सकते हैं, दूसरों को आप दे सकते हैं, दूसरों को आप धन्य कर सकते हैं। आप कब तक भिखारी रहेंगे ? आप कब तक माँगते रहेंगे ? हम पर भगवान् दया कीजिए, दया मत कीजिए ! आपके भीतर वो सब कुछ है। कौन-सा वाला ? जो आपके लिए आवश्यक है। आपकी कस्तूरी नाभि में लगी हुई है। जो आप चाहते हैं, वो सब चीजें आपके भीतर हैं। न केवल आपके लायक, बल्कि आपकी जरूरतों को पूरा करने के लायक, आपकी चिन्ताओं को दूर करने के लायक, आपकी बीमारियों को दूर करने के लायक, आपके जीवन को महान बनाने लायक और आपको यश तथा कीर्ति देने लायक और आपको संतोष देने लायक आपके भीतर बहुत मसाला भरा हुआ है। भगवान ने आपको परिपूर्ण बनाकर भेजा है। यह सब कब और कैसे प्राप्त हो सकता है ? जब आप उपासना करते हैं; तब। उपासना करते हैं, तब अपने विशाल को निखार लेते हैं। फिर क्या हो जाता है ? फिर आप अपनी ये जरूरतें पूरी कर लेते हैं। आपकी जरूरतों के लिए कभी किसी के आगे हाथ पसारने की जरूरत नहीं पड़ती; क्योंकि आप पूर्ण हैं—**"पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।"**

मेंढक बिना माँगे गुजारा कर सकता है, मछली बिना माँगे गुजारा कर सकती है, हिरन अपना बिना माँगे गुजारा कर सकता है, मच्छर अपना गुजारा कर सकता है, तो आपके ऊपर कहाँ से आफत आ गई ? भगवान से आप माँगते फिरेंगे, क्यों माँगेंगे ? आप भगवान् से ? भगवान ने आपको दिया क्या नहीं है ? भगवान् ने आपको हर चीज दी हुई है। आपने देखा नहीं है ? मालूम नहीं किया है ? अनदेखी चीज को देख लें। सोई हुई चीज को जगाइए। अपने गए-बीते स्तर को परिष्कृत कीजिए। ये उपासना है। उपासना के लिए क्या करें ? भगवान भी देगा, तो कितना देगा ? आपके श्रम के हिसाब से जो मिल सकता है, वो चीज ऐसी है, जो आपके काम की है और आपके लिए पर्याप्त है। अभी और जरूरत है ? हाँ बेटे ! अभी और जरूरत पड़ गई। क्या जरूरत पड़ गई ? ये जरूरत पड़ गई कि भगवान के कामों के लिए अर्थात् लोकहित के लिए, समाज-कल्याण के लिए, जन-जीवन के लिए आपको अभी और कुछ काम करना है। उससे क्या मिल जाएगा ? उससे आपको पुण्य मिल जाएगा, परमार्थ मिल जाएगा, भगवान की प्रसन्नता मिल जाएगी। इसके लिए साधन ? हाँ, इसके लिए साधन भी मिल सकते हैं। कहाँ से मिलेंगे ? उसी स्रोत से मिलेंगे। शर्त ये है कि अपने आपको उसके काबिल बना लें; इस लायक बना लें कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भगवान आपको दें और आप उसको ग्रहण करें तथा लोगों को बाँट दें। ग्रहण करने की सामर्थ्य नहीं होगी, तो नहीं हो सकता। बेटे ! बादल ग्रहण करते हैं, फिर जमीन को बरसा देते हैं। जमीन पी जाती है, जमीन नदियों को दे देती है। चक्र चलता रहता है। क्यों साहब ! जमीन सूखी हुई हो और जमीन पिए नहीं तो ? घास पैदा होगी कि नहीं ? घास पैदा नहीं हो सकती। सारी-की-सारी जो अध्यात्म की प्रक्रिया है, वह पात्रता का संवर्द्धन, आत्म-परिष्कार, अपने आपको धोना, अपने आपको ठीक करना, अपने आपको सँवारना है। अपने आपको सँवार लेने के दो ही चरण थे, जैसा कि मैंने आपको कल बताया था—अपने आपको ठीक कर लेना। अपने आपको ठीक कर लेना ही नहीं, बल्कि दूसरों के लिए उपयोगी बन जाना, समाज के लिए उपयोगी बन जाना, देश के लिए उपयोगी बन जाना, संस्कृति की सेवा करना। ये आदमी का वो अंश है, जो उदार है। उदार अंश हमारे भीतर आता है, तो भगवान के अनुग्रह मिलते हैं। उदार अंश नहीं आएँगे तो नहीं मिलेगा।

नदियाँ उदारता को लेकर चलती हैं। उनको जमीन को पानी देना है, उनका उद्धार करना है, बगीचों की सिंचाई करनी है, लाखों आदमियों की प्यास बुझानी है। देने के लिए, बाँटने के लिए जब गंगा चलती है, तो हिमालय कहता है कि तुम बाँटती चली जाओ, तुम्हारे अन्दर कमी नहीं आएगी। हिमालय ने गारण्टी दी हुई है कि तुम चाहे कितनी बाँटती रहना, चाहे कितने नाले इसमें से निकलते रहें, नहरें निकलती चलें, कमी नहीं हो सकती। कमी हुई क्या ? कमी नहीं हुई। गंगा जहाँ से निकलती थी, गोमुख से, वहाँ से बढ़ी, फिर आगे और बढ़ी और बढ़ी फिर क्या बनी ? बेटे ! नहरें निकलती रहीं। आपने देखी हैं ? बड़ी-बड़ी नहरें निकलती रहीं; लेकिन आपने देखा उसमें ? कोई कमी नहीं पड़ी। बिहार में आप जाइए, सोनपुर में आप देखिए, गंगा का कितना चौड़ा पाट है। पटना में चले जाइए, गंगाजी में जहाज चलते हैं। नहीं समुद्र में चलते हैं। अरे बेटे ! नदी में चलते हैं। नदी में नहीं चल सकते ? नदी में नहीं चलते, तो आप चले जाइए नदी में, गंगाजी में वो चलते हैं। वहाँ तो सूख गई होंगी। क्यों ? बहुत-सी नहरें निकल गई हैं, बहुत-से लोगों ने पी लिया होगा, बहुत-से नलों में खर्च हो गया। गंगा जी का पानी इलाहाबाद में खर्च हो गया, कानपुर में खर्च हो गया और कहाँ-कहाँ पानी खर्च हो गया ? बनारस में पानी खर्च हो गया, तो गंगा जी क्या कम हो गईं ? कम नहीं हो सकतीं। ये लोकहित में प्रवाहित इसके लिए क्या कम पड़ने वाला है ? कम किसका पड़ने वाला है ? सड़ेगा कौन ? सड़ेंगे वो स्वार्थी और फलेगा कौन ? फलने वाला है परमार्थी। गंगा फलेगी और कौन देगा ? हिमालय। अरे ! हिमालय नहीं देगा तो दुनिया देगी। चम्बल ने कहा—हम भी चलेंगे। सरयू ने कहा—हम भी चलेंगे। घाघरा ने कहा—हम भी चलेंगे। ढेरों-की-ढेरों नदियाँ शामिल होती चली गईं गंगा में। आप जाकर देखिए। गंगा की हजार धाराएँ हो गई हैं। गंगा की एक धारा गोमुख से निकलती है और गंगा में हजार धाराएँ हो गईं। गाँव-गाँव में धारा है, गाँव-गाँव में गंगा है। ऐसा क्या हो सकता है ? हाँ, आपका भी हो सकता है, आपके साथ भी हो सकता है, लेकिन अगर आपके जीवन में कृपणता आएगी, तो आप सड़ेंगे। नालों का पानी सड़ता है, गड्ढों का पानी सड़ता है। झरनों का पानी न सड़ता है, न सीमित होता है। झरने साफ रहते हैं। मनुष्य जीवन की वृत्ति को भगवान की वृत्ति कह सकते हैं। भगवान की सेवा का नाम, भगवान की प्रार्थना का नाम है, भगवान की प्रवृत्ति का नाम है—आदमी का जीवन में उदार होना। वृत्ति सेवा कहते हैं, वृत्ति परमार्थपरायणता को कहते हैं और एक और अंश रह गया—साधना। साधना क्या है ? साधना अपने आपको सँवारना, अपने आपको सँभाल लेना, साध लेना। किसको ? अपने आपको। अपने अनगढ़ जीवन को सुगढ़ बना लेना और सुगढ़ जीवन को सुसंस्कृत बनाना। सुसंस्कृत माने—जिसमें दया की मात्रा हो, करुणा की मात्रा हो, मिल-बाँट कर खाने का माद्दा हो, परोपकार की मात्रा हो। ये दोनों एक फिलॉसफी हैं और दोनों एक साइंस हैं, दोनों एक जीवनयापन करने की शैली है। आदमी के सोचने का तरीका है—अध्यात्म। आप तो समझते ही नहीं हैं, मैं क्या करूँ ? आपके लिए ? पूजा तक सीमित रहते हैं और पूजा को अभी तक समझ नहीं पाये, जिसका अर्थ होता है—शिक्षण; मस्तिष्क को शिक्षण और भावना का संवर्द्धन। भावना का संवर्द्धन अर्थात् हमारे विश्वास और निष्ठा का वो उभार, जिसके आधार पर हमारा मस्तिष्क और शरीर दोनों श्रेष्ठ मार्ग पर चलने लगते हैं। हमारी आकांक्षाएँ, जिसको कि भावनाएँ कहते हैं। भावनाएँ वो चीज हैं, जो आदमी को प्रेरित करती हैं, हमारे विश्वास को प्रेरित करती हैं। **"यो यच्छ्रद्धः स एव सः"**— जिसकी जैसी श्रद्धा, वह वैसा ही बन जाता है। अगर हमारी चोर की श्रद्धा है, तो हमारा दिमाग चोर का और हमारे हाथ चोर के और हमारे क्रियाकलाप चोर के। हमारी श्रद्धा अगर सन्त की है, तो हमारा चिंतन सन्त का, हमारे हाथ-पाँव सन्त के, हमारे क्रियाकलाप सन्त के और हमारा भविष्य सन्त का बन जाता है। इसलिए आदमी की जो मूलवृत्ति है, जो मूल केन्द्र है, जहाँ से आदमी का सारा-का-सारा उछाल निकलता है, ये आदमी का अन्तःकरण है। इस अन्तःकरण में भावना के रूप में ऋतम्भरा-प्रज्ञा के रूप में, सद्भावना के रूप में, सत्प्रवृत्तियों के रूप में गायत्री माता की स्थापना हो। मस्तिक में सद्-विचारणाओं के रूप में और कर्मों में सत्कर्मों के रूप में, निष्ठा के रूप में, प्रज्ञा के रूप में, श्रद्धा के रूप में गायत्री माता को जीवन में ओत-प्रोत कर लेना, उसको अपने जीवन का अंग और भविष्य बना लेना—यही है उद्देश्य। जो आदमी आप में से इस सन्दर्भ में जितने अंशों में थोड़ा और बहुत चलने में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्थ होगा, उसको उसी हिसाब से, उसी मात्रा में, आत्म-सन्तोष, जनसहयोग, लोकसम्मान और भगवान का अनुग्रह मिलता जाएगा। आप छोटे कदम उठाइए, थोड़े हिस्सों में पाइए। आप बड़े कदम उठाइए, ज्यादा हिस्सों में पाइये। गायत्री माता की पूजा और उपासना, जिसमें कि अनुष्ठान भी शामिल हैं, ध्यान भी शामिल है, जप भी शामिल है; पर ये कर्मकाण्ड हैं। केवल कर्मकाण्डों तक अगर आप सीमित हैं, तो ये काफी नहीं पर्याप्त नहीं और इनसे आप फल की आशा नहीं कर सकते और अगर आपने सारे-के-सारे कर्मकाण्डों की भावनाएँ, प्रेरणाएँ, दिशाएँ, शिक्षाएँ समझी हैं; उनको जीवन में समाविष्ट करने की कोशिश की है, तो मैं आपको अपने पूरे मन से विश्वास दिलाता हूँ कि सिद्धियाँ आपके साथ-साथ हैं, सिद्धियाँ आपके आगे हैं, सिद्धियाँ आपके पीछे हैं, सिद्धियों में आप हैं और आप में सिद्धियाँ हैं। मनुष्य का व्यक्तित्व यदि परिष्कृत हैं, तो उसी का नाम सिद्ध पुरुष है। अलग से कोई बड़ा भारी पराक्रम करने की जरूरत नहीं है; अलग से कोई काम करने की जरूरत नहीं है। ये सारी-की-सारी उपासनाएँ इसी बात के लिए हैं कि आदमी परिष्कृत रहें, शुद्ध बनें, महान बने और सफलताएँ पाएँ। योगी और सिद्ध पुरुषों के पास यह विभूतियाँ होती हैं। अपना उद्धार करके और असंख्यों का उद्धार करके वे पार कर देते हैं। आप भी ये लाभ उठा सकते हैं, अगर उपासना का वह स्वरूप जो मैंने समझाया, जो शुरू में बताया था, वो स्वीकार कर लें आप तब। अगर आप स्वीकार न करें, कर्मकाण्डों तक सीमित रहें, तो आपकी मर्जी है। फिर आप शिकायत न करना कि आपको ये चमत्कार नहीं मिले, देवताओं का अनुग्रह नहीं मिला, देवताओं के लाभ नहीं मिले, आप यह शिकायत न करना। अपने को परिष्कृत करें तो अच्छी बात है। बहुत-से लोग बहुत-से काम करते हैं। ये भी काम करें, तो क्या हर्ज है। लेकिन लाभ उसी तरीके से हो सकता है जैसा कि शुरू में निवेदन आपसे मैंने किया। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

जप का ज्ञान और विज्ञान

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

सीताजी को रावण जब अपहरण कर ले गया और कुटिया में वह नहीं मिलीं, तो भगवान राम परेशान हो गए। सोचने लगे कि आखिर सीता गई कहाँ ? क्या जमीन निगल गई ? आसमान में चली गई ? खिन्न अनुभव करने लगे, असहाय अनुभव करने लगे, अपने को दीन-हीन अनुभव करने लगे। भगवान राम अपनी सीता को पुकारने के लिए, तलाश करने के लिए रामचन्द्रजी चल पड़े। पेड़ों से पूछा—सीता आपने देखी ? पक्षियों से पूछा—आपने सीता देखी ? जानवरों से पूछा—सीता आपने देखी ? किसी ने जवाब नहीं दिया, तो चिल्ला करके हवा से पूछने लगे—सीता ! सीता ! कहीं सीता हों तो जवाब दें। कहाँ चली गई है सीता ? कहाँ चली गई है ? बेटे ! तलाश करते फिरे। कौन ? रामचन्द्रजी। हम आपको तलाश करने के लिए, पुकारने के लिए कहते हैं। आप अपनी सीताजी को तलाश कीजिए। हम आपको जप कराते हैं। किसका जप कराते हैं ? भगवान का जप कराते हैं। क्यों कराते हैं ? इसलिए कराते हैं कि आपके हाथ से भगवान चला गया है और आपने भगवान को गँवा दिया है, भगवान को खो दिया, अपनी जीवात्मा को, अपनी सीता को विस्मृत कर दिया। आत्मा भी हमारे शरीर में है। दुःखिया, दीन, दरिद्र, चिन्ता में डूबा हुआ, व्यथा में डूबा हुआ, पीड़ा में डूबा हुआ है। देखिये ! हम रामचन्द्रजी के तरीके से कलपते हुए दीन, दुःखी, असहाय मारे-मारे फिरते है। हम आपको जप कराते हैं। किसलिए जप कराते हैं ? जप का जो आपका ख्याल है, वह गलत है। आपका क्या ख्याल है ? आपका बहुत छोटा ख्याल है। जैसी आपकी तबियत, वैसा आपका भगवान, वैसा आपका विधान। आपका उद्देश्य क्या है ? आपका उद्देश्य यह है कि हम भगवान जी का नाम लें, तो क्या हो जाएगा ? भगवान जी समझेंगे कि हमारी बड़ी प्रशंसा कर रहा है—बड़ी प्रशंसा कर रहा है। भगवान जी प्रसन्न हो जाएँगे। प्रसन्न होकर फिर वे क्या करेंगे ? आपसे कहेंगे मनोकामना माँगिये। फिर आप क्या माँगेंगे ? पैसा माँगिये, रुपया माँगिये, बेटा माँगिये, औलाद माँगिये, मुकदमा में विजय माँगिये। यही व्याख्या है न आपकी या और कुछ व्याख्या है ? नहीं, और कुछ व्याख्या नहीं है। बेटे ! ये बड़ी घटिया वाली बात है। ये सारे-के-सारे सिद्धान्तों का नाश कर देती है। आध्यात्मिक सिद्धान्तों के मूल सिद्धान्तों का सत्यानाश कर देती है और ये बिल्कुल उलटी मान्यता है। अगर भगवान इस तरह का है, जो अपनी खुशामद और चापलूसी करने वाले को अपना भक्त मान लेता है, तो मैं उनको ठग कहूँगा और जो आदमी ठगे जाने वाले हैं, उनको मैं एक ही नसीहत दूँगा, उनका एक ही धन्धा है। क्या धन्धा है ? आदमी जो खुशामद करते हैं और चापलूसी करते हैं, भाईसाहब ! हम आपका ब्याह करा देंगे, भाईसाहब ! हम आपका ये करा देंगे, हम आपका वह करा देंगे—बीस तरह की चापलूसियाँ करते हैं और चापलूसियाँ करने के बाद में कोई भोला आदमी, भला आदमी उनका विश्वास कर लेते हैं, तो जेब काट लेते हैं, माल मार लेते हैं। ठगों का धन्धा यही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आप क्या करना चाहते हैं ? ठगों का धन्धा करना चाहते हैं और भगवान को आप ऐसा बच्चा समझते हैं, आप राम-नाम लेंगे और भगवान आपको चेला मान लेंगे, आपको भक्त मान लेंगे और आपको अपना शिष्य मान लेंगे और आपकी मनोकामना पूरी कर देंगे, देखिये, ऐसा अगर अन्धेर दुनिया में फैलेगा, तो फिर राम, राम नहीं रह जाएगा फिर भक्त, भक्त नहीं रह जाएँगे और उपासना, उपासना नहीं रहेगी और फिर सत्यानाश हो जाएगा दुनिया का। जैसा आपका ख्याल है—छोटा वाला ख्याल, घटिया वाला ख्याल, नामाकूल ख्याल, प्रभु का ख्याल जिसको आप समझते हैं वास्तव में वह ख्याल वैसा नहीं है। आपके राम नाम लेने का उद्देश्य अलग है और हमारे राम के नाम का उद्देश्य समझाना अलग है। आप तो खुशामद के लिए राम का नाम लेते हैं। जीभ से नाम लेते हैं और जीभ ऐसी जालसाज है और जीभ ऐसी चालाक है, जिस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। ये चमड़े की बनी है; ये माँस की बनी है और ऐसी गन्दी चीजों से बनी है, जिसके बारे में हम यकीन नहीं कर सकते; पर ये जीभ हमारी ऐसी बनी है कि जिस भी आदमी से हम बात करते हैं, हमेशा जालसाजी की बात करते हैं, चालाकी की बात करते हैं ! चुनाव में वोट माँगने वाला आता है। क्यों भाई ! कौन-सी पार्टी के हैं आप ? हम तो उस पार्टी के हैं—झोंपड़ी वाली पार्टी के हैं। अह . . . हा हा ! हम भी झोंपड़ी में रहते हैं, आप भी झोंपड़ी में रहते हैं। हम आपको ही देंगे वोट। पक्का हो गया आपका वोट और आपको मिल जाएगा हमारा वोट। जा रहे हैं। नमस्कार साहब ! नमस्कार ! चला गया और आ गया दूसरा वाला। कहिये साहब ! आप भी वोट माँगने आए हैं ? हाँ, साहब ! वोट माँगने तो हम भी आए हैं। कौन-सी पार्टी से आए हैं ? हम तो दीपक वाली पार्टी से आए हैं। बस, बस हो गया। सब जगह अँधेरा छाया हुआ है। अब दीपक के बिना अँधेरा दूर नहीं हो सकता। बस, दीपक को वोट देंगे और दीपक जलेगा, तभी तो काम चलेगा। अँधेरा दुनिया में फैल गया है। बताइये तो हमारा दीपक पक्का रहा। वोट पक्का है। आपको मिल जाएगा वोट। चला गया, फिर कौन आ गया ? फिर लाल झण्डे वाला आ गया। कहिये साहब ! नमस्कार साहब ! नमस्कार साहब ! कहिये साहब ! किसको वोट मिलेगा ? आप कौन-सी पार्टी से आए हैं ? पहले आप बताइये ? हम तो लाल झण्डे वाले हैं। अह . . . हा . . . हा . . . ! लाल झण्डे वही तो है, जो गरीब-अमीर सबको बराबर कर देते हैं। हमको विड़ला के बराबर तो बना ही देंगे। हाँ साहब ! सबको बराबर बना देंगे, तो आपको भी क्यों नहीं बनाएँगे। सबको बराबर बनाएँगे हम। हम तो समाजवादी हैं। बस, तो ठीक रहा। हम तो इसी चक्कर में थे कि कौन आदमी ऐसा आ जाए, जो वोट बराबर करा जाए। हम तो आपको ही वोट देंगे। चलिये साहब वह भी चला गया। फिर एक और आ गया। आप कौन-सी पार्टी के हैं ? पहले आप पार्टी बताइये, तब बात करेंगे आपसे ? हम तो साहब गाय-बच्चा वाली पार्टी के हैं। बस, बस हो गया। ये तो हम देख रहे थे कि गौमाता की हम सेवा करते हैं। गायों की हम पूजा करते हैं। बेरोक-टोक हमारा काम चलता है, फिर हम किसको वोट दे सकते हैं ! हम तो गाय-भैंस वाले को वोट देंगे। हम गाय-भैंस वाले हैं, बिल्कुल गाय-बैल वाले हैं। आपका वोट—आपका वोट पक्का रहा। जाइये। चुनाव का दिन आया। तब ? किसको वोट दोगे ? रुपया निकालिये जी। जो कोई पैसा देगा, उसी को वोट देंगे। उस दिन तो आप कह रहे थे कि गाय-बच्चा वाले को वोट देंगे। हम तो पैसा देने वाले को वोट देते हैं। जीभ, जीभ ऐसी जाहिल, ऐसी कमीनी और ऐसी दुष्ट, ऐसी चालाक और ऐसी धूर्त है कि इस पर कोई यकीन नहीं कर सकता।

क्यों राम का नाम लेता है तू ? राम का नाम लेता है तू ? चालाक ! बेईमान ! सब भार सौंप दिया भगवान् तुम्हारे हाथों में। क्या-क्या सौंप दिया भार ? बिना बना मकान पड़ा है, अधूरा है। इसको बनवाना भगवान् तुम्हारे हाथों में है। भगवान तुम्हारे हाथों में सौंप रहा हूँ भार। जानता है किसे कहते हैं भार सौंपना ? भार सौंपना उसे कहते हैं, जब सारी-की-सारी क्षमता को, सारी-की-सारी जिम्मेदारियों को भगवान के सुपुर्द किया जाता है और अपनी इच्छाओं को और अपनी आकांक्षाओं को भगवान के सुपुर्द किया जाता है। इसी को कहते हैं समर्पण महाराज जी ! हमारा मतलब ये नहीं था। क्या मतलब था ? हमारा मतलब ये था, सब भार का मतलब ये था कि तीन लड़कियाँ ब्याह लायक हो गई हैं। १५-१५ हजार रुपया चाहिए। ४५ हजार रुपया चाहिए तो भगवान सब भार तुम्हारे हाथों में। ये मतलब है न। हाँ, साहब ! ये मतलब है। आपका क्या मतलब है, हम समझते हैं। भगवान आपका क्या मतलब है, इसको समझता है। इसलिए जुबान की नोंक से बार-बार भगवान का नाम उच्चारण करने के बाद में आप ध्यान करते हैं कि हमें भगवान् की प्राप्ति होने वाली है और आपका उद्देश्य पूरा होने वाला है—ये कभी नहीं हो सकता। इसका क्या मतलब है ? फिर जप करने के लिए क्यों कहा आपने ? २४००० जप कराने के लिए क्यों कहा ? जप में हमको क्यों लगा दिया ? आप रोज जप क्यों कराते हैं ? बेटे ! इसलिये जप कराते हैं कि कोई चीज हमारी खो गई है और हम तलाश करते हैं कि हे भगवान ! वह चीज हमारी कहाँ चली गई है ? बिल्ली के बच्चे गुम हो गए, बिल्ली कहीं चली गई ! बच्चों की भी आदत होती है कि कहीं चले जाते हैं, छिपकर बैठ जाते हैं। बिल्ली इस घर में गई, उस घर में गई, घर-घर में गई, पुकार करती रही—हमारे बच्चे कहाँ चले गये ? कहाँ खो गए ? बिल्ली क्या कर रही थी ? म्याऊँ-म्याऊँ-म्याऊँ। क्या कर रही थी ? तलाश कर रही थी। हमारे बच्चे कहाँ चले गए ? बच्चों ने अपनी माँ की आवाज सुनी। बच्चे बोलने लगे—म्याऊँ-म्याऊँ। बस, दोनों हो गए खुश और दोनों मिल गए; दोनों का मिलाप हो गया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हम इसलिए पुकारते हैं राम के नाम को। बच्चा खो गया था। देर हो गई। घर वाले तलाश करते फिर रहे थे—रमेश ! रमेश !! रमेश !!! यहाँ वहाँ सारी जगह तलाश कर रहे थे। नहीं मिला, तो माइक में गुँजाया—एक लड़का रमेश नाम का, सफेद कमीज पहने हुए है, नेकर पहने हुए है, पाँच वर्ष का है, किसी ने देखा हो तो, अमुक पते पर पहुँचाने की कृपा करें। रमेश ! रमेश !! हम पुकारते रहते हैं भगवान को, वह भगवान बाँसुरी बजाने वाला भगवान, जो हमारे हृदय में शक्ति उत्पन्न कर सकता है; वह भगवान जो धनुष-बाण अपनी पीठ पर लटकाये चलता है; वह भगवान् जिसके मस्तिष्क से ज्ञान की गंगा प्रवाहित होती रहती है, जो मुण्डों को माला अपने लिये, लिये फिरता है। बस भगवान को तलाश करते हैं—जाने शंकर कहाँ चला गया हमारा, जाने हमारे राम कहाँ चले गये, जाने हमारे कृष्ण कहाँ चले गए, जाने हमारी देवी कहाँ चली गई, जाने हमारी शक्ति कहाँ चली गई, जाने हमारी बुद्धि कहाँ चली गई, जाने हमारी सरस्वती कहाँ चली गई, हमारा सब कुछ चला गया। हम तलाश करते-फिरते हैं। जहाँ-जहाँ हम जप करते हैं और हम पुकारते और हम चिल्लाते रहते हैं। हम आपको जप कराते हैं। पुकारिये कहीं शायद आपको मिल जाए। कौन मिल जाए ? आपकी जीवात्मा और आपका परमात्मा। न आपके पास जीवात्मा बाकी बची है, न आपके पास परमात्मा बाकी बचा है। वह चीजें बाकी बची हैं, जो किसी काम की नहीं। आपके रोम-रोम में जो चीजें बची और बसी हुई हैं, उसका नाम है—लोभ; उसका नाम है—मोह; उसका नाम है—वासना; उसका नाम तृष्णा; उसका नाम अहंकार—ये सब चीजें आपके पास पर्याप्त मात्रा में बची हुई हैं। आपके पास मकान मौजूद है, आपके पास तिजारत मौजूद है, आपके पास साधन मौजूद है; पर दो ही चीजें आपके पास नहीं हैं। न आपके पास आत्मा रह गई है, न आपके पास परमात्मा रह गया है। दोनों में से कोई चीज हमारे पास नहीं है। हम छूँछ हैं मित्रो ! पाप से लिपटे हुए, वासनाओं से लदे हुए, हर समय हम दुःखी, हर समय क्लेश में डूबे हुए, हर समय झल्लाये हुए और हर समय पीड़ित, हर समय पतित मनःस्थिति है। हमने मणि गँवा दी, जैसे साँप मणि को गँवा देता है। मणि गँवाया-हुआ साँप, दुःखी बैठा हुआ साँप; हाथी का मुक्ता कहीं चला गया था और मुक्ताविहीन हाथी कहीं बैठा हुआ था और साँप मणिविहीन बैठा हुआ था। मणि से विहीन साँप के तरीके से मुरझाये हुए बैठे हैं, कुम्हलाये हुए बैठे हैं, निरुत्साहित हुए बैठे हुए हैं, कुण्ठा में बैठे हुए हैं हम। हमारे जीवन का रस चला गया और हमारे जीवन का आनन्द चला गया, इसलिए हम पुकारते हैं—कहाँ है हमारे जीवन का रस ! कहाँ है ? मिल जाए, तो अच्छा हो।

'रसो वै सः'—भगवान् रसमय-आनन्दमय है। आनन्द हमने छुआ भी नहीं, ज्ञान हमने जाना भी नहीं। कितनी जिन्दगी निकल गई रोते-रोते, झल्लाते-झल्लाते ? अगर भगवान की एक किरण हमारे पास आ जाती, तो हमारे चेहरे पर मुसकराहट आ जाती; हमारे चेहरे पर सन्तोष आ जाता; हमारे चेहरे पर आनन्द दिखायी पड़ता; पर हमने जाना ही नहीं आनन्द किसे कहते हैं; जाना ही नहीं सन्तोष किसे कहते हैं; जाना ही नहीं शान्ति किसे कहते हैं; जानता ही नहीं हर्षोल्लास किसे कहते हैं ? हमने कभी नहीं जाना ऐसी खीज में और जलन में हम जलते-जलते इतने बड़े हो गए और अब मोमबत्ती के तरीके से सारी-की-सारी जलन ने हमको जला दिया और हम छूँछ रह गये हैं। **भोगो न भुक्ता वयमेव भुक्ता।** भोगो-भोगो। भोग भोगने के लिए हम लगे रहे; पर भोगों को हम भोग नहीं सके, भोगों ने हमको भोग लिया। वैरागी जी ने चिल्लाकर के लोगों से पूछा—अरे हाजिर लोगो ! जरा बताओ तो सही तुममें से कोई एक आदमी भी ऐसा है ? कैसा ? जिसने वास्तविक सुख का, वास्तविक आनन्द का उपभोग किया हो। अरे अभागे लोगो ! तुममें से कोई एक आदमी भी ऐसा हो, जिसने जिन्दगी में सुख देखा हो, सुख पाया हो, सुख जाना हो, तो तुम बताओ। है तुममें से कोई ऐसा ? न हमने कभी सुख देखा न हमने कभी सुख पाया, न हमने कभी सुख के बारे में सुना, न हमने कभी सुख जाना। जलन, बस जलन—कुत्ते की हड्डी जैसी जलन हमारी जिन्दगी भर साथ रही। उसी को जाना कि सुख इसी का नाम है। कुत्ता एक हड्डी उठाकर ले आया और चबाने लगा। उसमें से क्या हो गया कि जबड़े में से खून टपकने लगा। जब जबड़े में से खून टपका और जब उस टपकते हुए खून को चखा, तो बड़ा जायका आया—ये खून बड़ा जायकेदार है। बेटे ! जायकेदार खून को चखते-चखते हम अपने आपको जला रहे हैं, अपने आपको गला रहे हैं, सीचते हैं, इसी में सुख होता होगा। वासनाओं में हमने अपने आपको जलाया, वासनाओं में हमने अपने आपको गलाया। क्या कर रहा था तू ? काम-वासनाओं का सेवन कर रहा था। क्या मिल गया ? क्या कमा के लाया ? कुछ भी नहीं कमा के लाया गुरुजी ! प्रशिक्षण यों ही गँवाया, तो फिर मूरख काहे के लिए कह रहा था कि मैं बड़ा प्रसन्न हूँ, मैं बड़ा शेर मार के लाया हूँ। अपनी हड्डी चबा रहा था। हाँ, अपने जबड़े में से खून निकाल रहा था। हाँ, अपने जबड़े के खून को पी रहा था, उसी को सुख कह रहा था। अपना लोक बिगाड़ रहा था, अपना ईमान बिगाड़ रहा था और जिन्दगी को चौपट कर रहा था, उसे सत्यानाश कर रहा था। उसी की बारूद जला करके फुलझड़ी देख रहा था। उसी को मान रहा था खुशी। हाँ, महाराज ! उसी को खुशी मान रहा था। हमें देखिये, पैसे के लिए और उन चीजों के लिए, जो हमारे किसी काम की नहीं हैं; जो हमें न शान्ति दे सकती हैं, न सन्तोष दे सकती हैं, न चैन दे सकती हैं; उन चीजों को इकट्ठा करने के लिए हम पागलों की तरह जिन्दगीभर भटकते रहे और समझते रहे शायद इसी में सुख हो सकता है; शायद इसी में चैन हो सकता है। इसमें चैन कहाँ से हो सकता है ? मिट्टी में चैन कहाँ से आ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाएगा ? पैसे में चैन कहाँ से आ जाएगा ? इन चीजों में चैन कहाँ से आ जाएगा ? चैन तो बेटे ! आदर्शों में रहता है, सिद्धान्तों में रहता है। सिद्धान्त भी हमारे पास नहीं आ सके, आदर्श भी हमारे पास नहीं आ सके। उसकी कमी इच्छा भी उत्पन्न नहीं हो सकी। हम क्या कर सकते हैं ? हमको ग्राह खाये जा रहा है। गज और ग्राह—इस लड़ाई का वृतान्त आता है पुस्तकों में। पुस्तकों में गज और ग्राह के संघर्ष की लड़ाई का वर्णन है।

एक ग्राह था। उसने गज को पकड़ लिया और एक पाँव जो था, सामने वाला अगला वाला पाँव निगल लिया। जब पाँव निगल लिया, तो गज जो था, ताकत लगाने लगा और बाहर आने की कोशिश करने लगा और ग्राह भीतर खींचने लगा। दोनों में कुश्ती होने लगी और लड़ाई होने लगी। गज बहुत परेशान हुआ और बहुत दुःखी हुआ। जब गज को यह दिखायी पड़ा कि मैं अपनी ताकत के भरोसे पर बाहर नहीं निकल सकता तो उसने पुकार लगानी शुरू की और विष्णुसहस्र नाम का पाठ किया। इसमें भगवान के नाम लिये गये हैं और भगवान को पुकारा गया है। बार-बार भगवान को पुकारा है—आप विष्णु हैं, आप नारायण हैं, आप शिव हैं, आप कल्याणकारी हैं। बहुत-से नाम उस गज ने लिये हैं। देखिये, हम आपको वही कह रहे थे कि आप बार-बार नाम लिया कीजिये; भगवान् का जप किया कीजिये; भगवान को कहिये कि हम मर रहे हैं और हम डूबे जा रहे हैं। नरक में और पाप में हमारा अन्त हुआ जा रहा है। गज की तो एक ही टाँग पकड़ी थी और हमारे टाँगें तो हैं चार और मगर ? मगर हैं छह ? छह मगरों ने चार टाँगें पकड़ रखी हैं और एक-एक हमारी पूँछ पकड़ रखी है। एक हमारी सूँड पकड़ रखी है। गज तो एक ही पकड़ा गया था; लेकिन हमारे छह गज पकड़ के रखे हैं छह ग्राहों ने। एक ग्राह का नाम काम, एक का नाम क्रोध, एक का नाम लोभ, एक का नाम मोह, एक का नाम मद, एक का नाम मत्सर—इन सब रिपुओं ने हमारे रोम-रोम को पकड़ लिया है, जकड़ लिया है और अब हमको मालूम पड़ता है कि अब हम डूबने ही वाले हैं; हम मरने ही वाले हैं; हम जलने ही वाले हैं और खत्म होने ही वाले हैं। इसलिए हम पुकारते हैं—हे भगवान ! तुम कहाँ हो—**धियो यो नः प्रचोदयात्**'—हे भगवान ! कहीं हो, तो आ जाओ। हमारा उद्धार कर दो, भगवान् बेड़ा पार लगा दो। इसीलिए हम पुकारते हैं। हमारी पुकार शायद अन्तरिक्ष में, उस वातावरण में फैल जाए और कहीं भगवान हों, तो उसकी प्रतिक्रिया हमारे भीतर आए और हमको उद्धार करने के लिए, हमको उबारने के लिए, हमको उठाने के लिए लम्बा हाथ फैला दें।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गाया है एक बंगला का गीत। उन्होंने कहा—भगवान ! हम आपको कष्ट देने वाले नहीं हैं कि आप हमारी सम्पत्ति बढ़ा दीजिये। सम्पत्ति बढ़ाने के लिए आपने हमको अक्ल दी है, समझ दी है और हाथ दिये हैं। हम अपना प्रयास करेंगे और हमारा पुरुषार्थ जहाँ तक गवाही देगा, हम सन्तोष करेंगे। हम अपने पुरुषार्थ से अपनी जरूरतें पूरी करेंगे। आपको हम क्यों कष्ट देंगे ? आपने हमको सुन्दर जिन्दगी दी और साथ में हमको सारी-की-सारी योग्यताएँ दीं। हम अपनी मशक्कत करें, योग्यताएँ बढ़ाएँ, सन्तोष से काम लें, समझदारी से काम लें। हम अपनी जिन्दगी के लिए गुजर-बसर करने के लायक काफी चीजें पा सकते हैं। इसके लिए हम आपको कोई कष्ट देने वाले नहीं हैं—रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया कि हम मुसीबतों से रिहाई पाने के लिए आपकी खुशामद करने वाले नहीं हैं और हम आपकी प्रार्थना भी करने वाले नहीं हैं; क्योंकि हमने कर्म किये हैं, हम उनको भोगने के लिए तैयार हैं। कर्म के बन्धनों से कोई भी छुट्टी नहीं पा सका। कर्म करने में गलतियाँ हमने कीं। अब हमें नाक रगड़ने और गिड़गिड़ाने की जरूरत नहीं है गलतियाँ हमने की हैं और उसकी सजा हमको दीजिये।

देखिये, एक बार मुझे बस्तर जिले की एक घटना याद आ गई। बस्तर एक बार गया हुआ था। पुलिस के दरोगा के सामने एक भील आया। भील ने कहा—हमने हत्या कर डाली, एक आदमी मार डाला, हमको गिरफ्तार कीजिये। पुलिस के दरोगा ने पकड़ लिया और उसे बिठा लिया। कहाँ मारा है ? बस, गाड़ी लेकर गए और लाश को लेकर के आ गये और उसको ऐसे ही खुली गाड़ी में बिठा ले गये। लाश भी आ गई, उसे भी लाद दिया गया। दरोगाजी से मैंने ये पूछा—ये जो हैं, आपने इसको रस्सी भी नहीं बाँधी और गिरफ्तार भी नहीं किया और हथकड़ी भी नहीं पहनायी। नहीं, इसकी जरूरत नहीं है। ये भील हैं तो क्या ! कम पढ़े हैं तो क्या ! जाहिल हैं तो क्या ! लेकिन ये बहादुर आदमी हैं। मार तो डालते हैं गुस्से में; लेकिन मार डालने के बाद में फैसला ये मंजूर करते हैं और ये कहते हैं कि हमको फाँसी लगेगी, तो लगेगी ! गलती हमने की है, तो फाँसी किसको लग सकती है ? जाते हैं, इल्जाम बता देते हैं, गिरफ्तार हो जाते हैं, जेलखाने चले जाते हैं और फाँसी लगती है, तो कहते हैं—हाँ साहब ! मारा है हमने। सबूत भी इकट्ठे नहीं करने पड़ते। अदालत ने पूछा—आपने मारा ! हाँ, साहब ! हमने मारा। क्यों मारा ? गुस्सा आ गया था। ये बात थी और ये बात थी और हमने इसको मार डाला। बस, जज चाहता है, तो फाँसी दे देता है और चाहता है, तो काला पानी दे देता है। खुशी से काले पानी चले जाते हैं। खुशी से फाँसी पर चढ़ जाते हैं। देखिये, बहादुर ! बहादुरी इतनी होनी चाहिए। गलती आप करते हैं। गलती करने पर आप बहादुर ! तो सजा पाने पर भी आप होइए बहादुर। नहीं साहब ! तो सजा पाने पर तो पों पों पों करते हैं और गलत काम करने पर हिम्मत वाले बन जाते हैं। शेर हैं, तो बनिये शेर; और कायर हैं, तो बनिये कायर।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक था साँड। साँड चिल्ला रहा था—फों ····· फों ····· फों। लोगों ने साँड से पूछा—क्यों रे ! क्यों चिल्लाता है ? हमार मन। हम तो लड़ेंगे। अच्छा, लड़ेगा। वह कर रहा था गोबर। एक ने पूछा—ये क्या करता है ? गोबर काहे को करता है ? तो बोला—डर लगता है। अरे ! तो लड़ता काहे को है। डरता है, तो लड़े मत। लड़ता है तो डर मत। पाप भी करता जाता है, डरता भी जाता है—पों ····· पों ···· पों बोलता जाता है। गलती करता है, तो सुना कर। इसलिये रवीन्द्रनाथ टैगोर की वह प्रार्थना याद आ गई हमको। उन्होंने ये कहा कि हम अपने पापों से, कष्टों से अपनी रिहाई कराने के लिए खुशामद करने वाले नहीं हैं कि आप हमारी गलतियों को सुधार दीजिए और हमारे पापों को दूर कर दीजिये और हमारी मुसीबतों को दूर कर दीजिये। मुसीबत हम सहेंगे। गलती हम करते हैं, तो मुसीबत भी हम सहेंगे। इस झगड़े में आपको नहीं डालते हैं। हे भगवान ! आपसे हम प्रार्थना करते हैं, सिर्फ एक—जब हम पाप के पथ में गिरने लगें, पतन के गड्ढे में गिरने लगें, तो आप अपनी लम्बी भुजाएँ फैलाना और हमको उसमें से बचा लेना। पाप में हमको गिरने मत देना। पतन में हमको गिरने मत देना। बस और हमको आपकी कोई सहायता की जरूरत नहीं है। न कोई आशीर्वाद चाहिए, न वरदान चाहिए, न मनोकामना चाहिए। जो मनोकामना पानी होगी, तो अपनी मर्जी से पाएँगे। अपनी योग्यता से पाएँगे। आपसे क्यों पाएँ ? मित्रो ! राम का नाम लेने के लिए जब हमने आपसे कहा है, तो आप राम का नाम लिया कीजिये, भगवान का जप किया कीजिये, भगवान का ध्यान किया कीजिये, भगवान का स्मरण किया कीजिये। भगवान को इसलिए पुकारते हैं कि हे भगवान् ! आप हों, तो हमको गजेन्द्र के तरीके से, गज के तरीके से पाप-पंक में गिरने से बचा लीजिये। इतना अनुग्रह आपके लिए काफी है। पैसे वाले होकर के जिएँगे, तो क्या ! औलाद वाले होकर जिएँगें तो क्या ! बिना औलाद वाले होकर के जिएँगे, तो क्या ! बीमार होकर के जिएँगे, तो क्या ! सुस्त होकर के जिएँगे, तो क्या ! ये शरीर के धर्म हैं और रोजाना के सामान्य क्रिया-कलाप हैं। इससे क्या बिगड़ता है क्या बनता है ! नहीं साहब ! बीमार आदमी की बड़ी हानि हो जाती है, नहीं बेटे ! बीमार आदमी की कोई हानि नहीं होती। जगद्गुरु शंकराचार्य को १६ वर्ष की उम्र में भगन्दर का फोड़ा हुआ था। ३२ वर्ष की उम्र में उनका देहान्त हो गया था। १६ वर्ष तक जिए। १६ वर्ष तक भगन्दर की शिकायत उनको बनी रही। रोजाना मवाद टपकता रहा, रोजाना पट्टी बँधती रही, रोजाना जख्म होता रहा; लेकिन उसी जख्म की हालत में पट्टी की हालत में, जगद्गुरु शंकराचार्य १६ वर्ष की उम्र से लेकर के ३२ वर्ष की उम्र तक लगातार चारों धामों की स्थापना, शंकर दिग्विजय, उपनिषदों के भाष्य, ग्रंथों के लेखन, अपने योगाभ्यास—सारे-के-सारे काम करते रहे और १६ वर्ष के बीच में मर करके चले गए। बीमारी से क्या आफत आती है ? नहीं साहब ! हम बीमार हैं, अच्छा कर दीजिये। क्यों ? क्यों अच्छा कर दें ? गुरु जी ! आपकी शाखा बन्द हो जाएगी ? क्यों ? क्यों हमारी शाखा बन्द हो जाएगी ? गुरुजी ! हमारी मौसी को जुकाम हो जाता है। हमारी मौसी को अच्छा कर दीजिये। बेटे ! तेरी मौसी को अच्छा कर दें, तब तू शाखा में काम करेगा। हमें नहीं कराना है। हमारी शाखा बन्द पड़ी रहने दें। हमें न तेरी मौसी अच्छी करनी है, न हमें शाखा चलानी है, न हमें तुझसे काम कराना है। बहानेबाजी बहुत है तेरे पास। मौसी को अच्छा कर दीजिये मन नहीं लगता है। गुरुजी और आपकी शाखा बन्द हो जाएगी। शाखा को बन्द कराने का एहसान जताता है हमारे ऊपर और अपने लिए काम कराना हो तब ? चल, मक्कार कहीं का। हमारे ऊपर एहसान जताता है, चालाकी की जालसाजी फैलाता है। हम तेरे सामने तेरी मौसी का जुकाम अच्छा कर दें, तब हमारी शाखा चलाएगा। हमें नहीं कराना है, चल भाग।

मित्रो ! क्या होता है लोगों को ? आपका ये ख्याल है कि लोगों की सांसारिक दिक्कतें और सांसारिक कठिनाइयाँ होने की वजह से आदमी की जीवात्मा की तरक्की में रुकावट होती है ? क्या रुकावट होती है ? मुझे बताइये न ? पैसे की वजह से रुकावट होती है। अच्छा, पैसे की वजह से कौन-कौन-सा काम रुका हुआ पड़ा है आध्यात्मिक दृष्टि से ? अच्छा आध्यात्मिक दृष्टि से रुका हुआ पड़ा था, तो ऋषियों की आध्यात्मिक तरक्की कैसे हो गई ? ऋषियों के पास तो मकान भी नहीं थे, घर भी नहीं थे, व्यापार भी नहीं थे, नौकरी भी नहीं थी, साधन भी नहीं थे, बैंक बैलेन्स भी नहीं था, फिर उनकी तरक्की हुई कि नहीं ? हाँ, हुई। जितने भी सन्त हुए हैं, ऋषि हुए हैं, वे सब गरीब थे कि नहीं थे ? हाँ, गरीब थे। पैसे हमको दिलवा दीजिये, तब हम भक्ति करेंगे, नहीं तो हमको नहीं भक्ति करनी। आप घर जाइये। मित्रो ! शिकायतें आपकी ये हैं कि आपको ये मिलेगा और वो मिलेगा, तो हम भगवान की भक्ति करेंगे। आप भगवान की भक्ति न तब कर सकते हैं, न अब कर सकते हैं। जितनी ज्यादा चीजें आपको मिलती जाएँगी, उतना ही ज्यादा आप रस में और पाप में डूबते चले जाएँगे, इसलिए आप ये मत कहिये कि हमको भक्ति से ताल्लुक है, अतः भक्ति के लिए माँगते हैं। ये बहाना मत बनाइये। आप कहिये माया में डूबे हुए हैं, अज्ञान में डूबे हुए हैं, लोभ में डूबे हुए हैं, मोह में डूबे हुए हैं, इसलिए हमको पैसों की जरूरत है; हमको औलाद की जरूरत है; घर की जरूरत है। ये क्यों नहीं कहते ? सीधी बात क्यों नहीं कहते ? जी साहब ! हम भगवान की भक्ति चाहते हैं। भगवान को क्यों लपेट में लेना चाहते हैं ? बेकार में भगवान को भी नरक में डालता है, भगवान को भी लोभ में डालता है, भगवान को भी मोह में डालता है, भगवान को भी पाप में डालता है अपने साथ-साथ। मित्रो ! आपको अपना दृष्टिकोण नये ढंग से प्रस्तुत करना पड़ेगा। वास्तविकता को समझना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पड़ेगा। भौतिकवाद अलग है। उसके साथ जीवात्मा की उन्नति का कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारे सिद्धान्तवाद का कोई सम्बन्ध नहीं है; आदर्शवादिता का कोई सम्बन्ध नहीं है। भौतिक चीजों की अगर आपको आवश्यकता है, तो आप कमाइये। आप नहीं कमा सकते ? अच्छा, हमसे उधार ले जाइये। हम आपको उधार दे सकते हैं, कर्ज दे सकते हैं। फोकट में नहीं बेटे ! फोकट नाम की कोई चीज दुनिया में नहीं। फोकट में मिट्टी भी नहीं। नहीं साहब ! फोकट में वरदान दीजिये, फोकट में आशीर्वाद दीजिये। नहीं बेटे ! फोकट में कोई वरदान नहीं है। आप कर्ज को, उधार को समझते हैं फोकट, तो आपकी मर्जी की बात है। कर्ज-उधार आपको मिल सकता है। पठान आते थे, अब तो बन्द हो गये। पहले पठान आते थे, कम्बल उधार दे जाते थे। लो भाई ! कम्बल। अच्छा साहब ! लाइये कितने का है ? सौ रुपये का है। अरे साहब ! वहाँ मिलता है चालीस रुपये का। अरे ! तो चालीस रुपये में बिकता है नकद। उधार में सौ रुपये का ही है। अच्छा तो साहब ! लाइये। सबको उधार दे जाते थे और छह महीने बाद जब आते थे, तब ? तब डण्डे लेकर बरसते थे। ला हमारा रुपया, नहीं तो मार डालेंगे, ये कर डालेंगे। कपड़े उतार ले जाते थे, सब ले जाते थे पठान। बेटे ! हम वरदान दे देंगे तुझे। बस, हम तुझसे ब्याज समेत वसूल करेंगे और इस जन्म में नहीं दूँगा, तो अगले जन्म में तुझे घोड़ा बनाएँगे, गधा बनाएँगे और तेरी पीठ पर लाद-लाद कर तेरा कचूमर निकाल देंगे। नहीं महाराज जी ! फोकट में दे दीजिये। चल, बस चला है फोकट में लेने के लिए। फोकट में मिट्टी तो ले आ कहीं से ? नहीं महाराज जी ! सब कोई सन्त महात्मा फोकट में बाँटते हैं। वरदान बाँटते हैं और आशीर्वाद बाँटते हैं। नहीं बेटे ! कहीं आशीर्वाद नहीं बँटता है, हर चीज कीमत देकर चुकायी जाती है। थोड़ा उधार दी जाती है। सन्त-महात्मा किसी-किसी को दिया करते हैं; इच्छा पूरी किया करते हैं, मनोकामना भी पूरी किया करते हैं; पर उसमें चालाकी रहती है उनकी। क्या चालाकी रहती है ? ये चालाकी रहती है कि शायद मनोबल से खिंचकर हमारे पास आ जाएँ और फिर भगवान की भक्ति के रास्ते पर लग जाएँ। चालाकियाँ रहती हैं। हम गायत्री मंदिर में प्रसाद बाँटते रहते हैं। लो भाई बच्चे लोगो ! प्रसाद खा लो, पेड़ा खा लो। प्रसाद-पेड़ा खा करके बच्चे आ जाते हैं, प्रसाद खाने के लिए, पेड़ा माँगने के लिए, फिर राम नाम में लगाते हैं। उसमें बहुत-से बच्चे ऐसे भी होते हैं, जो भक्ति के मार्ग पर चले जाते हैं। इसलिए हम प्रसाद बाँटने और पेड़े बाँटने के लिए लोगों को बुलाते रहते हैं। बस और कोई मतलब नहीं है। मनोकामना पूरी करना और आशीर्वाद देना, बेटे ! ये कोई तरीका नहीं है, कोई सिद्धान्त नहीं है। ये केवल लोगों को फँसाने का, लोगों को बुलाने का तरीका है कि इस बहाने से लोग जाल में हमारे आ जाएँ, जाल में हमारे फँस जाएँ। फँस जाने के बाद में उन्हें अच्छे रास्ते पर लगा दें। बुरी नीयत तो नहीं होती है, हमारी नीयत तो अच्छी होती है लेकिन अच्छी नीयत होते हुए भी वास्तव में सिद्धान्त गलत हैं। गलत ये कि यहाँ जाएँगे, तो ये आशीर्वाद लाएँगे, वहाँ जाएँगे, तो वो आशीर्वाद लाएँगे। ये आशीर्वाद हैं तो सही; पर चालाकी के लिए भी हो सकता है और अच्छे उद्देश्यों के लिए भी हो सकता है।

हमारे गाँव में एक मास्टर साहब थे। मास्टर साहब की औरत जो दिमाग की तो अच्छी थी; लेकिन थी बड़ी क्रोधी और कड़वे स्वभाव की। मास्टर साहब ने कहा—तू भी कुछ पढ़ना-लिखना सीख ले, तेरे बाल-बच्चे तो हैं नहीं। पढ़ लेगी तो अच्छी रहेगी। जाओ, जाओ तुम पढ़ लो, हमको पढ़ाना था, तो ब्याह काहे को कर लिया। तुम्हें हमको खिलाने की गुंजाइश नहीं है ? हम पढ़ें, तो नौकरी करें और तुम्हारे यहाँ सब रोटी खाएँगे ! जाओ, हमको हमारे माँ-बाप के यहाँ भेज दो। हमें नहीं रहना। चुप हो गए मास्टर साहब। फिर एक दिन ये कहा मास्टर साहब ने कि अक्ल से काम ले, तू बड़ी मूरख है, तू बड़ी बेअक्ल है। हम कैसे मूरख हैं ? हमने मास्टरी पास कर ली है और तू एक अक्षर भी नहीं जानती है। अच्छा, तू एक अक्षर याद कर ले, तो मैं एक चबन्नी दूँगा तुझे। अच्छा, लाओ एक चबन्नी दो और देखो मैं एक अक्षर याद करती हूँ। बस, एक चबन्नी मास्टर साहब ने कपड़े में बाँधी और खूँटी से टाँग गए तथा लिख गये—देख, लिख पट्टी पर क · · · क। तू याद करले। शाम तक मैं एक चबन्नी दे दूँगा तुझे। बस, सब जगह क · · · क · · · क लिख आई। मास्टर आ गए शाम को। पूछा—क्यों भाई ! याद कर लिया ? देख लो क · · · क · · · क। सब घर में 'क' लिखा है। अच्छा बाबा ! ले ले चबन्नी। चबन्नी दे दी, फिर उसने कहा—तू तो बड़ी समझदार मालूम पड़ती है। तेरी अक्ल तो बहुत अच्छी मालूम पड़ती है। हाँ साहब ! हमारी अक्ल बहुत अच्छी है, तुमसे अच्छी है। अच्छा तो तू कितने याद कर लेगी ऐसे अक्षर, जैसे आज बता दिये हैं। ऐसे मैं कर लिया करूँगी पाँच। पाँच कर लेगी ? अच्छा, तो ले कर क ख ग घ ङ—पाँच अक्षर तू लिख ले। सवा रुपया लेकर के अपनी पोटली में बाँधकर करूँगी अब1 सवा रुपया मैं तुझे दूँगा। पाँच अक्षर तू याद करके दिखा दे। जल्दी से रोटी-वोटी बना करके मास्टर साहब को भगा दिया, फिर वह खा-पीकर निवृत्त हुई और क ख ग घ ङ पट्टी पर, थाली पर, बर्तन पर सब जगह क ख ग घ ङ लिख दिया एवं याद कर लिया। मास्टर साहब घर में घुसे, तो कहा देख लो, मैंने क ख ग याद कर लिये। अच्छा, जरा बोल क ख ग घ ङ। इधर से बोल ङ घ ग ख क। अच्छा ये कौन-सा है ? ख। ये कौन-सा है ? ङ। ये कौन-सा है ? क। ये कौन-सा है ? घ। पास हो गई, जाओ। अच्छा, सवा रुपया निकाल ले। सवा रुपया उस जमाने में इतना बड़ा था कि सवा रुपये में एक धोती आती थी जनानी बढ़िया वाली। उस जमाने की बात कह रहा हूँ। सवा रुपया उसने कमा लिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तुम चाहो तो मुझे पाँच अक्षर रोज दे जाया करो, मैं पाँच याद करके दिखा दूँगी। कल मास्टर दे गए च छ ज झ ञ। सवा रुपया बाँधकर फिर टाँग गए। फिर दे गये ट ठ ड ढ ण। फिर सवा रुपया बाँधकर टाँग गए। रोजाना सवा रुपया बाँध जाएँ, पाँच अक्षर दे जाएँ बस, रोजाना पाँच अक्षरों के हिसाब से ५२ अक्षर उसने दस दिन में याद कर लिये। देख लो। मैंने सब याद कर लिये। फिर और लाओ और बताओ और तुम्हारे पास है ? और बड़ा जबरदस्त है हमारे पास। क्या है ? हमारे पास हैं—मात्राएँ। मात्राएँ भी होती हैं ? हाँ, मात्राएँ होती हैं, कितनी मात्राएँ होती हैं। मात्राएँ होती हैं—बारह। बारह मात्राएँ चबन्नी में थोड़े ही करूँगी तो कितने में करेगी बाबा ? एक रुपये में करूँगी। एक रुपया तो बहुत ज्यादा है। नहीं, ईमानदारी से चलो। तो कितने में करूँ ? तुम बताओ ? चार आने में अक्षर, तो छह आने में मात्रा। छह आने दे देंगे। नहीं, छह आने में नहीं करूँगी। अच्छा चलो अठन्नी दूँगा। करो आठ आने में एक मात्रा। बारह मात्रा तू याद कर ले और प्रत्येक अक्षर पर लगाना सीख लें। 'च' पर लगा दीजिये तो 'ची' और 'ल' पर छोटे 'उ' की मात्रा लगा दें, तो 'लु'—ये सब सीख ले और देख, तू बारह मात्रा को लगाना सीख गयी तो मैं छह रुपये दूँगा। छह रुपये बाँधकर खूँटी पर टाँग दिये। अब देखो, मात्राएँ सीखती हूँ। चार-पाँच दिनों में सब मात्राएँ लगाना—छोटी 'इ' की मात्रा, बड़ी 'ई' की मात्रा—ये सब मात्राएँ सीख गईं। कोई और बताओ ? अब और कुछ बताओ ? तुम्हारा दिवाला निकल गया। पढ़ाई खत्म ? अभी और है पढ़ाई हमारे पास। क्या पढ़ाई है ? हमारे पास है—गिनती। गिनती क्या होती है ? गिनती होती हैं ९। तो गिनती थोड़े ही करूँगी अठन्नी में। तो क्या भाव करेगी गिनती ? एक रुपये में एक करूँगी गिनती। अरे भाई ! देखो, इतनी महँगाई थोड़े ही है। अच्छा, तो कितने में करेगी ? बारह आने में ? अच्छा साहब ! तो बारह आने में तय हो गया। ९ के बारह आने के हिसाब से पैसे दिये और खूँटी पर टाँग दिये। बस, ऐसे ९ गिनती याद कर लो, पैसे तुझे मिल जाएँगे। बस हो गई जब फ्री, तो फिर नौ अंक याद कर लिये। फिर देख, आगे-पीछे का भी चुका लूँगा। एक और एक ग्यारह। हाँ, ठीक है—ये तो उसी में आता है, नौ में ही सम्मिलित है, अलग थोड़े ही है कोई। दो और एक तीन तो उसी में सम्मिलित है, अलग थोड़े ही है। नौ ही अंकों का सब खेल है। उलटा-पलटा मात्राओं में भी किया था, इसमें भी कर लेंगे। अभी भी किया था, फिर याद कर लिया। कितने रुपये लग गये ? नौ में बारह आने के हिसाब से ७ रु. बारह मात्राओं के ६ रु. और ५२ अक्षरों के चवन्नी के हिसाब से १३ रु.। १३ और ७ रु. = २० और ६ रु. = २६ रु.। २६ – २७ रु. के करीब हो गये। मास्टर साहब को ३० रुपये तनख्वाह मिलती थी। पहली तारीख को नौकरी के पैसे मिले, तो २७ रुपये तो उसे दे दिये। लो भाई ! तेरे २७ रुपये की मजूरी हो गई और ३ रुपये और बचे हैं ये और ले ले और महीने भर का खर्चा ? अरे ! तो मैं कहाँ से लाऊँ ? अरे ! तो तुमने तो मुझे वैसे ही ठगा और मुझसे ऐसे ही मेहनत करा ली,. मुझे परेशान कर दिया और मुझे ऐसे धोखे में फँसा दिया। मुझे यह मालूम पड़ता कि तुम ये चालाकी करोगे, तो मैं काहे को याद करती। खैर, याद कर लिया। उसने ये कहा—देख गिनती आ गई। अब तू एक साल मेहनत कर ले और प्राइवेट इम्तहान दे दे। मैं तुझे पढ़ा दूँगा। मुझे भी मिलते हैं ३० रुपये, तुझे भी मिलेंगे ३० रु.। तीस और तीस कितने होते हैं ? साठ। इतने में मौज करेंगे। एक महीने में भैंस खरीदेंगे और एक महीने में मकान बनवाएँगे और एक महीने में जेवर बनवाएँगे, एक महीने में कपड़े लाएँगे। साल भर के भीतर हम मालदार हो जाएँगे। तू पढ़ना तो शुरू कर। स्त्री दिमाग की अच्छी थी। लौ लग गई, तो उसी में फिर जुट गई। बस, थोड़े दिनों के पीछे एक साल बाद और दो साल बाद उसने मिडिल पास कर लिया और उसी गाँव में अध्यापिका हो गई। तीस उसको मिलने लगे और तीस उसको मिलने लगे।

ये किसकी कहानी है ? ये बेटे ! हमारी और तुम्हारी कहानी है। आपको हम बुलाते हैं, पकड़ते हैं चबन्नी के हिसाब से। लो भाई ! आ जाओ, हमारे जाल में फिर काहे के लिए कहते हैं—ले जा हमसे पैसा, लेजा हम से बेटा। बेटा बाँटने की दुकान है हमारी ? क्या फायदा बेटा बाँटने से ? नहीं महाराज जी ! बेटा पैदा कीजिये। नहीं हम नहीं कर सकते। बेटे से कोई फायदा नहीं, बल्कि नुकसान है। ये गरीब देश है। गरीब देश में न अनाज है, न कपड़ा है, न स्कूलों में जगह बचती है, न सड़कों पर चलने को जगह मिलती है और न सरकारी दफ्तरों में नौकरी है। यहाँ किसी को बच्चा पैदा करने की जरूरत नहीं है। नहीं, महाराज जी ! वरदान दीजिये। नहीं हम नहीं देंगे। इससे कोई फायदा नहीं है, सिवाय नुकसान के, जिसमें आपका नुकसान हो, और हमारा नुकसान हो, हम ऐसा काम करेंगे नहीं—हम ऐसा काम नहीं करेंगे। अक्ल हमारे भी है और बेअक्ल आप भी नहीं। इसलिए मित्रो ! क्या करना चाहिए ? ये जो हैं सकाम उपासनाएँ, वो एक प्रकार की चबन्नियाँ हैं, आकर्षण हैं ताकि लोग इस ओर लगे रह सकें; उनका रुझान इस दिशा में बना रह सके। नाम का ये फल है, नाम का ये परिणाम है, जप करने का अमुक फल—यह सब मछलियों को आकर्षित करने वाली आटे की गोलियाँ हैं। जाप करने का अगर कोई फल है, तो बस अधिक-से-अधिक वह फल मान सकते हैं, जो चबन्नी देकर के हरफ पढ़ने का होता। बस और ज्यादा कोई फल नहीं है। राम के नाम लेने का। नहीं साहब ! इससे सिद्धि मिलेगी और चमत्कार मिलेगा। न सिद्धि मिलने वाली है, न चमत्कार मिलने वाला है। क्या मिलने वाला है ? वह चीज मिलने वाली है, जिसको हमने गँवा दी। हमने अपना जीवन गँवा दिया; हमने अपने सिद्धान्त गँवा दिये; आदर्श गँवा दिया; लक्ष्य गँवा दिया; अपने आपको गँवा दिया। हमारे पास अब रहा क्या है, सिवाय वासनाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के अलावा और इच्छाओं के अलावा जीवन में क्या बचा है, जरा बतलाइए तो सही ?

सिद्धान्त हमारे पास नहीं, आदर्श हमारे पास नहीं, उत्कृष्टता हमारे पास नहीं, सेवा हमारे पास नहीं, संयम हमारे पास नहीं। कोई चीज हमारे पास नहीं, हम तो केवल छूँछ- हैं छूँछ और छूँछ हो कर के बेटे दरवाजे-दरवाजे पर टक्कर मारते हैं, कलपते-कलपते अपनी जिन्दगी के दिन बिताते हैं। इसलिए मित्रो ! जीवात्मा को तलाश कराने के लिए, परमात्मा को तलाश कराने के लिए आपको हम 'राम-राम' का नाम याद कराते हैं। राम ! आप कहाँ चले गए। आ जाओ, तो मजा आ जाए हमारी जिन्दगी में। हम और भरत, राम और भरत जिस तरीके से मिले थे, हम उसी प्रकार भरत के तरीके से धन्य हो जाएँ। हे भगवान् ! आप कहीं से आ जाएँ, तो हम आपको छू करके, आपको स्पर्श करके पारस पत्थर को छू करके लोहा जैसे सोना हो जाता है, आपको छू करके बन्दर हों, रीछ हों, तो भी हम हनुमान हो जाएँ, हम सुग्रीव हो जाएँ, नल-नील हो जाएँ। हमारे राम ! आप कहाँ हैं ? अगर आप मिल जाएँ, तो हमारा उद्धार हो जाए और हमारा बेड़ा पार हो जाए। शबरी के तरीके से हमारा उद्धार हो जाए। हमारा केवट के तरीके से उद्धार हो जाए। अहिल्या के तरीके से हमारी पत्थर जैसी जिन्दगी फिर नयी हो जाए और जीवन आ जाए, आप यदि कहीं मिल जाएँ तब। राम हमको मिलते नहीं हैं। हजारों मील दूर हैं। इसलिए हम पुकारते रहते हैं, चिल्लाते रहते हैं—'राम-राम'। राम क्या है ? राम हमारा लक्ष्य है, राम हमारा मॉडल है। हम पुकारते रहते हैं, हम तलाश करते रहते हैं राम को।

एक बार ऐसा हुआ प्रह्लाद स्कूल में भर्ती कर दिया गया। पट्टी पर लिखकर लाया—राम-राम-राम, सब जगह राम-राम-राम। मास्टर ने कहा—क्यों रे ! एक दिन हो गया, दो दिन हो गया, तू राम नाम ही लिखता रहता है। हम आगे पढ़ाते हैं और तू पढ़ता नहीं है। साहब ! हम तो एक पढ़ाई ही पढ़ेंगे और एक पढ़ाई पढ़ने के बारे में हमने सुना है; एक ही पढ़ाई पढ़ने से सारी विधाएँ आ जाती हैं। हम तो एक ही पढ़ेंगे और नहीं पढ़ेंगे। बस, उसका मास्टर उसके पिताजी के पास ले गया, कहा—देखिये साहब ! ये हमारे काबू में नहीं है। हम पढ़ाते हैं, पढ़ता नहीं है और राम नाम लिखकर ले आता है। राम नाम याद कर लेने के पश्चात् प्रह्लाद, प्रह्लाद हो गया था। सिर्फ एक राम का नाम याद करने के पश्चात्। आपको राम के नाम का अभ्यास हो जाए प्रह्लाद के तरीके से, इसीलिए हम आपसे कहते हैं पट्टी पर बार-बार राम का नाम लिखिये; बार-बार अपनी कोपी पर गायत्री मंत्र लिखिये; बार-बार अपनी माला घुमाइये और गायत्री मन्त्र को याद कीजिये प्रह्लाद के तरीके से, ताकि आपके रोम-रोम में राम समा सकें। हम आपको किस तरीके से याद करने के लिए कहते हैं। राम का नाम, जैसे कि युधिष्ठिर को पाठ पढ़ाया गया। सब विद्यार्थी तो सब पाठ पढ़ने लगे—**'सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदितव्यम्'** इत्यादि; लेकिन वह तो एक ही पाठ पढ़ता रहा—**सत्यं वद-सत्यं वद।** मास्टर ने धमकाया—क्यों रे ! एक ही पाठ पढ़ेगा कि और भी पढ़ेगा। नहीं, साहब ! हम तो एक ही पाठ पढ़ेंगे। अगर हम एक पाठ पूरा कर लेते हैं, तो हमारी, जीवन की हर समस्या पूरी हो जाती है और हमारे जीवन का उत्कर्ष हो जाता है। पहला पाठ पढ़ लेंगे, तभी तो दूसरा पढ़ेंगे। पहला पाठ तो याद ही नहीं होता। याद हो जाएगा, तब हम दूसरा पाठ याद करेंगे—धर्मं चर-धर्मं चर। युधिष्ठिर सारे जीवन में एक ही पाठ पढ़ते रहे—सत्यं वद-सत्यं वद। मित्रो ! हम आपको एक वही पाठ याद कराते हैं। क्या पाठ याद कराते हैं ? राम-राम, भगवान का नाम, गायत्री मंत्र। गायत्री मंत्र याद हो जाए, तो हमारा उद्धार हो जाए।

इतना याद हो जाए कि हमारा रोम-रोम क्या-से-क्या हो जाए ! लेकिन हम क्या कर सकते हैं ? हम तो हर बार पकड़ लेते हैं पूँछ। क्या पकड़ लेते हैं ? हमको तो इसी में मजा आता है ? काहे में मजा आता है ? डमी (पुतला) के साथ खेलने में। ये क्या लाए हो ? शेर। अच्छा ! कहाँ से लाए हो शेर ? मेले में से लाए हैं। मेले में घूम रहे थे, तो दिखाई पड़ गया, उठा लाए। पत्थरों के बने हुए हैं। अगर ये सब शेर होते, तो खा जाते सबको। नहीं साहब ! मेले में रखे हुए थे हम भी लाए हैं। कितने पैसे का लाए हो ? हम तो साहब ! चवन्नी का शेर लाए हैं। अ ह ह ह ! दिखाइये जरा ये शेर लाए हैं। आप इसी शेर के बारे में कह रहे थे। ये तो डमी है। ये तो मिट्टी का शेर है। हाँ साहब ! इसकी शक्ल शेर की है, पर ये डमी है। इसमें प्राण नहीं है। इसमें कोई जीवन नहीं है। ये राम का नाम है, इसलिये राम का नाम आए हमारी जिन्दगी में तो, हमारा स्वरूप जाने कैसा हो जाए ! फिर हमारी आकृति कैसी हो जाए, फिर हमारी प्रकृति कैसी हो जाए, फिर हमारा शरीर कैसा हो जाए, फिर हमारे जीवन के लक्ष्य कैसे हो जाएँ, फिर हम राममय हो जाएँ अगर राम हमारे भीतर आ जाएँ, तो राम की शक्लें हमको याद आ जाती हैं; राम के शब्द हमको याद आ जाते हैं। शब्दों के साथ-साथ में, राम के नाम के साथ-साथ में हमको राम के कामों की बाबत भी ध्यान देना चाहिए। नाम, नाम का उद्देश्य है—काम; उसको इस्तेमाल कर लेना, सोख लेना, हजम कर लेना। ये क्या लाए हैं साहब ? च्यवनप्राश— आँवला। इसको खाइये, हजम कीजिये ताकि आपको ताकत आ सके और आपकी खाँसी भी ठीक हो सके। नहीं साहब ! हम तो खाएँगे नहीं। तो आप क्या करना चाहते हैं। च्यवनप्राश और आँवले का ? च्यवनप्राश तथा आँवले का हम दो काम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करेंगे, एक तो हम करेंगे इसका जप और एक करेंगे इसका पूजन। कैसे-कैसे पूजन करेंगे ? दिखाइये।

देखिये साहब ! च्यवनप्राश-आँवला रखा हुआ है। हाँ, रखा हुआ है। देखिये, हमने अभी इसको छुआ नहीं है। हाँ साहब ! आपने छुआ नहीं है। तो आप क्या करेंगे ? देखिये हमारा जादू और देखिये हमारा चमत्कार। सारे-के-सारे फायदे हो जाएँगे च्यवनप्राश आँवले से। कैसे हो जाएँगे जरा बताइये ? देखिये अब हम माला घुमाते हैं। क्या घुमाते हैं—च्यवनप्राश आँवलाय नमः, च्यवनप्राश आँवलाय नमः। बेटे ! ऐसे कैसे काम चलेगा ? नहीं साहब ! हम खाएँगे तो नहीं, इसके नाम का जप करेंगे। नाम का जप करेगा और क्या करेगा ? डिब्बे को ? बेटे ! खोल उसे। नहीं साहब ! खोलूँगा तो नहीं। तब क्या करेगा ? इसको चावल चढ़ाऊँगा, पुष्प चढ़ाऊँगा—**पुष्पं समर्पयामि, नैवेद्यं समर्पयामि, अक्षतानि समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि च्यवनप्राशः नमो नमः।** खाँसी अच्छी हो जाएगी। खाँसी अच्छी करने के लिए इसको खाता जा। ब्रह्मचर्य, ब्रह्म को चर जाना। चर जाना कैसे ? गाय होती है, घास को चर जाती है न ? हाँ। घास चरके हजम कर लेती है, इसलिए तू क्या करेगा ? ब्रह्मचर्य का उद्देश्य केवल वीर्य की रक्षा ही नहीं है। ब्रह्मचर्य का आगे जा करके जो अर्थ आता है, वह होता है ब्रह्म को चर जाना। ब्रह्म माने घास और चर्य माने गाय। गाय जैसे घास को चर जाती है, ऐसे ही तू ब्रह्म को चरजा और चर करके हजम कर, हजम करके बना उसका दूध और फिर बना खून, फिर देख तू ब्रह्मचारी होता है कि नहीं, फिर तुझे भगवान मिलता है कि नहीं। भगवान के नाम को, राम के नाम को अपने जीवन में घुला देना पड़ता है, अपने जीवन के रोम-रोम में समा लेना पड़ता है। जब राम हमारे जीवन में समाधिस्थ हो जाता है और घुल जाता है, तब वह फायदे मिलते हैं। कौन-से ? जिनकी महत्ता गायी गई है ? जिनका यश गाया गया है; जिनकी महिमा बतायी गयी है; जिनका गुण गाया गया है। राम के नाम के ये गुण हैं। देखिये, सब सही हैं; लेकिन सब सही तब हैं—

"राम नाम सब कोई कहे, दशरथ कहै न कोइ।
एक बार दशरथ कहे कोटि यज्ञ फल होइ।।"

हमारी समझ में नहीं आया। पचास साल की हमारी कामनाएँ जब राम में समन्वित हो जाती हैं, राम नाम को समर्पित हो जाती हैं, तब वह राम का नाम फल देता है—

सहज राम को नाम है, कठिन राम को काम।
करत राम को काम जब, पड़त राम को काम।।

राम का काम करने में आदमी के प्राण निकलते हैं और राम का नाम लेने में सब उस्ताद, सब होशियार। रामचन्द्रजी बेचारे आए थे, मर्यादा सिखाने के लिए, तो मर्यादा सिखाने के लिए सारी जिन्दगी भर चिल्लाते रहे—अरे लोगो ! मर्यादाओं का पालन करना—मर्यादाओं का पालन करना। अरे साहब ! कौन झगड़े में पड़े, मर्यादा-वर्यादा के पालन करने में। तो फिर आप क्या करना चाहते हैं ? हम तो एक काम करेंगे। रामचन्द्रजी की मूर्ति बनाकर लाएँगे। काहे-की मूर्ति बनाकर लाएँगे आप ? लोहे की बनाकर लाएँगे। बस, रामचन्द्रजी को कपड़े पहनायेंगे, मुकुट पहनायेंगे, चन्दन लगायेंगे और धूप-बत्ती दिखायेंगे और ये सब पहनाने के बाद में बस रामचन्द्रजी के विश्वास के अधिकारी हो जाएँगे। रामचन्द्रजी के कैसे अधिकारी हो जाएँगे ? ऐसा नहीं हो सकता—ये नहीं हो सकता। रामचन्द्रजी जिस काम के लिए दुनिया में आए थे, जो सिखाने के लिए आए थे, बात बताने के लिए आए थे, उनको आप सीखिये। नहीं साहब ! वह तो हम नहीं सीखेंगे। रामचन्द्रजी की शक्ल बनाएँगे, मूर्ति बनाएँगे, नैवेद्य चढ़ाएँगे। अच्छा हुआ शिवाजी और राणा प्रताप अभी-अभी हुए हैं नहीं तो अब तक राणाप्रताप और शिवाजी के भी मन्दिर बन गए होते। लोगों ने राणाप्रताप का जप करना शुरू कर दिया होता। राणाप्रताप नमः राणाप्रतापाय नमः शिवाजी नमः—शिवाजी नमः शिवाजी नमः। ये काहे के लिए जप कर रहा है ? घर जाऊँगा। काहे से घर जाऊँगा ? राणाप्रतापाय नमः ? मंत्र जप के प्रताप से। और योद्धा कैसे बन जाएगा ? जप करने से और महात्मा कैसे हो जाते हैं ? महात्मा बेटे ! हो जाते हैं—'महात्मा गाँधी नमः—महात्मा गाँधी नमः' से और रुपये वाला ? रुपये वाला घनश्यामदास बिरला नमः-घनश्यामदास बिरला नमः। अ ह ह ह ! जप करने से सब मिल जाएगा ! मूरख-मूरख ! हरफों के उच्चारण करने से तू ये समझता है कि तुझे ये मिलने वाला है, मुझे ये मिलने वाला है। अनुभव के पीछे हमारे उद्देश्य छिपे हुए पड़े हैं और जिनके हम अनुभवों का उच्चारण करते हैं और ये चाहते हैं कि हम उनके अनुयायी बनेंगे, उनके पीछे चलेंगे, उनका उद्धार करने के लिए शिक्षा ग्रहण करेंगे, जीवन को उस ढाँचे में ढालेंगे। बस, ये उद्देश्य है। अगर ये समझ में आ जाए, तो मजा आ जाए राम के नाम का। राम का नाम क्या है बेटे ? हमारी जीवात्मा, हमारा अन्तःकरण ग्यारह-ग्यारह विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाता है। ये ग्यारह विद्यार्थी कौन हैं ? ग्यारह विद्यार्थी वह हैं, जिनको हम दस इन्द्रियाँ कहते हैं और एक कहते हैं—मन।

ग्यारह विद्यार्थी बैठे रहते हैं। उनको हम सिखाते हैं—ये भूल गए, भटक गए। जैसे बच्चे को याद कराते हैं—पहले क ख ग घ ङ पढ़ो। क ख ग घ ङ पढ़ो-लिखो, हम बोलते जाते हैं। वह भी बोलते जाते हैं, दोनों बोलते जाते हैं। याद हो जाते हैं—क ख ग घ ङ ग्यारह विद्यार्थी जो बड़े ढीट हैं, बड़े बुद्धिमान हैं, बाकी सब पढ़ने को तैयार हैं; लेकिन राम का नाम पढ़ने के लिए तैयार नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारी जीवात्मा इन ग्यारह विद्यार्थियों को पढ़ाती रहती है—रट 'राम', कह 'राम'। साहब ! मैं 'राम' तो नहीं कहूँगा। राम-राम-राम कहना पड़ेगा। राम कहने के लिए—मित्रो ! हम अपनी अन्तःचेतना से अपनी क्रियाओं को, अपने मन को, अपनी भावनाओं को इन तीनों को शिक्षण करते हैं और अगर राम का नाम हमारे जीवन में आ जाए तो मजा आ जाए ! अगर वह आपकी जीभ की नोंक से भीतर चला जाए, अगर आप गले में ले जाएँ, कण्ठ में ले जाएँ, हृदय में ले जाएँ और खून में शामिल कर लें, मन में भर लें, तो बेटे ! ये वो दवा है, जिसको संजीवनी बूटी कहते हैं। राम के नाम के महत्त्व के बारे में कितना लिखा है ? रामायण में लिखा है, यहाँ लिखा है, वहाँ लिखा है; लेकिन साथ-साथ में यह भी लिखा है कि इसको जीभ की नोंक से नीचे उतारना पड़ेगा, गले में उतारना पड़ेगा, कण्ठ में उतारना पड़ेगा, हृदय में उतारना और अपने विश्वासों में उतारना पड़ेगा, श्रद्धाओं में उतारना पड़ेगा और मान्यताओं में उतारना पड़ेगा। अगर आप श्रद्धाओं में और मान्यताओं में उतारने के लिए तैयार हो जाएँ, तो बेटे ! फिर तो मजा आ जाएगा तेरी जिन्दगी में ! राम का नाम क्या है ? राम का नाम एक शराब है, राम का नाम एक नशा है, राम का नाम एक मस्ती है। मस्ती है ऐसी जोर की मस्ती है, जिसको हम पीते तो हैं थोड़ी देर जैसे भाँग पी ली थोड़ी देर; पी लेने के बाद में १५ मिनट के बाद में—१० मिनट के बाद में—५ मिनट के बाद में नशा आ गया—राम के नाम की खुमारी होती है, मस्ती होती है, खुशी होती है, फिर आदमी झूमता रहता है। झूमने के बाद में उसकी दुनिया अलग हो जाती है, उसके विचार अलग हो जाते हैं, सोचने के तरीके अलग हो जाते हैं, फिर वह अलग तरह का हो जाता है। सामान्य लोग तो विचार करते रहते हैं, वह तो जाने किस मस्ती में, जाने किस खुशी में, किस जोश में घूमता रहता है राम के नाम का नशा पी करके। राम का नशा पी करके—ये मार दूँगा कोई सामने आया तो। जानता नहीं है **शिवोऽहम सच्चिदानन्दोऽहम्' अयमात्मा ब्रह्म**—हम भगवान के बेटे हैं, हम भगवान के पुत्र हैं और भगवान की सम्पत्तियों के अधिकारी होकर आए हैं। हम सत्, चित् और आनन्द हैं और हम अपनी आन पर सारी दुनिया को डुबो सकते हैं और स्वयं डूबे हुए रह सकते हैं। ये मस्ती है।

हवाईजहाजों के सफर हमको करने पड़े हैं कई बार। हवाईजहाजों के सफर में जब कभी भी हमने चढ़कर देखा है नीचे वाली चीजें बहुत छोटी-छोटी मालूम पड़ती हैं। रेलगाड़ी चलती हुई देखी है ? ऐसी मालूम पड़ती है कोई गिलहरी रेंग रही हो और जब गाय-बैलों के समूह आते हैं, तो मालूम पड़ते हैं यात्रियों को, जैसे छोटे-छोटे मच्छर घूम रहे हैं। मनुष्य ऐसे मालूम पड़ते हैं, जैसे कोई क्या बैठा हुआ है। घास के पेड़ और गन्ने के खेत ऐसे मालूम पड़ते हैं, जैसे घास उगी हुई हो; छोटी मालूम पड़ती हैं। देखिये, जब हवाईजहाज में बैठकर सफर करते हैं, तो वह चीजें, जिन्हें पाने के लिए आप व्याकुल हो रहे होते हैं, जिनके लिए आप मरे जा रहे होते हैं, जो आप पर हावी हो रही हैं, ऐसी मालूम पड़ती हैं, कि बिल्कुल वाहियात चीजें हैं, नाचीज चीजें हैं, इनमें रखा क्या है और जो चीजें अब आपको ऐसी मालूम पड़ती हैं, जिनको आप भूल गए हैं और जान नहीं पाते हैं, वह आपको दिखाई पड़ती हैं, उस हिस्से में कब ? जब आपको राम के नाम की मस्ती आती है और राम के नाम का नशा आता है तब। राम के नाम का नशा कभी आया है ? नहीं, बेटे ! राम के नाम का नशा कभी नहीं आया है। राम के नाम की मस्ती कभी आई है ? राम के नाम की कभी मस्ती नहीं आई है आपको। राम के नाम की मस्ती आती, तो आपकी आँखों में चमक दिखाई पड़ती, खुशी दिखाई पड़ती, उत्साह दिखाई पड़ता; क्योंकि हम भगवान के अंश हैं, भगवान के पुत्र हैं। उन चीजों के लिए आप नाखुश दिखाई पड़ते, जो किसी काम की नहीं हैं आपके लिए और जिनसे आप कोई फायदा नहीं उठा सकते। आप क्या फायदा उठा सकते हैं, बताइये जरा ? नहीं साहब। हमको पैसा मिल जाएगा, तो बहुत फायदा होगा। अच्छा पैसा हम दिलाते हैं, पर आप उसे इस्तेमाल करके दिखाइये। भगवान ने हर आदमी के लिए कोटा मुकर्रर कर दिया है। इससे एक दाना ज्यादा नहीं खा सकता। आपका कोटा मुकर्रर है। आप चार रोटी खाइये, छठवीं रोटी खाएँगे तो आपके गाल पर ऐसा चाँटा पड़ेगा कि आपको उलटी हो जाएगी और टट्टी निकल पड़ेगी। छह रोटी खाइये, दिखाइये छह रोटी खाकर के, तब हम जानेंगे कि आप बड़े अमीर आदमी हैं। चार रोटी से पाँचवीं रोटी छूइये मत, जान ले ली जाएगी आपकी। तीन गज कपड़े का कोटा मुकर्रर है। हम तो साहब ! अमीर आदमी हैं। अमीर आदमी हैं तो आप २६ गज का कुर्ता पहनकर दिखाइये। नहीं साहब ! २६ गज का कुर्ता नहीं पहन सकते। क्यों ? आप पहनिये न, आप अमीर हैं न ! नहीं साहब ! अमीर हैं, तो हम क्या कर सकते हैं। ये तीन गज का ही कुर्ता पहनेंगे। आप अमीर हैं ? अमीर हैं, तो २० गज की चारपाई पर सोकर दिखाइये। अरे महाराज ! २० गज की तो हमारे मकान में भी नहीं है। २० गज की चारपाई पर कैसे सोयेंगे ? कितने फुट की चारपाई पर सोयेगा ? छह फुट की चारपाई पर सोऊँगा। बस, छह फुट की चारपाई पर तो हम भी सोते हैं, गरीब भी सोते हैं। तू क्या सोता है ? तू तो अमीर है ! क्या अमीर है तू ? मित्रो ! हर आदमी के लिए मुकर्रर कोटा तय है। उतना ही इस्तेमाल कर सकता है। इससे ज्यादा छू नहीं सकता, ज्यादा कोई पा नहीं सकता। फिर जिन चीजों के लिए आप व्याकुल हो रहे हैं, पागल हो रहे हैं, वह चीजें केवल दुनिया की हैं, यहीं की हैं और यहीं रहने वाली हैं। आप इसको देख लीजिये, छूइये मत। आप इन्हें छू नहीं सकते।

सिकन्दर जो था। सिकन्दर ने जिन्दगी भर बेहद पैसा जमा किया। मरने के वक्त जब लोगों से उसने ये पूछा कि लाइये जो पैसा हमने जिन्दगी भर कमाया है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीजिये हम लेकर के जाएँगे। लोगों ने उसका सारा पैसा जमा कर दिया कि सोना ले जाइये, जवाहरात ले जाइये, सब कुछ ले जाइये। फिर आप भेजिये ? हम कैसे भेज सकते हैं ? आप ले जाइये, यह जाएगा नहीं। नहीं, यह नहीं जा सकता है। सिकन्दर को आया होश। आपको भी अगर होश पहले आ जाए, तो मजा आ जाए। सिकन्दर को होश आया, उसने कहा कि जो चीजें नहीं जा सकती हैं हमारे साथ; जो दूसरे लोगों के लिए हैं; जो हमारे साले के लिए हैं, बहनोई के लिए हैं, जमाई के लिए हैं, बेटे के लिए है, पड़ौसी के लिए हैं, गवर्नमेण्ट के लिए हैं और टैक्स वसूल करने वालों के लिए हैं, उनका हम क्या करेंगे ! आपके लिए नहीं हैं, छुइये मत। देखिये, छुएँगे, तो आपके पाँव जल जाएँगे। छूना मत कभी। बस इसको आप सिर्फ दूर से देखिये। खुशी मनाते हैं, मनाइये, आपकी मर्जी की बात है। रंज मनाते हैं, मनाइये; लेकिन आप इन्हें छू नहीं सकते। बस, सिकन्दर की वह चीजें जहाँ-की-तहाँ पड़ी रह गईं। सिकन्दर जो था रोया और उसने ये कहा—हमको ये मालूम होता कि ये सारी चीजें हमारे साथ नहीं जाने वाली हैं, तब फिर हमने दूसरे तरह की जिन्दगी जी होती। फिर हमने सिकन्दर की जिन्दगी नहीं जी होती, फिर हमने ईसामसीह की जिन्दगी जी होती, फिर हमने सुकरात की जिन्दगी जी होती, फिर हमने बुद्ध की जिन्दगी जी होती। ऐसी शानदार जिन्दगी जी होती कि हमारे लिए मजा आ जाता और दुनिया के लिए मजा आ जाता। देखिये, हमारी आँखें खुलें और कोई राम नाम का अंजन हमारी आँखों में लगा दे, तो हमको अपना भाग्य दिखलायी पड़ने लगे, भविष्य दिखायी पड़ने लगे, जिन्दगी दिखायी पड़ने लगे, मौत दिखायी पड़ने लगे, नफा दिखायी पड़ने लगे, नुकसान दिखायी पड़ने लगे हमको, जो अभी बिल्कुल नहीं दिखायी पड़ता। आँखों में ऐसा कोई अंजन लगा दे कि हमको दिखायी पड़ने लगे। देखिये, अभी इस कदर अन्धे हैं कि हमको न लाभ दिखाई पड़ता है, न हानि दिखाई पड़ती है। हमको लाभ में हानि दिखाई पड़ती है और हानि में लाभ दिखाई पड़ता है। द्रोपदी का पाण्डवों ने घर बनाया था, जिसमें दुर्योधन चला गया था। पानी में उसको दिखाई पड़ता था सूखा, सूखे में पानी दिखाई पड़ता था। द्रोपदी कहने लगी—अन्धों के अन्धे होते हैं। बेटे ! वह हालत हमारी है। हमको नफे में नुकसान दिखाई पड़ता है, नुकसान में नफा दिखाई पड़ता है। जिन्दगी को हम कहाँ इस्तेमाल कर सकते हैं ? उस काम में हमको नुकसान दिखाई पड़ता है। जिन्दगी का फायदा क्या हो सकता है ? जिन्दगी हम कहाँ इस्तेमाल कर सकते हैं ? यह सारी-की-सारी बातें हमको गलत मालूम पड़ती हैं और जो चीजें, जो बातें हमारे लिए केवल नुकसान की हैं, हमारे हीरे और मोतियों जैसी जिन्दगी को तबाह कर रही हैं और छल करके हमारे जीवन को बरबाद करती चली जा रही हैं। उनमें हमको नफा मालूम पड़ता है; उनमें हमको लाभ मालूम पड़ता है; उसके लिए हम व्याकुल मालूम पड़ते हैं; उसके लिए हम बेचैन मालूम पड़ते हैं। ये बेटे ! ये क्या हो रहा है ? हमारी अक्ल खराब हो रही है। अकल की खराबी की प्रार्थना के लिए हम भगवान को पुकारते हैं—**"धियो यो नः प्रचोदयात्"—धियो यो नः प्रचोदयात्"** ये हमारी अकल ऐसी गन्दी हो गई है, हे भगवान् ! हथौड़ी लाकर के इसे फोड़कर मेरी खोपड़ी में लगा दो, ताकि हमको विचार करने का तरीका मालूम हो जाए। हमको अपना नफा किसमें है, नुकसान किसमें है ? यह मालूम हो जाए। न हम अपना नफा समझ पा रहे हैं, न हम अपना नुकसान समझ पा रहे हैं। जिन्दगी के हीरे और मोतियों की माला को हम एक-एक करके पानी में नोचते और फेंकते चले जा रहे हैं। हे भगवान ! हमको क्या हो गया है ! हम कैसे पागल हो गये हैं ! इसलिए हम गायत्री मंत्र का जप करते हैं। गायत्री मंत्र के जप का यही उद्देश्य है। गायत्री मंत्र के जप का उद्देश्य यह नहीं है, जैसा आपने समझ रखा है। गायत्री मंत्र के जप का उद्देश्य यह है कि राम हमारे जीवन में आए। राम हमारे जीवन में जब आएँगे, तब उसका तरीका क्या हो जाएगा ? रूप क्या हो जाएगा ? तरीका देखिये विलक्षण हो जाएगा, असाधारण हो जाएगा। किसका ? राम के नाम का। क्या तरीका हो जाएगा ? उसका तरीका यह हो जाएगा कि हम गलतियाँ नहीं कर सकते।

एक था चोर और एक था उसका बेटा। चोर खेत काटने के लिए गया कहीं और अपने बेटे को वहाँ खड़ा कर दिया टीले पर। बेटे ! देखना कहीं ऐसा न हो कि खेत का मालिक आ जाए। खेत का मालिक आ जाएगा, तो हमको पकड़ लेगा। पता लगाते रहना, देखते रहना। खेत का मालिक आता हो, तो चिल्ला पड़ना, हम वहाँ से भाग खड़े होंगे। बस, बेटा थोड़ी देर तो खड़ा रहा, फिर एक बार चिल्लाया—पिताजी ! भागिये ! पिताजी ! भागिये !! वह आ गया मालिक। बस, पिताजी भागे और बच्चा भी भागा। दोनों भागे। भागने के पश्चात् जब थोड़ा थक गए और जब कुछ दूर चले गए, तब पूछा बेटे ! कहाँ था वह मालिक। उसने कहा—मालिक ! सारी-की-सारी दुनिया का मालिक, जिसकी हजार आँखें हैं, उससे हम छिपाव नहीं कर सकते। वह छिपे हुए की भी तलाश करता रहता है, जानकारी की भी तलाश करता रहता है। घर-घर में उसकी आँखें काम करती हैं। उससे हम बच के कहीं छिप नहीं सकते थे, इसलिए मैं चिल्लाया, भगवान् देख रहे हैं, हमको और आप भागिये। अगर आपका मन भगवान् में हो और भगवान आपको दिखाई पड़ते हों, तो आपको इस मायने में दिखाई पड़ना चाहिए कि वह सर्वशक्तिमान रोम-रोम में समाया हुआ है और हम छिप करके भी कुछ नहीं कर सकते और खुल्लमखुल्ला भी कुछ नहीं कर सकते। यह बात समझ में आ जाए, तो हमारी जिन्दगी वैसी हो जाए, जैसी भगवान के भक्तों की होती है। भगवान के भक्तों की जिन्दगी हो, तब मैं ये समझूँ कि आपमें भगवान की भक्ति है; पर भगवान की भक्ति तो है नहीं, जिन्दगी का वह तरीका तो आप में है नहीं। जिन्दगी का तरीका तो बस, चोर और चमारों जैसा है। आप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जुबान से कहते हैं—हम भक्ति करते हैं, भजन करते हैं। आपका कैसा भजन और कैसी भक्ति हो सकती है ? बेटे ! न ये भजन है, न ये भक्ति है। ये भजन का ढोंग है। और ये भजन की विडम्बना है, जो हमने और आपने पकड़ कर रखी है। भगवान की भक्ति आपके पास अगर है, तो उसका तरीका अलग होना चाहिए। क्या होना चाहिए ? इस तरह का होना चाहिए जैसा कि नारद जी ने समझा दिया था डाकू को। अरे बेटे ! तू राम का नाम ले और ये क्या करता है ! गलत-सलत काम करता है ! हाँ ठीक है, अब राम का नाम लूँगा। बाल्मीकि ने राम का नाम लिया, जिससे डाका डालना बन्द, चोरी करना बन्द, खून करना बन्द, कत्ल करना बन्द। राम का पल्ला पकड़ा, तो राम का नाम लूँगा, राम का काम करूँगा। रावण का पल्ला पकड़ना है, तो रावण का नाम लूँगा, रावण का काम करूँगा। राम का पल्ला पकड़ा उसने और जिन्दगी राम के ढाँचे में ढाल दी। राम के ढाँचे में ढाल देने के पश्चात् मित्रो ! कैसे हो गए वाल्मीकि ? मैं क्या कह सकता हूँ आपको। बाल्मीकि ऐसे हो गए कि तमाम जगह तमाम जगह उनको राम नाम दिखाई पड़ने लगा—**सियारामम्य सब जग जानी।** राम का नाम अगर आप लें, तो आपको सारी-की-सारी दुनिया में राम दिखाई पड़ना चाहिए—

सियारामम्य सब जग जानी।
करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी।।

प्रत्येक मनुष्य के अन्दर राम, प्रत्येक लड़की के अन्दर सिया। हमारी दोनों आँखों में से सिया और राम के दर्शन होने चाहिए। अगर दोनों के दर्शन होंगे, तो हम राम के साथ में किस तरीके से बेईमानी करेंगे ? चालाकी कैसे करेंगे ? मक्कारी कैसे करेंगे ? चीट कैसे करेंगे ? धोखा कैसे करेंगे ? आपके साथ में बुरा व्यवहार कैसे करेंगे ? आप राम हैं—हम कैसे कर सकते हैं ? हमारी एक आँख में राम बना हुआ है। हम प्रत्येक मनुष्य को राम मानते हैं। ऐसी हालत में हम आपके साथ अनीति और विश्वासघात कैसे कर सकते हैं ? अगर हम राम जप को जानते होंगे, तो हमारा जीवन किस तरह का होगा ? प्रत्येक कन्या के प्रति, प्रत्येक लड़की के प्रति हमारी आत्मा में हमारी आँखों में सिया की वृत्ति होगी। किसी के साथ में सीता माता आ जाएँ, पार्वती माता खड़ी हों, लक्ष्मी माता खड़ी हों, गायत्री खड़ी हों, तो क्या हम सीटी बजायेंगे ? गन्दे गीत गाएँगे ? गन्दे इशारे करेंगे ? गन्दी आँखों से देखेंगे ? आँखें खराब हो जाएँगी। तेरी आँखें फूट जाएँगी। सीताजी के साथ में ऐसे गन्दे ढंग से पेश आते हैं। ये सब क्या है ? इस तरह की आँखें हमारे पास आएँ, तो राम का नाम हमको फल देता हुआ चला जाए, चमत्कार दिखाता हुआ चला जाए। इसी तरह के राम को तलाश करने के लिए और ढूँढ़ने के लिए हमको राम के नाम में रम जाने की इच्छा है। हम चाहते हैं—हम राम के नाम में रंग जाएँ। क्रान्तिकारी जेलखानों में, कैदों में गाया करते थे—'मेरा रंग दे बसन्ती चोला।' अपना चोला बसन्ती रंग में, राम के नाम के रंग में हम रँगना चाहते हैं। रँगने के लिए और रमने के लिए हम बार-बार पुकार करते हैं—हमको कहाँ जाना है ? कहाँ देखना है ? हमारा लक्ष्य क्या हो सकता है ? राम की सुगन्ध से हम सुगन्धित बनना चाहते हैं, इसलिए हम उसके नजदीक बैठते हैं, हम उसके पास बैठते हैं। गुलाब के फूल गिरा करते हैं मिट्टी के ऊपर। सारी मिट्टी जो है, वो महकने लगती है। चंदन के नजदीक झाड़ियाँ उगी रहती हैं और पेड़ उगे रहते हैं, वे खुशबूदार हो जाते हैं। हम राम के नाम के नजदीक उगे रहना चाहते हैं झाड़ियों के तरीके से, ताकि भगवान की जो खुशबू है, वह हमारे भीतर भी आ जाए। राम नाम के गुलाब के बगीचे के नीचे हम रोजाना प्रार्थना करते हैं—अभी और एक फूल टपकाइये और एक फूल टपकाइये, ताकि आपकी सुगन्धि हमारे मिट्टी के ढेरे में भी आ जाए। हमारी जिन्दगी में राम-नाम की भक्ति आ जाए तो मजा आ जाए। बेटे ! हम आपको जप इसलिए कराते हैं, अनुष्ठान इसलिए कराते हैं; बार-बार करने के लिए इसलिए कहते हैं, २४००० जप करने के लिए कहते हैं, २४०० जप करने के लिए कहते हैं, २४ लाख जप करने के लिए कहते हैं यह सब हम इसलिए कहते हैं कि राम के नाम से आपकी धुलाई होनी चाहिए और राम के नाम से आपकी सफाई होनी चाहिए।

राम के नाम की धुलाई, राम के नाम की सफाई—राम का नाम क्या है ? साबुन है बेटे ! हम रोजाना सफाई करते हैं। काहे की सफाई करते हैं ? अपने शरीर को स्नान कराते हैं। काहे से स्नान कराते हैं ? पानी से धोते हैं और कपड़ें साबुन से धोते हैं और दाँत मंजन से माँजते हैं और कमरा झाड़ू से साफ करते हैं और अपनी बुद्धि को और अपनी अक्ल को, जो सारे-के-सारे वातावरण से रोज गन्दी होती है, इसकी हम राम के नाम से सफाई करते हैं। सफाई हमारा उद्देश्य है। मलीनता का निवारण हमारा उद्देश्य है। मल और आवरण के विक्षेप को दूर करना हमारा उद्देश्य है। नहीं साहब ! राम के नाम में चमत्कार होता है, जादू होता है, न जादू होता है, न चमत्कार होता है। मन की सफाई एकमात्र राम का उद्देश्य है साबुन के तरीके से और पानी के तरीके से। 'रा' और 'म', 'रा' और 'म'—राम नाम हम लेते हैं, इसका अर्थ साबुन और पानी—साबुन और पानी है। दाँत को मंजन से हम साफ कर लेते हैं। नहीं करेंगे तो मुँह में से गंध आएगी और बदबू आ जाएगी। राम का नाम हम नहीं लेंगे, तो हमारे जीवन में मलीनता आ जाएगी, पाप आ जाएगा और मलीनता को अगर हम साफ कर डालें, तो अंगारे के तरीके से हमारे ऊपर से परतें हट सकती हैं और हम फिर, चमकदार अंगारा जिस तरीके से राख की परत हटा देने के बाद में चमकता है, फिर हम चमकने लगेंगे। ये हैं उद्देश्य जप करने का, भजन करने का। हम रोज धो रहे हैं, बार-बार धो रहे हैं। अरे ! एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बार धो लीजिये, बार-बार नहीं। नहीं, एक बार नहीं, हमको कई बार धोना पड़ेगा। आप मिट्टी से कितनी बार माँजते हैं हाथ ? देखिये, हम पाखाना हो करके आए हैं, टट्टी होकर के आए हैं। तो क्या कर रहे हैं ? माँज रहे हैं। अरे ! तो एक बार माँज लीजिये न। नहीं साहब ! एक बार नहीं, कई बार माँजेंगे। थोड़ी मिट्टी ले लीजिये आप, धो लीजिये। नहीं, ऐसे कैसे ले लेंगे ? सारे हाथ-पाँव कई बार माँजेंगे। बार-बार माँजेंगे और ये क्या कर रहे हैं ? मंजन। एक बार माँज लीजिये। देखिये, एक बार में दाँत साफ नहीं होते, इसलिए हम बार-बार रगड़ेंगे—बार-बार घिसेंगे। इसी प्रकार बार-बार राम का नाम लेने के लिए रिपिटीशन करने के लिए जप को हम बार-बार कराते हैं, ताकि हमारे दाँतों की सफाई अच्छे तरीके से हो जाए, ताकि हमारे कपड़े पर साबुन की घिसाई अच्छे तरीके से हो जाए। बार-बार हम झाड़ू लगाते हैं, ताकि हमारा कमरा बराबर साफ रहे। हमको अपनी मलीनता को साफ करने के लिए राम का नाम लेना है, चमत्कारों के लिए नहीं, पैसे के लिए नहीं, बेटे के लिए नहीं। अक्ल से काम कीजिये और जिन्दगी कों अपने पुरुषार्थ के बलबूते पर हाँकिये। जिस उद्देश्य का नाम राम-नाम है, उसको पकड़ते नहीं हैं, दूसरे उद्देश्यों को समझते रहते हैं। राम के नाम का जप जो हमने यहाँ कराया, उसका पहला वाला पाठ हम ये पढ़ने वाले थे कि उपासना का लक्ष्य और उद्देश्य आप समझिये।

ये मैंने ज्ञान भाग बताया। अब मैं विज्ञान भाग बताता हूँ। अध्यात्म-क्षेत्र में ज्ञान और विज्ञान दोनों का समन्वय है। केवल ज्ञान ही ज्ञान नहीं है, विज्ञान का भाग भी है। विज्ञान का भाग क्या है ? विज्ञान का बेटे ! भाग है शब्दों की शक्ति। शब्द भी है, शक्ति भी है। जिस तरीके से बहुत सारी शक्तियाँ होती हैं, उस तरीके से शब्द की भी एक शक्ति है। शब्द की शक्ति का हम इस्तेमाल करते हैं। शब्द की शक्ति क्या है ? शब्द की शक्ति बताता हूँ। किसी मिलिट्री वाले से पूछना—क्यों साहब ! जब आपकी मिलिट्री पुल पर से होकर के निकलती है, तो आपके जो सिपाही होते हैं, खटपट-खटपट, लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट ऐसे चलाते हैं ? वाह ! ऐसे कैसे चल सकते हैं। तो क्या करते हैं ? हम ये कहते हैं पैर-से-पैर मिला करके चलिये मत। नहीं हम तो ऐसे ही चलेंगे, जैसे हमको चलना चाहिए। ऐसे नहीं चलेंगे। अगर हम ऐसे चलेंगे, तो हमारे अन्दर ताल की जो शक्ति है—ताल की एक शक्ति होती है, इतनी जबरदस्त होती है कि आप टाँग-से-टाँग मिला करके चलें तो आप लोहे के पुलों में छेद कर सकते हैं और पुल गिराये जा सकते हैं। ये शब्द की शक्ति है और शब्द की शक्ति में भी ताल की शक्ति है। ताल अपने आप में एक अलग चीज है। ताल क्या चीज है ? क्रमबद्धता। राम के नाम का हम उच्चारण करते हैं, गायत्री मंत्र का जब हम उच्चारण करते हैं शब्द विज्ञान के आधार पर, तो ताल मिलाते हैं—एक क्रमबद्धता मिलाते हैं। आपको मैं ये प्रयोग करके तो नहीं दिखा सकता; मगर आप इस बात पर यकीन कर सकते हैं। आप एक छत में सौ मन का एक गार्डर टाँग दीजिये और ऐसा कीजिये कि जो कार्क आते हैं शीशी में लगाने के एक ग्राम भारी कार्क, जरा-सा कार्क एक रस्सी में बाँध दीजिये। उस पर बिजली के तार से ऐसा कोई कनेक्शन कर दीजिये कि वह जो कार्क है, सौ मन वजनी गार्डर के ऊपर तना हुआ, उस पर एक क्रम से चोट मारे, बिना क्रम के नहीं। कभी धीमी, कभी तेज—ऐसे नहीं। एक क्रम से चोट मारें। चोट न भारी हो, न हलकी हो, उतने ही सेकेण्ड से वैसे ही ढंग से उतनी ही चोट उसमें सेकेण्डों का भी फर्क न हो, बिल्कुल टाइम उसी तरह का मिला हुआ हो। अगर आप ऐसा कर सकें इन्तजाम, तो आप देखेंगे कि थोड़े समय में ही वह सौ मन का गार्डर काँपने लगा और थरथराने लगा। क्यों ? वह जो कार्क है, वह तो जरा-सा होता है ? लेकिन वह क्रमबद्धता—वह ताल—ताल की शक्ति इतनी जबरदस्त है कि वह काँपने लगता है और थरथराने लगता है। शब्दों का उच्चारण, शब्दों का जप जब तालबद्ध हो करके, क्रमबद्ध हो करके हम करते हैं, तो एक साइन्स पैदा होता है, जिसे शब्द की साइन्स कहते हैं। ये मैं आपको भौतिक-विज्ञान समझा रहा हूँ। ये मैं फिजिक्स समझा रहा हूँ। फिजिक्स हमको यह सिखाता है कि हमारे शब्दों के उच्चारण अगर क्रमबद्ध हों, तो बड़े-बड़े चमत्कार देखे जा सकते हैं।

इसी विज्ञान के अन्तर्गत जप करने की विधि भी आती है। जरा उसे ठीक से किया जाए, हम उसका क्रम बनाते हैं, हम एक गति बनाते हैं, पैनी धार बनाते हैं, तो कमाल हो जाता है। एक सूत्र आता है, जिसमें ये बताया गया है कि जप कैसे करना चाहिए—तेल की धारा की तरह। तेल की धारा कैसे ? जिसमें छिन्न-भिन्न न होने पावे धारा, खंडित नहीं होने पावे, बिना विराम दिये, बिना रोक-थाम के एक गति से चक्र घूमता रहे। इसको हम कहते हैं—गति और ये है, जप करने की विधि। इस तरीके से आप जप करें, जिसमें विराम की गुंजाइश न हो, रोकने की गुंजाइश न हो, चाल-व्यतिक्रम की गुंजाइश न हो। चाल का ये नियय बनाया जाए, हमारी चाल कितनी होनी चाहिए ? चाल का एक क्रम बना हुआ है, जैसे एक घण्टे में १० माला और ११ माला तो होनी ही चाहिए। इसमें विराम नहीं होना चाहिए। इसमें इतनी तेजी होनी चाहिए कि एक गति का क्रम बना रहे। एक गति का क्रम बन जाता है, तो फिर क्या हो जाता है ? क्या है पहचान कि आपकी गति ठीक बन रही है कि नहीं ? क्या पहचान है इसकी कि स्पीड (गति) इतनी होती है, न वह मन्द, न वह तेज कि हम पहला अक्षर और अन्तिम अक्षर का पता लगा सकें। बाल्मीकि को राम के नाम की गति का ठीक ढंग आता था। राम नाम का जप करता था। सुनने वालों की समझ में ये आया कि ये 'राम-राम' नहीं जप रहा है। क्या जप रहा है ? ये 'मरा-मरा' जप रहा है। 'राम-राम' कैसे ? और 'मरा-मरा' कैसे ? राम-राम में और मरा-मरा में देखिये, जब चक्र बन जाएगा, सर्कल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बन जाएगा, तो कुछ पता ही नहीं चलेगा कि राम-राम बोल रहा है कि मरा-मरा बोल रहा है। राम राम राम राम राम—ये क्या बोल रहे हैं गुरु जी ? बेटा ! तू समझ ले। चाहे मरा-मरा समझ ले, चाहे राम-राम समझ ले। 'म' से शुरू करेगा तो 'रा' पर खत्म करना पड़ेगा और 'रा' से शुरू करेगा तो 'म' पर खत्म करना पड़ेगा। बात एक ही है। राम नाम भी हो सकता है मरा-मरा भी हो सकता है। बाल्मीकि के बारे में जो ये बताया गया है कि बाल्मीकि राम नाप नहीं जपते थे—**"उलटा नाम जपा जग जाना"** तू जप उलटा जैसे मैं बताता हूँ, तू उसी स्पीड (गति) से जप, तो तेरा नाम भी सीधा हो जाएगा। कैसे जपूँ गुरुजी ! मरा-मरा जप ? कैसे मरा-मरा जपूँ ? ऐसे जप कि उसका पहिया ठीक से घूम जाए। पहिये में विराम नहीं आए। विराम आ जाएगा, तो गड़बड़ फैल जाएगी, जैसे मरा मरा मरा मरा—ये तो राम-राम हो गया गुरुजी ! मरा-मरा कह रहे थे। देखिये, मरा और राम में फर्क तब पड़ेगा, जब कहीं-न-कहीं उसमें विराम होगा। विराम के ऊपर हो सकता है फर्क। विराम यदि नहीं होगा, तो फिर क्या हो जाएगा ? एक गति बन जाएगी। गति बन जाती है, तो गति की शक्ति अलग बन जाती है हमारे शरीर में। आपने देखा होगा बच्चे फिरकनी फिरा देते है, घूमती भी रहती है और खड़ी भी रहती है। यदि गति बन्द कर दें, तो गिर पड़ेगी। गति से शक्ति पैदा होती है। जो ये बच्चे लट्टू फिराते हैं, लट्टू फेंक दिया, लट्टू धुरी पर खड़ा हुआ घूम रहा है—घूम रहा है खड़ा हुआ भी है। ये बाबूजी ! ये क्या हो रहा है ? गिरेगा कैसे ? ये गति से घूम रहा है। गति से शक्ति पैदा होती है। अक्षरों का उच्चारण, शब्दों का उच्चारण अगर हम गति के क्रम से ठीक करें तो उसके अन्दर एक शक्ति पैदा होती है, जिसको हम कहते हैं—सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स (केन्द्रापसारी बल)—शब्दों की गति। गति से क्या हो जाता है—अच्छा चलिये, उसको हम आपको सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स के उदाहरण देकर समझाते हैं। आपने कभी देखा होगा—बगीचों की रखवाली के लिए, खेतों की रखवाली के लिए किसानों के छोकरे उठाते हैं रस्सियों की एक गोफन। उसमें एक पत्थर का टुकड़ा भर देते हैं। घुमाते हैं, घुमा करके उसे फेंक देते हैं। फेंकने के बाद में वह जो पत्थर का टुकड़ा है, मिट्टी का टुकड़ा इस तेजी के साथ जाता है कि तेजी के साथ जाने की वजह से अगर कोई भी उसकी चपेट में आ जाए, कोई जानवर चपेट में आ जाए, पक्षी चपेट में आ जाए, तो पक्षी की जान नहीं बच सकती। इतनी ताकत होती है उसमें। ये काहे की ताकत है ? बन्दूक की। बन्दूक की तो नहीं है। बारूद की ? नहीं, बारूद की भी नहीं है। ये ताकत काहे की है, जिससे सनसनाती गोली चली गई। ये है—बेटे ! सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स जो घुमाव से पैदा होती है, गति से पैदा होती है। गति की वजह से हम फेंक देते हैं। हम जप के द्वारा साइन्स के हिसाब से अपने भीतर गति पैदा करते हैं और गति से शक्ति पैदा करते हैं और शक्ति से हम चीजों को फेंक सकते हैं। फेंक सकते हैं, हमारे भीतर जो अवांछनीयताएँ हैं, जिसमें हमारी बीमारियाँ भी शामिल हैं, हमारे दुःख भी शामिल हैं, हमारे दर्द भी शामिल हैं, हमारे पाप भी शामिल हैं, दुर्गुण भी शामिल हैं—इनको हम इस तरीके से फेंक सकते हैं, जिस तरह का विज्ञान सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स का है। आपने और भी देखे होंगे। कभी आपने देहात के मेलों में हवाईजहाज देखे हैं ? हवाईजहाज आते हैं, वे तमाशे वाले। तमाशे वाले बच्चों को पाँच-पाँच पैसे में हवाईजहाज में बैठाते हैं। बच्चे सब बैठ जाते हैं। पहिया नीचे से घुमाना शुरू करते हैं। हवाईजहाज पहले यों घूमते हैं, फिर उसके बाद में कैसे घूमते हैं ? हवाईजहाज फिर चौड़े होते जाते हैं। चौड़े हो जाने के बाद में बिल्कुल ऐसे हो जाते हैं। फिर बिल्कुल ऐसे हो जाने के बाद में यों घूमने लगते हैं। बच्चों को ये मालूम नहीं पड़ेगा कि हम यों चल रहे हैं कि यों चल रहे हैं। बच्चे से पूछो क्यों बेटे ! तू बताना यों मालूम पड़ रहा था ? नहीं, हमको तो यों सीधा मालूम पड़ रहा था। आपने मौत का कुआँ कभी देखा है ? मौत के कुएँ में मोटरसाइकिल वाले मोटरसाइकिल किस तरीके से घुमाते हैं ? बिल्कुल उल्टे हो जाते हैं और बीच में चलते रहते हैं और घूमते रहते हैं। उनसे पूछिये क्यों साहब ! क्या मालूम पड़ता था ? क्यों भाईसाहब ! आप तो गिरेंगे नहीं, हमको भी बिठा लीजिए। अच्छा, आपको भी बिठा लेते हैं, आइये बैठ जाइये मोटरसाइकिल पर पीछे। डरना मत, गिरने नहीं देंगे। अच्छा साहब ! बैठ गए। बस, उसने मौत के कुएँ में मोटरसाइकिल इस तरह से घुमायी और उलटा हो गया कि वह चिल्ला पड़ा—अरे साहब ! आप गिरेंगे। नहीं, नहीं गिरेंगे। आपके अन्दर जो अवरोधक शक्ति है, उसको हम काट रहे हैं और हमारे भीतर वह शक्ति काम कर रही है, जिसको हम सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स कहते हैं। फोर्स (बल) काम करते हैं, गिरने नहीं देते। हमारे भीतर जो विशेषताएँ हैं, उनको हम फैला सकते हैं। जैसे हवाईजहाज फैल जाता है, इस तरीके से हमारा फैलाव, हमारा विकास—हमारा आध्यात्मिक विकास, हमारा मानसिक विकास और हमारा भावनात्मक विकास सम्भव है। ऐसा हम कर सकते हैं। ये क्या है ? ग्रे बेटे ! विज्ञान है जप का। हम फैल सकते हैं, हम चौड़े हो सकते हैं, हम बड़े हो सकते हैं, हमारा विस्तार हो सकता है। काहे से ? जप से, विज्ञान से। ये विज्ञान है सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स। आपने एक और भी चमत्कार देखा होगा। आप पानी का एक लोटा लीजिए। उसे भर लीजिये। उसके गले में रस्सी बाँध दीजिये, फिर घुमाइये। उसके अन्दर जो पानी भरा हुआ है, क्या मजाल है कि एक बूँद भी पानी गिर पड़े। जब तक वह घूमता रहेगा, तब तक पानी नहीं गिरेगा। जब आप घुमाना छोड़ देंगे तो पानी गिरेगा। आपके अन्दर जो विशेषताएँ हैं, जो आपकी महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ हैं, आपके अन्दर जो क्षमताएँ हैं, वे सारी-की-सारी रोककर रखी जा सकती हैं। बिना गिराये; बिना विराम दिये; बिना नष्ट किये। उसके द्वारा हम अपने आपको बचाव कर सकते हैं। मनुष्य जीवन में सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स बड़ा महत्त्वपूर्ण है। ये जो मशीनें हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसमें बड़ा वाला पहिया देखा होगा। उसे बस एक बार घुमा देते हैं और वह लगातार घूमता रहता है। ये सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स हम आपके भीतर पैदा करते हैं जप के द्वारा और वह शक्तियाँ हमारे अन्दर पैदा करती हैं—सामर्थ्य हम आपके भीतर सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स पैदा करते हैं, ताकि आपके भीतर जो विशेषताएँ हैं, वे जगें और जो आपके भीतर खींचने लायक चीजें हैं, उनको हम खींचें; जो सँभालकर रखने लायक चीजें हैं, उनको सँभालें और जो फैलाव करने लायक चीजें हैं, उनको फैलावें। अनुष्ठान एवं जप करने के सारे-के-सारे ये लाभ हैं।

कभी आपने देखा है, जीभ से शब्दों की उत्पत्ति कैसे होती है ? हमारी जो जुबान है, जिससे हम बोलते हैं, आप ये मत समझना कि जीभ के अक्षर यहाँ से हो जाते हैं। इसके अन्दर मसल्स (माँसपेशियाँ) और दूसरी चीजें आपस में मिलती रहती हैं, हिलती रहती हैं। तब कहीं जाकर के अक्षरों का उच्चारण होता है। अक्षरों का उच्चारण ऐसे ही नहीं हो जाता। दाँत, होठ, तालु, मूर्धा, जीभ, कण्ठ—इन सभी के सहयोग से होता है। कौन-सा शब्द कहाँ से स्टार्ट (शुरू) होगा, इसका अपना नियम है। प्रत्येक शब्द के लिए बहुत सारे कम्पन हैं और इन कम्पनों से बहुत सारी चीजें प्रभावित होती हैं। ये जो हमारे सेल्स (कोशिकाएँ) और जो नर्वस सिस्टम (तंत्रिका तंत्र) हैं और जो इनके नर्वस (स्नायु) हैं, वे यहीं कहीं तक नहीं हैं, ये बहुत दूर तक फैल गये हैं, जिनके ग्रन्थियों से सम्बन्ध हैं, उपत्यकाओं से सम्बन्ध हैं, चक्रों से सम्बन्ध हैं, ये चक्र और उपत्यकाएँ हमारे नर्वस सिस्टम (स्नायु तंत्र) से जुड़े हुए हैं। जिस तरीके से टाइपराइटर की कुंजी में एक टाइप हम यहाँ दबाते हैं और 'T' वहाँ छप गया, 'Y' वहाँ छप गया, 'R' यहाँ छप गया। हर अक्षर के लिए कुंजी यहाँ दबाते रहते हैं और छपाई वहाँ होती रहती है। हमारे ये चक्र और उपत्यकाएँ जहाँ कहीं भी शरीर में हैं, वहाँ हम उनके लिए उच्चारण करते रहते हैं और उच्चारण करने के साथ-साथ में उनके द्वारा ये बनता रहता है; उनके द्वारा सामर्थ्य उत्पन्न होती रहती है। बहुत सारी चीजें हैं, जिनको हम विज्ञान के द्वारा बता और समझा सकते हैं। असल में इसको आप साइकलॉजी (मनोविज्ञान) के हिसाब से मेटाफिजिक्स (अध्यात्म विज्ञान) के हिसाब से और न्यूरोलॉजी (स्नायु विज्ञान) के हिसाब से अगर समझने की कोशिश करें तो समझ सकते हैं कि जप के द्वारा क्या फायदा होता है ? ये हमारी चेतना जो है, उसके चार भाग हैं। जो हम पढ़ते हैं, जानते हैं, सीखते हैं, उसके लिए क्या करना होता है ? चार हिस्सों में ये पढ़ाई बँटी हुई है। पहली वाली पढ़ाई का नाम है लर्निंग। लर्निंग किसे कहते हैं ? लर्निंग बेटे ! उसे कहते हैं, जो स्कूलों में पढ़ाई जाती है। स्कूलों की पढ़ाई की सारी-की-सारी थ्योरी (सिद्धान्त), सारे-का-सारा साइन्स और सारे-का-सारा ग्राउण्ड (आधार) इस पर टिका हुआ है कि हमको बार-बार रिपीट करना पड़ता है। बच्चो ! रिपीट करो, बच्चो ! रिपीट करो। क्या कर रहे हो ? अरे ! पहाड़े याद कर रहे हो। कैसे याद कर रहे हो पहाड़े याद ? पाँच एकम पाँच, पाँच दूनी दस, पाँच तिया पन्द्रह, पाँच चोका बीस—बार-बार, बार-बार। हाँ साहब ! बार-बार याद करना पड़ेगा, नहीं तो आपको याद नहीं हो सकता। संस्कृत में तो सब रटन्त विद्या है। याद कीजिये—याद कीजिये। अरे ! क्या याद करें ? मरे तेरे का ! महाभारत याद कीजिये। लकार याद कीजिये। मरे ! मरे ! याद कीजिये याद के बिना कोई बात ही नहीं बनती। स्कूलों का सारा-का-सारा ग्राउण्ड इसके ऊपर है। ये क्या कर रहे हो साहब ? मास्टर साहब ने ४५वाँ मंत्र पढ़ा दिया ? हाँ पढ़ा दिया। अब क्या कर रहे हो ? अब तो हम याद कर रहे हैं। कैसे याद करते हो दिखाना हमको। ऐसे याद करते हैं कि उसी को फिर फेर रहे हैं, फिर फेर रहे हैं—बार-बार, बार-बार। रिपिटीशन-रिपिटीशन। ये क्या तरीका है ? इसके बिना कोई और तरीका नहीं हो सकता। अब क्या होगा ? पढ़ाई की छुट्टी हो गई। अब क्या हो रहा है ? अब तो तैयारी कर रहे हैं। कैसी तैयारी कर रहे हो, जरा दिखाना हमको। ऐसी तैयारी कर रहे हैं कि जो पढ़ा है, उसको हम याद कर रहे हैं, रिपीट कर रहे हैं। रिपिटीशन के ऊपर सारा-का-सारा लर्निंग टिका हुआ है। लर्निंग जो है, यह रिपिटीशन पर टिका हुआ है, जिसको हम जप कहते हैं। हम आपकी अन्तःचेतना को बार-बार रिपीट कराते हैं। राम के नाम को बार-बार याद कराते हैं, भगवान के नाम को बार-बार याद कराते हैं। ये क्या है ? ये हमारे चेतना विज्ञान का, न्यूरोलॉजी का पैरासाइकोलॉजी (परामनोविज्ञान) का मेटाफिजिक्स का एक ग्राउण्ड है, जिसको हम लर्निंग कहते हैं।

इसके बाद में जो दूसरा आता है, उसको रिटेन्शन (धारण) कहते हैं। रिटेन्शन किसे कहते हैं, समझना ? जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त किया है, उसे मस्तिष्क में धारण कर लेना—यह रिटेन्शन है। शायद ये लम्बा हो जाएगा, इसलिए थोड़े में समझा दिया आपको।

इसके बाद आता है—रिकॉल (स्मरण)। रिकॉल किसे कहते हैं, समझिये इसे आपको हमने कहीं देखा है। हाँ, साहब ! हमने भी आपको कहीं देखा है। कहाँ देखा है ? कहाँ देखा है ! वहाँ हम और आप साथ-साथ पढ़े थे। हाँ ! याद आ गई। आपका नाम तो मोहन लाल है। देखिये, हम कह रहे थे हमने आपको देखा है। बीस साल पहले देखा था। हाँ, हम और आप स्कूल में पढ़े थे। हाँ ! ठीक है, याद आ गई। इसे क्या कहते हैं ? रिकॉल कोई एक चीज हमारे हाथ से चली गई और हम उसको भूल गए हैं। किसको भूल गए हैं ? भगवान को भूल गए हैं—आत्मा को भूल गए हैं—अपने आपको भूल गए हैं। हम रिकॉल करते हैं—'हम कौन हैं ? हम क्या हैं ? याद करते हैं—हमारा कोई रिश्तेदार था—हमारा कोई सम्बन्धी था। कौन रिश्तेदार ? मालूम नहीं; कोई रिश्तेदार था। इसे क्या कहते हैं ? इसको रिकॉल कहते हैं। हमारी स्मृति में से जो चीजें गायब हो जाती हैं, उनको हम फिर याद करने के लिए चेतना के स्तर पर जो प्रयास करते हैं, ये बेटे ! रिकॉल कहलाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और अन्तिम चीज जो हमारी निष्ठाओं में, विश्वासों में और आस्थाओं में बदल जाती है, वह हमारे छुड़ाने से छूटती नहीं है, हटाने से हटती नहीं है, मारने से मरती नहीं है, इसका नाम है रिकॉगनिशन (स्वीकरण)। रिकॉगनिशन किसे कहते हैं ? मान्यताओं को, निष्ठाओं को। निष्ठाएँ ऐसी मजबूत होती चली जाती हैं कि छुड़ाये नहीं छूटतीं। कहिये साहब ! सुरा पीना कैसा होता है ? अच्छा होता है ? अरे साहब ! सुरा पीना बहुत खराब होता है। सुरा बहुत वाहियात होती है। सुरा बहुत बीमारी पैदा करती है। ज़ब याद आती है, बस रुका नहीं जाता और फिर शराब पी जाते हैं। क्यों, क्या बात थी ? अरे साहब ! आज बुखार आ गया था, तो हमने कहा जरा शराब पी आवें, देखें तो सही कैसे क्या होता है। बस, जरा शराब पीने से सिर का दर्द बन्द हो जाता है, इसलिए हम पी आए, नहीं तो वैसे तो हम उसी दिन कह रहे थे शराब खराब होती है। इसका नाम है रिकॉगनिशन। ये मान्यताएँ, निष्ठाएँ इतनी मजबूत हो जाती हैं, कठोर हो जाती हैं कि हमारे हटाने से हटती नहीं हैं, मिटाये मिटती नहीं हैं, घटाये घटती नहीं हैं। ये हमको इतनी हैरान करती हैं कि क्या कहें ! व्यासजी एक बार बोले—धर्म को मैं जानता हूँ, लेकिन मेरा मन चलता ही नहीं है उधर। मन को बहुत बताता भी हूँ, सिखाता भी हूँ, समझाता भी हूँ, सुनाता भी हूँ, पर जाने को मेरा मन करता ही नहीं, बस मैं जाता हूँ बाहर छूकर चला आता हूँ, भीतर तक नहीं जाता। अधर्म को भी मैं जानता हूँ; मेरी निवृत्ति नहीं होती। ये अधर्म है—ये पाप है—ये दुराचार है—ये झूठ है—ये बेईमानी है—मैं जानता हूँ और लोगो से कहता हूँ—लोगो ! झूठ बोलना बड़ा खराब है, लोगो ! बेईमानी करना बड़ा खराब है, लोगों ! ये करना बड़ा खराब है और ये बड़ा खराब है—बड़ा खराब है—लेकिन मेरी निवृत्ति नहीं होती। जाने कौन शैतान बैठा हुआ है हमारे भीतर ! जाने कौन पिशाच, जाने कौन दुष्ट बैठा हुआं है हमारे भीतर ! जो हमारे सारे ज्ञान को बहकाकर ले जाता है। ये क्या है ? इसका नाम है—रिकॉगनिशन। रिकॉगनिशन की, चेतना की परतें हैं चार। चार परतों के लिए चार प्रकार के हम आपको शिक्षण देते हैं। एक का नाम कल हमने बताया था—तप। एक का नाम आज बताते हैं—जप। एक का नाम कल बतायेंगे—ध्यान, परसों बतायेंगे—प्राणायाम। चार जो हमारी परतें हैं—इनको हम कैसे साफ कर सकते हैं और कैसे सुधार सकते हैं और कैसे ठीक कर सकते हैं इसका 'साइण्टिफिक वे' वैज्ञानिक तरीका यह है, जो हमने आपको पीछे बताया, ज्ञान वाला भाग जप का। भगवान को पुकारना—याद करना, जिसको हमने भुला दिया है; जिसको हम पुकारते हैं—आप आप आइये और हमारा उद्धार कीजिये—यह ज्ञान वाला भाग हुआ और विज्ञान वाला भाग हुआ ? हम अपने भीतर मन्थन पैदा करते हैं, गति पैदा करते हैं, शक्ति पैदा करते हैं और सेण्ट्रीफ्यूगल फोर्स पैदा करते हैं और अपनी चेतना के चारों चरणों को सही बनाते हैं, प्रशस्त बनाते हैं। ये इसका वैज्ञानिक रूप है—स्वयं का परिष्कार—आत्मा का परिष्कार—आत्मा का संशोधन। यही है एकमात्र जप का उद्देश्य—तप का उद्देश्य—भगवान की भक्ति का उद्देश्य—पूजा का उद्देश्य। अगर हम ये कर पाने में सफल हों, तो भगवान आएँगे और हमारी मदद करेंगे। भगवान हमारी सहायता करने के लिए आएँगे, हमारी सेवा करने के लिए आएँगे, हमारी मदद करने के लिए आएँगे जब हम पात्र के लायक हो जाएँ तब और हमारी पात्रता का विकास न हो सका, तो नाम के ले लेने से और पुकार करने से कैसे काम बन सकता है ! नाम के लेने से, मिठाई-मिठाई जप करने से हमारा मुँह मीठा नहीं हो सकता, तो राम-नाम के जप करने से कैसे हमारा कल्याण हो सकता है ? कैसे उद्धार हो सकता है ? आपको यह समझना चाहिए और यह समझते हुए उसी आधार पर जप करना चाहिए। ऐसा करेंगे, तो आप मुनासिब काम कर रहे हैं और अगर अज्ञान में मरते हुए भूल में भटकते हुए कर रहे होंगे, तो आप अपना समय खराब कर रहे होंगे। मैं चाहता हूँ आप समय खराब न करें। जप की महत्ता को समझें, जप की शक्ति को समझें, जप के ज्ञान को समझें, जप के विज्ञान को समझें। इतना समझ लेने के बाद आप जप करेंगे, तो आपका जप आपके लिए फायदेमन्द हो सकता है और लाभदायक भी। आज की बात खत्म।

ॐ शान्ति।

साधना से सिद्धि

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

आपमें से सैकड़ों व्यक्ति शिकायत करते पाये गये हैं कि हमें अपनी साधना से सिद्धि नहीं मिली। हमने इतना जप किया, इतना पूजा-पाठ किया, इतना भजन किया; लेकिन हमको तो कोई चमत्कार दिखाई नहीं पड़ा। मेरे ख्याल से अधिकांश आदमी आप में से ऐसे हैं, जो ऐसी शिकायत करते पाये जाते हैं। तो क्या पूजा-पाठ का, मन्त्र जप का विधान गलत है ? क्या यह ऋषियों की धोखेबाजी है ? कोई बौद्धिक मायाजाल है ? न, ऐसी बात नहीं। अगर आपने ऐसा विचार किया है व आप निराश हो गये हैं कि पूजा-पाठ, साधना से कोई लाभ नहीं होता, तो आप मन से इन विचारों को निकाल दीजिए। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि 'साधना से सिद्धि' अवश्य मिलती है।

आपके सामने मैं एक ऐसा गवाह पेश करना चाहता हूँ, जिससे आप चाहें, तो जिरह भी कर सकते हैं व इम्तहान लेना चाहें, तो वह भी ले सकते हैं। कौन है वह गवाह। वह मैं स्वयं हूँ। आप मुझे किसी भी प्रयोगशाला में, किसी भी अदालत में खड़ा कर दीजिए व देखिए कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस आदमी ने साधना की है व इसे सिद्धियाँ मिली हैं या नहीं। आप जिरह कीजिए व प्रमाण मिलने पर ही इसे सच मानिये।

वास्तव में साधना से सिद्धि का जुड़ा हुआ सम्बन्ध है, ऐसा जैसे कि बोने व काटने के बीच होता है। बोयेंगे, तो आप काटेंगे भी। इसी तरह आप साधना करेंगे, तो सिद्धियाँ भी आपको मिलेंगी। हमने साधना सही ढंग से की है व आपने गलत ढंग से की है, इसलिये आप शिकायत करते पाये जाते हैं। गलत यह कि मात्र बीज बोना ही काफी नहीं, उसमें खाद-पानी देना भी उतना ही जरूरी है। खाद आप देंगे नहीं, पानी आप लगायेंगे नहीं, तो आपको उम्मीद लगाना कि फसल पैदा होगी, पेड़ में फल लगेंगे, गलत है। साधना का बीज बोया हमने; पर खाद-पानी भी साथ-साथ लगाया। इसीलिए फला। कैसे लगाया जाता है खाद-पानी ? चलिए मैं आपको दो घटनाएँ अपने जीवन की सुना देता हूँ। सारी तो बहुत अधिक हैं, मुश्किल पड़ेगी पर दो घटनाएँ सुना देता हूँ।

एक यह कि हमारे पिताजी दस वर्ष की उम्र में हमें महामना मालवीय जी के पास हिन्दू विश्वविद्यालय में ले गये व हमारा दीक्षा-संस्कार कराया था। मालवीय जी ने हमें गायत्री मंत्र दिया था, एक जनेऊ पहनाया था व एक खास बात हमारे कान में कही थी, जो अभी तक याद है, वह यह कि "गायत्री ही कामधेनु है।" कामधेनु स्वर्गलोक की एक गाय है, जिसका दूध पीकर देवता अजर-अमर हो जाते हैं, गायत्री मन्त्र सबके लिए नहीं, मात्र ब्राह्मण की कामधेनु है। इसके लिए ब्राह्मण बनना चाहिए। ब्राह्मण उसे कहते हैं, जो औसत नागरिक के हिसाब से गुजारा कर ले व बचे समय को समाज के लिए लगा दे, ज्ञान और विचार में लीन रहे, स्वार्थ को परमार्थ में बदल दे।" मैंने, यह बात अच्छी तरह समझ ली। पिताजी व मालवीय जी से पूछकर समाधान कर लिया व बात पत्थर की लकीर की तरह मन में बैठ गई है।

मैं गायत्री मन्त्र का जप करने लगा। जप के साथ यह ध्यान मन में बना रहा कि मुझे ब्राह्मण बनना है। बराबर यही ख्याल रहा। इसका फल क्या हुआ ? पाँच साल के भीतर ब्राह्मणत्व इतना विकसित हुआ कि एक और गुरु मेरे घर पन्द्रह साल की आयु में आए। यह मेरे जीवन की दूसरी घटना। गुरु स्वयं घर आए। हम नहीं गए उनकी तलाश में। गुरु तलाश करते हुए स्वयं आते हैं। उनकी तलाश करना बेकार है; क्योंकि पात्रता जब तक विकसित नहीं होती, तब तक कोई गुरु नहीं आता। कच्चे फल होते हैं, तो खाने के लिए कोई चिड़िया नहीं आती; किन्तु फल के पकने की सुगन्ध आते ही जाने कहाँ-कहाँ से चिड़ियाँ आ जाती हैं व फल खाने लगती हैं। ऐसा ही हुआ। मैंने ब्राह्मणत्व का जीवन जिया। बदले में सूक्ष्म शरीर से मेरे गुरु पास आए व हमसे कहा कि गायत्री का जो बाकी हिस्सा रह गया है, वह हम तुम्हें सिखायेंगे। उन्होंने कहा कि गायत्री मन्त्र तो यही है, पर इसके साथ एक और सिद्धान्त है—बोया और काटा। क्या मतलब ? जो कुछ भी तुम्हारे पास है, उसे भगवान के खेत में बीज की तरह बोना शुरू करो और तुम्हारे पास सौ गुना ज्यादा होता चला जाएगा। मक्का, बाजरा खेत में बोते हैं, तो एक दाने के बदले में सौ दाने पैदा होते हैं। तू बोना और काटना शुरू कर। मैंने कहा—कहाँ ? तो उन्होंने कहा—भगवान के खेत में। मैंने पूछा—भगवान का खेत कहाँ है ? तो उन्होंने कहा—सारा समाज भगवान का ही विराट् रूप है। किसी ने भी आज तक भगवान को आँख से नहीं देखा है क्योंकि वह निराकार है, व्यापक है। कैसे उसे देख सकेंगे। आग को तो देख सकते हैं पर गर्मी को कैसे देखेंगे ? हवा को कैसे देखेंगे ? भगवान को देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है। बस ! तू भगवान के खेत में बोना शुरू कर। तेरे पास सम्पत्ति है, उसे दे। देख तुझे चमत्कार मिलता है कि नहीं। हमने कहा—हमारे पास तो कुछ भी नहीं है। यह हम कुर्ता-धोती पहने बैठे हैं, बस। उन्होंने कहा—तीन चीजें तो तू भगवान के यहाँ से लेकर आया है। एक तूने अपने पुरुषार्थ से कमाई है; चाहे इस जन्म में कमाई हो, चाहे पिछले जन्मों की कमाई हो। चार चीजें तेरे पास हैं—यह शरीर व उसके साथ जुड़ी तीन चीजें—समय, श्रम व बुद्धि, चौथी तेरी सम्पत्ति। इन सबको भगवान के लिए लगा। तू लगायेगा, तो देखेगा कि यह सौ गुना ज्यादा होकर आ रहा है।

सूक्ष्म शरीरधारी उन गुरु का भी मैंने कहना मानना शुरू कर दिया। मैंने मालवीय जी के कहे अनुसार अपने जीवन को ब्राह्मण जैसा बनाने की कोशिश की। ब्राह्मण माने संयमी। संयमी माने वह, जिसने अपनी इन्द्रियों पर, धन, समय व विचारों पर नियन्त्रण कर लिया हो। सारी शक्तियाँ एकाग्र हो गईं। जैसे आप फैली बारूद को जलाते हैं, तो भक्क से जल जाती है एवं इकट्ठी की बारूद को गोला के रूप में चलाते हैं तो कमाल दिखाती है। एकाग्रता इसी का नाम है। इस तरह हमने अपने आपको एकाग्र कर लिया, अपने आप पर संयम कर लिया। ध्यान की एकाग्रता में क्या रखा है ? आप चाहे घण्टों बैठें। ध्यान ही नहीं, समग्र जीवन की एकाग्रता। हमने अपने आपको ब्राह्मण बनाने की कोशिश की, दस साल से पन्द्रह साल की उम्र तक। पाँच वर्ष तक पूरा यत्न रहा कि ब्राह्मण का चिन्तन-व्यवहार जैसा होना चाहिए, वैसा हो। हम ब्राह्मण बन गए। क्यों ? आप नहीं थे क्या ? कौम से तो ब्राह्मण थे; एक सनाढ्य ब्राह्मण के घर में जन्म हुआ है हमारा; पर कोई भी आदमी जन्म से ब्राह्मण नहीं होता, कर्म से होता है। हमने कर्म से अपने आपको ब्राह्मण बनाया। जब हमारी उम्र काफी हो गई, तो हमारे पास हिन्दुस्तान के बड़े पहुँचे हुए ऊँचे आदमी आए। उन्होंने यह सुना था कि इस आदमी की जबान से जो कुछ निकल जाता है, वह सौ फीसदी सच हो जाता है। कैसे हो जाता है ? शृंगी ऋषि का नाम आपने सुना होगा। उनने एक शाप दिया तो, राजा परीक्षित मिट्टी में मिल गया व वरदान दिया, तो राजा दशरथ, जिसे बच्चे नहीं होते थे, एक साथ चार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बच्चे हुए उनको। यह ब्राह्मण की जिह्वा है। हर आदमी नहीं होता ब्राह्मण। ब्राह्मण कौम से नहीं, कर्म से। उन्होंने पूछा कि यह सिद्धियाँ आपको कैसे मिलीं ? हमें भी सिखा दीजिए। हमने उनसे कहा कि जितनी भी सिद्धियाँ हमने पाई हैं, यह हमारे ब्राह्मण बनने की सिद्धियाँ हैं। ब्राह्मणत्व का ही चमत्कार देखा है अब तक लोगों ने। साधना व तप को तो तिजोरी में बन्द करके रखा है। उसको हम संसार के एक बड़े काम में खर्च करेंगे। यह जो कह देते हैं, तो उससे किसी का भला हो जाता है—यह मात्र ब्राह्मण की विशेषता है।

जब हमने पहली किताब छापी व उसका नाम रखा—'गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है', तो लोग शिकायत करने लगे कि पुराणखंडी पंडित भी यही कहते हैं कि गायत्री मात्र ब्राह्मणों को जपनी चाहिए और कौमों को नहीं, तो हमने कहा—सब पागल हैं। क्या विषय चला रहा है व कहीं-से-कहीं ले जाते हैं। वंश जन्म से नहीं, कर्म से चलता है। महात्मा गाँधी बनिया नहीं ब्राह्मण थे। हमने अपने को कर्म से ब्राह्मण बनाया। जब लोगों की शिकायतें किताब के सम्बन्ध में आईं, तो मैंने कहा—अरे ! यह तो लोगों ने गलत मतलब निकाल लिया। मैं क्या कहना चाहता था, ये क्या समझे। मैं कर्म से ब्राह्मण कह रहा था, इन्होंने जन्म से मतलब निकाल लिया। दुबारा किताब छपी तो मैंने ब्राह्मण शब्द निकालकर लिखा 'गायत्री ही कामधेनु है' बस, इतना ही नाम ! किन्तु अभी भी मेरा विश्वास है कि गायत्री मात्र ब्राह्मण की कामधेनु है और किसी की है क्या ? चोर की है ? नहीं, ठग की, उठाईगीर व जालसाज की भी नहीं। साधना करने से पहले ब्राह्मण बनना पड़ता है। कपड़े को रँगने से पहले धोना पड़ता है, मैले कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता। अपने आपको शुद्ध व पवित्र बनाने के लिए, जीवन का शोधन करने के लिए सेवा करनी पड़ती है। परोपकार और पुण्य—इन दोनों के बिना जीवन-शोधन सम्भव नहीं। सेवा किये बिना कोई साधना सफल नहीं हो सकती। ब्राह्मण-साधु पहले सारा जीवन सेवा करते थे। आज तो साधु का नाम भी नहीं दिखाई पड़ता। आज तो बाबाजी दिखाई देते हैं, जो भीख माँगते हैं व माला घुमाते हैं कि किसी तरह ऋद्धि मिल जाए, सिद्धि मिल जाए, बैकुण्ठ मिल जाए—इसी जंजाल में रहते हैं। हमने अपना जीवन पुराने ऋषियों के जीवन के आधार पर सेवा में लगाया। पूजा जो भी करनी हो, रात्रि में सोने से पहले व दिन में सूरज उगने से पहले कर ली। सूर्य निकलने से अस्त होने तक हम समाज-सेवा में लगे रहते हैं। यही हमारा भजन है, यही हमारी पूजा है।

हमने चारों सम्पत्तियों को गुरु के कहे अनुसार समाज के खेत में बोया। समय को हमने समाज में लगा दिया। श्रम भी हमारा इसी निमित्त लगा। हमारे पसीने की एक बूँद भी व्यापार-पैसा कमाने में खर्च नहीं हुई। हमारी बुद्धि ने कभी भी जालसाजी नहीं की, न चोरी की; मात्र यही सोचती रही कि लोककल्याण कैसे हो सकता है ? समाज में सत्प्रवृत्ति कैसे बढ़ाई जाए ? इसी में बुद्धि लगी। इन तीनों चीजों को बोने से आपको क्या मिला ? समय का हमने ठीक उपयोग किया, तो उसे हमने पाँच गुना बढ़ा लिया। अभी तक की हमारी जिन्दगी का लेखा-जोखा लें, तो देखें कितना बड़ा संगठन हमने अकेले खड़ा कर दिया। चौबीस लाख के चौबीस पुरश्चरण सम्पन्न किये; शरीर के वजन से भी ज्यादा साहित्य लिखकर रख दिया; पाँच आदमी निरन्तर आठ घण्टे रोज लगें, तो जितना काम हो, उतना हमने रोजाना किया। हमारा समय पाँच सौ गुना होकर हमारे पास चला आया। थोड़ी-सी जिन्दगी में जो कमाल करके दिखा दिया, वह दो सौ वर्षों में भी नहीं हो सकता।

श्रम हमने किया जनता को सुखी बनाने के लिए। हमारे घर से खाली हाथ कोई नहीं गया। हर आदमी का यह कहना है कि जो भी इनके घर आया, प्यासा-भूखा वापस नहीं गया, बिना दवा-दारू के नहीं गया क्योंकि हम सेवा करते हैं। सेवा अर्थात् प्यार। प्यार माने सेवा। हमने दूसरों के लिए जीवन भर श्रम किया है, प्यार दिया है, जीवन में प्यार बाँटा है व बदले में समेटा है। हमारी जिन्दगी प्यार से लबालब व सराबोर है। ये लाखों आदमी जो हमारे इशारे पर चलते हैं, हमारे व्याख्यानों का फल नहीं है, यह हमारे जीवन के उस हिस्से का परिणाम है, जिसके द्वारा हमने लोगों को प्यार किया व दिया है। बदले में पाया है—यह सही है।

बुद्धि हमारी इतनी बढ़ी कि हम लाखों आदमियों की टेढ़ी बुद्धि को उलटकर सीधा कर देते हैं। हमने न एम. ए. किया, न कोई डिग्री ली; पर हम प्लानिंग करते हैं—सारे समाज की, सारे विश्व के कायाकल्प की प्लानिंग, जो कोई भी मिशन नहीं कर सकता। साहित्य जो हमने लिखा है व वेद-पुराण आदि का भाष्य किया है, इससे अन्दाज मत लगाइये कि हम कितने बुद्धिमान हैं ? यह देखिए कि हमारी बुद्धि कितनी बड़ी-बड़ी सार्थक योजनाएँ बनाती है, किस दिशा में चलती है ? सारे युग का नव-निर्माण कैसे हो ? यह हमारी बुद्धि ने सोचा है व करेगी।

चौथी सम्पत्ति—हमारा धन। धन कहाँ है आपके पास ? धन हमने तो कमाया ही नहीं; पर हमारे पूर्व जन्म का कमाया हुआ था, जो हमारे पिताजी छोड़कर मरे थे २००० बीघा जमीन हमारे पास थी। इसे, जब हम समाज सेवा में पदार्पण करने लगे, तो बच्चों से पूछा कि पुश्तैनी जायदाद होने के नाते कानूनी हक तो तुम्हारा भी है; लेकिन हमारी इच्छा है कि इस हक को तुम छोड़ दो; क्योंकि कानून चोरों ने बनाया व चोरों के लिए बनाया है। नैतिकता का कानून भिन्न है। इस जायदाद को समाज-को दे देना चाहिए। बताओ, क्या राय है तुम्हारी ? दोनों बच्चों ने कहा—पिताजी ! आपने हमें पढ़ा दिया है, हमें लायक बना दिया है; अब हमें एक पैसा भी नहीं चाहिए। हमने सारी जमीन दान कर दी। पत्नी के पास जो जेवर थे, वे भी बिक गये। किश्तों में हम देते चले गये व किश्तें लगती चली गईं। पहली उस स्कूल में लगी, जो हमारे गाँव में बना अब एक इण्टर कॉलेज बन गया है। फिर अगली हमने गायत्री

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तपोभूमि में लगा दी। इसमें औरों का भी पैसा लगा है; पर पहली किश्त हमारी है। आपने शान्तिकुञ्ज देखा है ? ब्रह्मवर्चस देखा है ? चौबीस सौ शक्तिपीठें दीखीं हैं। करोड़ों रुपये की बिल्डिंगें हैं यह। इनसे आपको अन्दाज लगेगा कि कितना धन हमने भगवान के खेत में बोया व कितना गुना यह हो गया ? सहस्रकुण्डी यज्ञ, जो हमने मथुरा में किया, से लेकर यहाँ के रोजाना खर्च का आप हिसाब लगाएँ, तो पता चलेगा कि लाखों रुपये रोज का खर्च है। न जाने कहाँ से आता है यह ! हमने प्रतिज्ञा की है कि हम मनुष्य के आगे हाथ नहीं फैलायेंगे; लेकिन भगवान हमें सब देता चला गया। हमने न कभी ईमान गँवाया, न भगवान को। इसका परिणाम यह कि जितना हमने बोया, उससे कहीं अधिक काटा है। साधना की सिद्धि जितनी मिलनी चाहिए थी, हमें मिलती चली गई। अभी और आपका बचा हुआ समय है, उसके बारे में बताइए ? जब तक हमारा शरीर है, तब तक व्यक्ति के ही नहीं, समाज के निमित्त हमारा रोम-रोम लगेगा—यह हमारा संकल्प है।

साधना से सिद्धि का सिद्धान्त उपासना, साधना, आराधना—इन तीनों सूत्रों पर चला है। ये तीनों क्या हैं ? ये हैं—जमीन, खाद और पानी। भगवान के चरणों में हमने अपने आपको समर्पित किया है व भगवान जितने शक्तिशाली हैं, उतने ही हम हो गये। ईंधन को आग में डाल देते हैं, वह भी उतना ही गर्म और आग जैसा हो जाता है। हम भी वैसे हो गये हैं। यह उपासना है। साधना हमने जीवन भर की है। साधना अर्थात् माला जपना नहीं, साधक का जीवन जीना। हमने अपनी इन्द्रियों को साधा है। मन को, बुद्धि को संयत किया है, ठीक तरह से रखा है। यह साधना है। तीसरी, आराधना वह, जिसके लिए हमने आपको अभी कहा। यह है समाज के लिए, देश के लिए, संस्कृति के लिए, भगवान के लिए जीवन जीना। भगवान का विराट् रूप यही है। जनमानस को ऊँचा उठाने के लिए लगे रहने को 'आराधना' कहते हैं। हमने जीवन भर आराधना, साधना व उपासना की है तथा उसका परिणाम हमारे सामने है। यही आप अपने जीवन में देखना चाहें, तो आप भी प्रयोग कर सकते हैं। फिर आप हमें बताइए कि आपकी साधना सिद्धि की दिशा में फली कि नहीं। हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

अनुदान की तीन शर्तें—तीन कसौटियाँ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

सामान्य सिद्धान्त का जिक्र मैं कल कर रहा था आपसे। अपने बाहुबल से, पुरुषार्थ से और पराक्रम से बहुत आदमियों ने भौतिक जीवन में और आध्यात्मिक जीवन में बहुत कुछ पाया है। यह मोटा सिद्धान्त आप सबको मालूम है। जिन लोगों ने उन्नति की है दुनिया में, अपने पराक्रम और पुरुषार्थ किए हैं, व धन भी कमाए हैं, विज्ञान की शोधें भी की हैं और जीवन में आगे भी बढ़े हैं। आध्यात्मिक जीवन में बहुतों ने पुरुषार्थ किया है। महर्षि विश्वामित्र का नाम आपको मालूम होगा, जब उन्होंने गुरु वशिष्ठ से कहा कि हमको राजर्षि नहीं रहना है, ऋषि बनना है, तो उन्होंने कहा कि फिर तप करना चाहिए। विश्वामित्र ने फिर तप किया। लम्बे समय तक महर्षि दधीचि ने तप किया। यह क्या है ? यह प्रयोग पुरुषार्थ है। आपको मालूम नहीं है, तप करने और पुरुषार्थ करने से आदमी भौतिक जीवन में और आध्यात्मिक जीवन में उन्नति करते रहे हैं। इस सिद्धान्त में दो राय नहीं, एक राय है। ये क्या बात कर रहे हैं। मैं पराक्रम और पुरुषार्थ की बात कह रहा हूँ। इनका महत्त्व आपकी दृष्टि में कम न होने पावे, इसलिए इस बात को बता रहा हूँ, पर यहाँ तो मुझे एक नई बात कहनी थी अनुदान की। अनुदान, जो कभी-कभी मिलते हैं और किसी खास मकसद के लिए मिलते हैं, उनकी बात कहनी थी। पुराने-जमाने की बात बताऊँ। अच्छा चलिए बताता हूँ। अर्जुन हार गया था दुर्योधन से और मारा-मारा फिर रहा था। पांडवों में से कोई नचकैया, कोई रसोइया बन रहे थे। थककर बिल्कुल निढाल हो गए थे। पराक्रम चुक चुका था, तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—आप महाभारत में काम कीजिए। हमारे अनुदान मिलेंगे। अर्जुन ने केवल गाण्डीव पर रखकर तीर चलाए थे। श्रेय उन्हीं को मिल गया। भगवान ने फतह उन्हीं की कराई। यह मैं अनुदान की बात कह रहा हूँ, भगवान कृष्ण के अनुदान की और बताऊँ ? अच्छा और बताता हूँ। सुदामा जी को पैसे की आवश्यकता पड़ी। किस काम के लिए ? सुदामा जी बड़े गरीब थे और भिखारी थे, नंगे थे, भूखे थे। खबरदार। सुदामा जी की शान में ऐसी बात कही तो मैं कान उखाड़ लूँगा। ब्राह्मण की बेइज्जती मत कीजिए, संत की बेइज्जती मत कीजिए, अध्यात्म की बेइज्जती मत कीजिए। मित्रो ! बड़े शानदार आदमी थे सुदामा जी और शानदार काम के लिए, विश्वविद्यालय चलाने के लिए मदद माँगने गए थे। तब भगवान ने अपनी सारी की सारी कमाई द्वारिका से उठाकर पोरबंदर ट्रांसफर कर दी थी। पाई-पाई सुदामा जी को सुपुर्द कर दिया था। यह श्रीकृष्ण की कथा कह रह था मैं आपसे। और राम की कहूँ। राम की कथा कहता हूँ। एक आदमी का नाम था—विभीषण। शरीर की दृष्टि से बहुत कमजोर था, लेकिन रामचन्द्र जी ने उसे रातों-रात मालदार बना दिया, लंका का मालिक बना दिया। यह कैसे हो गया ? भगवान का अनुदान था। तो और किसको दिया था ? हनुमान जी को दिया था। हनुमान जी की ताकत स्वयं की उपार्जित थी ? नहीं, स्वयं की उपार्जित नहीं थी। स्वयं की रही होती, तो उन्होंने सुग्रीव की मदद जरूर की होती। सुग्रीव की मदद करने में वे बिल्कुल असफल थे। फिर क्या करने लगे ? पहाड़ उठाने लगे,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

समुद्र छलाँगने लगे। एक लाख पूत सवा लाख नाती-दो-दो लाख आदमियों से, दैत्यों से, जाइंटों से, राक्षसों से अकेले मुकाबला करने लगे। राक्षस कैसे होते हैं ? दो-दो योजन मूछें ठानी। दो-दो योजन लम्बी उनकी मूँछें थीं। ऐसे जबरदस्त राक्षसों से लड़ने के लिए आमादा हो गए हनुमान जी। कैसे हो गए ? अनुदान था।

आप समझिए ऊँचे सिद्धान्तों को। आप तो समझना भी नहीं चाहते। श्रीकृष्ण भगवान और रामचन्द्र जी ने हर एक को किसी खास कार्य के लिए अनुदान दिए थे। नहीं साहब, मजा उड़ाने के लिए दिया था, ऐय्याशी के लिए दिया था। खबरदार ! भगवान के बारे में ऐसी बेइज्जती की बातें कहीं तो। बेकार की बात मत कहिए। मित्रो ! अभी पुरानी बात बताई मैंने। अब नई बताता हूँ। बिनोवा भावे को गाँधी जी के अनुदान मिले थे। बिनोवा अपने आप उठे थे ? नहीं, अपने आप संत रह सकते थे और अपनी गीता का प्रचार करते रह सकते थे; पर दूसरा गाँधी, बापू जी ने बनाया था उन्हें और जिसने वामन अवतार के तरीके से अपने डगों से सारे हिन्दुस्तान को नाप डाला और सैकड़ों एकड़ जमीन मिलती चली गई और किसको मिले गाँधी जी के अनुदान ? करमसंद गाँव का एक पटेल मामूली वकालत करता था। उसको सरदार पटेल बना दिया, हिन्दुस्तान का गृहमन्त्री बना दिया था।

मित्रो ! मैं अनुदान कर रहा था। चलिए अभी और बताता हूँ। पंडित नेहरू ने लाल बहादुर शास्त्री को मिनिस्टर बना दिया और प्रधानमंत्री बना दिया था। लालबहादुर शास्त्री की कोई हैसियत थी ? नहीं, कोई हैसियत नहीं थी। यह क्या दिया गया था—अनुदान। नेहरू जी का अनुदान। उन्होंने हीरालाल शास्त्री, जो कि एक कन्या विद्यालय चलाते थे, राजस्थान का मुख्यमंत्री बना दिया था। ये क्या है ? ये अनुदानों की बात कह रहा था। अनुदानों का जिक्र अक्सर मैं अपने प्रवचनों में करता रहा हूँ। उसमें से एक और कड़ी मैं हमेशा अपनी शामिल करता रहा हूँ। हमने अनुदानों से पाया है। आपने तो हमारी शक्ल देखी भी नहीं है अभी तक। आपने तो हमारा एक काम देखा है। गुरुजी कितने बड़े हैं ? जितना बड़ा हमारा काम। आपकी दृष्टि में हमारा समग्र रूप नहीं आ सकता; क्योंकि आपकी आँखें बहुत छोटी हैं। आप हमारी औकात, इज्जत, ताकत और हस्ती का इतना मूल्यांकन करते हैं कि हमारी मनोकामना पूरी की कि नहीं। आपके बेटा हुआ कि नहीं हुआ। बेटा हो गया, तो गुरुजी चमत्कारी सिद्धपुरुष और आपके बेटा नहीं हुआ तो सौ गाली। आपकी अक्ल, आपकी बुद्धि, आपकी दृष्टि ऐसी छोटी जैसी मच्छर की छोटी आँख होती है। आप हमारी हैसियत और व्यक्तित्व को इतना छोटा मानते हैं; जितना हमारे शरीर में कान की लम्बाई-चौड़ाई है। उतने को आप परखते हैं, उतने की सोचते हैं, उतने को देखते हैं।

लेकिन हमारा व्यक्तित्व बहुत बड़ा है। कितना बड़ा है ? आप कल्पना नहीं कर सकते हैं। बीस साल निकल जाने दीजिए। जो जिंदा रहें, जरा देखना गुरुजी किस आदमी का नाम था ? हम आपकी दृष्टि में छोटे हो सकते हैं, लेकिन संसार के लिए हम बहुत बड़े आदमी हैं। जरा अगली वाली हिस्ट्री को पढ़ना। अगली वाली पीढ़ियों की आँखों से हमको देखना। सारी मनुष्य जाति के इतिहास में हम एक कमाल करने जा रहे हैं तो क्या चीज हैं ये ? अनुदान हैं हमारे। हमको बहुत शानदार अनुदान मिले हैं, ऐसे कि सारे इनसान के लिए, इनसानी समाज के लिए, इनसानी भविष्य के लिए एक ऐसा नया इतिहास लिखेंगे, जिसे कि लोग याद करते रह जाएँगे और अचम्भे में रह जाएँगे। यह अनुदान में मिला है हमको।

मित्रो ! मैं अनुदान की बावत बता रहा था कि छोटे कामों के लिए अब ये दिन नहीं हैं, यदि आप हमारे पास बैठें और हमारे व्यक्तिगत जीवन में प्रवेश करें, तो आपको पता चलेगा कि आदमी का एक-एक सेकेंड कितना कीमती है। इसीलिए एक-एक सेकेंड का इन दिनों हमारे सारे विश्व के लिए, सारे विश्व की सम्पदा के रूप में इस्तेमाल करना पड़ रहा है। ऐसे समय में आपका यह अनुदान सत्र हमने खास मकसद के लिए लगाया है कि आपको कुछ कीमती-सी चीजें दे दें। कभी आवश्यकता होती है, तो इसी तरह के अनुदान दिये जाते हैं। आवश्यकता पड़ी थी रामकृष्ण परमहंस को और वे इस बात की तलाश में थे कि कोई ऐसा आदमी मिल जाए, तब उसको अनुदान दे दें। बहुत मुश्किल से एक आदमी दिखाई पड़ा, जिसका नाम था विवेकानन्द। रामकृष्ण उनके पास स्वयं गए थे ? जिसको दिया है, वो वजनदार आदमी होना चाहिए। अनुदान देने के लिए इन दिनों देवता व्याकुल हो रहे हैं। पहले भी व्याकुल थे; इन दिनों तो बहुत ही व्याकुल हो रहे हैं। व्याकुल देवताओं के अनुग्रह प्राप्त करने के लिए कुछ आपको काम करना है, यही बात कहनी है आपसे। हमारा गुरु व्याकुल हो रहा था और हमारे घर आया था। देवता आपके भी घर आएगा। आप यकीन रखिए; पर देवताओं को तो आप पागल समझते हैं। पागल मत कहिए। भगवान के साथ में व्यक्तिगत तालमेल मत भिड़ाइए। भगवान व्यक्ति नहीं हैं। वह एक कायदे का नाम है, भगवान एक कानून का नाम है, भगवान एक नियम का नाम है, मर्यादा का नाम है। उसमें किसी व्यक्ति के साथ में व्यक्तिगत रूप से न तो नाखुशी की गुंजायश है और न खुशी की। न किसी के साथ में भगवान की रियायत की गुंजायश है और न भगवान के यहाँ किसी के प्रति नाराजी की गुंजायश है। नाराजी की गुंजायश रही होती, तो चाइना वालों को, रशिया वालों को, जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करते और न केवल विश्वास नहीं करते, बल्कि गाली-गलौज भी देते रहते हैं, अब तक भगवान जी ने कचूमर निकाल दिया होता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो मैं कह रहा था कि अनुदान-सत्र, जिसमें हमने आपको बुलाया है, उसकी तीन शर्तें हैं, तीन कसौटियाँ हैं। एक कसौटी ये है, जिसका अर्थ होता है ईश्वर का, विश्वास पात्रता का विकास। इसका दूसरा नाम क्या है ? उपासना। उपासना का एक बहुत छोटा अंग है—भजन। उपासना समग्र फिलॉसफी है। उपासना किसे कहते हैं ? भगवान के नजदीक बैठना। भगवान के नजदीक बैठने का अर्थ होता है, उसकी विशेषताओं को ग्रहण करना, मसलन आग के आप नजदीक बैठते हैं, तो आग की विशेषताओं को ग्रहण करते हैं। अपनी ठंडक और नमी दोनों को मिटा लेते हैं। गर्मी आपके अंदर चली जाती है और ठंडक दूर हो जाती है। उपासना इसी को कहते हैं। उपासना का अर्थ यही होता है कि आप सिद्धान्तों के लिए अपने आपको समर्पित कर दें। श्रद्धा इसी का नाम है। समर्पण इसी का नाम है। गीता में भगवान ने बार-बार यही कहा है—**'मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।'** अरे अभागे ! अपनी अक्ल को हमारे पास ला, अपनी बुद्धि को, मनोकामनाओं को हमारे पास ला। आपको उपासना के लिए यही करना चाहिए। हमने भी यही किया और आपको भी यही करना चाहिए। हमने अपनी कठपुतली के सारे धागे अपने बॉस की हथेलियों में बाँध दिए हैं और वही वहाँ से नचाते रहते हैं। हमारी भक्ति इसी बात पर है कि हमने हर चीज को धागा से बाँध दिया है और ये कहा है कि आप हुक्म दीजिए। आपके हुक्म पर हम चलेंगे और आप तो जाने क्या कहते हैं ? ये कहते हैं भगवान से कि आप हमारे हुक्म पर चलिए। अपनी वासनाओं के लिए, अपनी तृष्णाओं के लिए, अपने घटियापन के लिए और अपने कमीनेपन की पूर्ति के लिए आप तो ये कहते हैं भगवान से अपने सिद्धान्तों का सफाया कर दीजिए, अपने कायदों का सफाया कर दीजिए और हमको अनड्यू एडवांटेज देना शुरू कर दीजिए। भगवान की शान को ध्यान में रखिए। भक्ति के नाम पर ये मत कहिए। हमारी कोई मनोकामना नहीं है। हमारी एक ही मनोकामना है—**'मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे, बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे।'** यह भक्ति है। अगर यह भक्ति आपके पास आई, तो आप देख लेना, भगवान आपके पास आएँगे।

यह उपासना के बारे में बता रहा था। मित्रो ! उपासना के अलावा एक और काम आपको पात्रता विकास के लिए करना पड़ेगा, उसका नाम है—साधना। साधना किसे कहते हैं ? आदतें एक, मान्यताएँ दो और आकांक्षाएँ तीन—इन तीनों को उच्चस्तरीय बनाना पड़ेगा। यही साधना है। जरा ऊँचे स्तर पर उठकर तो देखिए। जिस जमीन पर आप रहते हैं, वहाँ पर चलना बहुत मुश्किल है। एक घण्टे में आप तीन मील चलेंगे; लेकिन जरा ऊँचे तो उठिए, फिर आप देखिए एक घण्टे में छह सौ मील की रफ्तार से जाते हैं। बोइंग जहाज छह सौ मील की रफ्तार से चलते हैं और जरा ऊँचे उठिए। जो उपग्रह पृथ्वी के चक्कर काटते हैं, उन चक्करों को देखिए। वे ढाई हजार मील प्रति मिनट के हिसाब से चलते हैं। आप तो वहाँ पड़े हुए हैं, जहाँ सड़न-कीचड़ भरी पड़ी है; जिसको जमीन कहते हैं; जहाँ न चलना सम्भव है, न ऊँचा उठना सम्भव है, न जिंदगी सम्भव है। लेकिन अगर आप अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत कर लेते, तब क्या कहूँ आपसे—आप बहुत शानदार आदमी होते। तब मैं आपसे कहता—साधक ! अगर आपने अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत किया होता है, तो मैं यकीन दिलाता हूँ आपको, आपका आकर्षक व्यक्तित्व देवताओं की कृपा को, भगवान की कृपा को, सिद्धियों को, अनुदानों की खींच कर ले आता। आप में से हर आदमी में कबीर के बराबर, रैदास के बराबर, विवेकानन्द के बराबर योग्यता है; पर हम क्या करें ? ये घटियापन तो चैन नहीं लेने देता। खा गया ये घटियापन, आपके पैसे को, आपकी अक्ल को, आपके श्रम को, हर चीज को खा लिया। साधना किसे कहते हैं ? अपने घटियापन को दूर करने-कराने के लिए जद्दोजहद करना, लड़ाई करना। तपश्चर्या इसी का नाम है। जप इसी का नाम है, भगवान् के ऊपर डोरे डालने का नाम नहीं है, खुशामदें करने का नाम नहीं है।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए पात्रता की दो शर्तों के अतिरिक्त एक तीसरी कसौटी भी है, उसका नाम है—आराधना। भगवान के ऊपर असर डालने वाली यही एक चीज है, दूसरी कोई नहीं। उपासना, साधना के स्वयं के लिए और भगवान को प्रभावित करने के लिए अंतिम चरण रह जाता है—आराधना। आराधना का अर्थ है—लोक-सेवा, जनहित, जनकल्याण, समाजसेवा। अपने समय में से, अपने श्रम में से, अपनी मेहनत में से और पैसों में से भगवान का काम कीजिए। भगवान का क्या काम है ? भगवान का एक काम है—उसकी दुनिया को सुसंस्कृत और समुन्नत बनाना; उसकी सभ्यता और संस्कृति को बढ़ाना। सभ्यता किसे कहते हैं ? सभ्यता कहते हैं—लोगों की चाल-चलन में शालीनता का समावेश और संस्कृति उसे कहा गया है, जिसको उदारता कहते हैं, सेवा कहते हैं, करुणा कहते हैं, परोपकार, लोकमंगल और दान कहते हैं। आप भगवान की आराधना कीजिए, ताकि भगवान आपकी आराधना करें। हमने अपने बॉस की आराधना की है। उसने हमारी आराधना की है। हमने अपने आपको सुपुर्द कर दिया है, उन्होंने अपने आपको हमारे सुपुर्द कर दिया है। ये कैसे ? वाणी से नहीं, गप्पवाजी से नहीं, ख्वाबों और कल्पनाओं से नहीं। कार्य से, ऊँचे उद्देश्यों के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए समर्पण से।

मित्रो ! यह तीन काम अगर आप कर सकते हों, पात्रता विकास के नाप-तौल के हिसाब से, उसी अनुपात से आपको वो अनुदान मिलेंगे, जिसे आप हजार वर्ष तक उपासना करने के बाद भी नहीं पा सकते थे; पर इन दिनों अनुदान पा सकते हैं। कल हमने आपको अनुदानों की एक किश्त के बारे में जानकारी कराई थी, कि प्राणधारा का संचार प्राप्त करने के लिए दैवीय शक्तियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आपकी क्या सहायता कर सकती हैं ? उसके तीन लाभ हैं—एक लाभ है उसका-जीवनी शक्ति, दूसरा लाभ है उसका—साहसिकता, तीसरा लाभ है उसका—प्रतिभा। ये तीन प्रत्यक्ष सिद्धियाँ हैं। चमत्कारी सिद्धियों की बात आप मत पूछिए। उसे यदि हम आपको बता भी दें और करा भी दें, तो मारीच के तरीके से, भस्मासुर के तरीके से, कुम्भकरण के तरीके से, रावण, हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष के तरीके से, तंबाही के मुँह में जाना पड़ेगा। उनको तो नहीं बताते; लेकिन आपके व्यावहारिक जीवन में तीन चीजें आ सकती हैं। जीवन-शक्ति एक, हिम्मत दो, प्रतिभा तीन। जीवन-शक्ति उसे कहते हैं, जिसमें आदमी अपने शरीर और जीवट को अक्षुण्ण रख सकता है, मौत से लड़ सकता है, बीमारियों से लड़ सकता है। ये क्या हैं; ये प्राणधारा हैं, जो हमको भी मिली हुई हैं। ७१ वर्ष की उम्र में हम १७ वर्ष के आदमी के तरीके से जिंदा हैं। हमने कामधेनु का दूध पिया है और हमारे अन्दर प्राणधारा है, जीवट है, इसलिए श्रम करने की शक्ति, बीमार न होने की शक्ति पूरी मात्रा में हमारे पास है, आप सुनते भी नहीं हैं।

प्राणधारा का दूसरा फायदा—साहसिकता है। साहसिकता हिम्मत को कहते हैं, जिसके सहारे नेपोलियन जैसा दो कौड़ी का आदमी कहाँ से कहाँ जा पहुँचा था ? कोलम्बस जैसा दो कौड़ी का आदमी अमेरिका जा पहुँचा और सारे यूरोपियनों द्वारा अमेरिका पर कब्जा कराने के लिए उतना दूर जाने में समर्थ हो गया था। ये हिम्मत है। हिम्मत तो आप में है भी नहीं। हिम्मत के नाम पर तो जनाजा निकल गया है। रोज संकल्प लेते हैं—बीड़ी नहीं पियेंगे, सिगरेट नहीं पियेंगे, फिर क्या बात हो गई ? संकल्प-शक्ति का अभाव। अच्छे कामों के लिए एक इंच आपकी संकल्प-शक्ति काम नहीं देती है। श्रेष्ठ कामों के लिए संकल्प करना भगवान का अनुदान है। खराब कामों के लिए तो साहस हर एक में होता है। चोरी के लिए, डकैती के लिए, बेईमानी के लिए, बदमाशी के लिए साहस हर एक में होता है; पर ऊँचा उठाने वाले साहस कभी किसी-किसी में पाए जाते हैं और जिनमें पाए जाते हैं, वे निहाल हो जाते हैं।

तीसरी चीज का नाम है—प्रतिभा। प्रतिभा किसे कहते हैं ? जिसमें आदमी हावी हो जाता है, दूसरों पर। गाँधी जी सारे समाज पर हावी हो गए थे, बुद्ध सारे के सारे जमाने पर हावी हो गए थे। हावी होने वाली क्षमता का नाम है—प्रतिभा। प्रतिभा के अभाव में आपकी औरत तक कहना नहीं मानती। आपके बच्चे, आपके पड़ोसी, आपके सबोर्डिनेट आपका कहना नहीं मानते; लेकिन अगर आपके पास वो सामर्थ्य रही होती, तो दूसरे आदमी आपकी बात को मानने के लिए मजबूर होते।

मित्रो ! हम इन्हीं वस्तुओं के आधार पर आगे बढ़े हैं। आपको भी प्राण-संचार धारा के लिए तीन चीजें अनुदान में, अनुदान-सत्र में हम देने को तैयार हैं। शर्त एक ही है कि आप अपने व्यक्तित्व को पात्रता के उपयुक्त बनाइए। ये समय बिल्कुल इसके लायक है कि आप ये फायदा उठा सकते हैं। आज हम आपको दूसरी किश्त सायंकाल को बताएँगे कि सूक्ष्म-शरीर में क्या-क्या चीजें अनुदान के रूप में हिमालय से मिल सकती हैं। कल तो वसंत पंचमी है। अगले दिन हम वो बताएँगे कि कारण-शरीर में विद्यमान ऋद्धि-सिद्धियों का जखीरा किस तरीके से प्राप्त कर सकते हैं ? यह तीनों अनुदान आपके लिए बिल्कुल सुरक्षित हैं, शानदार हैं। ऐसे अनुदान हैं, जो आज की स्थिति की तुलना में आपको हजारों-लाखों गुना सामर्थ्यवान बना सकते हैं। हमारी बात समाप्त।

ॐ शांति।

आध्यात्मिक जीवन में पात्रता की अनिवार्यता

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

महापुरुषों का हमेशा यह तरीका रहा है कि जो आदमी श्रद्धालु हो, उसी को ज्ञान दिया जाए पर तैने अपनी श्रद्धा नहीं बतायी और तूने अपना अहंकार बताया और तू खड़ा रहा। जानने वाले के सामने आदमी को नम्र हो करके जाना चाहिए—ये प्राचीनकाल की परम्परा का तूने पालन नहीं किया, इसलिए रावण ने नहीं सिखाया, तो क्या बुराई की बात है। हाँ ठीक, केवल पात्र को ज्ञान दिया जा सकता है, कुपात्रों को नहीं। कुपात्रों को अगर ज्ञान दिया जाए, तो वे धारण नहीं कर सकते। मैं आपको बहुत-सी योगविद्याएँ सिखाना चाहता था, जो मैंने अपने जीवन में सीखीं और चार दिन अपने गुरु के पास दुबारा जब मैं रहा, तो उन्होंने मुझे बहुत-सी महत्त्वपूर्ण बातें बतायीं, जो इनसान के भीतर की दबी हुई शक्तियों को उभार सकती हैं; पर मैं अपने रहस्यों को दबा करके चला जा रहा हूँ। मैं बहुत मजबूर हूँ। मैं चाहता था किसी आदमी को वो चीजें सिखा करके चला जाऊँ, ताकि हमारी आध्यात्मिक परम्पराएँ दुनिया में जिन्दा रहें; लेकिन मैं किस तरीके से सिखा सकता हूँ आपको ? आपको मैं सिखाने लगूँ, तो आप सीख नहीं सकेंगे और सीख भी लें, तो धारण नहीं कर सकेंगे और अगर धारण कर लें, तो फायदा नहीं उठा सकेंगे। क्यों ! क्योंकि आदमी को धारण करने की पात्रता चाहिए। श्रद्धा वो पात्रता है। श्रद्धा अगर आदमी के भीतर न हो, तो पात्रता नहीं आएगी। एक बार सुकरात के पास एक आदमी गया; उसने कहा—हमको ब्रह्मज्ञान सिखा दीजिए—अध्यात्म-विद्या सिखा दीजिए और योगविद्याएँ सिखा दीजिए। उसने कहा—बेटा ! तू अभी इस लायक नहीं है कि मैं अपनी योगविद्या सिखा दूँ, तुझे भगवान् का ज्ञान सिखा दूँ और फिर तुझे आध्यात्मिक के रहस्य बता दूँ। उसने कहा—नहीं स्वामीजी, बता दीजिए। आप क्यों नहीं बताते ? आप छुपाकर ले जाते हैं—आप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो कपट करते हैं और आप तो चालाक हैं, आप तो धोखा करते हैं और आप तो बताते नहीं हैं। बता दीजिए। उसने कहा बेटा मैं बता तो दूँगा। बताने में मुझे छिपाना क्या है ? मेरी कोई जायदाद थोड़े ही है। ऋषियों का ज्ञान है, मैं तुझे भी बता दूँगा, लेकिन बता भी दूँ, तो तू करेगा क्या इसका ? नहीं साहब, मैं फायदा उठा लूँगा। नहीं बेटा ! तू फायदा नहीं उठा सकता। नहीं, साहब ! मैं फायदा उठा लूँगा। अच्छा तो बैठ। चुप हो गए, सुकरात। चुप होकर सुकरात ने कहा—बेटा, सिखा तो मैं तुझे दूँगा, तू मेरा एक काम कर। क्या काम करूँ ? तू मेरे लिए पानी ले आ एक घड़ा। उसने कहा, हाँ। अभी लाकर देता हूँ। एक मिट्टी का कच्चा घड़ा रखा हुआ था उनके पास, जो पकाया नहीं गया था। कच्चा घड़ा दिया उन्होंने कहा जा, इस सामने वाले तालाब में जा और एक घड़ा पानी ले आ। बस, वह छोकरा भागा हुआ गया और पास वाले तालाब में गया और मिट्टी का कच्चा घड़ा पानी से भर लाया।

घड़े को खुला हुआ सिर पर रखा और सिर पर रखकर चला सुकरात के पास। एकाध फर्लांग चला होगा तब तक क्या हो गया, जब तक वह घड़ा पिघल गया। घड़ा फूट गया और घड़ा गल गया और सारा पानी कपड़ों पर पड़ गया। लड़का भीग गया। उन्होंने कहा—बच्चे ! मैंने पानी मँगाया था तू ले आया कि नहीं। नहीं स्वामी ! मैं पानी नहीं ला सका। क्यों ? क्या हुआ ? आपने जो घड़ा दिया था। वो कच्चा था तो क्या हुआ ? कच्चे में पानी नहीं ला सकता। नहीं स्वामी ! कच्चे में पानी कैसे रखा जा सकता है ? गुरुदेव ! आप तो ज्ञानी विद्वान हैं, ये भी नहीं जानते कच्चे घड़े में पानी रखा जाएगा, तो कच्चा घड़ा स्वयं भी गल जाएगा। आपको मालूम नहीं है क्या ! उन्होंने कहा—हाँ, बेटा, मालूम तो मुझे है। कच्चे घड़े में पानी नहीं रखा जा सकता। कच्चे घड़े में पानी नहीं रखते। ये गलती मेरी भी है, गलती तेरी भी हो गयी। दोनों की गलती हो गयी। क्या गलती हो गयी ? तूने मुझसे पूछना शुरू कर दिया—विद्या सिखा दीजिए—अमुक विद्या सिखा दीजिए—अमुक रहस्य सिखा दीजिए, अमुक कर्मकाण्ड सिखा दीजिए—मुख्य बात बता दीजिए। कच्चे घड़े में क्या कभी कर्मकाण्ड सिखाये गये हैं ? क्या कच्चे घड़ों में योगविद्याएँ सिखायी गयी हैं ? क्या कच्चे घड़ों में आध्यात्मिकता का मर्म और रहस्य सिखाये गये हैं। बच्चा चुप हो गया। उन्होंने कहा—बेटा पहले हमको पक्का घड़ा बन जाना चाहिए। पक्के घड़े में पानी भरा रहेगा तो पानी के अलावा उसमें क्या आएगा ? मित्रो ! यही हुआ। रावण के पास लक्ष्मण जी दुबारा गये। तब उस समय जा करके पैरों की तरफ खड़े हो गये। हाथ जोड़कर उन्होंने कहा गुरुदेव ! मैं एक नटखट, निश्चल बालक और रामचन्द्रजी का छोटा भाई और दशरथ जी का छोटा बच्चा और आपका विद्यार्थी हूँ। मैं आपसे विद्याएँ सीखने के लिए आया हूँ, कृपा करके मुझे ज्ञान की शिक्षा दीजिए। ज्ञान को उसने सिखाना शुरू किया और रावण ने लक्ष्मण को जो ज्ञान सिखाया वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण ज्ञान है और रावणगीता के नाम से विश्वविख्यात है। गीता है अभी यहाँ से प्रकाशित होने वाली भगवद्गीता, जो आपने अक्सर पढ़ी है उसमें ७०० श्लोक हैं, १२ अध्याय हैं—ये महाभारत में से निकाला हुआ एक छोटा-सा हिस्सा है, जो विश्वविख्यात हो गया। लोगों की जबान पर आ गया। लोगों ने उसे आगे बढ़ा दिया। इसलिये वो गीता बड़ी हो गयी। लेकिन हमारी हिन्दू-सभ्यता—हिन्दू संस्कृति में बहुत सारी चीजें हैं। उसमें से एक यह भी है, जिसको रावण-गीता कहते हैं। शायद आपको २-५ महीने में यह महान पुस्तक पढ़ने को मिल जाए। मैं पुस्तक का हवाला नहीं दे रहा था—मैं तो एक अलग बात कह रहा था कि रावण से ज्ञान प्राप्त करने के लिए श्रद्धा की आवश्यकता थी लक्ष्मण जी को, जिसको रामचन्द्रजी ने सिखाया। मित्रो ! आप उन लोगों में से हैं जिन लोगों ने मेरे साथ मुद्दतों से जुड़े होने के बाद श्रद्धा की एक परीक्षा पास कर ली है। श्रद्धा आपके भीतर न होती, तो आप इतना किराया-भाड़ा खर्च करके क्यों आते ? दुपहरी के दिनों में कष्ट क्यों उठाते ? यहाँ कोई मिठाई मिलती है क्या आपको ? यहाँ पंखे मिलते हैं क्या ? यहाँ तो जमीन पर पड़े रहते हैं और बुरे तरीके से पड़े रहते हैं, रेलगाड़ियों में आते हैं कितने धक्के खा करके आते हैं और यही उम्मीदें ले करके आते हैं—आचार्य जी के पास चलेंगे और उनसे वो सब बातें सुनेंगे—उनसे प्यार करेंगे। आप मेरे साथ जुड़े हुए हैं। लेकिन आप पहचान नहीं पाते; पर मैं एक बात आपसे कहूँगा, जो आपको यह पहचान करा सकती है। आप कभी ये विचार करना। आप लोगों ने बहुत सारे सन्त-महात्मा देखे हैं, बहुत ज्ञानी-गुणी के व्याख्यान सुने हैं, कई-कई प्रतिभावान और प्रभावशाली शक्तियों के सम्पर्क में आप आये हैं। उनकी प्रतिभा से आप प्रभावित तो हुए होंगे, उनके व्याख्यानों को आपने पसन्द तो किया होगा। प्रभावित तो हुए होंगे, लेकिन कहीं आपके मन में एक भाव नहीं उठा होगा कि ये हमारा आदमी है और हम इसके आदमी हैं। ये भाव शायद ही आपको कभी अपनी जिन्दगी में देखने या सुनने को मिला हो। आपके भीतर वो भावनाएँ हैं कि जब आप आये थे तब क्या उमंगें लेकर रास्ते में आये थे। जब यहाँ आकर खड़े हुए तब आपकी इच्छा थी गुरुजी से अपने मन की बात कहेंगे। मैंने कहा—ठहर जा मैं परिक्रमा कर लूँ तब पीछे देखा जाएगा। आपका मन ऐसे हिलोरें ले रहा था। अपने दबे हुए मन, दबे हुए विचार और दबी हुई बातें सबकी सब आचार्य जी से पहले कहेंगे। ये कोई कुटुम्बी है हमारा ये खानदान वाला है। बाहर वाले आदमी से आदमी को बहुत संकोच होता है, हिचक होती है और आदमी भयभीत मालूम पड़ता है और आदमी अलग रहने की कोशिश करता है लेकिन जो हमारा आदमी अपना होता है उसके प्रति आदमी में बहुत ही घनिष्ट भाव होता है। आपके मन में ऐसा घनिष्ट भाव नहीं होता। हाँ ! होना चाहिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आपके भीतर। आप आए तो एक उमंग लेकर आए थे और जब आप जाएँगे, तो मैंने देखा है लोगों की आँखों में से कैसे आँसू की धाराएँ बहती हैं। मालूम पड़ता है कोई सगे-सम्बन्धी की मौत हुई हो और मानो सगे-सम्बन्धी बिछुड़ रहे हों। माता जब अपनी बेटी को विदा करती है तो माता की आँखों में भी आँसू होते हैं और उसकी बेटी जब विदा होती है तो उसकी आँखों में भी आँसू होते हैं। उन दोनों के खून का रिश्ता था और हम दोनों का खून का रिश्ता है। इसीलिए जब कभी भी आप जाएँ, आप ये अनुभव करेंगे कि हम कुछ खोकर के जा रहे हैं और हम कुछ तकलीफें ले करके जा रहे हैं। मेरा भी मन ऐसा ही है और आप जब आते हैं तो आपको अनायास मालूम पड़ता है कि न जाने हमारा कौन मिल गया, सम्बन्धी मिल गया, रिश्तेदार मिल गया, कुटुम्बी मिल गया, न जाने कौन मिल गया और मुझे भी ऐसा ही मालूम पड़ता है। गाय जिस तरीके से जंगल में चरने के लिए चली जाती है और शाम को आती है और जब अपना बच्चा मिलता है, सबेरे के बिछुड़ने के बाद चाटने लगती है, अपने बच्चे को पुचकारने लगती है और थनों में से दूध की धार टपकने लगती है और अपनी टाँगों को चौड़ी कर देती है, बच्चा चुपके चला आता है और गाय का दूध पीने लगता है। गाय अपने थन को सारा-का-सारा निचोड़ती चली जाती है। मेरी भी कुछ आदत ऐसी है, आपकी भी ये आदत है।

पहचान की बात यह है कि आप मेरे साथ जुड़े हुए हैं। इसीलिए जुड़े हुए हैं मित्रो ! मेरे पास कुछ सामान था—मेरे पास कुछ दौलत जमा करके रखी थी और अन्तिम वक्त मैं चाहता था कि आप लोगों को दे करके जाऊँ और मैं उसको देना चाहता हूँ। रावण वाली घटना मैंने इसीलिये सुनायी थी कि उसके पास देने के लिए बहुत सारी चीजें थीं और वो नहीं दे जाता, तो दुनिया बहुत महत्त्वपूर्ण ज्ञान से वंचित रहती। मैं रावण तो नहीं हूँ—गन्दा आदमी तो नहीं हूँ। मैंने आधी मंजिल रावण जैसी पार की है जरूर कि अपनी आत्मा के भीतर दबी हुई शक्तियाँ थीं, उनको विकसित किया है; लेकिन रावण ने जो भूल की थी वो भूल मैंने नहीं की। रावण ने भूल ये की भगवान् की ओर से मुँह मोड़ लिया था और अपना मुँह केवल शैतान के साथ जोड़कर रखा। शैतान और भगवान् की दो शक्तियाँ इस दुनिया में हैं। शैतान की शक्ति वो है जो आदमी को लुभावने रास्ते पर घसीटकर ले जाती है। शैतान उस आदमी का नाम है—शैतान उस सत्ता का नाम है—शैतान उस शक्ति का नाम है, जो मनुष्यों को इन्द्रियों से मिलने वाले सुखों की ओर खींचती रहती है और ये कहती है सारे के सारे फायदे और सारे के सारे लाभ इन्द्रियों के द्वारा लाभ उठाते हैं और ये सुख पाते हैं और शैतान की सत्ता हमको ये कहती रहती है कि आदमी को अपना अहंकार और घमण्ड बढ़ाना चाहिए और दूसरे लोगों की आँखों में बड़ा बन जाना चाहिए। दूसरे लोगों की आँखों में बड़ा बन जाने का असली तरीका लोगों को नहीं मालूम। शैतान ये कहता है कि अपनी दौलत ज्यादा बढ़ाओ ताकि आदमी अपने अन्दाज से ये लगाये कि ये बड़ा आदमी है—मालदार आदमी है और ये अमीर आदमी है और ये बड़े महल में रहता है और ये अच्छा खाना खाता है, इसीलिए वो हमारे बड़प्पन को मान लेंगे। ये शैतान सिखाता है। भगवान नहीं सिखाता है। भगवान् महानताएँ सिखाता है, भगवान गुणों की विशेषताएँ सिखाता है। गुणों की विशेषताएँ सिखाता है इसलिए शैतान के बहकाये हुए लोग इन्द्रियों की गुलामी करते हैं और सुख की तलाश में इन्द्रियों के छेदों में हवन करते रहते हैं। इन्द्रियों के छेदों में हमें सुख मिल जाए। जवान में से हमें सुख मिल जाए। कामेन्द्रिय में हमें सुख मिल जाए, ताकि सिनेमा देखकर आएँ, अच्छा गाना सुन करके आएँ। इस तरह से इन्द्रियों के छेदों में से उन्हें सुखों की तलाश रहती है। ये शैतान के बहकाये हुए लोग हैं। शैतान के बहकाये हुए वो लोग हैं, जो अपने शरीर के बड़प्पन को चाहते हैं। शरीर का बड़प्पन—बात अलग है और आत्मा का बड़प्पन—बात अलग है। दोनों में जमीन-आसमान का फर्क है। शरीर आपका बड़ा हो, लेकिन यह भी हो सकता है कि आपकी आत्मा बहुत ही छोटी, बिल्कुल कमजोर हो और यह भी हो सकता है कि आपकी अन्तरात्मा महान हो और उसकी शक्ति अभूतपूर्व हो और आप बाह्यजीवन में सम्पदाओं की दृष्टि से कमजोर आदमी हों। ऐसा होना सम्भव है। इसीलिए रावण जो शैतान का बहकाया हुआ था, आत्मा की शक्ति को उसने शैतान के चरणों में समर्पित कर दिया। भगवान के चरणों में समर्पित नहीं किया। इसलिए रावण और मेरे में मुकाबला तो नहीं किया जा सकता, रावण की कहानी पूरी तरह से तो लागू नहीं होती है मेरे ऊपर लेकिन लागू इसलिए होती है कि रावण भी जा रहा था अपनी जिन्दगी के दिन समाप्त करके और मैं भी जा रहा हूँ समाप्त करके। रावण ने भी अपना अनुभव जीवन में बहुत इकट्ठा किया था और मैंने भी अपने जीवन के बहुत सारे अनुभव इकट्ठे किये हैं और वो रावण के जीवन के अनुभव अगर लोगों के पास रह गये होते, तो लोगों ने सोना और सोने की इमारतें वैसे बना ली होतीं जैसी कि रावण ने बनायी थी। हम सोने की एक अँगूठी भी न खरीद सके। रावण के पास सोने की लंका थी और वो काम हमको मालूम पड़ जाते तब मजा आता लेकिन हम सीख न सके और लक्ष्मण जी को रामचन्द्रजी ने ठीक ही कहा था कि इस दुनिया में से विदा होने वाले महापुरुष के द्वारा जो अनुभव लेकर इकट्ठे किये गये हैं, उसका थोड़ा-सा, जरा-सा लेकर आपको भी लाभ होना चाहिए और लक्ष्मणजी ने वही सीखा था। मित्रो ! मैंने आपको चार दिन-चार बेशकीमती दिन इसीलिए खर्च कराने की कोशिश की कि आपको वो लाभ, वो अनुभव और वो ज्ञान-लाभ और ज्ञान नहीं, बल्कि मेरे जीवन का रस और निचोड़ आपको सीखने के लिए मिल जाए और सीखने के लिये नहीं मिल जाए, किसी तरह आपके भीतर प्रवेश कर सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैं बराबर ये कोशिश करूँगा इन चार दिनों में कि आपके ऊपर छाया रहूँ और मैं आपके दिमागों के ऊपर छाया रहूँ। मिलना-जुलना तो मेरा थोड़ी-बहुत देर होता है। थोड़ी-थोड़ी देर हम लोग मिल पाते हैं एक-डेढ़ घण्टे समय मेरा व्याख्यान होता है, बाकी समय आपसे परामर्श होता है। लोग अपनी बात मुझसे कहते रहते हैं और मैं अपनी बात उनसे कहता रहता हूँ। सारा दिन इसी तरीके से निकल जाता है। आपको मुझसे मिलने का मौका एक-डेढ़ घण्टे इस वक्त मिल सकता है। जब आप अपनी बातचीत करने के लिए आयेंगे तो १/२ घण्टा १५ मिनट तब भी आप अपनी बात कह सकते हैं। बस ! रोजाना आप पन्द्रह मिनट आधा घण्टा करेंगे; लेकिन मैं तो छाया रहूँगा और मैं तो आपका पीछा छोड़ने वाला नहीं हूँ। मैं सो भी जाऊँगा, तो भी मैं आपकी सेवा करूँगा और आप चटाई पर सोते हैं, तो पायेंगे आचार्य जी मेरे पास सोये हुए हैं, मैं आपकी बहुत खुशामद करूँगा और मैं आपकी बहुत मिन्नतें करूँगा, मैं आपको बहुत मजबूर करूँगा, आपको वो रास्ता जानना ही चाहिए, जिस रास्ते पर चलकर के छोटे-छोटे इनसान महापुरुष बने व बन सकते हैं। बड़ा आदमी बनना कोई ज्यादा मुश्किल काम नहीं है। बड़ा आदमी तो कोई चोर भी बन सकता है। बड़ा आदमी तो कोई भी बन सकता है। यदि ईमान, धर्म की बात दिमाग में से निकाल दें और ये तरीका अख्तियार कर लें कि मुझे डकैतियाँ डालनी हैं, चोरियाँ करनी हैं हमें और हमें ये करना है, मैं बेधड़क करूँगा जो कुछ होगा, सो देखा जाएगा। अगर ये कष्ट कर ले कोई आदमी, तो छोटा-सा इनसान भी मालदार बन सकता है। मालदार बनना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। आदमी का बुद्धिमान बनना भी कोई बड़ी बात नहीं है। बी. ए., एम. ए. पास करना भी बहुत सरल है। अभी कल के अखबार में आया, मुझे बड़ा अचम्भा हुआ। कोई मैनपुरी का आदमी है। उसने सारी की सारी यूनीवर्सिटी के डिप्लोमा छाप रखे थे और उसने हर जग अपने एजेण्ट कर रखे थे। एम. ए. का डिप्लोमा चाहिए। हाँ। साहब और कौन-सा डिवीजन चाहिए। उसने कहा—'फर्स्ट डिवीजन, नहीं ! सैकिण्ड डिवीज़न ले लो। अच्छा ! सैकिण्ड डिवीजन। बस, उसने ज्यों की त्यों सील, ज्यों की त्यों मोहर, ज्यों की त्यों रजिस्ट्रार के साइन, ज्यों का त्यों छपा हुआ सब, ज्यों का त्यों और रोल नम्बर डाला, खट से उसे दे दिया और बस ढाई सौ रुपये ले लिए। एम. ए. का सर्टीफिकेट और बीसियों आदमी उसमें नौकरी में लग गये। कल के अखबार में यदि आप पढ़ना चाहें और बीसियों आदमी लगे हुए हैं और उसे जो कमीशन एजेण्ट थे जो ढाई सौ रुपये में सर्टीफिकेट बेचते थे, उनको सौ-सौ रुपये कमीशन मिलता। इस तरह से हर आदमी एक-दो महीने में सर्टीफिकेट बिकवा दिया करता था और सौ-सौ, दो-दो सौ रुपयों की आमदनी कर लेता था और वह हजार रुपये कमा लेता था। कमाता था और इस तरह से उसने हजारों आदमी को एम. ए. बना दिया। किसी को इन्जीनियर बना दिया। किसी को क्या बना दिया और किसी को क्या बना दिया ? लोगों को नौकरी पर लगवा दिया। डिप्लोमा प्राप्त करना और विद्या प्राप्त करना भी कोई ज्यादा मुश्किल की बात नहीं है। आप चाहें तो एक लम्बा वाला चाकू खरीद लीजिए और जब आपके इम्तहान होने को हों, तो आप चाकू को खोलकर मेज पर बैठ जाइये और मास्टर से कहिये। मास्टर यहाँ तो जो आप कहेंगे, सो करना पड़ेगा। दरवाजे से बाहर निकलेंगे तो ये देखा है आपने ? और न हो तो आप एक बड़ा वाला एलसेशियन कुत्ता पाल लीजिये और उसको एक जंजीर से बाँधकर रखिये। जब भी कोई मास्टर आये खट से कटवाने को हो गये।

अभी अखबार में था, एक लड़का था वो एक बड़ा वाला कुत्ता साथ ले गया इम्तिहान देने के लिए। वे परीक्षक चैक करने वाले आये कुत्ते के काटने के डर से भाग गये। पुलिस को बुला लिया। कुत्ता पकड़ लिया गया। कुत्ते से इम्तिहान की बात चालू की। आप ऐसा कैसे कर सकते हैं ? विद्या प्राप्त करना कोई बड़ी बात है क्या ? कोई बड़ी बात नहीं और पैसा कमाना बड़ी बात है क्या ? कोई बड़ी बात नहीं। नटवर लाल एक आदमी था। उसने इतना पैसा कमा लिया—इतना पैसा कमा लिया कि लोग अचम्भे में रहते हैं। उसने लाखों-करोड़ों रुपया कमा लिया। ये कोई मुश्किल बात नहीं है। मुश्किल बात है महापुरुष बनना।

महापुरुष—महापुरुष उन्हें कहते हैं, जो स्वयं संसार की नाव में से अपने आपको पार कर लेते हैं और अपनी नाव में बैठाकर कर न जाने कितने-कितने छोटे बच्चों को, बीमारों को, बेवसों को ये आदमी इस संसार रूपी जीवन की नाव में सागर में से अपने आपको ही पार नहीं ले जाते, बल्कि उनको भी नाव में बैठा करके पार कर सकते हैं। जो अपने रास्ते में से दूसरों को रास्ता दिखा सकते हैं वही महापुरुष हैं। महापुरुष बनने का रास्ता इसलिए थोड़ा-सा मुश्किल है, श्रमसाध्य है, मेहनत का रास्ता है; लेकिन इसीलिए लोगों ने उस ओर से उपेक्षा करना शुरू कर दिया और लोग उसकी ओर से भूल गये, गुमराह हो गये। मैं चाहता था कि इस शिविर में—मैं चाहता था राजा परीक्षित के तरीके से बचे हुए चार दिन जीवन के महत्त्वपूर्ण दिन साबित हों और ये आपके आने वाले दिन जिस तरह रावण के समीप जाकर के लक्ष्मण जी ने काफी बातें पायीं। कीमती बातों को लोग चाहें तो 'रावण गीता' के रूप में पढ़ और सुन सकते हैं। इसके लिए मैं चाहता था कि ये आपके चार दिन उसी तरीके से हों और मेरे जीवन के चार दिन उसी तरह के थे। चार दिन को मैं भूल नहीं सकता। जीवन के साठ वर्षों को मैं भुला सकता हूँ। साठ वर्षों की खुशियाँ और गम मेरे लिए कोई कीमत नहीं रखते। लेकिन मेरी जिन्दगी के चार दिन बहुत कीमती हैं। जब कभी भी विचार करता हूँ, तब मुझे ये विचार आता है कि स्वाति की बूँद जिस घड़ी एक सीप के मुँह में आयी। एक पानी की बूँद जाकर के सीप के अन्दर कीमती मोती पैदा कर गया और पानी की बूँद जिस घड़ी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक छोटे वाले बाँस, निकम्मे वाले बाँस, घुने हुए बाँस को उसने वंशलोचन से भर दिया और वह स्वाति वाली बूँद जब बरसने के लिए आयी, तब केला कपूर के रूप में परिणत हो गया और स्वाति वाली बूँद जब आयी, तब चातक की प्यास, जो कि बरसों से पूरी नहीं हो पा रही थी और वो प्यास-प्यास चिल्ला रहा था; एक बूँद जब उसके अन्दर आयी, तो उसे, चातक को शान्ति मिल गयी। उसकी प्यास दूर हो गयी। आराम से चैन के साथ में अपने घोंसले में सो गया। सीप के सम्पर्क के दिन क्या मैं भूल जाऊँगा ? मैं भुला नहीं सकता। इस तरह से मैं चाहता हूँ ये चार दिन आपकी जिन्दगी में न भुला देने वाले साबित हों। ये मुझे पहले दिन जब मेरे गुरुदेव से मुलाकात हुई, उसने जो बातें मुझे बतायीं वो बहुत गौर करने के लायक हैं। गुरुदेव ने मुझे बताया कि हम तुझे मजबूत आदमी बनाना चाहते हैं और तुझे बड़ा आदमी, महापुरुष बनाना चाहते हैं।

वड़ा आदमी ही नहीं, मजबूत और महापुरुष बनने के लिए मैं क्यों करता विचार ? मैंने कहा आपका बहुत अनुग्रह—आपकी इस कृपा के लिए अनुग्रही हूँ। उन्होंने कहा—बच्चे कृपा के लिए अनुग्रह और तुझे ये मालूम है क्या कि हर चीज दुनिया में कीमत से पायी जाती है। बिना कीमत लिये नहीं। कीमत-बस इसी का तो झगड़ा है। कीमत देकर के खरीदना और फोकट में चीजों को प्राप्त करना। बस, यहीं से भूल शुरू हो जाती है और वो भूल मुझसे भी हो गयी होती अगर मेरा समर्थ गुरु मेरे पास न आया होता। लोग हैं जो बिना कीमत दिये या कम कीमत के द्वारा वेशकीमती चीजों को माँगने के इच्छुक रहते हैं और उनको खाली हाथ आना पड़ता है। लोग हैं जिनको इस वात की वहुत इच्छा है कि हमको हीरे की अँगूठी मिल जाए। लेकिन हीरे की अँगूठी पाने के लिए, वो जेब में दस पैसे का नया सिक्का रखकर फिरते हैं और दुकानदार के पास जाते हैं।

आप एक हीरे की अँगूठी दे दीजिये, जो सोने की वनी हुई हो। दस पैसे आप ले लीजिये और हीरे की अँगूठी हमको दे दीजिये। वो दुकानदार कहता है—भाई दस पैसे में नहीं आती है। पाँच हजार रुपये में आती है। पाँच हजार रुपये आपके पास हों, तो देखिये ये हमारे पास अँगूठी रखी है, ये एक हजार रुपये की है। इसमें छोटे वाले नगीने हैं। ये एक हजार रुपये की मिल सकती है। ये हजारों का किस्सा है, पैसों का किस्सा नहीं है। यहाँ सौ रुपये में हीरे की अँगूठी नहीं आयेगी, आप तो दस नये पैसे लिए घूमते हैं। नहीं साहब ! हम तो इतना रुपया नहीं दे सकते और हमको दस नये पैसे में चाहिए। अगले वाले दुकानदार के पास गये कि साहब आपके यहाँ अँगूठियाँ विकती होंगी। उसने कहा—हाँ। हमारे पास दस पैसे हैं। एक सोने की बनी, हीरे की नग जड़ी अँगूठी आप दे देंगे क्या ? भइया, यहाँ नहीं बिकती है। तो कहाँ बिकती है ? भइया, आगे चले जाओ। यहाँ से तीस-चालीस दुकान के पास से एक गली मुड़ जाती है, उस गली में चले जाओ। बिसाती की दुकान है, वहाँ से मिल जाएगी। अच्छा, तो मैं वहीं चला जाता हूँ। बस, वह गया, ३०-४० दुकान आगे बढ़ा और गली में मुड़ गया। उसने कहा—वह अँगूठी वाले की दुकान कहाँ है ? यहाँ है, हमारे यहाँ मिलती हैं अँगूठियाँ। तो दस नये पैसे में वो अँगूठी जिसमें सोना लगा हुआ हो और जिसमें हीरा लगा हुआ हो हमको चाहिए, आपके यहाँ बिकती है।

दुकानदार ने कहा—हाँ हमारे यहाँ बिकती है। ये लो पहनो अपनी अँगूठी का नाप। खट, उसने अँगूठी निकाली और देखना शुरू किया और सही नाप पाया, ये साहब अँगूठी आ गयी। कितने पैसे की है ? दस पैसे की है, दस पैसे की बिकती है। दस पैसे की लेकर चला आया, घर आकर कहने लगा मैं तो सोने की अँगूठी लाया हूँ, हीरे की अँगूठी लाया हूँ, कितने में लाया है ? दस पैसे में। चल, उल्लू कहीं का ! दस पैसे की कहीं अँगूठी आती है।

कम दाम का—कम दाम का ..... मित्रो ! लोग वे हैं जो महानता और भगवान् का प्यार, आत्मा का विकास प्राप्त करने के लिए हल्की-हल्की इकन्नियाँ जेब में लिये फिरते हैं और ये चाहते हैं हमको बड़ी चीजें मिल जाएँ। नामुमकिन है। इस दुनिया में हर चीज की कीमत है, मुनासिब कीमत देकर के कोई चीज पायी जा सकती हैं। कम कीमत में कुछ भी नहीं मिल सकता। मैं गया मेरा दुकानदार आया और उसने कहा—मैं तुझे बढ़िया चीज देना चाहता हूँ और तेरे व्यक्तित्व को महान बनाना चाहता हूँ, लेकिन इसके लिए कीमत खर्च करने की हिम्मत तुझमें है क्या ? मैंने कहा—हाँ मुझमें हिम्मत है। उसने कहा—हिम्मत वाले आदमी इस रास्ते पर चला करते हैं। ये बहादुरों का रास्ता है, कमजोरों का रास्ता नहीं है, ये स्वार्थियों का रास्ता नहीं है, ये घटिया आदमियों का रास्ता नहीं है। भगवान से मोहब्बत करना और भगवान से दिल लगाना 'हाथ भर का ही कलेजा दिल लगाने के लिए'—दिल लगाने के लिए हाथ भर का कलेजा चाहिए और अगर दिल लगाने वाला कलेजा हाथ भर का न हो और कलेजा इतना बड़ा हो मक्खी के सिर के बराबर, क्या दिल लगायेगा ? दिल है ही नहीं तो लगायेगा कहाँ से ? जिन आदमियों का मन, उस आदमी की तरह से इस बात में है कि भौतिक इच्छाएँ और भौतिक कामनाएँ हमारी किसी तरीके से पूरी हो जाएँ, इसके लिए छोटे-मोटे कर्मकाण्ड हमारे हाथ में लग जाएँ, जो ज्यादा मेहनत के न हो, मशक्कत के न हो और ऐसा कोई धन्धा हमारे हाथ में लग जाए, जिसमें कि जादू की छड़ी की तरह हमको बहुत सारी चीजें मिलती हुई चली जाएँ। दुनिया वाले लोग हैं, मैं क्या कहूँ दुनिया वाले लोगों को। क्या मिला मैं नहीं जानता, अगर मिला होता तो उनमें से भगवान के भक्त जरूर पैदा हो गये होते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इनमें से कुछ सुदामा दिखायी पड़ते, कुछ नरसी भक्त, कुछ उनमें भी मीराबाई दिखायी पड़तीं, कुछ इनमें से संत तुलसीदास, कुछ इनमें से सूरदास दिखायी पड़ते, कुछ इनमें से कौन ? लेकिन मित्रो ! कोई नहीं पड़ता दिखायी जैसे के जैसे भूखे के नंगे। सन्तोषी माता का शुक्रवार के दिन उपवास किया। चना-गुड़ चबाया—चना-गुड़ चबाया ये ख्याल आया कि शायद चना-गुड़ चबाने के बाद में सन्तोषी माता खुश हो जाएँगी और जो हम चाहते हैं वो दौलत देकर के चली जाएँगी। चना-गुड़ चबाने की और खटाई न खाने की कीमत के ऊपर सन्तोषी माता को प्रसन्न करने की हमने इच्छा की और सन्तोषी माता बेचारी क्या दे सकती हैं ? कितना दे सकती हैं ? उतना ही देंगी, जितना कि आपने चना-गुड़ से बचत की थी। रोटी खाने में चवन्नी खर्च होती थी और चना-गुड़ आपने तीन आने का खाया। एक आने का बचा लिया। एक आने का क्या कर लिया। एक आना सन्तोषी माता भी दे देगी आपको। बस, तो ऐसी ही बात है। बड़ी चीजें आप नहीं पा सकते। बड़ी चीजों के लिए मेरे गुरुदेव ने कहा—कि तुझे तपाया जाना चाहिए और तुझे मजबूत बनाया जाना चाहिए। मैंने कहा—मैं मजबूत बनूँगा और मैं तपाये जाने के लिए भी तैयार हूँ। मेरे जीवन की शुरुआत है, मेरे जीवन की शुरुआत जब उन्होंने गायत्री यज्ञ की महत्ता बताना शुरू की, मैं आँखें फाड़-फाड़ कर देखता रह गया। उन्होंने कहा—बच्चे ! इस विश्व में महानतम सत्ता और शक्ति है, यदि आदमी उसे छुए तो क्या से क्या आदमी हो जाया करता है। उन्होंने मुझे संक्षेप में गायत्री मंत्र का माहात्म्य बताया और पाँच नामों के बारे में थोड़ी-सी जानकारी करायी। उन्होंने मुझे बताया गायत्री मंत्र उस पारस पत्थर का नाम है, जिसको छू करके लोहा सोना बन जाया करता है और उन्होंने मुझे बताया कि गायत्री मंत्र उस अमृत का नाम है, जिसको पी करके मरा हुआ आदमी जिन्दा हो जाया करता है और गायत्री मंत्र उस कल्पवृक्ष का नाम है, जिसके नीचे बैठकर के आदमी अपनी सारी कल्पनाएँ पूरी कर लेता है और गायत्री मंत्र उस कामधेनु का नाम है, जिसको पीकर के बूढ़ा आदमी जवान बन जाता है। गायत्री मंत्र उस ब्रह्मास्त्र का नाम है, जिसकी चोंच आदमी के व्यक्तिगत जीवन के अभावों को चकनाचूर कर सकती है और उसकी मुसीबतों को और उसके मार्ग में आने वाले अवरोधों को तहस-नहस कर सकती है। ऐसी है गायत्री माँ। मेरे गुरु ने मुझे बताया, आपके तरीके से पानी मेरे मुँह में भरकर आ गया। मैंने कहा—ऐसी बढ़िया चीज है, तो मैं चाहता हूँ वह बढ़िया चीज मुझे मिलनी चाहिए। मैंने गुरुजी से प्रार्थना की कि संयम गँवाने की अपेक्षा मुझे गायत्री मंत्र को प्राप्त करने की विधि बतला दीजिये और मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ और उन्होंने मुझे गायत्री मंत्र की विधि बतला दी। विधि, बहुत सरल है और मैं सुनकर बहुत खुश हुआ और इससे सरल विधि दुनिया में कुछ हो ही नहीं सकती। उन्होंने मुझे बताया कि लकड़ी की, चन्दन की, तुलसी की माला ले आओ और इसे अँगुलियों से घुमाना शुरू करो। मैं बहुत खुश हुआ।

मैंने कहा भई ये तो बहुत सस्ता धन्धा हाथ लग गया। चरखा कातती है बुढ़िया। चरखे में बुढ़िया को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। चरखे में जो माल है उसमें चिपचिपाहट नहीं होती, तो उसमें लाख लगाती है, ताकि वो चरखे की रस्सियाँ और उसके तकुए के बीच में चिपचिपाहट का जो तरीका है, वो कायम रखा जा सके। वो चिपचिपाहट खत्म हो जाती है, तो बुढ़िया वो चरखा कातना बन्द कर देती है। वो लाख लाती है और वह लाती है राल और चिपकाती है। चरखा घूमना शुरू कर देता है। अक्ल का काम है। ये अक्ल का काम है कि हाथ से कैसे सूत काता जाए ? मोटा हो गया, महीन हो गया कि ऊँचा हो गया, कि नीचा हो गया। बुढ़िया बहुत अकल का काम करती है। बुढ़िया हाथ को बहुत तेज नहीं चलाती है—धीरे चलाती है। जब वो चरखा चलाती है, तब उसमें से क़ातकर सूत पैदा होता है। दिन भर में चवन्नी कमाती है। मुझे बड़ी खुशी हुई कि माला में ये सब दिक्कत नहीं है और माला में कोई लाख नहीं लगानी पड़ती और चिपचिपाहट तैयार नहीं करनी पड़ती और माला में कोई हिसाब का अन्दाज नहीं रखना पड़ता। चाहे तो आप ११ माला जप लीजिए महीने भर में, घण्टे भर में चाहे तो २१ माला जप डालिए कोई रोकने वाला नहीं है और चाहे तो आप छह जपिए। खुद को ये सिखाने की बात नहीं है। जो मैंने सीखा खट् खट् हाथ घुमाते हुए चले जाइये। मैंने कहा, ये तो बहुत सस्ता है और इतने सस्ते में गायत्री माता मुझे मिल जाएगी और मुझे अमृत मिल जाएगा मुझे पारस मिल जाएगा, कामधेनु मिल जाएगी, बस, अब मैंने मारा मोर्चा। मुझे बहुत खुशी हुई और मेरे गुरुजी ने मुझे बताया कि पंचपात्र में पानी भरना चाहिए। तीन बार आचमन करना चाहिए और सिर पर हाथ रखना चाहिए, प्राणायाम करना चाहिए। इसमें कौन मुश्किल की बात है ? कसरत मैंने बहुत दिन सीखी। आसन सिखाये गये थे और मुझे प्राणायाम सिखाये गये थे। अमुक बात सिखायी गयी थी, इसके मुकाबले में ये क्या ? तीन बार आचमन कर लो, तीन बार क्या मैं तीन गिलास पानी पी जाऊँ, तीन बार से क्या होगा ? मैंने कहा—वाह ! ये बहुत सस्ता धन्धा हाथ लगा। इतना सस्ता धन्धा हाथ लगा, इतने कम दाम में इतनी चीजें मिल जाएँगी। बस, अब मैं मालदार हुआ और अब मैं मालदार हुआ। बस, वो कहता चला गया और मैं फूल-फूल कर कुप्पा होता चला गया और वो छोटी-छोटी बातें बताता गया। उसने कहा—तुमको माला जपनी चाहिए, पालती मार के बैठ जाना चाहिए, नहाकर बैठ जाना चाहिए और ऐसे करके बैठ जाना चाहिए। गायत्री माता की फोटो ले आनी चाहिए, धूप-बत्ती जलानी चाहिए। मैंने कहा ये भी कोई बड़ी बात है। मैं खर्च कर लूँगा इसमें क्या लगता है ? चार आने का एक बण्डल आता है धूपबत्ती का, धूपबत्ती को जला दूँगा। चार आने महीने का खर्च है और चार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आने तो खट् से बच जाते हैं। रोज धूपबत्ती जला दिया करूँगा। मेरा क्या बस ये सब बातें सुगम-सुगम मुझे मालूम पड़ीं और ये मालूम पड़ा कि गायत्री मंत्र की उपासना बहुत सरल है और इसके द्वारा बहुत फायदा हो सकता है। इतने कम दाम में इतना फायदा हो सकता है। मैंने लाटरियाँ बिकती देखी हैं, जिसमें कि ऊपर ये लिखा रहता है पाँच लाख रुपया इनाम मिलेगा और एक रुपया खर्च करो और मैंने लाटरियाँ बिकती देखी हैं, जिसमें लिखा रहता है फलाने की लाटरी में तीन लाख और यू. पी. की लाटरी में पाँच लाख और पंजाब की लाटरी में तीन लाख रुपये इनाम मिलेगा और वहाँ छपी हुई बड़ी-बड़ी रंगीन वाली रसीदें रखी रहती हैं। इसी तरह एक रुपया दिया और एक लाख, पाँच लाख रुपया मिलेगा। रुपया तो गया पर ख्वाब में आया अब पाँच लाख रुपये और पाँच लाख में से इतने रुपये का मकान, इतने रुपए का व्यापार और इतने रुपए का सोना, इतने लाख रुपये बैंक में और इतने लाख रुपये बच्चों के नाम। बस, सारी की सारी स्कीम बननी शुरू हो जाती है। ठीक उसी तरह से मेरी भी स्कीम बननी शुरू हो गई। जब मुझे सत्यवाली लाटरी मेरे गुरुदेव ने सिखा दी। मैंने कहा—भगवान करे, ऐसा गुरु सबको मिल जाए और ये सिखा दिया कि लकड़ी की माला घुमाना और चार आने महीने के खर्च से धूपबत्ती जलाना और पानी के पंचपात्र से तीन बार आचमन करना और चोटी पर हाथ धरना, गायत्री माता को हाथ जोड़ना और खट् से चावल-वावल एक आध फेंकना हो, तो फेंक देना, न फेंकना हो तो तुम्हारी राजी की बात है। जो कुछ करना हो जल्दी-जल्दी करना। खट् आया माल और खट् आयी लक्ष्मी। बस मुझे बहुत खुशी हुई। शुरू के दिनों में बहुत खुशी हुई, लेकिन जैसे ही वो बात कहना खत्म न हो पाया तब उसने एक नयी बात करना शुरू कर दिया। मैं बहुत गम्भीर हो गया। उसने कहा—बच्चे ! ये हमने तुझे वाह्य आवरण बताये हैं गायत्री के ये काफी नहीं हैं। उन्होंने कहा—ये काफी नहीं है, ये तो केवल आत्मा के विकास के लिए, बढ़ने के लिए शुरुआत के छोटे-छोटे तरीके हैं, जिनके आधार पर ऊपर चढ़ा जा सकता है। फिर उन्होंने बताया फाउण्टेन पैन देखा है। मैंने कहा—फाउण्टेन पैन देखा है, आसानी से मिलता है। फाउण्टेन पैन के द्वारा कविता लिखी जाती है। हाँ !. और फाउण्टेन पैन के द्वारा रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गीतांजलि लिखी थी, जिस पर उनको नोबिल पुरस्कार मिला था। हाँ ! मैंने कहा—फाउण्टेन पैन से लिखी थी। फाउण्टेन पैन बड़ा कीमती होता है। फाउण्टेन पैन न होता तब फिर रवीन्द्रनाथ टैगोर के लिए गीतांजलि लिखना मुश्किल था और गाँधी जी 'अर्जुन सेवक' का सम्पादन करते थे और 'अनीति के राह पर' क्या मजेदार किताब लिखी है और गाँधी जी के पास स्याही न होती और फाउण्टेन पैन न होता तब ? तब ये लिखना मुश्किल था। तब कोई आदमी ये कहने लगे कि वो बारह आने का फाउण्टेन पैन खरीदकर लाया और मैं रवीन्द्र नाथ टैगोर बना और मैं अब गीतांजलि का लेखक हुआ और मैं अब पुरस्कार लेकर आया। मुश्किल है, केवल फाउण्टैन पैन आदमी को रवीन्द्रनाथ टैगोर नहीं बना सकता। फाउण्टेन पैन का, स्याही का, तरीके से इस्तेमाल करना जरूरी है। फाउण्टेन पैन के बिना, कापी के बिना, कागज के बिना आप चिट्ठियाँ लिख नहीं सकते। चिट्ठियाँ लिखने की जरूरत है, कागज चाहिए और आपने कागज लिया, कलम उठाई और कलम से चैक लिखा और बस बैंक के नाम लिखा और उन्हें कहा—हमारे खाते में से ५००० रुपया ड्रा कर दीजिये।

खट से लड़का गया भाग करके और कागज का टुकड़ा दे दिया और खट् से बैंक में गया और कहा लाओ ५००० रुपया। ५००० रुपया दे दिया। बैंक वाले ने दे दिया, उठाकर के ठीक है। कागज के टुकड़े पर लिखे ५००० रुपये मिल सकते हैं, लेकिन अगर आपका ये ख्याल हो केवल कागज पर लिख देना ही काफी है। आप एक बढ़िया वाला कोई रंगीन खरीदकर लाए और बैंक वाले को दे दिया चैक में तो केवल यह लिखा था टु फलाने को और रुपीज सो एण्ड सो इतना ही लिखा था। आप एक लम्बी वाली चिट्ठी लिखिये।

श्रीमान जी, बैंक मैनेजर, महानुभाव, महाशय जी और आप बड़े योग्य हैं और आपने इस बैंक को बड़ी कुशलता के साथ चलाया है और मैं आपके हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि मैं एक गरीब बालक-विद्यार्थी हूँ और कृपा करके आप ५००० रुपया जैसे ही ये चिट्ठी मिले, वैसे ही इस पत्रवाहक के हाथ भेज दीजिए और मैं आपका बहुत-बहुत आभारी रहूँगा और मैं हूँ आपका सेवक—फलाना नाम। खट् से रंगीन वाली चिट्ठी, बढ़िया वाला कागज और बढ़िया वाला लिफाफा बैंक मैनेजर के नाम भेज दीजिये। बैंक मैनेजर पढ़ेगा और हँसेगा कि ये किस बच्चे ने लिखा है ? ये उस बच्चे ने लिखा है जिसका बैंक में कोई खाता नहीं है। तो फिर ये चिट्ठी से कैसे मिल सकता है ? चिट्ठी से नहीं मिल सकता। चिट्ठी सें बेहतर छोटी वाली स्लिप के ऊपर केवल नाम लिख देना और रकम लिख देना ही काफी है। रकम मिल जाएगी और अगर आपने लम्बी वाली चिट्ठी लिखी है और बैंक में आपका खाता नहीं है, तो आपको खाक भी नहीं मिलेगा। ये साइन्स है आध्यात्मिकता की, जो मुझे सिखायी और मुझे ये सिखाया गया कि कर्मकाण्ड बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और कर्मकाण्ड बहुत उपयोगी है और कर्मकाण्ड की बड़ी कीमत है और कर्मकाण्ड बहुत सही है; लेकिन कर्मकाण्डों के पीछे एक और चीज होनी चाहिए और उस चीज का नाम है—मनुष्य की भावनाएँ, विचारणाएँ, आदर्श और निष्ठा। अगर इन चीजों का समावेश हो जाएगा, तब फिर वो चीजें मिलने लगेंगी जो कि कर्मकाण्डों के माहात्म्य के रूप में बतायी गयी हैं। ये बात बतायी गयी हैं कलम के ऊपर उनके साइन कर देने पर, रकम लिख देने पर, चैक वाली कापी पर अगर आदमी भेज दिया जाए, तो रुपया मिल जाता है। ये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिद्धान्त सही हैं। लेकिन यह सिद्धान्त भी सही है कि आपके खाते में ५००० रुपए पहले जमा होना चाहिए। जमा न हों तब ? जमा तो आपका २५ रुपया है और आप २५०० रुपए का चैक काट दें, तब वापस हो करके आ जाएगा और वो आपने जिसको बैंक का गलत चैक दिया था, वो आप पर मुकदमा कर सकता है, तब आपको हथकड़ी डलवाकर जेलखाने भिजवा सकता है। आपने गलत चैक कैसे दे दिया ? गलत चैक कैसे दे दिया। मित्रो ! जमा करना बहुत जरूरी है। कर्मकाण्ड चैक काटने के बराबर है। कर्मकाण्ड फाउण्टेन पैन के बराबर है। मेरे गुरुदेव ने मुझे कहा कि कर्मकाण्ड, उपासना की विधि और विधान खेत में बीज बोने के तरीके से हैं। खेत में बीज बोया जाना चाहिए जरूर। खेत में बीज नहीं बोया जाएगा, तो उगेगा कहाँ से ? आप गेहूँ बोयेंगे, तो गेहूँ उगेगा, चावल बोयेंगे तो चावल उगेगा, जो कुछ भी आपने बोया है, वही उगेगा। लेकिन आपको चावल उगाने से पहले, गेहूँ उगाने से पहले एक और तैयारी करनी पड़ेगी कि वो बेहतरीन जमीन हो, जमीन की खुदाई की गयी हो और जमीन की गुड़ाई की गयी हो और जमीन में खाद डाला गया हो और जमीन में पानी लगाया गया हो। जमीन की रखवाली का इन्तजाम किया गया हो। ये सारे का सारा प्रबन्ध किया जाएगा, तो छोटा वाला बीज जरूर उगेगा और जरूर फल देगा। ये बातें जब मुझे सिखायी गयीं तो मित्रो ! मैं गम्भीर हो गया और मुझे पसीना आ गया—पसीना आ गया। मैंने कहा—मैं तो ऐसा समझता था कि ये तो सबसे ज्यादा सुगम, सबसे ज्यादा कमजोर, सबसे ज्यादा काहिल और सबसे ज्यादा कायरों का काम है, जो सबसे ज्यादा कायर हो, जो सबसे ज्यादा कमजोर हो। बस, भगवान् का नाम ले और सब फायदे उनसे उठा ले—सब फायदे उठा ले। लेकिन ये क्या कहा गया—ये तो मेरा सारा विचार ही पलट दिया और मेरी सारी निष्ठा ही उलट-पलट हो गयी। बात उनकी सही थी इसलिये समझ में तो आ गयी। समझ में आ गयी और इसलिये मेरा यकीन उनकी बात पर मजबूत होता चला गया। मुझे वह छोटी कहानी याद आयी जब एक छोटा-सा मच्छर—एक छोटा-सा मच्छर था और वह शहद की मक्खियों के पास गया और शहद की मक्खियों से कहने लगा—शहद की मक्खियो, हाँ, कि मैं संगीताचार्य हूँ। अच्छा ! मैं तुम्हारे बच्चों को संगीत सिखाऊँगा और मैं तुम्हारे बच्चों को दादरा सिखाऊँगा, ठुमरी सिखाऊँगा, कब्बाली सिखाऊँगा गजल सिखाऊँगा और मैं तुम्हारे बच्चों को शम्भू कब्बाल बना दूँगा, कहने लगा मच्छर ! शहद की मक्खियों ने कहा—क्या बात है ? हमारे बच्चों को शम्भू कब्बाल क्यों बनाते हो ? लता मंगेशकर तुम्हारी सब लड़कियों को बना दूँगा, कहने लगा मच्छर। लता मंगेशकर लड़कियों को बनाता है, शम्भू कब्बाल लड़कों को बनाता है। आखिर किस्सा क्या है ? और उसने कहा—मैं तो सिखाऊँगा ही, मैं तो सिखाऊँगा, सिखाने आया हूँ। रानी मक्खी के पास मक्खियाँ गयीं।

वो एक मच्छर बैठा हुआ है। तो क्या कहता है ? कहता है कि मैं तो सब तुम्हारी शहद की मक्खियों को संगीत की विद्यार्थिनी बनाऊँगा और संगीत में एम. ए. कराऊँगा और हर लड़की को लता मंगेशकर बनाऊँगा और हर एक बच्चे को अशोक कुमार बनाऊँगा। रानी मक्खी जरा गम्भीर हो गयी। अच्छा ! तो एक बात ये पूछकर आओ कि वो क्यों कहता है, क्या माँगता है, क्यों हमको सिखाता है, वजह क्या है ? उसकी नीयत पूछकर आओ। मक्खियाँ गयीं, उन्होंने कहा—हमारी रानी मक्खी ने यह पूछा है कि आप हमको क्यों सिखाने आये हैं ? मच्छर ने कहा कि मैं इसलिए सिखाने आया हूँ, बात यह है कि मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ती है और बहुत भाग-दौड़ करनी पड़ती है और तब मैं अपना खाना-खुराक इकट्ठी करता हूँ, कीचड़ में बैठा रहता हूँ, तो मुझे गंदगी खानी पड़ती है। ये तो ठीक नहीं और मैं चाहता था तुम्हारे यहाँ शहद पैदा होता है, तुम मुझे शहद खिला दिया करो और मैं तुम्हें गाना सिखा दिया करूँगा। इसीलिये मैं तुम्हें सिखाने आया हूँ। रानी मक्खी ने अपनी नौकरानियों से कहा, अच्छा ! ऐसे कहो। संगीताचार्य महोदय, विष्णु दिगम्बर से मना कर दो। यहाँ से चुपचाप चला जाए। तो वे बेचारी रानी वाली मक्खियों ने कह दिया—आपसे नहीं सीखना चाहते। तो उसने पूछा, क्यों क्या बात है, क्यों नहीं सीखना चाहतीं ? उन्होंने कहा—हमारी रानी मक्खी ने यह कहा है कि जिस संगीत को सीख करके और ये मच्छर हमारे दरवाजे पर भीख माँगने के लिए आया है और हमारी मक्खियाँ उस संगीत को सीखेंगी तो ये दरवाजे-दरवाजे पर भीख माँगने जाएँगी और ये परिश्रम नहीं करेंगी और ये उद्योग नहीं करेंगी और ये मेहनत नहीं करेंगी। ये पुरुषार्थ करना बन्द कर देंगी और ये काम करना बन्द कर देंगी। ये मशक्कत में दिनभर लगी रहती हैं, बन्द कर देंगी। बस, ये भी कोई सस्ता तरीका ढूँढ़ेंगी कहीं पर संगीत सिखा आयेंगी।

खट से फोकट का माल ले आएँगी फोकट का माल पाने की इच्छा—फोकट का माल पाने की इच्छा, मित्रो ! हजारों लोगों में पायी जाती है। जब ऐसी इच्छा पायी जाए, तो ये मान लीजिए कि यहाँ आध्यात्मिकता की निशानी नहीं है और यहाँ से आध्यात्मिकता बहुत दूर है। बहुत-से आदमी सन्त-महात्मा आपको दिखायी पड़ेंगे, जो आपको तरह-तरह की बातें बतायेंगे और अन्त में जब जाने लगेंगे तो कहेंगे—बच्चा एक कम्बल खरीदवा दो और जब जाने लगेंगे तो कहेंगे—बच्चा बद्रीनाथ की यात्रा करने जाना है, हमको एक पचास रुपये दे देना। सारा-का-सारा उनका गीता-रामायण पढ़ने के पीछे जो चक्कर बना हुआ बैठा रहता है वो ये रहता है किसी तरह से चेले से पैसे मिल जाएँ तो धन्धा चल जाए। उनको मैं कैसे अध्यात्मवादी कहूँ ? आध्यात्मिकतावादी वो नहीं हो सकते। जो जरूरतमन्द हो। अध्यात्मवादी वो होते हैं, जिन्होंने अपनी जरूरत पूरी कर ली है और अपनी जरूरत पूरी करने के बाद इतनी खुराक उनके पास बची हुई है कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई और आदमी आये, तो उसको देने के लिये आमंत्रित करें और आओ। जिस तरीके से मुसलमानों का रोजा होता है और शाम को रोजा खत्म किया जाता है, तो मुसलमान दूसरों को बुलाते हैं कि आओ भई लो, फरमाइये और इसमें से रोजा खोल लीजिए और हमारे पास चार रोटी हैं और छह मुसलमान रेल के डिब्बे में रहते हैं। जब रोजा खोलने का वक्त हो जाता है, छहों आ जाते हैं और एक ही गमछे पर चारों रोटी बिछा ली जाती हैं और आधी-आधी रोटी खा लेते हैं और रोजा खोल लेते हैं। इस तरह की तबियत अगर हर इनसान के भीतर पैदा हो, तो जानना चाहिए कि आध्यात्मिकता की निशानियाँ, आध्यात्मिकता का सुरूर, आध्यात्मिकता का नशा आदमी के भीतर आ गया। मेरे गुरुदेव ने मुझे सिखाया। मैं गम्भीर तो हो गया। फिर ये बात मेरी समझ में आ गयी कि कीमती चीजें खरीदनी हैं, तो उसके बदले में कीमती चीजें चुकानी भी चाहिए और मैं खुशी-खुशी तैयार हो गया। मित्रो ! आध्यात्मिकता का पहला शिक्षण जो गुरुदेव ने मुझको दिया उसने कहा—कर्मकाण्डों का बाह्य कलेवर इसके भीतर छिपा हुआ बैठा है—प्राण। नारियल का बाहर वाला कलेवर नारियल के बाहर वाले कलेवर को जब छीलकर देखते हैं तो छिलके से बचाव तो नारियल का होता है, चिड़ियों के खा लेने से बचा लेता है और नारियल के भीतर का जो पानी है, वह ठंडा बना रहता है, गर्म नहीं होता, छिलका जरूरी है। छिलका को आप छील देंगे तो भीतर वाला नारियल को फैलना मुश्किल पड़ जाएगा और गिरी का पकना कठिन हो जाएगा। छिलका बहुत जरूरी है। लेकिन छिलके से भी ज्यादा जरूरी इसके अन्दर का ठण्डा-ठण्डा पानी है, जिसको हम पीते हैं थोड़ा-सा भी मजा आता है हमको। हम गिरी खाते हैं मिश्री मिलाकर के तो ऐसी बढ़िया मालूम पड़ती है। असली चीज वह है, छिलका असली चीज नहीं है। कर्मकाण्ड छिलका है। कर्मकाण्ड आध्यात्मिकता का छिलका है और आध्यात्मिकता की जो गिरी है, वह नारियल के तरीके से भीतर बनती जाती है, वह उसकी विचारणा, भावना और मान्यताएँ हैं।

मान्यताओं, विचारणाओं और धारणाओं के क्षेत्र में मेरे गुरुदेव ने मुझे प्रवेश करवाया। पहला शिक्षण और पहले दिन का पाठ मुझे बताया। मैं चाहता हूँ कि वही पाठ आपको भी सिखा दूँ। पहले दिन का पाठ जो मुझे गायत्री के तीन चरणों में से पहले चरण का आध्यात्मिक स्वरूप समझाया गया बड़ा ही मजेदार और बड़ा ही महत्त्वपूर्ण था। मुझे सिखाया गया कि अपने आपको जानो। बात जरा-सी है, छोटी-सी है। आपने हजारों बार सुनी होगी और आप दूसरों को सिखाते होंगे। बाइबिल में ईसामसीह यही कहते रहे, उनका महत्त्वपूर्ण मंत्र एक ही है 'नो दाइसेल्फ'—अपने आपको जानो और हमारे उपनिषद्कार भी हमको यही कहते रहे, ज्ञान का शिक्षण भगवान का शिक्षण, आत्मा का शिक्षण देने के साथ-साथ एक ही बात बतायी और उन्होंने यही बतायी—**'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो।'** ऐ मनुष्यो ! अपने आपको जानो, अपने आपको समझो, अपने आप के बारे में विचार करो और अपने आपका निदिध्यासन करो। ये शिक्षण आध्यात्मिकता का सार है। ये सार, अगर मनुष्य के भीतर रत्ती भर भी प्रवेश कर सकता हो, तो मित्रो ! यह ऐसा साँप का जहर है एक डंक आदमी के भीतर लगा हो, उसको नशा आने लगे। ये वो बिच्छू का डंक है। एक बार आदमी को लगा वह तड़पड़ा गया। ये वो चीज है, ये वो शराब है कि एक बार जिस आदमी ने आध्यात्मिकता की शराब पी, उसको वो मस्ती आयी—वो मस्ती आयी कि वो साँप की तरह से लहराने लगा। अगर ये शब्द आदमी के भीतर प्रवेश कर सकते हों तब। कान से टक्कर खाते हों, तो बेकार है। कान से टक्कर खाने पर कोई ज्ञान कोई फायदेमन्द नहीं हो सकता। आदमी के दिमाग में कोई ज्ञान भरा हुआ हो। जानकारी में कोई चीज भरी है, उससे कुछ भला नहीं हो सकता। आपके दिमाग में भी ये चीज भरी है—बुखार को दूर करने के लिए कुनैन काम में आती है क्या बनने वाला है। हमको मालूम है कि बुखार आ जाएगा। हमको मालूम है अभी हम बता रहे थे अभी हम ठीक कर देंगे। क्या दवा है भाईसाहब कुनैन कैसी होती है, कितने पैसे की आती है, तैंने खायी है क्या ? नहीं साहब ! खाते नहीं हम। अरे बाबा, मुझे मालूम है नहीं, साहब हम खाते नहीं हैं। कुनैन से अच्छा हो जाता है, बताता है नहीं कहाँ से कुनैन आयी खाँसी कैसे जाएगी, किसके साथ खायी जाती है ?

पानी के साथ खाते हैं, दूध के साथ खाते हैं, कितने ग्रेन की टिकिया खाते हैं। ये भी कुछ मालूम ही नहीं है। हमको मालूम है कुनैन से बुखार दूर हो जाता है। कुनैन से बुखार अच्छा हो जाता है—ये जान लिया ये काफी नहीं है। रामायण पहले पढ़ ली है, ये काफी नहीं है। गीता तूने पढ़ ली काफी, कुछ भी नहीं है। भागवत् तूने पढ़ ली इसमे कोई उद्देश्य पूरा नहीं होता। उद्देश्य होता है तब, जो बातें गीता में लिखी हुई हैं भागवत् में लिखी हुई, रामायण में लिखी हुई हैं, वो हमारे जीवन में जब प्रवेश करने लगें तब आदमी को मस्ती आती है, खुमारी आती है। शराब की बोतल आप खरीदकर ले जाते हैं। ये कौन-सी शराब है ? कौन-सी लाए ? ये लाए साहब ब्राण्डी, क्या लाए व्हिस्की, ये कौन-सी लाए ? रम। तो साहब, आपको नशा आता है। नहीं साहब, हमको अभी तो नशा नहीं आ रहा है। नशा कैसे नहीं आया ! रम में तो बहुत नशा होता है। ब्राण्डी तो बहुत नशा देती है, इसको पीकर तो आदमी पागल हो जाते हैं, आदमी बेहोश हो जाते हैं। आप क्यों नहीं हुए ? बात यह है कि हमारा अभी पैक बन्द किया हुआ रखा है; कार्क लगा हुआ है; कार्क खोला नहीं है। कार्क नहीं खोलेंगे, तो नशा नहीं आएगा। कार्क खोलना ही चाहिए और एक प्याला पी जाना चाहिए। एक प्याला जब आप पी जाएँगे, तब आपको एक नशा आएगा और ये खुमारी आएगी और आपकी शक्ल अलग-सी लगेगी कि मैं भगवान का पुत्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हूँ—'सोऽहम अस्मि' सोऽहम, 'सोऽहम' का जप मुझे बहुत पहले मेरे गुरु ने बता दिया था। एक आदमी ने मुझे बता दिया था और ये बता दिया था साँस के साथ में सोऽ और निकलने के साथ में हम। मैंने बहुत दिन जप कर लिया था। लेकिन सोऽहम्, सोऽहम् कहते मेरे जीवन में कोई फर्क नहीं पड़ा था; लेकिन जिस दिन मुझे ये ख्याल आया, जिस दिन मुझे ये खुमारी आई कि मैं वो हूँ, मैं वो हूँ। तो मेरा कायाकल्प हो गया और मेरे विचार करने की सारी-की-सारी समस्याएँ उलटी हो गयीं। उलटी हो गयीं।

अभी एक लड़का अफ्रीका से आया था पहले शिविर में। पहले शिविर में अफ्रीका में इंजीनियर था, केनिया में काम करता था। तीन चार दिन रहा मेरे पास तो मैंने पूछा बेटा वहाँ कैसा काम चलता है ? गुरुजी, वहाँ बढ़िया आमदनी है। तो हमने कहा बढ़िया आमदनी से वहाँ तुमने जायदाद खरीदी। अजी, नहीं हम तो किसी तरीके से उल्टा-पुल्टा-सीधा जो भी तरीका निकलता है, उस रुपये को हम हिन्दुस्तान भेजते हैं। क्यों ? यहाँ क्यों भेजते हो ? इसलिए भेजते हैं कि सारे भतीजे यहीं रहते हैं, सबके सब यहीं रहते हैं। यहीं मकान बनायेंगे, मरेंगे तो यही मरेंगे। वहाँ गोरे जंगलियों में क्या करेंगे ? अफ्रीकन भाषा और नीग्रो लोग हैं। हम नहीं रहेंगे वहाँ। हम फैमिली यहीं लायेंगे। बच्चे यही पढ़ायेंगे। बच्चों की ब्याह-शादियाँ जंगली अफ्रीकियों में करेंगे क्या ? जो टट्टी जाकर के और टट्टी भी नहीं धोते हैं। उनमें हम तो नहीं रहेंगे। बेटा, वहाँ बहुत रुपया, बहुत कमाई होती है। वहाँ खाने को बहुत मिलता है। वहाँ नहीं रहेंगे, गुरुजी हम तो यहीं रहेंगे। हम यहीं रहेंगे तो वहाँ कुछ मकान बना लिया। नहीं साहब ! कह तो दिया वहाँ हम नहीं बनायेंगे। हम यहीं बनायेंगे। कमाई वहाँ करते हैं और हम यहाँ भेजते हैं। अफ्रीका निवासी लड़का केनिया में रहने वाला इन्जीनियर अभी गया है। ३-४ दिन हुए तब। बाद में मैं विचार करता रहा, इसमें और हमारे में फर्क क्या है ? फर्क ये है—इसकी समझ में यह आ गया कि मैं हिन्दुस्तान का रहने वाला हूँ और मेरा हिन्दुस्तान से ही काम है और मैं असली में हिन्दुस्तान का निवासी हूँ और यहाँ ? मैं तो थोड़े दिन के लिए रुपया कमाने के लिए आया हूँ, टेम्प्रेरी हूँ, यहाँ से जो कुछ पल्ले पड़े लूट-खसोट करके जल्दी-जल्दी कमा करके हमें घर को ले चलना चाहिए। दृष्टिकोण है उसका। हाँ, मकान बना लिया या किराये के में रहता है तो बेटा, रहने को घर बना ले तू इतना कमाता है। नहीं साहब ! मकान बनाने के लिए नहीं कमाता। किराये में रहूँगा मुझे क्या करना है ? ऐसी उपेक्षा की बात वह कर रहा था। जहाँ से कमाता है, जहाँ मौज करता है, जहाँ रहता है, जहाँ खाता है, वहाँ उपेक्षा की बात कर रहा है।

मनुष्य के दिमाग में जब ये मैं आती है, जब ये नशा आता है, अहसास आता है कि मैं कौन हूँ तो उसको यह मालूम पड़ता है कि मैं कीड़ा-मकोड़ा नहीं हूँ और इस जमीन पर रेंगने वाले छोटे-छोटे जीवों की अपेक्षा मैं भिन्न हूँ कि मैं भगवान का बेटा हूँ और भगवान के गाँव का रहने वाला हूँ और मेरा असली वतन वो है और मेरा असली पिता असली प्यार करने वाला यहाँ है। उसकी औरत यहाँ रहती है। अफ्रीका से हर महीने साड़ी भेजता। अफ्रीका से हर महीने अपनी माँ को रुपये भेजता। अफ्रीका से वहाँ से—भेजता रहता हूँ। जानते हो मेरी माँ यहाँ रहती है, मेरा बाप यहाँ रहता है और वहाँ तो ऐसे ही दुकानदार हैं उल्लू। उनको तो मैं ऐसे ही ठगता रहता हूँ। यहाँ मेरा असली घर है। ठीक मनुष्य के भीतर एक ऐसा ही दृष्टिकोण विकसित होता है, जब उसको यह मालूम पड़ता है 'सोऽहम् अस्मि' अपने आपको जान। आपको जान लेता है तो यह कहता है ये धर्मशाला है—ये सराय है। धर्मशाला के तरीके से, सराय के तरीके से काम करने के लिए आया हूँ और मैं यहाँ ड्रामा कर रहा हूँ। ड्रामा करने वाले, मंच पर करने वाले नट आपस में दुःखी नहीं होते। एक था राजा और एक था दूसरा राजा। ड्रामे के मंच पर लड़ाई हुई। एक ने तलवार चलायी और उसका सिर काट डाला। बस वह उछलने लगा। दस मिनट में जमीन पर सो गया और वो सब आ गये और उसको उठा ले गये। जब वह मर कर चला गया। पूछा गया तेरा तो सिर काट लिया था तेरे को तो बड़ा दुःख हो गया होगा, स्वर्ग गया कि नहीं गया। अरे ! गुरूजी, ये तो तमाशा था। तेरा तो सिर काटा डाला था, तू तो मर गया था। ऐसे ही काट डालते हैं सिर, रोज कटते हैं इतने सिर। यहाँ तो एक ही दिन में दो-दो बार ड्रामा होता है और वह हर बार हमारे सिर कट जाते हैं, ऐसे ही हम रोया करें, चिल्लाया करें तो हमारा क्या बिगड़ जाता है ?

मित्रो ! दृष्टिकोण में जमीन-आसमान का फर्क पड़ जाता है, उस दिन जिस दिन आदमी को ये मालूम पड़ती है कि मैं कौन हूँ ? जिस दिन मुझे गायत्री का पहला चरण इस रूप में सिखाया गया है कि तू भगवान है—भगवान का बच्चा है, तो मैंने अपने भगवान को देखना और समझना शुरू किया। मेरा भगवान कहाँ है, मेरा बाप कहाँ है, मेरा प्रियतम कहाँ है, मैं प्रियतम को देखूँगा, उनको खुश करने की कोशिश करूँगा और उस प्रियतम की सेवा करूँगा और प्रियतम के साथ-साथ रहा करूँगा। आँखों से मित्रो, जब मैंने देखा तब वो गीता वाले अर्जुन की आँखें मेरे भीतर लगी हुई थीं। गीता वाले अर्जुन को भगवान ने कहा था कि चमड़े की आँख से भगवान को नहीं देखा जा सकता और चमड़े की आँख से देखने के लिए मेरे बहुत दिन से ख्वाब थे, वे तहस-नहस हो गये। मेरा यह ख्याल था कि बद्रीनाथ जाऊँगा और भगवान जी को देखकर के आऊँगा। मेरा ये ख्याल था जगन्नाथ जी जाऊँगा और भगवानजी को देखकर आऊँगा। और मेरा यह ख्याल था कि मैं उज्जैन में शंकर भगवान को देखकर आऊँगा और जब मेरा यह ख्याल था बनारस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाऊँगा और शंकरजी के दर्शन करके आऊँगा और मैं वृन्दावन जाऊँगा और श्रीकृष्ण भगवान को देखकर आऊँगा। मेरा ख्वाब तहस-नहस हो गया और और मेरे दिमाग में एक ही चीज विकसित हो गयी कि भगवान, भगवान को चमड़े की आँख से नहीं देखा जा सकता और मैंने चमड़े की आँखों से देखने वाले भगवान को केवल ध्यान की एकाग्रता का छोटा वाला माध्यम मात्र मान लिया। असली भगवान जो मैं देखना चाहता था वो कौन-सा था ? वो अर्जुन को दिखाया गया था। अर्जुन को इस मायने में दिखाया गया था कि सारे-का-सारा विश्व-ब्रह्माण्ड देख अर्जुन, मेरा ही रूप है और भगवान ने अपनी माँ यशोदा को एक बार मुँह खोलकर दिखाया था। सारे-का-सारा विश्व-ब्रह्माण्ड देख यशोदा, मेरा ही रूप है और एक बार भगवान राम ने अपना स्वरूप अपनी माँ कौशल्या को दिखाया था कि देख ! मैं मनुष्य तो हूँ; लेकिन असली भगवान तुझे देखना है तो ये विश्वब्रह्माण्ड मेरा ही रूप है। मित्रो ! मैंने, अपनी आँखों से खोलकर देखा। एक बार मेरी अज्ञान की आँखें थी जब मुझे भेड़-बकरियों के तरीके से, गंदे और नाचीज मनुष्य, स्वार्थी और संकीर्ण मनुष्य दिखायी पड़ा करते थे, लेकिन जब मुझे आत्मज्ञान का एक नशा और एक खुमार आया तो मैंने सारे विश्व को देखा और मैंने देखा कि ये सारे-के-सारे प्राणी और सारा-का-सारा ये विश्व भगवान का विशुद्ध स्वरूप है और इसका हर रोम और हर रूप, हर रोम ये वृक्षों के तरीके से इसका हर अंग-प्रत्यंग प्राणियों के तरीके से दिखायी पड़ता रहता है, मेरी आँख से विराट् ब्रह्म रूप दिखायी पड़ने लगा और मैंने देखा यही मेरा प्रियतम है और यही मेरा आराध्य है और यही मेरा इष्टदेव है। बहुत दिन पहले जी में आया था कि दुनिया में खूब लोगों की हजामत बनानी चाहिए और अपनी जेब भर लेनी चाहिए। मैंने कहा—नहीं, अपने प्रियतम की मैं हजामत नहीं बना सकता और प्रियतम को दुःखी करके मैं सुखी नहीं रह सकता। भला कोई औरत ऐसी भी दुनिया में होती है जो अपने पति को खाने की चीजों को चुरा लिया करे, पति के खाने में से घी चुरा लिया करे, पति के खाने में से साग चुरा लिया करे। रोटी खा लिया करे और पति भूखा रह जाए और खुद जलेबी खाया करे। ऐसी कोई औरत देखी है आपने ? ऐसी वेश्याएँ हो सकती हैं और कोई नहीं और वह भगवान का भक्त कैसा होगा जो अपने दुःखों में डूबा हुआ पड़ा रहे, अज्ञान में डूबा हुआ पड़ा रहे और स्वयं अपनी सुविधाओं का अभिवर्द्धन करने के लिए अपनी ख्वाहिशों, तमन्नाओं, इच्छाओं, वासनाओं को बढ़ाने के लिए काम करता रहे। ऐसी कोई बफादार औरत नहीं हो सकती। मेरे मन में आया और मेरी आँखें कपाट के तरीके से खुल गयीं। ये सारा विश्व, मानव, मुझे भगवान दिखायी पड़ने लगा और रामायण की वह चौपाई का मुझे साक्षात्कार हो गया, जो मैंने हजारों बार पढ़ी थी; लेकिन जिसका मतलब मैं जरा भी नहीं समझ सका था। रामायण का रहस्य और रामायण का सार तुलसीदास जी ने इस छोटी-सी चौपाई में जमा करके रखा है और वह चौपाई है—

सिया राम मय सब जग जानी।
करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी।।

भगवान के साक्षात्कार का असली सुख अगर किसी को देखना हो, तो इसी चौपाई के अन्दर सारा-का-सारा सार और रहस्य भरा पड़ा है, जहाँ कोई आदमी चाहे तो भगवान को देख सकता है। ये सारे-का-सारा विश्व, जिसमें कि पीड़ित मानवता के रूप में कराहती हुई अन्तःप्रेरणा और ये इस विश्व में फैली हुई कुरूपता और उसमें फैली हुई गरीबी—ये मुझे बुला करके कहा कि भगवान मुझसे माँगता है और मैं भगवान को देने के लिए तैयार हो गया। भगवान को मैंने देखा और मुझे भगवान का साक्षात्कार हो गया। पहले दिन गायत्री का पहला चरण मुझे सिखाया गया और मित्रो !. मुझे आत्म-साक्षात्कार हो गया।

ब्रह्म-साक्षात्कार और आत्म-साक्षात्कार आध्यात्मिकता के दो महत्त्वपूर्ण अध्याय माने जाते हैं और ये दो चरण, जो आदमी पूरे कर लेता है, वो सिद्धपुरुष माना जाता है, परमहंस माना जाता है और पहले दिन गायत्री का पहला चरण जो मुझे सीखने के लिए मिला, मैंने जब पूर्ण तरीके से प्राप्त कर लिया, तो मैं सिद्धपुरुष हो गया—परमहंस हो गया। सिद्धपुरुष और परमहंस होने के दो ही तरीके हैं—आत्म का ज्ञान और परमात्मा का ज्ञान। परमात्मा का ज्ञान—विश्व-मानव में फैला हुआ भगवान। और धर्म और संस्कृति, सदाचरण और संस्कार के बीच में विद्यमान मानव, ये विचार जब मेरी समझ में आया तो मुझे ऐसा मालूम पड़ने लगा कि भगवान मेरे पास है और मैं भगवान के साथ। और जब मैंने अपने आप का स्वरूप देखा तो मेरे जीवन की समस्याओं में आमूल-चूल परिवर्तन हो गया। पहले मेरा ये ख्याल था कि मैं दुनिया में बड़ा आदमी बनने के लिए पैदा हुआ हूँ—मैं मजा उड़ाने के लिए पैदा हुआ हूँ—मैं अपने अहंकार और बड़प्पन की छाप दूसरों पर डालने के लिए पैदा हुआ हूँ, लेकिन मेरा सारे-का-सारा मजा गायब हो गया और मुझे ये आत्म-साक्षात्कार हुआ जब मुझे ये मालूम पड़ा कि मैं भगवान का नन्हा-मुन्हा बच्चा हूँ और भगवान ने सारी-की-सारी कला और सारी-की-सारी अपनी विभूति को समेट करके मुझ जैसे नाचीज प्राणी को बनाया और मैं उसका सहायक और मैं उसका हेल्पर और मैं उसका असिस्टेण्ट हूँ। उसकी दुनिया में ज्यादा खूबसूरती लाने के लिए, खुशबू पैदा करने के लिए मेरे जीवन का लक्ष्य और जीवन का उद्देश्य बन गया। वो सारे-के-सारे मेरे ख्वाब चकनाचूर हो गये, जिसके मुताबिक मेरा ये ख्याल था कि मैं दुनिया में बहुत-सी दौलत इकट्ठी करूँगा और बहुत विशाल इनसान कहलाऊँगा। मैंने यह विचार किया तो मेरे सामने यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहस्य उठ करके खड़ा हो गया कि आदमी के उपभोग करने की सीमा सीमित है और दुनिया में भगवान का बहुत सारा सामान है; लेकिन उसमें आदमी सब इस्तेमाल नहीं कर सकता, खर्च नहीं कर सकता, पा नहीं सकता। इकट्ठी कर सकता है तमाशा देख सकता है; आप सौ मन गल्ला तो इकट्ठा कर सकते हैं; पर रोटियाँ आप चार ही खा सकते हैं, पाँचवीं रोटी आप खायेंगे, उलटी हो जाएगी, दस्त हो जाएँगे, पेट में दर्द हो जाएगा। चार रोटियों पर हक है, पाँचवीं पर नहीं। इकट्ठी कर लीजिए। अपने घर में रखा रहने दीजिए आपकी इच्छा। पड़ोसी के घर में रखा रहने दीजिए आपकी इच्छा। आप रोएँ, आप दुःखी हों आपकी पसन्द की बात है।

एक आदमी था वह जंगल में चला गया। जंगल में जाकर उसने सोना-चाँदी मिट्टी के घड़े में रखा और गाड़ दिया। वह जंगल में कई बार जाया करता और देखा करता मेरा सोना और मेरी चाँदी जो जंगल में रखी हुई है वो ठीक है कि नहीं। एक बार एक चोर था, उसने देखा ये सेठ बार-बार आता है और देखा करता है। कुछ-न-कुछ होना चाहिए। बस, जैसे ही सेठ उस दिन गया, दूसरे दिन उसने कुरेदना शुरू किया। उसने देखा कि मिट्टी का घड़ा, सोना भरा रखा है। सोने-चाँदी के जेवर रखे हैं। खट निकाल ले गया और वहाँ उसने मिट्टी भर दी। दूसरे दिन सेठ आया और तलाश करने लगा। हमारा सोना-चाँदी रखा हुआ था इसमें कुछ भी नहीं रहा। रोने लगा, चिल्लाने लगा। जंगल था वहाँ, जंगली लोग रहते थे। जंगली लोग इकट्ठे हो गये। जंगलियों ने ये पूछा—क्या हुआ आपको ? क्या कष्ट हो गया आपको ? उन्होंने कहा—यहाँ हमारा धन रखा था और कोई चुरा ले गया। उन्होंने कहा—फिर आपके किस काम आता वो धन ? उन्होंने कहा—हमारे तो काम नहीं आता था; पर हमने पीछे के लिये कभी जमा करके रखा था। तो फिर क्या हुआ ? कोई चोर ले गया, तो आपको क्या हर्ज है ? आपके तो काम वह आ भी नहीं रहा था। हाँ, वह हमारे काम नहीं आ रहा था तो ऐसी चीज, जो आपके काम नहीं आ रही थी, किसी और के काम में आ जाए, तो उसमें आपको क्या शिकायत हो सकती है ? उसने बहुत देर समझाया—चोर ले गया, हमारा सारा पैसा चोर ले गया। जंगलियों के पास कोई पैसे तो थे नहीं, पैसे कभी देखे भी नहीं थे। एक-दूसरे की तरफ देखते रहे कि इनका दिमाग सही है या गलत। इसके पास पैसा था पहले और वो जमीन में रखा था, काम नहीं आ रहा था और जो चीज काम में नहीं आ रही थी, वो किसी और के काम में आ जाए, तो बेकार में ये क्यों चिल्लाता है और क्यों रोता है ? सेठ ने बहुत समझाया हम पैसे वाले थे, इसे हमने कमाया था, व्यापार में कमाया था और हमारा पैसा और कोई क्यों ले गया ?

बेटे ! मनुष्य की नासमझी ही उसे हर वक्त परेशान करती रहती है। धन की कमी और साधनों का अभाव परेशानी का कारण नहीं है। घटिया चिन्तन ही इसका सबसे बड़ा निमित्त है जिस दिन इसमें वह आध्यात्मिकता का सम्मवेश कर लेगा, उस दिन उसे शान्ति भी मिलेगी और भगवान का एहसास भी होने लगेगा। उसे सम्पूर्ण विश्व में इसी की प्रतिछाया दिखाई पड़ने लगेगी और वह समाज के निमित्त, राष्ट्र के निमित्त, विश्व के निमित्त अपने श्रम, साधन लगाने लगेगा, ताकि उनका उत्थान हो सके। वास्तविक आत्मबोध यही है। यथार्थ भगवद् दर्शन इसे ही कहते हैं। इसी स्थिति में उनके अनुग्रह और अनुदान प्राप्त होते हैं, इससे कम में नहीं। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

जाग्रत आत्माओं को हमारे अजस्र अनुदान

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

एक विद्यार्थी अच्छे नम्बरों से पास कर गया। आगे चलकर उसे अच्छी नौकरी मिल गई। इसका मतलब आप क्या समझते हैं ? यह किस कारण से हुआ ? यह उसकी मशक्कत एवं उसके पुरुषार्थ से सम्भव हुआ। पुरुषार्थ नहीं करता एवं किताबों पर ध्यान नहीं देता, तो पास हो सकता था ? नहीं, वह कभी भी पास नहीं हो सकता था। अगर कोई देहात में पैदा हुआ होता, खानदान वाले शिक्षा का महत्त्व नहीं जानते; वहाँ स्कूल आदि न होता, तो आदमी कैसे पढ़ सकता था ? अक्ल अगर पैनी न होती तो ? जन्म से ही पागल होता तब ? क्या वह मशक्कत या पुरुषार्थ से पास हो सकता था ? कदापि नहीं। चाहे वह कितना भी परिश्रम कर लेता, वह सफल नहीं हो सकता था। उसका भाग्य ठीक नहीं था। भाग्य किसे कहते हैं ? जो जीवन से सम्बन्ध रखता है। पुरुषार्थ किसे कहते हैं ? जो हाथ-पाँव से सम्बन्ध रखता है। दिलचस्पी से काम करने का नाम पुरुषार्थ है। इसके साथ ही भाग्य भी होना चाहिए। भाग्य न हो तो मनुष्य का काम कैसे चलेगा ? फसल के लिए जमीन न हो, तो कैसे काम चलेगा ? आदमी का व्यक्तित्व न हो, तो कैसे काम चलेगा ? बच्चा जो गंदा होता है, उसे कोई गोदी में लेना नहीं चाहता है। अच्छा सुन्दर बच्चा सब कोई ले लेता है। उसे सब प्यार करते हैं। भाग्य जन्मजात परिस्थितियाँ होता है। जन्म से बुद्धि, परिस्थितियाँ भी साथ आती हैं।

मित्रो ! एक चीज और है, जिसके द्वारा मनुष्य सफलता प्राप्त करता है। उसका नाम अनुदान है। एक खाते-पीते बाप ने अपने बच्चों के लिए फीस दी, उसके पढ़ने के लिए व्यवस्था बनायी। ट्यूशन के लिए अच्छी-से-अच्छी व्यवस्था की, जिसके द्वारा लड़का अच्छे नम्बरों से पास कर जाता है। इसका क्या नाम है ? बेटे ! इसका नाम है—'अनुदान'। अनुदान किसे कहते हैं ? मित्रो ! आदमी का भाग्य एवं आदमी की मेहनत के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अलावा जो चीज मिल जाती है, उसका नाम है—'अनुदान'। अगर आदमी को अनुदान न मिले, तो आदमी की प्रगति रुक जाती है।

लालबहादुर शास्त्री के पिताजी का देहान्त हो गया। उनकी माताजी चार बच्चों को लेकर अपने मायके चली आईं। बाप केवल बीस रुपये के प्राइमरी स्कूल के मास्टर थे। जहाँ शादी हुई थी, वहाँ कोई नहीं था। बाप के लिए बड़े संकट का समय था। उनके भी चार बच्चे थे। स्वयं दो व्यक्ति थे। बेटी तथा उसके चार बच्चे थे। आठ बच्चे हो गये। उसी में गुजारा करने लगे। आगे चलकर वे लालबहादुर शास्त्री बन गये। जब लालबहादुर शास्त्री बड़े हो गये तथा गाँव में प्राइमरी स्कूल से पास कर गये, तो उन्होंने कहा नानाजी हमें आगे पढ़ा दीजिए। हम पढ़ेंगे, मशक्कत करेंगे, हमें पढ़ा दीजिए। नानाजी ने कहा—बेटे ! हमें ३० रुपये मिलते हैं। हर आदमी के हिस्से में केवल ढाई रुपये आते हैं। इसमें चाहो, तो तुम पढ़ सकते हो। वे पुरुषार्थी थे। ढाई रुपये लेकर चल पड़े। इलाहाबाद जा पहुँचे। ढाई रुपये में से दो रुपये में गुजारा करने लगे। ५० पैसे में यानी आठ आने में किताबें खरीदकर पढ़ने लगे। एक रुपये का आटा ले आते थे। जंगल में से लकड़ी चुनकर ले आते थे तथा किसी प्रकार अपना जीवनयापन करके उन्होंने पढ़ाई कायम रखी तथा प्रगति के पथ पर बढ़ते चले गए। मित्रो ! इसे क्या कहते हैं ? बेटे ! इसे पुरुषार्थ कहते हैं, इसे भाग्य कहते हैं।

एक बार घर जाने का समय आ गया। उस समय लोग एक पैसा में नाव से गंगाजी को पार कर लिया करते थे। लालबहादुर के पास एक पैसा नहीं था कि वे गंगाजी को पार कर सकें। वे गंगाजी को तैरकर पार किए तथा अपने घर पहुँच गए। मित्रो ! यह था—पुरुषार्थ ! यह था भाग्य ! उन्होंने दुनिया के सामने हाथ नहीं पसारा तथा भीख नहीं माँगी। पुरुषार्थ तथा जोखिम भरे साहस के साथ गंगाजी को पार कर गये। यह मैं भाग्य की बात, पुरुषार्थ की बात कह रहा था। ढाई रुपये में वे पुरुषार्थ करते हुए पढ़-लिख लिए तथा भारत के प्रधानमंत्री बन गए।

मित्रो ! यह क्या बात कर रहे हैं ? यह बात अनुदान की कर रहे हैं। अनुदान क्या है ? यह महत्त्वपूर्ण चीज है। काँग्रेस के अन्दर जवाहर लाल नेहरू को एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो कर्त्तव्यपरायण हो, मेहनती हो, पुरुषार्थी हो, ईमानदार हो, अपने कार्य के प्रति वफादार हो। उन्होंने पूरे काँग्रेस पार्टी के ऊपर निगाह डाली तथा चिन्तन किया। उन्हें एक ही व्यक्ति उसमें दिखाई पड़ा, जिसका नाम लालबहादुर था। लालबहादुर को वे साथ ले गए तथा उन्होंने कहा कि तुम हमारे साथ काम करो। हमें तुम्हारे जैसा व्यक्ति चाहिए। लालबहादुर, नेहरू जी के साथ चले गए। उनके साथ काम करने लगे। उनकी कार्यशैली, परिश्रम, ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता तथा उनके व्यक्तित्व से नेहरूजी प्रभावित होते चले गए। आदमी के व्यक्तित्व का एक वजन तथा तौल होता है। अगर आपका व्यक्तित्व वजनदार होता, तो आप एक महान आदमी होते। जिनके अन्दर ये चीजें नहीं होती हैं, वे इस संसार में मारे-मारे फिरते हैं तथा कोई भी उनको पूछता नहीं है। जिनका वजन तथा व्यक्तित्व होता है, उनकी सब जगह कद्र होती है। आदमी के लिए काम न जाने कितना है ? परन्तु उनका वजन, व्यक्तित्व है या नहीं—यह लोग देखते हैं। लालबहादुर शास्त्री के अन्दर ये चीजें थीं; वे उठते चले गए।

नेहरू को सरकार बनाने तथा चुनाव लड़ने का मौका मिला। नेहरू ने शास्त्री को बुलाया और यह कहा कि यह फार्म है, इस पर हस्ताक्षर कर दीजिए। लालबहादुर ने पूछा कि यह कैसा फार्म है ? यह तो एम. एल. ए. का फार्म है। अरे ! इसमें तो ढाई सौ रुपये लगते हैं हमारे पास तो पैसे नहीं हैं। इसके प्रचार-प्रसार में ढेरों पैसे लगते हैं। हमारे पास तो पैसे नहीं हैं। नहीं, यह काम हमारे लिए सम्भव नहीं है। आप कृपया हमें क्षमा दीजिए।

हमें वोट कौन देगा ? हमारी तो किसी से भी जान-पहचान नहीं है। हमें कौन वोट देगा ? उन्होंने लाल बहादुर शास्त्री से कहा—आप केवल साइन कर दीजिए। बाकी काम हम कर देंगे। नेहरू जी ने लालबहादुर शास्त्री के लिए पर्चे छपवाए, गाँव-गाँव गए तथा लोगों से कहा कि आप वोट हमको दें तथा पर्ची आप लाल बहादुर शास्त्री की पेटी में डालें। यह दोनों बातें एक ही हैं। इस प्रकार जनता ने वैसा ही किया तथा वे एम. एल. ए. बन गए। उसके बाद नेहरू के इशारे पर वे उत्तरप्रदेश के मिनिस्टर बन गए। मित्रो ! इसे क्या कहते हैं ? इसे कहते हैं—अनुदान। जिससे आदमी अपने व्यक्तित्व एवं वजन के सहारे बढ़ता चला जाता है।

नेहरू ने जब केन्द्रीय सरकार की स्थापना की, तो उन्होंने लालबहादुर शास्त्री को बुलाया और कहा कि आप सबसे ईमानदार एवं योग्य व्यक्ति हैं। आपको रेलवे की मिनिस्टरी देखनी होगी। जब नेहरू मरणासन्न हुए, तो लोगों ने पूछा कि आपके मरने के बाद इस गद्दी पर किसे बैठाया जाए ? तो उन्होंने अपनी उँगली से लालबहादुर शास्त्री की ओर इंगित किया और ये कहा कि यह बहुत ही ईमानदार तथा वजनदार आदमी हैं। यह हिन्दुस्तान को ठीक तरह से चला सकते हैं। अतः आप मेरे मरने के बाद हिन्दुस्तान का प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री को बनाना। उनके मरने के बाद उन्हें प्रधानमंत्री बना दिया गया।

मित्रो ! यह क्या कह रहा हूँ ? यह अनुदान की बात कर रहा हूँ। यह अनुदान किसे कहते हैं ? किसी समर्थ सत्ता द्वारा कुछ लोगों को दिए जाते हैं। कुछ लोग कौन होते हैं ? हमको मिलेंगे ? आपको मिल भी सकते हैं, नहीं भी मिल सकते हैं। तो क्या यह बँट रहे हैं ? नहीं, अनुदान बँटते नहीं हैं। क्या चीजें बँटती हैं ? जो साधारण हैं । अनुदान की गणना साधारण वस्तुओं में नहीं, असाधारण में होती है। इन्हें ठोक-बजाकर दिये जाते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं यह भारी-भरकम लोगों को दिये जाते हैं। यह कौन-सा शिविर है ? यह अनुदान शिविर है। आपमें से जो इसमें भारी-भरकम लोग हैं, उनको अनुदान मिलेंगे। उनको इतनी वज़नदार चीजें देंगे कि वह निहाल हो जाएँगे अगर हाथी का वजन गद्दहे पर रख दिया जाएगा, तो उसकी कमर टूट जाएगी। आपमें से जो हाथी जैसे भारी-भरकम होंगे, उन्हें हम सोने के गुब्बारे देंगे। हम आपको सोने के गुब्बारे देने वाले हैं, ताकि आप निहाल हो जाएँ। हाथी की जिस तरह पूजा होती है, हम आपका भी पूजन करेंगे।

हम हरेक व्यक्ति को अनुदान नहीं देते हैं। तो महाराज जी ! आप उन्हें क्या देते हैं ? उन्हें हम आशीर्वाद देते हैं तथा वरदान देते हैं। अनुदान नहीं देते हैं। अनुदान, आशीर्वाद, वरदान—ये अलग-अलग चीजें हैं। छोटी क्वालिटी की चीजें केवल छोटे लोगों को सामान्य लोगों को मिलती हैं। बड़ी क्वालिटी की चीजें सिर्फ व्यक्तित्व वालों को ही मिल सकती हैं, हर एक को नहीं।

आशीर्वाद किसे कहते हैं ? दुःखियारों के लिए मुसीबतें झेलने वालों को जो चीजें दी जाती हैं, उन्हें आशीर्वाद कहते हैं। यह सहायता के रूप में दिये जाते हैं। यह छोटों को दिये जाते हैं। यह दुःख-मुसीबतों में फँसे लोगों के लिए हैं। आपने देखा होगा कि कोई आदमी, औरत, लड़का गंगाजी में बहता हुआ चला जाता है, तो किनारे पर खड़े लोग चिल्लाते हैं कि देखो ! बचाओ यह बहता हुआ चला जा रहा है। इसे बचाओ ! कुछ आदमी नदी में, गंगा में कूद जाते हैं तथा उसे बचा लाते हैं। यह क्यों किया ? क्या उसके रिश्तेदार थे ? नहीं मित्रो ! यह इनसान का नेचर है। इनसान के अन्दर एक इनसान दिल होता है। जिसे 'करुणा' कहते हैं; जो मनुष्य में जाग्रत हो जाता है। बच्चे जब माँ के पेट में रहते हैं, तो इनसान के भीतर जो कसक है, वह काम करती है तथा उसका पोषण माँ करती है। आज दया, करुणा न हो, तो मानव प्रगति कैसे करे ! बाढ़ आ जाती है, भूकम्प आ जाता है, महामारी फैल जाती है—ऐसे समय इनसान के अन्दर दया, करुणा उमड़ पड़ती है तथा वे सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं। कोई दुर्घटना हो जाती है, तो लोग अपना काम हर्ज करके, अपनी ड्यूटी छोड़कर घर से खाना लेकर दौड़ पड़ते हैं। दूसरा क्या कारण है। इसका क्या कारण है ? उसका अन्तराल उसे बेचैन कर देता है तथा वह भाग पड़ता है। अपनी करुणा एवं दया लेकर समाज के बीच सेवा करने हेतु। यह मनुष्य का स्वभाव है; क्योंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है।

आप तो हर कार्य में लाभ, मुनाफे की बात करते थे। आप इस कार्य में कैसे चले गए ? मुर्दे को जलाने, दुर्घटना में सहायता करने आप कैसे चले गए ? आपको हैजा हो जाता, आपको छूत की बीमारी हो जाती, तो क्या होता ? आपकी माँ ने कहा कि न जाओ, आपकी बीबी ने कहा कि न जाइये। जब दोनों मना कर रहे थे, तो आप कैसे सहायता करने पहुँचे ? हर एक के मना करने, शरीर के नुक्सान होने पर आप कैसे चले गए ? यह कैसे हो गया ? आपके मन ने बेचैन कर दिया। दूसरे शब्दों में हमारे भगवान ने बेचैन कर दिया तथा हम सेवा के लिए आगे बढ़ गए और उसमें जुट गए। पाँच साल की बहिन को सात साल वाली बहिन उलटी-सीधी लेकर चल देती है। वह टट्टी फिराती है तथा उलटा-सीधा जो भी मिलता है, उसे खिलाने का प्रयास करती है। उसे जिन्दा रखती है। उसका ख्याल रखती है। यह क्या है मित्रो ! यह है—आशीर्वाद। जो दुःखियारों के लिए मुसीबतों में पड़े लोगों के लिए दिया जाता है।

अगर आपकी गाड़ी चलते-चलते रास्ते में खराब हो जाती है, कीचड़ में फँस जाती है, तो आस-पास खेतों में काम कर रहे किसान भाग खड़े होते हैं तथा उनकी मदद करते हैं, उनकी गाड़ी कीचड़ से निकाल देते हैं। इनसान के भीतर बैठा भगवान सहायता हेतु दौड़ पड़ता है। इसे क्या कहते हैं ? आशीर्वाद। आशीर्वाद संत देते हैं ? हाँ, संत देते हैं। वास्तव में यह संतों का काम है। अगर संत न दें, तो उनकी परम्परा समाप्त हो जाएगी। आपके पास सम्मान है और आप नहीं देंगे, तो आप कंजूस कहलाएँगे तथा आपका विकास रुक जाएगा। नदी बहती है। वह देती जाती है, तो आगे विकास होता है। तालाब देना नहीं जानता है तो वह सड़ता रहता है। आपके पास बाल्टी में पानी है और आप पानी नहीं पिलाना चाहते हैं, तो क्या होगा, जानते हैं ? आपसे नेचर नाराज हो जाएगी। आप बाँटने के लिए आगे नहीं आएँगे, तो आप ख्याल रखना, आपके हाथों से सारी शक्तियाँ छीन ली जाएँगी। नेचर हमेशा देती रहती है। पेड़ अपना फूल-फल सारे समाज को देता है। नेचर कहती है कि आप बाँटेंगे नहीं, तो हम आपको नहीं देंगे। इसी प्रकार भगवान ने इनसान को इसलिए बनाया है कि वह दूसरे की सहायता करें, उसके विकास में सहयोग करें। अगर वह ऐसा करने से पीछे हटता है, तो उसे भगवान से कुछ भी नहीं मिलेगा। वह इक्कड़ ही रह जाएगा। आशीर्वाद—यह इनसान को कर्त्तव्य है। इसे हर आदमी को पूरा करना चाहिए। आप तो अभी सन्तों की, अध्यात्म की बात कर रहे थे और बतला रहे थे कि यह उनका कार्य है। नहीं, यह इनसान का कर्त्तव्य है। उसे इस फर्ज को पूरा करना चाहिए। सन्त का कर्त्तव्य है कि वह दूसरों के दुःखों को दूर करे। सन्त इनसान से थोड़ा ऊँचे लोगों का नाम होता है उसमें यह माद्दा अधिक होता है। उसकी प्रवृत्ति मिल-जुलकर खाना, बाँटकर खाना होती है। अपनी सुविधाओं को बाँट देना, दूसरे की मुसीबतों को दूर कर देना—यह सन्त का कर्त्तव्य है।

यह अनुदान सत्र है। आशीर्वाद सत्र हमारी जिन्दगी भर चलते हैं। हमने जबसे यह कार्य प्रारम्भ किया है, आशीर्वाद सत्र हमेशा चलाया है आगे भी चलते रहेंगे। हमने बेटे ! पानी पिलाने से कभी भी लोगों को मना नहीं किया है। हमारी संत-प्रवृत्ति हमारे साथ पैदा हुई है। हम दो भाई हैं, जो एक-साथ अपनी माँ के पेट से पैदा हुए हैं। वह कौन भाई है ? मित्रो ! वह हमारा संत भाई है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह कहाँ रहता है ? वह हमारे पेट में रहता है। वह संत हमारी अक्ल में, भावना में रहते हैं। आपको मालूम नहीं है। हमारा जन्म-स्थान बरहन स्टेशन आगरा के पास है। उस समय तीन-चार पेसेन्जर ट्रेनें दिन में आती थीं। रात को तो पता नहीं। हम लोग तीन-चार बच्चे वहाँ पहुँच जाते थे तथा कुएँ में से ताजा पानी निकालकर हमेशा उन यात्रियों को पिलाते थे। हम भाग-भाग कर पानी पिलाते थे। उस समय हमारे पास पैसा तो था नहीं; परन्तु हमें इतनी खुशी होती थी कि हमने प्यासों को पानी पिलाया, हमने श्रम किया। हमें इतनी खुशी होती थी कि हम उसका वर्णन नहीं कर सकते हैं। उस जायके को चखने के बाद वह जायका मेरे ऊपर ऐसा चढ़ा, मित्रो ! ऐसा चढ़ा कि हम कह नहीं सकते हैं। उसे भाँग का नशा, शराब का नशा, चरस का, अफीम का नशा कुछ भी कह लें आप, वह इस दिन से चढ़ता चला गया और आज तक चल रहा है। आज कोई नशा हमसे छुड़वाना चाहे, तो हम नहीं छोड़ सकते। इसका क्या नाम है ? इसका नाम आशीर्वाद है। हमने शुरू से ही यह दिया है तथा आगे भी देते रहेंगे तो क्यों साहब ! आप घाटे में नहीं रहे ? नहीं, हमने अपना पुण्य-तप लोगों को बाँटते रहते हैं। किसी तरह यह घाटे का सौदा नहीं है।

हम तो हमेशा यह बाँटते रहे हैं। घाटे की पूर्ति हो जाती है। हम दूसरों को अपने तप का अंश देते हैं; दुःखियों को दुःख दूर करने में, उनके आँखों के आँसू पोंछने में लगा देते हैं। तो क्यों साहब ! आप घाटे में रहते होंगे ? आप क्या बात करते हैं ? आप हमारी चिट्ठियों को देख लेना, कितनी आती हैं। हमने ईमानदारी के साथ लोगों के कष्टों को दूर किया है। हमारे पास एक हजार चिट्ठियाँ आती हैं, उसमें से नौ सौ चिट्ठियाँ केवल दुःख एवं मुसीबतों की होती हैं। उन्हें हम दूर करते हैं। उनके आँखों के आँसू को पौंछते हैं। सौ चिट्ठियाँ ही शाखाओं की होती हैं, शक्तिपीठों की होती हैं। बाकी सारे-के-सारे पत्र पीड़ितों, पतितों के होते हैं।

कल कैलीफोर्निया से एक लड़की आई थी। उसे किसी ने कह दिया कि आप गुरुजी के पास मथुरा में चले जाओ। उनके दरबाजे से कोई खाली हाथ नहीं जाता है। वह कैलीफोर्निया में एक अस्पताल में काम करती थी। उसका पति भी वहाँ कहीं काम करता था। उसके छाती में कैन्सर हुआ। एक छाती काटकर निकाल दी गयी। दूसरा कैन्सर भी उसकी पीठ में हुआ। उसे भी काट दिया गया। तीसरा कैन्सर उसके नितम्ब में हुआ। चौथा वाला कैन्सर उसके सिर के पिछले भाग में हुआ। उसने कहा—गुरुजी हमें चार बार कैन्सर हो चुका है। हमें कुत्ते की मौत मरना पड़ रहा है। हमारे बच्चे भी हैं। आप हमारी मदद कर सकते हों; तो कृपया मदद करें। हमारी मौत हमेशा सामने खड़ी रहती है। हमने कहा कि बेटी ! हम तुम्हारी अवश्य मदद करेंगे। तुम्हारे कैन्सर को ठीक करेंगे। तुम यकीन रखो। तुमको अवश्य अच्छा करेंगे। और वह आगे चलकर अच्छी हो गई। इसे क्या कहते हैं ? इसे 'आशीर्वाद कहते हैं। यह दुःखियारों के लिए, पीड़ितों के लिए दिया जाता है। जब तक हम जिन्दा रहेंगे, यह दरवाजा बन्द नहीं करेंगे। हमारा दरवाजा सबके लिए खुला हुआ है। हम बीमारों को अच्छा करेंगे, उसकी पट्टी बाँधेंगे। हम अपनी जिम्मेदारी अवश्य उठायेंगे। डॉक्टर यह नहीं देखता है कि आदमी डकैत है या शरीफ। वह उसकी गोलियों को निकाल देता है; उसे अच्छा कर देता है। हम जल्लाद नहीं हैं। हमने आशीर्वाद की परम्परा, सन्त की परम्परा प्रारम्भ की है; उसे किसी भी हालत में बन्द नहीं कर सकते हैं। यह आदमी का फर्ज है। सन्त का काम इससे ज्यादा है। हमारा फर्ज ज्यादा है। हम इसे कायम रखेंगे। यह शिविर आशीर्वादों का नहीं है। वह तो हमेशा चलती रही है और हमारी साँसों के अन्तिम दिन तक चलता रहेगा। इससे हमें खुशी होती है।

राजा कर्ण घायल पड़े थे। कृष्ण भगवान ने सोचा कि वह हमारे सबसे प्यारा भक्त है। इसका नाम अजर-अमर बनाना चाहिए। वे अर्जुन के पास पहुँचे। उन्होंने कहा—चलो अर्जुन सन्त के रूप में उसके पास पहुँचते हैं तथा उससे कुछ माँगते हैं। वे पहुँच गए। उन्होंने यानि कर्ण ने कहा—हमारे दरवाजे से कोई सन्त वापस नहीं लौटा है। आज मैं मरने के लिए पड़ा हूँ। आज हमारे पास कुछ नहीं—यह कैसी विडम्बना है ? हे भगवान ! हम क्या करें ? आप बतलाएँ। उसने सोचा कि हमारे दो दाँतों में सोने की कीलें लगी हुई हैं। उसने एक पत्थर उठाया और दोनों दाँतों तोड़ लिये। एक अर्जुन के हाथ में तथा एक भगवान श्रीकृष्ण के हाथों में रख दिया।

इस संसार में अगर इनसानियत जिन्दा है तो यह नीति-परम्परा जिन्दा है तथा भविष्य में भी यह परम्परा जिन्दा रहनी चाहिए। संत इसका मार्गदर्शन करते हैं। हमने इसे अपनाया है। अगर भगवान ने आपको कुछ दिया है, तो आप हमेशा से पिछड़े लोगों के लिए, दुःखियारों के लिए, जिनके मुसीबतें हैं, उनके लिए आपको त्याग करना चाहिए। इसे इनसानियत की शर्त कहते हैं। आप चाहें तो इसका नाम आशीर्वाद भी दे सकते हैं।

मित्रो ! एक दूसरा हिस्सा है, जिसका नाम है—'वरदान'। वरदान क्या होता है ? उन्नतिशील लोगों को प्रगतिशील लोगों के आगे बढ़ने के लिए यह दिया जाता है। आपने देखा है ? स्कूलों द्वारा विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाती है। अरे साहब ! हमें भी दीजिए। क्यों आपको देंगे ? आप तो तीन साल से क्लास में फेल कर रहे हैं। हम तो क्लास में फर्स्ट होने वालों को देंगे। आपको नहीं देंगे। छात्रवृत्ति इसलिए दी जाती है, ताकि वह किताबों को खरीद सके तथा अच्छी पढ़ाई करे एवं समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

समाज में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन पाए तथा समाज की सेवा करे। इस उद्देश्य से छात्रवृत्ति दी जाती है। लड़का गरीब नहीं होता है, वह तो परिश्रमी लड़के को दी जाती है। लड़के को ईनाम दिया है, वह चाहे पच्चीस पैसे, पचास पैसे का हो। हमने अपनी जिन्दगी भर वरदान दिया है। कोई आता है, वह कहता है—गुरुजी मेरे रास्ते बन्द हैं। गुरुजी आप कुछ करें। हम पूछते हैं कि तेरे रास्ते बन्द होने का क्या कारण है ? इनसान के रास्ते कभी बन्द नहीं हुए हैं। ब्रूस यूरोप के एक राजा का नाम था, जो तेरह बार लड़ाइयों में हार खाता रहा। तेरहवीं बार हार खाने के बाद वह एक गुफा में चला गया। वहाँ एक मकड़ी थी। बारह बार वह गुफा की छत तक पहुँचने में असफल रही। तेरहवीं बार फिर उसने प्रयास किया। इस बार वह सफल हो गई। राजा ब्रूस ने समझ लिया। अरे ! मकड़ी ने हमें सिखा दिया। इसके बाद उसने पुनः आक्रमण किया और लड़ाई जीत ली। वह सफल हो गया। अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति हुए। वे हर बार चुनाव में असफल हो जाते; परन्तु अन्त में सफल हो गए।

आदमी जब असफल हो जाता है, तो उसके कलेजे को बढ़ाना चाहिए, उसकी हिम्मत को बढ़ाना चाहिए। जो परेशान आदमी आता है, उसकी हिम्मत-साहस को बढ़ाना चाहिए। अगर नौकरी न मिले, तो चाय-पकौड़े बनाकर अपना गुजारा कर लें। तुम्हें इसमें भी चालीस रुपये मिल जाएँगे। अरे ! तू हमारे पास काम कर ले, यहाँ भी तुझे ढाई सौ रुपये मिल जाएँगे। हिम्मत मत हारो। मैं हर आदमी को उत्साहित, प्रोत्साहित करता रहता हूँ। एक आदमी विदेश का, अमेरिका का दिवालिया हो गया। उसने सोचा कि अब हमें मर जाना चाहिए, आत्महत्या कर लेनी चाहिए। उसने समुद्र में डूबकर आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया। उस समय आत्महत्या के पूर्व उसके हाथ एक पुस्तक लग गई। उसने सोचा कि इसमें अवश्य कुछ पद्धति बतलायी होगी। कुछ खाने की बात, कुछ करने की बात बतलायी होगी। उस पुस्तक से उस व्यक्ति में इतना जोश, इतनी हिम्मत जाग्रत हो गई कि उसने आत्महत्या करने की बात छोड़ दी। उस व्यक्ति के अन्दर एक महत्त्वपूर्ण विचार आया कि जिस आदमी की पुस्तक ने हमें आत्महत्या से रोक दिया, उस व्यक्ति के पास अवश्य ही कुछ ऐसे विचार होंगे, जिससे हमारी उन्नति, प्रगति हो सके। वह उस लेखक के पास पहुँच गया। उसने कहा कि आपने हमारी जान बचा दी। अब आप हमें ऐसा रास्ता बता दीजिए, जिससे हमारी मुसीबत दूर हो जाए; हमें प्रगति का रास्ता मिल जाए; हमारा दिवालियापन समाप्त हो जाए। उसने कहा कि आप हमारी सहायता कर दीजिए। लेखक ने कहा कि हम लेखक हैं। हम आपकी और कुछ भी सहायता नहीं कर सकते। हमने आपको विचार दे दिया है। इससे ज्यादा और नहीं कर सकते हम ! वह जाने लगा। लेखक ने उसे बुलाया और कहा कि हम तो आपकी मदद नहीं कर सके; परन्तु हमारा एक दोस्त है, वह शायद आपकी मदद कर सकता है। आप चाहें तो उससे मिल लें। वह बराबर वाले कमरे में रहता है। अभी वह तैयार बैठा है। आप अभी उससे मिल लीजिए। वह उसमें गया, देखा एक कमरा था खाली। उसमें एक बहुत बड़ा शीशा लगा था। शीशे के ऊपर एक कपड़ा लगा था। उसके सामने एक कुर्सी पड़ी थी। उसने कुर्सी पर बैठा दिया। सामने पड़ा कपड़ा हटा दिया। कुर्सी पर बैठे उस व्यक्ति का चेहरा सामने वाले शीशे में दिखलाई पड़ा। उसने कहा कि अगर यह मदद कर दे, तो आप सब कुछ कर सकते हैं। यह किसकी बात करते हैं ? अपने आप की। अगर अपनी सेवा-प्रगति आप स्वयं करने लगें, तो आप मालदार हो सकते हैं। उसने अपनी हिम्मत बढ़ा ली तथा फिर से व्यापार करना शुरू किया। वह अमेरिका का पुनः बड़ा आदमी बन गया। उसकी सारी समस्याओं का हल हो गया। यह क्या बतला रहा हूँ ? यह साहस एवं हिम्मत की बात बतला रहा हूँ। यह कहानी इसलिये सुनाता हूँ कि हमारी सामर्थ्य लोगों को वरदान देने की रही हो अथवा न रही हो; हमने हर आदमी को आगे-आगे बढ़ने हेतु साधन अथवा धन दिये हों अथवा न दिये हों; परन्तु हर आदमी के भीतर करेज, हौंसले, हिम्मत को बुलन्द किया है। हौंसला किसी का टूटने नहीं दिया है।

फ्रांस का एक सेनापति था। वह लड़ाई में हार गया। उसने देखा कि शायद हमारा कोर्टमार्शल हो जाएगा; हम मारे जाएँगे; हमें सम्भवतः नहीं छोड़ा जायेगा वह घर भाग आया और सोचा अपनी बीबी से, बच्चों से मिल लूँ। कल तो मारे ही जाएँगे वह घर आया और अपनी बीबी से कहा कि बहुत बुरी खबर है। क्या खबर है ? उसकी बीबी ने पूछा। उसने कहा कि हम हार गए हैं। शायद हमारा कोर्टमार्शल हो। बीबी ने कहा—आप हार गए हैं—यह तो बुरी खबर है; परन्तु उससे भी बुरी खबर यह है कि आपकी हिम्मत पस्त हो गई है। लड़ाई हारने-जीतने से कुछ नहीं होता है। आप अपनी हिम्मत तथा साहस मत टूटने दीजिए। आप उसे बुलन्द रखिये। सेनापति ने अपनी बीबी की बात मानकर अपनी हिम्मत, साहस जाग्रत कर लिया और लड़ाई में पुनः जीत हासिल कर ली।

मित्रो ! हमने भी किसी आदमी की हिम्मत, साहस टूटने नहीं दिया है। उसके हौंसले, हमने हमेशा बुलन्द किये हैं। जो थका, हारा, परेशान आया है, उसे हमने प्रोत्साहित किया है। हम जब अखण्ड ज्योति कार्यालय में रहते थे, तो शहर के आठ-दस गरीब बच्चे हमारे पास आते थे। हम उन्हें अपने चौके में खिलाते थे, पढ़ाते थे। भगवान ने हमें घी तो दिया नहीं; परन्तु रूखी रोटी तथा दाल हमने भी खायी है तथा लोगों को खिलायी है। हमने दर्जनों बच्चों को खिलाया है तथा उसे पढ़ाकर बी. ए., एम. ए. कर दिया है।

ईश्वरचंद विद्यासागर को पाँच सौ रुपये तनख्वाह मिलती थी। चार सौ पचास रुपये सेवा-कार्य में खर्च करते थे तथा पचास रुपये में घर का खर्च चलाते थे। वे

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

किताबें, कापियाँ सबको देते थे। हजारों गरीब बच्चे यह समझते थे कि ईश्वरचंद जी का घर हमारा है। हजारों उन्नतिशील बच्चे उनसे सहायता पाकर आगे बढ़ते रहे। इस सहायता से क्या नाम है ? इसे 'वरदान' कहते हैं।

हम वरदान देते रहेंगे। जो हिम्मती हैं, साहसी हैं, उन्हें हमने छाती से लगाया है तथा हमेशा आगे बढ़ाया है हमने जिन्दगी को व्यायामशाला बनाया है। इसमें लोगों को दौड़ना सिखाया है, चलना सिखाया है। तो क्या यह वरदान सत्र है ? नहीं मित्रो ! यह वरदान सत्र नहीं है। वरदान के लिए सत्र की क्या आवश्यकता है ? वरदान माँगने तो लोग यहाँ चले आते हैं तथा प्राप्त कर लेते हैं। आशीर्वाद का सिलसिला तो जब से हमने होश सँभाला है तथा जब तक ये साँस रहेगी, चलता रहेगा। वरदान देकर अगर किसी को ऊँचा उठाने की आवश्यकता पड़ती है, तो हमसे रहा नहीं जाता है। यह क्या है ? यह हमारा अन्दर वाला सन्त है; यह हमारा महामानव है, जिसको रहा नहीं जाता है। महामानव उसे कहते हैं, जो स्वयं नहीं बढ़ता है, दूसरों को बढ़ा देता है। महात्मा गाँधी एक महामानव थे, जिन्होंने पटेल को, नेहरू को, शास्त्री जी को, राजेन्द्र बाबू को आगे बढ़ाया; जाकिर हुसैन, राधाकृष्णन् को बढ़ाया। स्वयं बादशाह नहीं बने, ढेरों को बादशाह बना दिया। यह गाँधी जी की वरदान देने की शक्ति थी। इसी प्रकार वरदान एवं आशीर्वाद मेरा स्वभाव है। वरदान, आशीर्वाद के लिए हम शिविर नहीं लगाते हैं। यह तो हमारा स्वभाव है। हम माने महामानव तथा संत की प्रवृत्ति। वह संत क्या ! जो दूसरों की मुसीबत देखकर सहायता न कर सके। वह महामानव क्या ! जो स्वयं आगे बढ़े तथा दूसरों को आगे न बढ़ावे। हमारे अन्दर भी संत, महामानव का निवास है, जो यह कहते हैं कि स्वयं ही बढ़िए मत, दूसरों को भी बढ़ाने का प्रयास कीजिए। हमने भी हमेशा दूसरों को आगे बढ़ाया है। जो मुसीबतों के मारे हैं, हमने हमेशा उनकी सहायता की है। दोनों काम हम जो करते हैं, वह हर इनसान को करने चाहिए। महामानव भी इनसान को कहते हैं, संत भी इनसान को ही कहते हैं।

यह ऋषि का, देवताओं का अनुदान सत्र है। देवता कीमती चीजें देते हैं। दैवी सहायता यानि अनुदान जिसके लिए हमने शिविर बुलाया है। अनुदान किसे कहते हैं ? यह मैं समझाता हूँ। आपकी शादी हो गई है ? हाँ गुरुजी, शादी हो गई है, बहू कितनी पढ़ी-लिखी है ? गुरुजी, बी. ए. पास है तो आपने उसे कितने मूल्य में खरीदा है ? आप बकरी, गाय खरीदते हैं, तो उसका मोल-भाव होता है। आपने बीबी को कितने में मोल लिया है ? नहीं साहब, हमने खरीदा नहीं है तो उसे क्या फोकट में पाया ? हाँ, साहब यही 'अनुदान' कहलाता है। आपने फोकट में बीबी पाई, कुछ जेवर भी पाये, ग्यारह हजार दहेज में मिला, मिठाई भी मिली। सब फोकट में ले आए। इसे क्या कहते हैं ? यह है अनुदान। भाईसाहब ! आपने बहुत कलेजे का काम किया। आपने लड़की को खिला-पिलाकर बड़ा किया। उसे पच्चीस हजार खर्च करके पढ़ाया—लिखाया, सिलाई-कढ़ाई सिखाया और आपने फोकट में दे दिया। हमने फोकट में इसलिए दे दिया गुरुजी कि उसकी सेहत ठीक है; वह बारह सौ रुपये महीना कमाता है; उसके पास बाप-दादों की जमीन-जायदाद है। इस लड़के के साथ मेरी लड़की का विवाह हो जाएगा, तो मेरी लड़की घर की मालकिन हो जाएगी। अच्छा ! यह बात ! वह सौ रुपये की रूखी रोटी खाएगा और ग्यारह सौ रुपये हमारी बेटी के हाथ पर रखेगा। अच्छा यह चक्कर है ! हम समझ नहीं रहे थे।

मित्रो ! अनुदान एक परम्परा है। किसी ने बेटी आपको दी है। आपकी बेटी भी दूसरी जगह जाती है। यह फोकट का मामला नहीं है। यह मामला दैवी-शक्ति का है, जो सहायता करती रहती है। इस काम के लिए उसका एक विशेष उद्देश्य होता है, जिसमें यह देखा जाता है कि आदमी में पात्रता है या नहीं। जो दिया जाना है, वह भारी-भरकम चीज है; उसके लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वह सुपात्र है या नहीं। इस समय कलेक्टर की नियुक्ति होने वाली है दस व्यक्तियों को नियुक्त किया जाना है। गुरुजी ! हमें भी लगा दीजिए, एम. एल. ए. से कह दीजिए। अरे ! आपने कितना पढ़ा है ? हमने दसवीं पास की है, तो हम कैसे लगा सकते हैं ? बेटे ! इसके लिए आई. सी. एस., पी. सी. एस. पास करनी पड़ती है। मेडिकल फिटनेस का सर्टिफिकेट भी नहीं है ? नहीं, वह भी नहीं है तो भाईसाहब, हम कैसे नियुक्त करा सकते हैं ? इसी प्रकार अनुदान के लिए शर्त है। उसके लिए सुपात्र होना चाहिए। इनसान को आशीर्वाद वरदान, अनुदान सभी दिये जाते हैं; पर दैवी-अनुदान के लिए पात्रता जरूरी है। दूसरी बात यह है कि आपको जो चीज दी जा रही है, उसका आप क्या उपयोग करेंगे ? आपको लड़की मिल जाए और आप ले जाकर उसे वेश्या बना दें, तो लड़की का बाप आएगा, केस करेगा तथा दंगा-फसाद करके लड़की ले जाएगा। आपको जिस काम के लिए घर की सेवा, देखभाल, पारिवारिक उन्नति के लिए लड़की दी गई है, वह उसी काम को करेगी। नहीं, साहब ! हम जो चाहेंगे करवायेंगे, आपकी मनमानी नहीं चलेगी। अरे साहब ! हम फिर दूसरी शादी करेंगे। ऐसा नहीं हो सकता है। अनुदान पात्रों को दिये जाते हैं। वह किसी मकसद के लिए, उद्देश्य के लिए दिये जाते हैं। आपको कलेक्टर बनाया गया है। आपको बंगला, चपरासी, जीप, पहरेदार दिये गये हैं। हाँ साहब, दिये गये हैं। मित्रो ! वह एक विशेष व्यवस्था, देखभाल के लिए सरकार द्वारा दी जाती है। ऐसे ही अनुदान के साथ कुछ प्रतिबन्ध लगे हैं। आपको चपरासी घर के काम के लिए नहीं मिला है। आपको जीप किराये पर टैक्सी के रूप में चलाने हेतु नहीं मिली है। आप चाहे जो भी काम चाहे जब नहीं कर सकते हैं। अनुदान के लिये यह दो शर्तें हैं। अगर आप इसके लिए तैयार हैं, तो हम आपको दिला सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुदान एक महान चीज है। मनुष्य जो अपने भाग्य से, अपने पुरुषार्थ से नहीं पा सकता है, वह अनुदान के द्वारा प्राप्त कर सकता है। कैसे ? जानते हैं आप ? हनुमान जी का किस्सा सुना है न ! वे सुग्रीव के यहाँ नौकरी करते थे। बाली के डर के मारे वह छिप गए। दोनों सुग्रीव एवं हनुमान भाग गए; लेकिन जब वे भगवान राम के साथ जुड़े, तो समुद्र को लाँघ गये। मित्रो ! आज छलाँग का सारे विश्व का १०० गज का रिकार्ड है। पर्वत को उठाकर लाए। रेल के डिब्बे को क्रेन उठाते हैं। वे क्रेन नहीं थे फिर भी उन्होंने उठा लिया था। वे लंका तक भागते हुए चले गए। एक लाख पूत सवा लाख नाती लंका में रहते थे। इसके अतिरिक्त सैनिक भी थे। हनुमान जी अकेले वहाँ चले गए। उन्हें किसी ने गिरफ्तार नहीं किया। उनका साहस, उनकी हिम्मत के सामने सारे योद्धा पस्त हो गये। यह अनुदान की बात कहते हैं। अनुदान में दोहरी ताकत हो जाती है। आप इसकी ताकत नहीं जानते हैं ? समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को अनुदान देकर महान बना दिया। चन्द्रगुप्त को चाणक्य ने अनुदान देकर महान बना दिया। वह दासी का लड़का था; परन्तु अनुदान पाकर वृहत् हिन्दुस्तान का मालिक बन गया। यह क्या चन्द्रगुप्त की ताकत थी ? वह ताकत चाणक्य की थी, जिसने अपने दिव्य अनुदानों से चन्द्रगुप्त को वृहत् भारत का शासक बना दिया। गुरुजी आप नई बात करें। विवेकानन्द, बहुत छोटे आदमी थे। उनके पिता जी का स्वर्गवास हो गया। वे रामकृष्ण परमहंस के पास गए। उसे उन्होंने माँ काली के मंदिर में भेज दिया। वहाँ जाकर माँ का विराट् रूप देखकर विवेकानन्द ने कहा, माँ मुझे शक्ति दो, भक्ति दो, शान्ति दो। माँ ने सारी चीजें दे दीं। वह धन्य हो गए। वे शानदार विवेकानन्द हो गए। रामकृष्ण परमहंस ने सारी-की-सारी शक्ति उन्हें दे दी। यह क्या है ? अनुदान ! अनुदान !! जिसे पाकर विवेकानन्द महान बन गए। उन्होंने जमशेद जी टाटा को टाटा के एक निर्दिष्ट ग्राम में फैक्टरी लगाने का आदेश देकर उन्हें धन्य कर दिया। वहाँ कोयला, पानी, लोहा तीनों चीजें मिलने लगीं। टाटा साहब धन्य हो गए। यह क्या था ? उनके दिव्य चक्षु की शक्ति ? नहीं, मित्रो ! यह था उनका अनुदान, जो शिष्य को गुरु से मिला था। कभी आपने टाटा नगर देखा है ? आप जाकर देखें; वह बहुत ही सुन्दर ढंग से बसा है।

विवेकानन्द जब विदेश गए तो उसका खर्चा अन्यों ने उठाया। रामकृष्ण मिशन का बेल्लूर मठ लाखों-करोड़ों का बनाया। सारे विश्व में रामकृष्ण मिशन फैला। यह क्या है ? आशीर्वाद ? वरदान ? नहीं, अनुदान विवेकानन्द को रामकृष्ण परमहंस ने दिया था। आप जानते नहीं ? विवेकानन्द के मरने के बाद भी ऐसा स्मारक लोगों ने कन्याकुमारी में बनाया। रॉक मेमोरियल। कभी आप देखें, तो आप उनके अनुदानों का अन्दाज लगा सकते हैं। क्या स्मारक बना है ! करोड़ों का बना है। रामकृष्ण मिशन के अस्पताल सारी दुनिया में बने हैं। यह क्या है ? अनुदान वह पुरुषार्थी थे ? योग्यता थी ? कुछ भी नहीं था; परन्तु अनुदान के जरिये महान हो गए।

यह ऐय्याशी के लिए, मौज-मस्ती के लिए नहीं मिलता है। हर आदमी को नहीं मिल सकता है। अगर हर आदमी को मिल जाए, तो परेशानी आएगी। मारीच, भस्मासुर, कंस, कुम्भकरण को वरदान मिल गये थे, तो वह स्वयं परेशान हो गये तथा दूसरों को परेशान कर दिया। आप को भी फिजूल में वरदान मिलेगा, तो आप भी परेशान हो जाएँगे अनुदान के लायक आप हैं, तो किस काम के लिए अनुदान माँगते हैं—यह भी देखा जाएगा ! बेटे को बादशाह बनाएँगे, मकान बनाएँगे, धन इकट्ठा करेंगे। अनुदान-वरदान इस काम के लिए नहीं मिलते हैं। वह सुपात्रों को तथा एक विशेष काम के लिए मिलते हैं।

आप जानते नहीं, गाँधी जी जब पहली बार वकालत करने गए, तो उनके पैर काँपने लगे, जबान बन्द हो गई, कंठ सूख गए। उन्होंने अपने मुवक्किल से कहा—आप अपने बीस रुपये वापस ले लें, हम आपका काम नहीं कर सके; लेकिन गाँधी जी को जब अनुदान मिला, तो ऐसी आवाज निकली कि उसका क्या कहना ! लोगों से कहा—आप गोली खाइये, जेल जाइये, आप बर्बाद हो जाइये। लोगों ने सहर्ष यह काम स्वीकार किया। यह था गाँधीजी को दिया गया अनुदान। अँग्रेजों से कहा—'क्विट इण्डिया'—हिन्दुस्तान छोड़ दो। वे कप्तान की तरह हण्टर लेकर खड़े हो गए और अँग्रेज भारत छोड़कर चले गए। गाँधी जी हिमालय से भी ऊँचे, समुद्र से भी गहरे थे। उन्होंने जिस काम के लिए माँगा करोड़ों रुपये मिले। उनकी बीबी तथा गाँधीजी का पौने दो करोड़ का स्मारक बना। यह है—अनुदान।

यह युगसंधि की वेला है। सन् १९८० से २००० तक का समय युगसंधि काल है। इस पूर्व संधि की वेला में भगवान को ऐसे जाग्रत आत्माओं की सहायता करने की आवश्यकता है, जो विभीषिकाओं से लड़ सकें; सामाजिक कुरीतियों को, अपराधी वृत्तियों को समाप्त कर सकें। सिपाही जब लड़ने के लिए जाता है, तो सरकार उसके एवं उसके बच्चों के लिए क्या-क्या प्रबन्ध करती है, आपने देखा नहीं है ? कपड़े का, आजीविका का; खाने का प्रबन्ध करती है तथा मरने के बाद पेन्शन की व्यवस्था करती है। सरकार कौन ? सरकार यानी जनता करती है। आपके लिए यह सब करेगी ? नहीं, आपके लिए नहीं करेगी। इस समय युगसंधि की वेला में भगवान् इस दुनिया का ढाँचा बदलने वाले हैं। जो खराब चीजें हैं, उन्हें गलाया जाने वाला है। टाटा की स्टील फैक्टरी में आप गए हैं कभी ? एक तरफ वहाँ लोहे को गलाया जाता है तथा दूसरी तरफ ढलाई होती है। इस तरह फरनेस (भट्टी) का काम होता है। आज भगवान भी अपनी फरनेस में गलाई-ढलाई का काम कर रहे हैं। इन दिनों बेहूदापन दुनिया में हावी हो गया है। यह आदमी के चिन्तन में, भावना में, दृष्टिकोण में छा गया है। हर जगह यह लोगों को परेशान कर रहा है। होली में आपने देखा नहीं है ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बच्चे चारों तरफ जाते हैं और कूड़ा-करकट जमा कर लाते हैं तथा उसमें आग लगा देते हैं। धातुएँ जब पुरानी हो जाती हैं, लोहे के टुकड़े जब टूट-फूट जाते हैं, तो उनको गला दिया जाता है। छापेखाने के घिस-पिटे टाइपों को भी फिर से गला देते हैं तथा नये टाइप बना लाते हैं। इस प्रकार गलाई-ढलाई का काम इस सृष्टि का क्रम है। नया बनाया जाता है, पुराने गलाये जाते हैं। यह बीस साल यानी सन् १९८० से २००० तक, जिसे युगसंधि का समय कहते हैं; इसमें स्रष्टा बहुत कुछ गलाई-ढलाई करना चाहता है। इस काम हेतु उसको कुछ शानदार आदमियों की आवश्यकता पड़ी है, जो उसको सहयोग दे सकें; जो भगवान के इस महान परिवर्तन काल में किसी तरह उसका हाथ बँटा सकें। इस महान वेला में महाकाल हर तरह से वैसी आत्माओं को अपना अनुदान देकर उन्हें समर्थ बनाना चाहते हैं, जो हर प्रकार से उनके काम करने में समर्थ हो सकें।

यह अनुदान सत्र है, जिसमें आपको बुलाया गया है। यहाँ, लड़ने के लिए कारतूस, बन्दूक, तलवार की तरह आपको कीमती सामान दिया जाने वाला है, ताकि आप इस इनसान की जिन्दगी को सही मायने में उपयोग करके धन्य हो सकें। चौरासी लाख योनियों में श्रेष्ठ यह मनुष्य की योनि है। इसमें यानी मनुष्य की योनि में आप चाहें तो अपना लक्ष्य पूरा कर सकते हैं अनुदान को पाकर। हनुमान जी अनुदान पाकर किस प्रकार अपने लक्ष्य को पूरा कर पाए तथा धन्य हो गए। यह तो जानते हैं न ? उन्होंने एक टाँग पर खड़े होकर ध्यान लगाया था ? पूजा की थी ? नहीं केवल उन्होंने यह किया था और यह कहा था—हम आपके साथ हैं। आपके साथ कन्धे-से-कन्धा लगाकर चलेंगे।

उसी में वे धन्य हो गए। नेहरू ने शास्त्रीजी के लिए सारा इन्तजाम किया था। आपके लिए भी हमें सारा इन्तजाम करना होगा, ताकि युग को बदलने में आप समर्थ हो सकें; समय को बदलने में आप समर्थ हो सकें। इस बार का समय अब तक के अवतारों से ज्यादा शक्तिशाली है। पहले एक रावण था। अब तो घर-घर में रावण हैं। उन्हें समाप्त करने के लिए स्रष्टा को ज्यादा शक्ति लगानी पड़ेगी। उस समय एक हनुमान जी से काम चल गया था। अबकी परिस्थिति बहुत ही बदली हुई हैं। बेहूदगियाँ इस तरह बढ़ गई हैं कि हर वर्ग अपने कर्तव्यों और सिद्धान्तों को भुला बैठा है। इस विपन्नता की स्थिति में हमने महाकाल की इच्छा से यह अनुदान सत्र बुलाया है। इसमें हम देख रहे हैं कि युग-युग की महान् आत्माएँ, महामानव बैठे हुए हैं, जो स्रष्टा के इस महान कार्य में सहयोग दे सकते हैं तथा अपने जीवन को धन्य कर सकते हैं। हम आपको इस महान कार्य हेतु महाकाल की शक्ति, स्रष्टा की शक्ति, अपने गुरु की शक्ति तथा अपनी शक्ति प्रदान कर रहे हैं, ताकि आप आगे बढ़कर गाण्डीव उठाएँ एवं युग को बदलने में अपना भावभरा सहयोग करें।

ॐ शान्ति।

शक्ति-भण्डार के साथ जुड़ें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

मनुष्य की सामान्य शक्ति सीमित है। प्रत्येक प्राणी को भगवान ने उतना ही सामान दिया है कि वह अपने जीवन का गुजारा कर ले। कीड़े-मकोड़ों को, पशुओं को, पक्षियों को इतना ही ज्ञान, साधन, शक्ति और इन्द्रियाँ मिली हैं, ताकि अपना पेट भर लें और वंशवृद्धि की इच्छा पूरी करने के लिए औलाद पैदा करता रहे, लेकिन अगर आपको कुछ इससे ज्यादा जानना हो या प्राप्त करना हो, तब आपको वहाँ जाना पड़ेगा, जहाँ शक्तियों के भण्डार भरे पड़े हैं, एक जगह ऐसी है, जहाँ बहुत शक्तियाँ भरी पड़ी हैं, जहाँ सम्पत्ति का कोई ठिकाना नहीं, जहाँ समृद्धि भरी पड़ी है। सारे विश्व का मालिक भगवान है, यह सब उसी का तो सामान है। यह उसके भण्डार का एक छोटा-सा हिस्सा है। आपको अगर सम्पत्तियों की जरूरत है, सफलताओं की जरूरत है, विभूतियों की जरूरत है, तो अपना पुरुषार्थ इस काम में खर्च कर दीजिए कि भगवान के साथ में रिश्ता बना सकें, उसके साथ में स्वयं को जोड़ने में समर्थ हो सकें। यही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। आप किसी मालदार आदमी के साथ में रिश्ता मिला लें, तो मजा आ जाए।

लालबहादुर शास्त्री का नाम सुना है आपने ? लाल बहादुर शास्त्री बिल्कुल छोटे आदमी थे; लेकिन पण्डित नेहरू के साथ में उन्होंने गहरे सम्बन्ध बना लिये। उनकी वजह से एम. एल. ए. भी हो गये, उनकी वजह से यू. पी. के मिनिस्टर भी हो गये, उनकी वजह से सेण्ट्रल गवर्नमेण्ट के मिनिस्टर भी हो गये। फिर उनके मरने के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी भी हो गये। बहुत शानदार आदमी थे—लालबहादुर शास्त्री। यह उनके अपने पुरुषार्थ का उतना फल नहीं था, जितना नेहरू जी के सहयोग का था। उन्होंने यह देख लिया था कि यह आदमी बड़ा उपयोगी है और इसकी सहायता करनी चाहिए। उसकी सहायता से उन्होंने भी लाभ उठाया। इसलिए उनकी भरपूर सहायता की पण्डित नेहरू ने। ठीक यही बात हर जगह लागू होती है।

एक सर्वशक्तिमान सत्ता है भगवान। उसके साथ अगर आप नाता जोड़ लें, तो आपकी मालदारी का कोई ठिकाना नहीं रहेगा। आप इतने सम्पन्न हो जाएँगे कि मैं कह नहीं सकता आपसे। आप बापा जलाराम के तरीके से सम्पन्न भी हो सकते हैं, आप सुदामा के तरीके से मालदार भी हो सकते हैं, विभीषण के तरीके से धनवान भी हो सकते हैं, सुग्रीव के तरीके से, मुसीबतों से बचकर खोया हुआ राजपाट पा सकते हैं, आपके यहाँ नरसी मेहता के तरीके से हुण्डी भी बरस सकती हैं। उसके यहाँ कोई कमी नहीं है। यहाँ जो आपको बुलाया गया है, उसका एक काम यह भी है आपसे कहा जाए, कि आप भगवान के साथ में अपना रिश्ता जोड़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लीजिए। आप पूजा करते हैं, उपासना करते हैं, भजन करते हैं। उसका मतलब यह है कि आप इन उपायों के द्वारा अपना रिश्ता भगवान के साथ में जोड़ लें और भगवान के साथ रिश्ता जुड़ गया, तो मजा आ जाएगा।

एक गरीब घर की लड़की की किसी मालदार पति से शादी हो जाए, तब वह दूसरे दिन ही उसकी मालकिन हो जाती है, कब ? जब उसने रिश्ता मिला लिया, तब। बस, मुझे भी यही कहना था। रिश्ता मिलाने में आप जो ख्याल करते हैं कि रिश्वत देनी पड़ती है, चापलूसी करनी पड़ती है वह ख्याल गलत है। रिश्वत देकर भगवान को अपना मित्र बना सकते हैं और उनका अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं—ऐसा मत सोचिये और यह मत विचार कीजिए कि जीभ की नोंक से कुछ मीठी बातें, कुछ चापलूसी भरी बातें सुनाने के बाद भगवान को आप अपना बना सकते हैं। आप भगवान की समझदारी पर यकीन कीजिए। भगवान आपकी जुबान को नहीं, आपकी नीयत देखता है, दृष्टिकोण को देखता है, चरित्र को देखता है, चिन्तन को देखता है और आपकी भावनाओं को देखता है; अगर इस क्षेत्र में आप सूने हैं, तब आपके कर्मकाण्ड भी ज्यादा कारगर नहीं हो सकते। आपने देखा होगा, कितने पंडित हैं जो कि विधि-विधान जानते हैं, कर्मकाण्ड जानते हैं, फिर भी खाली रहते हैं। आपने देखा है, कितने साधु-महात्मा हैं जो तरह-तरह के जप करते हैं, तिलक लगाते हैं, पूजा-पाठ करते हैं, तीर्थयात्रा करते हैं, स्नान-पूजन करते हैं; लेकिन उनकी नीयत, भावना और उनका दृष्टिकोण ऊँचा नहीं हुआ तब, उनका व्यक्तित्व ऊँचा नहीं हुआ तब, अन्तःकरण ऊँचा नहीं हुआ तब-तब उनका लाल-पीले कपड़े पहन लेना और तरह-तरह के आडम्बर बना लेना, तरह-तरह के क्रिया-कलाप कर लेना, बिल्कुल बेकार चला जाता है। सामान्य नागरिक से भी गये-बीते स्तर की जिन्दगी जीते हैं। भगवान की कृपा प्राप्त करने का जो असली रहस्य है, उसको आपको जानना ही चाहिए। उसके लिए क्या करना होगा ? आपको उसके साथ में जुड़ जाना होगा। जुड़ जाने को ही उपासना कहते हैं। किस तरीके से जुड़ें ?

मैं आपको कुछ थोड़े-से उदाहरण बताऊँगा। आपने आग में लकड़ी को मिलते हुए देखा है ? लकड़ी की क्या कीमत है ! दो कौड़ी की लकड़ी अगर आग के साथ मिला दी जाए, तो थोड़ी-सी देर में लकड़ी गरम होने लगती है और फिर आग हो जाती है; फिर उसे आप छू भी नहीं सकते। जो गुण आपके हैं, भगवान के हैं, देवता के हैं, वही गुण परस्पर लकड़ी और अग्नि के भी हैं। बस, ठीक यही तरीका व्यक्ति को और जीवात्मा को परमात्मा के साथ मिलाने का है तो क्या करें, नजदीक आ जाएँ ? वही मैं कह रहा हूँ। नजदीक आने का एक तरीका है, वह तरीका है—अपने आपको सौंप देना, अपने आपको होम देना, उसकी इच्छाओं पर चलना। लकड़ी अपने आपको होम देती है, सौंप देती है, आग उसको जलाती है, वह जलने को रजामन्द है। ऐसी स्थिति में तो वह उसी के साथ घुलेगी-मिलेगी। हमारी-आपकी नीयत वैसी हो, तो हम भगवान के साथ घुल-मिल जाएँगे, उनको अपने में नहीं मिला लेंगे। उनको अपनी मर्जी के मुताबिक नहीं चलाएँगे, बल्कि हम उनकी मर्जी के मुताबिक चलेंगे। इसी का नाम समर्पण है, इसी का नाम विलय है, इसी का नाम विसर्जन है, इसी का नाम शरणागति है। बहुत-से नाम इसके दिये गये हैं। उपासना का तत्त्व और ज्ञान इसी पर चढ़ा हुआ है कि आप भगवान के अनुयायी होते हैं कि नहीं, आप भगवान का अनुशासन मानते हैं कि नहीं, आप भगवान् की इच्छानुसार चलते हैं कि नहीं, आप भगवान के बताये हुए इशारे और संकेत पर अपने कदम बढ़ाते हैं कि नहीं ? एक ही प्रश्न है, बस। आपका वो ख्याल ठीक नहीं है कि हम भगवान को अपनी मन-मर्जी पर चला सकते हैं। आप भगवान को क्यों मर्जी पर चलाएँगे ? भगवान आपकी मर्जी पर क्यों चलने लगे ? भगवान के भी कुछ नीति और नियम हैं, कुछ मर्यादा और कायदे हैं। आपकी खुशामद की वजह से, आपकी मनोकामना पूरी करने के लिए क्या भगवान अपनी नीति को छोड़ देंगे, नियम को छोड़ देंगे, मर्यादा को छोड़ देंगे, कायदे-कानून को छोड़ देंगे ? क्या अपने आप पर पक्षपात का इल्जाम लगवाएँगे, पक्षपाती होने का कलंक लेंगे ? नहीं, भगवान ऐसा कर नहीं पायेंगे। आपके मन में यह ख्याल हो कि मिन्नतों और खुशामदों से भगवान को अपने नजदीक ला सकते हैं, तो यह ख्याल छोड़ दीजिए। तो क्या करना पड़ेगा ? यह करना पड़ेगा कि आप अपने आप को सौंप दीजिये, अपने आपको उनके हाथ की कठपुतली बना दीजिये और देखिये भगवान क्या-से-क्या काम करते हैं ? पानी दूध में मिल जाता है और उसकी कीमत दूध के बराबर हो जाती है। एक छोटी-सी बूँद, नाचीज बूँद समुद्र में गिरती है और अपनी हस्ती को नेस्तनाबूद कर देती है; छोटी-सी बूँद भी समुद्र की कीमत की हो जाती है, इसकी हैसियत समुद्र के बराबर की हो जाती है। नाला नदी में शामिल हो जाता है; जबकि नाला दो कौड़ी का, गन्दा, कीचड़ से भरा हुआ होता है; लेकिन जब वह नदी में शामिल हो गया तब ? तब नाले का पानी नदी की तरह पूजा जाता है। गंगा में गिरे हुए नाले भी गंगाजल कहलाते हैं। कैसे हो गया यह ? ऐसा इसलिए हो गया कि उन्होंने अपने आप को समर्पित कर दिया। नदी, नाला आप जैसा हो जाता और कहता गंगाजी, समुद्र से कि आप हमारे में मिल जाइए, हमारे साथ-साथ रहिए, तो ऐसा नहीं हो सकता। भगवान को आप अपने जैसा नहीं बना सकते तथा अपनी मर्जियाँ पूरी कराने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। आपको ही उनके पीछे चलना पड़ेगा।

पारस के बारे में सुना है आपने ? पारस को छूते ही लोहा सोने का हो जाता है। लोहा बदल जाता है। लोहा वैसा ही बना रहे और पारस से कहे आप सोना बन जाइए, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। पारस सोना नहीं बन सकता। लोहे को बदलना पड़ेगा। चन्दन के पास उगे कुछ पौधे चन्दन की खुशबू लेते हैं और चन्दन बन जाते हैं। आप तो यह चाहते हैं कि चन्दन को हम जैसा बन जाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

चाहिए। चन्दन आप जैसा नहीं बन सकता। छोटी झाड़ियों को चन्दन जैसा खुशबूदार बनना चाहिए। चन्दन बदबूदार झाड़ी नहीं बन सकता। आप भगवान पर दबाव मत डालिए। आप उनके साथ लिपट जाइए। आपने देखा होगा, बेल पेड़ के साथ में लिपट जाती है और पेड़ जितना ऊँचा है, उतनी ही ऊँची होती चली जाती है। अगर बेल अपनी मनमर्जी से फैलती, तो सिर्फ जमीन पर फैल सकती थी। इतना ऊँचा उठना सम्भव नहीं था। ऊँची कैसे हो गई ? क्योंकि वह उससे गुँथ गई, लिपट गई। आप भी भगवान में गुँथ जाइए, लिपट जाइए, फिर देखिये आपकी ऊँचाई बेल के बराबर होती है कि नहीं। भगवान बहुत ऊँचे हैं। आप उनके अनुशासन पर जरा चलिए ना, उनकी इच्छा के हिसाब से चलिए ना, फिर देखिए आप भगवान के बराबर के बनते हैं कि नहीं। आप भगवान के बराबर के बन जाएँगे। आपने बच्चों के हाथ में लगी हुई पतंग देखी होगी। उसके हाथ में पतंग का सिरा होता है और झटका देते रहते हैं। इससे पतंग उस आसमान पर जा पहुँचती है। पतंग अपनी डोरी को बच्चे के सुपुर्द न करे, तब ? उड़ाने वाले के सुपुर्द न करे, तब ? उसको जमीन पर पड़ा रहना पड़ेगा। अगर आप भी अपने जीवन की डोर और आधार भगवान के हाथ में नहीं छोड़े तब, उसकी मर्जी के अनुसार नहीं चलें, तब, आप पतंग के तरीके से आसमान में उड़ने की इच्छाएँ मत कीजिए। आपने देखा होगा, दर्पण में जो चीज सामने आती है, दर्पण वैसा ही दिखाई पड़ने लगता है। आपके जीवन में चारों ओर से कल्मष छाया हुआ है। इसलिए आपका दर्पण, आपका मानसिक स्तर भी वैसा ही बन जाएगा; लेकिन अगर आप भगवान को सामने रखें, उसके नजदीक जाएँ, तो आप देखेंगे कि आपके जीवन में भगवान की छवि है और भगवान की आभा तथा भगवान की शक्ति उसी तरीके से वन जाती है, जैसा कि दर्पण के सामने खड़े आदमी की वन जाती है। आपने वंशी देखी होगी। वंशी अपने आपको पोली कर देती है, खाली कर देती है। पोली और खाली होने के वाद बजाने वाले से कहती है कि आप जो कहेंगे, वही मैं गाऊँगी। बस, बजाने वाला फूँक मारता जाता है, वह बजती जाती है। भगवान को फूँक मारने दीजिए और आप बजने के लिए तैयार हो जाइये।

कठपुतली आपने देखी होगी। कठपुतली के धागे बाजीगर के हाथ में लगे होते हैं। बाजीगर इशारा करता जाता है, कठपुतली नाचना शुरू कर देती है। दुनिया को दिखाई पड़ता है कि कठपुतली का नाच कितना शानदार हुआ: पर वास्तव में कठपुतली का नाच नहीं है, बाजीगर का है; बाजीगर का भी नहीं, धागों का; धागों का भी नहीं कठपुतली के समर्पण का है। कठपुतली ने अपने में हर तरीके से धागे बँधवाये और अपने को बाजीगर के हाथों में सौंप दिया। बस, यही आपको करना पड़ेगा। कठपुतली के तरीके से अगर बाजीगर के हाथ में आप जिन्दगी की नाव को सौंप सकते हों, अपने विचार और चिन्तन सौंप सकते हों और अपनी इच्छाएँ एवं आकांक्षाएँ सौंप सकते हों, फिर आप देखिए कैसा मजा आता है ? आप सब उस जेनरेटर से सम्बन्धित हो जाइए, जिसके साथ में जुड़ने पर ही बल्ब जलते हैं। पंखे भी तभी चलते हैं। जब वह बिजली से जुड़ जाते हैं। बिजली से बल्ब को नहीं जोड़ते हैं, तो उसकी कीमत क्या है ? कुल ढाई रुपये, उसे रखे रहिए आप, कोई फायदा नहीं। आप हीटर नहीं हो सकते, आप कूलर नहीं हो सकते, आप बिजली के पंखे की हवा नहीं पा सकते। जब आप अनन्त शक्ति के साथ जुड़ेंगे, तो देखिये आप कितने कमाल करते हैं, इसलिए आदमी की सबसे ज्यादा समझदारी यह है कि वह अपने को भगवान के साथ में जोड़ ले, शक्तियों के साथ में अपना रिश्ता बना ले। यह कठिन है ? बिल्कुल कठिन नहीं, बहुत सरल है। आपने देखा होगा नल टंकी के साथ में जुड़ जाता है। टंकी में तमाम पानी भरा पड़ा है। नल में क्या है ? कुछ भी तो नहीं है; लेकिन टंकी में भरे पानी के साथ में उसने अपना रिश्ता बना लिया, तो जब तक टंकी में पानी भरा हुआ है, तब तक बराबर आपको पानी मिलता रहेगा। हमने भी भगवान के साथ में अपने आपको जोड़कर रखा है। भगवान की जो सम्पदा है, उसकी जो विभूतियाँ हैं, भक्त की अपनी होती जाती हैं। इसके लिए करना क्या पड़ेगा ? सौंपना पड़ेगा अपने आपको। उनको बहला-फुसला सकते हैं, ऐसा मत सोचिए; कहना तो आपको ही मानना पड़ेगा। समर्पण आपको ही करना पड़ेगा, बीज आपको ही बोना पड़ेगा। आप बीज बोइए, फिर देखिए कैसी फसल आती है। मक्का का एक दाना बो देते हैं, तो उसमें से छह भुट्टे आते हैं। एक-एक भुट्टे में हजार-हजार दाने होते हैं। एक बीज के छह हजार दाने हो गये न। इसी तरह भगवान की खेती में अपने आपको बोइए न, मिलाइए न। जब तक आप बीज को बोयेंगे नहीं, पोटली में रखे बैठे रहेंगे और यह अपेक्षा करते रहेंगे कि जमीन हमारी फसल पैदा कर दे, तो ऐसा न कभी हुआ है और न हो सकता है। आपने सुना होगा भगवान हमेशा माँगते रहते हैं। पहले हाथ पसारते हैं, फिर कुछ देते हैं। अगर हाथ पर आप अपना कुछ रख नहीं सकते, तो फिर क्या पायेंगे आप ! चावलों से उन्हें नहीं खरीद सकते आप, धूपबत्ती से नहीं खरीद सकते, आप आरती करके और कुछ छोटे-मोटे क्रिया-कलाप करके भगवान के अनुग्रह के अधिकारी नहीं हो पायेंगे। फिर क्या करना पड़ेगा ? आपको अपना चिन्तन, चरित्र, दृष्टिकोण और भावना, लक्ष्य सब भगवान के साथ जोड़ देना पड़ेगा। अगर आप यह करने को तैयार हो जाएँगे, फिर देखिये क्या-क्या होता है, कितना मजा आता है ? पहले भगवान की मर्जी तो पूरी कीजिए, फिर देखिए कुछ मिलता है कि नहीं आपको।

अभी मैंने सुदामा के बारे में बताया था कि सुदामा ने अपनी पोटली दे दी थी। पोटली देने के बाद में क्या भगवान ने कुछ नहीं दिया था ? पहले तो भगवान माँगते हुए आते हैं। शबरी के पास भगवान माँगते हुए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गये—अरी ! हम बहुत भूखे हैं, खाना खिलाओ। भगवान् उनके लिए क्या सोना-चाँदी लेकर गये थे ? हीरा-मोती लेकर गये थे ? कुछ नहीं। भगवान कहीं भी जाते हैं, तो मनुष्य की पात्रता को परखने के लिए जाते हैं, उसकी महानता को परखने के लिए जाते हैं, कि आपके पास जो है, हमारे सुपुर्द कीजिए। शबरी ने जूठे बेर ही सुपुर्द कर दिये। सुदामा के पास जो कुछ था, सुपुर्द कर दिया। गोपियों के भी पास गये थे। जाते थे, तो यही पूछते थे, लाइए कुछ दीजिए—छाछ, मक्खन, दही कुछ भी। कर्ण से भी माँगा, बलि से भी माँगा। हर जगह माँगते हैं। जब तक आप अपने को सौंपने के लिए आमादा नहीं होंगे, तब तक भगवान को अपना नहीं बना सकेंगे।

लैला-मजनूँ की कहानी आपने सुनी है न ? एक मजनूँ था, लैला को प्यार करता था और वह चाहता था कि लैला की शादी उससे हो जाए; लेकिन लैला का बाप तैयार नहीं था। उसके बाप ने कहा—नहीं, हम भिखारी के साथ में क्यों शादी करें ? लैला ने सोचा—वैसे तो मैं अपनी मर्जी से भी शादी कर लूँ, पर पहले देखूँ तो सही, ऐसा न हो कि वह मुझे अपने मतलब के लिए, अपनी खुदगर्जी के लिए ही शिकंजे में कसना चाहता हो। क्या वास्तव में वह मुझसे प्यार करता है ? प्यार का मतलब होता है—देना। अगर प्यार का मतलब देना, आप नहीं समझते हैं, प्यार का मतलब आप यह समझते हैं कि भगवान की भक्ति करें और उनको कठपुतली के तरीके से चलाएँ तथा उचित एवं अनुचित जो कुछ भी फायदे हैं, उठालें, तो आप भक्ति की परिभाषा बदल दें, इस भक्ति को भक्ति कहना बन्द कर दें। भक्ति कैसी होती है ? जैसी मजनूँ की थी। मैं मजनूँ की बात कह रहा था न ! एक बार लैला ने उसकी परीक्षा लेनी चाही और जानना चाहा कि मजनूँ कैसा है ? पहले तो उसने ऐसा इन्तजाम कर दिया कि उसको कुछ पैसे मिल जाया करें, दुकानदारों से खाने को मिल जाया करे। फिर उसने सोचा—ऐसा तो नहीं, कि वह हरामखोर हो और फोकट का खा रहा हो। उन्होंने अपनी बाँदी से यह कहला भेजा कि लैला बहुत बीमार है, तो मजनूँ बड़ा दुःखी हुआ। बाँदी ने कहा—दुःखी होने से क्या फायदा, आप कुछ मदद कीजिए न उनकी। उसने कहा—लैला को हम बहुत प्यार करते हैं। प्यार करते हो तो कुछ दीजिए न। मजनूँ ने कहा—मैं क्या दूँ ? बाँदी ने कहा—डाक्टरों ने यह कहा है कि लैला की नसों में खून का एक प्याला चढ़ाया जाएगा, आप अपना खून देंगे क्या ? जिससे कि लैला की जिन्दगी बचायी जा सके। मजनूँ फौरन तैयार हो गया। उसने, जो कटोरा बाँदी लेकर आयी थी, खून से लबालब भर दिया। बाँदी जब खून लेकर चली, तब उसने बाँदी से एक और बात कही—बाँदी जल्दी आना, अभी कई कटोरे खून मेरे शरीर में है, वह मैं उसके सुपुर्द करूँगा, क्योंकि उससे मैं मुहब्बत करता हूँ और मुहब्बत का मतलब होता है—देना। बाँदी जब एक कटोरा खून लेकर के गयी, तो नकली मजनूँ जो थे, सब भगा दिए गये। लैला ने अपने बाप से कह दिया—जो मुझसे इतनी मुहब्बत करता है और जो मुहब्बत की कीमत को समझता है, उसके ही साथ मैं रहूँगी। लैला और मजनूँ की शादी हो गई।

आपकी भी शादी भगवान के साथ में हो सकती है; लेकिन करना क्या चाहिए ? सिर्फ एक बात करनी चाहिए कि भगवान की मर्जी पर चलने के लिए आप आमादा हो जाइए। भगवान जो आपसे चाहते हैं, उसको कीजिए। आपका चाहना भी ठीक है; लेकिन आप जो चाहते हैं, उससे पहले बहुत कुछ दे दिया है भगवान ने। आपको इनसान की जिन्दगी दी है और ऐसी जिन्दगी दी है कि आप अपनी मनमर्जी पूरी कर सकते हैं। मनमर्जी के लिए कोई कमी नहीं है। आपके हाथ कितने बड़े हैं, आपकी जबान और आँखें कितनी शानदार हैं, इसमें आप संतोष कर सकते हैं। अपनी दैनिक जरूरतों की भगवान से अपेक्षा मत कीजिए। आप अपनी हविश, अपनी तमन्नाओं, इच्छाओं, महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भगवान को दुर्वचन कहेंगे। भगवान को मजबूर करेंगे कि कर्तव्य की बात को छोड़कर वह पक्षपात करने लगे और कर्मफल की महत्ता का परित्याग कर दें। आप ऐसा मत कीजिए, उनको न्यायाधीश रहने दीजिए। भगवान को बेइज्जत मत कीजिए। आप अपनी मर्जी के लिए उनको पक्षपाती मत बनाइए। वैसे आप बनाना चाहेंगे, तो भी वह ऐसा नहीं करेंगे। इसलिए तरीका एक ही है—आप उस शक्ति के भण्डार के साथ में अपने-आपको मिला दीजिए, जोड़ लीजिए। आपको उनकी मर्जी पर चलना पड़ेगा। आप अपनी आकांक्षाएँ, इच्छाएँ खत्म कीजिए, उन्हीं के हो जाइए और उन्हीं के कहे पर चलिए।

राजा हरिश्चन्द्र बिके थे एक बार और भंगी उनको खरीद ले गया था। भगवान भी चौराहे पर बिकने के लिए खड़े थे। वह आवाज लगाते हैं कि हम बिकने को खड़े हैं, कोई हमको खरीद ले जाए; जो कोई खरीद ले जाएगा, हम उसी की सेवा करेंगे, सहायता करेंगे। आप चाहें, तो उनको खरीद सकते हैं। क्या कीमत है ? अपने आपको उनके हाथों बेच दीजिए और उन्हें अपने हाथों खरीद लीजिए। स्त्री अपने हाथों अपने को पति को सौंप देती है, अपने को बेच देती है, लेकिन उसी कीमत पर पति को खरीद लेती है। बस, यही रिश्ता चलता है। यही भगवान् की मर्जी का रिश्ता है। आपको अपने जीवन में यह सब करना ही पड़ेगा और करना भी चाहिए। आप अपने घिनौने चिन्तन को बदल दीजिए, अपने छोटे दृष्टिकोण को परिवर्तित कर दीजिए, लोभ और लालच से बाज आइए और भगवान की सुन्दर दुनिया को ऊँचा बनाने के लिए, शानदार बनाने के लिए राजकुमार के तरीके से कमर बाँधकर खड़े हो जाइए। आप समर्पित हो जाइए, शरणागति में आइए, विराजिए, विसर्जन कीजिए, फिर देखिए आप क्या पाते हैं ? आप त्याग नहीं करेंगे, बीज के तरीके से गलेंगे नहीं, तब तक कैसे पा सकते हैं ? त्याग करने के लिए जप करना जरूरी तो है; पर काफी नहीं है। उपासना करना, धूपबत्ती जला देना, आरती उतार देना यह सब जरूरी है; पर काफी नहीं है। आपको कुछ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ज्यादा करना होगा। ज्यादा करने के लिए अपना कलेजा चौड़ा कीजिए और तैयारी कीजिए। आज मुझे यही निवेदन करना था आप लोगों से।

ॐ शान्ति।

भगवान के साथ साझेदारी घाटे का सौदा नहीं

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

लगभग साठ वर्ष हो गए, जब हमारे गुरुदेव घर पर आए थे और उन्होंने कई बातें बताई। शुरू में तो डर जैसा लगा, पर पीछे मालूम पड़ा कि वे पिछले तीन जन्मों से हमारे साथ रहे हैं, तब भय दूर हो गया और बातचीत शुरू हो गई। उन्होंने कहा—अपनी पात्रता को विकसित करने के लिए तुम्हें चौबीस लक्ष के २४ साल तक २४ पुरश्चरण करने चाहिए। मैंने उनकी वह आज्ञा शिरोधार्य की और सब नियम, विधि वगैरह मालूम कर लिया कि किस प्रकार जौ की रोटी और छाछ पर रह करके २४ पुरश्चरण पूरे करने पड़ेंगे। यह पूरी जानकारी देने के बाद उन्होंने एक और बात कही जो बड़ी महत्त्वपूर्ण है। आज उसी के बारे में आपको बताऊँगा।

उन्होंने कहा—गायत्री मंत्र कइयों ने जपे हैं, कई लोग उपासना करते हैं, लेकिन ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ किसी के पास नहीं आतीं। जप कर लेते हैं और लोगों से बता देते हैं कि हमने गायत्री का जप कर लिया है, लेकिन न ऋद्धि, न सिद्धि। हम तो तुम्हें इस तरह की गायत्री बताना चाहते हैं, जिसमें ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ भी मिलें और इस जप से ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने का लाभ भी मिले। हमने कहा—यह तो बड़े सौभाग्य की बात है। आप इतनी अच्छी बात बताएँगे। इससे अधिक अच्छा और सौभाग्य हमारे लिए क्या हो सकता है ? तब उन्होंने गायत्री के २४ पुरश्चरणों की विधि बताने के बाद में एक और नई बात बताई—'बोना और काटना।' उन्होंने कहा—तुम्हारे पास जो कुछ भी चीज है, उसे भगवान के खेत में बोना शुरू करो, वह सौ गुना होकर फिर मिल जाएगा। ऋद्धि और सिद्धि का तरीका यही है, वे फोकट में कहीं नहीं मिलतीं। दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जो ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ बाँट रहा हो या कुछ कहीं से मिल रहा हो। इस तरह का कोई नियम नहीं है। बोने पर ही किसान काटता है। ठीक इसी तरह से तुमको भी बोना और काटना पड़ेगा। कैसे ? बताइए सब बातें। उन्होंने कहा—देखो शरीर तुम्हारे पास है। शरीर माने श्रम और समय। इन्हें भगवान के खेत में बोओ। कौन-सा भगवान ? यह विराट् भगवान जो चारों ओर समाज के रूप में विद्यमान है। इसके लिए तुम अपने श्रम, समय और शरीर को खर्च कर डालो, वह सौ गुना होकर तुमको सब मिल जाएगा। नम्बर एक।

नंबर दो—बुद्धि तुम्हारे पास है। भगवान की दी हुई सम्पदाओं में अकल तुम्हारे पास है। इससे बजाय इस-उस बात का चिंतन करने, अहंकार का चिंतन करने, वासनाओं का चिंतन करने, बेकार की बातों का चिंतन करने की अपेक्षा चिंतन करने की जो सामर्थ्य है उस सारी की सारी सामर्थ्य को भगवान के निमित्त लगा दो। उनकी खेती में बोओ, यह तुम्हारी बुद्धि सौ गुनी होकर तुमको मिल जाएगी।

तीसरी चीज है—भावनाएँ। मनुष्य के तीन शरीर हैं—स्थूल, सूक्ष्म और कारण। इसमें से स्थूल शरीर से श्रम होता है, सूक्ष्म शरीर में बुद्धि होती है और कारण शरीर में भावनाएँ होती हैं। भावनाएँ भी तुम्हारे पास हैं, इन्हें अपने घरेलू आदमियों के साथ में खर्च कर डालने के बजाय भगवान् का जो सारा खेत है, उद्यान है, उसमें बोओ और भावनाएँ तुम्हें सौ गुनी होकर के मिलेंगी। यह तीन चीजें—शरीर, बुद्धि और भावनाएँ भगवान ने दिए हैं, किसी आदमी ने नहीं। एक और चीज है जो तुम्हारी कमाई हुई है, भले ही वह इस जन्म में कमाया हो या पिछले जन्म में। वह है—धन। धन भगवान् किसी को नहीं देता। मनुष्य चाहे ईमानदारी से कमा ले या बेईमानी से कमा ले या मत कमाए, भगवान को इससे कोई लेना-देना नहीं है। धन जो तुम्हें मिला है—शायद तुम्हारा कमाया हुआ नहीं है। मैंने कहा—मेरा कमाया हुआ कहाँ से हो सकता है ? १४-१५ वर्ष का बच्चा कहाँ से धन कमाकर लाएगा। अच्छा पिताजी का दिया हुआ धन है। इस सारे-के-सारे धन को भगवान के खेत में बो दो और यह सौ गुना होकर के मिल जाएगा। बस मैंने गाँठ बाँध ली और ६० वर्ष से बँधी हुई गाँठ मेरे पास ज्यों की त्यों चली आ रही है। गायत्री उपासना के जब २४ साल से भी अधिक हो गए, उसके बाद भी बोने और काटने का यह सिलसिला बराबर चलता रहा। आप लोग भी अगर बोएँ तो आप भी सिद्धियाँ पाएँगे—ऋद्धियाँ पाएँगे जैसे कि मैंने पा लीं। भगवान के नियम सबके लिए समान हैं। सूरज के लिए सब आदमी एक समान हैं। जो नियम हमारे ऊपर लागू हुए हैं, वही आपके ऊपर भी लागू हो सकते हैं। आप भी ऋद्धि-सिद्धियों से सराबोर हो सकते हैं। यह चारों चीज मेरे गुरु ने मुझे बताई थीं और मैं आप से निवेदन कर रहा हूँ। इन चारों चीजों को अगर आप बोना शुरू करें तो वह सौ गुनी होकर के आपको मिलेंगी। मुझे तो मिल गया है और मैं अपनी गवाही देकर, साक्षी देकर आप में से हर एक आदमी को बताना चाहता हूँ कि जो बोएँगे वे काटेंगे और किसान के तरीके से फायदे में रहेंगे।

भगवान को आप क्या समझते हैं कि वे बाँटते फिरते हैं ? बाँटते तो हैं, पर उससे पहले वे माँगते फिरते हैं। भगवान की इच्छा माँगने की है। भगवान शबरी के दरवाजे पर गये थे और उससे कहा था कि हम तो भूखे हैं, कुछ हो तो खाने को ले आओ। शबरी के पास बेर थे सो उन्होंने ला करके दे दिए और कहा—हमारे पास यही हैं आप खा लीजिए। केवट के पास भगवान गए थे और कहा था—भाईसाहब हमको तैरना नहीं आता, मेहरबानी करके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमको, लक्ष्मण और सीताजी को पार निकाल दीजिए। केवट ने निकाल दिया। भगवान माँगते फिरते हैं। वे सुग्रीव के पास भी गए थे और कहा था कि हमारी सीता जी को कोई चुरा ले गया है, उनका पता लगाने के लिए आप अपनी सेना हमको दे दें और ऐसा कुछ इंतजाम कर दें, जिससे हमारी धर्मपत्नी मिल जाएँ तो बड़ी मेहरबानी होगी। सुग्रीव ने वही किया—अपना सर्वस्व दे दिया उनको। हनुमान जी का भी यही हुआ। हनुमान जी से भी वे माँगते फिरे कि हमारा भाई बीमार हो गया है, घायल हो गया है, उसके लिए आप दवा ले आइए। सीताजी को संदेश पहुँचा दीजिए, लंका से उनकी खबर ले आइए। राजा बलि की कहानी मालूम है आपको। वे बलि के पास गए थे और कहा था कि जो कुछ भी तुम्हारे पास है हमको दे दो। बलि ने कहा—क्या है हमारे पास ? तब उन्होंने कहा था कि तुम्हारे पास जमीन है, उसमें से साढ़े तीन कदम हमको दे दो। नाप लिया भगवान ने और जो कुछ भी माल-टाल था सारा छीन लिया।

गोपियों से बड़ी मोहब्बत थी उनकी। उनसे कहा—तुम्हारा दही और मक्खन कहाँ रखा है ? गोपियाँ समझती थीं कि वे भगवान हैं तो सोने-चाँदी के जेवर लाए होंगे, कोई उपहार लाए होंगे, पर वे तो कुछ नहीं लाए। उल्टे, उन्होंने जो कुछ भी मक्खन तथा दही जमा किया हुआ था, वह भी छीन लिया। कर्ण जब घायल पड़े हुए थे तब अर्जुन को लेकर भगवान उनके मैदान में जा पहुँचे और कहा—अरे कर्ण, हमने सुना था कि तुम्हारे दरवाजे पर से कोई आदमी खाली हाथ नहीं जाता। हम तो कुछ माँगने आए थे, पर तुम कुछ देने की हालत में मालूम नहीं पड़ते। कर्ण ने कहा—नहीं महाराज ! ऐसा मत कीजिए, खाली हाथ मत जाइए। मेरे दाँतों में सोना लगा हुआ है, जिसे उखाड़कर मैं अभी देता हूँ आपको। उन्होंने एक पत्थर का टुकड़ा लिया और दाँत तोड़ करके एक अर्जुन के हाथ पर रखा और एक कृष्ण के। इसी तरह सुदामा जी की कहानी है। सुदामा जी की पत्नी ने उनको इसलिए भेजा था कि कृष्ण उनके मित्र हैं और वे उनसे कुछ माँगकर ले आएँ तो गुजारा चले। सुदामा जी गए तो इसी ख्याल से थे, लेकिन भगवान ने उनसे पूछा कि लाए हो या कुछ माँगने आए हो। हमारे दरवाजे पर माँगने वाले तो भिखारी आते हैं, पर तुम लाए क्या हो ? पहले यह बताओ। देखा सुदामा जी के बगल में चावल की पोटली दबी थी। उस पोटली को भगवान ने उनसे माँग लिया और उस चावल को स्वयं खाया तथा अपने परिवार को खिलाया। जो कुछ भी सुदामा जी के पास था सब खाली कर दिया। बाद में उन्हें कुछ दिया होगा जरूर। गोपियों को भी दिया होगा, कर्ण को भी दिया होगा, बलि को भी दिया होगा। हनुमान, केवट, सुग्रीव सभी को दिया होगा, पर सबसे पहले उन्होंने लिया था।

भगवान् जब कभी आते हैं तब माँगते हुए आते हैं। भगवान के साक्षात्कार जब कभी आपको होंगे, तब यही मानकर चलना कि वह आपसे माँगते हुए आएँगे। संत नामदेव के पास भगवान कुत्ता का रूप बनाकर गए थे और सूखी रोटी लेकर के भागे थे, तब नामदेव ने कहा था—घी और लेते जाइए। देने के लिए उन्होंने अपना कलेजा चौड़ा किया। मेरे गुरु ने मुझसे यही कहा था। उसी वक्त से मैंने बात गिरह बाँध ली और लगातार जिंदगी के इन ६० वर्षों में देता ही चला आया हूँ, जो कुछ भी सम्भव हुआ है। देने में कोई नुकसान नहीं है। अगर अच्छी जगह बोया जाए, तब लाभ ही लाभ है, लेकिन कहीं खराब जगह पर, पत्थर पर बो दिया गया तब मुश्किल है। अच्छा खेत भगवान का खेत है, उसमें बोने से ज्यादा होकर मिलेगा। आपने देखा होगा कि बादल समुद्र से लेते हैं और वर्षा कर जाते हैं, पर क्या वे खाली हाथ रह जाते हैं ? नहीं, समुद्र उन्हें दुबारा देता है। शरीर का चक्र भी इसी तरह का है। हाथ कमाता है और मुँह को दे देता है और मुँह पेट में पहुँचा देता है और वह खून बन जाता है। एक हाथ खाली रहा है क्या ? नहीं हाथ के पास फिर दुबारा माँस के रूप में, रक्त के रूप में, हड्डियों के रूप में, स्फूर्ति के रूप में वह ताकत आ जाती है, जो उसने कमाई थी। दुनिया का ऐसा ही चक्र है। हम किसी को जो कुछ देते हैं वह घूम-फिरकर हमारे पास फिर से आ जाता है। वृक्ष अपने फल, फूल, पत्ते सभी कुछ बाँटता रहता है और भगवान उसको दुबारा देते रहते हैं। भेड़ अपनी ऊन बाँटती रहती है। काटने के थोड़े दिन बाद ही शरीर पर ज्यों की त्यों दुबारा ऊन आ जाती है।

देना बहुत शानदार चीज है, हमारे गुरु ने यही बात सिखाई थी। तो आपको कुछ मिला क्या ? यही तो मैं बताना चाहता हूँ कि मुझे मिला है और अगर आप हमारी बात पर विश्वास कर सकते हो तो अपने बारे में भी यह ख्याल कर सकते हैं कि आपको भी मिलेगा, आप भी खाली हाथ रहने वाले नहीं हैं। इस बात का हमने बराबर ध्यान दिया है। रात के वक्त भगवान का नाम लिया होगा और दिन के वक्त सूरज निकलने से लेकर के सूरज में डूबने तक हमने सिर्फ भगवान की सेवाएँ की हैं। नाम जब कभी हमने लिया होगा तब रात के वक्त लिया होगा और दिन समाज के रूप में फैले हुए भगवान के लिए खर्च करते रहे। हमारी ७५ साल की उम्र होने को आई। इस उम्र में ढेरों के ढेरों आदमी मर जाते हैं और जो जिंदा भी रहते हैं, वे किसी काम के नहीं रहते। ६० वर्ष के बाद प्रायः आदमी नाकारा हो जाता है, पर हमारे काम करने की ताकत ज्यों की त्यों बनी हुई है। हमारा शरीर लोहे का है। लोहे का क्यों है ? इसलिए है कि हमने अपने शरीर को भगवान के काम में लगा दिया है। हमारा शरीर बहुत ठीक है और अगर आप भी अपने शरीर को समाज के लिए खर्च करना शुरू करें तो ठीक रहेंगे। गाँधी, ८० वर्ष के होकर मरे थे—यकीन रखिए अगर आप भी अपने शरीर को भगवान के खेत में बोना शुरू करें तो आपके लिए बहुत फायदेमंद वाली बात होगी। यह शरीर की बात हुई।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

नम्बर दो—अपनी बुद्धि को हमने भगवान् के खेत में बोया। बुद्धि हमारे दिमाग में रहती है। कहाँ तक पढ़े हैं आप ? हमारे गाँव में प्राइमरी स्कूल है। उस जमाने में दर्जा चार तक प्राइमरी होते थे ? अब तो पाँचवीं तक होते हैं। वहीं तक हम पढ़े, इसके बाद फिर कभी मौका नहीं मिला। जेल में लोहे के तसले के ऊपर कंकड़ों से अँग्रेजी पढ़ना शुरू किया, संस्कृत पढ़ना शुरू किया, अमुक भाषा शुरू किया, तमुक शुरू किया। हमारी बुद्धि बहुत पैनी है। आपने देखा नहीं—चारों वेदों के भाष्य हमने किए। १८ पुराण ६ दर्शन आदि सभी भाष्य किए। व्यास जी ने एक महाभारत लिखा था और गणेश जी को मददगार बनाकर ले गये थे। हमारा तो कोई मददगार भी नहीं है। अकेले ये हमारे हाथ ही मददगार हैं। हमने इतना साहित्य लिखा है जो सामान्य नहीं असामान्य बात है। हम प्लानिंग करते हैं, कोई आदमी अपनी खेती का, घर का प्लानिंग करता है और हम सारी दुनिया को, सारे विश्व को नए सिरे से बनाने की प्लानिंग करते हैं। भारत सरकार की पंचवर्षीय योजनाएँ बनती हैं, जिसके लिए कितना बड़ा स्टाफ, कितने मिनिस्टर और कौन-कौन लोग काम करते हैं, लेकिन हम तो सारी दुनिया का नया नक्शा बनाने के लिए इसी अकल से काम कर लेते हैं। अपनी अकल की हम जितनी प्रशंसा करें उतनी कम है।

अक्ल के अलावा हमने अपनी भावनाओं को भी भगवान को दे दिया। जो भी कोई आदमी हमारे नजदीक आया होगा तो हमारे मन में उसके प्रति दो ही बातें रही हैं कि हम अपने सुख को बाँट दें और उसके दुःखों को बँटा लें। यदि हम बँटा सकते होंगे तो हमने जी-जान से कोशिश की है। अगर हमारे पास कोई सुख होगा, सामर्थ्य होगी तो हमने बाँटने के लिए बराबर कोशिश की है क्योंकि हमारी भावनाएँ हमको मजबूर करती हैं। वे कहती हैं कि तुम्हारे पास है और जिनको जरूरत है उनको दोगे नहीं ? तो हम कहते हैं कि जरूर देंगे। जो मुसीबत में हैं और कहते हैं कि हमारी मुसीबत में हिस्सा नहीं बँटाएँगे क्या ? तब हम कहते हैं कि आपकी मुसीबत में हम जरूर हिस्सा बँटाएँगे। हमारी भावनाएँ इसी तरह की हैं। भावनाएँ जिसे संवेदना कहते हैं, प्यार कहते हैं, हमने बोया है। फलतः सारी दुनिया हमको बेहद प्यार करती है। हमने प्यार दिया है, प्यार बोया है, इसलिए प्यार पाया है।

भगवान की चीजों को हमने अमानत के तरीके से रखा और उन्हीं के खेत में बोकर उनकी ही दुनिया के लिए खर्च कर डाला। हमारे पास पिताजी का कमाया हुआ जो भी धन था हमने सब उसी के लिए खर्च कर दिया। हमारे पास जो भी जमीन थी, जेवर थे—सब बेचकर के गायत्री तपोभूमि को बनाने में, भगवान का घर बनाने में खर्च कर दिया। जो पैसा पिताजी ने छोड़ा हुआ था, एक-एक पाई खर्च कर डाला। हमने किसी का दिया हुआ धन खाया नहीं। तो आप नुकसान में रहे होंगे ? आप नुकसान की बात करते हैं—कभी आप हमारे गाँव जाइए, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, अखंड-ज्योति कार्यालय देखिए। आप यहाँ आइए शांतिकुंज, गायत्री नगर देखिए, ब्रह्मवर्चस देखिए कितने शानदार हैं। २४०० गायत्री शक्तिपीठों को देखिए। इतनी तो बिल्डिंगें हैं और जो उनमें लोग रहते हैं, उन पर जो रुपया खर्च होता है वह कहाँ से आता है ? जाने कहाँ से आ जाता है कि धन हमारे लिए कम नहीं पड़ता। भगवान की तरफ हम इशारा कर देते हैं और वह हमारे लिए जिन भी वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वह सब ज्यों की त्यों भेज देता है। यह क्या हो गया ? यह सिद्धियाँ हो गयीं। सिद्धियों में हम चार चीजें शुमार करते हैं—(१) धन, (२) लोगों का प्यार, (३) बुद्धि और (४) शारीरिक स्वास्थ्य। हमारे पास सिद्धियाँ हैं। गायत्री का जप करने से किसी के पास सिद्धियाँ आई हों या नहीं मालूम नहीं, लेकिन हमको जरूर मिली हैं। इन चारों चीजों की कोई भी परीक्षा ले सकता है।

एक और चीज है—ऋद्धि। ऋद्धियाँ वह होती हैं, जो दिखाई नहीं पड़तीं। ऋद्धियाँ तीन हैं और सिद्धियाँ चार। पहली ऋद्धि है—आत्मसंतोष। हमारे भीतर इतना संतोष है, जितना कि न किसी राजा को होगा, न बिड़ला जी को और न किसी मालदार को। उन्हें नींद नहीं आती है, पर हमको ऐसी नींद आती है कि ढोल बजते रहें, नगाड़े बजते रहें और हम ऐसे सो जाते हैं बिल्कुल निश्चिन्त मानो दुनिया की कोई समस्या ही हमारे सामने नहीं है। आत्मसंतोष के अलावा दूसरी ऋद्धि है—लोकसम्मान और जनसहयोग। हमें लोगों का सम्मान ही नहीं उनका सहयोग भी मिला है। माला पहना देना ही सम्मान करना नहीं है, वरन् जनता जिसका सहयोग कर रही हो तो मान लीजिए यह उस आदमी को सम्मान मिला है। माला तो खरीदी भी जा सकती है, लेकिन सम्मान उसमें होता है, जिसमें जनसहयोग मिलता है। गाँधी जी का सहयोग किया था लोगों ने। बिनोवा का सम्मान किया था तो सहयोग भी दिया था। ढेरों की ढेरों जमीनें उनको दान में दे दी थीं। गाँधी जी के एक इशारे पर लोग जेल जाने के लिए और फाँसी के तख्तों पर झूलने के लिए, गोलियाँ खाने के लिए चले गऐ थे। यह उनका सम्मान था और सहयोग था। सम्मान कहते हैं सहयोग को। हमारा भगवान हमारे लिए बहुत सहयोग करता है। जनता हमको बहुत सहयोग करती है।

तीसरी ऋद्धि है—दैवी अनुग्रह। दैवी अनुग्रह किसे कहते हैं ? आपने रामायण में कई प्रसंग पढ़े होंगे कि जब देवता प्रसन्न होते हैं, तब फूल बरसाते हैं और कुछ नहीं बरसाते। कई बार अमुक पर फूल बरसाए, तमुक पर फूल बरसाए। यह क्या है ? भगवान् की बिना माँगे की सहायता है। बिना माँगे की अकल, बिना माँगे के इशारे, बिना माँगे का सहयोग फूलों के तरीके से बरसते रहे हैं हमारे ऊपर। अगर ऐसा न होता तो न जाने अब तक हमारा क्या हो गया होता ? समय-समय पर जो रास्ते उसने बताए हैं, ऐसे शानदार रास्ते बताए हैं कि उन पर हम चलते गए और वह हमारे ऊपर फूल बरसाते रहे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमको हमारे पिता की सम्पत्ति का अधिकार मिला है, कर्त्तव्य और अधिकार दोनों का जोड़ा मिला हुआ है। भगवान ने हमको अपना बच्चा माना है, बेटा माना है और अधिकार दिया है कि उसको नेक काम में खर्च कर डालना। हमने पिताजी के ही काम में सब खर्च कर डाला, अपने लिए कुछ नहीं रखा, इसलिए कि पिताजी का वंश, पिताजी का कुल कलंकित न होने पावे। पिताजी माने भगवान—परमेश्वर। परमेश्वर का भक्त कहलाने के कारण हमारे ऊपर कोई यह अँगुली न उठाने पाए कि यह कैसा आदमी है। हमने उनके वंश को सुरक्षित रखा है।

भगवान ने हमको दिया तो है, पर हमने भी कुछ दिया है। पिता की मृत्यु हो जाती है और उनका कुटुम्ब रह जाता है। भाई, बहिन, बच्चे-कच्चे, स्त्री सभी का पालन वह करता है, जो परिवार में बड़ा होता है। अपने पिताजी के वशिष्ठ का ही नहीं, वरन् उनका जो इतना बड़ा विराट् कुटुम्ब फैला हुआ है—इन सबका पालन करने में, उनकी निगरानी करने में, उनकी देखभाल करने में जो कुछ भी हमारे लिए सम्भव हुआ, हमने ईमानदारी से किया है, हमने बराबर भगवान के कुटुम्ब का पालन किया है। अपना ही पेट नहीं, वरन् भगवान के कुटुम्ब का भी पालन किया है। भगवान की दुकान, भगवान का व्यवसाय, उद्योग अच्छे तरीके से चलता रहे, कोई यह न कहने पावे कि बाप इनके लिए खेत छोड़कर मरा था—कारखाना, फैक्ट्री छोड़कर मरा था और इन्होंने सब बिगाड़ डाला। व्यवसाय भगवान का, दुकान भगवान की, आप तो समझते ही नहीं, यह सारा व्यवसाय तो उसी का है। दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, सब उसी का उद्योग है। उसको ठीक तरह से, बढ़िया ढंग से चलाने में हमने ईमानदारी से पूरी-पूरी कोशिश की है। पिता की सम्पदा लेकर, उनका अधिकार लेकर के हम चुपचाप बैठ नहीं गए, बल्कि अपने फ़र्ज और कर्त्तव्य का भी पालन किया है। पिताजी का व्यवसाय चलाने में, उनके परिवार का पालन करने में उनके कुल और वंश की सुरक्षा रखने में हमने बराबर काम किया है। आप भी यह कीजिए और निहाल हो जाइए। रास्ता एक ही है। जो कानून हमारे ऊपर लागू होता है, वही कानून आपके ऊपर भी लागू होता है। सबके लिए एक कानून, एक कायदा है। भगवान न हमारे साथ रियायत करने वाले हैं, न आपके साथ में उनका कोई वैर-विरोध है। तरीके वही हैं जो हमारे जीवन में बताए गए। हमारे गुरु ने हमको तरीका बताया था और हमने स्वीकार कर लिया। हम अपने गुरु को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं और आपको सिखाते-बताते, समझाते हैं कि आप भी उसी रास्ते पर चलिए जिस रास्ते पर हम चले हैं तो आप भी निहाल हो जाएँगे और धन्य हो जाएँगे और क्या कहें आपसे।

ॐ शांति।

श्रद्धा, सिद्धान्तों के प्रति हो

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

अपने बच्चों से, साथियों से, मिशन के कार्यकर्ताओं से मिलने का मेरा बड़ा मन था। पर संयोग नहीं मिल पा रहा था। पहले मन यह था कि यहाँ बुलाऊँ और बुला करके एक-एक से बात करूँ और अपने मन को खोलकर आप सबके सामने रखूँ और आपकी नब्ज भी देखूँ, पर अब यह सम्भव नहीं रहा। कितने कार्यकर्ता हैं ? यहाँ शांतिकुंज के स्थायी कार्यकर्ता एवं सामयिक स्वयंसेवक आए हुए हैं। एक समुदाय जो शुरू में आया था वह समुदाय, न केवल यहाँ का, वरन् गायत्री तपोभूमि का, वह भी हमारा समुदाय है। सब लोगों को बुलाने के लिए मैं विचार करता रहा कि क्या ऐसा सम्भव है कि एक-एक करके आदमियों को बुलाऊँ और अपने जीवन के अनुभव सुनाऊँ और अपनी इच्छा और आकांक्षा बताऊँ। लेकिन एक-एक करके बुलाने में तो मालूम पड़ा कि यह संख्या तो इतनी बड़ी है कि इनको बुलाने में महीनों लगाऊँ तो भी पूरा नहीं हो सकेगा। इसलिए आप यह मानकर चलिए कि आप से व्यक्तिगत बात की जा रही है और एकांत में, अकेले में बुलाकर के, कंधे पर हाथ रखकर के और आप से ही कहा जा रहा है किसी और से नहीं।

आप इन बातों को अपने जीवन में प्रयोग करेंगे तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपकी ऐसी उन्नति होती चली जाएगी जैसी कि एक छोटे-से देहात में जन्म लेने के बाद हम उन्नति करते चले आए और उन्नति के ऊँचे शिखर पर जा पहुँचे। आपके लिए भी यह रास्ता खुला हुआ है। आपके लिए भी सड़क खुली हुई है। लेकिन अगर आप ऐसा नहीं कर पाएँगे तो आप यह विश्वास रखिए कि आप घटिया आदमी रहे होंगे किसी भी समय में और घटिया ही रहकर जाएँगे। भले से ही आप शांतिकुंज में रहें। आपकी कोई कहने लायक महत्त्वपूर्ण प्रगति न हो सकेगी और आप वह आदमी न बन सकेंगे जैसे कि बनाने की मेरी इच्छा है।

अब क्या करना चाहिए ? आपको वह काम करना चाहिए जो कि हमने किया है। क्या किया है आपने ? क्रिया-कलाप गिनाऊँ आपको ? नहीं क्रिया-कलाप नहीं गिनाऊँगा। क्रिया-कलाप गिनाऊँगा तो मुझे वहाँ से चलना पड़ेगा जहाँ से काँग्रेस का वालंटियर हुआ और फिर यहाँ आकर के होते-होते वहाँ आ गया, जहाँ अब हूँ। वह बड़ी लम्बी कहानी है। उन सब कहानियों का अनुभव और निष्कर्ष निकालना आपके लिए मुश्किल हो जाएगा। उस पर तो ध्यान नहीं देता, लेकिन मैं सैद्धान्तिक रूप से बताता हूँ। हमने आस्था जगाई, श्रद्धा जगाई, निष्ठा जगाई। निष्ठा, श्रद्धा और आस्था किसके प्रति जगाई ? व्यक्ति के ऊपर ? व्यक्ति तो माध्यम होते हैं। हमारे प्रति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुरुजी के प्रति श्रद्धा है। बेटा, यह तो ठीक है, लेकिन वास्तव में सिद्धांतों के प्रति श्रद्धा होती है। आदर्शों के प्रति श्रद्धा, मूर्तियों के प्रति श्रद्धा, देवताओं के प्रति श्रद्धा टिकाऊ नहीं होती। इसका कोई ज्यादा महत्त्व नहीं। महत्त्वपूर्ण वह जो सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा होती है। हमारी सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा रही। आजीवन वहाँ से जहाँ से चले, जहाँ से विचार उत्पन्न किया है, वहाँ से लेकर निरन्तर अपनी श्रद्धा की लाठी को टेकते-टेकते यहाँ तक चले आए और यहाँ तक आ पहुँचे। अगर यह श्रद्धा की लाठी हमने पकड़ी न होती तो तब सम्भव है कि हमारा चलना, इतना लम्बा सफर पूरा न होता। यदि सिद्धान्तों के प्रति हम आस्थावान न हुए होते तो सम्भव है कि कितनी बार भटक गए होते और कहाँ से कहाँ चले गए होते और हवा का झोंका उड़ाकर हमको कहाँ ले गया होता ? लोभों के झोंके, मोहों के झोंके, नामवरी के झोंके, यश के झोंके, दबाव के झोंके ऐसे हैं कि आदमी को लम्बी राह पर चलने के लिए मजबूर कर देते हैं और कहीं से कहीं घसीट ले जाते हैं। हमको भी घसीट ले गए होते। ये आदमियों को घसीट ले जाते हैं। बहुत-से व्यक्ति थे जो सिद्धान्तवाद की राह पर चले और कहाँ से कहाँ पहुँचे ?

भस्मासुर का पुराना नाम बताऊँ आपको। मरीचि का पुराना नाम बताऊँ आपको। ये सभी योग्य तपस्वी थे। पहले जब उन्होंने उपासना-साधना शुरू की थी, तब अपने घर से तप करने के लिए हिमालय पर गए थे। तप और पूजा-उपासना के साथ-साथ में कड़े नियम और व्रतों का पालन किया था, तब वे बहुत मेधावी थे, लेकिन समय और परिस्थितियों के भटकाव में वे कहीं के मारे कहीं चले गए। भस्मासुर का क्या हो गया ? जिसको प्रलोभन सताते हैं, वे भटक जाते हैं और कहीं के मारे कहीं चले जाते हैं।

तो श्रद्धा आदमी को टिकाऊ बनाए रखने के लिए एक रस्सी या एक सम्बल है, जिसके सहारे, जिसको पकड़ करके मनुष्य सीधी राह पर चलता हुआ चला जाता है। भटक नहीं पाता। आप भटकना मत। घर से आप चले थे न, यह विचार लेकर चले थे न कि हम लोककल्याण के लिए, जनमंगल के लिए घर छोड़कर चले गए हैं। आप जब कभी भी भटकन आए तो आप अपने उस दिन को, उस समय की मनःस्थिति को याद कर लेना जबकि आपके भीतर से श्रद्धा का एक अंकुर उगा था और अंकुर उगकर के फिर आपके भीतर एक उमंग पैदा हुई थी और उमंग को लेकर आप यहाँ आ गए थे। आपको याद है जब आप यहाँ आए थे, जिस दिन आप आए थे उसी मन को याद रखना।

साधु-बाबाजी जिस दिन घर से निकलते हैं, उस दिन यह श्रद्धा लेकर निकलते हैं कि हमको संत बनना है, महात्मा बनना है, ऋषि बनना है, तपस्वी बनना है। लेकिन थोड़े दिनों बाद वह जो उमंग होती है, वह ढीली पड़ जाती है और ढीली पड़ने के बाद में संसार के प्रलोभन उनको खींचते हैं। किसी की बहिन-बेटी की ओर देखते हैं, किसी से पैसा लेते हैं। किसी को चेला-चेली बनाते हैं। किसी की हजामत बनाते हैं। फिर जाने क्या से क्या हो जाता है ? पतन का मार्ग यहीं से आरम्भ होता है। ग्रैविटी—गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की हर चीज को ऊपर से नीचे की ओर खींचती है। संसार भी एक ग्रैविटी है, जो ऊपर से नीचे की ओर खींचती है। आप लोगों से सबसे मेरा यह कहना है कि आप ग्रैविटी से खिंचना मत। रोज सबेरे उठकर भगवान् के नाम के साथ में यह विचार किया कीजिए कि हमने किन सिद्धान्तों के लिए समर्पण किया था ? और पहला कदम जब उठाया था तो किन सिद्धान्तों के आधार पर उठाया था ? उन सिद्धान्तों को रोज याद कर लिया कीजिए। रोज याद किया कीजिए कि हमारी उस श्रद्धा में, और उस निष्ठा में, उस संकल्प और उस त्यागवृत्ति में कहीं फर्क नहीं आ गया। संसार में हमको खींच तो नहीं लिया। वातावरण ने हमको गलीज तो नहीं बना दिया। कहीं हम कमीने लोगों की नकल तो नहीं करने लगे। आप यह मत करना।

यह नहीं करेंगे तो क्या हो जाएगा ? यदि आपकी श्रद्धा कायम रही तो फिर एक नई चीज पैदा होगी। तो उसमें से अंकुर जरूर पैदा होगा। फिर क्या पैदा होगा—आपको काम करने की लगन पैदा होगी। काम करने की ऐसी लगन कि आपने जो काम शुरू किया है उसको पूरा करने के लिए कितने मजबूत कदम उठाए जाएँ, कितने तेज कदम उठाए जाएँ, यह आपसे करते ही बनेगा। आप फिर यह नहीं कहेंगे कि हमने छह घण्टे काम कर लिया, चार घण्टे काम कर लिया। यहाँ बैठे हैं, वहाँ बैठे हैं। ओवरटाइम लाइए और ज्यादा काम हम क्यों करेंगे ? नहीं फिर आप काम किए बिना रह नहीं सकेंगे।

हमारा भी यही हुआ। श्रद्धा जब उत्पन्न हुई तो हमने यह सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि प्रलोभन हमको खींचने लगें। तो वहाँ से घर की सम्पत्ति को त्याग करने से लेकर के स्त्री के जेवरों से लेकर के और जो कुछ भी था, सबको त्याग करते चले आए कि कहीं प्रलोभन खींचने नहीं लगें। प्रलोभन खींचने नहीं पाएँ और वह श्रद्धा हमको निरन्तर बढ़ाती हुई चली आई। फिर उसने लगन को कम नहीं होने दिया। घीयामंडी के मकान में १७ वर्ष तक बिना बिजली के हमने काम किया। न उसमें पंखा था, न उसमें बल्ब। मकान मालिक से झगड़ा हो गया था, सो मकान मालिक कहता था कि मकान खाली करो तो उसने बिजली के सेंक्शन पर साइन नहीं किये थे और बिजली हमको नहीं मिली। १७ वर्षों तक हम केवल मिट्टी के तेल की बत्ती जलाकर रात के दो बजे से लेकर सबेरे तक अपना पूजा-पाठ से लेकर के और अपना लेखन-कार्य तक बराबर करते रहे। पंखा था नहीं, घोर गर्मियों के दिनों में लू में भी काम करते रहे। १८ घण्टे काम करते रहे। यह काम हमने किया।

अब क्या बात रह गई—दो बातों के अलावा। दो बातों में से आप में से हर आदमी को देखना चाहिए कि हमारी श्रद्धा कमजोर तो नहीं हुई। एक ओर हमारी लगन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कमजोर तो नहीं हुई अर्थात् परिश्रम करने के प्रति जो हमारी उमंग और तरंग होनी चाहिए, उसमें कमी तो नहीं आ रही। किसान अपने घर के काम समझता है तो सबेरे से उठता है और रात के नौ-दस बजे तक बराबर घर के कामों में लगा रहता है। वह १८ घण्टे काम करता है। किसी से शिकायत नहीं करता कि हमको १८ घण्टे रोज काम करना पड़ता है। हमें अवकाश नहीं मिला या हमको इतवार की छुट्टी नहीं मिली और हमको यह नहीं हुआ, वह नहीं हुआ, इसकी कोई शिकायत नहीं करता क्योंकि वह समझता है कि हमारा काम है। यह हमारी जिम्मेदारी है। खेत को रखना, जानवरों को रखना और बाल-बच्चों की देखभाल करना यह हमारा काम है। जिम्मेदारी हर आदमी को दिन-रात काम करने के लिए लगन लगाती है और वह आपके प्रति भी है। आपको भी व्यक्तिगत जीवन में अपनी श्रद्धा को कायम रखना—एक ओर अपनी लगन को जीवंत रखना—दो काम तो आपके व्यक्तिगत जीवन के हैं, वह आपको करने चाहिए।

अब एक और नई बात शुरू करते हैं। नई बात यह है कि यह मिशन हमने कितने परिश्रम से बनाया ? कितना विस्तार इसका हो गया, कितना फैल गया, कितना खुल गया ? कितना विस्तार होता जाता है ? आप सुनते रहते हैं न, हजार कुंड के यज्ञीय समाचार आपको मिलते हैं। आपको २४०० शक्तिपीठों की स्थापना की बात मिलती है। इस साल जो युग-निर्माण सम्मेलन हुए हैं उन सम्मेलनों की बात याद है। यहाँ तक कि शिविर चलते हैं उनकी बात याद है। गवर्नमेंट के कितने शिविरों को हम चलाते हैं, इसकी बात याद है। यहाँ की फिल्म स्टूडियो, टी. वी. स्टूडियो, फिल्म चलाने वाले हैं—यह सब बातें आपको याद हैं। बहुत बड़ा काम है। बहुत बड़ी योजना है। इस काम को हमने आरम्भ किया, लेकिन अब यह जिम्मेदारी हम आपके सुपुर्द करते हैं। आपमें से हर आदमी को हम यह काम सौंपते हैं कि आप हमारे बच्चे के तरीके से हमारी दुकान चलाइए, बंद मत होने दीजिए। हम तो अपनी विदाई ले जाएँगे, लेकिन जिम्मेदारी आपके पास आएगी। आप कपूत निकलेंगे तो, फिर आदमी आपकी बहुत निंदा करेगा और हमारी बहुत निंदा करेगा।

कबीर का बच्चा ऐसा हुआ था जो कबीर के रास्ते पर चलता नहीं था, तो सारी दुनिया ने उससे यह कहा—**'बूड़ा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल।'** आपको कमाल कहा जाएगा और कहा जाएगा कि कबीर तो अच्छे आदमी थे, लेकिन उनकी संतानें दो कौड़ी की भी नहीं हैं। आपको दो कौड़ी की संतानें पैदा नहीं करना है। आपको इस कार्य का विस्तार करना है। जो काम हम करते रहे हैं, वह अकेले हमने नहीं किया। मिल-जुल करके ढेरों आदमियों के सहयोग से किया है और यह सहयोग हमने प्यार से खींचे हैं, समझा करके खींचे हैं, आत्मीयता के आधार पर खींचे हैं। ये गुण आपके भीतर पैदा हो जाएँ तो जो आदमी आपके साथ-साथ काम करते रहते हैं, उनको भी मज़बूत बनाए रहेंगे और नए आदमी जिनकी कि इससे आगे भी आवश्यकता पड़ेगी। अभी ढेरों आदमियों की आवश्यकता पड़ेगी। आपको संकल्प का नाम याद है न—'नया युग लाने का संकल्प।' नया युग लाने का संकल्प दो आदमियों का काम है, चार आदमियों का काम है, हजारों आदमियों का काम है। जो काम हमने अपने जीवन में किया है वही काम आपको करना है।

नए आदमियों को बुलाने का भी आपका काम है। कैसे बुलाना ? यहाँ शांतिकुंज में कितने आदमी काम करते हैं ? यहाँ २५० के करीब आदमी काम करते हैं। एक कुटुम्ब बनाकर बैठे हैं और उस कुटुम्ब को हम कौन-सी रस्सी से बाँधे बैठे हैं ? प्यार की रस्सी से बाँधे हुए हैं, आत्मीयता की रस्सी से बाँधे हुए हैं, भावना की रस्सी से बाँधे हुए हैं। ये रस्सियाँ आपको तैयार करनी चाहिए, ताकि आप नए आदमियों को बाँध करके अपने पास रख सकें और जो आदमी वर्तमान में हैं आपके पास उनको मजबूती से जकड़े रह सकें। नहीं तो आप इनको भी मजबूती से जकड़े नहीं रह सकेंगे, यह भी नहीं रहेंगे। इनकी सफाई भी आपको करनी है। आत्मीयता अगर न होगी और आपका व्यक्तित्व न होगा तो आपके लिए इनकी सफाई करना भी मुश्किल हो जाएगा।

इसलिए क्या करना चाहिए ? आपके पास एक ऐसी प्रेम की रस्सी होनी चाहिए, आपके पास ऐसी मिठास की रस्सी होनी चाहिए, आपके पास अपने व्यक्तिगत जीवन का उदाहरण पेश करने की ऐसी रस्सी होनी चाहिए, जिससे प्रभावित करके आप आदमी के हाथ जकड़ सकें, पैर जकड़ सकें, काम जकड़ सकें। सारे के सारे को जकड़ करके जिंदगी भर अपने साथ बनाए रख सकें। यह काम आपको भी विशेषता के रूप में पैदा करना पड़ेगा। संस्थाएँ इसी आधार पर चलती हैं। संस्थाओं की प्रगति इसी आधार पर टिकी है। संस्थाएँ जो नष्ट हुई हैं, संगठन जो नष्ट हुए हैं, इसी कारण नष्ट हुए हैं। चलिए मैं आपको एक-दो उदाहरण सुना देता हूँ।

एक मैं उदाहरण सुनाऊँगा—स्वामी श्रद्धानंद का। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में अपने मकान को बेच करके गुरुकुल काँगड़ी नाम के एक छोटे-से गाँव में छप्पर बनाया। दस विद्यार्थियों को लाए। मास्टर एवं नौकर रखने की हैसियत नहीं थी, इसलिए पढ़ाना भी उन्होंने ही शुरू कर दिया। रसोइया रखने की हैसियत नहीं थी, इसीलिए खाना पकाना भी उन्होंने शुरू कर दिया। यह लगन, यह निष्ठा जिन किन्हीं ने भी देखी, वही आदमी प्रभावित होता चला गया, वही सहयोगी होता हुआ चला गया। यह उनका विश्वास था कि जिसने मकान बेच करके साधु बना दिया और वह उनकी लगन थी, जिसमें कि उन्होंने झाड़ू लगाने से लेकर के खाना पकाने तक के और पढ़ाने तक के और बच्चों के कपड़े धोने तक के सारे काम अपने जिम्मे लिए। उनकी लगन, उनकी श्रद्धा—बस यही दो शक्तियाँ जागीं, बस मैग्नेट बन गया, चुंबक बन गया और लोगों का पैसा भी आता चला गया। यह भी होता हुआ चला गया। बढ़ता हुआ चला गया। गुरुकुल काँगड़ी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बन गई और स्वामी श्रद्धानंद की वजह से ४०-४५ आदमी उनके जमाने में, गुरुकुल काँगड़ी जिन दिनों स्थापित हुई थी, ऐसे पैदा हुए जिन्होंने हिन्दुस्तान में तहलका मचा दिया। आर्यसमाजियों में नया जीवन फूँक दिया। नए गुरुकुल उन्हीं दिनों खुले थे और ढेरों के ढेरों गुरुकुल खुले थे। स्वामी जी ने उनको आज्ञा दी थी कि जैसा गुरुकुल यहाँ का गुरुकुल काँगड़ी है—तुम अपने क्षेत्र में वैसा ही गुरुकुल कायम रखना, तो उन्हीं दिनों २० के करीब गुरुकुल स्थापित हुए थे।

मैं अभी और उदाहरण सुनाता हूँ आपको। प्रेम महाविद्यालय का नाम सुना है आपने। हमारी गायत्री तपोभूमि से कुछ आगे जाकर के वृंदावन् रोड पर बना हुआ है। पहले जहाँ प्रेम महाविद्यालय था—राजा महेन्द्र प्रताप ने अपनी जमीन तो दान कर दी थी, बना भी दिया, लेकिन उसको चलाने के लिए बाबू सम्पूर्णानंद और आचार्य जुगलकिशोर, ब्रह्मचारी कृष्ण चंद्र जैसे पहली श्रेणी के लोग आए जिनका कि व्यक्तिगत चरित्र, ज्ञान नहीं चरित्र और लगन उनमें थी। उन्होंने क्या काम किया कि प्रेम महाविद्यालय में जो विद्यार्थी पढ़ने आते थे, उनमें ऐसी लगन फूँक दी, ऐसे प्राण फूँक दिए, ऐसी जान फूँक दी कि यू. पी. काँग्रेस का सारे का सारा काम सत्याग्रह के दिनों में उन्होंने किया। यू. पी. सत्याग्रह में, किसी जमाने में जब नमक सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ था, तब पहली श्रेणी का था जिसमें कि इतने आदमी गिरफ्तार हुए, इतने आदमी जेल गए। इतने आंदोलन हुए। इसका सबका श्रेय, ६० फीसदी श्रेय जो है प्रेम महाविद्यालय को था, जो पहले साल में पढ़े, दूसरे साल में पढ़े, तीसरे साल में पढ़े। उन पढ़े हुए विद्यार्थियों ने इतना हाहाकार मचा दिया कि गवर्नमेंट को प्रेम महाविद्यालय बन्द करना पड़ा। जितने भी विद्यार्थी थे, चाहे वे सत्याग्रह कर रहे थे, चाहे नहीं कर रहे थे, प्रेम महाविद्यालय के सारे विद्यार्थियों को मकानों से पकड़-पकड़ करके जेल में बन्द कर दिया कि इनको बागी बना दिया गया।

दो उदाहरण—एक मैंने श्रद्धानन्द का उदाहरण सुनाया, दूसरा मैंने प्रेम महाविद्यालय का उदाहरण सुनाया। लगन की बात कह रहा हूँ, आपसे लगन की और आप से श्रद्धा की बात कह रहा हूँ। श्रद्धा और लगन, श्रद्धा और लगन। लगन आदमी के अंदर हो तो सौ गुना काम करा लेती है। इतना काम करा लेती है, कि हमारे काम को देखकर आपको आश्चर्य होगा। इतना साहित्य लिखने से लेकर इतना बड़ा संगठन खड़ा करने तक और इतनी बड़ी क्रांति करने से लेकर इतने आश्रम बनाने तक जो काम शुरू किए हैं वे कैसे हो गए ? बेटा, यह श्रम है श्रम। यह हमारा श्रम है। यदि हमने श्रम से जी चुराया होता तो उसी तरीके से घटिया आदमी होकर रह जाते जैसे कि अपना पेट पालना ही जिनके लिए मुश्किल हो जाता है। चोरी-ठगी से, चोरी-चालाकी से जहाँ कहीं से मिलता पेट भरने के लिए, कपड़े पहनने के लिए और अपना मौज-शौक पूरा करने के लिए पैसा इकट्ठा करते रहते, पर इतना बड़ा काम सम्भव न होता।

तो क्या करना चाहिए। बेटे, मैं नहीं बताता हूँ। कैसे कहूँ आपको, देख लीजिए और हमको पढ़ लीजिए। हमारी श्रद्धा को पढ़ लीजिए। जिस दिन से हमने साधना के क्षेत्र में, सेवा के क्षेत्र में, अध्यात्म के क्षेत्र में कदम बढ़ाया, उस दिन से लेकर आज तक हमारी निष्ठा ज्यों की त्यों बनी हुई है। इसमें कहीं एक राई-रत्ती, सुई के नोंक के बराबर फर्क नहीं आएगा। जिस दिन तक हमारी लाश उठेगी उस दिन तक आप कभी यह नहीं सुनेंगे कि इन्होंने अपनी श्रद्धा डगमगा दी। इन्होंने अपने विश्वास में कमी कर दी।

आप हमारी वंश-परम्परा को जानिए और हम मरने के बाद में जहाँ कहीं भी रहेंगे भूत बनकर देखेंगे। हम देखेंगे कि जिन लोगों को हम पीछे छोड़कर आए थे, उन्होंने हमारी परम्परा को निबाहा है और अगर हमको यह मालूम पड़ा कि इन्होंने हमारी परम्परा नहीं निबाही और इन्होंने व्यक्तिगत ताना-बाना बुनना शुरू कर दिया और अपना व्यक्तिगत अहंकार, अपनी व्यक्तिगत यश-कामना और व्यक्तिगत धन-संग्रह करने का सिलसिला शुरू कर दिया। व्यक्तिगत रूप से बड़ा आदमी बनना शुरू कर दिया, तो हमारी आँखों से आँसू टपकेंगे और जहाँ कहीं भी हम भूत होकर के पीपल के पेड़ पर बैठेंगे, वहाँ जाकर के हमारी आँखों से जो आँसू टपकेंगे-आपको चैन से नहीं बैठने देंगे और मैं कुछ कहता नहीं हूँ। आपको हैरान कर देंगे हैरान। दुर्वासा ऋषि के पीछे विष्णु भगवान का चक्र लगा था तो दुर्वासा जी तीनों लोकों में घूम आए थे, पर उनको चैन नहीं मिला था। आपको भी चैन नहीं मिलेगा। अगर हमको विश्वास देकर के विश्वासघात करेंगे तो मेरा शाप है आपको चैन नहीं पड़ेगा कभी भी और न आपको यश मिलेगा, न आपको ख्याति मिलेगी, न उन्नति होगी। आपका अधःपतन होगा। आपका अपयश होगा और आपकी जीवात्मा आपको मारकर डाल देगी। आप यह मत करना अच्छा !

मुझे अपने मन की बात कहनी थी, सो मैंने कह दी। अब करना आपका काम है कि इन बताई हुई बातों को किस हद तक कार्य में लें और और कहाँ तक चलें ? बस ये ही मोटी-मोटी बातें थीं जो मैंने आपसे कहीं। बस मेरा मन हल्का हो गया। अब आप इन्हें सोचना। मालूम नहीं आप इन्हें कार्यरूप में लाएँगे या नहीं लाएँगे। यदि लाएँगे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी और मैं समझूँगा कि आज मैंने जी खोलकर आपके सामने जो रखा था आपने उसे ठीक तरीके से पढ़ा, समझा और जीवन में उतार करके उसी तरह का लाभ उठाने की सम्भावना शुरू कर दी जैसे कि मैंने अपने जीवन में की।

यह रास्ता आपके लिए भी खुला है, भले आप पीछे-पीछे आइए साथ आइए। हमको देखिए और अपने आपको ठीक करिए। बस आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रज्ञायोग की साधना

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

भगवान के अवतार समय-समय पर हुए हैं और जब, जिस काम के लिए जरूरत पड़ी है, तब-तब उसी काम के लिए उन्होंने अवतार उसी तरह के धारण किये हैं। यह समय इस तरह का है कि इसमें आस्था-संकट छाया हुआ है। सब जगह आस्थाएँ कमजोर पड़ गयी हैं। आदर्शों के लिए कहिए, उत्कृष्टताओं के लिए कहिए सबके लिए, आस्थाएँ कमजोर पड़ने की वजह से जो आदमी काम कर रहा है, चिन्तन कर रहा है, वह गलत कर रहा है। उसका निवारण करने के लिए भगवान का नया अवतार होना चाहिए। यह प्रज्ञा अवतार होगा। निष्कलंक भी इसी को कहते हैं। दसवाँ अवतार या चौबीसवाँ अवतार—निष्कलंक अवतार है, जिसे 'प्रज्ञा अवतार' भी कहते हैं। प्रज्ञा दूरदर्शिता, विवेकशीलता को कहते हैं। केवल यही निष्कलंक है और सबमें कलंक लगा हुआ है। इसलिये यह महाप्रज्ञा के अवतार का जो समय है, इसको आप बहुत महत्त्वपूर्ण मानें और इसी का स्मरण करें। अपनी उपासना में इसी का समावेश करें।

गायत्री को त्रिपदा कहा गया है। सरस्वती, काली, लक्ष्मी इसके ही भीतर आ जाती हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी इसी के अन्तर्गत आ जाते हैं। यह आदिशक्ति है। ब्रह्मा जी को तप करके सारे विश्व को सृष्टि को बनाने के लिए जो शक्ति मिली थी, इसी के द्वारा मिली थी। अब यही महाप्रज्ञा आदिशक्ति गायत्री के रूप में नया अवतार ग्रहण कर रही है, आस्था-संकट का निवारण करने के लिए। कैसे होगा यह अवतार ? आपको मालूम है न कि सीताजी का जन्म क्यों हुआ था ? रावण को मारने के लिए जब सीताजी की जरूरत थी, तब ऋषियों ने अपना रक्त एकत्र करके एक घड़े में बन्द किया था; उसे जमीन में गाड़ दिया था। राजा जनक ने उस घड़े को निकाला और सीताजी का जन्म हुआ। दुर्गा का अवतार कैसे हुआ, आपको मालूम है ? सब-के-सब देवता इकट्ठे होकर प्रजापति के पास गये और प्रजापति से कहा—अब ये दैत्य हमसे सँभालने में नहीं आते। आप ही कोई तरकीब बताइये। उन्होंने कहा कि तुम सबकी शक्ति को इकट्ठा करके अभी हम दुर्गा का अवतार करेंगे और वह सारे दैत्यों का संहार कर देगी।

भगवान सबको समान मानते हैं। आप भी उसमें शामिल हैं और जो नहीं आये हैं, वे भी शामिल हैं। सब मिलकर के एक ऐसी सामूहिक उपासना करेंगे—प्रज्ञा की, महाप्रज्ञा की, आदिशक्ति की, जिससे इस समय का जो आस्था-संकट है और जिसने सारे-के-सारे विश्व को अस्त-व्यस्त कर रखा है, उसका निवारण किया जा सकना सम्भव हो सके। कैसे करना चाहिए ? क्या करना पड़ेगा इसके लिए ? इसका नाम प्रज्ञायोग रखा है, हमने क्योंकि इसमें कई चीजें शुमार हैं। इसलिए प्रज्ञायोग, योग की साधना हम सब लोगों को करनी चाहिए। प्रज्ञायोग क्या है ? प्रज्ञायोग में ज्ञान, कर्म और भक्ति की, जिनको आप सरस्वती, लक्ष्मी, काली कहते हैं—ये तीनों शक्तियाँ शामिल हैं; जिन्हें आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहते हैं, तीनों ही चीजों का इसमें समावेश है। यह आपको करना पड़ेगा। कैसे करना पड़ेगा ? चलिये, आप लोग नोट करते जाइये इनको या फिर ध्यान में रखिये; छपा हुआ भी है। प्रज्ञायोग कैसे करना चाहिए ? प्रज्ञायोग का पहला चरण है कि आप चारपाई पर इसे करें; चारपाई पर पड़े हुए। जब सबेरे उठें, तो उठने से पहले, जमीन पर पैर रखने से पहले आप यह विचार करें कि हमारा नया जन्म हुआ है और आज हम नया जन्म ले रहे हैं। रात में जब आपका बिस्तर लगे और जब आप सोने की तैयारी करें, उस समय आप इस तरीके से करें कि हमारा आज मृत्यु का दिन आ गया और अब हम भगवान की गोदी में जा रहे हैं। चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद मनुष्य का जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है। आप यह विचार कीजिए कि हम अच्छे-से-अच्छा आज का उपयोग करेंगे। आज का दिन बेकार नहीं जाने देंगे और रात को जब आप सोएँ, तब आप समझिये कि आज का दिन, आज का जन्म खत्म हुआ। आज की बातों की समीक्षा कीजिये। सबेरे प्रातःकाल सारे दिन की स्कीम बनाइये कि आज हमको करना क्या है ? और शाम को इसकी समीक्षा कीजिये कि हमने कोई गलती तो नहीं की है और की है तो उसका सुधार कैसे होना चाहिए और परिमार्जन कैसे होना चाहिए ? सुबह और शाम को यह आपका प्रातःकालीन, संध्याकालीन क्रम होना चाहिए।

इस तरह सायंकालीन संध्या आपकी, बिस्तर पर ही होनी चाहिए। बिस्तर के बाद कर्मयोग का नम्बर आता है। कैसा कर्मयोग ? कर्मयोग का जवाब यह है कि आपको करना क्या है ? यह तो केवल विचार हुआ। ज्ञान कहते हैं—विचार करने को और कर्मयोग कहते हैं—काम करने को। काम करने में क्या करना है ? आप स्नान करके, कपड़े बदलकर, झाड़ू लगा करके, अपने पूजा के सारे सामान को साफ करके बैठिये। सबसे पहला काम शुद्धता है। अगर आपका मन शुद्ध है, शरीर शुद्ध है, जीवन शुद्ध है, आजीविका शुद्ध है, तो समझना चाहिए कि आपकी उपासना की शुरुआत हुई और यदि आपका मन गन्दा है, आपका शरीर भी गन्दा है, आपकी कमाई भी गन्दी है। आपके विचार भी गन्दे हैं, तो आप समझिये कि आप जो पूजा कर रहे हैं, उसका परिणाम नहीं मिलेगा। इसलिए शुद्धता पहला काम है। शुद्धता के लिए कुछ विधियाँ बताई गयी हैं। कौन-कौन-सी विधियाँ हैं ? पवित्रीकरण है, आचमन है, प्राणायाम है, न्यास है—ये आपने हमारी सब पुस्तकों में पढ़े होंगे। इन सब क्रियाओं का मतलब यह होता है कि आप अपने मन को, अपने वचन को, अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाणी को, अपनी क्रियाओं को और अपने इष्ट-चिन्तन को, इन्द्रियों को, सबको पुनीत बना रहे हैं, पवित्र बना रहे हैं। जो मलिनताएँ उनके अन्दर छायी हुई होंगी उनको हम निकालेंगे। न्यास का अर्थ यही होता है कि हमारी जो इन्द्रियाँ हैं पाँचों—इनका उपयोग हम ठीक तरीके से करेंगे, अच्छे काम में करेंगे, गलत या गन्दे रूप में नहीं करेंगे। प्राणायाम का अर्थ होता है कि जो साँस हम लेंगे, तो हमारी वह हर साँस इस तरीके से चलेगी कि इसमें कहीं कोई कमी और खामी न हो। इसी तरीके से जो आप सारे शरीर के ऊपर जल छिड़कते हैं, तीन बार आचमन करते हैं, उसका भी अर्थ यह है कि हमारे मन, वचन और कर्म तीनों ही स्वस्थ बनेंगे। इसके लिए सबसे पहले उपासना की आवश्यकता होगी।

इसके बाद में आपको देवपूजन करना पड़ेगा। देव-पूजन किसका ? भगवान का ? भगवान तो निराकार है; मगर पूजा के समय पर उनको साकार बनाया जाता है। गायत्री का कोई चित्र आपने रखा हो, कोई मूर्ति रखी हो, कुछ-न-कुछ तो आपको रखना ही पड़ेगा। बिना प्रतीक, पूजा नहीं हो सकती। प्रतीक-पूजा होना आवश्यक है। भगवान निराकार है, तो साकार भी तो है। आपने हमें शरीर में देखा है तो हम यह शरीर थोड़े ही हैं। हम तो जीवात्मा हैं। उसको आपको दिखाएँ ? नहीं दिखाएँगे आपको। वह तो निराकार है। गायत्री माता की मूर्ति या चित्र जो भी आपने रखा हो, उसके सामने पाँच चीजों से पूजन किया जाता है। पाँच चीजें क्या हैं ? वैसे सोलह चीजें भी हैं। जल एक, अक्षत दो, धूप या सुगन्ध तीन, पुष्प चार और मीठा या प्रसाद पाँच। वे क्यों ? उनको फूलों की जरूरत क्यों पड़ गई ? भगवान् को जरूरत नहीं पड़ गई। आपको स्मरण दिलाया गया है कि भगवान् की आपकी पूजा तब सार्थक मानी जाएगी, जब आप इन चीजों को प्रतीक मानकर के अपना जीवन भी उसी तरीके का बनाएँ। जल सरस होता है, प्रवाही होता है। आपको सरस होना चाहिए, जल के समान कोमल होना चाहिए। अक्षत ? अक्षत का मतलब यह है कि जो आप कमाते हैं, उसमें से एक अंश भगवान के लिए लगाइये। धूप ? चाहे आप धूप जलाएँ चाहे अगरबत्ती जलाएँ, दीपक जलाएँ, कुछ भी जलाएँ, सुगन्ध जलाएँ तो आपका जीवन चन्दन के तरीके से सुगन्ध फैलाने वाला हो। फूल ? फूल कैसा कोमल होता है। कैसा सुन्दर होता है ? आपका जीवन ऐसा सुन्दर होना चाहिए और भगवान के चरणों पर चढ़ना चाहिए। याचक की सार्थकता इसमें है कि वह भगवान के चरणों पर चढ़े, गले में पड़े। आपका जीवन ऐसा होना चाहिए। मिठास या मीठा ? कोई मीठी चीज भगवान को खिलाते हैं, नमकीन नहीं। इसका अर्थ यह होता है कि आपकी वाणी, आपका व्यवहार ऐसा हो, जिसमें मिठास ही मिठास भरी हो। जब आप किसी से बातचीत करें, तो उसमें मिठास भरी हो। जब आप कोई व्यवहार करें, तो ऐसा व्यवहार करें, जिसमें मिठास भरी हुई हो। इस तरीके से देव-पूजन में पाँचों चीजों का मतलब यह होता है कि हम स्वयं शिक्षा ग्रहण करें उनसे। ऐसा नहीं है कि भगवान को इनकी आवश्यकता है। धूपबत्ती आप जलाएँगे नहीं, तो भगवान को कोई मुश्किल आयेगी। दीपक आप नहीं जलाएँगे, तो दिखाई नहीं पड़ेगा। यह मतलब नहीं है। भगवान के लिये नहीं, बल्कि अपनी याददाश्त को सही करने के लिए और अपनी जीवन-क्रिया की माप-तौल करने के लिये, उसका मापदण्ड रखने के लिये ये क्रम लिखे गये हैं।

चलिए, अब इसके बाद क्या करना चाहिए ? इतना सब कुछ कर लेने के बाद जप और ध्यान करना चाहिए। जप किसका करना चाहिए ? कितना करना चाहिए ? गायत्री-मन्त्र का जप करना चाहिए; क्योंकि प्रज्ञा की देवी वही है। कितनी माला करनी चाहिए ? तीन-तीन तो कम-से-कम करनी चाहिए। ज्यादा कर सकें, तो आप ज्यादा कर लीजिये। तीन क्यों ? तीन इसलिए कि आत्म-परिष्कार के लिए एक। जीवात्मा का नित्य संशोधन हो इसके लिए दो। तीसरी माला वातावरण संशोधन के लिए। इसका उद्देश्य यह है कि जो सारा-का-सारा वातावरण गन्दा हो रहा है, उसकी सफाई करने के लिए एक माला और एक यह कि हम और आप मिलकर काम कर रहे हैं। जो मिशन है—जो प्रज्ञा-अभियान है, उसकी सफलता के लिए। इस तरह प्रज्ञा-अभियान की सफलता के लिए और वातावरण परिशोधन के लिए अपनी जीवात्मा के संशोधन के लिए—एक। तीन मालाएँ तो कम से आपको करनी ही चाहिए। ज्यादा में कोई मनचाही नहीं है। पर कम-से-कम तीन माला तो करनी ही है। यह मिनिमम है। मैक्सीमम—ज्यादा कर सकते हैं आप। ज्यादा के लिए कोई सीमा नहीं है आपके लिए। अच्छा यह गायत्री का जप हुआ। इस तरीके से जप कीजिए कि किसी पास बैठे को सुनाई पड़े; माला से कर लीजिये, अँगुलियों पर कर लीजिये गिनके। इस तरीके से तीन माला-बन्धन निभाइये। प्रज्ञायोग तीन माला से कम में नहीं होता।

जप के साथ ध्यान करना चाहिए। जप और ध्यान का दोनों का मिला हुआ समन्वय समझना चाहिए। ध्यान किसका करना चाहिए ? सविता गायत्री का देवता है। प्रातःकाल के समय पर प्रातःकाल सूरज आपने देखा है न ? गायत्री का सूरज इसे ही मानना चाहिए। यूनिवर्सल है यह। गायत्री माता का जो आपने चित्र रखा है, वह तो आप हिन्दू हैं, तो रखा है और अगर आप मुसलमान हैं, तो आप नहीं रखेंगे। इसलिए देव-पूजा तो केवल हिन्दुओं के लिए है और यह जो है, सविता का ध्यान, सविता का ध्यान सबके लिए है, यूनिवर्सल है। मुसलमान धर्म में, ईसाई धर्म में, सब जगह भगवान का प्रतीक प्रकाश को माना गया है, तो सविता प्रातःकाल का निकलता हुआ सुनहरा सूर्य, उसका आप ध्यान करते जाइये, गायत्री का तीन माला जप करने के साथ-साथ में एक और बात उसमें शामिल कीजिए कि सविता-सबेरे का सूर्य-पूर्व दिशा से निकलते हुए सूर्य के सामने आप छोटे बच्चे के तरीके से नंगे बैठे हुए हैं और आपके मन में, आपके शरीर में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और आपके अन्तःकरण में, हृदय में तीनों जगह इस सूर्य की किरणें प्रवेश कर रही हैं, शुद्ध कर रही हैं। शरीर में सविता की किरणें जब प्रवेश करती हैं, तो आपको श्रेष्ठ काम करने की प्रेरणा देती हैं और आपके अन्तःकरण में, जिसका स्थान हृदय माना गया है—उसमें सविता की किरणें प्रवेश करती हैं, तो आपके अन्तःकरण को भावनाओं से भर देती है; मस्तिष्क को ज्ञान से भर देती हैं। शरीर को बल से भर देती हैं या यह कहिये कि शरीर को श्रेष्ठ कर्म करने के लिए, बुद्धि को श्रेष्ठ चिन्तन करने के लिए और भावनाओं में श्रेष्ठता भरने के लिए ये सविता की किरणें हैं; ये अपना अनुग्रह और अपना अनुदान हमको दे रही हैं—जप करने के साथ-साथ में यह ध्यान करना आवश्यक है। जप करने से पहले देवपूजन; चन्दन, अक्षत और पुष्प उसको मिला करके हमारा जीवन इस तरह का हो। फिर इसके बाद में भगवान के अनुग्रह का भाव करना चाहिए। यह प्रतिज्ञा का भाव है। अनुग्रह का भाव है; भगवान ने इस रूप में, सूर्य में सविता के रूप में, तीन अनुग्रह हमको दिये हैं। तीन क्षेत्रों में उनका प्रवेश हुआ है। इस तरह एक माला आत्म-परिष्कार के लिए, एक वातावरण का संशोधन करने के लिए और एक माला यह आपका प्रज्ञा-मिशन है, इसकी सफलता के लिए। चलिये यह आपका जप हुआ।

जप करने के बाद में सूर्य अर्घ्यदान किया जाता है। भगवान को, सूर्य को, जो आपने जल रखा था, उस जल को सूर्य के सम्मुख चढ़ाते हैं। यह किस काम के लिए चढ़ाते हैं ? यह समर्पण है। भगवान को, सविता को, सूर्य को समर्पण करते हैं। प्रातःकाल आप जप कर रहे हों, तो आप पूर्व दिशा में जल चढ़ाइये। सायंकाल को आप जप कर रहे हों, तो पश्चिम दिशा में जल चढ़ाइये। सूर्य नारायण को भगवान का प्रतीक मान करके आप अपने आपका समर्पण करते हैं। समर्पण का चिन्ह क्या है ? कैसे मानें कि समर्पण किया है किसी ने कि नहीं ? अपना सुख बाँटना और दूसरे के दुःखों को बँटाना। किसी के दुःख को आप बाँटते हैं और सुखों को आप लाकर के देते हैं, तो हम मानेंगे कि समर्पण आपने किया है सूर्य भगवान को। पूजा-उपासना करने के पीछे, यह भावना करनी चाहिए। क्या करना चाहिए ? पूजा-उपासना के बाद में आप जल चढ़ाएँ और साथ-साथ में यह भावना करें कि भगवान को, अर्थात् भगवान् के संस्कार को हम अपने सुखों को बाँटेंगे और संसार में अर्थात् भगवान् का विराट् रूप है, विराट विश्व है इसमें जो दुःख फैले हुए हैं, उनको घटाने के लिए हम कोशिश करेंगे। सूर्य अर्घ्य देते समय यही भावनाएँ होनी चाहिए। हमारे पास जो सम्पदा है, वह जल के रूप में भगवान के चरणों पर गिरे और वह फैल करके सारे वातावरण में फैल जाए—यह भावना सूर्य अर्घ्य की है।

अब एक बात और रह जाती है और वह है 'तप'। इस बात पर आपको विशेष रूप से ध्यान देना है और गौर करना है। रविवार के दिन या गुरुवार के दिन, दो में से कोई एक दिन चुन लीजिये। सप्ताह में एक दिन तो तप करना ही चाहिए। वैसे तो रोज ही करना चाहिए आदमी को; पर अगर रोज नहीं कर सकता, तो कम-से-कम एक दिन उसको अवश्य करना चाहिए। रविवार और गुरुवार में से आपको जो ठीक पड़ता हो, उसे चुन लें। छुट्टी वाले दिन प्रायः लोग पकौड़े-कचौड़े बनाते रहते हैं, मित्र, यार-दोस्त आते रहते हैं उस दिन और कोई दिन अच्छा होता हो, ऐसा मालूम पड़ता हो आपको, तो उस दिन भी कर सकते हैं; लेकिन एक दिन आपको तप का अभ्यास अवश्य करना चाहिए, अपने आपको तपाने का। तपाने से ईंटें पक्की हो जाती हैं। तपाने से सोना साफ हो जाता है। तपाने से लोहा साफ हो जाता है। तपाने से पानी की स्टीम बन जाती है। अपने आपको तपाना आवश्यक मानिये। यह तो था भगवान का योग और अब शुरू होता है—तप। तप में क्या काम करना चाहिए ? तप का आपको प्रतीक बताता हूँ। थोड़ा-थोड़ा कर लीजिये। उसका सिद्धान्त आपको याद रहना चाहिए। सिद्धान्त आप भूल जाएँगे, तो मुश्किल पड़ेगी। एक तो है—अस्वाद व्रत का परिपालन। आप उसे एक समय का ही रखिये; अगर दोनों समय आपके लिए सम्भव नहीं है तो एक समय स्वाद का त्याग कीजिए। नमक और शक्कर दोनों चीजों का त्याग करने का मतलब यह है कि आपने स्वाद पर विजय प्राप्त कर ली, जिह्व इन्द्रिय पर विजय प्राप्त कर ली। जिह्व इन्द्रिय पर ध्यान रखिये। आपको डुबो देने वाली, आपको परेशान करने वाली, हैरान करने वाली, यह इन्द्रिय बड़ी खराब है। आगे से आप जब कोई जप करेंगे, तप करेंगे, कोई मन्त्र का उच्चारण करेंगे, तो ध्यान रखेंगे। इसलिए पहला काम है—जीभ पर कन्ट्रोल करना। वाणी पर भी कन्ट्रोल करना चाहिए; लेकिन खाने पर तो करना ही चाहिए, एक समय नमक मत मिलाइये, तब ज्यादा नहीं खाएँगे; फिर आप पेट के लिए खाएँगे; फिर आप स्वाद के लिए भोजन नहीं करेंगे। तो अस्वाद का अभ्यास हममें से प्रत्येक आदमी को करना चाहिए, चाहे सप्ताह में एक टाइम ही हो। यह एक तप हुआ।

नम्बर दो—वाणी जो हमारी है, इसे हम उच्चारण करते हैं, तो समझ-सोचकर उच्चारण नहीं करते कि हमको क्या कहना है ? किससे क्या बात करनी चाहिए ? किससे नहीं कहनी चाहिए ? जो हम कह रहे हैं वह दूसरे के लिए फायदेमन्द है या नुकसानदेह है या दूसरे आदमी का दिल दुखाने वाला है—क्या है, क्या नहीं है ? हम कुछ नहीं सोचते। जो मुँह में आता है, अल्लम-गल्लम वही हम बकते रहते हैं। यह न बक करके एक-एक शब्द को समझ-सोचकर बोलना चाहिए। अभ्यास के लिए हमको मौन धारण करने की जरूरत है। दो घण्टे को मौन रहिये आप। तमाम दिन तो मुश्किल है आपके लिए; तमाम दिन कैसे मौन रहेंगे ? कभी बोलेंगे, कभी चिट्ठी लिखेंगे, कभी हाथ से लिखेंगे, कभी क्या करेंगे ! कभी क्या करेंगे ? कम-से-कम दो घण्टे का मौन तो रखिये ही; उस समय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

रखिये जब लोग, मिलने-जुलने वाले, आपके पास ज्यादा आते-जाते हैं। मौन के लिए सुबह का वक्त ठीक हो सकता है और शाम का वक्त भी ठीक हो सकता है। दिन में आपको अपनी दुकान से टाइम न मिलता हो, तो आप सबेरे-शाम का रख लीजिए। नहीं साहब, हम तो सोया करेंगे, तब मौन रखा करेंगे; रात को सोने में क्या मौन रखना ! उस तरह के टाइम पर जिस पर कि लोगों के मिलने-जुलने की सम्भावना हो। घर वाले तो आपसे मिलते ही हैं सुबह, शाम और रात को घर वालों को तो आप बता भी सकते हैं, कह भी सकते हैं, समझा भी सकते हैं, भई ! बोलना मत हमसे। यह समय हमारे मौन धारण करने का है। मौन भी एक तप है। हम आजकल मौन का अभ्यास करते हैं। इससे पहले भी ऋषियों ने मौन के अभ्यास किये हैं। वाणी से वाणी का मौन, जिसका अभ्यास करने से वाणी में तेजस्विता आती है। वाणी से हम जो कुछ कहते हैं, उसका दूसरों पर असर पड़ता है; पर जब हमारी वाणी अस्त-व्यस्त है तो किसी पर असर नहीं पड़ेगा। इससे आप संगीत गाएँ, गाना गाएँ, व्याख्यान दें, परामर्श दें, प्रवचन दें, कोई नहीं करेगा वह काम। अतः वाणी हमारी शुद्ध हो—इसके लिये हमको मौन का अभ्यास करना चाहिए। स्वाद का अभ्यास करना चाहिए। इतना ही नहीं, हमारा आहार भी पुनीत हो; आहार को पुनीत करने के लिए आपको अस्वाद का अभ्यास करना चाहिए।

इसके सिवाय दूसरी बात है—ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य में दो बातें आती हैं—एक तो शारीरिक संयम। उस दिन, जिस दिन आपको यह व्रत रखना हो, उस दिन आपको ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए; धर्मपत्नी आपकी है, तो भी करनी चाहिए और धर्मपत्नी नहीं है तो भी करना चाहिए; धर्मपत्नी नहीं है, तो कैसे करें ? वास्तव में ब्रह्मचर्य जो खण्डित होता है, आदमी की कल्पनाओं से होता है। शरीर की कोई बात नहीं है। शरीर में तो स्वप्नदोष भी हो जाते हैं; स्वप्नदोष से पानी का क्षय हो जाना कोई नुकसान का नहीं है, जितना कि हम महिलाओं के सम्बन्ध में गलत दृष्टिकोण रखें। उस दिन आप खासतौर से अपने मन में यह विचार कर लीजिये कि कोई विचार आपके मन में इस तरह का न आये; आये तो इस विचार के ठीक उलटे विचार शुरू कर दीजिये। कोई गन्दा विचार आपके दिमाग में आया है तो, उसके ठीक उलटे विचार शुरू कीजिए। आपको खाने के सम्बन्ध में आता है, तो उन लोगों का ध्यान रखिये, जिन लोगों ने अस्वाद व्रत रखे थे। कामवासना का विचार आया है, तो यह ध्यान रखिये कि हनुमान जी थे, भीष्म पितामह थे, स्वामी दयानन्द थे, शंकराचार्य थे—इन लोगों ने किस तरीके से अपना जीवन जिया; किस तरीके से शक्ति-संग्रह किया ? इस बात का विचार कीजिए। विचारों को विचारों से काट दीजिए। विचारों को रोका नहीं जा सकता। एक तरह के विचारों को हटा करके दूसरे तरह के विचारों को उस स्थान पर ले आएँ, तो हमारा विचारों पर कन्ट्रोल करना सुगम हो जाएगा। ब्रह्मचर्य वास्तव में अपने विचारों पर कण्ट्रोल करने की विद्या है। ब्रह्मचर्य माने 'संयम'। इस तरीके से वाणी का तप और कामेन्द्रिय का तप इन दोनों तपों को करना चाहिए।

तप चार तरह के होते हैं। सारी इन्द्रियों का तप-एक, पैसे का तप-दो, समय का तप-तीन और विचारों का तप-चार। इन्द्रियों की बात हो चुकी। अब दूसरा तप है—पैसे का; आप जो भी पैसा खर्च करें, उसमें एक-एक पैसे को ध्यान में रखिये कि कहीं यह गलत खर्च तो नहीं हो रहा है; कहीं किसी पैसे का आप गलत खर्च तो नहीं कर रहे हैं। हमने दो सौ रुपये महीने में बहुत सारी जिन्दगी काट डाली। यहाँ आने से पहले हम अखण्ड-ज्योति कार्यालय में जितने समय तक रहे हैं, हमने दो सौ रुपये महीने में अपना समय काटा है, पैंतीस साल के करीब हम अखण्ड-ज्योति कार्यालय में रहे हैं। वहाँ भी हमारी गलतियाँ सुरक्षित हैं, ताकि कोई आदमी यह न कहे कि पाँच आदमियों की गृहस्थी दो सौ रुपये में नहीं चल सकती। जरूर चल सकती है। पैसे का संयम कीजिये; पैसे का संयम करेंगे तो बुरे कामों से बच जाएँगे; नशाखोरी से बच जाएँगे, दुर्व्यसनों से बच जाएँगे। अगर पैसे के ऊपर आपका नियंत्रण नहीं है और मनचाहे जिस तरीके से पैसा खर्च करते हैं, तो फिर आपके अन्दर नब्बे बुराइयाँ पैदा हो जाएँगी और उनको फिर आप रोक नहीं पाएँगे।

इस तरीके से इन्द्रियों का संयम एक, पैसे का संयम दो, अब तीसरा संयम आता है समय का; समय का भी आप टाइम-टेबिल कर सकेंगे; टाइम-टेबिल बनाकर आप काम करेंगे तो, विनोबा ने इतनी लम्बी यात्रा भी पूरी कर ली थी और इसके साथ-साथ में पढ़ने-लिखने का काम भी जारी रखा, तेईस भाषाओं के विद्वान थे वे। उन्होंने अपने समय का विभाजन इस तरीके से किया हुआ था कि एक सेकण्ड भी बेकार नहीं जाता था। विश्राम करना—विश्राम भी समय पर था। विनोबा शाम को छह बजे सो जाते थे। गर्मियों में सात बजे सूर्य अस्त होता है तो भी वे छह बजे सो जाते थे। उन्होंने यह कभी नहीं देखा कि सूरज आगे चलता है कि पीछे चलता है। उन्होंने घड़ी के ऊपर जिन्दगी को नियमित रखा। जितने भी संसार में महापुरुष हुए हैं, उन्होंने काल को पाटी से बाँधकर रखा। रावण ने काल को पाटी से बाँधकर रखा था। आप भी काल को पाटी से बाँधकर रखिये। घड़ी को अपनी कलाई से बाँधकर रखिये। घड़ी के कहने पर अपना चलने का, फिरने का, खाने का, पीने का, सोने का, उठने का कार्यक्रम बनाएँ। अपना समय आपके अधिगृहीत होना चाहिए; समय आपका अस्त-व्यस्त नहीं जाना चाहिए। ऐसा न हो कि समय को आप बेसिलसिले और बेहिसाब खर्च करें। समय का निग्रह है यह।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय संयम के बाद आता है—विचारों का निग्रह। विचारों का निग्रह कर नहीं पाते लोग। चाहे जो सोचते रहते हैं। रात को सोते हुए आँख खुल गई तो, न जाने कहाँ के विचार कर रहे हैं ? किस तरह के विचार कर रहे हैं ? असम्भव बातों के भी विचार कर रहे हैं। रात को सिनेमा देखा था; फलाँ औरत देखी थी, कैसी अच्छी है ! उसकी हम चाह रखते हैं; उसका हम आटोग्राफ लेकर आएँगे। अरे बाबा ! कहाँ से आटोग्राफ कैसे लेकर के आएँगे। वहाँ तक का किराया तो दे नहीं पाएँगे, फिर आटोग्राफ कैसे लेकर के आएँगे। इस तरीके के विचारों का निग्रह करना आना चाहिए। विचार जिस काम में लगाना चाहिए, उसी काम में अगर आप लगाएँ, तो आप वैज्ञानिक हो सकते हैं, साहित्यकार हो सकते हैं। जितने भी संसार में सफल जीवन के मनुष्य हुए हैं उन लोगों ने अपने विचारों पर कण्ट्रोल करना सीखा था। विचार को इस तरीके से खत्म किया कि जहाँ करना है, बस उसी जगह करना है; जहाँ नहीं करना है, उस जगह नहीं करना। मन के ऊपर नियंत्रण करने की विधि यही है कि विचारों को अस्त-व्यस्त न होने दें; विचारों को काम में लगा दें। आप अस्त-व्यस्त हैं; कहीं घूमने के लिए विचार बन रहा है, तो वहाँ से हटाइये और जो आपके पास ढेरों-की-ढेरों समस्याएँ हैं, उनके ऊपर बनाइये। बच्चों को कैसे पढ़ाएँगे ? धर्मपत्नी का स्वास्थ्य कैसे अच्छा करेंगे ? अपने जीवन को भी ठीक कैसे बनाएँगे ? आप इस तरीके से योजनाएँ बनाने में, विचार करने में, विचारों को लगने दीजिए—जब खाली समय हो तब और जब खाली समय नहीं हो तब। अपने काम को अपने सम्मान का प्रश्न बनाकर के सारे मन को उसी में लगा दीजिये; मन को एक मिनट खाली मत रहने दीजिये। कोई काम आपके पास है, तो उस काम को इस तरीके से करिये, मानो यह हमारे लिए सबसे बड़ी जिम्मेदारी का काम है। जो काम आपने हाथ में ले रखा है, उसे पूरी जिम्मेदारी समझकर कीजिए। फिर देखिये आपका काम कैसा बढ़िया, कैसा शानदार, कैसा अच्छा खूबसूरत काम हो गया ?

इस तरीके से विचारों का संयम-एक, समय का संयम दो, पैसे का संयम तीन और इन्द्रियों का संयम-चार; चार संयम अगर आप करने लगें, तो मैं आपको तपस्वी कहूँगा। इसकी शुरुआत करने के लिए आप जीभ से और कामेन्द्रिय से कामवासना के विचार और स्वाद के विचार-इन दोनों को निकालना शुरू करें। यह सबसे पहला, शुरुआत का चरण है। इसके बाद के जो चरण हैं, वे वही हैं, जो मैंने अभी आपको निवेदन किया। इस तरीके से रविवार या गुरुवार के दिन आप शुरुआत करें और पीछे तो आप तमाम दिन कीजिए; हर दिन कीजिये। यह तो हर दिन करने की चीज है। आपको यह नहीं कहा जा रहा कि आप केवल गुरुवार को ही करेंगे। फिर आपको चाहे जो छूट मिल जाएगी। फिर चाहे जब आप करेंगे, गुरुवार से शुरुआत करेंगे, प्रज्ञायोग यही है। दूसरा काम आपको यह करना है कि सोते और उठते समय नये जन्म और पुराने जन्म को याद रखेंगे, शुद्धता रखेंगे। शुद्धता रखने के लिए पवित्रीकरण, प्राणायाम और न्यास आदि करेंगे और देवसेवा और देवपूजन करेंगे; जल, अक्षत, धूप के अनुरूप अपना जीवन बनाएँगे; भक्तियोग के लिए तीन मालाएँ करेंगे। एक अपने लिए, एक अन्तःकरण के संशोधन के लिए और एक अपने शरीर को सामर्थ्यवान बनाये रखने के लिए और ? और सविता का ध्यान करेंगे। गायत्री जप के साथ-साथ में सविता आपको बल दे और ज्ञान-बुद्धि दे। अर्घ्यदान करते हुए बराबर यह बात कहेंगे कि अपने सुख बाँटेंगे और दूसरों का दुःख बँटाएँगे। रविवार और गुरुवार में से किसी एक दिन आप यह करेंगे। बस, इतना ही प्रज्ञायोग है। प्रज्ञायोग आप नियमित रूप से कीजिए। हमारी छपी हुई किताब है। समझ में न आये, तो फिर आकर सीख लेना कभी। प्रज्ञायोग की आप साधना कीजिये। इस समय यह आपके लिए पर्याप्त है। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

पंचकोशों का अनावरण

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

मैं आपसे एक दिन 'पाँच देवता' के बारे में वर्णन कर रहा था। सारा-का-सारा ब्रह्माण्ड एक पिण्ड के समान है। पिण्ड का मतलब है—हमारा शरीर। यह एक बड़े विशाल ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। जो ब्रह्माण्ड में है, वही हमारे शरीर में विद्यमान है। पिण्ड के भीतर क्या-क्या भरा पड़ा है ? पंचतत्त्व भरे पड़े हैं; पाँच प्राण भरे पड़े हैं। ये ही पाँच देवता हैं। मनुष्य अगर भीतर के देवता को जगा ले, तो बाहर के देवता स्वयं खिंचे चले आते हैं। भीतर का मैगनेट जब खींचता है, तो वे स्वयं खिंचे चले आते हैं। पेड़ों का मैगनेट बादलों को खींचता है। जहाँ-जहाँ घासपात, पेड़-पौधे होते हैं, वे बादलों को खींचते हैं तथा बादल बरसते हैं। जहाँ रेगिस्तान होता है, वहाँ बादल आते तो हैं; परन्तु रेगिस्तान का मैगनेट उन्हें खींच नहीं पाता और वे वापस चले जाते हैं। भीतर का देवता जगे, तो बाहर के देवता हमारे पास स्वयं आ जाते हैं। भीतर का देवता मरा हुआ हो, तो बाहर के देवता काम नहीं करते हैं।

विवेकानन्द का देवता जगा, तो रामकृष्ण परमहंस आए और झल्लाकर कहा—तू बी. ए. के फेर में पड़ा है, चल हमारा काम रुका पड़ा है। रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द के अन्दर की कसक को समझ गये। उनके पास नित्य हजारों लोग आते थे। जिनको किसी प्रकार की मुसीबतें होती थीं; वे उन्हें थोड़ा आशीर्वाद, वरदान देकर विदा कर देते थे, परन्तु रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द के पास रोज जाते थे। एक बार विवेकानन्द ने कहा आप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

क्यों आकर हमें तंग करते हैं; हमारा मन जब होगा, तो हम आएँगे; आप हमें परेशान न करें। रामकृष्ण परमहंस ने देखा कि इसके अन्दर कसक है; इसी से हमारा काम हो सकता है और उन्होंने उन्हें धन्य कर दिया। हमारे गुरु भी हमारे पास आये और हम धन्य हो गए।

मित्रो ! मरी हुई लाश का पता लग जाए, तो कुत्ते पहुँच जाते हैं तथा लाश को खाकर खत्म कर डालते हैं। देवताओं के बारे में भी यही बात है। हर एक के पास देवता नहीं आते हैं। वे पूजा करने, प्रसाद चढ़ाने वालों को अपनी शक्ति, कृपा नहीं देते हैं। देवता सवा रुपये के प्रसाद के पीछे नहीं दौड़ते। देवता भिखारी नहीं होते। हम कचौड़ी खिलाएँगे, हमारा काम कर दीजिए। उनकी हैसियत इतनी कम नहीं है कि वे कचौड़ी के लिए जाएँ; बड़े काम के लिए जाएँगे। मित्रो ! सवा रुपये में भगवान मनोकामना पूर्ण नहीं कर सकते हैं। हमको भगवान की गरिमा का ख्याल रखना होगा। आदमी के अन्दर के खजाने का ध्यान रखना होगा। पहले जमाने के लोग खजाने का पता लगाते थे कि कहाँ-कहाँ मिट्टी के अन्दर सोना, चाँदी या अन्य धातुएँ गढ़ी हैं। उसी प्रकार देवताओं का प्रवेश वहाँ होता है, जहाँ व्यक्तित्व के कण' का खजाना होता है। ऐसे आदमी पर महान् आदमी, तपस्वी, महात्मा, ज्ञानी, देवात्मा के कृपा-अनुदान बरसने लगते हैं। अध्यात्म, जालसाजी, मुहल्ले वालों को फँसाने, ग्राहक को फँसाने, देवी-देवताओं को फँसाने की विद्या का नाम नहीं है। अध्यात्म आदमी के व्यक्तित्व के विकास का नाम है। सुन्दर फूल से जब सुगन्ध निकलती है, तो मधुमक्खियाँ स्वयं आ जाती हैं। उसी प्रकार मनुष्य का खिले हुए फूल की तरह व्यक्तित्व होना चाहिए। गुरु, महात्मा, संतों और देवताओं को फँसाने की विद्या मत करो, इसमें फायदा नहीं है। देवता बड़े जबरदस्त हैं। मछली को पकड़ने के लिए आटे की गोली, बंसी काम आती है। देवता ऐसा नहीं है। देवता से दूर रहो। वह तो हमारे भीतर; उसे जगा। अपने भीतर वाले देवता को विकसित किये बिना, बाहर के देवता को हम प्रसन्न नहीं कर सकते हैं। अगरबत्ती, बताशे चढ़ाकर देवताओं का मखौल न करें। हमें अपने भीतर के देवता का विकास करना चाहिए। इसी का नाम जप; इसी का नाम ध्यान; इसी का नाम चान्द्रायण व्रत है। यह हम आपको भले आदमी बनाने, श्रेष्ठ बनाने के लिए बतला रहे हैं। आपके भीतर सब चीजें विद्यमान हैं। पंचदेवता कहाँ से आते हैं ? वे आपके भीतर हैं। मिट्टी की परतें जम गयी हैं; उसमें दबे पड़े हैं। उन्हें जगाने की विधा के पहले उन्हें साफ करना होगा। हम उसे सिखाते हैं। पहले अपने आपको विकसित कीजिए। पाँच भंडार, पाँच देवताओं को जगाने की विधि 'पंचकोश की उच्चस्तरीय साधना' कहलाती है। ये गायत्री के पाँच मुख हैं, जिनका सम्बन्ध सूक्ष्म शरीर से है। स्थूल शरीर यानी हाथ-पैर से हम आठ घण्टे काम करके किसी तरह 'आठ-दस रुपये कमा लेते हैं। यह स्थूल शरीर कमजोर है।

हमारे भीतर एक सत्ता सूक्ष्म है। वह स्थूल से ज्यादा शक्तिशाली है। नेपोलियन का वजन व उसकी लम्बाई, चौड़ाई सामान्य व्यक्ति की तरह थी; परन्तु उसका सूक्ष्म महान था। वह आल्प्स पर्वत के पास गया और बोला हमें रास्ता दीजिए, नहीं तो हम आपको उखाड़कर फेंक देंगे। बेटे। आल्प्स पर्वत हिमालय से ज्यादा ऊँचा है। नेपोलियन ने अपनी सेना के साथ उसे पार कर दिखाया। सूक्ष्म की ताकत को अगर हम समझ सकें, तो मजा आ जाएगा। गाँधी जी का सूक्ष्म शरीर मजबूत था। वे पाँच फुट दो इंच कद वाले थे तथा उनका वजन छियानवें पौंड था। कोई भी चौदह साल का बच्चा उनसे ज्यादा वजनदार हो सकता है; पर गाँधी जी की ताकत पहलवान से ज्यादा थी। अँग्रेजों का राज्य जो अफ्रीका से हिन्दुस्तान तथा न्यूजीलैण्ड तक फैला था; जिसके राज्य में कभी सूरज अस्त नहीं होता था; गाँधी जी की सूक्ष्म ताकत ने उन्हें मजबूर कर दिया भारत छोड़ने के लिए। गाँधी जी ने कहा 'क्विट इंडिया' अर्थात् अँग्रेजो भारत छोड़ो। अँग्रेजो ने कहा आपके पास क्या है ? बन्दूक है ? जो हम डर के मारे हिन्दुस्तान छोड़ें। गाँधी जी ने जनता से कहा—'डू ऑर डाइ'। सन् १९४२ के आन्दोलन में सभी ने उनका साथ दिया। इसमें हजारों आदमी गोली के निशान बना दिये गए, जेल गए, फाँसी के फँदे पर चढ़ गए। मित्रो ! यह गाँधी जी के सूक्ष्म शरीर की आवाज थी।

स्थूल शरीर में क्या रखा है ? वह रोटी खाता रहता है, गन्दगी निकालता रहता है। हाड़-माँस के बने इस शरीर को अगर फाड़ दें, तो केवल बदबू भरी जिन्दगी ही दिखायी पड़ेगी, यह बदबू मलमूत्र और पसीने के रास्ते निकलती है। हम लक्स साबुन लगाते हैं; परन्तु ये बदबू समाप्त नहीं होती है। इसके लिए हम मंजन करते हैं, दाँत साफ करते हैं, कभी पान खाते हैं, तो कभी सुपारी खाते हैं, परन्तु आदमी के भीतर जो जखीरे काम करते हैं, वह ताकत सूक्ष्म की है। इसी सूक्ष्म-शक्ति को विकसित करने का नाम अध्यात्म है। बाहर को विकसित करने का ढंग आपको मालूम है ? कसरत कीजिए, पौष्टिक चीजें खाइये, विटामिन्स खाइये, स्थूल को विकसित कीजिए; परन्तु सूक्ष्म किस तरह से विकसित होगा—यह कोई नहीं जानता। दिमाग को बढ़ाने एवं कन्ट्रोल करने की विधि सबको मालूम है। फिजिक्स, इकोनॉमिक्स पढ़िये और दिमाग को बढ़ाइये, पर यह सब भौतिक उपलब्धियाँ हैं, हम जिसे सिखाना चाहते हैं, वह हैं 'चेतनशक्ति' जिसे 'ऋद्धि-सिद्धि' कहते हैं। नेपोलियन के भीतर का वह अंश विकसित हुआ था, जो लोगों को प्रभावित करता था, सेना को प्रभावित करता था। एक बार नेपोलियन को सेना ने गिरफ्तार करना चाहा। चारों तरफ से उसे घेर लिया गया। उसने सोचा—ये लोग मुझे गिरफ्तार कर लेंगे; अगर गिरफ्तार न हुआ, तो गोली मार देंगे। उसकी चेतन-शक्ति जाग्रत हो गई। उसने कड़ककर कहा—रुको ? सारे सिपाही खड़े हो गए। नेपोलियन ने कहा—दोस्तो, हम तुम्हारे कप्तान हैं। चलो हमारे साथ; बन्दूकों को नीचे करो। उसने आदेश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिया—पीछे घूमो। सारे-के-सारे सिपाही पीछे चल पड़े। नेपोलियन शेर की तरह आगे चल रहा था। वह जबरदस्त आदमी था।

मनुष्य के अन्दर वाला माद्दा अध्यात्म का वह हिस्सा है, जो लोगों को, संसार को प्रभावित करता है; चमत्कार दिखाता है—यानी भौतिक चीजों का चमत्कार दिखाता है। यह अध्यात्म तो है; परन्तु भौतिक वस्तुओं को प्रभावित करने वाला माद्दा है। एक हिस्सा हमारा वह है जिसे 'सिद्धि' कहते हैं। एक और माद्दा हमारे भीतर है, जो दिव्यचेतना को प्रभावित करता है; उसे हम भगवान कह सकते हैं। दैवी सत्ता कह सकते हैं। पदार्थ का भी महत्त्व बहुत है। एक 'लेसर' किरण होती है, जिसे छोड़ते ही चन्द्रमा तक जा पहुँचती है। लेसर में वह शक्ति होती है कि एक जगह से छोड़ने पर वह दूसरे स्थान पर जाकर उसे जलाकर खाक कर देती है। एक पदार्थ माध्यम से टेलीफोन का बटन दबाते ही करोड़ों मील दूर बैठे व्यक्ति से हम बातें कर लेते हैं। यह 'फिजिक्स' की बातें हैं, जो पदार्थ को प्रभावित करती है। मनुष्य के सूक्ष्म का एक हिस्सा वह है, जो वस्तु यानी पदार्थ को प्रभावित करता है। इसके द्वारा हम चमत्कार दिखा सकते है; संसार को प्रभावित कर सकते हैं। यह माद्दा नम्बर दो हैं, जिसे हम 'सिद्धियाँ' कहते हैं।

चेतन शक्ति महान है। उसमें भावना काम करती है, संवेदना काम करती है, देवत्व काम करता है। अगर दोनों का ताल-मेल हो जाए, तो मनुष्य को ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं। पहले बड़ी-बड़ी बीमा कम्पनियाँ हुआ करती थीं, जो छोटी-छोटी बीमा कम्पनियों का उत्तरदायित्व उठाती थीं। एक और बीमा कम्पनी है, जिसे हम भगवान कहते हैं। इस बड़ी शक्ति के साथ यदि हमारा तालमेल बैठ जाए, लेनदेन प्रारम्भ हो जाए, तो मजा आ जाए, यह ऋद्धि वाला हिस्सा है, जो हमारी जीवात्मा से सम्बन्ध रखता है। सिद्धियाँ चमत्कार वाला पक्ष है, जिसे दिखाया जा सकता है। ऋद्धि हमारा वैभव है, जो हमारी प्रगति कराने में सक्षम है। इन दोनों को विकसित करने का नाम ही अध्यात्म है। मित्रो ! अध्यात्म के और रास्ते हो सकते हैं; यह मैं नहीं कहता कि यही रास्ता है।

ऋषियों की कला, ऋषियों की विद्या यह पंचकोशी साधना है; जिसमें पाँच देवों का वर्णन आता है। जिसे हम कल बता रहे थे। गायत्री की उच्चस्तरीय साधना में हमने आपको अभी ध्यान करना सिखाया था। आगे चलकर हम इसकी सांगोपांग तैयारी कराएँगे; परन्तु इसके पहले हम यह जानना चाहते हैं कि आपके भीतर संकल्पबल है कि नहीं। यह सारा का सारा अध्यात्म संकल्पबल पर टिका है। हम आपको चान्द्रायण व्रत में इसी का इम्तिहान लेने एवं प्रारम्भिक जानकारी देने हेतु बुलाते हैं कि आप में संकल्पबल है या नहीं। यह हिम्मतवालों का, बहादुरों का काम है; संकल्पबल वालों का काम है। डाका डालने में, चोरी करने में हिम्मत चाहिए। इन्हें कोई पकड़ ले, तो कचमूर निकाल कर रख देगा, फिर भी डाकू सोचता है कि चलो, जो होगा देखा जाएगा। इसी प्रकार स्वस्थ कामों के लिए, ऊँचे उद्देश्यों के लिए हिम्मत चाहिए। संसार के हर काम में हिम्मत काम करती है। यही हिम्मत आदर्शवादी जीवन जीने के लिए, अपने आपको नियंत्रित करने के लिए, अंकुश लगाने के लिए आवश्यक है।

यहाँ शांतिकुंज में हम आपको साधना कराते हैं, ध्यान कराते हैं। पंचकोश साधना भी कराएँगे; पर इसके लिए हिम्मत चाहिए। आप में हिम्मत होनी चाहिए। यह इन्द्रियाँ जो बार-बार तंग करती हैं। उन्हें रोकना चाहिए। अभी हम सिद्धान्तों की बात कहते हैं; क्योंकि सिद्धान्त के नाम पर आपके पास कुछ नहीं है। जब स्वार्थ सामने आता है, तब उस समय आदमी इतना कमजोर मालूम पड़ता है कि हम कुछ कह नहीं सकते, मन जो कहता है हम वही करते हैं। अरे ! तूने मन को नहीं मारा। उसे मारना होगा। मन ने इन्द्रियों को वश में कर लिया है। घोड़े को चाबुक से जिस तरह वश में करते हैं, उसी तरह मन को चाबुक से मारना होगा। नहीं, साहब। मन नहीं लगता है। तो खाना बन्द कर दे। अकेला मन मालिक हो गया। इस पर अंकुश लगाना होगा। यह भी एक राक्षस है। इस राक्षस के साथ लड़ाई लड़ने का नाम अध्यात्म है। जप और ध्यान से मन को वश में किया जाता है।

मित्रो ! अब हम आपको उपासना के लिए तैयार करेंगे। नहीं गुरुजी, आप तो ऐसी ही अपनी ऋद्धि-सिद्धि हमें दे दीजिए। ऐसे कैसे दे देंगे ? तेरे पास उससे लड़ने का माद्दा है कि नहीं। हमारे गुरु ने चौबीस साल तक हमारा इम्तिहान लिया। चौबीस साल तक जौ की रोटी और छाछ खाने का आदेश दिया। जौ की रोटी और छाछ के अलावा भी दुनिया में कोई चीज होती है या नहीं—यह हमने नहीं जाना। हमारी इन्द्रियों ने कहा, जीभ ने कहा कि जब सब लोग शक्कर, दाल, नमक आदि खाते हैं, तो आप क्यों नहीं खाते ? हमने कहा—हम लोगों के रास्ते पर नहीं चल सकते हैं। लोगों के कहने पर हम चलेंगे, तो वे हमारे जीवन को तबाह कर देंगे। लोगों के बताये हुए रास्ते पर हम चलते, तो अध्यात्म की ओर हम बढ़ नहीं सकते थे। लोग तो बड़े निकम्मे होते हैं। जहाँ तक सिद्धान्तों का, आदर्शों का सवाल है, वे बेकार हैं। लोग डॉक्टर हैं, इन्जीनियर हैं तुरन्त मकान का नक्शा बना देते हैं, इंजेक्शन दे देते हैं, पर जहाँ तक सिद्धान्तों, आदर्शों का सम्बन्ध है, वे इस रास्ते पर नहीं चल सकते हैं और न ही ऊँचा उठ सकते हैं। लोगों की सलाह पर चलकर हम अपने जीवन को ऊँचा नहीं उठा सकते हैं।

अगर आपको आध्यात्मिकता के रास्ते पर चलना है, तो हम आपको मोहब्बत करते हैं, प्रशंसा करते हैं और यकीन दिलाते हैं कि हम आपकी सहायता करेंगे, लेकिन आप एक बात मत करना-अपनी अकल तथा दबाव हमारे ऊपर लादने की कोशिश मत करना। हम इससे इनकार करते हैं। प्रह्लाद ने अपने सम्बन्धियों की बात मानने से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इनकार कर दिया था। हमारे शरीर में लोभ, मोह, वासना के रूप में जो सम्बन्धी हैं, उनकी बातों को मानने से हम इनकार करते हैं; जो हमें एक कदम भी आगे बढ़ने नहीं देते। इनसे लोहा लेने का नाम अध्यात्म है। अपने परिवार वालों की हमें सहायता करनी पड़ती है। हमारी बीबी है, उसे हमने अग्नि की साक्षी देकर पत्नी बनाया है। उसे पढ़ाना, संस्कारवान् बनाना, उसके भविष्य की चिन्ता करना हमारा कर्त्तव्य है; परन्तु जहाँ तक सिद्धान्त की बात है, हम किसी को हावी नहीं होने देंगे। किसी रिश्तेदार को हम हावी होने देंगे। मीराबाई के ऊपर रिश्तेदार हावी हो रहे थे और कह रहे थे कि तुम्हें हमारे सिद्धान्तों को मानना चाहिए। मीरा अपने स्तर पर जीवन जीना चाहती थी, जैसा कि उसके गुरु ने बताया था; परन्तु उसके खानदान वाले मना कर रहे थे। मीरा ने गोस्वामी तुलसीदास जी को एक चिट्ठी लिखी कि आप बतलाएँ कि हम क्या करें ? घर वाले इस प्रकार कह रहे हैं और हमारी अन्तरात्मा दूसरी बात कह रही है। हर आदमी सलाह देता है कि आदर्श और सिद्धान्त पर मत चलो। एक हमारा ईमान तथा दूसरा हमारा भगवान के अलावा कोई नेक सलाह नहीं देता है।

यह किसकी बात कर रहा था ? हिम्मतवालों की, शक्तिशाली-ताकतवालों की बात कह रहा था। यह शरीर की ताकत नहीं है। यह तो डाकुओं के पास भी होती है। अक्लवालों का तो कहना ही क्या है ? सारे अक्लवाले जेलखाने में रहते हैं। डकैती, चोरी, जालसाजी, स्मगलिंग आदि सभी में यह माहिर होते हैं। अक्लवान की तलाश करनी हो तो कभी जेलखाने चले जाइये। अक्ल हम सही मायने में उसे कहते हैं, जो सिद्धान्तों के लिए, आगे बढ़ने के लिए तैयार हों। सिद्धान्तों के मामले में आपकी अक्ल, आपकी हिम्मत यदि आगे-आगे चलने को तैयार हो, तो हम आपको अध्यात्म सिखाएँगे। क्या-क्या सिखाएँगे ? सूक्ष्म शरीर की साधना सिखाएँगे। अगर आप पहलवान बनना चाहते हैं, तो चलिए हमारे साथ अखाड़े में। अखाड़े में उतरे बिना आप पहलवान नहीं बन सकते। इसी प्रकार जब आपका भीतर वाला हिस्सा हमारी बातों को, दबाव को मान लेगा, तो हम समझेंगे कि आप हमारे इम्तिहान में पास हो गये। एक महीने का इम्तिहान आपका इसीलिए रखा गया है। आपके ऊपर एक महीने के अनुष्ठान का दबाव इसलिए रखा गया है; जिससे यह पता चल सके कि इसे आप कर सकते हैं या नहीं। कभी ११ माला कर लिया, तो कभी १६ माला जप कर लिया और कह दिया कि गुरुजी अभी हमारा मन नहीं लगता, सितम्बर में कर लेंगे। इस तरह की बहानेबाजी करने वाले के बारे में हमें सोचना पड़ेगा कि उसका सूक्ष्म शरीर जगाएँ या नहीं। उसके लिए यही कहना पड़ेगा कि बेटा, अभी तू बच्चा है, कमजोर है। तेरे ऊपर हम दबाव नहीं डाल सकते हैं। अभी तो हमने तप का थोड़ा-सा नियम बतलाया है। यह शिशु चान्द्रायण है। आगे बड़ा चान्द्रायण करायेंगे। २४ घण्टे में एक गिलास दाल-दलिया लेना होगा। इससे तेरे बेटे बीमारी हो जाएगी।

जन्माष्टमी के दिन बच्चे उपवास करते हैं। वे अपनी मम्मी से पूछते हैं कि हम रोटी या शाक खाएँ अथवा दोनों चीजें लें—यह भी बच्चों का चान्द्रायण है। एक बार लें या दो बार ले लें। बेटे ! तू अपने ऊपर अंकुश लगाने में कमजोर है। पेट कहता है कि हमें नहीं भरोगे, तो हम जिन्दा नहीं रह सकते हैं और हम कहते हैं कि खबरदार ! गुरुजी के पास तू नहीं मर सकता है। हमारे गुरुजी हमें चार दिन के लिए हिमालय बुलाते हैं। हिमालय में न फल है, न मूल है। पत्तियों के सहारे जीना पड़ता है। चना की तरह, पालक, बथुआ की तरह पत्तियाँ होती हैं, जिन्हें उबालकर खा लिया जाता है तथा जिन्दा रहा जाता है। इससे हमारा शरीर कमजोर नहीं होता था। शरीर कमजोर हो भी हो तो हमारा सूक्ष्म शरीर ताकतवर होता चला जाता है। तू कहता है कि माँस बढ़ा दीजिए। बेटे ! माँस बढ़ाने से कोई फायदा नहीं है तथा माँस घटने से कुछ नुकसान भी नहीं है। असली शक्ति हमारे भीतर है, जिसे हम 'सूक्ष्म शरीर' कहते हैं। आगे चलकर हम इसे ही शक्तिशाली बनाने का उपक्रम बताने वाले हैं।

हमारे भीतर शक्तियों के पाँच भण्डार हैं। उनको खोलने का तरीका 'पंचकोश अनावरण' कहलाता है। हमारे स्थूल शरीर एवं सूक्ष्म शरीर में अनेकों ग्लैण्ड्स हैं, जिन्हें हारमोन ग्रन्थियाँ कहते हैं। इस तरह की बहुत छोटी-छोटी ग्रन्थियाँ हैं, जो हमारे मन को नियंत्रित करती हैं। इनमें प्रमुख है आज्ञाचक्र, जिसमें पॉजिटिव और निगेटिव दो तरह के करेण्ट चलते रहते हैं। यह मस्तिष्क को कन्ट्रोल करती है। मस्तिष्क में जो शक्ति भरी पड़ी है, उसमें से सात प्रतिशत ही काम आती है, ९३ प्रतिशत बेकार पड़ी रहती है। फिजियोलॉजी वाले इसे जानते हैं, अगर आज्ञाचक्र हमारा जग जाए, तो ९३ प्रतिशत को हम पकड़ सकते हैं। संजय ने इसके सहारे ही महाभारत का दृश्य देखा था। आज्ञाचक्र हमारा टेलीविजन है। अगर यह जाग्रत हो जाए, तो सारे संसार के समाचार हम ज्ञात कर सकते हैं। आज्ञाचक्र ही है, जो भीतर की चीजों को पकड़ सकता है।

आज्ञाचक्र जगाने का ध्यान एक हथियार है। ध्यान किसे कहते हैं ? हमारे मस्तिष्क की जो शक्तियाँ फैलती रहती हैं, उसे एक जगह एकाग्र करना ही ध्यान है। एक छोटे-से शीशे के ऊपर अगर सूर्य की किरणें इकट्ठी कर ली जाएँ तो उससे आग लग जाएगी। यह आग सारे शहर को जलाकर खाक कर सकती है। हमारे मस्तिष्क की शक्तियाँ ही बिखरती रहती हैं। अगर उसे हम एकत्र कर लें तब ऐसा योग बन जाता है कि हम क्या बतलाएँ ? बन्दूक की नली में फैली हुई बारूद जमा कर लें तो गोली बन जाएगी और कमाल कर दिखाएगी। यह है एकाग्रता। जिस प्रकार बिखरी हुई बारूद कोई विशेष कमाल नहीं दिखा सकती, उसी प्रकार हमारे दिमाग की शक्ति भी बेकार पड़ी है, अगर ध्यान द्वारा इन्हें एकाग्र कर लें तो योगी की तरह हम भी उसका लाभ उठा सकते हैं। समाधि लगाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले योगी कहते हैं; कि हम मरेंगे नहीं। हम भी आप से कहते हैं कि आप भटकना बन्द कीजिए। एकाग्रता लाइये। कन्ट्रोलिंग पावर का ही नाम ध्यान है। इसके द्वारा हम ऐसी शक्ति इकट्ठी कर लेते हैं कि उसका क्या कहना ? मैस्मेरिज्म करने वाले इसी ध्यान-शक्ति के सहारे चमत्कार दिखाते हैं। किसी को सम्मोहित या बेहोश कर देते हैं।

आपको हम आरम्भिक ध्यान शाम को आधा घण्टा सिखाते हैं। मैस्मेरिज्म अभी नहीं बतलाते हैं। ध्यान के अन्तर्गत हम आपको जो 'कॉशन' देते हैं, उसे मानिये। इसे जब आप करने लगेंगे, तो अगला वाला उच्चस्तरीय ध्यान बाद में सिखाएँगे। यह मत कहिये कि गुरुजी हर चीज को जल्दी कर दीजिए। पिताजी ! मेरी भी मूँछें निकाल दीजिए, भगवान का दर्शन करा दीजिए, सिद्धि दिला दीजिए। चुप, मूर्ख कहीं का। बच्चे के एक दिन में कहीं दाढ़ी निकलती है क्या ? इसी तरह पात्रता एवं पवित्रता के विकास के बिना ईश्वर-दर्शन भी सम्भव नहीं। बारूद का सबसे बड़ा जखीरा हमारे भीतर भरा पड़ा है। हम अगर अपने संकल्पबल का कारतूस चला दें, तो कमाल हो जाएगा। डायनामाइट के एक सिरे में आग लगा देते हैं, तो वह जलने लगता है तथा बड़े पहाड़ को भी उड़ा देता है। हमारे भीतर भी एक प्रकार का डायनामाइट है। उसके भीतर ध्यान की शक्ति काम करती है। इसके द्वारा हम सब कुछ कर सकते हैं।

बेटे ! हमारे भीतर जो शक्ति भरी है, उसका नाम है—'चेतना', जो जड़ के भीतर काम करती है। चेतना का काम है कि वह जड़ को काबू में रखे। जड़ के ऊपर उसी का कंट्रोल है। जड़-चेतन का सम्मिश्रण जहाँ कहीं भी होता है, उसका नाम है—'प्राण'। प्राण एक छोटी-सी चीज है, जो जड़-चेतन दोनों से मिली हुई है। एक और चीज है, जिसका नाम आत्मा है। यह भगवान का अंश है। साँस प्राण नहीं है। साँस के माध्यम से हम हवा खींचते हैं, जिसमें गैस भरी पड़ी है। इसमें हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन आदि बहुत-सी चीजें भरी पड़ी हैं। उसके भीतर प्राण भरा पड़ा हैं। प्राण को हमारा संकल्प खींचता रहता है। साँस हवा खींच सकती है, प्राण को नहीं खींच सकती। हम प्राणों को जिस उपक्रम के सहारे खींचते हैं, उसका नाम 'प्राणायाम' है। प्राणायाम उस विधा का नाम है, जिसमें हम संकल्प-शक्ति को नियोजित करके साँस के माध्यम से समूचे निखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त प्राणशक्ति को खींचते हैं। प्राण, जड़ और चेतन-शक्ति का सम्मिश्रण है।

सूक्ष्म शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिए हम अभी आपको ध्यान और प्राणायाम की बात बता रहे थे। इन दोनों का ही आपको अभ्यास कराया जाएगा और आपके संकल्पबल की परीक्षा ली जाएगी। महीने भर आप यहीं रहेंगे और ध्यान का अभ्यास करेंगे, डिवाइन लाइट के ऊपर विश्वास रख कर। अगर आप इम्तिहान देने के लिए तैयार हो जाएँगे, तो हम पाँच देवताओं को जो आपके भीतर सोये पड़े हैं, उन्हें जाग्रत करने की विधा सिखा देंगे। अभी हमने बताया था कि हमारे सारे के सारे शरीर का ढाँचा हाड़-माँस पर नहीं, हारमोन्स पर टिका है। आदमी का वजन, ताकत हारमोन्स पर टिका है। हमारे भी पाँच और ग्रन्थियाँ हैं, जिसे हम उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव कहते हैं। सारे के सारे ग्रह-नक्षत्रों का सम्बन्ध इस उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के साथ होता है। इन पाँच ग्रन्थियों के भीतर एक-एक चक्र है, जिनमें अन्य अंग-अवयवों की अपेक्षा शक्ति ज्यादा है। इन्हें कोश कहते हैं। कोश भण्डार को कहते हैं। चक्र भी भण्डार को कहते हैं। इनमें ताकत भरी पड़ी है। आपने पानी के भँवर को देखा होगा; उसमें साधारण पानी की अपेक्षा सौ गुनी ताकत होती है। जब नाव भँवर में आ जाती है तो मल्लाह घबड़ा जाता है कि अब तो चक्कर काटकर नाव पलट जाएगी। यही विशेषता चक्रवात-साइक्लोन में भी होती है। यह गर्मी के दिनों में आता है और बड़े-बड़े पेड़ों को और छप्परों को उखाड़ देता है।

चक्रवात एवं भँवर—दोनों के संयुक्त रूप के बारे में यह बतलाया गया है कि यह शक्ति के भण्डार हैं। जो ग्रंथियाँ हमारे शरीर के भीतर हैं, वे पाँच तरह की हैं, जिन्हें कोश कहते हैं। पहला है—अन्नमय कोश—यह कोई गड्ढा नहीं है। जब तक बच्चा माँ के पेट में रहता है, तब तक वह नाभिचक्र के सहारे अपना भोजन माँ के रस-रक्त से खींचता रहता है। यह स्थूल शरीर अन्नमय कोश से बना है। इसी के द्वारा शक्ति अर्जित होती रहती है। अन्नमय कोश क्या है ? नाभि के स्थान पर एक ऐसा जखीरा होता है, जिसके द्वारा पूरी बॉडी यानी शरीर को कन्ट्रोल कर सकते हैं। हम शक्तिशाली कैसे हो सकते हैं ? दीर्घजीवी कैसे हो सकते हैं ? इसका ताल्लुक इसी से है।

दूसरा है—प्राणमय कोश। मूलाधार चक्र इसका केन्द्र है। इसकी ऐसी विशेषता है कि इसमें से उमंगें निकलती रहती हैं। यह मूलाधार पेशाब एवं टट्टी के स्थान के बीचों-बीच रहता है। आदमी को ताकतवर बनाने का नाम मूलाधार चक्र है। मूलाधार चक्र जब कमजोर होता है, तो आदमी नपुंसक हो जाता है और किसी काम का नहीं रहता है। मिलिट्री में लोग जोश देखते हैं। जोश का ताल्लुक मूलाधार चक्र से है। मूलाधार की महत्ता न जानने के कारण वह हमारे किसी काम का साबित नहीं होता। उसका उपयोग केवल बच्चा पैदा करने और अपनी तथा अपने बीबी की सेहत खराब करने के अतिरिक्त कुछ नहीं हो पाता। मूलाधार का उपयोग हम केवल सेहत खराब करने में करते हैं। अगर हम उस ताकत को किसी अच्छे काम में लगावें, तो न जाने क्या-क्या कर सकते हैं ? अगर इसे संतुलित ढंग से प्रयोग करें, तो हम लव-कुश की तरह संतान पैदा कर सकते हैं। अपने आप में यह चक्र बहुत ताकतवर है। अनियंत्रित होने पर यह कामाचार पर उतारू हो जाता है और समाज में अव्यवस्था फैलाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

है। इस ताकत को कैसे काम में लाया जा सकता है—यह प्राणमय कोश की साधना से साधित होता है।

तीसरा वाला कोश—मनोमय कोश है। यह हमारे मस्तिष्क पर कन्ट्रोल करता है। पाँच देवता इसी प्रकार पाँच कोशों में निवास करते हैं। जितनी भी अतीन्द्रिय क्षमताओं का वर्णन मिलता है—जैसे दूर देखने की ताकत, दूर की बातें समझने की ताकत, श्रवण की ताकत, भविष्य को जानने की ताकत आदि इसी कोश में सन्निहित हैं। सिद्धियों का जखीरा इसी में भरा पड़ा है। इन्हें जगाने का कार्य मनोमय कोश द्वारा होता है। बड़े काम करने के लिए बड़ी ताकत, बड़ी मशीन चाहिए, बड़ा दिमाग चाहिए। व्यक्ति को बदलने, युग को बदलने, समाज को बदलने के लिए बड़े व्यक्तियों की, ताकतवालों की, हिम्मतवालों की जरूरत पड़ेगी। यह ताकत मनोमय कोश के जागरण से ही सम्भव है।

चौथा कोश है—आनन्दमय कोश। इसे हृदय-चक्र भी कहते हैं। यह संवेदना का—भावना का कोश है। यह आदमी-से-आदमी को जोड़ता है। यह भगवान से सम्बन्ध रखता है, भगवान को जकड़ लेता है। व्यक्ति से व्यक्ति को, आत्मा को परमात्मा से जोड़ देने का काम भाव-संवेदना का है। इसका सम्बन्ध हृदय से है। हृदय ही वह स्थान है, जहाँ आत्मा-परमात्मा का मिलन होता है।

पाँचवाँ कोश—विज्ञानमय कोश है। इसका केन्द्र सहस्रार चक्र है। सहस्रार चक्र ऐसा है कि आदमी के भीतर जितना भी काम चल रहा है, यह 'ऑटोमेटिक' चल रहा है। अनाज खाकर शरीर खून पैदा करता है, रस पैदा करता है, जिसके सहारे हमारे हाथ-पाँव काम करते हैं; पर असल में यह सारी शक्ति हमारे ब्रह्मरंध्र की है, जो हमारे मस्तिष्क मध्य में एक छोटे-से बिन्दु के रूप में अवस्थित है। विवाह-शादियों में आपने अनार छोड़ते हुए देखा होगा। उसे जलाने पर पेड़ जैसी आकृति की चिनगारियाँ फूटती हुई चारों ओर फैल जाती हैं। उसी प्रकार की गर्मी और प्रकाश स्फुल्लिंग हमारे सहस्रार स्थित ब्रह्मरंध्र से निकलती रहती है और सारे शरीर में फैल जाती है। बेटे ! हम अनाज के ऊपर नहीं, उस गर्मी के ऊपर जीवित हैं, जिसे हम सहस्रार कहते हैं। इससे हजारों चिनगारियाँ निकलती हैं, जिसे हम कभी साँप या कुण्डलिनी कह देते हैं। यह साँप नहीं है, वरन् यह हमारे शरीर का एक ऐसा कण है, जो हमें बारूद की तरह उछालता रहता है। साँप उसी का नाम है। सहस्रार कमल क्या है ? यह एक कमल है, जिसमें हजारों पंखुड़ियाँ हैं। मस्तिष्क एक तालाब है, जिसमें यह कमल खिल रहा है। यह ऊपर से निकलता है, जिससे आदमी को तृप्ति, शान्ति, शारीरिक ताकत, मानसिक ताकत मिलती है। यह सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर को विकसित करने का मौका देता है। यह हमारे शरीर का पाँचवाँ भण्डार है।

इन पाँचों कोशों को जाग्रत करने की कला की हम आपको प्रारम्भिक जानकारी देते हैं। इसके लिए हम ध्यान कराते हैं तथा सायंकाल को थोड़ी-थोड़ी विधियाँ भी बतलाते हैं; प्राणायाम, मुद्रा, बंध सिखलाते हैं; इन सबको आप पूरे मनोयोग से श्रद्धापूर्वक, ध्यान एवं भावनापूर्वक करने का प्रयास करेंगे, तो यकीन रखिए कि इस संस्था के संचालक, जो एक बड़ी शक्ति हैं, वह आपको सिखलाएँगे। हम संचालक नहीं हैं और हम जिन्दे भी नहीं रहेंगे। हम तो केवल मेम्बर हैं, व्यवस्थापक हैं। बैंक वाले—रेलवे वालों का कहीं से कहीं ट्रान्सफर हो जाता है, परन्तु रेलवे बोर्ड कायम रहता है। मैनेजर, गार्ड, ड्राइवर सब बदल जाते हैं; परन्तु रेल चलती रहती है, रेलवे बोर्ड काम करता रहता है। यह ब्रह्मवर्चस् के द्वारा यानी रेलवे बोर्ड द्वारा चलाया जाता है। यह एक योजना है, जिसे समर्थ व्यक्ति द्वारा चलाया गया है, जो अपने को समर्थ बनाने के साथ-साथ बहुत बड़ा वजन लेकर दूसरों को समर्थ बनाने हेतु चल रहा है। यह है ब्रह्मवर्चस का उद्देश्य, जिसमें पंचकोशों की उपासना एवं साधना का क्रम भी शामिल है। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

ध्यानयोग का व्यावहारिक क्रियापक्ष

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

स्वर्णजयंती वर्ष में हम आपको गायत्री उपासना के साथ-साथ विशेष रूप से जो शिक्षण देते हैं, वह ध्यान का शिक्षण है। उपासनाएँ दो हैं—नाम और रूप की उपासनाएँ। नाम और रूप के बिना उपासना हो नहीं सकती। यह दो यूनिवर्सल उपासनाएँ हैं। किसी भी मजहब में चले जाइए, व्यक्ति नाम जरूर ले रहा होगा; मुसलमान तसबीह पर नाम ले रहा होगा; ईसाई पादरियों को आप माला जपते हुए देखेंगे; आर्यसमाजी प्रकाश का ध्यान कर रहे होंगे; अन्य अमुक तरह का ध्यान कर रहे होंगे; नादयोग वाले कान में आने वाली आवाजों का ध्यान कर रहे होंगे। बहरहाल ध्यान जरूर करना पड़ता है। ध्यान के बिना गति किसी की नहीं है। इसीलिए हमने कहा है कि जप के साथ-साथ आप ध्यान कीजिए। स्थूल ध्यान मूर्ति-पूजा के माध्यम से होता है, तस्वीरों के माध्यम से होता है; क्योंकि मनुष्य का मानसिक विकास इतना नहीं हो पाया है कि वह बिना किसी फोटोग्राफ के, बिना किसी मूर्ति के, किसी चीज का ध्यान कर सके; लेकिन जब वह विषय पक्का हो जाता है, तब फिर अपने भीतर बैठे हुए भगवान् का साक्षात्कार कर सकते हैं; उसका ध्यान कर सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ध्यान का क्या मतलब है ? ध्यान का मतलब है कि हमारे जीवन के दो पक्ष हैं—एक पक्ष वह है, जो बाहर फैला हुआ पड़ा है। हमारे कानों के सूराख बाहर को हैं और हमारी आँखों के सूराख बाहर को हैं; हम बाहर की चीजों को देख सकते हैं और बाहर कौन बैठा हुआ है, कौन जा रहा है—यह भी बता सकते हैं। बाहर की चीजें हमको दिखाई पड़तीं है; किन्तु भीतर की चीजें हमको बिल्कुल दिखाई नहीं पड़ती। तो क्या भीतर कोई चीज नहीं है ? बेटे ! असल में जो कुछ भी चीज है, वह भीतर ही है, बाहर नहीं। बाहर केवल दिखाई पड़ती है पर असल में हर चीज भीतर है। जिंदगी कहाँ है ? जिंदगी बाहर नहीं, हमारे भीतर है और बुद्धि जिसकी वजह से हम रुपया कमाते हैं, सम्मान कराते हैं, वह बाहर नहीं, हमारे भीतर है जिसकी वजह से हम हर चीज कमा सकते हैं। भीतर हमें दिखाई नहीं पड़ता और हम कहते हैं कि हे भगवान ! यह आपने क्या मखौल कर दिया मनुष्य के साथ कि बाहर की चीजों की जानकारी दे दी; पर भीतर की चीजों की नहीं दी। भीतर जो चीजें संपत्तियाँ, विभूतियाँ, देवत्व और महानता दबी पड़ी हैं, वह हमको दिखाई नहीं पड़तीं। हमको अपना बेटा दिखाई पड़ता है, सम्पत्ति दिखाई पड़ती है, यह और वह दिखाई पड़ता है; पर हमको अपना भविष्य नहीं दिखाई पड़ता; आत्मा दिखाई नहीं पड़ती; परमात्मा दिखाई नहीं पड़ता; यहाँ तक कि हमारे भीतर वाले कल-पुर्जे तक दिखाई नहीं पड़ते; आँखें तक दिखाई नहीं पड़तीं; भीतर की तो बात कौन कहे ! बाहर की भी दिखाई नहीं पड़ती। अच्छा बताइए, आपकी नाक कैसी ? भवें कैसी हैं ? पलकें कैसी हैं ? जब आपको बाहर की चीजें ही नहीं दिखतीं, केवल इधर-उधर की चीजें ही दिखाई देती हैं, तो फिर भीतर की कैसे दिखेंगी ? इसीलिए गिरेबान में मुँह डाल करके जब हम भीतर तलाश करते हैं, तो उसको ध्यान कहते हैं। अपने भीतर झाँकने का नाम ही ध्यान है।

ध्यान किसका किया जाता है ? स्वयं का या भगवान का ? बेटे ! स्वयं तो क्या और भगवान तो क्या। दोनों एक ही हैं। स्वयं का विकसित रूप ही भगवान है। हमारा विकसित रूप जो है—**'शिवोऽहम्', 'सच्चिदानंदोऽहम्', तत्वमसि', 'अयमात्माब्रह्म', 'प्रज्ञानंब्रह्म'** है। वेदांत के यह सारे-के-सारे महाकाव्य यह बताते हैं कि हमारा परिष्कृत रूप भगवान है। हमारा भगवान परिष्कृत रूप ही है। डायमंड क्या है ? डायमंड और कोयले में कोई खास फर्क नहीं है। एकाध इसके एलीमेंट्स और एकाध इसके भीतर के जो जर्रे हैं, उनमें फर्क पड़ता है, अन्यथा हीरा और कोयला एक ही है। आत्मा और परमात्मा एक है। यह थोड़ा-सा सीमाबद्ध है, तो वह असीम है। यह अणु है और वह विभु है। यह मायाग्रस्त है, तो वह मुक्त है। बस इतना फर्क है। अगर हम अपने आपको साफ कर लें, तो हम उसको प्राप्त कर सकते हैं। इसीलिए हम प्रकाश का ध्यान करते हैं; भीतर वाले का ध्यान करते हैं; अपने लक्ष्य का ध्यान करते हैं; जीवन का ध्यान करते हैं; तो गुरुजी आपने इसीलिए सूरज का ध्यान बता दिया ? हाँ, बेटे ! वह तो हमने प्रतीक बता दिया है। उसकी चमक देखकर अगर आप यह अंदाजा लगाते हों कि हमारे ध्यान में चमक आ जाती है या नहीं आती अथवा आपके ध्यान में गायत्री माता आ जाती हैं या नहीं आती हैं, तो उससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। उससे केवल यह बात साबित होती है कि आपके दिमाग की परिपक्व अवस्था आई कि नहीं। प्रकाश से मेरा मतलब वह नहीं है, जो आप समझते हैं। प्रकाश को अध्यात्म में जिस अर्थ में लिया गया है, उस अर्थ से मेरा मतलब है 'प्रकाश डिवाइन लाइट' या 'लेटेंट लाइट' या ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। चमक का अर्थ 'ज्ञान' नहीं है। जिस प्रकाश के लिए हमने कहा है, वह है, जिसके लिए भगवान् से हमने प्रार्थना की है—**'तमसो मा ज्योतिर्गमय'**। हे भगवान। हमको अन्धकार की ओर नहीं, प्रकाश की ओर ले चलिए। अध्यात्म में 'प्रकाश' शब्द कहीं भी प्रयुक्त हुआ है, वहाँ ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

ध्यान के लिए जो हमने यह बताया कि आप प्रकाश का ध्यान किया कीजिए, तो कहाँ-कहाँ प्रकाश का ध्यान किया करें ? अभी स्वर्णजयंती साधना वर्ष में हमने आपको तीन जगह ध्यान करने के लिए कहा है। एक आप मस्तिष्क में ध्यान किया कीजिए, दूसरा अंतरात्मा में हृदय स्थान पर और तीसरा नाभि स्थान पर ध्यान किया कीजिए। हमारे तीन शरीर हैं और तीनों शरीरों के ये तीन केन्द्र हैं। इन तीनों के भीतर प्रकाश चमकना चाहिए; प्रकाश हमारे तीनों शरीरों के भीतर प्रविष्ट होना चाहिए—इसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ यह है कि प्रकाश जब हमारी नसों में आए, नाड़ियों में आए, शरीर में आए; तो नाभि में होकर आए। नाभि में से होकर इसलिए कि माता और बच्चे का जो सम्बन्ध-सूत्र है, वह नाभि से जुड़ा होता है। इसलिए स्थूल शरीर का केन्द्र नाभि को माना गया है। जिस प्रकार माता के शरीर में से उसका तत्त्व नाभि से होकर हमारे शरीर में आता था और दोनों का सम्बन्ध जुड़ा हुआ था, उसी प्रकार भगवान का प्रकाश नाभि में से होकर हमारे शरीर के भीतर आता है। जब वह प्रकाश आएगा, तब आपकी हड्डियाँ चमकेंगी, रक्त चमकेगा, माँस चमकेगा। चमकने से मेरा मकसद यह है कि तब आपके भीतर कर्मनिष्ठा, स्फूर्ति, साहसिकता, श्रम के प्रति प्यार, कर्मों के प्रति प्यार, कर्मयोग के प्रति प्यार, कर्त्तव्य-परायणता के प्रति प्यार उभरेगा। यह कर्मयोग है। कर्मयोग शरीर का योग है। प्रकाश का ध्यान करने वाला कभी ठाली बैठ नहीं सकता। वह सतत् सत्कर्मरत ही रहेगा।

तीन योग हैं—कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग। प्रकाश के माध्यम से इन तीनों योगों को हृदयंगम करने के लिए मैंने आपको कहा है। भगवान का प्रकाश जब कभी शरीर में आएगा, तो कर्मयोग के रूप में आएगा और आदमी कर्त्तव्यनिष्ठ होता हुआ दिखाई पड़ेगा। उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए 'वर्क इज वरशिप' होगा। पूजा कर्म, श्रेष्ठ कर्म, आदर्श कर्म, लोकोपयोगी कर्म, मर्यादाओं से बँधे हुए कर्म-सभी कर्मयोग के अन्तर्गत आते हैं, जो हमें सिखाते हैं कि जब प्रकाश हमारे शरीर में आता है, तो हमारे शरीर की प्रत्येक क्रिया को कर्मनिष्ठ होना चाहिए, परिश्रमी होना चाहिए। यह बताता है कि आदमी को जो प्रकाश का ध्यान करता है, उसे हरामखोर और आलसी नहीं होना चाहिए। चोर और हरामखोर—मेरी दृष्टि से दोनों बराबर हैं। महाराज जी ! हमारा बेटा बड़ा हो गया है और खूब कमाता-खाता है और हम तो अपनी मौज करते हैं। नहीं बेटे ! कामचोर और चोर में तो कामचोर सबसे नीच होता है। मनुष्य के लिये यह सबसे बड़ी गाली है। कामचोर सबसे खराब आदमी है। नहीं गुरुजी ! हमको तो पेंशन मिलती है और हम मौज करते हैं। नहीं बेटे ! हम तुझे मौज नहीं करने देंगे। जब तक जिंदा है, तब तक शरीर से तुझे कर्म करना पड़ेगा। अपने लिए रोटी खाने, पेट भरने को है; दूसरो के लिए तो नहीं है; उसके लिए कर। गुरुजी ! हमारे बेटे तो पढ़ गए और हम अब निश्चिंत हो गए। तेरे ही तो पढ़ गए समाज के बेटे तो नहीं पढ़े। चल रात को नाइट स्कूल चलाया कर और दूसरों के बच्चों को पढ़ाया कर। इसलिए मित्रो ! क्या करना पड़ेगा कि जब वह प्रकाश, जो मैंने जप के साथ-साथ करने के लिए बताया है, अगर वह आपके भीतर नसों में स्फूर्ति के रूप में आए, तो जब तक जिंदा हैं, तब तक हम काम करेंगे, कर्मयोगी बनेंगे, मेहनत करेंगे, मशक्कत करेंगे, श्रेष्ठ काम करेंगे, कर्त्तव्यों का पालन करेंगे। जो हमारे लिए, हमारे समाज के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए, सबके कर्तव्यों का बंधन बँधा हुआ है, इसका हम पालन करेंगे। अगर इस तरह की स्फूर्ति और अभ्यास बन जाए, तो मैं समझूँगा कि आप कर्मयोगी हैं और आपने उस प्रकाश के ध्यान को, जो मैंने बताया था, उसे सीख लिया और उसका मकसद समझ गए।

दूसरा वाला प्रकाश का ध्यान करने के लिए जो मैंने बताया था और यह कहा था कि आप अपने मस्तिष्क में प्रकाश का ध्यान किया कीजिए। आपके मस्तिष्क में, मन में जब प्रकाश आए, तब आपको ज्ञानयोगी होना चाहिए। कर्मयोगी शरीर से, ज्ञानयोगी मस्तिष्क से। आपके मस्तिष्क के भीतर जो भी विचार आएँ, निषेधात्मक नहीं, विधेयात्मक विचार आने चाहिए। अभी तो आप लोगों के मस्तिष्क में विचारों की कितनी भीड़, कितने मक्खी-मच्छर, कितनी वे चीजें, जो आपके किसी काम की नहीं हैं, कितने विचार, कितनी कल्पनाएँ आती रहती हैं; उनका यदि आप विश्लेषण करें तो देखेंगे कि मस्तिष्क में जाने कितने मक्खी-मच्छरों जैसे विचार भरे पड़े हैं। अभी उनमें से एक तो गुस्से का भरा था; एक काम-वासना का विचार करता रहा; एक सिनेमा का विचार करता रहा। एक यह विचार करता रहा कि मैंने लॉटरी के तीन टिकट खरीदे हैं, उसमें से तीन-तीन लाख रुपए तो मिल ही जाएँगे; उन रुपयों से क्या-क्या करूँगा ? अमुक काम करूँगा, अमुक बच्चे को, अमुक को दूँगा आदि बे-सिर-पैर की सारी की सारी बातें, सारे के सारे ताने-बाने बुन रहा है। इससे आपकी सारी शक्तियाँ निरर्थक होती जा रही हैं। यह सब बेकार की कल्पनाएँ हैं, जिनके पीछे न कोई तारतम्य है, न वास्तविकता है और न इनसे आपको कुछ लेना-देना है। इस प्रकार की कल्पनाएँ निरर्थक और अनर्थमूलक ही होती हैं। सार्थक कल्पनाएँ अगर आपके मस्तिष्क में आई होतीं, क्रमबद्ध रूप से आपने विचार किया होता, तो आप में से अधिकांश व्यक्ति वाल्टेयर हो गए होते; रवीन्द्रनाथ टैगोर हो गए होते; अगर आपने अपनी कल्पनाओं को क्रमबद्ध बनाया होता, दिशाबद्ध बनाया होता, उत्कृष्ट और सक्षम बनाया होता। हमारी एक ही विशेषता है कि हम विद्वान् हैं। इसलिए विद्वान हैं कि हमने अपने चिंतन की धाराओं को सीमाबद्ध-दिशाबद्ध करके रखा है। हमारा चिंतन अनावश्यक बातों में कभी नहीं जाता। जब कभी जाएगा, क्रमबद्ध बातों में जाएगा; दिशाबद्ध बातों में जाएगा; आदर्श बातों में जाएगा और सम्भव है, उनमें जाएगा। हमारा मस्तिष्क इतना ताना-बाना बुनता है कि वह वास्तविकता और व्यावहारिकता पर टिका रहता है। जो अवास्तविक है, अव्यावहारिक है और जो अनावश्यक है—ऐसे सारे-के-सारे विचारों को हम बाहर से ही मना कर देते हैं कि 'नो एडमीशन'—यहाँ नहीं आ सकते; बाहर जाइए। आपको दाखिला हमारे मस्तिष्क में नहीं मिल सकता।

मित्रो ! ज्ञानयोग उस चीज का नाम है, जिसमें कि अपने भीतर चिंतन में जो अवांछनीय—तत्त्व घुलते चले जाते हैं, उनको हम हिम्मत के साथ रोकें और जिन चीजों की आवश्यकता है, जो चिंतन हमारे भीतर आना चाहिए, उस चिंतन को बुला करके, निमंत्रित करके अपने भीतर स्थिर न करें, तो हमारा मस्तिष्क वह हो सकता है, जिसे हम ज्ञान का भण्डार कह सकते हैं। विद्या की दृष्टि से, ज्ञान की दृष्टि से, सुलझाव की दृष्टि से एक-से-एक बहुमूल्य चीजें इसके भीतर से निकलती हुई चली आ सकती हैं। ज्ञान की गंगा हमारे मस्तिष्क में से वैसी ही बह सकती है, जैसे कि शंकर जी के मस्तिष्क में से प्रवाहित होती थी। हमारे मस्तिष्क में संतुलन का चंद्रमा उसी तरीके टँगा रह सकता है, जैसे कि शंकर भगवान के मस्तिष्क पर टँगा हुआ था और हमारा तीसरा नेत्र, विवेक का नेत्र, दूरदर्शिता का नेत्र उसी तरीके से खुल सकता है, जैसे कि शंकर भगवान् के मस्तिष्क पर खुला हुआ था। मित्रो ! यह ज्ञानयोग की साधना है। प्रकाश चमकना चाहिए हमारे ज्ञान को और विचारों को संतुलित और सुव्यवस्थित करने के लिए। अगर आपको ऐसा ज्ञान आए तो मैं समझूँगा कि हमने अपने अनुष्ठान में और साधना स्वर्णजयंती वर्ष में सम्मिलित करके जिस ध्यान को बाबत बताया है, उसको आपने जान लिया और उसका व्यावहारिक स्वरूप समझ गए। अगर आप उसका व्यावहारिक रूप नहीं जान पाए और कल्पनालोक में ही उड़ते रहे, तो फिर ख्वाब ही देखते रहेंगे, सपने ही देखते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहेंगे। अध्यात्म सपना नहीं, व्यावहारिक है। यह हमारे इसी जीवन से ताल्लुक रखता है और आज से ताल्लुक रखता है। ख्वाबों का अध्यात्म नहीं है; सपनों का अध्यात्म नहीं है। ख्वाबों का, सपनों का भगवान नहीं है। भगवान है, तो वह, जो हमारे आज के, अभी के जीवन में आना चाहिए और हमारे व्यक्तित्व के रूप में प्रकट होना चाहिए; हमारे भीतर से प्रकट होना चाहिए।

मित्रो ! तीसरा वाला प्रकाश जो ध्यान हमने बताया है, वह अंतःकरण का प्रकाश है, विश्वासों का प्रकाश है, आस्थाओं का, निष्ठाओं का, करुणा का प्रकाश है, जो चारों ओर प्रेम के रूप में प्रकाशित होता है। हम प्रेम के रूप में भक्तियोग करते हैं। भक्तियोग से क्या मतलब होता है ? भक्तियोग का मतलब है—मोहब्बत। जिस तरह से हम व्यायामशाला में अभ्यास करते हैं और उससे अपने शरीर और कलाइयों को मजबूत बनाते हैं और फिर उसका हर जगह इस्तेमाल करते हैं; सामान उठाने में, कपड़े धोने में, बिस्तर उठाने में करते हैं; हर जगह काम में लाते हैं। किसको ? जो व्यायामशाला में ताकत इकट्ठा की थी, उसको। इसी तरीके से हम भगवान के साथ मोहब्बत शुरू करते हैं, प्यार शुरू करते हैं, भक्ति करते हैं। भगवान की भक्ति के माध्यम से जो हम ताकत इकट्ठा करते हैं, उस मोहब्बत को हर जगह फैल जाना चाहिए। हम अपने शरीर से मोहब्बत करें, ताकि इसको हम अस्त-व्यस्त न होने दें, नष्ट-भ्रष्ट न होने दें। हम अपने शरीर के प्रति प्यार करें, ताकि वह नीरोग होकर के दीर्घजीवी बन सकें। यह हमारा शरीर के प्रति प्यार है। यह भक्ति है शरीर के प्रति भगवान की। मन के प्रति हमारी भक्ति यह है कि हम पागलों के तरीके से अपने मन-मस्तिष्क को खराब न कर दें। यह देवमंदिर है और इतना सुन्दर मंदिर है कि हमारे विचारों की क्षमता सूर्य की क्षमता के बराबर है। इसको हम असंतुलित न होने दें। हम अपने आप से प्यार करें; अपनी जीवात्मा से प्यार करें।

जीवात्मा ! जीवात्मा की तो हमने इतनी उपेक्षा की है कि यह विचारी कराहती रहती है और यह पूछती रहती है कि दोस्त हमारा क्या होना है ? बेटे ! हमारा क्या होना है ? वह पूछते-पूछते वह बूढ़ी हो गई। बुढ़िया पूछती रहती है कि बेटा ! हमारा भी कुछ होना है क्या ? और आप कहते रहते हैं कि अरी बुढ़िया ! तू तो मरने वाली है; तेरा तो यही वद्रीनाथ है; तू कहीं मत जा, यहीं पड़ी रह। यह बुढ़िया जो हमारी जीवात्मा है और यह ऐसे ही कसकती-कराहती रहती है; वह अंधी हो गई है; आँखों से दिखाई नहीं पड़ता जीवात्मा को। अपनी जीवात्मा से यदि हमें प्यार रहा होता, तो वह जवान हो गई होती। जीवात्मा से मोहब्बत अगर हमें होती, तो वह इतनी प्रचंड और प्रखर हो गई होती कि हम साक्षात् भगवान के रूप में काम आते; पर हमारी जीवात्मा मर गई; क्योंकि हम उससे प्यार नहीं करते। हम किसी से प्यार करते हैं क्या ? नहीं, हम किसी से प्यार नहीं करते। बीबी से प्यार करते हैं ? नहीं, बीबी के लिए तो हम जोंक हैं। खून की प्यासी जोंक जिससे चिपकती है, उसका खून पी जाती है। औरत के लिए हम जोंक हैं। उसकी जवानी हमने चूस ली; उसको छूँछ बना दिया; पचासों बीमारियों की वह मरीज बन गई। उसके पास जो कुछ भी था, अपने माँ-बाप के घर से गुलाब का-सा शरीर लेकर आई थी; हमने उसको वासना की आग में जला दिया। वह जली हुई औरत कराहती, कसकती, सिसकती हुई पड़ी रहती है। जल्लाद छुरे लेकर के जिस तरह से मारता है, हमने भी अपनी औरत में इतने छुरे मारे, इतने छुरे मारे कि सारा-का-सारा खून निकाल करके फेंक दिया। बच्चे पर बच्चा पैदा करते रहे और वह चिल्लाती रही कि हमारी हड्डियाँ इस लायक नहीं हैं और हमारे पास माँस उतना नहीं है; कृपा कीजिए; अब हम बच्चा पैदा नहीं कर सकते और आप हैं कि बच्चे पैदा करते चले गए। वह हजार बीमारियाँ लेकर के कभी हकीम जी के यहाँ चक्कर काटती है, कभी यह आचार्य जी के यहाँ चक्कर काटती है और कहती है कि गुरुजी यह बीमारी है, वह बीमारी है। अगर आपने अपनी स्त्री को प्यार किया होता, तो उसको पढ़ाया होता, शिक्षा दी होती, दीक्षा दी होती। उसके स्वास्थ्य की रखवाली की होती और उसको सुयोग्य बनाया होता; उसको विकसित किया होता और श्रेष्ठ बनाया होता; पर अब तो यह किसी काम की नहीं बची।

प्यार है आपके पास ? भक्ति है आपके पास ? नहीं है। अगर भक्ति और प्यार रहा होता, तो आपने अपने माँ-बाप की सेवा की होती; बहिन-भाइयों की सेवा की होती; अपने बच्चों की सेवा की होती। नहीं, गुरुजी हमने तो की है। बेटे ! आप सेवा करना नहीं जानते। प्यार करना जानते ही नहीं। आप तो एक ही बात जानते हैं पैसा। बेटे को पैसा दे जा। अरे ! क्यों पड़ा हुआ है इन बच्चों के पीछे। इनका भविष्य खराब करने के लिए पैसा जमा करता चला जा रहा है; क्या इनको शराबी बनाएगा ? अय्याश बनाएगा ? नहीं, महाराज जी ! मैं तो पैसा छोड़ करके जाऊँगा, बेटे को देकर जाऊँगा और वह सारी-की-सारी जिन्दगी मौज करेगा। बेटे ! वह मौज नहीं, अपनी जिंदगी खराब करेगा और सबका सत्यानाश करेगा। प्यार, मित्रो ! किसे कहते हैं, आप जानते नहीं हैं ? प्यार एक ही चीज का नाम है, जिसमें आदमी को दिया जाता है। प्यार का अर्थ देना होता है। जिसको भी हम प्यार करते हैं, उसको हम कुछ दिए बिना नहीं रह सकते। हम बच्चे को प्यार करेंगे, तो उसको कुछ देंगे। जिस किसी को भी प्यार करेंगे, तो उसको हम देंगे। भक्तियोग का अर्थ है—दया; भक्तियोग का अर्थ है—करुणा; भक्तियोग का अर्थ है—प्रेम; भक्तियोग का अर्थ है—सेवा। नहीं महाराज जी ! सेवा का अर्थ होता है मूर्ति पर टन टन घण्टी बजा दी, बस हो गई नवधा भक्ति। तो यही है तेरी नवधा भक्ति। कौन-सी ? **'पादसेबनम् पंखाझलनम्'**—पादसेवन और पंखा झलने को ही नवधा कहता है। जो बातें भक्ति हैं उनसे तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हजारों मील दूर भागते रहते हैं और स्वाँग करते रहते हैं; खेल-खिलौने बनाते रहते हैं; दंड-कमंडलु पेलते हैं और भगवान् को भी धोखा देते हैं और अपने को भी धोखा देते और कहते हैं कि नवधा भक्ति करते हैं। बेटे ! इसे नवधा भक्ति नहीं कहते हैं।

मित्रो ! क्या करना पड़ेगा, भक्तियोग के उस वास्तविक स्वरूप को समझना पड़ेगा, जिसके लिए हमने आपको बताया था कि आप प्रकाश का ध्यान कीजिए। प्रकाश का ध्यान करेंगे, तब फिर आपको वहाँ चलने का मौका मिल जाएगा जहाँ कि **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** की बात बताई है। एकाग्रता, ध्यान का एक उद्देश्य है; बिखराव को रोकना भी कह सकते हैं; क्योंकि हमने अपने आपको सब जगह बिखेर दिया है। यदि हमने अपने आपको एक लक्ष्य पर केन्द्रीभूत किया होता, तो बंदूक की नली में से बारूद जिस तरीके से एक दिशा में चली जाती है और लक्ष्यवेध करने में सफल होती है, हम भी अपने जीवन-लक्ष्य में सफल हो गये होते। अर्जुन ने अपने बिखराव को एक केन्द्र पर इकट्ठा कर लिया था। द्रौपदी-स्वयंवर में जब वह गया था, तो द्रोणाचार्य ने लोगों से पूछा कि क्या दिखाई पड़ता है ? किसी ने कहा—मछली की टाँग, मछली का पेट; तो आचार्य द्रोण ने कहा—आप मछली का निशाना नहीं वेध सकते; भागिए यहाँ से। फिर अर्जुन से पूछा कि आपको क्या दिखाई पड़ता है ? अर्जुन ने कहा—हमें एक ही चीज दिखाई पड़ती है और वह है—मछली की आँख। तो मारिए निशाना और सफलता का वरण कीजिए। मित्रो ! असंख्य दिशाओं में फैला हुआ हमारा मस्तिष्क कभी सफलता नहीं पा सकता। इसे एक दिशा में इकट्ठा कीजिए।

यह ध्यान, जो हम आपको बताते हैं—मेडिटेशन कराते हैं और कहते हैं कि अपने मन का बिखराव-फैलाव रोकिए। फैलाव के कारण न आपका विद्या पढ़ने में कभी मन लगता है, न स्वास्थ्य-संवर्द्धन में कभी मन लगता है; हर समय बिखराव-ही-बिखराव है। यह जो मन की अस्त-व्यस्त स्थिति है, इसको आप इकट्ठा कीजिए भगवान के माध्यम से, जप के माध्यम से, ध्यान के माध्यम से और प्रत्येक काम को जब करना हो, तो इतना तीखा अभ्यास डालिए कि जब जो काम करना पड़े, उसी में तन्मय हो जाएँ, सांसारिक कार्य में भी और भगवान् के कार्य में भी। यह एकाग्रता, आध्यात्मिकता का गुण है। आप जब भी जो भी काम करें, उसमें इतने तन्मय हो जाएँ कि 'वर्क इन वर्क', 'प्ले इन प्ले' अर्थात् जब आप खेलें, तो इस कदर खेलें कि खेल के अतिरिक्त और कोई चीज ध्यान में ही न रहे और जब आप काम करें, तो इस मुस्तैदी से काम करें कि काम के अलावा आपको कोई दूसरी चीज दिखाई न पड़े। इस तरह की तन्मयता के साथ किए गए काम सफलता के उच्च शिखर तक पहुँचा देते हैं। मित्रो ! तन्मयता हमारे जीवन का वह वास्तविक स्वरूप होना चाहिए, जो वैज्ञानिकों के पास होता है। वैज्ञानिकों में और साधारण बी. एस-सी. में कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता, दोनों एक जैसे होते हैं। वैज्ञानिक उसे कहते हैं, जो अपने रिसर्च कार्य में जब लगता है तो इतना गहरा डूबा हुआ चला जाता है, जैसे मोती ढूँढ़ने के लिए पनडुब्बी सागर में गहराई तक चली जाती है और उसको बीम करके ले आती है। यह एकाग्रता का चमत्कार है। आपको एकाग्रता केवल भजन में ही नहीं लानी चाहिए, वरन् हर काम में इतना ही अभ्यास चाहिए। एकाग्रता का अभ्यास न होने के कारण ही सदैव यह शिकायत बनी रहती है कि गुरुजी हमारा मन भजन-पूजन में नहीं लगता। तो क्या किसी काम में आपकी एकाग्रता होती है ? हर काम में बिखराव है। आप अपने मन को निग्रहीत करना सीखिए। जब जो काम करना हो, तब उसमें इतनी मुस्तैदी से तन्मय होना सीखिए, ताकि आप भजन करना शुरू करें तो भजन में भी उतनी तन्मयता हो जाए जितनी एक योगी की होती है। यदि आपने प्रकाश का ध्यान करना सही तरीके से सीख लिया तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप वह सब कुछ प्राप्त कर सकेंगे जो एक अध्यात्मवादी को प्राप्त करना चाहिए।

ॐ शान्ति।

भगवान शिव और उनका तत्त्वदर्शन

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धा विश्वासरूपिणौ।

याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम्।।

गोस्वामी तुलसीदास जी जब रामायण का निर्माण करने लगे तो उनके मन में एक विचार आया कि इतना बड़ा ग्रंथ जिसके जहाज पर बिठा करके संसार के प्राणियों का उद्धार किया जा सकता है, उसे बनाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ? इसके लिए किस शक्ति की सहायता लेनी चाहिए ? उन्होंने यह कहा कि भवानी-शंकर की वंदना करनी चाहिए और उनकी सहायता लेनी चाहिए। उनकी शक्ति के बिना इतना बड़ा रामचरितमानस, जिस पर बिठा करके अनेक मनुष्यों को भवसागर से पार किया जा सकता है, कैसे सम्भव होगा ? उन्होंने भवानी और शंकर की वंदना की। जैसे कि सायंकाल आरती के समय हमने और आप लोगों ने भगवान शंकर और पार्वती की वंदना की। पश्चात् उनके जी में एक और विचार आया कि आखिर भगवान शंकर हैं क्या ? शक्ति कहाँ से आ जाती है ? क्यों आ जाती है ? उद्धार कैसे हो सकता है ? ऐसे अनेक प्रश्न तुलसीदास जी के मन में उत्पन्न हुए। उनका समाधान भी उसी श्लोक में हुआ जिसका कि मैंने आप लोगों के सम्मुख विवेचन किया—**'भवानी शंकरौ वन्दे'** भवानी शंकर की हम वंदना करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ये कौन हैं ? 'श्रद्धा विश्वास रूपिणौ' अर्थात् श्रद्धा का नाम पार्वती और विश्वास का नाम शंकर। श्रद्धा और विश्वास—इन दोनों का नाम ही शंकर-पार्वती है। इनका प्रतीक विग्रह, मूर्ति हम मंदिरों में स्थापित करते हैं। इनके चरणों पर अपना मस्तक झुकाते हैं, जल चढ़ाते हैं, बेल-पत्र चढ़ाते हैं, आरती करते हैं। यह सब क्रिया-कृत्य करते हैं, लेकिन मूलतः शंकर क्या हैं ? श्रद्धा और विश्वास। **'याभ्यां बिना न पश्यन्ति'**—जिनकी पूजा किए बिना कोई सिद्धपुरुष भी भगवान को प्राप्त नहीं हो सकते। भवानी शंकर की इस महत्ता और माहात्म्य पर मैं विचार करता रहा तब एक और पौराणिक कथा मेरे सामने आई।

पौराणिक कथा आती है कि एक संकट का समय था जब भगवान परशुराम को यह मालूम पड़ा कि सब जगह अन्याय, अत्याचार फैल गया, अनाचार फैल गया। इसके निवारण के लिए क्या करना चाहिए ? परशुराम जी उत्तरकाशी गए और वहाँ भगवान शिव का तप करने लगे। तप करने के पश्चात् भगवान शंकर ने उन्हें एक परशु दिया और कहा—अनीति का, अन्याय का और अत्याचार का इस संसार में से उच्छेदन किया जा सकता है और आपको करना चाहिए। भगवान शंकर की ऐसी महत्ता और ऐसी शक्ति का वर्णन पुराणों में पाया गया है, पर आज हम देखते हैं कि वह शक्ति कुंठित कैसे हो गई ? हम शंकर की पूजा करते हैं, पर समस्याओं से घिरे हुए क्यों हैं ? शंकर की शक्ति वरदान हो करके सामने क्यों नहीं आती ? शंकर के भक्त होते हुए भी हम किस तरीके से पिछड़ते और पद्दलित होते चले जा रहे हैं ? भगवान हमारी कब सहायता करेंगे ? यह विचार मैं देर तक करता रहा।

अठारह पुराणों का अनुवाद मैंने संस्कृत से हिन्दी में किया है। उसमें से शिवपुराण की एक कथा मुझे याद आई, जिसने हमारी शंका का समाधान कर दिया कि भगवान शंकर सहायता क्यों नहीं करते हमारी ? क्यों नहीं उनकी शक्ति का लाभ मिलता ? क्यों उनके चमत्कार हमें दिखाई नहीं पड़ते ? जबकि शंकर भगवान के भक्त जिन्होंने क्या से क्या अनुदान प्राप्त किए हैं, जो भी तप करने के लिए खड़ा हो गया वह न जाने क्या से क्या प्राप्त करता चला गया ? हम और आप जैसे शिव-उपासक उस शक्ति को प्राप्त न कर सकते हों सो ऐसी बात नहीं, पर कहीं न कहीं चूक रह जाती है, कहीं न कहीं भूल रह जाती है। उस भूल को हमें निकालना ही पड़ेगा और निकालना ही चाहिए। इसके बिना अध्यात्म का पूरा लाभ नहीं मिल सकेगा और दुनिया के सामने हम सिर ऊँचा उठा कर यह नहीं कह सकेंगे कि हम ऐसी शक्ति के उपासक हैं जो अपनी उँगली के इशारे से सारी दुनिया को हिला सकती है तो गलती और चूक कहाँ हो गई ? चूक और गलती वहाँ हो गई जहाँ भगवान शिव और पार्वती का असली स्वरूप हमको समझ में नहीं आया। उसके पीछे जो फिलॉसफी है वह समझ में नहीं आई, मात्र उसका बाहरी स्वरूप समझ में आ गया।

भगवान शंकर का भी एक कलेवर है और एक प्राण, एक बहिरंग स्वरूप है और एक अंतरंग स्वरूप। जब हम दोनों को मिला देंगे तब पॉजिटिव और निगेटिव दोनों तारों को मिलाकर जिस तरीके से स्पार्क उठते हैं और करेंट चालू हो जाता है, उसी प्रकार से भगवान का करेंट चालू हो जाएगा। बहिरंग रूप के बारे में आप जानते हैं और जिस तक आप सीमित हो गए हैं, वह कलेवर है जो मंदिर में बैठा हुआ है। जिसके चरणों में हम मस्तक झुकाते हैं, जल चढ़ाते हैं, पूजा करते हैं, प्रार्थना करते हैं, आरती उतारते हैं और जय-जयकार करते हैं—वह बहिरंग कलेवर है जिसकी भी सख्त जरूरत है, परन्तु यही सब कुछ नहीं है। हमें अंतरंग रूप के बारे में भी जानना चाहिए।

भगवान शंकर का अंतरंग रूप क्या है ? उसकी फिलॉसफी क्या है ? भगवान शंकर का रूप गोल बना हुआ है। गोल क्या है—ग्लोब। यह सारा विश्व ही तो भगवान् है। अगर विश्व को इस रूप में मानें तो हम उस अध्यात्म के मूल में चले जाएँगे जो भगवान राम और कृष्ण ने अपने भक्तों को दिखाया था। गीता के अनुसार जब अर्जुन मोह में डूबा हुआ था, तब भगवान ने अपना विराट् रूप दिखाया और कहा—यह सारा विश्व-ब्रह्माण्ड जो कुछ भी है, मेरा ही रूप है। एक दिन यशोदा कृष्ण को धमका रही थी कि तैने मिट्टी खाई है। वे बोले—नहीं, मैंने मिट्टी नहीं खाई और उन्होंने मुँह खोलकर सारा विश्व-ब्रह्माण्ड दिखाया और कहा—यह मेरा असली रूप है। भगवान् राम ने भी यही कहा था। रामायण में वर्णन आता है कि माता-कौशल्या और काकभुशंड जी को उन्होंने अपना विराट् रूप दिखाया था। इसका मतलब यह है कि हमें सारे विश्व को भगवान की विभूति, भगवान का स्वरूप मानकर चलना चाहिए। शंकर की गोल पिंडी उसी का छोटा-सा स्वरूप है जो बताता है कि यह विश्व-ब्रह्माण्ड गोल है, एटम गोल है, धरती माता-विश्वमाता गोल है। इसको हम भगवान का स्वरूप मानें और विश्व के साथ वह व्यवहार करें जो हम अपने लिए चाहते हैं दूसरों से, तो मजा आ जाए। फिर हमारी शक्ति, हमारा ज्ञान, हमारी क्षमता वह हो जाए जो शंकर भक्तों की होनी चाहिए।

भगवान शंकर के स्वरूप का कैसा-कैसा सुन्दर चित्रण मिलता है ? शिवजी की जटाओं में से गंगा प्रवाहित हो रही है। गंगा का मतलब है—ज्ञान की गंगा। पानी बालों में से प्रवाहित नहीं होता, यदि होगा तो आदमी डूब जाएगा, पैदल नहीं चल सकेगा। इसका मतलब यह है कि शंकर-भक्त के मस्तिष्क में से ज्ञान की गंगा प्रवाहित होनी चाहिए, उसकी विचारधारा उच्चकोटि की और उच्चस्तरीय होनी चाहिए। घटिया किस्म के आदमी जिस तरीके से विचार करते हैं, जिनकी जिंदगी का मकसद केवल एक ही है कि किसी तरीके से पेट भरना चाहिए और औलाद पैदा करनी चाहिए, शंकर जी के भक्त को उस तरह के विचार करने वाला नहीं होना चाहिए। जो कोई ऊँची बात सोच नहीं सकते, देश की, समाज की, धर्म की, लोक-परलोक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वह देवताओं की भूमि थी और रहनी चाहिए। देवता जहाँ कहीं भी जाते हैं, वहाँ शांति, सौंदर्य, प्रेम और सम्पत्ति पैदा करते हैं। आप लोग जहाँ कहीं भी जाएँ वहाँ आपको ऐसा ही करना चाहिए। आप लोगों ने जो अब तक मेरी बात सुनी, बहुत-बहुत आभार आप सब लोगों का।

ॐ शांति।

बहुदेववाद को समझें, भ्रम-जंजाल में न उलझें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

ये भारतभूमि देवभूमि है। देवताओं का निवास-स्थान है। यहाँ के निवास करने वाले तैंतीस करोड़ देव हैं। तैंतीस करोड़ देव कौन ? प्राचीनकाल में भारतवर्ष की जनसंख्या तैंतीस करोड़ थी; आज तो पचास करोड़ है। जनसंख्या बहुत घनी हो गई है। प्राचीनकाल में इतनी घनी आबादी नहीं थी। थोड़े ही आदमी थे; लेकिन क्षेत्र बहुत बड़ा था, दायरा बहुत बड़ा था हमारा। जनसंख्या कम थी। तैंतीस करोड़ आदमी रहते थे यहाँ। इसीलिए हर मनुष्य को एक देवता की संज्ञा दी गई है। देवता कौन ? देना जिसने सीखा। जिसने समाज से जो कुछ लिया—उससे असंख्य गुना करके लौटा दिया। जमीन कौन है ? देव। किसान से जो कुछ भी वसूल करती है। अनाज के रूप में, उसे सैकड़ों गुना करके अनाज के ही रूप में वापस कर देती है। खाती कम है, खिलाती ज्यादा है। कौन ? देव ! गाय कौन है ? देव। क्यों ? घास खाती है थोड़ी-सी, कम पैसे की घास खाती है और ज्यादा पैसे का दूध देती है। हम क्या कहेंगे उसको ? देव कहेंगे। देव कौन ? जिसने अपने जीवन का लेखा-जोखा तैयार किया कि समाज से हमने क्या पाया ? भगवान से हमने क्या पाया ? और भगवान को हमने क्या दिया ? और समाज को हमने क्या दिया ? आज के लेखे-जोखे में हमारा बैलेन्स देने वालों के पक्ष में चला जाता है, तो हम 'देव' और हमारा बैलेन्स लेने वालों के पक्ष में चला जाता है, तो हम 'लेव'। लेव का अर्थ ? अथवा उसका नाम ? उसका नाम 'दैत्य' है।

देव और दैत्य—दो थे प्राचीनकाल में और आज भी हैं। आकृति का फर्क और प्रकृति का फर्क। देवताओं और असुरों में फर्क आकृति का नहीं। प्रकृति का होता है। सारे-के-सारे मनुष्यों की शक्ल-सूरत जो होती है, वो एक तरह की होती है और एक ही तरह के आदमी होते हैं, चाहे कहीं भी आप चले जाइये। काला रंग एक, बढ़े हुए दाँत—दो, बढ़े हुए सींग—तीन। कहीं आपनें ऐसे आदमी देखे हैं ? हमने तो कभी नहीं देखे नहीं कि जिसके सींग होते हैं और जो आदमी को मार देता हो। रामलीला में देखे हैं कि राक्षसों के सींग होते हैं। रामलीला में देखे हैं कि राक्षसों के बड़े-बड़े दाँत होते हैं। मनुष्यों के तो देखे नहीं हैं कि बड़े-बड़े दाँत मुँह से बाहर निकल जाते हों। ऐसा हमने देखा नहीं है। और ? सींगों वाला आदमी भी नहीं देखा। काले रंग के आदमी जरूर देखे हैं; पर काले रंग के आदमी बड़े शरीफ भी हमने देखे हैं। राज गोपालाचारी स्याह काले रंग के थे। गाँधी जी भी लगभग काले रंग के थे। अफ्रीका में निवास करने वाले सबके सब काले रंग के हैं और काला रंग कोई खराब होता है क्या ? काला रंग राक्षसों की निशानी है ? नहीं, काला रंग राक्षसों की निशानी नहीं है। केनिया के प्रेसीडेण्ट ने अपने देश के निवासियों को, केनिया के निवासियों का आह्वान करते हुए एक बार कहा था—हमारा काला रंग बहुत शानदार रंग है। हमको गोरों की नकल नहीं करनी चाहिए और गोरों से हीन नहीं होना चाहिए। ये तो ऐसे हैं, जैसे सफेद दाग आदमी के पड़ जाते हैं। सफेद—सूरज के आगे जैसे आँखें चौंधिया जाती हैं और जरा-सा भी दिखायी नहीं पड़ता। बाल सफेद हो जाते हैं। यूरोप वाले, अमेरिका वाले तो ऐसे ही हैं। सूरजमुखी लोग। ये कैसे वाहियात लोग हैं। हम काले वाले हैं। हम काले वाले बड़े शानदार लोग हैं और हमारे बालों में छल्ले पड़ते हैं। ये हमारी खूबसूरती तो दुनिया में अजीब है और अनोखी है। ऐसे बाल दुनिया में कहीं नहीं होते। तब हमको नकल करने की जरूरत क्या है कि हम ऐसे बाल रखाएँ और ऐसे बाल रखें। किराये के बाल लाएँ और चिपकाएँ। हम तो बहुत शानदार हैं। खराब होता है काला रंग ? काला रंग खराब नहीं होता। गोरों और कालों का जो वर्गीकरण किया गया है, वो वास्तव में आलंकारिक रूप है। आकृति ? आकृति का नहीं। आकृति तो हमने ऐसे ही खिलौने के रूप में बना दी है और अलंकार के रूप में बना दी है। काला रंग उसका है, जिसका समाज में काला मुँह हो गया। हमको शीशे में अपना मुँह देखना चाहिए कि हमारा मुँह काला तो नहीं ? हम कलंकी तो नहीं हैं ? कलंकी हैं, तो हम राक्षस हैं और हमारे दाँत बड़े-बड़े हैं। दाँत बड़े-बड़े से मतलब ? दाँत बड़े-बड़े से मतलब ये कि है हम पेटू आदमी हैं और खाने वाले आदमी हैं। हमारे दाँत भेड़िये जैसे हैं, हमारे दाँत गिद्ध जैसे हैं, हमारे दाँत सियार जैसे हैं और हमारे दाँत बाघ जैसे हैं। हम किसी का भी पेट फाड़ के खा सकते हैं। हमारे अन्दर खाने का माद्दा और इकट्ठा करने का माद्दा भरा हुआ है, तो हम कौन कहलाएँगे ? फिर हम राक्षस कहलाएँगे और हमारे सींग हैं तो ? सींगों से हम नहीं मारते अब; पर ऐसी बहुत-सी चीजें हैं, जिनसे हम मार सकते हैं। सींग क्या मारेगा ? बंदूक क्या मारेगी ? बंदूकों के बिना, सींगों के बिना आदमी को तहस-नहस करते हैं। हम चाहें, तो आदमी को मटियामेट कर सकते हैं, बर्बाद कर सकते हैं। हम चाहें, तो किसी आदमी को शराब पिलाना सिखा सकते हैं; किसी आदमी को ऐय्याशी और बदमाशी सिखा सकते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और उसकी जिन्दगी को ऐसे बुरे तरीके से तबाह कर सकते हैं कि सींगवाला क्या करेगा ! सींगवाला तो थोड़ा-सा जख्म कर देगा, बस। सींगवाले का जख्म तो हम जल्दी अच्छा कर लेंगे। डॉक्टर के पास जाएँगे और पट्टी बाँधकर के आयेंगे और मरहम लगवा के आयेंगे और पन्द्रह दिन में हमारा घाव अच्छा हो जाएगा। बंदूक का घाव जल्दी अच्छा हो जाता है; लेकिन इनसान के पास ऐसे-ऐसे सींग हैं कि वो चाहें, तो एक आदमी को नहीं सारे समाज को, हजारों आदमियों को तबाह कर सकता है। ये वो आदमी हैं, जिन्होंने तबाही लाना दुनिया में सीखा है। इनका नाम ? इनका नाम है—दैत्य' और 'देव' ? देव वो हैं, जिन्होंने खाया कम और सिखाया ज्यादा।

हिन्दुस्तान के लोग प्राचीनकाल में 'देव' थे। ब्राह्मणों को तो विशेष रूप से 'भूदेव' कहते थे और 'भूसुर' कहते थे। पृथ्वी पर निवास करने वाले देवता अर्थात् ब्राह्मण। पृथ्वी पर निवास करने वाले देवता अर्थात् 'भूदेव'। पृथ्वी पर निवास करने वाले देवता अर्थात् 'भूसुर'। ये कौन थे ? ये ब्राह्मण थे। देवता थे। ब्राह्मण देवता थे। ब्राह्मण देवता हैं ? हाँ, देवता होते थे। देवता कौन ? जिन्होंने मुट्ठीभर अनाज खाया; जिन्होंने फटे-पुराने कपड़े पहने; जिन्होंने लँगोटी पहनी; जिन्होंने पीपल के ऊपर गुजारा कर लिया—पीपल की फलियों पर गुजारा कर लिया और जिन्होंने जमीन पर पड़े हुए दानों पर गुजारा कर लिया। गुजारा उन्होंने अपना किफायतशारी से कर लिया; लेकिन उन्होंने अपनी हजारों-लाखों-करोड़ों कीमत की दिमाग की शक्ति और अपना कीमती वाला श्रम और पसीना बिना कीमत के सारे समाज के ऊपर बिखेर दिया। इनको हम क्या कहेंगे ? देवता कहेंगे। देवता कहना गलत है ? देवता कहना सही है। देवता कहने में कोई गलती की बात नहीं है और देवता कहने में कोई हर्ज की बात नहीं है। मनुष्य जो थे—देवता थे। कब ? प्राचीनकाल में। ब्राह्मण भी कह सकते थे, अच्छे आदमी भी कह सकते थे और शरीफ आदमी भी कह सकते थे। देवताओं की भूमि थी ये। दैत्यों की भूमि भी थी। कौन होते हैं देव ? एक और होते हैं देव, जो हमने मंत्रों में स्थापित करके रखे हैं और जिनके फोटो छपवाकर रखे हैं। ये क्या हैं ? देव। ये आपने देखे हैं ? हमने नहीं देखे हैं। हमने तो एक बात देखी और देखकर के बड़ी गड़बड़ पैदा हो गई थी। फिर हमने विचार ही बदल दिया।

एक बार हमको कैलाश जाना पड़ा। कैलाश हम कई संत-महात्माओं के साथ चले गये। हम तो भाई ! कैलाश के दर्शन करेंगे। शंकर के ऊपर हमारा बहुत विश्वास था कभी। कभी विश्वास था—कहता हूँ, इस समय नहीं है। शंकर के ऊपर बड़ा भारी विश्वास था। ये विश्वास था कि मैं कभी कैलाश पर्वत पर जाऊँगा और शंकरजी को देखकर के आऊँगा और पार्वतीजी को देखकर के आऊँगा तथा धन्य हो जाऊँगा। वहीं तो रहते हैं कैलाश पहाड़ पर और कहाँ रहते हैं ? पहाड़ पर रहते हैं। मैं कई संत-महात्माओं के साथ चला गया। बड़ा कठिन रास्ता था। अभी भी बड़ा मुश्किल भरा रास्ता है। चीन के कब्जे में अब चला गया है, तिब्बतियों से छीन लिया। अब तो कैलाश पर हम नहीं जा सकते और हम मानसरोवर नहीं जा सकते। किसी जमाने में ऐसी दिक्कत नहीं थी, तो मैं भी चला गया। बाकी लोग तो बस एक दिन स्नान करने के बाद में, कैलाश पहाड़ का दर्शन करने के बाद में—बर्फ जमी हुई थी, बस उनके पैर उखड़ गये और दूसरे दिन वो रवाना हो गये। उन्होंने हमसे कहा—तुम भी चलो। हमने कहा—नहीं। उन्होंने कहा—क्यों ? हमने कहा हम तो शंकरजी के दर्शन करने आए हैं और हम तो पार्वतीजी के दर्शन करने आए हैं। जब तक हमको शंकरजी के, पार्वतीजी के दर्शन नहीं हो जाएँगे, तब तक हम किस तरीके से जाएँगे ? और क्यों जाएँगे ? हम तो दर्शन करने आए हैं। तो क्या आप यहाँ रहेंगे ? हम तो रहेंगे। हम तो दर्शन करेंगे। हम नहीं जाएँगे। चले गये वो लोग। मैं थोड़ा-सा सत्तू ले गया था और नमक ले गया था। सत्तू और नमक के सहारे मैं रहा। दो कंबल मेरे पास थे। बस, जब हो जाती रात, तो किसी खोह में जा बैठता, ठण्डक से अपनी रक्षा कर लेता। फिर सबेरा हो जाता, सूर्य की किरणें निकलतीं; फिर रवाना हो जाता। कैलाश के पहाड़ का मैंने पूरा चक्कर लगाया और मैंने पूरा चक्कर मानसरोवर का लगाया। कैलाश और मानसरोवर का पूरा चक्कर लगाने के पश्चात् फिर मेरा पूरा एक महीना व्यतीत हो गया और मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि मेरे प्राण निकलने वाले हैं और अब मैं मर जाऊँगा। सारी-की-सारी जगहों पर मैंने तलाश किया। यहाँ तलाश किया, वहाँ तलाश किया कि शंकर भगवान से साक्षात्कार हो जाए, दर्शन हो जाए, तो मेरा उद्धार हो जाए। कहीं भी न हुआ। कहीं भी नामोनिशान नहीं मिला शंकर भगवान का और पार्वतीजी का। शंकरजी का और पार्वती जी का कहीं भी दर्शन नहीं मिला, तब चल दिया पहाड़ से। घर के लिए रवाना हो गया और मरते-मरते बचा। मेरी टाँगें ऐसी चलने लगीं मानो मैं यहाँ गिरा कि वहाँ गिरा। मुझे बार-बार चक्कर आते। वो तो सत्तू और नमक मेरे पास था। किसी तरह मरता-गिरता, मरता-गिरता घर आ गया।

मुझे बहुत गुस्सा आया शंकर भगवान पर और मैं ये गुस्सा करने लगा कि कोई आप मिनिस्टर तो थे नहीं, जो आप ये कह देते कि हमारे पास ज्यादा काम है, पता नहीं है और फुर्सत नहीं है। आपके पास तो कोई काम भी नहीं है। आप तो ऐसे ही भाँग पीकर के फालतू पड़े रहते हैं। हमको शक्ल दिखा देते, तो क्या खराबी हो जाती ? हम कोई शंका-समाधान करने गये थे आपसे ? हम कोई माँगने गये थे ? हम तो आपकी सूरत देखने गये थे और आप दिखा सकते थे, इसमें क्या हर्ज था आपका ? आपने ये नहीं देखा कि हम कितनी मुसीबत उठाकर के आए और आपने शक्ल नहीं दिखायी, मिलने से इनकार कर दिया। हमको बहुत गुस्सा आया और वो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गुस्सा ज्यों-का-त्यों बना रहता, तो मित्रो ! मैं नास्तिक हो जाता शायद। लेकिन, रामचरितमानस के ऊपर पहले भी मेरा बड़ा विश्वास था और अभी भी बड़ा विश्वास है। रामचरितमानस को जब पढ़ने लगा, तो मेरे दिल-दिमाग की सारी गड़बड़ दूर हो गयी और समाधान हो गया। तुलसीदासजी जब 'रामचरितमानस' लिखने लगे, तो उनके मन में ये ख्याल आया—हमको कितना बड़ा जहाज बनाना है कि जिसके ऊपर बिठाकर के असंख्य मनुष्यों को पार कराना है—उस नाव को जहाज को बनाने से पहले किसी ऐसे इष्टदेव की प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए, जिसकी शक्ति हमको आए, और जिससे काम हमारा पूरा हो जाए। वहाँ उनको ध्यान आया—सबसे बड़े देव कौन हैं ? महादेव। नाम ही उनका महादेव है। महादेव—महा माने बड़ा और देव माने देवता अर्थात् सबसे बड़ा देवता—महादेव। महादेव की सिद्धि करनी चाहिए और महादेव की प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि हमारी नाव जो है, वो पार हो जाए और हमारा जहाज जो बन रहा है, वो बनकर तैयार हो जाए। रामचरितमानस जब वो लिखने लगे, तो एक श्लोक उन्होंने लिखा। कैसा मजेदार श्लोक है ! उसके दूसरे चरण ने मेरे सारे-के-सारे भ्रम-जंजाल और गुस्से को समाप्त कर दिया और उसका समाधान कर दिया। पढ़ने लगा उस श्लोक को—

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धा विश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तस्थमीश्वरम्।।

कैसा मजेदार श्लोक है ये ! सब कपाट खुल गये मेरे। अज्ञान का, भ्रम का सफाया कर दिया इस श्लोक ने। **"भवानीशंकरौ वन्दे, भवानीशंकरौ वन्दे।"** दोनों में भवानी और शंकर की वंदना है। कैसे हैं भवानी-शंकर ? फिर मैं तलाश करने लगा। भवानी कहाँ रहतीं है ? और शंकर कहाँ रहते हैं ? भवानी और शंकर का साँप कितना बड़ा है ? और शंकर का बैल कितना बड़ा है ? और साँप कैसे रंग के हैं, काले रंग के हैं कि पीले रंग के हैं ? और सिर पर जो चन्द्रमा टँगा हुआ है, वह छोटा वाला है कि बड़ा वाला है। ये सवाल-जवाब पूछने लगे, तो चक्कर आ जाएगा पूछने वाले और बताने वाले को। फिर समाधान किस तरीके से होगा ? समाधान मित्रो ! फिर इस तरीके से होगा, गोस्वामीजी ने इस श्लोक में खोलकर के कहा—**"श्रद्धा विश्वासरूपिणौ"** श्रद्धा जो है, वो भवानी है। और विश्वास ? विश्वास जो है, वो शंकर है। श्रद्धा का नाम भवानी और विश्वास का नाम शंकर। श्रद्धा और विश्वास ही भवानी-शंकर हैं।

हमारी श्रद्धा और विश्वास कैसे गजब के हैं ! मिट्टी के ढेले को हम गणेश बना देते हैं और वो सचमुच गणेश बन जाता है। रात के अँधेरे में पड़ी हुई रस्सी हमारे लिए साँप बन जाती है और खौफनाक बन जाती है। हमारे हार्ट को फेल कर देती है और हमको मार डालती है। रात की झाड़ी—रात में जब हम जंगल में अकेले निकलते हैं, तो झाड़ी कैसी खौफनाक मालूम पड़ती है ? ऐसी मालूम पड़ती है, जैसे कोई भूत बैठा हुआ हो। आहाहा ! इस भूत के दाँत कितने बड़े हैं ? ऐसे बड़े ! ऐसे बड़े ! आँखें कैसी चमकती हैं ? ऐसे-ऐसे चमकती हैं ! और वो झाड़ी हमको ऐसी मालूम पड़ती है कि जैसे हमको खा जायेगी और जिन्दा छोड़ने वाली नहीं है। हमारा हार्ट-फेल हो जाता है, झाड़ी को देखकर के। ये झाड़ी है या भूत है ? झाड़ी बिल्कुल भूत है; क्योंकि हमारी श्रद्धा और विश्वास उसके ऊपर है। इसीलिए वो भूत है और वो जरूर भूत है और अब ये मार डालेगा, जिन्दा नहीं छोड़ने वाला है। भूत कौन-सा वाला ? झाड़ी वाला। है वहाँ ? नहीं है वहाँ। फिर वो कौन है ? जो हमारा विश्वास है। आदमी का विश्वास कितना जबर्दस्त है ? आदमी का विश्वास कितना बड़ा है ? न जाने क्या-से-क्या बना देता है ? वो काली को इस बात के लिए मजबूर कर देता है कि उसको रोटी खानी ही चाहिए। रामकृष्ण परमहंस की काली रोटी खाती थी। किसकी ? रामकृष्ण परमहंस की। वो याद है ? वो कौन खाता था ? काली। काली नहीं, काली क्या खाएगी, वो तो पत्थर की बनी हुई है। पत्थर कोई खा सकता है रोटी ? कौन खाता था ? आदमी का विश्वास खाता था और मीरा के साथ नाचता कौन था ? कृष्ण ? कृष्ण नहीं, श्रीकृष्ण को मरे हुए तो पाँच हजार वर्ष हो गये। मरा हुआ आदमी क्या नाच सकता है ? तो कौन नाचता है ? उसका विश्वास नाचता था। विश्वास नाचता था और श्रद्धा नाचती थी। अगर हम अपनी श्रद्धा और विश्वास का विकास करने में समर्थ हो सकें, तो भवानी हमारे पास आयेंगी, विष्णु हमारे पास आयेंगे। सब देवता हमारे पास आयेंगे। शर्त केवल एक है कि हमारा अटूट और अगाध विश्वास हो। अगर हमारा अटूट और अगाध विश्वास नहीं है और हम ख्वाब देखते रहें और ये पता लगाते रहें कि हमारे पास शंकरजी आने वाले हैं और शिवरात्रि को आने वाले हैं और हनुमानजी पूर्णमासी को आने वाले हैं और लक्ष्मीजी दिवाली को आने वाली हैं और श्रीकृष्णजी जन्माष्टमी को आने वाले हैं और रामचन्द्रजी रामनवमी को आयेंगे कि नहीं ? हमें मालूम नहीं, आयेंगे कि नहीं आयेंगे ? हम इंतजार नहीं करते, लक्ष्मीजी कब आयेंगी, हमें नहीं मालूम।

मित्रो ! देवताओं की मान्यता हमारे भारतवर्ष में कितनी बड़ी है ? देवताओं के बिना हमारा काम ही नहीं चल सकता, देवताओं के बिना गुजारा ही नहीं हो सकता। चूल्हा बनाना हो और चक्की बनानी हो और हमको घर से बाहर जाना हो और हमको मुहूर्त देखना हो, तो हमको किससे पूछना पड़ेगा ? देवता से। सामने वाला चन्द्रमा है कि नहीं और जोगिनी पीठ पीछे है कि नहीं ? दिशाशूल हमारे आगे है, तो हम एक कदम आगे नहीं बढ़ सकते। देखिये न—पण्डितजी ! अरे कहाँ जा रहा है ? अरे महाराजजी ! आपका वो चन्द्रमा पीछे पड़ गया और वो जोगिनी दिखायी पड़ रही है और वो दिशाशूल बैठा हुआ है बायें और वो काट खायेगा, दिशाशूल और वो चलने नहीं देगा। तू चलता कहाँ है ? दर्शन कर जाता !

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिशाशूल बैठा हुआ है, काट खायेगा। हाँ महाराजजी, अब नहीं जाऊँगा। जाना मत ! वो दिशाशूल बैठा है, जोगिनी बैठी है। देवताओं के बिना हम एक टाँग नहीं बढ़ा सकते। देवताओं के बिना हम बच्चों की शादी नहीं कर सकते। अरे भाई ! हमारी लड़की तो अठारह वर्ष की और छोकरा तो बड़ा अच्छा मिल गया, एम. ए. पास है। हाँ भाई, जल्दी निवृत्त हो जाएँ तो अच्छा है। हम भी बीमार रहते हैं, टी. बी. हो गयी है और लड़की से निवृत्त हो जाएँ, तो अच्छा है लड़की से निवृत्त हो जाएँ, अरे बाबा। वो बैठा हुआ है। कौन बैठा हुआ है ? देवता ? क्या नाम है ? बृहस्पति। बृहस्पति ! हाय ! हाय !! बृहस्पति बैठा हुआ है। ब्याह करेगा। तो मार डालेगा। तेरी बेटी को खा जायेगा, तेरे बेटे को खा जाएगा, तेरी औरत को खा जाएगा, तेरे मौसे को खा जाएगा, सबको खा जाएगा। बड़ा जबर्दस्त बृहस्पति बैठा है। तू ब्याह कैसे कर सकता है ? बृहस्पति को ब्याह कर लूँ ? बृहस्पति को ब्याह कर लेगा, तो बृहस्पति जिन्दा नहीं छोड़ेगा, सबको मार डालेगा। मार डालेगा सारे खानदान को। बृहस्पति बैठा हुआ है। देवताओं के बिना कोई काम कर सकते हैं ? देवताओं के बिना हमारा कोई काम नहीं हो सकता। आप शादी नहीं कर सकते। हम चल नहीं सकते, फिर नहीं कर सकते। हम पेशाब नहीं कर सकते, टट्टी नहीं कर सकते, हम रोटी नहीं खा सकते। सब काम हमारा देवताओं के ऊपर टिका हुआ है। हम कौन हैं ? 'मिस मेयो' की 'स्लेव ऑफ द गॉड' किताब के अनुसार हम हैं देवताओं के गुलाम। उसका हिन्दी में अनुवाद छपा है। बेटे ! मैं फूट-फूटकर रोया। देवताओं के गुलाम। स्लेव ऑफ द गॉड ! देवताओं के गुलाम ! हम क्या हैं ? हम कोई विचार नहीं कर सकते। हमारी सारी-की-सारी बातें इस बात के ऊपर टिकी हुई हैं कि हमारे इतिहास में व्यापार उन्हीं को करना है कि नहीं करना है। वो शनिश्चर बैठा हुआ है न ! ढाई वर्ष का आ गया है। आप व्यापार करने जा रहे हैं ? आप व्यापार मत करना, घाटा पड़ जाएगा। क्यों ? वो शनिश्चर बैठा हुआ है। कहाँ बैठा हुआ है ? वो कमरे में। कौन-से कमरे में ? वो बैठा हुआ है कमरे की कोठरी के कोने में और जैसे ही व्यापार करेगा—तेरी तराजू को, तेरी डण्डी को, तेरे सब पलड़े को लेकर के भाग जाएगा। वो बैठा हुआ है शनिश्चर। हाय ! व्यापार मत करना, नहीं, तो मार ही डालेगा शनिश्चर। जिन्दा नहीं छोड़ेगा शनिश्चर। आय-हाय ! बड़ी जोर का शनिश्चर है। कहाँ बैठा हुआ है ? करोड़ों मील दूर बैठा हुआ है। वो आता है पकड़ने के लिए। क्यों, मुन्नीलाल की दुकान कहाँ है ? मालूम नहीं है, हमें नहीं मालूम। लाला मुन्नीलाल की दुकान कहाँ है ? वो बैठी है—उधर की दुकान और वो शनिश्चर आकर के दुकान में खट् बैठ गया तराजू के नीचे और जैसे ही मुन्नीलाल ने तराजू तौली, खट् से वो शनिश्चर हावी हो गया। उसने कहा—तेरा सब नुकसान कर दूँगा मैं। शनिश्चर बैठा हुआ है न ! व्यापार आप करेंगे ? व्यापार आप मत करना ! शनिश्चर बैठा हुआ है।

हमारी प्रत्येक विचारधारा के ऊपर, गतिविधियों के ऊपर देवता हावी हैं और देवता सवार हैं। हम अपने बच्चे की हजामत नहीं बना सकते। अगर आपके बच्चे के बाल बड़े हो गये हों—मुण्डन कराना हो, तो आप कहाँ कराएँगे ? कुलदेवी पर कराएँगे। कुलदेवी कहाँ रहती हैं ? कुलदेवी वहाँ रहती हैं जैसलमेर में। अच्छा, तो वहीं जाना पड़ेगा ? हाँ-हाँ, कलकत्ते के मारवाड़ी हैं और मुण्डन कराने कहाँ जाएँगे ? हम मुण्डन कराने जाएँगे जैसलमेर। कितना किराया लगेगा ? अहा ! किराये की बात क्या पूछते हैं ? किसी आदमी पर ढाई सौ से कम खर्च नहीं होगा। अच्छा, तो कितने आदमी जाओगे ? अरे ! वो लड़का जाएगा, लड़के की माँ तो जाएगी ही, लड़के का बाप जाएगा और लड़के का भाई तो जाएगा ही। तो हजार रुपया तो किराये-भाड़े का हो गया। फिर वहाँ जयपुर होते हुए आयेंगे और वो हजामत किसको खिलाएँगे ? देवी को खिलाएँगे ? क्या खाएगी ? हजामत खाएगी ? हजामत नहीं खिलाओ, जलेबी खिला दो तो ? जलेबी नहीं खाएगी, हजामत खाएगी और हजामत नहीं खिलायी, उसको बाल नहीं खिलाये, तो सबको मार डालेगी। किसको ? लड़के की अम्मा को मार डालेगी, उसके बेटे को मार डालेगी, उसके ताऊ को मार डालेगी। सबको मार डालेगी। क्यों मार डालेगी ? देवी का क्या बिगाड़ा है ? अरे ! तैंने हजामत क्यों नहीं खिलायी ? अरे ! हजामत नहीं खिलायी, तो बाबा ! जलेबी खा ले। इमरती खा ले। नहीं, मैं तो बाल खाऊँगी। बड़ी जोर की देवी है।

ये देवियाँ, ये देवता किस कदर हमारे ऊपर हावी हो गए हैं, मैं क्या कह सकता हूँ आपसे ? ये देवी-देवता इस कदर हावी हैं हमारे ऊपर कि इन देवी-देवताओं के बिना हम एक कदम नहीं चल सकते। किसी गाँव में आप चले जाइये, पीपल के पेड़ के नीचे तरह-तरह के रंग-बिरंगे निरे (बहुत-से) देवता बैठे हुए हैं। पत्थर का टुकड़ा कहीं से भी मिल जाए बस ! वो देवी हो जाता है। हमारे यहाँ शीतला माई की जात होती है। मुसलमान भाई बहुत होशियार हैं। शीतला माता के लिए कहीं से पत्थर का टुकड़ा ले आते हैं और बस, लाल रंग का उसे पोता और उसको लिया, दो ईंटें रखीं, उस पर देवी को रख दिया और फूल चढ़ा दिया और वो नीचे कपड़ा-सा बिछा दिया। बस, दो औरतें आयीं, पूड़ियाँ फेंकती जाएँगी, कचौड़ियाँ फेंकती जाएँगी, लड्डू फेंकती जाएँगी, पैसे फेंकती जाएँगी और वो वहाँ बैठा रहता है। देखा कि वहाँ कोई नहीं है, सारी-की-सारी पूड़ियाँ समेट लाया और बस, बैठ के वो खा रहा है। कचौड़ियाँ—लड्डू खा रहा है। पैसे जेब में डाल लिये और सिगरेट पी रहा है। फिर आप देखिये शाम तक वह इतनी पूड़ी खा जाता है और घरवालों के लिए ले जाता है कि क्या कहें अपने घर वालों से वह चहक-चहक कर कहता है— देखो ! मैं शीतला माई की जेब काट लाया और शीतला माई सोयी पड़ी रहीं। ये हिन्दू न जाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहाँ जा रहे हैं ! ये हिन्दू हैं कि जाहिल हैं ? न जाने कौन है ! देवी-देवताओं का क्या कहना ! किसी भी मंदिर में आप चले जाइये। दो-एक देवी देवता से काम चलेगा ? दो-एक देवी-देवता से कैसे मिट जाएगी भूख हमारी ? हमारी नहीं भरेगी। आपने पूजा के लिए कोठरी रखी हुई है। उसमें आपने कितने देवी-देवता बना के रखे हैं। एक देवता ? हाय ! एक से कैसे बनेगा ? बहुत-से आप रखिये। बहुत-से आप रखना। अच्छा, जहाँ पूजा की जगह है, वहाँ बहुत-से देवी-देवता रखना। ये फलानी देवी हैं, ये फलाने देवता हैं। ये महादेव, ये गणेश। ये गणेश, ये महेश। सब जितने भी देवी-देवता आपको मिल जाएँ, सब यहाँ जमा करके रखना। क्यों ? न मालूम कब कौन-सा देवता किस काम आ जाए ? आपमें से कोई वकील है, कोई डॉक्टर है, कोई इंजीनियर है, कोई प्रोफेसर है, न जाने किससे काम पड़ जाए ? सब कबाड़खाना आप वहाँ जमा कर लेना और भगवान एक है। भगवान एक कैसे हो सकता है ? भगवान तो बस बहुत सारे हैं। बहुत देवता जरूर हैं हमारे लिए, इनको हमको जमा करना पड़ेगा।

मित्रो ! ये कैसा वाला अज्ञान ? ये कैसा वाला अज्ञान, जिसने हमारी निष्ठाओं को, जिसने हमारी श्रद्धाओं को एक केन्द्र पर इकट्ठा करने की अपेक्षा असंख्य दिशाओं में बिखेर दिया और बिखेर देने के बाद में हम कैसे टुकड़े-टुकड़े हो गये ! हमारी श्रद्धा एक पर नहीं है। हमारा ईमान किसी पर नहीं है और हमारा विश्वास किसी पर नहीं है। किसी एक की पूजा हम नहीं करते। जो आदमी सबकी पूजा करता है, वो आदमी किसी की पूजा नहीं करता। 'सात मामाओं का भांजा भूखा मरता है।' ये कहावत आपने सुनी है ? नहीं सुनी है ? आपको ये कहावत सुननी चाहिए कि एक था भांजा और उसके थे मामा सात। तो वो पहले वाले बड़े मामा के यहाँ पहुँचा। अरे ! अरे !! भांजे ! तू खूब आ गया। तू तो बड़ा अच्छा लड़का है। तू कहाँ से आ गया ? छोटे भाई के यहाँ से आ रहा है ? हाँ तो ठीक है, फिर तो खाना-पीना खा ही आया होगा ? चल तो अच्छा रहा, बैठ जा और बता तेरे घर में सब कैसे हैं ? अच्छा अच्छा तो तेरी छोटी मामी ने क्या खिलाया ? छोटी मामी ने साहब, अच्छा खिला दिया। ठीक है। उसने सोचा—ये तो ऐसे ही टाल रहा है, दूसरे मामा के यहाँ चलूँ। दूसरे मामा के यहाँ पहुँचा। कहाँ से आ रहा है ? उनके यहाँ गया था अहा ! ये तो अच्छा किया रे ! अच्छा क्या-क्या खिलाया बता ? बड़े मामा ने क्या खिलाया ? बड़ी मामी ने क्या खिलाया ? अजी, सब खिला दिया। चल अच्छा रहा। उसके पेट में कूद रहे थे चूहे। तीसरे के पास गया, चौथे के पास गया, पाँचवें के पास गया, छठवें के पास गया और सातवें के पास आया। पेट में कूद रहे थे चूहे। वो चल दिया। उसने सोचा—कितने मामा हैं ? सात। और सात मामा न होते, एक मामा होता तब ? तो पेट भर जाता। कहते—अरे भाई लड़के ! तू रोटी खा करके आया ? रोटी खा करके कहाँ से आया, सबेरे का वक्त है। अच्छा तो चल चाय पी। अरे भाई ! अपनी मामी के पास जा। अरे ! ये लड़का बहुत दिनों के बाद आया है। इसको पकौड़ी खिलाना, कचौड़ी खिलाना और देखो ऐसे करना, वैसे करना। एक मामा होता तब ? एक मामा होता, तो काम बन जाता। अगर खाबिंद एक होता तब ? तो हमारी टी. बी. की बीमारी में और मुसीबत के समय में आता, कहता—ये हमारी बीबी है और हमारी धर्मपत्नी है और अब आपके कितने खाबिंद हैं ? सत्तर ! अच्छा तो वो टी. बी. हो गई हमको। अरे देख ! वो आते हैं न, क्या नाम है उनका ? वो आते हैं न, सफेद पैंटवाले साहब। सफेद पैंट वाले साहब से कहना—वो अस्पताल भी चलाते हैं। हम तो जानते नहीं हैं, हम तो दुकानदार आदमी हैं। हमें तो भाई, मालूम नहीं है। अच्छा ठीक बात है। उसके पास चलेंगे। उसके पास चला गया और वो सब आये और उसने (वेश्या) हरेक से शिकायत की। हमको टी. बी. की शिकायत हो गयी है। अरे ! हाँ-हाँ, देख वहाँ चला जा, वो टी. बी. वाला डॉक्टर बड़ा अच्छा आया है, वो तेरा इलाज कर देगा। वो जो आते हैं लाला गोविन्ददास, वो बड़े अच्छे हैं, वो बड़े मालदार हैं। उनसे कहना तो तेरा इलाज करा देंगे। ठीक बात है। किसी ने भी इलाज नहीं कराया और वो वेश्या ऐसी ही रह गयी। हम कौन लोग हैं ? हम हैं वेश्या। असल में हम वेश्या हैं; क्योंकि हमने असंख्य देवी-देवताओं को पाल कर रखा है और हमारा ये ख्याल है—ये सब देवी-देवता अलग-अलग होते हैं, इसलिए इनसे भी बना कर रखो। पुलिसवाले से भी बनाकर रखो, हकीम से भी बनाकर रखो, डॉक्टर से भी बनाकर के रखो, पण्डित से भी बनाकर रखो, न जाने कब काम पड़ जाए ?

ये देखना भाई ! कैसी गड़बड़ हो गयी ? तो इस तरीके से क्या है—हरेक से रिश्ता बनाकर के रखो। न जाने कौन किस काम आ जाए ? देवता क्या बहुत सारे हैं ? देवता मित्रो ! बहुत सारे हैं नहीं। वो बहुत देवता नहीं हो सकते और बहुत सारे देवी-देवता दुनिया में रहे होते, तो दुनिया में मार-काट फैल जाती और दुनिया में गजब हो जाता और फौजदारी हो जाती और खून-खराबी हो जाती और कत्ल हो जाते और मुकद्दमेबाजी हो जाती। किनमें ? देवताओं में ? देवता एक **"एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति"**। एक ही ब्रह्म है और उसी को अनेक तरीके के नाम हमने दे दिये और पोस्टर बना दिये हैं। ये क्या हैं ? कविता है। कविता है, हमने एक ही चीज को अनेक बना दिया है। कोई हमको पण्डितजी कहता है, कोई आचार्य जी कहता है, कोई स्वामीजी कहता है, कोई गुरुजी कहता है, कोई संपादकजी कहता है। कोई क्या कहता है, कोई क्या कहता है ? असंख्य नाम हमारे हैं और फोटो बनाकर के रखे हैं। आप सामने वाला फोटो खींच लीजिए, हमारा नाक वाला हिस्सा आ जाएगा। पीठ वाला खींच लीजिए, हमारी पीठ आ जाएगी। और आप छत पर खड़े होकर खींच लीजिए, हमारा सिर आ जाएगा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और आप झुककर के खींच लीजिए, हमारी टाँगें आ जाएँगी। आप अनेक फोटो हमारे खींच सकते हैं, अनेक शक्ल आप बना सकते हैं। भगवान की अनेक शक्ल, भगवान की अनेक सूरत और भगवान के अनेक नाम इसीलिए हैं मित्रो ! उनके गुण, उनके स्वभाव, उनके कर्म, उनकी विशेषताओं का मूल्यांकन हमने किया है, इसीलिए अनेक नाम हमने रख दिये हैं। अनेक तरह के देवी-देवता हो सकते हैं ? नहीं अनेक तरह के नहीं हो सकते। एक देवता हो सकता है और एक देवी हो सकती है। **"एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति"** एक ही ब्रह्म है। एक ब्रह्म की मान्यता जब तक हमारे मन में स्थापित न होगी, तब तक मित्रो ! हम एक नये अज्ञान में और एक नये जंजाल में उसी तरह भटकते रहेंगे, जैसे कि हमने अनेक पैगम्बर बना दिये, अनेक गुरु बना दिये, अनेक देवता बना दिये और न जाने कौन-कौन बना दिये ? इस भ्रम और भ्रांति में से अपने समाज को निकालना पड़ेगा और इस भ्रम और भ्रांति में से जब तक हम समाज को निकालेंगे नहीं, तो मित्रो ! हमारे ऊपर अंधाधुंध खर्च, अंधाधुंध पैसे का व्यय और हमारी निष्ठाओं का विकेन्द्रीकरण होता हुआ चला जाएगा और हम उस उद्देश्य को भूलते हुए चले जाएँगे, जिसके लिए हमने देवी-देवताओं की स्थापना की थी। देवी-देवताओं की स्थापना करने के पीछे हमारे ऋषि-मुनियों का एक बहुत शानदार मकसद था और बहुत ही शानदार एक उद्देश्य था। वो शानदार उद्देश्य और मकसद जब तक हमारी समझ में नहीं आयेगा, तब तक हम देव-पूजन, देवताओं की मान्यता, देवताओं के मंदिर और देवताओं की आस्था और देवताओं के सिद्धान्त के बारे में कुछ समझ ही न सकेंगे। था क्या ? था ये कि भगवान की विशेष विभूतियों के सम्बन्ध में हमने एक चित्रण करना शुरू कर दिया और उसका एक स्वरूप बनाना शुरू कर दिया। उसके माध्यम से हमने ये बताना शुरू कर दिया कि आदमी के जीवन की धाराएँ और आदमी के जीवन की दिशाएँ क्या होनी चाहिए और आदमी के विचार करने का क्रम और आदमी के चिंतन करने का स्वभाव क्या होना चाहिए ?

असल में सारे-के-सारा जो आधार बनाया गया है, सारे-के-सारे अध्यात्म का जो कलेवर खड़ा किया गया है, जो भी पूजा-पाठ से लेकर के धर्मग्रन्थों तक की आस्थाएँ निश्चित की गयी हैं, उनका एक निर्दिष्ट लक्ष्य है। बिना लक्ष्य के नहीं है, ये सब चीजें। आप ऐसा समझते हों कि जिसके जी में आया, वो लिखकर रख गया भागवत् और जिसके जी में आया, वो लिख गया महाभारत और जिसके जी में आया, वो मंत्र हनुमानजी का बन गया और जिसके जी में आया इस तरह के खेल-खिलौने हरेक ने नहीं बनाये। इनके पीछे एक लक्ष्य है। मित्रो ! लक्ष्य क्या है ? लक्ष्य सिर्फ एक है। वो लक्ष्य ये है कि मनुष्य के विचार और मनुष्य के सोचने की शक्ति और मनुष्य के क्रियाकलाप इनको श्रेष्ठ और सुसंस्कृत बनाने के लिए इस जाल में आदमी को पकड़ लिया जाए और जकड़ लिया जाए। छुट्टल हाथी जंगल में होते हैं; उनको तरह-तरह के तरीकों से पकड़ के लाते हैं। एक बड़ा वाला घेरा बना देते हैं, उसमें वो कैद कर देते हैं। फिर दायरा छोटा करते हैं, फिर छोटा करते हैं। आदमी का मन बड़ा निकम्मा है और बड़ा पापी मन है। इस पापी और निकम्मे मन को श्रेष्ठ और परिष्कृत बनाने के लिए, सुयोग्य बनाने के लिए और चरित्रवान बनाने के लिए और आस्थावान बनाने के लिए हमने सारे-का-सारा विशालकाय कलेवर खड़ा किया है और इस कलेवर का एक लक्ष्य है और एक उद्देश्य है, एक दिशा है। हमको भ्रम और भ्रांति में भटकाना इसका लक्ष्य नहीं है। हम अनेक तरह के देवी-देवताओं में आपको भटका दें और अनेक तरह के मंत्र-तंत्र आपके लिए बनाकर खड़े कर दें और समय आपका खराब कराते हुए चले जाएँ—ये मतलब नहीं था उनका जैसा कि इस समय है। इन सबका मतलब सिर्फ एक है।

इन सारे-के-सारे क्रियाकलापों का मतलब एक है कि आदमी के विचार करने और सोचने का क्रम सही बना दिया जाए और काम करने का ढंग सही बना दिया जाए और उसके लिए अनेक चीजें बनाकर के दीं हमको। मैं आपको ये बताना चाहूँगा कि आखिर देवताओं का जो स्वरूप बनाया गया है उसका कारण क्या है ? उसकी विधि क्या है ? और उसका उद्देश्य क्या है ? चलिये मैं एक देवता का वर्णन करना चाहता हूँ। वो कौन है देव ? वो देवता जिनको मैं सबसे ज्यादा प्यार करता हूँ। क्यों करता हूँ ? उनके पीछे वो विचार जुड़ा हुआ नहीं है। कौन-सा ? जो दूसरे देवी-देवताओं के पीछे जुड़ा होता है।

रामचन्द्रजी का इतिहास—अस्सी फीसदी बातें बहुत अच्छी मालूम पड़ती हैं और बहुत प्यारी मालूम पड़ती हैं; लेकिन बीस फीसदी बातें ऐसी हैं, जो हमारी समझ में ही नहीं आती हैं। अभी तक हमारी समझ में नहीं आया कि वो भगवान् थे, तो उन्होंने बालि को छिपकर क्यों मारा ? अभी तक हमारे दिमाग की समझ में नहीं आया और अभी तक हमारी अक्ल ने मंजूर नहीं किया है कि रामचन्द्रजी का छिपकर के उस बालि को मारना, जबकि उस जमाने में लड़ाई का ये नियम था कि छिपकर के नहीं मारना चाहिए और आमने-सामने से लड़ाई लड़नी चाहिए। उन्होंने कायदे का और नैतिकता का नियम क्यों तोड़ा ? वो तो भगवान थे। बालि को बुखार लगा सकते थे और बालि को टी. बी. कर सकते थे और उसको कैंसर का फोड़ा निकाल सकते थे। चाहे जो कर सकते थे। भगवान् के लिए क्या आफत थी ? उन्होंने छिपकर के क्यों मारा ? वो हमको नापसंद है और रामचन्द्रजी से कभी मुलाकात हुई तो हम सबसे पहली बात ये बताएँगे कि आप तो मर्यादाओं की स्थापना करने के लिए आये थे, फिर आपने ये गलती क्यों कर डाली ? आपकी देखादेखी दूसरे लोग छिपकर के मारने लगेंगे, तो दुनिया में मुसीबत खड़ी हो जाएगी और मर्यादाएँ भंग हो जाएँगी। आपने ये गलती क्यों की ? रामचन्द्रजी मिलेंगे, तो हम बता देंगे। शिकायत करेंगे जरूर, कभी मिले हमको तो। आपने ये क्यों किया ? रामचन्द्रजी कभी हमको मिलेंगे, तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हम उनसे ये कहे बिना नहीं मानेंगे, कि आपको धोबी को दण्ड देना चाहिए था। भले आदमी हम तो अग्नि-परीक्षा लेकर के आये हैं। हमारी सीता तो बहुत अच्छी है और तू क्यों ये इल्जाम लगाता है ? सीता बहुत खराब है और उनको निकाल दो। सीता को इल्जाम भी लगाता था, तो सजा धोबी को मिलनी चाहिए थी। धोबी को सजा देने की अपेक्षा रामचन्द्रजी ने सीता जी को ही निकाल दिया। बेचारी को क्या-से-क्या कर डाला ? कसूर किसने किया ? धोबी ने। सजा सीताजी को हो गयी। रामचन्द्रजी मिलेंगे, तो हम शिकायत करेंगे और ये कहेंगे, आपने गैरमुनासिब काम किया और आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था। शाम्बूक नाम का शूद्र जप कर रहा था और तप कर रहा था, भजन कर रहा था, ध्यान कर रहा था और रामचन्द्रजी चले गये और उसका सिर काट डाला। उन्होंने कहा—तुम तो चमार हो, तुम तो शूद्र हो। ये तुमको नहीं करना चाहिए था, तुमने भजन क्यों करना शुरू कर दिया ? रामचन्द्रजी कभी मिलेंगे हमको— हमारी मुलाकात होगी, तो रामचन्द्रजी से कहेंगे जरूर कि आपने ऐसा क्यों किया ? श्रीकृष्ण जब कभी मिलेंगे और हमारी बातचीत उनसे होगी, तो हम पहली शिकायत ये करेंगे कि आप तो लोगों के लिए एक नियम और एक कायदा बनाने के लिए आये थे और लोगों की व्यवस्था बनाने के लिए आये थे, लोगों को रास्ता बताने के लिए आये थे और आपने ये कौन-सा रास्ता बताया ? और जब आप चले आये, तो आपकी देखा-देखी लोगों ने वो ही रास्ता अख्त्यिार कर लिया और दुनिया में आपने मुसीबत पैदा कर दी। इससे तो आप न आते, तो अच्छा होता और आपने जन्म क्यों ले लिया ? अवतार क्यों ले लिया ? हमारी समझ में जरा भी आपका ये कहना नहीं आया। आपने क्यों ऐसा किया ? और आपको क्या जरूरत पड़ गयी जो इतनी सारी स्त्रियाँ रखकर के इतनी सारी औलाद पैदा की ? अपने मिशन वाला कोई जाता है लोगों के पास कि बच्चे कम पैदा करने चाहिए, तो वो कहते हैं—श्रीकृष्ण भगवान ने सोलह हजार एक साथ पैदा किये थे, हमारे तो छह ही बच्चे हैं। हम क्यों बंद करेंगे और हम तो ज्यादा बच्चे पैदा करेंगे। तो बेचारा सोचता है, ये क्या कर डाला श्रीकृष्ण ने ? श्रीकृष्ण भगवान मिलेंगे, तो हम उनसे लड़ाई किये बिना नहीं मानेंगे और उनसे ये कहेंगे—खैर ये गलती अब हो गयी, सो हो गयी, दोबारा कभी जब अवतार लें, तो आप हमारी सलाह लेना और हम आपके सेक्रेटरी होंगे और फिर हम ऐसा नहीं करने देंगे। ऐसी क्या खुराफात करते थे आप ? भगवान थे तो ये क्या मतलब कि ऐसी खुराफातें पैदा करें, जिससे लोगों को गलत रास्ते पर जाने का मौका मिल जाए।

मित्रो ! हम ऐसा करेंगे; लेकिन एक देव ऐसा भी है, जिसके बारे में हमको कोई शिकायत नहीं है। वो कौन है ? वो महादेव हैं। महादेव के बारे में हमको कोई शिकायत नहीं है। महादेवजी मिलेंगे, तो हम उनको बहुत प्यार करेंगे। उनकी जिन्दगी में हमने कोई ऐसी खुराफात नहीं देखी, जिससे हमको गुस्सा आये और नाराजगी हो। शंकर भगवान के बारे में जो चित्र और तस्वीर बना-बनाकर के हमारे सामने रखी गयी हैं, वो बड़ी मजेदार हैं और बड़ी शानदार हैं। हम उन तस्वीरों को सँभालकर के रखेंगे। कैसी-कैसी तस्वीरें ! शानदार तस्वीरें ! अलंकारों से भरी हुई, शिक्षाओं से भरी हुई, प्रेरणाओं से भरी हुई, दिशाओं से भरी हुई शंकर भगवान की तस्वीर। शंकर भगवान की तस्वीर जब हम देखते हैं, तो हमारा मन निहाल हो जाता है। हम उनके मस्तिष्क में से एक गंगा की धारा निकलते हुए देखते हैं। हमारे मस्तिष्क में गंगा की धारा निकलनी चाहिए। कैसी धारा ? ज्ञान की धारा; जो कलुष मिटा दे; जिससे हमारा उद्धार हो जाए। हमारे मस्तिष्क में से वो किरणें फूटती हुई चली जाएँ उस जल की, जो तरावट देता है, शीतलता देता है, ठण्डक देता है और सरसता देता है। ऐसा ज्ञान अगर हमारे मस्तिष्क में से फुब्बारे की तरह से फूटने लगे, तो हम कहेंगे शंकर भगवान सही हैं और शंकर भगवान के जो भक्त और शिष्य हैं, उनकी हम पूजा करने वाले हैं।

तो जो भगवान के मॉडल बनाकर के रखे गये हैं, वो इसीलिए बनाकर के रखे गये हैं कि उसमें हम अपने-आपको चिपकाएँ और चिपकाने के बाद में वैसे ही बनते चले जाएँ। सारे-के-सारे देवी-देवता, श्रीकृष्ण और रामचन्द्रजी इसीलिए हमारे सामने आये थे कि उनका मॉडल देखा जाए और उनको देखकर के लोग अपने-अपने चाल-चलन और अपनी दिशाओं को ठीक करना सीखें। टावर पर घड़ी लगी रहती है। प्रकाश-स्तम्भ समुद्रों में खड़े रहते हैं। इसीलिए खड़े रहते हैं कि जो नावें और जहाज समुद्र में होकर निकलते हैं, वो नाव और जहाज उस प्रकाश को देखकर के ये मालूम करें कि यहाँ कोई चट्टान तो नहीं है और समुद्र गहरा तो नहीं है, इसीलिए वो लगे रहते हैं और ये जो भगवान आते हैं, देवी-देवता जो आते हैं, इसीलिए आते हैं कि उनको देखकर के आदमी को ये मालूम पड़े कि किस तरह की जिन्दगी हमको जीनी चाहिए और कैसे हमें रहना चाहिए ? शंकर भगवान का फोटो और चित्र इसीलिए बनाकर के रखा गया है कि हम उसको देखें और उसको समझने की कोशिश करें और हम उनके अनुरूप अपने को ढालने की कोशिश करें। शंकर भगवान के अनुरूप हमको अपने को ढालना चाहिए। अपने मस्तिष्क में से ज्ञान की गंगा का प्रवाह उसी तरीके से फैलाना चाहिए, जिससे हमारे मस्तिष्क में तरावट आ जाए और दूसरे लोग, जो कोई भी उसका चुल्लूभर पानी पिएँ, वो उसे पीकर धन्य हो जाएँ। ये ज्ञान की गंगा का स्वरूप है। पानी शंकरजी की खोपड़ी में से निकलता था कि नहीं निकलता था, हमें नहीं मालूम। आप हमसे बहस करेंगे, तो हम चुप हो जाएँगे। आप हमसे मत झगड़ा करना। पण्डितजी से पूछना कि पण्डितजी दिमाग में से किसी के पानी निकलता हो, तो वो रात को सोयेगा कैसे ? हमें नहीं मालूम सोयेगा कैसे ? जब पानी निकलेगा, तो आप करवट लेके देखिये और हम आपको

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक नल लगाये देते हैं, अच्छा ? नल आपके सिर पर रख देते हैं। आपकी नाक में पानी भर जाएगा आपके कान में पानी भर जाएगा, आप जरा दो मिनट सोकर देखिये। बस वो जैसे ही फब्बारा पानी का निकलेगा सिर में से, आपका कम्बल भीग जाएगा और आपका गद्दा भीग जाएगा और चारपाई भीग जाएगी, कुर्त्ता भीग जाएगा; सब भीग जाएँगे और आप उठकर भाग जाएँगे—ये तो बड़ी मुश्किल आ गयी। पानी निकलता है ? हमें नहीं मालूम निकलता है कि नहीं निकलता और हमसे आप पूछेंगे, तो हम सिवाय चुप होने के कुछ नहीं कहेंगे। शंकरजी के मस्तिष्क में से कितनी बड़ी गंगा निकलती थी और कितना पानी निकलता था और कितने किलोलीटर पानी निकलता था, हमको नहीं मालूम ये बात। हमसे मत करो बहस, हम नहीं बता सकते।

हम क्या बता सकते हैं ? हम ये बता सकते हैं कि शंकरजी के सिर में से ज्ञान का जो फब्बारा निकलता था, वो ज्ञान की गंगा का था, पानी वाली गंगा का नहीं था। जो हमारे में से भी निकल सकता है और आपके में से भी निकल सकता है हम निकालना चाहें तब। शंकरजी के सिर के ऊपर चन्द्रमा टँगा हुआ था। चन्द्रमा कौन-सा वाला ? वो, जिसके ऊपर रशिया वालों के साथ राकेश शर्मा गया था, वो चन्द्रमा ? वो चन्द्रमा बहुत बड़ा है और वो पृथ्वी का चौथाई या पाँचवाँ हिस्सा है। बहुत बड़ा है और बहुत भारी है। इतना भारी है कि किसी मनुष्य के सिर के ऊपर, किसी देवता के सिर के ऊपर टाँग दिया जाए, तो फिर देवता की अक्ल ठिकाने आ जाएगी और फिर वो तो गोल-मटोल है। चलो ये भी मान लेते हैं। हम इसको भी टाँग देंगे। वो तो गेंद के तरीके से है। गेंद को आप टाँगना चाहें, तो रस्सी से बाँधना पड़ेगा। शंकरजी को, तब बाँध सकता है, नहीं तो वो रहेगा ही नहीं, गिर पड़ेगा। चन्द्रमा शंकरजी के सिर पर है, हमको नहीं मालूम है कि नहीं और हमसे मत कीजिए बहस। हम नहीं बता सकते। हम ये बता सकते हैं चन्द्रमा शांति का प्रतीक, संतुलन का प्रतीक, अमरत्व का प्रतीक है। हमारे दिमाग में संतुलन कायम रहना चाहिए और हमारे में शीतलता कायम रहना चाहिए। हमारी जिन्दगी में परिस्थितियों के बहाव सीधे भी आते हैं और उलटे भी आते हैं, गलत भी आते हैं। जिन्दगी के ताने-बाने बुने हुए हैं, दिन और रात के तरीके से। हमारे ताने-बाने सुख और दुःख से बने हुए हैं। हमको कभी खुशी का दिन आता है, कभी रंज का दिन आता है। कभी हमको नफा हो जाता है, कभी नुकसान होता है। ज्वार-भाटे हमारी जिन्दगी में आते रहते हैं; लेकिन ज्वार-भाटा के समय पर हम अपने दिमागी बेलेन्स को ठीक तरीके से कायम रख सकें, तो हम ये कह सकते हैं कि आपके सिर के ऊपर, दिमाग के ऊपर चन्द्रमा टँगा हुआ है। हाँ, वो टँगा हुआ है। अब ? शर्त केवल ये है कि आपका संतुलन कायम रहता हो तब संतुलन जब कायम रहता हो, तब हम ये कह सकेंगे—आपके सिर के ऊपर चन्द्रमा टँगा हुआ है और ? आपके सिर में, आपके गले में अगर वो ताकत है कि आप चीजों को—दुनिया में कितनी बुराइयाँ भरी पड़ी हैं और दुनिया में कितना जहर भरा पड़ा है; जहर को आप हजम करना चाहेंगे और पचाना चाहेंगे, तो आप मर जाएँगे और जहर को उगलना चाहेंगे तो सारी-की-सारी दुनिया जल जाएगी। दुनिया में बहुत-से जहर ऐसे हैं, जिनको आप न उगल सकते हैं, और न पेट में रख सकते हैं; उनको आपको गले में रखना चाहिए। दुनिया की जो बुराइयाँ हैं, हर चीज जो दुनिया की आपके विरुद्ध है, आप उनके विरुद्ध गतिशील मत होइयें। हर बात कहने की नहीं है। गाली आपको आती है मुँह में से, गुस्सा आपको आता है, तो उसको रोकिये, संयमित कीजिए। गुस्से को आप नष्ट कीजिए और आपको किसी के प्रति घृणा के भाव आते हैं—घृणा के भावों को आप ऐसे ही कहने लगेंगे, तो आपकी पिटाई हो जाएगी और आपके सिर के बाल उखड़ जाएँगे।

इसीलिए आप जज्ब करना सीखिए, ढंग से बोलना सीखिए और अपने-आपको काबू में रखिये और अपने को कण्ट्रोल में रखिये। ये क्या चीज कह रहा हूँ मैं ? ये वो चीज कह रहा हूँ—जो जहर गले में दबाया हुआ था शंकरजी ने। शंकरजी के गले में मुण्डों की माला पड़ी हुई हमको दिखायी पड़ती है। ये क्या है ? ये मित्रो ! शंकरजी कहाँ रहते हुए दिखायी पड़ते हैं ? मरघट में। शंकरजी के शरीर पर क्या लगा हुआ दिखायी पड़ता है ? मुर्दों की राख दिखायी पड़ती है। ये क्या है ? ये है मृत्यु का देव। मृत्यु का देव कौन है ? शंकर। मौत का कभी हमने ख्याल नहीं किया। मित्रो ! जिन्दगी के बारे में विचार किया; पर मौत के बारे में कभी विचार नहीं किया। जन्म और मृत्यु हमारी जिन्दगी के दो शानदार पहिये हैं। जिन्दगी के बारे में भी हमको हर रोज विचार करना चाहिए और मौत के बारे में भी हमको हर रोज विचार करना चाहिए। हमको मरना तो होगा ही, मरना तो पड़ेगा ही और मरना तो चाहिए ही और मौत तो हमारी जिन्दगी है। कल परसों हमको मरना पड़ेगा, इस बात को अगर आदमी ने याद रखा होता, तो गुनाहों और पापों के गट्ठर, जो हमारे सिर पर जमा हो गये हैं, क्यों हो जाते ? कल मरना है हमको। बाबा ! परसों तो हमको मरना ही है। हमारी लाश और हमारी चिता इंतजार करती है। ये ख्वाब अगर हमको आया होता और हमने अपना घर कहाँ बनाया होता ? मरघट में बनाया होता। हम कहाँ के रहने वाले हैं ? मरघट के रहने वाले हैं और हम काम करते हैं तथा ड्रामा करते हैं दुनिया में। दुनिया में हम ड्रामा करने के लिए आये हैं। ड्रामा हमारा यहाँ होता है और हमारा घर वहाँ रखा हुआ है, पीपल के पेड़ के नीचे। वहाँ पर आप जाकर के अपने-आपको देखिये, आपकी शक्ल कैसी है और चेहरा कैसा है ? इसके लिए मुर्दे की खोपड़ी को देखा कीजिए, जिसको आप हर बार क्रीम लगाते हैं, पाउडर लगाते हैं और जिसकी शक्ल आप बार-बार शीशे में देखते रहते हैं; उसका असली स्वरूप क्या है ? जरा एक खोपड़ी को देखिये और आपके गले में, आपके हृदय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में वो खोपड़ी भी रहनी चाहिए और आपके शरीर के ऊपर मुर्दे की राख भी रहनी चाहिए और आपको यह ध्यान रहना चाहिए कि हमारा असली निवास कहाँ है ?

शंकर भगवान मौत के देव हैं। मौत के देव—जिनको हमने भुला दिया है। मित्रो ! आध्यात्मिकता का एक महत्त्वपूर्ण पहलू ये है कि हम जिन्दगी किस तरीके से जिएँ ? और एक महत्त्वपूर्ण पहलू हमारी जिन्दगी का ये है कि हम शानदार मौत कैसे मरें ? हमारी शानदार मौत कैसे होनी चाहिए ? और हमारी शानदार जिन्दगी कैसी होनी चाहिए ? जिन्दगी खुशहाल कैसे हो और सफल कैसे हो ? इन दोनों बातों का बैलेन्स अगर हमने मिलाया होता, तो शंकरजी की पूजा और उपासना के पश्चात् जो प्रेरणा हमको मिलनी चाहिए थी, वो मिल सकती है; पर हम क्या कर सकते हैं ? हमने तो बेलपत्र ला-लाकर के चढ़ाये और चंदन से बेलपत्रों को रँगा और उसके ऊपर डाल दिया और सावन के महीने में तीन टाँग की तिपाई मँगायी और तीन घड़े टाँग दिये और बीच में उनके छेद कर दिये और पूरे-के-पूरे सावन के महीने में शंकरजी के ऊपर पानी टपकता रहा। हमारी बात खत्म हो गयी और हमारा खेल खत्म हो गया। वो क्यों नहीं किया ? कौन-सा ? शंकरजी के भीतर जो शिक्षाएँ भरी पड़ी हैं और जो प्रेरणाएँ भरी पड़ी हैं, वो क्यों नहीं सीखीं आपने ? भूत और प्रेतों की सेना—भूत और प्रेतों की सेनाएँ बड़े आदमियों की नहीं, मालदार आदमी की नहीं, अमीरों की नहीं। भूत-प्रेतों की सेनाएँ हमको बनाकर के रखनी चाहिए थी।

जो पतित और पीड़ित—जो आपको पुकारते हैं, आपसे मदद के लिए हाहाकार में इंतजार करते हैं, आप वहाँ क्यों नहीं गये ? आप उसके यहाँ क्यों जा पहुँचे, जिसके यहाँ आपके मिठाई की दावत खिलायी गयी थी और जिनके यहाँ रोशनी जल रही थी और जिसके यहाँ रेडियो बज रहा था और जहाँ सोफासेट पड़ा हुआ था। आप बार-बार उसके यहाँ चक्कर काटते-फिरते हैं और वो भूत और प्रेत वहाँ बैठा हुआ था, बेचारा बीमार पड़ा हुआ था, जो दुःखी पड़ा हुआ था, पिछड़ा हुआ पड़ा था, जाल में पड़ा हुआ था, आप उसके यहाँ क्यों नहीं गये ? शंकर भगवान की निशानी और शंकर भगवान के चिन्ह हमको ये बताते हैं कि भूत और प्रेत हमारे मित्र होने चाहिए और हमारे दोस्त होने चाहिए और हमारे खानदान वाले होने चाहिए, हमारे कुटुम्बी होने चाहिए और प्यारे होने चाहिए। जो आदमी पीड़ित और पतित हैं—वो हमारे खानदान वाले हों। मित्रो ! ये क्या कहलाएगा ? ये आपके शंकरजी के चिन्ह और शंकरजी की निशानियाँ कहलाएँगी और शंकरजी की बात कहलाएगी। शंकरजी की शिक्षाएँ क्या-क्या कहूँ आपसे ? मैं कहाँ तक बताऊँ ?

शंकरजी की महिमा ही मैं अगर गाता रहा, तो आप ये कह देंगे कि आप तो अपने ही देवता की बात कहते रहते हैं, हमारे देवता की बात तो कहते नहीं। अच्छा, चलिये मैं आपके देवता की बात कहता हूँ। आपका देवता कौन ? बस वो जो नवरात्रि चल रही है न ? सब जगह जाकर के देखिए आप ! वहाँ क्या हो रहा है ? चण्डी का पाठ हो रहा है ? दुर्गा का पाठ हो रहा है—दुर्गा का पाठ। मित्रो ! पण्डितों की इस वक्त पाँचों उँगलियाँ घी में होंगी। देवी का पाठ आधा यहाँ, आधा वहाँ। सबके यहाँ करेंगे और सबके यहाँ हवन करेंगे और सबके यहाँ पाठ करेंगे। उनकी पाँचों उँगली घी में रहती हैं। कब ? जब ये देवी का पाठ होता है। ये देवी कौन हैं ? ये कहाँ से आ गयीं देवी ? इस देवी की 'स्कन्दपुराण' में और 'मार्कण्डेय पुराण' में, देवी भागवत् में, जहाँ से भी ये लिया गया है। कौन-सा ? 'दुर्गा सप्तशती' के जो अध्याय निकाले गये हैं— उसमें जो वर्णन आता है। किसका ? जिसका हम पाठ करते हैं। देवी का हम पाठ करते हैं। चण्डीपाठ ! सरस चण्डीपाठ ! सरस चण्डीपाठ ! जिसके आजकल धकाधक पाठ चल रहे हैं। ये आखिर हैं कौन ! ये कहाँ से आ गयी ? इसका आपको इतिहास और हिस्ट्री बताता हूँ कि ये आखिर हैं कौन चण्डी ? एक बार ऐसा हुआ देवताओं और राक्षसों में बड़ी जोर की लड़ाई होने लगी। राक्षस थे जबर्दस्त, उन्होंने देवताओं की पिटाई की और मार के भगा दिया। सारी-की-सारी गद्दी उन्होंने छीन ली और स्वर्ग के ऊपर हावी हो गये। कौन हावी हो गये ? राक्षस और देवताओं का क्या हुआ ? देवता भाग गये। देवता भागकर के यहाँ छिपे, वहाँ छिपे। आखिर में ब्रह्माजी के पास जा पहुँचे और ब्रह्माजी से प्रार्थना करने लगे—महाराज जी ! हमारे ऊपर तो बड़ी मुसीबत आ गयी। क्या हो गया ? राक्षसों ने हमको मारा। राक्षस क्यों मार सकते हैं ? तुम तो देव हो। तुम्हारे पास तो वेदों का ज्ञान है। तुम तो ऋषि हो। तुम तो बड़े जबर्दस्त हो। तुम्हारे पास तो भगवान की शक्ति है। तुम क्यों हार गये ? ब्रह्माजी ने उनकी हार के कारण को तलाश किया और ये पता लगाया कि आखिर क्यों हारे ? आखिर थे तो ये देव। देव क्यों हारे ? देवों के हारने की एक वजह है, दूसरी कोई वजह नहीं है। देव जब कभी भी हारेंगे तथा हम और आपकी जब कभी भी पिटाई होगी—उसकी एक वजह है, दूसरी कोई वजह नहीं है। क्या वजह है ? हमारे भीतर संगठन करने का क्रम नहीं है। चोर-चोर इकट्ठे हो सकते हैं, 'चोर-चोर मौसेरे भाई' और पण्डित-पण्डित—'ब्राह्मण, भैंसा, कुत्ता, हाथी—ये चारों हैं कुल के घाती।' ब्राह्मण जब मिलेगा, तो देख लेना, कब मिलेगा ? जब किसी लड़की-लड़के का ब्याह हो रहा होगा, एक पण्डित इधर बैठा होगा और एक पण्डित उधर बैठा होगा। जरा देखना कैसे कस-कस के लड़ाई होती है ? मेढ़ाओं की लड़ाई देखी है आपने ? जिन्दे मेढ़ों की लड़ाई न देखी हो, तो पण्डितों की लड़ाई देखना। जब ब्याह-शादी होती है, तो लड़की वाला पण्डित और लड़के वाला पण्डित, वो उसको कोसता है, वो उसको कोसता है; वो उसकी गलती बताता है, वो उसकी गलती बताता है। ऐसी-ऐसी चोंचें लड़ाते हैं, जैसे तीतर की चोंचें लड़ती हैं। तीतर की चोंचें लड़ती हैं आप देख लेना मजा, कहीं भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

देख लेना। क्यों, क्यों होती है लड़ाई ? लड़ाई होने की वजह ? वजह ये है कि अच्छे आदमी कभी संगठित होकर नहीं बैठे। अच्छे आदमियों ने कभी नमाज मिल-जुल के नहीं पढ़ी। मुसलमानों में मुबारक ईद का दिन जब आता है, तो सारे-के-सारे मुसलमान इकट्ठे हो जाते हैं। देखा है आपने ? हिन्दुओं को कभी आपने इकट्ठे होते हुए देखा है ? तुम कौन हो ? हम तो रामानंदी हैं। रामचन्द्रजी का मंदिर तो वहाँ है और हम वहाँ जाएँगे, रामचंद्रजी को पूजेंगे। वो कौन हैं ? वो भगवान् हैं। कौन ? श्रीकृष्ण भगवान् ! हम तो वहाँ जाएँगे और हम तो श्रीकृष्णजी को पूजेंगे। श्रीकृष्ण इष्ट है हमारा और कोई इष्ट नहीं है। अलग-अलग दो आदमी रहेंगे, तो जैसे धागे अलग बँटे हुए हैं, वो रस्सा कैसे बन सकता है ?

हम कभी संगठित नहीं हुए। संगठित होते हैं, तो बस राक्षसी परिवार। उनका संगठन तैयार होता है और वो धावा बोल देता है देवताओं पर और हरा देता है। आफत-ही-आफत हम क्या कर सकते हैं ? देवताओं में संगठित होना नहीं आया कभी। जो असंगठित रहा, उसकी पिटाई होती रही। ब्रह्माजी ने कहा—देखो बेवकूफो ! इसकी दो वजह हैं, तीसरी कोई वजह नहीं हैं। हम आपको वो वजह बतायेंगे और संगठन की शक्ति को बताएँगे और जानकारी देंगे। तुम्हारी सब समस्याओं को हल कर देंगे। तो कीजिए। ब्रह्माजी ने सबको बिठाया और कहा—'सब बैठो ! और सब जहाँ के तहाँ बैठ गये। फिर कहा—हाथ जोड़ो। सबने हाथ जोड़ लिए। ब्रह्माजी ने क्या काम किया ? अपना हाथ निकाला और सबमें से शक्ति खींची। सबमें से शक्ति खींचकर के उन्होंने एक गोला बनाया जादू का। जादू का गोला बनाया और उसमें मंत्र बोला तथा उसमें से चण्डी निकली। बड़ी जोर की चण्डी निकली ! जीभ लपलपाती निकली ! और उसकी कितनी भुजा ! कितने हाथ ! ओ माँ ! महिषासुर को मार डाला और रक्तबीज को मार डाला और शुम्भ-निशुम्भ को मार डाला। सब मार-काटकर के उसने रख दिये और सबका सफाया कर दिया।

ये क्या हुआ ? अलंकार हुआ। ये अलंकार है। लोगों की शक्ति निकल सकती है ? हाँ, आप में से निकाल लूँ आपकी शक्ति, आप कहें तो। आप निकाल सकते हैं ? कैसे निकाली ब्रह्माजी ने ? निकालने का तरीका तो हमको मालूम नहीं है, आपके पास कोई तरीका हो तो बताइये ? जेब काटने का तरीका सबको मालूम है। आप कहें, तो आपकी जेब काट लें। ये तो आपकी शक्ति की महिमा है और क्या है ? आपका अहंकार क्या करता है ? वो अहंकार ये करता है कि आदमी को संगठित नहीं होने देता। हर आदमी में संगठित होने की शक्ति है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए गाँधीजी ने कहा—हमको एक शक्ति का उदय करना पड़ेगा। संघ-शक्ति का उदय गाँधीजी ने किया। पर्चियाँ डाल-डालकर डिब्बों में हमने ब्रिटिश हुकूमत को डरा दिया और गाँधीजी ने उस हुकूमत को भगा दिया। पर्चियाँ इसके बक्से में डालकर के, उसके बक्से में डालकर के अभी भी हम किसी भी हुकूमत को भगाकर के स्वतन्त्रता कायम कर सकते हैं। संगठन की शक्ति कितनी बड़ी हो सकती है ? संगठन की शक्ति बड़ी जबर्दस्त हो सकती है। संगठन की शक्ति, जिसको हम संघ की शक्ति कहते हैं, कामयाब हो गई। संगठन की शक्ति, मेरी-आपकी शक्ति, मोहब्बत की शक्ति, एकता की शक्ति, सहकारिता की शक्ति—ये अगर हमने समझी होती तो मित्रो ! स्वाधीनता को हमने बढ़ाया होता, हमने स्वतंत्रता के आंदोलन को बढ़ाया होता और हमने आपको निजी नहीं, समूह की महत्ता की बात को स्वीकार कराया होता और हमने आध्यात्मिक आन्दोलन चलाये होते, तो शायद आज स्थिति भिन्न होती। सारी सेना में और अध्यात्म में एक ही पद्धति है। चौका अगर बनाना है आपको, तो अलग चौका नहीं बना सकते। क्यों ? क्योंकि आप एक समूह के अंग हैं। यहाँ सब कुछ सामूहिक ही हो सकता है। आपकी बीबी ने कहा कि नहीं, हम अपना खाना अलग पकाएँगे, अपना चौका अलग रखेंगे, तो क्या आप देश का इतना सारा समय खराब करेंगे ? नहीं साहब ! हमारी बीबी हमारी रोटी बना के खिलाएगी। नहीं, तुम्हारी बीबी तुम्हारी रोटी बना के नहीं खिलाएगी, सारे मोहल्ले की बना के खिलाएगी। तेरे मोहल्ले में कितनी औरतें रहती हैं ? मेरे मोहल्ले में पचास औरतें रहती हैं और कितने आदमी रहते हैं ? पचास आदमी रहते हैं और पच्चीस बाल-बच्चे रहते हैं। ठीक है, सवा सौ आदमी हुए। सवा सौ आदमी—सब आदमी-औरत काम करेंगे और कुछ औरतें खाना पकाएँगी। कुछ औरतों ने खाना पका दिया। सब आदमी-औरत आते हैं, मिल के रोटी खा जाते हैं। मजा आता है। हँसते हैं, बोलते हैं, प्यार की बातें करते हैं। नहीं साहब ! हमारी औरत तो नहीं करेगी। हमारी औरत अकेले का करेगी। सबका नहीं करेगी। अकेली चौका बनाएगी। भाड़ में जाएगी ! एक तो सारी शक्ति को खराब करते हैं और एक आदमी ने क्या कर रखा है ? इस एक आदमी की कीमत ? उसकी कीमत ढाई सौ रुपया हो सकती है, पाँच सौ रुपया हो सकती है, छह सौ रुपया हो सकती है। इतने आदमियों ने फसल उगायी—एक आदमी के लिए रोटी बनाएगी ? तीन सौ आदमियों के लिए नहीं बनाएगी।

ये क्या कह रहा था मैं ? मैं सहयोग की बात कर रहा था। समाज इसी पर टिका हुआ है। संघ-शक्ति इसका नाम है और आपको तो ये मालूम ही है कि जो छीननेवाले हैं और मार-काट करने वाले हैं, उनका नाम राक्षस है। चण्डी की शक्ति उसका नाम नहीं है। चण्डी की शक्ति वो है, आपका संघ। हम आपकी संघ की शक्ति इकट्ठे करेंगे। जो कुछ भी काम करना है—हम मिल-जुल कर करेंगे, अलग-अलग नहीं करेंगे। एक आदमी के लिए काम करेंगे। एक-एक आदमी से जुड़ने की शक्ति का नाम—'चण्डी की शक्ति' है। चण्डी की शक्ति है और देवी की शक्ति है। चण्डी की शक्ति हमको जगा सकती है और हिला सकती है। मित्रो ! हमको एक घटना याद आ जाती है कि जब रावण का मुकाबला करने के लिए कोई भी

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तैयार नहीं हुआ, तो ऋषि इकट्ठे हुए हमारे-आपके जैसे। उन्होंने अपना-अपना खून इकट्ठा किया और घड़े में जमा कर दिया। घड़े में जमा करने के बाद में गाड़ दिया जमीन में। राजा जनक जब हल चलाने के लिए आए और उसमें जो घड़ा गड़ा हुआ पड़ा था, उससे हल की नोंक लगी और टक्कर खायी। टक्कर खाने के बाद में वो घड़ा फूटा और घड़ा फूटने से एक बच्ची निकल पड़ी। जनक ने बच्ची का नाम सीता रखा था। सीता जब बड़ी हो गई; तो रामचन्द्रजी से ब्याह कर दिया। फिर सीताजी को लेकर के राम जब वन गए, तो सीताजी को रावण चुराकर के ले गया। राम ने रावण को मारा और सफाया कर दिया। सारी-की-सारी घटना क्या बताती है ? घड़े में खून इकट्ठा करने पर बच्चा निकलता है ? हमें नहीं मालूम है और हमको इस पर बात नहीं करनी। अगर आप शंका-समाधान चाहेंगे, तो हम नाराज होंगे। गुरुजी ! ये बताइये खून घड़े में हम पैदा कर दें, तो हमारे बच्चा हो जाएगा ? हट ! बेवकूफ कहीं का ! कहाँ त्याग की बात चल रही है, कहाँ संगठन की बात चल रही है और कहाँ तू पागलपन की बात ले आया। नहीं गुरुजी ! बच्चा घड़े में से नहीं हो सकता, माँ के पेट में से होता है। घड़े में से होता है कि नहीं, हमें नहीं मालूम। नहीं गुरुजी ! घड़े में नहीं होता। रामायण की कहानी झूठी है। रामायण की कहानी सही है, बिल्कुल सच है। इसमें झूठ नहीं है। झूठ नहीं है, तो घड़े में से बच्चा पैदा करके दिखा दीजिए ? पहले तू खून निकाल, फिर हम अभी बच्चा पैदा करके दिखाते हैं। रामायण में तो यही कहानी है। रामायण झूठ नहीं कहती। रामायण बिल्कुल सही कहती है। कैसे कहती है सही ? इसीलिए कहती है कि उसमें वो है ही नहीं ! असल में ये क्या है ? ये अलंकार है। ये सारे-के-सारे अलंकार हैं और इन अलंकारों के पीछे शिक्षा भरी हुई पड़ी है और देवताओं में चरित्र भरा हुआ पड़ा है। इसमें क्या भरा हुआ पड़ा है ? हमको ये सिखाया गया है कि हर ऋषि अपना-अपना थोड़ा-सा रक्त एक जगह इकट्ठा कर लेगा, तो घड़े में से एक ऐसी ताकत और एक ऐसी फोर्स निकलकर के आयेगी, जो रावण जैसी महाशक्ति को भी बर्बाद कर सकती है और दुनिया में फैला हुआ पाप और अनाचार समाप्त कर सकती है। अगर हम और आप जैसे छोटे-छोटे आदमी भी अपना खून और अपना श्रम और अपना पसीना इकट्ठा कर लें, तो उसकी वजह से भी सारी दुनिया में तहलका मच सकता है।

ये क्या है ? ये है मित्रो ! चण्डी, जो अभाव, अशक्ति और अज्ञान इन तीनों राक्षसों को मारकर के मटियामेट कर सकती है। इन तीनों राक्षसों के नाम हैं—मधुकैटभ, शुम्भ-निशुम्भ और महिषासुर। ये तीन राक्षस थे, जिनको मटियामेट किया गया। उस चण्डी की पूजा पहले जमाने में भी होती थी और आज भी होती है। उस चण्डी की उपासना देवताओं ने उस जमाने में भी की थी और सम्भव है आप जैसे लोगों को और सारी जनता को और सारे भारतवासियों को चण्डी की फिर उपासना करनी पड़े और देवी की फिर उपासना करनी पड़े। चण्डी की और देवी की हम फिर उपासना नहीं करेंगे, संघ की शक्ति की उपासना नहीं करेंगे, तो हम पिछड़े हुए लोग और छिन्न-भिन्न हुए लोग कहलाएँगे और हमारे ऊपर मुसीबत आ जाएगी, हम नष्ट हो जाएँगे। वो कहानी आपको मालूम नहीं है कि वो थे चोर। कितने थे ? दो थे। और आदमी कितने थे ? वो थे चार। चोर ने कहा—चलो इन चारों को पकड़ेंगे; चारों की अक्ल ठीक करेंगे। उन्होंने कहा चारों से—चारों कौन थे ? एक था ब्राह्मण, एक था बनिया, एक था ठाकुर और एक था शूद्र। उन्होंने चारों से पूछा—क्यों भाई ! कौन-कौन लोग हैं ? हम ब्राह्मण हैं। आहा-हा ! तुम तो हमारे गुरुजी हो। और हम ठाकुर। अहा ! हम और आप तो अपनी बिरादरी के हैं। और तू कौन है ? मैं तो वो हूँ, बनिया हूँ। तो आपका और हमारा तो बराबर का वास्ता है। ये कौन हैं ? ये तो वो हैं शूद्र। अच्छा ! इसकी पिटाई करेंगे। पहले इसी से करेंगे। मार-मार के उसको ठीक कर दिया। तेरे पास जो पैसा है निकाल ! वो तीन खड़े रहे, हमें क्या लेना-देना ? शूद्र की पिटाई हो रही है, चलो ठीक है। इसको रस्सी से बाँध दो, ठाकुर साहब ! चमार है बाँध दो। उस शूद्र को रस्सी से बाँध दिया। बाँधने के बाद में फिर क्या हुआ ? फिर वो जो चोर थे, उन्होंने कहा—पण्डितजी ! आप तो हमारे गुरु हैं और आप तो पण्डित हैं। बस, जो कुछ हमारे पास होगा, आपको दक्षिणा में दे देंगे और आपसे पूर्णमासी के दिन कथा कहलवाएँगे और ठाकुर से कहा—ठाकुर साहब ! आप तो बिरादरीवाले आदमी हो हमारे-आपके तो हुक्का-पानी है। हम आपकी क्या पिटाई करेंगे ? हम भी चोर हैं और आप भी चोर हैं। ये कौन है ? ये बनिया है। ये बहुत मक्कार है। इसने बहुत पैसा बेईमानी का इकट्ठा किया है। इसकी तो ठाकुर साहब ! पिटाई कर लेने दो। ब्राह्मण ने मुँह फेर लिया और ठाकुर ने भी मुँह फेर लिया। बनिये की पिटाई की उन्होंने। किसने ? चोरों ने। चोरों ने सारा पैसा बनिये का छीन लिया और बनिये को पेड़ से रस्सी के सहारे बाँध दिया। अब रह गए ठाकुर और कौन रह गए ? पण्डित ! पण्डित से उन्होंने कहा—पण्डितजी ! तुम तो हमारे गुरु हो और तुमसे तो कुछ कहेंगे नहीं। आप तो देवता और भगवान के बराबर हो। ये ठाकुर हैं और हम भी ठाकुर हैं। इससे हमें निपट लेने दो। इसको हम देख लेंगे।

जरा इसके और हमारे दो-दो हाथ हो जाने दो। तुम मत बोलना बीच में। हम नहीं बोलेंगे। पण्डितजी अलग बैठ गए। ठाकुर एक और वो चोर दो। ठाकुर की उन्होंने पिटाई की और बाँध दिया। उन्होंने कहा—पण्डितजी ! अब आपका नम्बर है, पिटाई का।

मित्रो ! अगर हमारी शक्ति अलग-अलग रहेगी, तो हम नष्ट होते हुए चले जाएँगे। संगठन की शक्ति के उदय का नाम-चण्डी की शक्ति है। चण्डी की शक्ति को आपने संगठन के रूप में लिया नहीं; जनता को आपने बताया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं और जनता को आपने समझाया नहीं। वो केवल पाठ करना ! पाठ करना ! और हवन करना ! पाठ करना, हवन करना ! ये शुरू कर दिया और क्या कहूँ आपसे ? रामचन्द्रजी आए थे और जाने क्या-क्या सिखाने आए थे। हमने रामचन्द्रजी को भुला दिया और 'हरे रामा, हरे कृष्णा' को याद रखा। श्रीकृष्ण भगवान जाने क्या-क्या सिखाने आये थे और कर्म की शिक्षा देने आये थे, उन सब शिक्षाओं का आपने सफाया कर दिया और सब शिक्षाओं को भुला दिया और आपने कीर्तन गाना शुरू कर दिया जोर-जोर से—'राधे कृष्णा, हरे कृष्णा। राधे कृष्णा, हरे कृष्णा।' आपने बस वो कर लिया। आपको तो बस माला जपनी आती है और चिमटा बजाना आता है और आपको उपवास करना आता है और कुछ करना नहीं आता ? और कुछ नहीं आता। उन शिक्षाओं को कैसे हम जीवन में धारण करें और उन प्रेरणाओं से हम ओत-प्रोत कैसे हो जाएँ और हमारा जीवन कैसे श्रेष्ठ और महान होता हुआ चला जाए—ये तो हम भूलते ही चले गए, हमारे हाथ कुछ लगा ही नहीं। हमारा अध्यात्म केवल पाखण्ड हो करके रह गया, ढोंग हो करके रह गया, अंधविश्वास होकर के रह गया। उसके अन्दर जो जीवन था, उसके अन्दर जो प्रेरणाएँ थीं, जो शिक्षाएँ थीं, वो सब गँवा दीं हमने। हर देवता हमारा जो है, वह उसी तरह का है। गायत्री हमारी माँ। हमारी गायत्री माँ का हंस—नीर-क्षीर का विवेक करने वाला, जिसके ऊपर कोई दाग लगा हुआ नहीं है; स्वच्छ है जिसका जीवन। नीर-क्षीर का विवेक करने वाला और मोती चुगकर खाने वाला तथा और चीजों को खाने से इनकार करने वाला। "के हंसा मोती चुगै, कै लंघन मर जाए।" जिसकी कीर्ति इस बात की नहीं कि वो निरा हंस है। आपने हंस को देखा नहीं कि मन मचलने लगा—हंस की पूजा करेंगे। नीलकण्ठ को देखकर लगा नीलकण्ठ की पूजा करेंगे। इक्यासी व्रत रहें, पूर्णमासी का व्रत रहें, मोर की पूजा करके आएँ, साँप की पूजा करके आएँगे। साँप की पूजा, हंस की पूजा, मोर की पूजा, कबूतर की पूजा—ये सारी-की-सारी सीख लीं आपने और इसके पीछे क्या प्रेरणाएँ भरी पड़ी हैं ? क्या शिक्षा मिलनी चाहिए, उसका ख्वाब भी नहीं आया होगा और आपने देखने की कोशिश भी नहीं की। गहराई में जाइये।

सारे-के-सारे देवता हमारे इसी तरह के बने हुए हैं। शंख-चक्र-गदा और पद्म ये क्या हैं ? ये विष्णु भगवान के चार आधार हैं। एक हाथ में है चक्र—पहिया घूमना। पहिया घूमना—गतिशील। गतिशीलता—हमारे जीवन का चक्का घूमता ही रहना चाहिए और जिन्दगी का पहिया घूमता ही रहना चाहिए। जिन्दगी का पहिया जाम न हो जाए और जिन्दगी के चक्र की गति कम न हो जाए। सत्संगता हमारी कम न हो, दयाशीलता हमारी कम न हो इस बात का प्रतीक है यह चक्र। भगवान के हाथ में लगी हुई गदा—संघर्ष की गदा है और भावों की गदा है। हमको अपने आप से और अपने भीतर की बुराइयों से गदा लेकर के लड़ाई लड़नी चाहिए। ये क्या कह रहा था मैं ? ये भगवान के हाथ की बात कह रहा था और शंख ? शंख का अर्थ—नाद और घोषणा। संकल्प और निष्ठाएँ। ये शंख-चक्र-गदा-पद्म हैं।

जो आयुध इनके ऊपर लगे हुए हैं, ये सारी-की-सारी उन्हीं की व्याख्या है। मित्रो ! जो भगवान ने कहना चाहा था, ये उसी तरह की व्याख्या है। मैंने तो आपको ये व्याख्याएँ इसीलिए सुनाने की कोशिश की कि आप जहाँ कहीं भी जाएँ—समाज में जाना और लोगों से कहना—हिन्दू धर्म बहुदेववादी नहीं है। हिन्दू धर्म एकेश्वरवादी हैं। हमारा भगवान एक है। हमारा ईश्वर एक है। हमारा नियामक एक है। हमारी सत्ता एक है। असंख्य लोगों का ये मजहब नहीं है और असंख्य देवी-देवता नहीं हैं। असंख्य देवी-देवता रहेंगे, तो फिर दुनिया में अराजकता फैल जाएगी। शंकरजी का सेवक देवी की पूजा करने लगा और देवी का चेला गणेशजी की उपासना करने लगा। और गणेशजी का भक्त संतोषी माता की पूजा करने लगा। संतोषी माता पिटाई करेगी उसकी। क्यों ? गणेशजी के पास क्यों चला गया ? तू तो हमारा चेला था। तूने हमको क्यों नहीं खिलाया ? मित्रो ! बड़ी भारी अराजकता फैल जाएगी इस तरह और फिर न जाने क्या-से-क्या होता चला जाएगा।

बहुदेववाद रूपी अज्ञान—जिससे हमारा समाज कितना गलित होता हुआ चला गया और अंधविश्वासों में फँसता हुआ चला गया; एकनिष्ठा से कुण्ठित होता हुआ चला गया और देवी-देवताओं के नाम पर असंख्य मंदिर, असंख्य कीर्तन और असंख्य पण्डा और असंख्य पुजारी, असंख्य तंत्र, असंख्य मंत्र और असंख्य कर्मकाण्डों में फँसता हुआ चला गया। इसका परिणाम क्या हुआ ? इसका परिणाम ये हुआ कि हमारी निष्ठा, जो एक होनी चाहिए थी, अटूट और अडिग होनी चाहिए थी, वो हमारी निष्ठा खण्डित हो गई और हमारे हाथ में अब कुछ नहीं है। हमारे पास में विश्वास जरा भी नहीं है और हमारा कोई नहीं है। हमारा एक भगवान नहीं है। इसीलिए हम असंख्य दिशाओं में और टुकड़ों में बाँटते हुए चले जा रहे हैं; सम्प्रदायों में बँटते हुए चले जा रहे हैं। ये शैव हैं, ये शाक्त हैं, ये वैष्णव हैं, ये फलाना है, ये ढिकाना है। असंख्य नहीं हो सकते। हमको सिर्फ एक करना है और हमको माला एक-एक की जपनी है।

हमको उन आध्यात्मिकता के देवों के मूल सिद्धान्तों को समझ करके और लेकर के जाना है कि आदमी को दिव्य बनना चाहिए और आदमी को श्रेष्ठ बनना चाहिए। आदमी को देने वाला बनना चाहिए और आदमी को महान् बनना चाहिए। देवत्व अपने भीतर उदय करना चाहिए और उसी का पूजन करना चाहिए। बाहर वाले देवी-देवता से हम प्रेरणा लें ठीक। हम दिशाएँ लें—ठीक। हम प्रकाश लें—ठीक; पर उद्धार हमारा कौन करेगा ? हमारा अन्दर वाला देव करेगा, जिसको हम कहते हैं—आत्मदेव। आत्मदेव सबसे बड़ा देव है। आप उसकी पूजा करना। पहाड़ वाले देवताओं से प्रार्थना करना। हमारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मदेव सो गया है, इसको आप जगा दीजिए। हमारा आत्मदेव मर रहा है, इसको आप जाग्रत कर दीजिए और आत्मदेव का जिस दिन आपको वरदान मिलेगा, आशीर्वाद मिलेगा उसी दिन आप धन्य हो जाएँगे और आप निहाल हो जाएँगे, आप संत हो जाएँगे, आप महात्मा हो जाएँगे और आप तपस्वी हो जाएँगे और जो कुछ भी अध्यात्मवादी हो होना चाहिए, वो आप हो जाएँगे। ऐसा मेरा विश्वास है। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

आपत्तिकाल में मोहग्रस्त बने न रहें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

साधनाएँ समयानुकूल और पात्रता के अनुकूल हुआ करती हैं। एक-सी साधना कभी नहीं रही। बहुत पुराने जमाने की साधना को हम अब कम देखते हैं। कभी पार्वती जी तप करती रही थीं। कितने वर्ष तक वह हवा पर रहीं, पत्ते खाती रहीं, पानी पीती रहीं। कभी तपस्वियों की ऐसी साधनाएँ होती थीं। कभी ज्ञान की साधनाएँ होती रहीं। सूत और शौनक से नैमिषारण्य क्षेत्रों में जाकर के कथा-प्रसंग होते थे। उसमें अनेकानेक भक्तजन आते थे और कथा-श्रवण करते थे, सत्संग की बात करते थे। कभी शिक्षण का सिलसिला चला। ब्राह्मणों के आरण्यक काफी स्थापित हुए और उनमें जाकर के लोग अपना ज्ञानार्जन करने लगे। साधनाएँ उस समय की अजीब थीं। हजारों तरह की साधनाएँ, तांत्रिक साधनाएँ, कभी कौन ! कभी कौन ! ऐसी तमाम साधनाएँ होती रहीं। समय के हिसाब से साधना का चयन करना गुरुजनों का काम है और ऋषियों का। ऋषियों का ये है कि जो द्रष्टा-समय की जानकारी प्राप्त करने वाले, यदि कोई साधना अपने लिए बता दें, तो उसी को ठीक मान करके चलना चाहिए। आज का समय सामान्य समय नहीं है, सन्धि का समय है। सन्धि के समय को आप आपातकालीन समय भी कह सकते हैं। कभी-कभी आपत्तिकाल भी आते हैं, जैसे—भूकम्प आ जाए कहीं, तो उसको आपत्तिकाल कह सकते हैं।

ऐसे वक्त भाग खड़े होंगे लोग, कुछ जमीन के नीचे दब जाएँगे, हाहाकार हो जाएगा, बिजली चली जाएगी, नल पानी देना बन्द कर देंगे। ऐसे समय को आपत्तिकाल कहेंगे। दुर्भिक्षों को भी आपातकाल कहेंगे, जब खाना नहीं मिलता; अनाज पैदा होना बन्द हो जाता है; कुएँ का पानी सूख जाता है, तो आदमी जान बचाने के लिए या तो भाग खड़े होते हैं या वहीं प्राण त्याग देते हैं। प्राचीनकाल में ये दुर्भिक्ष बहुत होते थे। अग्निकाण्ड हो जाए, छप्पर जलने लगे किसी का तब ? तब आप उसको आपत्तिकाल कहेंगे। अपना जो व्यक्तिगत काम है, उसको ऐसे समय बन्द कर दीजिये। अग्नि को बुझाने के लिए दौड़िये। खाना खा रहे हैं, छोड़ दीजिए। पड़ोस में आग लगी है, वहाँ जाइये। नहा रहे हैं, नहाना आप बन्द कर दीजिये। कपड़े धोने हैं तो काम जरूरी पर बन्द कर दीजिए और आप जाइये पड़ोस में आग लग रही है, उसको आप देखिए। दुकान जाने को थे न, मत जाइये दुकान, देखिये क्या दुर्घटना घटित हो गयी है। सामने वाले का बस का एक्सीडेण्ट हो गया है। बस की टक्कर में कितने आदमियों की टाँगें टूट गयी हैं; कितने घायल हो गए हैं, कितने मर गये हैं ? आप आज दुकान जाना बन्द कर दीजिए। सामान्य कार्य को आप बन्द कर दीजिये और ये जो घायल पड़े हैं, इनको पानी पिलाइए; इनकी पट्टी का इन्तजाम कीजिए; इनको अस्पताल भिजवाने की कोशिश कीजिए। जो भी सहायता उनकी इस समय आप कर सकते हों, करें। आज आप दुकान बन्द कर दें। क्यों ? दुकान का समय है, वह सामान्य समय की बात है। असामान्य समय में आदमियों को असामान्य कार्य की प्रवृत्ति पर चलना पड़ता है। महामारियाँ फैल जाती हैं, बाढ़ आ जाती हैं, कोई और बड़ी दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, तो लोग जो भावनाशील हैं, अपना सामान्य-क्रम बदल देते हैं, बन्द कर देते हैं और दूसरों की सहायता करने के लिए चल पड़ते हैं, दौड़ पड़ते हैं। इसको क्या कहेंगे ? आपत्तिकाल।

आज का समय ऐसा ही आपत्तिकाल है। इसमें आपत्तिधर्म निबाहने के लिये आप सबको तैयार रहना चाहिए। आज का समय आप देखते हैं ? सन्धि का समय है। एक ओर कौरवों की सेना खड़ी हुई है एक ओर पाण्डवों की सेना खड़ी हुई है। एक ओर विनाश मुँहबाये खड़ा हुआ है, असुरता मुँहबाये खड़ी हुई है, सर्वनाश की चुनौतियाँ एक ओर एक पार्टी में खड़ी हुई है, दूसरी पार्टी में नव-निर्माण करने के लिये नवशिल्पी अपनी-अपनी तैयारी के साथ कमर बाँधे खड़े हुए हैं। ये कौरव-पाण्डवों की लड़ाई है। ये महाभारत का समय है। इसको आप आपत्तिकाल समझिये। आपत्तिकाल में, सामान्य समय में जो बातें होती हैं, वह इस समय नहीं होतीं। आपको इस समय के लिये विशेष धर्म और कर्त्तव्य अपनाने चाहिए। अर्जुन कोई धर्म-कर्म करने का पेशा थोड़े ही करता था। अर्जुन कोई और काम करता रहा। गीता में भगवान ने जब अर्जुन से लड़ने को कहा, तो वह आनाकानी करता रहा। बेकार लड़ने से क्या फायदा ! लेकिन वह तो आपत्तिकाल था न ? अगर वहाँ लड़ाई नहीं लड़ी गयी होती तब ? तब कर्ण, दुर्योधन, दुःशासन और शिशुपाल मिल करके जाने कैसा हाहाकार कर देते और लपक करके आदमियों को तहस-नहस कर देते और सारे वातावरण को इस तरह का बना देते कि जिसमें आदमियों का जिन्दा रहना मुश्किल हो जाता। इसलिये भगवान् ने महाभारत की तैयारी की। अर्जुन से कहा—इस समय सामान्य बातों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छोड़ दो। कह भी रहा था **"श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके"**—मैं तो भिक्षा माँग करके भी खा सकता हूँ, दुकान करके भी खा सकता हूँ, नौकरी करके भी खा सकता हूँ, पेट भर सकता हूँ, फिर मैं क्यों लड़ूँगा ? भगवान ने कहा—यह आपत्तिकाल है। आपत्तिकाल के धर्मविशेष होते हैं। आपत्तिकाल का धर्म निबाहने के लिए अर्जुन को तैयार किया गया और वह भगवान का कहना मान करके, अपनी मर्जी थी कि नहीं थी, बात अलग है; लेकिन उसने भगवान् की मर्जी में अपनी मर्जी मिला दी; मर्जी मिलाने के बाद में लड़ाई के मैदान में चला गया और गाण्डीव चलाने लगा और सारे-के-सारे विरोधियों को मार गिराया। अन्त में अपने साम्राज्य का स्वामी हुआ और भगवान् की भक्ति का भी अधिकारी हुआ। ये आपतधर्म कहता हूँ। पूजा-उपासना ? ये क्या ? पूजा-उपासना थी अर्जुन की ? क्या पूजा-उपासना थी, आप बताइये ? कोई अनुष्ठान, जप, तप, ध्यान, धारणा, समाधि—दैनिक जीवन में कुछ भी नहीं था। भगवान की आज्ञा है, जैसा कि उन्होंने बताया कि इस समय सबसे बड़ी साधना महाभारत की है। इसी में वह लग गया। लग जाने की वजह से साधना—भगवान की बताई हुई साधना, मनुष्यों की करायी हुई साधना की अपेक्षा लाखों गुनी श्रेयस्कर सिद्ध हुई। ऐसे ही दूसरों की भी बात है। अच्छा बताइये, हनुमानजी ने क्या साधना की ? हनुमान जी ने अनुष्ठान किये थे ? जप किये थे ? तप किये थे ? ध्यान-धारणा की थी ? सुग्रीव जी ले आये थे, कुछ नहीं की थी। बन्दर थे खाली तब। जब भगवान से मुलाकात हो गयी, तो भगवान से जब मिलना-जुलना हुआ, तो उन्होंने पूछा—मैं आपकी शरण में आ गया; अब मुझे आज्ञा बताइये। आज्ञा उनको बता दी कि सीताजी को खोज कर लाइये और लंका को बरबाद करने की कोशिश कीजिये। अनुष्ठान नहीं बताया। जप ? जप भी नहीं बताया। रामायण का पाठ ? गीता का पाठ ? नारायण मंत्र का पाठ ? नहीं, कुछ नहीं बताया। उन्होंने कहा—इस समय आपत्ति घर में है। सीता जी आपत्ति में फँसी हुई है और देश के ऊपर अनाचार के बादल अधर्म के तरीके से जमा कर दिये गए हैं—उससे लड़ना पड़ेगा और उसे दूर करना पड़ेगा। आज की यही साधना है। हनुमान जी ने स्वीकार कर लिया। उन्होंने कोई आग्रह नहीं किया कि जप बताइए, तप बताइए, ध्यान बताइए। ये तो उन लोगों को आग्रह रहता है, जो कुछ पुरुषार्थ नहीं कर सकते; जिन्हें कोई मेहनत करने से लगाव नहीं है; सेना के प्रति जिनके अन्तःकरणों में कोई उत्साह, कोई उमंग नहीं होती। ऐसे आदमी खाली बैठे रहें, तो कुछ तो बताइये, कुछ तो बताना पड़ेगा। लकड़ी की माला ही घुमाते रहिये; कुछ तो कीजिये बाबा ! ऐसे हाल में पड़े रहने की अपेक्षा तो माला घुमाना और राम का नाम लेना क्या बुरा है ? लेकिन आप यह मत समझिये कि उपासना का मतलब उपासना का मतलब राम-नाम लेना ही नहीं होता, माला घुमाना ही नहीं होता। हर काम में माला नहीं काम आती। माला भी कभी काम आती है; लेकिन माला ही काम आती है—ऐसी बात नहीं। उपासना की दृष्टि से सामयिक कर्त्तव्यों, सामयिक जिम्मेदारियों का परिपालन करना बहुत जरूरी है। हनुमान जी ने यही किया। जिस दिन से भगवान की शरण में आये, उनकी आज्ञानुसार सारे जीवन भर साधना करते रहे; अपनी मर्जी की साधना की नहीं। अपनी मर्जी की साधना मालूम थी नहीं। भगवान की साधना क्या थी ? उन्होंने पहले उनको ये हुक्म दिया था—सीता जी को ढूँढ़ के लाइये। सीताजी को ढूँढ़ के हनुमान जी लें आये और उनको अँगूठी वापस कर दी और कहा—देखिये, हम पता लगा लाये। यह काम नम्बर एक। काम नम्बर दो भगवान जी का है। तो फिर एक काम खत्म हो गया।

दूसरा अध्याय साधना का है। अब चलें राक्षसों से लड़ने के लिए युद्ध की तैयारी करें और युद्ध के लिये जो भी साधन जुटाने हैं, उनको जाकर के लाएँ। हनुमान जी ने सारी तैयारियाँ कर दीं। अपने मोहल्ले में गये और सारे रीछ-बन्दरों को उत्साह देकर के साथ ले आये कहा कि चलिये आप भी चलिये, हम तो जा ही रहे हैं, आप भी चलिये। बहुत सारे रीछ और बन्दर उनके कहने के मुताबिक तैयार हो गये और हनुमानजी ने दौड़ लगायी; नल और नील को पकड़ के लाये जो कि अच्छे-खासे इंजीनियर थे और बड़ी इमारत बना सकते थे। ये कौन लाये थे ? हनुमान जी लाये थे। अपने आप आये थे ? नहीं, अपने आप तो रीछ-बन्दर भी नहीं आये थे; अपने आप तो नल-नील भी नहीं आये थे। कोई अपने आप क्यों आने लगा ? हनुमान जी थे, जिन्होंने कि सारे साधन इकट्ठा करने में, जुटाने में पूरी-पूरी मेहनत की और लंका को परास्त करने के लिये जिन साधनों की जरूरत थी, वह सारे-के-सारे साधन जमा कर दिये और लड़ाई भी लड़ी और जो कुछ भी उस समय लड़ाई का सामान हो सकता था—पेड़ उखाड़ने से लेकर राक्षसों को तबाह करने तक, वह सब करते रहे। जब उनके भाई लक्ष्मणजी बीमार हो गये, तब उनके लिये सुषेण वैद्य ने कहा—पहाड़ उखाड़ कर लाइये। पहाड़ उखाड़ के भी लाते रहे। आपने जप जप जप एक ही बात सीख ली है, दूसरी बात सीखी ही नहीं, सबसे सुगम वाला, बैठे-बैठे लकड़ी के दाने हिलाने वाला, सिर हिलाने वाला, जीभ की नोंक हिलाने वाला—आपने इतनी सस्ती उपासना समझ ली ? इतनी सस्ती उपासना होती है कहीं ! इसमें क्या नहीं करना पड़ता है ? कष्ट न उठाना पड़ता हो, पुरुषार्थ न करना पड़ता हो—साधना भी कहीं ऐसी होती है। साधना इतनी सस्ती होती है ? इतनी कीमती चीजें आप इतने डैमचीप कीमत पर खरीदने की कोशिश करेंगे; मत कीजिएगा। वास्तविकता के नजदीक आइये। भगवान को प्राप्त करना चाहते हों, तो भगवान का कहना भी मानिये। शरणागति इसी का नाम है; समर्पण इसी का नाम है। समर्पण और शरणागति इसी का नाम है कि हम भगवान का कहना मानें; न कि भगवान को अपने कहे पर मजबूर करें—हमारी मनोकामना पूरी कीजिये। आप अपनी मर्जी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पर भगवान को चलाएँगे ? आपकी मर्जी पर चलेंगे. वह ? आप कौन हैं ? आप अपना नाम तो बताइए ? आप कौन हैं, जो आपको ये जुर्रत और ये हिम्मत होती है कि आप भगवान के ऊपर ये हुक्म चलाएँ कि आप हमारी मनोकामना अभी पूरी कर दीजिये। शरीर आपको मिल गया, मन आपको मिल गया, कुटुम्ब आपको मिल गया, कला आपको मिल गयी, साधन आपको मिल गये, फिर भी आपकी यह जुर्रत और यह हिमाकत कि आप भगवान से कहें कि अपनी दैनिक जरूरत की चीजों को जो आप आसानी से पूरी कर सकते हों, वह नहीं करेंगे और भगवान जो इसको भी करें। एक दिन कहिये न भगवान जी से टट्टी फिरा दीजिये हमारी; कहिये न भगवान जी से कपड़े धोया कीजिये। ये कहिये न भगवान जी से। मनोकामना में ये बात भी तो शामिल है। आप क्यों पुरुषार्थ करने लगे ! आप क्यों योग्यता सम्पादन करने लगे ? आप ये सब तो भगवान से करा दीजिए। खाना चबाने के लिए भगवान जी से कहिये—आप खाना चबाकर के हमारे मुँह में डाल दिया कीजिये। ऐसी बात क्यों कहते हैं ? आपको अपना पुरुषार्थ जाग्रत करना पड़ेगा, भगवान का कहना मानना पड़ेगा।

ग्वाल-बालों की बात सुनी है न आपने ? ग्वालबाल भगवान के परमप्रिय मित्र थे, उनके सहयोगी थे, सहचर थे, सखा थे; लेकिन ग्वालबालों को उन्होंने रामायण पाठ कराने की बजाय, अखण्ड कीर्तन कराने की बजाय उनसे कहा—आओ दोस्तो ! गोवर्द्धन पहाड़ उखाड़ेंगे, गोवर्द्धन पहाड़ को उठाएँगे। ग्वालबालों ने उनका ही कहना माना। किसी ने भी यह नहीं कहा कि साहब, रामायण का अखण्ड पाठ कराइये, हमको तो सत्संग कराइये, हमको भण्डारा कराइये और हमको तो ये कराइये। कुछ नहीं कहा। भगवान तो भगवान, समर्पण तो समर्पण, आज्ञा तो आज्ञा। वस, उनको जो हुक्म दिया गया—पहाड़ ढोना चाहिए तो उन्होंने पहाड़ में टेक लगाना और पत्थरों को जमा करना ऐसा ही कृत्य समझा मानो कोई बड़ा भारी पुण्य कर रहे हैं और दान कर रहे हैं। हमने कहा पहले कि हम ये बात का फैसला कर सकें कि हमको क्या करना चाहिए ? क्या करने के लिये किसी महती शक्ति के साथ में आप सम्बन्ध जोड़िये और कठपुतली के तरीके से उसका कहना मान के चलिये, उसके पीछे-पीछे चलिये। यही सही और यही मुनासिब तरीका है। सही भी यही है और मुनासिब भी यही है, लाभदायक भी यही है। इसलिये सन्धि के समय में आपको जो काम करना है, बड़ा महत्त्वपूर्ण काम करना है। आज जन-जन के मन-मन को परिष्कृत करने की आवश्यकता है। आदमी का मन, आदमी का चिन्तन ऐसा भ्रष्ट हो गया है कि उसके आचरणों को दुष्ट बनाने में कोई हया-शर्म नहीं आती। दुष्ट आचरण फौरन करने लगता है; क्योंकि चिन्तन जिसका भ्रष्ट हो गया, उसको आचरण को दुष्ट बनाने में क्या देर लगनी चाहिए ? विचार आदमी के हैं ही नहीं। विचार सब अस्त-व्यस्त हो गये। आज सबसे बड़ी आवश्यकता विचार-क्रान्ति की है, जनमानस के परिष्कार की है, लोकमंगल के लिये जनजागरण की है। आप उस काम को करते हैं, तो फिर आप यह समझिये कि आप युगसन्धि के समय पर साधना के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। अगर वह जानकारी प्राप्त हो गयी, तो फिर आपको यही काम करना पड़ेगा, जो आपको करना भी चाहिए। आप जिस परिवार के मेम्बर हैं—ये परिवार बड़ी मुसीबत से और बड़ी मुश्किल से और बड़ी देखभाल से बनाया गया है। इसकी हमने ढूँढ़-ढूँढ कर के, महर्षियों को ढूँढ़-ढूँढ़ करके कितनी डुबकी लगाकर के और कहाँ-कहाँ से इकट्ठा किया है और आपको किसलिये साधना में लगाया है, ताकि आप भगवान के ऊपर इतना अहसान करने में समर्थ हो सकें कि आपका अहसान भगवान कभी नहीं भूलें। भगवान अहसान भूले नहीं किसका ? हनुमान का। हनुमान को उसने अपने कुटुम्ब का छठा सदस्य बना लिया। आपने राम पंचायतन के चित्र देखे हैं न ? उसमें पाँच तो वो हैं कौन ? चार भाई हैं और सीताजी हैं। पाँच नाम से पंचायतन हो जाता है; लेकिन आपने उस हर चित्र में हनुमान जी को शामिल देखा होगा ? छठवें हनुमान जी थे। क्यों ? क्या वजह थी ? सिर्फ एक ही वजह थी कि **'राम काज कीने बिना मोहि कहाँ विश्राम'** इसमें उनकी अपनी इच्छा कहाँ थी कि बैकुण्ठ को जाएँगे, अपना मुक्ति कराएँगे, अपना फायदा कराएँगे, अपना चमत्कार देखेंगे, अपनी सिद्धि देखेंगे, अपना ये करेंगे। अपनापन जो बता दिया, तो भगवान की मर्जी क्या रही ! भगवान की मर्जी जो कुछ थी, वही उन्होंने पूरी कर डाली। बस, रामचन्द्रजी के कुटुम्बियों में शामिल हो गये।

आप ऐसा ही कीजिये। अपनी मर्जी की बातें मत लावें। इस बाबा के पास, उस पण्डाजी के पास, उस बाबाजी के पास, उस गुरु जी के पास, कहीं झक मत मारिये। आपके भीतर बैठा हुआ, अन्तःकरण में बैठा हुआ भगवान हमारा मार्गदर्शन कर सकता है और वह ऐसा विलक्षण मार्गदर्शन होगा, जैसे कि अर्जुन के घोड़ों को चलाने के लिये कृष्ण भगवान ने किया था। गाण्डीव चलाता था अर्जुन; लेकिन घोड़े को चलाने का, रास्ता सही बताने का, मोर्चे की जानकारी कराने का काम कृष्ण भगवान का था। आप ऐसे ही कर सकते हैं। ज्यादा बहस में पड़ने की बजाय कि हमको ये करना है, यह करना है, ये स्कीम वह स्कीम, ये स्कीम-वह स्कीम; नौ सौ निन्यानवे तरह की मत स्कीम बनाइये। आप एक ही स्कीम बनाइये; क्योंकि किसी महती सत्ता की छाया में बैठेंगे, तो कहना मानेंगे। बच्चे बड़ों का कहना मानते हैं, इसी में लाभ है। बन्दर की कहानी सुनी है ? बन्दर का बच्चा था। बाप मना कर रहा था—अरे ! ये बड़ी-बड़ी चीजें हैं, इनसे दूर रह। मानता ही नहीं, मानता ही नहीं। एक दिन जब दो लकड़ियों के चीरे के बीच में पच्चड़ लगा हुआ था, बन्दर ने उसे उखाड़ डाला। उखाड़ डाला, तो हाथ दब गया। हाथ दब गया, बस, दूसरे दिन तक चीं-चीं करता रहा, जब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तक कि उसके घर वाले न आए और बड़ी मेहनत से उसको निकाला। नहीं हाथ तो उसका एक घायल हो ही गया; टूट ही जाता, बरबाद ही हो जाता। आप भी इसी तरीके से करेंगे ? अपनी मर्जी · · · · अपनी मर्जी · · · अपनी मर्जी · · · कहाँ तक करेंगे ? हमको ये साधना बताइये ? हमको ये बीजमंत्र बताइये ? मत पूछिये। हमने ऐसा नहीं पूछा है। साधनाओं के बारे में हमने कभी अपने बॉस से यह नहीं पूछा—आप हमें ये बता दीजिये, ये कर दीजिये, इसका मंत्र बताइये, उसका मंत्र बताइये। अपनी मर्जी खत्म कर दी। उनसे कहा—बताइये, हुक्म कीजिये। उन्होंने जो कुछ भी कहा, हमने आँखें मूँदकर के उसके रास्ते पर चलते रहे और हमको ये विश्वास था कि हमको रास्ता दिखाने वाली सत्ता सही है और हमारे वश की बात है। बस, यही होता रहा है। चलते हुए हम कहाँ पहुँचे, आप देखते हैं न ?

आपके लिए भी यही रास्ता है। आपको समय की माँग · · · समय की माँग आपके सामने भी है और वह समय की माँग इस तरीके की है, जिसको आपको पूरा करना ही चाहिए। रामचन्द्रजी ने जब जन्म लिया था, तो उनके साथ में देवता आये थे। देवताओं ने कहा—मनुष्य बड़े चालाक होते हैं, मनुष्यों में त्याग का माद्दा कहाँ ! परोपकार का माद्दा कहाँ ! सेवा का माद्दा कहाँ ! मनुष्य तो केवल स्वार्थ की बात सोचते रहते हैं। आप जो काम करने जा रहे हैं, उसके लिये स्वार्थियों से थोड़े ही काम चलेगा, परमार्थियों के दल चाहिए। परमार्थियों के दल कहाँ से आएँगे ? आजकल संसार में है भी नहीं। चलिये, हम आपके साथ चलते हैं। बस, सब लोग आये थे और शंकर जी हनुमान जी के रूप में आ गये थे। कौन-कौन किसके रूप में आ जाता है ? बन्दरों के रूप में देवता आ गये थे। उन्होंने, देवताओं ने देवताओं की भूमिका निभायी। आज आप भी, भगवान जो अवतार ले रहे हैं—प्रज्ञा अवतार, उनके साथ-साथ में उन्हीं देवताओं के तरीके से उनके काम में हाथ बँटाना, हिस्सा बँटाना और भगवान के स्नेह में भी हिस्सा बँटाना, उनकी प्रसन्नता में भी हिस्सा बँटाना, उनकी हस्तियों में भी हिस्सा बँटाना। ये बँटाने के लिये जरूरी है कि आप उसकी कीमत चुका दें और भगवान् की मर्जी पर इस समय चलना स्वीकार कर लें।

समाज को नये ढाँचे में ढाला जाना है। पुराना ढाँचा इतना कमजोर हो गया है कि अब गलाने और ढालने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा है। गलाई में आप हिस्सा बँटाइये। इस ढलाई में आप हिस्सा बँटाइये। अपने समय को लेके आइए, शक्ति को लेके आइए, मन को लेके आइए, भावना और विचारों को ले के आइए और उस काम में जुट जाइए, जो आज का भगवान—इस युग का भगवान, जिसको हम 'प्रज्ञावतार' कहते हैं, उस प्रज्ञावतार की मर्जी क्या है—ये आँख खोल के देखिये और कान खोल के सुनिये। अगर आप कान खोल के सुनेंगे और आँख खोल के देखेंगे तो आपको कुछ ऐसी जानकारी मिलेगी, जैसी कि प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत आपको बार-बार बतायी जा रही है। ये भगवान् की प्रेरणा है—ये भगवान की दिशाधारा है। देवताओं ने कृष्ण भगवान के साथ ही जन्म लिया था। कृष्ण भगवान ने देखा कि जा रहे हैं, तो उनका सहयोग कौन करेगा ? अकेले कैसे क्या कर पाएँगे ! देवताओं ने कहा कि भगवान हमको भी चलने की आज्ञा दीजिये। हम भी आपके साथ-साथ चलेंगे और आपके काम में हाथ बँटाएँगे। भगवान ने हाँ कह दी। बस, फिर सारे देवताओं ने जन्म लेकर के उनके साथ-साथ सहयोग किया। पाण्डव कौन थे ? आपको मालूम है ? कथा पढ़ी है ? नहीं, नहीं पढ़ी शायद। पाण्डव जो थे, पाँच देवताओं के बेटे थे। कर्ण जो था, वह भी देवता का बेटा था। कुन्ती के गर्भ से देवता पैदा हुए थे और देवता सिर्फ इसलिये पैदा हुए थे कि भगवान श्रीकृष्ण के काम आएँ और क्या किया बताइये ? धर्मराज ने क्या किया ? अर्जुन ने कौन-सा बड़ा काम किया ? भीम ने किसका क्या किया ? नकुल-सहदेव किस काम में लगे रहे ? सबने मिल-जुल कर के सिर्फ एक ही काम किया—भगवान ने गोवर्द्धन उठाया, भगवान के काम आये। ये कैसे सम्भव हुआ ? क्योंकि वे देवता थे पहले जमाने में। देवताओं की भावनाएँ उसी तरह की होती हैं। स्वार्थियों की भावनाएँ, चालाकों की भावनाएँ, मोहग्रस्तों की भावनाएँ पाप की कीचड़ में डूबी हुई भावनाएँ कह सकते हैं। उनको ज्यादा पैसा मिलना चाहिए, ज्यादा इज्जत मिलनी चाहिए, हमारी औलाद को बड़ा सम्पन्न होना चाहिए। बस, इससे आगे कुछ है ही नहीं; लेकिन भावनाएँ उनकी वैसी नहीं होती हैं। किनकी ? देवताओं की वे यही चाहते हैं कि हमको परोपकार करना चाहिए, भगवान की आवश्यकताओं को समझकर के योगदान देना चाहिए। अर्जुन ने व सब पाण्डवों ने यही किया। सारी जिन्दगी भर देवता थे न। आप भी ठीक उसी तरह के हैं। आप अपने आपको देवता मानें, तो कोई हर्ज नहीं। आज ये प्रज्ञावतार का युग है। भगवान की नई शक्तियों ने जन्म लिया है। ज्ञान की गंगा बहाई है। इस समय उनका जन्म हुआ है और बराबर वह ये कोशिश कर रही हैं कि लोग अपने ख्यालात बदल दें और नये विचारों की स्थापना हो। प्रज्ञा अभियान इसी का नाम है। ये योजना भगवान की है और भगवान ही वास्तव में इसके संचालनकर्त्ता हैं। व्यक्ति पूरा करते हैं, तो इससे क्या हुआ है ? हमारा जहाज तो पेट्रोल से उड़ता है। ठीक है, ड्राइवर कोई उड़ाता थोड़े ही है, मशीन घुमा देता है। ठीक है हम हैं और दूसरे और लोग हैं—ये तो अपनी मशीन घुमा देते होंगे। ताकत कहाँ से आयेगी ? हवाई जहाज तो करोड़ों रुपये का आता है। ये करोड़ों रुपयें का हवाई जहाज पैदा करने की शक्ति किसी और में है ?

आप उसी तरह की शक्ति पैदा कीजिए। आप इस समय अपनी सारी आकांक्षाओं को और इच्छाओं को सिर्फ इस काम में लगा दीजिए कि हमें समय की माँग पूरी करनी है; युग की भूमिका निभानी है। युग की भूमिका निभाने के लिये आप आगे-आगे बढ़े, तो आपको पूरा-पूरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहयोग मिले। जाग्रत आत्माएँ हमेशा आगे-आगे चलते हैं। उन्होंने किसी का इन्तजार नहीं किया। दूसरे करेंगे, तो हम करेंगे। हिमालय पर सबसे पहले जो ऊँचा शिखर होता है, उस पर धूप चमकती है। आप भी अपनी धूप चमकाइए सबसे पहले। झण्डा लेकर चलने वाला आगे-आगे चलता है, दूर से दिखायी पड़ता है। आप आगे-आगे चलिये और दूसरों को रास्ता बताइये। लड़ाई में बैण्डबाजे, बिगुलबाजे आगे-आगे चलते हैं। आप बैण्डबाजे वाले बनिये और बिगुल बजाइये, ताकि सारी सेना में हिम्मत पैदा हो सके। आपको कुछ ऐसे ही शानदार काम करने हैं। आप जाग्रत आत्मा हैं। युग-आत्माओं को युग-प्रहरियों को युग को देखना पड़ेगा, युग की जरूरतें क्या हैं? इसकी आवश्यकताएँ क्या हैं ? आपकी इच्छा क्या है? अरे बाबा ! एक कोने में रखो आपकी इच्छा क्या है ? हम कहते हैं—अपनी इच्छा को एक कोने में रखिये। भगवान् की इच्छा क्या है ? समय की माँग क्या है ? प्रज्ञावतार की माँग क्या है ? आप कान खोलकर सुनिये और सुनने के बाद पूरी हिम्मत के साथ में और पूरी वफादारी और जिम्मेदारी के साथ में निभाने में जुट जाइए। हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महाकाल की पुकार अनसुनी न करें

युग-परिवर्तन की पूर्व वेला एवं सन्धिकाल

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं. भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

इस समय जिसमें हम और आप रह रहे हैं, यह युग-सन्धि का समय है। युग-सन्धि क्या है ? युग-सन्धि उसे कहते हैं, जबकि दो महत्त्वपूर्ण चीजें आपस में बदलती हैं जैसे संध्या का समय। एक संध्या प्रातःकाल होती है और एक सायंकाल होती है। दिन खत्म हो जाता है, रात आ जाती है, यह सायंकाल की सन्धि का समय है। रात चली जाती है और सबेरा आने लगता है, यह प्रातःकाल की सन्धि का समय है। दो चीजें जब मिलती हैं, तब उनको सन्धि कहते हैं—संध्याकाल कहते हैं। यह संध्या का समय है, जिसमें एक दैत्य विदा होने जा रहा है और देव प्रकट होने जा रहा है। दैत्य वह, जिसको हम पदार्थवाद—भौतिकवाद कहते हैं, जो देखने में चमकदार, शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है, लेकिन भीतर से कलुषित है। उसकी प्रतिक्रियाएँ स्वयं के लिए और दूसरों के लिए भी दुःखद हैं। रावण जिया तो सही, जप-तप भी किया, सोने की लंका भी बनाई, लेकिन ऋषियों को मारता-काटता रहा, दुःख देता रहा और दुःख पाता रहा और अन्ततः दुःख पा करके ही मरा। स्वयं भी दुःख पाया और स्त्री-बच्चों को भी दुःख से जलते-भुनते देखा। दैत्य दुःख देता है और दुःख पाता है। देखने में उसका बाहरी कलेवर सोने जैसा चमकदार मालूम पड़ता है। उसकी ताकत ऐसी मालूम पड़ती है मानो दस सिर और बीज भुजाओं वाला हो। सामान्य मनुष्य से ज्यादा ताकतवर होता है दैत्य, जाइंट। जाइंट पहली बार विदा होने जा रहा है। फिर कौन आने वाला है ? अब देव का युग, सहृदयता का युग, सादगी, सज्जनता और सद्भावना का युग आने वाला है। 'जाइंट' जो जाने वाला है, जिसे हम स्वार्थपरता कहते हैं, संकीर्णता, निष्ठुरता और कृपणता कहते हैं, वह आज जन-जन के भीतर छा गया है। आज आदमी कितना संकीर्ण, कितना स्वार्थी हो गया है ? उसे दूसरों के बारे में कोई चिन्ता नहीं, केवल अपनी ही चिन्ता है। यह कौन होता है ? केवल अपनी ही चिन्ता करने वाले को दैत्य कहते हैं। दैत्य मनोवृत्ति के रूप में भी आता है और व्यक्ति के रूप में भी आ सकता है। उसकी यही पहचान है।

दैत्य कहाँ रहते हैं ? कहाँ बतावें आपको। अपना मुँह शीशे में देखिए तो आपको दिखाई पड़ेगा कि दैत्य, राक्षस, जाइंट आपके भीतर बैठा हुआ है, जिसकी हविश जितनी ज्यादा है वह उतना ही बड़ा दैत्य है। हर एक की हविश आसमान को छू रही है। सौ रुपये रोज कमाने वाले का भी गुजारा नहीं। हविश का राक्षस इस तरीके से उछलता और उबलता रहता है कि अच्छे कार्यों के लिए, भजन-पूजन के लिए कुछ नहीं बचता हमारे पास, फिर सेवा के लिए, परमार्थ के लिए, देवपूजन के लिए कहाँ बचेगा ? आपके पास है क्या जिससे पूजन करेंगे ? आपके पास तो बची हुई एक हविश है, जिसको पूरा करने के लिए आप हर एक को निगलना चाहते हैं। आपकी ख्वाहिशें इतनी बढ़ी हैं कि आप हर एक का सफाया करना चाहते हैं, हर एक को अपने पेट में भर लेना चाहते हैं। पेट में कौन भरता है—दैत्य। वह कभी भजन करता है रावण के तरीके से, तो कभी मारीचि के तरीके से पूजन करता है। चारों ओर दैत्य छाया हुआ है। यह पढ़ा-लिखा भी है, बलवान भी है और विद्यावान भी। कुबेर के खजाने से बँधा हुआ भी है यह 'जाइंट' जो आज सारे के सारे विश्व के मानस-पटल पर छा गया है। दैत्य अब मरने जा रहा है, विदा होने जा रहा है।

अब क्या आने वाला है ? देव आने वाला है। देव किसे कहते हैं ? शराफत को कहते हैं, भलमनसाहत को कहते हैं। देवता कहाँ रहते हैं ? आसमान में रहते हैं। नहीं देवता एक सभ्यता का नाम है, संस्कृति का नाम है। इसी तरह दैत्य एक सभ्यता का नाम है, संस्कृति का नाम है। देव और दानव दो संस्कृतियों के नाम हैं। आज हर जगह दैत्य संस्कृति, जाइंट संस्कृति, बड़प्पन की संस्कृति, विलासिता की संस्कृति, वेश्याचार की संस्कृति के रूप में हर मनुष्य के ऊपर हावी है। चाहे वह लंम्बे तिलक लगाता हो, चाहे पैंट पहनता हो। सब इस मामले में एक ही है कोई फर्क किसी में नहीं पड़ता। अब यह सभ्यता खत्म होने जा रही है और नई देव-सभ्यता प्रारम्भ होने वाली है। शायद आपको दिखलाई न पड़ता हो, पर हमको दिखाई पड़ता है। कैसे दिखाई पड़ता है ? आप समुद्र के किनारे बैठ जाइए। आपको आने वाले जहाजों के मस्तूल दिखाई दे रहा है, थोड़ी देर में पूरा जहाज सामने आ जाएगा। बादल जब चमकते हैं, तब हमको मालूम पड़ जाता है कि पानी गिरने वाला है। पहले वाली सम्भावनाएँ देखकर मालूम पड़ जाता है कि कुछ हेर-फेर होने वाला है, परिवर्तन होने वाला है। परिवर्तन का संकेत पाकर बिल्ली अपने बच्चों को लेकर चल देती है। मकड़ी अपने जाले को समेट लेती है। भविष्य की जानकारियाँ सभी को होती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हैं। चिड़ियों और कुत्तों को भी तथा अन्य प्राणियों को भी। दिव्यदर्शियों को भी होती हैं और परिस्थितियों को अनुमान लगाने वाले कम्प्यूटरों को भी। ये सभी भविष्य के बारे में अनुमान लगा लेते हैं और इनमें से अधिकांश सही भी होते हैं।

युगसन्धि का जो यह समय है, उसमें एक ओर मालूम पड़ता है कि विनाश अपनी आखिरी बाजी लगाने जा रहा है। हारा हुआ जुआरी अन्त में जो कुछ भी मिलता है उसी को दाँव पर लगा देता है, यहाँ तक कि बीबी को भी दाँव पर लगा देता है। वह बागी हो जाता है और क्या करता है ? चरम-सीमा पर जा पहुँचता है। दैत्य भी इन दिनों चरम-सीमा पर जा पहुँचेगा। अब वह समय निकट आ गया, जिसमें दैत्य अपनी चरम-सीमा पर होगा। आपने देखा होगा कि प्रातःकाल जब सूर्य उदय होने वाला होता है तो अँधेरा सबसे ज्यादा उसी वक्त होता है। रात्रि घनीभूत कब होती है, जब प्रातःकाल नजदीक आ जाता है। दीपक की सबसे बड़ी लौ कब होती है, जब दीपक बुझना शुरू होता है। चींटी के पंख कब उगते हैं ? जब उसके मरने के दिन नजदीक आते हैं। जब आदमी मरने को होता है तो बहुत जोर से साँस लेता है और चेहरे पर चमक मालूम पड़ती है।

मित्रो ! युगसन्धि के बारे में कई तरह के विचार हैं, कितनी ही तरह की मान्यताएँ हैं ? उसमें एक यह कि एक पक्ष नष्ट होने वाला है और एक पक्ष जीवित होने वाला है। ऐसे समय को 'प्रसव पीड़ा' कहते हैं, जिसमें एक ओर प्रसूता के ऊपर जान की बन रही है। वह जीवन और मौत के झूले में झूल रही है। दूसरी ओर है खुशी, उमंग, मुसकान कि नया बच्चा गोदी में आने वाला है। एक ओर खुशी भी होती है, सन्तोष होता है कि नया बच्चा आने वाला है और दूसरी ओर प्रसव-पीड़ा में जान भी निकलती है। यह 'प्रसव-पीड़ा का समय है, युग-पीड़ा का समय है, जिसमें हम और आप रह रहे हैं। इसमें दैत्य मरने जा रहा है और देव अपना जन्म लेने जा रहा है, उदय होने जा रहा है।

आपको इसका आभास कैसे मिलता है ? हम कई आदमियों से मालूम करते हैं, कई फैकल्टीज से मालूम करते हैं, कई विचारकों से मालूम करते हैं तो नतीजा उसी स्थान पर जा पहुँचता है कि युग-परिवर्तन का समय नजदीक आ गया है। यह विनाश और विकास का सन्धिकाल है। इस सम्बन्ध में आकाश की जानकारी रखने वालों से पूछताछ की तो उन्होंने कहा कि अब दुनिया में घुटने पैदा होने वाली है। हवा के अन्दर गर्मी और विषाक्तता इस कदर बढ़ती जा रही है—कल-कारखानों के द्वारा, मशीनों के द्वारा, उद्योगों के द्वारा कि सारा का सारा वातावरण विषाक्त होता जा रहा है। शहरों की गन्दगी कहाँ डालते हैं ? नदियों में, परिणामस्वरूप सारी की सारी नदियाँ विषैली होती चली जा रही हैं। अब गंगा तक का पानी न नहाने लायक रहा है, न पीने लायक। न केवल हिन्दुस्तान में, वरन् सारे संसार में हवा और पानी खराब होते जा रहे हैं। हम चारों ओर से हवा और पानी के रूप में जहर पी रहे हैं। बढ़ता शोर-कोलाहल आदमी के मस्तिष्क को पागल बनाने के लिए काफी है, जिस तरह से कुपोषण के कारण छोटे बच्चे मौत के मुँह में चले जाते हैं, उसी तरीके से इन कुप्रभावों से आदमी की शारीरिक और मानसिक सेहत अब खराब होने वाली है ?

मौसम के जानकारों का कहना है कि अगले दिन हमारे लिए मुसीबत के होंगे, क्योंकि तापमान इस कदर बढ़ता जा रहा है कि उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर जो बर्फ जमी है, वह बेतहाशा गलने वाली है और जलप्रलय का दृश्य सामने आने वाला है। इतिहास बताता है कि पृथ्वी जब से बनी है तब से कई बार ऐसे मौके आए हैं जब जलप्रलय हुई और आबादियाँ डूब गई हैं। धरती बिना आबादी के रह गई है और क्या बुरे दिन नजदीक मालूम पड़ते हैं ?

सांख्यिकी के जानकारों से जब हम पूछते हैं कि आपका क्या ख्याल है तो वे भी लगभग यही बात कहते हैं कि अगले दिन बहुत खराब आ रहे हैं। क्यों आने वाले हैं ? इसलिए आने वाले हैं कि जनसंख्या बेहद बढ़ती चली जा रही है। जनसंख्या का पृथ्वी पर बढ़ना एक बहुत बड़ा जुर्म है, एक बड़ा जोखिम है। पृथ्वी के भीतर असंख्य प्राणियों को जीवित रखने लायक खुराक नहीं है और न इसकी लम्बाई-चौड़ाई इतनी है कि रबर की तरीके से हम इसको फैला दें। इनसानों की एक सीमित मात्रा ही इस पर रह सकती हैं और खुराक पा सकती है। लेकिन इनसान के ऊपर जहालत इस कदर हावी होती चली जा रही है कि कीड़े-मकोड़े के तरीके से, चूहे और कुत्तों के तरीके से ढेरों के ढेरों पिल्ले और बिल्लियाँ पैदा होते चले जाते हैं और दुनिया के लिए आफत पैदा करते रहते हैं। बच्चे यदि इसी कदर बढ़ते रहे तो आप देख लेना दुनिया भूखों मरेगी। फिर यह 'प्रकृति' ऐसे बेहूदे लोगों के लिए हमेशा तीन डण्डे तैयार रखती है—एक महामारी, दूसरा अकाल और तीसरा महायुद्ध। 'इकालॉजी' के हिसाब से महामारियाँ फैलेंगी और मक्खी, मच्छरों के तरीके से अनावश्यक रूप से बढ़ी हुई औलादों को समाप्त कर देंगी। तूफान आएँगे, लड़ाइयाँ होंगी, अकाल पड़ेंगे ताकि भूख के मारे जरूरत से ज्यादा बढ़ी हुई आबादियाँ खत्म हो जाएँ। ये मुसीबतें आएँगी और जरूर आएँगी।

और कौन क्या कह रहा था ? जो ग्रह-नक्षत्र विद्या के जानकार हैं, वे कह रहे थे कि पृथ्वी का खाविन्द सूर्य है। ये दोनों मियाँ-बीबी के तरीके से रहते हैं। सूरज कमाता रहता है और पृथ्वी को भेजता रहता है। उसी के आधार पर पृथ्वी जिन्दा रहती है, फलती-फूलती है और हरी-भरी बनी रहती है। अगर सूरज की कमाई इसके हिस्से में न आई होती तो वह मर गई होती, मंगल और बुध की तरीके से जल-गल रही होती या फिर प्लूटो और नेप्चून के तरीके से इतनी ठण्डी होती कि यहाँ बर्फ के अलावा और कुछ न होता। यदि सूरज ने अपनी आँखें मोड़ ली होतीं तो यह शनि और शुक्र की तरह गैस का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुब्बारा बनकर रह रही होती। लेकिन यह सूरज की मोहब्बत है, जिसकी कमाई यह खाती रहती है और उससे गर्मी और रोशनी लेती रहती है। 'लाइफ' कहाँ से आ गई धरती पर ? सूरज से। कीड़े-मकोड़े, जीव-जन्तु, इनसान सभी इन्हीं दोनों के 'काम्बिनेशन' से पैदा हुए हैं। पृथ्वी और सूरज का बहुत घना सम्बन्ध है। अब इसमें फर्क आ गया है। तलाक की नौबत तो नहीं आने वाली है, लेकिन नाखुशी की बहुत परिस्थितियाँ पैदा हो गई हैं। सूरज का पहले का इतिहास है कि जब कभी भी पृथ्वी और सूरज के सम्बन्धों में जरा भी फर्क आया है, घर में कलह उत्पन्न हो गया है। अब यह कलह फिर उत्पन्न होने वाला है। सन् १९८९ से सूरज के ऊपर 'स्पॉट्स' उत्पन्न होने वाले हैं, जो लगातार बीस वर्ष तक चलेंगे। 'स्पॉट्स' उन्हें कहते हैं, जिनमें कि एक-एक लाख मील लम्बी लपटें-ज्वालाएँ सूरज में से निकलती हैं और वे इतनी खतरनाक विकिरण पैदा करती हैं कि उसका सबसे बड़ा प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है। पहले भी कई बार ऐसे विकिरण आ चुके हैं और उसने पृथ्वी के सन्तुलन बिगाड़ दिए हैं। दूसरी बात अगले दिनों ऐसे सूर्यग्रहण शृंखलाबद्ध रूप से आ रहे हैं जैसे कि ८०० वर्षों के इतिहास में कभी नहीं आए। इनका परिणाम सारा विश्व देखेगा।

तीसरी बात जो खगोल विद्या के जानकार बताते हैं वह यह कि सन् ८१ के बाद में एक और आपत्ति आने वाली है बृहस्पति गरम होने वाला है। अन्तर्ग्रही परिस्थितियों के जानकार भी बतलाते हैं कि अगले बीस-पच्चीस साल सन् १९८० से २००० तक का समय युगसन्धि का वह पक्ष है, जो नुकसानदेय है, खौफनाक पक्ष है। अखण्ड-ज्योति में आपने कई बार ऐसी भविष्यवाणियाँ पढ़ी होंगी। अब कुछ और लेख जनवरी और फरवरी १९८० के अंक में भी छपे हैं कि ताकि लोगों को आगाह किया जा सके। यह लोगों को डराने वाली बात नहीं है, वरन् परिस्थितियों का विश्लेषण है। इसी तरह एक और तथ्य है, जिसकी वजह से हम कह सकते हैं कि यह नुकसान के समय हैं। इसके लिए धर्मशास्त्रों की गवाहियाँ पेश कर सकते हैं। बाइबिल में ईसा की वह भविष्यवाणियाँ हैं, जिन्हें 'सेवन टाइम्स' के नाम से जाना जाता है। उनके अनुसार यह समय सन् १९८० से सन् २००० तक का समय होता है। उन भविष्यवाणियों का सारांश केवल तबाही है। इनसानों पर आने वाली तबाही है। कुरान की भविष्यवाणी को हम देखते हैं तो उसमें लिखा है कि १४वीं सदी में कयामत आएगी। कयामत का मतलब नुकसान भी हो सकता है। अभी वह कयामत जिसमें पृथ्वी का सफाया हो जाएगा, बहुत देर की बात है, लेकिन नुकसान का समय जरूर नजदीक है, मुसलमानों के लिए ही नहीं हम सबके लिए भी। सूरदास के ग्रन्थों से लेकर प्राचीन धर्मशास्त्रों, भविष्यपुराण, कल्किपुराण आदि सभी भविष्यवाणियों से भरे पड़े हैं। इससे मालूम पड़ता है कि अगले बीस वर्ष तबाही के खौफनाक वर्ष आ रहे हैं।

युगसन्धि का एक लक्षण यह होता है कि तबाही होती है। एक सत्ता उखाड़ी जाती है और दूसरी जमाई जाती है। क्रान्तियाँ होती हैं। एक चले गए, दूसरे आ गए। नुकसान होते रहे। दुनिया में जब एक सत्ता उखड़ती है और दूसरी सत्ता आती है, तब हमेशा गड़बड़ियाँ फैलती हैं, नुकसान होते हैं, दूसरी बातें होती हैं। युगसन्धि का यह पक्ष नम्बर एक है। इसका एक और पक्ष है—सुनहरा वाला पक्ष जिसको हम 'प्रसव पीड़ा' कहते हैं और उसका जिक्र भी कर चुके हैं। इसमें बीज गलता जाता है और अंकुर पैदा होता जाता है। धान रोपी जाती है, खुशी के गीत गाए जाते हैं कि अगले दिन फसल होने वाली है। भवन का शिलान्यास किया जा रहा है, नींव चिनी जा रही है और अगले दिनों भवन खड़ा हो जाएगा। यह क्या है ? उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाएँ हैं—शिलान्यास के रूप में, अंकुर पैदा होने के रूप में, बच्चा पैदा होने के रूप में। अगर आप देख सकते हों तो इन दिनों उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाएँ भी सामने हैं। जिस युगसन्धि में हम रह रहे हैं, उसे आपत्तिकाल कह सकते हैं, आपत्तिधर्म कह सकते हैं। ऐसे समय में जाग्रत आत्माओं की विशेष जिम्मेदारी होती है। उनको कुछ खासतौर से देखभाल करना उन लोगों की खास जिम्मेदारी हो जाती है, जो जगे हुए आदमी हैं, जिनमें मैं आपको भी शुमार करता हूँ।

ऐसे समय कुछ खास समय होते हैं, जिन्हें आपत्तिकालीन समय के नाम से पुकारते हैं। मसलन मोहल्ले में आग लग जाए, छप्पर जलने लगे, तो आपको सामान्य काम बन्द कर देना चाहिए और बाल्टी लेकर, रेत ले करके चल पड़ना चाहिए और जहाँ भी आग लगी है, बुझाना चाहिए। आपत्तिकालीन समय में आपत्तिकालीन फर्जों को अंजाम देना पड़ता है। दुर्घटनाएँ घट जाएँ, भूकम्प आ जाएँ, रेलगाड़ी का एक्सीडेण्ट हो जाए आपके पड़ोस में और सैकड़ों लोग घायल पड़े हों, तब आप यह नहीं कह सकते कि हमारे पास समय नहीं है, फुरसत नहीं है। यह कहना बन्द कीजिए। इस तरह के जो काम सामूहिक जिम्मेदारी के होते हैं, उनको पूरा करने में लग जाना चाहिए। नए युग का, नए जमाने का, महाकाल का, प्रज्ञावतार का खासतौर से आप लोगों से तकाजा है, उन लोगों से जो जाग्रत हैं, जगे हुए हैं, जिसमें मैं आपको शुमार करता हूँ, जिनकी कि अक्ल जनसाधारण से ऊँची है। जनसाधारण से मेरा मतलब है, वे आदमी जो सिर्फ पेट के लिए जिन्दे रहते हैं। इनको अपने स्वार्थ के अलावा, अपने मतलब के अलावा दूसरी चीज दिखाई नहीं देती। उनको न भगवान दीखता है, न दया, धर्म दीखता है, न देश दीखता है, न संस्कृति दीखती है। लोभी, लालची और लिप्सा में डूबे हुए आदमी, हविश के मारे हुए आदमी को मैं जनसाधारण आदमी कहता हूँ। वे उस भगवान् की पूजा करना चाहते हैं जो दोना भर-भर के दे जाता है, बाल-बच्चे पैदा कर जाता है और इनाम दे जाता है। ऐसे भगवान की पूजा बन्द कीजिए। वह भगवान नहीं हो सकता जो आवश्यकता को देखे बिना, औचित्य और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनौचित्य को देखे बिना हर एक की मनोकामना पूरी करता रहता है। जो भगवान आज आदमी के ऊपर छाया हुआ है वह भगवान नहीं शैतान है। भगवान की कुछ परिभाषा होनी चाहिए, कुछ क्रम होना चाहिए। भगवान सिद्धान्तों को कहते हैं, आदर्शों को कहते हैं, उत्कृष्टता को, सच्चाई को कहते हैं, ईमानदारी और वफादारी को कहते हैं, संस्कृति की सेवा को कहते हैं। आप लोग जो तीन महीने के शिविर में आए हैं, उनमें से मुझे वे आदमी मालूम पड़ते हैं जो भगवान् को जानते हैं, भगवान की परिभाषा जिनके दिमाग में आ गई है। जो भगवान से सम्बन्ध रखने वाले हैं, भगवान को प्यार करने वाले हैं। सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा कुछ असामान्य मनुष्य को मैं जानता हूँ कि वह दुखियारा है। उस बीमार को दवा की जरूरत है। ये मेरे पास आते रहते हैं और मैं उनसे यही पूछता रहता हूँ कि बेटे, बता क्या बात है ? क्या तकलीफ है, हारी-बीमारी से लेकर बेटे-बेटी की शादी-ब्याह, नौकरी, पदोन्नति तक की बातें करते हैं और मैं उनसे यही कहता हूँ कि भगवान से प्रार्थना करेंगे और करा देंगे तेरा काम। बस उस गरीब को और क्या चाहिए ?

मित्रो ! क्या होना चाहिए ? बालकों को गुब्बारे के अलावा टॉफी और चाकलेट के अलावा कुछ नहीं मालूम। उनसे कुछ काम नहीं होने वाला। वे तो गोदी में खेलने लायक और प्यार करने लायक हैं। वे मुसीबत में कुछ सहायता करने वाले नहीं हैं। उनसे धर्म-अध्यात्म की, लोक-परलोक की, भगवान की, समाज-संस्कृति की कुछ भी बात नहीं कहते। उनसे तो यही कहा जा सकता है कि अपना पेट भरिए, अपनी हविश पूरी करिए और इनसान के तरीके से गुजारा कीजिए। लेकिन आपसे कहना है, क्योंकि आपमें वह तत्त्व हमें दिखाई पड़ते हैं जो जीवितों में होने चाहिए। जीवन्त वे जो सामान्य मनुष्यों से ऊँचे उठे हुए होते हैं, जैसे आपने सुबह सूरज को निकलते हुए देखा होगा। सबसे पहले सूरज की किरणें पहाड़ों की चोटी पर आती हैं, पेड़ों पर आती हैं, फिर नीचे आते-आते जमीन पर आ जाती हैं। भगवान भी उनके ऊपर आते हैं, जिनके पास दिल होता है, हृदय होता है, जिनके पास भावनाएँ होती हैं। भगवान बंसरी बजाजे हुए, डमरू बजाते हुए या तीर-कमान चलाते हुए नहीं आते। तो फिर क्या करते हैं ? वे ऐसी भावनाएँ और हूक को लेकर आते हैं जो ऊँचे स्तर के लोगों में, भावनाशीलों में दिखाई देती है।

आप क्या कहना चाहते हैं ? मैं यही कहना चाहता हूँ कि इस युगसन्धि की वेला में आप कुछ महत्त्वपूर्ण काम कर पाएँ तो आपके लिए शान की बात, गरिमा की बात होगी। क्या करना चाहिए ? करने को तो ढेरों के ढेरों काम पड़े हैं, पर हमने इन तीन महीनों में जो आपको याद दिलाया है, वह यह कि हमको जमाने की फिजाँ बदल देनी चाहिए। बहुत सारे संकट हैं, लेकिन दुनिया का सबसे बड़ा संकट—आस्था-संकट है। अक्ल का संकट नहीं है। पुराने जमाने में कोई-कोई पढ़े-लिखे होते थे, बाकी सारी की सारी जनता बिना पढ़ी थी। हमारी माताजी जिनके पेट से हम पैदा हुए हैं, बिल्कुल बिना पढ़ी थीं। उन्होंने हमें बालकपन से ही इस प्रकार के संस्कार दिए कि हम भूल नहीं सकते। हमारी सबसे बड़ी गुरु हमारी माँ हैं, जो हमारे भीतर नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के सारे के सारे गुणों को अपने दूध के साथ में पिला करके और गोदी में खिला करके हमको सिखा करके गई थीं और माताएँ भी ऐसी हो सकती हैं। बहुत-से आदमी ऐसे हो सकते हैं जिनके पास शिक्षा न हो और ऐसे आदमी शिक्षित हो भी सकते हैं, जिनकी अक्ल का तो कहना ही क्या ? इसके बारे में कल भी कह चुका हूँ कि मालाबार हिल के ऊपर एक वकील रहता था, जिसने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच में इस कदर खाई पैदा कर दी कि दोनों देशों में तबाही आ गई। यह है अक्ल जिसके ऊपर हम लानत भेजते हैं। आप लोगों को एक ही काम करना है कि इस अक्ल को, विचारों को बदल देना है। शोध-अनुसन्धान वालों से भी हमने यही कहा है कि आप केवल एक चीज की शोध कीजिए कि आदमी की विवेक-बुद्धि को और चिन्तन के ऊँचे वाले स्तर को जो गड़बड़ा गया है, उसको ठीक कीजिए, क्योंकि आज आदमी बुद्धिजीवी हो गया है। उसकी बुद्धि को हर क्षेत्र में पटक-पटक कर मारना है। जिस तरह धोबी कपड़े को पीट-पीट कर धुलाई करता है, वैसे ही अक्ल को पीट-पीट कर ठीक करना है। यह अक्ल जिसका दूसरा नाम—'बेअकली' है, जो अक्ल का लिबास ओढ़ करके आदमी के दिमाग और जीवन पर हावी हो रहा है, इसको पटक मारनी है, जिससे इसको ठिकाने लगाया जा सके।

अब आप क्या करना चाहते हैं ? अब हम एक और काम करना चाहते हैं कि हमारा छोटा-सा समूह, छोटा-सा समुदाय क्रमबद्ध, एक प्लानिंग करके चलें तो मजा आ जाए। ऐसे समय में हम मूकदर्शक हो करके नहीं रह सकते। हमारा छोटा-सा जखीरा ऐसे समय में पानी पिलाने के लिए जागरूकों की टोली में चलेगा ही। अभी हम बच्चे हैं, छोटी बाल्टी हमारे पास है, हाथ छोटे हैं तो क्या हुआ, अपना फर्ज हमें पूरा करना ही चाहिए। युगसन्धि के इस वर्तमान समय में कुछ काम करने की हैसियत में हम हैं, उसे पूरा करने के लिए हम आमादा हो जाएँ तो ज्यादा अच्छा होगा। इसके लिए हमने चार पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई हैं। हमारा अपना भी ऐसा ख्याल है या जिनका नियन्त्रण हमारे ऊपर है, उनकी सलाह-मशविरा से भी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अगले २० साल सन् ८० से लेकर २००० तक का समय ऐसा है, जिसमें एक कोने में 'नए युग' का पौधा विकसित होकर इस लायक हो जाएगा कि उसकी छाया में लोगों को बिठाया जा सके। हम विनाश को, जो सम्भावनाओं के रूप में डराता रहता है, उसे इस स्थिति से नीचे कर सकेंगे, निरस्त कर सकेंगे। जिससे लोगों को राहत मिले और वे चैन की साँस ले सकें। आदमी का सन्तुलन २० वर्ष में बन जाएगा, ऐसा हमारा ख्याल है। पाँच-पाँच वर्ष की चार योजनाएँ जो हमने बनाई हैं, मैं नहीं जानता कि कब तक सँभालूँगा, पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैं इतना जरूर कहता हूँ कि चारों योजनाओं को गति पकड़ने तक हम किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं अपना बजूद कायम रखेंगे और यह कोशिश करेंगे कि नया युग लाने का जो आन्दोलन शुरू किया है, उसका फल भी देखने को मिल जाए।

पहली योजना बहुत सिम्पल है, दूसरी योजना उससे कठिन है, तीसरी योजना और कठिन है और चौथी योजना सबसे ज्यादा कठिन है। पाँचसूत्रीय कार्यक्रम प्रत्येक के लिए है। सबकी जानकारियाँ कराने से आप परेशान हो जाएँगे और कहेंगे कि इतना बड़ा प्लान है जिसे हम पूरा नहीं कर सकेंगे। अतः हम आपको प्रायमरी कक्षा की जानकारी देते हैं कि प्राथमिक योजना में आप व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से वातावरण को संशोधित करने की कोशिश करें। जो फिजाँ और हवा लोगों को धकेले ले जा रही है जिससे हर चीज सूख गई है, उसे दूर करने और लड़ाई लड़ने के लिए हमको दो काम करने चाहिए। एक तो आप अपनी व्यक्तिगत साधना में पहली जनवरी से दो चीजें मिला दें। पहली यह कि नयायुग लाने के लिए एक धारा, एक प्रवाह कहीं से चला है, हम उसी में प्रवाहित होते हैं और आपको भी प्रवाहित करने के लिए उसी ताकत का इस्तेमाल करते हैं। जो महान शक्ति इतना बड़ा कार्य कर रही है, नए युग को ला रही है, उसके साथ सम्पर्क बनाने वाली साधना-उपासना जो बहुत सरल है, आप पहली जनवरी से चाहें तो कर सकते हैं। इसके लिए आपको नित्य प्रातःकाल उस प्राण रूपी माँ के दूध को पीते हैं, जिसके पीते ही शक्तियाँ आ जाती हैं। दिन भर हम उसी प्राण को पीकर उछलते रहते हैं, फुदकते रहते हैं। आप लोगों को, जाग्रत आत्माओं को उस दूध को जो प्रातःकाल प्राणधारा के रूप में आता है, ग्रहण करना चाहिए और रात्रि को सोते समय वातावरण में उसे तीरकमान की तरह इस तरीके से छोड़ना चाहिए कि इस वातावरण को संशोधित करने में मदद कर सके। इसकी एक उपासना-पद्धति है जिसे मैं फिर कभी समझा दूँगा कि दोनों उपासनाएँ एक प्रातःकाल की और दूसरी रात्रि को सोते समय कैसी करनी चाहिए ?

दूसरा है महापुरश्चरण, जिसमें सामूहिक उपासना मुख्य है। सामूहिक उपासना में बड़ी शक्ति है। एक समय पर एक मन से एकाग्र होकर की गई उपासना स्वर-विज्ञान के हिसाब से और शक्ति-संचार के हिसाब से अद्भुत सामर्थ्य उत्पन्न करती है। इसलिए हम कहते रहते हैं कि गायत्री मन्त्र एक साथ बोलिए। मन्त्र एक साथ बोले जाते हैं। स्वर एक साथ होने चाहिए। हवन में भी हम साथ-साथ बोलने पर जोर देते रहते हैं। एक समय पर एक साथ एक क्रम से की हुई उपासना का वह फल होता है, जैसे कि लोहे के बड़े पुलों पर से होकर जब कभी सिपाही चलते हैं तो कदम मिलाकर लेफ्ट-राइट से उन्हें मना कर दिया जाता है, क्योंकि उससे पुल टूटने का खतरा रहता है। आप लोग सामूहिक रूप से एक साथ एक ही समय, एक-सी ध्वनि, एक ताल-लय, एक नाद का उपयोग कर सकें तो स्वरविद्युत का एक बहुत बड़ा आधार विनिर्मित होगा और वातावरण के संशोधन का प्रयोजन पूरा करेगा। इस तरह एक व्यक्तिगत उपासना है और दूसरी सामूहिक। यह हमारे पंचवर्षीय योजना के आध्यात्मिक प्रयोग हैं। भौतिक और रचनात्मक प्रयोग अलग हैं, जो अपने स्थान पर चलते रहेंगे।

एक और भी हमारा प्रयत्न है और वह उससे भी ज्यादा शानदार है। देवात्माओं के अवतरित होने का ठीक यही समय है। देवात्माएँ युग को सँभालने के लिए, युग को परिवर्तन करने के लिए, जन्म लेने को व्याकुल हो रही हैं। जब रामचन्द्रजी आए थे जो उनके साथ में देवता आए थे। उन्होंने कहा था—जिस जमाने में आप पैदा हुए हैं, आदमी दो कौड़ी के हो गये हैं। आदमियों से सहायता नहीं मिलेगी आपको। मरने-मिटने के लिए और बड़े काम सँभालने के लिए तो आदमी शायद ही मिल पाएँ आपको, लेकिन हम चलेंगे और रीछ-बन्दरों के रूप में सारे के सारे देवता चलने के लिए आमादा हो गये थे। उन्होंने रीछ-बन्दरों के यहाँ जन्म लिया था, परन्तु इनसानों के घरों में, घुटन भरे वातावरण में जन्म लेने से मना कर दिया था और कहा था कि इन पेटुओं के यहाँ हम कैसे रहेंगे, जिनमें कषाय और कल्मष भरे हुए हैं। जिन घरों में स्वयंभू मनु और शतरूपा रानी की परम्पराएँ नहीं हैं, उन घरों में हम कैसे जिएँगे ? उनका कुधान्य खाकर हम कितने दिन जिएँगे ? इसलिए देवताओं ने मना कर दिया था और रीछ-बन्दरों के घरों में पैदा हुए थे।

आज की आवश्यकताएँ सूक्ष्म हैं। मैं आपसे सूक्ष्म बातें कह रहा हूँ, विशुद्ध अध्यात्म की बातें। स्थूल बातें, समाज-सेवा की बातें, पुरुषार्थ की बातें कल करूँगा। इस समय का सबसे बड़ा काम यह है कि युग को बदलने के लिए सामान्य नहीं, असामान्य आदमियों की जरूरत है। इसके लिए भीम, अर्जुन, भरत और हनुमान चाहिए। इसके लिए स्वराज्य लाने वाले गाँधियों, नेहरूओं और सुभाषचन्द्रों की जरूरत है। बड़ी आत्माओं की, जबर्दस्त हस्तियों की जरूरत है। मैं चाहता हूँ कि हैवानों के पेट में से जन्म लेने के लिए देवताओं को मजबूर न होना पड़े और इनसानियत को कलंकित न होना पड़े। कितना ही अच्छा होता कि सन् १९८० से देवता इनसानों के यहाँ जन्म लेते। इसके लिए हमें घरों का वातावरण ठीक करना चाहिए। हमारे दाम्पत्य जीवनों में मनु और शतरूपा रानी के संस्कारों वाली परम्परा पैदा होनी चाहिए, ताकि देवताओं का आह्वान किया जा सके। हमारे घरों में कुन्ती की परम्परा पैदा होनी चाहिए, ताकि देवता उनकी कोख में और गोद में खेलने के लिए रजामन्द हो सकें। देवता हर एक के यहाँ नहीं आ सकते। शकुन्तला के पेट में से भरत आए थे। सीता के पेट में से लव-कुश आए थे। घर-परिवारों में ऐसी परिस्थितियाँ फिर से पैदा करने के लिए हमने "परिवार निर्माण योजना" को जन्म दिया है और कहा है कि परिवारों में धार्मिक वातावरण बनाइए। दाम्पत्य जीवन में पूजा-उपासना की, आरतियों की, पंचयज्ञों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की, गायत्री माता को प्रणाम करने की न्यूनतम उपासना की परम्परा आरम्भ कीजिए। सारे के सारे घरों का वातावरण बनाने के लिए, ताकि कोई देवात्मा यदि जन्म लेने को इच्छुक हो तो उनको मौका मिल सके।

मित्रो ! हमने इस कुम्भ मेले पर जाति-बिरादरियों के शिविर लगाए हैं। इस माध्यम से हम विवाह परम्परा में ब्रह्मविवाहों का प्रचलन करना चाहते हैं। ब्रह्मविवाहों से मतलब है—आदर्श विवाह, शालीनता के, बिना खर्च के विवाह। आज सभी जगह असुर विवाहों, दैत्य-विवाहों का प्रचलन है, जिसमें बेटे वाला बेटी वाले का पेट फाड़ डालता है। दोनों तरफ पैसे की होली जलती है। ऐसे घरों में देवता नहीं गुण्डे, धूर्त, राक्षस और कंस पैदा होंगे, हिप्पी और एक्टर पैदा होंगे और जन्म देने वालों के लिए आफत करेंगे। इसीलिए हमने विवाह परम्परा को शानदार बनाया है और इसलिए शानदार बनाया है कि हमारे परिवारों में, हमारे घरों में देवता जन्म ले सकें। यदि यह परम्परा चल पड़ी, फिजाँ फैल पड़ी, एक की देखा-देखी दूसरे ने ग्रहण कर लिया, तब फिर हमारी आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक परिस्थितियों में जमीन-आसमान जैसा फर्क आ सकता है। यह वह चीज है जो हमने पहली तीन पंचवर्षीय योजना में शामिल की है। चौथी और भी अधिक क्रान्तिकारी है, जिसका जिक्र मैं कल करूँगा। आज अपनी बात यहीं समाप्त करता हूँ।

ॐ शान्ति।

विषम परिस्थिति में नवयुग की तैयारी

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

गज-ग्राह का आख्यान तो आपने सुना होगा; गज, ग्राह के मुँह में फँसा हुआ जब बेबस हो गया, बेहाल हो गया और कोई रास्ता उसको दिखायी नहीं पड़ा तो उसने भगवान को पुकारा, क्योंकि भगवान के सिवाय कोई और सहायता करने वाला था नहीं, उसके पास। तो भगवान को किस तरीके से पुकारा ? भगवान को पुकारने के लिए अनेकों उपाय हैं। कहीं कीर्तन किये जाते हैं, कहीं यज्ञ किये जाते हैं, कहीं अनुष्ठान किये जाते हैं, कहीं जप किये जाते हैं, लेकिन बेचारा गज ! यह सब नहीं कर सकता था। उसने एक फूल उसी पानी में से कहीं से उठा लिया और अपनी सूँड़ को ऊँचा करके भगवान को जोर-जोर से पुकारा। भगवान ने उसकी भावना को समझा, हृदय को समझा, मुसीबत को समझा, उसके कष्ट को समझा, अन्तरात्मा को समझा और दौड़ करके आये तथा अपने सुदर्शन-चक्र से ग्राह को मार डाला और गज को छुड़ा लिया। आपको यह कथा मालूम है न ?

ठीक यही कथा, मनुष्य जाति के सामने इस समय भी उपस्थित हुई है। मनुष्य जाति को आप गज के तरीके से मान सकते हैं, जो फिलहाल अनेकों मुसीबतों में फँसी हुई है। बहुत-सी मुसीबतें तो पहले भी हमने बतायी थीं। फिर बता रहे हैं ! वातावरण बिगड़ रहा है, वायुमण्डल बिगड़ रहा है, जनता की संख्या अन्धाधुन्ध पैदा होती हुई चली जा रही है। विकिरण बढ़ रहा है, युद्ध की सामग्रियाँ बढ़ रही हैं, जिससे कि हर आदमी की मुश्किलें बढ़ती चली जा रही हैं। यह सब बातें तो पहले भी आपको बतायी थीं, लेकिन इस साल, जिस साल कि आप सब सामने बैठे हुए हैं, इसकी कुछ विशेष मुसीबतें हैं। उन विशेष मुसीबतों की ओर आपका ध्यान जाना चाहिए, आपको उनका अनुभव करना चाहिए। अभी इस साल कितनी महँगाई है, आपको मालूम है ? महँगाई के मारे सामान्य आदमी का सौ में से निन्यानवे आदमियों का कचूमर निकल रहा है। यह एक मुसीबत इस समय की है।

दूसरी मुसीबत इस समय की क्या है ? प्रकृति हमसे नाराज हो गयी है और उसने नाराज होकर वर्षा के ऊपर अपना प्रभाव डाला है। समय पर वर्षा न होने की वजह से क्या-क्या मुसीबतें आ रही हैं, आपको मालूम है न ? खेती सूख रही है, कुओं का पानी नीचा होता चला जा रहा है, डेम और नदियों का पानी पहले की अपेक्षा घटता चला जा रहा है। पानी की कमी से बिजली पैदा होने की मुसीबत आ रही है। बिजली की कमी से बत्ती, पंखे, कल-कारखानों की पचासों समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं और गाँवों में तो बिजली के बिना ट्यूबवैल चल नहीं पाते। कोई और तरीका तो है नहीं सिंचाई का, क्योंकि नहरों, तालाबों के सूखने से पानी का कोई और इन्तजाम नहीं है। हमारे यहाँ ज्यादातर बिजली पानी से ही बनती है। पानी का अभाव हुआ तो बिजली बनाना तो दूर पीने का पानी, नहाने का पानी, खेती का पानी और ट्यूबवैलों से जो कुछ निकल सकता था वह सब भी दैनिक आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकता। पानी की एक बड़ी भारी मुसीबत है।

महँगाई एक, पानी दो, इनके अतिरिक्त एक और तीसरे नम्बर की मुसीबत है जो कि आप लोगों के सामने है। वह कौन-सी है ? वह यह है कि पुराने-जमाने में जब अकाल पड़ते थे और खाने-पीने की चीजों का अभाव होता था, तो लोग भीख माँगने लगते थे या कुछ और काम करने लगते थे, पर आजकल तो आप जानते ही हैं कि चोरी, उठाईगीरी और डकैतियों के अलावा और कोई तरीका ही नहीं रह गया है। एक ही सबसे सस्ता तरीका है कि हत्या, चोरी और उठाईगीरी की जाए। अवांछनीय तत्त्वों की वृद्धि होने की इस साल विशेष सम्भावना है, आक्रमण बढ़ेंगे और तरह-तरह की मुसीबतें भी बढ़ेंगी। यह तीसरे तरह की मुसीबत है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

क्या साम्प्रदायिकता कुछ ठण्डी हुई है ? नहीं, यह बिल्कुल ठण्डी नहीं हुई ? विवाद एक जगह ठण्डा नहीं होने पाता कि कहीं और तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। यह साम्प्रदायिक उपद्रव कृष्ण जन्मभूमि से लेकर बाबरी मस्जिद तक, हर जगह इसी के लिए धुआँ निकल रहा है, हर तरफ आग लग रही है। यह आग विकराल रूप धारण कर ले तो कोई अचम्भे की बात नहीं मानी जाएगी।

आतंकवाद ! आतंकवाद को आप देख रहे हैं न ? कहीं बम फट रहे हैं, कहीं गोलियाँ चल रही हैं, कहीं कुछ और हो रहा है। ये सारी की सारी मुसीबतें-पाँचों मुसीबतें इस तरह की हैं जो कि आजकल हम सब लोगों के ऊपर ठीक उसी तरीके से छायी हुई हैं, जैसे गज के ऊपर मुसीबत आयी थी। अब हम लोग क्या करें ? जो कोई उपाय होगा, वह किया भी जाएगा। जनता करेगी, गवर्नमेन्ट करेगी, समाज से भी किया जाएगा। जो कुछ भी उपाय सम्भव है, हम सब लोग करेंगे ही। उसके बारे में तो मुझे कुछ कहना नहीं है। गवर्नमेण्ट इसके सम्बन्ध में मार्गदर्शन करती ही है। समाज के नेता भी बताते रहते हैं कि इस मुसीबत के वक्त में पानी कम खर्च करना चाहिए। बिजली भी कम खर्च करनी चाहिए। तालाब बनाना चाहिए, कुएँ खोदने चाहिए। सब अलग-अलग उपाय बताते ही हैं। ये भौतिक तरीके हैं। लेकिन इससे भी बड़ा एक आध्यात्मिक उपाय है, जो गज ने अपनाया था। वह क्या ? उसने भगवान को पुकारा था। देवताओं और दैत्यों में जब भी लड़ाई हुई, देवता मुसीबत में आए, तो वे भाग करके भगवान के पास में गए और यह कहा कि हमारी मुसीबत को आप दूर कर दीजिए। तब भगवान ने कोई न कोई उपाय निकाला, चाहे दुर्गा का निर्माण किया हो, चाहे सीता का, दधीचि की अस्थियों से इन्द्रवज्र बनाया हो, चाहे स्वर्ग से गंगा को धरती पर लाया गया हो, जो भी उपाय किया गया हो, लेकिन किया जरूर गया।

ऐसे बड़े उपाय भगवान के द्वारा ही सम्भव हैं, इनसान के द्वारा यह सम्भव नहीं है। भगवान को पुकारने के लिए हमने इस समय में एक बड़ा उपयोगी और बड़ा ही आवश्यक उपाय निकाला है। यह जोश बढ़ाने वाला उपाय आपके सामने है और आपको बताया भी जा चुका है कि अब यज्ञ वैसे नहीं होने चाहिए, जिनमें कि सैकड़ों-हजारों रुपये खर्च हो जाते हैं। जनता भी देने लायक स्थिति में नहीं है और यदि देने लायक भी हो, तो जनता में से हरेक का यह ख्याल है कि यज्ञ से पानी बरसना चाहिए और यज्ञ से पानी बरसने की सम्भावना के बारे में हम आपको कोई विश्वास नहीं दिला सकते। फिर इस साल का पूरा समय कैसे कटेगा ? हम आपको इस बात की ठीक जानकारी दे करके डराना नहीं चाहते, हैरान नहीं करना चाहते, पर यह जरूर कहेंगे कि वर्षा का सम्बन्ध उससे जुड़ा हुआ है। यज्ञ के सम्पन्न होने पर—वर्षा न होने पर जनता क्या कहेगी आपको ? आपका उपहास होगा और यज्ञ का अपमान होगा, हमारा अपमान—जिन्होंने स्कीम बनायी है। इसलिए यज्ञों को तो हरेक जगह जैसे पिछले साल हुए थे वैसे ही करना है। अन्तर सिर्फ इतना है कि उनके स्थान पर नये यज्ञों की शैली प्रचलित की है, जो गरीब से गरीब व्यक्ति के यहाँ भी आसानी से सम्पन्न करा सकते हैं।

वे कौन-से यज्ञ हैं ? वे दीपयज्ञ हैं। दीपयज्ञ में एक थाली में पाँच दीपक रखे जाते हैं। यह यज्ञ का सामान हुआ। थाली अपने घर से लेकर के चौक पूरकर उसे सजा लें, एक रुपये का सामान उसमें रख लें, तो बड़े मजे से यह यज्ञ हो सकता है। यज्ञ के कर्मकाण्ड तो सब वही हैं, जो सामान्य यज्ञ में हुआ करते हैं। दो एक बातें कम कर दी हैं जैसे—घृत-अवघ्राणम्, भस्मधारणम्, वसोधारा आदि। बाकी यज्ञ के देव-आवाहन मन्त्र और यज्ञ का सारा स्वरूप वही है। केवल वस्तुएँ कम कर दी गयी हैं। यज्ञ की वस्तुएँ कम किये जाने में कोई बुराई है ? नहीं, कोई बुराई नहीं है। यहाँ याज्ञवल्क्य-जनक का संवाद कुछ ऐसा ही है। जनक ने पूछा कि कोई खराब वस्तु हो और हम यज्ञ न कर पाएँ, तो कैसे हवन करें ? तब याज्ञवल्क्य जी ने कहा—"यज्ञ करना तो आवश्यक है। वह तो करना ही चाहिए। गायत्री और यज्ञ तो हमारी भारतीय संस्कृति के माता-पिता हैं। इनका पूजन तो करना ही चाहिए। इनको तो भोजन कराना ही चाहिए। वायुमण्डल, वायु-संशोधन के कार्य के लिए तो इन्हें करना ही चाहिए। वातावरण संशोधन का काम तो हाथ में लेना ही चाहिए, पर वस्तुएँ कम कर सकते हैं।" तब राजा जनक ने पूछा—"क्या वस्तुएँ कम कर सकते हैं ?" उन्होंने कहा—"घी अगर आपके पास न हो, तो केवल हवन-सामग्री से जो वनस्पतियों से बनती है, उससे ही आप हवन कर लें।" इस तरह बिना घी के आप हवन कर लें। उन्होंने फिर कहा—"वर्षा नहीं होगी तो वनस्पतियाँ भी पैदा नहीं होंगी। तो फिर कैसे हवन करेंगे ?" तो याज्ञवल्क्य जी ने कहा—"आप लकड़ियों की समिधाओं से भी हवन कर सकते हैं।" कहने का आशय है कि कम से कम वस्तुओं से हवन कर सकते हैं। इसी तरह मुसीबत के समय में आपात्कालीन परिस्थितियों में हमने दीपयज्ञ करने के लिए कहा है लोगों से और लोगों ने स्वीकार भी किया है। इसको आपको भी करना चाहिए। इसमें जो श्लोक बोले जाएँगे, भावनाएँ जो आपको मिलेंगी, उसके कारण से पुण्य उतना ही मिलेगा जितना कि यज्ञकुण्डों को खोदकर के हजारों रुपया इकट्ठा जो किया करते थे। लगभग उतना ही पुण्य मिल जाएगा इस यज्ञ से।

यह यज्ञ का तरीका है—एक। यज्ञ का तरीका नम्बर दो—सबेरे प्रातःकाल सूर्योदय के समय पर यज्ञ प्रारम्भ हो जाना चाहिए। जब तक धूप फैलती है और ठण्डक रहती है। अपने घर के काम का वक्त होता है, दुकान खोलने का वक्त होता है। उस समय से सबेरे का कार्यक्रम तो वैसे ही समाप्त हो जाएगा, यह भी आपको भुला नहीं देना चाहिए। सायंकाल का एक और कार्यक्रम है। सायंकाल का कार्यक्रम क्या है ? वह कार्यक्रम यह है कि सायंकाल को कीर्तन किया जाए। पुराने कीर्तनों और हमारे कीर्तनों में

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थोड़ा फर्क है। पुराने कीर्तनों में तो केवल रामभज हुआ करते थे। 'रामभज' में हरे रामा, हरे रामा, हरे कृष्णा, हरे कृष्णा; बस केवल रामधुन होती थी। हमारे कीर्तनों में विचार और टिप्पणियाँ भी जुड़ी हुई हैं। भगवान का नाम भी है और भगवान् के नाम के साथ में विचार भी जुड़े हुए हैं और टिप्पणियाँ भी जुड़ी हुई हैं। यह आपको सौ-सौ कुण्डीय यज्ञ के समय भी बताया गया था। सौ कुण्डीय यज्ञ के लिए हमने बुलाया भी था। सौ कुण्डीय यज्ञ में आप भी उत्साहपूर्वक भाग ले करके आये थे। अब भी आप सौ कुण्डीय यज्ञ कर सकते हैं। सौ रुपये लागत आयेगी इसमें। बड़े मजे से इसे आप कर सकते हैं।

यज्ञ के बाद में, व्याख्यान के बाद में देवदक्षिणा आवश्यक है। देवदक्षिणा में यह आवश्यक है कि आप अपनी बुराइयों का त्याग करें और अपनी अच्छाइयों को बढ़ाएँ। ये भी वातावरण-संशोधन का एक बड़ा कार्य है। जो प्रकृति हमसे नाराज हुई है, जो मुसीबतें आयी हैं, ये सब मनुष्य के स्वभाव, मनुष्य के गुण, मनुष्य के कर्म, मनुष्य की वृत्तियों में फर्क आ जाने के कारण आयी हैं। आप इसको भी ठीक कर सकते हैं। यानि कि यज्ञ के बाद में जब देवदक्षिणा दी जाए तो उसमें अपनी कोई न कोई एक बुराई छोड़ी जाए और कोई न कोई एक अच्छाई बढ़ायी जाए। ये काम करना भी आवश्यक है। यही देवदक्षिणा है। दक्षिणा के लिए पंडित जी को एक हजार रुपये देंगे और उनको पाँच कपड़े देंगे, खाना देंगे, नहीं। ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं। ये सामूहिक यज्ञ है। देवी-देवताओं का हम आह्वान करेंगे, उनका पूजन और सम्मान करेंगे। यज्ञ में जो आदमी आयेंगे, जो भी यज्ञ में सम्मिलित होंगे, जो भी हवन के मन्त्र बोलेंगे, जो भी आहुतियाँ देंगे वे सारे के सारे सहकर्मी होंगे, सहयोगी होंगे। इनमें से कोई ऐसा पण्डित नहीं होगा, जो दक्षिणा के लिए आया हो। यदि कोई पैसे की नौकरी के लिए आता है वह देवता नहीं हो सकता, ब्राह्मण नहीं हो सकता ! पैसे की, नौकरी जरूरत नहीं है आपको ! लेकिन देवी-देवताओं को दक्षिणा तो देनी ही पड़ेगी, जिनको आपने बुलाया है, जिनसे आपने उम्मीद रखी है कि इन्द्र देवता हैं, वर्षा करें तो आखिर उनके चरणों पर हमें फूल तो रखना चाहिए। देवता आयेंगे तो कुछ पूजन-अर्चन तो करना ही चाहिए आपको। पूजन करने की विधियों में ये भी शामिल है कि आपको देवदक्षिणा के रूप में कोई न कोई बुराई त्यागनी पड़ेगी और कोई एक अच्छाई धारण करनी पड़ेगी।

ये सौ कुण्डीय यज्ञ क्वार की पूर्णिमा यानी कि शरद पूर्णिमा को प्रारम्भ करेंगे और चैत्र की पूर्णिमा को समाप्त करेंगे। ये पूरे छह महीने हो जाते हैं। छह महीने के बीच आपको एक कार्य करना चाहिए कि अपने गाँव में, अपने नगर में, अपने मोहल्ले में प्रत्येक घर के साथ सम्पर्क बढ़ाना चाहिए। यह सम्पर्क यज्ञ है। सम्पर्क यज्ञ का अर्थ है कि प्रत्येक घर में आप जाइये और प्रत्येक घर के लोगों को तैयार कीजिए। आपके कुटुम्ब को, आपके परिवार को, आपके घर के लोगों को भी हमको ये कुछ शिक्षाएँ देनी हैं और साथ-साथ में भगवान् का स्मरण भी क़राना है। आपके घर में सुख-शान्ति भी लानी है। अतः प्रत्येक घर में एक यज्ञ का आयोजन करने का कार्यक्रम आपको इन छह महीनों में जारी रखना चाहिए। आवश्यकता हुई तो फिर कहेंगे कि छह महीने से भी ज्यादा जारी रखिए। फिलहाल आपको छह महीने का संकल्प तो दिला ही रहे हैं। इन छह महीनों में अपने नगर में, अपने गाँव में, अपने मोहल्ले में कोई घर ऐसा मत रहने दीजिए, जहाँ यह एक कुण्डी यज्ञ न हुआ हो।

एक कुण्डी यज्ञ का आप मतलब तो समझ ही गये हैं न ? एक थाली में पाँच धूपबत्तियाँ और पाँच दीपक रखें। थाली को हल्दी, रोली अथवा आटे द्वारा सजा भी सकते हैं। ये दैनिक उपयोग की वस्तुएँ हर घर में रहती ही हैं। यदि आपको ये मालूम पड़ता हो कि एक घण्टे के समय में पाँच धूपबत्तियों में खर्च ज्यादा हो जाएगा, पाँच दीपक में खर्च ज्यादा हो जाएगा, तो आप किफायत भी कर सकते हैं। पाँच दीपक हैं पहले एक जलाइये। पहला बुझने लगे तो दूसरा जला दीजिए। दूसरा बुझने लगे तो तीसरा जला दीजिए, तीसरा बुझने लगे तो चौथा जला दीजिए, फिर पाँचवाँ जला दीजिए। इस तरीके से एक-एक दीपक से काम चल सकता है। पाँच दीपक की स्थापना तो करनी ही पड़ेगी, क्योंकि यह पाँच देवों का आह्वान है। इसमें पाँच प्राणों का आह्वान है, पाँच तत्त्वों का आह्वान है। अतः पाँच दीपकों की यह स्थापना तो करनी ही पड़ेगी। धूपबत्ती के सन्दर्भ में भी यही बात है। अगर आपको कहीं किफायत की बात मालूम पड़े और ये मालूम पड़े कि गरीबी-बहुत ज्यादा है, तो पैसे का खर्च और भी कम कर सकते हैं। तब पाँच धूपबत्तियों में से एक जला दीजिए, चार बिना जली रहने दीजिए, एक धूपबत्ती जलाकर खत्म होने को हो, तब दूसरी जला दीजिए। जब वह खत्म हो तो तीसरी फिर चौथी और पाँचवीं जलाएँ। इस तरीके से पाँच बार में पाँच धूपबत्तियों के जो आपने बण्डल बनाये और पाँच दीपक बनाये, उनको एक-एक करके पाँच हिस्से में जलाएँ तो पाँचवें हिस्से से आपका काम चल जाएगा और किफायत भी हो जाएगी। मैं किफायत की बात इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि अगले दिनों आपको पैसे की तंगी पड़ेगी, ज्यादा खर्च करना मुसीबत लायेगा। जो आदमी ज्यादा खर्च करता है, वह ज्यादा फायदे की भी उम्मीद करता है, लेकिन जिसका थोड़ा खर्च हुआ है उस बेचारे का थोड़ा समाधान हो जाए तो भी काम चल जाता है। यज्ञ इसीलिए लोगों को अखरता है। यज्ञ के नाम पर कम से कम खर्च कराना चाहिए। जो विधियाँ आपको बतायी गयी हैं, उसी के हिसाब से हर घर में जाकर के यज्ञ कराना चाहिए।

घरों में जो यज्ञ आप कराएँ, उसमें ये कुछ बातें शामिल करें। वास्तव में यह हम परिवार-गोष्ठियों के रूप में पारिवारिक यज्ञ कर रहे हैं। इसमें परिवार-निर्माण का उद्देश्य छिपा हुआ है, जो कि समाज-निर्माण से भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्धित है और यज्ञ के निर्माण से भी सम्बन्धित है। यज्ञ के निर्माण और समाज-निर्माण के बीच की इकाई यह परिवार-निर्माण है। परिवार-निर्माण पारिवारिक यज्ञों के माध्यम से होगा। इसमें सुबह परिवार यज्ञ किया जाए और शाम को कीर्तन की व्यवस्था की जाए। भले ही महिलाएँ मिल-जुलकर कर लें। कोई बात नहीं है, पर करना जरूर चाहिए। लेकिन साथ में जो देव-दक्षिणा वाला प्रकरण है, उसे नहीं भूलना चाहिए। देवदक्षिणा हर घर के यज्ञ में भी होनी चाहिए और क्या-क्या होना चाहिए ? कुछ खास बातें हैं जो जरूर करनी चाहिए। प्रथम तो यह कि प्रातःकाल सूर्योदय के समय पर भगवान का स्मरण करना। इस समय यह बहुत ही आवश्यक है। सूर्योदयकाल की अपनी खास विशेषता है। चाहे सुबह कर लेंगे, दोपहर को कर लेंगे, शाम को कर लेंगे ! नहीं भाईसाहब ! बिल्कुल सबेरे ही सूर्योदय के समय पर ही नामस्मरण करना होगा, चाहे आप नहाये हों या न नहाये हों। सूर्योदयकाल में एक ही तरीके से, एक ही समय में, एक ही प्रकार का कार्य करने से उसकी शक्ति सौ गुनी हो जाती है, इसलिए यह प्रातःकाल का जप आवश्यक बताया गया है। उसके बारे में आप घर-घर में जाकर हर आदमी से मिलकर कहिए कि प्रातःकाल का जप करना शुरू करें, चाहे दस मिनट का ही क्यों न हो।

इसके सिवाय एक और बात है। हमारे देश को गिराने वाली कुछ चीजें हैं। उनसे अपने आपको उबारने की कोशिश करनी चाहिए। शिक्षा की कमी इस तरह की है कि आदमी जानवर की तरह भयानक हो जाता है। न उसके ज्ञान के कपाट खुलते हैं, न उसको नयी जानकारियाँ मिलती हैं, न समाज में क्या हो रहा है ये पता चलता है, न उसे, लोग किस तरीके से आगे बढ़ रहे हैं ये जानकारियाँ मिलती हैं। वह एक तरीके से कुएँ का मेढ़क बनकर रहता है। इसलिए आपको शिक्षा के बारे में प्रौढ़-शिक्षा आन्दोलन को इन्हीं यज्ञों के साथ में जोड़कर प्रारम्भ कर देना चाहिए। आप लोगों में से जो कोई पढ़े-लिखे हों, उन्हें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि "हम पाँच बिना पढ़े-लिखों को तो जरूर ही पढ़ा देंगे।" चाहे तो आप उनके घर जाइये, चाहे उन्हें अपने घर बुलाइये, चाहे एक महीने पढ़ाइये या छह महीने पढ़ाइये, चाहे दो वर्ष पढ़ाइये। आप यहाँ से एक संकल्प लेकर के जाइए कि "पाँच व्यक्तियों को तो पढ़ाएँगे ही।" परिवार में होने वाले यज्ञों की यह प्रमुख बात है। जो व्यक्ति पढ़ा नहीं सकते, वे पढ़ तो सकते हैं। घरों में बुड्ढे-बुढ़ियाँ, जवान स्त्रियाँ बिना पढ़ी होती हैं। उनको पढ़ाने का एक आन्दोलन हमें इसी यज्ञ-योजना में शामिल करना है।

दूसरा एक और आन्दोलन है, जो इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। वह क्या है ? जो कुछ भी हम कमाते हैं वह सब पैंदे के छेद में से होकर निकल जाता है। फूटे हुए घड़े में पानी चाहे जितना डालते जाइये, पर पैंदे में बने छेद में से होकर सब निकल जाएगा और घड़ा खाली का खाली बना रहेगा। इस पैंदे का छेद है—हमारे समाज में ब्याह-शादियों में होने वाला खर्च। खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र, बेईमान बनाती हैं। यह तो हमने आपको पच्चीसों बार कहा है और कहते रहेंगे हमेशा ! हमारा देश जो तबाह हुआ है, जो गरीब हुआ है, जो बर्बाद हुआ है इसमें ब्याह-शादियों वाली बात ऐसी है कि इसको अगर खर्चीला बनाये रखा गया तो आप समझिये कि हम आमदनी बढ़ाने का चाहे जितना प्रयत्न करें तो भी हम गरीब के गरीब बने रहेंगे। इसके लिए क्या करना चाहिए ? आप सब लोगों को इसके लिए ये प्रतिज्ञाएँ करनी चाहिए, अभिभावकों को ये प्रतिज्ञाएँ करनी चाहिए कि "हम अपने बच्चे और बच्चियों की शादियों में धूमधाम नहीं करेंगे—एक। दिखावा नहीं करेंगे—दो। दहेज नहीं लेंगे और न देंगे—तीन और जेवर नहीं चढ़ायेंगे—चार।"

ब्याह-शादियों में जेवर और दहेज का कितना बड़ा सम्बन्ध है, ये आपको मालूम नहीं है। लड़के वाला माँगता है—दहेज। क्यों माँगता है ? क्योंकि उससे जेवर माँगा जाएगा। लड़की वाला माँगता है जेवर और लड़के वाला माँगता है दहेज। ये दोनों ही बातें मरेंगी तो एक साथ ही मरेंगी। अगर जिन्दा रहेंगी तो दोनों ही बातें जिन्दा रहेंगी। आप अकेले दहेज को बन्द करना चाहें और ये चाहें कि हमारी लड़की पर जेवर जरूर चढ़ाये, तो बेचारा बेटे वाला कहाँ से लायेगा जेवर के लिए सोना ? आज सोने का कितना महँगा भाव है ? इसमें अगर मान लो कोई आदमी पचास ग्राम का भी जेवर बनवाना चाहे तो उसको कितना रुपया चाहिए ? यह कहाँ से आएगा ? अतः जेवर के लिए वह दहेज माँगता है, तो क्या बुरा करता है ? दहेज के बन्द करने की यदि बात करनी चाहिए, तो जेवर को बन्द करने की बात भी करनी चाहिए, अतः आप ब्याह-शादियाँ इस तरीके से कराइए जिसमें न दहेज दिया जाए, न जेवर लिए जाएँ, जिसमें न बारात चढ़ाई जाए, न धूमधाम की जाए। न बैण्डबाजे बजाएँ और न बेकार के काम किये जाएँ। घरेलू उत्सव होते हैं। हमारे घर में होली-दीपावली होती है, तीज-त्योहार होते हैं, उसी तरीके से पाँच आदमी उस तरफ के आ जाएँ और पाँच यहाँ घर के हों। अपने घर में छोटा-सा हवन कर लिया जाए और शान्ति से ब्याह कर दिया जाए और दूसरे दिन विदा कर दी जाए। इस तरह के विवाह बहुत कम दाम पर होते हैं। किसी को दहेज ही देना हो तो अपनी बेटी के लिए इन्दिरा विकास पत्र में रकम जमा कर सकता है, जो पाँच साल में दूनी हो जाएगी।

इस तरह की ब्याह-शादियों की परम्परा चलाना भी हमारा इस वक्त का कार्यक्रम है। दहेज हिन्दू समाज का कोढ़ है। यह हिन्दू समाज का कलंक है। शिक्षा का अभाव होना हमारे देश के लिए कलंक है। दहेज का, ब्याह-शादियों में फिजूलखर्चियों का होना हमारे देश का कलंक है। इसको दूर करने के लिए आप लोगों को इसी तरह के कार्यक्रम का प्रयास करना पड़ेगा और इन्हीं यज्ञों के साथ में इन दो कार्यक्रमों को भी मिलाना पड़ेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्याह-शादियों का एक और भी तरीका है। ज्यादातर होता यह है कि मोहल्ले वाले, पड़ोसी, यार-दोस्त, मित्र और सम्बन्धी ये कहते हैं कि नहीं साहब, नाक कट जाएगी, बात बिगड़ जाएगी। ऐसा तो नहीं होना चाहिए। धूमधाम तो होनी ही चाहिए। मोहल्ले में फलाने का इतना बड़ा ब्याह हुआ था, आपको क्यों नहीं करना चाहिए ? जहाँ इस तरह की मुसीबतें हों, जहाँ इस तरह के गिद्ध-कौए चारों ओर से घेरे हों आपको और आपको यह मालूम पड़ता हो कि इस मुसीबत से निकलने का कोई उपाय नहीं है, तो हम आपको निमन्त्रित करते हैं कि आप कन्या को ले आइये, लड़के को ले आइये और पाँच-पाँच आदमी दोनों पक्षों के आ जाइये और यहाँ शान्तिकुंज में आप बड़े मजे में विवाह करके ले जाइये—बिना खर्च किये। यहाँ किसी तरह का खर्च नहीं पड़ेगा। न यहाँ किसी तरह का दिखावा करना पड़ेगा, न फर्नीचर देना पड़ेगा न कोई दहेज माँगने की हिम्मत करेगा, न कोई जेवर चढ़ाने का नियम है। पाँच आदमी आएँगे। आप यहाँ खाना खाइए। यहाँ के चौके में एक हजार आदमी खाना खाते हैं। पाँच आदमी बारात के आ जाएँ; वे हमारे मेहमान की तरह खाना खा जाएँगे तो हमारा क्या बिगड़ जाएगा ? इसलिए इस तरह के विवाहों का, मेरी समझ से ये ज्यादा है कि इस रिवाज को फैलाने के लिए आप स्थानीय स्तर में सफल नहीं हो पाते हैं, तो आप इसमें तो बड़ी आसानी से सफल हो जाएँगे कि हमारे जो विवाह होंगे वे हमारे गुरुद्वारे में होंगे और वे शान्तिकुंज में होंगे। शान्तिकुंज में विवाहों का यही प्रचलन चलेगा। यह तीर्थस्थान भी है। देवताओं का यहाँ निवास भी है। यहाँ यज्ञ भी होता है, ऐसे शुद्ध स्थान पर विवाह-संस्कार सम्पन्न करें। जैसे शुभ मुहूर्त की बात सोची जाती है वैसे ही आप शुद्ध स्थान की बात सोचिए। मुहूर्त की बात मत सोचिए ? आप कभी भी ले आइये। यहाँ हमेशा ब्याह हो जाता है, क्योंकि यहाँ शुभ वातावरण है, शुभ भूमि है, शुभ एवं पुनीत स्थान है। इसलिए यहाँ मुहूर्त की जरूरत नहीं है, आप इस बात को जान लीजिए।

दो बातें और रह जाती हैं इसके सिवाय। पहली है नशेबाजी की बात, आप नशेबाजी को छुड़ाइए, नहीं तो अगली पीढ़ियाँ घटते-घटते, गिरते-गिरते किसी काम की न रह जाएँगी। आपको यह तो मालूम ही है कि नशे से शरीर मारा जाता है, बुद्धि भी मारी जाती है, पैसा भी बर्बाद हो जाता है। कुटुम्ब भी तबाह हो जाता है और बच्चों का भविष्य भी खराब हो जाता है। आदमी ऐसा बन जाता है जिसका न कोई विश्वास करता है, न कोई पास बैठने देता है। पीढ़ियों की यह गिरावट अगर बनी रही तो पचास-चालीस वर्ष में एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी कमजोर होगी। दूसरी के बाद तीसरी कमजोर होगी और हम वास्तव में फिर इस लायक हो जाएँगे कि हमको अपने शरीर को धकेलना मुश्किल हो जाएगा। इसीलिए करना आपको यह चाहिए कि नशेबाजी के विरुद्ध भी जो कुछ आपके लिए सम्भव हो, उसको जरूर करना चाहिए।

नशेबाजी के सिवाय एक और बात है। साग-भाजी उगाने की तो हम कह नहीं सकते, क्योंकि जब वर्षा का अभाव होगा तो आप साग-भाजी कहाँ से उगा पाएँगे ? साग-भाजी मनुष्य के जीवन के लिए उतनी ही आवश्यक है—जितना अनाज। अनाज से कम आवश्यक नहीं है। आप साग-भाजी उगाने के लिए अपने घरों में इन्तजाम कीजिए। पानी आप पीते हैं सो ठीक है, पर जब आप कुल्ला करते हैं, नहाते हैं तो पानी बहकर बेकार चला जाता है। उस पानी को इकट्ठा कर लीजिए और अपने घरों में, गमलों में, टोकरों में, पिटारों में, किसी में जो आपने उगा रखा है, उसी में उस पानी को आप डाल दीजिए। जो आपके स्नान से बचा हुआ है, जो आपके पीने से बचा हुआ है, जो आपके हाथ धोने से बचा हुआ है—उस पानी को भी साग-भाजी में डाल दें, तो साग-भाजी पैदा हो सकती है। मान लीजिए कि उस साग-भाजी से आप घर का पूरा खर्चा नहीं भी चला सकते हैं, तो उससे कम से कम चटनी का काम तो चल ही सकता है। रूखी रोटी खाने के बजाय आप चटनी से तो काम चला सकते हैं। चटनी ही एक ऐसी चीज है कि जिससे हमारे लिए बड़ी सहूलियत मिलती है। आपकी ये—धनियाँ है, पोदीना है, पालक है, अदरक है, मिर्च है और टमाटर है। ये चीजें तो आसानी से लगा सकते हैं। कोई और साग नहीं बो सकते आप, चटनी का सामान तो आसानी से इकट्ठा कर सकते हैं।

तो साहब ! साग-भाजी का लगाना एक, नशेबाजी का विरोध करना दो, ब्याह-शादियों में खर्च न होने देना—सादगी के साथ ब्याह करना तीन और प्रौढ़ शिक्षा के बारे में ज्यादा से ज्यादा प्रचार करना—चार। छोटे बच्चों का तो यह भी है कि गवर्नमेण्ट स्कूलों में पढ़ा लेते हैं लेकिन बड़ों की संख्या तो दो-तिहाई है। दो तिहाई हमारे देश के बिना पढ़े-लिखे लोग हैं। उनको शिक्षित करने की बात पर हम लोगों को ध्यान देना चाहिए, तैयारी करनी चाहिए। अब इन सभी बातों को ध्यान में रखकर के हमारे यज्ञों की पूर्णता इन बातों में जोड़नी चाहिए कि आपके यज्ञ के साथ-साथ में भावनाएँ जुड़ी हुई हों, सेवाएँ जुड़ी हों। देश को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने की मनोवृत्ति भी जुड़ी हुई हो। यज्ञ भी जुड़ा हुआ हो, कीर्तन भी जुड़ा हो और भगवान का नाम स्तवन भी जुड़ा हुआ हो। साथ ही अपनी बुराइयों को छोड़ने और अच्छाइयों को बढ़ाने का प्रयत्न भी जुड़ा हुआ हो। इन सबको मिलाकर चलेंगे तो आप यह मान लीजिए कि यज्ञ में जो भी बड़े से बड़ा कार्यक्रम होगा—इन कार्यक्रमों के आधार पर ही वह पूरा हो जाएगा और वही फल मिलेगा आपको, जो बड़े यज्ञों से मिलना चाहिए। मुझे आशा है कि आप इन बातों को ध्यान से सुनेंगे और उसको कार्यान्वित करने में कुछ कसर उठा नहीं रखेंगे—इतना ही निवेदन है आप सब लोगों से।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आपत्तिकाल का अध्यात्म

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

कुछ समय ऐसे होते हैं, जिनको हम सामान्य कह सकते हैं। सामान्य समय में सामान्य प्रकार की गतिविधियाँ चलते रहने का औचित्य समझ में आता है। रोज आदमी पैदा होते हैं, बढ़ते हैं, खेती-बाड़ी करते हैं, ब्याह-शादी होते हैं, बाल-बच्चे होते हैं, बड़े होते हैं और मौत के मुँह में चले जाते हैं। यह सामान्य क्रम है जो चलता रहता है। इसमें अचम्भे की कोई नई बात नहीं है, लेकिन कभी-कभी कोई ऐसे समय भी आते हैं, जिनको हम विलक्षण कह सकते हैं। जिनको 'आपत्तिकाल' कहा जा सकता है। मनुष्य के जीवन में आपत्तिकाल भी कई बार आते हैं। आपत्तिकाल में सामान्य प्रकार की प्रक्रियाएँ लड़खड़ा जाती हैं। घर में आग लग जाए, छप्पर जल रहा हो, उस समय खाना, नहाना सब कुछ छोड़कर जलते छप्पर पर पानी डालने के लिए सभी दौड़ पड़ते हैं। दुर्घटना हो जाए तो ऑफिस जाना छोड़कर पहले बच्चे को अस्पताल ले जाएँगे और प्लास्टर कराकर आएँगे। यह क्या कह रहे हैं ? आपत्तिकाल की बात कह रहे हैं ? आपत्तिकाल की कीमत जो समझते हैं, उनको यह भी ध्यान है कि आपत्तिकाल के लिए आपत्तिकालीन व्यवस्थाएँ बनाई जाती हैं।

देश के ऊपर जब कोई दुश्मन हमला कर देता है तो क्या करना पड़ता है ? दुश्मन बनना पड़ता है। सैनिकों की छुट्टियाँ बन्द कर दी जाती हैं। नहीं साहब, हमारा ब्याह है, मुहूर्त भी छँट गया है। आपका ब्याह होगा अगले साल में, अभी तो दुश्मन ने हमला कर दिया है, इसलिए आपकी छुट्टियाँ रद्द की जाती हैं और आपको लड़ने के लिए जाना होगा। हमारी माँ मर गई है उसका श्राद्ध करना है, तो अगले साल करना, इस वक्त बन्द कीजिए। यह सब सामान्य समय की बातें हैं। सामान्य समय पर श्राद्ध भी करना चाहिए। बाप बीमार है तो उसका इलाज भी करना चाहिए। सामान्य समय पर अपनी लड़की बड़ी हो गई है तो इसके लिए दूल्हा भी ढूँढ़ना चाहिए। पर असामान्य समय पर यदि आप मिलिट्री में हैं तो मोर्चे पर जाना चाहिए और अगर मिलिट्री में नहीं हैं तो यदि भर्ती के लिए हुक्म दे दिया गया है कि नवजवानों में से हर एक को भर्ती होना पड़ेगा, तब आप भर्ती हो जाइए। नहीं साहब, हमारा बी. ए. सेकण्ड ईयर है, हम फेल हो जाएँगे, थर्ड डिवीजन हो जाएँगे। आपकी बात सही है, लेकिन यह उस समय के लिए सही है, जबकि सामान्य समय हो। सामान्य समय में आपको ट्यूशन करना चाहिए, पढ़ना चाहिए और जब आपत्तिकाल है तब पढ़ाई बन्द करनी चाहिए। क्या करें ? आप एन. सी. सी. सीखिए और तुरन्त मिलिट्री में चले जाइए, क्योंकि यह आपत्तिकाल है। आपत्तिकाल की मर्यादा जो आदमी समझते हैं, वे यह जानते हैं कि इसमें सामान्य जीवन के क्रम और सामान्य जीवन की व्यवस्थाओं के बारे में बाहर से अलग से विचार करना पड़ता है।

साथियो ! मैं यह कह रहा था आपसे कि यह आपत्तिकाल है, जिसमें से आप गुजर रहे हैं। इसे अगर आप हमारी आँखों से देख पाएँ तो आप देख सकते हैं कि कैसे तूफान आ रहे हैं, कैसी आँधियाँ आ रही हैं ? आपको अपनी आँखों से दिखाई नहीं पड़ सकता, क्योंकि आप सामने की चीजें देखते हैं। आपको केवल वही चीज दिखाई पड़ती है जो सामने हैं। जमीन आपको चलती हुई दिखाई नहीं पड़ सकती, क्योंकि आप सामने की चीजें देखते हैं। आपको केवल वही चीजें दिखाई पड़ सकती हैं, जो सामने हैं। आपकी आँखें बहुत छोटी हैं। आप तो कहेंगे कि मकान कहाँ भाग रहे हैं, पेड़ कहाँ भाग रहे हैं, वे जहाँ रात में थे वहीं पर अब भी हैं। सब गलत बात है। बेटे, एक मिनट में ६००० मील की चाल से पृथ्वी इस तेजी से भागती हुई चली जा रही है कि उसके सामने बन्दूक की गोली भी कोई चीज नहीं है। इस तेजी के साथ दनदनाती हुई पृथ्वी भाग रही है। आपको तो दिखाई नहीं देता, पर चन्द्रमा की जमीन पर जो लोग गए थे उन्होंने आकर खबर दी है कि चन्द्रमा की जमीन पर हमारी पृथ्वी तीन गुना बड़ी दिखाई देती है। वह ग्लोब के तरीके से रंग-बिरंगी चलती हुई दिखाई पड़ती है। यह क्या है ? आँखों का फर्क है जो आपको दिखाई नहीं देता कि क्या हो रहा है ? गूलर के फूल के बीच में बन्द रहने वाले भिनुगे को कुछ पता नहीं है कि कब रात हुई, कब दिन। धूप है या बरसात, महामारी फैली है या सब कुछ ठीक चल रहा है। आपकी अकल और बनावट अगर गूलर के भिनुगे की तरीके से हो तो मैं कुछ नहीं कह सकता। तब आपके लिए दिन सामान्य हैं। जैसे हमेशा थे वैसे ही अब भी जगत् की गति का असर आपके ऊपर नहीं हो सकता। जिनके लिए वही रोटी खाना, पैसा कमाना, बच्चे पैदा करना, इसके अतिरिक्त और कोई समस्या नहीं है, उन्हें मूढ़ के सिवाय और क्या कहा जाए ?

जिनके पास न अक्ल है, न दूरदृष्टि है और न ही जिन्हें कर्त्तव्यों का भान है, उनके लिए मैं कुछ नहीं कह सकता। पर आपको मैं उनसे अलग मानता हूँ कि आप अलग किस्म के आदमी हैं। आप ऐसे आदमी हैं जिनको कि भगवान ने तीसरी वाली आँख देना शुरू कर दिया है। तीसरी वाली आँख क्या होती है ? वह जो हम त्राटक से जाग्रत कराते हैं। तीसरी आँख खोलने के लिए प्रकाश का ध्यान कराते हैं। तीसरी आँख कहते हैं प्रकाश को जिससे कि बहुत दूर तक दिखाई पड़ता है। दूर की बातें दिखाई पड़ती हैं। हमको मौत दिखाई पड़ती है, अगला जन्म दिखाई पड़ता है। हमको अपना भविष्य दिखाई पड़ता है, भगवान दिखाई पड़ता है, मरने के बाद का चौरासी लाख योनियों का चक्र दिखाई पड़ता है और यह दिखाई पड़ता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

है कि हमारी अवांछनीय गतिविधियाँ जो आज हैं, वे हमारे लिए क्या नुकसानदायक हो सकती हैं। आगे चलकर इनकी क्या प्रतिक्रिया हो सकती है। आज हम जुलाब की गोली खा रहे हैं तो कल क्या हो सकता है ? यह क्या है ? यह समझदारी की निशानी है, जिसमें कि आदमी को अपने बाबत और दुनिया की बाबत आगे की बात दिखाई पड़ती है। वर्तमानकालीन यह युगसंध्या है। युगसंध्या किसे कहते हैं ? इसका एक नमूना मैं आपको बता सकता हूँ। बताइए क्या है ? बेटे, एक युग वह है जिस समय हम एक पेट में बैठे हुए थे। पेट में से बैठकर के जब हमारा परिवर्तन हुआ, हमारे जीवन का दूसरा वाला चरण बढ़ा, जन्म हुआ, तो हाहाकार मच गया। यह क्या था आपत्तिकाल था परिवार के लिए। सारे का सारा काम, खाना, पीना सब एक ओर। यह क्या नई आफत आ गई। क्या हुआ था ? हमारा जन्म हुआ था।

नए युग का जन्म होने जा रहा है। दो बातें होनी हैं—एक युग-निर्माण की, दूसरा निर्माण से पहले ध्वंस होना है। ध्वंस भी होना है। इमारत जब बनाई जाती है, तब जमीन की खुदाई करनी पड़ती है। पीछे मिट्टी डालकर कुटाई-पिटाई करते हैं और गड्ढे को ठीक करके तब दीवार की चिनाई की जाती है। "नया मन्दिर बनेगा, खण्डहरी दीवार तोड़ो तुम"—यह गीत लड़कियाँ गाती रहती हैं, आपने सुना नहीं है ? भगवान् के जब अवतार होते हैं तब एक ही काम नहीं करते, मात्र धर्म की स्थापना करते हुए नहीं आते, वरन् अनीति का ध्वंस करते हुए भी आते हैं। भगवान् जब अवतार लेते हैं, तब कल्याण करते ही नहीं आते, वरन् सफाया करते हुए भी आते हैं। सफाया किए बिना नया नहीं बन सकता। निर्माण के लिए ध्वंस आवश्यक है। ध्वंस के बिना निर्माण सम्भव नहीं है। दोनों चीजें आपस में मिली हुई हैं। एक चीज का ध्वंस होता है तो दूसरी चीज का निर्माण होता है। एक आदमी मरता है तो दूसरा जन्म लेता है। नई पीढ़ी पैदा करेंगे। बहुत शानदार नई पीढ़ियाँ पैदा होंगी।

अवतारों की प्रक्रिया के साथ में दोनों बातें एक साथ जुड़ी हुई हैं—एक ओर ध्वंस की, दूसरी ओर निर्माण की। **"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्"**। साधुओं का उद्धार बाद में करेंगे, पहले दुष्कृतों को मारकर खत्म करेंगे। आप सोचते हैं कि भगवानजी आएँगे तो रामराज्य लेकर आएँगे, शक्ति लेकर, शान्ति लेकर आएँगे। आएँगे तो सही, पर यह भी ध्यान रखिए कि वे लाखों-करोड़ों के लिए रोना-पीटना और हाहाकार भी लेकर आएँगे। वे दया बरसाएँगे तो क्रोध भी बरसाएँगे। दोनों तरह का सन्तुलन मिलता रहता है, जब कभी परिवर्तन की संध्या वेला होती है। परिवर्तन की इस संध्या में आपको न तो कोई विशेष-समय की माँग दिखाई पड़ती है, न कर्त्तव्यों की पुकार सुनाई पड़ती है और न ही भगवान का अवतार दिखाई पड़ता है। चारों ओर क्या हो रहा है, आपको दिखाई पड़ना चाहिए। अगर आप विमूढ़ ही बने रहे, रोटी खाने और पैसा कमाने से लेकर बच्चे पैदा करने तक के चक्र में ही पड़े रहे तो फिर मैं क्या कह सकता हूँ ? लेकिन अगर आपके भीतर जीवन आ गया होगा, जाग्रति आ गई होगी तो आपकी एक और आँख खुल गई होगी, जिसको त्राटक साधना में हमने बहुत महत्त्व दिया है।

पंचकोशीय उपासना में इस वर्ष हमने त्राटक को बहुत महत्त्व दिया है और कहा है कि आपकी मदद करने के लिए हम तैयार हैं। यह आपत्तिकाल है, इसलिए आप कोई विशेष उपासना न करें तो भी कोई हर्ज की बात नहीं है। आपके बदले हम कर देंगे। आप अपनी उपासना थोड़ी देर करें तो भी काम चल सकता है। नहीं गुरुजी, हम तो योगाभ्यास सीखेंगे, कुण्डलिनी जागरण सीखेंगे। बेटे, यह इतना सरल और सस्ता नहीं है जितना कि तू समझता है। इसमें सारे के सारे जीवन का कायाकल्प करना पड़ता है। अपने व्यक्तित्व को और चरित्र को उल्टा-पुल्टा करना पड़ता है। यह शीर्षासन है जीवनक्रम का। अध्यात्म क्या है ? जीवन का शीर्षासन है। तू क्या इसे बाजीगरी समझता है कि यह कर लूँगा, वह कर लूँगा। इसमें ऐसा कुछ नहीं है, वरन् इसमें जीवन की दिशा उलटी जाती है, जीवन को पलटा जाता है। योगी की परिभाषा एक ही है कि योगी दिन में सोया करता है और रात में जागा करता है। क्या मतलब है इसका ? यह **"आश्वत्थम् प्राहुरव्ययम्"** अर्थात् पीपल का पेड़ है जिसकी टाँगें ऊपर हैं, जड़ें ऊपर हैं और उसकी शाखाएँ एवं पत्ते नीचे हैं। मतलब यह कि दुनिया वाले जिधर चलते हैं, उससे ये तरकीबें भिन्न हैं। दुनिया वाले लोगों के सोचने, करने का जो तरीका है, आकांक्षाओं, इच्छाओं का जो ढंग है, उससे आध्यात्मिक जीवन की प्रक्रियाएँ भिन्न हैं, जिन्हें अलग ढंग से करना पड़ता है।

मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि पूजा-उपासना के बारे में, सिद्धि-चमत्कारों के बारे में, देवताओं के दर्शन के बारे में, ऋद्धि-सिद्धि पाने के बारे में जो तरह-तरह के खेल-खिलवाड़ आप करते रहते हैं, उसमें न पड़ें तो अच्छा है, क्योंकि आपके लिए वह कठिन पड़ेगा। आप पहली मंजिल पर ही टक्कर खाकर चकनाचूर हो जाएँगे। जब आपसे ब्रह्मचर्य के लिए कहा जाएगा कि शारीरिक ब्रह्मचर्य उतना आवश्यक नहीं जितना कि मानसिक ब्रह्मचर्य आवश्यक है, तब आप दाँत निकाल देंगे और कहेंगे कि शारीरिक ब्रह्मचर्य तो हमसे सधता नहीं, फिर मानसिक ब्रह्मचर्य की बात ही अलग है। चौबीस घण्टे हमारा दिमाग और आँखें दुराचार में लगी रहती हैं। जब बेटे तेरी सारी शक्ति इसी में खर्च हो जाएगी तब फिर तेरा सहस्रार-चक्र कहाँ से जाएगा ? सहस्रार-चक्र में लगने वाली सारी शक्ति इसी में लय कर देंगे, तब फिर वह जाएगा कैसे ? सहस्रार को जाग्रत करने वाला जो प्रकाश है, वह तो आपकी आँखों के रास्ते सारा का सारा बाइब्रेशंस—तरंगों में से नष्ट हो जाएगा, फिर आप कहें कि गुरुजी हमारा सहस्रार जगा दीजिए, तो कैसे जगाएँ हम ? इसके अन्दर जो गर्मी थी, ऊर्जा थी वह तो तूने खत्म कर दी। इसी तरह आहार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के आधार पर जो तेरा रक्त बनता है और जिससे बनता है मन, तमोगुणी अन्न, अनीति, बेईमानी का कमाया हुआ अन्न, हराम का कमाया हुआ अन्न खाकर के तूने उसे तमोगुणी बना लिया है। उसे मैं कैसे स्थिर कर दूँ ? सारे का सारा अन्न जिसे तू खाता है, उसमें तमोगुण ही तमोगुण भरा हुआ है, रजोगुण की सीमा में भी नहीं। पूरा परिश्रम चुका करके जो अन्न खरीदा नहीं गया वह भी बेईमानी का है। केवल चोरी या डाका डालकर लाया गया अन्न ही नहीं, यह भी अभक्ष्य होता है। प्राचीनकाल के पिप्पलादि ऋषि, कणादि ऋषि एवं अन्य दूसरे ऋषि सबसे पहले इस बात के लिए योगाभ्यास करते थे कि हमारे आहार के लिए अन्न कहाँ से आता है, जिससे हमारा रक्त बनता है, शरीर बनता है जिससे हमें अच्छा कर्म करना आता है और हमारा मन, जिसमें अच्छे विचार आते हैं, वह कहाँ से बनता है, अन्न से बनता है।

बेटे, कान में उँगली लगा लेना या हर वक्त नाक में से प्राणायाम कर लेना भर योगाभ्यास नहीं है। योगाभ्यास जीवन का उपक्रम है, जिससे जीवन में परिवर्तन करना पड़ता है। साधु या ब्राह्मण एक जीवन-क्रम है, जीवन की एक फिलॉसफी है। सोचने और काम करने का एक तरीका है। योगाभ्यास, प्राणायाम आदि उसके ऊपर के शृंगार हैं। सान चढ़ने के पत्थर हैं जिस पर घिसकर तलवार पर धार निकाली जाती है। लोहा न हो तो लकड़ी की तलवार नहीं बन सकती। अध्यात्म मार्ग पर भगवान की कृपा-अनुकम्पा पाने के लिए, सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए, आत्मशान्ति प्राप्त करने के लिए सबसे ज्यादा एक ही चीज की जरूरत है दूसरी कोई नहीं और उसका नाम है—व्यक्तित्व का परिष्कार। इसके लिए वहाँ से साधनाएँ शुरू करनी पड़ती हैं, जहाँ से मनुष्य के आहार और व्यवहार को संयमित करना पड़ता है। यह शुरुआत है। फिर मन का संयम करना पड़ता है। यह एक साइंस है। उपासना में मन को अस्त-व्यस्त नहीं जाने दिया जाता। उससे कहा जाता है कि हमारा और हमारे भगवान का सम्बन्ध है, आप यहीं रहिए। इतने पर भी यदि मन भागता है तो भगवान की किताब पढ़िए, भगवान की शक्ल देखिए, भगवान से बातचीत कीजिए। बातचीत नहीं कर सकते तो भगवान का ध्यान कीजिए। ज्ञान, ध्यान की बात करके मन को पकड़ करके रखिए।

मन के निग्रह के बाद समय का निग्रह करना पड़ेगा। अपने आपको शिकंजे की तरीके से कसना पड़ेगा। यही तो एक सम्पत्ति है तेरे पास और दूसरी कोई चीज नहीं है। समय को व्यवस्थित नहीं किया तो फिर तेरे हाथ कुछ भी नहीं रह जाएगा। बिनोवा भावे से लेकर गाँधी जी तक जितने भी महापुरुष और अध्यात्मवादी हुए हैं, उन्होंने समय को इस तरीके से कसा है कि एक क्षण भी बेकार न जाने पाए। यही तो दौलत है तेरे पास, जिससे चाहे आत्म-कल्याण कर ले, चाहे जनता की सेवा कर ले, चाहे अपना स्वास्थ्य बना ले, चाहे परिवार की सेवा कर ले। प्रगति करनी है तो समय का संयम करना पड़ेगा। धन का संयम करना पड़ेगा, क्योंकि धन का संयम जब तक तू नहीं करता तब तक सैकड़ों तरह की बुराइयाँ आ जाएँगी। आलस्य, अहंकार, शराबखोरी, अपव्यय आदि सारी बीमारियाँ तो अनायास ही तेरे भीतर आ जाएँगी। धन का अगर संयम न कर सकेगा तो जो कुछ पुण्य-परमार्थ कर सकता होगा, सो नहीं करेगा और यदि इसे औलाद के लिए छोड़कर चला जाएगा तो वे आपस में लड़ेंगी और उनका सफाया हो जाएगा। उपार्जन और व्यय कैसे करना चाहिए ? यह जीवन की एक शैली है, एक क्रम है और एक आधार है।

अध्यात्म एक साइंस है जिसमें जीवन का क्रम बदलना पड़ता है। इसलिए मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि इस आपत्तिकाल में योगाभ्यासी बनने के लिए सिद्ध-महात्मा बनने के लिए कोशिश मत कीजिए। इस आपत्तिकाल की जो जरूरत है, आप वही काम करें। हम आपकी सहायता करेंगे। इस आपत्तिकाल में हमने अपने गुरु की सहायता की है और उसने हमारे लिए आवश्यकताओं को पूरा किया है। आपत्तिकाल में हनुमान जी ने रामचन्द्र जी की मदद की थी और रामचन्द्र जी ने जिन सिद्धियों की जरूरत थी—पहाड़ उठाने से लेकर समुद्र छलाँगने तक की सिद्धियाँ दे डाली थीं। रामचन्द्र जी ने यह कहा था—आप हमारा काम कीजिए और हम आपका काम करेंगे। यह भी एक तरीका है—अन्धे और पंगे का। अन्धे की पंगे ने मदद की थी और पंगे ने अन्धे की। आप हमारी मदद कीजिए और हम आपकी मदद करेंगे। आपके पास धन कम है, तो बेटे, मेरे पास भी कम है, पर जिससे हमारा सम्पर्क और सम्बन्ध है, वह बड़ा मालदार आदमी है। उसकी बैंक बहुत बड़ी है। आप उसमें शामिल क्यों नहीं हो जाते ? आप हमारी कम्पनी में बीमा कर लीजिए। हमारा बड़ी कम्पनी में बीमा है। इसलिए हमने आपसे यह कहा था कि आप हमारी शृंखला में शामिल हो जाइए और उपासना का उत्तरदायित्व हमारे ऊपर छोड़ दीजिए तो काफी है। तो हम क्या करें गुरुजी ? बेटे, आप वही करें जो हम अपने गुरु का करते हैं। आपके लिए सबसे बेहतरीन, सबसे अच्छा, सबसे नफे का सौदा यह है कि जिस तरह हमने अपने गुरु का कहना माना है और उसके कहने के मुताबिक यह योगाभ्यास कर रहे हैं, जो उसने हमको सुपुर्द कर दिए और जिससे शक्तियाँ पैदा होती हैं। आप भी ऐसा ही करें।

जिस योगाभ्यास को आप इतना सरल समझते हैं, वह सरल नहीं, वरन् इतना कठिन है कि आप कर नहीं पायेंगे। आप समझते हैं कि गायत्री माता का अनुष्ठान २४ हजार जप में हो जाता है ? तो यह इतने से पूरा नहीं होता। गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है। अतः जप करने से पहले ब्राह्मण बन। नहीं साहब, ब्राह्मण नहीं बनेंगे, रहेंगे तो हम डाकू और रहेंगे तो हम हत्यारे-कसाई ही, पर २४ हजार का जप करेंगे। तब बेटे, इससे क्या हो जाएगा ? गन्दे नाले में गंगाजल डाल देगा तो क्या सारा का सारा गन्दा नाला शुद्ध हो जाएगा ? गन्दा नाला शुद्ध

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

नहीं होगा, वरन् वह गंगाजी भी गन्दा नाला हो जाएगी। तू मोटी बातें भी समझता क्यों नहीं, मोटी बातें समझ। इसलिए मैं आप लोगों में से हर एक का उत्साह, जिसमें योगाभ्यास शामिल थे, तरह-तरह की जादूगरी शामिल थी, तरह-तरह के शब्द कानों में सुनने शामिल थे, उनसे आपको निरस्त करता हूँ और यह कहता हूँ कि आप उधर से मन हटा लें और हमारी साधना में शामिल हो जाएँ। कैसे शामिल हो जाएँ ? यह आपत्तिकाल है। आपत्तिकाल में आपत्तिकालीन कार्यक्रम बना लें तो ठीक रहेगा। आपत्तिकालीन क्रियाकलाप में आप एक कार्यक्रम यह बना लें कि आप इतनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को कम कर दें। सामान्य भारतीय जिस स्तर का जीवनयापन करता है, वहाँ तक आप अपने को सीमाबद्ध कर लें तो आप आपत्तिकाल में युग की माँग और समय की माँग के लायक कुछ कर पाएँगे। अगर आपकी महत्त्वाकांक्षाएँ जिन्दा रहीं तो आप कुछ नहीं कर पाएँगे, क्योंकि आदमी की महत्त्वाकांक्षाओं के पूरा होने की कोई गारण्टी नहीं है। आपत्तिकालीन इस युगसंध्या में अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए अगर आपकी इच्छा है तो आपको भगवान के कार्यों में सहायक होना चाहिए और योगाभ्यास का, साधना का पहला कदम यह मानकर चलना चाहिए कि हमारे लिए इतना ही काफी है जितने में हमारा गुजारा हो सके। औसत भारतीय स्तर के हर आदमी के हिस्से में जितना आता है, उसी स्तर का आप अपना और अपने परिवार का खान-पान और रहन-सहन एवं संग्रह बना लें।

मित्रो ! महत्त्वाकांक्षाएँ अगर आपके दिमाग पर हावी नहीं तो हमको कहना पड़ेगा कि आपत्तिकालीन युग में आप कुछ नहीं कर पाएँगे। नामवरी के लिए यश, लोभ या भड़कावे-बहकावे में आकर परोपकार के नाम पर कुछ खेल-खिलौना थोड़ा-बहुत कर भी लें, पर असल में आप कुछ ठोस काम कर नहीं पाएँगे, अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को कम करिए तो क्या महत्त्वाकांक्षाएँ खत्म कर देने से आदमी का वर्चस् खत्म हो जाएगा ? नहीं बेटे, उसके प्वाइंट बढ़ा दें, दिशाएँ बदल दें। जीवन को बड़प्पन की अपेक्षा महानता की दिशा में मोड़ दें कि हम महान बनेंगे। महान किसे कहते हैं ? जो सिद्धान्तों के लिए काम करते हैं, आदर्शों के लिए काम करते हैं। इस दिशा में महत्त्वाकांक्षाओं को जितना बढ़ाना चाहें बढ़ा दें। गुरुजी हम तो ऋषि बनेंगे। बेटा, हम तुझे ऋषि बनाएँगे, ऋषि की महत्त्वाकांक्षा बढ़ा। हम तुझे ब्रह्मर्षि बना देंगे, राजर्षि बना देंगे, देवर्षि बना देंगे, पर शर्त एक ही है कि हमारे रास्ते पर चल और उधर की महत्त्वाकांक्षाएँ कम करके इधर की महत्त्वाकांक्षाओं में लगा दे, फिर जो भी तू कहेगा, हम बना देंगे। हम आपको सेठ नहीं बना सकते, मिनिस्टर नहीं बना सकते, राजा भी नहीं बना सकते, पर आपकी आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाओं को हम पूरा कर सकते हैं, क्योंकि वे स्वाभाविक और सरल हैं। उसमें दैवी-शक्तियाँ सहायता करती हैं पर आपकी भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं में दैवी-शक्तियाँ सहायता नहीं करतीं। उसमें आपका कर्म और पुरुषार्थ सहायता करता है। यही धूमधाम करके दैवी-कृपा, आशीर्वाद के रूप में आ जाता है। फोकट में दैवी कृपा आदमी की भौतिक महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने में सहायक नहीं होती है। यदि देवता पैसा देते होते तो हिन्दुस्तान जैसा देश जो देवताओं का देश कहलाता है, गरीब नहीं रहा होता। लक्ष्मीजी की पूजा करते हुए सात पीढ़ियाँ व्यतीत हो गईं फिर भी गरीबी हमारे घर से निकली नहीं, लक्ष्मी जी आईं नहीं। हमने सुना है देवता कृपा करते हैं ? देवता कृपा नहीं करते, भौतिक जीवन में योग्यताएँ काम करती हैं, पुरुषार्थ काम करता है। जापानियों से पूछकर आइए कि आपको जो सम्पत्ति मिली है, उसे क्या लक्ष्मी जी ने भेजा है या आपके पुरुषार्थ ने। हर जापानी यही कहेगा कि हमारे पुरुषार्थ ने भेजा है, लक्ष्मीजी की इसमें कोई सहायता नहीं। देवताओं की सहायता एक काम में आती है—आध्यात्मिक जीवन, आन्तरिक जीवन के विकास में, जो कि वास्तविक जीवन है और सारी की सारी सफलताओं का केन्द्र है। यही जीवन आपका विकसित हो सकता है।

इस आपत्तिकाल में, जो सामान्य समय नहीं है, यदि आप अपने जीवन की रीति-नीति और गतिविधियों को बदल दें, अपने भौतिक जीवन की महत्त्वाकांक्षाओं को कम कर दें। जितने कम में गुजारा हो सकता हो उतने कम पैसे, कम समय में अपना गुजारा कर लें और बाकी सारे का सारा समय श्रेष्ठ कामों के लिए, आध्यात्मिक कार्यों के लिए, आपत्तिकाल के क्रिया-कलापों के लिए समय की माँग को पूरा करने में लगा दें। यह रीति अगर आपकी समझ में आ जाएगी तो फिर मैं कहता हूँ कि बाद का रास्ता आपका साफ है। फिर आपकी मुक्ति का रास्ता खुल गया और जो चीजें आप चाहते थे, उसके मिलने की गारण्टी हो गई। यदि आपने अपने आपको बदल दिया तो सिद्धियाँ भी मिल जाएँगी। सूरदास ने अपने आपको बदल दिया तो वे विल्वमंगल से सूरदास हो गए थे। भगवान उनको इसी जीवन में मिल गए थे। तुलसीदास ने अपने जीवन-क्रम को बदल दिया था तो भगवान् उनको इसी जीवन में मिल गए थे। बाल्मीकि ने अपने जीवनक्रम को बदल दिया था तो भगवान उनको इसी जीवन में मिल गए थे। बुरे से बुरे आदमियों में से जिन्होंने अपने जीवन-क्रम में हेर-फेर नहीं किया, भगवान् के ऊपर जाल फेंकते रहे और यह कहते रहे कि हमको दिला दीजिए बेटा और आप हमारी डकैती में फायदा करा दीजिए। बेटे ये देवी-देवता और भगत दोनों ही मरेंगे और दोनों ही पिटेंगे। मैं चाहता हूँ कि आप इस अज्ञान से, इस जंजाल से निकल आएँ तो अच्छा है। मैं चाहता हूँ कि आपके सामने अध्यात्म की, शान्ति की, भगवान के प्यार की, सिद्धियों की, चमत्कारों की, जीवन की सार्थकता की एक स्पष्ट रूपरेखा हो तो काम चल जाए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह आपत्तिधर्म है, इसमें आप लोग एक काम करना कि अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को जितना कम कर सकते हों, कम करना, ताकि उसी सीमा में आप ब्राह्मण होते चले ज़ाएँ। उसी सीमा के हिसाब से, उसी मर्यादा के हिसाब से आपको भगवान की कृपा मिलेगी। देवताओं की, सिद्धपुरुषों की सहायता मिलेगी। जो भी चीज आप चाहते हैं, वह सब चीजें मिलेंगी विशेषकर इस आपत्तिकाल में, यदि आप अपने व्यक्तित्व को विकसित कर लें तो। इस जमाने में युग-निर्माण जैसे महान् कार्य के लिए, जलती हुई आग को बुझाने के लिए और उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाओं को बढ़ाने के लिए महाकाल ने आपसे समय माँगा है। यदि आप अपनी भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ कम करके आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाओं में अपने मन को लगा सकें तो आपको शक्ति भी मिलेगी, समय भी बचेगा, पैसा भी बचेगा, अक्ल भी बचेगी, श्रम भी बचेगा। इतना ज्यादा सामान बचेगा कि आप कहने लगेंगे कि हम तो अपने आपको अभावग्रस्त समझते थे, पर हमारे पास इतनी ज्यादा दौलत निकल पडी कि हम दुनिया को निहाल कर सकते हैं।

आपको करना क्या है ? आपके जिम्मे जो काम सुपुर्द किए गए हैं, वे वास्तविक परिव्राजक के काम सुपुर्द किए गए हैं ? आपको परिव्राजक की वास्तविक भूमिका निभानी है, इससे कम में काम नहीं चलेगा। परिव्राजक की योजना को पूरा करने के लिए, परिव्राजक के उत्तरदायित्वों और कर्त्तव्यों को निभाने के लिए वही काम करना पड़ेगा कि आप अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को कम कर दें और सामान्य जीवन-यापन करने से सन्तोष कर लें। सन्तोष करने के बाद में यह देखें कि हमारे पास कितना ज्यादा समय है ? उस समय का सदुपयोग कहीं भी आप कर सकते हैं। वास्तव में परिव्राजक एक संकल्प है, एक व्रत है, एक नियम है, एक उपासना है, जिसमें श्रेष्ठ प्रकाश देने के लिए सम्पर्क स्थापित करना पड़ता है। सम्पर्क स्थापित कीजिए अपने घर-परिवार वालों से, अपने बच्चों से, अपने पड़ोसी और मोहल्लों वालों से। जिस दफ्तर में आप काम करते हैं, वहाँ लोगों से सम्पर्क स्थापित कीजिए अच्छे उद्देश्यों के लिए। आप वहाँ भी परिव्रज्या कर सकते हैं। आप दुकानदार हैं तो वहाँ भी सबेरे से शाम तक ५० आदमी आते हैं। दुकानदारी के साथ-साथ श्रेष्ठ कामों के लिए भी आप उतना समय निकाल सकते हैं। आप हर आदमी को २४ घण्टे अच्छी सलाह दे सकते हैं, श्रेष्ठ प्रेरणाएँ दे सकते हैं और सामान्य जीवनक्रम के साथ परिव्राजक व्रत का, जिसका उद्देश्य जन-सम्पर्क है, हर समय पालन करते रह सकते हैं। आप कहीं भी जाएँ, हम आपसे यह नहीं पूछेंगे कि इनमें कितनी सफलता मिली ? सफलता मिले या न मिले, पर प्रयास कितना किया, यह समयदानियों से हमारा मूल प्रश्न रहेगा।

इस युग की सबसे बड़ी माँग समयदान है। समयदान का दससूत्री कार्यक्रम आप समझ लें और करने की कोशिश करें, तो बात पूरी होगी। पहले आप बाहर जाइए और अपने आपसे, दूसरों से भी कहिए कि युग बदल रहा है। यह आपत्तिकाल है। आपत्तिकाल में भगवान ने प्रत्येक जाग्रत आत्मा से समय माँगा है। इस आड़े समय में आप समय दे पावें तो वह हीरे-मोती, जवाहरात के बराबर है। समय की पुकार के ऊपर जिन्होंने समय दिया, वे बेटे, गाँधीजी के मिनिस्टर हो गए, स्वतन्त्रता सेनानी हो गये और आज उन्हें पेंशन मिल रही है। क्यों ? क्योंकि आपत्तिकाल में जब राष्ट्र पर आपत्ति आई थी तो देश को आजाद कराने के लिए वे सत्याग्रही सेना में शामिल हो गये थे और जेल की यातनाएँ सही थीं। तो गुरुजी आप ऐसा कीजिए कि मुझे भी कहीं स्वतन्त्रता सेनानियों में जेल भिजवा दीजिए। तीन महीने की जेल हो जाएगी और स्वतन्त्रता सेनानी बन जाएँगे। ढाई सौ रुपया पेंशन मिल जाएगी। बेटे, तुझे मिलेगी नहीं, क्योंकि समय चूक गया। जेल जाने का भी समय था, अब वह समय कहाँ है ? अब आपत्तिकालीन समय है यह। युग बदल रहा है। आज का समय देना हीरे के बराबर, मोती के बराबर है। अगर अगली बार देगा तो तू क्या देगा ? जब समय बदल जाएगा तब हम तेरे समयदान का क्या करेंगे ? फिर समयदान की जरूरत नहीं पड़ेगी।

इसलिए आप यहाँ से जाने के बाद स्वयं से, अपने आप से और हर जाग्रत आत्मा से यह कहना कि सन् १९७८ से लेकर सन् २००० तक के ये २२ वर्ष ऐसे हैं, जिनमें दुनिया का कायाकल्प हो जाएगा। कैसे हो जाएगा, इस सम्बन्ध में मैं बेकार की भविष्यवाणियाँ तो नहीं करता, बेकार की भविष्यवाणियाँ करना मुझे नापसन्द हैं, पर मैं दो भविष्यवाणियाँ कहे देता हूँ कि लोगों में बहुत तबाही आएगी। संसार में बहुत तबाही आएगी। तब आपको राहत के लिए लोगों में काम करना पड़ेगा। तबाही क्यों आएगी ? क्योंकि अवांछनीय तत्त्व जहाँ कहीं भी हैं, वे सब घटेंगे। घटने के लिए विनाश होगा और विकास के लिए नए निर्माण होंगे। नए निर्माण के लिए आपको समय देना पड़ेगा और श्रम करना पड़ेगा। विनाश में तो आपको सहायता करनी पड़ेगी, राहत-कार्यों में आपको सहायता करनी पड़ेगी, ताकि आपका आत्मबल विकसित हो सके और आपका देवत्व विकसित हो सके। यह काम होगा ? हाँ बेटे, होगा। अभी भी हो रहा है। मारकाट से भी कर रहे हैं, बीमारियाँ भी कर रही हैं, बाढ़ें भी कर रही हैं और जाने कौन-कौन कर रहा है ? जहाँ कहीं भी देखिए हर जगह सूखे के साथ गीला भी जल रहा है। सब जगह तबाही ही तबाही मची है।

बेटे ! यह आपत्तिकाल है, राहत-कार्यों में लगना पड़ेगा। भगवान कोई नुकसान पहुँचाने वाला नहीं है, हमें यह नहीं कहने वाला है कि आप जहाँ जरूरत है, वहाँ सहायता कर सकते हैं। इसमें आपकी आत्मपरीक्षा है और वर्चस का अनुदान है। क्या आप मुसीबत में जहाँ के तहाँ हृदयहीन बने बैठे रहेंगे ? मदद नहीं करेंगे ? जाग्रत आत्माओं को आपत्तिकाल ने पुकारा है कि आप राहत-कार्यों के लिए मदद कीजिए। राहत-कार्य केवल बाढ़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और भूकम्प के नहीं हो सकते। पीड़ा और पतन इस जमाने में अभी और फैलेंगे। इनसे राहत दिलाने के लिए ही मैं आपसे कहता हूँ। देखते नहीं गुण्डागर्दी कैसे बढ़ती चली जाती है, दूसरे अपराध कैसे बढ़ते चले जाते हैं ? इस तरह के राहत-कार्यों में आपकी हर जगह जरूरत है। आपको निर्माण-कार्यों के लिए एक नहीं लाखों कार्य करने हैं। ये इम्तिहान की घड़ियाँ हैं। आपको निर्माण-कार्य के लिए ईंट और चूने की भूमिका निभानी है। प्रत्येक व्यक्ति से समय इसी के लिए माँगा था। राम ने कभी समय माँगा था, कृष्ण ने कभी समय माँगा था। हम भी आपसे समय माँगते हैं। समय की किसी के पास कमी नहीं है, केवल दिलेरी और साहस की कमी है, उदारता की कमी है। अगर आप अपने भीतर दिलेरी और उदारता पैदा कर सकें तो काम बन जाए।

आप यहाँ से जाने के बाद एक बात हर एक से कहना, अपने से सौ बार कहना और जो कोई जाग्रत आत्मा दिखाई पड़े उससे कहना कि महाकाल ने एक ही निमन्त्रण भेजा है—समय की माँग का नियन्त्रण। आप परिव्राजक हैं। जन-सम्पर्क में आप जहाँ कहीं भी जाएँ, आप कृपा करके एक ही बात कहना हर आदमी से जो कोई भी आपको भजन करता हुआ, पूजा करता हुआ दिखाई दे, उससे यही कहना कि अगर आप भगवान का अनुग्रह पाने के इच्छुक हों, भगवान की सहायता करने के इच्छुक हों, तो गुरुजी ने पल्ला पसार करके, महाकाल ने पल्ला पसार करके, युग के देवता ने पल्ला पसार करके हर आदमी से समय माँगा है। आपके पास समय हो तो हमें दें—नवयुग के निर्माण के लिए, राहत-कार्यों के लिए, पीड़ा और पतन से लोहा लेने के लिए, सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन में योगदान देने के लिए और दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करने के लिए। दोनों हाथ से इस आपत्तिकाल में भगवान ने पुकार की है। अगर आप कर सकते हों तो करना, यहाँ से जाने के पश्चात्। समय देना केवल उनके लिए सम्भव हो सकता है, जो अपनी भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं पर नियन्त्रण लगा सकते हैं। इसके अलावा कोई समय नहीं दे सकता। मित्रो ! मैंने अपनी बातें कह दीं। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

अन्तर की हूक को ही अवतार कहते हैं

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

कैसा शुभ-अवतरण रहा होगा वह, जिस दिन भगवती सरस्वती ने अवतरण लिया होगा इस धरती पर। भगवती सरस्वती को हम देखते हैं—प्रकृति के अन्तर्गत वसन्त के रूप में। पदार्थों में एक उल्लास आता है, उमंगें आती हैं, पत्ते झड़ते हैं एवं फूल खिलते हैं। बच्चों में हम देखते हैं कि वसन्त किस तरीके से हँसता और मुसकराता है। कोयल में देखते हैं, भौरों में देखते हैं, दूसरे प्राणी में देखते हैं, थिरकन और पुलकन किस प्रकार दिखाई पड़ता है ?

वसन्त के दिनों में हर प्राणी में एक उल्लास एवं उमंग दिखाई पड़ती है। सृष्टि का सृजनक्रम इन दिनों ज्यादा होता है। गर्भधारण, प्राणियों से लेकर वनस्पतियों तक में इस अवसर पर अधिक होता है। मनुष्यों में भी वसन्त पर्व इस प्रकार आता है कि उमंग और उत्फुल्लता पैदा होती है। इसी रूप में भगवती सरस्वती ने इस धरती पर अपने खुशी की, उत्साह की तरंगें पैदा की हैं।

आज से बहुत दिन पहले कैसा शुभ-दिन रहा होगा, जिसे हम भगवती सरस्वती के अवतरण का दिन, ज्ञान के अवतरण का दिन कहते हैं। मनुष्य के अन्दर सरस्वती आयी होगी ज्ञान के रूप में। मनुष्य कभी असभ्य रहा होगा, वनमानुष की तरह रहा होगा, नर-वानर की तरह घूमता होगा, दूसरे प्राणियों से कहीं कमजोर और दुर्बल रहा होगा। वह कुत्ते की तरह से दौड़ नहीं लगा सकता, हिरण की तरह कुलाँचे नहीं भर सकता, बन्दर की तरह उछलकर छलाँग नहीं लगा सकता, पक्षियों की तरह से उड़ान नहीं भर सकता, मछली की तरह तैर भी नहीं सकता। इस तरह की सामर्थ्य उसमें नहीं है। आदमी बहुत कमजोर है। इतना कमजोर होते हुए भी वह विकसित होता चला गया तथा सारी सृष्टि का मुकुटमणि हो गया। आज तो प्राणियों का नहीं, सृष्टि का भी स्वामी होने का वह दावा करता है। मनुष्य यह कैसे हो गया ? यह उसकी बुद्धि का चमत्कार, विचारों का चमत्कार का प्रतिफल है।

कैसा वह सौभाग्य का दिन रहा होगा, जब अन्य प्राणियों की तुलना में बुद्धि विकसित हुई होगी, जिसकी हम खुशी मनाते हैं। आनन्द मनाते हैं कि हमें वनमानुष से आदमी बनाने का यह वसन्त बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। भगवती सरस्वती की कृपा से हमें भावना-विचारणा प्राप्त हुई। इसे दूसरों नामों से भी पुकारते हैं—विद्या-शिक्षा भी कहते हैं। यह खुशी का दिन हम हर साल मनाते हैं। हर शिक्षण-संस्थान में मनाते हैं। वहाँ सरस्वती की वन्दना करते हैं। यह परम्परा बहुत दिनों से चली आ रही है। हम भी उसके अन्तर्गत यह पर्व मनाते हैं—ज्ञान-प्रेमी के तरीके से, विद्या-प्रेमी के तरीके से, लेकिन अपने वसन्त पर्व की कुछ विशेषता है।

हमारे व्यक्तिगत जीवन में एक वसन्त आया था, आज से लगभग ५५ वर्ष पूर्व। जिसमें सामान्य पतझड़ जैसे, एक ठूँठ जैसे इनसान में नवीन पल्लव आ गये, नया उत्साह आ गया। एक छोटे-से देहात में रहने वाले लड़के के समक्ष वसन्त के दिन एक दैवी शक्ति आयी, उससे बातचीत हुई। उस दैवी-शक्ति ने कहा तुमसे हमें कुछ विशेष काम कराने हैं, बड़े काम कराने हैं, तुम्हें समर्थ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनाना है। हमने कहा—आप बनाइये। मजबूत बनने के लिए, ताकतवर बनने के लिए हम तैयार हैं। समर्थ बनने के लिए ताकतवर आदमी की आवश्यकता पड़ती है। आप हमें इस योग्य बनाइये।

उनके साथ बातचीत शुरू हो गयी। जिन्हें मैं बॉस, मार्गदर्शक, गुरु कहता हूँ—ठीक वे वसन्त पर्व के दिन आये थे, एक छोटे-से कमरे में। तब हमारी उम्र १५ वर्ष की रही होगी। हमने पूछा—आप क्या सहायता करेंगे ? उन्होंने कहा—हम एक ही सहायता करेंगे, तुम्हारी कामनाओं को भावनाओं में बदल देंगे। कामनाएँ किसे कहते हैं ? कामनाएँ उसे कहते हैं, जिसके बारे में हम कह रहे थे। यह दो हैं। एक है पेट की भूख, जो पेण्डुलम की घड़ी के तरीके से खट-खट चलती रहती है। यह रोटी माँगती है। रोटी की भूख का परिष्कृत रूप वह है, जिसे 'लोभ' कहते हैं। लोभ का इच्छुक प्राणी इकट्ठा करना चाहता है, बड़ा आदमी बनना चाहता है, सेठ बनना चाहता है। अन्य प्राणी पेट भरना चाहते हैं।

दूसरी वृत्ति प्राणियों में यह होती है कि वह जोड़े के साथ रहना चाहता है। इनसान में उसका रूप कुछ विकसित हो गया है। विकसित रूप यह है कि वह विवाह-शादियों की बात करता है। दूसरे प्राणियों में यह बात नहीं बनती। वहाँ सिर्फ चयन होता है। चयन के बाद मिलन। दोनों के मिलन से बच्चे पैदा होने लगते हैं। दोनों की मोहब्बत बच्चों को मिलने लगती है, तत्पश्चात् कोई भी उनसे अलग रहना पसन्द नहीं करता। इसे 'मोह' कहते हैं।

मित्रो ! प्रत्येक प्राणी के भीतर लोभ-मोह विकसित होते चले जा रहे हैं। प्रकृति की दी हुई प्रत्येक प्राणी के भीतर दो ही चीजें हैं, जिसे हम लोभ और मोह कहते हैं। जानवरों के अन्दर उसे पेट भरने तथा प्रजनन कह सकते हैं। आदमी चूँकि समझदार है, अतः पेट और प्रजनन का विकसित रूप लोभ एवं मोह है। इन्हें ही 'कामना' कहते हैं। इन कामनाओं की लोग तरह-तरह की गुत्थियाँ बुनते रहते हैं। कामनाओं के स्थान पर दूसरी चीजों की जरूरत है, अगर आदमी अपने आपको विकसित बनाना चाहता हो तब। बड़ा आदमी होना चाहता हो, सुसंस्कृत होना चाहता हो, मजबूत होना चाहता हो, देवता बनना चाहता हो, तो उसे पात्रता सिद्ध करनी होगी। उसे अपनी कामना को बदल करके भावना में विकसित करना होगा। कामना वह होती है, जो शरीर से ताल्लुक रखती है।

मित्रो ! मैं आपसे लोभ-मोह यानी वासना-तृष्णा का जिक्र कर रहा था। ये चीजें आदमी के शरीर से सम्बन्ध रखती है तो उसके अन्दर दूसरे तरह की भूख उत्पन्न हो जाती है। वह भूख जीवात्मा की नहीं होती है। जीवात्मा की जो भूख है, उसे हम 'भावना' कहते हैं। हमारे गुरु ने कहा कि तुम्हें भावना के क्षेत्र में प्रवेश तथा विकसित होना चाहिए तथा कामनाओं से ऊँचा उठना चाहिए।

कामनाओं को छोटा नहीं कहा जा सकता, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि हमारे पास शरीर है। शरीर को जिन्दा रखने के लिए दूसरी चीजों की भी जरूरत, कुटुम्ब, परिवार की सेवा की भी जरूरत है। पेट भरने के लिए रोटी कमाने की भी जरूरत है, लेकिन हर चीज की एक मात्रा है। पेट भरने के लिए मुट्ठी भर अनाज चाहिए। मनुष्य कम खर्चे में भी अपने कुटुम्ब को सुसंस्कारी बना सकता है। नहीं, हम अपने बच्चों को सुसंस्कारी बनाने के लिए पब्लिक स्कूल में भर्ती करना चाहते हैं। कितने बच्चे हैं आपके ? तीन बच्चे हैं। आपको २५०० रुपए देना चाहिए। आपकी बात भी ठीक हो सकती है, परन्तु अगर हमारे अन्दर सुसंस्कारिता हो, तो हम कम पैसे में भी काम चला सकते हैं, विनोबा की माँ की तरह से। विनोबा की माँ का मन था कि उसके बच्चे सुयोग्य तथा सुसंस्कारी बनें। बच्चों को आगे बढ़ाने तथा पढ़ाने के लिए पैसों की जरूरत पड़ती है ? नहीं, पैसों की नहीं, सुसंस्कारों की आवश्यकता पड़ती है, जिसका नाम 'भावना' है। अगर सुसंस्कार हो, तो कोई महिला, कम पढ़ी-लिखी भी महिला अपने बच्चों को ब्रह्मज्ञानी बना सकती है। विनोबा की माँ सुसंस्कारी थी, अतः उसने तीन बच्चों को पैदा किया तथा तीनों को महान बना दिया। एक का नाम था विनोबा, दूसरे का नाम वाल्कोबा, तीसरे का विठोबा। तीनों बच्चे ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मचारी सन्त बन गये तथा समाज के काम आ गये। क्यों साहब पैसे की जरूरत पड़ी ? नहीं भाईसाहब, पैसों की जरूरत नहीं पड़ती है।

शकुन्तला जब कण्व ऋषि के आश्रम में पाली-पोसी गई थी, तो कण्व ऋषि के पास कितना पैसा था ? नहीं भाईसाहब, कुछ नहीं था। शकुन्तला को सुसंस्कार का वातावरण मिला था, जिसके द्वारा उसने अपने बच्चे को 'भरत' बना दिया।

सीता के लव-कुश पैदा हुए थे, तो सीता बाल्मीकि के आश्रम में थी। वहाँ क्या-क्या सुविधाएँ थीं—आप बता सकते हैं ? नहीं, कोई सुविधा नहीं थी। इनसान को विकसित करने के लिए भावना की जरूरत है। शरीर को पोषण देने, सुन्दर बनाने, सुखी बनाने के लिए कामनाओं की जरूरत भी हो सकती है, जिसको आप दौलत कह सकते हैं, सुविधा कह सकते हैं, लेकिन आत्मा को विकसित करने के लिए दौलत की कोई खास जरूरत नहीं है। हम ऋषियों के तरीके से, सन्तों के तरीके से कुटुम्ब का पालन करते हुए बड़ी आसानी से जी सकते हैं एवं बड़ी आसानी से शान्ति से गुजारा कर सकते हैं, लेकिन हम क्या करें ? एक हविश हमारे ऊपर ऐसी हावी हो गयी है, जिसको हम एक तरह का 'नशा' कह सकते हैं। हम नशे में धुत्त आदमी की तरह से घूमते रहते हैं। यह कामनाएँ हैं। कामनाओं को दूसरे शब्दों में एक तरह से नशा कह सकते हैं, जिसकी न जरूरत है, न आवश्यकता। यह जब हमारे दिमाग पर हावी होती है, तो बुरी तरह से जकड़ लेती है, हाथ-पाँव को पकड़ लेती है, चप्पे-चप्पे को पकड़ लेती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज वसन्त के दिन, जिसे मैं अपने सौभाग्य का दिन मानता हूँ, हमारे गुरु ने कहा—तुम्हें अपने आपको कामनाओं की दिशा से मोड़कर पूरी दिशा में बढ़ाना चाहिए। तुम्हें अपने चिन्तन की दिशाधारा को दूसरी दिशा में मोड़ देना चाहिए और भावना के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए। उस दिन से उनकी जो इच्छा, वह हमारी इच्छा। उस दिन से हमारा सौभाग्य उदय हो गया। मैं तब से क्रमशः मजबूत होता चला गया।

उन्होंने कहा—सिद्धान्तों का पालन करने के लिए आदमी को कठोर होना चाहिए, बलवान होना चाहिए, मजबूत होना चाहिए। मजबूती आयेगी, तो हम जो दूसरी चीजें देना चाहते हैं, उसे पाने के हकदार हो जाओगे। तभी से हमने अपनी भावना को परिपक्व करने के लिए, मजबूत करने के लिए संकल्प लिया। उन्होंने जो संकल्प दिया, उसे जीवन भर निबाहा। संकल्प छोटा-सा था। उन्होंने कहा—तुझे २४ साल तक जौ की रोटी और छाछ पर निर्भर रहना होगा। खाने के सन्दर्भ में, जीभ के सन्दर्भ में दो ही चीजें इस्तेमाल करनी होंगी, तीसरी नहीं। जीभ पर हुकूमत कर सकते हो ? हमने कहा—हाँ ! जीभ पर जो दिमाग हुकूमत करता है, उसे चलायमान करता है, उस पर हुकूमत कर सकते हो ? हमने कहा—हाँ, हम जीभ और दिमाग दोनों पर हुकूमत कर सकते हैं।

हमने दिमाग पर नियन्त्रण किया। जिन लोगों को खाते देखा, दिमाग ने कहा—हमें भी चाहिए। सब लोग बड़े मजे से खाते हैं, पसन्द करते हैं, आपको भी खाना चाहिए। हमने दिमाग से कहा—आप हमारे हैं या हम आपके हैं ? दिमाग ने कहा—हम तो आपके हैं। हमने कहा—तब तो आपको हमारी बातें, हमारा कहना मानना चाहिए। उसे समझा दिया—जो स्वास्थ्य की दृष्टि से आवश्यक है, वहीं हमें करना चाहिए। जीभ की आज्ञा हमने नहीं मानी। कहा—हमारे गुरुदेव की आज्ञा है, आदर्श-सिद्धान्तों की उनकी आज्ञा बड़ी जबरदस्त है, उसे हमें माननी चाहिए। इस प्रकार क्रमशः हमारे संकल्प मजबूत होते चले गये और हम संकल्पवान बनते चले गये।

सिद्धान्तों का पालन करने में अपनी कमजोरियाँ कैसे तंग करती हैं ? अपने पड़ोसी कैसे तंग करते हैं ? रिश्तेदार, खानदान वाले कैसे तंग करते हैं ? २४ साल के इस अन्तराल में हमने उसे जाना। दुनिया अपने साथ न चलने वाले का कैसा मजाक उड़ाती है, कैसा बेवकूफ बनाती है, उपहास करती है, यह भी मैंने देखा, परन्तु मैं क्या कर सकता था ? कुटुम्बियों से लोहा लिया, मुहल्ले वालों से लिया, मंच के साथ लोहा लिया, इन्द्रियों के साथ लोहा लिया, परिवार वालों के साथ लोहा लिया। हर एक से टक्कर लेते-लेते आज हमारा सौभाग्य है कि उन्होंने हमें लोहे का बना दिया। यह क्या चीज थी ? भावना थी। किसने दी ? हमारे गुरुदेव ने दी। इसको मैं वसन्त कहता हूँ। जब से होश सँभाला तब से अब तक ५५ वसन्त देखे। यह हमारा ५६वाँ वसन्त पर्व है। ७० साल का मैं हो गया। इसमें १५ वर्ष का तो मैं नहीं जानता, क्योंकि उस समय तक हमारा सम्बन्ध पारस से नहीं हुआ था। उस समय तक तो हम साधारण इनसान की तरह से थे। परन्तु जब हमने १५ वर्ष के बाद पारस को छूना प्रारम्भ किया, तो हमारी शक्ल बदल गयी। शक्ल का मतलब है—हमारा ईमान, हमारा दृष्टिकोण, हमारा चिन्तन। दूसरे आदमी जैसे विचार करते हैं, वैसा मैं नहीं करता। दूसरे आदमी की जैसी आकांक्षा है, वैसी मेरी नहीं है। वे जिस दृष्टिकोण के आधार पर फैसले करते हैं, मैं उस आधार पर फैसले नहीं करता। यह क्या हुआ ? पारस को छू जाना हुआ। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं पारस को छू गया। मैं कौन ? लोहा। वसन्त मेरे जीवन में आ गया। पतझड़ पर सिद्धान्तों के, आदर्शों के, मर्यादाओं के, संकल्पों के कारण जो वसन्त की कोपलें और पत्ते आये थे, आज से ५५ वर्ष पूर्व—यह मेरा सौभाग्य था। आज तो इसमें फूल आ रहे हैं और न जाने क्या-क्या चीजें आ रही हैं, उन संकल्पों के कारण, कामना को भावना के रूप में बदल देने के कारण कि मैं क्या कहूँ ? मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इसे मैं भगवती सरस्वती का वरदान मानता हूँ कि मुझ ठूँठ जैसे व्यक्ति में भी पल्लव पैदा कर दिये। कौन-कौन-सी चीजें आ गई ? बहुत-सी चीजें आ गईं। कोयल आ गई बौर देखकर। भौंरे आ गये गीत गाने, खिले हुए फूलों को देखकर। कितने आदमी आ गये इन फूलों को देखकर कि मैं क्या बताऊँ ? बच्चों ने ललचाई आँखों से फूल को देखा, फलों को देखा। हर एक ने इसे देखा एवं पसन्द किया। यह मैं अपने जीवन की बात बता रहा हूँ, अपने सौभाग्य की बात बता रहा हूँ, अपने वसन्त की बात बता रहा हूँ। यह वसन्त एक से एक बढ़ते हुए चले आये मेरे जीवन में। आज ५६वें वसन्त के दिन हम एवं आप मिलकर के खुशी मना रहे हैं, उसका आयोजन सम्पन्न करने के लिए हम एवं आप बैठे हुए हैं। इसमें आप खुश हैं, मैं भी खुश हूँ, वसन्त के पेड़ भी खुश हैं, पत्ते भी खुश हैं—कोयले, भौंरे, इनसान सभी खुश हैं। इसमें एक तीसरी धारा और भी जुड़ जाती है, वह है प्रकृति की धारा। इसमें तीन धारा गंगा की तरह हो जाती हैं। तीसरी धारा प्रकृति की सरस्वती का इस समस्त सृष्टि में अवतरण। दूसरी धारा हम जैसे नाचीज व्यक्ति के जीवन में वसन्त की उमंगें, वसन्त की भावना। एक और भी वसन्त आ गया। भगवान की इस सुन्दर सृष्टि को हम नष्ट नहीं होने देंगे। भगवान ने इसे बड़े परिश्रम से बनाया है। हमने भूगोल पढ़ा है, खगोल विद्या पढ़ी है। हमने देखा है कि यह दुनिया जिसमें हम एवं आप रहते हैं, सबसे सुन्दर एवं बढ़िया है, बहुत खूबसूरत है और ऐसा मालूम पड़ता है, मानो भगवान ने बड़ी समझदारी के साथ इस सृष्टि को बनाया है। इसमें उनकी बड़ी-बड़ी तमन्नाएँ तथा उम्मीदें हैं।

इस धरती पर जब कभी भी असन्तुलन आता है, भगवान अपनी सृष्टि को सँभालने के लिए अपने वासन्ती खिलौने इस धरती पर भेजते हैं। क्या भगवान व्यक्ति के रूप में आते हैं ? नहीं ? भगवान व्यक्ति के रूप में नहीं आते,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति उन्हें धारण करते हैं। क्या चीजें आती हैं ? हूक आती है, उमंगें आती हैं प्रकृति में और ढेरों के ढेरों आदमी उसमें लग जाते हैं। नेतृत्व कौन करता है ? मैं नहीं जानता। श्रेय किसे मिलता है ? यह मैं नहीं जानता। एक हवा आती है, जो एक आदमी को अवतार बनने का श्रेय भले दे दे, वास्तव में वह असंख्यों को अवतार बना देती है। भगवान राम को हम श्रेय देते हैं, परन्तु क्या अकेले राम की बात थी ? केवट, भील से लेकर गिलहरी तक, गीधी से लेकर रीछ, वानरों तक—सबके भीतर एक उमंग थी कि हम सृष्टि का सन्तुलन बनाये रखने के लिए अनाचार के विरुद्ध लोहा लेंगे। गिलहरी जिसकी कोई हैसियत नहीं, एक ढेला मारने से मर जाती है, वह कहती थी कि हम लोहा लेंगे। यह कौन कहता था ? अवतार कहता था। अवतार, शरीरधारी को—व्यक्ति को नहीं कहते। अवतार एक उमंग को कहते हैं, एक तरंग को कहते हैं, जो उठती है और इनसान के ऊपर छा जाती है। अवतार बहुत बार आये। राम के जमाने में आये। कृष्ण के जमाने में आये। उस समय छोटे-छोटे आदमी ग्वाल-बाल कह सकते थे कि हम क्यों गोवर्धन उठाएँगे ? क्यों जोखिम उठाएँगे ? परन्तु अवतार कहता था कि आपको करना चाहिए। उन छोटे-छोटे लोगों में उमंगें थीं। उन्होंने वैसा किया। इसी प्रकार जब भी कोई अवतार आये होंगे, ऐसे ही हजारों-लाखों व्यक्तियों के भीतर हूक आयी होगी। क्या भगवान बुद्ध ने दुनिया पलट दी थी ? आपने देखा नहीं ? उसके साथ ढेरों के ढेरों आदमी जुड़े थे। उनके परिव्राजक नालन्दा और तक्षशिला के विश्वविद्यालय में शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् बिखर गये थे। रेगिस्तान को पार करते हुए मंचूरिया, मंगोलिया तथा चीन जा पहुँचे थे। कौन ? भगवान बुद्ध ? हाँ, भगवान बुद्ध। एक लाख नर एवं एक लाख नारियाँ अपने घरों को छोड़कर भिक्षुक बन गये थे। लोगों ने कहा—वे पागल हो गये हैं। उसकी उन्होंने कोई चिन्ता नहीं की। धर्म की स्थापना और अधर्म के उन्मूलन के लिए जो हूक उठती है, अवतार इसी को कहते हैं। गाँधी जी भी अवतार थे—यह मत कहिये। गाँधी स्वराज्य अकेले लेकर नहीं आ गये। उनके लाखों सत्याग्रहियों की हूक थी, जिसके कारण स्वराज्य प्राप्त हुआ। हूक को हीं अवतार कहते हैं। मेरी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

आज के प्रज्ञावतार की, युग-देवता की अपील

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार के सौभाग्य आते हैं और उन सौभाग्यों के लिए आदमी सदा अपने आपको सराहता रहता है। ऐसे सौभाग्य कभी-कभी ही आते हैं, हमेशा नहीं। शादी-ब्याह कभी-कभी ही होते हैं, रोज नहीं। 'कन्वोकेशन' में डिग्री रोज नहीं मिलती, वह जीवन में एकाध बार ही मिलती है, जब हाथ में डिग्री लिए और सिर पर टोप पहने हुए फोटो खिंचवाते हैं। सौभाग्य के ऐसे दिन कभी-कभी आते हैं, उनमें लाटरी खुलना और कोई ऊँचा पद पाना भी शामिल है। लेकिन आदमी का सबसे बड़ा सौभाग्य एक ही है कि वह समय को पहचान पाए। आदमी समय को पहचान ले तो मैं समझता हूँ कि इससे बड़ा सौभाग्य दुनिया में कोई हो ही नहीं सकता। खेती-बाड़ी सब करते हैं, लेकिन जो किसान वर्षा के दिनों सही समय पर बीज बो देते हैं, वे बिना मेहनत किये अपने कोठे भर लेते हैं। गेहूँ की फसल लेने के लिए जो समय को पहचानकर बीज बोते हैं, वे अच्छी फसल कमा लेते हैं। अगर बीज बोने का समय निकल जाए तब फसल की पैदावार की आप उम्मीद नहीं कर सकते। शादी-ब्याह की एक उम्र होती है और जब समय निकल जाता है, तो आदमी को कई बार बहुत हैरानियाँ बर्दाश्त करनी पड़ती हैं, लगभग असफलता के नजदीक पहुँच जाता है वह। जो आदमी समय को पहचान लेते हैं, वे बहुत नफे में रहते हैं। गाड़ियों में रिजर्वेशन होता है। जो समय पर पहुँच जाते हैं, लाइन में लग जाते हैं, उन्हें गाड़ी में सीट मिल जाती है। जो टाइम को पास कर देते हैं, निकल जाने देते हैं, वे बहुत हैरान होते हैं।

अभी मैं समय की महत्ता बता रहा था आपको। किसलिए बता रहा था ? इसलिए कि जिस समय में हम और आप रह रहे हैं, वह ऐसा शानदार समय है कि आपकी जिन्दगी में और इतिहास में फिर नहीं आएगा। आप लोगों की जिन्दगी में तो दूर आने वाले कई पीढ़ियाँ भी इसके लिए तरसती रहेंगी और कहेंगी कि हमारे बाप-दादे ऐसे समय में पैदा हुए थे। जो इसका फायदा उठा लेंगे उनकी, घर-परिवार की सराहना होती रहेगी, समाज में, इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा और जो सनक में बैठे रहेंगे, भूल में बैठे रहेंगे वे स्वयं पछताते रहेंगे और बाद में उनकी पीढ़ियाँ पछताती रहेंगी और कहेंगी कि ऐसे शानदार समय में हमारे बाप-दादों ने क्यों मुनासिब कदम नहीं उठाए ? यह कैसा शानदार समय है। चलिए मैं इसके कुछ आपको उदाहरण देना चाहता हूँ, जिससे कि आप समझ सकें कि यह कैसा समय है और इस शानदार समय में आप थोड़े-से मुनासिब कदम बढ़ा सकते हों तो मजा आ जाएगा।

आपको मैं अवतार के किस्से सुनाता हूँ। जब कभी भी अवतार हुए हैं, जब कभी भी महापुरुष हुए हैं, तब उनके समय कदम से कदम मिलाकर चलने वाले लोगों को मैं बहुत भाग्यवान कहता हूँ और बहुत समझदार मानता हूँ। उनमें से एक का नाम था हनुमान। हनुमान कौन थे ? सुग्रीव के वफादार नौकर का नाम था हनुमान। सुग्रीव को जब उसके भाई ने मार-पीट कर भगा दिया, बीबी-बच्चे छीन लिए, तब सुग्रीव अपने वफादार नौकर के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगे। एक समय आया जब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रामचन्द्र जी आए तो सुग्रीव ने हनुमान को भेजा था। हनुमान जी वामन-ब्राह्मण का रूप बनाकर उनके सामने गए थे कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे साथ मारपीट होने लगे। तो क्या हनुमान जी कमजोर थे ? न होते तब बालि के साथ लड़ाई की होती और अपने बॉस की बीबी को नहीं छिनने दिया होता और अपनी जायदाद नहीं छिनने दी होती। लेकिन जब हनुमान जी ने समय को पहचान लिया और रामचन्द्र जी के कन्धों से कन्धा मिलाया, कदम से कदम मिलाया तो क्या आप समझ सकते हैं कि किसी महत्त्वपूर्ण शक्ति के साथ कन्धा मिलाने की क्या कीमत हो सकती है ? क्या फायदा हो सकता है ? आप तो अन्दाज नहीं लगा पा रहे हैं, लेकिन हनुमान ने लगा लिया था और वह हिम्मत दिखाई थी, जो आदर्शों को जीवन में उतारने के लिए आवश्यक है। आदर्शों को पालन करने के लिए शक्ति की जरूरत नहीं है, साधनों की भी जरूरत नहीं है। साधन तो आप सबके पास हैं, पर अध्यात्म को हनुमान जी ने पकड़ लिया और पकड़ने के बाद में रामचन्द्र जी से कहा कि हम आपके काम आएँगे और आपकी मदद करेंगे। बस, यह शानदार हिम्मत हनुमान जी ने दिखाई और उस समय को पहचानने के बाद में आपको नहीं मालूम वे शक्ति के स्रोत बन गए और गजब के काम करने लगे। पहाड़ उखाड़ने लगे, समुद्र छलाँगने लगे और लंका में रावण और उसके सवा दो लाख राक्षसों को चैलेंज करने लगे। कुम्भकरण जैसों के साथ हनुमान जी अकेले लड़ने लगे।

क्यों साहब, क्या बात थी कि हनुमान जी में इतनी ताकत कहाँ से आ गई ? यह वहाँ से आ गई जहाँ से उन्होंने अध्यात्म को अपने जीवन में उतार लिया था। अध्यात्म जीभ की नोक तक, पूजा की चौकी तक सीमित नहीं रहता। अध्यात्म उस चीज का नाम है याद रखना—ऊँचे सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण करने की हिम्मत को अध्यात्म कहते हैं। इससे कम भी कोई अध्यात्म नहीं है और इससे ज्यादा भी कोई अध्यात्म नहीं है। हनुमान जी ने वही अध्यात्म ग्रहण कर लिया। पूजा की थी, अनुष्ठान किया था, जप-तप किया था ? नहीं, तो फिर कैसे हो गया ? ऊँचे उद्देश्यों के लिए भगवान के कन्धे से कन्धा मिलाकर वे चल पड़े थे और निहाल हो गए। इससे बड़ी कोई तपस्या नहीं होती है। नल-नील ने पत्थरों का पुल बनाया था, जो पानी पर तैरता था। इतने बड़े समुद्र पर पत्थरों से ऐसा पुल बना दिया था कि जिसमें न पाये लगे हुए थे, न झूला लगा हुआ था, न गर्डर फँसे थे और न सीमेण्ट की जरूरत हुई। ऐसे ही खाली पत्थर फेंकते गए और उनका बन गया पुल। क्यों साहब, यह हो सकता है ? हाँ यह हो सकता है। कैसे हो सकता है ? ऊँचे उद्देश्यों के लिए, खासतौर से उस समय जबकि भगवान अवतार लिया करते हैं, तब जो आदमी उनके कन्धे से अपना कन्धा मिला लेते हैं, वे शानदार हो जाते हैं और अपनी भूमिका निभाते हैं। रीछ-वानरों ने भी भगवान की सहायता के लिए वही काम किए थे। लकड़ी, ईंट-पत्थर ढोकर लाते और नल-नील के पास जमा करते जाते थे। क्यों साहब, यह कोई बड़ा काम था क्या, बताइए ? कोई काम नहीं था, लेकिन भगवान के अवतार के साथ, उनकी क्रिया-पद्धति के साथ जुड़ जाने की वजह से वे रीछ-बन्दर भी न जाने क्या से क्या हो गए ? हम उनकी जय-जयकार करते हैं रीछ-बन्दरों की। उनकी क्या विशेषता थी ? एक तो यह कि उन्होंने समय को पहचान लिया कि यह सही समय है। सीताजी वापस आ जाती तब कोई हनुमान कहता कि हम तो रामचन्द्र की सेना में भर्ती होंगे और सीता को तलाश करके लाएँगे, यह मौका हमको भी दीजिए। तब रामचन्द्र जी यही कहते कि नहीं, हनुमान भाईसाहब, अब समय निकल गया। आप समय भी नहीं देखते क्या ? ऐसे समय कभी-कभी ही आते हैं।

इसी तरह गिलहरी ने क्या किया था ? अपने बालों में बालू भरकर लाती और समुद्र में पटक देती थी। बालों में बालू भर लेना कोई मुश्किल और बड़ा काम नहीं है। गिलहरियाँ ऐसे ही घूमती रहती हैं, बालू में बैठी रहती हैं और बालू भर जाती है फिर क्या खास बात थी उसमें ? यह थी कि उसने समय को पहचान लिया था कि अब भगवान की जरूरत में, आवश्यकता में मदद करनी चाहिए। यह गिलहरी के लिए सौभाग्य का दिन था। भाईसाहब वह कितनी शानदार हो गई भगवान का काम करने से आप नहीं जानते। रामचन्द्र जी ने उठा लिया और छाती से लगाया, उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। उससे बहुत मुहब्बत की। किसके लिए ? बालू के लिए। नहीं राई भर बालू से क्या होता है ? उन्होंने सिद्धान्तों के प्रति उसकी हिम्मत के लिए, निष्ठा के लिए, उसकी जुर्रत के लिए उसको प्यार किया। मैंने सुना है कि जो गिलहरी रामचन्द्र जी की सहायता करने आई थी, उसकी पीठ पर उन्होंने प्यार से अपनी अँगुलियाँ फिराई थीं और वे धारीदार निशान आज भी गिलहरियों की पीठ पर पाए जाते हैं। धन्य हो गई थी वह गिलहरी जो रामचन्द्र जी के लिए बालू लेकर आई थी। उसने समय को पहचान लिया था। समय को आप नहीं जानते क्या ? समय को आप नहीं पहचान सकते क्या ?

मित्रो ! भगवान जब भी आते हैं तो उसके कई मकसद होते हैं। एक तो आपने पहले ही सुन रखा है कि वह धर्म की स्थापना करने के लिए और अधर्म का नाश करने के लिए आते हैं। यह दो मकसद तो आपको मालूम ही हैं, रामायण में भी आपने पढ़ा है, सब जगह पढ़ा है। यह दो ही बातें पढ़ी हैं न आपने; अच्छा तो एक और बात हमारी ओर से आप जोड़ लीजिए। रामचन्द्र जी ने या कृष्ण भगवान ने अपनी ओर से तो नहीं कही है, लेकिन हम अपनी ओर से कहते हैं—एक तीसरी बात। क्या कहते हैं ? जो सौभाग्यशाली हैं, उनके सौभाग्य को चमका देने के लिए, निष्ठावानों को, अपने भक्तों के सिर और माथे पर रखने के लिए भी भगवान आते हैं। उनको उछाल देने के लिए भी भगवान आते हैं। उनको इतिहास में अजर-अमर बना देने के लिए भी भगवान आते हैं। जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस मौके को पहचान लेते हैं वे धन्य हो जाते हैं। केवट को उन्होंने धन्य बना दिया। केवट ने क्या काम किया था ? नाव में बिठाकर के रामचन्द्र जी को पार लगा दिया था बिना कुछ कीमत लिए। तो गुरुजी चलिए हम भी आपको कार में बिठाकर घुमा लाएँ और आप हमें केवट बना दीजिए। नहीं भाईसाहब अब मुश्किल है। अब हम नहीं बना सकते। तब वे खास मौके थे, तब आपने पहचाने नहीं और अब शिकायत करते हैं, अपने कर्म को दोष देते हैं कि ऐसा वक्त आया था और हम कुछ कर नहीं सके। मित्रो, शबरी ने भगवान् को बेर खिलाए थे, जिसकी प्रशंसा करते-करते हम थकते नहीं। भगवान ने शबरी से कहा—शबरी हम भूखे हैं। भगवान् को जरूरत पड़ी थी, वे भूखे थे। आपकी अपनी जरूरत है, पर कभी-कभी भगवान को भी जरूरत होती है और मनुष्य के लिए वही सौभाग्य के वक्त हैं। शबरी ने मौके को पहचान लिया था और बेर खिलाए थे। केवट ने भी भगवान की जरूरत को पहचान लिया था कि उनके पास नाव नहीं है। वे इन्तजार में खड़े हुए हैं कि कोई आए और हमको नाव में बिठाकर पार लगा दे।

मित्रो ! आदमियों की अपनी जरूरत होती है, यह तो मैं नहीं कहता कि जरूरत नहीं होती, पर कभी-कभी भगवान् को भी आदमियों की जरूरत होती है। हमेशा नहीं कभी-कभी जरूरत पड़ती है और उस कभी-कभी को, मौके को जो पहचान लेते हैं, वे गिलहरी के तरीके से, केवट के तरीके से, शबरी के तरीके से और रीछ-वानरों के तरीके से उनकी सहायता के लिए चल पड़ते हैं और धन्य बन जाते हैं। गिद्धों को आप जानते हैं, जब वे बूढ़े हो जाते हैं तो आपस में लड़ाई-झगड़ा करने लग जाते हैं। गिद्धों का मरना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन एक गिद्ध ने समय को पहचान लिया था कि हमारी जरूरत है। किसको ? सीताजी को जरूरत है कि कोई हमारी सहायता करे और चल पड़ा और धन्य हो गया। क्यों साहब, हम भी बूढ़े हो जाएँ और ऐसा कुछ करें ? नहीं भाईसाहब, अब वह वक्त चला गया, आप समय को तो पहचानते नहीं। भगवान् कभी-कभी हाथ पसारता है। आदमी तो भगवान के सामने हमेशा हाथ पसारता रहता है, पर भगवान आदमी के सामने कभी-कभी हाथ पसारता है और जब कभी वह हाथ पसारता है, तो उसकी हथेली पर कोई भी कुछ रख देता है तो रवीन्द्रनाथ की कविता के मुताबिक उसकी झोलियाँ सोने से भर जाती हैं। टैगोर की एक कविता है—'मैं गया द्वार-द्वार इकट्ठी कर झोली गेहूँ के दानों से, एक आया भिखारी, उसने पसारा हाथ। मैंने एक दाना उसकी हथेली पर रखा, चला गया भिखारी। घर आया तो मैंने अनाज की झोली को पलटा। उसमें एक सोने का दाना रखा हुआ था।' टैगोर ने बंगला गीत में गाया—मैं सिर धुन-धुन के पछताया कि मैंने क्यों नहीं अपनी झोली के सारे दाने उस भिखारी को दे दिए।' उस भिखारी से मतलब—भगवान् से है, समय से है। समय-समय पर जब कभी भगवान हाथ पसारते हैं और जो कोई उस समय को, मौके को पहचान लेते हैं और भगवान के पसारे हुए उस हाथ पर कुछ रख देते हैं, वे न जाने क्या से क्या हो जाते हैं ?

भगवान के और किस्से सुनाऊँ आपको ? वक्त बहुत चला गया, इसलिए और भगवान की तो मैं नहीं कहता, पर एक भगवान को जो कल-परसों होके चुका है, उसकी बात मैं कहता हूँ। उसने भी हाथ पसारा था। उसका नाम था—गाँधी। गाँधी जी ने भी हाथ पसारा था और उनकी हथेली पर जिन लोगों ने रखा था, उनका क्या-क्या हो गया आपको मालूम नहीं है। वे स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी हो गए, ताम्रपत्रधारी हो गए और तीन-तीन सौ रुपये पेंशन पाने लगे। यह खानदान त्यागियों का खानदान है। मित्रो ! मिनिस्टर उसी में से हुए हैं। अब तो बात दूसरी है, लेकिन शुरू के दिनों में जब आजादी आई थी तो सिर्फ वे ही मिनिस्टर बने थे, जो स्वाधीनता सेनानी थे। आप वक्त को नहीं पहचानते, आप भगवान को नहीं जानते कि वह कभी-कभी हाथ पसारता है। जिस समय हमने आपको बुलाया है, आप यकीन रखें यह वह समय है, जिसमें दुनिया बेतरीके से बदल रही है। आप तो यह भी नहीं देख पाते कि पृथ्वी घूम रही है, पर आँखें कहती हैं कि घूम रही होती तो हमारा मकान पूर्व से पश्चिम की ओर हो जाता। किसी को अपनी मौत कहाँ दिखाई देती है ? इसी तरह आपको जमाना बदलता हुआ दिखता है क्या ? नहीं दिखाई पड़ता। आपको भगवान का चौबीसवाँ अवतार होता हुआ दिखाई पड़ता है क्या ? दुनिया का कायाकल्प होता हुआ दिखाई पड़ता है क्या कि किस बुरी तरीके से गलाई-ढलाई हो रही है। आपको दिखाई न पड़ता हो तो देखिए कि हिन्दुस्तान का ही पिछले बीस-तीस साल में क्या हो गया ? कभी यहाँ राजा छाए हुए थे। तीन-चौथाई हुकूमत राजाओं की थी। अब है कोई राजा ? पच्चीस साल में सब तबाह हो गए। जागीरदार और जमींदार देखे हैं आपने, न देखे हों तो राजस्थान चले जाइए। वहाँ जगह-जगह किले, गाँव-गाँव किले, जो अब खण्डहर के रूप में पड़े हैं, उन्हीं के अवशेष हैं। सब कुछ समय बहा ले गया। राजा भी चले गए, जमींदार भी चले गए और कौन चले गये। साहूकार भी चले गये जो कभी गिरवी रखने और अच्छा-खासा ब्याज कमाने का धन्धा किया करते थे। बीस साल में बहुत कुछ बदल गया।

मित्रो ! इन दिनों दुनिया दो तरीके से बदल रही है। इसे कौन बदल रहा है ? बीसवीं सदी का अवतार, जिसे हम प्रज्ञावतार कहते हैं। आदमी की अक्ल बहुत ही वाहियात है। इस अक्ल ने सारी दुनिया को गुत्थियों में धकेल दिया है। जितनी ज्यादा अक्ल बढ़ी है, संसार में उतनी ही ज्यादा हैरानी बढ़ी है। आप कॉलेजों में, विश्वविद्यालयों में चले जाइए। पहले वहाँ अराजक तत्त्व, अवांछनीय तत्त्व कहाँ रहते थे, पर देखिए सारी खुराफातें कहाँ से जन्म ले रही हैं ? आपको बदलता हुआ जमाना दिखाई नहीं पड़ता, आजकल बहुत हेर-फेर हो रहा है। इस अक्ल ने दुनिया को हैरान कर दिया है। इस अक्ल की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धुलाई करने के लिए एक नई अक्ल पैदा हो रही है, जिसका नाम है—'महाप्रज्ञा'। चौबीसवाँ अवतार प्रज्ञा के रूप में जन्म ले रहा है। आपको तो नहीं दिखाई पड़ता होगा शायद, पर आप हमारी आँखों में आँखें डालकर देखें। हमारी आँखें बहुत पैनी हैं और बहुत दूर की देखने वाली हैं। हमारी आँखों में टैलिस्कोप लगे हुए हैं। आप आइए जरा हमारी आँखों में आँखें डालिए, फिर देखिए क्या हो रहा है ? जमाना बेहद तरीके से बदल रहा है। यह कौन बदल रहा है ? भगवान् बदल रहा है। भगवान के अवतार जब कभी भी दुनिया में हुए हैं, तब भक्तजनों को अपना सौभाग्य चमकाने का मौका मिल गया है। ऊपर हमने भगवान राम का उदाहरण दिया है, अभी और दूँ उदाहरण। अच्छा तो बुद्ध का और श्रीकृष्ण भगवान का उदाहरण देता हूँ आपको। कुब्जा जो चन्दन लगा देती थी, उसके उदाहरण दूँ। कितने उदाहरण दूँ आपको ? भगवान के अवतारों के साथ में जिन्होंने थोड़े-से भी अहसान कर दिए, वे धन्य हो गए। भगवान तो क्या महापुरुषों के साथ भी जिन्होंने कन्धा लगा दिया वे राजगोपालाचार्य हो गए, विनोबा हो गए। उनका नाम पटेल हो गया, नेहरू हो गया, जाकिर हुसैन हो गया, राधाकृष्णन् हो गया, राजेन्द्र बाबू हो गया। जिनका मैं नाम गिना रहा हूँ, वे सभी हिन्दुस्तान के बादशाह हो गए। वे इसलिए बादशाह हुए कि कोई खास अवतार युग को बदलने आया है और उसी की बिरादरी में शामिल हो गए, उसके कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ-साथ चलने की अपनी जुर्रत-हिम्मत दिखा दी।

आज का वक्त भी ऐसा ही है आप देखिए न। उस अवतार के साथ अगर आप कन्धे मिला सकते हों, चरण मिला सकते हों, आप उसके पीछे चल सकते हों, उसका भार बँटा सकते हों तो मैं आपमें से हर आदमी से कहूँगा कि अगले दिनों आप इतने शानदार, इतने भाग्यवान व्यक्ति कहलाएँगे कि आपका सौभाग्य आपके लिए सहायता ही देगा। हमने क्या किया है ? आप क्या समझते हैं कि हमने किताबें लिखी हैं, लेख लिखे हैं, लेक्चर देते हैं, पूजा करते हैं। अरे भाईसाहब, पूजा तो हम चार ही घण्टे करते हैं, पहले छह घण्टे करते थे, पर अब चार ही घण्टे करते हैं। आपको हम ऐसे आदमी बता सकते हैं, जो हमसे चौगुनी पूजा करते हैं। दुनिया में और दिल्ली में चले जाइए वहाँ ढेरों के ढेरों आदमी रहते हैं और अपने बाल-बच्चों का पेट पालते रहते हैं। स्कूलों में, कॉलेजों में लेक्चर होते हैं, लेक्चर देना उनका धन्धा ही है, रोटी ही इस बात की मिलती है उनको। फिर आपको इस तरह के मौके क्यों मिलते चले जा रहे हैं ? क्या वजह है इसकी ? इसकी एक ही वजह है कि हमने यह पहचान लिया है कि भगवान का अवतार होता हुआ चला आ रहा है। अवतार के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर, उसके कदम से कदम बढ़ाकर चलने का हमने निश्चय कर लिया कि साथ-साथ रहेंगे। उसके साथ अपनी जान की बाजी लगाएँगे। तब परिणाम क्या होता है ? वही जो आग-लकड़ी का होता है। दो कौड़ी की नाचीज लकड़ी जब आग के साथ मिल जाती है तो उसकी कीमत आग के बराबर हो जाती है। जिस लकड़ी को कल बच्चे उछाले फिर रहे थे, आग के साथ रिश्ता हो जाने की वजह से आज वही कहती है कि हमें छूना मत, आप हमारा इस्तेमाल मत करना। आज आपने यदि हमको फेंक दिया तो हम आपके छप्पर को जला देंगे, गाँव को जला देंगे। एक घण्टे पहले मैं लकड़ी थी, पर अब मैं आग हूँ। तो आग कैसे हो गईं आप ? हमने एक ही हिम्मत की है कि अपने आपको आग के साथ घुला दिया है, मिला दिया है। अगर आप भी ऐसा कर सकते हों तो मैं आपको सौभाग्यवान कहूँगा।

साथियो ! भगवान तो अपना काम करेंगे ही, आप करें तो, न करें तो भी। तो क्या रामचन्द्र जी रावण को मार सकते थे ? बिल्कुल मार सकते थे। रामचन्द्र जी में इतनी शक्ति थी कि रावण सहित एक-एक राक्षस को मार डालते और अकेले अपने बलबूते पर सीता जी को छुड़ा लाते। लेकिन उनको श्रेय देना था। भक्तों को श्रेय ऐसे ही मौके पर दिया जाता है। भक्त की परीक्षा ऐसे ही मौके पर होती है और वे समय शानदार होते हैं। इम्तहान रोज-रोज कहाँ होते हैं ? भक्तों के भी इम्तहान हमेशा नहीं होते, बहुत दिनों बाद होते हैं। जिसमें आपको बुलाया गया है, उसमें नवरात्र का अनुष्ठान करने के लिए ही आपको नहीं बुलाया है। आप अनुष्ठान करते हैं बहुत अच्छी बात है। यहाँ गंगा का किनारा, हिमालय की गोद, गायत्रीतीर्थ के पवित्र वातावरण में आप गायत्री का जप कर रहे हैं, यह बहुत ही प्रसन्नता और सफलता की बात है, पर आप याद रखिए हमने केवल अनुष्ठान करने के लिए ही आपको नहीं बुलाया। हमारे मकसद बड़े हैं और वे यह हैं कि आप ऐसे सौभाग्य वाले समय में क्या कुछ लाभ उठा सकते हैं ? क्या आप समय को पहचान सकते हैं ? क्या आप भगवान की सहायता कर सकते हैं ? हम इसीलिए बुलाते हैं और हर एक आदमी से बार-बार यही सवाल पूछते रहते हैं कि क्या आप इस शानदार समय को पहचान सकते हैं ? क्या आपकी अक्ल इतनी मदद करेगी कि आप इस शानदार समय को पहचान लें ? अगर आपकी अक्ल इतनी सहायता कर दे और यह बता दे कि यह बहुत ही शानदार समय है, तो फिर हम आपको एक और सलाह देते हैं कि ऐसे वक्त आप एक और हिम्मत कर डालना। कौन-सी हिम्मत ? आप भगवान की माँग को तलाश करें और उसको पूरा करने की कोशिश करें। भगवान की भी कुछ माँगें होती हैं। उन्होंने आप से भी कुछ माँगा है। उन माँगों को पूरा करने के लिए जरा आप कोशिश करें तो मजा आ जाए।

क्या माँगें हैं भगवान की ? आप अखण्ड-ज्योति के सब पाठक हैं और जानते हैं कि प्रज्ञावतार ने क्या माँगा है ? प्रज्ञावतार ने यह माँगा है कि हम लोगों के दिमागों की सफाई करें, विचारों की सफाई करें। प्रज्ञा इसी का नाम है। आदमियों के दिमाग पैने तो हो गए हैं, अक्ल तो बहुत पैनी हो गई है। अक्लमन्द तो इतने हो गए हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कि आप देखेंगे तो हैरान रह जाएँगे। अक्लमन्द आदमियों ने जहाँ एक ओर बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई हैं, बड़े-बड़े पुल बनाए हैं, बाँध बनाए हैं, वहीं दूसरी ओर इन्हीं अक्लमन्दों ने लोहा, सीमेण्ट सबके सब हजम कर लिए हैं। जहाँ भी, जिस भी डिपार्टमेण्ट में चले जाइए सब जगह अक्लमन्द लोग मिलेंगे। बेअक्ल लोग तो बेचारे चप्पल चुरा सकते हैं। अक्लमन्द लोगों ने सारी दुनिया को धोखा दिया है। दुनिया का सफाया करने की पूरी जिम्मेदारी अक्लमन्दों की है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बँटवारा कराकर लाखों आदमियों का खून करा देने की जिम्मेदारी अक्लमन्दों की ही है। आम बेचने वालों की नहीं। यह सब बड़े दिमाग वालों की है। इसलिए बड़े दिमाग़ वालों के मस्तिष्क की सफाई करने के लिए ही तो ऐसी लहर आ रही है, जो दुनिया में सोचने के तरीके को बदल देगी। प्रज्ञावतार इसी का नाम है। प्रज्ञावतार की क्या माँगें हैं, इसको हम बराबर छापते रहे हैं। इसको फिर से कहने की जरूरत नहीं है, पर प्रज्ञा अभियान के रूप में आप इस लहर को समझ सकते हैं। यह प्रज्ञा अभियान इनसान का नहीं है, अगर इनसान का होता तो हमारे जैसे आदमी इसके लिए कमजोर पड़ते। लेकिन उस महाशक्ति का काम करने के लिए जब हम आमादा हैं तो फिर आप हमारी सफलताओं को नहीं देखते। आपको हमारी सफलताएँ दिखाई नहीं पड़तीं। आप देखिए। हमारी सामर्थ्य, प्रतिभा, क्षमता और अक्ल को भी देखिए, सिद्धियों को भी देखिए। सब कुछ देखिए। पर मैं एक और बात कहता हूँ आपसे कि आप तो इसको देखने की परिस्थिति में भी नहीं हैं, क्योंकि जिस आँख से आप देखना चाहते हैं वह आँखें ऐसी नहीं हैं कि हमारी आध्यात्मिक सफलताओं को और हमारे प्रयासों द्वारा संसार में जो हेर-फेर हो रहे हैं और होने जा रहे हैं, उनको आप देखने में समर्थ हो सकें।

मित्रो ! आप देखें या न देखें, पर सारी सफलताएँ शानदार हैं। आप जरा फिर देखना, अभी तो हम हैं, कब तक जिएँगे कह नहीं सकते, लेकिन आप लोगों में से अधिकांश आदमी जिएँगे। जिएँगे तो देखना और नोट करना कि हमारी सफलताएँ कितनी शानदार होती हैं ? क्यों होती हैं ? क्योंकि हमने अवतार के साथ में कन्धे से कन्धा मिलाकर हनुमान के तरीके से काम करने का निश्चय कर लिया है। राधा एक साधारण से ग्वाले की लड़की का नाम था, किन्तु नाचने के लिए वह थोड़े दिन तक कृष्ण का साथ देती रहीं और राधा हो गयीं। किस-किस को कहें, शानदार शक्तियों का साथ देने वाले न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गए और क्या से क्या हो गए ? इसलिए इस शिविर में हमने आपको खासतौर से यह दावत देने के लिए बुलाया है कि अगर आपका मन बड़े फायदे उठाने का है और बड़े फायदे लायक अगर आपका व्यक्तित्व है, हिम्मत है तो आप आइए, इस मौके को गँवाइए नहीं। इस मौके से पूरा-पूरा फायदा उठाइए। आप लोगों में से हर एक को हम झकझोरते हैं और कहते हैं कि जो घर से निवृत्त हो चुके हैं, जिनके पास कोई महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ नहीं हैं, उन सबसे हम प्रार्थना करते हैं, अनुरोध-आग्रह करते हैं कि अगर आप किसी तरीके से अपना गुजारा कर सकते हों तो आप आइए और हमारी मिलिट्री में भर्ती हो जाइए। आप में से हर आदमी को प्रज्ञावतार के कन्धे से कन्धा मिलाने के लिए हम दावत देते हैं, विशेषकर उन लोगों को जिन्होंने अपनी आदतें ठीक कर रखी हैं, परिश्रमी हैं, चरित्रवान् हैं और जिनका वजन भारी नहीं है अर्थात् जिम्मेदारियों का बोझ हल्का है। ऐसे लोगों के लिए सबसे बेहतरीन काम यह है कि अपना गुजारा करने के बाद में वे समाज के काम आएँ, देश के काम आएँ।

मित्रो ! आपमें से हर उन आदमियों को भी हम दावत देते हैं जो भावनाशील हैं, जिनके ऊपर बहुत भारी वजन नहीं है, तब तो हम ठहरने के लिए कहेंगे। लेकिन थोड़ा वजन है तो उनकी भी सहायता करेंगे। हमें २४ हजार शक्तिपीठों के लिए उतने ही कार्यकर्त्ता चाहिए। इन इमारतों में प्राण भरने के लिए हमें। कार्यकर्त्ताओं की जरूरत है। चौबीस हजार की भर्ती करनी है हमें आप स्वयं अपना इन्तजाम कर सकने की स्थिति में हों तो ठीक है, अन्यथा हम आपके खाने का, कपड़े का, जेबखर्च का इन्तजाम बिठा देंगे। आपके बीबी-बच्चों के लिए भी जो मुनासिब खर्च होगा, वह भी हम देंगे। कौन है हमारी पीठ पीछे, आपको तो दिखाई नहीं पड़ता। आप आँख खोलिए और देखिए कि हमारे पीछे बहुत शानदार शक्ति है। हम खाली हाथ हैं तो क्या हुआ हमारा गुरु तो खाली हाथ नहीं है। हम अपने 'बॉस' के बारे में विश्वास करते हैं। हमें यह भी विश्वास है कि अगर हमें दो हजार कार्यकर्त्ता रखने पड़े तो भी पैसों का इन्तजाम हम कर देंगे। उनमें से अधिकांश नौकर रखने पड़े तो भी पैसों का इन्तजाम कर देंगे। इसलिए एक विज्ञापन निकाल देंगे कि जिसे नौकरी करनी हो सीधे शान्तिकुंज चले आवें। एक लाख आदमी अगले ही महीने में एप्वाइंट करके दिखा दूँ आपको। युग-परिवर्तन के लिए बहुत बड़े काम करने पड़ेंगे, परन्तु यह काम नौकरों से नहीं हो सकेगा। यह काम भावनाशीलों का है, त्यागियों का है। इसलिए हम आपकी खुशामदें करते हैं कि हमको भावनाशील आदमियों की जरूरत है, जिनको हम प्रामाणिक कह सकें, जिसको हम परिश्रमी कहें। जो परिश्रमी हैं वे प्रामाणिक हैं और वे जो प्रामाणिक एवं परिश्रमी हैं, उनको मिशन की जानकारी है। हम इनको कब तक सिखाएँगे, कितना सिखाएँगे, इनको सिखाने में कितना समय लगेगा ? हमारे पास समय बहुत कम है। हमको आदमियों की जरूरत है, अगर आप स्वयं उन आदमियों में शामिल होना चाहते हों तो आइए हम स्वागत करते हैं और आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि आप जो भी काम करते हैं, उन सब कामों की बजाय यह बेहतरीन धन्धा है। इससे बढ़िया कोई धन्धा नहीं हो सकता। हमने किया है, इसलिए आपको भी यकीन दिला सकते हैं कि यह बहुत फायदे का धन्धा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इन दिनों हमारे पास केवल दस लाख आदमी हैं जो बहुत कम हैं। सारी दुनिया में चार सौ पचास करोड़ आदमी रहते हैं। अकेले हिन्दुस्तान में इन दिनों सत्तर करोड़ से ज्यादा आदमी हो गए हैं। इन सब तक पहुँचने के लिए दस लाख आदमी बहुत थोड़े हैं। अब हमें अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करने के लिए आपकी सहायता की जरूरत है। इसके लिए अब हमको वह वर्ग ढूँढ़ना पड़ेगा, जिसको विचारशील वर्ग कहते हैं, भावनाशील वर्ग कहते हैं, त्याग और बलिदान के लिए आगे बढ़ने वाला वर्ग कहते हैं। अब हमें इंजीनियरों की जरूरत है, डॉक्टरों की जरूरत है, सिपाहियों की जरूरत है, ओवरसियरों की जरूरत है। हमको उनकी जरूरत है, जो राष्ट्र के निर्माण के काम आ सकें।

नए वर्ग में, नए क्षेत्र में जाने के लिए आप सब हमारी मदद कर दीजिए। क्या काम करेंगे ? हमने एक बहुत ही शानदार भवानी तलवार निकाली है। ऐसी शानदार योजना दुनिया में आज तक नहीं बनीं। क्या बनी है ? हमने हर दिन हर पढ़े-लिखे को नियमित रूप से बिना मूल्य युगसाहित्य पढ़ाने की योजना बनाई है। आप पढ़े-लिखे लोगों तक हमारी आवाज पहुँचा दीजिए, हमारी जलन को, हमारी चिंगारियों को पहुँचा दीजिए। लोगों से आप यह मत कहना कि गुरुजी बड़े सिद्धपुरुष हैं, बड़े महात्मा हैं और सबको वरदान देते हैं, वरन् यह कहना कि गुरुजी एक ऐसे व्यक्ति का नाम है, जिसके पेट में से आग निकलती है, जिसकी आँखों में से शोले निकलते हैं। आप ऐसे गुरुजी का परिचय कराना, सिद्धपुरुष का नहीं। विचारक्रान्ति अभियान को हमने युगसाहित्य के रूप में लिखना शुरू कर दिया है और हर आदमी को स्वाध्याय करने के लिए मजबूर किया है। हमारे विचारों को आप पढ़िए और हमारी आग की चिनगारी को जो प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत युगसाहित्य के रूप में लिखना शुरू किया है, उसे लोगों में फैला दीजिए। जीवन की वास्तविकता के सिद्धान्त को समझिए, ख्वाबी दुनिया में से निकलिए और आदान-प्रदान की दुनिया में आइए। आपके नजदीक जितने भी आदमी हैं, उनमें आप हमारे विचार फैला दीजिए। यह काम आप अपने काम करते हुए भी कर सकते हैं। आप युगसाहित्य लेकर अपने सर्किल में पढ़ाना शुरू कर दीजिये, अपने पड़ोसियों को पढ़ाना शुरू कर दीजिए। उनको हमारे विचार दीजिए, हमको आगे बढ़ने दीजिए, सम्पर्क बढ़ने दीजिए और आप हमारी सहायता कर दीजिए ताकि हम उन विचारशीलों के पास, शिक्षितों के पास जाने में समर्थ हो सकें। इससे कम में हमारा काम चलने वाला नहीं है और न ही हमें सन्तोष होगा। मित्रो ! हमारे विचारों को लोगों को पढ़ने दीजिए। जो हमारे विचार पढ़ लेगा, वही हमारा शिष्य है। हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं। हमारी सारी शक्ति हमारे विचारों में सीमाबद्ध है। दुनिया को हम पलट देने का जो दावा करते हैं वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं। आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए। अब हमको नई पीढ़ी चाहिए इसके लिए आप पढ़े-लिखे विचारशीलों में जाइए, उनके घरों में जाइए, खुशामदें करिए, उनका जन्मदिन मनाइए, दरवाजा खटखटाइए और हमारी विचारधारा उन तक पहुँचाइए। यह हमारा नया कार्यक्रम है।

मित्रो ! युगसाहित्य पढ़ाना, प्रज्ञा अभियान पढ़ाना, जन्मदिन मनाना—यह तीन कार्यक्रम प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत आते हैं। आपमें से जो आदमी प्रज्ञापुत्रों के रूप में हमारे साथ शामिल हो सकते हैं, वे अंगद के तरीके से आएँ, नल-नील के तरीके से आएँ, हनुमान के तरीके से आएँ, गिलहरी के तरीके से आएँ, शबरी के तरीके से आएँ, केवट के तरीके से आएँ। आएँ तो सही, कुछ करें तो सही हमारे लिए। हम आपके लिए करेंगे आप हमारे लिए करिए। हमने गायत्री माता के लिए किया है और गायत्री माता ने हमारे लिए किया है। हमने अपने गुरु के लिए किया है और गुरु ने हमारे लिए किया है। क्या आप हमारे काम नहीं आएँगे ? आप हमारे काम आइए और हम आपके काम आएँगे। अब हमारा हर एक कार्यक्रम में जाना नहीं हो सकेगा, लेकिन आपमें से हर एक सक्रिय कार्यकर्त्ता को सालभर में एक बार अपने गुरुद्वारे में अवश्य आना चाहिए। अभी तक आप हमारे पास वरदान माँगने के लिए आते रहे हैं, पर अब हम आपसे माँगते हैं। आपके पसीने का वरदान, आपकी मेहनत का वरदान। अब आप देने के लिए आना, कुछ पसीना बहाने के लिए आना, कुछ समय देने के लिए आना, कुछ अक्ल देने के लिए आना। मित्रो ! अब हमें उन लोगों को बुलाना है, जो आशीर्वाद देने में समर्थ हो सकें, हमारे कन्धे से कन्धा मिला सकें। जो हमारा गोवर्धन उठाने में लाठी का टेका लगा सकें। जो हमारे समुद्र पर पुल बाँधने में ईंट और पत्थर ढो सकें और गाँधी जी के कन्धे से कन्धा मिलाकर जेल जा सकें। हमने सारे विश्व को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया है। अब हम हर एक आदमी को बुलाएँगे और उसी स्तर के लिए उसमें प्राण फूँकेंगे। आप लोग इन योजनाओं में हमारी सहायता करना। भगवान् ने हाथ पसारा है। हमारे गुरुदेव ने हमारे सामने हाथ पसारा था। विवेकानन्द के सामने रामकृष्ण ने हाथ पसारा था, चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के सामने और समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी के आगे हाथ पसारा था। भगवान की हथेली पर रखने वाला आदमी कभी घाटे में नहीं रहा। आप भी घाटे में नहीं रहेंगे। हम आपके आगे हाथ पसारते हैं, आपका श्रम माँगने के लिए, समय माँगने के लिए, आपकी क्षमता माँगने के लिए, आपकी भावना माँगने के लिए। अगर आप देंगे तो विश्वास कर सकते हैं कि हमारे खेत में अगर बीज बोएँगे तो हमारी जमीन उसको खाने वाली नहीं है। हम आपको हजार गुना फल उगाकर देंगे और आपको निहाल कर देंगे। आप कुछ दीजिए तो सही हमको। आप देना नहीं चाहते क्या ? आप दीजिए, अपना श्रम दीजिए, समय दीजिए, भावना दीजिए, यही है आपके सामने आज के प्रज्ञावतार की अपील, युग के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवता की अपील, महाकाल की अपील और हमारी अपील। आप कुछ करना चाहते हों तो करना। आज की बात अब खत्म करते हैं।

ॐ शान्ति।

युगसन्धि की वेला व हमारे दायित्व

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

हममें से प्रत्येक परिजन को कुछ मान्यताएँ अपने मन में गहराई तक उतार लेनी चाहिए। एक यह कि जिस समय में हम और आप जीवित रह रहे हैं, वह एक विशेष समय है। यह युग-परिवर्तन की वेला है, इसमें युग बदल रहा है। जिस तरह प्रातःकाल का समय विशेष महत्त्वपूर्ण समय होता है। इसमें हर आदमी सामान्य काम न करके विशेष काम करता है। अध्ययन से लेकर भजन तक के उच्चस्तरीय कार्य इसमें किए जाते हैं, क्योंकि प्रातःकालीन समय अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यह समय भी इसी तरह का है। यह संध्याकाल है, इसमें युग बदल रहा है। इस विशेष संध्याकाल को हमें विशेष कर्त्तव्यों के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। हममें से प्रत्येक साधक को यह मानकर चलना चाहिए कि हमारा व्यक्तित्व विशेष है। हमको भगवान ने किसी विशेष काम के लिए भेजा है। कीड़े-मकोड़े और दूसरे सामान्य तरह के प्राणी पेट भरने के लिए और औलाद पैदा करने के लिए पैदा होते हैं। मनुष्यों में से भी बहुत नर-पामर और नर-कीटक हैं, जिनके जीवन का कोई लेखा-जोखा नहीं। पेट भरने और औलाद पैदा करने के अलावा दूसरा कोई काम वे न कर सके। लेकिन कुछ विशेष व्यक्तियों के ऊपर भगवान् विश्वास करते हैं और यह मानकर भेजते हैं कि यह हमारे भी कुछ काम आ सकते हैं, केवल अपने ही गोरखधन्धे में नहीं फँसे रहेंगे। युग-निर्माण परिवार के हर व्यक्ति को अपने बारे में ऐसी ही मान्यता बनानी चाहिए कि हमको भगवान ने विशेष काम के लिए भेजा है। यह कोई विशेष समय है और हममे से हर आदमी को यह अनुभव करना चाहिए कि हम कोई विशेष उत्तरदायित्व लेकर के आए हैं। समय को बदलने का उत्तरदायित्व, युग की आवश्यकताओं को पूरा करने का उत्तरदायित्व हमारे कन्धों पर है। अगर इन बातों पर आप विश्वास कर सकें तो आपकी प्रगति का दौर खुल सकता है और आप महामानवों के रास्ते पर, जो कि अपने इस युग-निर्माण परिवार का उद्देश्य है, सफलतापूर्वक चल सकते हैं।

यह विशेष समय वैसा नहीं है, जैसा कि शान्ति के समय का होता है। यह आपत्तिकाल जैसा समय है और आपत्तिकाल में आपातकालीन उत्तरदायित्व होते हैं। हमारे ऊपर सामान्य जिम्मेदारियाँ नहीं हैं, वरन् युग की भी जिम्मेदारियाँ हैं, यह मानकर हमको चलना चाहिए और साथ ही यह भी मानकर चलना चाहिए कि रीछ-वानर जिस तरीके से विशेष भूमिका निभाने के लिए आए थे। जैसे पाण्डव विशेष भूमिका निभाने के लिए आए थे और ग्वाल-बाल श्रीकृष्ण भगवान् के साथ विशेष भूमिका निभाने के लिए आए थे। गाँधी जी के सत्याग्रही उनके साथ विशेष भूमिका निभाने के लिए आए थे। बुद्ध के साथ चीवरधारी भिक्षु कुछ विशेष उत्तरदायित्व निभाने के लिए आए थे। आप लोग इस तरह का अनुभव और विश्वास कर सकें कि आप लोग हमारे साथ उसी तरीके से जुड़े हैं और विशेष उत्तरदायित्व महाकाल का सौंपा हुआ पूरा करने के लिए हम लोग आए हैं। अगर यह बात मान सकें तो फिर आपके सामने नए प्रश्न उत्पन्न होंगे और नई समस्याएँ उत्पन्न होंगी और नए आधार, नए कारण उत्पन्न होंगे।

इसके लिए आपको जो पहला कदम बढ़ाना पड़ेगा वह यह कि आपको अपनी परिस्थितियों में हेर-फेर करना पड़ेगा। जिस तरीके से सामान्य मनुष्य जीते हैं, उस तरीके से आप जीने से इनकार कर दें और यह कहें कि हम तो विशेष व्यक्तियों और महामानवों की तरीके से जिएँगे। जब मात्र पेट ही भरना है तो गन्दे तरीके से क्यों, श्रेष्ठ तरीके से क्यों न भरें ? पेट भरने के अलावा जो कार्य कर सकते हैं, उसे क्यों न करें ? जब यह प्रश्न आपके सामने ज्वलन्त रूप में आ खड़ा होगा, तब यह आवश्यकता आपको अनुभव होगी कि हम अपनी मनःस्थिति में हेर-फेर कर डालें, अपनी मनःस्थिति को बदल डालें और हम लौकिक आकर्षणों की अपेक्षा यह देखें कि इनमें भटकते रहने की अपेक्षा, मृगतृष्णा में भटकते रहने की अपेक्षा भगवान का पल्ला पकड़ लेना ज्यादा लाभदायक है। भगवान का सहयोगी बन जाना ज्यादा लाभदायक है। संसार का इतिहास बताता है कि भगवान का पल्ला पकड़ने वाले, भगवान को अपना सहयोगी बनाने वाले कभी घाटे में नहीं रहे। अगर इस बात पर विश्वास कर सके तो जानना चाहिए कि हमने एक बहुत बड़ा प्रकाश पा लिया। ऊँचा उठने के लिए मनःस्थिति बदलना और सांसारिकता का पल्ला पकड़ने की अपेक्षा भगवान की शरण में जाना आवश्यक है। यही हमारा दूसरा कदम होना चाहिए।

तीसरा कदम आत्मिक उत्थान के लिए हमारा यह होना चाहिए कि हमारी महत्त्वाकांक्षाएँ, कामनाएँ, इच्छाएँ बड़प्पन के केन्द्र से हटें और महानता के साथ जुड़ जाएँ। हमारी महत्त्वाकांक्षाएँ यह नहीं होनी चाहिए कि हम जिन्दगीभर वासना को पूरा करते रहेंगे और तृष्णा के लिए अपने समय और बुद्धि को खर्च करते रहेंगे और अपने बड़प्पन को, अपनी अहंता को, ठाट-बाट को लोगों के ऊपर रौब गालिब करने के लिए हम तरह-तरह के तानेबाने बुनते रहेंगे। अगर हमारा मन इस बात को मान जाए और अन्तःकरण स्वीकार कर ले कि यह बचकानी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बातें हैं, छिछोरी बातें हैं, छोटी बातें हैं। अगर हम क्षुद्रता का त्याग कर सकें तो फिर हमारे सामने एक ही बात खड़ी होगी कि अब हमको महानता ग्रहण करनी है। महापुरुषों ने जिस तरीके से आचरण किए थे, उनके चिन्तन करने को जो तरीका था, जिस तरीके से उन्होंने आचरण किए थे, वही तरीका हमारा होना चाहिए और हमारी गतिविधियाँ उसी तरीके की होनी चाहिए जैसी कि श्रेष्ठ मनुष्यों की रही हैं और रहेंगी। यह विश्वास करने के बाद हमको अपनी क्रिया-पद्धति में, दृष्टिकोण में, मान्यताओं में, इच्छा-आकांक्षाओं में परिवर्तन करने, बदल देने के बाद व्यावहारिक जीवन में भी थोड़े-से कदम उठाने चाहिए।

साधकों के लिए यही मार्ग है कि मन और इन्द्रियों की गुलामी को हम छोड़ दें और इनके स्वामी बनें। अब तक हम असहाय के रूप में, दीन-दुर्बल के रूप में इन्द्रियों के कोड़े सहते रहते हैं और इनके दबाव और इनकी वजह से चाहे जहाँ घूमते हैं। मन हमको चाहे जहाँ घसीट ले जाता है। कभी गड्ढे में ढकेल देता है, कभी कहीं कर देता है। इन्द्रियाँ हमसे जाने क्या-क्या करा लेती हैं ? मन न जाने क्या-क्या करने के लिए कहता रहता है। हम असहाय एवं गुलामों के तरीके से इन्हीं का कहना मानते हैं। अब हमको इन परिस्थितियों को बदल देना चाहिए। हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप इनके स्वामी बनें। स्वामी अपनी ललक-लिप्सा को छोड़ दें। इन्द्रियों को नौकरानी के तरीके से इस्तेमाल करें बल्कि मन को नौकर के तरीके से इस्तेमाल करें। मन को हुक्म दें कि आपको हमारा कहना मानना ही पड़ेगा। इन्द्रियों से कहें कि आप हमारी मर्जी के बिना जो भी चाहे नहीं कर सकतीं। हमारी आज्ञा के बिना कैसे करेंगी ? इस तरीके से इन्द्रियों के ऊपर हुकूमत अगर हम कर पाएँ तो हम गुलामी के बन्धन से मुक्त हो जाएँ। जिसके लिए हम मुक्ति चाहते हैं, भव-बन्धनों से मुक्ति चाहते हैं, असल में यह कोई भव-बन्धनों से मुक्ति नहीं है। हमारे मन और इन्द्रियों की गुलामी का नाम ही भव-बन्धन है। इनसे यदि हम अपने को छुड़ा लेते हैं तो हम स्वभावतः जीवनमुक्त हो जाते हैं और मोक्ष मिल जाता है। अगर इसके लिए हम साहस इकट्ठा कर पाएँ तब।

संसार में रहकर हम अपने कर्तव्य पूरे करें, हँसी-खुशी से रहें, अच्छे तरीके से रहें, लेकिन इनमें इस कदर व्यस्त न हो जाएँ, इस कदर न फँस जाएँ कि हमको अपने जीवन के उद्देश्यों का ध्यान ही नहीं रहे। अगर हम इसमें फँसेंगे तो मरेंगे। मक्खी चासनी के ऊपर दूर बैठकर रस लेती रहती है तब तो ठीक है। इस तरह वह जायका भी लेती रहती है और अपने को सुरक्षित भी रखती है, पर कोई ऐसी मूर्ख मक्खी जैसे कि आप हैं, चासनी के ऊपर बेहिसाब टूट पड़ती है तो शहद खाना तो दूर, चासनी खाना तो दूर, वह अपने पंखों में लपेट लेती है और बेमौत मरती है। आपने उन बन्दरों का किस्सा सुना होगा जो अफ्रीका में पाए जाते हैं और जिनके बारे में यह कहा जाता है कि शिकारी लोग उसको मुट्ठी भर चने का लालच दे करके उसकी जान ले लेते हैं। उसे गिब्बन कहते हैं। उसे फँसाने के लिए लोहे के घड़े में चने भर दिए जाते हैं और गिब्बन उन चनों को खाने के लिए आता है, मुट्ठी बाँध लेता है, लेकिन जब मुट्ठी निकालना चाहता है तो वह निकलती नहीं है। जोर लगाता है तो भी नहीं निकलती। इतनी हिम्मत नहीं होती कि मुट्ठी को खाली कर दे और हाथ को खींच ले, लेकिन वह मुट्ठी को छोड़ना नहीं चाहता। इसका परिणाम यह होता है कि हाथ बाहर निकलता नहीं और शिकारी आता है तथा उसको मारकर खत्म कर देता है। उसकी चमड़ी को उधेड़ लेता है। हमारी और आपकी स्थिति ऐसी ही है जैसे अफ्रीका के गिब्बन बन्दरों की। हम लिप्साओं के लिए, लालसाओं के लिए, वासना के लिए, तृष्णा के लिए, अहंकार की पूर्ति के लिए मुट्ठी बन्द करके बन्दरों की तरीके से फँसे रहते हैं और अपनी जीवन-सम्पदा का विनाश कर देते हैं। इससे हमको बाज आना चाहिए और अपने आपको इनसे बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

हमको अपनी क्षुद्रता का त्याग करना ही है। जब हम क्षुद्रता का त्याग करते हैं तो कुछ खोते नहीं वरन् कमाते ही कमाते हैं। कार्ल मार्क्स मजदूरों से यही कहते थे—"मजदूरो एक हो जाओ, तुम्हें गरीबी के अलावा कुछ खोना नहीं है।" मैं कहता हूँ कि अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले विद्यार्थियो ! तुम्हें अपनी क्षुद्रता के अलावा और कुछ नहीं खोना है, पाना ही पाना है। आध्यात्मिकता के मार्ग पर पाने के अलावा और कुछ नहीं है। इसमें एक ही चीज हाथ से दी जाती है, जिसका नाम है—क्षुद्रता और संकीर्णता। क्षुद्रता और संकीर्णता को त्यागने में अगर आपको बहुत कष्ट न होता हो तो मेरी प्रार्थना है कि आप इसको छोड़ दें और महानता के रास्ते पर चलें। जीवन में भगवान को अपना हिस्सेदार बना लें। भगवान के साथ अपने को जोड़ लें। अपने को जोड़ लेंगे तो यह रिश्तेदारी, यह मुलाकात आपके बहुत काम आएगी। गंगा ने अपने आपको हिमालय के साथ में जोड़े रखा है। गंगा और हिमालय का तालमेल तथा रिश्ता-नाता ठीक बना रहा और गंगा हमेशा पानी खर्च करती रही, लेकिन उसको पानी की कमी भी कभी नहीं पड़ने पाई। हिमालय के साथ, भगवान के साथ हम अपना रिश्ता जोड़ें तो हमारे लिए जीवन में कभी अभावों का, संकटों का अनुभव न करना पड़ेगा जैसे कि सामान्य लोग पग-पग पर किया करते हैं। गंगा का पानी सूखा नहीं, लेकिन नाले का सूख गया, क्योंकि उसने महान् सत्ता के साथ सम्बन्ध बनाया नहीं। बाढ़ का पानी आया तो सूखा नाला उछलने लगा, जैसे ही पानी सूखा, नाला भी सूख गया। नौ महीने सूखा पड़ा रहा। बरसाती नाला तीन महीने बाद ही सूख गया, लेकिन गंगा युगों से बहती चली आ रही है, कभी सूखने का नाम नहीं लिया। हम भी अगर हिमालय के साथ जुड़ने, भगवान के साथ जुड़ने की हिम्मत कर पाए, तब हमें भी सूखने का कभी मौका नहीं आएगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने आपको हम अगर भगवान को समर्पित कर सकें तो ही भगवान को पाएँगे। कठपुतली ने अपने आपको बाजीगर के हाथों में सौंप दिया और बाजीगर की सारी कला का लाभ उठाया। हम भगवान की सारी कला का लाभ उठा सकते हैं, शर्त केवल यही है कि हम अपने आपको, अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को और अपनी दुष्प्रवृत्तियों को भगवान के सुपुर्द कर दें। पतंग ने कुछ खोया नहीं, बच्चे के हाथ में अपने को सौंप दिया और बच्चे ने उस पतंग को डोरी के सहारे उड़ाया और पतंग आसमान छूने लगी। अगर पतंग ने इतनी हिम्मत और बहादुरी न दिखाई होती और बच्चे के हाथ में अपना मार्गदर्शन न सौंपा होता तो क्या पतंग उड़ सकती थी ? नहीं, जमीन पर ही पड़ी रहती। बंसरी ने अपने आपको किसी गायक को सौंपा। गायक के होठों से लगी और गायक के होठों ने वह हवा फूँक मारी जिससे कि चारों ओर मधुर संगीत निनादित होने लगा। हम भगवान के साथ में अपने आपको इसी तरीके से जोड़ें जैसे कि कठपुतली, पतंग और बाँसुरी अपने आपको जोड़ती हैं, न कि इस तरीके से कि पग-पग पर हुकूमत चलाएँ भगवान के साथ और अपनी मनोकामना पेश करें। यह भक्ति की निशानी नहीं है। भगवान की आज्ञा पर चलना हमारा काम है। भगवान पर हुकूमत करना और भगवान के सामने तरह-तरह की फरमाइशें पेश करना यह तो वेश्यावृत्ति का काम है। हममें से किसी की भी उपासना लौकिक कामनाओं के लिए नहीं, बल्कि भगवान की साझेदारी के लिए, भगवान को स्मरण रखने के लिए, भगवान के आज्ञानुवर्ती होने के लिए और भगवान को अपना समर्पण करने के उद्देश्य से उपासना होनी चाहिए। अगर आप ऐसी उपासना करेंगे तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी उपासना सफल होगी। आपको आन्तरिक सन्तोष मिलेगा, बल्कि आपके व्यक्तित्व का विकास होगा और व्यक्ति के विकास का निश्चित परिणाम यह होता है कि आदमी भौतिक और आत्मिक दोनों तरह की सफलताएँ भरपूर मात्रा में प्राप्त करता है।

मेरा आपसे यह अनुरोध है कि आप हँसती-हँसाती जिन्दगी जिएँ, खिलती-खिलाती जिन्दगी जिएँ, हल्की-फुल्की जिन्दगी जिएँ। अगर हल्की-फुल्की जिन्दगी जिएँगे तो आप जीवन के सारे का सारा आनन्द पाएँगे और अगर आप वासना, तृष्णा; लोभ, लिप्सा में घुसेंगे तो नुकसान उठाएँगे। आप अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए जिन्दगी जिएँ और हँसी-खुशी से जिएँ। किसी बात को बहुत महत्त्व न दें। अपने किसी कर्त्तव्य की उपेक्षा भी न करें, लेकिन उसमें इतने ज्यादा मशगूल भी न हों कि किसी लौकिक काम को ज्यादा महत्त्व देने लगें और अपने मन की शान्ति खो बैठें।

हमें माली की जिन्दगी जीनी चाहिए, मालिक की नहीं। मालिक की जिन्दगी में बहुत भारीपन है और बहुत कष्ट है। माली की जिन्दगी के तरीके से, रखवाली करने वाले चौकीदार की तरीके से हम जिएँ तो पाएँगे कि जो कुछ भी कर लिया वह हमारा कर्त्तव्य ही काफी था। मालिक को चिन्ता रहती है कि सफलता मिली कि नहीं। उसको इतनी चिन्ता रहती है कि अपने कर्त्तव्य और फर्ज पूरे किए कि नहीं। हम दुनिया में रहें, काम दुनिया में करें, पर अपना मन भगवान में रखें अर्थात् उच्च उद्देश्यों और उच्च आदर्शों के साथ जोड़कर रखें। कमल का पत्ता पानी पर तैरता है, लेकिन डूबता नहीं है। हम दुनिया में डूबें नहीं। हम खिलाड़ी के तरीके से जिएँ। हार-जीत के बारे में बहुत ज्यादा चिन्ता न करें। हम अभिनेता के तरीके से जिएँ और यह देखें कि हमने अपना पार्ट-प्ले ठीक तरीके से किया कि नहीं किया। हमारे लिए इतना ही सन्तोष बहुत है। ठीक है, परिणाम नहीं मिला तो हम क्या कर सकते हैं ? बहुत-सी बातें परिस्थितियों पर निर्भर रहती हैं। परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल नहीं रहीं तो हम क्या कर सकते हैं ? हमने अपना कर्त्तव्य पूरा किया, हमारे लिए इतना बहुत है। इस दृष्टि से अगर आप जिएँगे तो आपकी खुशी को कोई छीन नहीं सकता और आपको इस बात की परवाह नहीं होगी कि जब कभी सफलता मिले, तब आप प्रसन्न हों। चौबीसों घण्टे आप खुशी से जीवन जी सकते हैं। जीवन की सार्थकता, सफलता का यही तरीका है।

आप मुनीम के तरीके से जिएँ, मालिक के तरीके से नहीं। आप बन्दीगृह के कैदी से अपने आपकी तुलना करें, जिसका घर कहीं और है। जो जेल में रहता तो है पर याद अपने घर वालों की बनाए रखता है। सैनिक सेना में काम तो करता है, पर अपने घर वालों का भी ध्यान रखता है। हम अपने घर वालों का भी ध्यान रखें। जिस लोक के हम निवासी हैं, जिस लोक में हमको जाना है, उसका भी ध्यान रखें। इस लोक में हम आए हुए हैं, ठीक है, यहाँ के भी कई कर्त्तव्य और जिम्मेदारियाँ हैं। चिन्ता में डूब नहीं जाएँ, तो हमारे लिए जीवन की सार्थकता बन सकती है।

साधकों में से कई व्यक्ति हमसे यह पूछते रहते हैं कि हम क्या करें ? मैं उनमें से हर एक से कहता हूँ कि यह मत पूछिए, बल्कि यह पूछिए कि क्या बनें ? अगर आप कुछ बन जाते हैं तो करने से भी ज्यादा कीमती है वह। फिर जो कुछ भी आप कर रहे होंगे, वह सब सही हो रहा होगा। आप साँचा बनने की कोशिश करें। अगर आप साँचा बनेंगे तो जो भी गीली मिट्टी आपके सम्पर्क में आएगी, आपके ही तरीके के, आपके ही ढंग के, शक्ल के खिलौने बने हुए चले जाएँगे। आप सूरज बनें तो आप चमकेंगे और चलेंगे। उसका परिणाम क्या होगा ? जिन लोगों के लिए आप करना चाहते हैं, वे आपके साथ-साथ चमकेंगे और चलेंगे। सूरज के साथ में नौ ग्रह और बत्तीस उपग्रह हैं। वे सबके सब चमकते हैं और साथ-साथ चलते हैं। हम चलें, हम प्रकाशवान हों, फिर देखेंगे कि जिस जनता के लिए आप चाहते थे कि वह हमारी अनुगामी बने और हमारी नकल करे तो वह ऐसा ही करेगी। आप देखेंगे कि आप चलते हैं तो दूसरे लोग भी चलते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आप स्वयं नहीं चलेंगे और यह अपेक्षा करेंगे कि दूसरे आदमी हमारा कहना मानें तो यह मुश्किल बात है। आप गलें और वृक्ष बनें और वृक्ष बन करके अपने जैसे असंख्य बीज आप अपने भीतर से पैदा कर डालें। हमको बीजों की जरूरत है। आप बीज बनिए, गलिए, वृक्ष बनिए और अपने भीतर से ही फल पैदा करिए और प्रत्येक फल में से ढेरों के ढेरों बीज पैदा कीजिए। आप अपने भीतर से ही बीज क्यों नहीं बनाएँ ?

मित्रो ! जिन लोगों ने अपने आपको बनाया है, उनको यह पूछने की जरूरत नहीं पड़ी कि क्या करेंगे ? उनकी प्रत्येक क्रिया इस लायक बन गई कि उनकी क्रिया ही सब कुछ करा सकने में समर्थ हो गई। उनका व्यक्तित्व ही इतना आकर्षक रहा कि प्रत्येक सफलता को और प्रत्येक महानता को सम्पन्न करने के लिए काफी था। सिक्खों के गुरु रामदास के शिष्य अर्जुन देव जी बर्तन-थाली साफ करने का काम करते थे। उन्होंने अपने आपको अनुशासन में ढालने का प्रयत्न किया था, पर जब उनके गुरु यह तलाश करने लगे कि कौन-से शिष्य को अपना उत्तराधिकारी बनाया जाए ? सारे विद्वानों की अपेक्षा, नेता और दूसरे गुण वालों की अपेक्षा उन्होंने अर्जुन देव को चुना और यह कहा कि अर्जुन देव ने अपने आपको बनाया है। बाकी आदमी इस कोशिश में लगे रहे कि हम दूसरों से क्या कराएँ और स्वयं क्या करें ? जबकि होना यह चाहिए था कि जिस तरीके से अर्जुन देव ने न कुछ किया था और न कराया था, केवल अपने आपको बना लिया था। इसलिए उन्हें गुरु ने माना कि यह सबसे अच्छा आदमी है। सप्तऋषियों ने अपने आपको बनाया था। उनके अन्दर तप की सम्पदा थी, फिर जो कोई भी जहाँ कहीं भी रहते चले गए और जो भी काम उन्होंने किए वही महान श्रेणी का उच्चस्तरीय काम कहलाया। अगर उनका व्यक्तित्व घटिया होता तो फिर बात कैसे बनती ?

गाँधी जी ने अपने आपको बनाया था तभी हजारों आदमी उनके पीछे चले। बुद्ध ने अपने आपको बनाया, हजारों आदमी उनके पीछे चले। हम भी अपने में चुम्बकत्व पैदा करें। खदानों के अन्दर लोहे और अन्य धातुओं के कण जमा हो जाते हैं, उसका कारण यही है कि जहाँ कहीं भी खदान होती है, वहाँ चुम्बकत्व रहता है। चुम्बकत्व छोटी-छोटी चीजों को अपनी ओर खींचता रहता है। हम अपनी 'क्वालिटी' बढ़ाएँ, अपना चुम्बकत्व बढ़ाएँ, अपना व्यक्तित्व बढ़ाएँ—यही सबसे बड़ा काम करने के लिए है। समाज की सेवा भी करनी चाहिए, पर मैं यह कहता हूँ कि समाज-सेवा से भी पहले ज्यादा महत्त्वपूर्ण इस बात को आप समझें कि हमको अपनी 'क्वालिटी' बढ़ानी है। कोयले और हीरे में रासायनिक दृष्टि से कोई फर्क नहीं ? कोयले का ही परिष्कृत रूप हीरा है। खनिज में से जो धातुएँ निकलती हैं, कच्ची होती हैं, लेकिन जब पकाकर के ठीक कर ली जाती हैं और सांफ-सुथरी बना दी जाती हैं तो उन्हीं धातुओं का नाम स्वर्ण, शुद्ध स्वर्ण हो जाता है। उसी का नाम फौलाद हो जाता है। हम अपने आपको फौलाद बनाएँ। अपने आपकी सफाई करें। अपने आपको धोएँ। अपने आपको परिष्कृत करें। इतना कर सकना यदि हमारे लिए सम्भव हो जाए तो समझना चाहिए कि आपका यह सवाल पूरा हो गया कि हम क्या करें ? क्या न करें ? आप अच्छे बने। समाज-सेवा करने से पहले यह आवश्यक है कि हम समाज-सेवा के लायक हथियार तो अपने आपको बना लें। यह ज्यादा अच्छा है कि हम अपने आपकी सफाई करें।

मित्रो ! एक और बात कह करके हम अपनी बात समाप्त करना चाहते हैं। एक हमारा आमन्त्रण अगर आप स्वीकार कर सकें तो बड़ी मजेदार बात होगी। आप हमारी दुकान में शामिल हो जाइए, इसमें बहुत फायदा है। इसमें से हर आदमी को काफी मुनाफे का शेयर मिल सकता है। माँगने से तो हम थोड़ा-सा ही दे पाएँगे। भीख माँगने वालों को कहाँ किसने कितना दिया है ? लोग थोड़ा-सा ही दे पाते हैं। आप हमारी दुकान में साझेदार-हिस्सेदार क्यों नहीं बन जाते ? अन्धे और पंगे का योग क्यों नहीं बना लेते। हमारे गुरु और हमने साझेदारी की है। शंकराचार्य और मान्धाता ने साझेदारी की थी इस दुकान में। सम्राट अशोक और बुद्ध ने साझेदारी की थी। समर्थ गुरु रामदास और शिवाजी ने साझेदारी की थी। रामकृष्ण और विवेकानन्द ने साझेदारी की थी। क्या आप ऐसा नहीं कर सकते कि हमारे साथ शामिल हो जाएँ। हम और आप मिल करके एक बड़ा काम करें। उसमें से जो मुनाफा आए उसको बाँट लें। अगर आप इतनी हिम्मत कर सकते हों कि हम प्रामाणिक आदमी हैं और जिस तरीके से हमने अपना गुरु की दुकान में साझा कर दिया है, आप आएँ और हमारे साथ साझा करने की कोशिश करें। अपनी पूँजी उसमें लगाएँ। समय की पूँजी, बुद्धि की पूँजी हमारी दुकान में शामिल करें और इतना मुनाफा कमाएँ, जिससे कि आप निहाल हो जाएँ। हमारी जिन्दगी के मुनाफे का यही तरीका है। हमने अपनी पूँजी को अपने गुरुदेव के साथ में मिला दिया है, उस कम्पनी में शामिल हो गए हैं। हमारे गुरुदेव हमारे भगवान की कम्पनी में शामिल हैं। हम अपने गुरुदेव की कम्पनी में शामिल हैं। आपमें से हर एक का आह्वान करते हैं कि अगर आपकी हिम्मत हो तो आप आएँ और हमारे साथ जुड़ जाएँ। हम जो भी लाभ कमाएँगे—भौतिक और आध्यात्मिक, उसका इतना हिस्सा आपके हिस्से में मिलेगा कि आप धन्य हो सकते हैं और निहाल हो सकते हैं, उसी तरीके से कि जैसे हम धन्य हो गए और निहाल हो गए। यही हमारा साधकों से आग्रह भरा अनुरोध इस बदलती विषम वेला में है। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग-परिवर्तनकारी महाक्रान्ति में सहभागी बनें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

संसार के इतिहास में दो प्रमुख बड़ी क्रान्तियाँ हुई हैं। एक क्रान्ति आज से हजारों वर्ष पूर्व राम-रावण के समय हुई थी। उस समय चारों ओर रावण का आतंक फैला हुआ था। सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची थी। इस आतंक से जनता को बचाने और उसे सान्त्वना देने के लिए एक ऐसा समय आया, जिसने सारे वातावरण को बदल दिया। सोने की लंका, एक लाख पूत, सवा लाख नातियों वाले रावण के राक्षस साम्राज्य को राम ने समाप्त कर दिया। उस समय रामराज्य की स्थापना हुई। अपने समय की यह सबसे बड़ी क्रान्ति थी।

दूसरी एक और बड़ी क्रान्ति हुई। उसे महाभारत का काल कहते हैं। उस समय भी जरासन्ध, कंस, चाणूर से लेकर दुर्योधन तक का आतंक सारी दुनिया में फैला हुआ था। उस समय के आतंक को समाप्त करने की हिम्मत किसी साधारण व्यक्ति में नहीं थी। तब एक शक्ति, एक क्रान्ति आयी और उस समय के दुर्दान्त जरासन्ध, कंस एवं दुर्योधन जैसों का कहीं ठिकाना नहीं रहा। इसके बाद ही कृष्ण भगवान की भारत को महान भारत बनाने की कल्पना सार्थक हो सकी थी। इसके बाद चाणक्य के सान्निध्य में चन्द्रगुप्त ने भी कोशिश की थी। हम यह कह सकते हैं कि इसमें भी भगवान का योगदान था अन्यथा महाभारत-निर्माण का काम साधारण नहीं था। एक महान शक्ति के सहयोग से ही यह कार्य हो सका। इन दोनों क्रान्तियों के बारे में आपने रामायण में और महाभारत में पढ़ा होगा। इस पर आजकल टी. वी. सीरियल भी बनाया गया है।

एक तीसरी क्रान्ति इस समय आयी है, जिस समय में हम और आप रह रहे हैं। रामायण-काल की क्रान्ति एवं महाभारत की क्रान्ति आपने देखी नहीं है, केवल टी. वी. पर देखी है, सुनी है तथा किताबों में पढ़ी है। परन्तु यह क्रान्ति रामायण एवं महाभारत से भी ज्यादा बड़ी है। आप चाहें तो इसे अपनी आँखों से भी देख सकते हैं।

बीसवीं सदी इसी परिवर्तन को लेकर आयी है। दो हजार वर्षों से हमारे देश में विदेशी शासन था। धर्म का कोई स्थान ऐसा नहीं बचा था, जहाँ मन्दिरों, विद्या केन्द्रों को तोड़ा नहीं गया था। मुसलमान आये, अँग्रेज आये और भारत पर शासन किया। अँग्रेजों से हम कैसे आजाद हो गये, यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है। जिसका साम्राज्य सात समुद्रों तक फैला था, उसका शासन कैसे समाप्त हो गया तथा भारत कैसे स्वतन्त्र हो गया ? यह प्रश्न सोचने-विचारने योग्य है। इसके पीछे भगवान की शक्ति काम करती रही है। चाहे यह काम गाँधी ने किया हो या किसी और ने किया हो, परन्तु यह काम शक्ति का था—व्यक्ति का नहीं। व्यक्ति की सामर्थ्य उतनी नहीं हो सकती है कि इतनी बड़ी ताकतवर सत्ता को उखाड़कर फेंक दे। इस सदी में यह एक बहुत बड़ी क्रान्ति आयी।

परतन्त्रता की लम्बी अवधि में, विशेषकर इस सदी में भारतीय संस्कृति प्रायः मृतप्राय हो गयी थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद एक दूसरी क्रान्ति—बौद्धिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक क्रान्ति की हुई। भारतीय धर्म-अध्यात्म का नया स्वरूप बतलाया गया। संस्कृति की जानकारी लोगों को मिली। लोगों ने प्रयास किया तो भारतीय संस्कृति का सार, वेदों का ज्ञान घर-घर जा पहुँचा। आपने सुना होगा कि अगस्त्य नामक एक ऋषि थे, जो समुद्र के अत्याचार को देखकर समुद्र के सारे जल को पीने के लिए उद्यत हो गये थे। ठीक उसी प्रकार इस युग में भी एक साधनहीन व्यक्ति सारे वेदों का सार घर-घर पहुँचाने में समर्थ हो गया। आपको इन बातों पर विश्वास नहीं हो सकता कि इसमें हमारी संस्था भी एक है, जिसको प्रारम्भ हुए अभी केवल पचास वर्ष हुए हैं। इतने समय में क्या सभी काम पूरे हो गये ? कदापि नहीं। अभी तो भारतीय संस्कृति की जानकारी केवल भारत के लोगों को मिली है, बाकी विदेश के लोगों को इसका ज्ञान भी नहीं है। इसे उन तक पहुँचाने का कार्य शेष है, उसे भी पूरा करना है। राम-राज्य की स्थापना—सतयुग की स्थापना करना बाकी है। कुछ कठिनाइयों का निवारण तो हुआ है, किन्तु अभी ढेरों काम बाकी हैं, जिसे पूरा करना है।

आप जिस समय यहाँ बैठे तथा इस महापुरश्चरण में भाग ले रहे हैं, उसे युगसन्धि का समय, युगपरिवर्तन का समय कह सकते हैं। इस युगपरिवर्तन के समय महाकाल का सन्देश हर वसन्तपंचमी पर आता रहा है। इस प्रकार हमारे जीवन में ६५ वसन्त पर्व क्रमशः आते चले गये और हर वसन्तपंचमी पर एक काम का आदेश आता चला गया तथा वह पूरा होता चला गया। इस प्रकार ६५ वसन्तपंचमी में महत्त्वपूर्ण कार्य होते चले गये। अगर इसे हम देखें तो यह देश, समाज और संस्कृति के लिए उतनी ही बड़ी क्रान्ति हुई जितनी कि रावण काल में हुई थी, जिसे भगवान राम ने सम्पन्न किया था। अभी जितना काम हो गया है, उससे भी कहीं ज्यादा काम अभी बाकी है। अभी युगसन्धि का बहुत बड़ा काम भगवान को, हमको और आपको मिलकर पूरा करना है। ये बारह वर्ष जो आज वसन्तपंचमी से प्रारम्भ होते हैं, अगले दिनों सन् २००० तक चलते रहेंगे। इसमें बहुत बड़े-बड़े काम होंगे, बड़े-बड़े परिवर्तन होंगे, जो लोगों के बाद में दिखाई पड़ेंगे। राम को तथा बन्दरों को भी १२-१४ वर्ष का वनवास हुआ था। आपको भी सन् २००० तक यानी १२ वर्ष का वनवास होगा।

वनवास क्या होता है ? वनवास वह होता है जिसमें व्यक्ति को मात्र अपना लक्ष्य याद रहता है और बाकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

चीजें गौण हो जाती हैं। रामराज्य की स्थापना के समय भी हर व्यक्ति जो उसमें सहयोगी था, अपनी घरेलू समस्या को भूल गया था। राम, सीता और लक्ष्मण सब कामों को भूल गये थे और उस एक महत्त्वपूर्ण कार्य में लग गये थे। पाण्डव भी इसी प्रकार अपना व्यापार, काम-काज भूल गये थे और भगवान् के कामों में लग गये थे। अतः हम सबको भी बारह वर्षों के लिए अपने अन्य तमाम कामों को छोड़कर भगवान के काम में लग जाना है। इसके बाद क्या होना है ? इसके बाद आप देखेंगे कि जिसे हम इक्कीसवीं सदी कहते हैं, उसमें विशाल भारत, जो महाभारत काल में बना था, उससे भी ज्यादा विशाल एवं प्रख्यात भारत बनकर सामने आयेगा। जिस प्रकार रावण के मरने के पश्चात् रामराज्य की स्थापना हुई थी, उसी प्रकार की कल्पना आप इक्कीसवीं सदी में कर सकते हैं। अगले दिनों इतिहास में एक बहुत बड़ा समय आने वाला है, जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यह समय महत्त्वपूर्ण एवं अनोखा होगा। इस समय आपको क्या-क्या करना होगा ? कौन-कौन से काम करने होंगे ? इक्कीसवीं सदी में क्या-क्या चीजें समाप्त होने जा रही हैं तथा क्या-क्या होने वाला है ? इस पर एक पुस्तक लिखी जा रही है, जिसे आप देखकर सब बातें समझ सकते हैं।

मित्रो ! यहाँ पर हम इक्कीसवीं सदी की बात न करके युगसन्धि पर विशेष चर्चा करेंगे। यह १२ वर्ष बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। जिस प्रकार लक्ष्मणजी ने १४ वर्ष ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए राम एवं सीता को सहयोग देकर पूरा-पूरा क्रान्ति में सहयोग दिया था, आपको भी लक्ष्मण की तरह होना चाहिए। बड़े काम के लिए बड़ी तैयारी करनी पड़ती है। शादी-ब्याह के समय, मकान बनाने के समय, किसी शत्रु देश से लड़ाई हो जाने पर बड़ी तैयारी करनी पड़ती है। उसी प्रकार इस समय आपको बड़ा काम करना है और इसके लिए आपको बड़ी तैयारी करनी चाहिए। क्या तैयारी करनी चाहिए ? आपको मालूम होना चाहिए कि वड़ी शक्तियाँ, दैवी शक्तियाँ इस कार्य हेतु अपने ढंग से काम करेंगी, परन्तु आपको भी गिलहरी, रीछ-बन्दर, ग्वाल-बालों की तरह अपने जिम्मे का काम करना होगा। आप छोटे हैं तो क्या हुआ ? आपको अपने हिस्से का काम करना है।

क्या करना है ? इस बार बारह वर्ष के लिए भगवान् की यह प्रेरणा आई है कि इन बारह वर्षों में हम सबों को ज्यादा से ज्यादा समय लोकमंगल के लिए देना चाहिए। भगवान का कार्य करना चाहिए। अपना ज्यादा से ज्यादा श्रम, समय, अक्ल भगवान के कार्य में लगाना चाहिए, ताकि हम लोग अधिक से अधिक भगवान का कार्य कर सकें। अगर आप यह समय न भी लगाएँ तो भी यह कार्य महाकाल का है, जो पूरा होकर ही रहेगा, इसमें राई-रत्ती भर सन्देह नहीं है। परन्तु एक बात यहाँ आपको बतला देना आवश्यक है कि आपको तो निमित्त मात्र बनना है। राम और कृष्ण में इतनी शक्ति थी कि वे सारा काम अकेले कर सकते थे, परन्तु उसमें उन्होंने छोटे-छोटे लोगों का सहयोग लिया था। इस कारण से वे लोग भी धन्य हो गये थे।

महाभारत में एक कथा आती है कि भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को बार-बार कह रहे थे कि देख दुर्योधन को तथा विरोधियों को हमने पहले ही मार दिया है। हम तो तुम्हें केवल श्रेय देना चाहते हैं। उठ और युद्ध कर। उस पर भी अर्जुन नहीं उठे तो भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें नपुंसक तक कह डाला और बोले—अगर तुझे श्रेय नहीं लेना तो दूसरे ले लेंगे, परन्तु तू मुझे यह बता कि युद्ध में श्रेय लेने में तुझे क्या आपत्ति है ?

मित्रो ! ऐसे अवसर कभी-कभी ही आते हैं, जब लोगों को श्रेय मिलता है। पिछले दिनों आजादी की लड़ाई के बाद जो भी काँग्रेस के टिकट पर चुनाव में खड़े हो गये, वे चाहे गरीब आदमी रहे हों या पिछड़े आदमी रहे हों, वे जीत गये और एम. एल. ए., एम. पी. बन गये, मिनिस्टर बन गये। उस समय काँग्रेस की धाक थी। भगवान की प्रेरणा तथा लोगों की श्रद्धा उसके साथ थी। उस समय आजादी की लड़ाई में जो भी लोग सम्मिलित हुए, वे लाभ में रहे हैं। एक बात हम आपको यह बतलाना चाहते हैं कि यह जो क्रान्ति होने वाली है, बीसवीं सदी का समापन होने वाला है, इक्कीसवीं सदी आने वाली है, उसमें भी कुछ भी इसी प्रकार का होने वाला है। इस क्रान्ति में यदि आप सम्मिलित रहें तो हम आपको यकीन दिलाते हैं कि आप नफे में रहेंगे। आप श्रेय और यश के भागीदार होंगे। भगवान के काम में जो भी व्यक्ति हाथ बँटाता है, वह नफे में रहता है। हम भी तो नफे में रहे हैं, यह आप देख ही रहे हैं। हमने अपना शरीर भगवान के काम में लगाया तो हम कमजोर नहीं हुए। हमारा अस्सी वर्ष का शरीर अभी भी बारह घण्टे काम करता रहता है। हमारा शरीर तथा मन अभी भी कमजोर नहीं हुआ है। अगर हमने अपना शरीर भगवान के काम में नहीं लगाया होता तो हम नहीं कह सकते कि हम जिन्दा रहते या नहीं। जब हम पीछे की ओर मुड़कर देखते हैं तो पाते हैं कि हजारों लोग जो हमारी उम्र के थे वे मर गये। किसी को कैंसर हो गया, किसी को मधुमेह आदि की बीमारी हो गयी, पर हम पूर्ण स्वस्थ हैं।

साथियो ! हमने अपना शरीर भगवान् के काम में लगाया और भगवान ने हमारे भीतर अपना शरीर लगा दिया और क्या हुआ ? हमने जो बोया वह हजार गुना हो गया। हमने अपना सारा का सारा जीवन भगवान के लिए लगा दिया है। जहाँ हमारा जन्म हुआ था, उस भूमि पर आज इण्टर कॉलेज बना है। एक गायत्री कुण्ड बना हुआ है, जिसमें बारहों महीने पानी भरा रहता है। आँवलखेड़ा छोड़ने के बाद भगवान की कृपा से न जाने क्या-क्या होता चला गया ? हमने चौबीस सौ गायत्री शक्तिपीठें बनायी हैं। इसमें कितनी लागत लगी है, इसका आप अनुमान कर लेवें। यह कहाँ से आ गया ? हमने जो बोया है, उसे काटा है। धन के साथ में हमने अपनी अक्ल, बुद्धि, चिन्तन, वाणी, लेखनी सभी कुछ केवल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवान के लिए लगाया, तो आपने देखा न कि हमारी बुद्धि, लेखनी का कितना विकास हुआ ? यह सारा भगवान को सौंपने के कारण हुआ है। हमने तो एक साधारण परिवार में जन्म लिया, परन्तु भगवान ने हमें न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया ? आज संसार भर में लोग हमें एक महापुरुष के रूप में, एक महान व्यक्ति के रूप में जानते हैं। हमारे विचार अभी सात भाषाओं में प्रकाशित हो रहे हैं। पाँच लाख ग्राहक तथा पच्चीस लाख पाठक हमारी पत्रिका के हैं। अगर हम किसी स्कूल-कॉलेज में पढ़े होते तो किसी तरह से हमारी बुद्धि का विकास इतना सम्भव नहीं होता जो आज हो रहा है। यह सारा भगवान के लिए समर्पित होने का लाभ है तथा समय की माँग के अनुसार कार्य करने का है।

किन-किन ने समय को पहचाना और समय की माँग के अनुरूप अपने को समर्पित किया ? हनुमान जी की मूर्तियाँ आपने देखी हैं। उन हनुमानजी ने समय की माँग को देखा तथा राम के कार्य के लिए समर्पित हो गये। जामवन्त ने कहा—**"रामकाज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भये पर्वताकारा।"** इसका नतीजा यह हुआ कि हनुमानजी जो एक बन्दर थे और उन्होंने जब संकल्प कर लिया कि **"रामकाज कीन्हें बिनु, मोहि कहाँ विश्राम"** तब वे भगवान हो गये। सारे जगहों में आज उन्हीं की पूजा होती है। उन्होंने सीता का पता लगाया, लंकादहन किया, समुद्र को लाँघ गये। पर्वत को उखाड़ लाये तथा संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मणजी के प्राण बचाये। यह सारे कठिन एवं असम्भव कार्य वे कैसे कर पाए ? यह सभी कार्य केवल भगवान को समर्पण करने के कारण ही वे कर पाये अन्यथा किसी भी हालत में ऐड़ी-चोटी एक करने के बाद भी नहीं कर पाते। हमने अपनी सारी जिन्दगी में एक ही चीज ढूँढ़ी है कि जो व्यक्ति समय की माँग को समझता है तथा भगवान के कार्य में अपनी अक्ल, श्रम, समय, धन-सम्पदा लगा देता है, वह महान बन जाता है, उसकी शक्ति बढ़ जाती है। जो समय के महत्त्व को समझता है, वह धन्य हो जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा, "तू खड़ा हो जा।" तो वह खड़ा हो गया और निहाल हो गया। हनुमान को भगवान राम ने कहा था कि तू खड़ा हो जा तो वे निहाल हो गये। हमारे गुरु ने हमसे कहा था कि तू खड़ा हो जा, तो उसने हमें निहाल कर दिया।

मित्रो ! आज सन् १९९९ के वसन्तपंचमी के दिन आपके लिए भी ऐसा ही सन्देश आया है कि आप भी खड़े हो जाइये। आप लोग यह नहीं सोचें कि हमारा पेट कैसे भरेगा ? हमारी औलाद का क्या होगा ? हम आपको पूर्ण विश्वास दिलाते हैं कि आपका पेट भी भरेगा तथा आपकी औलाद भी ठीक रहेगी। हमारा पेट भी भर रहा है तथा हमारी लाखों औलादें भी बड़े आनन्द में हैं और फल-फूल रही हैं। अगर इस वसन्तपंचमी के दिन आप अपनी संकीर्णता को निकाल दें तथा भगवान के कार्य के लिए आगे आवें तो आप, हम और भगवान् तीनों धन्य हो सकते हैं।

हमने आपको भगवान के छोटे-छोटे काम सौंपे हैं। आप छोटे-छोटे संगठन बनाएँ। आप पाँच आदमियों का प्रज्ञामण्डल बनाएँ। सत्संग, हवन प्रारम्भ कर दें, ताकि आपके माध्यम से हमारी विचारधारा, युगपरिवर्तन की विचारधारा जो अगले समय में होने वाला है, आपके माध्यम से घर-घर पहुँच जाए। आप अपनी भूमिका अदा करें। आप अपना समय, साधन, श्रम का एक अंश युग-परिवर्तन के लिए निकालने का प्रयास करें। हम चाहते हैं कि आप प्रज्ञामण्डल के माध्यम से युग-परिवर्तन का सन्देश पहुँचाने का प्रयास करें। हम चाहते हैं कि किसी जमाने में दुर्गाजी शक्ति-संगठन के रूप में प्रकट हुई थी—आप भी उसी प्रकार की शक्ति अपने प्रज्ञामण्डल द्वारा युग-परिवर्तन के लिए इकट्ठा करें। आप भगवान के कार्य में सहयोग देने के लिए आगे आवें। इसके द्वारा ही यानी कि इस संगठन के द्वारा ही युग की समस्या का समाधान हो सकता है। अतः इस महान अवसर पर आपका आव्हान किया जा रहा है।

आज हमने ६५ वसन्त पूरे कर लिये। हमारी अखण्ड ज्योति की साधना अनवरत् रूप से चल रही है। हमने हर वसन्त पर्व पर एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है तथा उसे पूरा किया है। इस वसन्त पर भी हमने तीन कार्यों के लिए कदम बढ़ाया है। पहला प्रज्ञा-मण्डल का गठन, दूसरा साप्ताहिक दीप यज्ञ-सत्संग की शृंखला प्रारम्भ करना। तीसरा है—बुराइयों का, दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन करना। इसके द्वारा ही हम इक्कीसवीं सदी—उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। युगसन्धि की वेला में बुराइयों का उन्मूलन अनिवार्य है, ताकि जो कुछ भी आपको खेत में बोना है, वह सुगमता के साथ फलता-फूलता रहे और इक्कीसवीं सदी में नई फसल आवे। इक्कीसवीं सदी नये फल-फूलों से लदी हुई आवे। इसके लिए अब केवल बारह वर्ष रह गये हैं। आप लोग अधिक से अधिक अपना समय, श्रम, अकल, धन जब तक आप जिन्दा रहें, लगाते रहें। हम चाहते हैं कि आप इन चीजों को भगवान के खेत में बोएँ एवं लाभ प्राप्त करें। जैसे कि लाभ और चमत्कार हमारी जिन्दगी में आए, आपके जीवन में भी वैसे ही लाभ और चमत्कार आएँ।

मित्रो ! आपसे हमारा निवेदन है कि आप हमारे हाथ से हाथ, कन्धे से कन्धा, पैर-से-पैर मिलाकर चलें। जिस रास्ते पर हम चले हैं तथा लाभ प्राप्त किया है, उसे आप भी प्राप्त करें। यह इतना बड़ा व्यापार है जितना बड़ा कभी भी इस संसार में नहीं हुआ। यह बारह वर्ष समर्पण करने, त्याग करने, बीज बोने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। यदि आप यह कर सके, तो हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि भावी पीढ़ियाँ श्रद्धानत हो आपको याद करेंगी। इस वसन्त पंचमी के पावन अवसर पर हमें आपसे जो कहना था, हमने आपको बतला दिया। अब आप पालन करते हैं तो निश्चित ही श्रेय प्राप्त करेंगे। क्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

करना है, आप सोचें व शीघ्र निर्णय लें। यह समय अब बार-बार आने वाला नहीं है। आशा है आप हमारी अन्तः की हूक को पीड़ा को समझेंगे। हमारी बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

महाकाल की पुकार सुनें और जीवन को धन्य बनाएँ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भाइयो ! देवियो !!

समय सभी के पास है। उसको, ठीक मौके को कोई-कोई समझ पाते हैं, कोई-कोई देख पाते हैं। उस मौके को जो देख लेते हैं, समझ लेते हैं, उसका ठीक उपयोग कर लेते हैं वे ही मजे में रहते हैं। बाकी लोगों की जिन्दगियाँ तो ऐसे ही व्यतीत हो जाती हैं, जानवरों के तरीके से पेट भरने में और बच्चे पैदा करने में। इन दो कामों में ही चिड़िया का, जानवरों का, मनुष्यों का, पशुओं का, सबका समान रूप से समय व्यतीत हो जाता है; लेकिन उसका सुयोग और सौभाग्य उठाना उन्हीं लोगों के हिस्से में आया है, जो मौके को ठीक तरीके से समझ पाते हैं और ठीक तरीके से इस्तेमाल कर लेते हैं।

रेलगाड़ी टाइम पर आती है। आप टाइम पर प्लेटफार्म पर पहुँचें तो उसमें सवार हो सकते हैं और अगर समय चूक जाते हैं तो चौबीस घण्टे तक इन्तजार कीजिए। कल गाड़ी आयेगी, तब देखा जाएगा और टिकट भी बेकार हो जाएगी। कल नयी टिकिट खरीदनी पड़ेगी। इस तरीके से समय को ध्यान में रखना हमेशा आवश्यक है। फसल का, बीज बोने का एक खास समय आता है। उस समय को आप चुका दें और किसी भी वक्त बहुत-सा बीज बो दें, ठीक है बो दीजिए, लेकिन यह पैदावार नहीं हो सकती, वह आमदनी नहीं हो सकती, जो ठीक समय पर बीज बोये जाने पर हुआ करती है। फसल काटने का भी एक निश्चित समय होता है। उस समय पर अगर फसल काट ली, तो अनाज आपके घर आ जाएगा और आपने महीना-पन्द्रह दिन ऐसे ही गँवा दिये तो बाद में थोड़ा-सा अनाज ही हाथ लग पाएगा।

जिन्दगी में बहुत-से ऐसे मौके आते हैं जैसे—आपके पड़ोस में किसी की मृत्यु हो गयी है और वहाँ से बुलावा आया है कि हमारे घर में गमी हो गयी है, जरा श्मशान घाट तक चलिए। आपने कहा—नहीं साहब, अभी समय नहीं है। परसों देखा जाएगा, परसों आयेंगे। फिर वह व्यक्ति जिन्दगी भर ख्याल रखेगा कि हमारे घर में हमारी माताजी की मृत्यु हुई थी और ये नहीं आये। 'ये नहीं आये' जिन्दगी भर यह कलंक आपके साथ लगा ही रहेगा। समय चूक जाने पर आप उसको पूरा नहीं कर पायेंगे। किसी के यहाँ शादी-व्याह हो और वह कहे, हमारे यहाँ सब मेहमान आये हैं, आप भी आइये ! अरे साहब, पन्द्रह दिन बाद आयेंगे। इस वक्त तो हम नहीं आ सकते, अभी छुट्टी नहीं है, इस वक्त तो हमें बहुत काम है। ठीक है, फिर आपसे जिन्दगी भर कहने को रह जाएगा कि आप ब्याह के मौके पर नहीं आये थे। घर में बच्चा पैदा होता है। सारे घरवाले, पड़ोसी महिलाएँ सब इकट्ठी हो जाती हैं और देखती हैं कि बहू को कोई परेशानी न पैदा हो जाए। समय पर जा पहुँचती हैं तो ठीक है। बच्चा पैदा हो गया और उसके बाद में वे कहें अरे साहब, हमें खबर तो हो गयी थी, पर हम सो गये थे, हम आये नहीं।

समय का बड़ा महत्त्व है। समय की कीमत है। समय पर सही काम कर लेना मनुष्य की सबसे बड़ी बुद्धिमानी और सबसे बड़ी खुशहाली है। आपके लिए भी यह समय खास समय है। इस समय को अगर आप पहचान लें और उसका ठीक उपयोग कर लें, तो समझिये आप बड़े भाग्यवान निकले और आपने अपने जीवन को सार्थक कर लिया। समय रूपी सम्पदा को पाकर आप निहाल हो गये, अगर आप मौके को समझ नहीं पाये, देख नहीं पाये और किस समय में आपको क्या करना चाहिए, इस बात को भुला दिया तो आपको पश्चाताप के अलावा और कुछ हाथ लगने वाला नहीं है। ये बड़ा कीमती समय है। कैसा कीमती समय है ? ये ऐसा कीमती समय है जैसे—एक बार रामचन्द्रजी के ऊपर मुसीबत आयी। उन्होंने बन्दरों से कहा, हनुमानजी से कहा, सुग्रीव से कहा था—"भाइयो, हमारी मदद करो।" हनुमानजी चले गये मदद करने के लिए रामचन्द्रजी की। थे तो हनुमान भी एक बन्दर। वे सुग्रीव के यहाँ नौकरी करते थे। किसी तरीके से अपना गुजारा करते थे, लेकिन जब रामचन्द्रजी के पुकारने पर चले गये, मौके को उन्होंने पहचान लिया तो क्या परिणाम हुआ ? फिर वे ऐसे बड़े हो गये जैसे सारी जिन्दगी में कभी नहीं हुए थे। उन्होंने पहाड़ को उखाड़ा, समुद्र को लाँघा, लंका को जलाया और सीताजी की खोज की। रामराज्य की स्थापना के लिए उन्होंने सारे का सारा जीवन लगाया और अपने आप में धन्य हुए। अब उनकी पूजा हर जगह की जाती है। उस समय को हनुमानजी चूक गये होते और रामचन्द्रजी से यह कह दिया होता कि साहब, अभी तो समय नहीं है, साल भर बाद देखा जाएगा। इस समय तो हमें नौकरी से छुट्टी नहीं मिल रही है। अभी तो लड़की का ब्याह नहीं हुआ है। अभी तो ये काम करने को पड़ा हुआ है। तब तो हनुमानजी उस मौके को चुका देने के बाद में सुग्रीव के यहाँ नौकरी ही करते रहते। बन्दर के बन्दर बने रहते और हनुमानजी देवता के रूप में शायद फिर पूजित न हो पाते।

जिन्होंने भी मौके का लाभ उठाया, वे धन्य हो गये ! मगर वह समय कौन-सा होता है ? वह असामान्य समय होता है जब भगवान पुकारता है और सामान्य समय वह होता है, जब मनुष्य भगवान को पुकारता है। यह मनुष्य अपनी मुसीबतें दूर करने के लिए भगवान को पुकारता ही रहता है, पैसा दीजिए, बाल-बच्चे दीजिए,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुकद्दमे से छुड़ा लीजिए, झगड़े से बचा लीजिए, बीमारी दूर कर दीजिए। उसके पुकारने पर भगवान भी कुछ दिया ही करता है। ये बात नहीं कि मना कर देता हो। भिखारी हमारे दरवाजे पर आते हैं तो उन्हें मना नहीं कर देते। किसी को रोटी, किसी को पैसा, किसी को कुछ और वस्तु दे करके विदा कर देते हैं। लेकिन, एक मौका ऐसा भी आता है जब माँगने के लिए कोई शक्ति आती है और शक्ति से भी कोई बड़ी शक्ति आ जाए तो, उसे कुछ देने के बाद व्यक्ति धन्य हो जाता है। दशरथ जी के यहाँ विश्वामित्र आये। क्यों आये मालूम है न ? माँगने के लिए आये। क्या माँगने के लिए आये ? बच्चे माँगने के लिए आये। उन्होंने कहा—यज्ञ की रक्षा के लिए हमको इनकी बड़ी आवश्यकता है। स्वयं विश्वामित्र असुरों से लड़ सकते थे। राजा थे वे भी। पहले भी उन्होंने सैकड़ों लड़ाइयाँ लड़ी थीं, अपनी जिन्दगी में। वे सभी राक्षसों को मार सकते थे, पर स्वयं तो नहीं मारा, क्योंकि ऋषिधर्म अलग है। ऋषि को अपने-आप पर मानसिक सन्तुलन बनाये रखना चाहिए। ऋषि को अपनी क्षमाशीलता कायम रखनी चाहिए, लेकिन राक्षसों से लड़ने के लिए तो कोई चाहिए था। उसके बिना तो काम नहीं चलेगा न ? ऋषि नहीं लड़ेगा तो दूसरे तो लड़ेंगे।

दशरथजी के मन में पहले तो यह आया कि हमारे बच्चे हैं, हमारे पास रहेंगे, बड़े होंगे, हमारी सेवा करेंगे, हमारा घर देखेंगे, राज-पाठ सँभालेंगे। क्यों हम ऋषि के यहाँ भेजें ? पीछे उनके गुरु वशिष्ठ ने उनको सलाह दी। उनकी समझदारी ने कहा—नहीं इस समय विश्वामित्र माँगने के लिए आये हैं। ये बार-बार नहीं आयेंगे। महर्षि को सहायता देने के लिए सिपाही-सहयोगी तो कहीं और भी मिल जाएँगे, लेकिन आप इस वक्त अपने बच्चों को देकर के धन्य हो सकते हैं। ऐसा मौका दोबारा नहीं आयेगा। इसलिए आप इन्हें खुशी से दे दीजिए और राजा दशरथ ने अपने दोनों बच्चों को विश्वामित्र के हवाले कर दिया।

परिणाम क्या हुआ ? परिणाम ये हुआ कि विश्वामित्र के साथ जाने के बाद दोनों का भला हुआ। ऋषि ने उन्हें अनेकों विद्याएँ सिखायीं, अमोघ अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। शंकरजी का धनुष जिसे तोड़ना बहुत मुश्किल था। उस धनुष को तोड़ने में रामचन्द्रजी सफल हुए। परशुरामजी नाराज हुए थे कि हमारे गुरुजी का धनुष किसने तोड़ दिया ? सीताजी के साथ रामचन्द्रजी का विवाह हुआ। लंका का विनाश करने में, सारी असुरता का निवारण करने में रामचन्द्रजी सफल हुए। रामराज्य की स्थापना करने में सफल हुए। ये सब कैसे हुआ ? अगर राम राजकुमार रहे होते तो शायद इतना न हो पाता। विश्वामित्र की शक्ति और दशरथ की बुद्धिमानी से ही सम्भव हुआ। ठीक समय पर अगर किसी ठीक काम के लिए अपने बच्चे तक देने पड़ें तो हर्ज की क्या बात है ? ऐसा राजा दशरथ ने गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से किया, फिर गुरु निहाल हो गये, दशरथ जी निहाल हो गये, विश्वामित्र निहाल हो गये, रामायण लिखने वाले बाल्मीकि जी और रामचन्द्र जी निहाल हो गये और वे सब निहाल हो गये थे, जो भगवान राम का नाम लेकर भवसागर से पार हो गये। राम अगर विश्वामित्र जी के साथ नहीं गये होते और उन्होंने अपनी अयोध्या में ही समय काटा होता तो राजा बन जाते और नाती-पोतों को खिला रहे होते तब परशुराम और रामचन्द्र जी का हम और आप शायद ही नाम ले पाते, शायद ही जान पाते। सम्भव है कि उनके मन्दिर भी नहीं बनते और रामायण भी नहीं लिखी जाती। मौका था, जिसको गुरु वशिष्ठ ने पहचान लिया, राजा दशरथ ने पहचान लिया और राम-लक्ष्मण ने भी पहचान लिया। सबने पहचान लिया और उस मौके का ठीक लाभ उठा लिया गया। लाभ उठाने का परिणाम यह हुआ कि सब के सब धन्य हो गये और एक बड़ा काम सम्पन्न हुआ।

सुनिये और भी कुछ हुआ। क्या-क्या हुआ ? बड़े गजब की बातें हुईं। देवमानव थे राजा इन्द्र। महर्षि दधीचि के पास हड्डियाँ माँगने आये। दधीचि ने ठीक मौका देखा, सोचा ये हड्डियाँ तो देनी ही पड़ती हैं। बुखार में आदमी मर जाते हैं। एक्सीडेण्ट में कई बार मोटरों के आगे आ जाते हैं, रेलगाड़ियों के आगे आ जाते हैं, हड्डियों का कचूमर निकल जाता है। रोज हत्याएँ होती हैं। उन्होंने खुशी-खुशी ठीक मौके पर उच्च उद्देश्य के लिए अपनी हड्डियों का दान कर दिया। उसका क्या शानदार परिणाम हुआ ? ऐसा शानदार परिणाम हुआ कि महर्षि दधीचि धन्य हो गये। राजा इन्द्र धन्य हो गये और वृत्रासुर जैसी मुसीबत से त्राण पाने के बाद सारी दुनिया अपने आप में धन्य हो गयी। देवता धन्य हो गये, क्योंकि दधीचि ने ठीक मौके पर ठीक काम किया।

और कोई घटना बताइये ! मैं आपको कौन-कौन-सी घटनाएँ बताऊँ ? जिन्होंने सही समय पर सही काम किया। एक थे रामकृष्ण परमहंस। वे एक लड़के के पास गये। वह उनके यहाँ आया करता था बार-बार। सो उसके पास जा पहुँचे। उन्होंने कहा—नरेन्द्र, इस समय मुझे बहुत सख्त जरूरत है और तू इम्तहान देने में लगा हुआ है, पढ़ाई में लगा हुआ है। मेरा कितना काम हर्ज हो रहा है, तुझे समझ में नहीं आता। उसने कहा—अच्छा स्वामीजी। मैं आपके साथ चलता हूँ। आप जहाँ कहीं भी लगा देंगे वहीं जा पहुँचूँगा और वे स्वामीजी के पास चले गये। विवेकानन्द स्वयं नहीं गये, वरन् रामकृष्ण परमहंस उन्हें बुलाने के लिए उनके घर गये और कहने लगे वत्स, हमारे साथ चल। हमारा बहुत जरूरी काम पड़ा हुआ है। भगवान भी माँगने आते हैं कई बार। इनसान तो माँगते ही रहते हैं, भिखारियों के तरीके से। हमको ये दीजिए, हमको वो दीजिए ! लेकिन कभी-कभी ऐसे भी मौके आते हैं जब भगवान माँगने आते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

राजा बलि के यहाँ भगवान माँगने गये थे। आपको मालूम है कि नहीं ! तब बलि राजा बना अपने सिंहासन पर बैठा रहा और भगवान बावन के रूप में, छोटे-से होकर के, बच्चे के रूप में, बौने के रूप में गये थे। भगवान छोटे रह गये। बलि बड़े हो गये। माँगने के लिए जो भी जाता है, छोटा हो जाता है और देने वाला बड़ा हो जाता है। इसी तरह के मौके कितने सारे आये ? चाणक्य ने भी ऐसा ही किया था। वे चन्द्रगुप्त को तलाशते उसके घर जा पहुँचे थे और कहने लगे—बेटा, हमारा बड़ा काम हर्ज हो रहा है। तुझे चक्रवर्ती शासक बनना है और भारत को बहुत ऊँचा उठाना है। हमारे उद्देश्य के लिए, बड़े काम के लिए जीवन देना पड़ेगा। उस समय चन्द्रगुप्त ने कहा होता—अरे साहब, मुझे नौकरी करनी है, शादी करनी है, बाल-बच्चे पैदा करने हैं, दुकान चलानी है। तो सम्भव है, न वह मौका चन्द्रगुप्त के जीवन में आया होता और न वह मौका चाणक्य को मिला होता। न ही भारत भूमि को वह सौभाग्य मिला होता। वह सौभाग्य सबको इसलिए मिला कि उन्होंने ठीक मौके को पहचान करके ठीक-ठीक बात की और अपने आपको ठीक तरीके से समर्पित कर दिया।

और कौन-कौन सी घटनाएँ हैं ? मैं ढेरों घटनाएँ, ढेरों कहानियाँ सुना सकता हूँ। कौन-कौन-सी घटनाएँ सुनेंगे आप ? चलिए आपको और सुनाता हूँ। रामदास ने एक लड़के को पकड़ लिया। वह इधर-उधर घूम रहा था। उससे कहा—बेटा, तुझे छत्रपति बनना है। तुझे बड़ा काम करना है। नहीं साहब, मेरी माँ इन्तजार कर रही होगी, मुझे घर का कुछ काम करना है। मुझे फुर्सत नहीं है, दो महीने बाद आऊँगा। अगर ये बहानेबाजी बनायी होती, तो शिवाजी को ये सौभाग्य नहीं मिला होता, जो उनको जीवन में मिला। शिवाजी की घटना आपको बतायी। चाणक्य और चन्द्रगुप्त की घटना आपको बतायी और विवेकानन्द और रामकृष्ण परमहंस की घटना सुनायी। दशरथ और रामचन्द्र जी की और ऋषि की बात बतायी। ये सब बातें इसलिए आपको बतायीं कि ठीक उसी तरह का मौका इस समय भी है। इस तरह के मौके पर आप चूक जाते हैं तो फिर हमेशा पछताना ही पछताना आपके हाथ में रह जाएगा। फिर आप यह सौभाग्य दोबारा जब प्राप्त करना चाहेंगे, तो नहीं कर सकेंगे।

और किन-किन ने समय पहचाना और भगवान का काम किया ? रीछ-वानरों की घटनाएँ तो आपको याद ही हैं। गाँधीजी की कल-परसों की बात है। स्वाधीनता संग्राम में जिन-जिन लोगों ने भाग लिया, उन स्वतन्त्रता सेनानियों को आप जानते ही हैं कि वे कौन-कौन हैं ? उन्हें स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी होने का सर्टीफिकेट मिला है; उन्हें पेंशन मिलती है। उनको सम्मान मिलता है। उन्हें हर जगह बुलाया जाता है। यात्रा के लिए 'फ्री पास' मिला हुआ है। यदि उस समय उनको ध्यान नहीं आया होता, उस समय वे चूक गये होते, तो ये सुविधाएँ और ये सम्मान उन्हें थोड़े ही मिलता। नहीं साहब, अब हमें भी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी बना लीजिए। भाईसाहब, अब कैसे बना लें, वह मौका तो उसी वक्त था। उस वक्त जो आ गया सो आ गया, जो नहीं आया वह रह गया। भगवान गौतमबुद्ध के साथ में जो भिक्षुसंघों में शामिल हो गये थे, उन्होंने उस समय के धर्म-चक्र-प्रवर्तन के लिए बड़ी भूमिकाएँ निभायीं, जो उस समय नहीं आये, वे रह गये। इसी प्रकार से अन्यान्य लोग हैं। उनमें से जो आ गये रीछ-बन्दर, वे रामचन्द्रजी की सेना में भर्ती हो गये सो हो गये। उनको कितना श्रेय और सौभाग्य मिला, यह आप सभी जानते हैं। उनका नाम लिया जाता है, वे अमर हो गये। जो नहीं आये, ऐसे ढेरों रीछ-बन्दर रहे होंगे, लोमड़ियाँ रही होंगी; खरगोश रहे होंगे, हाथी और शेर रहे होंगे जो अपनी-अपनी माँदों में, अपने-अपने घरों में बैठे रहे होंगे। उन्होंने समय को नहीं पहचाना और युद्ध में भाग नहीं लिया। फिर क्या हुआ उनका ? वे बेचारे वैसे के वैसे जानवर के जानवर ही रह गये, पर जो अपनी जान हथेली पर रखकर उसमें शामिल हो गये, वे रीछ और बन्दर देवता हो गये और वे रामचन्द्रजी के साथ विमान में बैठकर अयोध्या चले गये। देवलोक चले गये। ऐसा मौका बार-बार नहीं आता।

हनुमानजी की तरह अर्जुन की भी ऐसी ही कहानी है। गीता में अर्जुन यह कहता था कि 'मैं भीख माँगकर खा लूँगा और अपना गुजारा कर लूँगा। मुझे क्या अधिकार मिलने से—राज्य मिलने से ?" लेकिन भगवान ने कहा—नहीं हमको आवश्यकता है। तुम्हें आवश्यकता नहीं है तो न सही। तुम तो दुकान खोलकर भी अपना गुजारा कर लोगे, पर हम कैसे गुजारा कर लेंगे ? हमें तो भारत को महाभारत बनाना है। छोटे-से भारत को विशाल भारत के रूप में परिणत करना है। उसमें तुम्हारी आवश्यकता है। अर्जुन पहले तो आनाकानी करते रहे, पीछे विवेक-बुद्धि जाग्रत होने पर उन्होंने कहा—**"करिष्ये वचनं तव"** आपका कहना मानूँगा, आपके आदेशानुसार चलूँगा। बस यही घटना हमारे जीवन की भी है। हमारा जीवन जो आज वसन्त पंचमी के दिन आप लोगों के सामने आया, इसकी क्या विशेषता है ? इसकी कोई विशेषता नहीं है। मात्र एक विशेषता है—**'करिष्ये वचनं तव'** की। एक ऐसी सर्वशक्तिमान सत्ता ने हमारा आव्हान किया और यह कहा कि तुम्हारे पास जो कुछ भी है, वह हमारे हवाले कर दो। हमारे पास क्या था ? कुछ भी नहीं था। समय था खाली, सो समय को हमने उनके चरणों पर रख दिया और ये कहा—"हम आपके साथ-साथ चलेंगे। जो आप आज्ञा देंगे, हम वही करेंगे।" और वैसा ही हुआ। सारी जिन्दगी उसी प्रकार से बीत आयी। हमने क्या पाया ? क्या खोया ? आप समझते हैं न हमने क्या गँवाया ? कुछ भी नहीं गँवाया हमने। आप हमारे गाँव चले जाइये, देखिए सारे साथ पैदा हुए लोग, दूसरे लोग कोई दुकान कर रहा है, कोई व्यापार कर रहा है, कोई खेती कर रहा है। सभी जैसे-तैसे मामूली आदमी की जिन्दगी जी रहे हैं, लेकिन हम अच्छी जिन्दगी, शानदार जिन्दगी जी रहे हैं। ये कैसे सम्भव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुआ ? यह इसलिए कि ठीक समय पर, ठीक वस्तु का, ठीक पात्र के हाथ में समर्पण हुआ।

आज इसी की माँग है। युग बदल रहा है। सबेरा निकलने वाला है। रात्रि समाप्त होने वाली है। फूल खिलने वाले हैं। चिड़ियाँ चहचहाने वाली हैं। उषाकाल सन्निकट है। ऐसे पुण्य समय में प्रातःकाल में आपको उठने की जरूरत है। चेतने की जरूरत है। मुर्गा बाँग लगाता और कहता है कि 'प्रातःकाल हो गया उठिये।' मन्दिरों में शंख-घड़ियाल बजते हैं और कहते हैं उठिये। मस्जिदों में आवाज लगायी जाती है, कहती है उठिये, सोइये मत। यह सोने का समय नहीं है, पड़े रहने का समय नहीं है, यह समय गँवाने का नहीं है। यह समय अपने पेट भरने का नहीं है। यह समय बहानेबाजी करने का नहीं है। यह समय लोभ-मोह का नहीं है। यह समय इसका है कि हम नये विश्व की नयी संरचना के लिए अपने समय को और शक्ति को लगा दें। बस एक ही माँग है—अगर आप मौके को समझ पाएँ, अपने समय को दे पाएँ तो आपका कुछ काम हर्ज होने वाला नहीं है। ये आपका बेकार का भय है कि हम चले जाएँगे तो हमारे बाल-बच्चे भूखे मर जाएँगे। हम पर मुसीबत आ जाएगी, हमारा काम हर्ज हो जाएगा। ये सब आपके मन की कमजोरी है। **"क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं"** आपके हृदय की दुर्बलता के अलावा और कुछ भी नहीं है।

इस समय, समय की माँग ये है कि आप अपने समय का, श्रम का, अपनी शक्ति का बड़े से बड़ा भाग समाज की संरचना के लिए, महाकाल की पुकार को पूरा करने के लिए, युग की चुनौती स्वीकार करने के लिए लगाएँ, अपने आप को पेश करें। फिर क्या काम करें ? ढेरों के ढेरों काम करने के लिए पड़े हैं। आप जहाँ रहते हैं, वहाँ पेट भरने के लिए काम करने के अतिरिक्त थोड़ा समय बचाना चाहिए। उस बचे समय से आप अपने क्षेत्र में कुछ महत्त्वपूर्ण काम कर सकते हैं। आप ज्यादा समय लगाना चाहें तो हमारी शक्तिपीठें हैं। हमारे पेट का हर्जा होगा। बाबा, पेट-पेट मत चिल्लाइये। पेट नहीं, आदमी की नीयत खराब है। आदमी के पेट की कोई समस्या नहीं है। चिड़िया के सामने, हाथी के सामने पेट भरने की कोई समस्या नहीं है, फिर इनसान के सामने क्या आयेगी ? आप ये बहानेबाजी मत बनाइये कि हमारा गुजारा कैसे होगा, घर का क्या होगा ? हमारी जिम्मेदारियाँ कौन पूरी करेगा ? आप नहीं भी रहेंगे, मर जाएँगे, तो भी आपके बच्चों का, घरवालों का पालन-पोषण होगा। आपके बिना कोई भूखा नहीं मरने वाला, न हो तो आप विश्वास करके देख लीजिए।

और कुछ कहना है आपसे ? बस एक ही बात कहनी है कि आप अपने समय का थोड़ा हिस्सा अपने लिए रखिए और ज्यादा हिस्सा समाज के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए, जन-जाग्रति और लोकमंगल के लिए लगाइये। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप नफे में रहेंगे। हम नफे में रहे हैं, यकीन कीजिए। हमें देख लीजिए और महापुरुषों की गवाहियाँ देख लीजिए। गाँधीजी ने वकालत की होती, तो वकील के वकील रह गये होते। बिनोवा भावे ने अगर उसी तरह की जिन्दगी जी होती तो शायद कहीं अध्यापक बन गये होते। जवाहर लाल नेहरू भी कहीं वकालत कर रहे होते। सरदार बल्लभ भाई पटेल मामूली वकील थे, वकील ही रहे होते, लेकिन इन सारे के सारे महापुरुषों ने अपने आपको लोकमंगल के लिए आगे बढ़ाया तो मजे में और नफे में रहे। एक भी नुकसान में नहीं रहा। आज लोगों में यदि साहस हो, हितत्याग की, देशभक्ति की भावना हो, अगर आप मौके को पहचानते हों, तो समझ लीजिए यह युगसन्धि की बेला है। युग बदल रहा है। इस समय आप जैसे भावनाशील व्यक्तियों की बेहद आवश्यकता है। आप जन-जागरण के लिए खड़े हो जाइए, कार्यक्रम क्या करने पड़ेंगे ? कार्यक्रम तो बहुत सरल हैं और हमने सबको बता दिये हैं। इस वक्त के लिए बस चार कार्यक्रम रखे हैं।

नारी जागरण के लिए आपको समय लगाना है। नारी जागरण के बिना पुरुष जाति अधूरी है। पुरुष अधूरा रहेगा तो दुनिया अधूरी रहेगी। आधी दुनिया कैदखाने में पड़ी रहे तो बाकी दुनिया किस तरीके से उठेगी ? गरीबी उन्मूलन के लिए हमको बड़ा काम करना है। हमारे यहाँ अधिकांश लोग केवल खेती पर निर्भर हैं और खेतिहर मजदूर विचारे थोड़े दिनों के लिए मेहनत-मजदूरी पाते हैं। फिर उनके लिए कोई काम नहीं रह जाता, अतः कुटीर उद्योगों का विकास करना है। कुटीर उद्योग हमारे देश में कृषि के सहायक बन सकते हैं। आज हर आदमी कमजोर-बीमार होता चला जा रहा है, क्योंकि रहन-सहन, खान-पान, आहार-विहार के बारे में उसको जानकारी ही नहीं है। स्वास्थ्य ठीक हो, इसके लिए स्वास्थ्य संगठन हमारा कार्यक्रम है। अतः स्वास्थ्य संगठन के लिए खड़े होना है। चौथा कार्यक्रम है जन-जागरण। इसका अर्थ है—हर आदमी के विचारों को बदल देना, चेतना को बदल देना, भावना को बदल देना। लोगों को देखा है आपने, कैसी घटिया और गन्दगी से भरा जीवन जी रहे हैं। आदमी को कुरीतियों और लोक-मान्यताओं ने किस तरीके से जकड़ रखा है। नशेबाजी और दहेज जैसी प्रथाओं में कितना पैसा बर्बाद होता है ? फैशन-परस्ती में लोग कितना पैसा लगा देते हैं ? ये ऐसी मुसीबतें हैं जिनसे हमें स्वयं निकलना पड़ेगा और जनता को निकालना पड़ेगा। सरकार मदद करेगी, ठीक है। सरकार अपना काम करेगी, लेकिन ये जन-मानस की, घर-घर में जाने की, लोक-चिन्तन बदलने की बात है। जन-जागरण की बात है। इसके लिए आपको ही आगे आना पड़ेगा। इसे कोई और नहीं कर सकता, आप ही कर सकते हैं। आपको करना भी चाहिए।

मैं ये अनुरोध लेकर आपके सामने हाजिर हुआ हूँ कि आप समय को पहचानिये और उसे भगवान के काम में लगाइये। भगवान ने—महाकाल ने आपको पुकारा है। इसलिए आपको पुकारा है कि आप दुनिया की समस्याओं को सुलझाने के लिए, गये-गुजरे लोगों को ऊँचा उठाने,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आगे बढ़ाने के लिए कदम बढ़ाएँ। अपने आपको त्याग के लिए, बड़े कामों के लिए समर्पित कीजिए। फिर देखिये आप कितने मजे में और कितने खुशहाल रहते हैं ? कितने प्रसन्नचित्त रहते हैं ? कितना आपको सन्तोष मिलता है, सम्मान मिलता है, कितना आपको भगवान का अनुग्रह मिलता है। यही तो परीक्षा का समय है। अगर आपमें हिम्मत है और आपका विवेक साथ देता है, तो मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप जरूर कदम बढ़ाइये। नये युग के निर्माण जैसे बड़े कामों में अपना समय लगाइये—हिम्मत कीजिए। यह हिम्मत आपके लिए इतनी बड़ी साबित होगी जैसे हनुमानजी के लिए साबित हुई थी, अर्जुन के लिए साबित हुई थी और वे धन्य हो गये थे। बस, यही आपसे अनुरोध करना था। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

कैसे होगा समन्वय, विज्ञान और अध्यात्म का ?

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

विकासक्रम में आज हम कहाँ जा पहुँचे हैं, आइये जरा इस पर विचार करें। विज्ञान के इस युग में आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व का व्यक्ति यदि कहीं हो और वह आकर हमारी इस दुनिया को देखें तो कहेगा कि यह कितने अचम्भे की दुनिया है, यह भूत-पलीतों की दुनिया है। यदि वह सड़कों पर, रेलपटरियों पर जाएगा तो वहाँ से भाग खड़ा होगा, क्योंकि लोहे की पटरियों पर भागने वाली रेलगाड़ियाँ और आसमान में उड़ने वाले हवाईजहाज पुराने-जमाने के लोगों के लिए अचम्भे की बातें थीं। दिल्ली से बोलने वाला व्यक्ति इन्दौर में बैठे हुए व्यक्ति से ऐसे बातें करता है जैसे वह सामने ही बैठा हो। आज के इस विज्ञान की प्रगति के क्या कहने ? उसने टेलीविजन से लेकर न जाने क्या-क्या बना लिया है ? एक जमाना था जब तीर-कमान से लड़ाइयाँ लड़ी जाती थीं और जब आदमी के शरीर में तीर चुभ जाता था तो उसे निकालने के लिए घोड़े की पूँछ से रस्सी बाँध दी जाती थी और घोड़े को भगा दिया जाता था, तब कहीं जाकर तीर बड़ी मुश्किल से शरीर से बाहर निकलता था। व्यक्ति बच गया तो बच गया—मर गया तो मर गया। पुराना जमाना था। आज मेडिकल साइंस ने—सर्जरी की साइंस ने न जाने क्या से क्या चमत्कार दिखा दिये शरीर के भीतर की चीजें दिखाने से लेकर निकाल बाहर करने तक के कितने चमत्कार विज्ञान ने कर दिखाये हैं। यह मनुष्य की बुद्धि का चमत्कार है—विज्ञान का चमत्कार है। यह हमारा जमाना वैज्ञानिक चमत्कारों का जमाना है।

पिछली शताब्दियों में मनुष्य ने जो प्रगति की और जो विकास किया उसकी तुलना में आज की दुनिया कुछ मायने में बहुत आगे है। संसार के बारे में कहा जाता हैं कि इसको बने हुए दस लाख वर्ष हो गये। इन दस लाख वर्षों में ऐसा वक्त कभी नहीं आया जैसा कि आज हमारे और आपके सामने सुख और सुविधाओं से भरा हुआ है। टेक्नालॉजी और बौद्धिक दृष्टि से हमारा युग और समय कितना प्रगतिशील और समृद्धिशाली है, कहा नहीं जा सकता। पिछले दिन प्रगति के दिन तो नहीं थे, अवसाद के दिन थे, लेकिन गिरावट के दिन तो नहीं ही थे। मनुष्य इतना नीचे कभी भी गिरा नहीं था जितना कि वह आज गिरता हुआ चला जा रहा है। शरीर की दृष्टि से इतना खोखला वह कभी नहीं हुआ जितना कि आज हो गया। आज हमारे लिए एक मील चलना भी मुश्किल हो जाता है। सवारी अगर हमारे पास न हो तो हम किस तरीके से चल सकते हैं ? अपनी अटैची और होल—डाल लेकर किस तरीके से स्टेशन से घर तक पहुँच सकते हैं ? यह बहुत मुश्किल है हमारे लिए। हमारे बुजुर्ग कैसे थे ? मैंने अपने नाना जी को आँख से देखा था जब वे चालीस मील तक सफर करते थे और पूर्णमासी के दिन गंगाजी नहाने जाया करते थे। उन्होंने जवानी के दिनों से ही ये कसम खायी थी कि मैं पूर्णमासी के दिन गंगा जी नहाने अवश्य जाया करूँगा। चालीस मील दूर हमारे गाँव से गंगा है। हमारे नाना जी सबेरे सफर करने के लिए निकलते थे और रात में ही गंगाजी जा पहुँचते थे। सबेरे स्नान किया और वहाँ से रवाना होकर चालीस मील दूर शाम को घर आ जाते थे। अस्सी मील का दो दिन का यह सफर आज हमारे लिए मुश्किल है, आज हम नहीं चल सकते। शारीरिक दृष्टि से हम दुर्बल होते हुए चले गये।

दाम्पत्य जीवन जिसमें कि सुख और सौभाग्य की गरिमाएँ रहती थीं और सन्तोष की धाराएँ बहती थीं। जहाँ राम और सीता हुआ करते थे। जहाँ एक-दूसरे के प्रति निष्ठा और विश्वास का क्या कहना ? रामायण में एक प्रसंग आता है, जब लव-कुश ने देखा कि हनुमान जी और लक्ष्मण जी अश्वमेध के घोड़े को लिए चले जा रहे हैं तो उन्होंने पूछा आप लोग कौन हैं ? उत्तर मिला—मैं लक्ष्मण हूँ और मैं हनुमान हूँ। उन्होंने कहा—आप वही लोग हैं, जिन्होंने हमारी माँ को जंगल में वनवास में अकेला और असहाय छोड़ दिया था। लक्ष्मण ने आँखें नीची कर लीं। बच्चों ने कहा अच्छा तो हम अब आपको मजा चखाते हैं। बस लव-कुश ने हनुमान जी को पकड़ लिया और उनकी पूँछ पेड़ से बाँध दी। लक्ष्मण जी को भी पकड़ा और एक रस्सी से पेड़ से बाँध दिया और माँ के पास गये। माँ से कहा—माँ ! तो यही वे आदमी हैं, जिन्होंने आपको जंगल में अकेला छोड़ दिया था। माँ ! हम इनको अब मजा चखाते हैं। माँ ने कहा—नहीं बच्चो ! ये तुम्हारे पिता के भाई हैं और तुम्हारे पिता के प्रति मेरी कितनी गहन निष्ठा है, तुम नहीं जानते मुझे वनवास में किसलिए छोड़ा गया ? संसार के इतिहास में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

दाम्पत्य जीवन के आदर्श उपस्थित करने के लिए। तुम्हारे लिए यह मुनासिब नहीं कि अपने बुजुर्गों का अपमान करो, इनको छोड़ देना चाहिए। राम ने जब मुझे वनवास भेजा था, तब भी उनका मन—मेरा जीवन, मेरा स्वरूप और मेरे आदर्श विश्व के सामने एक अभूतपूर्व उदाहरण रखने का था। उन्होंने कष्ट उठाये तो क्या, पर पुराने जमाने के दाम्पत्य जीवन की आज के हमारे दाम्पत्य जीवन की तुलना नहीं हो सकती। आज जिसकी आग में सारा विश्व जल रहा है। यूरोप जल चुका, अमेरिका जल चुका और वही आग धधकती हुई हमारे हिन्दुस्तान की तरफ बढ़ती चली आ रही है। रूप का भूखा मनुष्य, धन का भूखा मनुष्य, सैक्स का भूखा मनुष्य, दाम्पत्य जीवन के महान आदर्शों को भूलता हुआ चला जा रहा है और सारी दुनिया में एक तहलका मचता चला जा रहा है। श्मशान के तरीके से मनुष्य जलता चला जा रहा है। हर वक्त लम्बी-चौड़ी प्रेम की चिट्ठी लिखी जाती रहती है और लम्बे-चौड़े आश्वासन दिये जाते रहते हैं; लेकिन यकीन नहीं होता किसी स्त्री को कि छह महीने बाद हमारे गृहस्थ जीवन का क्या होगा ? इसी तरह किसी मर्द को यकीन नहीं होता कि छह महीने बाद हमारे गृहस्थ का क्या होगा ? लम्बे-चौड़े प्रेम-पत्रों को लिखे जाने के बावजूद हर मनुष्य इतना अशान्त होता हुआ चला जा रहा है।

अमेरिका जैसे सम्पन्न देश में जहाँ हमारे बच्चे भाग करके वहाँ न जाने क्या-क्या सीखने जाते हैं ? वहाँ की जितना प्रशंसा की जाए कम है। लेकिन वहाँ का दाम्पत्य जीवन व गृहस्थ जीवन इतना जटिल और घटिया होता चला जा रहा है। आदमी के मस्तिष्क पर टेन्शन ही टेन्शन सवार रहता है। सारी रात वहाँ आदमी को चैन नहीं पड़ता। ट्रेंक्युलाइजर की गोलियाँ खाकर लोग रात गुजारते हैं। ब्लडप्रेशर, हार्टडिसीज, डायबिटिज न जाने क्या-क्या बीमारियाँ घेरे रहती हैं ? खाने की चीजों का ठिकाना नहीं। मेरा एक मित्र है, वहाँ इन्जीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाता है, कहता है—हम पानी नहीं पीते, यहाँ बराबर फलों के जूस की बोतलें आती रहती हैं और सारे दिन हम पानी की जगह पर फलों का जूस पीते रहते हैं। पहले आदमी सूखी रोटी खाकर के सुख-चैन की साँस लिया करता था और विश्वास दिलाया करता था कि हम सुखी लोगों में से हैं, पर अब हमारा दाम्पत्य जीवन न जाने कैसा है ? हमारे गार्हस्थ जीवन में न जाने कैसी लग गई आग ? हमारे बच्चे अभिभावकों के प्रति जैसे निष्ठावान होने चाहिए थे, नहीं हैं। अब श्रवणकुमार की सिर्फ कहानियाँ हैं। ये चाहें तो आप पढ़ सकते हैं; चाहें तो आप सुन सकते हैं। आपको श्रवणकुमार देखने का सौभाग्य अपने घर में अब नहीं मिल सकता। आपको रामायणकाल की कहानी किताब में पढ़नी चाहिए, पर आपको ये उम्मीद नहीं रखनी चाहिए कि आपके घर में बच्चे राम और सीता जैसे हों। पर पिता का मन सन्देह से भरा हुआ पड़ा है कि हमारे पाँच बच्चे हैं, लेकिन बड़े होने पर न जाने क्या होगा ? हमारा सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय जीवन, हमारा आर्थिक जीवन कितना जटिल और कितना जकड़ा हुआ बनता चला जा रहा है ? विज्ञान की प्रगति के बावजूद, धन की प्रगति के बावजूद इनसान के लिए एक अजीब समस्या उत्पन्न होती चली जा रही है। इसे आपको समझना पड़ेगा, इस पर विचार करना पड़ेगा कि ऐसा आखिर क्यों है ?

मित्रो ! आप लोगों के ऊपर, नई पीढ़ी के ऊपर वो जिम्मेदारियाँ आ रही हैं, आयेंगी और आनी चाहिए। आप लोगों को व्यक्तिगत जीवन, राष्ट्रीय जीवन, सामाजिक जीवन और आर्थिक जीवन की कठिनाइयों को हल करना पड़ेगा। आप लोगों में से अधिकांश को वह रोल अदा करना पड़ेगा जो कि राष्ट्रीय जीवन और व्यक्तिगत जीवन को विकसित करने के लिए किया जाना चाहिए। जिम्मेदारियाँ अपनी जगह पर रहेंगी और इसके लिए श्रम बहुत करना पड़ेगा। आज राष्ट्र के सामने, व्यक्ति के सामने अनेकानेक समस्याएँ हैं, जो यह कहती हैं कि हमको हल किया जाए। किस तरीके से हल किया जाए मैं आपको एक छोटा-सा फार्मूला देकर जाना चाहता हूँ। आप लोगों में से किसी आदमी को खासतौर से विद्यार्थियों को अगले दिनों कुछ जिम्मेदारियों के वजन अपने कन्धे पर उठाने पड़ेंगे और आप लोगों को वे काम करने पड़ेंगे, जो कि राष्ट्र-निर्माताओं को करने पड़े हैं। तब आपको किस आधार पर व्यक्ति का निर्माण, समाज का निर्माण, राष्ट्र का निर्माण और आज की उलझी हुई समस्याओं को हल करने के लिए क्या करना होगा ? इसके लिए एक फार्मूला यह है कि व्यक्ति को अपने अन्तःकरण में प्रवेश करना पड़ेगा। समस्याओं के हल बाहर नहीं, बल्कि भीतर तलाश करने पड़ेंगे। समस्याएँ बाहर से पैदा नहीं होतीं। समस्याएँ भीतर की हैं और बाहर दिखायी पड़ती हैं। आदमी अपने भीतर से समस्याएँ पैदा करता है और बाहरी जीवन में वे केवल प्रस्तुत हो जाती हैं। मेरे भीतर एक रूह काम करती है। मेरा एक तार काम करता है। वही काम कर रहा है भाषण वही दे रहा है, पुस्तकें उसी ने लिखी हैं, समाज के नवनिर्माण के ख्वाब उसी ने देखे हैं। बाहर जो भी क्रिया-कलाप आप देखते हैं, वह बाहर का नहीं है, मेरे भीतर के अन्तरंग-चेतना के हैं। समस्याओं के बारे में भी यही बात है। बीमारियाँ भी बाहर से दिखाई पड़ती हैं, बुखार बाहर से आया मालूम पड़ता है, खाँसी बाहर से खाँसने में दिखाई पड़ती है पर वस्तुतः वह भीतर से पैदा होती है।

समस्याएँ वे उलझनें हैं, जिन्होंने हमारे राष्ट्र को, समाज को, व्यक्ति को और सारे विश्व को जकड़कर रखा है। ये हमारे भीतर से पैदा हुई हैं। मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूँ कि जब आपको इनके समाधान ढूँढ़ने पड़ें, तो सिर्फ आपको बाहर की ओर ही नहीं, भीतर की ओर भी गौर करना चाहिए कि मनुष्य का व्यक्तित्व और समाज का अन्तरंग कहीं गड़बड़ तो नहीं हो गया। यदि गड़बड़ हो तो उसे सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। समाज की और व्यक्ति की उलझी हुई समस्याओं को हल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

करने के लिए बाहरी उपचार करना ही काफी नहीं है। इलाज की सामग्री ढूँढ़ी जानी चाहिए, रिसर्च की जानी चाहिए कि दवाइयों के द्वारा बीमारियों से छुटकारा कैसे पाया जाए ? आदमी की सेहत को कैसे अच्छा बनाया जाए ? लेकिन आपको ये भुलाना नहीं चाहिए कि अन्तरंग जीवन अगर सुव्यवस्थित न हो सका तो हमारे स्वास्थ्य की समस्या नहीं हल हो सकेगी।

सैण्डो का नाम आपने सुना होगा, जिसकी सैण्डोकट बनियान अक्सर पहनी जाती है। अपने जमाने में वह यूरोप का एक ख्यातिप्राप्त पहलवान हुआ है। एक समय था जब पहलवानों में सेण्डो का नाम पहले लिया जाता था। अब तो दूसरे लोग भी हो गये हैं। बचपन में वह बीमार रहा करता था—सर्दी-जुकाम से पीड़ित रहा करता था। अपने पिता के साथ एक दिन वह म्यूजियम देखने गया। वहाँ पहलवानों की तस्वीरें देखकर पूछा—पिताजी क्या मैं भी पहलवान बन सकता हूँ ? पिता ने कहा—हाँ ! ये सुनकर जिज्ञासा भरे स्वर में सैण्डो ने कहा—पिताजी बताइये हमको पहलवान बनने, मजबूत बनने के लिए क्या करना चाहिए ? उन्होंने कहा—बेटे मजबूती के सारे आधार, दीर्घजीवन के सारे आधार मनुष्य के भीतर सन्निहित हैं, पर आदमी इस चीज को भूल गया है। आदमी अगर अपनी भूलों को सुधार सके तो बेहतरीन स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है। बेटे ! हमने अपना पेट खराब कर डाला। खुराक से ज्यादा खाकर और वे चीजें खायीं जो हमारे लिए मुनासिब नहीं थीं। इन्द्रियाँ हमारे लिए काम करने को थीं, पर हर इन्द्रिय के भीतर से हमने अपनी शक्ति का इतना हिस्सा खर्च कर डाला जितना कि पैदा नहीं होता था। हमने अपने दिमाग को इस तरीके से चिन्ताओं से, दूसरी चीजों से उलझाये हुए रखा कि हमारे स्वास्थ्य को नियन्त्रित करने वाला नर्वससिस्टम अस्त-व्यस्त हो गया। हम इन तीन बुराइयों को अगर दूर कर सकें तो लम्बी जिन्दगी जी सकते हैं और कोई भी आदमी पहलवान बन सकता है। पिताजी ! हमें दवा खाने की जरूरत नहीं है ? उन्होंने कहा—नहीं बेटा दवाएँ तो सिर्फ बीमारियों को ठीक करने के लिए हैं। ये टेम्पोरेरी एनर्जी दे सकती हैं। किसी आदमी को मजबूत व दीर्घजीवी बनाने के लिए दवाएँ कारगर सिद्ध नहीं हो सकतीं। अगर दवा कारगर रही होतीं तो जितने भी डॉक्टर हैं, वे दूसरे लोगों का इलाज करने से पहले अपना इलाज करते और जनसामान्य से बेहतरीन एवं पहलवान दिखायी देते। सैण्डो ने स्वास्थ्य के उन नियमों का जिनको मैं अध्यात्म का अंश कहता हूँ पालन किया और पहलवान बना।

आप इसको संयम कहिए। शब्दों से क्या होता है ? मुझे उसको अध्यात्म कहने दीजिए। जुबान का संयम, इन्द्रियों का संयम, मस्तिष्क की विचारधाराओं का संयम, उठने-बैठने का संयम और अपने आहार-विहार का संयम, अगर आदमी इतना कर सकता हो, तो उसकी सेहत ठीक की जा सकती है। पुराने जमाने में डॉक्टर भी नहीं थे। तब तो कोई-कोई हकीम जड़ी-बूटी, नीम की पत्ती और कालीमिर्च बताने वाले ही पाये जाते थे। इन्हीं से बीमारियाँ अच्छी हो जाती थीं। इन सारी वजहों में एक वजह ये है कि आदमी अपने आपको खोखला बनाता हुआ चला जा रहा है। आप नई पीढ़ी के लोगों में से सम्भव है किसी को राष्ट्र का स्वास्थ्यमन्त्री बनना पड़े। तो मैं आपसे एक निवेदन करके जाना चाहता हूँ कि चाहे आप अस्पताल खुलवाना, मेडिकल साइंस पर रिसर्च कराना, पर ये मत भूलना कि आदमी के स्वास्थ्य का मूलभूत आधार संयम ही होता है ? जिसको हमने कई बार आध्यात्मिकता कहा है और पुराने लोग पुकारते थे—संयमशीलता ! संयमशीलता लोगों को सिखायी जानी चाहिए। बेहतरीन स्वास्थ्य और स्वास्थ्य की समस्या का हल निश्चित रूप से इस बात पर टिका हुआ है कि आदमी अपने आहार-विहार, इन्द्रियों और दिमाग के इस्तेमाल, पेट के इस्तेमाल के बारे में पुनः जाने, इनको ठीक तरीके से काम में लाएँ। आप लोगों को कभी स्वास्थ्यमन्त्री बनना पड़े तो मेरे इस छोटे-से नाचीज फार्मूले को याद रखना।

एक अन्य दूसरी बात की ओर भी मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ कि हमारे कहने के अनुसार प्लानिंग की जाए और इसकी एक योजना बनायी जाए और हर आदमी को सिखाया जाए कि आपको गृहस्थ बनने से पहले सौ बार विचार करना चाहिए कि आप बच्चों की जिम्मेदारी उठाने में समर्थ हैं या नहीं। आप अपनी पत्नी को वह स्नेह और प्यार देने में समर्थ हैं, जिसके आधार पर वह नन्हा-सा फूल, नन्हा-सा पौधा, जो आपके घर में आया है, उसके सर्वांगीण विकास पर ध्यान दे सकें। आपके अन्दर वह योग्यता है क्या ? इनसान की खुराक अनाज नहीं, रोटी नहीं, दूध नहीं, ये सिर्फ जिस्म की खुराक है। आदमी जिस्म नहीं है। आदमी में शरीर के अलावा भी एक चीज है—जिसको जीवात्मा कहते हैं और रूह कहते हैं और वह जीवात्मा प्रेम की मुहब्बत की प्यासी है। प्रेम और मुहब्बत धर्मपत्नी को नहीं मिल सके तो उसकी प्रतिक्रियाएँ गलत होती चली जाएँगी और हमारे घरों में वह निष्ठाएँ पैदा न हो सकेंगी जो कि छोटे-छोटे घरौंदों को छोटे-छोटे किराये के मकानों को ऐसा बेहतरीन बनाती हैं, जिस पर स्वर्ग न्योछावर किया जा सके। दो आदमी का स्नेह एक और एक मिलकर ग्यारह हो सकते हैं। राम और लक्ष्मण मिलकर दो नहीं थे एक और एक ग्यारह थे। जानदार चीजें एक और एक दो नहीं होती, एक और एक मिलकर ग्यारह होती हैं—अगर उनके भीतर निष्ठाएँ हों और एक-दूसरे के प्रति वफादारी हो। हमारे दाम्पत्य जीवन—हमारे गृहस्थ जीवन गरीबी में भी सुख के आधार बन सकते हैं और एक-दूसरे से इतना प्रसन्न-सन्तुष्ट रह सकते हैं इसका कोई ठिकाना नहीं।

यूरोप में एक गरीब दम्पत्ति थे। विवाह का दिन आने वाला था। दोनों एक-दूसरे को उपहार देने के इच्छुक थे, पर साधन कैसे जुटाएँ ? पति के दिमाग में बहुत दिनों से ख्वाब था कि अपनी स्त्री के सुनहरे रेशम जैसे बालों के लिए सोने की क्लिप लाकर दूँ और पत्नी का मन था

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि विवाह के दिन अपने पति की घड़ी के लिए सोने की चेन लाकर दूँ, लेकिन दोनों की जेबें खाली थीं। स्त्री बालों के व्यापारी की दुकान पर गयी और बाल बेचकर घड़ी की चेन खरीद लाई। उधर उसका पति अपनी घड़ी बेचकर क्लिप खरीद लाया। विवाह का दिन आया तो पति ने पत्नी से कहा—"हम आपके लिए सोने की क्लिप लाये हैं पर आपने सिर पर रूमाल क्यों बाँध रखा है ? इसे खोलिए हम आपके बालों में क्लिप लगाएँगे।" पत्नी बोली—हम आपके लिए घड़ी चेन लाये हैं लेकिन आज आपके हाथ पर ये रूमाल कैसे बँधा है ? दोनों ने एक-दूसरे के रूमाल खोले तो देखा कि बाल कटे हुए हैं और कलाई खाली। एक के हाथ में क्लिप और दूसरे के हाथ में चैन। दोनों की आँखों में वफादारी और एक-दूसरे के प्रति निष्ठा के आँसू बहने लगे। भाइयो, जिन लोगों में इस तरह की भावनाएँ, निष्ठाएँ हैं, वहाँ हम यही कह सकते हैं कि दाम्पत्य जीवन में स्वर्ग आ गया।

एक और अभी थोड़े दिनों पूर्व झाँसी की घटना है। एक आदमी का विवाह हुआ। बीबी घर में आयी और तीन महीने स्वस्थ रही। उसके बाद उसे टी. बी. हो गयी, भगवान् की माया ! बाईस साल तक वह स्त्री जिन्दा रही। टी. बी. से हालत ऐसी हो गयी थी कि उसको करवट लेना तक मुश्किल हो गया था। लेकिन उसके पति का एक ही काम था। ऑफिस जाने से पहले स्त्री को नहलाना, कपड़े साफ करना, सिर में कंघी करना, चाय-पानी पिलाना, खाना पकाना, शाम को आकर फिर घर का सारा काम करना, उसका सारा का सारा समय उसी में चला जाता था। मित्रों ने कहा—आप सिनेमा नहीं जाते ? उसने कहा—हमारी बीबी बीमार है और मैं उसकी सेवा वफादारी से करता हूँ। इससे अधिक सन्तोष कहाँ मिल सकता है ? सिनेमा में क्या है, जिसे देखकर चैन और खुशी प्राप्त हो सके। उसमें भी तो हम यही देखने जाते हैं कि हमारा दाम्पत्य जीवन खुशहाल कैसे हो ? मेरी कर्त्तव्यपरायणता देखकर जब उसकी आँखों में से आँसू की बूँदें ढुलक पड़ती हैं तो मैं तो ये समझता हूँ कि ये हीरे-मोती से ज्यादा बड़े उपहार हैं और जब उसकी हालत देखकर मेरी आँखों से मुहब्बत के आँसू छलक उठते हैं, तो वह समझती है कि स्वर्ग उस पर न्योछावर हो गया ?

साथियो ! पारिवारिक जीवन की सुख-शान्ति शक्ल-सूरत पर नहीं टिकी है, ये तो आदमी की सीरत पर टिकी हुई है। मनुष्यों को कहिए जब आपको विवाह करना पड़े तो सूरत देखने की अपेक्षा सीरत और रंग देखने की अपेक्षा उसकी भावनाओं को देखना पसन्द करें। अपने साथी का 'कष्ट' ढूँढ़ने की अपेक्षा गुण-कर्म और स्वभाव ढूँढ़ना पसन्द करें। अगर आपको बच्चों के निर्माण की राष्ट्रीय जिम्मेदारी उठानी पड़े, अगर आपके पास मुहब्बत है तो आप बच्चे पैदा करने से पहले यह भली-भाँति समझ लें कि बच्चे के विकास के लिए खुराक काफी नहीं हैं, बोर्नविटा काफी नहीं है, अच्छे कपड़े काफी नहीं हैं स्कूलों के जेलखानों में भेज देना काफी नहीं है। इन जेलखानों में बच्चे सिर्फ एटीकेट सीख सकते हैं। कपड़े की क्रीज कैसे खराब हो जाती है ? कैसे ठीक रखी जा सकती है, ये सभ्यता और शिष्टाचार सीख सकते हैं, पर उनका भावात्मक विकास नहीं हो सकता ? क्योंकि जिन माँ-बाप के मनों में परिवार के प्रति, एक-दूसरे के प्रति प्यार-मुहब्बत और आदर्श-कर्त्तव्यनिष्ठा भरी है, उनके व्यवहार से ही बच्चे में भावनात्मक विकास हो सकता है। आज परिवारों में इनका अभाव है। इंग्लैण्ड और अमेरिका में ऐसे बहुत सारे बच्चे पैदा होते हैं, जिन्हें माँ-बाप सँभालने की स्थिति में नहीं होते और उन्हें अनाथालय में भर्ती करा दिया जाता है। सरकार उनको बेहतरीन शिक्षा, बेहतरीन खुराक देती है। फिर भी प्यार-मुहब्बत की कमी से उनका भावनात्मक विकास नहीं हुआ। इसीलिए जो सरकारी अनाथालयों में पाले गये, उनमें से कोई भी बच्चा राष्ट्र का कर्णधार नहीं हो सका, कोई भी महापुरुष नहीं हुआ, कोई लेखक-कवि नहीं हुआ। अधिकांश आदमी उनमें से फौजी होते हैं। ये वही व्यक्ति हैं, जिन्होंने मुहब्बत को नहीं पिया। आदमी को मुहब्बत पिलायी जानी चाहिए, खासतौर से बच्चों को, बोर्नविटा नहीं।

मुहब्बत अगर हम पिला सकते हों तो हमारे बच्चे बेहतरीन राष्ट्र-निर्माण के लिए कितने उपयोगी और व्यक्ति के लिए कैसे उपयोगी बन सकते हैं, इसका एक छोटा-सा उदाहरण मैं आपको सुनाता हूँ। बिनोवा भावे की माँ को अपने बच्चे भी पालने पड़े और अपने पड़ोसी का एक बच्चा भी। उनकी पड़ोसिन एक बच्चा दे गयी और कह गयी थी कि अब हम दुनिया से जा रहे हैं, मेरे बच्चे का तुम पालन करना। बिनोवा भावे की माँ उस बच्चे का भी पालन करने लगी उसको वे घी से चुपड़कर गरम-गरम रोटी खिलाती थी और अपने बच्चों को सूखी और बासी रोटी। बिनोवा ने एक दिन अपनी माँ से पूछा—माँ ! हम बच्चे एक जैसे हैं फिर तुम फर्क क्यों करती हो, एक को गर्म रोटी खिलाती हो और एक को ठण्डी। एक को घी की, एक को बिना घी वाली। इस फर्क का क्या कारण है ? हम बच्चे हैं तो एक जैसा खाना क्यों नहीं देतीं ? माँ ने कहा—बेटे ये मेरी पड़ोसिन का बच्चा है, इसलिए ये भगवान का बच्चा है। तू मेरा बच्चा और तेरे साथ मेरी ममता जुड़ी हुई है और इसके साथ भगवान की जिम्मेदारियाँ जुड़ी हुई हैं क्योंकि एक माँ अपने बच्चे को मेरी गोद में सौंपकर गयी थी, सो भगवान के बच्चे के लिए जो करना चाहिए मैं वही इसके साथ करती हूँ। मुहब्बत से भरी बिनोवा की माँ उस बच्चे का पालन करती रही, उन्होंने स्वार्थ को नहीं देखा। बिनोवा जी की जीवनकथा में लिखा है कि सुबह के वक्त जब माँ चक्की पीसती थी, मैं उनके पास जाता था और मुझे भूख लग आती थी तो जो चने वे पीसती थीं, उसी को खाकर रह जाता था। विटामिन ए, विटामिन बी और विटामिन सी प्राप्त नहीं कर सके बिनोवा जी। लेकिन भोजन के साथ-साथ वह खुराक खाते रहे, जो इनसानी खुराक है—मतलब मुहब्बत ! अगर आपके पास वह मुहब्बत है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तो आपको वच्चे पैदा करने चाहिए, बच्चों के निर्माण पर ध्यान देना चाहिए अन्यथा नहीं ! ईसामसीह से एक आदमी ने पूछा आपने भगवान देखा है ? उन्होंने कहा, हाँ, हमने देखा है। क्या आप हमें भी दिखा सकते हैं ? उन्होंने कहा—हाँ, तो दिखाइये। ईसा एक छोटा बच्चा उठाकर ले आये और बोले—यही भगवान है। इसका मन निर्मल, भावनाएँ निश्चल हैं, काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर इत्यादि बुराइयों से यह बचा हुआ है, जो इनसान इन बुराइयों से बचा हुआ है, उसे भगवान होना चाहिए और इनसान के रूप में भगवान देखना हो तो ये बच्चा है।

बच्चों के पालन के लिए जो निष्ठाएँ और वफादारी होनी चाहिए थीं, वह हमारे पास नहीं हैं। यही कारण है कि हमारे बच्चे बागी हो गये। बच्चा बैठा था इन्तजार में कि पिताजी आएँगे, बुन्दर-भालू और खरगोश की कहानियाँ सुनाएँगे, गोदी में लेंगे, कन्धे पर बिठाएँगे, घुमाने ले जाएँगे और पिताजी साइकिल से आये। बच्चे दौड़े पापा आ गये, किसी ने पायजामा पकड़ा, किसी ने कुर्ता और उछलने लगे और पत्थर दिल जैसे हम बच्चों को डाँटने-फटकारने लगे—भागो यहाँ से सारे कपड़े गन्दे कर दिये। बच्चे सहमकर माँ की गोद में छिप गये, सोचा शायद माँ आँखों के आँसू पोछ देगी। पिता ने कहा—इन शैतानों को सँभालो, हमें सिनेमा जाना है, क्लब जाना है। जिन बच्चों ने स्नेह पाया ही नहीं, उनका विकास कैसे होगा ? हम शिकायत करते हैं बच्चे अनुशासनहीन हैं, कहना नहीं मानते, बुजुर्ग की इज्जत नहीं करते और मास्टरों को धमकाते हैं, यूनिवर्सिटी के शीशे फोड़ देते हैं और यह नहीं करेंगे तो और क्या करेंगे बेचारे ? छोटेपन से यही देखा और सीखा है। इसे रोकने की जिम्मेदारी मास्टरों, अध्यापकों की नहीं, वरन् उन लोगों की है, जिन्होंने बच्चे पैदा किये, किन्तु उससे पहले ये नहीं सोचा कि हमारे पास मुहब्बत नहीं है, तो भगवान को क्यों बुलाएँ। ये विचार करना चाहिए था कि लोहे के दिल, पत्थर के दिलवाले, हम विलासी और कामी व्यक्ति बच्चों की जिम्मेदारी नहीं उठा सकते। ऐसे लोगों को यह कहना चाहिए कि भावी नागरिकों को महापुरुषों के रूप में विकसित करना चाहते हों और ये चाहते हों कि हमारे देश के नागरिक महान बनें, ओजस्वी बनें, शक्तिवान बनें, नेता बनें और महत्ता एवं महिमा को लेकर प्रकट हों तो उनके लिए दौलत जमा करना काफी नहीं है, बल्कि उनमें गुणों का विकास करना जरूरी है। गुणों का विकास ही वह प्रमुख तत्त्व है, जो छोटे और गरीब आदमियों को दुनिया की निगाहों में अजर-अमर बना सकता है। छोटे घरों में पैदा हुए मनुष्यों को बादशाह बना सकता है, ऊँचे पदों पर पहुँचा सकता है।

राजस्थान में हीरालाल शास्त्री नाम के ४५ रुपये मासिक वेतन पाने वाले एक संस्कृत के अध्यापक हुए हैं। २६ वर्ष की उम्र में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। लोगों ने कहा—दूसरी शादी कर लीजिए। उन्होंने कहा—पहली पत्नी की सेवा और वफादारी का तो कर्ज चुका नहीं पाया और आप लोग दूसरी शादी की बात करते हैं। वे नौकरी छोड़कर अपनी पत्नी के गाँव में चले गये और निश्चय किया कि इस गाँव की एक लड़की ने मेरी सेवा-सहायता की, मैं इस गाँव की सेवा करूँगा और कन्या पाठशाला खोलने के इरादे से गाँव की लड़कियों को एक पेड़ के नीचे पढ़ाने लगे। कुछ लोगों ने मजाक भी उड़ाया पर वे अपनी निष्ठा पर अडिग रहे। यह देख गाँव के भले लोगों ने छप्पर डाल दिया, बच्चियाँ पढ़ने लगीं। लोगों ने सोचा जो आदमी कष्ट-मुसीबतों को सहकर दूसरों की सुविधा और राष्ट्र की प्रगति, गाँव की प्रगति के लिए काम कर रहा है, उसका नाम इनसान के रूप में भगवान होना चाहिए। फिर क्या था—रुपया-पैसा, सोना-चाँदी, लोहा-सीमेण्ट भागते चले आए और उस स्थान पर वनस्थली नाम का विद्यालय बनकर खड़ा हो गया। हिन्दुस्तान में यह महिला विश्वविद्यालय पहले नम्बर का है, जिसमें हवाई जहाज उड़ाने से लेकर स्कूटर चलाने तक और विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण दिया जाता है। स्वाधीनता के बाद जब पहली गवर्नमेण्ट बनायी गयी तो इन्हीं हीरालाल शास्त्री को राजस्थान का मुख्यमन्त्री बनाया गया। मनुष्य का आध्यात्मिक विकास इस बात में नहीं कि उसके पास धन कितना है, ऐय्याशी और विलासिता के साधन कितने हैं ? ये मनुष्य की महानताएँ या प्रगति की निशानियाँ आदमी के अन्दर की हिम्मत और जीवट है, जिसके आधार पर आदमी सिद्धान्तों का पालन करने में समर्थ हो पाता है।

कोरिया के एक किसान यांग का नाम सुना है आपने ? जिस तरह हमारे यहाँ गाँधी जी की तस्वीरें घरों में टँगी रहती हैं, दक्षिण कोरिया में यांग की तस्वीर टँगी रहती हैं। नयी फसल जब तैयार होकर आती है, तो पहले यांग की पूजा होती है और बाद में अनाज का उपयोग किया जाता है। १८२१ में जब कोरिया में अकाल पड़ा, उस बुरे समय में लोग भूखों मरने लगे, एक-दूसरे को लूट-मारकर खाने लगे। यांग ने अपने बच्चों और बीबी को बुलाकर कहा—देश में पन्द्रह-बीस लाख लोग भूख से तड़पकर मर रहे हैं, हमारे पास अनाज है, जिसे खाकर हम जिन्दा रह सकते हैं, लेकिन अगले वर्ष वर्षा हुई और अगर बीज न मिल सका तो सारे का सारा कोरिया मनुष्यों से रिक्त हो जाएगा इसलिए अनाज खाने की अपेक्षा बीज के लिए रखा जाए। अनाज के कोठे को बन्द करके सरकारी बैंक की सील लगवा दी और कहा—वर्षा होने पर जब बीज की जरूरत पड़े तभी इसे खोला जाए। बीबी-बच्चों सहित पाँचों प्राणी भूखों मर गये। वर्षा होने पर बीज बोया गया और यांग वहाँ का देवता बन गया क्योंकि उसने अपने स्वार्थ और हविश का त्याग किया था।

महानताएँ सिखायी जाती हैं, बड़प्पन नहीं। अमीरी नहीं महानता। हमें लोगों के मस्तिष्क बदलना चाहिए। अगर राष्ट्र को महान बनाना हो, व्यक्ति को महान बनाना हो, राष्ट्र को समर्थ और मजबूत बनाना हो तो हमको लोगों से यह कहना चाहिए कि पहले हर व्यक्ति स्वयं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बदले, अपने परिवार को बदले तब अपने आस-पास के परिकर को बदले। दुनिया बदल रही है—सुधर रही है, ऐसे में हम कैसे बच सकते हैं ? हमको महत्त्वाकांक्षाएँ नहीं, महानताएँ जगानी चाहिए। आज आदमी के भीतर महत्त्वाकांक्षाएँ भड़क गयी हैं। हर आदमी महत्त्वाकांक्षी है और बड़ा आदमी बनना चाहता है—अमीर बनना चाहता है। हर आदमी खुशहाल बनना चाहता है। मैं खुशहाली और अमीरी के खिलाफ नहीं हूँ, लेकिन मैं यह कहता हूँ कि अमीरी ही काफी नहीं है। अमीरी के साथ-साथ मनुष्य के भीतर जो महानताएँ प्रसुप्त पड़ी हैं, उन्हें भी जगाया जाना चाहिए, जैसे इंग्लैण्ड के नेलसन एवं जापान के गाँधी कागावा ने अपने भीतर से जगायी थी।

नेलसन इंग्लैण्ड की सेना में एक सामान्य सिपाही था, किन्तु जब उसने देखा कि उसके देश की सेनाएँ बुरी तरह दुश्मनों के हाथों पिट रही हैं, तो वह अपने अफसरों के पास गया और बोला—सिपाहियों को बन्दूकें ही काफी नहीं हैं। सिपाहियों में जोश, देशभक्ति की भावना और कटकर मरने की भावना ही विजय दिलाती है। यह काम मुझे सौंपा जाए। बड़े अफसरों ने उसे यह काम सौंप दिया और नेलसन जिस निष्ठा के साथ, देशभक्ति के साथ, जिस उमंग के साथ लड़ा वे उमंगें हमने भारतीय सैनिकों में पाकिस्तान के साथ लड़ाई के समय देखी हैं, जो टैंकों से टकराने में भी पीछे नहीं रहे और अपनी जान की बाजी तक लगा दी। नेलसन ने यही किया। उसने अपने सीने पर बम बाँधी और दुश्मनों के टैंकों के सामने आ गया। टैंक द्वारा उसे कुचला गया लेकिन टैंक भी बमों के धमाके के साथ उड़ गये। घायल एवं लहू-लुहान नेलसन जब खड़े होने योग्य नहीं रह गया तो उसने अपने आपको एक पेड़ से बँधवा लिया और अपनी सेना का मार्गदर्शन करने लगा। शरीर से, फेफड़े से खून के फव्वारे छूट रहे थे, फिर भी वह मोर्चे पर डटा रहा। इंग्लैण्ड जब जीत गया तो खुशियों का समाचार नेलसन के कान में सुनाया गया, तो उसने कहा—अब मुझे मरने में कोई डर नहीं, मेरी मौत ही खुशी का उपहार है। अब मैं शान्ति के साथ—अपनी अच्छाई के साथ मरूँगा और इतना कहकर उसने अन्तिम साँस ली।

इसी तरह कागावा ने अपना पेट काटकर बीमारों, भिखारियों, अपाहिजों, कोढ़ियों और शराबियों की दशा सुधारने में सारा जीवन खपा दिया। जैसे हिन्दुस्तान में गाँधी जी की तस्वीरें हर जगह टँगी हुई मिलेंगी, वैसे ही जापान के हर घर में कागावा का चित्र टँगा हुआ मिलेगा। जैसे हर हिन्दुस्तानी बच्चे को गाँधी जी का नाम मालूम है, वैसे ही जापान के हर नागरिक को कागावा का नाम मालूम है। इसलिए मालूम है कि उसने देश के पिछड़े लोगों के लिए सारी जिन्दगी जद्दोजेहद की। कागावा का नाम अजर-अमर हो गया। इंग्लैण्ड का हर नागरिक कृतज्ञता के भावों से भरा हुआ है नेलसन के लिए और जापान का कागावा के लिए, कोरिया का हर नागरिक कृतज्ञता के भावों से भरा हुआ है यांग के लिए। यही महानता है।

भाइयों, हमें महत्त्वाकांक्षाओं को भूल जाना चाहिए और मनुष्य के भीतर उन्नति की भावना, महानता की भावना विकसित करनी चाहिए। अमीरी की नहीं, अय्याशी की नहीं। कारण अमीरी आदमी के अन्दर व्यसन पैदा कर देती है और उनके बच्चों को चोर बना देती है, आदमी को बीमार बना देती है और साथ ही सामाजिक जीवन में दुष्ट परम्पराएँ कायम हो जाती हैं। अतः इस बात को हमें और आपको जानना चाहिए। अगर आपको समाज विज्ञान का काम सौंपा जाए, लेक्चरर या प्रोफेसर बना दिया जाए या किसी विश्वविद्यालय का डीन बना दिया जाए और फिर आपको देश की—संसार की समस्याओं को हल करने के लिए कहा जाए तो आप हमारी इस बात को ध्यान रखना—नोट करके रखना कि कोई भी राष्ट्र केवल पैसों के कारण गरीब या अमीर नहीं होता। फ्रान्स के पास पैसा था, चारों ओर विलास-वैभव था। कितनी ही भव्य इमारतें बनी हुई थीं, लेकिन हिटलर ने जब चढ़ाई की तो तीन दिन के अन्दर सारा का सारा फ्रान्स तहस-नहस हो गया और वहाँ का हर नागरिक इस बुरी तरीके से पड़ोस वाले देशों में भागा कि त्राहि-त्राहि मच गयी। पड़ोस वाले देशों के नागरिक बोले—फ्रान्स के ये नागरिक जो अमीर कहलाते थे। पेरिस दुनिया का स्वर्ग कहा जाता था किसी जमाने में, आज उस पेरिस के नागरिक अपने देश की रक्षा करने के लिए पूरी हिम्मत और जोश से—ताकत से क्यों नहीं लड़े ? जबकि रूस वालों ने, ब्रिटेनवासियों ने एक-एक इंच की लड़ाई लड़ी। ऐसा क्या कारण हो सकता है, जो उनकी पराजय का कारण बना ? उत्तर मिला—फ्रान्सीसियों के दिमाग पर अय्याशी और विलासिता छायी थी।

अमीरी से राष्ट्र मजबूत नहीं होते, मनुष्य मजबूत नहीं होते, राष्ट्र की समस्याओं को हल नहीं होता और राष्ट्रीय परम्परा का विकास नहीं होता, इसलिए आपके जिम्मे यदि कभी यह काम सौंपा जाए तो कृपा करके इस बात का ध्यान रखें। अगर मेडिकल कॉलेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में से किसी को धर्माचार्य बना दिया जाए, जगत् गुरु शंकराचार्य बना दिया जाए तो आपको एक काम करना पड़ेगा—हर साधु-सन्त और बाबाजी को यह कहना पड़ेगा कि आध्यात्मिकता के सिद्धान्तों को काम में लाएँ। आध्यात्मिकता की नकल बनाना, ढोंग बनाना, दाढ़ी-जटा बढ़ाना और तिलक-छापा लगाना ही काफी नहीं है। धर्म की चिन्ता करना ही काफी नहीं है, वरन् धर्म की नीति पर भी विचार करना चाहिए। हिन्दुस्तान में सात लाख गाँव हैं और छप्पन लाख साधु-सन्त-महात्मा, पुरोहित, पण्डित, बाबाजी। एक गाँव पीछे आठ साधु-सन्त आते हैं। यदि आठ साधु-सन्त एक गाँव में चले जाएँ और उस छोटे-से गाँव में सफाई करने लगें, साक्षरता का विस्तार करने लगें तो जिन असंख्यों सामाजिक समस्याओं, कुरीतियों ने सारे राष्ट्र को तबाह करके रखा है, जकड़ करके रखा है, उसे हम ठीक कर सकते हैं। मगर भाइयो, ये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधु-सन्त न जाने कहाँ खो गये, आध्यात्मिकता की चेतना न जाने कहाँ लुप्त हो गयी। यदि यह राष्ट्र के निर्माता का काम करें, आध्यात्मिकता का काम करें तो यह अपने देश को न जाने कहाँ से कहाँ ले जा सकते हैं ? आध्यात्मिकता के इस सूत्र को मैं सेवा-सहायता कहता हूँ, कर्त्तव्यपरायणता कहता हूँ। हमारे जीवन में यदि यह आ जाए तो हमारा राष्ट्र न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच जाए ? आपको कभी ऐसा काम करना पड़े तो कृपा करके ध्यान रखिये।

अगर आपको कभी धर्म का—अध्यात्म का काम सौंपा जाए तो आपको भगवान बुद्ध के तरीके से यही कहना चाहिए कि हमारा स्वर्ग गरीबों के बीच है, दुःखियों के बीच है, सेवा के बीच है। भगवान बुद्ध से जब पूछा गया कि क्या आप स्वर्ग जाएँगे ? उन्होंने कहा नहीं, मुझे स्वर्ग जाने की जरूरत नहीं है। स्वर्ग में जो आनन्द है, उससे हजार गुना आनन्द वहाँ है, जहाँ दीन-दुःखियारे रहते हैं, पीड़ित लोग रहते हैं, अज्ञान और अभावग्रस्त लोग रहते हैं। मैं उनकी सेवा किया करूँगा और संसार के सभी मनुष्यों को स्वर्ग भेजने की कोशिश करूँगा। अभी मुझे बार-बार जन्म लेना है और दुःखियारों को, पिछड़े हुओं को, कर्त्तव्य से भटके हुओं को रास्ता दिखाना है। अगर ये भाव हमारे भीतर आ जाएँ तो स्वर्ग की समस्या हल हो जाए, फिर हमें साधु-बाबाजिओं की तरह से स्वर्ग का टिकट नहीं बाँटना पड़ेगा।

इन दिनों व्यक्ति के जीवन की असंख्य समस्याएँ हैं, राष्ट्रीय जीवन की असंख्य समस्याएँ हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों समस्याएँ हैं। युद्ध के बादल चारों ओर मँड़रा रहे हैं। हर मनुष्य एक-दूसरे के खून का प्यासा बना हुआ है, एक-दूसरे को वैरी समझ रहा है। यदि अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियाँ कभी आपके ऊपर आवें, तो आपको युद्ध व घृणा की बातें मन में से निकाल देने के लिए हर राष्ट्र को मजबूर करना चाहिए और ये कहना चाहिए कि देश जमीनों के टुकड़ों में बँटे हुए नहीं हैं। इनसान के दिल को जमीन के टुकड़ों से बाँटा नहीं जा सकता। इनसान को—इनसानी मोहब्बत को जमीनों की वजह से बाँटा नहीं जा सकता है। आदमी के बीच में मनमुटाव है, तो इसे प्यार व मोहब्बत के साथ, इनसाफ के साथ आराम से सुलझाया जा सकता है। लड़ाई करने की जरूरत नहीं है। अगर आप लोगों को यह समझा सकें कि इनसान—इनसान का भाई है और भाई को भाई से मोहब्बत करनी चाहिए, भाई को भाई के लिए त्याग करना चाहिए। यदि यह बात हमारे जीवन में आ जाए, तो हम युद्धों से बच सकते हैं और सारी समस्याओं को हल कर सकते हैं। आज जबकि एक देश दूसरे देश से हर वक्त काँपता रहता है, इस विभीषिका को हम इस तरह प्यार और मोहब्बत से हल कर सकते हैं। अभी जो ज्ञान और सम्पदा टैंक बनाने में लगा हुआ है, उससे हम ट्रैक्टर बना सकते हैं, जो विज्ञान आज मशीनगनों को बनाने में लगा हुआ है, उससे हम पानी निकालने के पम्प बना सकते हैं और जो ज्ञान एवं शक्ति एक-दूसरे को मारने की—काटने की शिक्षा देने में लगा हुआ है, उसे एक-दूसरे के प्रति प्यार-मोहब्बत पैदा करने और बच्चों का शिक्षण देने में लगाया जा सकता है। यदि इनसान के भीतर मोहब्बत पैदा की जा सके और उसे यह समझाया जा सके कि सारा विश्व ही अपना कुटुम्ब है, परिवार है, तो फिर दुनिया में हजारों वर्ष तक शान्ति कायम रखी जा सकती है।

साथियो, अगर ऐसा न हो सका जैसा कि मैंने इन सूत्रों में अभी आपको बताया है तो फिर बर्टेण्ड रसेल के शब्दों में ऐसा होगा कि पहले लड़ाई तीरकमान से लड़ी जाती थी फिर बन्दूकों से लड़ी गई और तीसरी लड़ाई एटमबमों से लड़ी जाएगी और चौथी लड़ाई के लिए आदमी के पास इतनी ही शक्ति बाकी रह जाएगी कि वह ईंट और पत्थरों का इस्तेमाल कर सके। बन्दूक और लाठियाँ चलाने लायक तब इसके पास न अकल बाकी रह जाएगी, न साधन बाकी रह जाएँगे और न सामर्थ्य बाकी रह सकेगी। ये अक्ल, ये विज्ञान जिसकी मैं प्रशंसा कर रहा था और जिस टेक्नॉलाजी के बारे में शुरू से बता रहा था, ये सब इस तरह से जलकर खाक हो जाएँगे जैसे कि कागज का रावण अपने आप जलकर खाक हो जाता है। इस विज्ञान की तरक्की को सुरक्षित रखने के लिए इस टेक्नालॉजी के लाभ और हानि को ठीक प्रकार से समझने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि इस उन्मत्त हाथी के ऊपर अंकुश रखा जाए, सरकस के शेर को तमाशा दिखाने के लिए रिंगमास्टर के तरीके से एक हंटर रखा जाए। अगर भौतिक विज्ञान और भौतिक प्रगति के इस बाघ को खुला हुआ छोड़ा गया तो यह किसी को छोड़ने वाला नहीं है, सबको खा जाएगा। फिर इनसानियत जिन्दा रहने वाली नहीं है। इनसानियत को जिन्दा रखने के लिए इस टेक्नालॉजी और इस बौद्धिक विकास-आर्थिक विकास के पीछे आध्यात्मिकता का अंकुश उसी प्रकार रखा जाना चाहिए, जिस प्रकार से एक पागल हाथी के सूँड़ के ऊपर एक अंकुश रखा जाता है और उसकी दिशा निर्धारित की जाती है।

बच्चो, भविष्य में आपके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ आने वाली हैं, जिसे आपको उठाना होगा। अगले दिनों समस्याएँ उभरेंगी और आपसे अपना हल माँगेंगी और ये कहेंगी कि हमारी समस्याओं का हल किया जाए। आपको इन समस्याओं के समाधान ढूँढ़ने और करने पड़ेंगे और करना चाहिए। मैं तो एक बूढ़ा आदमी हूँ, जो न जाने कब किनारे लग जाए ? पर मैं आपको एक छोटा-सा फार्मूला बताकर जा रहा हूँ। इसे आपको याद रखना चाहिए कि विश्व की हर समस्या का समाधान, राष्ट्रों की हर समस्या का समाधान एक ही है कि मनुष्यों के भीतर मनुष्यता को जिंदा रखा जाए, इनसानियत को जिंदा रखा जाए, भौतिक विकास के साथ-साथ महानता को विकसित किया जाए, जिसे मैं आध्यात्मिकता का विकास कहता हूँ। आप चाहें तो उसको नेकी कहिए, भलमनसाहत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहिए, धर्म-नीति कहिए—कुछ भी कहिए। आप किन्हीं शब्दों का इस्तेमाल कीजिए। मैं तो इसे आध्यात्मिकता के नाम से पुकारता हूँ और यह कहता हूँ कि इस महानता को, आदर्श-कर्तव्यनिष्ठा को मनुष्य के भीतर जिन्दा रखा जा सके, समाज के भीतर जिन्दा रखा जा सके तो खुशहाली कायम रह सकती है और भौतिक उपलब्धियों का हम परिपूर्ण आनन्द उठा सकते हैं।

सुख-सुविधा उपलब्ध कराने वाले इस भौतिक विज्ञान को धन्यवाद, भौतिक प्रगति को धन्यवाद, टेक्नालॉजी की प्रगति को धन्यवाद, लेकिन तब तक ये सभी अपूर्ण हैं, जब तक कि हम इसके दूसरे पक्ष को भी विकसित नहीं करेंगे, जिसको मैं आध्यात्मिकता कहता हूँ। इस महत्त्वपूर्ण दूसरे पक्ष को भुलाया नहीं जाना चाहिए। यही सब कहने के लिए आप सबों के सामने एक चेतन-व्यक्ति आया, जिसके ऊपर समाज के नवनिर्माण की जिम्मेदारी है। ये जिम्मेदारी आपको भी उठानी ही चाहिए और उठानी ही पड़ेगी। इस सुझाव को यदि आप इस्तेमाल कर सके तो मुझे उम्मीद है कि अपने देश की, मानव जाति की और विश्व की महानतम सेवा करने में आप समर्थ हो सकेंगे। आप लोगों ने एक घंटे तक अपना मूल्यवान् समय देकर मेरी छोटी-सी बात सुनी, इसके लिए आप सबका बहुत-बहुत आभार मानता हूँ। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्तिः।

यह चिनगारी—दावानल बनेगी

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

भगवान बुद्ध ने धर्मचक्र के नाम से अपना आन्दोलन चलाया था। यह क्या था ? धर्म के चक्र को प्रवर्तित कर देना, धर्म के चक्र को घुमा देना। भगवान बुद्ध ने इसका शुभारंभ किया और सम्राट अशोक ने इसे आगे बढ़ाया। आपको अपने राष्ट्रीय झण्डे के अन्तर्गत जो अशोक-चक्र दिखाई पड़ता है, वह धर्मचक्र के प्रवर्तन का चिन्ह है। इसका मतलब जो रुकी हुई धाराएँ थीं, उनको भगवान बुद्ध ने फिर से प्रवाहवान बना दिया, जाग्रत कर दिया और फिर से चला दिया। तालाब का पानी रुका हुआ हो तो सड़ जाता है। नदी का पानी चलता रहता है। प्रवाह माने पानी का बहाव। नदी के पानी की धारा अगर छोटी भी हो तथा पानी चल रहा हो तो वह सड़ेगा नहीं। तालाब कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसका पानी सड़ने लगता है। उसी प्रकार मनुष्य को भी प्रगति की ओर चलना पड़ता है। उसे बार-बार विचार करना पड़ता है कि हमसे गलतियाँ कहाँ हुईं, क्या हुईं ? इस प्रकार के विचार करते रहने से आदमी का बहाव ठीक रहता है। आज का दिन वह है, जिसमें हमें विचार करना होगा कि पिछले दिनों हमसे क्या-क्या भूलें हुई हैं ? कहाँ हमने गलतियाँ की हैं ? उन्हें सुधारने की आवश्यकता है। यह धर्म-चक्र-प्रवर्तन का दिन है, प्रातःकालीन उदयमान सूर्य का दिन है, अन्धकार की समाप्ति का दिन है। आज हमको अपनी गतिविधियों पर नये सिरे से विचार करना होगा।

एक विचार हमारे सामने आता है और आना भी चाहिए कि गाड़ी के दो पहियों में से एक पहिया छोटा हो गया है। इस स्थिति में गाड़ी आगे कैसे चलेगी ? गाड़ी आगे चल नहीं सकती है। हमने-आपने कई बार यह सुना है कि अमुक रोड पर मोटर, ठेलागाड़ी पलट गयी। अगर हम इस दुर्घटना पर निगाह डालें तो यह पायेंगे कि उस मोटर-ठेले का एक पहिया पंचर हो गया था। इस पंचर के कारण ही गाड़ी पलट जाती है और दुर्घटना हो जाती है। इसमें क्या होता है कि एक पहिया बड़ा हो जाता है और एक पहिया हवा निकल जाने के कारण छोटा हो जाता है। जिस समय ऐसा होता है उस समय उसके ऊपर लदा हुआ, माल एक तरफ झोंका लेता है और संतुलन बिगड़ने के कारण गाड़ी पलट जाती है। कई बार तो ड्राइवर, कंडक्टर की मृत्यु भी हो जाती है और कीमती ट्रक चकनाचूर हो जाता है। इसके कारण मालिक को और ड्राइवर के घर वालों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

उसी प्रकार मनुष्य रूपी गाड़ी भी दो पहियों की है। इसमें एक का नाम पुरुष तथा दूसरे का नाम स्त्री है। ये दोनों अलग-अलग नहीं हैं। आपने अर्द्धनारीश्वर का चित्र तो देखा ही होगा। आधे अंग में शंकर एवं आधे अंग में पार्वती, आधे अंग में राधा एवं आधे में कृष्ण की मूर्तियाँ बनायी जाती हैं। आधे में सीता और आधे में राम होते हैं। यह मूर्तियाँ आपको जगह-जगह के मेलों में मिलती रहती हैं। वहाँ आपने इन्हें देखा भी होगा तथा अपने घर में रखा भी होगा। इसका मतलब है कि दोनों अंग समान हैं, दोनों अंग मिले-जुले हैं तथा दोनों अंग बराबर महत्त्व के हैं। मनुष्य के दोनों हाथ बराबर के हैं, अगर किसी के थोड़े उन्नीस-बीस हो जाएँ तो हम कुछ कह नहीं सकते हैं, परन्तु सामान्यतया दोनों हाथ बराबर के हैं। गाँधी जी का जब दाहिना हाथ थक जाता था तो वे बायें हाथ से लिखने का काम करते थे। उसी प्रकार वे चर्खा को दायें हाथ से कातते थे। जब वह थक जाता था तो चर्खा का पहिया घुमा देते थे और बायें हाथ से कातने का काम किया करते थे। हम एवं आप अभ्यास के कारण ही दायें हाथ से ज्यादा काम कर लेते हैं, परन्तु अगर हम अभ्यास करें तो देखेंगे कि दाये हाथ से बायाँ हाथ भी कम काम नहीं करता है। बहुत-से लोगों को हमने देखा है कि वे बायें हाथ से भी दाएँ हाथ की तरह ज्यादा और जल्दी काम करते हैं। इसी प्रकार हमारी दोनों आँखें बराबर हैं। इनमें से न कोई हमारी मालिक है और न कोई गुलाम है। इनमें न कोई हिन्दू है और न कोई मुसलमान है, बल्कि एक ही नस्ल की हैं। हमारी दो टाँगें हैं, इनमें से कोई बड़ी एवं कोई छोटी नहीं हैं। अगर बड़ी-छोटी टाँगें हो जाएँ तो हमारा चलना मुश्किल हो जाएगा। फिर स्त्री

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

और पुरुष में भेद क्यों ? शरीर के दोनों अंगों की भाँति वे समान हैं। इसलिए दोनों को साथ-साथ पाँव से पाँव मिलाकर, कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहिए। हमारी प्रगति का रास्ता दोनों के द्वारा ही संभव है।

प्राचीनकाल के इतिहास को उठाकर जब देखते हैं तो हमें कहीं भी कोई फर्क दिखाई नहीं पड़ता। एक बार की बात है—देवताओं ने राजा दशरथ को युद्ध में सहायता करने के लिए बुलाया था। निमंत्रण पाकर उनका साथ देने के लिए दशरथ उस युद्ध में गये। इस देवासुर संग्राम में उनकी रानी कैकेयी, जो कि धनुष-बाण चलाने में निपुण थी, घुड़सवारी भी कर लेती थी, उनके साथ गयी थीं। कहते हैं कि उस देवासुर संग्राम में जब दशरथ के रथ का पहिया कील निकल जाने के कारण डगमगाने लगा तो उसे वीरांगना कैकेयी ने देख लिया और राजा दशरथ को पता भी नहीं लगने दिया और अपने हाथ की अँगुली उस पहिये में लगाकर सारे युद्ध में डटी रही। वास्तव में वह किसी भी प्रकार राजा दशरथ से कम नहीं थी। वह बराबर की योद्धा, बराबर की वीर, बराबर की शूरमाँ और बराबर की शक्तिशाली महिला थीं, जो रणनीति में भी निपुण थीं।

एक बार श्रीकृष्ण-अर्जुन में लड़ाई हुई थी, ऐसा एक काव्य में लिखा है। पता नहीं सत्य है या गलत है, परन्तु यह बात सही है कि जब अर्जुन लड़ने के लिए श्रीकृष्ण के पास गये, उस समय सारथी द्रोपदी थीं, जो रथ चला रही थीं और अर्जुन धनुष-बाण चला रहे थे। दोनों ही बराबर के योद्धा-लड़ाई लड़ने वालों में से थे। रानी लक्ष्मीवाई, रानी दुर्गावती का नाम हमें मालूम है। उन्हें हम भुला नहीं सकते। हम यह कहना चाहते हैं कि न केवल लड़ाई के सम्बन्ध में बल्कि विद्या एवं ज्ञान के संदर्भ में भी नारियाँ नर से कभी भी, किसी क्षेत्र में पीछे नहीं रहीं। राजा जनक की सभा में गार्गी एवं याज्ञवल्क्य का संवाद होता है। प्रश्नोत्तर का क्रम चलता है, गार्गी जब याज्ञवल्क्य से प्रश्न पर प्रश्न पूछती चली गयी तो उनको पसीना आ गया और वे चक्कर में पड़ गये। गुस्से में आकर याज्ञवल्क्य जी ने कहा कि अगर तुम इसी तरह बार-बार सवाल करती चली गयीं तो हम तुम्हें शाप दे देंगे और तुम्हारा सिर कटकर नीचे आ जाएगा। गार्गी ने कहा—बस हो गया, क्या आपका ज्ञान केवल सिर काटने वाली बात तक ही सीमित है ? अरे ऋषिवर ! आप हमारे प्रश्नों का उत्तर दीजिए, चुप क्यों हो गये ? मित्रो, हम कहना यह चाहते हैं कि गार्गी भी उसी प्रकार की विद्वान एवं विदुषी महिला थीं, जिस प्रकार याज्ञवल्क्य ऋषि थे। प्राचीनकाल के इतिहास को हम देखते हैं तो हमें पता चलता है कि वेद को बनाने वाली तथा मंत्रों की द्रष्टा रहीं हैं। सात ऋषियों में एक अनुसूया का नाम भी आता है। वे इतनी महान थीं कि सात ऋषियों का नेतृत्व करती थीं।

हम क्या कह सकते हैं ? अगर प्राचीनकाल की धर्म-संस्कृति के इतिहास को देखें, तो आपको पता चलेगा कि उनका स्थान कितना महान था ? नर-नारी दोनों में कोई फर्क नहीं था। अगर हम ध्यान से देखते हैं तो हमें पता चलता है कि नारियाँ सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वीरता एवं पारिवारिक किसी भी क्षेत्र में नर से पीछे नहीं रहीं। गाड़ी के दोनों पहिये बराबर थे। पटरी पर गाड़ी ठीक चल रही थी। हम उन दिनों प्रगति पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते चले जा रहे थे। परन्तु हाय रे हमारा समय, हाय रे हमारा दुर्भाग्य ! जिसने न जाने हमें क्या-क्या सिखा दिया तथा न जाने क्या-क्या करने को हमें मजबूर कर दिया। जब हम अपने गौरवमय अतीत का विचार करते हैं तो यह पाते हैं कि भारतीय संस्कृति एवं धर्म के अन्तर्गत नारी को हमेशा शक्तिरूपा एवं भगवान माना जाता था और उसकी स्तुति इस प्रकार करते थे—

या देवी सर्वभूतेषु, मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

नारी हमारी माँ है और नारी हमारी धर्मपत्नी भी है। वह हमारी गृहिणी है। घर उसी ने बनाया है, अगर वह नहीं होती तो हम जंगलों में भिखारी एवं फकीर की तरह घूम रहे होते। हमारा कोई भी महत्त्व नहीं होता। हम नशे में पड़े रहते, होटल में खाना खा रहे होते एवं मस्जिद में नमाज पढ़ रहे होते अथवा मंदिर में कीर्तन-भजन गा रहे होते। हमारी धर्मपत्नी ने हमारे लिए एक घोंसला बनाया, जिसमें जब हम थककर आते हैं तो जाकर विश्राम करते हैं। अगर वह नहीं होती तो हमें न जाने कहाँ जाना पड़ता और न जाने हम किस तरह से मारे-मारे फिरते होते ?

मित्रो ! नारी हमारी बेटी है, जो हमारे और आपके अन्दर सौजन्य एवं स्नेह भरती है। हमारी आँखों में पवित्रता भरती है और उसे जीवित रखती है। अगर बहिन हमारी न हो, तो हमारे एवं अन्य स्त्रियों में कुत्ते एवं कुतिया की तरह रिश्ता हो जाता और उस समय हर आदमी इस धरती पर शालीनता एवं मर्यादा का उल्लंघन करने लग जाता। बहिन हमारे ऊपर अंकुश लगाती है ताकि हम इस संसार में एक संस्कारवान इनसान के रूप में जी सकें। परम पवित्रता की मूर्ति हमारी बेटी, शालीनता एवं मर्यादा की प्रतीक हमारी बहिन, घोंसला बनाने वाली हमारी धर्मपत्नी, हमारी सहयोगी, वीर योद्धा, अर्द्धांगिनी और हमारी माँ, जिसके पेट में हमने अपना नौ महीने का समय बिताया। उसके पेट में हमने नौ महीने पैर पसारा और उसकी छाती का दूध पिया है। उसे हम कैसे भूल सकते हैं ? वास्तव में हम नारी को माँ, पत्नी, बहिन, बेटी किसी भी रूप में देखें। हर रूप में वह त्याग, तपस्या, क्षमा, करुणा और दया की मूर्ति हमें दिखायी पड़ती है, जिसके कारण हमें मनुष्य होने का गौरव प्राप्त हुआ है। वह पूज्य है, जिसका भारतीय संस्कृति एवं धर्म में कितना महत्त्वपूर्ण स्थान था ? परन्तु हाय रे भगवान ! आज हम जब उसकी स्थिति देखते हैं तो हमें रोना आता है कि हे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भगवान उसका रूप क्या हो गया ? नारी के दयनीय रूप को आज हम देखते हैं तो हमें बड़ा दुःख, बड़ा क्लेश होता है। आजकल यह सब उनके अभ्यास में आ गया है, स्वभाव में आ गया है।

हम अभ्यास की बावत क्या कह सकते हैं ? रोम में कैदियों को एक ऐसे बन्द कमरे में रखा जाता था, जहाँ रोशनी भी नहीं पहुँचती थी। जब उन्हें रिहा किया जाता था तो वे पागलों की तरह से भागते थे और यह कहते थे कि हमें सूरज की रोशनी नामंजूर है। हम बाहर नहीं जाएँगे। हमें अंधेरे में ही रहने दें ताकि हमारी आँखों की रोशनी बनी रह सके। इसी प्रकार आज के समाज, परिवार, व्यक्ति के अन्तर्गत यह स्वभाव-सा बन गया है कि उन्हें नर-नारी के बीच कोई अन्तर दिखाई नहीं पड़ता है। स्त्रियाँ घर में खाना बनाती हैं, घर का अन्य काम करती रहती हैं। हम बाहर खेतों में, कारखानों में काम करते हैं। इसमें क्या फर्क है, इसमें क्या सोचना है ? परन्तु यह कहने की बात नहीं है। यह भेद आपको तब मालूम पड़ सकता है, जब आपको स्त्री बना दिया जाए। आपके ऊपर जादू का डंडा फिरा दिया जाए और आपको स्त्री बना दिया जाए। आप सबके लम्बे-लम्बे बाल हो जाएँ तथा दाड़ी-मूँछें समाप्त हो जाएँ। सबके दो-तीन-चार बच्चे हो जाएँ। आपको जब भी बाहर जाना हो तो एक आदमी को लेकर जाना होगा। आप कहेंगे कि गुरु जी ! हम तो मर जाएँगे। हमें इस प्रकार दंडित मत करो। हम तो दफ्तर से आते हैं और सिनेमा देखने चले जाते हैं। भला ऐसा कैसे हो सकता है कि हम घर के जेलखाने में बन्द रहें। यह तो हमारे लिए बड़ा मुश्किल होगा। चलिए, इतना नहीं तो इतना ही हम करते हैं कि आप में से हर आदमी को कल से कम से कम घूँघट मारकर दफ्तर, बाजार जाना होगा। आप कहेंगे कि कोई आदमी इस तरह नहीं रह सकता है। गुरुजी, हमारी तो मिट्टी पलीद हो जाएगी और हम कहीं के नहीं रहेंगे, हम तो बर्बाद हो जाएँगे। वास्तव में यह सत्य है कि इस प्रकार की प्रथा तो इनसान के लिए गैर मुनासिब है।

बेटे ! जिस प्रकार के बन्धन जानवर बर्दाश्त नहीं कर पाते, वे बन्धन इनसान पर लगा दिये जाएँगे तो वह कैसे बर्दाश्त करेगा ? जानवर मुँह खोलकर सड़क पर चल सकते हैं तथा चिल्ला सकते हैं, परन्तु यह क्या तुक है कि हमारी पत्नी मुँह नहीं खोल सकती। हमारे मारने-डाँटने पर वह कुछ न कहे तथा घर में चिल्लाये भी नहीं, यह कैसे हो सकता है ? अरे अगर वह चिल्लायेगी तो हमारे पड़ोसी इकट्ठे हो जाएँगे तथा हमारी बेइज्जती हो जाएगी। यदि इस बात को वह अपने भाई से, बाप से कह दे तो, आप उसे भला-बुरा कहते हैं कि तूने हमारी शिकायत क्यों की ? बेटे ! बात-बात पर हम यह कहते हैं कि हम मर्द हैं और तू औरत है। इसलिए हमारी बात को तुझे अपने भाई से नहीं कहना चाहिए और हम जैसे कहते हैं, तुझे वैसा ही करना चाहिए। ये विचित्र परिस्थितियाँ जैसे घूँघट वाली, लड़के एवं लड़की में भिन्नता वाली, शिक्षा से वंचित हो जाने वाली न जाने क्यों और कहाँ से उत्पन्न हो गयी हैं, जिसके कारण नारियों की स्थिति दयनीय हो गयी है। भगवान न करे कहीं आपको लड़की बना दिया जाए और आपकी बहिन को लड़का बना दिया जाए तथा घर में भैंस का दूध आये और आपको न दिया जाए तो आपकी क्या मनःस्थिति होगी ? जरा सोचने का प्रयास करें कि अगर आपकी मम्मी यह कहें कि लड़कियाँ दूध नहीं पीती हैं, अगर वे दूध पी लेंगी तो उनकी मूँछें निकल आयेंगी। लड़की बाद में कहती है कि मम्मी हम दूध नहीं पियेंगे, पर हमारी मूँछें मत निकलवाना।

बेटे ! एक ही माँ के पेट से जन्मे दो बच्चों में से एक को पढ़ने के लिए स्कूल भेजा जाता है और दूसरे को नहीं भेजा जाता है। एक को अपनी जायदाद में से हिस्सा दे दिया जाता है और दूसरे को दूध में से मक्खी की तरह निकालकर फेंक दिया जाता है। यह कैसी विडम्बना है हमारे समाज की ? इतना ही नहीं लड़के की शादी होती है तो पैसा लिया जाता है और जब लड़की की शादी होती है तो समाज के लोग यह कहते हैं कि इस मरी हुई गाय को हम खरीदने के लिए तैयार नहीं हैं, अगर इसको देना ही चाहते हैं तो इसके कफन के लिए, इसके खाने के लिए आपको पैसा देना होगा। तब हम यह कहते हैं कि हमारी लड़की गूँगी, बहरी, अंधी नहीं है। आपके घर में चार रोटी खायेगी, फटे-पुराने कपड़े पहनेगी, परन्तु आपके घर का काम करके पैसा चुका देगी। आप हमसे पैसा क्यों माँगते हैं ? आपके घर में सफाई का काम, खाना बनाने का काम, बच्चा पैदा करने का काम, चौकीदारिन का काम करेगी तथा आपसे केवल चार रोटी ही तो लेगी। साहब आप पैसा क्यों माँगते हैं ? जिस लड़की को योग्य बनाया, जो बी. ए., एम. ए. पास है। आप उसके पिता से पैसा माँगते हैं, लानत है आपको।

आपको मालूम नहीं है, हमारे आश्रम में जो महिलाएँ खाना पकाती हैं, उनको हम खाना देते हैं, कपड़े देते हैं, उनका स्वास्थ्य खराब होने पर दवा-दारू की भी व्यवस्था करते हैं तथा हर महीने साठ रुपये उनके बैंक खाते में पैसा भी जमा करते हैं। बेटे, तुम्हें मालूम होना चाहिए कि केवल खाना पकाने की मजदूरी इतनी होती है, जबकि घर की महिलाएँ तो किफायतशारी होती हैं। आपको तो उन्हें इससे भी अधिक देना चाहिए, क्योंकि वे सफाई करती हैं, कपड़े धोती हैं। आपको एक बात और बताएँ, जब हम गायत्री तपोभूमि में रहते थे, उस समय आस-पास ज्यादा बस्ती तो थी नहीं, सो चोर आया करते थे। तब हमने एक बूढ़ा चौकीदार रखा था। हम उसको पचास रुपये माहवार देते थे। अब हम आपसे पूछते हैं कि आपकी स्त्री चौकीदारिन है कि नहीं ? हाँ साहब है तो, क्योंकि हम तो सुबह ऑफिस चले जाते हैं, दुकान चले जाते हैं और शाम को कभी-कभी ज्यादा काम होने पर रात को भी आते हैं। वह सारे दिन घर की रखवाली करती है और रात में भी करती है। आप पचास रुपये प्रतिमाह के हिसाब से दिन एवं रात के रुपये निकालिये। अगर यह घर में नहीं होती

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

और आप ऑफिस चले जाते, तो चोर आते और आपके कमरे का ताला तोड़कर सारा सामान चुराकर ले जाते। यह हिसाब आपको जोड़ना चाहिए कि खाना पकाने का, चौकीदारी का, कपड़े धोने का, बाल-बच्चा पैदा करने का, घर को व्यवस्थित रखने का कितना पैसा खर्च करना पड़ेगा, उतना पैसा हिसाब से दीजिए। यह सब हम सांसारिक बातों का जिक्र करते हैं आपसे ! अभी हम उसकी आत्मा की बात नहीं करते। इतना होने के बाद भी आप पन्द्रह-बीस हजार रुपये माँगते हैं। इस बात पर कभी तो आपको सोचना चाहिए कि यह क्या है ?

मित्रो ! यह अनीति है, भ्रष्टाचार और अन्याय है, दुष्टता है, अत्याचार है। जिस दिन ये चीजें समाज का अंग बन जाएँगी, उस दिन समाज का सत्यानाश हो जाएगा। यहाँ पर मनुष्यता का कोई मूल्य ही नहीं रह जाएगा। वह समाज नष्ट हो जाएगा, वह समाज कभी फल-फूल नहीं सकता है। हजार बर्ष तक गुलाम बनाकर मुसलमान शासक हमारे ऊपर बुरी तरह से हुकूमत करते रहे। इतनी बुरी हुकूमत दुनिया में कभी भी नहीं हुई। इतने कत्लेआम किसी जमाने में नहीं हुए होंगे। शहर के शहर, गाँव के गाँव जिसमें स्त्री, पुरुष और बच्चे सभी रह रहे होंगे, उन्हें उन लोगों ने साफ कर दिया। ऐसे अत्याचार दुनिया में कहीं नहीं हुए। ये केवल हिन्दुस्तान के ऊपर हुए हैं। इसका कारण हम हैं, क्योंकि हमने आज तक अपने आधे अंग पर जुल्म किया है। यदि ये जुल्म हम जानवरों पर करते, मुर्गे पर करते तो कोई और बात थी, परन्तु इन अज्ञानियों ने तो अपनी बेटी, बहिन, माँ और धर्मपत्नी को खाया है और रोज ही उनका जनाजा निकलता जा रहा है। हम बच्ची को पढ़ाना नहीं चाह रहे हैं, क्योंकि हमें दहेज में मोटी रकम देनी होगी।

सामाजिक अत्याचार की बात हम क्या कहें ? हमारे पिताजी की जब मृत्यु हुई तो हमें याद है कि हमारे घर में महाब्राह्मण आये थे। उन्होंने भोजन किया, उसके बाद उन्होंने कहा कि हमारे मुँह को भरो। फिर उन्होंने अपना मुँह खोल दिया और सभी लोगों ने उनके मुँह में पैसा डालना शुरू किया। उस सस्ते के जमाने में उनके मुँह में लगभग चालीस या पचास रुपये आ गये। उस जमाने में उनका ही काफी महत्त्व था। आज जो दहेज माँग रहे हैं, उन निखट्टू लोगों की तुलना हम उन महाब्राह्मणों से करते हैं, जिन्हें कोई शर्म नहीं कि घर में शोक का वातावरण है और हम पैसे के लिए बाध्य कर रहे हैं। हमने समाज के अन्तर्गत नारियों को शिक्षा से, घर के सामान्य अधिकारों से वंचित कर दिया है और दहेज के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। वास्तव में हमने इन्हें इनके मौलिक अधिकारों से भी वंचित कर दिया है। हमने यह कभी नहीं सोचा कि इससे समाज की क्या स्थिति होगी ? हर संस्था वालों ने, सरकार ने इस बात की पुष्टि की है कि हर आदमी अपने मौलिक अधिकारों का उपभोग करने के लिए स्वतंत्र है। फिर भी हमने स्त्रियों को इससे वंचित क्यों किया ? यह एक मूल प्रश्न हम सबके सामने है।

हम पूछते हैं कि आप क्या लड़की का कन्यादान करेंगे ? क्यों ? यह कोई बेचने का सामान है, जो आप बुड्ढे से मोल-तोल करके बेच रहे हैं। यह सम्पत्ति नहीं है, इनसान है। राष्ट्रसंघ के संविधान में यह स्वीकार किया गया है कि नर एवं नारी दोनों के मौलिक अधिकार एक हैं। दोनों मनुष्य हैं इसलिए उन्हें समान अधिकार प्राप्त हैं। हमारे भारतीय संविधान ने भी यह घोषणा की है कि हम नर एवं नारी की भिन्नता को नहीं मानते हैं। हम दोनों को समान मानते हैं। दोनों को इनसान मानते हैं। दोनों को स्वाधीन मानते हैं। दोनों की स्वेच्छा एवं सहयोग पर विश्वास करते हैं। कोई किसी की सम्पत्ति या मिलकियत नहीं हो सकते हैं। परन्तु हमारे व्यवहार में यह कहाँ आ रहा है ? आज भी स्त्री तो हमारे गले का पत्थर बनी हुई है, वह भार बनी हुई है। आज वह हमारे लिए सहायक नहीं है। उसके बाप ने पढ़ने नहीं दिया, हमने उसे पढ़ने नहीं दिया। उसके विकास के लिए किसी ने प्रयास ही नहीं किया। वह स्वावलम्बी नहीं है, कोई उद्योग नहीं कर सकती है, खेती-बाड़ी, नौकरी नहीं कर सकती है। वह तो चार-पाँच बच्चों की माँ है। वह क्या कर सकती है ?

हमारी नौकरी क्लर्क की है। हमें ढाई सौ या तीन सौ रुपये मासिक वेतन मिलता है। हम उस परिस्थिति में मर जाते हैं तो हमारे मरने के बाद उस बीबी का क्या होगा, जिसके पास चार-पाँच बच्चे मौजूद हैं। कोई जमाना था जब जेठ, देवर बच्चों को पाल लिया करते थे। कोई जमाना था जब भाई कहता था कि हम अपनी बहिन का पालन कर लेंगे, हमें कोई चिन्ता नहीं है। परन्तु आज जमाना बदल चुका है, परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। आज कोई एक भी उसके सहयोगी या सहायक नहीं बन पा रहे हैं। यह कलियुग है, यह सन् उन्नीस सौ पचहत्तर है, जिसमें भाई अपने भाई के खून का प्यासा बना हुआ है। वह चाहता है कि भाई की मृत्यु के बाद भाभी को हम जहर दे देंगे, बच्चों को लावारिश कर देंगे, ताकि खेत के हम मालिक बन जाएँ। उनका पैसा, गहना हमें मिल जाए। कहीं भाभी को घर से भगा देते हैं। कहते हैं तू कौन होती है ? ये मेरे भाई की कमाई है, इसमें मेरा हक है। इन पाँच बच्चों का क्या होगा ? वह मायके जाती है, तो उससे कहा जाता है वापस वहीं जाओ और देवर-जेठ के जूठे बर्तन साफ करो। ये उन स्त्रियों का हाल है, जिन्हें हम धर्मपत्नी, अर्द्धांगिनी कहते हैं। बेटे हमें ही यह सोचना होगा कि हमारी भी कोई जिम्मेदारी है या नहीं ? हम तो कपड़े और चार रोटी के टुकड़े फेंककर निश्चिन्त हो जाते हैं। आप बी. ए. पास हैं तथा आपकी पत्नी मैट्रिक हैं, तो आप उसे पढ़ाने का प्रयास करें, उसे भी बी. ए. पास कराइये। अधिक बच्चे पैदा करके उसकी सेहत खराब न करें, उसके लिए जालिम तथा हत्यारे न बनें। आप इनसान हैं तो इनसानियत की बात कीजिए और इस समस्या को गम्भीरता के साथ सोचिए।

महात्मा गाँधी दक्षिणी अफ्रीका गये थे। वहाँ गोरे एवं काले में अन्तर समझा जाता था। काले में अधिकांश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हिन्दुस्तानी थे। उनके साथ गोरे लोग गलत व्यवहार करते थे। उनके स्कूल, बसें सब अलग थीं। गोरे, काले लोगों को बहुत नीच समझते थे। गाँधी जी ने वहाँ सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने कहा हमें और लोगों की तरह रहने का मौका मिलना चाहिए। इस काले-गोरे की मान्यता को विश्व की मानवीय संस्था राष्ट्रसंघ ने अस्वीकृत कर दिया। उन्होंने कहा कि नस्ल की वजह से कोई बड़ा-छोटा नहीं हो सकता। आदमी अपने कर्त्तव्य-कर्मों से बड़ा-छोटा हो सकता है। अच्छे काम करेंगे तो आपका सम्मान हो सकता है तथा बुरे काम करेंगे तो आपका अपमान हो सकता है। वंश-जाति की वजह से आप अपने को बड़ा नहीं समझ सकते। आपके बाप-दादा ब्राह्मण थे, परन्तु आप ब्राह्मण का कर्त्तव्य नहीं करते हैं तो ब्राह्मण नहीं हो सकते। गाँधीजी ने वहाँ कहा कि गोरे-काले का अन्तर नहीं होना चाहिए। इस पर उन लोगों ने कहा कि आप जो हमसे कहते हैं, वह भेदभाव पहले भारत में समाप्त कीजिए।

मित्रो ! स्त्रियाँ भी इनसान हैं, उन्हें भी वे अधिकार प्राप्त होने चाहिए, जो मर्दों को प्राप्त हैं। उन्हें भी यज्ञोपवीत, हवन, यज्ञ, गायत्री उपासना का अधिकार होना चाहिए। इसके लिए हमने अब तक लड़ाई लड़ी है और आगे भी लड़ेंगे। बाप-दादों की बातों को हम नहीं जानते, वे अंधकार के जमाने में पैदा हुए थे। मध्यकालीन युग में स्त्रियों पर तरह-तरह के बंधन लगाये गये थे। उससे पहले प्राचीनकाल का जो समय था, वह दिन का समय था। उस समय में उनका गौरवमय अतीत था। वे लक्ष्मीनारायण, सीताराम, राधेश्याम के रूप में विराजमान थीं। शक्ति को शिव से पहले पूजा जाता था। हम सरस्वती का त्योहार, वसंत पंचमी, लक्ष्मी का दिन, दीपावली तथा दुर्गा का दशहरा, गायत्री का गंगा दशहरा मनाते हैं। यह क्या है ? बेटे, यह स्त्रियों का सम्मान है। प्राचीनकाल में दोनों एक-दूसरे को सम्मान देते और कंधे से कंधा मिलाकर चलते थे। ये देवी थीं। हर नारी के नाम के साथ देवी शब्द इसीलिए प्रयुक्त होता था। शास्त्रों में नारी को हमने भगवान् माना है और सारे पूजा-पाठ उसी के निमित्त हैं। नवरात्रि में हम नवदेवियों की पूजा करते हैं।

मध्यकाल में बाप-दादों ने आपके अन्दर जो मान्यताएँ बना दीं, वे वस्तुतः अज्ञानता और अंधकार युग की देन हैं। हमें मालूम है एक जमाना ऐसा भी आया था, जिसमें जिसकी लाठी उसकी भैंस होती थी। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती थी। यह जंगल के कानून थे जो इनसान को खा जाते थे। आल्हा-ऊदल, मलखान की कहानी तो आपने पढ़ी है न। वे क्यों लड़ाई लड़ना चाहते थे ? ये लड़ाई बिना सिर-पैर की थीं। इसमें न कोई इन्साफ की, न इनसानियत की और न ही आजादी की लड़ाई थी, यह तो केवल उनके अहंकार की लड़ाई थी और वह यह थी कि हम उसकी लड़की को छीनकर भाग जाएँगे। यह सामन्तवादी, जमींदार एवं ठाकुरों का युग था। इनका साम्राज्य सारे हिन्दुस्तान में और कहीं-कहीं तो हिन्दुस्तान से बाहर भी फैल गया था। उस जमाने में लुटेरे दो चीजें लूटते थे। एक तो जवान मर्दों को, जिनसे बैलों की तरह काम कराते और गुलाम बनाकर रखते थे। आपको मालूम नहीं, मिस्र के पिरामिड में तीस लाख गुलामों का खून किया गया था। जब तक गुलाम जवान रहे, उनका उपयोग किया जाता रहा और जब वे बुड्ढे, असमर्थ हो गये तो उन्हें मार दिया गया।

इसी सामन्तशाही युग में लूट का दूसरा चरण यह उठा कि जहाँ कहीं भी जवान औरतें दिखीं, उनको चुरा लिया गया, अपहरण कर लिया गया। रईस, जमींदारों के यहाँ सौ से लेकर एक हजार तक औरतें रखी गयीं। आप सोच सकते हैं कि इस परिस्थिति में वहाँ बगावत पैदा हो सकती थी या नहीं ? इन लोगों ने उन स्त्रियों पर लगाम लगाकर, चेहरे पर नकाब, बुर्का लगाकर बहुत ही कन्ट्रोल में रखा। आपको मालूम नहीं है, जब आजादी मिल गयी तो हैदराबाद के राजा निजाम पर साढ़े सात सौ औरतों ने 'क्लेम' किया था। आज जरा विचार करके देखें कि किसी के यहाँ अगर दो औरतें होती हैं तो खून-खच्चर नहीं होगा तो क्या होगा ? इसी कारण उन्हें बन्धनों में रखा जाता था ताकि वे बगावत न करें, कहीं जहर न दे दें और अपने द्वेष एवं अहंकारवश कोई घटना न कर दें। उन्हें घूँघट में इसलिए रखा जाता था ताकि उनके आँसू उनके पड़ोसी, भाई, बाप को दिखायी न पड़ सकें, नहीं तो कोई भी उनके साथ सहानुभूति कर सकता है। यह उस जमाने की बात है जब मुसलमान हमारे देश में आये और उन्होंने बहुपत्नी प्रथा को प्रारंभ किया था। इसके बाद हिन्दुओं के यहाँ भी यह परम्परा धीरे-धीरे शुरू हो गयी।

उस जमाने में पंडित लोग भी कहीं-कहीं ऐसे उदाहरण दे दिया करते थे कि जब भगवान श्रीकृष्ण के सोलह हजार छह सौ साठ पत्नियाँ हो सकती हैं तो आप क्यों नहीं रख सकते ? आप कम से कम सोलह सौ तो रख ही सकते हैं। ऐसी विडम्बना मध्यकाल में पंडों-पुरोहितों ने फैलाकर नारी समाज पर घोर अपराध किया था। वे लोग राजा जनक के सौ रानियों का, उनकी पटरानियों का विवरण देते थे। वे राजा दशरथ की भी चार रानियों की बातें करते थे। क्या आप उन्हें ही बाप-दादे कहेंगे, जो लूटकर औरतें लाते थे और बंदिशों में रखकर उनके साथ अत्याचार करते थे। आप उन्हें बाप-दादा मानने से इनकार करें, यह हमारी राय है। इन्हीं लुटेरों से सयानी लड़कियों को बचाने के लिए माँ-बाप ने छोटी उम्र में शादी-ब्याह यानी बाल-विवाह शुरू कर दिये। तब सोलह वर्ष की लड़की की गोद में बच्चा आ जाता था। वह कमजोर हो जाती थी, चल-फिर भी नहीं सकती थी, परन्तु माँ-बाप यह कहकर संतोष कर लेते थे कि हमारी लड़की जैसी भी है, कम से कम जिन्दा तो रह जाएगी। कोई डाकू-लुटेरा उठाकर तो नहीं ले जाएगा। उस जमाने में जो कुछ भी रहा हो, उसे हम यह मान सकते हैं कि लोगों ने आपत्ति धर्म का पालन किया और कम उम्र में बच्चों का विवाह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

करा दिया। मजबूरी में आदमी न जाने क्या-क्या कर देता है ?

बेटे, आज ये परिस्थितियाँ हमारे सामने अस्वाभाविक हैं। इनका समापन होने की, सुधार होने की आवश्यकता है। हम अपनी मान्यताएँ, अपना दृष्टिकोण बदलें अन्यथा ऐसी स्थिति में मनुष्य का जीवन कैसे चल सकता है ? हमने अपनी जिन्दगी में ही अपने बीबी-बच्चों को अनाथ कर दिया। उनके भविष्य में गुजारे का भी कोई प्रबन्ध नहीं किया। हमने इस बात पर गंभीरता से विचार किया है कि स्त्रियों को स्वावलम्बी होना चाहिए। इसके लिए उन्हें पढ़ाने की, प्रोत्साहन की आवश्यकता है। विदेशों में महिलाओं के जिम्मे सौ प्रतिशत काम हैं। वहाँ पुरुष वर्ग फैक्ट्री तथा सरकारी ऑफिसों में काम करते हैं, बाकी कृषि, सामाजिक कार्य तथा स्कूल-कॉलेजों में स्त्रियाँ ही काम करती हैं। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और एक गाड़ी के दो पहियों की तरह हैं। क्या वहाँ लोग जीवन नहीं जी रहे ? अपने देश में लोगों को यह शंका है कि यहाँ की नारी आगे बढ़ जाएगी तो हमारा जीवन गुजारना मुश्किल हो जाएगा। इन मान्यताओं को हमें बदलना होगा। जब तक हम एक-दूसरे के पूरक बनकर काम नहीं करेंगे, हमारा विकास संभव नहीं है। जापान में जाकर देखिये—वहाँ महिलाएँ कैसे आत्मविश्वास से काम करती हैं।

एक हम हैं जो सोचते हैं कि वह आगे बढ़ेगी तो उसके पंख निकल आएँगे। वह हमें मारेगी, गाली देगी, जवाब देगी और भी न जाने क्या-क्या कुकल्पना करते हैं। अगर आप कोई गलत कार्य करते हैं तो वह नाराज क्यों नहीं होगी ? अगर आप गाली देंगे तो वह गाली देगी। आप शराफत के साथ पेश आएँगे तो वह भी शराफत से पेश आएगी। अगर आप प्यार भरा व्यवहार करेंगे तो वह भी आपसे प्यार भरा व्यवहार ही करेगी। अतः आप गलत काम की बजाय अच्छा काम ही करें। आप शीशे के सामने हाथ जोड़ेंगे तो उधर से भी हाथ जोड़ता व्यक्ति नजर आएगा। अतः आप जैसा व्यवहार करेंगे वैसा ही उसका व्यवहार होगा। हम अपना सुधार कर लें तो सब ठीक हो जाएगा। बेटे, हम कठोर हैं, स्त्रियाँ कठोर नहीं होतीं। औरतें माँ होती हैं, बहिन होती हैं, बेटी होती हैं, पत्नी होती हैं, जिनके हृदय में करुणा, दया एवं प्यार भरा हुआ होता है। यह समय दूसरा आ गया है। अब हमें इनसाफ को और सत्य को लेकर चलना होगा। हमारे मिशन का उद्देश्य धर्मप्रचार का तो है ही, उसके साथ ही वेइनसाफी के विरुद्ध लोहा लेना भी हमारा काम है। केवल ज्ञान-अर्जन, अनुष्ठान कराना हमारा उद्देश्य नहीं है, बल्कि दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन करना भी हमारा उद्देश्य है।

एक बार द्रोणाचार्य से लोगों ने पूछा—आप अपनी पीठ पर तीर-धनुष क्यों रखते हैं ? आप तो संत हैं, ब्राह्मण हैं। उन्होंने कहा—

अग्रे चतुरो वेदाः पृष्ठे सशरोधनुः।
इदं ब्राह्मम् इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि।।

हमारे आगे चारों वेद हैं अर्थात् जहाँ लोगों में शराफत है, वहाँ पर हम ज्ञान, अनुष्ठान, पूजा-उपासना की बात बतलाते हैं; परन्तु जहाँ भलेमानस नहीं हैं, शराफत नहीं है, वहाँ हमारे पास की दूसरी औषधि काम आती है, यानी कि हमारा धनुष और तीर काम आता है। इसके बिना काम नहीं बनता। जानवरों को हम ज्ञान से नहीं समझा सकते हैं, उसके लिए लाठी का होना आवश्यक है। इसलिए ये हम अपनी पीठ पर लिए फिरते हैं। ब्रह्मबल, क्षात्रबल दोनों हमारे पास हैं। हम शाप देने की क्षमता भी रखते हैं और तीर चलाने का साहस भी रखते हैं। बेटे, भगवान के अवतार लेने का उद्देश्य केवल धर्म की स्थापना करना तथा पापियों का विनाश करना ही नहीं है। यद्यपि इसके द्वारा ही सज्जनों की रक्षा संभव है, परन्तु भगवान का उद्देश्य महाभारत करना भी है तथा लंका का दहन करना भी है।

गुरु गोविन्दसिंह जी ने भी एक हाथ में माला तथा दूसरे में भाला का संदेश दिया था, ताकि हम लोगों को ज्ञान दें, पूजा-पाठ भी बतलाएँ, परन्तु जब दुष्ट एवं अनीति करने वाले हमारे आड़े आ जाएँ, तो उनको भी हम रास्ता दिखा सकें। मित्रो, हमारा मिशन भी इसी तरह के दो उद्देश्यों पर आधारित है। आप जहाँ भी जाएँ भगवान राम का चरित्र सुनाएँ। उनका भाई-भाई का प्रेम, माँ-बाप के प्रति सद्भावना के साथ यह भी बताएँ कि रामचन्द्र जी ने खर-दूषण और मारीचि को मारा था ताकि अभद्रता न पनप सके, अराजकता न रह सके। उस समय के राक्षस मनुष्य के रूप में विद्यमान थे। वे दिखायी पड़ते थे। आज के राक्षस हैं तो विशाल, किन्तु दिखाई नहीं पड़ते। जो दिखाई पड़े, उनका तो इन्तजाम शीघ्र कर सकते हैं, परन्तु न दिखायी पड़ने वालों को मारने में विलम्ब होता है। हमारे जमाने के राक्षस मलेरिया की तरह, आँखों के फ्लू की तरह हैं। यों मूढ़-मान्यताओं, अज्ञानता, कुरीतियों और प्रथा-परम्पराओं के रूप में वे हमारे समाज में भयंकर रूप से फैले हुए हैं। इन्हें दूर करना होगा। आपको दिखायी नहीं पड़ता ? आज स्त्री-पुरुष के बीच की बुराइयाँ किस कदर बढ़ रही हैं ? पचास प्रतिशत जनसंख्या लकवा से पीड़ित है। हम भारत में साठ करोड़ हिन्दू हैं, फिर भी तीस करोड़ महिलाएँ बंगलादेश से आये शरणार्थियों की तरह हैं। वे कोई काम नहीं कर सकतीं, अपनी सुरक्षा नहीं कर सकतीं, अस्पताल नहीं जा सकतीं, बाजार नहीं जा सकतीं, जेठ-देवर के अत्याचार के विरुद्ध कोर्ट में याचिका दायर नहीं कर सकतीं, अपने पति की सहायता भी नहीं कर सकती हैं, क्योंकि हमने इनके हाथ-पाँव तोड़कर लकवा के मरीज की तरह अपंग बनाकर रख दिया है। आजकल अपने देश में एक गिरोह सक्रिय है, जो छोटे-छोटे बच्चों के हाथ-पाँव तोड़-मरोड़ कर उन्हें अपंग बना देते हैं और उनसे भीख माँगने का काम कराते हैं। इस तरह का उनका व्यापार शहरों में चलता है। हमने भी स्त्रियों को इसी श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है। वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समाज के ऊपर भार बनकर रह गयी हैं। हमें भारतीय स्त्रियों की हिमायत के लिए खड़ा होना होगा। उनकी सहायता करके इस समस्या के समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे।

बेटे, जिस काम के लिए आपको क्षेत्रों में भेज रहे हैं, उसमें केवल पूजा-पाठ, अनुष्ठान बतलाना ही नहीं है, बल्कि इनसान को इनसान बनाना है। उनके अन्दर की दैवी शक्तियों का जागरण करना है। भगवान का सवा लाख नाम जप लेने से पैसा, औलाद, नौकरी मिलेगी, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। भगवान नाम के भूखे नहीं हैं। राम, हनुमान, गायत्री माता का पूजा-पाठ, अनुष्ठान करने का एक ही मकसद है, वह यह कि इनसाफ, ईमान, न्याय और शराफत को जिन्दा करना। अच्छा इनसान बनना। भगवान का नाम, कुम्भकरण की तरह सोयी हुई शक्तियों को जाग्रत करता है। गायत्री माता का स्मरण करने से मतलब विवेक का जागरण करना है। वह हंस के ऊपर नहीं, आपके ऊपर सवार है। हमने आपको यहाँ जप-अनुष्ठान के लिए बुलाया था ताकि आपके अंदर वाला भलामानस तथा शराफत जिंदा हो जाए। फिर आपको धर्मचेतना जगाने हेतु क्षेत्रों में भेज सकें। वहाँ उन लोगों के बीच अंधकार दूर कीजिए तथा प्रकाश को पैदा कीजिए। धर्म को फैलाने के लिए अधर्म को समाप्त कीजिए। दोनों एक साथ नहीं जी सकते, एक को तो मरना ही होगा। नहीं साहब इनसाफ भी जियेगा और बेइनसाफी भी ! बेटे ऐसा सम्भव नहीं है। एक म्यान में एक ही तलवार रह सकती है। इस समाज में या तो सत्य जियेगा या झूठ। धर्म के अन्तर्गत जो अंधकार है, उसे निकालने का प्रयास कीजिए। साथ ही हमें पचास प्रतिशत लोगों को, मरी हुई नारी जाति को फिर से जिन्दा करना है, उन्हें सही मार्ग दिखाना है, उनके जिन मानवीय अधिकारों का हनन हुआ है, उन्हें दिलाकर समाज में पुनः उनको प्रतिष्ठा दिलानी होगी।

मित्रो ! आपके मिशन ने पुनः नये सिरे से महिला जाग्रति अभियान शुरू किया है। यह न तो आंदोलन है और न ही अभियान। यह एक ऐसी क्रान्ति है, जिसमें हमें इनसान के अधिकारों की हिमायत करनी है, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, गोरा हो या काला। अगर वह नहीं माँगता है तो हमें उसे प्रेरणा देनी होगी ताकि वह अपने अधिकार माँग सके। हमारे कहने का मतलब यह कि जो चीजें गलत हैं, उनके विरुद्ध आपको लोहा लेना चाहिए। मर्दों को मजबूर करें कि स्त्रियों के पक्ष में वे अपना दृष्टिकोण साफ रखें और उनके बंधनों को तोड़ने के लिए आगे आएँ। पाप जिसने किया है, उसका प्रायश्चित उनको ही करना चाहिए। स्त्रियों को दयनीय स्थिति में डालने का कार्य मर्दों ने किया है, तो उनको ही प्रायश्चित करने की आवश्यकता है। स्त्रियों के साथ जो बेइनसाफी हुई है, उसका इतिहास एक हजार वर्षों से ज्यादा का नहीं है। इसे दूर करने के लिए ही हम आपको क्षेत्रों में भेज रहे हैं। कमजोरों की हिमायत में एक काम यह भी है कि जानवरों के ज्यादा वजन ढोने, उन्हें काटकर खा जाने जैसे कार्यों का हम विरोध करें।

जवाहर लाल नेहरू को क्या कमी थी ? वे मोतीलाल नेहरू के बेटे थे, आनन्द भवन में आनन्द एवं मौज का जीवन जी रहे थे। उन्होंने जब महसूस किया कि भारत के लोगों को आजादी मिलनी चाहिए और जो पीड़ित हैं, पददलित हैं, जिनको नागरिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया है उनकी हिमायत, उनकी पीठ पर हाथ रखना चाहिए। तब वे सारे सुख छोड़कर स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़े। यह मिशन लम्बे समय से नारी-उत्कर्ष के लिए प्रयत्न कर रहा है। अब आपको भी इसे आगे बढ़ाने में मदद करनी होगी। इसमें आपको क्या-क्या करना पड़ेगा, ये कुछ कार्य हम बताते हैं—

'१. जनसाधारण के मन में यह धारणा बिठानी होगी कि स्त्रियाँ भी सामान्य नागरिक हैं। उन्हें गुलाम, अंधी, लँगड़ी बनाकर रखने में हमें कोई फायदा नहीं है। आप गाय, बैल को ज्यादा मजबूत बनाएँगे तो ज्यादा फायदा होगा। अतः अपनी बहिन, माँ, पत्नी और बेटी को शिक्षित, योग्य एवं मजबूत बनाएँगे तभी वे आपका सहयोग हर कार्य में कर सकती हैं।

२. विवाह-शादियों में दहेज प्रथा को हटाना होगा। शिक्षा का विकास करना होगा और घर की अर्थव्यवस्था को ठीक करना होगा। उन कसाइयों को भी ठीक करना होगा, जो कि दहेज के नाम पर लड़कियों का जीवन बर्बाद कर देते हैं। इसके कारण हर आदमी को बेईमान और गरीब बनना पड़ता है। हमारे देश में इतना ही लोगों के पास है कि वे किसी तरह अपना और बच्चों का पेट भर सकें, तन ढक सकें। हमारा देश अमीरों का देश नहीं है। यहाँ बच्चों को पढ़ाना भी एक समस्या है। उन्हें अपने खर्च में कटौती करनी पड़ती है। दहेज के लिए खेत, मकान बेचना पड़ जाता है। इसके कारण पूरे के पूरे समाज के लोग अनाचार एवं अत्याचार में लगे हुए हैं, अगर इससे लोहा नहीं लेंगे तो स्त्रियाँ भारभूत और अपमानित होती चली जाएँगी। उनकी हत्या होती रहेगी। उन्हें कलंकित करके घर से निकाल दिया जाएगा। घर वाले पुनः दहेज लेकर दूसरी शादी की तैयारी कर रहे होंगे। इसके लिए आपको वातावरण तैयार करना चाहिए। यह धर्म है और यही धर्म का प्रचार। धर्म का मतलब केवल भागवत् की कथा सुनाना नहीं, बल्कि धर्म वह है जिससे इनसानियत की, कर्त्तव्यों की प्रेरणा मिले। लकीर पीटना धर्म नहीं है। गीता-पाठ का तात्पर्य उसकी शिक्षा, प्रेरणा ग्रहण करना है।

मित्रो ! आपको मालूम नहीं है कि हमने अपनी जिंदगी का आखिरी वाला हिस्सा इस काम के लिए रखा है, जिसके लिए हमें वहाँ से भेजा गया था। सारी जिंदगी भर हमने धर्म एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार किया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लोगों को जाग्रत किया। अब नारी जागरण के अध्याय को हम यहाँ से शुरू करते हैं। फाल्गुन के महीने में होली जलाई जाती है। उसमें से प्रत्येक घर के लोग थोड़ी-थोड़ी अग्नि ले जाते हैं और अपने-अपने घरों में होली जलाते हैं। उसे हमारे यहाँ घर-होली कहते हैं। उसमें चावल, जौ, आलू पकाते हैं। इसकी खास बात यह है कि उसके लिए अग्नि बड़ी होली से ही लाते हैं। ठीक उसी प्रकार हम आज शांतिकुंज से बड़ी होली जलाते हैं और यहाँ की चिनगारी आप एवं हम हर जगह बिखेरने का प्रयास करेंगे। हम यहाँ पर लड़कियों को बुलाकर उन्हें प्रशिक्षित करते हैं, प्रेरणा देते हैं कि आप इनसान के तरीके से जीना और इनसानियत अपने अंदर जीवित रखना। अनीति के विरुद्ध संघर्ष करना। माँ, सास, बहिन, ननद, बेटी का सम्मान एवं प्यार करना। ईमान एवं कर्त्तव्य से प्यार करना। हम महिलाओं को इस तरह का बनाएँगे कि वे यहाँ से जाकर घरों में स्वर्ग का वातावरण बना सकें। हम परिवार-संस्था को जिन्दा करेंगे। आज लोगों ने व्यक्ति एवं समाज के विकास के लिए तो सोचा है, परन्तु परिवार के लिए नहीं सोचा। वास्तव में यही वह कड़ी है, जो दोनों को जिंदा करती है। इसे हम जाग्रत करेंगे। यह खदान है, इसी में से नर-रत्न निकलते हैं। बिनोवा की माँ ने तीन बच्चे पैदा किये—बिनोवा, बिठोबा और बालकोवा तीनों को संत और ब्रह्मज्ञानी बनाया। उन्होंने जिंदगी भर ब्रह्मचर्य से रहते हुए गाँधीजी का कार्य किया। ये परिवार रूपी गुरुकुल में ही पढ़े थे, अगर इसे जाग्रत नहीं किया जा सका तो न तो इसमें व्यक्ति पैदा होगा और न समाज बनेगा। यह गृहस्थ योग है, यह योगाभ्यास है। इस आश्रम के रूप में घर को विकसित करना चाहते हैं। इसकी प्राचार्या होनी चाहिए गृहलक्ष्मी। वह घर की प्रिंसिपल, वाइस चांसलर हो सकती है। गृहिणी का नाम घर है, घर का नाम गृहिणी है **"गृहिणी गृह उच्यते।"**

इसके लिए हमें नारी को सुयोग्य बनाने से न केवल पति, बच्चे को लाभ होगा, बल्कि समाज, राष्ट्र को भी लाभ होगा। अगर देश का प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति ठीक नहीं होगा तो देश कैसे ठीक चलेगा ? इसलिए आप यह प्रबल कीजिए कि अपनी कन्याओं को यहाँ पढ़ने के लिए भेजें। हम यहाँ वास्तविक होमसाइंस पढ़ाएँगे, सर्वगुण सम्पन्न बनाएँगे। उन्हें यह भी बतलाएँगे कि घर की संस्था का विकास कैसे करना चाहिए ? आप एक बात का ध्यान रखें कि योग्य कन्याएँ और महिलाएँ ही यहाँ भेजें। बेकार की गूँगी, बहरी, बच्चे वाली, बिना बच्चे वाली, मनोकामना वाली न आएँ। हमें तो प्रतिभाशाली कन्याओं एवं महिलाओं की आवश्यकता है। जिनमें जीवट हों, जो यहाँ से जाने के बाद आग लगा सकें। बेटे, अच्छा तो सब लोग अपने घर रख लेते हैं और फालतू, बेकार को हमारे पास भेज देते हैं। आज लोग पूजा वाली सुपारी दुकान से लाते हैं, वह सड़ी वाली। हमें ऐसा नहीं चाहिए। अच्छे लोग भेजें। गायत्री परिवार के लोगों में, बाहर के लोगों में ऐसी कन्याएँ एवं महिलाएँ हों, जो अपनी संस्था की प्रिंसिपल हो सकती हों, वाइस चांसलर हो सकती हों, जिनमें प्रतिभा हो, उन्हें एक वर्ष एवं तीन-तीन महीने के लिए यहाँ भेजना। हमारी यह आग, यह चिनगारी भारतवर्ष में सब जगह पहुँचा देना।

यहाँ जो कन्याएँ हैं, उनको हमने तैयार किया है। वे इस वर्ष महिला सम्मेलन के माध्यम से पूरे भारतवर्ष में धूम मचाएँगी। हर गाँव-गाँव की महिलाओं, कन्याओं को यहाँ लाना कैसे संभव हो सकता है ? आगे चलकर हम यह प्रयास करेंगे कि पढ़ी-लिखी महिलाएँ, कन्याएँ क्षेत्र से ही निकालें तथा भारतवर्ष के हर गाँव में भेजें। आपको मालूम है कि महिलाएँ भारतवर्ष की पढ़ी-लिखी नहीं हैं। उनसे साहित्य के माध्यम से ज्यादा काम नहीं ले सकते। अतः हम उन्हें गीत, प्रवचन, कथा के माध्यम से प्रेरणा देंगे ताकि वे साप्ताहिक सत्संग, हवन, संस्कार आदि करा सकें, गोष्ठी कर सकें। इसके लिए हम हर जगह महिला शाखा का गठन करेंगे। अतः आपके यहाँ भी शाखा गठन करने का प्रयास करेंगे। महिलाओं में, कन्याओं में भी हमने वह आग भर दी है जो हमारे अन्दर है। ये छोटी हैं तो क्या बात है, शुकदेव जी भी तो छोटे थे। आप शाखा गठन करना, महिला जागरण के कार्यक्रम करने का प्रयास करना, कुछ तो हम यहाँ से भेजेंगे। महिला जाग्रति, महिला क्रान्ति के लिए आपको एवं हमको नए सिरे से प्रयास करना चाहिए।

मित्रो ! आपको भी पचास प्रतिशत मूर्छित पड़ी स्त्रियों के लिए लक्ष्मण जी की तरह संजीवनी बूटी लाकर देनी होगी। मरी हुई मातृशक्ति को जिंदा करने के लिए आपको हनुमान की तरह से काम करना होगा। अगर आप ऐसा करने में सफल हो जाएँगे तो हम लोग भारत में नये तीस करोड़ व्यक्ति पैदा कर सकते हैं। भारत का विकास कर सकते हैं। इस प्रकार तीस करोड़ जिंदा आदमी की जगह साठ करोड़ हो जाएँगे। हम चाहते हैं कि भारत में एक सौ बीस करोड़ हाथ, एक सौ बीस करोड़ पैर काम करें। साठ करोड़ दिमाग, साठ करोड़ दिल काम करें। हम देश की समृद्धि को बढ़ाना चाहते हैं। हम भावनात्मक शक्ति को बढ़ाना चाहते हैं। इस चेतनात्मक शक्ति को बढ़ाए बिना हमारी प्राचीन संस्कृति की खोयी हुई गरिमा को वापस लाने का कोई दूसरा उपाय नहीं है। आप कदम से कदम मिलाइए और कंधे से कंधा मिलाकर हमारे साथ चलिए। आप हमारी अँगुलियाँ हैं। हम अकेले कुछ काम नहीं कर सकते हैं। आप हमारी अँगुलियाँ बन जाइए, ताकि हम और आप बढ़-चढ़कर महिला-जागरण का कार्य कर सकें और महाकाल की योजना को सफल बना सकें। आज की बात समाप्त।

ॐ शांति।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मतंत्र की गरिमा एवं महत्ता

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

आज भगवान् महावीर का और रामभक्त हनुमान का जन्मदिन है। जैन धर्म के प्रथम संस्थापक भगवान् महावीर का यह जन्म-दिवस है और आज ही हनुमान जी का भी है। भगवान् भक्त हनुमान भी आज ही जन्मे थे। वे हमारे प्रेरणा के स्रोत हैं। आज का दिन कितना शुभ है ? भगवान् महावीर राजकुमार थे। उन्होंने सोचा कि राजकुमार होने की अपेक्षा संत होना अच्छा है, अतः हमें संत बनकर जीना चाहिए, क्योंकि राजकुमार की—राजा की शक्ति की अपेक्षा संत की शक्ति बड़ी है। संत समाज की जो सेवा कर सकता है, वह राजा नहीं कर सकता। यह विचार करने के बाद उन्होंने बुद्ध भगवान् की तरह अपना राजपाट छोड़ दिया और तपश्चर्या में निमग्न हो गये। यद्यपि वे चाहते तो राजसत्ता के माध्यम से समाज की सेवा कर सकते थे, लेकिन उन्होंने देखा कि राजसत्ता का दायरा बहुत सीमित है—बड़ा क्षुद्र है। धर्मतंत्र की शक्ति राजतंत्र की तुलना में असंख्य गुनी अधिक है। राजसत्ता केवल भौतिक जीवन पर प्रभाव डाल सकती है, लेकिन हमारे अन्तःजीवन में प्रवेश नहीं कर सकती।

साथियो, हृदय-हृदय पर शासन किसका होता है ? हृदय-हृदय पर शासन धर्मतंत्र का था, है और रहेगा। भौतिक वस्तुओं पर शासन सरकार का रहेगा और सरकार का था। बहुत दिन पहले की बात है, जब हमने राजनीति त्याग करके धर्मतंत्र में प्रवेश किया था। इसके पहले काँग्रेस आन्दोलन में जब तक रहा, तब बार-बार जेल जाता रहा। इसके पश्चात् जब इसको छोड़ा और धर्मतंत्र की ओर बढ़ा, तब लोगों ने बार-बार यही कहा कि राजसत्ता में जो आदमी होता है, वह मिनिस्टर बन जाता है और उसके पास मोटरें होती हैं और दुनिया उसका कहना मानती है। दुनिया में उसकी इज्जत होती है। तब मैंने कहा था कि मैं यह तो नहीं कहता कि राजसत्ता में कोई बुराई है और वह समाज की कोई सेवा नहीं कर सकती, लेकिन मैं यह अवश्य कहता हूँ कि राजसत्ता सीमित है सीमाबद्ध है। इसमें व्यक्ति किसी प्रान्त का मिनिस्टर हो सकता है और उसी प्रान्त के लोगों को प्रभावित कर सकता है। दक्षिण भारत का मुख्यमंत्री कौन है जरा बताइये ? अगर वह मंत्री आए और आपके ऊपर प्रभाव डाले तो क्या कोई प्रभाव पड़ सकता है ? नहीं, कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। लेकिन दक्षिण भारत के रहने वाले केरल निवासी जगत्गुरु शंकराचार्य केरल को छोड़कर जब बाहर निकल गये और सारे हिन्दुस्तान में काम करते चले गये, चारों धाम की स्थापना करते चले गये, तो सारा देश उनके चरणों में नतमस्तक हो गया। यह धर्म की शक्ति का द्योतक है। अभी भी लोग हमसे बार-बार पूछते हैं कि आप राजसत्ता से दूर क्यों हैं ? बेटे राजसत्ता से राजतंत्र से उसके घपलों से हमारा कोई ताल्लुक नहीं है। हम उन लोगों में से हैं, जो यह जानते हैं कि मनुष्य के जीवन में राजनीति का क्या स्थान है ?

राजनीति और आदमी अब जुड़ गया है। तिब्बत के दलाई लामा को राजनीति के कारण तिब्बत छोड़कर भाग जाना पड़ा। भगवान् बुद्ध का जन्म-स्थान था तिब्बत जहाँ से पैदा होने के बाद बुद्धावतार न जाने कहाँ से कहाँ चला गया ? चीन में न जाने क्या से क्या हो गया ? कभी चीन में बौद्ध धर्म इतना फैला हुआ था कि हिन्दुस्तान से भी अधिक बौद्ध लोग चाइना में रहते थे। वहाँ अभी भी बौद्ध विहारों के खण्डहर बहुत ज्यादा हैं। चीन की लाइब्रेरियों में बौद्ध धर्म की इतनी अधिक पुस्तकें हैं कि दुनिया में और कहीं भी नहीं है। लेकिन क्या हो गया ? चाइना से बौद्ध धर्म का सफाया हो गया। वहाँ अब कोई धर्म नहीं है—न हिन्दू धर्म है, न मुसलमान धर्म है, न ईसाई धर्म है सब धर्म साफ हो गये। ऐसा इसलिए हो गया क्योंकि धर्मतंत्र अपनी गरिमा को क्षमता को भूल गया। राजसत्ता की शक्ति कितनी बड़ी है और वह क्या कर सकती है ? इसे देखना हो तो जर्मनी में पिछले दिनों हिटलर की शासन सत्ता को देख सकते हैं। उसने सारी की सारी शिक्षा प्रणाली को बदलकर रख दिया था और थोड़े ही दिनों में सारे देश को नाजी बना दिया था। राजसत्ता की शक्ति बड़ी जबर्दस्त है, इससे मैं इनकार नहीं करता हूँ, पर मैं यह कहता हूँ कि राजसत्ता को अच्छा बनाने के लिए ऊपर से काम करना ही काफी नहीं है। राजसत्ता की जड़ें जमीन में होनी चाहिए। आप ऊपर से देखभाल करेंगे, डालियों को झाड़ेंगे, पत्तों को साफ करेंगे, लेकिन जड़ों की ओर ध्यान नहीं देंगे तो पेड़ के चरमराकर गिर जाने का अंदेशा बना ही रहेगा। फिर बाग किस तरीके से बनेगा ? यह काम केवल धर्मतंत्र कर सकता है। असली शक्ति-क्षमता धर्मतंत्र के हाथों में है। राजतंत्र केवल कानून बना सकता है, लोगों को रोक सकता है, लोगों को गिरफ्तार कर सकता है, लेकिन सारे देश में विद्यमान मुख्य समस्याओं को हल नहीं कर सकता।

कल मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि कोई भी काम केवल कानून बना देने से पूरा नहीं हो सकता। कोई भी बुरा काम ऐसा नहीं है दुनिया में, जिसके खिलाफ गवर्नमेण्ट ने कानून न बनाये हों और जेलखाने न बनाये हों, पुलिस न हो। पर बताइये कौन-से कानून से कौन-सा पाप रुक गया ? भ्रष्टाचार रुक गया ? रिश्वतखोरी रुक गयी ? मिलावट रुक गया। बताइये एक भी पाप रुक गया हो तो जबकि सारे के सारे कानून बने हुए हैं। कानून इनसान के ऊपर हुकूमत नहीं कर सकता और इनसान की इच्छाएँ नहीं बदल सकता। इनसान की इच्छाएँ बदलने की शक्ति धर्मतंत्र में है। राजतंत्र की अपेक्षा धर्मतंत्र बड़ा है। धर्मतंत्र की शक्ति का ठिकाना नहीं। उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ताकत बड़ी है, प्रभाव बड़ा है, अतः समस्याओं के समाधान में भी वही सफल हो सकता है। धर्मतंत्र के बिना मनुष्य के ऊपर और कोई अंकुश नहीं रख सकता। समाज के ऊपर जब कभी अंकुश रखा जाएगा तो धर्म के द्वारा-भगवान के द्वारा रखा जाएगा। धर्म के अलावा और कोई अंकुश ऐसा नहीं है, जिससे मनुष्य को काबू में रखा जा सके और सही राह पर चलाया जा सके। समाजशास्त्र के कायदे-कानून चाहे जितने बनाइये, लेकिन कायदे और कानून बनाने के बाद में भी ऊँचे से ऊँचे आदमी भी गलत काम करते पाये और देखे गये हैं। कितने ही उच्चपदस्थ लोगों ने अपने-अपने देशों की मिट्टी पलीद कर दी है, यह किसी से छिपा नहीं है। कानूनों के नाम पर चाहे जो कुछ करते रहिये, कोई रोक-टोक नहीं है। अतः इससे कोई गारंटी नहीं कि कानून से अच्छे मनुष्य बन सकते हैं। अच्छे और शिष्ट मनुष्य जब कभी भी बनेंगे तो धर्मसत्ता के माध्यम से बनेंगे। राजसत्ता जनता के हृदय पर शासन नहीं कर सकती। जनता के हृदय के ऊपर शासन करने की क्षमता केवल धर्मतंत्र में है वही करेगा।

तो क्या करना पड़ेगा मित्रो ! राजनीति को परिपुष्ट बनाने के लिए और राजनीति को सही बनाने के लिए हमको एक काम करना पड़ेगा जो गाँधी जी ने हमको सलाह दी थी। गाँधी जी ने कहा था कि हमको—काँग्रेस संस्था को लोकसंस्था के रूप में बदल जाना चाहिए और राजनीति के काम और किसी के सुपुर्द कर देना चाहिए, ताकि उस पर अंकुश रखा जाए। हमको लोकशक्ति के रूप में जिसमें काँग्रेस का उदय हुआ था, उसी रूप में माना और जाना चाहिए। असली राजनीति की जड़ जमीन में है, जनता के पास में है। जनता को प्रभावशाली बना नहीं सके, जनता में उत्साह भर नहीं सके, जनता को नागरिकता की बात समझा नहीं सके, जनता को यह समझा नहीं सके कि क्रियाशीलता क्या होती है, इसका परिणाम यह हुआ कि जैसी हमारी जनता वैसी ही हमारी सरकार बनती चली आयी। दूध जैसा होगा मक्खन भी तो वैसा ही बनेगा, मलाई भी तो वैसी ही आयेगी। जनता का स्तर, जनता के विचार करने का क्रम, जनता का चरित्र जैसा जो कुछ भी होगा, गवर्नमेण्ट भी वैसी ही बनती हुई चली जाएगी। गवर्नमेण्ट को आप बदलना चाहें तो पहले जनता को बदलना पड़ता है। जनता जब बदल जाती है तो गवर्नमेण्ट बदल जाती है। उसकी इच्छा बदल जाती है, स्वरूप बदल जाता है।

गवर्नमेण्ट बनाने की जिम्मेदारी किसकी है ? आपकी और हमारी। पाँच वर्ष बाद हमको यह अधिकार मिलता है कि हम किस तरीके से हुकूमत बदल सकते हैं और कैसे शासन बदल सकते हैं। अगर हमारे पास ईमानदारी न हो और हम कर्तव्यों को समझते न हों, हमको अपने हित का ध्यान न हो, ज्ञान न हो, नागरिक कर्तव्यों-अधिकारों का अनुभव न हो, तो क्या होगा कि जब कभी भी वोट देने का वक्त आयेगा तो इस बात की जिम्मेदारी का अनुभव हम नहीं करेंगे कि कहाँ और किसको वोट देना चाहिए और किसे नहीं देना चाहिए ? तब हम क्या करेंगे ? तब हम सिर्फ यही करेंगे कि जहाँ हमारा स्वार्थ प्रेरित करेगा, जो कोई आदमी जीप में बैठाकर ले जाएगा, जो कोई भी हमको मिठाई खिला देगा, शराब पिलाएगा, उसी आदमी को हम वोट देते चले जाएँगे। वोट देने का यदि हमारा यही क्रम रहा तो मैं यह पूछता हूँ कि फिर हमको अच्छी गवर्नमेण्ट सरकार कैसे मिल सकती है ? अच्छी सरकार कभी नहीं मिल सकती। अगर यही क्रम बना रहा और जनता अपने नागरिक कर्तव्यों को नहीं समझती, नागरिक जिम्मेदारियों को नहीं समझती तो फिर यही होगा कि जो कोई व्यक्ति या पार्टी अमुक लोभ दिखाएगा, कोई पैसा दिखाएगा, कोई भय दिखाएगा, कोई जाति-विरादरी की बातें कहेगा, कोई क्या कहेगा ? कोई क्या कहेगा ? उसी को समर्थन मिलता जाएगा। इस तरीके से क्या होता जाएगा कि जिस आदमी के अन्दर देश-भक्ति और नागरिक कर्तव्यों का उदय नहीं हुआ और उसे इस बात की जिम्मेदारी एवं जानकारी भी नहीं है कि वोट के नाम पर राष्ट्र की हुकूमत हमारे हाथ में सौंप दी गयी है, वह अपनी जिम्मेदारियों को कैसे निभा सकता है ? अच्छी राजनीति चलाने और अच्छी गवर्नमेण्ट बनाने के लिए शासन-सत्ता में अच्छे व्यक्ति पहुँचने चाहिए। अच्छे व्यक्ति शासन में भेजने के लिए वोटों के इस्तेमाल का स्तर भी ऊँचा उठना चाहिए। क्रियापद्धति भी यही है। अच्छा देश और अच्छी राजनीति बनाने के लिए अगर हम जनता का चरित्र अच्छा नहीं बना सकते तो फिर यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिए कि देश को अच्छी गवर्नमेण्ट मिल सकती है। अगर आप रिश्वत लेकर वोट दे सकते हैं, तो फिर आपको क्यों उम्मीद करनी चाहिए कि अच्छी सरकार मिल जाएगी। फिर तो यही समझना चाहिए कि जो बीज आपने बोये हैं वही काटना पड़ेगा।

लोग हमसे बार-बार यही पूछते हैं कि आप राजनीति में क्यों नहीं जाते ? मित्रो ! हम राजनीति से अलग नहीं है, किन्तु हमारी राजनीति वह राजनीति नहीं है जो सत्ता हथियाने वाली होती है। सत्ता हथियाने के बाद कोई भी आदमी बड़ा काम नहीं कर सकता, अगर जनता उसका साथ देने को तैयार न हो तब। जनता का साथ देने वाला पक्ष बहुत बड़ा पक्ष है और इस बड़े पक्ष की ओर आज तक किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। हर आदमी का ध्यान केवल इस ओर गया कि अमुक आदमी को मिनिस्टर, अमुक आदमी की गवर्नमेण्ट बनाएँगे। आप किसी भी पार्टी की गवर्नमेण्ट बना दीजिये, किसी को मिनिस्टर बना दीजिए, उससे किसी का कुछ बनने वाला नहीं है। आपका काम तो जनता से बनेगा। बनना तो जनता को है, उठना तो जनता को है। जनता को अपने कर्तव्यों और अधिकारों का अगर हम बोध नहीं करा सके तो फिर कोई भी पार्टी चुन लीजिये, किसी का कुछ भला नहीं होने वाला है। कोई पार्टी ईमानदार तभी हो सकती है जब जनता ईमानदार होगी। तब गलत काम करने वाला कोई भी मिनिस्टर या अधिकारी क्यों न हो, जनता उसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गलत काम करने से रोक देगी और यह कहेगी कि आपको गलत काम नहीं करना चाहिए। अगर जनता कमजोर है और अपने अधिकारों, नागरिक कर्तव्यों का ज्ञान उसे नहीं है तो फिर जो कोई भी पार्टी आएगी, जो कुछ करेगी, जनता मूकदर्शक बनी देखती और उसके दुष्परिणामों को भुगतती रहेगी। जनता को कैसें बहकाया जा सकता है, कैसे पैसा लिया जा सकता है और किस तरीके से उलटी पट्टी पढ़ाई जा सकती है ? वह सब कुछ होता रहेगा। यदि जनता समझदार और जागरूक है तो फिर इन चालाकियों की बारीकी को वह समझ जाएगी और नेताओं के मनसूबों पर पानी फेर देगी।

मित्रो ! वास्तविक शक्ति जनता के हाथ में है। जनता से बड़ा दैत्य, जनता से बड़ा राक्षस, जनता से बड़ा जालिम, जनता से बड़ा शक्तिशाली और कोई नहीं है। जनता के पास जो शक्ति है वह और किसी के पास नहीं है। वह चाहे जिसे शासन के शीर्ष पर बिठा दे और चाहे तो धूल में मिला दे। जनता के साहस से हमने आजादी की लड़ाई जीती। जनता के साहस से हमने गवर्नमेंट बनाया और काँग्रेस पार्टी को शासन पर बिठा दिया। शक्ति किसकी रही ? गाँधी जी की ? नहीं, गाँधी जी की नहीं, जनता की रही। हुकूमत की शक्ति जब-जब होगी जनता की होगी। किन्तु हमारे कर्तव्य क्या हैं, अधिकार क्या हैं और जनता को कैसा होना चाहिए, जब तक यह समझ विकसित नहीं होती, तब तक प्रयास सफल नहीं हो सकते। अभी तक लोगों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। ध्यान गया है तो केवल इतना कि गवर्नमेंट इस तरीके से बना देना चाहिए, पार्टी इस तरीके से बना देना चाहिए, हुकूमत इस तरीके से चलाना चाहिए, संविधान इस तरह से बना देने चाहिए और कानून ऐसे बना देने चाहिए। इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए, उस बात पर ध्यान देना चाहिए। मित्रो ! असली बात यह नहीं है, असली बात वह है जो जनता से ताल्लुक रखती है। जनता जहाँ जिस तरीके की होगी, वहाँ उसी तरीके की चीजें बनती चली जाएँगी। जहाँ जनता की मनोदशा अच्छी नहीं है, जहाँ जनता को अपने नागरिक कर्तव्यों और नागरिक जिम्मेदारियों का ज्ञान नहीं है, वहाँ अच्छी गवर्नमेण्ट नहीं हो सकती।

नागरिक कर्तव्यों, जिम्मेदारियों को समझना, प्रत्येक नागरिक को उसके अधिकारों का बोध कराना, दूसरों के कष्ट-कठिनाइयों में भागीदार बनाना और उन्हें राष्ट्रीय दायित्वों को समझाने की जिम्मेदारी किसकी है ? साथियो, यह धर्म की जिम्मेदारी है, यह हमारी जिम्मेदारी है और आपकी जिम्मेदारी है कि हम हर आदमी को वह काम करना सिखाएँ, जिससे एक अच्छे राष्ट्र का विकास हो सकता है। कानून इस काम को नहीं कर सकता, जनता इस काम को करेगी। जनता का ईमान जब जाग्रत होगा तब लोगों को यह भय होगा और दुःख भी होगा कि हम मसाले में मिलावट करेंगे तो जो खरीदकर उसे खाएगा, पेट में पथरी हो जाएगी। जो आदमी बीमार पड़ा हुआ है और अगर वह मिलावट वाला दूध पियेगा तो उसके जीवन-मरण का प्रश्न पैदा हो जाएगा। जब ये बातें हमारे दिमाग में आएँगी, अंतःकरण में आएँगी, विचारों में आएँगी दूध में पानी और मिर्च-मसालों में मिट्टी व अनाज में कंकड़ मिलाना बंद कर देंगे। क्या इसे सरकार बंद कर सकती है ? नहीं, सरकार नए-नए कायदे-कानून और नीतियाँ बनाती चली जाएगी और लोग अपने बचाव के लिए नए-नए तरीके ईजाद करते चले जाएँगे। अच्छा राष्ट्र बनाने के लिए जनता को अच्छा बनाया जाना नितान्त आवश्यक है। अच्छी जनता वह नहीं है, जो सम्पन्न होती है, मालदार होती है, वरन् अच्छी जनता वह है जो अपने फर्ज को समझती है, अपने कर्तव्यों को समझती है और अपनी जिम्मेदारी को समझती है। फर्ज, कर्त्तव्य और जिम्मेदारियों को समझना-यही, मित्रो ! धर्म का उद्देश्य है यही अध्यात्म का उद्देश्य है।

धर्म और अध्यात्म का उद्देश्य बहुत लोगों ने समझा और समझाया है, पर खाली उद्देश्य के बारे में मेरी कोई गम्भीर निष्ठा नहीं है। जब लोगों को खाली उद्देश्य समझाये जाते हैं कि मरने के बाद हम कौन-से लोक में चले जाते हैं और वह लोक किस तरह के हैं ? स्वर्ग कहाँ है ? स्वर्ग की लम्बाई, चौड़ाई कितनी है ? हमको नहीं मालूम। हमको तो जिन्दगी की जानकारी है, जमीन की जानकारी है। हमको जमीन की जिम्मेदारी जाननी चाहिए, अपने कर्त्तव्यों को जानना चाहिए। भगवान महावीर जिनका कि आज जन्म-दिन है, उन्होंने यही समझा और लोगों को समझाया। उन्होंने यह जान लिया था कि राजसत्ता की अपेक्षा धर्मसत्ता की शक्ति अपार है और इसे ही उन्होंने अंगीकार किया। धर्मसत्ता लोगों के दिलों पर हुकूमत करती है और राजसत्ता जमीनों पर हुकूमत करती है, पैसे पर हुकूमत करती है, किलों पर हुकूमत करती है, व्यापार पर हुकूमत करती है और चीजों पर हुकूमत करती है, परन्तु दिलों पर हुकूमत नहीं कर सकती। दिलों पर हुकूमत करने की क्षमता केवल धर्म में है। इसलिए भगवान महावीर ने यही किया और राजसत्ता को त्याग दिया। राजसत्ता त्यागने के पश्चात् उन्होंने धर्मसत्ता को सँभाला और जगह-जगह घूम करके धर्म की बात, अध्यात्म की बात, ईमानदारी की बात, नेकी की बात, शराफत की बात, कर्त्तव्य की बात लोगों को समझाते चले गये। लोगों में धर्म को जानने की इच्छा पैदा कर दी। यह सबसे बड़ी सेवा थी जो भगवान महावीर ने की।

हनुमान जी जिनका कि आज जन्मदिन है, क्या वे मिनिस्टर नहीं बन सकते थे ? हाँ, वे भगवान राम की हुकूमत में मिनिस्टर बन सकते थे, उनके मंत्री बन सकते थे, लेकिन वे मिनिस्टर नहीं बने। उन्होंने कहा—इस काम के लिए तो ढेरों आदमी विद्यमान हैं, लेकिन जो मुश्किल का काम है, कठिनाई का काम है, कष्ट का काम है, त्याग का काम है, बलिदान का काम है, वह कौन करेगा ? हनुमान जी ने सेवा को सबसे बड़ा काम समझा, सत्ता को नहीं और शुरू से अंत तक उसी में निमग्न रहे,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सत्ता की अपेक्षा सेवा को जब लोग अच्छा समझने लगेंगे तब मजा आ जाएगा और हमारा राष्ट्र राजनीति की दृष्टि से ही नहीं, आर्थिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से, नेकी की दृष्टि से उन्नति के शिखर पर जा पहुँचेगा और तब समस्त समस्याओं का समाधान होता हुआ चला जाएगा। हर समस्या का समाधान मित्रो ! व्यक्ति के दृष्टिकोण के साथ जुड़ा हुआ है। गवर्नमेण्ट हमारे रिश्तों को अच्छा कर देगी ? नहीं कर सकती। हमारी सेहत को गवर्नमेण्ट अच्छा नहीं कर सकती। हमारा खान-पान ठीक नहीं है, ब्रह्मचर्य के ऊपर हमारा संयम नहीं है, आहार-विहार के ऊपर हमारा संयम नहीं है, सफाई-स्वच्छता का ज्ञान हमें नहीं है, तो क्या आप समझते हैं कि किसी भी देश की जनता के स्वास्थ्य की रक्षा करने की जिम्मेदारी कोई गवर्नमेण्ट उठा सकती है। नहीं उठा सकती है। यह तो स्वयं ही समझना होगा कि हमें क्या करना चाहिए, क्या खाना चाहिए और कैसे रहना चाहिए ? अगर यह बातें समझ में आ जाएँगी तब हमारे स्वास्थ्य की समस्या का समाधान हो जाएगा। जनता के मन में यदि एक जाग्रति का भाव आ जाए कि हमें अपने प्रति, राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों को निभाना है तो फिर क्या कुछ नहीं हो सकता ? हर बात के लिए गवर्नमेण्ट से शिकायत करना या और किसी का मुख देखना मुनासिब नहीं है। कुछ काम ऐसे हैं जिन्हें हमें स्वयं करना चाहिए।

जनता की शक्ति अपने आप में सबसे बड़ी शक्ति है। जनता की इस शक्ति को हम जाग्रत करेंगे और लोगों को यह बात बताएँगे कि अपनी समस्याओं का समाधान आप स्वयं कर सकते हैं और आपको करना ही चाहिए। स्वामी केशवानन्द जी के तरीके से हम हर एक आदमी से कहेंगे कि आप अपनी शिक्षा की व्यवस्था अपने तरीके से चलाएँ तो वह अच्छे तरीके से चल सकती है। स्वामी केशवानन्द बाइस वर्ष की उम्र में संत हो गये थे और जनता की शक्ति को संगठित करने में जुट गये थे। वे गाँव-गाँव घूमकर लोगों को शिक्षित करने लगे। जगह-जगह प्राथमिक पाठशालाएँ खुलवायीं, अध्यापक नियुक्त किये। घर-घर से बच्चों को लाते और उन्हें स्कूल में दाखिल कराते। अध्यापकों की तनख्वाह की पूर्ति घर-घर से एकत्र मुट्ठी-मुट्ठी भर अनाज से की जाती। इस तरह उनके प्रयास से साढ़े तीन सौ गाँवों में स्कूल चालू हो गये और सात कॉलेज। यह किसी राजनेता का नहीं, एक संत का प्रयास था जिसने जनता को जगाकर रख दिया था।

मित्रो ! क्या करना पड़ेगा ? करना हमको वह पड़ेगा और वही महत्त्वपूर्ण काम है, जो स्वामी केशवानन्द करने में समर्थ हुए थे। अगर स्वामी केशवानन्द कलेक्टर होते तो क्या वे इतने महत्त्वपूर्ण कार्य करने में समर्थ हो सकते थे ? उन्होंने साढ़े तीन सौ गाँवों में स्कूल बना दिये, सात कॉलेज बना दिये और जनता को स्वावलम्बी बना दिया। स्कूल बनाना, कॉलेज बनाना उतनी बड़ी बात नहीं है, जितनी कि जनता की स्वावलम्बी वृत्ति को जगाना। यह सबसे बड़ी बात है। जो भी राष्ट्र कभी उठे हैं, स्वावलम्बी होकर उठे हैं, अपने बलबूते पर उठे हैं, अपनी ताकत के आधार पर उठे हैं। दुनिया में जहाँ कहीं भी तरक्की हुई है, जनता ने अपने बाजुओं के बल से की है। परायी सहायता से न तो आज तक कोई उठा है और न कभी उठेगा। इसमें गवर्नमेण्ट भी शामिल है। गवर्नमेण्ट कहाँ तक सहायता कर सकती है ? हम हर गाँव में जाएँगे, हर घर में जाएँगे और लोगों से यह कहेंगे कि समाज को ऊँचा उठाने के लिए आप सरकार का मुँह मत ताकते रहिए। आप हर रोज अपना एक घण्टा समाज के लिए दीजिए। हमारे पास २४ घण्टे होते हैं। २३ घण्टे हम अपने विभिन्न काम में लगाएँ, पर एक घण्टे का फसाना—एक घण्टे की मेहनत क्या हम समाज के लिए खर्च नहीं कर सकते ? हाँ, हम एक घण्टा रोज अपने समाज, देश, धर्म, जाति और संस्कृति के लिए खर्च कर सकते हैं। एक घण्टा कोई बड़ी चीज नहीं होती। इससे क्या हो सकता है ? जिस गाँव में चार सौ घर हैं तो क्या उस गाँव के प्रत्येक घर से एक-एक व्यक्ति एक-एक घण्टा समय समाज, देश और संस्कृति के लिए नहीं निकाल सकते ? चार सौ घण्टे का मतलब साठ आदमियों की पूरी मेहनत। साठ आदमी एक साथ मिलकर बाग लगाने के लिए, सफाई के लिए, स्कूल चलाने के लिए खड़े हो जाएँ तो फिर आप देखिये कि साल भर में क्या हो सकता है ? जनता की इस शक्ति को हमें जगाना पड़ेगा। जनता के पास कर्त्तव्यों का उद्बोधन करने के लिए हमको जाना पड़ेगा। घर-घर जाकर लोगों को सफाई की स्वच्छता की बात बतानी होगी। रहन-सहन की, खान-पान की बातें बतानी होंगी। गन्दगी की, बदबू की, अशिक्षा की कलंक-कालिमा जो देश पर छायी हुई है, उसे यदि दूर कर दें तो इससे बड़ा और कोई काम नहीं हो सकता।

तो गुरुजी क्या यही अध्यात्म है ? हाँ बेटे, यही अध्यात्म है और यही धर्म है। यही भगवान की भक्ति है। हमको और आपको भगवान की यही भक्ति लोगों को सिखानी पड़ेगी। नागरिक कर्त्तव्यों का ज्ञान और समाज के प्रति जिम्मेदारी का आभास प्रत्येक व्यक्ति को कराना होगा। आध्यात्मिक ख्वाब दिखाने से काम नहीं बनेगा। इस बारे में मत पूछियें क्योंकि हिन्दू अलग तरीके से सोचता है और मुसलमान अलग तरीके से। एक कहता है कि मरने के बाद हम मृत्युलोक में जाएँगे तो दूसरा कहता है कि कयामत तक हम यहीं खड़े रहेंगे जब तक एक फरिश्ता नहीं आता। एक कहता है कि जब तक पिण्डदान नहीं दिया जाएगा, तब तक मृतात्मा चक्कर मारता-फिरता है और पिण्डदान खा करके स्वर्ग को चला जाता है। हमसे मत पूछिये इन बेकार की बातों को। हमसे तो यह पूछिये कि असली धर्म क्या है ? बेटे, असली धर्म उस चीज का नाम है, जो मनुष्य की जिम्मेदारी को प्रभावित करता है और कर्त्तव्य का ज्ञान कराता है। इस धर्म को, इस अध्यात्म को, भगवान की इस भक्ति को हम भूल गये, परिणामस्वरूप हम गरीब हो गये, दीन-दुर्बल हो गये, असंगठित हो गये, अशिक्षित हो गये। ये अभिशाप हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवान् की उस भक्ति को त्याग देने के, धर्म को त्याग देने के। धर्म अगर हमारे पास होता, भक्ति हमारे पास होती तो अविद्या और अशिक्षा क्यों आती ? आपके लिए नहीं कहता, मैं अपने लिए कहता हूँ। आज हमारी संख्या—हम पंडितों की, संतों की, बाबाजियों की संख्या छप्पन लाख है और गाँव कितने हैं ? सात लाख। हर गाँव पीछे आठ संत आते हैं। यदि हम उस धर्म के मूल स्वरूप को लेकर हर गाँव में चले जाएँ तो क्या हम लोग देश की समस्या को हल नहीं कर सकते ? जब अकेले एक स्वामी केशवानन्द साढ़े तीन सौ गाँवों की अशिक्षा की समस्या को हल कर सकते थे तो हमारी संख्या तो उससे कई गुना अधिक है। इस समस्या को हमें ही दूर करना होगा और हम करेंगे। सरकार इसे दूर नहीं कर सकती। उसके लिए प्राइमरी स्कूल चलाना ही मुश्किल पड़ रहा है। हमारा देश इसलिए पिछड़ा हुआ है कि यहाँ अशिक्षा की भरमार है। इसे दूर करने के लिए हमें जनता को जाग्रत करना पड़ेगा। उसके कर्त्तव्यों का उद्‌बोधन करना पड़ेगा और उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना पड़ेगा। यही हमारा कुरान है, यही हमारी गीता है और यही हमारी भागवत् है। इसके लिए हमको बहुत कुछ करना है मित्रो ! आज भगवान महावीर का जन्म-दिन हमको यह सिखाने के लिए आया था कि धर्मसत्ता को राजनीति में जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस माध्यम से जो काम हम जनता में जाकर कर सकते हैं, जनता को ऊँचा उठा सकते हैं, जनता की भावना को, कर्त्तव्य को ऊँचा उठा सकते हैं, वह हजार गवर्नमेण्ट मिलकर भी नहीं कर सकती। यही भगवान महावीर का संदेश था और इसी क्रियाकलाप को उन्होंने अपने जीवन में धारण किया और सारी जिन्दगी को इसी काम में लगा दिया।

आज ही हनुमान जी का जन्म-दिन है। जिस दिन से उन्होंने सेवाव्रत धारण किया, उस दिन से जहाँ भी जरूरत पड़ी, वे चले गये। सीता खोज के लिए पुल बनाने की जरूरत पड़ी तो पुल बनाने के लिए चले गये। जब रावण के साथ लड़ने की जरूरत पड़ी तो उससे लड़ने चले गये। जहाँ पहाड़ उठाने की जरूरत पड़ी, वहाँ पहाड़ उठाने के लिए चले गये। जहाँ वैद्य को लाने की आवश्यकता पड़ गयी, वहाँ उसे घर सहित उठा लाये। हनुमान जी ने सारी जिन्दगी भर सेवाव्रत को धारण करके रखा ? उन्होंने कहा—हमारा काम सेवा करना है और मुसीबत उठाना है। राजसत्ता का सुख, वैभव, मजा और लोभ-प्रलोभन क्या है, इससे उन्होंने अपने आपको सदैव दूर ही रखा। तो क्या राजनीति की कोई सेवा नहीं की हनुमान जी ने ? भला हनुमान जी से बढ़कर राजनीति की सेवा और कौन कर सकता था ? रावण को उखाड़ करके विभीषण की स्थापना करने की भूमिका किसने निभाई ? हनुमान ने, नल-नील अंगद और जामवन्त ने निभाई। यदि वे इस बात का झगड़ा करते कि हमको मिनिस्टर बना दीजिये, तब तो चकल्लस खड़ी हो जाती। उन्होंने कहा नहीं, राज तो विभीषण को करना चाहिए, हम तो सेवा करेंगे, व्यवस्था जमाएँगे। व्यवस्था जमाना और सेवा करना-मित्रो ! यह बहुत बड़ा काम है। बार-बार जो लोग हमसे पूछते हैं कि आप राजनीति में क्यों नहीं जाते ? उनसे हमारा यही कहना है कि किसी जमाने में हम राजनीति में थे। उस जमाने में राजनीति में बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी जब तक हिन्दुस्तान को स्वराज नहीं मिला था। राजनीति हमको बहुत प्यारी थी। कब ? जब सेवा की राजनीति थी त्याग की राजनीति थी, कष्ट उठाने की राजनीति थी, फर्ज की राजनीति थी। आजादी के लिए जेल जाने पिटाई खाने और फाँसी के फन्दे झूलने की राजनीति थी, तब हमको राजनीति बहुत प्यारी लगती थी।

मित्रो ! अब राजनीति में वह चीज आ गयी है जिसे हुकूमत की भूख कहते हैं, सत्ता की हविश कहते हैं, जिसमें वोट माँगेंगे, दूसरों का हक मारेंगे तब हमने राजनीति छोड़ दिया। हमने देखा इसको लेने के लिए तो ढेरों लोग तैयार हैं। उस एक ही डिब्बे में सारी की सारी भीड़ घुसी जा रही है। उसमें बैठने के लिए कोई कोहनी मारता है, तो कोई कुछ करता है। ऐसी स्थिति में हमको वहाँ क्यों जाना चाहिए ? हमको वहाँ क्यों नहीं जाना चाहिए जहाँ पूरा का पूरा डिब्बा खाली पड़ा है। धर्म का क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है। लोकसेवा का क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है। जनता का क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है। कर्तव्यों को जगाने वाला क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है। मित्रो ! हम वहीं चलेंगे और आपको भी वहीं चलना चाहिए। आज की राजनीति में जिसमें सत्ता की भूख है, उससे आपको दूर ही रहना चाहिए और वहाँ चलना चाहिए जहाँ राष्ट्र को ऊँचा उठाने वाला क्षेत्र मौजूद है। हमको जनता के पास जाना चाहिए और उन्हें प्रेरित करना चाहिए। इससे बड़ी राजनीति और राष्ट्रसेवा कोई और हो नहीं सकती जो कि आप करने के लिए चले हैं। मित्रो ! वानप्रस्थी बन करके आप समाज में जाना, लोगों के पास जाना और उन्हें उनके कर्त्तव्यों को सिखाना, फर्जों को सिखाना, लोगों को उनके नागरिक अधिकार समझाना और यह बताना कि भला आदमी शरीफ आदमी कैसा होना चाहिए ? प्रत्येक आदमी को अपनी राष्ट्रीय जिम्मेदारियों के प्रति कैसे रहना चाहिए ? अच्छा समाज बनाने के लिए गुण्डागर्दी तथा अन्य दूसरी बुराइयों के विरुद्ध कैसे खड़े होना चाहिए ? यह शिक्षण करना हमारा और आपका काम है।

गुण्डागर्दी पुलिस से नहीं रुक सकती। इसे जब कभी रोकेंगे तो हम और आप ही रोकेंगे। कैसे और कब ? जैसे जटायु ने सीता जी को रावण के चंगुल से छुड़ाकर उदाहरण प्रस्तुत किया था। उसने देखा कि कोई बदमाश एक सती सी स्त्री को चुराकर ले जा रहा है। वह किसी और की नहीं हमारी बेटी है, हमारे ही साथ गुण्डागर्दी की जा रही है, अतः हमको चलना चाहिए और आततायी से लड़ना चाहिए। हमारे पास तलवार नहीं है और रावण के पास है, पर इससे क्या हुआ हमारे पास आत्मबल तो है। आत्मबल बड़ा होता है, तलवार नहीं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह रावण से लड़ने लगा। रावण ने उसके पंख काट दिये। जटायु घायल जमीन पर गिरा हुआ था। रामचन्द्रजी आये और उसे उठाकर अपनी छाती से लगा लिया और कहा हम तुम्हें स्वर्ग भेज देते हैं। उसने कहा—स्वर्ग तो आप भेजिये मत, हमने तो केवल लोगों के सामने अपने फर्ज का, कर्तव्य का उदाहरण पेश किया है कि जहाँ कहीं भी गुण्डागर्दी या अत्याचार किया जा रहा है, उसका मुकाबला करने के लिए हर आदमी को उसके विरुद्ध उठ खड़ा होना चाहिए। अभी क्या होता है मित्रो ! कि इतनी सारी बुराइयाँ होती रहती हैं, गुण्डे-बदमाश छुट्टल घूमते रहते हैं, यदि सारे के सारे लोग निश्चय कर लें कि हम सब मिलकर उनका मुकाबला करेंगे तो जनता भी साथ देगी और तब समाज में एक भी गुण्डा दिखाई नहीं देगा।

जनता के सहयोग के बिना राष्ट्र की समस्या का समाधान नहीं हो सकता। जनता का सहयोग कौन जगाएगा ? जनता का सहयोग सरकार जगा नहीं सकती, इसे हम जगाएँगे। जिस तरह पक्षी के दो पंख होते हैं उसी तरह एक पंख राजसत्ता है तो दूसरी धर्मसत्ता जिसको हम जनसत्ता लोकसत्ता कहते हैं। लोकसत्ता का उतना ही अच्छा होना आवश्यक है जितना कि सरकार का अच्छा होना। एक ही पंख से पक्षी उड़ नहीं सकता। फिर राजसत्ता में काम करने के लिए ढेरों व्यक्ति हैं। अतः दूसरे पंख का अर्थात् धर्मसत्ता का क्षेत्र हमें ही सँभालना पड़ेगा। जनता को धर्म का; कर्त्तव्यों का, ईमानदारी का, जिम्मेदारी का, बहादुरी का ज्ञान हमको ही कराना चाहिए और हम वही करेंगे भी। आप लोग वानप्रस्थ का शिक्षण लेकर जाना और लोगों को धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाना जो कि हम आपको अभी तक समझाते रहे हैं और आगे भी समझाते रहेंगे। धर्म का मतलब ईमानदारी, धर्म का मतलब कर्त्तव्यनिष्ठा, धर्म का मतलब सेवा, धर्म का मतलब उत्तरदायित्व की सम्भावना को जगाना। इस तरह का धर्म हम हर आदमी को सिखाएँगे और समझाएँगे ताकि हमारा हर व्यक्ति अच्छा बन सके, ताकि हमारा परिवार अच्छा बन सके, ताकि हमारा समाज और राष्ट्र अच्छा बन सके। यही प्रेरणा है भगवान महावीर की, जिन्होंने राजसत्ता को तिलांजलि देकर धर्मसत्ता को ग्रहण किया और समाज में अलख जगाते हुए लोगों को धर्मसत्ता के कर्त्तव्यों का ज्ञान कराया।

भगवान बुद्ध भी राजसत्ता को छोड़ करके राजसत्ता को ठोकर मारकर चले गये थे। उन्होंने गाँव-गाँव में अलख जगाया था। अलख जगाने के बाद में क्या उन्होंने राजसत्ता को अच्छा नहीं बनाया था ? हाँ, अशोक से लेकर हर्षवर्धन तक सैकड़ों के सैकड़ों जनता को उन्होंने अच्छा बना दिया था। धर्मसत्ता को लेकर गुरुवशिष्ठ चले थे। क्या उन्होंने रघुवंशियों से लेकर अनेकों राजाओं की राजसत्ता को अच्छा नहीं बना दिया था ? हाँ, उन्होंने बना दिया था। सारे महामानव धर्मसत्ता को लेकर चले थे। चाणक्य ने क्या चन्द्रगुप्त को अच्छा नहीं बना दिया था ? हाँ बना दिया था। समर्थ गुरु रामदास धर्मसत्ता को लेकर चले थे। क्या उन्होंने शिवाजी और दूसरे लोगों को अच्छा नहीं बना दिया ? हाँ, बना दिया था। हम भी सरकारों को अच्छा बना देंगे, जनता को अच्छा बना देंगे। जनता को अच्छा बनाने के लिए और सरकारों को अच्छा बनाने के लिए जो कार्य हम और आप मिलकर कर रहे हैं, वह बहुत बढ़िया, बहुत शानदार और बहुत उच्चकोटि का है। इनको कम किसी से भी नहीं समझना चाहिए और न ही आपमें इसे किसी को अपने मन में यह भाव आने देना चाहिए कि हमको राजसत्ता पर हावी होना है और राजसत्ता में अपना कोई आदमी भेजना है। जनता को ही जब हम जनसत्ता बना देंगे, लोकशक्ति बना देंगे तो फिर आप देखना सरकार को अपने आप बदलना पड़ेगा। यदि जनता बदल गयी तो फिर सरकारें अपने आप बदल जाएँगी।

यही है हमारा भावी संदेश। यही है हमारे भगवान महावीर का संदेश। यही है हमारे लोगों को जवाब, जो हमारे इतने बड़े संगठन और कार्यक्रमों की स्थिति को देखकर बराबर कहते रहते हैं कि आप अपने आदमी चुनाव में खड़े क्यों नहीं करते ? आप राजनीति में क्यों नहीं आते ? हम बार-बार यही कहते रहते हैं कि राजनीति का क्षेत्र बहुत छोटा, बहुत कम है और धर्म का क्षेत्र बहुत बड़ा है। राजनीति के पास शक्ति नगण्य है। इसके पास वैभव कम है। हमारे पास धर्मतंत्र के पास सामर्थ्य बड़ी है। धर्मसत्ता बड़ी है। हमारे पास आदमियों की सत्ता बड़ी है। उसके पास तो पच्चीस-चालीस हैं। हमारे पास तो ५६ लाख आदमी हैं। ५६ लाख संतों की सत्ता को बेकार राजसत्ता की अपेक्षा समाजहित में लगाएँगे। हमारा कार्यक्षेत्र बड़ा है। साथियो, हममें से किसी व्यक्ति को यह भाव मन में नहीं लाना चाहिए कि यदि हम राजनीति में गये होते, राजसत्ता के क्षेत्र में गये होते तो हमको सेवा करने का ज्यादा अवसर मिलता अथवा हमारा ज्यादा सम्मान हो जाता। हमारा सम्मान धर्मक्षेत्र में प्रवेश करने पर है, क्योंकि हम जनता की, खासतौर से पिछड़ी जनता की सेवा उस क्षेत्र में प्रवेश करके जितनी कर सकते हैं और जनशक्ति को जाग्रत कर सकते हैं, उतनी राजनीति में प्रवेश करके हम नहीं कर सकते। इसलिए मित्रो, हमारा लोगों को यही जवाब है कि हम क्यों राजनीति में नहीं जाते हैं ? और राजनीति को छोड़कर धर्मसत्ता में क्यों आ गये ? भगवान महावीर और भगवान भक्त हनुमान जो दोनों ही आज के दिन पैदा हुए थे, उनके जीवन से भी हमको यही जवाब मिल जाता है। आज के उद्‌बोधन से आपको शिक्षा और प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम राजनीति की इच्छा के विपरीत धर्मनीति की ओर चलेंगे और उन महत्त्वपूर्ण कार्यों को करेंगे जो राजसत्ता के बलबूते के बाहर है। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परमार्थपरायण बनें— दैवी अनुग्रह पाएँ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !!

कितने ही सम्वत् और सन् आते हैं। ईसाइयों का, मुसलमानों का, जैनियों का नववर्ष आता है, परन्तु हमारा ख्याल है कि जब आध्यात्मिक संवत् या सन् प्रारम्भ हुआ होगा तो विश्व का कार्य प्रारम्भ हुआ होगा। चेतना की प्रारम्भिक क्रिया इसी दिन हुई होगी। हमारा अनुमान है कि यह वसंत से ही प्रारम्भ हुआ होगा। इसमें समय, जड़, चेतन सभी में नवीनता आ जाती है। मरे हुए पेड़-पौधों के ऊपर भी हरियाली छा जाती है। नये पल्लव निकल पड़ते हैं। फल निकलते हैं। घास-पातों में भी नई मादकता आ जाती है। हर चीज में नवीनता आ जाती है। यह क्या है ? मित्रो ! यह है चेतना जो हर चीज में काम करती है।

प्राणियों में भी यही बात है। वसंत से होली तक के ४० दिन ऐसे होते हैं, जिसमें आने वाली उमंग, उत्साह को रोकना मुश्किल हो जाता है। यह मनुष्य एवं पशु-पक्षियों—दोनों पर लागू होता है। मित्रो ! इसमें ही अधिकांश प्राणी गर्भधारण करते हैं। यह जो उत्साह एवं उमंग आता है उसके लिये एक ही रास्ता दिखलाई पड़ता है और वह है कामवासना। हर प्राणी इन्हीं दिनों मतवाला हो जाता है। आदमी को भी उस समय पैदावार करने की इच्छा होती है। वह केवल बच्चा पैदा करने में ही अपनी शक्ति लगा देता है। आज का मनुष्य, वनमानुष, नर-पशु जैसा हो गया है। वह भी अपना उत्साह उसी तरह खर्च कर देता है जैसे पशु-पक्षी करते हैं। इसलिये हम इन्हें नर-पशु कहते हैं। वह भी मनुष्य की तरह ही खाता-पीता है, नाक में से हवा निकलता है। उसमें कुछ फर्क नहीं होता है। जिसमें चिन्तन, भावना न उठती हो, मित्रो ! हमें उन्हें मनुष्य नहीं कह सकते हैं।

हमने एक बार यह चिन्तन किया कि जरा हम यह पता लगाएँ कि इस धरती पर महान लोगों को कब शक्ति मिली होगी, प्रेरणा मिली होगी ? हमने यह पाया कि यह समय वसंत का ही रहा है। हमने एक बार समर्थ गुरु रामदास के बारे में पता लगाया कि उन्हें जो उछाल आया था, उमंग आयी थी, वह कौन-सा महीना था ? वह था वसंत का महीना। ऐसा उनमें उछाल आया जैसा कि तूफान आता है। बगल में पत्नी बैठी थी। उसने देखा कि बच्चे पर बच्चे होते जा रहे हैं और एक लम्बी कतार बना बैठी है। उसकी आत्मा ने आवाज लगायी। वह काँप गये। उसने कहा—अगर आपको जिन्दगी मूल्यवान बनानी है, तो आइये, दूसरे वाले रास्ते को अपनाने का प्रयास करें तथा जीवन को महान बनाएँ। महानता का रास्ता आपके लिए खुला है, इसे कोई रोक नहीं सकता है आप आगे बढ़ें। उनके अन्दर एक ऐसी उमंग आयी, उछाल आया कि वे सब छोड़कर भाग खड़े हुए। रोकने वाले उन्हें न रोक सके। मित्र, साले, साली, बाराती सब बैठे थे। वे रोकते रह गये, परन्तु वे रुके नहीं। वे उछलते ही चले गये और समर्थ गुरु रामदास बन गये। वह बिल्कुल आपकी तरह से छोटा बच्चा था तब। मित्रो ! वह जुलाहा महान बन गया। दूसरी ओर क्या होता अगर वह शादी कर लेता तो ? बच्चे हो जाते और कुछ भी नहीं होता। ताऊ जी, पापा जी को सब नोंचते कि लाओ रोटी, लाओ कपड़ा। ताऊ जी का कचूमर निकल जाता। परन्तु ताऊजी छलाँग लगाकर चले गये तो महानता को प्राप्त कर लिया। आदमी का कमजोर मन कहता है। अगर मन को आदमी रोक ले तो वह महान बन जाता है।

हमने बुद्ध के बारे में भी जानकारी ली तो यही पाया कि उनकी जीवनी भी इसी प्रकार की है। वे अपने बीबी-बच्चे के साथ रात में सो रहे थे। एक बार उछाल आया कि आपके बीबी-बच्चों के खाने के लिये, देख-भाल के लिये सारी व्यवस्था है तो आप क्यों इस घुटन वाली जिन्दगी जीना चाहते हैं। उनकी आत्मा ने आवाज लगायी। उनके अन्दर किसी ने आवाज लगायी। वे उछलकर कहाँ से कहाँ चले गये ? लोगों ने उनको रोकना चाहा परन्तु वे रुके नहीं। उनको लोगों ने भला-बुरा कहा, परन्तु उन्होंने किसी की भी बात नहीं मानी।

शंकराचार्य के बारे में भी यही बात है। उनकी माँ उनकी शादी करना चाहती थीं। उसे अफसर बनाना चाहती थीं, परन्तु वे माने नहीं। लोगों ने कहा कि माँ की बात नहीं मानेगा तो पाप लगेगा, नरक में जाएगा परन्तु वे किसी की भी बात नहीं माने। उन्होंने कहा कि हम आत्मा की आवाज न मानकर नरक में जाएँगें। वे विचार करते रहे और अंत में उनके अन्दर से उछाल आया और उन्होंने आत्मा की आवाज को माना। उसने अपनी माँ की आवाज को नहीं माना तथा नदी में से आवाज लगाई। शंकराचार्य ने कहा कि माँ हमें बचाओ नहीं तो अब मैं मरा ? माँ ने पूछा कि मैं क्या करूँ ? माँ ! शंकर भगवान कहते हैं कि अगर तू हमें शंकर भगवान को सौंप दे तो हमें मगर छोड़ सकता है। माँ चिल्लायीं कि अरे बेटा ! तुझे शंकर भगवान को अर्पित कर रही हूँ। उसने उछाल लगाया और बाहर आ गया। माँ को बतलाया कि माँ, अब तो मैं शंकर भगवान का हो गया हूँ। अच्छा बेटा तू शंकर भगवान का है तो क्या हुआ। कम से कम तू इस दुनिया में जिन्दा तो रहेगा। हमने इनकी भी जब जानकारी ली तथा छानबीन किया तो यह पाया कि वह समय भी वसंत का ही था।

मित्रो ! इसी कड़ी के अन्तर्गत हमने देखा कि हमारे जैसे नाचीज आदमी के अन्दर भी जो उछाल आया, उमंग आया, वह भी समय वसंत का ही था। ५५ वर्ष पूर्व मेरा सौभाग्य आया, उसका नाम मैं क्या बतलाऊँ, उसे तो मैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपना भाग्य, अपना सौभाग्य ही नाम देता हूँ। सुना है लक्ष्मीपूजा के दिन लक्ष्मी जी आती हैं तथा धन, सम्पत्ति दे जाती हैं। वसंत पंचमी के दिन हर आदमी का सौभाग्य आता है। हमने यह भी सुना है कि सोमवती अमावस्या के दिन गंगा जी में दूध की एक धारा आती है तथा जो भी उसमें स्नान करते हैं उनका जीवन धन्य हो जाता है। लोग स्वर्ग चले जाते हैं। यह बात कहाँ तक सही या गलत है, यह मैं नहीं कह सकता हूँ। परन्तु यह बात सत्य है कि वसंत पंचमी के दिन गंगा की एक धारा, एक दूध की धारा, तरंग, उमंग आती है, जो मनुष्यों को धन्य कर जाती है। हमारे ऊपर भी ऐसा ही हुआ। वे हमें धन्य कर गये। उस तरंग का नाम क्या है ? उसका नाम हमारा गुरु है, जो प्रकाश के रूप में वसंत के दिन हमारे पास आये और हमें निहाल कर गये। कोई गुरु, संत, भगवान आते हैं तो कुछ लेकर आते हैं। लोग कहते हैं कि हमें रात में शंकर भगवान, हनुमान जी, विष्णु भगवान आये थे। अरे हम यह पूछते हैं कि कोई कुछ लाये कि नहीं। अरे साहब, लाये नहीं ऐसे ही हनुमान जी पूँछ दिखाकर भाग गये।

मित्रो ! कोई भी संत, भगवान, गुरु आता है तो कुछ न कुछ लेकर आता है। मेरा भी गुरु, मास्टर, बॉस, मेरा सौभाग्य इसी दिन आया था, जिस दिन हम और आप मिल रहे हैं। सौभाग्य एवं लहर जो वसंत के दिन हमारे पास आयी थी, अगर वह काश ! आपके पास भी आ जाती तो आपका भी जीवन धन्य हो जाता जैसा कि हम हुए। शक्ति, अमृत की धारा के रूप में जो मेरा गुरु आया एवं हमें वसंत दिखाया, वह आज से ५५ वर्ष पूर्व आया था। दुष्यंत शकुन्तला के पास आया और चलते वक्त यादगार के रूप में एक अँगूठी पहना दी। हमारे गुरु ने भी चलते वक्त दो अँगूठियाँ हमें पहना दीं—एक इस अँगुली में एवं दूसरी उस अँगुली में पहना दी। मेरा प्रियतम, मेरा बॉस, मेरा मास्टर, मेरा गुरु मुझे मिला, आपको तो कोई मिला ही नहीं जो पहनाये। मेरा गुरु मुझे दो चीजें दे गया—एक शक्तिपात, दूसरी कुण्डलिनी जागरण। इसमें कुछ देर न लगी। मेरी जिन्दगी में एक तूफान आया तथा दोनों चीजें शक्तिपात एवं कुण्डलिनी जागरण सैकिण्डों में पूरी हो गई। मित्रो ! माचिस से आग निकलती है तो घर को स्वाहा होने में देर नहीं लगती है। इसी तरह से मेरा भी काया-कल्प हो गया। मेरी आँखों में और चीजें दिखलाई पड़ने लगीं। एक शराबी को नशे की हालत में न जाने क्या-क्या दिखलाई पड़ता है ? मेरी दुनिया भी नई दिखलाई पड़ने लगी। मेरे अंदर नया उत्साह एवं उमंग आ गई।

शक्तिपात के बारे में लोग यह समझते हैं कि शरीर में एक करेण्ट आता है। गुरु की आँखों में से एक करेण्ट आता है एवं शिष्य में समा जाता है। अरे यह शक्तिपात नहीं है। शारीरिक शक्तिपात से कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। शक्तिपात से मतलब चेतना से है। चेतना में शक्ति-भावना एवं संवेदना के रूप में दिखलाई पड़ती है। शरीर में झटके नहीं मारती है। गुरुजी कुण्डलिनी जागरण के बारे में हमने तो यह पढ़ा है कि मूलाधार में एक सर्पिणी बैठी है, जो प्राणायाम के माध्यम से रीढ़ की हड्डी से ऊपर की ओर जाती है। हुंकार दिखाती और न जाने क्या-क्या दिखाती है ? बेटे, एल. एस. डी. नामक एक दवा आती है। उसकी एक बूँद तेरे जीभ में डाल दूँ तो तुझे बड़ी से बड़ी चीज दिखलाई पड़ने लगेगी। नाक एवं कान से हाथी निकलते हुए दिखलाई पड़ेंगे, बस कुण्डलिनी जागरण हो जाएगा। बिजली के झटकों से शक्तिपात तथा शराब से कुण्डलिनी जागरण करा दूँगा। बेटे, इसे शक्ति नहीं कहते हैं।

शरीर एवं चेतना अलग-अलग हैं। शक्ति यानी हिम्मत यानी हमारे गुरु ने शक्तिपात करके हिम्मत जगा दी ताकि हम आदर्श एवं सिद्धान्त का जीवन जी सकें। मछली की तरह लहरों से टक्कर मारते हुए उल्टी दिशाओं में बढ़ने की ताकत, हिम्मत यह है शक्तिपात। आदमी के अन्दर स्वयं की कमजोरी, माँ-बाप की कमजोरी, मित्रों की कमजोरी, वातावरण की कमजोरी और न जाने कितनी कमजोरियाँ होती हैं ? उसे चीरता हुआ जो आगे बढ़े मछली की तरह से उसे हिम्मती कहते हैं। वास्तव में ऐसे व्यक्ति को ही शक्तिपात होता है। कायरों को नहीं मेरे गुरु ने हमें शक्तिवान बना दिया। जिस दिन से गाँधी जी ने नमक बनाया, मेरे अन्दर हिम्मत आ गयी कि हम भी गाँधी जी के साथ नमक बनाएँगे, उनके सत्याग्रह में भाग लेंगे और न जाने क्या-क्या करेंगे ? इस बात को जानकर हमारे घर के हर आदमी नाराज हो गये। तब हमारी १६ वर्ष की उम्र थी। हमें एक कमरे में बन्द कर दिया गया। एक बनियान, चड्डी छोड़ दिया तथा बाकी कपड़े छीन लिये, चप्पल छीन लीं, सब चीजें छीन लीं और आन्दोलन में भाग न लेने के लिये बाध्य करने लगे। कहने लगे हम तुझे जाने नहीं देंगे तथा कैदी की तरह हम जीते रहे। हमारे मन में टीस पैदा हो गयी। हमने कहा कि हम पेशाब-टट्टी कमरे में नहीं करेंगे। हमने टट्टी का बहाना किया तथा कान पर जनेऊ चढ़ाकर चल दिया। रातों रात ४० किमी. का सफर तय करके आगरा काँग्रेस कार्यालय में पहुँच गये। वहाँ हमने कहा कि आप हमें आगरा से बाहर भेज दीजिये। यहाँ मत रखिये नहीं तो हमारे घर के लोग आ जाएँगे और हमें पकड़कर ले जाएँगे। हमें बाहर भेज दिया गया। हमने अपनी मातृभूमि की आजादी के लिये काम किया तथा जेल भी गये।

मित्रो ! शक्तिपात किसे कहते हैं ? हम सिद्धान्तों एवं आदर्शों का जीवन हिम्मत के साथ जियेंगे, यही शक्तिपात कहलाता है।

यह सिद्धान्तों के प्रति समर्पण की, मुकाबले की कविता है। इसमें एक हिम्मत एवं ताकत है। इसी प्रकार की ताकत एवं हिम्मत हमारे गुरु ने—हमारे 'बॉस' ने हमारे अन्दर पैदा किया था।

हमारे घर वालों ने एवं अन्यान्य हितैषियों ने हमारे कार्यों का विरोध किया, परन्तु हमने हर काम को पूरे हिम्मत के साथ किया। हमने गायत्री उपासना सबको बतलायी। इसका पंडों ने, कर्मकाण्डी पंडितों ने विरोध किया। हमने स्त्रियों को गायत्री उपासना से जोड़ दिया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसका जमकर विरोध हुआ। हमने कहा कि नारी को पूर्ण अधिकार है गायत्री मंत्र जपने का। हर बेटी को माँ के पास बैठने का विशेष अधिकार है। इसमें कोई दिक्कत पैदा नहीं होनी चाहिए। हम अकेले टक्कर मारते चले आये। हम अनीति से टक्कर मारते हैं, विचारों से मारते हैं। हम कौन हैं ? टक्कर मारने वाले हैं। हम हमेशा विरोध करते रहे, संघर्ष करते रहे हैं। हम ब्राह्मण हैं ? नहीं, हम तो राजपूत हैं। हमारे अन्दर परशुराम जी के तरह से शौर्य, साहस, पराक्रम करने की उमंग उठती रहती हैं और हम वैसा ही काम करते रहते हैं। हमारे गुरु आये थे और इस प्रकार का कार्य करने का सौभाग्य हमारे अन्दर भर गया था। यह अमानत, सम्पदा, दौलत अद्वितीय है, हमारे पास। हमारे बाप-दादे पंडिताई से गुजारा करते थे। परन्तु हमारा सौभाग्य है कि हमारे गुरु ने हमें कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया ? हम आज महामानव हैं, हम बता नहीं सकते कि हम कौन हैं ? परन्तु जहाँ से हमें मिला है वह हमारा सौभाग्य है, जिससे हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये ? यह हमारे गुरु का शक्तिपात है।

कुण्डलिनी क्या होती है ? जिसे हम करुणा मिश्रित विवेकशीलता कहते हैं। करुणा किसे कहते हैं ? जिससे व्यक्ति दूसरे के दुःख-तकलीफ को देखकर द्रवित हो जाए। उसे विवेकशील कैसा होना चाहिए ? उसे विवेकशील ऐसा होना चाहिए जैसा जापान का गाँधी कागावा था, जिसने परीक्षा पास करने के बाद नौकरी नहीं की। समाज-सेवा के लिये उसने नरमेध यज्ञ कर डाला। यह क्या होता है ? जो मनुष्य अपनी जिन्दगी एवं जिन्दगी की कमाई को लोकमंगल में अर्पित कर देता है, वह नरमेध यज्ञ कर लेता है। आप कमाएँगे तो सही, परन्तु सारा अपने लिये नहीं खा सकते हैं। आपको नेचर ऐसा तमाचा मारेगी कि ठीक हो जाओगे। हमने एक समय एक घटना देखी है। एक साँप ने एक चूहा खा रखा था। वह निगल नहीं पा रहा था। घबराहट थी। उसके पेट को दबाया गया। चूहा निकल गया। आप अधिक रोटी खाएँगे तो आपको उल्टी करना होगा, आपको दस्त करना होगा। आप खा नहीं सकते हैं। आप रुपया जमा नहीं कर सकते हैं। आप उसे निकालिये नहीं तो नेचर बर्दाश्त नहीं करेगी। आप खाना, कपड़ा, मकान के अलावा उसका उपयोग नहीं कर सकते हैं। जापान के गाँधी ने विचार किया कि जब हमें समाज की सेवा करते हुए रोटी, कपड़ा मिल सकता है तो मेरे लिये क्या नुकसान है ? उन्होंने सहर्ष इस कार्य को अपनाया तथा जन-सेवा में लग गये।

मित्रो ! यह बात मैं विवेकशीलता की कर रहा हूँ। विवेकशीलता किसे कहते हैं ? बेटे कुण्डलिनी को। कुण्डलिनी किसे कहते हैं ? विवेकशीलता को। आप समझते नहीं हैं। हमारा गुरु हमारी कुण्डलिनी जगा गया। उसके द्वारा हमारा विवेक जाग्रत हो गया। मेरा अन्तःकरण बोल उठा कि जब तुम्हें पेट ही भरना है तो इसके लिये इतना बेचैन क्यों ? इससे अच्छा तो यह है कि समाज की सेवा की जाए। मच्छर, मक्खी को भी जब भोजन मिल जाता है तो हमें क्यों नहीं मिलेगी इसी प्रकार की कुण्डलिनी मित्रो ! जापान के गाँधी कागाबा की जग गई थी। उसने अपनी झोंपड़ी कोढ़ियों के बीच, अन्धों के बीच, अनाथ बच्चों के बीच, शराबियों के बीच डाल ली थी और उन्हीं के बीच रहने लगे। उन्होंने सुख-सुविधाओं को छोड़ दिया। वह सारा समय उन्हीं के बीच बिताता था केवल आधा घण्टे के लिये चला जाता था तथा ५० रुपये कमाकर ले आता और अपना पेट भर लेता था। उसे कोई परेशानी नहीं थी। दूसरा क्या कारण था ? उसके अन्दर करुणा थी। करुणा किसे कहते हैं ? कुण्डलिनी को कहते हैं। कुण्डलिनी एक ऐसी चीज है, जो आदमी के भीतर एक रोमांच पैदा कर देती है। हलचल पैदा कर देती है, एक आदमी के भीतर दर्द पैदा कर देता है। मित्रो ! भगवान आता है तो दर्द के रूप में आता है। चेतना केवल संवेदना के रूप में हो सकती है। चेतना का कोई रूप नहीं है। वह केवल संवेदना ही हो सकती है। संवेदना कैसी ? करुणा एवं विवेकशीलता के रूप में। एम. ए. पास जापान के गाँधी ने शुरू में तो दुःख उठाया, मुसीबतें झेलीं, परन्तु आगे चलकर वह धन्य हो गया। उसकी करुणा, विवेकशलीलता ने उसे धन्य कर दिया। उसकी सेवा-परायणता ने लोगों का दिल जीत गया।

मनुष्य के अन्दर अगर आदर्श एवं सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा, श्रद्धा हो तो उसका व्यक्तित्व ऊँचा उठता हुआ चला जाएगा। उस समय उसे जनता की सहानुभूति एवं सहयोग मिलता हुआ चला जाएगा। उसके अन्दर डायनामाइट की तरह शक्ति आ जाएगी। वह बौद्ध पुरुष बन जाएगा। वह संत एवं ऋषि बन जाता है। उसकी इज्जत हमेशा रहेगी। सारे लोगों का मस्तिष्क जापान के गाँधी के प्रति नतमस्तक हो गया। एक लड़की आयी, उनके सेवा, त्याग, करुणा को देखकर नतमस्तक हो गई। उसने उनके साथ काम करने का, विवाह करने का प्रस्ताव रखा। पहले तो वे तैयार नहीं हुए, परन्तु जब उस लड़की ने कहा कि हम आपको कुछ कष्ट नहीं देंगे, हम बच्चा पैदा नहीं करेंगे; आप हमसे शादी कर लें। वह लड़की जो, अमीर थी, वह कागाबा से विवाह करके सेवाकार्य में लग गयी। आप कभी भी जापान जाएँ तो वहाँ के हर लोग कागाबा को जानते हैं जैसे कि भारत के लोग महात्मा गाँधी को जानते हैं। आप लोग तो केवल नकल करना जानते हैं और केवल सस्ता, तरीका अपनाना चाहते हैं। पहले मैं डोरी वाला कुर्त्ता पहनता था। लोगों ने देखा कि आचार्य जी इस प्रकार पहनते हैं तो उन्होंने भी उसी प्रकार कुर्त्ता बनवाना शुरू कर दिया। हमने अब वह बन्द कर दिया है तथा बटन लगाते हैं। अरे सस्ती वाली प्रक्रिया छोड़ तथा आचार्य जी के कार्य को देख तथा वैसा बनने का प्रयास कर।

कागाबा से जनता प्रभावित हुई। वहाँ के करोड़पति, अरबपति, मालदार लोगों ने उन्हें विकास-कार्य के लिए खर्च करने हेतु धन दिया। जापान की सरकार ने इस सराहनीय कार्य की ओर अपना ध्यान दिया तथा उसकी देखभाल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

करने लगी। सरकार ने कागाबा को १०० करोड़ का बजट इस कार्य के लिये दिया। यह क्या है ? उनकी कुण्डलिनी यानी उनकी करुणा एवं विवेकशीलता है, जिसके बारे में आपने सोचा ही नहीं।

मित्रो ! मेरे गुरु ने भी हमारी कुण्डलिनी जगा दी। हमारे अन्दर करुणा पैदा कर दी। एक उदाहरण बताता हूँ। बड़नगर (उज्जैन) की एक लड़की नर्स थी। उसके बच्चेदानी में कैंसर था। नित्य खून आता था। वह परेशान थी। हम उधर से आगरा जा रहे थे। रास्ते में खड़ी थी। गाड़ी रोकी और हमारे साथ बातचीत करने के लिये बैठ गई। उसने अपनी दुःखभरी कहानी बतलायी और कहा कि गुरुजी, मैं इन्दौर के अस्पताल में मरने जा रही हूँ। आप हमें आशीर्वाद दे दें। हमने कहा बेटी हमारे अन्दर करुणा है। हमारे गुरु ने हमारे अन्दर करुणा पैदा की है। हमने दुःखी, पीड़ित, पतितों की, जो शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से परेशान थे, उन सबकी हमने सेवा की है। तू जा हम देखेंगे। वह चली गयी। उस अस्पताल में कैंसर के २१ और मरीज थे। वह वहाँ जाकर इलाज कराने लगी। हमारा चित्र तकिये के नीचे रखती थी। उसने बताया कि वहाँ के २१ मरीज जो हम से अच्छे थे, मर गये और मैं बच गयी। हमने उसी दिन संकल्प लिया कि हे भगवान ! हमें गुरुजी के पास मच्छर, मक्खी बना देना, मैं तो आचार्य जी के पास ही रहूँगी। इतना ही नहीं, जो गिरे हुए लोग थे, जिनका जीवन घिनौना था, पशुता जिनके अन्दर भरी थी, वे जब से हमसे जुड़े हैं, उनकी वह स्थिति अब नहीं रही। उन्हें आज जब मैं एक अच्छे व्यक्ति के रूप में देखता हूँ तो हमें बेहद खुशी होती है, प्रसन्नता होती है, उसका वर्णन हम नहीं कर सकते हैं। हमें काफी प्रसन्नता होती है। आदमी जब अपने बेटे के विवाह में ५० हजार खर्च करता है तो उसे प्रसन्नता होती है। उसकी कीर्ति फैलती है। नाम होता है।

हमें भी दूसरों के कष्ट-निवारण के काम करने से प्रसन्नता होती है। कीर्ति एवं यश कितना मिलता है, इसकी जाँच तो आप कर सकते हैं। हम अपने मुख से कैसे बतलाएँ। हमारी नाक बहुत ऊँची है, हम प्रसन्न हैं। यह हमारी कुण्डलिनी का चमत्कार है। हम सारे राजा-महाराजाओं से ज्यादा प्रसन्न रहते हैं, इसका हम जवाब नहीं दे सकते हैं। हमारे पास संतोष है। हम चाहते हैं कि इसका एक हिस्सा आपको भी मिल जाता, उसी तरह का शक्तिपात आपको भी कोई कर देता तो आप भी निहाल हो जाते। हम चाहते थे कि आपकी भी कोई इसी तरह कुण्डलिनी जागरण कर देता तो आपका नाम भी हमारी तरह अजर-अमर हो जाता।

आपको हम उस समय धन्यवाद देंगे जब आप अपनी समस्या का हल करने के बाद अनेकों लोगों की भी समस्याओं का हल करने के लिये आगे आयेंगे। यदि आप दूसरों की पीड़ा, मुसीबतों को दूर करने के लिये चल पड़ते तो मजा आ जाता। हमारे पास हमारा गुरु आया था। उसने हमसे कहा कि आप हमारे शिष्य हैं। आप हमारी मुसीबत दूर कर दीजिये। हमने पूछा कि क्या मुसीबत है आपको ? उन्होंने बतलाया कि यह दुनिया बहुत खराब हो गई है। इस दुनिया को बदलना है, उसमें आप सहयोग कीजिये तथा हमारी मुसीबत दूर कीजिये। हमने कहा कि आप क्यों नहीं कर सकते हैं ? उन्होंने कहा कि हम नहीं कर सकते हैं, यह काम आपको करना होगा। हमारा गुरु हमारी जीभ है और हम उसकी नाक है। उन्होंने कहा कि दोनों के सहयोग से हमारा काम हो सकता है। जनता के बीच हम नहीं जा सकते हैं, वह काम आपको ही करना होगा। हमारा 'बॉस' हमारे पास आया और वह हमें धन्य कर गया। आप माँगते हैं, तो बेटे हमें शर्म आती है। बेटे, हमें इतना छोटा मत समझ।

बेटे ! तू हमें इतना छोटा मत समझ कि तू शाखा का काम करेगा तो ही हम तेरा काम करेंगे। इस प्रकार तो हम बनिया हो गये। बेटे ! ऐसा दृष्टिकोण मत रख। तू कहता है कि गुरुजी आप हमारे बीबी को अच्छा कर दीजिए और हम आपको शाखा का काम करेंगे ? बेटे ! यह तो डॉक्टर एवं मरीज की बात हो गई। डॉक्टर के पास मरीज जाता है, वह दवा देता है तथा मरीज उसके ऐवज में सौ रुपये दे देता है। बेटे ! तू हमें ऐसा मत समझ। हम दुकानदार नहीं हैं। बेटे, हम ब्राह्मण हैं तथा हमारे भीतर दया एवं करुणा भरी है। हम तो समाज की सेवा करने को बाध्य हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि यदि तू पीड़ित है तो हमें तुम्हारी सेवा करनी चाहिए। बेटे ! हम तुम्हारी सेवा अवश्य करेंगे। तुम भले ही यहाँ मत आना, हमारी शाखा का काम मत करना हम तो तुम्हारी सेवा अवश्य करेंगे।

हम चाहते हैं कि हमारे बेटे बड़े हो जाएँ। छोटे बच्चे हमेशा माँगते रहते हैं। बेटे ! माँगना बुरी बात नहीं है। हम आपको धमकाते भी रहते हैं, परन्तु हम देते रहते हैं। हम चाहते हैं कि आप जवान आदमी बन जाएँ ताकि हम आपको दे सकें तथा आप भी हमें सहयोग कर सकें। बच्चा हमेशा माँगता है परन्तु वह घाटे में रहता है। उसको छोटी चीजें मिलती हैं। उसको गुब्बारा मिलता है, १० पैसे मिलते हैं। उससे उसका कोई खास मकसद पूरा नहीं होता है। थोड़ी देर में गुब्बारे फूट जाते हैं। परन्तु बच्चा जब बड़ा हो जाता है तो वह अपनी तिजोरी की आलमारी की चाभी दे देता है और चेकबुक दे देता है तथा यह कहता है कि आपकी जब इच्छा हो तो खर्च कर लिया करना। जब वह बच्चा होता है तो उसे १५ पैसा दिया जाता है। जब बच्चा जिद करता है तो उसकी १० पैसे की तरक्की होती है तथा २५ पैसे मिलते हैं। परन्तु जब वही बच्चा बड़ा हो जाता है, तो बाप पूरी सम्पत्ति सौंप देता है।

मित्रो ! हम चाहते हैं कि आपको नौकरी में तरक्की के कराने की बजाय, स्वास्थ्य ठीक करने की बजाय, तीन बेटियाँ हो गई हैं, एक बेटा हो जाए कि बजाय कोई बड़ी चीज आपको दें, ताकि आप भी धन्य हो सकें। आपकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैसियत यदि ऐसी हो जाए कि आप किसी को देने में समर्थ हो जाएँ मित्रो ! देने में कितना जायका है, कितनी जिम्मेदारी है, कितना मजा आता है यह अगर आप समझ सके होते तो मजा आ जाता। आपको हम देने के लायक बना सकते हैं, परन्तु उसमें एक ही शर्त है कि आपको जवानी आनी चाहिए। जवानी के बिना हम देने की बात नहीं कर सकते हैं।

मुन्नी विवाह करना चाहती है उसके लिये माँ गुड्डा, ला देती है। यह क्या कोई विवाह है। मुन्नी के लिये क्या विवाह छोटी उम्र में सम्भव है ? कदापि नहीं। परन्तु वही मुन्नी जब बड़ी हो जाती है तो विवाह की बात होती है तो वह चुपचाप उठकर चली जाती है। उसका रिश्ता तय करके समय पर विवाह कर दिया जाता है। आप बेटी की तरह लायक हो जाएँ तो मजा आ जाए। भगवान के दोनों हाथ में दी चीजें रखी हैं—(१) शक्तिपात (२) कुण्डलिनी। ये दोनों चीजें आपको मिल सकती हैं, परन्तु शर्त एक ही है कि आप लायक हो जाएँ।

एक दिन मछलियों से शेर ने कहा कि बहिन जी आप चलिये हमारे घर चलिये। मछलियों ने कहा कि आपके घर में तालाब या नदी है क्या ? नहीं तो हम नहीं जा सकते हैं, हमारा गुजारा बिना पानी के नहीं हो सकता है। इसी तरह एक दिन स्वाति नक्षत्र की बूँदों से कुछ सीपों ने कहा कि आप बरसें ताकि इसमें से मोती पैदा हो सकें। स्वाति ने कहा कि ये सीपें बेकार हैं। इसमें से मोती पैदा नहीं हो सकते हैं, मोती उन सीपियों से पैदा होंगे जो समुद्र में से निकली हों।

एक बार किसी ने बरसात के बादलों से कहा कि आप हमारे घर में, खेत में क्यों नहीं बरसते हैं तथा वहाँ हरियाली क्यों नहीं लाते हैं ? बादलों ने पूछा—क्या आपके पास अच्छी वाली जमीन है ? उसने कहा—नहीं हमारे पास तो केवल चट्टानों से भरी जमीन है। बादलों ने कहा—तब तो यह बेकार है। इसमें तो कुछ भी पैदा नहीं हो सकता है। बादलों ने कहा कि हमारा सारा पानी बेकार हो जाएगा। आपके खेत में कुछ नहीं हो सकता है।

मित्रो ! मैं क्या कह रहा था ? मैं यही कह रहा था कि आज भी वह बादल जो मेरे ऊपर बरसा एवं हमारा शक्तिपात कर दिया, हमारी कुण्डलिनी जाग्रत कर दी, वह आपको भी धन्य करना चाहती है, परन्तु शर्त एक है कि आपको अपनी श्रद्धा बढ़ानी चाहिए आपको अपनी पात्रता का विकास करना चाहिए। आपको जवान होना चाहिए। आपका उद्देश्य ऊँचा होना चाहिए। हमने हर वसंत पर्व पर इस उद्देश्य से एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है। हमारी उमंग उस दिन अद्वितीय रहती है। हमने जो भी कदम उठाया है, उससे हमारा व्यक्तिगत फायदा नहीं है, बल्कि हमने समाज, राष्ट्र संस्कृति के लिये कदम उठाया है। आज इस वसंत पर्व पर फिर हम नया कदम उठाते हैं। हम क्या कदम उठाते हैं ? हम यह कदम उठाते हैं कि आस्तिकता का वातावरण सारे विश्व में बढ़ता हुआ चला जाए। हमारा आस्तिकता से मतलब नैतिकता, धार्मिकता कर्त्तव्यपरायणता से है।

हम चाहते हैं कि आप अपनी मान्यताएँ बदलें। आप यह न सोचें कि आपने भगवान को प्रसाद खिलाया है, अगरबत्ती जलाई है तो आपकी मनोकामना पूर्ण हो जाएगी, यह गलत है। इसमें आपको संशोधन करना होगा। यह ईश्वर की गलत पूजा है। हम कर्मफल के सिद्धान्त को स्वीकार करें। ईश्वर के अंकुश को हम स्वीकार करें, यही वास्तविक ईश्वर की पूजा-उपासना है जिसे आपको भलीभाँति समझने का प्रयास करना चाहिए।

आप यह अनुभव करें कि इस दुनिया में एक सुप्रीम पावर है जो अच्छी है, नेक है। उसका ही अंकुश सारे दुनिया में है, यह मान्यता आपकी होनी चाहिए। इस आस्तिकता के प्रचार के लिये हम गायत्री माता के मन्दिर बनाते हैं तथा हम इसी आस्तिकता का प्रचार करना चाहते हैं। ईश्वर का वह स्वरूप जो गायत्री माता के साथ जुड़ा है, उसी की हम प्रतिस्थापना घर-घर में करना चाहते हैं, जिसका भी आपने आज प्रातःकाल उद्घाटन किया है।

गायत्री माता का अर्थ है—करुणा, श्रद्धा, पवित्रता, विवेकशीलता—हम इन सब चीजों का प्रचार, विस्तार करना चाहते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये हम गायत्री माता का मन्दिर बनाना चाहते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये आपको भी हमने कहा है कि आपको भी गायत्री मन्दिर बनाना चाहिए तथा जन-जन तक आस्तिकता का प्रचार करना चाहिए। सौभाग्य ने हमारा साथ दिया तथा हमने गायत्री मन्दिर बना दिया। इसके उद्घाटन या चिन्ह-पूजा के लिये हमने आपको नहीं बुलाया वरन् हमने आपको मदद करने के लिये, सहयोग करने के लिये उसी प्रकार बुलाया है, जिस प्रकार मेरे गुरु ने हमें आदेश दिया कि आप हमें सहयोग कीजिये। हमने उसे अपना सौभाग्य माना तथा उसके लिये तत्पर हो गये। आप भी तत्पर हो जाइये। साथियो हम आस्तिकता का विस्तार करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि आप घर-घर में गायत्री मन्दिर यानि गायत्री माता का चित्र स्थापना करावें। प्रत्येक बच्चों एवं महिलाओं को कहिये कि आप अपना कार्य प्रारम्भ करने के पहले गायत्री माता को नमस्कार करें, २४ बार गायत्री मंत्र का उच्चारण करें। महिलाओं को यह कहिये कि आप चूल्हे से एक अँगारा निकाल लें तथा भोजन का वह अंश जिसमें नमक न हो उससे कम से कम ५ आहुतियाँ देकर ही भोजन परोसे तथा भोजन देवें। यह परम्परा अगर आप घर पर जिन्दा कर सकें तो भारतीय संस्कृति की जननी माँ गायत्री एवं यज्ञ भगवान घर-घर पहुँच जाएँगे। आस्तिकता का विस्तार हो जाएगा। इसके लिये २ घण्टे भगवान का भजन यानी झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ चलावें। यही आपका भगवान् का भजन है। हाँ, यह बिल्कुल भगवान का भजन है। भगवान के भजन का अर्थ है—भगवान के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना। हम ४ घण्टे तो भजन करते हैं, परन्तु १२ घण्टे हम नियमित रूप से भगवान की सेवा करते हैं, जिसे हम लेखन कहते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हैं। बातचीत करना कहते हैं। यह सब मिलाकर हमारा भजन १२ + ४ = १६ घण्टे हो जाता है। हमारी यही गायत्री माता की पूजा है। हमारे गुरु ने हमसे समय का अंश माँगा था। हमने कहा कि इसके ऐवज में आप हमें क्या देंगे तो उन्होंने कहा कि आप जो भी आदेश देंगे वह हम आपको देंगे। हम चाहते हैं कि आपकी इस आस्तिकता की विस्तार योजना में आप भी अपना समयदान देते हैं तो मजा आ जाता।

युग-निर्माण योजना का मतलब है आस्तिकता के सिद्धान्तों का विस्तार। हम घर-घर में इसका प्रचार करना चाहते हैं। आस्तिकता का मतलब कर्त्तव्यपरायणता, धार्मिकता, नैतिकता से है, जिसका प्रचार करना युग निर्माण का उद्देश्य है। हम चाहते हैं कि आप झोला पुस्तकालय घर-घर ज्ञानमन्दिर, चल पुस्तकालय के माध्यम से युग-निर्माण योजना यानी आस्तिकता के अभियान को पूरा करें।

हमने जिस प्रकार अपने गुरु का पल्ला पकड़ा तथा एक कठपुतली की तरह से उनके इशारे पर नाचते रहे। जिस प्रकार हमने अपने पतंग के धागों को उनके हाथों में दे दिया तथा उड़ने के लिये तैयार हो गये तो हमारा सौभाग्य जाग उठा। हम तथा हमारा गुरु दोनों धन्य हो गये। हम चाहते हैं कि आप भी अपने गुरु का पल्ला पकड़ें तथा आस्तिकता के विस्तार के लिये कुछ करने को आगे बढ़ें। हमने गुरु के इशारे पर काम किया। हम चाहते हैं कि इसी तरह आप भी हिम्मत करें तथा आगे बढ़ें।

अगर आप बच्चे की तरह से माँगना चाहते हैं तो वह भी हम देंगे, परन्तु हम नहीं चाहते हैं कि आप बच्चा ही रहें। हम चाहते हैं कि आप जवान बनें ताकि हम आपको दे सकें तथा आप उसे बाँटने में समर्थ हो सकें। इस कार्य के द्वारा हमारा तथा आपका दोनों का मान बढ़ेगा, कीर्ति बढ़ेगी, यश बढ़ेगा। आपको भगवान ने इस लायक बनाया है कि आप किसी के पास हाथ न पसारें, बल्कि इतना समर्थ हो जाएँ कि हमारे पास से प्राप्त करके दूसरों को बाँट सकें। इसी उद्देश्य को बतलाने के लिये हमने आपको बुलाया था। हम चाहते हैं कि आप गुरुजी, समाज, भगवान से माँगने की अपेक्षा, आप उन्हें देने में समर्थ हो जाएँ। हम चाहते हैं कि आपको ऐसा ही शक्तिपात तथा कुण्डलिनी जागरण हो जाए।

आज हमने आपसे ब्रह्मवर्चस् का उद्घाटन कराया है। ब्रह्मवर्चस् क्या है ? बेटे ! ब्रह्मवर्चस् एक फिलॉसफी है, एक दर्शन है, एक सिद्धान्त है। आदमी के भीतर कुछ सोया हुआ है। आदमी के भीतर एक जखीरा है, जो महत्त्वपूर्ण है और वह सोया हुआ है। इसको हम जगाना चाहते हैं, हम आप लोगों को महत्त्वपूर्ण आदमी बनाना चाहते हैं। इसके लिये क्या करना पड़ता है ? बेटे ! इसके लिये तप करना पड़ता है। पार्वती जी ने तप किया था। भगीरथ, ध्रुव, प्रहलाद को तप करना पड़ा था, तब उनकी भीतर की शक्ति जाग्रत हुई तथा वे महान बने। तप करने के सिद्धान्त का बहिरंग सम्बन्ध मनुष्य के खाने-पीने से है, परन्तु ब्रह्मवर्चस् वाला भाग अन्तरंग है, जिसे जगा लेने के बाद मनुष्य में शक्ति आ जाएगी। मनुष्य में देवत्व जगाने की शक्ति आ जाएगी, आस्तिकता अभियान को गति देने की शक्ति आ जाएगी। तब मनुष्य का व्यक्तित्व उभरता हुआ विकसित होता हुआ चला जाएगा। उसके पास भगवान की गुरु को दी हुई ऋद्धि-सिद्धियाँ आती हुई चली आयेंगी। वह मनुष्य से महामानव, ऋषि, संत स्तर तक बढ़ता, हुआ प्रगति के सोपानों को पार करता हुआ चला जाएगा। उसके अन्दर ऐसा आत्मबल, साहस पैदा होगा कि उसकी तुलना कोई नहीं कर सकता है।

इसके लिये मनुष्य को सामान्य जीवन में आस्तिकता तथा बहिरंग जीवन में तपस्या का विकास करना आवश्यक है। आस्तिकता का अर्थ है—नेक जीवन जीना तथा तपस्या का अर्थ है—लोकमंगल का जीवन जीना, समाज, देश, संस्कृति के विकास, प्रगति के लिये श्रम करना, उसमें अपनी अक्ल, धन तथा समय लगाना।

इस तपशक्ति का विकास तथा तप के बारे में अन्य बातें ब्रह्मवर्चस् के द्वारा बतलाएँगे। मनुष्य की सहन शक्ति कहाँ तक होगी, इसकी जाँच करके हम मनुष्य में देवत्व उदय कराएँगे। आपने आज गायत्री मंदिर का उद्घाटन किया पहला—हम इसके द्वारा आस्तिकता को फैलाना चाहते हैं। आपको यह सोचना है कि आप अपना समय, श्रम, अक्ल कितना इस कार्य में लगा सकते हैं ? दूसरा आपने ब्रह्मवर्चस् की यज्ञशाला में पूजन किया, एक फूल चढ़ाया। हम चाहते हैं कि आप तपस्वी बनें, नेक बनें। इस संसार में जितने महामानव, संत, महापुरुष हुए हैं, उन्होंने तपस्या की है, श्रम किया है। उसके द्वारा ही उनका विकास हुआ है। हम चाहते हैं कि इस दर्शन को आप अपने भीतर भी धारणा करें। हम इन्हीं दो चीजों को घर-घर पहुँचाना चाहते हैं। हम चेचक का टीका सबको लगाना चाहते हैं। आप उसको समझें, उसके बाद मरहम लगावें।

आज वसंत के दिन हमारे मन में अनेक प्रकार की उमंगें उठ रही हैं। हमारा मन कर रहा है कि हम क्या-क्या काम कर डालें ? हम चाहते हैं कि आपके अन्दर भी इस वसंत पर्व के अन्तर्गत ऐसी ही उमंग उठे। आप भी ऐसा ही सम्पत्तिवान तथा महामानव बन जाते, जैसा हम बने हैं। हम देवत्व का अवतरण करना चाहते हैं। इसका मतलब है कि हम अच्छा वातावरण बनाना चाहते हैं।

जहाँ नेक, ईमादानर और श्रमशील आदमी रहते हैं वहाँ स्वर्ग पैदा हो जाता है। संत इमर्सन कहते थे कि हमें कहीं भी भेज दिया जाए, हम वहीं पर स्वर्ग बना देंगे। हम चाहते हैं कि एक ऐसा वातावरण बना दें ताकि लोग यहाँ आएँ तथा अच्छा जीवन जीएँ और लोगों को ऊँचा उठाने का कार्य करें। वे पेट पालने के लिये नहीं, कामवासना के लिये बच्चे पैदा करने के लिये न आवें, बल्कि उनके अन्दर उमंगें हों अच्छे बनने की, अच्छा बनाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की तो मजा आ जाएगा। इसे ही "धरती पर स्वर्ग" व "मनुष्य में देवत्व का अवतरण" कहा जा सकता है। इसी के लिये हमने गायत्री नगर बसाया है, जिसका कि आपने आज उद्घाटन किया है। हम आपको बुलाते हैं तथा दावत देते हैं कि आप आएँ। अगर आपकी पत्नी बात नहीं मानती है, बच्चा बदमाश हो गया है तो आप उसे हमारे जिम्मे सौंपें हम उसमें सुधार करेंगे। बेटे ! हम कौन हैं ? हम हैं—बाल्मीकि ऋषि, जिनके आश्रम में रहकर सीता तथा लवकुश महान बने थे। हम तेरे बच्चे को तपस्वी बना देंगे। हम एक भट्टी बनाना चाहते हैं, हम चाहते हैं कि आप यहाँ आएँ तथा पहलवान बनें। आपको यहाँ रखकर हम आपकी सोई हुई शक्ति को जाग्रत करना चाहते हैं।

मित्रो ! त्रिपदा गायत्री का आज हमने आपसे उद्घाटन कराया है। इसमें से प्रथम—गायत्री मंदिर—आस्तिकता का प्रचार करने हेतु बनाया गया है और दूसरा ब्रह्मवर्चस्—आदमी को तपस्वी बनाने, उसके अन्दर के जखीरे को जाग्रत करने हेतु बनाया गया है। तीसरा गायत्री नगर—युग-परिवर्तन के लिये जाग्रत आत्मा बनाने के लिए भट्टी है, जहाँ से हम धरती पर स्वर्ग एवं मनुष्य में देवत्व की स्थापना कराएँगे। त्यागी, बलिदानी, एवं सेवाभावी यहाँ आते जा रहे हैं। हम इसका भावना विकास करना चाहते हैं। अभी हमारे पास कितने ही ऐसे निःस्वार्थ, समर्पित सेवाभावी आ गये हैं और यहाँ आते ही चले जा रहे हैं। हम चाहते हैं कि यहाँ नैमिषारण्य की तरह संत, ब्राह्मणों की सेना बना दें, जो पेट पालने, बच्चा पैदा करने की बात न करके समाज, देश, संस्कृति के उत्थान की बात करें तथा उसे ऊँचा उठाने के लिये प्रयास करें। हम इसके द्वारा दुनिया को बताना चाहते हैं कि भावी जीवन में स्वर्ग कैसा होगा ? अगर आपके उद्देश्य ऊँचे होंगे तो मैं यह कहता हूँ कि आपको कभी अभाव नहीं होगा।

मित्रो ! मंगता भिखारी कभी भक्त नहीं होता है। मैं यह चाहता था कि मेरे गुरु ने जिस प्रकार से हमारी गरीबी पहले दिन से ही छीन ली तथा अमीरी दे दी। मैं चाहता था कि आपके जीवन में भी वैसा ही हो जाता। आज वसंत का दिन हमारे उमंग, उत्साह, सौभाग्य एवं शांति प्रेरणा का दिन है। मैं चाहता था कि आप लोगों को भी इसी तरह से प्रेरणा मिलती तो मजा आ जाता। हम तथा हमारे गुरु जिस प्रकार से धन्य हुए आप एवं हम भी धन्य हो जाते। आपके अन्दर शत-प्रतिशत महानता न भी आती तो कम से कम पाँच-दस प्रतिशत भी आ जाती तो हमें यह देखकर शांति होती कि आप प्रगति के रास्ते पर हैं तथा जवान बन रहे हैं।

यही मेरी कामना एवं इच्छा थी जो हमने आप लोगों के बीच रखा तथा बतलाने का प्रयास किया। हमने अपने अन्दर को खोलकर आपको दिखाया ताकि आप देख सकें कि हमारे अन्दर कितनी प्रसन्नता है, कितनी शांति है, कितनी प्रगति है ? अगर आपको भी हिम्मत है, तो आप अपने गुरु का अनुग्रह खरीदकर ले जाएँ। हमने भी अपने गुरु का अनुग्रह खरीद कर लिया है। फोकट में कुछ भी नहीं मिलता है। आप चाहें तो आप प्राप्त करके अपने आपको महान बना सकते हैं। अब गायत्री नगर का काम करना है। वहाँ का कार्यक्रम संक्षिप्त रूप में आपको बता दिया है, आपको केवल यहाँ फूल चढ़ाना है। महाकाल को फूल चढ़ा दें तथा मेरे प्रति सहानुभूति प्रगट करें। अगर आप मेरी बात मानें तो अपने गुरु की तरह हम भी आपको शक्तिपात कर सकते हैं, कुण्डलिनी जगा सकते हैं। देवकन्याओं से हमें काफी आशा है, इनसे हम उद्घाटन कराते हैं। आज की बात समाप्त !

ॐ शान्ति।

वातावरण-परिशोधन हेतु युगशिल्पियों का दायित्व

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो ! भाइयो !!

यह समय इस तरह का है जिसको सामान्य नहीं, असामान्य कहना चाहिए। यह युगसंधि का समय है। युग बदल रहा है। युग बदलता है तो आप जानते हैं कि कुछ-न-कुछ हेर-फेर अवश्य होता है। जब बच्चा पैदा होता है और पेट में से निकलकर बाहर आता है, तो कितनी पीड़ा होती है ? पुराना युग जा रहा है और नया युग चला आ रहा है। ऐसे समय में दो काम होते हैं—एक बनाव होता है और दूसरा बिगाड़ होता है। परिवर्तन की इस सन्धिवेला में बिगाड़ क्या होने वाले हैं ? बिगाड़ वे होने वाले हैं जिनके बारे में बाइबिल में कहा गया है—"सेवन टाइम आएगा और दुनिया तबाह हो जाएगी।" जिसके बारे में इस्लाम धर्म के कुरान शरीफ में कहा गया है—"चौदहवीं सदी आएगी और दुनिया तबाह हो जाएगी।" भविष्य पुराण में यह लिखा हुआ है—"दुनिया उस मोड़ पर आयेगी जहाँ पूर्णतया तबाह हो जाएगी।" यह तबाही का भी समय है और बनाने का भी समय है। यह युग-परिवर्तन का समय है। संधिकाल का समय है।

संधिकाल में निर्माण और ध्वंस के कार्य साथ-साथ चलते हैं। इन दिनों भी एक ओर निर्माण हो रहा है, तो दूसरी ओर बिगाड़ हो रहा है। मकान बनाना होता है तो नींव खोदने वाले नींव खोदते जाते हैं और चिनाई करने वाले चिनाई करते जाते हैं। एक तरफ खोदने का काम शुरू होता है और दूसरी ओर उसको बनाने का भी काम शुरू हो जाता है। इन दिनों भी बनाने और बिगाड़ने के दो काम एक-साथ शुरू हो रहे हैं और इन शुरू हो रहे कामों के समय पर कोई एक बड़ी जरूरत पड़ती है। बच्चा पैदा होता है तो दाई की जरूरत पड़ती है—डॉक्टर की नर्स की जरूरत पड़ती है। देखभाल करने के लिए और लोगों की जरूरत पड़ती है। इसी तरह बदलते हुए समय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

में बहुत-सी देखभाल करने की आवश्यकता है। बड़े बिगाड़ जो होने वाले हैं। आपको मालूम नहीं है कि 'नेचर' नाराज हो गई है। 'नेचर' के नाराज होने की वजह से कहीं बाढ़ आती है, कहीं अतिवृष्टि होने लगती है, तो कहीं सूखा पड़ने लगता है। कहीं तूफान आ जाते हैं, कहीं भूकम्प आ जाते हैं। कहीं क्या होता है तो कहीं क्या ? हर तरह से नेचर हमसे नाराज हो गयी है। वातावरण भी ऐसा हो गया है कि जो नई पीढ़ियाँ पैदा होती हैं, नये बच्चे पैदा होते हैं, ऐसे कुसंस्कार जन्म से ही लेकर आते हैं कि न तो माँ का कहना मानते हैं, न बाप का कहना मानते हैं, न मास्टर का कहना मानते हैं। जरा-जरा-सी उमर में न जाने क्या-क्या खुराफातें करना शुरू कर देते हैं। यह सब खराब वातावरण का प्रभाव है।

इससे बचने के लिए वातावरण को परिशोधित करने के लिए हमने कुछ काम करना शुरू कर दिया है। कुछ तो काम हमने अपने जिम्मे लिए हैं और कुछ काम आपके जिम्मे किए हैं। हमने अपने जिम्मे क्या लिया है ? हम एक उस तरह की तपश्चर्या कर रहे हैं, जिस तरह की भगीरथ ने की थी। भगीरथ ने तपस्या की तो क्या हुआ ? गंगा स्वर्गलोक में रहती थीं। उनकी तपश्चर्या से जमीन पर आयीं। गंगा जब जमीन पर बहीं तो तमाम जगह हरियाली हो गयी, पेड़ पैदा हो गये, बगीचे पैदा हो गये, गेहूँ पैदा हो गये, इस तरह भगीरथ ने जिस तरीके से तप किया था, ठीक उसी तरीके से एक तप हम भी कर रहे हैं। एक और समय ऐसा था, जब दैत्यों ने देवताओं के मारकर भगा दिया था और देवता बेचारे मारे-मारे फिर रहे थे। दैत्यों ने स्वर्गलोक पर अधिकार कर लिया था। देवता ब्रह्माजी के पास पहुँचे। उन्होंने कहा—"धरती पर महर्षि दधीचि नामक एक तपस्वी रहते हैं। उसकी बनावट ऐसी है कि यदि उसकी हड्डियाँ तुमको मिल जाएँ तो उन हड्डियों से इन्द्रवज्र बनाया जाए। उस इन्द्रवज्र से आपके लिए राक्षसों से मुकाबला करना तब सरल हो जाएगा। उन्होंने यही किया। दधीचि ने ऐसा विशेष तप किया था, जिससे उनकी अस्थियाँ इस लायक बन गयी थीं कि यदि वृत्रासुर जैसे राक्षस जिसने सारी दुनिया में तहलका मचा रखा था, पर उन अस्थियों से बने वज्र से प्रहार किया जाए तो उसका प्राणान्त हो जाए और सब उससे छुट्टी पाएँ। हम भी यही कह रहे हैं। आजकल हमारा कार्य है। पूरे दो वर्ष हो गये हैं। दो वर्ष से हम मौन रख रहे हैं। एकांत में रहते हैं। अपना कुछ काम करते हैं, भगवान का भजन करते हैं। इस तरह से हमारी तपश्चर्या और एकांत सेवन चल रहा है।

यह तो हमारे जिम्मे का काम है और आपके जिम्मे का क्या है ? आपको भी कुछ करना चाहिए ? आप नहीं करेंगे तब ? रानी मक्खी शहद के छत्ते में बच्चे दिया करती है, लेकिन वह अकेले ही सब काम थोड़े ही कर लेती है ? बाकी मक्खियाँ जाती हैं और जहाँ-तहाँ से फूलों का रस इकट्ठा करके ले आती हैं। सेनापति होते हैं, लड़ाई लड़ा करते हैं पर सेनापति की वजह से ही अकेले युद्ध में विजय नहीं पायी जा सकती। लड़ने वाले तो सिपाही होते हैं। लंका पर चढ़ाई से पूर्व समुद्र पर पुल बनाया गया था। अकेले नल-नील ने वह थोड़े ही बनाया था, वरन् उनके साथ कितने ही रीछ-वानर थे। महाभारत को अर्जुन ने लड़ा था। अकेले लड़ा था क्या ? नहीं ! अकेले नहीं लड़ा, उनके साथ बहुत सारे सहयोगी भी थे। गोवर्धन पहाड़ उठाया गया था। क्या भगवान कृष्ण ने अकेले ही उठा लिया था ? नहीं; अकेले नहीं उठाया था, गोप-ग्वाल सबने अपनी-अपनी लाठी का सहयोग किया था। भगवान बुद्ध ने जो धर्म-प्रवर्तन-चक्र चलाया था, सो अकेले ही चला लिया था क्या ? नहीं ! अकेले नहीं, बौद्ध-भिक्षु सबने मिलकर चलाया था। गाँधीजी ने सत्याग्रह किया था और स्वराज्य को यहाँ लाये थे। आजादी प्राप्त की थी, लेकिन क्या आजादी ऐसे ही प्राप्त हो गयी थी ? नहीं; हजारों आदमी उसमें सहयोगी थे। इसी तरीके से हमारी तपश्चर्या चल रही है, क्या हमारे अकेले की चल रही है ? नहीं ! अकेले की नहीं। हमारे कुटुम्बियों को, हमारे भाइयों को, हमारे भतीजों को, हमारे बच्चों को, हमारे बड़े-बुजुर्गों, हमारे सभी उम्र के अनुयायी परिजनों को काम करना पड़ेगा। क्या काम करना पड़ेगा ? यह हमारा पचहत्तरवाँ वर्ष है। हीरक जयन्ती वर्ष है। इस हीरक जयन्ती वर्ष में हमने अपने प्रत्येक कार्यकर्त्ता को कुछ काम सुपुर्द किये हैं। ये काम ऐसे हैं जो अभी-अभी करने होंगे। क्या-क्या काम सुपुर्द किये हैं। ?

पहला काम तो हमने नालन्दा विश्वविद्यालय के तरीके से, तक्षशिला विश्वविद्यालय के तरीके से एक लाख धर्मप्रचारक बनाने का निश्चय किया है। यह काम सबसे बड़ा काम है, क्योंकि ये प्रचारक जो हैं और बिगाड़ने पर तुल जाते हैं तो दुनिया को तबाह कर देते हैं। नशेबाजी सिखा देते हैं, व्यभिचार सिखा देते हैं और न जाने कितनी बुरी बातें सिखा देते हैं। यदि अच्छी बातें सिखाने को तैयार हो जाते हैं तो वे अच्छी से अच्छी बातें भी सिखा देते हैं। अच्छी बातें सिखाना न आता हो, ऐसी बात नहीं है। अच्छी बातें सिखाने के लिए सारी दुनिया में एक लाख आदमियों की आवश्यकता है। इससे कम की जरूरत पड़ेगी ? नहीं। कभी गाँधी जी ने कहा था—सौ आदमी मिल जाएँ, तो हमारा काम चल जाएगा। हमारा काम नहीं चलेगा, क्योंकि सात लाख गाँव तो हिन्दुस्तान में ही हैं। अब एक आदमी के हिस्से में सात गाँव तो देंगे ही, इसलिए एक लाख के बिना हमारा काम नहीं चलेगा। एक लाख आदमियों को शिक्षित करने का काम हमने प्रारम्भ किया है। इसके लिए जो भी हमारे मिलने वाले हैं, हमारे मित्र हैं, इसके लिए जो भी हमारे सहायक हैं, कुटुम्बी हैं, उन सबको एक काम यह करना चाहिए कि एक-एक आदमी अपने डिवीजन से यहाँ अध्यापकी ट्रेनिंग के लिए भेजने चाहिए। हम युगशिल्पी को एक महीने में पढ़ा देंगे और एक महीने में इस लायक बना देंगे कि संगीत के माध्यम से वे सारे क्षेत्र की जनता को नये युग का सन्देश देने में समर्थ हो सकें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आगे से हमारा प्रशिक्षण व्याख्यान प्रधान नहीं होगा, वरन् संगीत प्रधान होगा। गायन के विषय संगीत को लेकर हम चलेंगे। आप एक काम यह कीजिए कि एक आदमी अपने डिवीजन से ऐसा भेजिए जो कि मुस्तैद हो, जिसके पास समय भी हो, सेवाभावी भी हो और सीखने में उसकी रुचि भी हो। कोई बूढ़ा-बीमार व्यक्ति भेज देंगे, तो वह क्या सीखेगा ? न चला जाता है, न दिखाई देता है—ऐसे व्यक्ति का हम क्या करेंगे ? मुस्तैद आदमी वहाँ से युग-शिल्पी शिविर में भेजने के लिए आप लोगों से प्रार्थना की है और आप लोगों से यह प्रार्थना भी की है कि जब वह आदमी यहाँ से सीख करके चला जाए, तो अपने यहाँ एक विद्यालय बनाइये। उस विद्यालय में क्या होगा ? वह प्रचारक विद्यालय होगा। वह संगीत भी सिखायेगा और व्याख्यान देना भी सिखायेगा, यज्ञ करना भी सिखायेगा। जन्म-जयन्तियाँ भी मनाना सिखायेगा। वहाँ सारे क्षेत्र में वह एक जाग्रति लावेगा, युग का सन्देश लोगों को सुनायेगा। यह काम आप सब लोगों को मिलजुल कर करना है। पहला काम हमारा यही है कि नालन्दा विश्वविद्यालय, तक्षशिला विश्वविद्यालय के तरीके से एक लाख प्रचारक हम तैयार करें और इन प्रचारकों से हम प्रत्येक गाँव में इस तरह का वातावरण बनाएँ, जिससे हर आदमी को मालूम पड़े कि आज हमारे कर्त्तव्य क्या हैं ? आज हमारी जिम्मेदारी क्या है ? और आज हमको करना क्या चाहिए ? इसके लिए आदमी को उठा करके, झकझोर करके, चैतन्य करके तैयार कर दें। प्रज्ञा प्रशिक्षण विद्यालय के बारे में अखण्ड-ज्योति के संपादकीय लेखों में लिखा गया है और भी अनेक जगहों पर बताया गया है कि आपके गाँव में एक विद्यालय चलना चाहिए। उसमें संगीत की एक टीम होनी चाहिए। एक आदमी संगीत गा करके काम नहीं चला सकता। कई आदमी मिल जाएँ तो विचारों का विस्तार ठीक प्रकार से होता है, गाने का समा भी बन जाता है। यह हुआ पहला काम ?

दूसरा काम ? दूसरा काम हमने यह तय किया है कि एक लाख यज्ञ होने चाहिए। लाख ? हाँ, लाख होने चाहिए। कैसे होंगे ? किसी स्थान पर आप इस तरीके से यज्ञ कर सकते हैं कि अमावस्या, पूर्णिमा, एकादशी, रविवार में से कोई ऐसा एक दिन तय कर लें, जिसमें आप सभी को सुगमता हो—सुविधा हो। उस दिन आप पाँच कुण्ड की वेदियाँ बना लें और हवन कर लें। हमने तो हवन को बेहद् सुगम कर दिया है। बहुत खर्चीला है, बहुत पंडित आयेंगे, बहुत दक्षिणा लेंगे ? नहीं, कोई दक्षिणा नहीं लेगा। आप सब मिल-जुलकर श्लोक बोलेंगे। मिल-जुल करके बाँसों का पांडाल बना लेंगे। चमचम की पन्नी आती है, उससे उसकी शोभा-सज्जा करके वेदी बना देंगे। कुण्ड बनाने की भी जरूरत नहीं है। चौकोर वेदी बना लें, चौबीस अंगुल लम्बी और चौबीस अंगुल चौड़ी एवं तीन अंगुल ऊँची बना लें। इस वेदी के ऊपर चौक पर करके सजा लें और हवन करें। हवन सामग्री आपके पास न हो तो आप गुड़ और घी दो चीजों की बेर के बराबर गोली बना लें और एक-एक गोली का हवन करते जाएँ। इसकी सुगन्ध से वातावरण सुगन्धित और पवित्र बन जाएगा, क्योंकि घी, गुड़, शक्कर में यह विशेष गुण है कि इसे लोगों की बीमारियों को दूर करने के लिए सबसे उपयुक्त वस्तु माना गया है। इसे हवन-सामग्री में भी मिला सकते हैं। अनाज ! अनाज के लिए तो हमने पहले ही मना किया है कि गेहूँ नहीं जलाना चाहिए, तिल नहीं जलाने चाहिए और जौ नहीं जलाने चाहिए। अनाज जलाने के हम सख्त खिलाफ रहे हैं और इन चीजों को जलाने की आपको कोई आवश्यकता भी नहीं है। जो चीजें मनुष्य के खाने की हैं उनका आप हवन करें। ऐसा हमने कभी नहीं कहा। हमारा यह हवन बहुत सरल और सुगम है।

इसके साथ ही जन्मदिन भी मनाने चाहिए। हमारे गायत्री परिवार के चौबीस लाख आदमी हैं। उन चौबीस लाख आदमियों में से एक-एक का एक-एक दिन, एक-एक व्यक्ति का जन्म-दिन मना लिया जाए तो चौबीस लाख यज्ञ हो सकते हैं और चौबीस आदमी पीछे एक यज्ञ कर लें तो ? तो एक लाख यज्ञ हो जाते हैं। यज्ञों से हमारा मतलब यह नहीं है कि बड़ा भारी धूम-धड़ाका होगा और बड़ा भारी जुलूस निकलेगा और बड़ा भारी रैली होगी अथवा बड़ा सौ-सौ कुण्ड का, इक्यावन कुण्ड का या पच्चीस कुण्ड का यज्ञ होगा। इसकी तो हमने सख्त मनाही कर दी है, क्योंकि इस जमाने में बड़े यज्ञों का करना बड़ा खर्चीला है। बड़े यज्ञों में जितना सामान खर्च होता है और जिस तरीके से उसमें से लूटमार होती है और जिस तरीके से चन्दा इकट्ठा होता है, उसको लोग हजम कर जाते हैं। इसके हम बेहद खिलाफ हैं। कुछ लोग हमारे पास आये थे, उन्होंने कहा कि हम सौ कुण्ड का यज्ञ करेंगे। हमने कहा—नहीं, एकदम नहीं। एक हजार कुण्ड का यज्ञ करेंगे। हमने कहा—नहीं एकदम नहीं। हमने हर एक को मना कर दिया और कहा कि पाँच कुण्ड से ज्यादा का नहीं। हमारा कहना जो मानता है, हमारे कहने पर जो चलता है, उसके पाँच कुण्ड से ज्यादा का यज्ञ करने की बिल्कुल इजाजत नहीं, कोई जरूरत नहीं है। जो ऐसा नहीं करते उसके लिए हमारी कोई आज्ञा नहीं है, हमारी कोई सलाह नहीं है, कोई परामर्श नहीं और हमारा कोई सहयोग नहीं है। आपको पाँच कुण्ड की वेदियाँ बना करके, जिसकी कि लागत दो, एक रुपये आती हो, उसमें आप बड़े मजे से हवन कर सकते हैं। इस प्रकार से हमारे एक लाख हवन इस साल में जरूर पूरे हो जाएँगे। यह संसार के इतिहास में एक अनोखी बात होगी कि एक लाख कुण्ड का हवन हुआ था। इसका एक तरीका यह भी हो सकता है कि हर जगह महीने में एक बार पाँच कुण्ड का हवन कर लिया करें और सबका जन्म-दिन मना लिया करें, जिसमें संगीत भी हो जाए, प्रवचन भी हो जाए, प्रज्ञा-पुराण की कथा भी हो जाए, बस ! महीनेभर में एक सम्मेलन और पाँच कुण्ड का यज्ञ इतना काफी है।

इस तरीके से एक लाख यज्ञों की हमारी योजना है। गाड़ियाँ हमारे पास हैं। यहाँ से गाड़ियों में प्रचारक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जत्थे भी भेजने हैं। गाड़ियों के प्रचारक जत्थे हम उन्हीं-उन्हीं जगहों में भेजेंगे, जहाँ-जहाँ बड़े आयोजनों की जरूरत समझी जाएगी। उसमें आपको केवल गाड़ी का पेट्रोल खर्च देना पड़ेगा और कोई खर्च नहीं देना पड़ेगा। हमारे कार्यकर्त्ता जाएँगे, उनको दक्षिणा देनी पड़ेगी ? नहीं, बिलकुल नहीं ! माइक—लाउडस्पीकर, यज्ञशाला—पांडाल, टेप आदि जितनी भी जरूरत की चीजें हैं, हर चीज हम यहाँ से भेजेंगे। पर अभी थोड़ी देर है। इस समय में दंगे-फसाद ज्यादा हो रहे हैं, कहीं पंजाब में दंगे हो रहे हैं, कहीं हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे हैं, इसलिए अभी इसको स्थगित कर दिया है। जब दंगे शान्त हो जाएँगे तब कार्यक्रमों के लिए टोलियाँ अवश्य भेजेंगे। हिन्दुस्तान में शान्ति जल्दी आ जाएगी, उसके आने में बहुत देर नहीं है। दो कार्यक्रम समझ में आ गये न आपके ? पहला काम तो यह कि आपको प्रज्ञा प्रशिक्षण आयोजन के लिए सबसे ज्यादा जोर देना है। अपने यहाँ झोला पुस्तकालय और संगीत विद्यालय चलाना है। बस, ये दो काम आप अपने यहाँ कर लेते हैं तो समझना चाहिए कि सब काम ठीक हो गया।

इस साल के लिए जो आपके जिम्मे काम दिये गये हैं, उनमें से तीसरा काम है—वृक्षारोपण। हवन करना और वृक्षारोपण लगभग एक ही बात है। वातावरण में कितना मिल गया है जहर ? हवा में, पानी में कितना जहर मिल गया है। हर जगह जहर ही जहर है। इस जहर का समाधान करने के लिए या तो यज्ञ ही काम देगा या काम देगा पेड़ों का लगाना। नहीं साहब हमारे पास तो जमीन नहीं है, खेत भी नहीं है, तो आप ऐसा कीजिए कि अपने घर में शाक-वाटिका लगा लीजिए। छोटे-छोटे तुलसी के पौधे लगा लीजिए। यहाँ हमारे शांतिकुंज में आप आये होंगे तो आपने देखा होगा कि हमने जड़ी-बूटियों का कितना बड़ा उद्यान लगाया हुआ है और इस उद्यान में से कितने आदमी फायदा उठाते हैं ? आप भी घरेलू जड़ी-बूटी पैदा करके लोगों को दे सकते हैं, इलाज कर सकते हैं। चिकित्सक बनकर लोगों की बीमारियाँ भी दूर कर सकते हैं। साथ-साथ जब आगे आप लोगों को हवन करने पड़ेंगे तो उन पौधों से उनके पत्तों से हवन-सामग्री भी तैयार कर सकते हैं। यह बात हमने हर एक से कही है। इसलिए आपसे भी कह रहे हैं। एक पेड़ तो आप लगा ही सकते हैं। कहीं पर लगा दीजिए। घर-आँगन में लगा लीजिए, सरकारी जमीन में लगा दीजिए अथवा पड़ोस में लगा दीजिए और कहिए भाईसाहब यह पेड़ तो हम लगा देते हैं पर यह आगे चलकर तुम्हारा हो जाएगा। वातावरण के परिशोधन के लिए हमने इस बार वृक्षारोपण पर जोर दिया है। यह हुआ काम नम्बर तीन।

चौथे नम्बर का काम यह है कि पहले जो शक्तिपीठें बनी थीं, वे तो बहुत बड़ी-बड़ी बनी थीं। उनमें तो लाखों रुपये खर्च हुए थे, लेकिन लाखों रुपये खर्च होने के बावजूद भी जो काम होने चाहिए थे वे नहीं हुए। अब उनके स्थान पर आप ऐसा कर सकते हैं कि कहीं किराये का मकान ले लें, धर्मशालाएँ भी जगह-जगह खाली पड़ी रहती हैं, उनमें से आप दो कमरे माँग सकते हैं। किसी भले आदमी से कह दीजिए कि आप चार घण्टे के लिए यह स्थान दे दीजिए, इसमें हमको प्रौढ़-शिक्षा चलानी है, बाल-संस्कारशाला चलानी है और अपना प्रज्ञा प्रशिक्षण विद्यालय चलाना है। हमें तो चार घण्टे के लिए चाहिए, बाकी समय आप अपने काम में इसका इस्तेमाल कीजिए। जब आप काम पर जाएँगे तब हम अपने प्रशिक्षण इसमें चला लेंगे, ऐसा स्थान भी मिल सकता है। अगर ऐसे नहीं मिलता तो, आप कहीं एक टीन शेड या खपरैल, छप्पर डालकर ऐसी एक झोंपड़ी बना लें, जिसमें कोई पच्चीस-तीस आदमी बैठ सकते हों।

शक्तिपीठों का हमने नया पैटर्न दिया है। ये शक्तिपीठें सौ रुपये में भी बन सकती हैं। इसमें आप गायत्री माता का एक फोटो लगा दें। उसी को सब प्रणाम कर लिया करें, वहीं बैठकर गायत्री मंत्र का उच्चारण कर लिया करें तो यह भी शक्तिपीठ हो जाएगी। सौ रुपये मूल्य में भी शक्तिपीठ बन जाएगी। उसमें यह प्रशिक्षण—शिक्षण कार्य चलना चाहिए। शिक्षणक्रम चलेगा तो हमारी जीवात्मा प्रसन्न होगी, शक्तिपीठों को बनाने का हमारा उद्देश्य पूरा होगा। इससे देश के ऊँचा उठने में, आगे बढ़ने में तो सहायता मिलेगी ही, पर साथ ही व्यक्तित्व के विकास में सुगमता रहेगी। हम व्यक्ति में श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण करें, उन्हें आगे बढ़ाएँ तभी हमारा व्यक्ति-निर्माण और समाज-निर्माण का उद्देश्य पूरा हो सकेगा। हमारे शक्तिपीठ जनजाग्रति के केन्द्र बनें। ये चार काम हमने आपको बताए हैं और अब पाँचवाँ काम बता करके हम अपनी बात समाप्त करेंगे।

पाँचवाँ काम यह है कि जब भी आपको हरिद्वार आना हो तो आप शांतिकुंज जरूर आइए। शान्तिकुंज में हम रहेंगे ? हाँ, शांतिकुंज में हम बराबर बने रहेंगे। अभी जब तक युगसंधि का समय है, तब तक हम यहाँ बराबर बने रहेंगे। माताजी का प्राण और हमारा प्राण एवं यहाँ की तपश्चर्या की ऊर्जा, यह सारे वातावरण में भरी रहेगी। जब कभी आपको आना हो तो प्रसाद लेकर जरूर जाइये, यहाँ ठहरकर जरूर जाइये, इसे देखकर जरूर जाइये, शांतिकुंज में, ब्रह्मवर्चस् में कितने बड़े काम होते रहते हैं, ऐसे बड़े काम हो रहे हैं, जो संसार में कभी नहीं हुए होंगे। न कभी आपने ऐसे तीर्थ देखे होंगे, न कभी ऐसे कोई और स्थान देखे होंगे। इन स्थानों को देखने के लिए अपने कुटुम्बियों सहित आइये। शांतिकुंज बहुत ही उपयोगी जगह है। हम चाहते हैं कि ब्याह-शादियों में अनावश्यक खर्च होना बन्द हो जाए। हम चाहते हैं कि हिन्दुस्तान की गरीबी खत्म होनी चाहिए। गरीबी दूर करने के लिए आपकी आमदनी बढ़नी चाहिए। आमदनी बढ़ाने का एक तरीका यह भी है कि खर्च घटना चाहिए। खर्च हिन्दू समाज में सबसे ज्यादा ब्याह-शादियों में होता है। ब्याह-शादियों का खर्च आप कम कीजिए। वहाँ घर में आपके पड़ोसी और रिश्तेदार अगर आपको हैरान करते हों,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो अपने बच्चों की शादी आप यहाँ शांतिकुंज में सम्पन्न कराइये। आप अपनी बच्ची और वर एवं उसके माँ-बाप के साथ यहाँ आ जाएँ। गाड़ी का किराया-भाड़ा तो लगेगा आपका, लेकिन संस्कार सम्पन्न कराने का न आपको पैसा खर्च करना पड़ेगा, न ही किसी को दक्षिणा देनी पड़ेगी। सारी की सारी व्यवस्थाएँ यहाँ हर समय तैयार रहती हैं। आपको बच्चों का मुण्डन-संस्कार कराना हो, अन्नप्राशन संस्कार कराना हो, विद्यारम्भ संस्कार कराना हो, यज्ञोपवीत संस्कार कराना हो तो आप सहर्ष यहाँ के वातावरण में आकर सम्पन्न करा सकते हैं।

मित्रो ! यह दिव्यवातावरण का क्षेत्र है। यहाँ शांतिकुंज में उच्चस्तर का माहौल मौजूद है। गंगा का तट, हिमालय की छाया और सप्तऋषियों की तपोभूमि है यह। यहाँ साधना से ओत-प्रोत वातावरण है। यहाँ अखण्ड दीपक स्थापित है और अखण्ड जप भी निरन्तर चलता रहता है। नित्य-नियमित रूप से नौ कुण्ड की यज्ञशाला में अग्निहोत्र होता है, यह बात अभी सभी लोग जानते ही हैं। इन्हीं सब विशेषताओं के कारण यह स्थान ऐसा बन पड़ा है, जिसमें रहने वाला, निवास करने वाला, साधना करने वाला व्यक्ति सहज ही उच्चस्तरीय प्राण-ऊर्जा से भर उठता है और उसे जीवनोत्कर्ष की भावभरी प्रेरणाएँ मिलती हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अपने स्तर का अनुपम स्थान है यह शांतिकुंज। सप्तऋषियों की तपोभूमि, सप्तधारा वाले क्षेत्र में गायत्री महातीर्थ का निर्माण किया गया है। इस संस्कारित भूमि में अभी भी गायत्री के तत्त्वदृष्टा ऋषि विश्वामित्र की पुरातन संस्कार चेतना मौजूद है। शांतिकुंज में रहने वाले तथा बाहर से आने वाले आगन्तुक सभी बड़ी मात्रा में साधना करते हैं और आत्मबल प्राप्त करते हैं। आत्मबल को अन्य सभी बलों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ओजस्, तेजस् और वर्चस् उसकी विशेष उपलब्धियाँ हैं। यहाँ के वातावरण में रहने पर भाव सम्वेदना का उभार सहज ही होने लगता है। यह प्रत्यक्ष उपलब्धियाँ हैं और परोक्ष वे हैं, जिसमें हिमालय की सूक्ष्म शरीरधारी सत्ताओं और सप्तऋषियों के अनुदान बरसते रहते हैं। जिस दैवीसत्ता ने महान परिवर्तन की रूपरेखा बनायी है, उसी ने इस भूमि का चयन और निर्धारण भी किया है। इस भूमि का पूजन और परिशोधन किया है। उसी दैवी-सत्ता ने यहाँ बैटरी चार्ज करने जैसी अतिरिक्त व्यवस्था भी बनायी है। जिसके प्रवाह से सभी को अनुप्राणित होने का अवसर मिलता है। जो इसके साथ भावनापूर्वक जुड़ जाते हैं, वे यहाँ के वातावरण में व्याप्त दिव्य प्राण-ऊर्जा से लाभान्वित होते हैं और थोड़े समय में ही बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं। शांतिकुंज की शिक्षण व्यवस्था दैवी-कृपा से ऐसी है जिस पर रामायण की यह चौपाई अक्षरशः लागू होती है, जिसमें कहा गया है कि—

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।
अलप काल विद्या सब आई।।

साथियो ! यह गंगोत्री का वह क्षेत्र है—जहाँ से ज्ञान-गंगा निकलती है। गोमुख से गंगा निकलती है। आप यह मानकर चलिए कि यह गोमुख है। कौन-सा ? शांतिकुंज। यहाँ से चारों ओर को ज्ञान का प्रकाश फैला है। चारों ओर को गंगा की धाराएँ बही हैं और चारों ओर हरियाली फैली है। यहाँ से हमने चारों ओर को जेनरेटरों के तरीके से प्रकाश फैलाया है। यह प्रकाश का केन्द्र है, यह सामान्य नहीं, असामान्य है। आपने कई तीर्थ देखे होंगे, कई बार गंगा स्नान किये होंगे, कई मंदिर देखे होंगे, पर आपको शांतिकुंज में दुबारा आये बिना चैन नहीं पड़ेगा और न पड़ना चाहिए। जो कोई भी आपके मिलने-जुलने वाले हों, मित्र हों, उनसे एक बार यह जरूर कहिए कि जब कभी हरिद्वार जाना हो तो आप शांतिकुंज हो करके जरूर आना। ब्रह्मवर्चस में क्या गतिविधियाँ चलती हैं ? उन्हें देख करके आना। यह भी देखकर आना कि जो आदमी कई हजार रुपया महीना कमाते थे, उन्होंने नौकरी को ठोकर मार दी और औसत भारतीय स्तर का कैसा ब्राह्मणोचित जीवनयापन कर रहे हैं ? साधू-बाबाजी तो ऐसे होते हैं, जो कभी भीख माँग लेते हैं, कभी यह कहकर लेते हैं, कभी वह कहकर लेते हैं पर वे बिना पढ़े-लिखे होते हैं; लेकिन हमारे यहाँ ग्रेजुएट हैं, पोस्ट ग्रेजुएट हैं, नौकरियों वाले हैं। ऐसे होनहार बच्चे सब कुछ छोड़-छाड़ करके निष्ठापूर्वक बारह-बारह घण्टे काम करते हैं और भगवान का भजन भी करते हैं। आपको यहाँ हर समय, हर व्यक्ति मिशन के कार्य में व्यस्त दिखेगा। यहाँ कोई आदमी आपको हाथ पसारता हुआ या यह कहता हुआ नहीं पाया जाएगा कि हमको भीख दीजिए, हमको पैसा दीजिए, हमको दान दीजिए, हमको दक्षिणा दीजिए—इनका कोई जिक्र नहीं करेगा। वह आपकी सेवा करेगा। इसलिये यहाँ शांतिकुंज में जब कभी भी आपका आने का मन हो या आप जब कभी हरिद्वार आएँ तो शांतिकुंज देखना न भूलें।

जो कोई भी आपके मिलने वालों में से यहाँ आयें तो शांतिकुंज देखना न भूलें। बस यही आपके लिए आज का सन्देश था।

एक बार फिर सुन लीजिए कि आपको क्या-क्या करना है ? पहली बात यह कि आपको यहाँ के लिए एक आदमी, एक युगशिल्पी भेजना है, जो यहाँ से महीनेभर में सीख करके जाए और वहाँ जाकर शिक्षण कार्य करे। वह आपके क्षेत्र का अध्यापक होगा—मास्टर होगा। फिर आपको हमें बुलाना नहीं पड़ेगा। आप उसी के द्वारा काम चला लेंगे। दूसरा काम आपको यह बताया है कि प्रज्ञा प्रशिक्षण विद्यालय हमारी एक लाख शाखाओं में चलने चाहिए। शाखाएँ तो बहुत हैं, हमारे प्रज्ञा संस्थान तो हैं, स्वाध्याय मण्डल तो बहुत हैं, शक्तिपीठें तो बहुत हैं, पर इन सबमें प्रज्ञा प्रशिक्षण विद्यालय अवश्य चलने चाहिए। फिर आपसे यह कहा है कि आप अपने यहाँ पाँच कुण्ड का हवन कराने की व्यवस्था करें। प्रत्येक आदमी का जन्मदिन मनाएँ, गायत्री परिवार के प्रत्येक आदमी का जन्मदिन मनना ही चाहिए और महीनेभर में पाँच कुण्ड का हवन प्रत्येक शाखा में, प्रत्येक जगह, प्रत्येक स्थान पर होना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही चाहिए। इसके अतिरिक्त वहाँ जो संगीत मण्डलियाँ तैयार हुई हैं, उन्हें गाने का मौका मिलना चाहिए, बजाने का मौका मिलना चाहिए, कहने का मौका मिलना चाहिए।

मित्रो ! एक बात मैंने और कही है और वह यह कि आपको पेड़ लगाना चाहिए। जितने अधिक से अधिक पेड़ आप लगा सकते हों जरूर लगाइये। अपने पुरखों के नाम पर पेड़ लगाइये और पुण्य कमाइये। इन पेड़ों को आप खेतों में लगाइये, आँगन में लगाइये, बेकार पड़ी जमीन में लगाइये, इसके अलावा हमने यह कहा था कि शांतिकुंज आपको निमन्त्रण देता है। आप यहाँ आइये और यहाँ के वातावरण में विद्यमान प्राण-ऊर्जा से लाभ उठाइये। आप हमारा ब्रह्मवर्चस शोध-संस्थान देख करके जाइए कि यहाँ कितना बड़ा रिसर्च हो रहा है ? आप यहाँ देखिये कि नौ कुण्ड का हवन किस तरीके से होता है ? आप यहाँ देखिये कि सारे हिमालय को केन्द्रीभूत करके मन्दिर कैसे बनाया गया है ? आप यहाँ देखिये कि गायत्री माता और अन्य देवी-देवताओं सम्बन्धी तथ्य किस प्रकार व्यक्त हैं और कैसे विद्यमान हैं ? आप यहाँ आइये और देखिये कि सन्त किसे कहते हैं ? ब्रह्मचारी किसे कहते हैं—जिन्होंने अपने घर को त्याग करके, हजारों रुपयों की नौकरी को ठोकर मारकर यहाँ दिन-रात काम करते हैं। आपसे यह निवेदन है कि इन सब बातों को आप यहाँ जरूर देखकर जाइये। आपसे यह आशा-अपेक्षा है कि आप ये हमारी चार-पाँचों बातों को ध्यान रखेंगे। यदि आप इतना करेंगे तो हम आपको अपना मित्र समझेंगे, सहयोगी समझेंगे और यह समझेंगे कि हमारे कन्धे से कंधा और पैरों से पैर मिलाकर चलने वाले हमारे भाई हैं, कुटुम्बी हैं। आपसे हमें ऐसी उम्मीद है और आपको यह करना ही चाहिए। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँच स्थापनाएँ

युगदृष्टा के स्तर की अवतारी सत्ता के रूप में परमपूज्य गुरुदेव ने अपने अस्सी वर्ष के जीवनकाल में जितना भी कुछ किया, उसकी मिसाल कहीं देखने को नहीं मिलती। करोड़ों व्यक्तियों के मनों का निर्माण, उनके सोचने के तरीके में बदलाव एवं युग निर्माण की पृष्ठभूमि बनाकर रख देने का कार्य इन्हीं के स्तर की सत्ता कर सकती थी, जो लाखों वर्षों में कभी-कभी धरती पर आती है। उनके द्वारा की गयी स्थापनाओं का जब प्रसंग आता है तब ईंट-गारे-चूने-सीमेंट से बने भवनों से पहले उनकी स्नेह-संवेदना से सिक्त हुए, ममत्व में स्नानकर उनके अपने हो गये लाखों व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, जिनने उनके एक इशारे पर अपना सब कुछ उनको अर्पित कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कभी ऐसा ही वातावरण भारत के कोने-कोने में दिखाई देता था, जब हर घर से सत्याग्रही निकलकर आ रहे थे। भावनाओं का आवेग चिरस्थायी नहीं रहता। वे ही लोग जो कभी राष्ट्र निर्माण के लिए अपना सब कुछ छोड़, पढ़ना-लिखना छोड़ देश को आजाद बनाने के लिए कूद पड़े थे, कभी गड़बड़ाने न पाएँ, उसी के लिए बापू ने आजादी के बाद काँग्रेस भंग कर देने व सभी को एक आदर्श स्वयं-सेवक की तरह दरिद्र नारायण का उत्थान कर राष्ट्र निर्माण में लग जाने की सलाह दी थी।

सभी इस तथ्य को जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ, राष्ट्र का कीर्ति-स्तम्भ रूपी वह महापुरुष भी एक वर्ष के अंदर ही शहादत को प्राप्त हो चला गया। गिने-चुने उनके आदर्शों पर चलने वाले रह गये, अवसरवादियों को राजनेतृत्व भाने लगा एवं राष्ट्र आजाद होकर भी उनके हाथ में आ गया जो ब्रिटिश तो नहीं थे किन्तु, उसी रंग में रँगे सत्ता के उन्माद में काम करने वाले शासक थे- सृजेता नहीं। जिंदा रहा तो मात्र बापू का दर्शन बुनियादी आधार पर टिका- मानव को बनाने का तंत्र-आश्रम तंत्र जो सेवाग्राम-साबरमती आश्रम के रूप में कार्य करता रहा और वह भी शीर्ष-पुरुष के न रहने, बिनोवाजी के चले जाने के बाद अस्तित्व व महत्व की दृष्टि से गौण हो गया। परमपूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य-दृष्टि से यह सब पूर्व में ही देख लिया था कि कोई भी भव्य निर्माण, आश्रम या तंत्र बनाने से पूर्व राष्ट्र को सांस्कृतिक, भौतिक, आध्यात्मिक आजादी दिलाने वाले अगणित व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। १९११ में आज से ८४ वर्ष पूर्व वि.संवत् २०८६ में जन्मे, राष्ट्र की आजादी में उन्मत्त बने श्रीराममत्त कहलाने वाले, आचार्यश्री ने पहले स्वयं को तपाया, वैचारिक क्रान्ति के निर्माण का आधारभूत तंत्र स्वयं व परमवंदनीया माताजी के रूप में खड़ा किया, 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका अपनी लेखनी से लिखी, ममत्व भरी चिट्ठियों व छोटी-छोटी एक आने की किताबों से जन-जन के मन को छुआ, तब जाकर अपने एक लक्ष के २४ गायत्री महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर उन्होंने गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्थापना की बात १९५२-५३ में सोची। सबसे पहली मंत्र दीक्षा वहीं पर १९५३ में दी व यह मानते हुए कि बिना आध्यात्मिक आधार बनाये, मनोभूमि में, भावनाओं के स्तर पर बदलाव लाये कोई क्रान्ति सफल नहीं हो सकती, धीमी खुराक देते हुए हर व्यक्ति को गायत्री व यज्ञ के तत्त्वदर्शन से जोड़ते हुए चले गये। गायत्री परिवार रूपी विराट वृक्ष का मूल आधार वह स्थापना है जो जन-जन के मनों में पहले हुई- उनकी भाव संवेदनाओं के उदात्तीकरण के रूप में सम्पन्न हुई व उनके अंदर अपनी गुरुसत्ता को त्याग करने की, यज्ञीय जीवन अपनाने की प्रेरणा बलवती होने लगी। उन्होंने सर्वमेधं के रूप में अपना सर्वस्व बलिदान एवं नरमेध के रूप में अपने आप को समाज के हित न्यौछावर करने की भावना से दो यज्ञ किये। अपनी जमींदारी के बाण्ड बेचकर एवं परमवंदनीया माताजी के कीमती सोने के जेवर (ढाई सौ तोले) बेचकर जो स्वेच्छा से सम्पन्न हुआ, एक स्थापना भवन के रूप में जो हुई- वह थी **गायत्री तपोभूमि, मथुरा** जो वृन्दावन रोड पर ऋषि दुर्वासा की जन्मस्थली पर बनी आज से ४२ वर्ष पूर्व १९५३ में। प्रारंभिक स्थापना यों अखण्ड ज्योति संस्थान को माना जा सकता है जहाँ अखण्ड दीपक अपनी जन्मभूमि आँवलखेड़ा से जो वहाँ से मात्र ४० मील दूर थी, स्थापित किया गया था एवं प्रारंभिक तप-तितिक्षा वहीं पर १९४१ से, तपोभूमि की स्थापना से भी १२ वर्ष पूर्व आरम्भ हो गयी थी। इस प्रकार जन-जन के मनों का निर्माण उनके अंतःस्थल में प्रवेश कर उनके अंदर देवत्व के जागरण की ललक पैदा करने वाली पृष्ठभूमि पर स्थापनाओं का क्रम बना। किराये की ऐसी हवेली जिसे भुतहा हवेली कहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
जाता था, में अखण्ड दीपक की स्थापना, उसके समक्ष तप, **अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा के रूप में** विकसित हुआ एवं एक और दूसरा निर्माण मथुरा में ही गायत्री तपोभूमि के रूप में हुआ जो कि ३ मील दूर वृन्दावन रोड पर १९५३ में बनाई गई। १९५३ में क्रमशः सुसंगठित गायत्री परिवार के बनने की प्रक्रिया चल पड़ी।

इस प्रारंभिक भूमिका को समझने के बाद ही परमपूज्य गुरुदेव की पाँच मूल स्थापनाओं एवं बाद में देश के कोने-कोने में बनी भव्य इमारतों के रूप में शक्तिपीठों, प्रज्ञा संस्थानों, भारत व विश्वभर में घर-घर में स्थापित स्वाध्याय मण्डलों व गायत्री परिवार की शाखाओं, प्रज्ञापीठों, चरणपीठों का महत्त्व समझा जा सकता है। नहीं तो जैसे अन्यान्य आश्रम-संस्थान बनते हैं, ऐसे इनका भी वर्णन किया जा सकता था व यह कहा जा सकता था कि यह वैभवपूर्ण स्थापनाएँ पूज्यवर ने कीं। उनमें यदि प्राण फूँके गये हों, प्राणवान व्यक्ति वहाँ रहते हों व उस शक्ति के महा-अवसान के बाद भी वे सतत् उसी दिशा में चल रहे हों तो माना जाना चाहिए कि प्रारंभिक पुरुषार्थ जो किया गया, वह औचित्यपूर्ण था।

परमपूज्य गुरुदेव की महत्त्वपूर्ण पाँच स्थापनाएँ इस प्रकार हैं–

(१) युगतीर्थ आँवलखेड़ा (२) अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा (३) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (४) शान्तिकुंज, गायत्री तीर्थ, सप्तसरोवर, हरिद्वार तथा (५) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, सप्तसरोवर, हरिद्वार ।

युगतीर्थ आँवलखेड़ा का नाम सबसे पहले इसलिए लिखा कि यहीं पर वह युगपुरुष संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन, ब्राह्ममुहूर्त में, जो अँग्रेजी तारीख से २० सितम्बर, १९११ के दिन आती थी, में जन्मा। एक श्रीमंत ब्राह्मण परिवार में; जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित, पिता भागवत के प्रकाण्ड पंडित, बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलालेखों की स्थापना हुई है- वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल प्रवाह के क्रम में गिर सी गयी थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गयी हैं- जैसी उनके समय में थीं। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुँआ जिसे पूरे गाँव का एकमात्र मीठे जल वाला कुँआ माना गया- वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्म शरीरधारी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशाधारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क-पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इण्टर कालेज है जो उनके द्वारा दान दी गयी जमीन में प्रदत्त धनराशि द्वारा विनिर्मित है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कालेज से कई मेधावी छात्र निकल कर आत्म-निर्भर बने हैं व उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ एवं कन्या इंटर कॉलेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा जो एक विशाल शक्तिपीठ तथा आसपास के दो सौ ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित, संस्कारवान, आत्मावलम्बी बनाने वाले कन्या महाविद्यालय का अब रूप ले चुका है। प्रथम पूर्णाहुति हेतु इसी भूमि को जो शक्तिपीठ-जन्मभूमि-ग्रामीण क्षेत्र के चारों ओर है, इसीलिए चुना गया कि यहाँ से उद्भूत प्राण ऊर्जा से यहाँ आने वाला हर संकल्पित साधक अनुप्राणित होकर जाए व राष्ट्र के नव-निर्माण की सांस्कृतिक व भावनात्मक क्रान्ति की पृष्ठभूमि रख सके। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गये, जहाँ दो-तीन मकान बदलने के बाद वर्तमान मकान किराये पर लिया जिसे आज अखण्ड-ज्योति संस्थान कहते हैं।

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा में स्थित है। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ यहीं रहने लगे एवं यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रान्तिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरम्भ कर दी गयी थी, की 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ व अन्यान्य लेखों की पंक्तियों के माध्यम से सम्पन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतःस्थल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यहीं पर अगणित दुःखी, तनावग्रसित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तियों ने आकर उनके स्पर्श से नये प्राण पाये तथा उनके व परमवंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गये। हाथ से बने कागज पर छोटी ट्रेडिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी व छोटी-छोटी किताबों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खर्च निकलता था। बगल की एक छोटी-सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, आज पूजाघर विनिर्मित है। पूरी बिल्डिंग को खरीद कर उनके सुपुत्र ने एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया है किन्तु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गयी है जैसी पूज्यवर के समय में १९४२-४३ में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामण्डी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ में सहस्र कुण्डी यज्ञ की आधारशिला यहीं रखी गयी, यहीं सारी योजना बनी एवं विधिवत-गायत्री परिवार बनता चला गया। रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परमवंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका-समाधान होता चला जाता एवं देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खण्ड, युग निर्माण परक साहित्य, आर्ष-ग्रन्थों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं सम्पन्न हुआ। जनसम्मेलनों, छोटे-बड़े यज्ञों एवं १००८ कुण्डी पाँच विराट् यज्ञों में पूज्यवर यहीं से गये एवं विदाई सम्मेलन की रूपरेखा बनाकर स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर चले गये। इस संस्थान के कण-कण में जहाँ आज १० लाख से अधिक संख्या में हिन्दी सहित सभी भाषाओं में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन, विस्तार, डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है, परमपूज्य गुरुदेव की चेतना संव्याप्त अनुभव की जा सकती है। भले ही बहिरंग का कलेवर बदल गया हो, अंदर प्रवेश करते ही परमपूज्य गुरुदेव व परमवंदनीया माताजी की सतत विद्यमान प्राणचेतना के स्पन्दन वहाँ विद्यमान हैं, यह प्रत्यक्षतः देखा जा सकता है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा को परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गयी स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया, एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित की गयी तथा एक गायत्री महाशक्ति का मन्दिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया था, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पू. गुरुदेव की साधनास्थली व प्रातःकाल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्म-भूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर १०८ कुण्डी गायत्री महायज्ञ में १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्रकुण्डी यज्ञायोजन सम्पन्न हुए। श्रेष्ठ नररत्नों का चयन कर गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा सम्पन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने युग निर्माण योजना के शत-सूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युग निर्माण विद्यालय के एक स्वावलम्बन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरम्भ होने की घोषणा की। यह विधिवत् १९६४ से आरम्भ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अभी भी यहाँ देखा जा सकता है। भव्य निर्माण परमपूज्य गुरुदेव की १९७१ की विदाई के बाद यहाँ हो गया है किन्तु, कण-कण में उनकी प्राणचेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण विद्यालय, साहित्य की छपाई हेतु बड़ी-बड़ी ऑफसेट मशीनें तथा युग निर्माण साहित्य जो पूज्यवर ने जीवन भर लिखा, उसका वितरण-विस्तार तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

शान्तिकुंज, हरिद्वार ऋषि परम्परा के बीजारोपण केन्द्र के रूप में १९७१ में स्थापित किया गया था, जब परमपूज्य गुरुदेव मथुरा स्थायी रूप से छोड़कर परमवंदनीया माताजी को अखण्ड ज्योति दीपक की रखवाली हेतु यहाँ छोड़कर हिमालय में चले गये। गुरुसत्ता के निर्देश पर वे पुनः एक वर्ष बाद लौटे व तब शांतिकुंज को ठनने एक बड़ा विराट रूप देने, सभी ऋषिगणों की मूलभूत स्थापनाओं को यहाँ साकार बनाने का निश्चय किया। इससे पूर्व परमवंदनीया माताजी ने २४ कुमारी कन्याओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष २४० करोड़

गायत्री मंत्र का अखण्ड अनुष्ठान आरंभ कर दिया था। पूज्यवर ने प्राण प्रत्यावर्तन सत्र, जीवन साधना सत्र, वानप्रस्थ सत्र आदि के माध्यम से विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता यहीं गढ़े। यह सत्र शृंखला कल्प साधना, संजीवनी साधना सत्रों के रूप में तब से ही ९ दिवसीय सत्रों व एक माह के युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्रों के रूप में चल रही है, अभी भी अनवरत उसमें आने वालों का ताँता लगा रहता है। पहले से ही सब अपनी बुकिंग इसमें करा लेते हैं।

शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ का रूप देकर सप्तऋषियों की मूर्तियों की स्थापना १९७८-७९ में की गयी, एक देवात्मा हिमालय विनिर्मित किया गया एवं यहाँ सभी संस्कारों को सम्पन्न करते रहने का क्रम बन गया जो सतत् चल रहा है। नित्य यहाँ दीक्षा, पुंसवन, नामकरण, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, श्राद्ध-तर्पण आदि संस्कार सम्पन्न होते हैं। इस बीच परमवंदनीया माताजी ने जागरण सत्र शृंखलाएँ सम्पन्न करना आरम्भ रखा। देव कन्याओं को प्रशिक्षित कर पूरे भारत में जीप टोलियों में भेजा गया। इनके माध्यम से तीन वर्ष तक भारत के कोने-कोने में तुमुलनाद होता रहा।

शांतिकुंज का गायत्री नगर जो आज एक विराट स्थापना के रूप में, एक एकेडमी के रूप में नजर आता है व जिसमें एक बार में एक साथ दस हजार व्यक्ति एक साथ ठहर सकते हैं, १९८१-८२ में बनना आरम्भ हुआ । विलक्षण, दुर्लभ जड़ी-बूटियों के पौधे यहाँ लगाये गये तथा प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा रूपी तीर्थस्थली का पूज्यवर ने अपने सामने निर्माण कराया। यहीं उनके निर्देशानुसार उनके शरीर छोड़ने पर दोनों सत्ताओं को अग्नि समर्पित की जानी थी। स्वावलम्बन विद्यालय से लेकर एक विशाल चौके का निर्माण एवं गायत्री विद्यापीठ से लेकर भारत के सभी सरकारी विभागों के प्रशिक्षण के तंत्र की स्थापना यहाँ पर की गयी है एवं यह एक जीता-जागता तीर्थ अब बन गया है, जहाँ पर उज्ज्वल भविष्य की पूर्व झलक देखी जा सकती है। कम्प्यूटरों से सज्जित विशाल कार्यालय से लेकर पत्राचार विद्यालय जहाँ नित्य हजारों पत्रों के द्वारा पूरे तंत्र का मार्गदर्शन किया जाता है, यहाँ की विशेषता है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँचवीं स्थापना है, जहाँ पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का अभिनव शोध कार्य चल रहा है। इसे १९७१ की गायत्री जयंती पर आरम्भ किया गया था। वर्तमान शांतिकुंज- गायत्री तीर्थ से आधा किलोमीटर दूरी पर गंगातट पर स्थित यह संस्थान अपनी आकर्षक बनावट के कारण सहज ही सबके मनों को मोहकर आमंत्रित करता रहता है। इसमें तीन मंजिलों में प्रथम तल पर एक विज्ञान के उपकरणों से सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है तथा चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्तियाँ बीजमंत्रों व उनकी फलश्रुतियों सहित स्थापित हैं। द्वितीय तल पर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं जो यह जाँच-पड़ताल करते हैं कि साधना से पूर्व व पश्चात्, यज्ञादि मंत्रोच्चारण के पूर्व व पश्चात् क्या-क्या परिवर्तन शरीर-मन की गतिविधियों व रक्त आदि संघटकों में देखने में आये। इनके आधार पर साधकों को साधना संबंधी परामर्श दिया जाता है। यहाँ पर वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा यज्ञ ऊर्जा-मंत्र शक्ति का क्या प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों, जैव विद्युत आदि पर पड़ा, यह देखा जाता है। विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किये जाते हैं। तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थापित है, जहाँ विश्वभर के शोध प्रबंध वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर एकत्रित किये गये हैं। यहाँ प्रायः ४५००० से अधिक ग्रंथ हैं, जिनमें कई पुरातन पाण्डुलिपियाँ हैं। यह अपने आप में एक अनूठा संकलन है जो और कहीं एक साथ देखने में नहीं मिलता।

परमपूज्य गुरुदेव की उपरोक्त पाँच स्थापनाएँ किसी को भी यह परिचय दे सकती हैं कि किस विलक्षण दृष्टास्तर की वह महासत्ता थी जो हम सबके बीच अपना लीली संदोह रचकर चली गयी। प्रत्यक्ष तो यह केन्द्रीय पाँच स्थापनाएँ नजर आती हैं किन्तु ४८०० से अधिक अपने भवनों वाले प्रज्ञा संस्थान ४०००० से अधिक प्रज्ञामण्डल व स्वाध्याय मण्डल तथा अगणित गायत्री परिवार की शाखाएँ यदि इनमें मिलाई जाएँ तो इनका मूल्य राशि में आँका नहीं जा सकता। यही वह सब है जो उस महापुरुष को एक अवतारी स्तर की सत्ता के रूप में प्रतिष्ठापित करता है व जिसके कर्तृत्व पर श्रद्धावनत होने का मन करता है। ❑❑❑

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२ (सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे--

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

❑❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org